

स्मृति-सन्दर्भः

श्रीमद्भूतः परहर्षिक प्रणीतः धर्मशास्त्र संग्रहः

THE SMṚTI-SANDARBHA
(A COLLECTION OF DHARMAŚĀSTRAS)

स्मृति-संदर्भ

सप्तम् भाग

विषयानुक्रमणी तथा श्लोकानुक्रमणी

नाग शरण सिंह



नाग प्रकाशक

११ए/यू. ए, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७

This publication has been brought out with the financial assistance from Rashtriya Sanskrit Sansthan New Delhi

If any diffeet is found in this book glease return per V. P. P. for Postage expences for exchange of free of cost.

नाग पब्लिशर्स

- (१) ११ए/यू. ए. जवाहरनगर, दिल्ली-७
- (२) संस्कृत भवन १२, १५ संस्कृत नगर, प्लाट न ३, सेक्टर-१४ रोहिणी नई दिल्ली ८५
- (३) जलालपुर माफी (चुनार-मिर्जापुर) उ० प्र०

ISBN 81-7081-263-1

प्रथम संस्करण १९९३

मूल्य :



Rs. 25.00/-



श्री नागशरण सिंह द्वारा नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली के लिए प्रकाशित तथा अमर प्रिंटिंग प्रेस, विजय नगर, दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

मनुस्मृति

१. सृष्टियुत्पत्ति वर्णनम्

विषय	श्लोक
'सृष्टि की रचना का वर्णन, जल से सृष्टि की रचना हुई	१-८
सर्वप्रथम मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा आदि सप्तर्षि, देवता, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व; पिशाचादि की उत्पत्ति	३७-४१
जरायुज, अण्डज्ज, उद्भिज, स्वेदज, वनस्पति आदि की उत्पत्ति	४२-४७
समय का वर्णन	६४-७४
चार वर्ण और उनके कर्म	८७-९१
आचार-वर्णन	१०८-१११

२. धर्मतत्त्वविचारवर्णनम् : १२

धर्म का वर्णन और धर्म का स्वरूप	१-१२
अर्थ और काम में जिसकी आसक्ति न हो वही धर्म को समझ सकते हैं और धर्म के जिज्ञासुओं को वेद से प्रमाण लेना चाहिए	३-१७

ब्रह्मचर्य वर्णनम् : १५

देश और परम्परा के अनुरूप आचार	१८
द्विजातियों के दस संस्कार का वर्णन, गर्भाधान से उपनयन तक	२६-७७

कर्तव्याकर्तव्य वर्णनम् : २१

सन्ध्या और गायत्री का महत्त्व	१०१-१०४
स्वाध्याय की विधि	१०७-११५
विद्या फल का अधिकारी	१५९-१६२
विद्यार्थी और ब्रह्मचारी	१७३-२२१

३. स्नातकविवाहकर्म वर्णनम् : ३५

विद्याभ्यास का काल	१-२
विवाह प्रकरण और कन्या के लक्षण	४-१६
विवाह के भेद, राक्षस, आसुर, पैशाच और गान्धर्व चार असत्	
विवाह तथा ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य चार सद्धिवाह	२१-३६
पाणिग्रहण संस्कार सवर्णों के ही साथ हो असवर्ण के साथ नहीं	४३
ऋतुकाल में सहवास से गृहस्थ को भी ब्रह्मचारी संज्ञा	४५-५०
संस्कृति का विकास	५६-६२

गृहस्थ पञ्चमहायज्ञा : ४१

गृहस्थ के पञ्चयज्ञ का विधान	६८
गृहस्थाश्रम की मान्यता	७८-८५

बलिवैश्वदेवः : ४३

बलिवैश्वदेव विधि

अतिथि वर्णनम् : ४५

अतिथि सत्कार विधि	१०१-१०८
गृहस्थ के लिए अतिथि को खिलाकर भोजन करने का वर्णन	११५-११८

श्राद्धवर्णनम् : ४६

गोलक और कुण्डकादि निन्दित सन्तान	१७३-१७४
भोजन करने का नियम	२३८-२३९

४. गृहस्थाश्रम वर्णनम् : ६१

गृहस्थाश्रम का वर्णन	१
श्राद्ध और यज्ञ में ब्राह्मण-भोजन	३०-३१
उपनयन संस्कार के अनन्तर स्नातक के रहन-सहन और व्यवहार के नियम	३५-११०
विशेष नियम तथा गृहस्थ की शिक्षा	१११-१३५
धर्माचरण और नियम	१७७
दान, धर्म और श्राद्ध	२६०

५. अभक्ष्य वर्णनम् : ८५

अकाल मृत्यु ?	१-४
---------------	-----

मनुस्मृति

३

अभक्ष्य (जिन चीजों का भोजन नहीं करना चाहिए उनका वर्णन)

५-२०

आमिष खाने का दोष

३४

भक्ष्याभक्ष्य वर्णनम् : ८६

योऽस्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् ।

एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्विमुच्यते ॥

हिंसा-निषध और आमिष खाने का पाप

४८-५०

जो मांस नहीं खाता है उसको अश्वमेध का फल

५३-५४

प्रेत-शुद्धि वर्णनम् : ६०

अशोच (सूतक)

५८-७८

सूतक में कोई काम न करने का वर्णन

८४

जिन पर अशोच नहीं लगता है उनका वर्णन

६३-६५

द्रव्य-शुद्धि वर्णनम् : ६५

परम शुद्धि

१०६-१११

शरीर-शुद्धि वर्णनम् : ६७

अशुद्धि

१३३

मार्जन से शुद्धि करने की विधि

१३५

जूठन से शुद्धि

१४०-१४१

स्त्री-धर्म वर्णनम् : ६६

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया ।

सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुस्तहस्तया ॥

पतिव्रता स्त्रियों का माहात्म्य

१५४-१६६

५० वर्ष की उम्र तक गृहस्थाश्रम

१६६

६. वानप्रस्थाश्रम वर्णनम् : १०१

वानप्रस्थाश्रम जब पौत्र हो जाय तब वन में निवास करे

१

वानप्रस्थाश्रमी के नियम

२

मुन्यन्न शाक-पात से हवन करने का निर्देश

५

वानप्रस्थ के रहन-सहन के नियम

६-३२

आयु के तृतीय भाग समाप्त कर संन्यासाश्रम का निर्देश

३३

संन्यासाश्रम वर्णनम् : १०४

संन्यास का विधान	४०
गृहस्थाश्रम में न्याय धर्म से जीवन-यापन की श्रेष्ठता	८६
ब्राह्मण को संन्यास का धर्म	६६

७. राज्यशासनधर्म वर्णनम् : ११०

राज्यसत्ता तथा शासनसत्ता वर्णन शासक के आचरण का निर्देश	१८
राजदण्ड की आवश्यकता	१६-२०
शासक का विनयाधिकार	३५-४४
शासक के दस कामज दोष और आठ क्रोधसे उत्पन्न होने वाले दोषों से बचने का निर्देश	४५-४७
सचिवों की योग्यता और उनके साथ राज्यकार्य के परामर्श की विधि	५४
राजदूत	६६
दुर्ग निर्माण	७०
शत्रु से युद्ध का वर्णन	६०
राष्ट्रसंग्रह और राष्ट्र-निर्माण	११३-११७
राज्य कर्मचारियों की वृत्ति का माप	१२४-१२६
वाणिज्य कर, राज्यशासन नीति	१२७-२२६

८. राज्यधर्म दण्डविधानवर्णनम् : १३१

सचिव वर्ग और मंत्री के साथ राजकाज देखने की विधि	२-३
अट्ठारह व्यवहार का वर्णन 'ऋणादानादि'	४-८
व्यवहार में धर्म की रक्षा	१५
मन की भावना के चिह्न	२६
व्यवहार की जानकारी और साक्षी के चरित्र	४८-७५

राजधर्म दण्डविधाने साक्षिवर्णनम् : १३८

साक्षी के विशेष निर्देश	७५-६६
पृथक्-पृथक् स्थानों पर असत्य साक्षिवाद का पाप	६७-१०१
वृथा शपथ करने से पाप	१०१-११८
असत्य साक्षी के दण्ड का विधान	१२१-१२४
अपराधी को बिना दण्ड दिये छोड़ने से राजा को नरक गमन	१२५-१३१

द्रव्यपरिमाणनिरूपण वर्णनम् : १४३

तौल (माप) बनाने की विधि	१३२
ऋण लेने पर व्याज की दर	१३६
किसी वस्तु के रखने पर चवृद्धि में वृद्धि का सन्तुलन	१५०

राजधर्म दण्डविधानवर्णनम् : १५५

जो कन्या नहीं है उसे कन्या कहकर विवाह करने वाले को दण्ड	२२५-२२६
पाणिग्रहण संस्कार कन्या का ही होता है स्त्री का नहीं	२२७-२२८

वेतन दण्ड वर्णनम् : १५२-२२६

सीमा दण्ड वर्णनम् : १५५

ग्राम सीमा का निर्णय	२६५
वाक्पारुष्य (अपशब्द गाली देने) का व्यवहार	२६६
दण्डपारुष्य (मार-पीट) के अपराध	२७८-३००

चौरदण्ड वर्णनम् : १५६

स्तेन चोरी	३०१-३४४
------------	---------

राजधर्म दण्ड विधान वर्णनम् : १६२

परस्त्री-गमन की परिभाषा (संग्रहण)	३५६
परस्त्री गमन का दण्ड	३८६
कर लगाना और तुला, तराजू, गज, बांटों का निरीक्षण	३६८-४२०

६. शक्तिस्वरूपास्त्रीरक्षाधर्मवर्णनम् : १६६

मातृ जाति शक्तिरूपा है इसे दृष्टिगत रखना पुरुष का प्रधान धर्म और कर्तव्य है । किसी भी रूप में शक्ति का ह्रास अवाञ्छनीय है । स्त्री की रक्षा से धर्म और सन्तान की रक्षा होती है	१-३५
--	------

पुत्र प्रत्युदितं सद्भिः पूर्वजैश्च महर्षिभिः ।

विश्वजन्मिमं पुण्यमुपन्यासं निबोधत ॥

भर्तुः पुत्रं विजानन्ति श्रुति द्वैधं तु भर्त्तरि ।

आहुत्पादकं केचिदपरे क्षेत्रिणं विदुः ॥

क्षेत्र भूता स्मृता नारी बीजभूतः स्मृतः पूमान् ।

क्षेत्रबीजसमागात्संभवः सर्वदेहिनाम् ॥

स्त्रीधर्मपालन वर्णनम् : १७३

नियोग निर्णय	५८-६३
नियोग उसका ही होगा जिसका वाक्य दान करने पर भावी पति स्वर्गगत (मर जाय) हो जाय । विवाह में कन्या की अवस्था और वर की अवस्था का वर्णन और विवाह-काल	६४-६६
स्त्री-पुरुष धर्म का वर्णन (विवाह रति का धर्म बताता है ।)	१०२-१०३

दायभाग वर्णनम् : १७६

दाय विभाग की सूची और दाय विभाजन का काल	१०४
--	-----

सम्पत्तिश्चाद्वयोरधिकारित्व वर्णनम् : १८१

अपुत्रक का धन दौहित्र को	१३१
कन्या को पुत्र समझकर धन देने का निश्चय होने के अनन्तर यदि औरस पुत्र हो जाय तो धन विभाग का निर्णय	१३४

पुत्रार्थ सम्पत्ति विभाग वर्णनम् : १८३

वारह प्रकार के पुत्रों के लक्षण । ६ दायद और ६ अदायाद हैं	१५८-१८१
--	---------

ऐश्वर्याधिकारिपुत्र वर्णनम् : १८६

दायधन के विभाजन के अवान्तर प्रकार संसृष्टि के धन का वंटवारा	१८२-२१५
---	---------

अनेक दण्ड वर्णनम् : १९०

राजा को द्यूत कर्म करने वाले को राष्ट्र से हटाने का वर्णन	२२०
भ्रष्टाचारी मंत्रियों का दण्डविधान	२३४
महापाप चार हैं—ब्रह्म-हत्या, गुरुतल्प-गमन, सुरापान और स्वर्ण स्तेयी	२३५
पापों का वर्णन और प्रायश्चित्त	२३६

राजधर्म दण्ड वर्णनम् : १९३

प्रजा-पालन से राजा को स्वर्ग प्राप्ति	२५६
साहसिक (मारपीट करने वाले) को दण्ड	२६७

राज्ञः धर्मपालन वर्णनम् : १९७

कर लेने का समय	३०२
----------------	-----

वर्णानां कर्मविधि वर्णनम् : १९९

ब्राह्मण क्षत्रिय दोनों की मिली-जुली शक्ति से राष्ट्रनिर्माण	३२२
शूद्र को अपने कार्य से ही मोक्ष	३३४

१०. वर्णानां भेदान्तर विवेक वर्णनम् : २००

वर्ण भेदान्तरेण त्वनेकवर्ण वर्णनम् : २०१

स्त्री-पुरुष के वर्णभेद से सन्तान की भिन्न-भिन्न जातियों का वर्णन अर्थात् अनुलोम सन्तान और प्रतिलोम सन्तान का वर्णन । अनुलोम और प्रतिलोम की वृत्ति का भी वर्णन	१-६२
--	------

चतुर्वर्णानां वृत्ति वर्णनम् : २०६

चातुर्वर्ण्य के लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह धर्म है	६३
--	----

वृत्ति जीविक वर्णनम् : २०९

ब्राह्मणधर्म	७५
जाति विभागानुसार कार्य	७६-१३१

११. धर्मप्रतिरूपक वर्णनम् : २१३

यज्ञ होम सोम यज्ञ के सम्बन्ध में स्नातकों का सम्मान । प्रायश्चित्तों का यज्ञ के लिए धन एकत्र कर यज्ञ में न लगाने वाले की काक योनि इत्यादि में गति	१-२४
---	------

देवादि धनं हरतीति फलम् : २१५

यज्ञ का वर्णन, यज्ञ की दक्षिणा	३०
जानकर पाप करने वाले का प्रायश्चित्त	४६

स्तेयफल वर्णनम् : २१७

चोरी करने वाले को पृथक्-पृथक् पदार्थ के चोरी करने से शरीर में चिह्न होते हैं जैसे सुवर्ण चोर का दूसरे जन्म में कुनखी होना इत्यादि	४८
---	----

प्रायश्चित्त वर्णनम्—अगम्यागमन वर्णन : २१८

महापाप आदि का प्रायश्चित्त	५५-१९०
बालघाती, कृतघ्न शुद्ध नहीं होता	१९१

प्रायश्चित्त वर्णनम् : २३१

सान्तपन व्रत, कृच्छ्र व्रत, चान्द्रायण आदि का वर्णन

२२३-२३१

तपमहत्त्वफल वर्णनम् : २३४

तपस्या से पाप-नाश

२४२

अक्षर प्रणव को जप करने से सर्वपाप क्षय

२६६

१२. कर्मणा शुभाशुभफल वर्णनम् : २३७

वाचिक, शारीरिक और मानसिक कर्म का वर्णन

४-६

वाणी के पाप से पक्षियों का जन्म, शरीर के पाप से स्थावर योनि

और मन के पाप से शारीरिक दुःख होते हैं। सत्त्व रजस्

और तमस् तीन गुणों से नाना प्रकार के पाप

१०-२६

तीनों गुणों का सामान्य जीवों में लक्षण

३४

जिन कर्मों के करने से संकोच और लज्जा होती है

३५

तमोगुण है जिस से संसार में ख्याति होती है उसे राजस् कहते

३६

तामसी कर्म की गति

४२-४४

राजसी कर्म की गति

४७

सात्त्विक कर्म की गति

४८-४९

कृतकर्मफल वर्णनम् : २४२

ब्राह्मणत्व हरने से ब्रह्मराक्षस की गति

६०

पृथक्-पृथक् वस्तुओं की चोरी करने से भिन्न-भिन्न गति

६१

चोरों को असि पत्र आदि नरक के दुःख

७५

प्रवृत्ति और निवृत्ति कर्मों का वर्णन

८८

धर्मनिर्णय कर्तृक पुरुष वर्णनम् : २४६

स्वराज्य की यथार्थ परिभाषा

९१

राज्य शासन, राष्ट्र और सेना के लिए वेदधर्म की आवश्यकता

९७-१००

ब्राह्मण को तपस्या और ब्रह्मविद्या से मोक्ष

१०४

धर्म की व्यवस्था कौन दे सकता है

१०८

दस हजार पुरुषों की तुलना में एक आत्मज्ञानी का अधिक मान्य है

११३

आत्म ज्ञान अध्यात्म जीवन का निरूपण

११६-१२६

नारदीय मनुस्मृति

१. व्यवहार दर्शन विधि: : २५०

विषय	श्लोक
मनु प्रजापति आदि जिस समय राज्य कर रहे थे उस समय सब सत्यवादी थे और जब धर्म का ह्रास हुआ तो नियन्त्रण के लिए व्यवहार की प्रतिष्ठा की गई। इसी के लिए राजा दण्ड नीति का धारण करने वाला बनाया गया	१-२
व्यवहार के निर्णय में साक्षी और लेख दो बातें रक्खी गई। जब दो पक्षों में विवाद हो तो साक्षी और लेख का विधान हुआ	३-६
जितने प्रकार के व्यवहार और वाद-विवाद होते हैं उनका वर्णन	६-२०
विवाद का मौलिक कारण काम और क्रोध	२१
विवाद के निर्णय की विधि	२५-३२
अर्थ शास्त्र और धर्मशास्त्र के बीच मतभेद में धर्मशास्त्र की मान्यता	३३-३४
कोई भी सन्देह हो तो राजा द्वारा निर्णय कराये जाने का विधान	४०
विनयन का प्रकार	४४-५०
लेख और गवाही (साक्षी) की सत्यता की जांच	५१-६४
राजा को व्यवहार के निर्णय में सहायता के लिए संसद (जूरी) का विधान	६८-७२
सभासद् (निर्णय सभा के) का नियम। ठीक बात को छिपाकर या बढ़ाकर बोलने का पाप	७३
सभासद को बात बढ़ाने और छिपाने में पाप का संस्पर्श	७४
सभा का वर्णन	८०

२. ऋणादानं प्रथमं विवादपदम् : २५८

ऋण के सम्बन्ध में	१
समय चले जाने पर भी पुत्र को बाप का ऋण चुका देना चाहिए	८-९

स्त्री पति का ऋण नहीं देवे	१३
जो जिसका धन लेने वाला होता है उसे देना चाहिए	१४
निर्धन, अपुत्री स्त्री को ले जाने वाले को उसके ऋण देना चाहिए	१६
पुत्र-पति के अभाव में राजा का अधिकार	२३
पति के प्रेम से दी हुई वस्तु को कोई नहीं ले सकता है	२४
कौन कुटुम्ब में स्वतन्त्र है और कौन परतन्त्र है	२६-३२
छल से कमाया धन काला धन	४३
न्याय का धनागम	५०-५१
प्रत्येक जाति की अपनी-अपनी वृत्ति	५६-६४
तीन प्रकार के लिखित, साक्षी, भोग का प्रमाण	६५-७७
धरोहर का प्रमाण	७३
स्त्रीधन के रक्षा का विवरण	७५
मृत पुरुष का प्रमाण	८०-८६
रुपये का वृद्धि (व्याज का प्रकार) चक्रवृद्धि का वर्णन	८७-९४
धनी को ऋणी का लेख बतलाना चाहिए	९५-१००
प्रतिभू (जामिन) का वर्णन	१०३
लेख, लेखक के प्रकार, कितने प्रकार के होते हैं	११२-१२२
जो साक्षी के योग्य नहीं है — अशुद्ध साक्षी	१३४
शुद्ध साक्षी । साक्षी विषय	१३५-१५२
असाक्षी	१६३-१६७
उभय पक्ष (जिसकी स्वीकृति को मान लेने पर) एक भी साक्षी हो सकता है	१७१
झूठे साक्षी के मुख के चिह्न, (आकार आदि चेष्टा से)	१७२-१७७
झूठ साक्षी का पाप	१८६-१८८
सत्य साक्षी का माहात्म्य	१९०-२००
सत्य साक्षी की महिमा	२०३
तम साक्षी के सम्बन्ध में	२१५
शाप ऋषि और देवताओं पर भी लगता है	२१८

३. उपनिधिकं द्वितीयं विवाद पदम् : २७८

औपनिधि निक्षेप का वर्णन (धरोहर) ।

१-८

४. सम्भूय समुत्थानं तृतीयं विवाद पदम् : २७९

सम्भूय समुत्थान (Partnership) वाणिज्य व्यवसायी साझेदार

होकर व्यापारादि करते हैं —उसे सम्भूय समुत्थान कहते हैं

१-१६

५. दत्ताप्रदानिकं चतुर्थं विवाद पदम् : २८१

दत्ता प्रदानिक — जो नियम के विरुद्ध दिया है वह वापिस करने

का निदान क्या अदेय क्या वापिस लेना । आपत्ति पर भी

जो किसी को समर्पण कर दिया वह फिर नहीं दिया जाता

५

६. अभ्युपेत्याशश्रूषा पञ्चमं विवाद पदम् : २८२

शुश्रूषक ५ प्रकार, काम करने वाले ४ प्रकार

२

कर्म के भेद — शुद्ध कर्म करने वाला

५

आचार्य की शुश्रूषा आदि

१३-२३

दास के प्रकार

२४-२६

स्वामी के साथ उपकार करने वाला दासत्व से छुटकारा पाता है

२८

संन्यास से वापिस आने पर गृहस्थाश्रम में पुनः प्रवेश

३३

बलात् दास बनाये हुए के छुटकारे का उपाय

३६

७. वेतनस्यानपाकर्म षष्ठं विवाद पदम् : २८६

बकरी भेड़ पालने वाले अनुचरों पर विवाद

१४-१८

अनुचित सहवास का दण्ड

१९-२३

८. अस्वामि विक्रयः सप्तमं विवाद पदम् : २८८

जिस धन पर अधिकार नहीं है उसके बेचने के विषय में, पृथ्वी में

जो धन गड़ा है उस पर अधिकार

१

अस्वामि विक्रय धन चोरी के धन के तुल्य है

२

चोरी का धन लेने वाला दण्ड का भागी

५

पृथ्वी पर पड़ा या गड़ा धन राजा का होता है

६

९. विक्रीयासम्प्रदानमष्टमं विवादपदम् : २८९

बेचकर न देने का विवाद

१

सौदा करके क्रेता को न देने से स्थायी सम्पत्ति में हानि देनी पड़ती है । जङ्गम वस्तु न देने से उसका जो लाभ हो सो क्रेता को देना पड़ता है ४

सौदा करने के बाद मूल्य देने पर उपरोक्त नियम लागू होता है अन्यथा नहीं १०

१०. क्रीत्वानुशयो नवमं विवादपदम् : २६१

क्रेता खरीदने के पीछे ठीक न समझे तो उसी दिन वापिस देवे १
यदि दो दिन बाद वापिस दे तो ३० वां हिस्सा दे, अधिक दिन होने से उसका दूना दे । चार दिन बाद वह सौदा खरीददार का होता है ३

खरीददार गुण दोष भली प्रकार देखकर सौदा ले तब यह सौदा वापिस नहीं हो सकता ४

गाय को तीन दिन परीक्षा कर देखे, मोती हीरा इत्यादि ७ दिन, द्विपद १५ दिन, स्त्री १ माह और बीजों की १० दिन तक परीक्षा का नियम है । पहने हुए कपड़े वापिस नहीं हो सकते ५-८
धातु लोहा सोना इत्यादि की अग्नि में परीक्षा, सोना घटता नहीं, रजत दो पल, कांसा शीशा आठ प्रतिशत, तांबा पांच प्रतिशत घटता है १०

जितना काटकर बेचा जाता है १२-१३
काषाय वस्त्र खरीदने का विषय १५

११. समयस्थानपाकर्म दशमं विवादपदम् : २६२

समय का अनपाकरण (पाखण्डी से राजा बचकर रहे) १
प्रवृत्ति भी हो तो भी बचना चाहिए ७

१२. क्षेत्रविवाद एकादश विवादपदम् : २६३

ग्राम्य सीमा का निर्णय तथा ग्राम के गोपालों तथा वृद्ध लोगों से सीमा का निर्णय १-४
सीमा के विषय में झूठ कहने वाले को साहस का दण्ड ७-८
पुल बनाने पर विचार १४-१७

कोई यदि किसी के बाहर जाने पर उसके खेत पर अधिकार कर	
ले तो लौटने पर उसे वापिस दे देवे	२०-२१
खेत तीन पुस्त होने पर छूट नहीं सकता	२४
किसी के खेत में गाय जाय उसका निर्णय	२७-२८
हाथी घोड़े किसी के खेत में चले जायें तो अपराध नहीं	२८-३०
किसी के खेत में गाय चर जाय तो उसकी क्षतिपूर्ति निर्णय	३३-३४

१३. स्त्रीपुंसयोगो द्वादशं विवादपदम् : २६७

पाणिग्रहण होने पर स्त्री मानी जाती है	२-३
सगोत्र कन्या और वर का विवाह नहीं हो सकता	७
गुण-दोष न देखकर विवाह होने पर त्याग	९-१५
दूसरा पति करने का नियम	१६
कन्यादान करने वाले अधिकारियों का वर्णन	२०-२२
स्त्री संग्रहण के दण्ड	६२-६८
व्यभिचार दण्ड	७०-७५
पशुयोनि गमन दण्ड	७६
स्त्री गमन निषेध का वर्णन	८३-८८
स्त्री की निर्वासन की दशा का वर्णन	९१-९५
निर्दोष स्त्री-त्याग का दण्ड	९७
अन्य पति का विधान	९९-१००
वर्णसंकर का वर्णन	१०५
वर्णसंकरों की पृथक्-पृथक् जाति	१०६-११८

१४. दायविभागस्त्रयोदशं विवादपदम् : ३०८

दाय विभाजन का समय	१-४
जिस धन का विभाजन नहीं हो सकता	६-७
स्त्री धन का विवरण	८-९
सम विभाग अविवाहिता बहिन का	१३
पिता द्वारा विभाग की मान्यता	१५-१६
जो लोग पैतृक धन के अनधिकारी हैं	२०-२१
सम्मिलित कुटुम्ब के भाइयों का विभाग	२३-२५

स्त्रियों की रक्षा का विधान	३१-३२
असंस्कृत कन्या का पितृधन से सत्कार	३३
एक साथ रहने वाले भाई एक दूसरे के साक्षी नहीं होते	३६
बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन	४२-४५
पुत्राभाव में कन्या का अधिकार	४७

१५. साहसं चतुर्दशं विवादपदम् : ३१३

तीन प्रकार के साहस	२
उत्तम साहस	५
उत्तम साहस का वध, सर्वस्व हरण	७
महा साहसी का दण्ड	६
चोरी	११
चुराई हुई वस्तु का वर्णन	१२-२०

१६. वाग्दण्डपारुष्यं पञ्चदशं षोडशञ्च विवादपदम् : ३१५

वाक्पारुष्य दण्डपारुष्य (भद्दी गाली और अश्लील) तीन प्रकार

का दण्ड	१-३
दूसरे पर पत्थर फेंकना दण्ड पारुष्य	४
दण्ड पारुष्य का दण्ड	५-१३
जाति परत्व दण्ड का तारतम्य	१४-१७
जिस अङ्ग द्वारा पाप हुआ उसका छेदन	२३-२४
दण्ड पारुष्य में अपराधी को दण्ड	२५-२७

१७. द्यूतसमाह्वयंसप्तदशं विवादपदम् : ३१८

जूआ की परिभाषा	१
जूआ खेलने के अभियोग में साक्षियों का वर्णन	४
मिथ्या साक्षिकों को दण्ड	५-६

१८. प्रकीर्णकमष्टादशं विवादपदम् : ३१९

प्रकीर्ण विवाद की परिभाषा	१-४
शास्त्र निषिद्ध मार्गगामी को दण्ड	७
अन्याय से व्यवस्था की हुई का राजा द्वारा भंग	८-९
राजा द्वारा सर्वस्वहरण पर आजीविका त्याग	१२

नारदीय मनुस्मृति	१५
राजा के दण्ड न देने पर क्षति	१६-१७
दण्ड देने से राजा निर्दोष	१८
राजा की महिमा और आज्ञा पालन	२०-३०
राजा का धर्म	४७-४८
माङ्गलिक आठ चीजों का वर्णन	५१
उनकी प्रदक्षिणा का वर्णन	५२
प्रगट-अप्रगट चोरों का वर्णन	५३-५८
चारों चोरों को दण्ड	६०-६४
चोरों के सहवासियों को दण्ड	७०-७५
भिन्न-भिन्न प्रकार की चोरी का दण्ड	७६-८०
जिस-जिस अङ्ग द्वारा चोरी उसका छेदन	८२
आघात करने को शरीर के स्थान	८४-८५
ब्राह्मण को फांसी नहीं लगाना और देश से बहिष्कृत करना	८६
दुष्टों को दण्ड और अङ्गों पर निशान	१०१-१०६
गुप्त पापों का यमराज द्वारा दण्ड	१०८
दण्डों का प्रकार	१११
अर्थदण्ड के मान की व्यवस्था	११८

१६. दिव्य प्रकरणम् : ३३०

पांच प्रकार के दिव्यों का वर्णन	२
सत्य असत्य	३
तुला वर्णन	४
तुला निर्णय	५-८
तुला का विषय	९, २१
जल परीक्षा	२१, ३१
विष परीक्षा	३२, ३८
विष पान का वर्णन	३६, ४५

विशेष — नारदीय-स्मृति में अध्यायक्रम नहीं रहने से प्रकरण ही लिखा गया है।

अत्रिस्मृति

१. आत्मशुद्धिवर्णनम् : ३३६

अत्रि के प्रति पाप मुक्त्यर्थ ऋषियों का प्रश्न	१-३
प्राणायाम विधि तथा उससे लाभ	४-१०
गायत्री मन्त्र प्रणव-विधान	१५

२. सर्वपाप विमुक्तिः, गायत्रीमन्त्रवर्णनम् : ३३८

मन, वाणी और कर्म से किए हुए पापों की मुक्ति	१-३
कुष्माण्डसूक्त आदि से पापों का शोधन	४-६
अघमर्षण सूक्त से स्नान	८
उपांशु जप माहात्म्य	१०-११
गायत्री जप माहात्म्य	१२-१६

३. पूर्वाध्यायरूपं, सर्वपाप प्रायश्चित्तम् : ३३९

वेदाभ्यास का माहात्म्य	१-६
पुराण, इतिहास का माहात्म्य	७-८
शतरुद्री आदि सूक्तों का माहात्म्य	९-१५
दान माहात्म्य	१६-१७
सुवर्ण, तिलादि दान माहात्म्य	१८-२३

४. रहस्यपाप प्रायश्चित्तमगम्यागमन प्रायश्चित्तम् : ३४२

रहस्य पापों का प्रक्षालन	१-१०
--------------------------	------

५. विविध प्रकरण वर्णनम् : ३४४

भोजन के समय मण्डल का विधान	१-३
अन्न देने के अधिकारियों का वर्णन	४
भोज्यान्न के भिन्न-भिन्न अधिकारियों का वर्णन	५-१७
भोजन और जलपान का नियम	२०-२३

अत्रिस्मृति	१७
भोजन के समय पाद प्रक्षालन	२५
भोजन के नियम	२६-२८
सूतक स्नान विधि	३२-३३
शुद्धि विधान	३८
सूतक दिन निर्णय	४१-४२
सूतक के विषय में वर्णन	४३-४६
कन्या ऋतुमती होने पर शुद्धि विधान	४७-७०
जन्म के दिन ग्रहण होने पर पूजा विधि	७१-७५

स्वर्गसुख प्राप्ति फलवर्णनम् : ३५१

दान से स्वर्ग गति की प्राप्ति	१-५
-------------------------------	-----

अत्रिसंहिता

धर्मशास्त्रोपदेश वर्णनम् : ३५२

विषय	श्लोक
संहिता श्रवण माहात्म्य	१-७
गुरु के सत्कार न करने से कुक्कुरयोनि प्राप्ति	१०
शास्त्र अपमान से पशुयोनि	११
स्वकर्तव्यनिष्ठ की प्रशंसा	१२
प्रत्येक वर्ण के कर्म	१३-२०
विद्वानों के कार्य में मूर्खों की नियुक्ति करने पर क्षति	२३
विद्वत्पूजा वर्णन	२७
राजा के पञ्च यज्ञ—दुष्ट को दण्ड, सज्जन पूजा, न्याय से कोष- वृद्धि, निष्पक्ष न्याय, राष्ट्र वृद्धि	२८
शौच लक्षण	३१-३५
ब्राह्मण कर्तव्य	३६-३६
दान माहात्म्य	४०-४१
इष्टापूर्ति के लक्षण	४३-४४
नियम की अपेक्षा यम का सेवन	४७
नियम	४६
जिनको उद्देश्यकर स्नान किया जाता है उसका फल	५०-५१
गया श्राद्ध तथा गया श्राद्ध का माहात्म्य	५२-५८
आहार शुद्धि, स्थान शुद्धि, वस्त्र शुद्धि आदि का निर्देश	५६-८१
सूतक आशौच आदि का प्रायश्चित्त	८३-१११
कुच्छ, सान्त्वन, चान्द्रायण व्रत का विधान	१११-१३५
स्त्री को जप व्रत का निषेध केवल पति परायणता	१३५-१३८
लोहपात्र में भोजन करने से पतित	१५२

अत्रिसंहिता १६

भिक्षुक की परिभाषा १६५

महापातकियों की गणना १६६

शुद्धिप्रकरणम् : ३६७

विभिन्न पापों का प्रायश्चित्त और शुद्धि का पृथक् वर्णन १६७-२०८

शुद्धिस्पर्शादि प्रायश्चित्तम् : ३७१

कृच्छ्र व्रत और शौच के विभिन्न प्रकार २०९-२२६

प्रायश्चित्तम् : ३७३

चाण्डालका जल पीने से पञ्चगव्य से शुद्धि २३२

जल शुद्धि का वर्णन २३७

रजस्वला स्पर्श, भिन्न-भिन्न पापों का प्रायश्चित्त एवं अशौच वर्णन २३८-२८०

स्पर्शस्पर्श एवं उच्छिष्ट भोजन का वर्णन २८२-२९०

पतित अन्न चाण्डाल अन्न, कन्या अन्न, राजान्न भक्षण-

दोष वर्णन २९१-३०५

श्राद्ध में भोजन शुद्धि वर्णन ३०६-३१०

अंगुली से दातौन का निषेध ३१४

शौच, मैथुन, स्नान, भोजन में मौन रखना ३२१

दान फल वर्णनम् : ३८२

उर्ध्वमुखी गोदान माहात्म्य ३३१

विद्यादान माहात्म्य ३३७-३३८

दानपात्र का वर्णन ३३९-३४१

श्राद्धफलवर्णनम् : ३८४

श्राद्ध में भोजन कराने योग्य ब्राह्मणों का वर्णन ३४२-३५४

श्राद्ध करने का माहात्म्य, न करने से पाप ३५५-३६०

श्राद्ध माहात्म्य एवं श्राद्ध का समय ३६१-३६८

निन्द्यब्राह्मण वर्जनवर्णनम् : ३८६

ब्राह्मण की संज्ञा देव ब्राह्मण, विप्र ब्राह्मण, शूद्र ब्राह्मण, म्लेच्छ

ब्राह्मण, विप्र चाण्डाल आदि ३७२-३८०

श्राद्ध में वर्ज्य ब्राह्मण ३८४

विद्वान् होने पर भी पतित ब्राह्मण की पूजा नहीं की जाती ३८५-३८६
 खरीदी हुई स्त्री के पुत्र श्राद्ध करने योग्य नहीं होते हैं ३८७

धर्मफलवर्णनम् : ३८८

दीपक की छाया, बकरी की धूलि की शुद्धि ३९०

स्तान के स्थानों का वर्णन ३९१

पिण्डदान के स्थान एवं समय का वर्णन ३९४

अत्रि संहिता का माहात्म्य ३९५

विशेष—इस संहिता में भी नारदी-स्मृति की तरह छोटे-छोटे
 प्रकरण हैं।

प्रथम विष्णुस्मृति

१. शौनकप्रति राज्ञः प्रश्नोक्तिः, शौनकस्योत्तरम् : ३८९

शौनक के प्रति ऋषियों का प्रश्न कि अन्तकाल में ध्यान करने से
 मोक्ष होता है १-३

युधिष्ठिरस्य पितामहं प्रति प्रश्नः, भीष्मस्य पुरातन वार्ताकथन-
 मोक्षकारवर्णनं, विष्णोः प्रसादन विधि वर्णनम्, ईश्वरवर्णनम्,
 वरप्राप्तिवर्णनम्, नारायणवर्णनञ्च

भीष्म के प्रश्न पर विष्णु भगवान् का उत्तर, नारायण नाम का
 माहात्म्य

४-६८

द्वादशाक्षर मन्त्र का माहात्म्य

१००-१११

विष्णुस्मृति

१. सृष्ट्युत्पत्तिवर्णनम् : ४०१

ब्रह्मा की उत्पत्ति से सृष्टि रचना, वराह द्वारा पृथिवी उद्धार, देव सृजन, जब विष्णु अन्तर्धान हो गये तब कश्यप से पृथिवी ने पूछा मेरी गति क्या होगी ? पृथिवी द्वारा विष्णुस्तुति ।

२. सवर्णाश्रम वृत्तिधर्म वर्णनम् : ४०७

वर्णाश्रम की रचना उनके मन्त्रों द्वारा श्मशान तक की क्रिया, वृत्ति, जाति पर विचार ।

३. राजधर्म वर्णनम् : ४०८

राजधर्म, ब्राह्मणों से कर नहीं लेने का वर्णन ।

४. राजधर्म वर्णनम् : ४१२

प्रजा के सुख से सुखी और दुःख से दुःखी रहने से राजा को स्वर्ग प्राप्ति ।

५. राजधर्मविधाने दण्डवर्णनम् : ४१३

महापातक और उनके दण्ड का वर्णन, पापियों के दण्ड का वर्णन, दूसरी योनि का वर्णन, विवाद का वर्णन, कूट साक्षियों का वर्णन, तीन पुस्तक भोगने पर जगह का वर्णन, चोर, परस्त्रीगामी, लम्पट जिसके राज्य में न हों उस राजा का इन्द्रत्व वर्णन ।

६. ऋणदान वर्णनम् : ४२१

ऋणी धनी का व्यवहार और उसकी व्यवस्था का वर्णन, स्वर्ण की द्विगुण की वृद्धि, अन्न की त्रिगुण की वृद्धि इनके निर्णय शास्त्र साक्षी । सम्पत्ति लेने वाले को ऋणदान आवश्यक ।

७. सलेखसाक्षिवर्णनम् : ४२३

लिखित का वर्णन, राज साक्षी, गवाही, असाक्षिक वर्णन, संदेहास्पद लेख का निर्णय ।

८. वर्जितसाक्षिलक्षणवर्णनम् : ४२४

जो साक्षी में निषेध हैं उनका वर्णन, कूट साक्षियों का वर्णन, शुद्ध साक्षियों के कहने पर निर्णय करना । जिस विवाद में कूट साक्षी होना निश्चित हो जाय वह विवाद समाप्त कर देना ।

९. समयक्रियावर्णनम् : ४२६

समयक्रिया राजद्रोहादि में शपथ कराने का विवरण, अभियुक्त को दिव्य कराने की प्रक्रिया, सचैल स्नान कराकर तब देवता और ब्राह्मण के आगे शपथ करावे ।

१०. घट (तुला) धर्म वर्णनम् : ४२७

घट या तुला—इसमें पुरुष को बिठावे और उससे यह कहलावे कि ब्रह्म हत्यारे को झूठी गवाही देने में जो नरक होते हैं वह इस तुला में बढ़ें उसके प्रार्थना के मन्त्र बोले । यदि तुला में तौल बढ़ जावे तो उसको सच्चा समझे, यदि घट जावे तो उसे झूठा समझे ।

११. अग्निपरीक्षा वर्णनम् : ४२८

अग्निपरीक्षा—सोलह अङ्गुल के सात मण्डल बनावे और उन मण्डलों को दो हाथ के सूत्रों से वेष्टित कर देवे । पचास पल लोहे को आग में गरम करके उसे हाथ में लेकर सात मण्डलों पर चले फिर लोहे को नीचे रख देवे । जिसका हाथ न जले वह अतपराधी यदि जल जावे तो अपराधी । इसके नीचे अग्नि के मन्त्र लिखे हैं ।

१२. उदकपरीक्षा वर्णनम् : ४३०

उदक (जल में परीक्षा) वहां पर एक आदमी धनुष से एक तीर पानी में डाले । वह आदमी कूदकर उस तीर को लावे । जो पानी के नीचे न दिखलाई दे वह शुद्ध, जो दिखाई दे वह अशुद्ध और मन्त्र वहीं लिखे हैं ।

१३. विषपरीक्षा वर्णनम् : ४३१

विष की परीक्षा—हिमालय के विष को सात जौं के बराबर घी में भिगोकर उसे दिखलावे । जिस पर जहर न चढ़े उसे शुद्ध । इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं ।

१४. कोषप्रकरण वर्णनम् : ४३१

कोषमान — किसी उग्रदेवता के स्नान का उदक तीन अञ्जुली वह पीवे । दो-तीन सप्ताह तक उसके घर में कोई रोग, मरण हो जाय तो उसे अशुद्ध समझे । इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं ।

१५. द्वादश पुत्र वर्णनम् : ४३२

बारह प्रकार के पुत्र—सबसे पहले औरस, क्षेत्रज, पुत्रिकापुत्र, भाई और पिता के न होने पर लड़की, पुनर्भव, कानीन, गूढोत्पन्न, सहोद, दत्तक, क्रीत, स्वयं उपागत, अपविद्ध, परित्यक्त ये बारह प्रकार के पुत्र बतलाये गये हैं । इस अध्याय के अन्तिम श्लोकों में बतलाया है कि पुन्नाम नरक से जो पिता को बचाता है उसे पुत्र कहते हैं ।

१६. जातिवशात्पुत्रभेद वर्णनम् : ४३४

समान वर्णों से जो पुत्र उत्पन्न होते हैं वही पुत्र कहे जाते हैं । अब अनुलोम जो माता के वर्ण से प्रतिलोम ये अनार्य लड़के कहे जाते हैं । उनकी संज्ञा और संकर जाति का विवरण ।

१७. पुत्राभावे सम्पत्ति विभाग(ग्राह्य)वर्णनम् : ४३४

विभाग—अगर पिता विभाग करे तो अपनी इच्छा से कर सकता है । सभी उपाजित का विभाग करे और पति के विभाग में स्त्री का पूर्ण अधिकार है ।

१८. ब्राह्मणस्य चातुर्वर्ण्ये जातपुत्राणां दायविभाग

वर्णनम् : ४३६

ब्राह्मण का चारों वर्णों में विवाह होता है और जो बटवारे का कहा गया है वह विभाग बतलाया गया है ।

१९. शवस्पर्शी (दाहसंस्कारार्थ) पुत्रवर्णनम् : ४३८

ब्राह्मण के अग्निदाह का निर्णय किया है ।

२०. दिनरात्रिकालवर्षादीनां वर्णनम् : ४३६

देवताओं का उत्तरायण दिन, दक्षिणायन रात्रि है। सम्बत्सर अहोरात्र है इस प्रकार काल का विभाग बताकर कर्म विपाक बताया गया है और पितृ-क्रिया बताई गई है।

२१. अशौचानन्तरं श्राद्धादि वर्णनम् : ४४३

अशौच पूरा होने पर पितृ और अग्निहोत्र वार्षिक श्राद्ध, कुम्भदान आदि का विवरण है।

२२. अशौच निर्णय वर्णनम् : ४४४

अशौच किस जाति का कितने दिन का होता है। किसी का दस दिन का किसी का बारह दिन का।

२३. अन्नद्रव्यादि शुद्धिवर्णनम् : ४४६

वर्तन और अन्नादि की शुद्धि के सम्बन्ध तथा कूप आदि के शुद्धि के विषय— इसमें गाय के सींग का जल और पञ्चगव्य से अन्न में शुद्धि बताई है।

२४. विवाह वर्णनम् : ४५३

ब्राह्मण को चार जाति से विवाह, क्षत्रिय को तीन, वैश्य को दो, शूद्र को एक जाति से विवाह बतलाया है। सगोत्र से विवाह का निषेध। माता से पंचम, पिता से सप्तम कुल में विवाहग्राह्य है। स्त्री के लक्षण और आठ प्रकार के विवाह। अन्तिम में ब्राह्म विवाह का माहात्म्य।

२५. स्त्रीणां संक्षिप्त धर्म वर्णनम् : ४५५

इसमें संक्षिप्त से स्त्रियों के धर्म बताए हैं।

२६. अनेक पत्नीत्वे सति स्वधर्माद्यस्त्री प्राधान्य

वर्णनम् : ४५६

जिसकी सवर्णा बहु भार्या हो तो वह धर्म काम ज्येष्ठ पत्नी से करे। हीन जाति की स्त्री से विवाह करने पर उससे उत्पन्न लड़के से दैव कार्य और पितृकार्य नहीं हो सकता।

२७. निषेकादुपनयनपर्यन्तदशसंस्कार वर्णनम् : ४५७

गर्भाधान, पुंसवन संस्कार आदि का वर्णन—उपनयन ब्राह्मण को आठवें, क्षत्रिय को ग्यारहवें और वैश्य को बारहवें वर्ष में करना चाहिए।

२८. गुरुकुले वसन् ब्रह्मचारिणां सदाचार वर्णनम् : ४५८

इसमें ब्रह्मचारी के नियम, गुरुकुल में रहना, गुरु की आज्ञा पर चलना, वेदों को पढ़ना इत्यादि वर्णन किया गया है ।

२९. आचार्य (गुरु) कर्तव्यता विधान वर्णनम् : ४६०

इसमें आचार्य, ऋत्विक् के कर्तव्यों का वर्णन है ।

३०. वेदाध्ययनेऽनध्यायादि वर्णनम् : ४६१

इसमें श्रावण महीने में उपाकर्म करने का विधान और अन्त में उपाकर्म करने का और शिष्य को उत्पन्न करने वाले पिता से दीक्षा देने वाले गुरु का विशेष महत्त्व और शिष्य के लिए आमरण गुरु सेवा का निर्देश है ।

३१. मातापितृ गुरुणाम् शुश्रूषा विधानवर्णनम् : ४६३

मनुष्य के तीन अति गुरु होते हैं—माता, पिता, आचार्य इनकी नित्य सेवा और उनकी आज्ञापालन का वर्णन है ।

३२. राजा-ऋत्विक्-अधर्मप्रतिषेधो-उपाध्याय-पितृ-व्यादीना-
माचार्यबद्धव्यवहारवर्णनम्, तेषां पत्न्योऽपि मातृवत् माननीया-
स्तच्छ्रुतिः : ४६४

राजा, ऋत्विक्, उपाध्याय, चाचा, ताऊ, मामा, नाना, श्वशुर और ज्येष्ठ भ्राता इनका सम्मान करना चाहिए । अन्त में बतलाया है कि ये क्रम से विद्या, कर्म, अवस्था, बन्धुत्व, धन इनके मान के स्थान हैं ।

३३. पुंसां के ते शत्रवस्तद्विचार वर्णनम् : ४६६

काम, क्रोध, लोभ ये तीन मनुष्य के शत्रु हैं और नरक के द्वार बताये गये हैं ।

३४. मात्रादि गमन पातक परामर्श वर्णनम् : ४६६

मातृ गमन, दुहिता गमन, स्वसा गमन करने वाले अति पातकी होते हैं । उन्हें आग में जलाना चाहिए ।

३५. महापातक परामर्श वर्णनम् : ४६७

महापातक—ब्रह्महत्या, सुरापान, सुवर्णचोरी और गुरुद्वार गमन और एक वर्ष तक इनके साथ रहता है इनका वर्णन है ।

३६. ब्रह्महत्या समाः पातकाः : ४६७

इसमें झूठी गवाही देने वाला, गर्भघाती आदि के पाप बतलाये हैं । जो महापातक के समान पाप होते हैं वे बतलाए हैं ।

३७. उपपातक वर्णनम् : ४६६

उपपातक—झूठ कहना, वेदों की और गुरु की निन्दा सुनना इत्यादि उपपात बतलाये हैं ।

३८. सक्तव्यता जातिभ्रंशकरण प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४६६

जातिभ्रंशकरण—जैसे पशु में मैथुन करना इत्यादि ।

३९. जीवहिंसाकरणे (संकरीकरणे) दोषस्तत् प्रायश्चित्त

वर्णनम् : ४७०

संकरीकरण—पशु आदि की हिंसा ।

४०. अपात्रीकरण (आदानपात्रं) तद्वर्णनम् : ४७०

अपात्रीकरण नीच आदमियों से धन, दान लेना और चक्रवृद्धि आदि से रुपया लेना ।

४१. मलिनीकरणं तत्प्रशमनवर्णनम् : ४७०

मलिनीकरण के पाप—पक्षी आदि को मारना ।

४२. अकर्तव्या विषये (प्रकीर्ण प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४७१

ब्राह्मण (ब्रह्म नैष्ठिक) के आज्ञा से प्रकीर्ण पातक बड़ा या छोटा जो हो सो प्रायश्चित्त करे ।

४३. नरकाणां संज्ञां तेषां वर्णनम् : ४७१

नरक, तामिस्र, अन्धतामिस्रादि—जो पाप करके प्रायश्चित्त नहीं करते उन्हें मरने के बाद इस नरक में जाना पड़ता है ।

४४. नरकस्थानां यमयातना निर्णयः : ४७३

पापी आदमियों को नरक जाने के अनन्तर तिर्यग् योनि, अति पातकों को स्थावर, और महापातकी को कृमि, उपपातकी को जलज योनि और जातिभ्रंश को जलचर योनि इत्यादि ।

जो दूसरे के द्रव्य को हरण करता है उसे अवश्य सर्प की योनि प्राप्त होती है ।

४५. नरकोत्तीर्ण तिर्यग्योन्योर्मनुष्ययोनि वर्णनम्—

पापकर्मणा कर्मविपाकेन मनुष्याणां लक्षणानि (चिह्न)

वर्णनम् : ४७५

नरक भोगने के बाद और तिर्यग् योनि भोगने के बाद जब मनुष्य योनि में आता है तो उसके क्या निशान हैं । यथा—अतिपातकी कुष्ठी, ब्रह्म-हत्यारा यक्षमारोगी, गुरुपत्नीगामी दुष्कर रोग से ग्रसित रहते हैं ।

४६. कृच्छ्रादि व्रतविधान वर्णनम् : ४७६

कृच्छ्रव्रत—तीन दिन तक भोजन नहीं करना । सिरसे स्नान करना इसी तरह पर प्राजापत्य—तप्तकृच्छ्र, शीतकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, उदककृच्छ्र, मूलकृच्छ्र, श्रीफलकृच्छ्र, पराक, सान्तपन, महासान्तपन, अतिसान्तपन, पर्णकृच्छ्र—इनका विधान आया है ।

४७. चान्द्रायण व्रतवर्णनम् ग्रासार्थान्न निर्णय वर्णनम् : ४७७

चान्द्रायण के विधान—इसमें यति चान्द्रायण और सामान्य चान्द्रायणादि का वर्णन आया है ।

४८. अन्नदोषार्थं यवेन प्रायश्चित्तम् : ४७८

अपने लिए यव भिगोकर उसकी तीन अंजुली पीवे उससे वेश्या का अन्न, शूद्र के अन्न का दोष हट जाता है ।

४९. मार्गशीर्षशुक्लैकादश्युपाख्यान वर्णन, सर्वपाप निवृत्यर्थं

वासुदेवार्चन वर्णनम् : ४७९

मार्गशीर्ष शुक्ला ११ में उपवास कर १२ में भगवान् वासुदेव का पूजन पुष्प, धूप आदि से करे । एकादशी व्रत करने से बहुत पाप नष्ट हो जाते हैं । श्रवण नक्षत्र युक्त एकादशी वा पूर्णिमा को एक वर्ष तक व्रत करने से पाप नष्ट हो जाते हैं ।

५०. ब्रह्म, गोवधादि प्रायश्चित्तार्थं वने पर्णकुटी विधान

वर्णनम् : ४८०

व्रत का वर्णन—वन में झोपड़ी बनावे और तीन बार स्नान करे और ग्राम-ग्राम में भीख मांगे और घास पर सोवे तथा अपने पाप को कहता जावे । रजस्वला आदि गमन स्त्री आदि पाप नष्ट हो जाते हैं । फल के वृक्षादि, गुल्मादि काटने के पाप भी इस व्रत से नष्ट हो जाते हैं ।

५१. सुरापः सर्वकर्मस्वनर्हः मद्यमांसादि निषेधं तच्च

सर्व प्रायश्चित्तवर्णनम् : ४८२

सुरापान करने वाला किसी कार्य को या मातृ-पितृ श्राद्ध कर वह एक वर्ष तक कर्णों को खावे एवं चान्द्रायण व्रत करे । प्याज, लहसुन, वानर, खर, उष्ट्र, गोमांस के भक्षण करने पर भी वही व्रत है । द्विजातियोंको इस व्रत के पश्चात् फिर संस्कार करें । शुष्क मांस के खाने पर भी उपरोक्त

व्रत करे। अभक्ष्य भक्षण करने से जो पाप होते हैं वे सभी इस व्रत से नष्ट हो जाते हैं।

५२. स्वर्णस्तेयिनां तथान्यान्य द्रव्य हर्तृणां प्रायश्चित्त

वर्णनम् : ४८७

सुवर्णचोरी तथा अन्यान्य द्रव्यचोरी के प्रायश्चित्त का वर्णन है।

५३. अगम्यागमने दोषनिरूपणं प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४८८

अगम्या-गम्य के विषय में प्रायश्चित्त

५४. यः पापात्मा येन सह युज्यते तत्प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४८९

जो जिस पापी के साथ रहता है उसे भी वही प्रायश्चित्त बतलाया है।

५५. रहस्य प्रायश्चित्त विधान वर्णनम् : ४९२

रहस्य पापों का प्रायश्चित्त, प्रणव का जप, हविष्यांग और प्राणायामादि बतलाया है।

५६. वेदोद्धृतपवित्र मन्त्र वर्णनम् : ४९०

इसमें जप, होम, अघमर्षण, नारायणी सूक्त और पुरुषसूक्त इत्यादि का माहात्म्य बतलाया गया है।

५७. अभोज्यप्रतिग्राह्योस्त्याज्य वर्णनम् : ४९४

इसमें त्याज्य मनुष्यों का निर्देश, त्याज्य पुरुषों से दान लेने से ब्राह्मणों का तेज नष्ट हो जाता है।

५८. गृहस्थाश्रमिणस्त्रिविधोऽर्थोपार्जन वर्णनम् : ४९५

इसमें गृहस्थी के तीन प्रकार के अर्थ बतलाये हैं। शुल्क सबल और असित, जो अपनी वृत्ति से धनोपार्जन करते हैं उन्हें शुल्क, दूसरों को ठगकर अपना व्यापार करते हैं उन्हें सबल, तीसरे रिश्वत और सट्टाआदि से रोजगार करने वाले और व्याज खाने वाले को असित कहते हैं। जिस तरह जो रुपया आता है उसकी गति वैसी ही होती है।

५९. गृहस्थाश्रमिणां कर्तव्यमग्निहोत्रश्च वर्णनम् : ४९६

गृहस्थाश्रमी नित्य हवन करे इस तरह लिखे हुए आचार के अनुसार हवन करने वाले की प्रशंसा की गई है।

६०. सर्वेषां नित्यशौच ब्राह्मणमुहूर्तादि कृत्यवर्णनम् : ४९८

६१. दन्तधावन प्रकरण वर्णनम् : ४९९

६२. द्विजातीनां प्राजापत्यादि तीर्थ वर्णनम्

६३. योगकर्म विधानम्-ईश्वर प्राप्ति, यात्रा प्रकरणे- दृष्टादृष्ट वर्णनम्—	५००
६४. स्नानाद्याचार कृत्य वर्णनम्	५०२
६५. स्नानान्तर कर्तव्यता-देवपूजावर्णनम्	५०४
६६. देवपितृकर्म विधानं, तत्कर्मणि त्याज्य वर्णनम्	५०५
६७. अग्निस्थापनमतिथ्याद्यनेक विचार वर्णनम्	५०६
६८ चन्द्रसूर्योपरागेकर्तव्यता त्वनेक प्रकरणे त्याज्य- वर्णनम्	५०६
६९. स्वस्त्रियामपि गमने निषेध तिथिः-शयन विचार वर्णनम्	५१०
७०. शयनाद्यनेक विवेक वर्णनम्—	५११
७१. केन सह निवासो न कर्तव्यः आचार विषयश्च वर्णनम्	५११
अध्याय ६० से ७१ तक गृहस्थाश्रमी के प्रत्येक दैनिक और पर्व के, घर के उत्सव के, जीवन यात्रा के, आचार, सदाचार, व्यवहार की शिक्षा दी गई है ।	
७२. दमः (इन्द्रिय निग्रहः) वर्णनम्	५१४
७३. श्राद्धवर्णनम्—	५१४
७४. अष्टका श्राद्ध विधि वर्णनम्—	५१७
७५. श्राद्धाधिकारी कस्तन्निर्णयश्च, पितरिजीवति श्राद्ध वर्णनम्	५१८
७६. अमायां तथान्यदिवसेऽष्टकाश्राद्धविमर्शः श्राद्ध- काल वर्णनम्	५१८
७७. काम्यश्राद्ध विषय वर्णनम्	५१९
७८. नक्षत्र विशेषेण श्राद्ध वर्णनम्, सदा रविवारे श्राद्ध निषिद्ध वर्णनम्	५१९
७९. जन्मकुशादि नियमः, श्राद्धे प्रशस्त वस्तूनि वर्णनम्	५२१
८०. श्राद्धे पितृणां प्रधान वस्तूनि, पितृगीता वर्णनम्	५२२
८१. श्राद्धान्नं पादाभ्यां न स्पृशेत्	५२३

८२. श्राद्धे ब्राह्मण परीक्षा वर्णनम्, त्याज्ये ब्राह्मण वर्णनम्, हीनाधिकाङ्गान् वर्जयेत्	५२३
८३. श्राद्धे (पङ्क्तिपावन) प्रशस्त ब्राह्मण वर्णनम्	५२४
८४. केषां सन्निधौ श्राद्धं न कर्तव्यम् तद्वर्णनम्	५२५
८५. पुष्करादि तीर्थेषु श्राद्धमहत्त्व वर्णनम्	५२५
८६. श्राद्धे वृषोत्सर्ग वर्णनम्	५२६

अध्याय ७२ से ८६ तक श्राद्ध का वर्णन है ।

८७. दान फलवर्णने-वैशाखेकृष्णमृगाजिनदान वर्णनम्, कृष्णाजिनाद्यासन विधान विधि वर्णनम्	५२८
८८. गोदान महत्त्व वर्णनं	५२९

अध्याय ८७, ८८ में दान वर्णन—उर्ध्वमुखी गाय का दान ।

८९. सर्वदेवानाम्मध्येऽग्नेः प्राधान्यत्वं कार्तिके सर्वं पाप विमुक्ति वर्णनम्	५२९
---	-----

इसमें कार्तिक मास में जितेन्द्रिय व्रत करता हुआ जो स्नान करता है वह मनुष्य सब पापों से छूट जाता है ।

९०. मार्गशीर्षादि द्वादशमासान्निर्देशदान महत्त्व वर्णनम् ५२९
मार्गशीर्ष के चन्द्रमा के उदय में सुवर्ण दान करे उसे रूप और सौभाग्य का लाभ होता है । पौष की पूर्णमा में स्नान और दान कर कपड़े देवे तो पुष्ट होता है । माघ इत्यादि मासों के पूर्णमासी का व्रत, दान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं ।

९१. कूप तड़ाग खनन तदुत्सर्ग विधानं, तल्लक्षणञ्च, तन्निर्देश वस्तु दान महत्त्व वर्णनम्	५३२
---	-----

कुआं और तालाब के दान करने वाले सब योनियों में तृप्तरहता है । ब्राह्मण के घर या रास्ते में वृक्ष लगाने से वही फल उसके घर में पुत्र रूप से उत्पन्न होते हैं । जो उनकी छाया में बैठते हैं वे उनके मित्र और सहायक होते हैं । कूपतड़ाग और मन्दिर का जीर्णोद्धार करने वाले को नये बनाने का फल होता है ।

९२. सर्वदानेष्वभय दान महत्त्व वर्णनम् : ५३३

सब दान से बड़ा अभय दान है । इसके साथ गोदान, सुवर्ण, लवण, धान्य, आदि दान का महत्त्व वर्णन आया है । दान केपात्र—गुरु, ब्राह्मण, दुहिता और जामाता हैं ।

६३. दानाधिकारी ब्राह्मण लक्षण वर्णनम् : ५३५

दान के अधिकारी ब्राह्मणों के लक्षण

६४. गृही कदा वनाश्रमी भवेत्तन्निणयः, आचारो

पदेश वर्णनञ्च : ५३६

गृहस्थी बाल सफेद हो जाय तो वानप्रस्थ को चले जाय या पौत्र हो जाए तो वान प्रस्थ को चला जाय ।

६५. स कर्तव्यता-वानप्रस्थाश्रम वर्णनम् : ५३६

वानप्रस्थ में तपस्या से शरीर को सुखा देवे ।

६६. सकर्तव्या संन्यासाश्रम वर्णनम् : ५३७

तीनों आश्रमों में यज्ञ करने का विधान और संन्यासाश्रम का वर्णन है ।

६७. संन्यासीनां नियमः, तत्त्वानां विमर्शः, विष्णु-

ध्यान वर्णनम् : ५४०

संन्यास के नियम—उसके शब्द रूप रस के विषय से हटने का नियम, इस शरीर को पृथिवी समझो, चेतना को आत्मा समझें, किस संन्यासी को किस विचार से ध्यान करने का प्रकार, पुरुष शब्द का विषय, ज्ञान, ज्ञेय, गम्य ज्ञान का विचार ।

६८. जगत्परायण नारायण वर्णनम्, अष्टाङ्ग नम-

स्कारादि विधानविधिः, वसुमती नारायणं

प्रति प्रार्थयति : ५४२

भगवान् वासुदेव का पृथिवी में चिन्तन करना ।

६९. लक्ष्मी वसुधा सम्बाद वर्णनम्, लक्ष्मी निवास

स्थान वर्णनम् : ५४४

पृथिवी का प्रार्थना और पूजन, लक्ष्मी का निवास—आंवला के वृक्ष, शंख, पद्म में, पतिव्रता, प्रियवादिनी स्त्रियों में लक्ष्मी का निवास है ।

१००. वसुधा प्रति नारायणस्योक्तिः, एतद्धर्मशास्त्रस्य

माहात्म्य वर्णनम् : ५४६

धर्म शास्त्र का माहात्म्य ।

सम्भवर्त्तस्मृति

ब्रह्मचर्यवर्णनमाचारश्च संक्षेपेण धर्म वर्णनम् : ५४७

वामदेवादि ऋषियों का सम्बर्त्त से विनम्र प्रश्न	१-३
धर्म्य देश जहां कम संस्कार करने का विधान है	४
ब्रह्मचर्य का विधान तथा सन्ध्योपासना वर्णन	५-३४

कन्याविवाहवर्णनमाशौचवर्णनम्, गोदानमाहात्म्यं : ५५०

विवाह प्रकरण	३५-३६
अशौच शुद्धि	३७-३८
प्रेत-कर्म	३९
दसवें दिन शुद्धः, एकादश दिन श्राद्ध कर्म द्वादश दिन शय्या दान	४५-४६
विविध दान माहात्म्य	५०-६५
कन्या का विवाह काल	६६
दान का विधान और प्रत्येक दान का माहात्म्य	६७-६९
गृहस्थ की दिनचर्या	६७

आचारव्यवहारयोश्च (दिनचर्या) वर्णनम्, वानप्रस्थ धर्म, यतिधर्म, पापानां प्रायश्चित्तं, सुरापान गोवध और जीवहत्या, प्रायश्चित्तं और अगम्यागमन, दुष्टानां-निष्कृति वर्णनम्, अस्पृश्य-स्पर्श वर्णनम्,

अभक्ष्य-भक्ष्ये प्रायश्चित्तं वर्णनम् : ५५६

वानप्रस्थ धर्म	६८-१०१
यति के धर्म	१०२-१०७
महापापों की गणना और पापों का प्रायश्चित्त, उपपाप, संकीर्ण आदि सब पापों का प्रायश्चित्त	१०८-२००

दान, उपवास ब्राह्मणभोजन गायत्री मन्त्र-जप तथा प्राणायाम : ५६७

उपवास व्रत, ब्राह्मण भोजन कराने की तिथियां

२०३

गायत्री जप, प्राणायामादि

२०४-२२७

दक्षस्मृति

१. आश्रमवर्णनम् : ५६६

बाल्यकाल में भक्ष्याभक्ष्य का दोष नहीं होता

१-५

छपनयन संस्कार नियमाचरण

६-१४

२. ब्राह्मणमुहूर्ताहिनचर्याकृत्य, वैदिक कर्म तथा

गृहस्थाश्रमगुणवर्णनम् : ५७१

उषा-काल से दिन पर्यन्त कार्यक्रम का विधान दैनिक कार्य की सूची

१-१०

उषा काल में स्नान सन्ध्या का माहात्म्य, सन्ध्या उपस्थान वर्णन

११-१६

हवन ब्रह्मयज्ञ का समय

२०-३०

दूसरों को भोजन देने से मनुष्यता होती है

३०-३५

स्नान के प्रकार

३६

गृहस्थ के कर्म जिसके अनुसार चलने से गृहस्थाश्रमी उच्च कहलाने

योग्य हो

३७-५६

३. गृहस्थीनां नवकर्मविधानं सुखासाधन धर्म वर्णनम् : ५७६

गृहस्थी के नव कर्म

१-६

नवविकर्म

१०-१६

सुख का साधन : धर्म और चरित्र

२०-३२

४. स्त्रीधर्मवर्णनम् : ५८१

सद्गृहस्थी पति पत्नी का धार्मिक प्रेम स्वर्ग सुखवत् है

१-२१

५. बाह्याभ्यन्तर शौचवर्णनम् : ५८३

शौच की परिभाषा तथा बाह्य एवं आभ्यन्तर शौच का वर्णन

१-३

हाथ पैर पर कितने बार मृत्तिका जल देवें, तथा अंग प्रक्षालन

४-१३

६. जन्ममरणाशौचं समाधियोग वर्णनम् : ५८७

जन्म मरण का अशौच काल

१४-५४

७. इन्द्रियनिग्रह अध्यात्मयोगसाधन तथा द्वैतानुभवाद्योग : ५८६

इन्द्रियों पर विजय

१

अध्यात्म योग साधन और अद्वैत अनुभव से ही योग का विकास

२-५४

अङ्गिरसस्मृति

सवप्रायश्चित्तविधानं, अन्त्यजानां द्रव्यभाण्डेषु जलपानं,
अज्ञानवशाज्जलपानं उच्छिष्ट भोजनं नीलवस्त्रधारणं
कृत्वा दानादिकरणे प्रत्यवायः, भूमौ नीलवपनाद्
द्वादशवर्षं पर्यन्तं भूमेरशुद्धिः, गोवधप्रायश्चित्त
स्त्रीशुद्धिवर्णनं, अन्नभक्षणेन भेदान्तर पापवर्णनम्
द्विविवाहितायाः कन्यायाअन्नभक्षणेन प्रायश्चित्तम्,
दोषयुक्तं मनुष्यान्नं वर्णनम् राजान्नं शूद्रान्नं च तेज
वीर्यह्रासकत्वं, सूतकान्नमलतुल्यं वर्णनं मिति : ५६१

अन्त्यज के वरतन में पानी पीने से प्रायश्चित्त-विधान	१-६
अज्ञान से पानी पीने पर केवल एक दिन का उपवास	७
उच्छिष्ट भोजन करने का प्रायश्चित्त	८-१४
नीला वस्त्र पहनकर भोजन दान करने से चान्द्रायण व्रत	१५-२२
जिस भूमि पर नील की खेती एक बार भी की जाय वह भूमि बारह वर्ष तक शुद्ध नहीं होती	२४
गाय के मरने पर प्रायश्चित्त	२५-२८
गोपाल या स्वामी की असावधानी से शृङ्गादि टूटने से गाय के मरने पर भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रायश्चित्त	२९-३४
रजस्वला स्त्री की शुद्धि	३५-४२
अन्न के दोष और जो जिसका अन्न खाता है उसका पाप	४३-५८
उन स्थानों की गणना जहां पादुका पहनकर नहीं जाना चाहिए	५९-६३
जिसका अन्न नहीं खाना चाहिए	६४-६५
जो कन्या दुबारा व्याही जाय	६६
जिन जिन का अन्न खाने में दोष हो उसका वर्णन	६७-७२
राजा के अन्न से तेज का ह्रास, शूद्र का अन्न से ब्रह्मचर्य का ह्रास और सूतक का अन्न बिल्कुल दूषित	७३

शातातपस्मृति

१. अकृत प्रायश्चित्त वर्णनम् : ५६८

पाप करने पर जो प्रायश्चित्त नहीं करते हैं उनके नरक भोगने के	
वाद आगामी जन्म में पाप सूचक कुछ चिह्न होते हैं	१-२
महापातक के चिह्न सात जन्म तक रहते हैं	३
पूर्वजन्माकृत प्रायश्चित्त चिह्नम्	५६६
उपपातक के चिह्न पांच जन्म तक, सामान्य पापों का तीन जन्म	
तक । दुष्ट कर्मों से जो रोग उत्पन्न होते हैं उनकी जप, देवा-	
र्चन, हवन आदि से शान्ति की जाती है	४
पहले जन्म के किए पाप नरकभोगगति के अनन्तर बीमारी के	
रूप में आते हैं उनका शमन जप, दानादि से होता है	५
महापातकादि से होनेवाले रोग कुष्ठ, यक्ष्मा, ग्रहणी, अतिसारादि	६-७
उपपातक से श्वास, अजीर्ण आदि रोग	८
पापों से होने वाले कम्प, चित्रकुष्ठ, पुण्डरीकादि रोग	९
अति पाप से उत्पन्न होने वाले रोग अर्श आदि	१०
पापजन्य रोगों का शमन करने का उपाय	११-३२

२. कुष्ठ निवारण प्रयोग वर्णनम् : ६०१

ब्रह्म हत्या से पाण्डु कुष्ठ तथा उनका प्रायश्चित्त	१-१२
सामवेदेन सर्वपाप प्रायश्चित्तम् : ६०३	
गोवध प्रायश्चित्त का विधान, सामवेद पारायण,	१३-१६
हन्तृक-फलानाशायोपापवर्णनम् : ६०५	
पितृ-हत्या मातृ हत्या से रोग और उसका विधान	२०-२५
बहिन हत्या के पाप	२६-३५
स्त्रीघाती एवं राज घाती	३६-४२
भिन्न भिन्न पशुओं के वध का भिन्न भिन्न प्रायश्चित्त	४३-५७

३. प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्तम् : ६०७

प्रकीर्ण रोगों का प्रायश्चित्त	१-६
सुरापान आदि अभक्ष्यभक्षण का प्रायश्चित्त	७-१५
विष दाता, सड़क तोड़ने वाले को रोग और प्रायश्चित्त । गर्भपात करने से यकृत प्लीहा आदि रोग होते हैं उनके प्रायश्चित्त, जल धेनु और अश्वत्थ का पूजन और दान	१६-१६
दुष्टवादी का अंग खण्डित हो जाता है	२०-२१
सभा में पक्षपात करनेवाले को पक्षाघात रोग, उसका प्रायश्चित्त	२२

४. कुलध्वंसकस्य, स्तेयस्य च प्रायश्चित्तम् : ६०८

कुल को नाश करने वाले को प्रमेह की बीमारी और उसका निदान	१
ताम्बा, कांसा, मोती आदि चोरी करने से जो रोग होते हैं उसका वर्णन और प्रायश्चित्त	२-७
दूध दही आदि चोरानेवाले को रोग तथा उसका निदान	८-१०
मधु चोरी करने वाले को बीमारी और उसका प्रायश्चित्त	११-१२
लोहा की चोरी से रोग की उत्पत्ति और उसका प्रायश्चित्त	१४
तेल की चोरी से रोग की उत्पत्ति और उसका प्रायश्चित्त	१५
धातुओं की चोरी से रोग और उसका प्रायश्चित्त तथा वस्त्र, फल, पुस्तक, शाक, शय्या छोटी वस्तु चोराने से जो बीमारी होती है उनका विस्तार, उनके शमनार्थ प्रायश्चित्त, व्रत, दान	१६-१६

५. अगम्यागमन प्रायश्चित्तम् : ६१३

मातृ गमन से मूत्रकुष्ठ (लिंग नाश) रोग	२६
लङ्की के साथ व्यभिचार करने से रक्तकुष्ठ	२७
भगिनी के साथ व्यभिचार करने से पीतकुष्ठ	२८
ऊपर के पापों का प्रायश्चित्त विधान और दान	२९-३५
भ्रातृ भार्या गमन करने से गलित कुष्ठ	३६
वधू गमन करने से कृष्ण कुष्ठ	३७

(चतुर्थ अध्याय में भी मातृगमन भगिनी गमन, तपस्विनी के साथ गमन करने से भिन्न-भिन्न रोग) । राज और राजपुत्र को चोरी से मारना, मित्र में भेद करानेवाले का वर्णन, गुरु को मारने से रोग और प्रायश्चित्त । छोटे-

छोटे पापों का वर्णन और प्रायश्चित्त तथा व्रत शान्ति का वर्णन । पांचवें अध्यायमें मातृगमन से लेकर भगिनी आदि अगम्या गमन से जो असाध्य रोग होते हैं उनकी शान्ति तथा प्रायश्चित्त ।)

६. अनुचित व्यवहारफलम् : ६१६

पञ्चत्रिंशत् (पैंतीस प्रकार से मरा हुआ पितृगति क्रिया को नहीं पाता है । आकस्मिक मृत्यु बिजलीपात इनको श्राद्ध में लेप भुज कहा है

१-४

अनायास मृतक की गति न होने से ये प्रेतादि योनियों में जाते हैं और बालकों का हरण होता है

४-६

अपमृत्यु से जो मरते हैं उनके कारण कौन पाप है, जैसे जो कुमारी गमन करे उसे व्याघ्र मारता है, जो किसी को विष देता है उसे सर्प काटता है, राजा को मारनेवाले को हाथी से मृत्यु होती है, मित्र द्रोही, बक वृत्ति वाले की मृत्यु भेड़िया से होती है

६-१६

अगति प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६१८

उन उन पापों का प्रायश्चित्त दिखाया है

१७

अपघात करने वालों की नारायणवली का विधान

२६

इन पापों की शुद्धि के भिन्न भिन्न प्रकार के दान

३०-५१

॥ स्मृतिसन्दर्भ प्रथम भाग की विषय-सूची समाप्त ॥

स्मृति सन्दर्भ

द्वितीय भाग

पराशरस्मृति

पराशर संहिता दो उपलब्ध हैं पराशरस्मृति और बृहत्पराशर । पराशर स्मृति में और बृहत्पराशर दोनों में १२ अध्याय हैं । प्रथम अध्याय में दोनों स्मृतियों में एक जैसा वर्णन “कलौपाराशरीस्मृता” है दूसरे अध्याय से बृहत् पराशर में कुछ विशेष बातें और विचार वर्णन किया गया है । पराशरस्मृति किसी देश विशेष, संप्रदाय विशेष, जाति विशेष को लेकर धर्माख्या नहीं करती है, अपि तु मनुष्यमात्र का पथप्रदर्शित यह स्मृति करती है ।

१. धर्मोपदेश तथा उनके लक्षण : ६२५

“मानुषाणां हितं धर्मं वर्तमाने कलौयुगे

शौचाचारं यथावच्च वद सत्यवतीसुत !”

[वर्तमान समय में मनुष्यमात्र का जिससे हित हो वह धर्म कहिए और ठीक-ठीक रीति से आचारादि की रीति भी बतला दीजिए—ऋषियों के प्रश्न करने पर व्यासजी ने उत्तर दिया कि कलियुग के सार्वभौम धर्म के विकास करने में अपने पिता पराशरजी की प्रतिभा शक्ति की सामर्थ्य कही । पराशरजी निरन्तर एकान्त बदरिकाश्रम की तपोभूमि में आसीन हैं । तपोमय भूमि में तपस्यारूपी साधन के बिना कलियुग के धर्म, व्यवहार, मर्यादा पद्धति का पर्पंदीकरण अबैध सूचित किया ऋषियों ने इस बात पर विचार किया कि कलियुग के मनुष्य किसी धर्म मर्यादा की पर्पंद बुलाने की क्षमता नहीं रख सकते हैं यावत् तपोमय जीवन से इन्द्रियों की उपरामता न हो जाए अतः इन्द्रिय भोग विलासिता के जीवन वाले वेद शास्त्रपारंगता प्राप्त करने पर भी धर्म, न्याय विधि को नहीं बना सकते हैं ! अतः विधि, नियम रूपी धर्म व्यवहार के लिए तपस्या तथा वनस्थली में राग, द्वेष, आदि का विकास परमावश्यक है । पराशर जी के आश्रम पर व्यास प्रमुख सब ऋषि गए

पराशर जी ने मानवीय सदाचार द्वारा आश्रम में आए हुए सब का स्वागत किया। व्यासजी ने पितृभक्ति से पराशरजी को प्रणाम कर निवेदन किया—

१-१५

‘यदि जानासि मे भक्ति स्नेहाद्वा भक्तवत्सल ?

धर्मं कथय मे तात ! अनुग्राह्योऽहं तव” ॥

(पुत्र पिता से सर्वोच्च वस्तु क्या चाहता है यह समुदाचार इस प्रश्न से सरलता से ज्ञात हो रहा है) व्यासजी कहते हैं कि भगवन् ! यदि मेरी भक्ति को आप जानते हैं या मेरे स्नेह को तो मुझे धर्म का उपदेश कीजिए जिससे मैं आपका अनुगृहीत होऊंगा। पुत्र पिता से सबसे बड़ा धन धर्म मांगता है यह भारत की संस्कृति है (एक ओर व्यासजी की पिता की धर्म जिज्ञासा, दूसरी ओर संसार में देखो पैतृक धन संपत्ति पर न्यायालयों में पुत्र पिता पर अभियोग चलाते हैं) इससे सांस्कृतिक जीवन, असांस्कृतिक जीवन का सरलता से ज्ञान हो जाएगा। संस्कृति उसे कहते हैं जिससे धर्म का ज्ञान माता, पिता, गुरु, बन्धुजनों को पूज्य मर्यादामय व्यवहार से कृति हो। व्यासजी ने विनम्र जिज्ञासा की—मनु, वसिष्ठ, कश्यप, गर्ग, गौतम, उशना, हारीत, याज्ञवल्क्य, कात्यायन, प्रचेता, आपस्तम्ब, शंख, लिखित आदि धर्मशास्त्र प्रणेताओं के धर्म निबन्ध सुनने पर भी वर्तमान कलियुग की धर्म-मर्यादा बनाने में अपने को समर्थ समझकर आपके पास इन ऋषियों के साथ आया हूं कलियुग में धर्म को नष्टप्राय देख रहा हूं। अतः आपका तपोमय जीवन ही इस युग धर्म की व्यवस्था दे सकता है।

१६-२६

युग चतुष्टय की व्यवस्था धर्म मर्यादा का तारतम्य।

२६

दान के प्रकरण में सेवा दान नहीं है वह सेवा का मूल्य है।

सत्ययुग में अस्थि में प्राण रहते थे, त्रेता में मांस में, द्वापर से रुधिर में और कलियुग में अन्न में प्राण रहते हैं।

३०

दीर्घ समय तक तपस्या की क्षमता कलियुग के जीवन में नहीं है और अन्न की सावधानी पर ध्यान दिलाया जैसा अन्न खाएगा, उसी प्रकार उसके जीवन की सम्पूर्ण घटना होगी। कलियुग के जीवन की प्रवृत्ति बनाकर ध्यान दिलाया है।

३१-३७

आचार धर्मवर्णनम् : ६२६

“आचार भ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुख” ।

मनुष्य आचार से च्युत है तो उसे धर्मपराङ्मुख समझना चाहिए । सदाचार विहित धर्म मर्यादा को नहीं जान सकता ।

“सन्ध्यास्नानं जपो होम स्वाध्यायो देवतार्चनम् ।

वैश्वदेवातिथेयञ्च षट्कर्माणि दिने दिने ॥ (३६)

षट्कर्माभिरतो नित्यं देवताऽतिथिपूजकः ।

हुतशेषन्तु भुञ्जानो ब्राह्मणो नावसीदति” ॥ (३८)

षट् कर्म का निरूपण, अतिथि सत्कार वैश्वदेव कर्मादि का निरूपण

और अतिथि का लक्षण

३८-५८

राजा को प्रजा से सर्वस्व शोषण का निषेध

५८-६५

२. गृहस्थाश्रमधर्मवर्णनम् : ६३१

गृहस्थी के धर्माचार का निर्देश

१

“षट्कर्म निरतो विप्रः कृषिकर्माणि कारयेत् ।

हलमण्डगवं धर्म्यं षड्गवं मध्यमं स्मृतम् ॥

चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं वृषघातिनाम् ।

३

क्षुधितं तृषितं भ्रान्तं बलीवर्दं न योजयेत् ॥

हीनाङ्गं व्याधितं बलीवं वृषं विप्रो न वाहयेत् ।

४

स्थिराङ्गं नीरुजं दूषितं वृषभं षण्डवर्जितम् ॥

बाह्येद्विवसस्यार्थं पश्चात् स्नानं समाचरेत्” ।

५

षट्कर्म सम्पन्न विप्र को कृषि कर्म में जुट जाने का आदेश है,

किस प्रकार भूमि में हल से जुताई करे, कितने बैलों से हल

जोते तथा बैलों को हृष्टपुष्ट बनाना उसका धर्मकार्य और

कितने समय तक बैलों को खेती पर जोते जाए इसका

नियम । कृषि कर्म को मनुष्य मात्र के लिए प्रधान कर्म	
बताया है और कृषिकार सब पापों से छूट जाते हैं	६-१२
चतुर्वर्ण का कृषि कर्म धर्म बतलाया है	१३-१७

३. अशौच व्यवस्था वर्णनम् : ६३३

अशौच का प्रकरण—ब्राह्मण मृतसूतक में ३ दिन में, क्षत्रिय १२ दिन में, वैश्य १५ दिन में और शूद्र १ मास में शुद्ध हो जाता है । तृतीय अध्याय में जन्म और मरण के अशौच का विवरण दिया गया है । किन्तु जातक अशौच में ब्राह्मण १० दिन में शेष पूर्व लिखित है । बालक और संन्यासी के मरने पर तत्काल शुद्धि बताई है । १० दिन के बाद खबर पावे तो ३ दिन का सूतक, और सम्बत्सर के बाद खबर पावे तो स्नान करके शुद्धि हो जाती है	१-१६
गर्भ में मरने की और सद्यः मरने की तत्काल शुद्धि होती है	२६
शिल्पी, राजमजदूर, नाई, वैद्य, नौकर, वेदपाठी और राजा इनको सद्यः शौच	२७-२८
गर्भस्त्राव का सूतक	३३
विवाहोत्सव में मृतक सूतक	३४-३५
संग्राम में मरने वाले की मृत्यु का अशौच	३६-४३
संग्राम में क्षत्रिय के देहपात	४४-४७
शूद्र के शव ले जाने वाले पर सूतक की अवधि	४८-५४

४. अनेकविधप्रकरण प्रायश्चित्तम् : ६३६

किसी को फांसी लगाना उसका पाप	१-६
बिना इच्छा के पतितों से सम्पर्क रखना	७-११
ऋतुकाल में पति पत्नी का वर्णन	१२-१६
औरस, क्षेत्रज, दत्तक, कृत्रिम पुत्रों की परिभाषा	१७-२८

५. प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६४२

कुत्ता, भेड़िया किसी को काटे उसको गायत्री जपादि प्रायश्चित्त	१-७
चाण्डाल, आदि से जो ब्राह्मण मर जाए उसका प्रायश्चित्त	८-१२

श्रौताग्निहोत्र संस्कार वर्णनम् : ६४३

आहिताग्नि के शरीर छूटने पर उसके श्रौताग्नि से संस्कार १३-३५

६. प्राणिहत्या प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६४४

प्राणिहत्या का प्रायश्चित्त—हंस, सारस, क्रौंच, टिड्डी आदि

पक्षियों को मारने से जो पाप होता है और शुद्धि	१-८
नकुल, मार्जार, सर्प आदि को मारने का पाप, और शुद्धि	९-१०
भेड़िया, गीदड़ और सूकर मारने का पाप तथा शुद्धि	११
घोड़े, हाथी मारने का पाप, उसका प्रायश्चित्त और शुद्धि	१२
मृग, वराह के मारने का पाप, उसका प्रायश्चित्त और शुद्धि	१३-१४
शिल्पी, कारु और स्त्री आदि के घात का पाप, प्रायश्चित्त एवं शुद्धि	१५-१६
चाण्डाल से व्यवहार का पाप उसका प्रायश्चित्त एवं शुद्धि	२०-२५

प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६४७

चाण्डाल के अन्न खाने का प्रायश्चित्त	२६-३०
अविज्ञात में चाण्डाल आदि के यहां ठहर कर जूठे एवं कृमि दूषित	
अन्न भोजन करने का दोष और उसका प्रायश्चित्त	३१-३८
घर की शुद्धि जिस घर में चाण्डाल रह गए उस घर की शुद्धि ।	
इन स्थानों पर रस, दूध दही आदि अशुद्ध नहीं होते हैं	३९-४३

ब्राह्मण महत्त्ववर्णनम् : ६४८

ब्राह्मण के किसी व्रण पर कीड़े पड़ जायें तो उसका वर्णन और उसकी शुद्धि बताई है—

“उपवासो व्रतं चैव स्नानं तीर्थं जपस्तपः ।

विप्रैः सम्पादितं यस्य सम्पन्नं तस्य तद्भवेत्” ॥

ब्राह्मण जो व्यवस्था देते हैं उसके अनुसार चलने का माहात्म्य	४३-५८
ब्राह्मण के वाक्य तथा उनका माहात्म्य	५६-६१
अभोज्य अन्न, भोजन करते समय बैठने का विधान	६२-६३
बड़ी संख्या में जो अन्न अशुद्ध हो जाय तो उसे त्याज्य नहीं बत-	
लाया है बल्कि उसे शुद्ध करने का विधान	६४

७. द्रव्यशुद्धि वर्णनम् : ६५१

लकड़ी के पात्र और यज्ञ पात्र तथा इनकी शुद्धि	१-३
--	-----

स्त्री, नदी, वापी, कूप और तड़ाग की शुद्धि

४-५

रजस्वला होने से पुर्व कन्या का दान

६-६

स्त्रीशुद्धिवर्णनम् : ६५३

रजस्वला स्त्री के शुद्धि

१०-१८

क्रांस्य, मिट्टी आदि के पात्र एवं वस्त्रों की शुद्धि

१६-३५

सड़क में पानी; नाव और पक्के मकान अशुद्ध नहीं होते

३६

वृद्ध स्त्री और छोटे बालक ये अशुद्ध नहीं होते हैं । पापियों के

साथ बातचीत करने पर शुद्धि

३७-४२

८. धर्माचरणवर्णनम् : ६५५

गाय को बांधने से जो मृत्यु हो जाय उसका प्रायश्चित्त

२-२१

निन्द्य ब्राह्मणवर्णनम् : ६५७

जो ब्राह्मण न लिखे पढ़े तो पतित और उनका प्रायश्चित्त

२२-२७

पञ्च यज्ञ करने वाले और वेद पढ़े लिखे ब्राह्मण

२८-३१

राजा को बिना विद्वान् ब्राह्मणों के पूछे स्वयं व्यवस्था नहीं देनी

चाहिए

३२-३६

प्रायश्चित्त स्थान

३७-३८

गोब्राह्मणहेतोरुपदेशः : ६५९

गाय किसी स्थान पर कीचड़ में फंस जाय तो उसके रक्षा का पुण्य

३९-४३

गो-घाती को प्राजापत्य कृच्छ्र के विधान का वर्णन

४४-४९

९. गोसेवोपदेशवर्णनम् : ६६०

गो सेवा का उपदेश । गोवध करने में कौन-कौन दण्डनीय होते हैं ।

गाय को बांधना, लाठी मारना या काम क्रोध से मारना, पैर

वा सींग तोड़ने का पाप तथा प्रायश्चित्त

१-२५

गवि विपन्नानां प्रायश्चित्तम् : ६६३

गाय के बांधने एवं नदी और पर्वत पर गाय के चराने का

वर्णन । गाय को किन रस्सियों से बांधना और किनसे नहीं

बांधना, बिजली गिरने से, अति वृष्टि से यदि गाय मर जाय,

इन सम्बन्धों में और गाय के सम्बन्ध में कोई बात न बतावे

तो इससे पाप आदि का वर्णन आया है। बाल, भृत्य, “गो विप्रेष्वति कोपं विवर्जयेत्” इन पर अति कोप नहीं करना २६-६२

१०. अगम्यागमन प्रायश्चित्तवर्णनम् : ६६६

अगम्यागम्य में चान्द्रायण व्रत तथा ग्रास का प्रमाण	१-३
चाण्डालनी के साथ गमन	४-६
माता, माता की बहिन और लड़की के साथ गमन	१०-१४
पिता की बहु स्त्रियां और मां की सम्बन्धी, भ्रातृ भार्या, मामी, सगोत्रा, पशु और वेश्या गमन	१५-१६
मनुष्य का कर्त्तव्य—बीमारी, संग्राम, दुर्भिक्ष, में भी औरतकी रक्षा	१७
व्यभिचार से दुःखित स्त्री के शुद्धि	१८
शराब पीने वाली स्त्री का पति पतित हो जाता है	२७
जार से जो स्त्री संतान पैदा करे उसका त्याग	२८-३२
पतित स्त्री तथा उसके पति का प्रायश्चित्त	३३-३४
जो स्त्री जार के घर चली जाय फिर वहां से भाग कर यदि पिता के घर आ जाय तो वह जार का घर समझा जायगा। काम और मोह से जो स्त्री अपने बच्चों को छोड़कर जार के घर चली जाय तो उसका परलोक नष्ट हो जाता है	३५-४२

११. अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्त वर्णनम् : ६७०

गोमांस एवं चाण्डाल के अन्नादि का भक्षण	१-७
एक पंक्ति पर बैठे हुए में से एक भी भोजन करने वाला उठ जाय तो वह अन्न दूषित हो जाता है	८-१०
पलाण्डु (प्याज) वृक्ष का निर्यास, देवता का धन और ऊंट, भेड़ का दूध खानेवाले को प्रायश्चित्त	११-१४
अज्ञान से जो किसी के घर सूतक का अन्न खा ले उसका प्रायश्चित्त	१५-२०
ब्राह्मण से शूद्र कन्या से उत्पन्न संतान	२१-२४
ब्रह्मकूर्च उपवास की विधि	२५-३३

शुद्धि-वर्णनम् : ६७३

हवन-विधान	३४-३५
ब्रह्मकूर्च का माहात्म्य	३६

“ब्रह्मकूर्चो बहेस्सवं यथैवाग्निरिवेन्धनम्”

पीते-पीते पानी यदि पात्र में रह जाय तो फिर पीने का दोष	३७
तालाब, कूएं में जहां जहां जानवर मर गया हो उस जल के पीने	
में प्रायश्चित्त	३८-४२
पंच यज्ञ का विधान ।	४३-५३

१२ शुद्धिवर्णनम् : ६७५

पुनः संस्कारादि प्रायश्चित्त वर्णनम् ।

खराब स्वप्न देखने पर स्नान से शुद्धि	१
अज्ञानवश सुरापान	२-४
तीनों वर्णों का प्रायश्चित्त, स्नान का विधान, अजिन (मृगचर्म),	
मेखला छोड़ने पर ब्रह्मचारी के पुनः संस्कार	५-८
आग्नेय, वारुण्य, सातपवर्ष (दिव्य) और भस्म स्नानादि	९-१४
आचमन करने का समय और विधान	१५-१८
सूर्य-स्नान	२०-२२
चन्द्रग्रहण पर दान माहात्म्य	२३
रात्रि के मध्य के दो प्रहर को महानिशा कहते हैं । रात्रि के उत्तरार्ध के दो प्रहर को प्रदोष कहते हैं । उसमें दिनवत् स्नान करना चाहिए	२४
ग्रहण के स्नान का विधान	२५-२८
जो यज्ञ न कर सकते हों उनको वेदाध्ययन की आवश्यकता है	२९
शूद्रान्न का भक्षण	३०-३८
अन्याय के धन से जीवन-यापन	३९-४२
गोचर्म भूमि की संज्ञा तथा उस के दान का माहात्म्य	४३
छोटे-छोटे पाप जैसे—मुंह लगाकर जल पीने से पाप	४४-५४
गृहस्थी व्यर्थ (ऋतु कालाभिगमन के अतिरिक्त) वीर्य नष्ट करे	
उसका प्रायश्चित्त	५७

प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६८०

छोटे-छोटे प्रायश्चित्त — ऐसी-ऐसी शुद्धियों का वर्णन तथा इनसे पाप दूर करने का विधान	५८-७४
--	-------

बृहद पाराशर स्मृति

इसमें १२ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में पराशर संहिता के क्रमानुसार ही विभिन्न अध्यायों में वर्णित आचार प्रायश्चित्त आदि विषयों का वर्णन किया गया है।

१. वर्णाश्रमधर्म वर्णनम् : ६८२

वर्णाश्रम धर्म कलियुग में किस प्रकार से होता है, इस प्रश्न को लेकर व्यास आदि ऋषियों का पराशरजी के पास जाना १-२० पराशरजी ने कहा कि वेद और धर्मशास्त्र इन दोनों का कर्ता कोई नहीं है। ब्रह्माजी को जिस प्रकार वेदों का स्मरण हुआ था उसी प्रकार युग-प्रति-युग में मनुजी को धर्मस्मृतियों का स्मरण हुआ। पराशरजी ने कलियुग की विप्लव दशा में खेद प्रगट किया कि धर्म दम्भ के लिए, तपस्या पाखण्ड के लिए एवं बड़े-बड़े प्रवचन लोगों की प्रवचना (ठगी) के लिए किए जाते हैं। गायों का दूध कम हो जाता है, कृषि में उर्वरा शक्ति कम हो जाती है, स्त्रियों के साथ केवलमात्र रति की कामना से सहवास करते हैं न कि पुत्रोत्पत्ति के लिए। पुरुष स्त्रियों के वशीभूत होते हैं। राजाओं को वंचक अपने वश में कर लेते हैं। धर्म का स्थान पाप ले लेता है। शूद्र ब्राह्मणों का तथा ब्राह्मण शूद्रवत् आचरण करने लगते हैं। धनी लोग अन्याय मार्ग पर चलते हैं। इस प्रकार कलियुग की विषमता पर अत्यन्त खेद प्रगट किया है २१-३५

धर्मविषयवर्णनम् : ७८६

इसमें आचार वर्णन दिखया और युगों का नाम बताया है। सतयुग को ब्राह्मण युग, त्रेता को क्षत्रिय युग, द्वापर को वैश्य युग तथा कलियुग को शूद्र युग बताया है। वर्णाश्रम धर्म की क्षमता उस भूमि में बताई है जिसमें

कृष्णसार मृग स्वभावतः स्वतंत्रता पूर्वक विचरण करते हैं । हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य देश को पावन देश बताया है और अन्य देश जहां से नदियां साक्षात् समुद्रगामिनी हैं उन्हें भी तीर्थस्थान बताया है । इसमें पराशरजी ने अपने पुत्र व्यास को द्विज कर्म और षट्कर्म वर्ण धर्म की प्रशंसा और गो वृषभ का पालन पशुपालन विधि

षट्कर्म वर्णधर्मश्च प्रशंसा गोवृषस्य च ।

अबोह्य-बाह्यौ यौ तत्र क्षीरं क्षीरप्रयोक्त्रिणा ॥

अमावस्या निषिद्धानि ततश्च पशुपालनम् ॥

विवाह संस्कार, व्रतचर्यादि, पुत्रजन्म, अखिल गृहस्थधर्म का उपदेश, भक्ष्याभक्ष्य की व्यवस्था, द्रव्य शुद्धि, अध्ययन अध्यापन का समय, श्राद्ध कर्म, नारायणवली, सूतक तथा अशौच, प्रायश्चित्त विधान, दानविधि तथा फल, भूमिदान की प्रशंसा, इष्टापूर्त कर्म, ग्रहों की शान्ति, वानप्रस्थ धर्म, चारों आश्रम, दो मार्ग-अर्चि तथा धूम मार्ग इन सबका वर्णन यथानुपूर्व बृहद् पराशर के द्वादश अध्याय में बताया है

३६-६४

२. आचारधर्मवर्णनम् : ६८८

चारों वर्णों का धर्मपालन

१-३

कौन-कौन कर्म कलियुग में करने चाहिए तथा उनकी विधि

४

नित्यषट्कर्म, संध्याकृत्य तथा सदाचार कृत्यवर्णनम् ६८९

“कर्मषट्कं प्रवक्ष्यामि, यत्कुर्वन्तो द्विजातयः ।

गृहस्था अपि मुच्यन्ते संसारं बन्धहेतुभिः” ॥

संध्या, स्नान, जप, देवताओं का पूजन, वैश्वदेव कर्म, आतिथ्य

इन षट्कर्म आदि

५-८५

आचारवर्णनम् : ६८९

सात प्रकार के स्नान का वर्णन—मंत्रस्नान, पार्थिव स्नान, वायव्य

स्नान, दिव्यस्नान, वारुणस्नान, मानसस्नान तथा आग्नेयस्नान

इनके मन्त्र फल सहित बताकर प्रातःस्नान का माहात्म्य

८६-९३

उषाकाल स्नान

९४-९६

गङ्गा और कुयें के स्नान तथा स्नान का समय

९७-२०८

- भाद्रपद के महीने में नदी के स्नान का निषेध बताया है क्योंकि
नदियां रजस्वला रहती हैं किन्तु जो नदियां सीधी समुद्र में
जाती हैं उसमें स्नान हो सकता है १०६-११०
- रवि संक्रान्ति, ग्रहण अमावस्या में, व्रत के दिन, षष्ठी तिथि पर
गर्म जल से स्नान नहीं करना चाहिए १११-११२

सदाचार नित्यकर्म वर्णनम् : ६६६

- स्नान प्रकार अर्थात् स्नान करने की विधि ११३-१२३
- स्नान का मन्त्र, पञ्चगव्य स्नान के मंत्र, मिट्टी लगाने के मंत्र १२४-१४८
- स्नान का फल और स्नान करने का विधान, १४९-१५०
- मन्त्र के उच्चारण का विधान, उदात्त अनुदात्त, स्वरित, प्लुत
के उच्चारण का क्रम १५१-१५५
- किस अङ्ग में कितनी बार मिट्टी लगानी चाहिए उसका विधान
और शरीर पर ॐ का कहां कहां पर और कितनी बार
लिखना इसका विधान, स्नान के समय गायत्री का जप और
स्नानान्तर गायत्री के मन्त्र का जप करने का निर्देश १५६-१६८

श्राद्धे तर्पण वर्णनम् ७०४ :

- देवताओं पितरों मनुष्यों और अपने वंशजों का तर्पण तथा यज्ञों
के तर्पण विधि १६९-२२०

कर्तव्यवर्णनम् : ७०६

- मनुष्य के हाथ पर ब्रह्मतीर्थ, पितृतीर्थ, प्राजापत्य तीर्थ, सौमिक
तीर्थ तथा दैव्य तीर्थ ये पंचतीर्थ बताए गए हैं। स्नान करके
इन पांच तीर्थों से जल चढ़ाना २२१-२२४
- बिना स्नान किए जो भोजन करता है उसकी निन्दा और स्नान
करने से दुःस्वप्न का नाश बताया गया है। स्नान करने के
फल बताए हैं २२५-२२६

चित्तप्रसाद बलरूप तपांसिमेधा,

मायुष्यशौच सुभगत्व मरोगिता च ।

ओजस्वितां त्विषमदात् पुरुषस्यर्चीर्णं,

स्नानं यशो-विभव-सौख्यमलोलुपत्वम् ॥

३. ओंकार मन्त्र वर्णनम् : ७१०

ओंकार मन्त्र के जप की विधि जपने के मन्त्रात्मक सूक्त — ब्रह्म सूक्त, शिव सूक्त, वैष्णव सूक्त, सौरि सूक्त, सरस्वती सूक्त, दुर्गा सूक्त, वरुण सूक्त और पुराण तथा शास्त्रों में आये जपों का वर्णन, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद में जो सूक्त आए हैं उनकी परिगणना । गायत्री मन्त्र का जप और ओंकार का जप, जिस मन्त्र का जप तथा उसका ऋषि देवता

१-६

ओंकार और गायत्री मन्त्र के जप की महिमा और उसका स्वरूप, उसमें यह दर्शाया गया है कि पहले ओंकार शब्द हुआ और वह अकेला रहा, उसने अपने आमोद-प्रमोद के लिए गायत्री को स्मरण कर उसको प्रत्यक्ष किया, तो गायत्री उसकी पत्नी हो गई और प्रणव (ओंकार) उसका पति हुआ । इनके संयोग से तीन वेद, तीन गुण, तीन देवता, तीन मात्रा, तीन ताल तीन लिङ्ग उत्पन्न हुए । वेद शास्त्र में सब जगह ये तीन मात्रा आती हैं ।

७-३३

४. गायत्रीमन्त्र पुरश्चरण वर्णनम् : ७१४

इसमें गायत्री मन्त्र का पुरश्चरण, गायत्री का उच्चारण, गायत्री प्रकृति और ओंकार को पुरुष और इनके संयोग से जगत् की उत्पत्ति, गायत्री के २४ अक्षरों को २४ तत्त्व बताया है

१-१२

वेदों से गायत्री की उच्चता

१३-१७

एक एक अक्षर में एक एक देवता

१८-२५

एक एक अक्षर को किस किस अङ्ग में रखना बताया गया है

२६-३६

गायत्री जप करने का स्थान और जपने की माला का विशदीकरण

३७-५२

प्राणायाम का माहात्म्य

५३-५५

उपांशु जप और मानस जप

५६-५८

सब यज्ञों से जप यज्ञ की श्रृष्टता

५९-६३

जप कैसा और किस मुद्रा और किस रीति से करना चाहिए

६४-७०

गायत्री मन्त्र वर्णनम् : ७२०

गायत्री मन्त्र के एक एक अक्षर का एक-एक देवता और उसके
स्वरूप का वर्णन

७१-६७

गायत्री मन्त्र जप वर्णनम् : ७२३

न्यास और गायत्री की उपासना और स्थूल, सूक्ष्म और कारण
इन तीनों शरीरों को गायत्री से बन्धन करने का विधान

६८-११०

देवार्चन विधिवर्णनम् : ७२४

देवताओं का पूजन और उसके मन्त्र, जैसे विष्णु का गायत्री और
ओंकार से पूजन इत्यादि

१११-१२३

देवता के देह में न्यास

१२४-१३४

पुरुष सूक्त के पहले मन्त्र से आवाहन, दूसरे से आसन, तीसरे से
पाद्य, चतुर्थ से अर्घ्य इत्यादि का वर्णन

१३५-१४१

विष्णु-पूजन

१४२

देवताओं का पूजन और उसकी विधि

१४३-१५४

वैश्वदेवविधिवर्णनम् : ७२८

वैश्वदेव विधि का वर्णन, बिना अग्नि को चढ़ाये अथवा बिना बलि

वैश्वदेव किये जो अन्न परोसा जाता है वह अभोज्य अन्न है ।

जिस अग्नि में अन्न पकाये उसी में अन्न का हवन करना

चाहिये और हवन करने के मन्त्र तथा उसका विधान

१५५-१६३

आतिथ्य विधिवर्णनम् : ७३२

अतिथि की विधि और अतिथि को भोजन देने का माहात्म्य

अतिथि का लक्षण, जैसे भूखा, प्यासा, थका हुआ प्राणरक्षा

मात्र चाहता है यदि ऐसा अतिथि अपने घर आवे तो उसे

विष्णुरूप समझना चाहिये । गृहस्थी के लिये अतिथि सत्कार

परम धर्म बतलाया है

१६४-२११

वर्णाश्रम धर्म वर्णनम् : ७३४

वर्णाश्रम धर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के कर्म का विधान

२१२-२२५

५. गोमहिमा वर्णनम् : ७३५

षट् कर्म सहित विप्र कृषि वृत्ति का आश्रय करे

१-२

बैलों के पालन और किस प्रकार के बैलों से खेती जोतनी चाहिये
उसका वर्णन

३-६

गोमाहात्म्य और गो के पालन करने का माहात्म्य तथा गोमूत्र
पान करने का माहात्म्य और दुर्बल, बीमार गाय को दुहने
का पाप और गोदान का माहात्म्य, गौ के अङ्ग प्रत्यङ्ग में
देवताओं का निवास है

७-४३

यस्याः शिरसि ब्रह्माऽऽस्ते स्कन्धदेशे शिवः स्थितः ।

पृष्ठे नारायणस्तस्थौ श्रुतयश्चरणेषु च ॥

या अन्या देवताः काश्चित्तस्या लोमसुताः स्थिताः ।

सर्वदेवमया गावस्तुष्येत्तद्भक्षितो हरिः ॥

स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं,

संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम् ।

ता एव दत्तास्त्रिविधं नयन्ति,

गोभिर्नतुल्यं धनमस्ति किञ्चित् ॥

समहत्त्व वृषभ पूजन वर्णनम् : ७४०

बैल पालने का माहात्म्य । गाय के पालने से बैल का पालन करने में दस
गुणा माहात्म्य अधिक है । वृष का पूजन और वृष को धर्म का अवतार
बताया गया है वृष अपने कंधे पर भार ले जाता है, अपने जीवन से
दूसरे के जीवन की रक्षा और दूसरे के जीवन को बढ़ाता है । उन गायों
की महती वन्दना की गई है जो वृषभ को उत्पन्न करती है इत्यादि

४३-५६

हल (वेध) करण वर्णनम् : ७४१

हल बनाने का विधान

६०-७६

हल लगाने का दिन तथा विधि

७७-१००

बैल का पूजन और बैल की रक्षा का विधान

१०१-१११

आकाश से जो जल गिरता है उसका माहात्म्य, जल से अन्न की उत्पत्ति

११२-११५

कृषि महत्त्व धर्म वर्णनम् : ७४७

कृषि करने की विधि

११६-१५५

कृषिकृच्छुद्धिकरण तथा कृषिकर्मकरण स सीतायज्ञ वर्णनम् : ७५०

“कृषेरन्यतमोऽधर्मो न लभेतकृषितोऽन्यतः ।

न सुखं कृषितोऽन्यत्र यदि धर्मेण कर्षति” ॥

कृषि के तुल्य दूसरा कोई धर्म नहीं कोई व्यवहार इतना लाभदायक नहीं ।

यदि धर्मानुकूल कृषि की जाए तो बड़ा सुख है ।

१५६-१६५

६. कन्या विवाह वर्णनम् : ७५५

कन्याओं के आठ प्रकार के विवाह होते हैं । अपनी जाति में वर के लक्षण देखकर वस्त्राभूषण से सुसज्जित कर जो कन्या दी जाती है उसको ब्राह्म विवाह कहते हैं । लड़के का लक्षण, तथा नपुंसक का पहचान । यज्ञ करते हुए यज्ञ करने वाले को वस्त्राभूषण से सुसज्जित जो कन्या दी जाती है इसे दैव विवाह कहते हैं । वर कन्या के समान हो और गुणवान, विद्वान हो ऐसे पुरुष को दो गाय के साथ जो कन्या दी जाती है वह आर्ष विवाह होता है । कन्या और वर स्वेच्छा से धर्मचारी हो वह मनुष्य विवाह होता है । जिस जगह पर वर से रुपए की संख्या लेकर कन्या दी जाती है उसे दैत्य विवाह कहते हैं । जहां वर कन्या दोनों अपनी इच्छा पूर्वक विवाह कर ले उसे गान्धर्व विवाह कहते हैं । जहां हरण करके कन्या ले जाई जावे उसे राक्षस विवाह कहते हैं । सोई हुई कन्या को जो मद्य इत्यादि के नशे में जबरदस्ती ले जाया जाए उसे पैशाच विवाह कहते हैं

१-१७

विवाह के पहले जिन बातों का विचार करना चाहिए उनका निर्देश किया गया है । १ वर, २ कन्या की जाति, ३ वयस, ४ शक्ति, ५ आरोग्यता, ६ वित्त सम्पत्ति, ७ सम्बन्ध बहुपक्षता तथा अर्थित्व

१८

विवाहे वरगुण वर्णनम्

वर के लक्षण

१६-२१

सगोत्र की कन्या से विवाह

२२

जहां कन्या नहीं देनी चाहिए

२३-२७

उन लड़कियों के लक्षण लिखे हैं जिनके साथ विवाह नहीं करना है

और कन्यादान करने का जिनका अधिकार है उनका वर्णन

२८-३२

11270

उन कन्याओं का वर्णन है जिनके साथ विवाह हो सकता है ३३-३७

कन्यादान और कन्या के लक्षण जिनको दायविभाग मिल सकता है ३८-४०

लक्ष्मीस्वरूपा स्त्री वर्णनम् : ७५८

गृहस्थी को स्त्रियों की इच्छा का अनुमोदन करना तथा उनको प्रसन्न रखना

यह गृहस्थ की सम्पत्ति और श्रेय का साधन बताया है ४१-४५

स्त्री पुरुष में जहां विवाद होता है वहां धर्म, अर्थ, काम सभी नष्ट हो जाते हैं ४६-४७

स्त्रियों को पतिव्रत पर रहना और इसका अनुशासन और पति-

व्रता न रहने से नारकीय दारुण दुःखों का होना बताया है ४८-५५

गृहस्थधर्म वर्णनम्

स्त्री शक्तिरूपा है एवं शक्ति का स्रोत है। सारे संसार की उत्पादिका शक्ति भी स्त्री जाति ही है। उसका संरक्षण कुमार्यावस्था में पिता द्वारा तथा युवावस्था में पति द्वारा वाञ्छनीय है। वृद्धावस्था में पुत्र का कर्तव्य है कि उनकी शक्ति की देखरेख और सेवा करे। इस प्रकार मातृशक्ति की सद-उपयोगिता का ध्यान रखा जाए ५६-६१

स्त्रियों की स्वाभाविक पवित्रता और स्त्रियों को इन्द्र के वरदान ६२-६५

सहवास के नियम गृहस्थधर्म का आधार स्त्री ही है और गृह के यज्ञ कर्म स्त्री के ही साथ हो सकते हैं अतः उसी का सत्कार और मान करना चाहिए ६६-७६

पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ, स्वाहाकार व षट्कार और हन्तकार प्राणाग्नि होत्र विधि से भोजन करना ७७-८६

वेदविद्विप्रस्य कलाज्ञस्य वर्णनम् : ७६३

प्राणाग्नि यज्ञ की विधि जिसमें इस बात का विषदीकरण किया गया कि नासिका के पन्द्रह अङ्गुली तक जीव की कला संचरण करती जाती है इसी को षोडसी कला कहते हैं। इसी को ब्रह्मविद्या कहते हैं जो इसे जाने उसी को वेद का ज्ञाता कहते हैं। इसी को तुरीय पद और इसी में सारा

संसार लीन हो जाता है । इस बात को जानने से और कुछ जानना बाकी नहीं रह जाता है

८७-१६

प्राणायाम के विधान, प्राणवायु के चलने के तीन मार्ग — इडा, पिङ्गला, सुषुम्ना, नासिका के दो पुट होते हैं दाहिने को उत्तर और बायें को दक्षिण बीच भाग को विषुवृत्त कहते हैं । जो योगी प्रातः, सायं मध्याह्न और अर्धरात्रि में विषुवृत्त को जानता है उसको नित्यमुक्त कहा है । इस प्रकार प्राणायाम की विधि बताई है । पांच वायु (प्राण, उदान, व्यान, अपान, समान) का नाम लेकर स्वाहा शब्द लगावे, पांच आहुति प्रास रूप में देवे और दांत नहीं लगावे तो इसे पंचाग्नि होत्र कहते हैं

१७-१०७

शरीर के जिस प्रदेश में जो अग्नि रहती है उसका वर्णन

१०८-१११

प्राणाग्नि होम का विधान और मुद्रा का वर्णन

११२-१२१

प्राणाग्निहोत्र विधि का माहात्म्य

१२२-१२४

प्राणाग्निहोत्र के बाद जल पीने का नियम

१२५-१२७

प्राणायाम की विधि जानने का माहात्म्य और गृहपत्नी के लिए भोजन विधि

१२८-१३८

षोडश संस्कार माह्निकवर्णनम्

सायं सन्ध्या विधि और कुछ स्वाध्याय करके शयन विधि

१३९-१४०

स्त्री के साथ संगम, योनि शुद्धि और गर्भाधान विवरण

१४१-१४३

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर सूर्योदय से पूर्व सन्ध्या विधिका वर्णन

१४४-१४५

प्रातःकाल सन्ध्या करने से मद्यपान तथा द्यूत का दोष दूर

१४६

सूर्योदय के पहले सन्ध्या का विधान

१४७

सीमन्त, अन्नप्राशन, जातकर्म, निष्क्रमण चूड़ाकर्म आदि संस्कारों का विधान

१४८-१५१

ब्रह्मचर्य वर्णनम् : ८६८

उपनयन का समय, विधान और ब्रह्मचारी को भिक्षाधन तथा

किससे भिक्षा लेवे उसका सविस्तार वर्णन

१५२-१८३

गृहस्थाश्रमे पुत्र वर्णनम् : ७७१

पुत्र की परिभाषा, पुत्र पुन्नाम नरक से पिता को बचाता है अतः

वह पुत्र कहा गया है । इसलिए पुत्र का संस्कार करना उस
का कर्तव्य माना गया है

१८४

पुत्र यदि धर्मज्ञ हो तो पिता को स्वर्ग गति होती है,

१८५-१८२

पुत्र का गया में पिता का श्राद्ध

१८३

पुत्र का कर्तव्य और उसका लक्षण यथा—

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरि भोजनात् ।

गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ॥

अर्थात् ये तीन लक्षण जिसमें हैं उसी में पुत्रत्व है । जीते जी पिता

की आज्ञा पालन, श्राद्ध के दिन ब्राह्मण भोजन कराने वाला

और गया में पिण्ड देने वाला

१८४-१८६

पिता के लिए वृषोत्सर्ग

१८७-१८८

साध्वी स्त्री का लक्षण तथा सास श्वसुर की सेवा करे

१८९

सन्तानोत्पत्ति—पुत्र और पुत्री समान

२००

आचार वर्णनम् : ७७३

४० संस्कार, सदाचार की प्रशंसा हीनाचार की निन्दा

२०१-२०७

मनुष्य को विद्या पढ़ना, शास्त्र पढ़ना, सदाचार पर निर्भर है ।

आचारहीन मनुष्य कोई कर्म में सफल नहीं होता है

२०८-२११

शौच वर्णनम् : ७७४

शौचाचार भावशुद्धि के सम्बन्ध

२१२-२१६

स्त्रियों में रमण करने वाले वित्तपरायण, मिथ्यावादी, हिंसक की

शुद्धि कभी नहीं होती है

२१७

प्रतिग्रह (दान) वर्णनम् : ७७५

मूर्ख को दान देने से दान का फल नहीं होता है

२१८-२२१

दान लेने वाला मूर्ख और दाता भी नरक में जाता है

२२२-२२६

दान-पात्र

२२७-२२८

हाथी, घोड़े और नवश्राद्ध का दान लेने वाला हजार वर्ष तक नरक

में रहता है

२२९-२३१

विष्णु की प्रतिमा, पृथिवी, सूर्य की प्रतिमा तथा गाय यह सत्पात्र को देने से दाता को तीन लोक का फल होता है	२३२
भोजन दान के समय पर चरित्रवान का सत्कार करना तथा अनाचारी पुरुषों को बिलकुल वर्जित का विधान	२३३-२३७
दही, दूध, घी, गंध, पुष्पादि जो अपने को देवे (प्रत्याख्येयं न कर्हिचित्) उसे वापस नहीं करना	२३८
जो ब्राह्मण सदाचारी दान लेने योग्य है और वह दान लेवे तो उसे स्वर्ग का फल होता है	२३९-२४०
दान देने के सम्बन्ध की बातों का विवरण	२४१-२४८

त्याज्य वर्णनम् : ७७८

आचार का वर्णन, गृहस्थ के कर्तव्य और भोज्य अभोज्य की विधि	२४९-२७६
भोजन में निषेध वस्तु	२७७-२८२
जिनका अन्न खाना निषेध है उनका वर्णन	२८३-२९२
इष्टका यज्ञ जो कि द्विजातियों को करने चाहिए दर्श, पौर्णमास्य और चातुर्मास्य यज्ञों का विधान	२९३-२९६
स्नातक की परिभाषा	२९७
सोम याग और इष्टका पशु यज्ञ का माहात्म्य	२९८-३०३
श्रद्धा से दान का माहात्म्य	३०४-३०५
जो जिसका अन्न खाता है वैसा ही उसका मन होता है । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि वर्ण के अन्न की शुद्ध अशुद्ध की सूची बताई है । जिनसे भिक्षा नहीं लेनी है उनका भी निर्देश है	३०६-३१२
रजस्वला स्त्री से छुआ हुआ अन्न, कुत्ते और कौवे के जूठे अन्न तथा जो अन्न अग्राह्य हैं	३१३-३१६
जो अन्न अभोज्य होने पर भी ग्राह्य है उसको विशेष रूप से वर्णन	३१७

अभक्ष्य वर्णनम् : ७८५

जिन शाकों को नहीं खाना चाहिये उनके नाम बताये हैं	३२०-३२२
अति संकट पर अर्थात् प्राण जाने पर जो अभक्ष्य है उनका वर्णन	३२३-३२४

जो गृहस्थी मांस नहीं खाता है उसको स्वर्गलोक की प्राप्ति बताई गई है । जहां पर मांस खाने का नियम बताया भी है उसकी निवृत्ति—उसको न खाने से महाफल बताया है ३२५-३३१

शुद्धि वर्णनम् : ७८६

शुद्धि का विधान और कौन कौन वस्तु शुद्ध होती है इसका वर्णन ३३२-३४० बछड़े के मुख से जो दूध गिर जाता है उसको शुद्ध बताया है तथा अन्यान्य शुद्धियां बताई हैं ३४१-३४४ जो चीज शुद्ध हैं उनका वर्णन, स्त्री के शुद्ध होने का वर्णन ३४५

अनध्याय वर्णनम् : ७८८

अनध्याय अर्थात् जिस समय वेद नहीं पढ़ना चाहिए ३५४-३६६ अनध्याय में वेदाध्ययन निष्फल होता है ३६७-३७० स्वर हीन वेद पढ़ने का पाप और वज्ररूप फल बताया है ३७१-३७२

“ये स्वाध्यायमधीयीरन्ननध्यायेषु लोभतः ।

वज्र रूपेण ते मन्त्रास्तेषां देहे व्यवस्थिताः” ॥

मनुष्यों को किससे साथ कैसा व्यवहार, करना, ३७३-३७६ मनुष्यों को आचार का पालन करने से यश और धन की प्राप्ति है । आयु, प्रजा, लक्ष्मी और संसार में सम्मान का मूल आचार ही है ३७७-३८०

७. श्राद्ध वर्णनम् : ७९१

श्राद्ध के समय कौन-कौन हैं उनका निर्देश १-४ श्राद्ध में जिनको निमन्त्रण देना निषिद्ध हैं ५-१४ श्राद्ध में जिनको निमन्त्रण देना चाहिए १५-२६ श्राद्ध में जो ब्राह्मण भोजन करते हैं उनके यम नियम बताए गए हैं २७-३२ श्राद्ध में पत्रावली ३३-३४ निर्धन पुरुष जिनके पास श्राद्ध करने की सामग्री नहीं है उनका पितृऋण से क्षमा याचना ३४-३७ जो इतना भी न कर सके वह पितृ-हत्यारा कहा जाता है ३८-३९

- कौन किसका श्राद्ध कर सकता है इसका निर्णय है, जैसे;
 अपुत्र की स्त्री भी पति का, इष्ट परिजन अपने मित्रों का,
 लड़की का लड़का अर्थात् दौहित्र भी श्राद्ध कर सकता है ।
 एकोद्दिष्ट श्राद्ध पुत्र ही अपने पिता और पितामह का कर
 सकता है ४०-६१
- श्राद्ध में शूद्रान्त का निषेध और स्त्री को भोजन करना निषेध ६२-८३
- एकोद्दिष्ट श्राद्ध का विधान तथा किस किस काल में श्राद्ध करना
 चाहिए उन कालों का वर्णन — कुतुप, (मध्याह्न) रोहिणी,
 संक्रान्ति, अमावस्या, व्यतीपात आदि ८४-१०१
- मलमास में भी श्राद्ध और नित्य श्राद्ध का वर्णन १०२-१०५
- श्राद्ध की तिथि का निर्णय, सगोत्र ब्राह्मण को श्राद्ध में भोजन
 कराने का निषेध १०६-११६
- वृद्धि श्राद्ध (नान्दीमुख) शुभ कार्य में जो पितरों का श्राद्ध होता
 है उनके उपयुक्त जो पात्र है उनका निर्णय, वट वृक्ष की
 लकड़ी और बिल्वपत्र के पत्ते पर भोजन करने का निषेध ११७-१२०
- श्राद्ध में कौन पुष्प किसको चढ़ाने अथवा नहीं चढ़ाने चाहिए १२३-१२७
- गुग्गुल की धूप को श्राद्ध में निषेध बताया है १२८-१२९
- श्राद्ध में तिलक कैसे लगाना चाहिए १३०-१३१
- श्राद्ध में कैसा वस्त्र देने का निर्णय है १३२
- श्राद्ध में देश रीति तथा कुल रीति का पालन १३३-१३४
- सपिण्डी श्राद्ध का विवरण और अग्नि में जले हुए, सांप से कटे हुए
 की श्राद्ध क्रिया बताई है १३५-१४९
- नान्दीमुख श्राद्ध में कौन देवता पूजे जाते हैं और उसमें दीप दानादि
 कैसे होता है । नान्दीमुख श्राद्ध का विशेष वर्णन किया है १४९-१७२
- श्राद्ध के भेद और श्राद्ध की विधियां, स्त्री का पति के साथ तथा
 किस स्त्री का पृथक् श्राद्ध होता है उसका वर्णन किया है ।
 चतुर्दशी में जो एकोद्दिष्ट श्राद्ध होता है उसका वर्णन और
 प्रतिलोम के लड़कों को श्राद्ध का अधिकार नहीं उसका

वर्णन तथा नारायणबली, जो अपमृत्यु से मरते हैं जैसे पेड़ से गिरकरे; नदी में डूबकर इत्यादि इनकी नारायणबली का विधान कहा है। अपने पति के साथ जो स्त्री मरती है उस के श्राद्ध का वर्णन, श्राद्ध में जो जो विधान करने हैं उनका पूरा वर्णन, श्राद्ध के सम्बन्ध में जितनी बातों की जानकारी चाहिए उन सबका वर्णन इस अध्याय में सविस्तर दिखाया गया है

१७३-३६६

८. शुद्धि वर्णनम्: ८२६

सूतक और अशौच का निर्णय सूतक बच्चे के जन्म होने से जो छूत होती है उसे कहते हैं। अशौच मृत्यु की छूत को कहते हैं
किसको कितने दिन का सूतक पातक लगता है उसका विचार
अनाथ मनुष्य की क्रिया करने से अनन्त फल

१-२

३-२५

२६-२७

गर्भपात का सूतक जितने महीने का गर्भ हो उतने दिन के सूतक का निर्णय, अग्नि, अङ्गार, विदेश आदि में जो मर जाते हैं उनका सद्यः शौच अर्थात् तत्काल स्नान करने से शुद्धि कही गई है। जिन बच्चों को दांत नहीं निकले हैं और जो जन्मते ही मर गए हैं उनका सद्यः शौच कहा है। इनका अग्नि संस्कार आदि कुछ नहीं होता। किसी के घर में विवाह उत्सव आदि हो और यदि वहां अशौच हो जाए तो उसका जो पहले किए हुए दानादि सत्कर्म अशुद्ध नहीं होते हैं

२८-५०

जिन-जिन पर सूतक नहीं लगता तथा जिस दशा पर सूतक पातक नहीं लगता उनका वर्णन किया गया है

५१-६०

प्रायश्चित्त वर्णनम् : ८३५

पापों का क्षालन करने के लिये प्रायश्चित्तों का माहात्म्य और कर्तव्य बताया है

६१-७०

प्रायश्चित्त विधान करने वाली सभा का संगठन

७१-७७

महापापी के प्रायश्चित्त

७८-१०७

शराब पीने का प्रायश्चित्त

१०८-११०

स्वर्ण की चोरी का प्रायश्चित्त	१११-११३
मातृगामी का प्रायश्चित्त	११४-११५
जिन पापों में चान्द्रायण व्रत किया जाता है उनका वर्णन आया है तथा महापातकियों का प्रायश्चित्त बताया है	११६-१४०
गोवध के प्रायश्चित्तों का निर्णय और गौ के मरने के अलग-अलग कारणों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रायश्चित्त	१४१-१७१
हाथी, घोड़ा, बैल, गधा इनकी हत्या पर शुद्धि का वर्णन आया है	१७२-१७४
हंस, कौआ, गीध; बन्दर आदि के वध का प्रायश्चित्त	१७५-१७८
तोता, मैना, चिड़ी इनके वध करने का प्रायश्चित्त	१७९-१८०
बाज, चील के मारने का प्रायश्चित्त	१८१
मंडूक, गीदड़, शाखामृग (बंदर) महिष, ऊँट आदि जंगली जानवरों के मारने का प्रायश्चित्त	१८२-१८७
अभक्ष्य के खाने का प्रायश्चित्त और रजस्वला स्त्री के छूये हुए खाने का प्रायश्चित्त	१८८-१९१
दांतों के अन्दर गया हुआ उच्छिष्टावशेष को खाने का तथा अपना ही जूठा जल पीने का प्रायश्चित्त	१९२
जिस जल में कपड़े धोये जाते हैं उसे पीने का प्रायश्चित्त	१९३-१९४
वेश्या, नट की स्त्री, धोबी की स्त्री आदि के सहवास के पापों का प्रायश्चित्त	१९५-२००
कसाई के हाथ का मांस खाने का प्रायश्चित्त	२०१-२०२
जिनके घर का अन्न नहीं खाना चाहिए जैसे वेश्या आदि के घर खाने का प्रायश्चित्त कहा है	२०३-२०८
बाएं हाथ से भोजन करने का दोष	२०९-२११
बाएं हाथ से भोजन करना सुरा तुल्य बताया है	२१२-२१३
चान्द्रायण और पादकृच्छ्र व्रत का विधान	२१४-२१५
वेश्याओं के साथ रहने वाला जो अज्ञात कुलशील हो और चाण्डाल नौकर रखने वाले को पुनः संस्कार का निर्णय दिया है	२१६-२२१

अभक्ष्य भक्षण अपेय पान (जिसका छूआ पानी नहीं पीना उसके पीने) करने पर प्रायश्चित्त	२२२-२३०
रजस्वला के सम्पर्क से शुद्धि का विधान	२३१-२४२
धोबी के स्पर्श से शुद्धि का विधान	२४३
वर्णक्रम से (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि) रजस्वला स्त्रियों के गमन करने पर प्रायश्चित्त	२४४-२५३
अन्त्यज स्त्री के गमन से प्रायश्चित्त	२५४
गुरुपत्नी आदि के गमन का पाप और उसके प्रायश्चित्त	२५५-६३
रजस्वला के छुये हुए अन्न खाने का प्रायश्चित्त	२६४-२६६
पापों के प्रायश्चित्तों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है	२६७-२७५
दुःस्वप्न देखने और हजामत (क्षौर) करने पर स्नान की विधि	२७६
सूअरः कुत्ता आदि के छूने पर शुद्धि	२७७-२७९
कन्या कुमारी को कोई कुत्ता यदि चाट ले तो उसकी शुद्धि जिधर सूर्य जा रहा हो उधर देखने से हो जाती है	२८०-२८१
कोई कुत्ता किसी को काट लेवे तो उसकी शुद्धि की विधि	२८२-२८४
गुरु को 'तू' बोलना और अपने से बड़ों को 'हूँ-हूँ' बोलना इस पाप की शुद्धि बताई है	२८५
विवाद में स्त्री से जीतकर और स्त्री को मारना उसका प्रायश्चित्त	२८६-२८७
प्रेत को देखकर स्नान से शुद्धि	२८८-२९३
१०८ बार गायत्री मंत्र जपने से शुद्धि वर्णन	२९४-२९५
मुंह से गिरे हुए को फिर खा ले तो उसकी शुद्धि	२९६-२९८
कहीं जल पर पेशाब आदि के छीटे पड़ जायें तो उसकी शुद्धि	२९९-३००
नीच पापी पतित के साथ बात करने के पाप से शुद्धि	३०१-३०४
घर में मन्त्रियों के आने से, बच्चों, स्त्रियों और वृद्धों के बोलने से यदि थूक के छीटे पड़ जाये तो कोई दोष नहीं होता है	३०५-३१०
जो पलास वृक्ष और शीशम के वृक्ष की दन्तधावन करता है और नाई के देखे हुए खाने का दोष गाय के दर्शन से भिट जाता है	३११
जिनके छूने से सिर में जल स्पर्श करने से शुद्धि और जिनके स्पर्श करने से स्नान करना उनका अलग-अलग विवरण आया है	३१२-३२२

- जिनका अन्न नहीं खाना चाहिए उनका वर्णन ३२३-३२६
- नाई जो अपने यहां नौकर हो उसका अन्न लेने में दोष नहीं और
तेल या घृत से बनीं हुई चीज बासी होने पर भी दूषित नहीं
होती ३२७
- आपत्तिकाल में छूत का दोष नहीं होता है ३२८-३३०
- जो वस्तु म्लेच्छ के वर्तन में रहने पर भी अपवित्र नहीं होती, जैसे
घी, तेल, कच्चा मांस, शहद, फल-फूल इत्यादि उनका वर्णन ३३१-३३५
- किस धातु के वर्तन की किससे शुद्धि होती है उसका वर्णन आया
है। आत्मा की शुद्धि सत्य व्यवहार और सत्य भाषण से ही
होगी प्रायश्चित्त आदि से नहीं। सड़क का कीचड़, नाव और
रास्ते में घास इत्यादि ये वायु और नक्षत्रों से ही शुद्ध हो
जाते हैं। ३३६-३४२

६. व्रतोपवासविधि वर्णनम् : ८६२

- चान्द्रायण व्रत, जैसे शुक्लपक्ष में एक ग्रास की वृद्धि और कृष्णपक्ष
में एक-एक ग्रास का ह्रास इसको ऐन्दव व्रत कहते हैं। इस
प्रकार विभिन्न चान्द्रायण व्रत कहे गये हैं। जैसे शिशु चान्द्रा-
यण और यति चान्द्रायण आदि १-८
- कृच्छ्र व्रत, तप्त कृच्छ्र, सांतपन, महासांतपन, प्राजापत्यकृच्छ्र,
पशुकृच्छ्र, पर्णकृच्छ्र, दिव्य सांतपन, पादकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र,
कृच्छातिकृच्छ और परातिवृत सौम्य कृच्छ ९-२१
- ब्रह्मकूर्च का विधान, पंचगव्य बनाने का मंत्र और उनकी विधि २२-३२
- ब्रह्मकूर्च के महात्म्य ३३-३५
- उपवास से पापों की शुद्धि और जितने चान्द्रायण व्रत वर्णन किये
गये हैं इनके मनुष्य स्वेच्छा से भी करे तो जन्म-जन्मान्तर के
पाप दूर होकर आत्मशुद्धि होती है ३६-४३

१०. सर्वदान विधि वर्णनम् : ८६६

- व्यास तथा वशिष्ठजी ने जो दान विधि बताई है उसका फल १-२
- दान का माहात्म्य, पृथक्-पृथक् दान करने का विवरण जैसे अन्नदान,
जलदान, गृहदान, बैलदान, गोदान, तिलधेनु, घृतधेनु, जलधेनु,

हेमधेनु, गजदान, अश्वदान, कृष्णाजिन दान, सुखासन (पालकी) दान आदि	३-६
भूमिदान, तुलादान, धातुदान, विद्यादान, प्राणदान, अभयदान और अन्नदान	१०-१७
अपूप (मालपुए) के दान का उल्लेख है पृथक्-पृथक् दान के प्रकार और उनकी महिमा	१८-२४
गोदान का माहात्म्य, गोदान की विधि और बैल के दान की विधि उभयमुखी (जो गाय बच्चे को उत्पन्न कर रही है) उस दशा में गोदान की विधि और उसका माहात्म्य	२५-४० ४१-४५
तिलधेनु दान विधि और माहात्म्य तथा विशेष सामग्री का वर्णन घृतधेनु की विधि एवं उसकी सामग्री और उसके फल का वर्णन जलधेनु विधि और उसके फल	४६-७० ७१-८६ ८७-१०३
हेमधेनु, स्वर्ण की धेनु बनाने का प्रकार पूजाविधि और दानविधि तथा दान के माहात्म्य का उल्लेख है। स्वर्णधेनु की रचना किस प्रकार करनी और क्या-क्या रत्न उसके किस-किस अंग- प्रत्यंग में लगाने चाहिए उसका वर्णन	१०४-१२१
कृष्णमृगचर्म के दान का विधान वैसाखी पूर्णिमा और कार्तिक की पूर्णिमा को जो दान किया जाय उसका माहात्म्य	१२२-१४२
मागं दान की विधि	१४३-१४६

हयगज दान विधि वर्णनम् : ८८१

सुखासन दान, रथदान, हस्तीदान अश्वदान एवं उसका अलंकार और उसकी दान विधि	१५०-१६६
कन्यादान का माहात्म्य	१७०-१७१
पुत्रदान का माहात्म्य	१७२-१७३

भूमिदान वर्णनम् : ८८३

भूमिदान का माहात्म्य, सब दानों से श्रेष्ठ भूमिदान बताया है।

भूमिदान करने वाला सब पापों से मुक्त हो अनन्त काल तक

स्वर्ग में रहता है

स्वर्ण और चांदी की तुला दान, गुड़ की तुला, लवण की तुला दान जो स्त्री करे तो पार्वती के समान सौभाग्यवती रहेगी तथा पुरुष करे तो प्रद्युम्न के समान तेजस्वी होगा ।

दान विधि वर्णनम् : ८८७

ब्राह्मण को वस्त्राभूषण दान का माहात्म्य, बड़े-बड़े रत्नों के दान का माहात्म्य, स्वर्ण तुला दान करने में भगवान विष्णु की पूजन का विधान, चांदी दान का माहात्म्य, माणिक्य के तुला दान का माहात्म्य, घृत, भोजन की चीज, तेल, पान आदि वस्तुओं का पृथक्-पृथक् दान माहात्म्य । फल, गुड़, अन्न, मकान पलंग दान आदि का माहात्म्य २०१-२३३

विद्यादान वर्णनम् : ८८८

विद्यादान का माहात्म्य और विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र देने का माहात्म्य । सब दानों से अधिक विद्यादान बताया है २३४-२४१
औषधि दान और अस्पताल (औषधालय) खोलने का माहात्म्य और दया दान २४२-२४८

तिथिदान विधि वर्णनम् : ८९०

भगवान विष्णु का पूजन पौर्णमासी में करने का माहात्म्य २४९-२६०
चैत्र शुक्ला द्वादशी को वस्त्रदान का माहात्म्य और छाता, जूता दान करने का माहात्म्य । आषाढ़ में दीप दान; श्रावण में वस्त्र दान; भाद्रपद गोदान; आश्विन में घोड़ा दान, कार्तिक में वस्त्र दान, मार्गशीर्ष में लवण दान, पौष में धान का दान, फाल्गुन में इत्र दान, मास विशेष में अलग-अलग दान बताए हैं २६१-२७८

दान त्याज्यकाल वर्णनम् : ८९३

अशौच सूतक में दान देना लेना निषेध, रात्रि में दान निषेध, और रात्रि में विद्यादान, अभय दान; अतिथि सत्कार हो सकता है अभय दान हर समय हो सकता है, दूसरे का दान अशौच सूतक में लेना निषेध २७८-२८२

दान लेने और देने की शास्त्रोक्त विधि का वर्णन	२८३-२८६
सत्पात्र को दान देना चाहिए परोक्ष दान के महान् पुण्य	२६०-३००

दानार्थ गौलक्षण वर्णनम् : ८६५

गोदान का वर्णन, कैसी गौ दान के लिए होनी चाहिए	३०१-३०६
दान में तौल वर्णन, और गौ का दान अक्षय फल	३०७-३१३
१६ प्रकार के वृथा दान	३१४-३२३

दानग्राह्य पुरुषलक्षण वर्णनम् : ८६७

दातव्य वस्तु के दान का माहात्म्य, किसको कैसा दान देना व लेना, उसकी विधि, अन्य दान की विधि, प्रतिग्रह लेने पर विशेष विधि, अश्व दान का विशेष विधान, अश्व दान लेने की विधि	३२४-३४१
---	---------

मास, पक्ष, तिथि विशेषण दान महत्त्व वर्णनम् : ८६८

श्रावण शुक्ला द्वादशी को गोदान का माहात्म्य	३४३
पौष शुक्ला द्वादशी को घृतधेनु का विधान	३४४
माघ शुक्ला द्वादशी को तिलधेनु का विधान	३४५
ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी को जलधेनु का विधान	३४६
काल, पात्र, देश में दान का माहात्म्य	३४७-३४९
ग्रहण काल में दिया हुआ दान अक्षय होता है	३५०-३५२
वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, फाल्गुन की पूर्णिमा को दान का माहात्म्य	३५३-३५४
तुला संक्रान्ति, मेष संक्रान्ति में प्रयाग में दान का माहात्म्य	३५५
मिथुन कन्या, धनु, मीन संक्रान्ति में भास्कर तीर्थ में दान का माहात्म्य	३५६-३५८
अक्षय दान का माहात्म्य	३५९
सूर्य, ब्रह्मा आदि देवों के मन्दिरों का निर्माण तथा जीर्णोद्धार विधि	३६०-३६८

कूप तड़ागादि कीर्ति महत्त्ववर्णनम् : ६०१

कूप बावड़ी तालाब आदि बनाने का माहात्म्य	३६९-३७४
पीपल, उदुम्बर, वट, आम, जामुन, निम्ब, खजूर, नारियल आदि भिन्न-भिन्न जाति के वृक्ष लगाने का माहात्म्य	३७५-३७८

“अश्वत्थमेकं पिचुमन्बमेकं न्यग्रोधमेकं दश चिचिणीश्च ।

षट् चम्पकं तालशतप्रयं च पञ्चाश्रवृक्षं नरकं न पश्येत्” ॥

इतने वृक्षों को लगाने से नरक में नहीं जाते हैं । लगाये हुए वृक्षों के फल पक्षी जितने दिन खाते हैं उतने दिन स्वर्ग में रहते हैं ३७९-३८२
जितने फूल के वृक्ष लगाता है उतने दिन तक स्वर्ग में रहता है ३८३
विभिन्न प्रकार के वृक्ष और पुष्पवाटिकाये अपने हाथ से लगाने से स्वर्ग गति का माहात्म्य है ३८६

११. विनायकशान्तिविधि वर्णनम् : ६०३

शान्ति प्रकरण यथा — विनायक शान्ति का प्रकरण है जब तक विनायक शान्ति नहीं होती तब तक ये लिखित दुःस्वप्न दर्शन होते हैं यथा रात्रि में निशाचर, जलावगाहन इत्यादि १-८
इसके बाद उसके स्नान का वर्णन ६-२१
हवन का विधान २२-२५
भगवती पार्वती का स्तवन मन्त्र २६-३०
आचार्य दक्षिणा इत्यादि ३१-३३

ग्रहशान्तिविधि वर्णनम् : ६०६

ग्रहशान्ति—ग्रहमण्डप, ग्रहों के जप मन्त्र, ग्रहों का पूजोपचार, ग्रहदान आदि नवग्रह का पूजन एवं माहात्म्य ३४-८५

अद्भुत शान्ति वर्णनम् : ६११

घर के उपद्रव, एवं खेती में अपाय यथा सरसों के वृक्ष में तिल, एवं जल में अग्नि, ईंधन इत्यादि, गाय, बल के शब्द से बोले; कौवे गृह में जाने लगे, दिन में तारे दिखना, मकान पर गृद्ध इत्यादि का बैठना, ऐसे ऐसे उपद्रवों की शान्ति एवं उपचार ८६-१०६

रुद्रपूजाविधि वर्णनम् : ६१४

रुद्र की पूजा का विधान और उसके मंत्र १०७-१५८

रुद्रशान्ति वर्णनम् : ६१९

रुद्र शान्ति का सम्पूर्ण विधान बताया है । रुद्र शान्ति से आयु तथा कीर्ति बढ़ती है उपद्रवों की शान्ति होती है । मृत्युञ्जय का हवन बिल्वपत्रों से १५९-२०२

तडागादि विधि वर्णनम् : ६२३

तडाग, कूप, वापी, इनकी प्रतिष्ठा का विधान । उपर्युक्त दूषित होने पर इनकी शुद्धि का विधान और माहात्म्य २०३-२४०

होमविधि वर्णनम् : ६२७

लक्ष होम, कोटि होम की विधि इन दोनों में कितने ब्राह्मण और कैसा कुण्ड इनका वर्णन तथा लक्ष और कोटि होम का आहवनीयद्रव्य, अभिषेक मन्त्र, अभिषेक विधान, आचार्य ऋत्विक् इनकी दक्षिणा का विधान और इसका माहात्म्य । सब प्रकार की आपत्तियों को दूर करने वाला और राष्ट्र के सब उपद्रवों को दूर करने वाला होता है २४१-२६६

पुत्रार्थ पुरुषसूक्त विधान वर्णनम् : ६३२

जिस स्त्री के सन्तान न हो अथवा मृतवत्सा हो उसको सन्तति के लिए त्रैमासिक यज्ञ जो कि शुक्ल पक्ष में अच्छे दिन पर दम्पति द्वारा उपवास कर पुत्र कामना के लिए किया जाता है उसकी विधि एवं मन्त्र २६७-३१३

शान्ति विधि वर्णनम् : ६३४

प्रत्येक ग्रह के मन्त्र एवं ऋषि पूजन विधान, वैदिक सूक्तों का वर्णन ३१४-३४७

१२. राजधर्म वर्णनम् : ६३८

राजा को देवता के समान बताया गया है १५-२२

राजा को प्रजा की रक्षा का विधान तथा राजा को राज्य संचालन के लिए षडगुण, सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय, द्वेधीकरण तथा रहस्यों की रक्षा तथा अपने समीप कैसे पुरुषों को रखना इसका वर्णन २४-३६

राजा को जहां तक हो लड़ाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि युद्ध से सर्वनाश होता है ३७-४३

जब युद्ध से न बचे उस समय व्यूह रचना आदि का वर्णन ४४-६६

पुरुषार्थ और भाग्य दोनों को समान दृष्टिकोण रखकर कार्य करना चाहिए ६७-७१

सांसारिक ऐश्वर्य को विनाशवान समझकर उसमें आस्था न करें ।

भाग्य और पुरुषार्थ के सम्बन्ध में विवेचना की गई है । दुष्टों को दण्ड से दमन करना, राजा को प्रसन्नमूर्ति रहना चाहिए क्योंकि राजा सब देवताओं के अंश से बना हुआ है

७२-६५

वानप्रस्थ भिक्षा धर्म वर्णनम् : ६४७

वानप्रस्थी के नियम तथा उसके कर्तव्यों का वर्णन आया है । वान-प्रस्थ को अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राजा को कहना चाहिए वानप्रस्थी को यज्ञ आदि कर्म करने का विधान और उसको भिक्षा लाकर आठ ग्रास खाने का नियम

६६-१२०

वेदान्त शास्त्र को पढ़कर यज्ञविधि को समाप्त कर संन्यास में जाने का नियम एवं संन्यासी के धर्म, दिनचर्या आदि का वर्णन तथा उसको निर्भयता, निर्मोह, निरहंकार, निरीह होकर ब्रह्म में अपनी आत्मा को लीन करना

१२१-१४४

चतुर्णामाश्रमाणां भेदवर्णनम् : ६५१

ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी और संन्यासी के भेद बताए हैं । ब्रह्म-चारी के भेद प्राजापत्य, नैष्ठिक इत्यादि गृहस्थ के चार भेद—शालीन यायावर इत्यादि; वानप्रस्थ के भेद-वैखानस, उदुम्बर इत्यादि, संन्यासी के भेद—हंस, परमहंस, दण्डी इत्यादि तथा उनके धर्मों का निर्देश

१४५-१७४

योग वर्णनम् : ६५४

गर्भ में देहरचना और उससे वैराग्य, यह बताया है कि आत्मा देह से भिन्न है । अनेक प्रकार के कर्मों का वर्णन दिखलाया है कि कर्म के अनुसार देह बनती है । शब्द ब्रह्म का वर्णन और प्राण, योग सिद्धि, दीर्घायु का वर्णन । प्राणायाम का वर्णन, पूरक, रेचक, कुम्भक और प्रत्याहार के अभ्यास का वर्णन, अग्नि, वायु जल के संयोग से शुद्धि

१७५-२४२

प्रणवध्यान, ध्यानयोग, योगाभ्यास वर्णनम् : ६६१

ज्ञान योग और परम मुक्ति का वर्णन, भगवान का ध्यान एवं प्रणव का ध्यान जानना और उसमें भक्ति का वर्णन, ध्यान के

प्रकार—किस स्वरूप में तथा किस जन्म में किस देवता का ध्यान करना इत्यादि का वर्णन । मृत्यु के अनन्तर जीव की दो मार्ग की गति का वर्णन, एक धूम मार्ग दूसरा प्रकाश (अर्चि) मार्ग । एक से ब्रह्म की प्राप्ति और एक से स्वर्ग की प्राप्ति । ब्रह्मयोग की प्राप्ति के साधन का वर्णन ब्रह्म का अभ्यास, ध्यान और प्रत्याहार का वर्णन तथा यह बताया है कि ‘मृत्युकाले मतिर्यास्यात्तां गतिं याति मानवः’ । इसलिए मुमुक्षु को नित्य ऐसा अभ्यास करना चाहिए जिससे अन्त समय ब्रह्म ज्ञान का अभ्यास बना रहे ।

२४३-३७६

लघुहारीत स्मृति

१. वर्णाश्रमधर्मवर्णनम् : ६७४

ऋषिगणों का हारीत ऋषि से सम्वाद—ऋषियों ने वर्णाश्रम धर्म तथा योगशास्त्र हारीत से पूछा जिसके जानने से मनुष्य जन्ममरण रूप बन्धन को तोड़कर संसार से मुक्त हो जाय । इस अध्याय के नवम् श्लोक से हारीत ने सृष्टि का वर्णन किया, भगवान् शेषशायी समुद्र में शयन कर रहे थे उस समय ब्रह्मा की उत्पत्ति से प्रारम्भ कर जगत की उत्पत्ति तक वर्णन किया । श्लोक तेईस में लिखा है जो धर्मशास्त्र न जाने उसको दान न देना । संक्षेप में ब्राह्मण का धर्म इस अध्याय में कहा गया है

१-२३

२. चतुर्वर्णानां धर्मवर्णनम् : ६७७

क्षत्रिय तथा वैश्य का धर्म बताया गया है । क्षत्रिय का धर्म प्रजापालन, दान देना, अपनी भार्या में ही रति रखना, नीतिशास्त्र में कुशलता और मेल करना तथा लड़ना इसके तत्त्व को जाने । वैश्य का धर्म है गोरक्षा, कृषि और वाणिज्य । मनुष्य को स्वदार निरत रहना चाहिये

१-१५

३. ब्रह्मचर्याश्रम धर्मवर्णनम् : ६७९

उपनयन संस्कार के बाद विधिपूर्वक अध्ययन करना और अध्ययन विधि के विरुद्ध करना निष्फल बताया गया है
ब्रह्मचारी के नियम एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी को विवाह करना और संन्यास करने का निषेध बताया गया है । इस प्रकार ब्रह्मचारी के धर्म का वर्णन बताया गया है

१-४

५-१४

४. गृहस्थाश्रम धर्मवर्णनम् : ६८१

वेदाध्ययन के अनन्तर ब्राह्मविवाह विधि से विवाह

१-३

प्रातःकाल उठकर दन्तधावन का विधान और दन्तधावन की लकड़ी तथा मन्त्रों से स्नान, प्रातःकाल जब सूर्य लाल-लाल दिखाई पड़ता है उस समय मन्देह नामक राक्षसों के साथ सूर्य का युद्ध होता है अतः प्रातःकाल गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्यदान देना लिखा है। मरीचि आदि ऋषि और सनकादि योगियों ने भी प्रातःकाल सूर्य को अर्घ्यदान देना बताया है। जो मनुष्य अर्घ्यदान नहीं करता है वह नरक में जाता है

४-१६

स्नान करने की विधि और स्नान करने के मन्त्र

१७-३३

पानी तीन चुल्लू पीना और पानी को अञ्जली भर सिर पर डालना। कुशा को हाथ में लेकर पूर्व की ओर मुख करके प्रोक्षण करे

३४-३८

प्राणायाम और गायत्री के मन्त्र जपने की विधि। जप के मन्त्र का उच्चारण करने का विधान। जप के तीन मुख्यभेद वाचिक, उपांशु और मानस। जप करने से देवता प्रसन्न होते हैं यह बताया गया है। जो नित्य गायत्री का जप करता है वह पापों से छूट जाता है। गायत्री जप करने के बाद सूर्य को पुष्पांजलि दे और सूर्य की प्रदक्षिणा कर नमस्कार करे पश्चात् तीर्थ के जल से तर्पण करे

३९-५०

ब्रह्मयज्ञ के मन्त्रों का वर्णन

५१-५४

अतिथि पूजन और वैश्वदेव की विधि

५५-६२

पहले सुवासिनी स्त्री और कुमारी को भोजन करावे फिर बालक और वृद्धों को भोजन करावे तब गृहस्थी भोजन करे। भोजन से पूर्व अन्न को हाथ जोड़े और पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके पहले “प्राणाय स्वाहा” इत्यादि मन्त्रों से पांच आहुति देवे तब आचमन कर लेवे इसके बाद मौन पूर्वक स्वादिष्ट भोजन करे

६३-६४

भोजन करने के अनन्तर दिन में कोई इतिहास, पुराण आदि की पुस्तकें पढ़नी चाहिये	६६
प्रातःकाल एवं सायंकाल केवल दो समय ही गृहस्थी को भोजन करना चाहिये और बीच में कुछ नहीं खाना चाहिये	६७-६८
अनध्याय काल (वह दिन जिनमें पुस्तकों को नहीं पढ़ना) का वर्णन गृहस्थी को सुवर्ण गौ एवं पृथिवी का दान करना चाहिये	६९-७३ ७४-७७

५. वानप्रस्थाश्रम धर्मवर्णनम् : ६८८

वानप्रस्थ आश्रम के नियम बताये हैं जोकि अन्य धर्मशास्त्रों में समान रूप से बताए गए हैं	१-१०
---	------

६. संन्याश्रम धर्मवर्णनम् : ६८९

वानप्रस्थ के बाद संन्यास में जाना चाहिए और संन्यास में जाने के बाद लड़कों के साथ भी स्नेह की बातें न करे	१-५
संन्यासी को दंड, कौपीन तथा खड़ाऊ आदि धारण करने का नियम	६-१०
संन्यासी को भिक्षा के नियम और धातु के पात्र में खाने का दोष	११-१६
संन्यासी को सन्ध्या जप का विधान, भगवान का ध्यान जीव मात्र पर समदृष्टि रखने का आदेश	२०-२३

७. योगवर्णनम् : ६९२

वर्णाश्रम धर्म कहकर जिससे मोक्ष हो और पाप नाश हो ऐसे योगाभ्यास की क्रिया रोज करनी चाहिए	१-३
प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान बतला कर सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में जो भगवान हैं उनका ध्यान करना लिखा है। जिस प्रकार बिना घोड़े के रथ नहीं चल सकता उसी प्रकार बिना तपस्या के केवल विद्या से शान्ति नहीं होती है।	४-११
विद्या और तपस्या से योग में तत्पर होकर सूक्ष्म और स्थूल दोनों देह को छोड़कर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। हारीत ऋषि कहते हैं कि मैंने संक्षेप से ४ वर्ण एवं ४ आश्रमों के धर्म इस उद्देश्य से बताए हैं कि मनुष्य अपने वर्ण और आश्रम के धर्म पालन से भगवान मधुसूदन का पूजन कर वैष्णव पद को पहुँच जाता है	१२-२१

वृद्ध हारीत स्मृति

१. पञ्चसंस्कार प्रतिपादनवर्णनम् : ६६४

राजा अम्बरीष हारीत ऋषि के आश्रम में गए। वहां जाकर हारीत से परम धर्म, वर्णाश्रम धर्म, स्त्रियों का धर्म तथा राजाओं के लिए मोक्ष मार्ग पूछा

१-६

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में हारीत ने कहा कि मुझे जो ब्रह्माजी ने बताया है वह मैं आपको कहता हूं। नारायण वासुदेव विष्णु-भगवान् सृष्टि के विधाता हैं अतः उन भगवान् का दास होना ही सबसे बड़ा धर्म है

७-१६

मैं विष्णु का दास हूं यही भावना चित्त में रखना। नारायण के जो दास नहीं होते हैं वे जीते जी चाण्डाल हो जाते हैं। इसलिए अपने को भगवान् का दास समझकर जप पूजादि करे, नारायण का मन से ध्यान कर उनका संकीर्तन करे और शंख, चक्र, ऊर्ध्वपुंड्र धारण करे यह दास के चिह्न हैं। जो वैष्णव शंख, चक्र धारण करता है वही पूज्य है और वही धन्य है

१७-३६

२. वैष्णवानाम् पुण्ड्र नाम, मंत्र तथा पञ्चसंस्कारवर्णनम् : ६६७

पंच संस्कार शंखचक्र चिह्न धारण ऊर्ध्वपुण्ड्रादि की विधि, वैष्णव सम्प्रदाय की दीक्षा, उसका माहात्म्य, वैष्णव सम्प्रदाय की बालक की पंच संस्कार विधि बताई गई है

१-१५

३. भगवन् मंत्रविधान वर्णनम् : १०१२

अम्बरीष राजा ने हारीत ऋषि से वैष्णव मन्त्रों का माहात्म्य तथा विधि पूछी; इसके उत्तर में हारीत ने बड़े विचार के साथ पंचविंशति अक्षर का मन्त्र, अष्टाक्षर मन्त्र, द्वादशाक्षर

मंत्र, हयग्रीव मंत्र तथा षोडशाक्षर मंत्र आदि अनेक वैष्णव मंत्रों का उद्धरण, उनके विनियोग, न्यास ध्यान, जप विधि, शंख, चक्र पूजन और भगवान विष्णु के पूजन आदि का सुन्दर वर्णन किया है

१-३६२

४. प्राप्तकाल भगवत् समाराधन विधिवर्णनम् : १०५०

प्रातःकाल उठने का विधान, शौच से निवृत्त हो वैष्णव धर्म के अनुसार तुलसी और आंवले की मिट्टी को अपने बदन पर लगाकर मार्जन करने और स्नान करने का विधान तथा मंत्रों का विधान बताया है

१-४६

विष्णु का पूजन और विष्णु को कौन-कौन पुष्प चढ़ाने चाहिए एवं षडक्षर मंत्र का विधान

४७-१४०

प्राप्तकाल भगवत् समाराधन विधौ कृषिवर्णनम् १०६५

पुराणों का पाठ, वैष्णव पूजा का विधान, तामस देवताओं का वर्णन और द्रव्य शुद्धि का वर्णन आया है। खेती करना, पशु का पालन करना सबके लिए समान धर्म बताया है। चोरी करना, परस्त्री हरण, हिंसा सबके लिए पाप है

१४१-१७४

प्राप्तकाल भगवत् समाराधनविधौ राजधर्मवर्णनम् : १०६७

राजधर्म का वर्णन, दण्डनीति विधान—प्रायः वही है जो याज्ञवल्क्य में हैं। इसमें विशेषता यह है कि धर्मच्युत को सहस्र दण्ड विधान बताया है। स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाले का अंगच्छेदन, सर्वस्वहरण और देश निष्कासन बताया है

१७५-२१३

युद्ध का वर्णन और युद्ध में राज्य जीतकर उसे अपने आधीन कर राज्य समर्पित कर देना इसकी बड़ी प्रशंसा की गई है एवं विजय की हुई भूमि सत्पात्र को देनी चाहिए। सत्पात्र के लक्षण-तपस्या और विद्या की सम्पन्नता है

२१४-२२३

राज्यशासन का विधान, कर लगाना, याचित, अनाहित और ऋण-दान देने का विधान, पुत्र को पिता का ऋण देना, स्त्री धन की रक्षा, पतिव्रता स्त्री का पालन, व्यभिचारिणी को पति के धन का भाग न मिलने का वर्णन और बारह प्रकार के

पुत्रों का वर्णन इस तरह संक्षेप में राजधर्म और भागवत धर्म की जिज्ञासा लिखी है

२२४-२६५

५. भगवन्तित्यनेमित्तिक समाराधन विधिवर्णनम् : १०७५

राजा अम्बरीष ने मनु, भृगु, वशिष्ठ, मारीचि, दक्ष, अङ्गिरा, पुलः, पुलस्त्य, अत्रि इनको जगत् गुरु कहकर प्रणाम किया और वह परमधर्म पूछा जिससे संसार के बन्धन से छुटकारा हो

१-६

उत्तर में परमधर्म इस प्रकार बताया:—भगवान् वासुदेव में भक्ति और उनके नाम का जप, भगवान् को उद्देश्य कर व्रतादि, स्वदार में प्रीति दूसरी स्त्री में लगन न हो अहिंसा और भगवान् का दास होकर रहना आदि । मेरा स्वामी भगवान् है और मैं उनका दास हूँ यह धारणा रखे । यही भगवत् प्राप्ति का मार्ग है और इसके अतिरिक्त सब नरक का मार्ग बताया है

१०-१६

वैष्णव धर्म का माहात्म्य और अपने को भगवान् का दास समझना तप्त शंख चक्र का चिह्न जिन पर लगाया गया उन ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी और यतियों का नित्य कर्म और वर्णाचार, पूजन, जप, उपासना का विधान

१७-४०

४१-२४६

यति एवं वानप्रस्थ का रहन-सहन तथा मन से अष्टोत्तर षट् मंत्र का जप, उनका धर्म, सन्ध्या का विधान, वैश्वदेव और भूत-बलि का विधान, दिनचर्या संस्कार तथा पुत्रोत्पत्ति का विधान

२४७-३०२

वैष्णवों को प्रातःकाल में स्नान कर लक्ष्मीनारायण के पूजन की विधि बताई है । भगवान् को पायस चढ़ाकर पुष्पाञ्जलि देकर द्वादशाक्षर जप करने का विधान आया है

३०३-३१३

मन्दिर में जाकर पूजन और द्वादशाक्षर मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देना

३१४-३२७

वैशाख, श्रावण, कार्तिक, माघ, इन मासों में जिस प्रकार भगवान् विष्णु का पूजन तथा विष्णु के उत्सवों का वर्णन आया है और पुराण पाठ आदि भगवान् के पूजन कीर्तन के अनेक प्रकार के विधान बताये हैं

३२८-५६२

६. भगवतः यात्रोत्सवर्णनम् : ११२७

भगवान् के महोत्सव की विधियां जो कि अपने आचार के अनुसार की जाती हैं जिनसे अनावृष्टि आदि उत्पात तथा महारोग दूर होते हैं । संवत्सर प्रति संवत्सर या प्रति ऋतु में महोत्सव करने का विधान, इन महोत्सवों में मण्डप के सजाने की विधि और नगर कीर्तन यज्ञ आदि की विधि, किस दशा में किस सूक्त का पाठ करना बताया गया है । भगवान् को नीराजन कर शय्या में सुलाना उसके मंत्र, विस्तार से बृहत्पूजन की विधि, श्राद्ध का वर्णन और श्राद्ध करने पर नारायणबलि का विधान

१-१५५

सात्विक, राजसिक, तामसिक प्रकृति का वर्णन और पाप के अनुसार नरक की गति और उन नरकों के नाम

१५६-१७१

महापातकादि प्रायश्चित्त वर्णनम् ११४३

पापों का वर्णन

१७२

महापाप जिनका कि अग्नि में जलने के अतिरिक्त और कोई प्रायश्चित्त नहीं । द्वादशाक्षर मंत्र के जप से पापों का नाश और शुद्धि

१७३-२४५

रहस्य प्रायश्चित्तवर्णनम् ११५३

सम्पूर्ण प्रकार के पापों की गणना बतला कर उनका प्रायश्चित्त, व्रत, जप, दान आदि बताया है । इसी प्रकार गुप्त पापों से छुटकारा जिस तरह हो सके उनका प्रायश्चित्त और दान तथा भगवान् का मन्त्र जप आदि

२४६-३५०

महापापादि प्रायश्चित्त प्रकरण वर्णनम् ११६०

रजस्वला के स्पर्श से लेकर बड़े-बड़े पापों की निवृत्ति के लिए वापी कूप, तड़ाग, वृक्ष लगाने का माहात्म्य और वैकुण्ठनाथ विष्णु भगवान् के पूजन का माहात्म्य

३५१-४४६

७ नानाविधोत्सव विधानवर्णनम् : ११६६

नारायण इष्टी, वासुदेव इष्टी, गारुड इष्टी, वैष्णवी इष्टी, वैयुही इष्टी, वैभवी इष्टी पाद्मी इष्टी, पवमानिका इष्टी और इनके मन्त्र तथा यज्ञ पुरुष, द्रव्य यज्ञ, तपोयज्ञ, योगयज्ञ, स्वाध्याय, ज्ञान यज्ञ, यज्ञ की वेदी बनाना उनके मन्त्र आदि के वर्णन

१-६६

कृष्ण पक्ष की एकादशी में उपवास, व्रत, रात्रि जागरण और द्वादशी को द्वादशाक्षर मंत्र का जप, भगवान् का पूजन, देव-पियों के तर्पण का विधान बताया है

७०-६०

वैष्णवी इष्टी (यज्ञ) का विधान, उनके मन्त्र, उनकी सामग्री और वैष्णव गायत्री का जप बताया है

६१-१०५

शुक्लपक्ष की द्वादशी, संक्रान्ति और ग्रहण के समय संकर्षणादि की मूर्ति, वासुदेव की मूर्ति का पूजन और किस प्रकार किस देवता की मूर्ति बनाना तथा पूजन यह वैष्णवी यज्ञ जो विष्णु भक्त न करे उसको पाप । इसमें कहां पर किस देवता की स्थापना करनी चाहिए । शुक्लपक्ष की शुक्रवारीय द्वादशी को पाद्मी इष्टी, इसमें भगवान् का उत्सव और उसका माहात्म्य, जलशायी भगवान् का पूजन और इनके मन्त्र हैं । दोलयात्रा उत्सव का वर्णन है । भगवान् का विशेष प्रकार से पूजन, भोग और कीर्तन, रथयात्रा का वर्णन आया है

१०६-३२६

८. विष्णुपूजा विधिवर्णनम् : १२०१

विष्णु की पूजा की विधि वेद के मन्त्रों से बताई गई है

१-६०

पौराणिक तथा स्मृति के मन्त्रों से भगवान् विष्णु का पूजन और नवधा भक्ति का वर्णन, ध्यान जप, मन्त्र जप का वर्णन, तप्तचक्रांक धारण का माहात्म्य और वैष्णव धर्म वालों की प्रशस्ति बताई है ।

“दानं दमः तपः शौचं आज्ञं शान्तिरेव च

आनृशंसं सतां संगं पारमैकान्त्य हेतवः ।

वैष्णवः परमेकान्तो नेतरो वैष्णवः स्मृतः ॥

पूजा का माहात्म्य और भिन्न-भिन्न प्रकार से जो भगवान् विष्णु की पूजा उत्सव यज्ञ दान बताये हैं, इन सबका तात्पर्य यह है कि भक्त पर विष्णु भगवान् की कृपा हो जाय जिस पर वैष्णव संस्कारों से विष्णु भगवान् की कृपा या आशीर्वाद हो जाता है उनका जीवन-चरित्र ऐसा होता है—दान करना, दम इन्द्रियों का दमन, तप तपस्या, शौच पतिव्रता, आर्जव सरलता, शान्ति क्षमा, आनृशंसं सत्य वचन सज्जनों का संग परमेकान्त में रहना से वैष्णव के चिह्न हैं

६१-३५१

वृहत् हारीत स्मृति में स्मृति-प्रतिपाद्य आचार; व्यवहार प्रायश्चित्त के समुचित निर्णय के अतिरिक्त वैष्णवाचार, वैष्णवोपासना विष्णु इष्टी, विष्णु पूजन सांग सावरण; वैष्णव पूजा उत्सव; स्थयात्रा एकादश्यादि व्रतोद्यापन; मण्डप-रचना आदि का सुचारु विधान निरूपण किया है ।

स्मृति संदर्भ

तृतीय भाग

याज्ञवल्क्य स्मृति

याज्ञवल्क्य स्मृति में तीन अध्याय हैं। प्रथमाध्याय में संस्कार आश्रम, ग्रह शान्ति आदि, द्वितीयाध्याय में राजधर्म, व्रतधर्म राजसभा, वादिप्रतिवादि का निर्णय, व्यवहार के भेद, गृहस्थ धर्म, दण्डनीति, दायभाग आदि, तृतीयाध्याय में सूतक, अशौच, पाप, पापों का प्रायश्चित्त, वानप्रस्थ और संन्यास के धर्मों का वर्णन है।

१. आचाराध्यायः—उपोद्घात प्रकरण वर्णनम् : १२३५

उस देश का वर्णन जहां वर्णाश्रम धर्म का विधान है १-२

धर्म का लक्षण, धर्मशास्त्र प्रणेता मनु आदि बीस धर्मशास्त्र प्रणे-

ताओं के नाम और धर्म की परिभाषा ३-६

ब्रह्मचारिप्रकरण वर्णनम् : १२३६

चार वर्ण जिनके संस्कार गर्भाधान से अन्तिम दाह संस्कार तक होते हैं १०

संस्कारों के नाम तथा किस समय में कौन-कौन संस्कार करने चाहिए ११-१५

शौचाचार, ब्रह्मचारी के नियम, गुरु आचार्य की पूजा, वेदाध्ययन

काल, गायत्री मन्त्र जप, नित्यकर्म, उपनयन काल की परा-

काष्ठा, काल निकलने से ब्रात्यता आ जाती है अर्थात् संस्कार

हीन हो जाता है १६-३६

ब्रह्मचारो को यज्ञ, हवन, पितरों का तर्पण और नैष्ठिक ब्रह्मचारी

को आजीवन गुरु के पास रहने का विधान ४०-५१

विवाह प्रकरण वर्णनम् : १२४०

ब्रह्मचर्य के बाद विवाह करने की आज्ञा और कन्या तथा वर के

लक्षण ५२-५६

ब्राह्म, आर्ष, दैव, धर्म, राक्षस, पैशाच, आसुर और गान्धर्व आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन । कन्या के देने वाले पिता पिता-मह भ्राता और माता न हो तो कन्या का स्वयंवर करने का अधिकार है । जो मनुष्य कन्या के दोषों को छिपाकर विवाह करे उसको दंड का विधान	५७-६१
कन्या देने का जिनको अधिकार है ऋतुकाल के पहले यदि कन्या को न दे तो माता पिता को भ्रूणहत्या का पाप	६२-६४
बिना दोष के कन्या के त्यागने में दंड और पति को छोड़कर अपनी कामना के लिए दूसरे के पास जाती है उसे पुंश्चली कहते हैं । क्षेत्रज पुत्र किस विधि से उत्पन्न कराया जाता है इसका वर्णन	६५-६६
व्यभिचार करने वाली स्त्री को दंड का विधान	७०
स्त्री को चन्द्रमा गन्धर्वादिकों ने पवित्र बताया है	७१
पति और पत्नी का परस्पर व्यवहार और जिन आचरणों से स्त्री की कीर्ति होती है उनका वर्णन	७२-७८
ऋतुकाल के अनन्तर पुत्रोत्पत्ति का समय और पुरुष को अपने चरित्र की रक्षा एवं स्त्रियों का सम्मान करने का धर्म	७९-८२
स्त्री को सास श्वसुर का अभिवादन तथा पति के परदेश गमन पर रहन सहन के नियम	८३-८४
स्त्री की रक्षा कुमारी काल में पिता, विवाह होने पर पति और वृद्धावस्था में पुत्र करे स्वतन्त्र न छोड़ दे	८५
स्त्री को पति प्रिय रहने का माहात्म्य और सवर्णा स्त्री के होने पर उसके साथ ही धर्मकाम करने का निर्देश किया गया है । सवर्णा स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसी को पुत्र कहते हैं	८६-९०
वर्णजातिविवेकवर्णनम् : १२४३	
अनुलोम और प्रतिलोम जो सन्तान होती है उनकी संज्ञा	९१-९६
गृहस्थधर्मप्रकरण वर्णनम् : १२४४	
स्नान, तर्पण, सन्ध्या, अतिथि सत्कार का वर्णन	९७-१०७

गृहस्थी को अतिथि सत्कार सबसे बड़ा यज्ञ बताया है	१०८-११४
आचरण, सभ्यता और ब्राह्मण क्षत्रिय आदि जातियों के कर्म	११५-१२१

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।

दानं दया दमः शान्ति सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥

किसी की हिंसा न करना, सत्य कहना, किसी का द्रव्य न चुराना, पवित्र रहना, अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना, दान देना, सब जीवों पर दया करना, मन को दमन करना, क्षमा करना ये मनुष्य मात्र के धर्म हैं	१२२
यज्ञ करने का विधान	१२३-१३०

स्नातकधर्मप्रकरणवर्णनम् : १२४७

ब्राह्मचारी के नित्य नैमित्तिक कर्मों का वर्णन	१३१-१४२
उपाकर्क और उत्सर्ग का समय विधान तथा ३७ अनध्याय के काल	१४३-१५१
ब्राह्मचारी और गृहस्थी के विशेष धर्म	१५२-१५५
गृहस्थियों को जिन मनुष्यों से मिलजुल कर रहना चाहिये	१५६-१६८
सदाचार और जिनका अन्न नहीं खाना चाहिए उनका निर्देश	१५९-१६५

भक्ष्यभक्ष्यप्रकरणवर्णनम् : १२५०

निषिद्ध भोजन की गणना	१६६-१७६
मांस के सम्बन्ध में विचार और मांस न खाने का माहात्म्य	१७७-१८१

द्रव्यशुद्धिप्रकरणवर्णनम् : १२५२

यज्ञ पात्रादि की शुद्धि किस चीज से किसकी शुद्धि होती है	१८२-१८६
शुद्धि का वर्णन, जल, स्थान पक्के मकान की शुद्धि आदि	१८७-१९८

दानप्रकरणवर्णनम् : १२५३

ब्राह्मण की प्रशंसा और पात्र का लक्षण	१९९-२००
गौ, पृथिवी, हिरण्य आदि का दान । अपात्र को देने में दोष	२०१-२०२
गोदान का फल, गोदान की विधि और गोदान का माहात्म्य	२०३-२०८
पृथिवी, दीपक, सवारी, धान्य, पादुका, छत्र और धूप आदि दान का माहात्म्य । जो ब्राह्मण दान लेने में समर्थ है वह न लेवे तो उसे बड़ा पुण्य होता है	२०९-२१२
कुशा, शाक, दूध, दही और पुष्प यह कोई अपने को अर्पण करे तो वापस नहीं करना चाहिए	२१३-२१४

श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १२५५

पुण्यकाल का वर्णन, जैसे — अमावस्या व्यतिपात तथा चन्द्र सूर्य ग्रहण, इनमें श्राद्ध करने का माहात्म्य तथा कौन ब्राह्मण श्राद्ध में पूजा योग्य हैं और कौन निन्दित हैं इसका विवरण	२१५-२२७
श्राद्ध की विधि तथा श्राद्ध की सामग्री श्राद्ध के पहले दिन ब्राह्मणों को निमंत्रण देना, किन-किन मन्त्रों से पितरों का पूजन तथा किन मन्त्रों से वैश्वदेव का पूजन करना	२२८-२५०
एकोदिष्ट श्राद्ध, तीर्थ श्राद्ध और काम्य श्राद्ध का विधान	२५१-२७०

विनायकादिकल्पप्रकरणवर्णनम् : १२६०

गणनायक की शान्ति और जिस पर उनका दोष हो उसके लक्षण । गणनायक के रुष्ट होने पर मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है । यदि कन्या पर रुष्ट होता है तो उसका विवाह नहीं होता और यदि होता है तो सन्तान नहीं होती है	२७१-२७६
विनायक की शान्ति तथा अभिषेक और हवन एवं शान्ति के अवसान में गौरी का पूजन	२७७-२८२

ग्रहशान्तिप्रकरणवर्णनम् : १२६२

नवग्रह की शान्ति, ग्रहों के मन्त्र, उनका दान और जप	
ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रयाः पतनानि च । भवभावौ च जगतस्तस्मात् पूज्यतमाः स्मृताः ॥	
अर्थात् राजाओं की उन्नति तथा अवनति, संसार की भावना और अभावना सब ग्रहचक्रों पर निर्भर रहता है । अतः ग्रह शान्ति करनी चाहिए ग्रह किस धातु का बनाना चाहिए यह भी बताया गया है	२८३-३०८

राजधर्म प्रकरण वर्णनम् : १२६३

शासक राजा के लक्षण और उसकी योग्यता	३०९-३११
राजा के कैसे मंत्री और पुरोहितों, ज्योतिषियों को रखना, उनके लक्षण । दुर्ग रचना किस प्रकार करनी चाहिए । अन्त में प्रजा को अभय देना यह राजा का परम धर्म बतलाया गया है	३०९-३२३
राजा की दिनचर्या का वर्णन	

अन्यायेन नृपो राष्ट्रात् स्वकोशं योऽभिवर्द्धयेत् ।
सोऽचिराद्विगतश्रीको नाशमेति सबान्धवः ॥

अर्थात् जो राजा अन्याय से राष्ट्र का रुपया अपने खजाने में जमा

करता है वह राजा बहुत जल्दी सपरिवार नष्ट हो जाता है । ३२४-३४३
साम, दाम, दण्ड, भेद कहां पर प्रयोग करने चाहिये उनका वर्णन ।

दूसरे के राष्ट्र में कब घुसना उसकी परिस्थिति का वर्णन ३४४-३४८

राजधर्म में यह बताया है कि पुरुषार्थ और भाग्य दोनों को तराजू

में तौलकर रखे एक से काम नहीं चलता ३४९-३५१

राजा को मित्र बनाना सबसे बड़ा लाभ है ३५२-३५३

दण्ड का विधान—वाग् दण्ड, धन दण्ड, वधदण्ड और धिक्दण्ड ये

चार प्रकार के दण्ड हैं । अपराध देशकाल को देखकर इन

दण्डों की व्यवस्था करे ३५४-३६८

२. व्यवहाराध्यायः

सामान्यन्याय प्रकरणम्... १२६६

राजा को व्यवहार देखने की योग्यता और अपने साथ सभासदों
का नियोग तथा उनकी योग्यता । व्यवहार की परिभाषा—

स्मृत्याचार व्यपेतेन मार्गेणार्धषितः परैः ।

आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत् ॥

अर्थात् आचार और नियम विरुद्ध जो किसी को तंग करे उस पर
राजा के पास जो आवेदन किया जाता है उसको व्यवहार
कहते हैं

१-४

व्यवहार के चार वाद हैं । जैसे—आवेदन (दरखास्त), प्रत्यर्थी के
सामने लेख, सम्पूर्ण कार्य का वर्णन, प्रत्यर्थी के उत्तर, इकरार
लिखना (झूठा होने पर दण्ड होगा)

५-८

जिस पर एक अभियोग हुआ है उसका फैसला नहीं होने तक
दूसरा अभियोग नहीं लगाया जाता है । चोरी मारपीट का
अभियोग उसी समय लगाया जाता है । दोनों से जमानत
लेनी चाहिए । झूठे मुकदमे में दुगुना दण्ड लगाना चाहिए

९-१२

झूठे बनावटी गवाह की पहचान

१३-१५

दोनों पक्ष के साक्षी होने पर पहले वादी के साक्षी लेने चाहिये ।

जब वादी का पक्ष गिर जाय तब प्रतिवादी अपने पक्ष को
साक्षी से पुष्ट करे इत्यादि । यदि झूठा मुकदमा हो तो उसे

प्रत्यक्ष प्रमाणों से शुद्ध कर लेवे । जहां दो स्मृतियों में विरोध हो वहां व्यवहार से निर्णय करना । अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र के मिलने में विरोध आ जाय वहां धर्मशास्त्र को ऊंचा स्थान देना चाहिए	१६-२०
प्रमाण तीन प्रकार के होते हैं—लेख (लिखित), भोग (कब्जा), साक्षी (गवाह), इन तीन प्रमाणों के न होने पर दिव्य (ईश्वर को पुकार कर) शपथ करते हैं	२१-२२
बीस वर्ष तक भूमि किसी के पास रह जाय या दस वर्ष तक धन किसी के पास रह जाय और उसका मालिक कुछ न कहे तो व्यवहार का समय चला जाता है, किन्तु यह नियम धरोहर, सीमा, जड़ और बालक के धन पर लागू नहीं होगा	२३-२५
आगम (भुक्ति) भोग (कब्जा) के सम्बन्ध में निर्णय	२६-३०
राजा इनके निर्णय के लिए एक सभा बनावे और बल से एवं किसी उपाधि से जो व्यवहार किया गया है उसको वापस कर देवे	३१-३२
निधि (गड़ा हुआ धन) का निर्णय	३२-३७

ऋणादान प्रकरणम् : १२७३

ऋण (कर्जा) की वृद्धि का दर और किसको किसका ऋण देना और नहीं देना इसका निर्णय—स्त्री केवल पति के साथ जो ऋण किया है उसको देगी और बाकी को नहीं । ऋण दुगुना तक हो सकता है, पशु की संतति तथा धान तिगुना इत्यादि का वर्णन है । जब चुकाने पर धनी न लेवे तो उस तिथि से वृद्धि नहीं होगी	३८-६५
---	-------

उपनिधि प्रकरण वर्णनम् : १२७५

निक्षेप (धरोहर) वर्णन	६६-६८
-----------------------	-------

साक्षीप्रकरणविधिवर्णनम् : १२७६

साक्षी का प्रकरण—साक्षी कौन होना चाहिए और साक्षी के लक्षण, कूट (जाली) साक्षियों का वर्णन	६९-८५
--	-------

लिखित प्रकरणम् : १२७८

लेख में गवाह होना चाहिए तथा सम्बत्, महीना और दिन भी होना चाहिए, लेख की समाप्ति में ऋण लेने वाला अपना	
--	--

हस्ताक्षर कर दे एवं अपना तथा अपने पिता का नाम लिख दे । लेख बिना साक्षी के भी हो सकता है जो अपने हाथ से लिखा हुआ हो किन्तु वह बलपूर्वक लिखाया हुआ न हो । रुपया जितना देता जाए उस कागज के पीछे लिखता जाय । धन चुक जाने पर उस कागज को फाड़ देवे या साक्षी के सामने ऋणी को वापस दे दें

८६-८६

दिव्य प्रकरणम् १२७६

जब कोई साक्षी आदि प्रमाण न मिले तब दिव्य कराया जाता है ।
दिव्य कितने प्रकार के होते हैं —

- १—तुला, २—अग्नि, ३—जल, ४—विष, ५—कोश । ये दिव्य बड़े मामलों में किये जाते हैं छोटे व्यवहार में नहीं ।
- १ तुला—तराजू बनाकर तोला जाता है जो तोलने पर ऊपर या नीचे जाता है उसकी विधि पुस्तक में लिखी है ।
- २ अग्नि—लोहे के गोले को गरम कर दोनों हाथों में लेकर चलना होता है जो शुद्ध हो उसके हाथ नहीं जलते हैं ।
- ३ जल—नाभी मात्र गहरे जल में तीर डालकर धुलाना पड़ता है । ४ विष—शुद्ध को खिलाने पर उसे जहर नहीं लगता । ५ कोश—किसी देवता का जल पिलाने से उसको अगर चौदह दिनों तक अनिष्ट नहीं हुआ तो शुद्ध समझा जाता है ।

८७-११५

दायविभाग प्रकरणम् १२८१

- पिता को अपनी इच्छा से विभाजन करने का अधिकार है ११६-११८
- पिता के बाद भाई अपने आप विभाग किस प्रकार से करे और जो धन अविभाज्य है उसका वर्णन ११९-१२१
- भाईयों का बटवारा और भाईयों के लड़कों का विभाग उसके पिता के नाम से होगा । जिन-जिन भाईयों का संस्कार नहीं हुआ उनका पैतृक धन से संस्कार और निर्वाह—बहनों को अपने हिस्से से चौथाई देकर विवाह करे १२२-१२७
- जाति विभाग से बटवारा १२८-१३०
- बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन १३१-१३५

दासी पुत्र का हक और अपुत्र के धन विभाग का नियम	१३६-१३९
वानप्रस्थ, संन्यासी और आचार्य के धन का विभाग	१४०
समश्रुष्टि (मिले हुए) भाईयों का विभाग और उन लड़कों का वर्णन जिनको पिता की जायदाद में भाग नहीं मिलता है।	
जिनको भाग न मिला उनके लड़कों और स्त्री को मिल सकता है	१४१-१४३
स्त्री धन की परिभाषा	१४६-१५१
जो पैतृक धन को छिपा दे उनका निर्णय	१५२

सीमाविवादप्रकरणवर्णनम्—१२८५

सीमा विभाग—गांव की, खेत की सीमा के विभाग में वन में रहने वाले ग्वाले, खेती करने वाले इनसे सीमा के सम्बन्ध में पूछना चाहिये। पुल, खाई या खम्भे से सीमा का चिह्न बतलाना चाहिए। सीमा के सम्बन्ध में झूठ बोलनेवाले को कड़े दण्ड का विधान कहा है। दूसरे की जमीन पर कुंआ तालाब बनाना उसमें जिसकी भूमि है उसी का या राजा का अधिकार रहेगा १५३-१६१

स्वामिपालविवादप्रकरणवर्णनम्—१२८६

दूसरे के खेत में भैंस, गाय, बकरी चराने में जितना वे हानि करे उसका दूना दिलाना चाहिये बंजर भूमि पर भी गधा, ऊंट आदि को चराने पर वहां जितना घास पैदा हो सकता है उतना उनके स्वामियों से हानि रूप में लिया जाना चाहिये। ग्वालों को फटकारना और उनके स्वामियों को प्रायः दण्ड देना। सड़क गांव की बंजर जगहों में चराने में कोई दोष नहीं है। सांड वगैरह को छोड़ देना चाहिए। गायों को चराने वाला ग्वाला जिसके घर से जितनी गाय ले जाय उसकी उतनी ही सायंकाल लौटा देवे। जिस ग्वाले को वेतन दिया जाता है अगर अपनी गलती से किसी पशु को नष्ट करवा दे तो मूल्य उससे लिया जाय। प्रत्येक गांव में गोचर भूमि रक्खी जाय १६२-१७०

अस्वामिविक्रयप्रकरणवर्णनम्—१२८७

खरीद और अस्वामी विक्रय—लेने वाले को चीज का दोष न बतला कर जो बेचा जाय उसे चोरी की सजा होगी। किसी

के धन को दूसरा आदमी बेच लेवे तो धनवाले को मिल जाय और खरीददार अपना मूल्य ले जावे । खोया हुआ या गिरा हुआ द्रव्य किसी को मिल जाय तो उस वस्तु को पुलिस में जमा न करने पर पाने वाला दोष का भागी होता है । एक मास तक कोई न लेवे तो वह धन राजा का हो जाता है १७१-१७७

दत्ताप्रदानिकप्रकरणवर्णनम् — १२८८

अपने घर में जिस वस्तु को देने से विरोध न हो तथा स्त्री और बच्चों को छोड़कर गृहपति सब दान में दे सकता है । सन्तान होने पर सब दान नहीं कर सकता है तथा दी हुई वस्तु फिर दान नहीं हो सकती । १७८-१७९

क्रीतानुशयप्रकरणवर्णनम् : १२८८

क्रीतानुशय अर्थात् मूल्य लेने पर वापस किया जा सकता है । दस दिन तक बीज (अन्न) लौटाया जा सकता है । लोहे की चीजें एक दिन, बैल लेने पर पांच दिन, रत्न की परीक्षा आठ दिन तक, गाय तथा अन्य जीव जन्तु तीन दिन तक, सोना आग में तपाने पर घटता नहीं है और चांदी दो पल कम हो जाएगी इस प्रकार खरीदी हुई वस्तु तीन दिन तक वापस की जा सकती है १८०-१८४

संवित् व्यतिक्रम (अपने निश्चय को तोड़ना) जैसे बल पूर्वक किसी को पकड़कर गुलाम बना लिया हो ।

निजधर्माविरोधेन यस्तु सामयिको भवेत् ।

सोऽपि यत्नेन संरक्ष्यो धर्मो राजकृतश्च यः ॥

अपने धर्म से मिला हुआ जो समय का धर्म और राजा के धर्म को भी पालन करना चाहिए । जो समुदाय का धन ले और जो अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ दे उसका सब कुछ छीनकर देश से निकाल देवे १८५-१८५

वेतनदानप्रकरणवर्णनम् : १२९०

जो पहले वेतन ले ले और समय पर उस काम को छोड़ दे उस से दूना धन लेना चाहिए १८६-२०१

द्यूतसमाप्त्यप्रकरणवर्णनम् : १२६१

चोरों को पहचानने के लिए जूआ किसी स्थान पर करवाया जाता है और उसमें जीतने वाले से राजा के लिए दस रुपया ले लेना चाहिए

२०२-२०६

वाक्पारुष्यप्रकरणवर्णनम् : १२६१

वाक् पारुष्य (अपशब्द कहने का दण्ड) इसी प्रकार पातक तथा उपपातक को दण्ड के उपयोग हैं

२०७-२१४

किसी पर लाठी चलाना या किसी चीज से पीड़ा पहुंचाना पशुओं के अंगच्छेदन करना, पशु की इन्द्रिय काटना, और पेड़ों की टहनियों को काटना

२१५-२३२

साहस प्रकरण वर्णनम् : १२६४

बलपूर्वक किसी की वस्तु को छीनना इसको साहस कहते हैं। जो जितने मूल्य की वस्तु छीन कर ले जावे उसको उससे दूना दण्ड दिलवाना चाहिए तथा छिपाने पर चार गुना दण्ड। स्वच्छन्दता से किसी विधवा स्त्री के साथ गमन करने वाला या बिना किसी कारण किसी को गाली देने वाला और झूठी शपथ करने वाला तथा जिस काम के योग्य न हो उसको करने को तैयार हो जाना एवं दासी के गर्भ को नष्ट कर देना, पशु के लिङ्ग को काट देना, पिता पुत्र गुरु और स्त्री को छोड़ने वाले को सौ पल दण्ड का विधान बताया है। धोबी दूसरे के कपड़ों को अपने पास रखे तो उसको तीन पल दण्ड। पिता और पुत्र की लड़ाई में जो गवाही देवे उसे तीन पल दण्ड। तराजू और बाटों को जो छल कपट से बना कर व्यवहार करे तो उसे पूरा दण्ड। जो कपट को सत्य कहे और सत्य को कपट कहे उसे भी साहस प्रकरण का दण्ड। जो वैद्य झूठी दवा बनावे उसको भी दण्ड। जो कर्मचारी अपराधी को छोड़ देवे उसको दण्ड। जो मूल्य लेकर वस्तु को नहीं देता है उसको भी दण्ड

२३३-२६१

सम्भूयसमुत्थानप्रकरणम् : १२६७

कई आदमी मिलकर जो व्यापार करते हैं उनको उस व्यापार में

लाभ और हानि बराबर उठानी पड़ेगी । या उन लोगों ने पहले जो प्रतिज्ञा कर ली हो

२६२-२६८

स्तेयप्रकरणवर्णनम् : १२६८

चोर को पकड़ने वाले को पहले उसके पैरों के चिह्न से या पहले जो चोरी में पकड़े गए हों, जुआरी, वेश्यागामी तथा शराबी और बात में अटपट करे तो उनको पकड़ लेना चाहिए । चोरी में पूछने पर जो सफाई नहीं दे उसे चोरी का दण्ड दिया जाता है । चोर को भिन्न भिन्न प्रकार से ताड़ना देकर चोरी पूछ लेनी चाहिए ।

विषाग्निदां पतिगुरुनिजापत्यप्रमापिणीम् ।

विकर्णकरनासोष्ठौ कृत्वा शोभिः प्रसापयेत् ॥

विष देनेवाली, अग्नि लगानेवाली, पति, गुरु और अपने बच्चों को मारनेवाली स्त्री के नाक कान काटकर जल में बहा देना चाहिए ।

क्षेत्रवेश्मवनग्रामविवीतखलदाहकाः ।

राजपत्न्यभिगामी च दग्धव्यास्तु कटाग्निना ॥

खेत, मकान और ग्राम इनको जलाने वाले को और राजा की स्त्री के साथ गमन करने वाले को आग में जला देना चाहिए

२६९-२८५

स्त्रीसंग्रहणप्रकरणवर्णनम् : १३००

किसी स्त्री के केशों को पकड़ने या करधनी या स्तन मरदन करना या अनुचित हंसी करना ये चिह्न व्यभिचार के समझे जायेंगे । स्त्री के ना करने पर जबरदस्ती हाथ लगावे तो सौ पल और पुरुष के ना करने पर दुगुना दण्ड । किसी अलंकृत कन्या को हरण करे उसको कड़ा दण्ड यदि लड़की की इच्छा हो तो दण्ड नहीं होता है । पशु के साथ व्यभिचार करने वाले को सौ पल दण्ड । नौकरानी के साथ व्यभिचार करने वाले को दण्ड । जो वेश्या पैसा लेकर बाद में रोके तो उसे दूना दण्ड । किसी लड़के से या किसी साधुनी के साथ अप्राकृतिक मैथुन करने वाले को चौबीस पल दण्ड । राजा की आज्ञा में रहकर जो कम या विशेष लिखे उसको दण्ड । छल से खोटे सिक्के

सोने को बेचने वाले तथा मांस के बेचने वाले को अङ्ग हीन करना चाहिए जो स्त्री अपने जार को चोर कहकर भगा देवे उसे पांच सौ पल दण्ड देना चाहिए । राजा के अनिष्ट कहने वाले को या राजा के भेद को खोलने वाले की जिह्वा काट लेनी चाहिए

२८६-३१०

३. आशौचप्रकरणवर्णनम् : १३०३

दो वर्ष से कम उम्र के बच्चे को भूमि में गाड़ देना चाहिए ।

बच्चे के मरने पर सातवें या दसवें दिन दूध देना चाहिए

१-६

किसी के मरने पर यदि उसी दिन घर में दूसरे का जन्म हो जाए तो पहले के सूतक से वह शुद्ध हो जाएगा । राजाओं को और यज्ञ में बैठे हुए ऋषियों को सूतक नहीं लगता है ।

७-३४

आपद्धर्मप्रकरणवर्णनम् : १३०७

आपत्ति में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कर्म से निर्वाह कर सकता है । परन्तु मांस तिल आदि आपत्ति में भी न बेचे ।

लाक्षालवणमांसानि पतनीयानि विक्रये ।

पयोदधि च मद्यञ्च हीनवर्णकराणि च ॥

अर्थात् लाख, लवण और मांस बेचने से पतित हो जाता है । कृषि, शिल्प, नौकरी, चक्रवृद्धि, इक्का हांकना और भीख मांगना इनसे आपत्ति काल में जीवन निर्वाह कर सकता है

३५-४४

वानप्रस्थधर्मप्रकरणवर्णनम् : १३०८

वानप्रस्थ स्त्री को अपने साथ ले जाए या अपनी सन्तान के पास छोड़ दे । वानप्रस्थ इन्द्रियों को दमन करने वाला, प्रतिग्रह न लेने वाला, स्वाध्याय करने वाला होना चाहिए । चान्द्रायण आदि से समय व्यतीत करे, वर्षा में ठण्डी जगह रहे, हेमन्त में गीले कपड़ों से रहे अर्थात् जितनी शक्ति हो उसी हिसाब से वन में तपस्या करता रहे

४५-५५

यतिधर्मप्रकरणवर्णनम् १३०९

यति सम्पूर्ण प्राणीमात्र का हित करनेवाला, शान्त और दण्ड धारण करनेवाला हो । यति के सब पात्र बांस और मिट्टी के होते हैं इनकी शुद्धि जल से हो जाती है । यति को राग

द्वेष का त्याग कर अपने आप की शुद्धि जिससे आत्मज्ञान का विकास हो ऐसा करना चाहिये ।

सत्यमस्तेयमक्रोधो ह्रीः शौचं धीर्धृतिर्दमः ।

संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सार्व उदाहृतः ॥

सत्य, अस्तेय, अक्रोध, पवित्रादि में सब धर्म बतलाये हैं

४६-६६

अध्यात्म ज्ञान का प्रकरण आया है । जैसे तप्त लौह पिण्ड से चिनगारी निकलती है उसी प्रकार उस प्रकाश पुंज आत्मा से यह समष्टि व्यष्टि संसार रूपी चिनगारी निकलती है । आत्मा अजर अमर है शरीर में आने से इसे जन्म लेना कहते हैं । सूर्य की तपन से वृष्टि फिर औषधि तथा अन्न होकर शुक्र हो जाता है । स्त्री पुरुष के संयोग से यह पञ्च-धातुमय शरीर पैदा होता है । एक एक तत्त्व से शरीर की एक एक चीज का बनना लिखा है । चौथे महीने में पिण्डाकार बनता है तथा पाचवें में अंग बनने लग जाते हैं । छठे महीने में बाल, नख, रोम और सातवें आठवें में चमड़ा, मांस बनकर स्मृति पैदा हो जाती है । इस प्रकार जन्म मरण के दुःख को दिखाया गया है । मनुष्य शरीर में कितनी नस कितनी धमनी तथा मर्मस्थान हैं इन सबका वर्णन कर शरीर को अस्थिर अनित्य नाशवान बतला कर मोक्ष मार्ग में लगने का उपदेश किया गया है । योगशास्त्र, उपनिषदों के पठन एवं वीणा वादन से मन की एकाग्रता बताई है ।

वीणवादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।

तत्त्वज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥

वीणा वादन के तत्त्व को जाननेवाला और ताल के ज्ञानवाला मोक्ष मार्ग पा लेता है । इस प्रकार मोक्ष मार्ग के साधन और संसार के अनित्य सुखों के वैराग्य का वर्णन तथा कुण्डलिनी योग, ध्यान, धारणा और सत्य की उपासना एवं वेद का अभ्यास बताकर जीवन यात्रा का श्रेय नीचे लिखे श्लोक में स्पष्ट किया है—

न्यायागतधनस्तत्त्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः ।

श्राद्धकृत् सत्यवादी च गृहस्थोऽपि हि मुच्यते ॥

न्याय से आये हुए धन से जीवन बितानेवाला, तत्त्व ज्ञान में जिसकी निष्ठा हो, अतिथि सत्कार तथा श्राद्ध करनेवाला, सत्यवादी गृहस्थी भी इस जन्ममरण से छूट जाता है

६७-२०५

प्रायश्चित्तप्रकरणवर्णनम् १३२३

पापी महापापी कर्म के अनुसार नरक भोगने के अनन्तर जब मनुष्य योनि में आते हैं तब ब्रह्महत्यारा जन्म से ही क्षय रोगी होता है। परस्त्री को हरने वाला, ब्राह्मण के धन को हरने वाला ब्रह्मराक्षस होता है। जो पाप को समझने पर भी प्रायश्चित्त नहीं करते हैं वे रौरव नरक में जाते हैं। इस प्रकार महानरकों का वर्णन आया है। महापापी चार हैं— ब्रह्म हत्यारा, सोने को चुराने वाला, गुरु की स्त्री से गमन करने वाला और मद्य पीनेवाला तथा जो इनके साथ रहता है वह भी महापातकी होता है। इसके बाद आगे के श्लोकों में उपपातकों की गणना की है। महापातकी को आमरणान्त प्रायश्चित्त बतलाया है अन्य पापों की शुद्धि के लिये चान्द्रायण आदि व्रत बतलाये हैं। गर्भपात और भर्तृहिंसा स्त्री के लिए महापाप है। शरणागत को मारने वाले, बच्चों को मारनेवाले, स्त्री के हिंसक और कृतघ्न की कभी शुद्धि नहीं होती है। सान्तपन कृच्छ्र, पर्णकृच्छ्र, पादकृच्छ्र, तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, तुला पुरुष, चान्द्रायण व्रत और कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रत बतलाये गये हैं। ऋषिणों ने याज्ञवल्क्य से धर्मों को सुनकर यह कहा कि जो इसको धारण करेगा वह इस लोक में यश को प्राप्त कर अन्त में स्वर्गलोक को प्राप्त होगा। जो जिस कामना से धारण करेगा उसकी कामनायें पूर्ण सफल होंगी। ब्राह्मण इसको जानने से सत्पात्र, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धनधान्य सम्पन्न, विद्यार्थी विद्यावान् होता है। इसको जानने और मनन करने से अश्वमेध यश के फल को प्राप्त होता है

२०६-३३४

कात्यायन स्मृति

१. यज्ञोपवीतकर्मप्रकरणवर्णनम् १३३५

यज्ञोपवीत बनाने का माप और धारण विधि	१-४
मातृका, वसुधारा और नान्दी श्राद्ध का विधान	५-१८

२. नित्यनैमित्तिक (श्राद्ध) कर्मवर्णनम् १३३७

नित्य नैमित्तिक श्राद्ध विधि	१-१४
------------------------------	------

३. त्रिविधक्रियावर्णनम् १३३९

श्राद्धादि सम्पूर्ण कार्य अपनी अपनी शाखा के अनुसार करने का विधान	१-१४
--	------

४. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् १३४०

सम्पूर्ण अध्याय में श्राद्ध की विधि बताई गई है	१-१२
--	------

५. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् १३४१

वृद्धि श्राद्ध आदि अन्य पर्वों पर श्राद्ध का वर्णन	१-११
--	------

६. अनेककर्मवर्णनम् १३४३

आधान काल और तत्सम्बन्धी अग्निहोत्र तथा परिवेत्ति का वर्णन	१-१५
---	------

७. शमीगर्भानेकप्रकरणवर्णनम् १३४४

शमी गर्भ काष्ठ पीपल आदि का वर्णन । अग्नि मन्थन की प्रक्रिया, अरणी निर्माण, किस प्रकार काष्ठ की अरणी बनानी अरणी मन्थन से निकाली हुई अग्नि ही यज्ञ में प्रशस्त होगी	१-१४
---	------

८. सयज्ञस्रु वसमिधलक्षणवर्णनम् १३४६

अरणी मन्थन विधान । दर्श पौर्णमास्य यज्ञ में समिधा का मान तथा समिधा हरण विधि	१-२४
---	------

९. सन्ध्याकालाद्युद्दिश्यकर्मवर्णनम् १३४८

सायंकाल का निर्णय एवं सार्वकालीन अग्निहोत्र का समय तथा विधि । प्रज्वलित अग्नि में ही आहुति देना, यदि प्रज्वलित नहीं हो तो पखे (व्यजन) से हवा देना मुख से नहीं	१-१५
---	------

१०. प्रातःकालिकस्नानादिक्रियावर्णनम् : १४५०

प्रातःकाल का स्नान, नदी की परिभाषा, नदी कितनी वेगवती धारा को कहते हैं। दन्तधावन, मुख और नेत्र प्रक्षालन की विधि। कूप स्नान भी गंगा स्नान के समान ग्रहण आदि पर्व में होता है

१-१४

११. सन्ध्योपासनाविधिवर्णनम् : १३५१

सन्ध्योपासन का निर्देश—जब तक सन्ध्या न करे तब तक अन्य किसी देव एवं पितृ कार्य को करने का अधिकार नहीं है। सन्ध्या विधि एवं सूर्योपस्थान कर्म

१-१७

१२. तर्पणविधिवर्णनम् : १३५३

देव, ऋषि तथा पितृ तर्पण विधि

१-६

१३. पञ्चमहायज्ञविधिवर्णनम् : १३५४

पञ्च महायज्ञ—देवयज्ञ, भूतयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ और मनुष्य-यज्ञ इनको महायज्ञ कहा है तथा इन्हें करने की विधि

१-१४

१४. ब्रह्मयज्ञविधिवर्णनम् : १३५५

ब्रह्मयज्ञ का वर्णन

१-१५

१५. यज्ञविधिवर्णनम् : १३५७

उपर्युक्त पञ्च महायज्ञों की विस्तार से विधि

१-२१

१६. श्राद्धे तिथिविशेषणविधिवर्णनम् : १३५६

श्राद्ध की तिथियों का निर्देश, तिथि परत्व श्राद्ध विधान

१-२३

१७. श्राद्धवर्णनम् : १३६२

श्राद्ध की विधि का निर्देशन

१-२५

१८. विवाहाग्निहोमविधानवर्णनम् : १३६४

वैवाहिक अग्नि से प्रातः सायं हवन का विधान, चरु का वर्णन और कुशा विष्टर का मान

१-२३

१९. सकर्तव्यतास्त्रीधर्मवर्णनम् : १३६७

गृहस्थाश्रमी को स्त्री के साथ अग्निहोत्र का विधान। स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री वही है जो सौभाग्यवती हो, ब्राह्मणों में ज्येष्ठ श्रेष्ठ वही है जो विद्या एवं तप में श्रेष्ठ है। स्त्री को पति का आदेश मानकर अग्निहोत्र करने से सौभाग्य बढ़ता है तथा

पति की आज्ञानुसार चलने से इहलोक और परलोक दोनों में परम सुख प्राप्त होता है ।

१-२३

२०. द्वितीयादिस्त्रीकृतेसति वैदिकाग्निवर्णनम् : १३६६

स्त्री के साथ ही यज्ञ की विधि । स्त्री के मृत होने पर भी गृहस्था-श्रम में रहता हुआ अग्निहोत्र करता रहे । श्लोक दस में श्री-रामचन्द्रजी का उदाहरण दिया है कि उन्होंने सीताजी की प्रतिमा बनाकर उसके साथ यज्ञ किया

१-१६

२१. मृतदाहसंस्कार : १३७१

मृतक का संस्कार

१-१६

२२. दाहसंस्कार : १३७२

मृतक का दाह संस्कार

१-१०

२३. विदेशस्थमृतपुरुषाणांदाहसंस्कार : १३७३

विदेश में मृत हुए पुरुष के दाह संस्कार

१-१४

२४. सूतकेकर्मत्यागःषोडशश्राद्धविधान : १३७५

सूतक में सब प्रकार के स्मार्त कर्मों का त्याग किन्तु वैदिक कर्म हवन आदि शुष्क फलों से करता रहे । सपिण्डीकरण तक सोलह श्राद्ध करने से शुद्धि होती है

१-१६

२५. नवयज्ञेनविनानवान्नभोजनेप्रायश्चित्तवर्णनम् : १३७६

नवान्न भक्षण करने से पहले नवान्न यज्ञ करना चाहिए । विना यज्ञ में दिये अन्न भक्षण का प्रायश्चित्त

१-१८

२६. नवयज्ञकालाभिधान : १३७८

नवयज्ञ का समय—श्रावणी, कृष्णाष्टमी, शरद् एवं वसन्त में नव यज्ञ

१-१७

२७. प्रायश्चित्तवर्णनम् : १३८०

अन्वाहार्य तथा कर्म के आदि में शुद्धि के लिये प्रायश्चित्त का विधान

१-२१

२८. प्रायश्चित्त-उपाकर्मणाफलनिरूपण : १३८२

प्रायश्चित्त उपाकर्म उत्सर्ग की विधि और काल

१-१६

२९. श्राद्धवर्णनम्, पशवाङ्गानानिरूपण : १३८४

पिण्ड श्राद्ध, आम श्राद्ध और गया श्राद्ध का वर्णन तथा श्राद्ध में कुशा आदि का वर्णन

१-१६

आपस्तम्बस्मृति के प्रधान विषय

१. गोरोधनादिविषये गोहत्यायाञ्च प्रायश्चित्तवर्णनम् : १३८७

आपस्तम्ब ऋषि से जब मुनियों ने गृहस्थाश्रम में कृषि कर्म गोपालन में अनुचित व्यवहार से जो दोष हो जाय उसका प्रायश्चित्त पूछा । आपस्तम्ब ने बड़े सत्कार के साथ ऋषियों को बताया—औषधि देने में, बालक को दूध पिलाने में सावधानी करने पर भी विपत्ति आ जाय तो उसका दोष नहीं होता है । किन्तु औषधि तथा भोजन भी मात्रा से अधिक देना पाप है ।

द्वौमासौ पाययेद्वत्सं द्वौमासौ द्वौ स्तनौ दुहेत्,
द्वौमासावेकवेलायां शेषकाले यथारुचि ।
वशरात्राद्धं मासेन गोस्तु यत्र विपद्यते,
स शिखं वपनं कृत्वा प्रजापत्यं समाचरेत् ॥

गाय के बन्धन कैसी रस्सियों से कैसे कीले पर बांधना चाहिए

१-३४

२. शुद्ध्यशुद्धिविवेकवर्णनम् : १३९०

शुद्धि और अशुद्धि का वर्णन, जैसे — काम करने वाले मनुष्यों को जल पानी की छूतपात नहीं होती है । वापी, कूप, तड़ाग जहां खारिया जल निकलता हो वह अशुद्ध नहीं होता है । पेशाब मल तथा थूकने से जल अशुद्ध हो जाता है

१-१४

३. गृहेऽविज्ञातस्यान्त्यजातेर्निवेशने-बालादि विषये

च प्रायश्चित्तम् : १३९२

अन्य जाति का परिचय न होने से अज्ञात दशा में घर में रह जाय तो उस द्विजाति को चान्द्रायण या पराक प्राजापत्य व्रत करने का विधान

१-१२

४. चाण्डालकूपजलपानादौ संस्पर्शं च प्रायश्चित्तम् : १३९३

चाण्डाल के कूप से जल पान पर प्रायश्चित्त

१-१३

५. वेश्यान्त्यजश्वकाकीच्छिष्टभोजने प्रायश्चित्त : १३६५

उच्छिष्ट भोजन (जूठा खाने पर) प्रायश्चित्त १-१४

६. नीलीवस्त्रधारणे नीलीभक्षणे च प्रायश्चित्तम् १३६७

नीले रंग के वस्त्र धारण करने का प्रायश्चित्त १-१०

७. अन्त्यजादि स्पर्शे रजस्वलाया विवाहादिषु कन्याया

रजोदर्शने प्रायश्चित्तम् : १३६७

रजस्वला स्त्री की अशुद्धि बतायी है किन्तु रोग के कारण जिस स्त्री का रज गिरता हो उसके स्पर्श करने से अशुद्ध नहीं होता है

१-२१

८. सुरादिदूषितकरस्यशुद्धिविधान : १४००

बर्तनों को शुद्ध करने का वर्णन, जैसे कांसा भस्म से शुद्ध होता है शूद्रान्न भक्षण शूद्र के साथ भोजन का निषेध । जिसके अन्न को मनुष्य खाता है उस अन्न से जो सन्तान पैदा होती है वह उसी प्रकृति की होती है

१-२१

९. अपेयपानेऽभक्ष्यभक्षण का प्रायश्चित्त : १४०२

अपेय पान अभक्ष्य भक्षण में प्रायश्चित्त । स्वाध्याय तथा भोजन करते समय पैर में पादुका नहीं हो

१-४३

१०. मोक्षाधिकारिणामभिधानवर्णनम् : १४०६

भोजन करने का नियम । यम नियम की परिभाषा । अग्निहोत्र त्याग करने वाले को वीरहा कहते हैं । गृहस्थी को नित्य अग्निहोत्र करना चाहिये

१-१६

लघुशङ्खस्मृति

१. इष्टापूर्तकर्मणोः फलाभिधानवर्णनम् : १४०८

इष्टापूर्त का माहात्म्य । गङ्गा में अस्थि प्रवाह का माहात्म्य । पितृ कर्म गया श्राद्ध का माहात्म्य । एकोद्दिष्ट श्राद्ध न कर पावण श्राद्ध करना व्यर्थ है । प्रति सम्बत्सर क्षयाह पर श्राद्ध करने का निर्णय सपिण्डी करने की विधि । पिता जीवित हो तो माता की सपिण्डी दादी के साथ, पिता हो तो पिता के साथ माता का सपिण्डीकरण श्राद्ध न करे । अपुत्र स्त्री पुरुष का पावण श्राद्ध न करे केवल एकोद्दिष्ट करे । संक्षिप्त प्रायश्चित्त का विधान वर्णन किया है

१-७१

शङ्खस्मृति

१. ब्राह्मणादिनां कर्म : १४१५

चातुर्वर्ण्य के पृथक्-पृथक् कर्म, यथा ब्राह्मण का यजन-याजन, अध्ययन-अध्यापनादि, इस प्रकार चार वर्ण के पृथक्-पृथक् कर्मों का वर्णन

१-८

२. ब्राह्मणादिनां संस्कार : १४१६

गर्भाधान से उपनयन पर्यन्त संस्कारों का विधान

१-१२

३. ब्रह्मचर्याद्याचार : १४१८

ब्रह्मचर्य, विद्याध्ययन काल का आचरण तथा आचार्य, गुरु, उपाध्याय की व्याख्या । माता-पिता गुरु के पूजन का महत्त्व । ब्रह्मचारी के नियम व्रत तथा आचरण

१-१२

४. विवाहसंस्कार : १४२०

आठ प्रकार के विवाहों की विधि का वर्णन

१-१५

५. पञ्चमहायज्ञाः गृहाश्रमिणां प्रशंसा-अतिथि वर्णनम् : १४२१
पञ्च महायज्ञ गृहस्थी के नित्य कर्म बताये हैं १-१८
६. वानप्रस्थधर्मनिरूपणं संन्यासधर्मप्रकरण : १४२२
वानप्रस्थाश्रम की आवश्यकता और उसके धर्म का निरूपण १-७
७. प्राणायामलक्षणं धारणा-ध्यानयोगनिरूपण : १४२५
ब्रह्माश्रमी के संन्यास की विधि । आत्मज्ञान, प्राणायाम, ध्यान,
धारणादि योग का निरूपण १-३४
८. नित्यनैमित्तिकादिस्नानानां लक्षण : १४२८
षट् प्रकार के स्नान—नित्य स्नान, नैमित्तिक स्नान, क्रिया स्नान;
मलापकर्षण स्नान, क्रियाङ्ग स्नान का समय तथा विधि १-१६
९. क्रियास्नानविधि : १४२९
क्रिया स्नान के मंत्र तथा विधान १-१५
१०. आचमनविधि : १४३१
प्राजापत्य दैवतीर्यादि बताकर आचमन करने की विधि, अंग-स्पर्श
तथा सन्ध्या करने से दीर्घायु का होना बताया है १-२१
११. अघमर्षणविधि : १४३३
अघमर्षण कुष्माण्डी ऋचा तथा पवित्र करने वाले मन्त्रों का विधान १-५
१२. गायत्रीजपविधि : १४३४
गायत्री मन्त्र जपने की विधि और माहात्म्य १-३१
१३. तर्पणविधि : १४३७
देवऋषिपितृ तर्पण के मन्त्र एवं विधि १-१७
१४. श्राद्धे ब्राह्मणपरीक्षा : १४३८
पितृ कार्य में ब्राह्मण की परीक्षा करके निमन्त्रण करना तथा उनका
किन-किन मन्त्रों से पूजन करना चाहिये इसका वर्णन किया है १-३३
१५. जननमरणाशौचवर्णन : १४४२
जन्म मरण में अशौच कितने दिन का और किस वर्ण को होता है १-२५
१६. द्रव्यशुद्धिः, मृन्मयादिपात्रशुद्धि : १४४४
पात्रों के शुद्ध करने की विधि तथा अपने अंगों को शुद्ध करने का
विधान बताया है १-२४

१७. क्षत्रियादिवधे-यवाद्यपहारे-व्रतवर्णनम् : १४४७

पापों के प्रायश्चित्त । जिस पाप में जो प्रायश्चित्त कहा है उनकी

विधि । पराक व्रत, कृच्छ्र व्रत तथा चान्द्रायणादि

१-६६

गोश्चक्षीरं विवत्सायाः संधिन्याश्च तथा पयः ।

संधिन्यमेध्यं भक्षित्वा पक्षन्तु व्रतमाचरेत् ॥ २६ ॥

क्षीराणि यान्यभक्ष्याणि तद्विकाराशने बुधः ।

सप्तरात्रं व्रतं कुर्याद्यदेतच्चपरिकीर्तितम् ॥ ३० ॥

१८. अघमर्षण, पराक, वारुणकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र,

शान्तपनादिव्रत : १४५३

अघमर्षण, पराक शान्तपन तथा कृच्छ्र व्रत की विधि

१-१६

— ० —

लिखितस्मृति

१. इष्टापूर्तकर्मवृषीत्संगयापिण्डदानषोडश

श्राद्धानां वर्णनम् : १४५५

इष्ट के करने से स्वर्ग प्राप्ति और पूर्त से मोक्ष प्राप्ति का वर्णन किया है । वापी, कूप, तड़ाग, देव मन्दिर तथा पतितों का जो उद्धार करें उसे पूर्त तथा अग्निहोत्र वैश्वदेवादि कार्य करें उसे इष्ट कहते हैं । इष्टापूर्त कर्म का विधान तथा लक्षण बताया है । गङ्गा में अस्थि प्रवाह का माहात्म्य तथा एकोद्दिष्ट श्राद्ध का वर्णन, श्राद्ध में भोजन करने वालों के नियम तथा नवश्राद्धों का वर्णन एवं अशौच वर्णन तथा चाण्डाल के जल पान का निषेध

१-६६

शङ्खलिखित स्मृति

१. वैश्वदेवमकृत्वैवभुञ्जानस्यकाकयोनिवर्णनम् : १४६४

बलि वैश्वदेव, अतिथि पूजन का महत्व बताया है ।

परान्नं परबस्त्रं च परयानं परास्त्रियः ।

परवेश्मनि वासश्च शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥

सांस्कृतिक जीवन का वर्णन किया गया है

१-३२

वशिष्ठ स्मृति

१. धर्मजिज्ञासाधर्माचरणस्यफलधर्मलक्षणः : १४६८

धर्म का लक्षण, आर्यावर्त की सीमा, देश धर्म, कुल धर्म का वर्णन ।

महापाप, पाप तथा उपपातकों का वर्णन । ब्राह्म, दैव, आर्ष और प्राजापत्य विवाह का वर्णन । सब वर्णों को ब्राह्मण से उपदेश ग्रहण करने की विधि

१-४५

२. ब्राह्मणादीनांप्रधानकर्माणि कृषिधर्म निरूपणः : १४७१

द्विजत्व की परिभाषा तथा आचार्य की श्रेष्ठता बताई है । ब्राह्मण के षट् कर्म का निरूपण, गुरु की आज्ञा पालन, प्रत्येक वर्ण की अपनी-अपनी वृत्ति का वर्णन । धन अन्नादि की वृद्धि की सीमा और धन वृद्धि पर ब्राह्मण, क्षत्रिय को निषेध बताया है

१-५५

३. अश्रोत्रियादीनां शूद्रसधर्मत्वमाततायिवध वर्णनः : १४७५

ब्राह्मण को वेद पढ़ना आवश्यक । बिना वेद विद्या के अन्य शास्त्रों का पढ़नेवाला ब्राह्मण शूद्र कहलाता है । धर्माधर्म निर्णय वेदज्ञ ही । वेदज्ञ को ही दान देना । आततायी के लक्षण । आचमन कब-कब करना चाहिए । भूमि में गड़े हुए धन के सम्बन्ध में भूमि शोधन एवं पात्र शोधन का वर्णन

१-६४

४. मधुपर्कादिषु-पशुहिंसनवर्णनम् : १४८०

ब्राह्मणादि वर्ण जिस प्रकार वेदों में बताये हैं उनका विशदीकरण । मधुपर्क का विधान, अशौच क्रिया के नियम, अशौच काल का वर्णन

१-३१

५. आत्रेयी धर्म वर्णनम् : १४८२

प्रथम स्त्री का कर्तव्य वह अपनी शक्ति का ह्रास न होने दे एवं स्वतन्त्र न रहे, पिता, पति तथा पुत्रों की देख-रेख में रहे । राजस्वला काल में रहन-सहन तथा इन्द्र ने पाप देने के अनन्तर स्त्रियों को जो वरदान दिया उसका दिग्दर्शन ।

१-१६

६. आचारप्रशंसा, हीनाचारस्यनिन्दावर्णनम् १४८४
सांस्कृतिक जीवनीवाले मनुष्य के आचार तथा रहन-सहन की विधि १-४०

७. ब्रह्मचारिधर्म १४८७
ब्रह्मचारी के धर्म का वर्णन १-१२

८. गृहस्थधर्म १४८८
गृहस्थी के आचार एवं रहन-सहन का वर्णन १-१७

९. वानप्रस्थधर्म १४९०
वानप्रस्थी के धर्म का वर्णन १-९

१०. यतिधर्म १४९०
यति धर्म संन्यासाश्रम सबका त्याग करे किन्तु वेदों का त्याग न करे । यथा

संन्यसेत्सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत् ।

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परन्तपः ॥

भिक्षा लेने में हर्ष विषाद त्याग दे १-२४

११. वैश्वदेवातिथिश्राद्धादीनां वर्णनम् १४९२
प्रथम अर्घ्य अर्थात् पूजा के योग्य ऋत्विग्, कन्या का दान लेने वाला वर, राजा, स्नातक, गुरु आदि तथा श्राद्ध विधि का वर्णन और ब्रह्मचारी के नियम बताये हैं १-५९

१२. स्नातकव्रतं, वस्त्रादिधारणविधि १४९७
स्नातक के व्रत एवं आचार का वर्णन किया है १-४५

१३. उपाकर्मविधिवेदाध्ययनस्यानध्याय निरूपणम् १५००
उपाकर्म की आवश्यकता तथा विधान । ऋत्विग् आचार्य के आतिथ्य करने के लिये घर पर पधारने पर सत्कार करने की आवश्यकता बताई है ।

१४. चिकित्सकादीनामन्नभोजने निषेध १५०३
अभोज्य अन्न विवाहादि यज्ञ में यदि काक आदि से अन्न दूषित भी हो जाय वहां पर वह अभक्ष्य नहीं है १-३७

१५. दत्तकप्रकरण १५०६

दत्तक पुत्र के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है

१-१६

१६. व्यवहारविधि १५०८

राजा मन्त्री की संसद् का वर्णन, साक्षी के लक्षण, असत्य साक्षी का दण्ड तथा असत्य कहने पर पाप बताया है ।

१-३२

१७. पुत्रिणांप्रशंसावर्णनम् १५१०

पुत्र के होने से पिता पितृवृत्त से छुटकारा पा जाता है । पुत्रवान् को स्वर्गादि लोक प्राप्ति, क्षेत्रज पुत्र उसका पुत्र है जिसने गर्भाधान किया है

१-३८

एक पिता के कई पुत्र हों उनमें यदि एक भाई के भी पुत्र हैं तो सब भाई पुत्रवाले माने जाते हैं इसी प्रकार किसी के तीन चार स्त्री हो उनमें यदि एक स्त्री के भी सन्तान हो जाय तो सब पुत्रवती मानी जाती है । दायद अदायद सन्तति का वर्णन । स्वयमुपागत पुत्र के सम्बन्ध में हरिश्चन्द्र अजीर्त का इतिहास तथा शुनशेष के यूपबन्धन का इतिहास जैसे वह विश्वामित्र का पुत्र हुआ । दाय विभाग का वर्णन, दायद ६ पुत्र एवं अदायद ६ पुत्रों का वर्णन

३६-७६

१८. चाण्डालादिजात्यन्तरनिरूपणम् । १५१६

चाण्डालादि जाति प्रतिलोम से बताई है, जैसे—ब्राह्मणी माता शूद्र पिता से जो सन्तान हो वह चाण्डाल होती है । इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी जाति में विवाह करे उससे जो सन्तान होगी वह धार्मिक तथा मनुष्यता के व्यवहारवाली होगी यह बताया गया है

१-१६

१९. राजधर्माभिधान वर्णनम् १५१७

राजा को सब वर्ग के धर्म की रक्षा करनी चाहिए अपराधियों को बिना दण्ड दिये छोड़ने से राजा को पापी कहा है

१-३४

२०. प्रायश्चित्तप्रकरणवर्णनम् १४२०

विभिन्न प्रकार के प्रायश्चित्त ध्रूणहत्या और ब्रह्मघ्न के प्रायश्चित्त का वर्णन

१-५२

२१. ब्राह्मणोगमने शूद्रवंश्यक्षत्रियाणां प्रायश्चित्त १५२४

प्रतिलोम विवाह में उग्र प्रायश्चित्त, यथा शूद्र पुरुष ब्राह्मणी के साथ सहवास करे उस शूद्र को अग्नि में जला देना । इस प्रायश्चित्त के देखने से विचार होता है शिष्ट शान्ति प्रधान धर्म प्रवक्ता होने पर भी प्रतिलोम विवाह पर अपने उग्र विचार को प्रकट करते हैं । इसका तात्पर्य यह है कि प्रतिलोम सन्तान से संस्कृति का नाश हो जाता है । संस्कृति के नाश से राष्ट्र का नाश अवश्यम्भावी है

१-३६

२२. अयाज्ययाजनादि प्रायश्चित्त १५२७

यज्ञ करने में जिन असंस्कृत पुरुषों का अधिकार नहीं है और लोभवश जो ब्राह्मण उनसे यज्ञ करावें उस यज्ञ से सृष्टि में उत्पात होने के कारण उन ब्राह्मणों को प्रायश्चित्त करने को लिखा है

१-१०

२३. ब्रह्मचारिणः स्त्रीगमने प्रायश्चित्त १५२८

ब्रह्मचारी को स्त्री समागम होने से पातित्य का प्रायश्चित्त । भ्रूण हत्या, कुत्ता के काटने पर, पतित चाण्डाल से सम्बन्ध करने पर कृच्छ्र व्रत, चान्द्रायणादि व्रतों की व्यवस्था बताई है

१-४३

२४. कृच्छ्रातिकृच्छ्रविधिवर्णनम् : १५३२

कृच्छ्रातिकृच्छ्र चान्द्रायण की परिभाषा

१-८

२५. रहस्यप्रायश्चित्तवर्णनम् : १५३२

अबिख्यापितदोषाणां पापानां महतां तथा ।

सर्वेषां चोपपापानां शुद्धिं वक्ष्याम्यशेषतः ॥

गुप्त रखे हुए जो अपने पाप हैं उन रहस्य पापों का पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त बताए हैं

१-१२

२६. साधारणपापक्षयोपायविधान : १५३४

प्राणायाम, सन्ध्या, जप, सावित्री जप, पुरुष सूक्त आदि से पापों के क्षय होने का वर्णन किया है । धर्मशास्त्र के पढ़ने से पापक्षय होता है ऐसा बताया है

१-२०

२७. वेदाध्ययनप्रशंसा तथा आहारशुद्धिनिरूपण : १५३६
वेदरूपी अग्नि से पाप राशि नष्ट होती है इत्यादि का वर्णन तथा
वेद पढ़ने की प्रशंसा एवं आहार शुद्धि का वर्णन बताया है १-२१
२८. स्वयंविप्रतिपन्नादीनां दूषितस्त्रीणांत्यागाभावकथनम् : १५३८
बलात्कार से उपभुक्त स्त्री त्याज्य नहीं होती है यथा—
स्वयं विप्रतिपन्ना वा यदिवा विप्रवासिता ।
बलात्कारोपभुक्ता वा चोरहस्तगताऽपिवा ॥
न त्याज्या दूषितानारी नास्यास्त्यागो विधीयते ।
पुष्पकालमुपासीत ऋतुकालेन शुध्यति ॥
स्त्री का त्याग (तलाक) करना स्मृति विरुद्ध है । शतरुद्रिय,
अथर्वशिर, त्रिसुपर्ण, गोसूक्त और अश्वसूक्त के पाठ करने से
पापों से मुक्त हो जाता है । १-२२
२९. दानादीनां फलनिरूपणवर्णनम्
गोदान, छत्रदान, भूमिदान, पादुका दान, विविध प्रकार के दान
तथा मोन व्रत का माहात्म्य १-२२
३०. प्राणाग्निहोत्रविधि : १५४२
ब्राह्मण भोजन कराने का माहात्म्य तथा प्राणाग्निहोत्र विधि का
वर्णन किया है १-११

—०—

श्रौशनस संहिता

- अनुलोमप्रतिलोमजात्यन्तराणांनिरूपणवर्णनम् : १५४४
अनुलोम विवाह की सन्तान तथा प्रतिलोम सन्तान की जातियों
का वर्णन । सूत, वेणुक, मगध, चाण्डाल आदि जाति और इन
के लोम विलोम जाति का विस्तार तथा उनकी वृत्ति एवं
कार्य का वर्णन आया है १-५१

औशनस स्मृति

१. ब्रह्मचारिणां क्रमागतकर्तव्यवर्णनम् : १५४६

इस अध्याय में शौनकादि ऋषियों ने भार्गव को विनम्र भाव से प्रणाम कर धर्मशास्त्र का निर्णय पूछा। उत्तर में औशनस ने सांस्कृतिक जीवन का स्तर विधिवत् उपनयन वेदाध्ययन से प्रारम्भ कर मनुष्य के आचरण का चित्रण वैज्ञानिक भित्ति पर किया जिस प्रकार के संस्कृत जीवन से मनुष्यता का सच्चा विकास हो जाए

१-६४

२. ब्रह्मचारिप्रकरण शौचाचारवर्णनम् : १५५६

किस किस समय आचमन कर शुद्ध होना चाहिए यहां से प्रारम्भ कर ब्रह्मचारी के सम्पूर्ण कर्म शौचाचार ब्रह्मचारी की शिक्षा पद्धति का सुचारु निरूपण किया है।

३. ब्रह्मचारिप्रकरणे शौचाचारवर्णनम्

विद्या पढ़ने की विधि, गुरु के प्रति व्यवहार, ब्रह्मचारी के धर्म, वेदाध्ययन की आवश्यकता स्वाध्यायी ब्रह्मगति को प्राप्त करता है। भोजन की विधि, पञ्च प्राणाहुति की विधि, प्रातः कृत्य का विधान, पिण्डदान का माहात्म्य बताया है। अमा-वास्या अष्टका आदि श्राद्धकाल, पात्र ब्राह्मणश्राद्धकाल, अस्थि संचयन, गया श्राद्ध माहात्म्य किस अन्न से पितरों की कितने काल तक तृप्ति होती है। श्राद्ध में किस किस अन्न को वर्जित किया है। पिण्डोदक नवश्राद्ध आदि का विस्तृत वर्णन किया है

१-१४७

४. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १५७४

श्राद्ध में कैसे ब्राह्मणों को आमन्त्रण करना तथा उनके लक्षण। मूर्ख ब्राह्मणों को भोजन कराने पर पितरों का पतन आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है

१-३६

५. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १५७८

पिण्डदान विधि और उसके मन्त्र विस्तार से बताए गए हैं

१-६६

६. अशौचप्रकरणवर्णनम् : १५८७
 सूतक पातक अशौच कितने दिन का किसको होता है । सपिण्डता, सगोत्रता, समानोदक कितनी पीढ़ी तक है तथा सद्यः शौच कब होता है एवं पातक सूतक का वर्णन है १-६१
७. गृहस्थानांप्रेतकर्मविधि : १५९१
 प्रेत क्रिया प्रथम दिन से द्वादश दिवस तक का वर्णन किया है १-२३
८. प्रायश्चित्तप्रकरणवर्णनम् : १५९६
 महापापों का प्रायश्चित्त १-२४
 अनेक प्रकार के पाप कामज क्रोधज अभक्ष्यादि पापों के पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त विधान १-१०६

— ० —

बृहस्पति स्मृति

दानफलमहत्ववर्णनम् : १६१०

- इन्द्र ने शत यज्ञ समाप्त कर गुरु बृहस्पति से दान माहात्म्य एवं उत्कृष्ट दान पूछा । उत्तर में गुरु बृहस्पति ने सुवर्ण दान और भूमिदान का माहात्म्य बताया किन्तु भूमिदान सुपात्र विद्यावान् तपस्वी ब्राह्मण को ही देना बताया, अपात्र (मूर्ख अतपस्वी) को देने से पाप भी बताया है १-८१

— ० —

लघुव्यास स्मृति

१. स्नान तथा सन्ध्याविधि : १६१८

- प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में स्नान करना चाहिए । स्नान के पूर्व जिन वृक्षों के दातौन करने हैं उनका नाम तथा सूर्योपस्थान सन्ध्या प्रतिदिन करने का आदेश, बिना सन्ध्या किए जो कुछ पूजा दान करे वह निष्फल होता है १-३१

२. कर्तव्यकर्म, शरीरशुद्धि, नित्यकर्म, पञ्चमहायज्ञ तथा भोजन आदि अनेक प्रकरणवर्णनम् : १६२६

नित्यकर्म का विधान, देव यज्ञ, पितृ यज्ञादि, पञ्च यज्ञ, जप करने की विधि तथा जपमाला कैसी और किस वस्तु की होनी चाहिए यह बताया गया है। तीर्थस्नान एवं अघमर्षण सूक्त का माहात्म्य। शिवपूजन मन्त्र, वैश्वदेव कर्म भूतबलि, अतिथि का पूजन, भोजन करने का नियम, काल, ग्रहण काल में भोजन करने का निषेध, शयन का नियम, कैसी शय्या होनी चाहिए तथा किस ओर सिर करना इत्यादि मानवाचार का विशदीकरण किया गया है

१-६२

—०—

वेदव्यास स्मृति

१. धर्माचरणदेशप्रयुक्त-वर्ण-षोडशसंस्कारवर्णनम् : १६३१

वर्ण विभाग अनुलोम प्रतिलोमों की भिन्न-भिन्न जाति की संज्ञा उनके कर्म गर्भाधानादि संस्कार यज्ञोपवीत धारण काल जाति परत्व एवं ब्रह्मचारी के व्रत

१-४१

२. विवाहविधि, गृहस्थधर्म, स्त्रीधर्माभिधान आदि

यदि स्नातक द्वितीयाश्रम (गृहस्थाश्रम) में जाना चाहे तो विधिवत् सवर्ण कन्या के साथ विवाह करे अन्य से नहीं। पुरुष विवाह करने पर ही पूर्ण शरीरधारी होता है

१-१८

स्त्री के कर्तव्य का वर्णन आया है, यथा—

पत्युः पूर्वं समुत्थाय देहशुद्धिं विधाय च ।

उत्थाप्य शयनाद्यानि कृत्वा वेश्मविशोधनम् ॥

पति के जागने से प्रथम शयन से उठकर घर की शुद्धि, वस्त्रादिकों को यथास्थान में रखे

१६-४१

पुरुष का कर्तव्य स्त्री के प्रति “गच्छेद्युग्मासुरात्रिषु” इत्यादि । यह भारतीय संस्कृति का नियम प्रत्येक गृहस्थी को आदरणीय एवं आचरणीय है

४२-५७

३. सस्नानादि, तर्पण, पाकयज्ञादिविधि

गृहस्थी के नित्य नैमित्तिक काम्य कर्मों का निर्देश तथा उषाकाल में जागकर कर्म में प्रवृत्त होने की विधि । सन्ध्या कर्म, पितृ तर्पण, वेदाध्ययन, धर्मशास्त्र इतिहास को प्रातःकाल पढ़ने का विधान

१-२०

पाकयज्ञ विधान, दान का माहात्म्य, गुणवान् को श्राद्ध में भोजन कराना, वेदादि शास्त्र के ज्ञाता को ही ब्राह्मणत्व में हेतु बताया है । एक पंक्ति में सबको समान भोजन देना, शूद्रान्न भक्षण का दोष

२१-७१

४. गृहस्थाश्रमप्रशंसापूर्वकतीर्थधर्मवर्णनम् १६४८

सांस्कृतिक जीवनी का वर्णन, माता पिता ही परम तीर्थ है ।

दान के विषय में यथा —

यद्वाति यदश्नाति तदेव धनिनां धनम् ।

अन्ये मृतस्य क्रीडन्ति दारैरपि धनैरपि ॥

दान देना तथा धन का भोग करना यही अपना धन समझो । धन होने पर दाता भोक्ता बनो यह धार्मिक नैतिक अनुशासन बताया है । पढ़े हुए पुरुष का जीवन सफल और अनपढ़ का जीवन निरर्थक है । आचार्य आदि की परिभाषा, सुपात्र को दान देने से ही वह सफल होता है

१-७२

देवल स्मृति

प्रायश्चित्तवर्णनम् १६५५

समुद्र तट पर ध्यानावस्थित देवल से ऋषियों ने पूछा कि महाराज ! म्लेच्छों के साथ जिनका सम्पर्क हो गया है अर्थात् जो पुरुष बलात् या स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन कर चुका है उसको क्या करना चाहिये जिससे वह पुनः अपनी जाति में पावन हो जाय । इसके उत्तर में ऋषि देवल ने उन सबका प्रायश्चित्त विभिन्न प्रकार से बताया प्रारम्भ में अपेय पान अभक्ष्य भक्षण से सब प्रकार के सांसर्गादि पातित्य कर्मों में पृथक्-पृथक् प्रायश्चित्त कर सबकी शुद्धि बताई है । प्रायश्चित्तों के करने पर अन्त में गङ्गा स्नान से शुद्धि बताई है । इस स्मृति में जाति शुद्धि, देह शुद्धि और समाज शुद्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है

१-६०

—०—

प्रजापति स्मृति

इस स्मृति में एक ही श्राद्ध कर्म का पूर्णाङ्ग पूर्ण विधि से वर्णन किया गया है । शुक्राचार्य के कथन से श्राद्धकल्प में उथल पुथल हो गई थी । श्राद्ध कर्म के न करने से द्विजाति बलहीन और राक्षस बल हरण करने वाले हो गये थे । अतः श्राद्ध कल्प पर प्रजापति श्राद्ध के सम्बन्ध में श्राद्ध के भेद, श्राद्ध विधि, श्राद्ध के मन्त्र सम्पूर्ण कहे हैं । इस स्मृति के अध्ययन से श्राद्ध कर्म की आवश्यकता तथा सम्पूर्ण विधि मालूम हो जायगी । श्राद्ध के नियम, श्राद्ध काल, आभ्युदयिक श्राद्ध का माहात्म्य, श्राद्ध की सामग्री, श्राद्ध में पुण्य पाठ, श्राद्ध करने से पितरों की तृप्ति एवं श्राद्धकर्ता दीर्घायु, पुत्रवान्, धनवान्, ऐश्वर्यवान् होता है ।

१-१६८

लाघवाश्वलायन स्मृति

१. आचारप्रकरणवर्णनम् १६८३

आश्वलायन गृह्यसूत्र के निर्माता भी हैं। इस स्मृति में शंख, औशनस, व्यास और प्राजापत्यादि स्मृतियों की रीति पर व्यवहार प्रकरण का स्थान नहीं है केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आचार का ही विस्तृत वर्णन है। इससे इन स्मृतियों की प्राचीनता का अनुमान होता है। यथा—
“धर्मेकताना पुरुषा यदासन् सत्यवादिनः” जब जनता धर्म परायण रही उस समय सब सत्यवादी होते थे। इस कारण व्यवहार अर्थात् दण्डदापन राजशासन विधि की आवश्यकता न होने से व्यवहार प्रकरण का विस्तार नहीं रखा गया है। इस अध्याय में मुनियों ने आश्वलायन आचार्य से द्विजातियों के धर्म कहकर मनुष्यों के सांस्कृतिक जीवन के आचार पर प्रश्न किया, साथ ही यह बताया कि इस प्रकार के आचरण करनेवाले मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं। द्विज शब्द यहां पर मनुष्य शब्द का वाचक है। प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में उठना, शौचाचार एवं स्नान के मन्त्रों का वर्णन किया है (१-३६) सूर्यार्ध्य, सायं, प्रातः और मध्याह्न संध्या तथा सूर्योपस्थान की विधि

४०-६८

अग्निहोत्र की विधि तथा स्त्री के साथ ही अग्निहोत्र कर्म हो सकता है

६९-७२

वेदाध्ययन की विधि

७३-९०

तर्पण विधि

९१-११३

श्राद्ध कर्म, बलि वैश्वदेव, हस्तकार एवं श्राद्धकाल का वर्णन

११४-१४२

पञ्च महायज्ञ, मधुपर्क विधान, वैश्वदेव तथा काशी में शरीर त्याग से मुक्ति का होना बताया है

१४३-१८६

२. स्थालीपाकप्रकरणम् : १७०३

इस सम्पूर्ण अध्याय में स्थालीपाक यज्ञ का सांगोपांग विधान है ।

जो सामयिक गृहस्थी होते हैं उनको स्थालीपाक यज्ञ के पूर्व दिन पूर्णमासी को प्रायश्चित्त कर संकल्प करना चाहिए कि मैं कल स्थालीपाक यज्ञ करूंगा । अन्वाधान कर स्थालीपाक यज्ञ की एक हाथ चौरस वेदी बनाकर गोबर से लेपन कर रेखोल्लेखन, प्रोक्षण कर्म, अग्निस्थापन, अग्निपूजन, ध्यान, परिस्तरण, प्रोक्षणी पात्र, स्रुक् चमस, आज्य पात्र, स्रुक् स्रुव स्थापन, समिधाहरण आदि सम्पूर्ण विधि लिखी है

१-८०

३. गर्भाधानप्रकरणम् : १७०८

गर्भाधान की विधि का वर्णन किया है

१-१६

४. पुंसवनानवलोभनसीमन्तीन्नयनप्रकरण : १७१०

पुंसवन सीमन्त कर्म की विधि तथा समय का वर्णन है

१-१६

५. जातकर्मप्रकरण : १७१२

जातकर्मसंस्कार की विधि

१-५

६. नामकरणप्रकरण १७१३

नामकरण की विधि और नाम किस अक्षर से किस बालक का करना इसका निर्णय लिखा है । कुमार के कान में मन्त्र जप कर पिता उसके नाम को कहे

१-७

७. निष्क्रमणप्रकरण : १७१४

चतुर्थ मास में निष्क्रमण कर्म लिखा है

१-३

८. अन्नप्राशनप्रकरण : १७१५

छठे महीने में अन्नप्राशन की व्यवस्था बताई है

१-५

९. चौल (चूड़ाकरण) कर्मप्रकरण १७१५

चूड़ाकर्म संस्कार तृतीय वर्ष में करने का विधान । चूड़ाकर्म से विवाह पर्यन्त लौकिकाग्नि में हवन करने का विधान बताया है

१-२२

१०. उपनयनप्रकरण : १७१८

उपनयन संस्कार की विधि । ब्राह्मण कुमार का अष्टम वर्ष में उपनयन संस्कार, मौञ्जी कर्म, मेखला धारण, गायत्री उप-

देश की विधि, स्विष्ट कृत, होमादि, उपनयन संस्कार की पूर्ण विधि बताई है

१-६१

११. महानाम्न्यादिब्रतत्रयप्रकरण : १७२४

उपनयन संस्कार के अनन्तर एक वर्ष होने पर उत्तरायण में महानाम्नी ब्रत का विधान । द्वितीय वर्ष में महाव्रत, तृतीय वर्ष में उपनिषद् ब्रत ये तीन ब्रत ब्रह्मचारी को उपनयन संस्कार के अनन्तर तीन वर्ष के भीतर करने चाहिए

१-८

१२. उपाकर्मप्रकरण : १७२५

उपाकर्म का विधान श्रावण के महीने में हस्त नक्षत्र में करने का निर्देश किया है

१-१७

१३. उत्सर्जनप्रकरण : १७२७

उत्सर्ग-षण्मास (छै मास) में उत्सर्ग कर्म वेद जो पढ़े हैं उनकी पुष्टि के लिए उत्सर्ग कर्म करे

१-७

१४. गोदानादित्रयप्रकरण : १७२८

गोदान कर्म में जो सोलहवें वर्ष की अवस्था में उपनयन के अनन्तर होता है चौल कर्म की रीति पर हवन कर ब्रह्मचारी को वस्त्रभूषण धारण करने की विधि बताई है

१-६

१५. विवाहप्रकरण : १७२९

विवाह का विधान (गृहस्थाश्रम) कन्या के विवाह की रीति पद्धति का वर्णन । ब्रह्मचर्याश्रम से गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की विधि । विवाह संस्कार कर बधू को वर अपने घर में लावे उस समय के आचार यज्ञादि का विधान

१-८०

१६. पत्नीकुमारोपवेशनप्रकरण : १७३७

धर्म कार्यों में पत्नी को वाम भाग में, आशीर्वाद के समय दक्षिण भाग में बैठाने का विधान है । पुत्रोत्पत्ति में मौञ्जीबन्धन कर्म तक कर्ता उत्तर में एवं पुत्री पुत्र के दक्षिण में बैठे

१-३

१७. अधिकारिनियमप्रकरण : १७३७

इस अध्याय में पुत्र के संस्कार करने में किस किस का अधिकार कब कब है इसकी विवेचना की गई है

१-५

१८. नान्दीश्राद्धेपितृप्रकरण : १७३८

आधान काल, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, महाव्रत, गोदान, संस्कार समावर्तन और विवाहादि सम्पूर्ण मंगल कार्यों में नान्दी श्राद्ध करने का नियम बताया है

१-६

१९. विवाहहोमेपरिवर्ज्यप्रकरण : १७३९

किसी शुभ कार्य में नान्दी श्राद्ध होने के अनन्तर जब तक मण्डप का विसर्जन न हो तब तक सपिण्डता होने पर भी कोई अशुभ कर्म प्रेत कृत्य मुण्डनादि करने का निषेध बताया है

१-६

२०. प्रेतकर्मविधि : १७४०

पुत्र को पिता आदि का प्रेत कर्म, शव दाह आदि प्रेत कर्म करने का विचार। अशौच का निरूपण दिखाकर अन्त में आत्मनिष्ठ को किसी प्रकार का अशौच नहीं लगता है

१-६२

२१. लोकनिन्दाप्रकरण : १७४९

सदाचार भ्रष्ट क्रियाहीन की निन्दा तथा निन्दित कर्म से उत्पन्न सन्तान असंस्कृत है जिनके यहां यजन करने वाले ब्राह्मणों को निन्दित बताया है

१-१६

२२. वर्णधर्मप्रकरण : १७५१

वर्णधर्म—ब्राह्मण की श्रेष्ठता यदि वह वेदज्ञ हो, वेदों का उपदेश कर्ता हो। ब्राह्मण का अपमान करना एवं उससे सेवा कराने में पाप बताया है

१-२४

२३. श्राद्धप्रकरण : १७५३

श्राद्ध कर्म की विधि एवं उसका माहात्म्य। इसे विधि पूर्वक करने वाले की सब कामना सफल होकर सायुज्य मुक्ति होती है तथा पितरों की प्रसन्नता से वह सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर ज्ञाननिष्ठ होता है

१-११३

२४. श्राद्धोपयोगीप्रकरण १७६४

श्राद्ध करने का माहात्म्य। जो व्यक्ति क्षयाह में आलस्य या प्रमाद से माता पिता का श्राद्ध विधिवत् नहीं करता है उसके

पितर उस सन्तान से जैसे निराश होते हैं वैसे ही वह सन्तान भी अधोगति को प्राप्त होती है। जो माता पिता का विधिवत् अर्थात् श्राद्ध करने की विधि बताई है जैसे योग्य ब्राह्मण श्राद्ध में निमन्त्रित किए जाते हैं उस पूर्ण विधि से जो श्राद्ध करता है उसके पितर तृप्त होते हैं। वह पुरुष आत्मनिष्ठ होकर स्वयं इस संसार से तर जाता है एवं दूसरों को भी तार देता है

१-३१

—०—

बौधायन स्मृति

१. शशिष्ट धर्म वर्णन

बौधायन स्मृति में धर्म की प्रधानता अर्थ की गौणता प्राचीन वैदिकाचार का वर्णन है। इसमें मुख्य तीन प्रश्नों का निर्णय है। प्रथम प्रश्न — “उपदिष्टो धर्मः प्रति वेदम्” “तस्यानुव्याख्यास्यामः” “स्मार्तो द्वितीयः” “तृतीयः शिष्टागमः”। “उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदम्” इसकी व्याख्या १२ अध्यायों में क्रमशः वर्णन की गई है। “शिष्टागम” की परिभाषा स्वयं बौधायन ने की है। “विगतमत्सरनिरहंकारकुम्भीधान्या अलोलुपदम्भदर्पलोभमोहक्रोधविर्वजिताः” धर्म का ज्ञान वेदों से होता है। वेद के अभाव में स्मृति ग्रन्थों से शिष्ट पुरुषों द्वारा परिषद् का निर्णय। परिषद् का निर्णय इस प्रकार बताया है—

चातुर्वर्षं विकल्पी च अङ्गबिद् धर्मपाठकः ।

आश्रमस्थास्त्रयो विप्राः पर्वदेवा दशावरा ॥

वेदस्मृत्यादिज्ञान से रहित परिषद् को प्रमाणित नहीं बताया है।

यथा—

यथा वाहमयोहस्ती यथा चर्ममयोमृगः ।

ब्राह्मणश्चानधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः ॥

उत्तर तथा दक्षिण में जो आचार हैं उन पर विप्रतिपत्ति और
आर्यावर्त की सीमा का वर्णन । यह धर्मशास्त्र यज्ञ संस्कारादि
आर्यावर्त ब्रह्मावर्त के लिए ही है १-३७

२. ब्रह्मचारी धर्म

ब्रह्मचारी के नियम अष्टम वर्ष में ब्राह्मण का उपनयन तथा ऋतु
परत्व उपनयन काल, वसन्त में ब्राह्मण, ग्रीष्म में क्षत्रिय एवं
शरद् में वैश्य का उपनयन समय, मौञ्जी बन्धन, भैक्ष्यचर्या
एवं ब्रह्मचारी को शिक्षा, अवकीर्णी का दोष, ब्रह्मचर्य का
माहात्म्य । धर्म क्या है ? १-५५

३. स्नातकधर्म

धर्म के निर्णय तथा स्नातक के नियम एवं व्रत १-१३

४. कमण्डलुचर्याभिधान : १७७५

स्नातक के शौचाचार, कमण्डलु से जल के प्रयोग का विधान एवं
रीति बताई गई है १-२८

५. शुद्धिप्रकरण : १७७७

प्रथम प्रश्न के ही प्रसंग में इस अध्याय का वर्णन किया है । शुद्धि
का विधान है । यथा—

अद्भिः शुध्यन्ति गात्राणि बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ।

अहिसया च भूतात्मा मनः सत्येन शुध्यति, इति ॥

यहां से शरीर, बुद्धि, देह और मनकी शुद्धि बताकर यज्ञोपवीत
धारण की रीति तथा उसकी शुद्धि पादप्रक्षालनादि, नदी में
स्नान की रीति, वस्तु भाण्डादि की शुद्धि, अविज्ञात भौतिक
जीवों की षट् प्रकार की शुद्धि, आसन, शय्या और वस्त्र की
शुद्धि के सम्बन्ध में, शाक, फल, पुष्पों की प्रक्षालन से ही शुद्धि
बताई है ।

अशौच में सपिण्डता को लेकर दस दिन में शुद्धि होती है । कुत्ते के
काटने पर प्राणायामादि से शुद्ध एवं अभक्ष्य का वर्णन । गाय
का दूध गाय से सूतने पर दस दिन के अनन्तर शुद्ध होता है ।
इस प्रकार सब बातों की शुद्धि करनी धर्म का अङ्ग बताया है १-१६३

**६. यज्ञाङ्गविधिनिरूपणम् तथा मूत्रपुरीषाद्यु पहतद्रव्याणां शुद्धि-
वर्णनम् : १७८७**

यज्ञ में जिन-जिन द्रव्यों की आवश्यकता होती है उनका निरूपण
तथा यज्ञपात्र एवं वस्त्रादिकों की शुद्धि ।

७. पुनः यज्ञाङ्गविधिवर्णनम् : १७९०

आभ्यान्तर तथा बाह्य दो प्रकार के यज्ञ के अङ्ग बताये हैं ।

आभ्यन्तर अङ्ग, बाह्य ऋत्विगादि इस प्रकार यज्ञाङ्ग का
संक्षिप्त निदर्शन और शुद्धि बताई है

१-३०

८. ब्राह्मणादिवर्णनिरूपणम् : १७९२

चातुर्वर्ण्यं निरूपण, अनुलोमज की पृथक्-पृथक् जाति अनुलोमज,
प्रतिलोमज की ब्रात्य संज्ञा कही गई है । इस कारण ब्रात्यता
होने से उनको सावित्री उपदेश का अनधिकार कहा गया है

१-१६

९. शङ्करजातिनिरूपणम् : १७९३

रथकेरादि वर्णशङ्कर जाति की परिगणना कर इनको ब्रात्य कहा है

१-१६

१०. राजधर्म : १७९४

वर्णानुकूल मनुष्यों को वृत्ति देना, कर लगाना, ब्रह्महत्यादि महा-
पापों का प्रायश्चित्त, पाप के निर्णय में साक्षिता देखे, मिथ्या
साक्षी को पाप तथा दण्ड एवं प्रायश्चित्त व्रत

१-४०

११. अष्टविवाहप्रकरण : १७९७

आठ प्रकार के विवाहों की परिभाषा । उन विवाहों में चार शुद्ध
और चार अशुद्ध । जैसा विवाह वैसी ही सन्तान । आसुरादि
से अशुद्ध सन्तान । द्रव्य देकर ग्रहण की हुई स्त्री पत्नी संज्ञा
नहीं पाती है उसके साथ यज्ञादि कर्म नहीं हो सकते हैं

१-२२

अध्यायकाल : १७९८

अध्याय काल अष्टमी, चतुर्दशी आदि बताई है

२३-४३

१२. पूर्वोक्तानेकविधिप्रकरण : १७९९

संक्षिप्त से धर्म का निर्णय ।

१-२२

प्रायश्चित्तप्रकरण : १८००

(स्मार्तो धर्मः) इसके निर्णय में प्रथम अध्याय में प्रायश्चित्त विधान बताया है । ध्रूण हत्या करने वाले को १२ वर्ष तक प्रायश्चित्त इसी प्रकार ब्रह्म हत्या करने वाले को भी द्वादश वर्ष का प्रायश्चित्त और मातृगामी को तप्त लोह में लेटाना तथा लिङ्गच्छेद प्रायश्चित्त इत्यादि पञ्च महापातकियों का पृथक्-पृथक् प्रायश्चित्त । ब्रह्मचारी स्त्री प्रसंग करे उसे अवकीर्णी कहकर उससे गर्दभ यज्ञ करावे इस प्रकार महापातकियों के प्रायश्चित्त का निरूपण किया गया है

१-६६

दायविभागवर्णनम्

दाय विभाग, स्त्रियों की शक्ति को किसी प्रकार क्षीण न होने देना इसके लिए पति, पुत्र एवं पिता का उत्तरदायित्व, अगम्या जो स्त्री जिस पुरुष की है उसका निरूपण । स्नातक के व्रत तथा आचार, पूज्यजनों से कैसा व्यवहार करना चाहिए

१-६६

सन्ध्योपासनाविधि : १८१७

सन्ध्या कर्म की विधि और कर्तव्यता

१-३०

मध्याह्नस्नानविधि तथा ब्रह्मयज्ञाङ्गतर्पण : १८२०

मध्याह्न क्रम से प्रारम्भ कर ब्रह्मयज्ञाङ्ग, अग्नि, प्रजापति, साम, रुद्राणि, दैवत तर्पण विस्तार से निरूपण किया है

१-२१२

पञ्चमहायज्ञविधि तथा आश्वमधर्मनिरूपण : १८२७

पांच महायज्ञों की विधि

१-४४

शालीनयायावराणामात्मयाजिनां प्राणहुति व्याख्यानं : १८३०

शालीन ययावरों को प्राणाहुति की विधि तथा मन्त्रों का निरूपण

१-३०

श्राद्धाङ्गाग्नौकरणादिविधिनिरूपणम् : १८३३

त्रिमधु, त्रिणाचिकेत, त्रिसुपर्ण, पञ्चाग्नि, षडङ्गवित् ज्येष्ठ सामक स्नातक ये पङ्क्ति पावन बताये हैं । इनके द्वारा श्राद्ध में अग्नि कार्य के विधान का निरूपण किया है

१-३१

सत्पुत्रप्रसंशा : १८३६

सत्पुत्र का वर्णन किया है “पुत्रेण लोकाञ्जयति” अच्छी सन्तान से पिता स्वर्गादि लोक में विजयी होता है “सत्पुत्रमुत्पाद्याऽऽत्मनं तारयति” सत्पुत्र की महिमा कही है

१-१६

संन्यासविधिवर्णनम् : १८३७

संन्यास की विधि—संन्यास का धर्म विस्तार से निरूपण कर इसी के परिशिष्ट १७ सूत्रों में उसका विधान, “शालीन यायावरौ” का आचार, संन्यासी के त्रिदण्ड का माहात्म्य बताया है

१-८६

शालीनयायावरादीनां धर्मनिरूपणम् : १८४४

शालीन और यायावरों की वृत्ति तथा धर्म का निरूपण किया है। शाला में आश्रय करने से शालीन एवं श्रेष्ठ वृत्ति के धारण करने से यायावर। इनकी नौ प्रकार की वृत्ति बताई है। जैसे—१. षण्णिवर्तनी, २. कौद्दाली, ३. कुल्या, ४. संप्रक्षालनी ५. समूहा, ६. पालिनी, ७. शिलोञ्छा, ८. कापोता, ९. सिद्धा इनके अतिरिक्त दशम वृत्ति भी बताई है। आहिताग्नि तथा यायावर की वृत्ति का वर्णन है

१-२०

षण्णिवर्तन्यादिवृत्तीनां स्वरूपकथनम् : १८४६

षण्णिवर्तन्यादि वृत्तियों का स्पष्टीकरण है, षण्णिवर्तनी, कौद्दाली आदि का विषदीकरण है तथा शिलोञ्छ वृत्ति की परिभाषा

१-३८

पचमानकापचमानकभेदेन वानप्रस्थस्य द्वैविध्य

वर्णनम् : १८४९

दो प्रकार के वानप्रस्थ—पचमानक और अपचमानक के लक्षण तथा उनके धर्म, वन में रहने का माहात्म्य

१-२५

मृगैः सहपरिस्पन्वः संवासस्ते(स्त्वे)भिरेव च ।

तैरेव सदशीवृत्तिः प्रत्यक्षं स्वर्गलक्षणम् ॥

ब्रह्मचारिण अभक्ष्य भक्षणे प्रायश्चित्तः : १८५१

ब्रह्मचारी को स्त्री के सहवास तथा निषेध पदार्थों के भक्षण से प्रायश्चित्त का निरूपण

१-११

अघमर्षणकल्पव्याख्यान : १८५२

तीर्थ में जाकर सूर्याभिमुख होकर अघमर्षण सूक्त प्रातः, माध्याह्न
और सायं तीन काल में एक सौ बार पाठ करने से ज्ञाताज्ञात
उपपातकों से शुद्ध हो जाता है

१-७

आत्मकृतदुरितोपशमायप्रसृतयावकस्यहवन**विधिवर्णनम् : १८५३**

दुरित क्षयार्थं एक प्रस्थ यव के हवन का विधान

१-२१

कूष्माण्डहोमविधि : १८५५

कूष्माण्डी ऋचा “यद्देवा देव हेऽनं” इत्यादि तीन मन्त्रों से हवन
करने से ब्रह्मचारी के स्वप्नदोष आदि प्रायश्चित्त का विधान है

१-२२

चान्द्रायणकल्पविधान : १८५६

चान्द्रायण कल्प का विधान बताया है

१-४०

अनश्नत्परायणविधिव्याख्यानम् : १८५६

निराहार व्रत या फलहार व्रत कर जो मन्त्र इसमें लिखे हैं उनसे
हवन करने से चक्षु का प्रकाश बढ़ेगा

१-२१

याप्यकर्मणोपेतस्थनिष्क्रयार्थं जपादिनिरूपणं : १८६१

अयाज्य याजन जिसका दान नहीं लेना उसका दान लेना इत्यादि
कर्मों का प्रायश्चित्त, जप आदि का निरूपण

१-१८

चक्षुःश्रोत्रत्वग्वाणमनोव्यतिक्रमादिषुप्रायश्चित्त तथा**विवाहात्प्राक्कन्यायारजोदर्शनेदोषविरूपणम् : १८६३**

प्रकीर्ण प्रायश्चित्तों का वर्णन है, यथा जिस अंग से जो पाप किया
गया उनका पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त तथा संकीर्ण पापों का
प्रायश्चित्त

१-३२

प्रायश्चित्तविधि : १८६७

प्रायश्चित्त की विधि बताई है

१-२०

प्रायश्चित्तविधि : १८६६

छोटे-छोटे पापों का प्रायश्चित्त एवं विधि । अघमर्षण सूक्त तथा
कूष्माण्डी मन्त्रों का प्रायश्चित्त

१-१६

प्रायश्चित्तविधि : १८७०

स्वल्पापराध के प्रायश्चित्त

१-१०

कृच्छ्रशान्तपनादिव्रतविधि १८७१

कृच्छ्र, सांतपनादि व्रत की विधि बताई है

१-३३

मृगारेष्टि, पवित्ररेष्टिश्चवर्णन : १८७५

मृगारेष्टि पवित्ररेष्टि का विधान । अपातक कर्म छोटे व्यवहार

वर्जित कर्मों का शोधनार्थ

१-१०

वेदपवित्राणामभिधान : १८७६

पाप कर्म से निवृत्त होकर पुण्य कर्म में प्रवृत्त होने पर वैदिक मन्त्रों

के पाठ से प्रोक्षण

१-१०

गणहोमफलमेतदध्यापनादौफलनिरूपण : १८७७

गण होम, अग्नि वायु आदि देवताओं का पूजन तथा स्मृति के पाठ

और ज्ञान का माहात्म्य । स्मृति शास्त्र के परिशीलन तत्

प्रदर्शित संस्कार सम्पन्नता से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है

१-१७

—०—

गौतम स्मृति

१. आचारवर्णनम् : १८७६

उपनयन संस्कार का समय तथा उसका विधान और आचारवर्णन

२. ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम् : १८८१

ब्रह्मचारी के नित्य-नैमित्तिक कर्मों का वर्णन और ब्रह्मचारी के नियम ।

३. ब्रह्मचारिप्रकरणवर्णनम् : १८८३

नैष्ठिक ब्रह्मचारी के नियम, व्रत और दिनचर्या ।

४. विवाहप्रकरणवर्णनम् : १८८४

विवाह प्रकरण में आठ प्रकार के विवाह और उनके लक्षण । उनमें ४ ब्राह्म,

आर्ष, प्राजपत्य और दैव ये धार्मिक विवाह हैं इन धार्मिक विवाहों से

उत्पन्न सन्तान अपने पूर्वजों का उपकार करती है ।

५-६ गृहस्थाश्रमवर्णनम् : १८८७

गृहस्थाश्रम में गृहस्थ के कर्तव्य और गृहस्थाश्रम का वर्णन ।

७. आपद्धर्मवर्णनम् : १८८८

आपतकाल में वर्णाश्रमी दूसरे वर्ण के कर्म को भी कर सकता है ।

८. संस्कारवर्णनम् : १८८९

संस्कृत जीवन की गरिमा—

द्वौलोके धृतव्रतौ राजा ब्राह्मणश्च बहुश्रुतस्तयो यच्चतुर्विधस्य मनुष्य-
जातस्यान्तः सञ्ज्ञानाञ्चलन पतनसर्पणामायत्तंजीवनं प्रसूतिरक्षणम-
संकरोधर्मः ।

जिसका संस्कार होता है उसमें सभी उदात्तगुणों का आधान होने से ब्राह्मी तनु की प्राप्ति का अधिकार आ जाता है ।

९. कर्तव्याकर्तव्यवर्णनम् : १८९०

स्नातक गृहस्थ-जीवन का प्रवेशार्थी है वह विधि विहित विद्या का साङ्गोपांग अध्ययन कर भविष्य के गुरुतर उत्तरदायित्व को वहन कर आदर्श रूप से कर्तव्य पालन करता हुआ अपना, समाज का राष्ट्र का हित सम्पादन करता है—स्नातक की आदर्श दिनचर्या उसके नियम और आचार का वर्णन ।

सत्यधर्मा आर्यवृत शिष्टाध्यापक शौवशिष्टः

श्रुतिनिरतः स्यान्निश्चयमहितो वृद्धवृद्धकारी दमवान्

शील एवमाचारो मातापितरौ पूर्वापरान्सम्बन्धान्

दुरितेभ्यो मोक्षयिष्यन् स्नातकः शशब्दब्रह्मलोकान् व्रजयते ।

१०. वर्णानांवृत्तिवर्णनम् : १८९३

ब्राह्मणक्षत्रियादि वर्णों की पृथक्-पृथक् आजीविका वृत्ति ।

११. राजधर्मवर्णनम् : १८९४

राजधर्म का निर्देश—

न्यायपूर्वक प्रजापालन राजा का परम धर्म है ।

१२. विविध पापकरणे दण्डविधानवर्णनम् : १८९६

भिन्न-भिन्न पापकर्म के दण्ड विधि का निरूपण ।

१३. साक्षीणां विधावर्णनम् : १८६७

साक्षियों का वर्णन ।

१४. आशौचवर्णनम् : १८६८

आशौच का प्रकरण ।

१५. श्राद्धविवेकवर्णनम् : १८६९

श्राद्ध का निर्णय तथा श्राद्ध कर्म में कौन ब्राह्मण पूज्य और कौन अपूज्य है ।

१६. अनध्यायवर्णनम् : १९०१

वेदादि शास्त्रों के अनध्याय काल का वर्णन ।

१७. भक्ष्याभक्ष्यप्रकरणम् : १९०२

भक्ष्य एवं अभक्ष्य पदार्थों का निरूपण ।

नित्यमभोज्यं केशकीटावपन्नं रजस्वला कृष्ण शकुनिपदोपहतं भ्रूणघ्न
प्रेक्षितं गवोपघ्रातं भावदुष्टं शुषतं केवलमदधि पुनः सिद्धं पर्युषितम-
शाक भक्ष्य स्नेह मांस मधून्युत्सृष्ट—तथाह मनः गोश्चक्षीरमनिर्द-
शयाः सूतके चा जामहिष्योश्च मेधातिथि भाष्यम् नित्यमाविक्रमपेय-
मोष्ट्रमंशकशकञ्चस्यन्दिनीयमसू सन्धिनीनांचयाश्चव्यपेतवत्सा...
आदि ।

नोट—पाराशर आदि प्रायः सभी शास्त्रों में इसका वर्णन है ।

१८. स्त्रीषु ऋतुकाले सहवास प्रकरणम् : १९०३

ऋतुकाल में भार्या के साथ सहगमन की विधि ।

१९. प्रतिषिद्धसेवनेप्रायश्चित्तमीमांसावर्णनम् १९०४

निषिद्ध वस्तुओं के व्यवहार करने में प्रायश्चित्त का वर्णन ।

२०. विविधपापानां कर्मविपाकवर्णनम् : १९०६

पृथक्-पृथक् पापों के कर्मफल का विपाक ।

२१. सर्वपातकेषु शान्तिवर्णनम् : १९०७

सब प्रकार के पातकों में शान्ति कर्म की आवश्यकता ।

२२. निषिद्धकर्मणां जन्मान्तरे विपाकवर्णनम् : १९०८

निषिद्ध काम करने वाले का जन्मान्तर में कर्म का विपाक दुःख भोग आदि का वर्णन है ।

२३. प्रायश्चित्तवर्णनम् : १६०६

पाप कर्मों का दूसरे जन्म में फल और उनका प्रायश्चित्त ।

२४. महापातकप्रायश्चित्तवर्णनम् : १६११

महापातकियों के प्रायश्चित्त का विधान ।

२५. रहस्यप्रायश्चित्तवर्णनम् १६१२

गुप्त पापों के प्रायश्चित्त :

२६. प्रायश्चित्तवर्णनम् : १६१३

अवकीर्णी और दुराचारी के प्रायश्चित्त का वर्णन ।

२७. कृच्छ्रव्रतविधिवर्णनम् : १६१४

कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत की विधि का वर्णन ।

२८. चान्द्रायणव्रतविधिवर्णनम् : १६१६

चान्द्रायण व्रत की विधि ।

२९. पुत्राणांसम्पत्तिविभागवर्णनम् : १६१७

लड़कों को अपने पिता की सम्पत्ति में बंटवारा ।

—०—

वृद्धगौतम स्मृति

१. धर्मोपदेश तथा भगवत् स्वरूप वर्णनम् :

युधिष्ठिर का वैशम्पायन के प्रति वैष्णव धर्म के जिज्ञासार्थ प्रश्न जिसके

श्रवण करने से पाप दूर हो जाय

१-१०

वैशम्पायन का उत्तर

११-१२

युधिष्ठिर का भगवान् से वैष्णव धर्म की जानकारी के लिए प्रश्न

१३-२७

भगवान् द्वारा वैष्णव धर्म का माहात्म्य बतलाना और उसका

सविस्तार वर्णन

२८-७१

२. धर्मप्रशंसावर्णनम् : १६२६

वैशम्पायन का प्रश्न

१

भगवान् ने धर्म का मार्ग बतलाया

२-१०

युधिष्ठिर का प्रश्न कि ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्यादि किस गति से यम-

लोक जाते हैं ?

११-१३

वृद्धगौतम स्मृति

१२५

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य किन-किन कर्मों से स्वर्ग जाते हैं उसका वर्णन

१५-२३

युधिष्ठिर का प्रश्न—शुभ कर्म और अशुभ की वृद्धि और नाश किस प्रकार होता है ?

३३

भगवान का शुभ कर्म और अशुभ कर्म के वृद्धि नाश का सविवरण प्रतिपादन

३४-४०

३. दानप्रकरणवर्णनम् : १६३१

युधिष्ठिर के प्रश्न—उत्तम, मध्यम और अधम दान क्या है ? किस दान से उत्तम, मध्यम और अधम की वृद्धि होती है

१-८

भगवान् ने उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार से दान देने का सविस्तार वर्णन किया

१०-८८

ज्ञानी को दान देने की बहुत प्रशस्ति गाई है—

पापकर्म समाक्षिप्तं पतन्तं नरके नरम् ।

त्रायते दानमप्येकं पात्रभूतेकृते द्विजे ॥ ७६ ॥

बीजयोनि विशुद्धा ये श्रोत्रियाः संयतेन्द्रियाः ।

श्रुत्वान्नविरला नित्यन्ते पुनन्तीह दर्शनात् ॥ ८४ ॥

स्वयं नीत्वा विशेषेण दानन्तेषां गृहेष्वथ ।

निधापयेत्तुभक्तान् तद्दानं कोटिसम्मितम् ॥ ८५ ॥

४. विप्राणां गुणदोषवर्णनम् : १६४०

ब्राह्मणों के लक्षण और चारों वर्णों में ब्राह्मण किस प्रकार दूसरों के तारने वाले होते हैं । एतद्विषयक युधिष्ठिर का प्रश्न

१-५

भगवान् ने उत्तम मध्यम और अधम ब्राह्मणों के लक्षण बताये

७-५७

शीलमध्ययनं दानं शौच मार्दवमार्जवम् ।

तस्माद्देवान् विशिष्टान् मनुराह प्रजापतिः ॥ २४ ॥

भूर्भुवः स्वरिति ब्रह्म यों वेद परमद्विजः ।

स्वदारनिरतो दान्तः स च विद्वान्सभूमुखः ।

सन्ध्यामुपासते विप्रा नित्यमेव द्विजोत्तमाः ॥ २५ ॥

ते यान्तिनरशार्दूल ब्रह्मलोकमसंशयम् ।

सावित्रीमात्रसारोऽपि वरोविप्रः सुयन्त्रितः ॥ २६ ॥

नायन्त्रितश्चतुर्वेदी सर्वाशोसर्वविक्रयी ।

विप्र प्रशंसा—

विप्रप्रसादाद्धरणीधरोऽहं

विप्रप्रसादादसुराञ्जयामि ।

विप्रप्रसादाच्चसवक्षिणोऽहं

विप्रप्रसादादजितोऽहमस्मि ॥ ५७ ॥

५. जीवस्यशुभाशुभकर्मवर्णनम् : १६४६

युधिष्ठिर का प्रश्न—मनुष्य लोक और यमलोक का क्या प्रमाण है ? और मनुष्य किस प्रकार यमलोक से तर जाते हैं ? प्रेत-लोक और यमलोक की गति किस प्रकार है ?

१-६

यमलोक आदि का वर्णन और जीव की गति तथा कौन यमलोक और स्वर्गलोक को जाते हैं । सब प्राणी यमलोक में किस प्रकार दुःख भोगते हुए जाते हैं

१०-५८

युधिष्ठिर का प्रश्न—किस दान के करने से जीव यमलोक के मांग से छुटकारा पाकर सुख प्राप्त करते हैं

५६-६१

अनेक प्रकार के दान और वृक्षादि लगाने और जिन श्रेष्ठ कर्मों से मनुष्य स्वर्ग को जाता है उनका विस्तार पूर्वक वर्णन ।

६२-१२१

६. सर्वदानफलवर्णनम् : १६५८

सम्पूर्ण प्रकार के दानों का फल और कैसे ब्राह्मण को दान देना चाहिए । दानपात्र ब्राह्मण के लक्षण तथा तपस्या का फल

१-४

ऐसे ब्राह्मणों के लक्षण जिन्हें दान देने से मनुष्य दुःखों से छूट जात है । यथा—

ये क्षान्तदान्ताश्च तथाभिपूज

जितेन्द्रियाः प्राणिवधेनिवृत्ताः ।

प्रतिग्रहे सङ्कुचिता गृहस्था-

स्ते ब्राह्मणस्तारयितुं समर्थाः ॥

सत्पात्र और पूज्य ब्राह्मण के शुभलक्षण—

ब्राह्मणो यस्तु मद्भक्तौ मद्याजीमत्परायणः ।

मयि सन्न्यस्त कर्मा च स विप्रस्तारयिष्यति ॥

७. वृषदानमहत्त्ववर्णनम् : १६७५

वैशम्पायन से पूछा कि दान धर्म को सुनने पर मुझे जिज्ञासा हुई है

कि आप और-और धर्मों को भी बतलाइये

१-४

दश गौ के दान के समान एक बैल का दान पुष्ट बैल का दान हजार गोदान के समान कहा गया है ।

दशषेणु समोऽनड्वानेकोऽपि कुरुपुंगव ।

मेदोमांस विपुष्टांगो नीरोगः पापवर्जितः ॥

इसके दान करने से ब्राह्मण खेत को जोत सकते हैं और ज्ञानपूर्वक अन्नोत्पादन कर सुन्दर स्वस्थ दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न कर सृष्टि की उत्तरोत्तर उन्नति करते हैं ।

अनेक प्रकार के दान जैसे मन्दिरों में भजन कीर्तन, प्याऊ लगाना,

वृक्षारोपणवर्णन

५-१३३

८. पञ्चमहायज्ञवर्णनम् : १६८७

युधिष्ठिर के प्रश्न पञ्चयज्ञ विधान पर

१-७

पञ्चमहायज्ञ करने की आवश्यकता

८-१८

युधिष्ठिर का स्नानविधि पर प्रश्न

१९

स्नान करने की विधि और स्नान के साथ क्या-क्या करना चाहिए । सन्ध्या देवर्षि पितृतर्पण करके ही जल से निकलना चाहिए । बिना तर्पण किए वस्त्र निष्पीड़न करने से देवता, ऋषि और पितर शाप देते हुए निराश होकर लौट जाते हैं ।

२०-७२

अतर्पयित्वा तान्पूर्वं स्नानवस्त्रन्नपीडयेत् ।

पीडयेद्यदितन्मोहाद्देवाः सर्षिगणास्तथा ॥

पितरश्च निराशास्तं शप्त्वा यान्तियथागमम् ॥

विभिन्न प्रकार के पुष्पों द्वारा पूजा करने के माहात्म्य पर प्रश्न ?

७३

चढ़ाने योग्य पुष्पों का वर्णन और वर्जित पुष्पों का निषेध

७४-८३

युधिष्ठिर का देवताओं की पूजन की विधि का प्रश्न	८४-८५
मोतियी के पूजन का विधान	८६-८१
विष्णु के भक्तों के लक्षण पर युधिष्ठिर का प्रश्न	८२
भगवान् के भक्तों के लक्षण	८३-११८

६. कपिलादानप्रशंसावर्णनम् : १६६६

कपिलाह्यग्निहोत्रार्थे विप्रार्थे च स्वयम्भुवा ।

सर्वतेजः समुद्धृत्यः निमिता ब्रह्मणापुरा ॥ २३ ॥

गो सहस्रञ्चयोदद्यादेकाञ्चकपिलांनरः ।

समन्तस्यफलम्प्राह ब्रह्मा लोकपितामहः ॥

१०. कपिलागोप्रशंसावर्णनम् : २००७

कपिला गाय का लक्षण और उसका दान किस प्रकार करना चाहिए	१-६६
--	------

यस्येताः कपिलाः सन्ति गृहे पापप्रणाशना ।

तत्रश्रीविजयः कीर्तिः स्थिताः नित्यं युधिष्ठिर ॥

युधिष्ठिर का प्रश्न—दान करने का समय और श्राद्ध का समय और पूजा करने के योग्य ब्राह्मण और कौन व्यक्ति हैं जिनकी पूजा नहीं करनी चाहिए	६७
--	----

दान का समय दान के पात्र व दान की विधि	६६-१११
---------------------------------------	--------

दैवं पूर्वाहिकं कर्म पैत्रिकं चापराहिकम् ।

कालहीनं च यद्दानं तद्दानं राक्षसं बिदुः ॥

११. ब्रह्मघातकलक्षणवर्णनम् : २०१६

युधिष्ठिर का प्रश्न	१
---------------------	---

ब्रह्मघाती के लक्षण	२-६
---------------------	-----

युधिष्ठिर का प्रश्न—सब दानों में श्रेष्ठदान और अभोज्य के लिए भगवान् से प्रश्न	१०
---	----

अन्न की प्रशंसा, अन्न, विद्यादान की महिमा, झूठ बोलने से यज्ञ क्षीण होता है, विस्मय से तप, निन्दास्तुति से आयु, ढिंढोरा पीटने से दान क्षीण होता है	११-३६
---	-------

१२. धर्मशौचविधिवर्णनम् : २०२३

युधिष्ठिर का प्रश्न—“धर्म का वर्णन बहुत प्रकार से हुआ है सो अब धर्म का लक्षण समझाइये ।”

१

भगवान् का उत्तर—धर्म का लक्षण

२-१६

“अहिंसा सत्यमस्तेयमानृशंस्य दमः शमः ।

आजंवं चैव राजेन्द्र निश्चितं धर्मलक्षणम् ॥

युधिष्ठिर का प्रश्न—साधु ब्राह्मण कौन होते हैं जिन्हें दान देने से फल होता है

२०

भगवान् का उत्तर—अक्रोधी, सत्यवादी, धर्मपरायण, अमानी, सहिष्णु, जितेन्द्रिय, सर्वभूत हितैरत इनको देने का महान् फल होता है—आदि-आदि

२१-२७

अक्रोधनाः सत्यपराः धर्मनित्याः वमेरताः ।

तादृशाः साधकोलोके तेभ्योदत्तं महाफलम् ॥

युधिष्ठिर का प्रश्न—भीष्मपितामह ने धर्माधर्म की व्याख्या विस्तार से की उनमें से कृपया सार मुझे बतलाइये । धर्म सार में अन्नदान का महत्त्व—“अन्नदः प्राणदो लोके प्राणदः सर्वदो भवेत् । तस्मादन्नं प्रयत्नेन दातव्यं भूतिमिच्छता ।” इत्यादि

२६-५३

१३. भोजनविधिवर्णनम् : २०२८

भोजन की विधि पर प्रश्न

१

भोजन विधि का वर्णन

२-२०

“नैकवासास्तु भुञ्जीयान्नैवान्तर्धीय वै द्विजः ।

नभिनपात्रे भुञ्जीत पर्णपृष्ठे तथैव च ॥”

अन्नं पूर्वं नमस्कुर्यात्प्रहृष्येनान्तरात्मना ।

नान्यदालोकयेदन्नान्नजुगुप्सेत व पुनः

५-६

गाय को घास देने व तिल देने का माहात्म्य ।

१४. आपद्धर्मवर्णनम् :

युधिष्ठिर का आपद्धर्म के लिए प्रश्न

१

आपद्धर्म का काल व निर्णय

२-६

युधिष्ठिर का प्रश्न—प्रशंसनीय ब्राह्मण कौन हैं

१०

प्रशंसनीय ब्राह्मणों के लक्षण

११-३४

युधिष्ठिर का धर्मसार के लिए प्रश्न	३५
धर्म का सार	३६-६५

१५. धर्ममहत्त्व : २०३६

धर्म का माहात्म्य	१-६८
-------------------	------

१६. चान्द्रायणविधि : २०४८

युधिष्ठिर का चान्द्रायणविधि पर प्रश्न	१-११
चान्द्रायणविधि का वर्णन	२-४८

१७. द्वादशमासेषु धर्मकृत्य : २०५३

कार्तिक से लेकर आश्विन तक प्रति मास का दान व पूजा का वर्णन	१-५८
--	------

१८. एकभुक्तपुण्यफल : २०५६

जो दिन में एक बार भोजन करता है उसका माहात्म्य । उपवास को लेकर युधिष्ठिर का प्रश्न	१
उपवास का माहात्म्य	१२-१४
प्रत्येक मास में भिन्न-भिन्न उपवास करने का माहात्म्य	१६-३५
कृष्णद्वादशी में भगवत्पूजन का माहात्म्य	३६-४६

१९. दानफल : २०६४

वैशम्पायन द्वारा दानकालविधि का प्रतिपादन । विषुवत् संक्रान्ति व ग्रहण काल में दान कैसे करे, इसका माहात्म्य	१-२३
गायत्री जप और पीपल पूजन का माहात्म्य	२४-३२
ब्राह्मण शूद्र कैसे हो जाता है ? युधिष्ठिर का प्रश्न	३३
भगवान का उत्तर — ब्राह्मण शूद्र संज्ञा निन्दनीय कर्म करने से प्राप्त करता है	३४-४३

२०. तीर्थलक्षण : २०६६

तीर्थ का माहात्म्य	१-२४
युधिष्ठिर का प्रश्न—सम्पूर्ण पापों के नाश करनेवाला प्रायश्चित्त कौन-सा है ?	२५
रहस्य प्रायश्चित्त का वर्णन	२६-४६

२१. भक्त्यार्चन विधि : २०७४

युधिष्ठिर का प्रश्न—कौन से ब्राह्मण पवित्र हैं ?	१
ब्राह्मणों के गुण व कर्म का वर्णन	२-३२

२२. शूद्रधर्म : २०७७

शूद्रों के वर्ण व धर्म का वर्णन

१-११

भगवद्भक्तवर्णन

१२-३५

विष्णुपूजन तथा विष्णुलोक जाने का वर्णन

३६-४७

—०—

यमस्मृति:

१. प्रायश्चित्त : २०८३

इसमें चारों वर्णों के प्रायश्चित्त और उनकी शुद्धि का विधान बताया गया है

१-७८

—०—

लघुयम स्मृति:

१. नानाविधप्रायश्चित्त : २०६१

बिभिन्न प्रकार के प्रायश्चित्तों का वर्णन साथ ही यज्ञ, तालाब व कूप आदिनिर्माण का विधान यथा—

इष्टापूर्तन्तु कर्त्तव्यं ब्राह्मणेन प्रयत्नतः ।

इष्टेन लभते स्वर्गं पूर्वं मोक्षं समश्नुते ॥

१-६६

—०—

बृहदयम स्मृति:

१. नानाविधप्रायश्चित्त : २१०१

नानाविध प्रायश्चित्तों का वर्णन

१-१५

२. चान्द्रायणविधि : २१०३

चान्द्रायण विधि का वर्णन

१-६

३. प्रायश्चित्तवर्णन : २१०४

प्रायश्चित्त की विधि—दश वर्ष तक के बालकों से प्रायश्चित्त न कराया जाए। उसने यदि पाप किया हो तो पिता, माता या भाई से प्रायश्चित्त कराया जाए

१-१६

कन्या के रजोदर्शन से माता-पिता को नरक की प्राप्ति	२०-२२
श्राद्ध में वर्जनीय ब्राह्मण और सत्पात्र के लक्षण	२३-७०

४. गोवधप्रायश्चित्त : २११०

गोवध के प्रायश्चित्त का वर्णन	१-१५
धर्मशास्त्र को जाने बिना प्रायश्चित्त के लिए निर्णय देने का पाप	२६
सत्पात्र ब्राह्मण लक्षण वर्णन	३०-६२

५. श्राद्धकालेपत्न्यारजस्वलायां निर्णय : २११६

श्राद्धकाल में श्राद्ध करने वाले की स्त्री रजस्वला हो जाए तो उस का निर्णय तथा जिसकी सन्तान हो उसके विभाग का दिग्दर्शन	१-२६
---	------

—०—

अरुणस्मृति:

१. प्रतिग्रह : २११६

प्रतिग्रह के विषय में अरुण का प्रश्न आदित्य का उत्तर	१-२
---	-----

“जपोहोमस्तथा दानं स्वाध्यायादिकृतं शुभम् ।

दातुर्नप्रयते विप्र अतो न स्वर्गमाप्नुयात् ॥”

ब्राह्मण को अनुचित दान लेने के प्रायश्चित्त करने का वर्णन

प्रतिग्रहेण विप्राणां ब्राह्मणेजः प्रशाम्यति ।

प्रतिग्रह प्रायश्चित्त वर्णन

३-१४८

—०—

पुलस्त्यस्मृति:

१. वर्णाश्रमधर्म : २१३४

पुलस्त्य ऋषि ने कुरुक्षेत्र में जो वर्णाश्रमधर्म बतलाया उसका वर्णन ।

यथा—

“अहिंसा सत्यवादश्च सत्यं शौचं दया क्षमा ।

वर्णिनां लिङ्गिनाञ्चैव सामान्यो धर्म उच्यते ।”

इत्यादि प्रकार से धर्म का वर्णन किया है

१-२८

—०—

बुधस्मृतिः

१. चातुर्वर्ण्यधर्मः : २१३७

इसमें चारों वर्णों का संक्षेप से धर्म वर्णन है ।

— ० —

वशिष्ठस्मृतिः (२)

१. वर्णाधमाणां नित्यमित्तिककर्म : २१३६

मुनियों का वशिष्ठ से प्रश्न

१-३

वर्णाश्रमधर्म, वैष्णवों के आचार और शंख चक्र धारण करने की विधि

४-४२

२. वैष्णवानां नामकरणसंस्कारः : २१४३

वैष्णव सम्प्रदायों के अनुसार नामकरण की विधि का वर्णन

१-३२

३. वैष्णवानां निष्क्रमणान्नप्राशनसंस्कारवर्णनम् : २१४७

वैष्णव धर्म के अनुसार बालक को घर से बाहर लाने एवं अन्न-

प्राशन, चूड़ाकर्म उपनयनादि संस्कारों का वर्णन

१-१६६

४. गृहस्थधर्मः : २१६५

विद्याध्ययन से स्नातक होकर वैष्णवधर्म के अनुसार नैष्ठिक

ब्रह्मचारी का वर्णन और आठ प्रकार के विवाहों का व विधि

का वर्णन तथा गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन एवं पुंसवन आदि का

कथन

१-१३१

५. स्त्रीधर्मः : २१७८

पतिव्रता स्त्री का आचरण व दिनचर्या तथा पातिव्रत का माहात्म्य

१-८३

६. नित्यनैमित्तिकविधिः : २१८६

वैष्णव धर्म के अनुसार नित्यनैमित्तिकविधि का वर्णन और भगवान

के पूजन का विधान, साथ ही उत्सव मनाने का माहात्म्य

और उत्सवों की विधि

१-२८०

वैष्णव धर्म के अनुसार पितृयज्ञ श्राद्ध तथा अशौच व प्रायश्चित्त

का वर्णन

२८१-५४२

७. विष्णुस्थापनविधि

ऋषियों ने वशिष्ठ से विष्णु की मूर्ति के संस्थापन की विधि के विषय में प्रश्न किया

विष्णु की प्रतिष्ठा की विधि व समय का वर्णन

१

२-११०

—०—

बृहद्योगीयाज्ञवल्क्यस्मृतिः

१. मन्त्रयोगनिर्णय : २२४८

सब मुनियों ने याज्ञवल्क्य से गायत्री, ओंकार, प्राणायाम, ध्यान और सन्ध्या के मन्त्रों को पूछ कर आत्मज्ञान की जिज्ञासा की

१-४४

२. ओंकारनिर्णय : २२५१

ओंकार का माहात्म्य और ज्ञान का वर्णन

१-४५

साकार-निराकार दो प्रकार के ब्रह्म का वर्णन और ओंकार की उपासना ब्रह्मज्ञान को विकाश करने वाली बताई गई है

४६-१५८

३. व्याहृतिनिर्णय : २२६७

सप्तव्याहृतियों का निर्णय और भू आदि व्याहृतियों से सात लोकों, सात छन्द और सप्त देवताओं सहित उनका माहात्म्य वर्णन

१-३२

४. गायत्रीनिर्णय : २२७०

गायत्री मन्त्र का निर्णय

१-८२

५. ओंकारगायत्रीन्यास : २२७८

गायत्री न्यास करने की विधि बताई गई है

१-१२

६. सन्ध्योपासननिर्णय : २२७९

सन्ध्या करने का माहात्म्य और सन्ध्या न करने से पाप का निर्णय किया गया है।

यावन्तोऽस्यां पृथिव्यान्तु विकर्मस्थाः द्विजातयः ।

तेषां तु पावनार्थाय सन्ध्या सृष्टा स्वयम्भुवा ॥ ९ ॥

१-३१

७. स्नानविधि : २२८३

स्नान करने के मन्त्र और स्नान करने की विधि, तर्पणविधि,	१-१२८
जपविधि वर्णन	१२९-१३०

८. प्राणायाम : २३०१

प्राणायाम और प्रत्याहार करने की विधि का वर्णन	१-५६
---	------

९. ध्यानविधि : २३०७

भगवान के ध्यान लगाने का नियम और कुण्डलिनी का ज्ञान	१-३१
--	------

ज्ञानं प्रधानं न तु कर्महीनं कर्मप्रधानं न तु बुद्धिहीनम् ।

तस्माद्बुद्धयोरेव भवेत्सिद्धिर्न ह्येकपक्षो विहगः प्रयाति ॥ २९ ॥

गवां सर्पिः शनीरस्थं न करोत्यगपोषणम् ।

निसृतं कर्मचरितं पुनस्तस्यैवभेषजम् ॥ ३० ॥

एवं सति शरीरस्थः सर्पिवत् परमेश्वरः ।

विना चोपासनादेव न करोति हितं नृषुः ॥ ३१ ॥

गायत्री मन्त्र की व्याख्या	३२-६१
अध्यात्मनिर्णय वर्णन	६२-१३४
अन्नमहत्त्ववर्णन	१३५-१५१
अध्यात्मवर्णन	१५२-१६८

१०. सूर्योपस्थान : २३२६

सूर्योपस्थान की विधि	१-२०
----------------------	------

११. योगधर्म : २३२८

आत्मयोग का वर्णन और उसका महत्त्व	१-५६
----------------------------------	------

१२ विद्याऽविद्यानिर्णय : २३३४

विद्या और अविद्या अर्थात् ज्ञानकाण्ड और कर्मकाण्ड का निदर्शन	१-४९
--	------

—०—

ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता

१ चतुर्वेदानां शाखा : २३३६

चार वेदों का वर्णन और उनकी शाखाओं का सविस्तार वर्णन	१-४७
---	------

२ नित्यनैमित्तिककर्म : २३४४

नित्यकर्म और पञ्चयज्ञों का विधान—

पञ्चसूना गृहस्थस्य वर्ततेऽहरहः सदा ।
 कण्डनी पेषणी चुल्ली जलकुम्भी च माज्जनी ॥
 एतांश्च वाहयन्विप्रो बाधते वै मुहुर्मुहुः ।
 एतेषां पावनार्थाय पञ्चयज्ञाः प्रकीर्तिताः ॥
 अध्ययनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तुतर्पणम् ।
 होमोद्वैवोबलिभूतनृयज्ञोऽतिथिपूजकः ॥

तिलक के भेद । यथा—

भ्रूवोर्मण्डलमध्यस्थं तिलकं कुरुते द्विजः ।
 तत्केवलं धनं कृत्वा लिङ्गभेदाः स उच्यते ॥
 वेणुपत्रदलाकारं वंष्णवं तिलकं स्मृतम् ।
 अर्द्धचन्द्रं तथा शैवं शाक्तेयन्तिर्यगुच्यते ॥ ३१ ॥
 चतुः कोणमितिस्पष्टं विकरालमुदाहृतम् ।
 पेशाचं बिन्दुसंयुक्तं तिलकं धर्मनाशनम् ॥ ३२ ॥

नैमित्तिक कर्म करने का प्रकार, प्राणायाम, त्रैकालिक सन्ध्याविधि
 वर्णन, तर्पण, देवपूजाविधान, बलिवैश्वदैव, भोजनविधि,
 श्वकाकोच्छिष्ट भक्षण प्रायश्चित्त

१-२११

३ नैमित्तिकश्राद्धविधि : २३७५

नैमित्तिक श्राद्ध यथा पिता की मृत्यु की तिथि पर जो श्राद्ध किया
 जाय उसे एकोद्दिष्ट श्राद्ध कहते हैं । उनका वर्णन

१-७६

४ श्राद्धवर्णन : २३६६

अमावस्या, संक्रान्ति, व्यतीपात, गजच्छाया, सूर्य और चन्द्रग्रहण में
 स्नान करने का विधान और महत्त्व बताया गया है

१-१६४

५. श्राद्ध वर्णन

आमश्राद्ध अर्थात् सत्तू, गुड़, पिण्याक, दूध इन द्रव्यों से जो श्राद्ध
 किये जाते हैं उनका विधान

१-२६

६. श्राद्ध वर्णन

नान्दीमुख श्राद्ध जो विवाहादि शुभकर्मों पर किया जाता है उसका
 विधान और वर्णन

१-१२५

७. श्राद्ध वर्णन

प्रेतश्राद्ध और सपिण्डीकरण की विधि

१-६०

८. ब्रह्मचारिधर्म : २४११

ब्रह्मचारी के धर्म का वर्णन

१-१४४

स्नातक होने पर विवाह का वर्णन

१४५-२६६

नव-संस्कारों का वर्णन

३००-३६१

९. तिथिनिर्णय : २४४७

प्रतिपदा से पूर्णिमा तक तिथियों पर विचार, तथा कौन तिथि

उदयव्यापिनी और कौन तिथि काल-व्यापिनी ली जाती है

तथा किस तिथि में किस देवता का पूजन किया जाता है

उसका वर्णन

१-५५

१०. विनायकादिशान्तिवर्णन : २४५२

दुष्ट स्वप्न के होने पर विनायक की शान्ति तथा ग्रहशान्ति का

विधान बताया गया है

१-१६०

११. दानविधि : २४६७

दान का महत्त्व और गोदान की विधि

१-२१

गोदान का महत्त्व

२२-२६

महिषी के दान का महत्त्व

१७-३१

वृषभ के दान का महत्त्व

३२-३६

भूमिदान

३७-३८

तिल दान

३९-४०

अन्न दान

४१-४३

सोने का दान

४४

चान्दी के दान का महत्त्व

४५-६६

१२. प्रायश्चित्तवर्णन : २४७४

दी हुई चीज को वापस लेने में न्याय

१-४

अदेय वस्तुओं का वर्णन

५-६

विवाद न होने वाली वस्तुओं का वर्णन

७-१६

दृष्ट कर्मों का वर्णन

२०-३४

विकर्मों का वर्णन	३५
प्रायश्चित्त और शुद्धि का वर्णन	३६-६३
१३. आशौच : २४८१	
सूतक पातक का वर्णन	१-१३
जिन पर सूतक पातक नहीं लगता उनका वर्णन	१४-१६
कितने दिन किसका सूतक लगता है उसका वर्णन	२०-३२

—०—

काश्यपस्मृति:

प्रायश्चित्त : २४८५

आहिताग्नि के लक्षण, गाय, बैल, मृग, महिषी, कौआ, हंस, सारस, बिल्ली, गीदड़, साँप और नेवला की हिंसा करने का प्रायश्चित्त, पाँच प्रकार के महापातक बतलाये गये हैं, अकाल में भूमिकम्प का, घर में उल्लू बोलने का प्रायश्चित्त बताया गया है। मथनी और हल टूटने का प्रायश्चित्त बर्तनों के साफ करने का विधान, पहले जिन्होंने पाप किया हो उनके चिह्नों का वर्णन तथा पापों से नरक गति का वर्णन

१-१६

—०—

व्याघ्रपादस्मृति:

स्मृतिमहत्त्व : २४६१

युगधर्म का वर्णन और द्विजातियों को वेदाध्ययन का उपदेश	१-१५
पिण्डदान और पितृतर्पण का महत्त्व	१६-१८
तीर्थ और गया श्राद्ध	१९
श्राद्ध काल और विधि	२०-४६
श्राद्ध करने व पूजा करने वालों का आचरण	४७-५७
पौर्णमासी का निर्णय	५८
पुत्रहीन स्त्री के श्राद्ध का विधान	५९-६१
पिताहीन को परपितामह के उपस्थित रहने पर श्राद्ध का विधान	६२

श्राद्ध करने की सामग्री और उसका निर्णय	६३-८०
पितरों की पूजा	८१-८२
सब धर्म कार्यों में धर्मपत्नी को दाहिने ओर बिठाने का विधान	८३-८५
पूजा में स्त्री को बिठाना और सिर में त्रिपुण्ड लगाने का विधान	८६-९२
तिल का निर्णय	९३-९७
पूजा, यज्ञ तथा श्राद्ध में मौन रखने का विधान	९८-१००
श्राद्ध का नियम	१०१-११४
पिण्ड दान और पिण्डपूजन का विधान	११५-१३५
जो पितरों का श्राद्ध नहीं करते उनके पितर जूठा अन्न खाकर दुःख में विचरते हैं	१३६-१४२
जो पितरों का तर्पण नहीं करता वह नरक जाता है	१४३-१५२
मूर्ख को दान देने की निन्दा	१५३-१५४
श्राद्ध करने वालों का नियम, श्राद्ध के दिन जो मट्ठा होता है वह गोमांस और शराब के बराबर होता है । श्राद्ध में बहिनों और उनके परिवार को निमन्त्रण का महत्त्व	१५५-१६०
श्राद्ध के नियम और उनके विरुद्ध चलने पर चान्द्रायण व्रत का विधान	१६१-१६६
श्राद्ध का भोजन, अन्न और ब्राह्मण का विस्तार से वर्णन	१६७-२०७
पैर धोने से पिण्ड विसर्जन तक श्राद्ध का विषय माना जाता है	२०८-२१०
श्राद्ध में निषिद्ध पदार्थों का उल्लेख	२११-२१२
वानप्रस्थ यतियों के श्राद्ध के नियम	२१३-२१७
सन्ध्या के नियम	२१८-२२३
श्राद्ध में भोजन बनाने के अधिकारी	२२४-२५३
श्राद्ध के अन्न का निर्णय	२४४-२६६
जिनका एकोदिष्ट श्राद्ध ही होता है उनका वर्णन	२६७-२८५
श्राद्ध में किन-किन अंगों का निषेध और विधान है	२८६-३१७
वर्ष-वर्ष में श्राद्ध करने का महत्त्व	३१८-३२७
श्राद्ध करने के स्थान का वर्णन	३२८-३३७
श्राद्ध करने के नियम, सामान्य व्यवहार, यज्ञ, दान, जप, तप, स्वा- ध्याय, पितृतर्पण की विशेष विधियां	३३७-३६६

कपिलस्मृति

कपिल-शौनक-सम्वाद २५३६

कपिल एवं शौनक में परस्पर वेद विषयक चर्चा। यहीं वेद-
निन्दकों का प्रकरण भी आया है।

१-२०

वैदिककर्मणामभावकथनम्

वैदिक कर्मों का अभाव कथन

२१-४०

वेदमन्त्राणां व्यत्यासेनोच्चारणेदोषकथनम् २५३४

वेदमन्त्रों के व्यत्यास से उच्चारण करने में दोष होना

४१-५०

श्राद्धप्रकरण २५३५

श्राद्ध प्रकरण का वर्णन, नान्दीमुख श्राद्ध की प्रधानता, विभिन्न

श्राद्धों का सुन्दर वर्णन

५१-३००

उपनयनसंस्कार २५५७

उपनयन संस्कार वर्णन ३०१-३३३

ब्राह्मणादिवर्णों का एक पङ्क्ति में भोजननिर्णय वर्णन

३३४-३५०

विप्रमहत्त्व ३५६१

विप्रों के महत्त्व का वर्णन

३५१-३५८

नान्दी श्राद्ध करने वाले की योग्यता व अधिकार का वर्णन

३५९-३७४

दत्तकपुत्रप्रकरण २५६५

दत्तकपुत्र का वर्णन और उसकी योग्यता

३७५-४२६

दानप्रकरण २५६६

दशविधदानों का निरूपण

४२७-४७६

दान के अधिकारी जनों का वर्णन

४७७-४८७

दौहित्रप्राधान्य २५७५

दौहित्र की सर्वत्र प्रधानता का निरूपण

४८८-५००

भूमिदानप्रकरण २५७७

भूमिदान प्रकरण

५०१-५१८

वर्जितस्त्रीणां श्राद्धपाकप्रकरणे दोषवर्णन २५७९

वर्जित स्त्रियों को श्राद्ध का पाक करने में दोष बतलाया है

४१९-५४०

विधवास्त्रीणां कृत्यवर्णन २५८१

विधवा स्त्रियों के कार्यों का वर्णन

५४१-५६२

सधवा एवं विधवा स्त्रियों का विवेचन

५६३-६३२

अतिरण्डा, महारण्डा और पुत्ररण्डा आदि का वर्णन	६३३-६५६
पुत्रमहत्त्ववर्णनम् २५६१	
पुत्र के बिना एक क्षण भी न रहे । पुत्र के महत्त्व का विस्तार से निरूपण	६५६-६७८
ज्येष्ठपुत्रस्य पैत्र्ये योग्यता २५६३	
ज्येष्ठ पुत्र की पिता के सभी उत्तराधिकारियों से अधिक योग्यता	६७६-६८८
औरसपुत्रेण ज्येष्ठस्वनिर्णयः २५६५	
औरस पुत्रों में ज्येष्ठ कौन हो इसका निर्णय	६८६-७००
पैत्र्ये कर्मणि दौहित्रस्यौरसत्वम् २५६७	
पैत्र्ये कर्म में दौहित्र का पुत्र के अभाव में औरस होना	७०१-७४४
धर्मसेवन का लाभ	७४५-७६६
पुत्र का कुलतारक होना	७६७-७८६
निर्दुष्ट पुत्र की योग्यता	७८०-८०६
दण्डनीय और न दण्ड देने योग्य जनों का धर्म से व्यवहार करना	८१०-८३०
दण्डविधान वर्णन	८३१-८७१
विप्रमहत्त्ववर्णनम् २६११	
विप्र का महत्त्व निरूपण	८७२-८८३
नानाविधदानप्रकरणम् २६१३	
विविध दानों का वर्णन	८८४-९८०
दुष्कर्मणां प्रायश्चित्त २६२१	
दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त वर्णन	९८१-९९५

—०—

वाधूलस्मृति

नित्यकर्मविधिवर्णनम् २६२३

महर्षियों ने वाधूल मुनि से ब्राह्मणादि के आचार पूछे इस पर नित्यकर्मविधि का वर्णन उन्होंने किया	१-३
ब्राह्ममुहूर्त में शय्या त्याग कर प्रसन्न मन से हाथ-पैर धोकर भगवत्स्मरण करे	४
ब्राह्ममुहूर्त में सोने वाला सभी कर्मों में अनाधिकारी रहता है	५

प्रातः सन्ध्या तारागण के प्रकाश से लेकर सूर्योदय तक है । अतः

तारागण के रहते प्रातः सन्ध्या करे

सायंकाल में आधे सूर्य के अस्त होने के समय सन्ध्या करे

शौचादि विधि

आचमन प्रकार

६

७

८-२०

२२-३०

स्नानविधि २६२७

निषिद्ध तिथियों में दन्तधावन नहीं करना चाहिए । पतित मनुष्य की छाया पड़ने से स्नान करना चाहिए अस्पृश्य के छू जाने से १३ बार जल में नहाने से शुद्धि हो । रजस्वला स्त्री को यदि ज्वर चढ़ जाए तो वह कैसे शुद्ध हो

३१-४८

भूमि पर गिरा हुआ जल गंगा के समान पवित्र है । चन्द्र और सूर्य ग्रहण के समय कुंआ, वापी, तड़ाग के जल शुद्ध हैं । जलाञ्जलि विधि

४९-५६

पूर्व की ओर मुख करके देवतागण को, उत्तराभिमुख होकर ऋषियों को और दक्षिण की ओर मुंह करके जल में पितरों को तर्पण करे । स्नान के लिए जाते हुए मनुष्य के पीछे पितरों के साथ देवगण प्यास से व्याकुल जल के लिए लालायित हो कर जाते हैं अतः देवर्षिपितृतर्पण किए बिना वस्त्र को न निचोड़े यदि वस्त्र निचोड़ा जाता है तो वे निराश होकर चले जाते हैं । सम्पूर्ण कर्मों की सिद्धि के लिए नदी, तालाब पहाड़ी झरनों में प्रतिदिन स्नान करे

५७-६३

दूसरे के बनाए हुए सरोवर में स्नान करने से उस बनाने वाले के दुष्कृत (पाप) स्नानार्थी को लगते हैं अतः उसमें न नहावे सूर्योदय के पूर्व प्रातःकाल का स्नान प्राजापत्य यज्ञ के समान है और आलस्यादि को नष्ट कर मनुष्य को उन्नत विचार और कार्यशील बना देता है ।

६४

६५-६८

स्नान मूलाः क्रियाः सर्वाः सन्ध्योपासनमेव च ।

स्नानाचारविहीनस्य सर्वाः स्युः निष्फलाः क्रियाः ॥ ६७ ॥

सम्पूर्ण क्रियायें स्नान के अन्तर्गत ही हैं । रविवार को उषा काल में स्नान करने से हजार माघ स्नान का फल और जन्म दिन

के नक्षत्र में वैधृत पुण्यकाल, व्यतीपात और संक्रान्ति पर्वों में, अमावस्या को नदी में स्नान कोटि कुलों का उद्धार कर देता है । प्रातः स्नान करने वाले को नरक के दुःख कभी नहीं देखने पड़ते । स्नान किए बिना भोजन करने वाला मल का भोजन करता है

६६-७५

शिव सङ्कल्प सूक्त का पाठ, मार्जन, अघमर्षण, देवर्षि पितृ तर्पण ये स्नान के पांच अङ्ग हैं

७६-७७

जल के अवगाहन, जल में अपने शरीर का अभिषेक, जल को प्रणाम और जल में तीर्थों गङ्गादि नदियों का आवाहन फिर मज्जन, अघमर्षण, देवर्षि पितृतर्पण का विधान बतलाया गया है

७८-८६

प्रातः स्नान का महत्त्व । अपने शरीर को पोछने पर सुखे कपड़े पहनकर उत्तरीय धारण करे । वन्दन और तर्पण के समय इसे कटि प्रदेश में ही बांधे रखे । फिर तिलक करे । पर्वत की चोटी से, नदी के किनारे से, विशेष रूप से विष्णु क्षेत्र में मिली सिन्धु के तट पर तुलसी के मूल की मिट्टी से तिलक प्रशस्त बताया गया है

९०-१०८

श्यामतिलक शान्तिकर, लाल वश में करनेवाला, पीला लक्ष्मी देने वाला और सफेद मोक्षदाता बतलाया है

१०९-११०

भगवान् पर चढ़ाए गए हरिद्रा के चूर्ण के तिलक का माहात्म्य

१११

प्रातःकाल गायत्री का ध्यान, मध्याह्न में सावित्री और सायं काल सरस्वती का ध्यान करना चाहिए । प्रतिग्रह, अन्नदोष, पातक और उपपातकों से गायत्री मन्त्र के जपने वाले की गायत्री रक्षा करती है इसलिए इसका नाम गायत्री है ।

प्रतिग्रहावन्नदोषात्पातकादुपपातकात् ।

गायत्री प्रोच्यते यस्माद् गायन्तं त्रायते यतः ॥ ११५ ॥

सविता को प्रकाशित करने से इसका नाम सावित्री और संसार की प्रसवित्री वाणी रूप से होने से इसका नाम सरस्वती अन्वर्थ है (जैसा नाम वैसा गुण)

११२-११६

- आपोहिष्टेत्यादि मार्जन मन्त्रों में नौ ओङ्कार के साथ जो मार्जन किया जाता है उससे वाणी, मन और शरीर के नवों दोषों का क्षय हो जाता है ११७-१२०
- सायंकाल में अर्घ्य जल में न देवे जहां सन्ध्या की जाए वहीं जप भी हो। वेदोदित नित्यकर्मों का किसी कारण अतिक्रमण हो जाए तो एक दिन बिना अन्न खाए रहना चाहिए और १०८ गायत्री मन्त्र के जप दोनों सन्ध्या में विशेष रूप से करे १२१-१२६
- सूतक और मृतक के आशौच में भी सन्ध्या कर्म न छोड़े प्राणायाम को छोड़ कर सारे मन्त्रों को मन से उच्चारण करे १२०-१२२
- देवाचर्न, जप, होम, स्वाध्याय, स्नान, दान तथा ध्यान में तीन-तीन प्राणायाम करे १२३-१२४
- जप का विधान प्रातःकाल हाथ ऊँचे रखकर, सायंकाल नीचे हाथ कर एवं मध्याह्न में हाथ और कन्धे के बीच में रखकर जप करे नीचे हाथ कर जप करना पैशाच, हाथ बीच में रखकर करने से राक्षस, हाथ बांधकर करने से गान्धर्व और ऊपर हाथ करने से दैवत जप होता है १२५-१२६
- प्रदक्षिणा, प्रणाम, पूजा, हवन, जप और गुरु तथा देवता के दर्शन में गले में वस्त्र न लगावे १४०
- दर्भा के बिना सन्ध्या, जप के बिना दान और बिना संध्या किया हुआ जप सब निष्फल होता है। जप में तुलसी काष्ठ की माला पद्माक्ष तथा रुद्राक्ष की माला प्रशस्त है १४१-१४३
- गृहस्थ एवं ब्रह्मचारी १०८ बार बार मन्त्र का जाप करे। वानप्रस्थ तथा यति १००८ बार करें। आहुति के लिए सामग्री का विधान १४४-४५

गृहस्थधर्म २६३७

गृहस्थ को सम्पूर्ण कार्य पत्नी सहित इष्ट है। जिस मनुष्य की स्त्री दूर हो, पतित हो गई हो, रजस्वला हो, अनिष्ट व प्रतिकूल हो उसकी अनुपस्थिति में कोई ऋषि कुशमयी धर्मपत्नी, कोई ऋषि काश की बनी पत्नी को प्रतिनिधि रूप में रखकर नित्य-कर्म क्रिया करने की सद्गृहस्थ को आज्ञा देते हैं

१४७-४८

- होम के लिए गो घृत श्रेष्ठ वह न मिले तो माहिष घृत उसके न मिलने पर बकरी का घृत और उन सब के न मिलने पर साक्षात् तैल का व्यवहार करे १४६
- समय पर आहुति देने का माहात्म्य १५०-१५२
- वेदाक्षरों को स्वार्थ में लाने वाले मनुष्य की निन्दा । छै प्रकार के वेदों की बेचनेवालों का वर्णन १५३-१५८
- रविवार, शुक्रवार, मन्वादि चारों युगों में और मध्याह्न के बाद तुलसी न लावे । संक्रान्ति, दोनों पक्षों के अन्त में द्वादशी में और रात्रि तथा दिन की सन्ध्या में तुलसी-चयन निषेध है १६०
- तीर्थ में मन, वाणी और कर्म से कैसा भी पाप न करे और दान न ले क्योंकि वह सब दुर्जर है अतः अक्षम्य है । ऋत (व्यवहार) अमृत सत्य कर्तव्य पालन ऋत या प्रमृत से और सत्य-अनृत से जीविका कमावे १६१-६३
- किसी वस्तु को बिना पूछे लेने से पाप १६४
- मनु जो ने वनस्पति, कन्द, मूल फल, अग्निहोत्र के लिए काठ, तृण और गौओं के लिए घास ये अस्तेय बताए हैं । किन-किन लोगों से किसी भी रूप में कोई वस्तु न लेवें इसका वर्णन १६५-१६८
- दूसरे के लिए तिल का हवन करने वाले दूसरे के लिए मन्त्र जप करने वाले और अपने माता पिता की सेवा न करने वाले को देखते ही आंख बन्द कर ले १६९
- जो लोग निन्द्य कर्म करते हैं उनके सङ्ग से सत्पुरुष भी हीन हो जाते हैं और उनकी शुद्धि आवश्यक है १७०-१७४
- जो आदेश, तीन या चार वेद के महा विद्वान् दें वही धर्म है और कोई हजारों व्यक्ति चाहे, कहें वह धर्म सम्मत नहीं । वेद-पाठी सदा पञ्चमहायज्ञ करने वाले और अपनी इन्द्रियों को वश में करने वाले मनुष्य तीन लोकों को तार देते हैं १७५-१७९
- पतित लोगों से सम्पर्क करने से मनुष्य एक वर्ष में पतित हो जाता है १८०
- कलियुग में सभी ब्रह्म का प्रतिपादन करेंगे परन्तु कोई भी वेद विहित कर्मों का अनुष्ठान नहीं करेगा १८१

मैथुन में त्याज्य दिनों की गणना—षष्ठी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, चतुर्दशी, दोनों पर्व अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति कोई भी श्राद्ध दिन, जन्म नक्षत्र का दिन, श्रवण व्रत का समय और जो भी विशेष महत्त्वपूर्ण दिन हैं उनमें मैथुन (स्त्री गमन) निषिद्ध है

१८२-१८३

शुभ समय में अर्थार्थी मनुष्य जिन कामों को अपने स्वार्थ के लिए करता है उन्हें ही यदि धर्म के लिए करे तो संसार में कोई दुःखी नहीं रह सकता

अर्थार्थी यानि कर्माणि करोति कृपणो जनः ।

तान्येव यदि धर्मार्थं कुर्वन् को दुःखभागभवेत् ॥ १८६ ॥

भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं पतितों के छू जाने से स्नान का विधान

किसी वस्तु को बेचने पर स्नान का विधान आवश्यक है १८४-१८८

श्रुति स्मृति के आदेश प्रभु की आज्ञा है इनको न मानने वाले को भगवद्भक्त बनने का अधिकार नहीं

१८९

सच्चे अन्धे का लक्षण—जो श्रुति स्मृति का अध्ययन मनन और अनुशीलन कर उनके मार्ग का अनुष्ठान नहीं करता वह अन्धा है

१९०-१९१

पापी को धर्मशास्त्र अच्छे नहीं लगते

१९२

सच्चा ब्राह्मण वही है जो ऋण करने से ऐसे डरता है जैसे सर्प को देखकर । सम्मान से ऐसे दूर रहता है जैसे लोग मरने से और स्त्रियों के सम्पर्क से जैसे मृतक से घृणा होती है वैसे दूर रहता है । ब्राह्मण वह है जो शान्त हो, दान्त हो, क्रोध को जीतने वाला हो, आत्मा पर पूरा अधिकार करने वाला हो, इन्द्रियों का निग्रह कर चुका हो । ब्राह्मण का यह शरीर उपभोग के लिए नहीं बल्कि क्लेश के साथ तपस्या करते हुए ऊर्ध्व लोक में अनन्त सुख की प्राप्ति के लिए है

१९३-१९४

दर्श में सूखे कपड़े पहनकर तिलोदक जल के बाहर दे, गीले वस्त्रों से पितर निराश होकर चले जाते हैं ।

१९५-२०१

श्राद्ध के बाद ब्राह्मण भोजन का विधान

२०२

विवाह में, श्राद्धादि में नान्दी श्राद्ध

२०३

पितृ श्राद्ध में वर्जित लोगों को देवता कार्य में बुलाने की छूट	२०५-२०६
पितृ श्राद्ध में वस्त्रों के देने का माहात्म्य	२०७
अलग-अलग कमाने वाले पुत्रों द्वारा पृथक्-पृथक् पितृ श्राद्ध	२०८-२१०
सन्यासी बहुत खाने वाला, वैद्य, नामधारी साधु, गर्भवाला (जिस की स्त्री गर्भवती हो) वेदों के आचरण से हीन व्यक्ति को दान और श्राद्ध में न बुलावे	२११
गर्भ करने वाले द्विज के लिए वर्ज्य कर्म	२११-२१७
स्नान, सन्ध्या, जप, होम, स्वाध्याय, पितृ तर्पण, देवताराधन और वैश्वदेव को न करने वाला पतित होता है अतः इन्हें नियम से करना प्रत्येक द्विजाति का कर्तव्य है	२१८-२२४

—०—

विश्वामित्रस्मृति

१. नित्यनैमित्तिककर्मणां वर्णनम् : २६४५

ब्राह्ममुहूर्त, उषःकाल, अरुणोदय और प्रातः काल के मान का वर्णन	३
नित्य और नैमित्तिक तथा काम्य कर्म समय पर करने से सफल देते हैं	४
ब्राह्ममुहूर्त में शौच से निवृत्त होकर अरुणोदय के पहले आत्मा के लिए स्नान करे प्रातः जप करे और सूर्य को देखकर उपस्थान करे	६
काल बीतने पर कोई कर्म करने से फल नहीं मिलता यदि किसी कारण से काल का लोप हो गया तो तीन हजार जप करने से उसका प्रायश्चित्त विधान है।	८-१४
जो व्यक्ति समय पर नित्यकर्मादि को करता है वह सम्पूर्ण लोगों पर जय पाकर अन्त में विष्णुपुर में जाता है	१६
प्रातः स्नान सन्ध्या और जप आवश्यक कर्म है।	१७-२१
उत्तम, मध्यम और अधम सन्ध्या के भेद। शुचि या अशुचि हो, नित्यकर्म को कभी न छोड़े	२२-२५
तीनों सन्ध्या काल में या तो पूर्व की ओर या उत्तर की ओर मुंह कर नित्यकर्म करे। दक्षिण पश्चिम की ओर मुंह करके नहीं	२६

सन्ध्या स्नान किए बिना विद्या पढ़ना हानिकारक है, सन्ध्या काल आने पर उसे छोड़ने वाले को पाप लगता है	३०
सोपाधि एवं अनुपाधि भेद से आचार के दो भेद—सोपाधि गुण-वान् और अनुपाधि मुख्य है	३१-३६
गायत्री मन्त्र की विशेषता	३७-५२
शौच का प्रकार	५३-५६
दन्तधावन और दतुवन के लिए वनस्पतियों का परिगणन	६३
आचमन कर स्नान करने का प्रकार	६८
सन्ध्यादि, तर्पण का विधान	७३
जलस्नान का विधान	७८
तर्पण की विशेषता	८७

वस्त्रधारण में वस्त्रों के महत्त्व का वर्णन, प्राणायाम का प्रकार पूरक, कुम्भक और रेचक से सम्पूर्ण प्रकार के मलदोषों का नाश होकर शरीर की शुद्धि होती है और अध्यात्मबल बढ़ता है। तिलक धारण की विधि, पुण्ड्र धारण इसके बिना सब कर्म निष्फल

१०४

२. आचमनविधि : २६५७

मुख्य तीन प्रकार के आचमनों का वर्णन, पौराण, स्मार्त और आगम, इनके साथ श्रौत एवं मानस आचमनों का वर्णन—मन्त्र जपने एवं नित्यकर्मों के आदि और अन्त में आचमन करे। भगवान् के २१ नामों के साथ न्यास विधान

१-२०

विधिवदाचमनस्यैवफल : २६५६

गोकर्ण की आकृति बनाकर अंगूठे और सबसे छोटी अङ्गुलि को छोड़कर अञ्जलि में जलग्रहण कर आचमन का विधान है इसी का फल है

२१-२३

थूकने, सोने, ओढ़ने, अश्रुपात आदि से विघ्न होने पर आचमन करे या दक्षिण कान को तीन बार स्पर्श करे। भोजन के आदि में और अन्त में नित्य आचमन करे। मानसिक आचमन में भी केशवाय नमः माधवाय नमः और गोविन्दाय नमः मन में बोलकर चित्त शुद्धि करे

२४-३२

मार्जनम् : २६६०

“आपोहिष्ठा मयो भुवः” से मार्जन करे फिर न्यास करे, ऐसा करने से द्विजमात्र शुद्ध होकर ध्यान, जप, पूजा में सब सिद्धियां प्राप्त करते हैं।

२३-३६

पञ्चाचमनविधि : २६६१

ब्रह्मयज्ञ में तीन बार आचमन का विधान है। श्रौत, स्मार्त, आचमन को किन-किन स्थलों पर करना इसकी विधि

४०-५७

३. प्राणायाम विधि : २६६३

प्राण और अपान का समयुक्त होना ही प्राणायाम कहलाता है, इसे सन्ध्याकाल और प्रत्येक कर्म के आरम्भ में मन को एकाग्र करने के लिए अवश्य करे। नौ बार उत्तम प्राणायाम, छे बार मध्यम और तीन बार अधम कहा गया है

१-३

गायत्री मन्त्र और व्याहृतियों के साथ प्राणायाम करना चाहिए

४-५

पहले कुम्भक फिर पूरक और फिर रेचक, इस क्रम से प्राणायाम करना इष्ट है। सन्ध्या होम काल और ब्रह्मयज्ञ में कुम्भक से आरम्भ कर प्राणायाम करे। प्राणायाम में करने योगाध्यान का वर्णन

६-१०

दश प्रणव एवं गायत्री मन्त्र के साथ इडा और पिङ्गला को छोड़ सुषुम्ना नाड़ी से कुम्भक करे साथ में मन्त्र का स्मरण बराबर होता रहे

११

रेचक और पूरक बिना प्रयास के होते हैं। कुम्भक में प्रयास करना होता है यह अभ्यास से शक्य है। अनभ्यास से शास्त्र विष का काम करते हैं, अभ्यास से वही अमृत बन जाते हैं। प्राणायाम में चारों अङ्गुली और अंगूठा काम में लेना चाहिए।

लं, हं, यं, रं, वं इन बीज से पृथिव्यात्मा को गन्ध, आकाशात्मा को पुष्प, वाय्वात्मा को धूप, अग्न्यात्मा को दीप और अमृतात्मा को नैवेद्य प्रदान करे। इस पञ्चभूतात्मक मानसी पूजा से ही प्राणायाम की सिद्धि मिलती है

१२-२६

प्राणायाम का अभ्यास सिद्धासन, कुम्भक के साथ और मन्द दृष्टि के रूप में आंखें बन्द करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

३०-३६

विलोम गायत्री मन्त्र का वर्णन

३७-४६

प्राणायाम न करने वाला अवकीर्णी होता है

५०-५२

विशेष जिन-जिन मन्त्रों का विधान आता है उनके साथ भी पूरक,

कुम्भक और रेचक क्रम से प्राणायाम करने का विकल्प है।

चार्वाक, शैव, गणेश, सौर, वैष्णव और शाक्त जो भी मन्त्र

हैं उन-उन से प्राणायाम की विधि फल देने वाली है। भिन्न-

भिन्न विधियों में प्राणायाम की १०, १५, २०, २४, १३,

१४ और १६ बार आवृत्ति करने की विधि हैं। वैश्वदेव में

१० बार आदि में १० बार अन्त में प्राणायाम करने का

विधान है। जहाँ सङ्कल्प है वहाँ २ बार और सभी काम्य

आदि कर्मों में १०-१० बार आवृत्ति का विधान है। विलो-

माक्षरों से गायत्री का प्राणायाम अनन्त कोटि गुणित फल

देता है

५३-७६

४. मार्जनम् . २६७१

शिर से पैर तक “आपोहिष्ठादि” मन्त्र से मार्जन का फल। अर्धं

मन्त्र और पूर्ण मन्त्र मार्जन दो प्रकार का है

१-५

ऋग्यजुः साम वेद की शाखावालों का मार्जन क्रम। आपोहिष्ठादि

के मन्त्र में प्रणव का उच्चारण करते हुए शिर पर मार्जन करे

और “यस्यक्षयाय जिन्वथ से नीचे की ओर जल प्रक्षेप करे

६-१८

शिर से भूमि तथा पादान्त मार्जन से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता

है। मार्जन की फलश्रुति

१६-२७

५. साध्यदानगायत्रीमाहात्म्यवर्णनम् : २६७४

सन्ध्यावन्दन के समय प्रातः और सायं तीन-तीन अर्घ्य सूर्य को दे,

मध्याह्न काल की सन्ध्या में केवल एक ही। तीन अर्घ्य में

एक दैत्यों के शस्त्रास्त्र नाश के लिए, दूसरा वाहन नाश के

लिए और तीसरा असुरों के नाश के लिए और अन्तिम

प्रायश्चित्तार्घ्य देकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा से सब पापों से छुट-

कारा हो जाता है। गायत्री के पञ्चाङ्ग का वर्णन

१-२४

प्रायश्चित्तार्घ्य की विधि का वर्णन—नाना मन्त्रों के विनियोग एवं

ध्यान का वर्णन

२५-४४

६. द्विविधजपलक्षणम् : २६८१

नैमित्तिक एवं काम्य दो प्रकार के जपों के लक्षण यह सन्ध्याङ्ग के रूप में नदीतीर, सरित्कोष्ठ और पर्वत की चोटी पर एकान्त वास से ही अधिक फल देने वाला है

१-२

मूलमन्त्र से भूशुद्धि, फिर भूतशुद्धि, फिर रक्षा के लिए दिग्बन्धन करना और गायत्री के न्यास का वर्णन

३-३०

कराङ्गन्यासवर्णनम् : २६८५

दश बार मन्त्र का जप कर हृदय को हाथ से स्पर्श कर प्राणसूक्त जपे फिर प्राणायाम करे

३१-३२

मुद्राविधिवर्णनम् : २६८७

आवाहन आदि के भेद से १० प्रकार की मुद्राओं का वर्णन, गायत्री जप क आरम्भ की २४ मुद्रा

३३-७१

उपस्थानविधि : २६९०

सन्ध्याकाल में सूर्योपस्थान का महत्त्व

१-२०

८. देवयज्ञादिविधान, वैश्वदेवकालनिर्णय, पञ्चसूनापनुत्पत्त्यर्थ

वैश्वदेव, वैश्वदेवमाहात्म्य : २६९२

वैश्वदेव में कोद्रव (कोदो), मसूर, उड़द, लवण और कड़वे द्रव्यों को काम में न लेवे

१-२

नाना प्रकार की बलि करने से नाना प्रकार के काम्य कर्मों की सिद्धियां होती हैं। द्विजों के लिए पांच ही क्रम से बलि का विधान है। पहले उपवीत, दूसरे निवीत, तीसरे पितृमेघ के लिए बलि दी जाती है

३-१२

वैश्वदेव में ताजा अन्न ही काम में लिया जाए

१३-१६

वैश्वदेव मन्त्र के साथ हो या बिना मन्त्र के इसे किसी भी रूप में करना चाहिए; क्योंकि इसको करने वाला अन्नदोष से लिपायमान नहीं होता

१७-२४

पञ्चसूनाजनित पापों को जैसे, चूल्हा, चक्की, जल भरने का स्थान, झाड़ू आदि के दोषों को दूर करने के लिए इसकी बड़ी आवश्यकता है

२५-३६

वैश्वदेव को करने से सफल दोषों का निवारण होता है । नित्य होम का वजन सूतक एवं मृतक में बताया गया है । वैश्वदेव के काल का वर्णन । वैश्वदेव माहात्म्य वर्णन

४०-८३

—०—

लोहितस्मृति

विवाहाग्नौ स्मार्तकर्मविधानवर्णनम् २७०१

विवाहाग्नि में स्मार्त कर्मों का वर्णन । जिस स्त्री के साथ सर्वप्रथम गृहस्थ सम्बन्ध जुड़ता है वह धर्मपत्नी है । उसके विवाह के समय की अग्नि का ही सभी कार्यों में उपयोग इष्ट है

१-११

अन्य भार्याओं की अग्नि गौण है उनमें वेदोक्त एवं तन्त्रोक्त प्रयोग नहीं होना चाहिये : यदि उन्हें काम में भी लें तो अमन्त्रक ही प्रयोग होना चाहिए

१२-२६

सभी स्मार्त कर्म, स्थालीपाक, श्राद्ध, या जो भी नैमित्तिक हो वह सारा प्रथम धर्मपत्नी की अग्नि में ही हो ।

२०-२६

अनेकाग्निसंसर्गः २७०४

सम्पूर्ण अग्नियों का एकत्र संसर्ग का विधिपूर्वक विधान

३०

यदि मोह से दूसरी पत्नियों की अग्नि में यागादि का विधान किया जाय तो वह निष्फल होता है

३१-३६

इसके लिये फिर से मुख्य अग्नि की स्थापना कर फिर विधान करना लिखा है

३७

यदि धर्मपत्नी कहीं बाहर चली जाय तो वह अग्नि लौकिक हो जातो है । अतः प्रातः सायंकाल के नित्य हवन में धर्मपत्नी का उपस्थित रहना आवश्यक है

३८-४२

सीमान्तर जाने पर उस अग्नि का फिर सन्धान (स्थापना) करना चाहिये ।

ज्येष्ठादिपत्नीनांतरसुतानांजंष्ठयकानिष्ठयविचारः २७०५

सभी कार्यों में धर्मपत्नी की ज्येष्ठता मानी गई है भले ही दूसरी पत्नियां अवस्था में कितनी ही बड़ी क्यों न हों

४३-४५

इसी प्रकार धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र ही कर्मादि करने में ज्येष्ठता प्राप्त करेंगे क्योंकि दूसरी, तीसरी आदि से उत्पन्न पुत्र तो कामज है

४६-५२

अपुत्राया दत्तकविधानवर्णन २७०७

दत्तपुत्र की जातपुत्र के समान स्नेहभाजनता एवं सम्पत्ति अधिकार जिनके पुत्र न हों उन्हें अपने पुत्र के लिये प्रस्ताव करने वाले की प्रशंसा

५३-५४

५५-५६

जिसका पुत्र दत्तक लिया जाय उसे समाज के प्रमुख व्यक्तियों के सामने इष्ट, भाई-बन्धुओं को बुलाकर बिना पुत्र के माता को विधि-विधान से देना चाहिये । जो पुत्र समाज के गोत्र कुल में से दत्तकरूप में लिया जाय वास्तव में वह अपने पुत्र तुल्य है और अपुत्रक माता-पिता के लिये सर्वथा दैवपैत्र्य कार्य के लिये ग्राह्य है । उस पुत्र का औरस पुत्रों के समान ही सारा अधिकार होता है

६०-७१

यदि दत्तक पुत्र लेने के बाद उन माता-पिता के सन्तान हो जाय तो वह चतुर्थ भाग का स्वामी होने का अधिकार रखता है

७२-७४

जब आदि धर्मपत्नी के न रहने व पुत्र न होने पर दूसरी पत्नी से जो पुत्र होगा वही ज्येष्ठत्व का अधिकारी होगा और अवशिष्ट स्त्रियों की सन्तान कामज रहेगी

७५-८५

आत्मज सन्तान की ही औरसत्ता कही गई है

८६-८७

यदि कोई धर्मपत्नी के सन्तान न हुई उसने पति की इच्छा से दत्तक पुत्र लिया और संयोगवश फिर सन्तान हो गई तो दत्तक पुत्र को ज्येष्ठ पुत्र के रूप में बराबर भाग मिलेगा । यदि दत्तकपुत्र और औरस पुत्र उपस्थित हो तो औरस पुत्र को ही पिता-माता के और्ध्वदेहिक कर्म करने का अधिकार है

८८-९८

धर्मपत्न्याः गृह्याग्निकृत्येप्राबल्यम् २७१०

ज्येष्ठ पत्नी का ही सम्पूर्ण गृह्य अग्नि एवं पाक यज्ञादि में अधिकार एवं नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य सभी कर्मों में उसी की प्रधानता है

९९-१०४

मुख्य गृह्याग्नि के कार्य धर्मपत्नी के अधीन हैं । अतः वह कार्य विशेष उपस्थित हुए बिना कोई भी रूप में सीमोल्लंघन न करे अन्यथा गृह्य अग्नि लौकिक अग्नि हो जायगी और अग्नि की स्थापना फिर से करनी होगी । १०५-१०६

किसी छोटी नदी को भी यदि मोह से पार कर लिया तो फिर नई प्रतिष्ठा अग्नि सन्धान के लिये करनी होगी । ११०-११४

यदि ज्येष्ठ पत्नी कारण-विशेष से उपस्थित न हो सके बाहर गई हो तो द्वितीयादि अग्नि से श्राद्धादि विधि सम्पादित हो सकती है, परन्तु उसमें कोई भी विधि अमन्त्रक नहीं हो सकती सभी अमन्त्रक करनी चाहिए ११५-१२६

पूर्व पत्नी के न रहने से गृह्याग्नि की स्थापना के लिए जब दूसरा विवाह किया जाय तो पहले के घड़े से नूतन विवाहित स्त्री के घट में अग्नि की स्थापना की जाय १३०-१३५

अग्नि उसी समय भ्रष्ट हो जाती है, जब पत्नी चरित्र से दूषित हो १३६-१४०
यदि द्वितीयाग्नि से वेद प्रतिपादित कर्म किए जाय तो ये फलदायक नहीं होते १४१-१५२

अतः पूर्व पत्नी के गृह्याग्नि को दूसरे विवाह के वर्तन में स्थापित कर धर्मपत्नीवत् सारे काम किए जाय १५३-१५५

यदि किसी दुश्चरित्र माता के दूषित होने से पूर्व पति से सन्तान हुई हो तो वह सारे वैदिक कार्यों के करने का अधिकार रखती है परन्तु दुश्चरित्र होने के बादवाली सन्तान किसी भी रूप में ग्राह्य नहीं १५६-१५७

कलियुग में पांच कर्मों का निषेध—अश्वालम्भ, गवालम्भ, एक के रहते हुए दूसरी भार्या का पाणिग्रहण, देवर से पुत्रोत्पत्ति एवं विधवा का गर्भ धारण १५८-१६६

द्वादशविधपुत्राः : २७१७

क्षेत्रज, गूढज, व्यभिचारज, बन्धु, अबन्धु और कानीनज आदि १२ प्रकार के पुत्रों के भेद १७०-१८६
दत्तक पुत्र लेने और देने में माता-पिता ही एक मात्र अधिकार रखते हैं दूसरे नहीं १८७-२०८

पुत्र संग्रहण की आवश्यकता

२२०

दौहित्र होने पर पुत्रग्रतिग्रह नहीं करना, क्योंकि दौहित्र होने से

अजात पुत्र भी पुत्र ही है

२२१-२२४

किसी सम्मिलित परिवार में अविभक्त धन के भागीदार की

मृत्यु हुई यदि उसके पुत्री है और पुत्र नहीं है तो दौहित्र ही

पुत्र के समान सभी कार्यों को करने व कराने का अधिकारी है २२५-२२६

जो कुछ धन अपुत्रक का है उसका सारा दायित्व उस मृतक की

लड़की के पुत्र का है

२२६-२३०

परधनापहारकाणां दण्डविधानवर्णनम् : २७२३

जो व्यक्ति किसी भी प्रकार से दूसरे के द्रव्य को अपहरण करने

की अनधिकार चेष्टा करे उसे कड़ा दण्ड दे और उसे अपने

देश से बाहर निकलने का आदेश दे

२३१-२३५

जो व्यक्ति धर्म सङ्गत राज्य की प्रतिष्ठा में पूर्ण सहयोग दें उन्हें

रक्षापूर्वक रखना चाहिए

२३६-२४१

पुत्रत्वस्याधिकारितावर्णनम् : २७२५ .

दौहित्र को पुत्रग्रहण की योग्यता

२४२

अपने इष्ट परिवार माता-पिता, श्रेष्ठ पुरुष आदि की आज्ञा से

अपुत्रा विधवा स्त्री दत्तक ले

२४३-२४४

जो निकट सम्बन्धी दो या दो से अधिक सन्तान वाला हो उसका

कोई सा भी पुत्र अपने लिए दत्तक लिया जा सकता है

२४६

यदि कोई-सा भी लूला, लङ्गड़ा, गूंगा, बहरा, अन्धा, काना, नपुं-

सक या कुष्ठ का दागी हो तो उसे लेना न लेना बराबर है

२४७

यदि ऐसे विकलाङ्ग दत्तक लिये गए तो मन्त्र क्रिया आदि का लोप

हो जाता है

२४८-२५२

यदि समाज के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं परिवार के भाई-बन्धु

जिसके लिये आज्ञा दें तो वह दत्तक सफल होता है

२५३-२५७

अपुत्रक का दत्तक लेना दौहित्र न उत्पन्न हो तब तक प्रामाणिक है

बाद में यदि दौहित्र पैदा हो जाय तो वह अप्रामाणिक है ।

मनु ने दौहित्रों में बड़े छोटे में किसी एक को लेने का विधान

बताया है

२५८-२६३

- हां, ३ या ५, ६ पुत्रों में सबसे ज्येष्ठ और सबसे कनिष्ठ को छोड़
 किसी एक को लिया जा सकता है २४६-२६६
- यदि मोह से ज्येष्ठ को दत्तक ले लिया गया तो मौजूजी विवाह
 विधि के बाद वह अपने सगे पिता का ही पुत्र होने का अधि-
 कारी है दूसरे का नहीं २६७
- ऐसा दत्तक पुत्र लेने वाले के किसी काम का नहीं २७०
- कई स्त्रियों के एक पति से पुत्र हो तो ज्येष्ठ और कनिष्ठ को छोड़
 अन्य लिए जा सकते हैं २७३

एकपुत्रस्य स्वीकरणनिषेधः २७२७

- एक पुत्र यदि बिना स्त्री वाले के हो और विधवा स्त्री उसे दत्तक
 ले उसका निषेध २७४-२८५

विधवास्वीकृतपुत्रदण्डम् २७२८

- जो कोई सुता और दौहित्र को तिरस्कार कर अन्य को दत्तक ले
 उस पर राजा विशेष विधान से दण्ड लागू करे २८०-२८६

दौहित्रप्रशंसा २७२९

- दौहित्र की प्रशंसा २८७-३२३
- एक तन्मातामह गोत्री, दूसरा दौहित्र और तीसरा निर्दोष विवाह में कन्या
 प्रदान के समय मातामह एवं पिता की प्रतिज्ञा के अनुसार होने वाले
 सम्बन्ध से उत्पन्न सन्तान क्रमशः तन्मातामह गोत्री और दौहित्र हैं तीसरा
 निर्दोष तातगोत्री है।

- दौहित्र की श्राद्धादि कर्म में श्रोत्रिय ब्राह्मण से ज्येष्ठता ३३६-३४८

प्रत्याविकाकरणे प्रत्यवायः २७३४

- प्रतिवर्ष के श्राद्ध न करने से प्रत्यवाय होता है, अतः जल, तण्डुल,
 उड़द, मूंग, दो शाक, पत्र, दक्षिणा, पात्र और ब्राह्मण ये दश
 श्राद्ध में उपयोग करने की वस्तुएं हैं, एक का लोप भी वाञ्छ-
 नीय नहीं। यदि आपत्काल हो तो उसके लिए अनुकल्प का
 विधान है ३४९-३६३

श्राद्धद्रव्याभावेऽनुकल्पः २७३५

- घृत के दुर्लभ होने से तैल उसका प्रतिनिधि आज्य उसके अभाव
 में दूध और उसके न मिलने पर दही यदि ये भी न मिले तो

पिण्ड के जल से मिला कर होम कर्मादिक करे। या फिर प्राप्त मधु से सब काम सिद्ध करे, किसी भी रूप में फल, पत्र और सुद्रव्य आदि से श्राद्ध कार्य किया जाय। इनके अभाव में आपोशानादिक क्रियायें जल से और अन्न से सम्पादन कर पिण्ड प्रदान करे और जल में विसर्जित करे अविशिष्ट को काम में लें फिर दूसरे दिन तर्पण करे। आपत्कल्प के इस विधान को शान्ति के समय काम में न ले। शुद्ध अन्न का प्रयोग जो अपनी अच्छी कमाई से लाया गया ही विहित है; सुद्रव्य के द्वारा ही श्राद्ध करने का विधान उसका पाक भी श्राद्धकर्त्ता की स्त्री द्वारा शुद्धता से किया हुआ होना चाहिए। भावशुद्ध, विधिशुद्ध, और द्रव्यशुद्ध पाक ही श्राद्ध में ग्राह्य है ३६४-४०६

श्राद्धे पाककर्त्तारः २७३६

धर्मपत्नी, कुलपत्नी जो वंश में विवाहित हो, पुत्रवती हो, मातायें सम्बन्धियों की स्त्रियाँ, बूआ, बहिन, भार्या, सासु, मामी, भाई की स्त्रियाँ गुरुपत्नियाँ और इनके न मिलने पर स्वयं श्राद्ध में पाक करने वाले को प्रशस्त कहा है ४०७-४२०

रण्डापाक और बन्ध्यापाक गृहित बतलाया है ४२१

हां कुल की कोई ऐसी स्त्रियाँ करने वाली न हो तो उपर्युक्त सभी माताओं से पाकक्रिया सम्पन्न हो सकती है ४२२-४२६

मृतकार्ये कर्तुरनुकल्पनिषेधः २७४१

स्वयं के लिए ही मृतकार्य के और्ध्वदेहिक कार्य का विधान ४२७-४३०

कर्त्ताधृतस्याधिकारः २७४२

अतद्भूत (अनाधिकार) कर्म अकृत कर्म के समान है ४३१-४४४

विधवानां निन्दा २७४३

विधवाओं को स्वतन्त्र रहने से निन्दित कहा है अतः पतिगृह या पितृगृह में ही रहना आवश्यक है ४४५-४७२

रण्डाया अस्वातन्त्र्यम् २७४६

रण्डा की सम्पत्ति का अधिकार, वह उसके बेचने आदि की अधिकारिणी नहीं ४७३-४८२

कई रण्डाओं के भेद ४८३-४९३

विवाहात्परतः स्त्रीणामस्वातन्त्र्यवर्णनम् २७४६

विवाह के बाद स्त्रियों की अस्वतन्त्रता का वर्णन	४६६-५०५
शास्त्रदृष्टि से धर्मपालन का महत्त्व	५०६-५२६
पुत्र के अभाव में दत्तक का विधान वर्णन	५२७-५७६
समीचीन रण्डा का वर्णन	५७७-६०८

उत्तमदण्डव्यवस्थावर्णनम् २७५६

उत्तम दण्ड व्यवस्था का वर्णन	६०९-६४०
------------------------------	---------

सुवासिनीनां शिरःस्नाननिषेधः हरिद्रास्नानविधिः २७६१

सुवासिनी स्त्रियों को ग्रहण, रजोदर्शन, मङ्गल कार्य, चण्डालस्पर्श एवं यज्ञ के आदि व अन्त इत्यादि कार्यों में शीर्षस्नान तथा हरिद्रा के चूर्ण को जल में प्रक्षेप कर स्नानविधि कही है	६४१-६४७
--	---------

पतिव्रताधर्माः २७६२

पति की सेवा बड़े से बड़ा धर्म	६५३-६७०
-------------------------------	---------

दुराचाररतां रण्डां दृष्ट्वा प्रायश्चित्तवर्णनम् २७६५

दुष्टचरित्र युक्त रण्डाओं के देखने से प्रायश्चित्त का विधान	६७१-६८६
---	---------

नानादण्ड्यकर्मसु दण्डविधानवर्णनम् २७६७

नानादण्ड्य कर्मों में दण्डविधान का वर्णन	६८७-७०६
--	---------

नयप्राप्तराज्ये सर्वेषां सुखित्ववर्णनम् २७६८

नयप्राप्त राज्य में सभी के सुखी रहने का वर्णन	७१०-७२१
---	---------

—०—

नारायणस्मृति

१. नारायणदुर्वासोः सम्वादः : २७७०

नारायण दुर्वास का सम्वाद	१-६
महापातक और उपपातकों का वर्णन	७-१५
प्रतिग्रहजनित पाप के प्रायश्चित्त का वर्णन	१६-४१

२. बुद्धिकृताभ्यासकृतपापानां प्रायश्चित्तवर्णनम् : २७७४

बुद्धिकृत और अभ्यासकृत पापों के प्रायश्चित्त का वर्णन	१-७
---	-----

३. नानाविधदुष्कृतिनिस्तारोपायवर्णनम् : २७७५

नाना प्रकार के पापों के निस्तार का उपाय	१-१६
---	------

४. प्रायश्चित्तवर्णनम् : २७७७

प्रायश्चित्तों का वर्णन

१-११

५. दुष्प्रतिग्रहादिप्रायश्चित्तवर्णनम् : २७७६

पाप समाचार की गति का वर्णन

१-२६

पापादि को दूर करने के लिए सहस्र कलशस्थापन का विधान

३०-५५

६. सहस्रकलशाभिषेकः : २७८४

सहस्र कलशों से अभिषेक का वर्णन

१-७

७. कलौ नौयात्राद्यष्टकर्मणां निषेधः २७८५

कलियुग में विधवा का पुनः उद्वाह, नाव से यात्रा, मधुपर्क में पशु

का वध, शूद्रान्नभोजिता, सब वर्णों में भिक्षा मांगना, ब्राह्मणों

के घरों में शूद्र की पाचनक्रिया, भृग्वग्निपतन वर्जित है

१-५

वेन के पास ऋषियों का अनुरोधपूर्ण आवेदन

६-३३

८. अष्टनिषिद्धकर्मणां प्रायश्चित्तवर्णनम् : २७८६

धनाढ्य व्यक्तियों को आठ निषिद्ध कर्मों के करने से सहस्र कलश

स्नान, पञ्चवारुण होम, गायत्री पुरुश्चरण, महादान और

सहस्र ब्राह्मण भोजन इत्यादि प्रायश्चित्त बतलाये हैं

१-१४

९. धनहीनाय प्रायश्चित्तवर्णनम् : २७९१

धनहीन के लिए प्रायश्चित्त का विधान—वह शिखा सहित मुण्डिक

हो पुण्यतीर्थ में, या तालाब में, आकण्ठ जल में मग्न हो अघ-

मर्षण जाप करे

१-१३

—०—

शाण्डिल्यस्मृति

१. आचारवर्णनम् : २७९३

आचार के विषय में मुनियों का शाण्डिल्य से प्रश्नोत्तर

१-१२

द्विविधादेहशुद्धिवर्णनम् : २७९५

दो प्रकार की देह शुद्धि का वर्णन । दूसरे की निन्दा पारुष्य, विवाद

झूठ, निजपूजा का वर्णन, अतिबन्ध प्रलय, असह्य एवं मर्म

वचन, आक्षेप वचन, असत् शास्त्र एवं दुष्टों के साथ संभाषण

इत्यादि दुर्गुणों को त्याग कर स्वाध्याय, जप में रत, मोक्ष एवं

धर्म के कार्य में निरन्तर लगना प्रिय बोलना, सत्य एवं पर-
हितकारी वचनों का उच्चारण करना ऐसी बहुत-सी शुद्धियों
का वर्णन । शिर, कण्ठ आंख और नासिका के मल को दूर
करना यही सर्वाङ्गीण शुद्धि बतलाई है

१८-३६

ज्ञानकर्मभ्यां हरिरेवोपास्य इति वर्णनम् : २७६७

धर्म की हानि नहीं करनी चाहिये, संग्रह ही करे । धर्म एवं अधर्म का सुख
व दुःख के कारण हैं । यही सनातन धर्म शास्त्र है अन्य सब भ्रामक हैं
तथा तामस व राजस हैं, यही सात्त्विक है । वेद, पुराण एवं उपनिषदों में
“इदं हेयमिदं हेयमुपादेयमिदं परम्” यही बतलाया है । साक्षात्परब्रह्म
देवकी पुत्र श्री कृष्ण की आराधना सर्वोत्तम है । देव, मनुष्य और पशु
आदि का विस्तार उन्हीं से है ।

साक्षाद्ब्रह्म परं धाम सर्वकारणमध्ययम् ।

देवकीपुत्र एवान्ये सर्वे तत्कार्यकारिणः ॥

देवा मनुष्याः पशवो मृगपक्षिसरीसृपाः ।

सर्वमेतज्जगद्धातुर्वासुदेवस्य विस्तृतिः ॥

ज्ञान एवं कर्म से भगवान की ही आराधना सर्वोत्तम है । वही ज्ञान
है, वही सत्कर्म है एवं वही सच्छास्त्र है । जो भगवान् के
चरणारविन्दों की सेवा नहीं करते हैं वे शोचनीय हैं

४०-५६

सात्त्विकराजसतामसगुणानां वर्णनम् : २७६६

प्रकृति त्रिगुणात्मिका है एवं जगत् की कारणभूता है । सम्पूर्ण संसार
देव, असुर और मनुष्य इसी के विकार हैं । इस प्रकार सात्त्विक
राजस और तामस गुणों का संक्षेप से वर्णन

६०-७०

देश शुद्धि का वर्णन — जहां म्लेच्छ पाषण्डी न हो धार्मिक तथा
भगवद्भक्तिपरायण मनुष्य रहते हों और हिंसक जन्तुओं से
शून्य हो वह स्थान शुद्ध है

७१-८२

भगवत्पूजनविधिवर्णनम् : २८०१

सात प्रकार की शुद्धि कर भगवत्पूजापरायण होना चाहिए । प्रथम
शरीर को तपस्यादि से शुद्ध करे अशक्त हो तो दान करे और
दोनों में ही असमर्थ हो तो नामसंकीर्तन करना चाहिए ।

८३-९५

उपवास, दान, भगवद्भक्तों के सेवन, संकीर्तन, जप, तप और
श्रद्धा द्वारा शुद्धि होती है

९६-१०१

पराविद्याप्राप्त्यर्थमधिकारिगुरुशिष्यवर्णनम् : २८०३

विद्या की प्राप्ति के लिए आचार्य का वरण और अधिकारी शिष्य का वर्णन

१०२-११२

मन, वाणी और कर्म से भी शिष्य अपने गुरु का अहित न विचारे कभी उनके सामने प्रमाद न करे किसी भी प्रकार की उद्विग्नता उत्पन्न करने वाले भाव, विचार, इच्छा व कर्मों को न करे । शिष्य मूढ़ पापरत, क्रूर, वेदशास्त्र के विरोधी लोगों की सङ्गति न करे इससे भक्ति में विघ्न होता है

११३-१२२

२. प्रातःकृत्यवर्णनम् : २८०५

ऋषियों का प्रातः कृत्य के विषय में प्रश्न और महर्षि शाण्डिल्य द्वारा स्नान सन्ध्या आदि को लेकर विस्तार से प्रातःकाल के कर्तव्यों का वर्णन । शय्या को छोड़ने के बाद सर्व प्रथम भगवान् गोविन्द के दिव्य नामों का संकीर्तन करते हुए वस्त्र और दण्डादि कमण्डलु लेकर अपने मस्तक पर कपड़ा बांधकर मल-मूत्र त्याग करने के लिए गांव के बाहर जावे । पेशाब, मैथुन स्नान, भोजन, दन्तधावन, यज्ञ और सामूहिक हवन में मौन धारण करने की विधि है । यज्ञोपवीत को दाहिने कान पर रख कर मल-मूत्र का त्याग करना चाहिए

१-६

मल-मूत्र करने में जो स्थान वर्जित हैं उनका परिगणन

१०-१२

मल-मूत्र त्याग के समय, देवता, शत्रु, शिष्य, अग्नि, गुरु, वृद्ध पुरुष और स्त्री को न देखे । अधिक समय तक मल-मूत्र न करे केवल आकाश, दिशा, तारा, गृह और अभेद्य वस्तुओं को देखे

१३-१४

मिट्टी से गुदा और लिङ्ग को जल से धोवे । फिर हाथ होकर दन्तधावन करे । स्नान के लिए तीर्थ, समुद्रादि, तालाब, कूप और झरने का जल विशेष प्रयोजनीय है

१५-२०

जल को अङ्गूठों से अधिक न पीटे न जल में कुल्ला किया जाय और देह का मल भी जल में न छोड़ा जाय फिर बाहर आकर सन्ध्या कर्म के लिए स्थान को धोवे और कपड़े बदले

२१-२८

स्नान प्रकरण के साथ नित्य कृत्यों का वर्णन

२८-६१

३. उपादानविधिवर्णनम् : २८१३

द्वितीयकाल में करने योग्य भगवत्पूजन आदि का वर्णन । भक्ति का लाभ जो श्रद्धालु एवं अपवर्ग के मुख को जानने वाले हैं उन्हें ही मिलता है

१-४६

बाह्य और आभ्यन्तर शुद्धियों का वर्णन । भोजन को अग्निदेव के समर्पण करने का वर्णन

५०-६०

पाक में निषिद्ध वृक्षों का इन्धन जलाने के लिए परिगणन

६१-१०८

निषिद्ध और ग्रहण योग्य वस्तुओं का वर्णन

१०९-१२०

ग्राह्य और निषिद्ध पेय का वर्णन

१२१-१३५

भोजन बनाने में कुशल सती स्त्री एवं निषिद्ध स्त्रियों के लक्षण

१३६-१५०

स्त्री के साथ सद्ब्यवहार का वर्णन

१५१-१५८

इस प्रकार भगवत्प्रीत्यर्थ उपादानों का उपयोग कर गृहस्थ सुखी होता है

१५८-१६३

४. इज्याचारवर्णनम् : २८२६

एक देव की पूजा ही इष्ट है, भगवद्भक्ति विषयक नियमों का विस्तार से वर्णन । भागवतों की सदा पूजा करनी चाहिए । विष्णुभक्त गृहस्थों के कर्मों का वर्णन भगवत्पूजा प्रकार, शास्त्रों के श्रवण पठन का महत्त्व वर्णन, योगविधि का वर्णन, उपवास की प्रशंसा

१-२४२

५. रात्रावन्त्ययामे योगकृत्यवर्णनम् : २८५१

भगवत्पूजा करने का विधान । योगधर्म वर्णन । भगवद्भक्त के शीलाचार का निरूपण सभी कर्मों को भगवदर्पण बुद्धि से करने वाले मनुष्य का जन्म सफल होता है । शास्त्र की प्रशंसा

१-८१

कण्वस्मृति

धर्मसार धर्मकर्तव्य नित्यनैमित्तिककर्म : २८६०

युगभेद से ब्रह्मवेत्ता आदि ऋषियों ने कण्व ऋषि से सनातन धर्मों के विषय में पूछा	१-५
धर्मकर्तव्यवर्णन—जिस व्यक्ति की बुद्धि ऐसी है कि क्रिया, कर्त्ता, कारयिता, कारण और उसका फल सब कुछ हरि है वही स्थिर बुद्धि का है, उसका जीवन सफल है	६-१०
परमेश्वरप्रीत्यर्थ किया हुआ कर्म ही सफल है । सत्सङ्कल्प एवं उसका फल	११-६१
नित्यनैमित्तिक कर्मों का फल निर्णय	४-५०
नित्यकृत्य का वर्णन	५१-७४
प्रातःकाल में स्मरण करने योग्य कीर्त्य महानुभावों का वर्णन	७५-८०
प्रातः शौचस्तानादि क्रियाओं का वर्णन	८१-९४
गण्डूष के समय शब्द का निषेध और उसका प्रायश्चित्त का वर्णन	९५-९७
भक्षण एवं खाने के समय भी शब्द करने का निषेध	९८-१०४
मूत्र पुरीषोत्सर्ग में गण्डूष के बाद आचमन का विधान	१०५-११६
गृहस्थों का मृत्तिका शौच का विधान	११७-१२६
शुभकर्मों में सर्वत्र आचमन का विधान	१२७-१४०
नित्यकर्मों में उलट-फेर करने से फल नहीं होता है	१४१-१५०
स्नान के समय आवश्यक कृत्य जैसे सन्ध्या, अर्घ्य, गायत्री मन्त्र का जप देवर्षिपितृतर्पण, स्नानाङ्गतर्पण अवश्य करने चाहिए	१५१-१५८
कण्ठस्नान, कटिस्नान, पादस्नान, कापिल स्नान, प्रोक्षणस्नान स्नात-स्नान एवं शुद्ध वस्त्र धारण करने का विधान, जैसा शरीर माने वैसा करे	१५९-१६६
वायव्य स्नान का अन्य स्नानों से श्रेष्ठत्व वर्णन	१६१-१६७
सन्ध्याओं का विधान	१६८-१७०
साथ ही गायत्री जप का माहात्म्य	१७१-१८८
सन्ध्या ही सबका मूल है	१८९-२०६

गायत्री मन्त्र का वैशिष्ट्य वर्णन	२०७-२२३
वेद पठन का अधिकार गायत्री से ही शक्य है	२२३-२२८
सम्यक्प्रकार गायत्री जप का फल वर्णन	२२६-२४१
सन्ध्या गायत्री और वेदाध्ययन का फल कब नहीं मिलता	२४२-२५६
कलि में गायत्री मन्त्र का प्राधान्य	२६०-२६६
मूक ब्राह्मण का वेदादि व वैदिक कर्मों के करने में योग्यता का वर्णन	२७०-२८०
वैदिक कृत्य की सब में प्रधानता	२८१-३००
ब्रह्मापण बुद्धि से ही सब कर्मों का अनुष्ठान इष्ट है	३०१-३२५
एक कार्य के अनुष्ठान में कार्यान्तर (दूसरा काम) वर्जित है	३२६-३२७
उपासना का महत्त्व	३२६-३३४
गार्हपत्य अग्नि की स्थापना और उसके उपयोग का वर्णन	३४०-३४६
नित्य होम एवं अग्नि के उपस्थान का विधान	३५०-३६०
पञ्चपाक न करने की अवस्था में विकल्प का विधान	३६१-३७१
पञ्चमहायज्ञों का निरूपण	३७२-३८३
ब्रह्मवेदाध्ययन में अधिकारी होने का वर्णन	३८४-३९४
ब्रह्मज्ञान की एक साधना का उपासनाक्रम प्रयोग	३९५-४१४
अग्निहोत्र, दर्शादि एवं आग्रयण, सौत्रामणि और पितृयज्ञों का निरूपण	४१५-४२६
वेदों के अनभ्यास से मानव-चरित्र का सांस्कृतिक विकास सदा के लिए रुक जाने से राष्ट्र की अवनति होती है	४२७-४३३
चित्तशुद्धि के लिए वेदोक्त मार्ग ही श्रेयस्कर है	४३४-४३७
चार पितृ कर्मों का वर्णन, उन्हें यथाशक्ति करने का आदेश	४३८-४४३
विविध ऋणों से छुटकारा पाने का प्रकार	४४४-४६८
वैदिक कर्मों की तुलना में अन्य कार्यों का गौणत्व वर्णन एवं दिव्य भाषा की योग्यता	४६९-४७७
नित्यनैमित्तिक कर्मों में बिष्णु का आराधन वर्णन	४७८-४८१
दोर्ब्राह्मण्य से मनुष्य सदा दूर रहे	४८३-४८८

अग्निष्टोम और अतिरात्रों का अनुष्ठान श्रेयस्कर है, सप्तसोम संस्था के पाकयज्ञों का विधान	४८६-४९४
इन अनुष्ठानों को न करने से प्रत्यवायिक दोषों का निरूपण	४९५-४९७
ब्रह्मचारी के नित्यकृत्यों का वर्णन	४९८-५०२
जातकर्म, चौल, प्राजापत्य, उपाकर्म आदि का विधान	५०३-५१३
भिन्न-भिन्न अनुवाकों का वर्णन	५१४-५२६
नाना काण्डों का वर्णन	५२७-५३७
ब्रह्मचारी वेदव्रतों का सम्पादन कर विधिपूर्वक स्नातकधर्म में दीक्षित हो	५३८-५४६
गृहस्थ में प्रवेश लिए लक्षणवती स्त्री से विवाह और उसके साथ वैदिक विधि से गृहप्रवेश व अग्निहोत्र का विधान	५४७-५४५
गृहस्थ के लिये नित्य कर्तव्य विधि का वर्णन	५४६-५५३
फिर इष्ट कर्तव्य एवं अनिष्ट कर्तव्यों का परिगणन	५५४-५६२
प्रातःकाल से सायंकाल तक के कर्तव्यों का निर्देश	५६३-५७३
गृहस्थ भगवान् लक्ष्मीनारायण का ध्यान सदैव करे। गृहस्थ को आने वाले सभी सम्मान्य गुरुजन अतिथि एवं विशिष्ट जनों की पूजा का विधान	५७४-५८०
उपयुक्त पाकों का विधान और उनके करने वाले स्त्री पुरुषों का वर्णन	५८१-६०१
पंक्ति वज्र्यं भोजन में दोष वर्णन	६०२-६०५
गृहस्थ के लिए पठनीय एवं करणीय विधान	६०६-६१३
कन्दमूल फल जो भक्ष्य हैं उनका विधान	६१४-६१६
यज्ञों का ब्रह्मज्ञान के समान फल वर्णन	६२०-६३६
शेषहोम के विधान का वर्णन	६३७-६५६
ब्राह्मणादि का पूजन	६५७-६७७
पुत्र विवाह से पुत्री विवाह की विशेषता। सुपात्र में कन्यादान पुत्र से सौ गुणा अधिक बताया है	६७८-७००
गोत्रपरिवर्तन के सम्बन्ध में नाना मत	७०१-७२२

वंश के उद्धार के लिए दत्तक पुत्र का विधान	७२३-७४३
दत्तक में दौहित्र की योग्यता	७४४-७५५
श्राद्धकृत्य में निर्दिष्ट का अन्य कृत्य नियोजन में निषेध	७५६-७८६
एक काल में बहुत से श्राद्ध आने पर कृत्यों का सम्पादन प्रकार	७८६-७८८
ब्रह्मवेदी ब्राह्मण का माहात्म्य	७८९-७९२

—०—

दाल्भ्यस्मृति

षोडशश्राद्धवर्णनम् : २९३३

दाल्भ्य से ऋषियों का धर्माधर्म विवेक, मृतशुद्धि, मासशुद्धि, श्राद्ध- कालादि के सम्बन्ध में प्रश्न, इष्टापूर्त को लेकर दाल्भ्य द्वारा विशेष प्रशंसा, पितरों के तर्पण का विधान	१-१६
१६ श्राद्धों का वर्णन	२०-४१
श्राद्ध में निषिद्ध कर्मों का परिगणन	४२-५४
श्राद्ध में भोजन करने वाले के लिए आठ वस्तुओं का त्याग	५५-५६
श्राद्धकरण में पुत्र का अधिकार	६०-६७

शस्त्रहतकानां श्राद्धवर्णनम् : २९४१

नाना सम्बन्धियों के भिन्न-भिन्न दिनों में श्राद्ध का विधान । शस्त्र हतक के श्राद्ध दिन का वर्णन	६८-७०
मृतक का श्राद्ध दिन अविदित हो तो एकादशी को श्राद्ध किया जाय	७१-८०
आम श्राद्ध के करने का विधान	८१
पहले माता का श्राद्ध फिर पितरों का फिर मातामहों का	८२-८५
ब्रह्मघातक का लक्षण, इनके स्पर्श करने से स्नान और भोजन करने से कृच्छ्रसान्तपन का विधान । जो चाण्डाली में अकाम	

से गमन करे उसके लिए सान्तपन एवं दो प्राजापत्य का विधान । सकाम चाण्डाली गमन करने वाले को चान्द्रायण और दो तप्तकृच्छ का प्रायश्चित्त करने का विधान	८६-८६
गोहत्या के लिए प्रायश्चित्त का विधान	८७-१०२
रोध, बन्धन, अतिवाह और अतिदोह का प्रायश्चित्त विधान	१०३-१०८
वृषभ की हत्या का प्रायश्चित्त	१०९-११०
गोदोहन का नियम - दो महीने बछड़े को पिलावे व दो मास दो स्तनों का दोहन करे तथा दो मास एक वक्त शेष समय में अपनी इच्छा हो वैसे करे ।	

द्वौमासौ पाययेद्वत्सं द्वौ मासौ द्वौस्तनौ दुहेत् ।

द्वौमासौ चैकवेलायां शेषं कालं यथेच्छया ॥१११॥

किन-किन स्थानों में प्रायश्चित्त नहीं लगता इसका वर्णन	११२-११३
किन-किन को प्रायश्चित्त न करने का पाप लगता है	११४
अशौच का निर्णय वर्णन	११५-१२१
किसी हीन से सम्पर्क करने में दोष कहा है	१२२-१२३
सूतक और मृतक के आशौच का विधान	१२४-१२६

आशौचनिर्णयवर्णनम् : २६४३

बाल, शिशु एवं कुमार की परिभाषा	१३०
विवाह, चील और उपनयन में यदि माता रजस्वला हो जाय तो शुद्धि के बाद मङ्गल कार्य करे	१३१-१३२
कोई कार्य प्रारम्भ हो और सूतक का आशौच हो जावे तो उस कार्य के सम्पादन का विधान	१३४
श्राद्धकर्म उपस्थित होने पर निमन्त्रित ब्राह्मण आवें तो सूतक का आशौच नहीं लगता व उस कार्य में सम्पादन का विधान	१३५

देशान्तरपरिभाषावर्णनम् : २६४५

ब्राह्मणों के भोजन करते हुए यदि सूतक हो जाय तो दूसरे के घर से जल लाकर आचमन करा देने से शुद्धि हो जाती है	१३७
देशान्तर में यदि कोई सपिण्ड मर जाय तो सद्यः स्नान से शुद्धि कही गई है	१३८

देशान्तर की परिभाषा ६० योजन दूर या २४ योजन अथवा ३० योजन दूर को देशान्तर बताया है या बोली का अन्तर या पर्वत का व्यवधान तथा महानदी बीच में पड़ जाती हो तो देशान्तर कहा जाता है

१३९-१४०

शुद्धाशुद्धिवर्णनम् : २९४७

आशौच का विशेष रूप से वर्णन—सूतक एवं मृतक आशौच का प्रारम्भ कब से माना जाय इसका निर्णय । रजस्वला के मरने पर तीन रात के बाद शवधर्म का कार्य सम्पादन किया जाय ।

शुद्धाशुद्धि क वर्णन

१४१-१६३

स्पृष्टास्पृष्टि कहां नहीं होती इसका वर्णन

१६३

दिन में कैथ की छाया में, रात्रि में दही एवं शमी के वृक्षों में सप्तमी में आंबले के पेड़ में अलक्ष्मी सदा रहती है अतः उनका सेवन न करे

१६४

शूर्प (सूप) की हवा, नख से जलबिन्दु का ग्रहण केश एवं वस्त्र गिरे हुए घड़े का जल और कूड़े के साथ बुहारी इनसे पूर्वकृत पुण्य का नाश होता है

१६५

जहां कहीं भी शुद्धि की आवश्यकता हो वहां-वहां तिलों से होम एवं गायत्री मन्त्र के जप से शुद्धि कही गई है

१६६

—०—

आङ्गिरसस्मृति

पूर्वाङ्गिरसम्

आङ्गिरसम्प्रति ऋषीणाम्प्रश्नः : २९४९

धर्म का स्वरूप वर्णन

१-४

वैदिक कर्मों को पुराणोक्त मन्त्रों से न करे

५-६

मन्त्र के अभाव में व्याहृतियों को काम में लिया जाय । व्याहृतियों का महत्व वर्णन

७-१४

जात कर्मादि संस्कारों का अतिक्रम होने पर प्रायश्चित्त

१५-२१

श्राद्धापाकानन्तरमाशौचे निर्णयः : २६५१

श्राद्धपाक के बाद यदि आशौच हो जाय तो विधान । उस क्रिया

के करने में ऋत्विक्गण को वह बाधक नहीं हो सकता

२२-२४

पाकारम्भ के बाद यदि आसपास में कोई मृत्यु हो तो श्राद्ध दूषित नहीं होता

२५

पाकारम्भ से पूर्व भी यदि कोई मृत्यु हो तो वह न करे

२६-२८

दर्श पूर्णमास इष्टि पशुबन्ध के अनन्तर श्राद्ध

२९-३३

महादीक्षा में श्राद्ध

३४-३६

खर्वदीक्षा का श्राद्ध

३६-३७

दीक्षावृद्धि में श्राद्ध

३०-४०

दीक्षा के बीच में मृत्यु होने से नहीं होता

४१-४३

वैदिक कर्म का प्राबल्य

४४

सूतिकाशौच अथवा मृतकाशौच में वैदिक कर्म न करे, अस्पृश्यता

आवश्यक है

४५-४८

सतत आशौच होने पर श्राद्ध करने के लिए उस ग्राम को छोड़

दूसरे ग्राम में जाकर श्राद्ध करे

४९-५५

शिखानिर्णयवर्णनम् : २६५५

शत्रु के द्वारा छिन्न शिखा हो जाने पर गौ के पुच्छ के समान बाल

रखकर प्राजापत्य व्रत कर संस्कार से शुद्धि कही गई है

५६-५७

मध्यच्छेद में भी वही बात है

५८

रोगादिसे नष्ट होने पर भी पूर्ववत् विधान है

५९-६०

७० वर्ष की अवस्था में शिखा न रहने पर आस-पास के बालों को

शिखा के समान मान ले

६१-६३

पांच बार शत्रु से शिखाछेद होने पर ब्राह्मण्य नष्ट हो जाता है

६४-६६

सूतकादि से श्राद्ध में विघ्न होने से स्त्री संभोग होने पर गर्भ रहे

तो ब्रह्महत्या व्रत का विधान

६६-६९

त्रिप्रायक श्राद्ध का वर्णन	७१-७६
लाजहोम से पूर्व यदि वधू रजस्वला हो तो "हविष्मती" इस मन्त्र से नौ कुम्भों के विधान से स्नान कर वस्त्र बदलने से शुद्धि	७७-८१
लाजहोम के बाद होने पर स्नान कराकर अवशिष्ट निर्मन्त्रक विधि करे और शुद्ध होने पर समन्त्रक विधि यथावत् करे	८२-८४
औपासन अभी आरम्भ न हो और दूसरे दिन रजस्वला हो तो उसी प्रकार अमन्त्रक विधि एवं शुद्ध होने पर मन्त्रोच्चारण के साथ क्रिया करे	८५-८३
आशौच में नित्यनैमित्तिक कर्मों का वर्जन	८४-८५
इनसे प्रेतकृत्य का नाश होता है अतः वर्जित हैं	८५-८७
अत्यन्याय, अतिद्रोह और अतिक्रूरता कलि में भी वर्जित है । अति अक्रम और अतिशास्त्र भी वर्जित है	८८-१०३
जीवत्पितृक पिण्ड पितृ यज्ञ श्राद्ध का वर्णन	१०४-१०७
पिता यदि सन्यास ले ले तो पातित्यादि दूषित होने पर उनके पितादि के श्राद्ध का विधान	१०८-११७
इसी प्रकार चाचा आदि की स्त्रियों का	११८-१२०
गौणमाता के श्राद्ध का विधान	१२१-१२५
श्राद्धाधिकार और श्राद्धकर्ता गौणपिता के लिए भाई का पुत्र सपत्नीक कृतकृत्य भी पुत्र संज्ञा पाता है	१२६-१२८
गोत्र नाम का अनुबन्ध व्यत्यास होने पर फिर कर्म करे	१३०-१३२
अनाथप्रेतसंस्कारेश्वमेधफलवर्णनम् : २६६३	
कर्ता के दूर होने पर प्रेष्यत्व करे	१३३-१३४
अन्य से करने पर, वाङ्मात्रदान करने पर श्राद्धमात्र होता है	१३५-१३८
भ्रष्ट एवं पतितों का घट स्फोटन का अधिकार	१३९-१४०
अनाथप्रेत के संस्कार करने से अश्वमेध यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है व प्रेत के संस्कार न करने में दोष	१४२-१४३
विप्र की आज्ञा से यतिकृत्य	१४४-१४७
कर्ता के निकट होने पर अकर्तृकृत को फिर करे	१४८

असगोत्रों के संस्कार में आशौच	१४६
माता-पिता के मृताह का परित्याग होने पर प्रायश्चित्त	१५०-१५१
नदी स्नान से निष्कृति या संहिता पाठ	१५२-१५६
वेदमहिमा	१५७-१५८
ब्राह्मण का वेदाधिकार	१६०-१६३
स्नान का सब विधियों में प्राधान्य	१६४
सम्पूर्ण कार्यों में स्नान ही मूल कारण बताया है	१६५-१६७
अस्पृश्य स्पर्शनादि कर्मज्ज्ञान	१६८-१७१
वमन में स्नान	१७२
वमन में स्नान न कर सके तो वस्त्र बदल ले	१७३-१७४
शाकमूलादि के वमन में स्नान	१७५-१७६
रात्रि में वमन में स्नान	१७७
अपने गोत्र के छोड़ने पर अन्य गोत्र के स्वीकार करने का दोष	१७८-१७९
अर्धोदय, महोदय एवं योग का विधान	१८०-१८३
स्त्री के पत्यन्य के साथ चितारोहण होने पर पुत्र का कृत्य	१८५-१८१

स्त्रीणां पुनर्विवाहे प्रायश्चित्तवर्णनम् : २६६६

जातिभेद से निष्कृति	१८२
---------------------	-----

स्त्री के पुनर्विवाह में दोष जैसे—

पुनर्विवाहिता मूढः पितृभ्रातृमुखः खलः ।

यदि सा तेऽखिलाः सर्वे स्युर्वै निरयगाभिनः ॥१८३॥

पुनर्विवाहिता सा तु महारौरवभागिनी ।

तत्पतिः पितृभिः सार्धं कालसूत्रगगो भवेत् ।

दाता चाङ्गारशयननामकं प्रविपद्यते ॥१८४॥

यदि मूख एवं दुष्ट पिता व भाई आदि के द्वारा फिर स्त्री विवाहित की जाय तो वे सब नरकगामी होते हैं और वह स्त्री महारौरव नरक में जाती है, व उसका विवाहित पति अपने पितरों के साथ कालसूत्र नामक नरक में गिरता है एवं देने वाला अङ्गारशयन नाम वाले नरक में जाता है । पुनर्विवाह के दोष निवारणार्थ प्रायश्चित्त का कथन

भ्रान्ति से पुत्रिकादि विवाह होने पर चन्द्रायणादि करने से स्वमात्र

की शुद्धि	२०५-२०७
पुत्र होने पर व्रत का विधान	२०८-२११
एक, दो, तीन और चार-पांच बार विवाहिता होने पर प्रायश्चित्त	२१२-२१७
उससे तो वेश्या की विशेषता	२१८-२२४
प्रविष्ट परपति के काय द्वारा संयोग होने पर प्रायश्चित्त	२२५-२२७
अग्राह्य और ग्राह्यमूर्ति का वर्णन	२२८-२२९
अग्राह्यमूर्ति का निवेद्य	२३०-२३८
भगवत्प्रसाद ग्रहण में भक्षणविधि	२३९
अत्युष्ण निवेदन करने पर नरकगामी होता है	२४१-१४२
निवेदन प्रकार	२४१-२४५

गृहस्थस्य रात्रावुष्णोदकस्नानवर्णनम् : २९७५

निवेदित का स्वीकार प्रकार	२४६-२४७
निवेदित वस्तु बच्चों को दे	२४८
गृहस्थ द्वारा रात्रि में गर्म जल से स्नान	२४९-२५०
अभ्यङ्ग का विधान	२५१-२५३
माध्याह्निक एवं क्षुर स्नान का वर्णन	२५४-२५७
प्रातः सायं पर्वीदि में अभ्यञ्जन स्नान	२५८-२६२
सोदकुम्भ नान्दी श्राद्ध में अभ्यञ्जन स्नान	२६३-२६६
क्रोशस्थित नदी स्नान से श्राद्ध विधान	२६७
सङ्कल्प	२६८-२७१
पितृ श्राद्ध के व्यत्यास में फिर करने का विधान	२७२
शून्यतिथि में करने से फिर करे	२७३-२७४
पितृ श्राद्ध के बाद कारुण्य श्राद्ध	२७५-२७६
माता-पिता का श्राद्ध एक दिन हो तो अन्न से करे	२७७-२७९
चाक्रिक श्राद्ध	२८०-२८१
ग्रहण में भोजन निषेध वृद्ध बाल और आतुरों को छोड़कर	२८२-२८१
अत्यन्त आतुरों को भी छूट	२८२-२८७

ग्रस्तास्त शुद्ध होने पर सकामी व निष्कामीजन के लिए भोजन का
विधान

२६८-३००

मातापितृभ्यां पितुःदानं ग्रहणञ्च : २६८१

अग्निहोत्र वर्णन	३०१
दत्तपुत्र वर्णन	३०२
माता-पिता द्वारा देने और लेने का विधान	३०३-३१३
पुत्र संग्रह अवश्य करना चाहिए	३१४-३१५
अपुत्र की कहीं गति नहीं	३१६
पुत्रवान् की महत्ता का वर्णन	३१७-३२३
पुत्र उत्पन्न होने पर उसका मुख देखना धर्म है	३२४-३२६
वृत्तिदत्तादि पुत्रों का वर्णन	३२७-३३५
सगोत्रों में न मिले तो अन्य सजातियों में से पुत्र को ले अथवा सवर्ण में ले	३३६-३३७
असगोत्र स्वीकृति में निषेध	३३८-३४२
विवाह में दो गोत्रों को छोड़ने का विधान	३४३-३४४
अभिवन्दनादि में दो गोत्र का वर्णन	३४५-३४६
गोत्र और ऋषियों का विचार	३४७-३५१
दत्तजादि का पूर्व गोत्र	३५२-३५८

भ्रातृपुत्रादिपरिग्रहवर्णनम् : २६८७

भ्राता के पुत्र को लेने में विवाह और होमादि की क्रिया नहीं केवल वाणीमात्र से ही पुत्र से ही पुत्र संज्ञा कही है	३५९
भ्राता के पुत्र का परिग्रह	३६०-३६३
किसी पुत्र को लेने के लिए स्वीकृत होने पर यदि औरस पुत्र हो तो दोनों को रखे नहीं पाप लगता है	३६४-३६७
पुत्रदान के समय में जो कहा गया उसे पूरा करना चाहिए	३६८-३७५
भाई के पुत्र को लेने पर दिए हुए का समांश औरस गोत्र का चौथा हिस्सा	३७६-३८०
दत्तक से औरस उपनीत न होने पर प्रायश्चित्त	३८१-३८२

भार्या पुरुष का पुत्र ग्रहण	३८३-३८८
उस समय की प्रतिज्ञा पूरी न करने से दोष	३८९-३९९
सपत्नियों में पुत्र के ग्रहण के समय जो रहे तो वह माता दूसरी	
सपत्नी माता	३९०-३९१
अन्य मातामहादि का स्थान	३९२-३९५
सपत्नी का पिता मातामह नहीं	३९६
पत्नी माता का तर्पण	३९६-३९८

औपासनाग्नौ श्राद्धेऽप्रमादवर्णन : २९९१

सपत्नी माता का औपासन अग्नि में श्राद्ध	३९९
सपत्नी की अग्नि	४००-४०१
भाई के पुत्र के ग्रहण की विधि	४०२-४११
विभाग में भाई बराबर है	४१२-४१३
कामज पुत्रों का वर्णन	४१४-४३३
दत्तादि में विशेष	४३४-४४५
पत्नी की वैशिष्ट्यता	४४६-४४९
पुत्रों का ज्येष्ठ कानिष्ठ्य	४५०
भोगिनी	४५१
भर्मणा, वा वातादि पत्नियों का वर्णन	४५६-४६४
धर्मपत्नी से उत्पन्न शिशु का ही स्पर्श मात्र कर्तव्य	४६५-४७१
सन्निधि भी स्पर्शमात्र कर्तृत्व	४७२-४७४
श्राद्धादि में अत्यन्त तृप्तिकर पदार्थ	४७५-४८१
गौरी दान वृषोत्सर्ग व पितरों को अत्यन्त तृप्ति कर कहे हैं	४८२-४८३
जकारपंचक का वर्णन	४८४-४८५
ग्रहण श्राद्ध का लक्षण	४८६-४९५
पनस स्थापित महान् विशेष है	४९६-५०३
अलर्कश्राद्ध	५०४-५०८

श्राद्धार्हदिव्यशाकवर्णन : ३००३

श्राद्ध के योग दिव्य शाक	५०९-५३०
पनस की महिमा	५३१-५७१

रोदन का फल	५७२-५८५
उर्वारु महिमा	५८६-६०३
उर्वारु को छोड़ने में दोष	६०४-६०५
छियानवे श्राद्धों का वर्णन	६०६-६१६
१०८ श्राद्ध प्रकृति श्राद्ध, दशं श्राद्ध, दशं और आन्विक समान हैं मन्वादि श्राद्ध, संक्रान्ति श्राद्ध, संक्रान्ति पुण्यवास	६२०-६४८
अन्न श्राद्ध में कुतप	६४९-६५४
दशं संक्रान्ति आदि श्राद्ध	६५५-६५७
महालय	६५७-६५९
श्राद्ध देवता	६६०-६६४
पित्र्य कर्मों में प्रदक्षिणा न करे । शून्य ललाट रहे गृहालङ्कार भी न करे	६६५-६६७
मार्तवर्ग में प्रदक्षिणादि और अलङ्कार	६६८-६७०
श्राद्धभेद से विश्वेदेव, सापिण्ड वर्णन	६७१-६७५
आशौच दश, तीन और एक दिन रहता है	६७६-६८३
अमादि श्राद्ध में कर्तव्य	६८४-६८७
एकोद्दिष्ट के अधिकारी	६८८-६९३
अपिण्डक और सपिण्डक श्राद्ध	६९०-६९०
छियानवे श्राद्धों की संख्या का विचार	६९४-७००
महालय, सकृन्महालय में भरण्यादि की विशेषता महालय का काल यतियों का महालय, दुर्मृतों का महालय	७०१-७०९
सुमङ्गली का श्राद्ध	७१०-७१८
रवि के उदय से पूर्व तर्पण	७१९

निमन्त्रणार्हविप्राणां वर्णन : ३०२५

जीवत्पितृक श्राद्ध	७२०-७२२
श्राद्ध में वैदिक अग्नि के अधिकारी	७२३-७२६
अष्टकामासिक श्राद्ध	७२७-७३२
श्राद्ध प्रयोग में निमन्त्रण के योग्य व्यक्तियों का वर्णन	७३३-७३६
वेदहीन को निमन्त्रण देने पर निषेध एवं प्रायश्चित्त	७३७-७४०

अपने शाखा के ब्राह्मण की ही श्लाघ्यता	७४१-७४२
श्राद्ध में अभोज्य	७४३-७६८
वरण	७६९-७७४
प्रसाद के लिए दर्भदान	७७५-७७६
मण्डल पूजा	७७७-७७९
गुल्फों के नीचे धोना	७८०-७८१
आचमन कर्ता के पहले भोक्ता का आचमन देवादि के भोजन की दिशा वरणत्रयकाल, विष्टर, अर्घ्य, आवाहन गन्धाक्षतादि दान	७८२-८०१
अग्नौकरण फिर सङ्कल्प परिवेषण	८०२-८०७

परिवेषणेपौर्वापर्यं वर्णन : ३०३३

पौर्वापर्यं में पहले सूप देना	८०८-८१४
रक्षोघ्न मन्त्र यदि असमर्थ हो तो दूसरे द्वारा बोला जाए	८१५-८१८
गरम ही परोसना चाहिए	८१९-८२५
मन्त्र बोले जाय मन्त्रों की विकलता नाश के लिए वेद का घोष	८२६-८४८
शास्त्र-विरोधित्याज्य हैं	८४९-८६०
तिलोदक पिण्डदान नमस्कार अर्चन, पुत्रकलत्रादि के साथ पितृ आदि की प्रदक्षिणा व नमस्कार	८६१-८६८
मध्यम पिण्ड का परिमार्जन कर धर्मपत्नी को दे दे	८६९-८७२
श्राद्ध दिन में शूद्र भोजन निषिद्ध	८७३
पिता के भोजन के पात्र गाड़ दिए जायें	८७४
उद कुम्भ	८७५-८७७
प्रथम वर्ष तिल तर्पण न करे सपिण्डीकरण के बाद श्राद्धाङ्गतर्पण	८७८-८८२
श्राद्ध में निमन्त्रित ब्राह्मणों की पूजा का वर्णन	८८३-८९२
पितरों के निमित्त रजत और देवता के निमित्त स्वर्ण मुद्रा दे।	
उपस्थान और अनुब्रजनादि का कथन	८९३-८९७
कर्म के मध्य में ज्ञानाज्ञानकृत दोष का प्रायश्चित्त	८९८-९०४
उच्छिष्टादि श्राद्ध में सात पवित्र	९०५-९०९

उच्छिष्ट, निर्माल्य, गङ्गामहिमा, महानदी, नदियों का रजस्वलात्व,

पुण्यक्षेत्र

६१०-६४२

वमन

६४३-६४५

फिर श्राद्ध प्रकरण

६४६-६५०

अनुमासिक में उच्छिष्ट वमन में व उच्छिष्ट के उच्छिष्ट स्पर्श में
विचार

६५१-६५६

एक दूसरे के स्पर्श में

६६०-६६४

दर्शादि में छींक आने पर विचार

६६५-६७३

अपुत्र की सापिण्ड्यता

६७४-६७५

पति के साथ अनुगमन में पत्नी का एक साथ ही पिण्डदान

६७६-६७८

मृत के ग्यारहवें दिन या दूसरे दिन सहगमन में श्राद्ध

६८३-६८८

यदि पत्नी ऋतुकाल में हो पति के मरण पर तो पति को तैल की
कड़ाही में छोड़ दे और शुद्ध होने पर ही और्ध्वदेहिक संस्कार
करे

६८९-६९५

उसका पिण्ड संयोजन

६९६

माता के सापिण्ड्य न होने का स्थल

६९७-६९८

दत्तपुत्र का पालक पिता का सापिण्ड्य होता है

६९९

दत्तपुत्र का औरसपिता के प्रति कृत्य

१०००-१००५

अन्य गोत्र दत्त का सपिण्डीकरण में विधान

१००६-१००८

कथा तृप्ति

१००९-२२

श्राद्ध के दिन दान जप न करे

१०२३-१०२७

दर्श में मृताह के श्राद्ध को पहले करे

१०२८

मृताह के दिन मातामहादि का श्राद्ध हो तो

मन्वादिक श्राद्ध करे

१०२९-१०३१

मृताह में नित्यनैमित्तिक आ जायें तो नैमित्तिक पहले करे

१०३२-१०३४

दर्श में बहुश्राद्ध हों तो दर्शादि को कर फिर कारुण्य

श्राद्ध करे उसमें मत-मतान्तर

१०३५-१०४४

किन्हीं का कल्प प्रकार

१०४५-१०५६

भ्रष्टक्रिया का विधान, पतित की पच्चीस वर्ष के बाद क्रिया हो

१०६०-१०७२

श्राद्धाङ्ग तर्पण दूसरे दिन

१०७३-१०७५

उद्देश्य त्याग के समय सब्यविकिर न करे

१०७६-१०७८

वमन में कर्ता के भोजन न करने पर अर्धं तृप्ति, तिल द्रोण का

विधान, दर्शश्राद्ध तर्पण रूप से तिल ही मुख्य हैं। सभी कर्मों

में जल की प्रधानता

१०७९-१११३

आङ्गिरस (२) उत्तराङ्गिरसम्

१ धर्मर्षत्प्रायश्चित्तवर्णन : ३०६६

विधि:

१-१०

२ परिषद् उपस्थानलक्षणम् : २०६७

परिषद् के उपस्थान का लक्षण और उसके सामने निर्णय पूछने

की विधि

१-१०

प्रायश्चित्तविधानम् : ३०६८

सत्य की महिमा व किए गए कुकृत्यों के लिए सत्य बोलकर प्राय-

श्चित्त पूछने का विधान

१-११

४ परिषत्लक्षण : ३०६९

प्रायश्चित्त का लक्षण

१-२

परिषत् का लक्षण और उसके भेद

३-१०

५ प्रायश्चित्तनियन्तृकथनम् : ३०७१

दशावरापरिषद्

१

चतुर्वेद्य

२

विकल्पी

३

अङ्गवित्

४

धर्मपाठक

५

आश्रमी

६

ब्राह्मणों की परिषद् आगे प्रायश्चित्त नियन्ताओं का वर्णन बताया है ७-१४

६ प्रायश्चित्ताचारकथनम् : ३०७२

प्रायश्चित्त के आचार का वर्णन

७. पापपरिगणनम् : ३०७३

जानते हुए भी प्रायश्चित्त का विधान पूछने पर ही करे	१-२
पापपरिगणन	३-७
पञ्चमहापातकियों का वर्णन	८
पतितों का वर्णन	८-९

८. शूद्रान्नस्यगृहितत्त्ववर्णनम् : ३०७५

प्रतिग्रह से प्रायश्चित्त	१
शूद्रान्न के भोजन में प्रायश्चित्त	२
शूद्र की प्रशंसा कर स्वस्तिवाचन में प्रायश्चित्त	३-५
प्रतिग्रह लेकर दूसरों को दे दे	६
शूद्रान्नसरस से पुष्ट वेदाध्यायी का प्रायश्चित्त	७
शूद्रान्न छै मास तक खाने से शूद्र के समान हो जाता है एवं मरने पर कुत्ता होता है	८
सारी उम्र खाने वाले को भी शूद्र ही होना पड़ता है	९
प्रतिग्रहकेयोग्यधान्य	१०-११
पात्र से लेना चाहिए प्रतिग्राह्य वस्तुयें	१२-२०

९. अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्त : ३०७७

अभक्ष्यभक्षण का प्रायश्चित्त	१-८
भिक्षुओं की गणना	९-१०
कुत्ते से काटे हुए का प्रायश्चित्त	११-१६

१०. हिंसाप्रायश्चित्तकथनम् : ३०७९

हिंसा का प्रायश्चित्त वर्णन	१
दण्ड का लक्षण	२
गौओं के प्रहार करने से प्रायश्चित्त	३
गायों के रोधनादि से मरने पर प्रायश्चित्त	४-५
गायों की हड्डी आदि मारने से टूटने पर प्रायश्चित्त	६-१०
किन-किन अवस्थाओं में प्रायश्चित्त नहीं लगता	११-१४
गजादि प्राणियों की हिंसा में प्रायश्चित्त	१५-१६

काम और कामादिकृत पापों के प्रायश्चित्त के लिए विशेष वर्णन	१६-१६
बालक वृद्ध और स्त्रियों के लिए प्रायश्चित्त	२०-२१
११. गोवधप्रायश्चित्तकथनम् : ३०८१	
गोवध करने वाले का प्रायश्चित्त वर्णन	१-११
१२. कृच्छ्रादिस्वरूपकथनम् : ३०८३	
प्रायश्चित्तविधि	१-४
कृच्छ्रादि का स्वरूप कथन	५-८
ब्राह्मण महिमा	९-१६

समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः ।

अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनस्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥

—०—

भारद्वाजस्मृति

१. सन्ध्यादिप्रमुखकर्मविषय : ३०८५

नित्यनैमित्तिक क्रियायों को लेकर प्रश्न	१-७
नित्यनुष्ठानों के न करने वालों की सभी क्रियायें निष्फल होती हैं । दिशाओं के निर्णय से लेकर प्रायश्चित्त तक २५ अध्यायों का संक्षेप से निरूपण	८-२०

२. दिग्भेदज्ञानवर्णनम् : ३०८७

पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं के ज्ञान की सरलविधि	१-४
अन्य दिशाओं का परिज्ञान प्रकार	५-७७

३. विण्मूत्रोत्सर्जनविधिवर्णनम् : ३०९४

मलमूत्र विसर्जन की विधि	१-८
-------------------------	-----

४. आचमनविधिवर्णनम् : ३०९७

आचमन के पूर्व जङ्घा से जानु तक या दोनों चरणों को और हाथों को अच्छी प्रकार धोकर आचमन का विधान	१-५
--	-----

भारद्वाजस्मृति

१८१

जल में खड़ा हुआ जल में ही आचमन करे, जल के बाहर हो तो बाहर

६-७

अंग-न्यास, देवताओं का स्मरण, आचमन कितना लेना चाहिए, बिना आचमन के कोई कर्म फल नहीं देता अतः इसका बराबर ध्यान रखा जाय

८-४१

५. दन्तधावनविधिवर्णनम् : ३१०१

मुख शुद्धि के लिए दन्तधावन का विस्तार से निरूपण, दन्तधावन के लिए वर्ज्य तिथियां एवं समय तथा कौन-कौन काष्ठ ग्राह्य हैं तथा कौन-कौन अग्राह्य हैं इसका निरूपण, मौन होकर दन्तधावन करे

१-२५

स्नानविधिका वर्णन

२६-३८

ललाट में तिलक का विधान

४०-४५

६. त्रिकालसंध्याविधानकथनम् : ३१०६

एक ही सन्ध्या के कालभेद से तीन स्वरूप—प्रथम काल की ब्राह्मी दूसरे की (मध्याह्न की) वैष्णवी, तीसरे की रौद्री सन्ध्या कही गई है। यही ऋक्, यजु और सामवेदों के तीन रूप हैं। इनके नित्य ही द्विजमात्र को कर्तव्य इष्ट हैं। सन्ध्या की मुख्य क्रियाओं का विस्तार से परिगणन

१-९८

गायत्री के जपविधान का कथन

९९-१४०

गायत्री का निर्वचन

१४१-१६३

जप यज्ञ की महिमा

१६४-१८१

७. जपमाला विधानकथनम् : ३१२४

जपमाला का विधान और जप माला की प्रतिष्ठा विधि। जप विधान में अर्थ का प्राधान्य और साथ में मनोयोग पूर्वक करने से ही इष्टसिद्धि मिलती है

१-१२३

८. जपे निषिद्धकर्मवर्णनम् : ३१३६

जप में निषिद्ध कर्मों का वर्णन

१-१२

६. गायत्र्याः साधनक्रम वर्णन : ३१३८

गायत्री के साधनक्रम को जानने से ही सद्यः सिद्धि मिलती है अतः

उसको जानकर जप किया जाय १-५०

१० गायत्र्या मन्त्रार्थकथनम् : ३१४३

गायत्री के मन्त्र का अर्थ का विस्तार से निरूपण १-६

११. गायत्र्याः पूजाविधानकथनम् : ३१४४

गायत्री का पूजा विधान १-११८

गायत्री पुष्पाञ्जलि का प्रकार १११-१२१

१२. गायत्रीध्यानवर्णनम् : ३१५६

गायत्री का ध्यान वर्णन १-६१

१३. गायत्रीमूलध्यानवर्णनम् : ३१६३

गायत्री का मूलध्यान और महाध्यान का वर्णन १-४४

१४. पूजाफलसिद्धये द्रव्यगन्धलक्षणवर्णनम् : ३१६६

पूजाफल की सिद्धि के लिये नाना द्रव्य, गन्धलक्षण का विस्तार से निरूपण १-६४

१५. यज्ञोपवीतविधिवर्णनम् : ३१७२

यज्ञोपवीत की विधि का वर्णन निवीत और प्राचीनावीत का लक्षण । शुद्ध देश में कपास का बीज बोया जावे, उसके तैयार होने पर ही ब्रह्मसूत्र को विधिवत् बनाया जाय । नाभि के बराबर ९६ छियानवे चार हस्ताङ्गुल प्रमाण से बनाकर शुद्ध मन से देवगुण ऋषियों का ध्यान करते हुए इस ब्रह्मसूत्र को पहने १-१५४

१६. यज्ञोपवीतधारणविधिवर्णनम् ३१८७

शुद्ध होकर आचमन कर आसन पर बैठे फिर आचार्य, गणनाथ, वाणीदेवता, देवता, ऋषिगण और पितरों का स्मरण करें । भगवान्, ब्रह्मा, अच्युत और रुद्र को भक्ति से नमस्कार करें, नवों तन्तुओं में आवाहन कर यज्ञोपवीत का धारण करें १-६३

१७. यज्ञोपवीतमन्त्रस्य ऋषिच्छन्द आदीनां वर्णनम् : ३१६३
यज्ञोपवीत मन्त्र के ऋषि छन्द देवता आदि का विस्तार से वर्णन १-३१

१८. सप्रयोजनकुशलक्षणवर्णनम् : ३१६६
कुशों के बिना कोई भी नित्यनैमित्तिक क्रिया का सम्पादन शक्य नहीं
अतः कौन ग्राह्य है और कौन अग्राह्य है इसका निरूपण १-१३१

१९. व्याहृतिकल्पवर्णनम् : ३२०६
व्याहृतियों का विस्तार से निरूपण १-४८
व्याहृतियों से सम्पूर्ण कार्यसिद्धि शक्य है ४६

—०—

स्मृति सन्दर्भ : भाग षष्ठ

मार्कण्डेयस्मृति

वर्णाश्रमधर्मवर्णनम्	१
ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम्	३
प्रायश्चित्तप्रकरणम्	७
अवकीर्णिब्रह्मचारिप्रायश्चित्तवर्णनम्	६
एकविंशतियज्ञवर्णनम्	११
गृहस्थप्रशंसावर्णनम्	१३
द्विमुखोदकपात्रप्रशंसावर्णनम्	१५
वेदप्रशंसावर्णनम्	१७
संस्कृतभाषामौनविधिवर्णनम्	१६
वेदातिरिक्तमुक्तिसाधननिन्दावर्णनम्	२१
वेदाध्ययनवर्जितस्यपुनर्वेदाधिकारवर्णनम्	२३
संस्काराणां वर्णनम्	२५
स्वकार्यानुकूलपक्षिगमनसम्पादनवर्णनम्	२७
गमने निषिद्धानामागमे यात्रानिषेधवर्णनम्	२६
वेदाध्ययने नियमोल्लङ्घनप्रायश्चित्तवर्णनम्	३१
मृत्तिकाग्रहणमन्त्रवर्णनम्	३३
देवर्षिपितृतर्पणविधिवर्णनम्	३५
गौणमुख्यस्नानभेदवर्णनम्	३७
होमपदनिर्वचनवर्णनम्	३६
गायत्रीमन्त्रवर्णनम्	४१
प्राणायामविधिवर्णनम्	४३
सन्ध्यादिनित्यकर्मस्वर्थज्ञानमेवप्रशस्तमितिवर्णनम्	४५
महोत्सवेषु समग्रधनधान्यदानप्रशंसावर्णनम्	४७

परिषदि श्रोत्रियस्यैवाधिकारवर्णनम्	४६
सर्वपापोत्तारणे ब्राह्मणानामेववचनप्रामाण्यवर्णनम्	५१
शूद्रान्नप्रतिग्रहीतृप्रायश्चित्तवर्णनम्	५३
स्वर्णकाररथकारादिपौरोहित्यनिषेधवर्णनम्	५५
प्रेतान्नभोक्तुर्निन्दावर्णनम्	५७
वैश्वदेवसमये समागतानामनिराकरणवर्णनम्	५९
वेदत्यागनिन्दावर्णनम्	६१
सर्वधर्मशास्त्रप्रणार्थनकर्तृणामेकवाक्यतालक्ष्यवर्णनम्	६३
वेदानांबहुमार्गत्ववर्णनम्	६५
नानासूत्रग्रन्थस्मृतीनामवतरणम्	६७
भारद्वाजसूत्रनानावेदशाखानां वर्णनम्	६९
नानासूत्राणां शाखाभेदवर्णनम्	७१
आहिताग्निविषयवर्णनम्	७३
नानासंस्काराणां वर्णनम्	७५
उपनयनकालकृतानां पृथक्क्षुरकर्माभाववर्णनम्	७७
बालानांसद्व्यवहारवर्णनम्	७९
बालताडननिषेधवर्णनम्	८१
गायत्रीस्वरूपवर्णनम्	८३
मध्याह्निकालकर्मवर्णनम्	८५
ब्राह्मणमहत्त्ववर्णनम्	८७
प्रायश्चित्तवर्णनम्	८९
दानप्रशंसावर्णनम्	९१
दानस्यापात्राणि	९५
सेष्टपूर्तवर्णने दानक्रियाद्यधिकारवर्णनम्	९७
दानफलवर्णनम्	९९
दानेदेयद्रव्यवर्णनम्	१०१
स्वर्गसुखाधिकारिणां जनानां लक्षणवर्णनम्	१०३
गयाश्राद्धवर्णनम्	१०५
प्रायश्चित्तप्रतिनिधिवर्णनम्	१०७
महादानानां वर्णनम्	१०९
शिखरदानवर्णनम्	१११

गोवृषभादिदानफलवर्णनम्	११३
भूमिदानप्रशंसावर्णनम्	११५
कन्यादानफलवर्णनम्	११७
सुवर्णादिनानादानफलवर्णनम्	१२१
विशेषदानवर्णनम्	१२३
सम्पूर्णदानेषु कन्यादानस्यप्राशस्त्यवर्णनम्	१२५
तिथिक्रमेणदानफलं देवतापूजनफल	१२७
नानावस्त्रादिदानप्रकरणम्	१२९
नानादानफलानि	१३१
कन्यापितृधर्मवर्णनम्	१३५
इष्टापूतवर्णनम्	१३७
नानामहोत्सववर्णनम्	१३९
पात्रापात्रनिरूपणम्	१४१
दानपात्रविशेषवर्णनम्	१४३
षड्विधब्राह्मणवर्णनम्	१४५
मधुपर्कयोग्यानाम्वर्णनम्	१४७
नान्दीश्राद्धादिषु मर्यादावर्णनम्	१४९
आपोशनजलप्रदातारः	१५१
विवाहे पाककर्तृणांयोग्यतावर्णनम्	१५३
एकपङ्क्तिदूपतानां वर्णनम्	१५५
पतितस्य पुत्रेणकर्तव्यश्राद्धविधिवर्णनम्	१५७
श्राद्धविधानवर्णनम्	१६१
पुत्रत्वयोग्यतावर्णनम्	१६३
महालयश्राद्धप्रशंसावर्णनम्	१६५
सकृन्महालयश्राद्धकालनिर्णयवर्णनम्	१६७
एकाष्टकाविधिवर्णनम्	१६९
नान्दीश्राद्धमहत्त्ववर्णनम्	१७१
पुण्याहुवाचनविधिवर्णनम्	१७३
मन्त्रवेदिने दानप्रशंसावर्णनम्	१८१
पुरोहितप्रशंसावर्णनम्	१८३
अग्नौकरणवर्णनम्	१८५

मार्कण्डेयस्मृति

१८७

श्राद्धे भोजनाचमनकालवर्णनम्	१८७
मातापितृश्राद्धव्यवस्थावर्णनम्	१८८
श्राद्धभोजने कृत्यवर्णनम्	१८९
श्राद्धविधिवर्णनम्	१९३
पितृणामर्घ्यदानवर्णनम्	१९५
स्नुषापाकवर्णनम्	१९७
पितृनिमित्तस्य पक्वान्नस्य प्रशंसावर्णनम्	१९८
श्राद्धकार्याङ्गक्रमवर्णनम्	२०१
विकिरान्नदानवर्णनम्	२०३
भोजनमनुनिमन्त्रितब्राह्मण पूजन	२०५
परेह्नि तर्पणवर्णनम्	२०६
ब्राह्मणमहिमा	२११
ब्राह्मणस्यैव भूदानम्	२१३
पतिसयोगविकलाया विधवाया वृत्तिष्वनधिकारवर्णनम्	२१५
रन्ध्रप्रविष्टक्रियाप्रविष्टयोर्भेदवर्णनम्	२१७
उत्तमर्णाधिमर्णदण्डवर्णनम्	२१८
श्राद्धप्रकरणवर्णनम्	२२१

—०—

लौगाक्षिस्मृति

लौगाक्षिविषयकधर्मशास्त्रप्रबन्धावतारः	२२३
जातकर्मविधिव्यवस्थावर्णनम्	२२५
नामकरणविधिवर्णनम्	२२७
वेदप्रतिपाद्यविधेः कर्तव्यफलज्ञापनत्ववर्णनम्	२२८
सर्वद्विजातीनां वेदविहतोपनयनकालावधिनिरूपणम्	२३१
उपनयनसमयेकृत्यविधिवर्णनम्	२३३
ब्रह्मचारिभिक्षाप्रकरणम्	२३५
उपनयनावधिसमुल्लङ्घितस्य फलानर्हत्ववर्णनम्	२३७
उत्सर्गोपाकर्मविधिवर्णनम्	२३८

दशानुवाकानां वर्णनम्	२४१
नानानुवाकानामृषिवर्णनम्,	२४३
अनाश्रमीनैवतिष्ठेदितिवर्णनम्	२४५
वंशाभिवृद्ध्यर्थं वरणीयकन्यालक्षणवर्णनम्	२४७
कन्यादानवर्णनम्	२४९
साप्तपदीनवर्णनम्	२५५
गङ्गासागरसङ्गमादितीर्थफलकथनम्	२५७
क्रूरतरदोषनिवृत्तये प्रतिकारवर्णनम्	२५९
स्त्रीपुरुषकृतमहापापप्रायश्चित्तवर्णनम्	२६१
उत्तमब्राह्मणकर्मणां सद्यः फलप्राप्तिवर्णनम्	२६३
अन्वारम्भणे ब्रह्मणे दक्षिणादानवर्णनम्	२६५
भौपासनारम्भः	२६७
यज्ञप्रशंसावर्णनम्	२६९
निरत्यौपासनविधिवर्णनम्	२७१
नैमित्तिकस्यनित्यकर्मणोर्वैशिष्ट्यकथनम्	२७३
नानाशास्त्राणां वर्णनम्	२७५
कलयुगधर्मानुसारं धर्माणां विधिनिषेधवर्णनम्	२७७
बाह्यान्तरशौचयोनिरूपणम्	२७९
दन्तधावनविधानवर्णनम्	२८१
स्नानविधिवर्णनम्	२८३
सन्ध्याविधिवर्णनम्	२८५
सन्ध्यादिप्रकरणेऽर्घ्यादिवर्णनम्	२८७
गायत्रीप्रशस्तिवर्णनम्	२८९
गायत्रीजपारम्भकाले चतुर्विंशतिमुद्रावर्णनम्	२९१
गायत्र्या भावाहनवर्णनम्	२९३
त्रिकालसन्ध्यावर्णनम्	२९५
ब्रह्मयज्ञप्रशंसावर्णनम्	२९९
देवपितॄणां तर्पणविधानवर्णनम्	३०१
भौष्मतर्पणवर्णनम्	३०३
ॐ नमो नारायणमन्त्रमहत्त्ववर्णनम्	३०५
पीठपूजाविधानवर्णनम्	३०७

विष्णुपूजनकर्मणि नानाविधानवर्णनम्	३०६
दीपदानात्परन्तैवेद्यनिवेदनवर्णनम्	३११
आदित्यादिपञ्चदेवपूजनविधानवर्णनम्	३१३
शिवपूजाविधौ श्रेष्ठकालवर्णनम्	३१५
सूर्यपूजायां भूतशुद्धिमन्त्रशुद्धचोर्वर्णनम्	३१७
सविधिपूजाविधानवर्णनम्	३१८
विष्णोनिवेदितं ग्राह्यमित्यत्रमीमांसा	३२१
नानादेवेभ्य इष्टप्राप्तिवर्णनम्	३२३
दीपप्रशंसावर्णनम्	३२५
नानाविधिनैवेद्यवर्णनम्	३२७
ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम्	३२८
पञ्चयज्ञवर्णनम्	३३३
अतिथिमहत्त्ववर्णनम्	३३५
मृण्मयादिपात्रेषु भोजननिषेधवर्णनम्	३३७
अभक्ष्यवर्णनम्	३४१
पङ्क्तिपावनानां वर्णनम्	३४३
सदाचारवर्णनम्	३४५
भोजनविधिवर्णनम्	३४६
पाकस्य ग्राह्याग्राह्यवर्णनम्	३५३
स्त्रीधर्मवर्णनम्	३५५
श्राद्धे गोदानविधिवर्णनम्	३५७
अग्राह्यान्तभोजने दोषवर्णनम्	३५८
श्राद्धे निमन्त्रणक्रमवर्णनम्	३६१
ब्राह्मणभोजने योग्यायोग्यवर्णनम्	३६३
बालानां कृते श्राद्धविधानम्	३६५
नित्यानित्यश्राद्धयोग्यवर्णनम्	३६७
श्राद्धकर्मणि नानाविधानवर्णनम्	३६८
नानगुरूणां वर्णनम्	३७१
श्राद्धाङ्गतर्पणवर्णनम्	३७३
मुहूर्त्तानिकालनामवर्णनम्	३७५
श्राद्धानां विवरणम्	३७७

मुख्यपत्न्याःश्राद्धे विधानवर्णनम्	३८१
श्राद्धे पाककर्तारः	३८३
भाषान्तरप्रवचननिषेधः	३८५
अभक्ष्यभक्षणाच्चाण्डालत्वप्राप्तिः	३८६
श्राद्धवर्णनम्	३८३
शूद्रस्य महादानकरणाद्विप्रसाम्यत्ववर्णनम्	४०३
वैदिकप्रकरणम्	४०५
पितृश्राद्धादिषु ज्येष्ठपुत्रस्यैवाधिकारिता	४०६
सर्वंकृत्यानामीश्वरार्पणबुद्धयैवफलदायकत्वम्	४११

॥समाप्तमिदं सूत्रीपत्रम् । शमस्तु ॥

स्मृति सन्दर्भ : श्लोकानुक्रमणी



THE END OF THE WORLD : A NOVEL

संकेत सूची

१. मनुस्मृति	(मनु)	२९. प्रजापति स्मृति	(प्रजा)
२. नारदीय मनुस्मृति	(नारद)	३०. बौधायन स्मृति	(बौ)
३. अत्रिस्मृति	(अत्रि)	३१. लध्वाश्वयालयन	(आश्व)
४. अत्रिसंहिता	(अत्रिस)	३२. गौतम स्मृति	(गौ)
५. विष्णु स्मृति माहात्म्य	(विष्णु मं.)	३३. वृद्ध गौतम स्मृति	(वृ.गौ.)
६. विष्णु स्मृति	(विष्णु)	३४. यम स्मृति	(य)
७. सम्बर्त स्मृति	(सम्बर्त)	३५. लघुयम स्मृति	(ल. य.)
८. दक्ष स्मृति	(दक्ष)	३६. बृहद्यमस्मृति	(वृ. य.)
९. आंगिरस स्मृति	(आंगिरस)	३७. अरुण स्मृति	(अ)
१०. शातातप स्मृति	(शाता)	३८. पुलस्त्य स्मृति	(पु.)
११. पराशर स्मृति	(पराशर)	३९. बुध स्मृति	(बु य)
१२. वृहत्पाराशर स्मृति	(वृ परा)	४०. वसिष्ठ स्मृति (२)	(व-२)
१३. लघु हारीत स्मृति	(ल हा)	४१. वृहदयोगी याज्ञवल्क्य	(वृ. या.)
१४. वृद्ध हारीत स्मृति	(व. हा.)	४२. ब्रह्मोक्त याज्ञवल्क्य	(ब्र. या.)
१५. याज्ञवल्क्य स्मृति	(या)	४३. काश्यप स्मृति	(का)
१६. कात्यायन स्मृति	(कात्या)	४४. व्याघ्रपादस्मृति	(व्या)
१७. आपस्तम्ब स्मृति	(वृ. हा)	४५. कपिल स्मृति	(क)
१८. लघुशंखस्मृति	(या)	४६. वाधूल स्मृति	(वा)
१९. शंख स्मृति	(शंख)	४७. विश्वामित्र स्मृति	(विश्वा)
२०. लिखित स्मृति	(लि.)	४८. लोहित स्मृति	(लो)
२१. शंख लिखित स्मृति	(शं. लि.)	४९. नारायण स्मृति	(नारा)
२२. वसिष्ठ स्मृति-१	(व-१)	५०. शाण्डिल्य स्मृति	(शाण्ड)
२३. औशनस संहिता	(औ. सं.)	५१. कण्व स्मृति	(कण्व)
२४. औशनस स्मृति	(औ. स्मृ.)	५२. दाल्म्य स्मृति	(दा)
२५. वृहस्पति स्मृति	(वृह)	५३. आंगिरस स्मृति पूर्व	(आंपू)
२६. लघुव्यास संहिता	(ल. व्या)	५४. आंगिरस स्मृति उत्तरार्ध	(आंगि-उ)
२७. व्यास स्मृति	(औ. सं.)	५५. मार्कण्डेयस्मृति	(मा)
२८. देवल स्मृति	(देवल)	५६. लौगाक्षी स्मृति	(लौ)

स्मृति सन्दर्भ : : श्लोकानुक्रमणी

अ

अकन्येति तु यः कन्यां	नारद १३.३४
अकन्योति तु यः कन्यां	मनु ८.२२५
अकर्तुमन्यथाकर्तुं कर्तुं	कपिल ८८२
अकर्दमां नदीं रम्या	वृ हा ५.४९९
अकल्पा परिषद्यत्र	आं उ ६.२
अकामतः कृतं पापं	मनु ११.४६
अकामतः कृते पापे	मनु ११.४५
अकामतश्चरेदर्थं कामतः	वृ हा ६.२४९
अकामतश्चरेद्धर्मं	वृ हा ६.३०८
अकामतश्चरेदैवं ब्राह्मणी	अत्रि स २८२
अकामतश्चरेद् धर्मं	वृ हा ६.२३७
अकामतः सकृद् गत्वा	वृ हा ६.२८६
अकामतः सकृद् गत्वा	वृ हा ६.२९६
अकामतस्तु राजन्य	मनु ११.१२८
अकामतोपनतं मधु	व-१ २३.१०
अकामस्य क्रिया काचित्	मनु २.४
अकामेनापि यन्न्यूनं	वृ परा २.४८
अकारञ्चाप्युकारञ्च	मनु २.७६
अकारञ्चाप्युकारञ्च	वृ हा ३.५६
अकारणात् कारणतोपि	वृ परा १२.९०
अकारणे परित्यक्ता	मनु ३.१५७
अकारं चाप्युकारं	बृ.या. ४.१२
अकारं मूर्ध्नि विन्यस्य	वृ परा २.१६०
अकारं विन्यसेन्नाभ्यां	बृ.या. ५.२
अकारवाच्यस्येशस्य	वृ हा ३.८१
अकारश्च उकारस्तु	बृ.या. २.८०
अकारश्चाप्युकारश्च	बृ.या. २.५०
अकारश्चाप्युकारश्च	बृ.या. २.७१
अकारस्तु भवेद्विष्णु	वृ.हा. ३.५८
अकारेणोच्यते विष्णुः	व २. ६.२२९
अकारे पीड्यमाने तु	बृ.या. २.३३

अकारे रूढइत्यग्निं	वृ हा ७.४६
अकारोकारौमश्चेति	वृ परा ३.१५
अकारोद् भगवानेव	वृ हा ३.१७१
अकारो वासुदेवः स्यात्	वृ हा ७.४०
अकारो वै च सर्वा वाक्	वृ हा ७.३९
अकारो वै सर्वा वागित्यादि	वृ हा ३.६६
अकार्पण्यमलोभश्च क्रोध	शाण्डि ३.६४
अकार्यकरणेष्वेषु	आं पू १.७१
अकार्यकारिणां दानं	या ३.३२
अकालकृतसंध्या	कण्व २३२
अकालभुक्तिराशौचे	आं पू ४७
अकाले कुरुते कम	व्या १६५
अकाले नैव तत्कुर्याद्	आश्व १२.३
अकाले वर्जनं निद्रामैथुना	शाण्डि ३.६५
अकिचनैर्दुर्बलैर्वा	आं पू ६३३
अकीर्तिकारकौ बन्धुजनानां	लोहि १८५
अकीर्त्यैकभयात्सद्यः सा	लोहि १७६
अकुर्वन् विहितं कर्म	मनु ११.४४
अकुलीन ह्यसद्वृत्ते	अत्रि स ८
अकूटं कूटकं ब्रूते कूटं	या २.२४४
अकृतं कृतात्क्षेत्राद्	मनु १०.११४
अकृतं हावयेत् स्मार्ते	कात्या २४.२
अकृतः षड्विधो नित्यः	नारद २.१२८
अकृतान्येव यज्ञाश्च	बृह ११.५
अकृता वा कृतावाऽपि	मनु ९.१३६
अकृते तर्पणे तस्मिन्	कण्व १५७
अकृते तर्पणे भूयः पितर	आंपू ८८१
अकृते तु पुनस्तस्मिन्सो	कण्व ५४४
अकृते प्रत्यवायो न	आं पू ८४३
अकृते वा तस्य दोषः	लोहि ३०४
अकृते वैश्वदेवे तु	व्या १३
अकृते वैश्वदेवेतु	शंख लि ३
अकृते वैश्वदेवेऽपि	लहा ४.६१

अकृत्यकरणाद् वाऽपि	वृ हा ८.१६८	अक्लिन्नेनाप्याभिन्नेन	आप २.१३
अकृत्यमपि कुर्वाणो	वाधू ७४	आक्लिष्टमाच्छिद्मलोमकं	वृ परा १०.१२४
अकृत्यमानकरणम्	वृगौ ४.२१	अक्लेशेन चरेत् तृप्तो	शाण्डि ३.४९
अकृत्यं वैष्णवैः	वृ हा ८.१६६	अक्लेशेन सुमुक्तिर्य	शाण्डि ४.२१५
अकृत्रिमा भगवति	शाण्डि ४.६९	अक्षताभि समुऽपाभि	नारद ६.४१
अकृत्यपार्वणं श्राद्ध	व २.६.३७७	अक्षतायां क्षतायांच	ब्र. या. ७.३७
अकृत्वा तु समीपे तु	आं पू ९५७	अक्षतायां क्षतायां च	लोहि १८४
अकृत्वा देवयज्ञं च	आश्व १.१४५	अक्षतायां क्षत्रायां	वा या २.१३३
अकृत्वा नित्यकर्माणि	आं पू २६०	अक्षतारोपणं कुर्यात्	आश्व १५.२४
अकृत्वा पादशौचन्तु	सर्वत १५	अक्षता वा क्षता चैव	या १.६७
अकृत्वा पादयो	औ २.१०	अक्षताश्चेत्यभिहितास्ते	भार १४.६
अकृत्वा प्रेतसंस्कारं	आं पू १४२	अक्षताः सर्वपाश्चैव	व २७.९०
अकृत्वा भस्ममर्यादां	व्या १४३	अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ता	कात्या २८.१
अकृत्वा भैक्षचरणमसमिध्य	मनु २.१८७	अक्षभंगादिविपदि	कात्या ८.२४
अकृत्वा मातृयागंञ्च	औ ५.९९	अक्षमाला प्रकर्तव्या	वृ परा ४.४२
अकृत्वा वैश्वदेवं तु	विश्व ८.४६	अक्षमाला वशिष्ठेन	मनु ९.२३
अकृत्वा वैश्वदेवस्तु	पराशर १.४९	अक्षमाला सगंधरा च	वृ परा २.१५
अकृतेवा वैष्णवीमिष्टि	व २.६.४१६	अक्षयान् लभेत भोगान्	वृ परा १०.२६२
अकृत्वा शान्तिक कर्म	आश्व ३.१९	अक्षय्यं तु ततोऽजेन	कपिलं ७२२
अकृत्वा समिधाधानं	औ ९.६६	अक्षय्यासनपाद्येषु	व्या २६३
अकृत्यैव तदा श्राद्ध	आं पू ६७	अक्षय्योदकदानं तु	कात्या ४.७
अकृत्यैव तु संकल्पं	कण्व २९३	अक्षरप्रतिलोमू यास्मिन्	भार ९.४२
अकृत्यैव निवृत्तिं	आं ८.९	अक्षरं चाजरं चैवमनुत्प	वृ. या. २.११०
अ कृष्टं मूलफलं	व-१९.३	अक्षरं परमं व्योम	वृ हा ७.३२६
अकेशीर्वा सकेशीर्वा	कण्व ५९९	अक्षराणि च दैवत्यं	वृ. या. ४.६३
अक्काक्षिमालामयं दंडं	भार १२.२३	अक्षवर्धशलाकाद्यैर्देवनं	नारद १७.१
अक्रिया करणी कार्यसमे	विष्णुम ३८	अक्षार लवणं भैक्ष	अत्रि स ६०
अक्रिया त्रिविधा प्रोक्ता	कात्या ३.१	अक्षारलवणं शुद्ध	व २४.६७
अक्रोधनमनुत्सिक्तमति	शाण्डि १.१०३	अक्षारलवणानाः	मनु ५.७३
अक्रोधनान् सुप्रसादान्	मनु ३.११३	अक्षारलवणां रूक्षां	व १२७.११
अक्रोधनाः शौचपराः	मनु ३.१९२	अक्षारलवणाशी स्यात्	वृ परा १२.१४९
क्रोधनाः सत्यपरा	वृ.गौ. १२.२१	अक्षिकर्णं चतुष्कञ्च	या ३.९९
अक्रोधनेः शौचपरैरिति	प्रजा ६३	अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टं	मनु १०.७१
अक्रोधश्चात्त्वरोतीव पुनः	कपिल २५१	अक्षेत्रेभ्यश्च एतेभ्यो	वृ ह ९.७५
अक्लिन्नवासाः स्थलगः	संवर्त २१२	अक्षणोः पञ्चदशं	व २६.१५६

अखण्ड बिल्वपत्रैश्च	वृ हा ३.३६१	अग्नावग्नि स एवोक्त	वृ ह ९.११३
अखण्ड बिल्वपत्रैश्च	वृ हा ५.४०२	अग्नावहुतयः प्रोक्ता	वृ परा ७.२०९
अखण्डबिल्वपत्रैर्वा	वृ हा ५.४०५	अग्नावोदनपचने पाचये	शाण्डि ३.१०२
अखण्डबिल्वपत्रैर्वा	वृ हा ७.१९४	अग्निकार्यात् परिभ्रष्टाः	पराशर १२.२९
अखण्डा निस्तुषा श्रेष्ठाः	भार १४.४६	अग्निकार्यं ततः कुर्यात्	औ १.१७
अख्याय नृपतेर्वाजिपि	वृ परा ८.१०२	अग्निकार्यं तथा होमं	आश्व १०.४८
अगम्यागमनं कृत्वा	आप १०.१३	अग्निचित् कपिला सत्री	पराशर १२.४१
अगम्यागमनं गुर्वीसखीं	बौधा २.१६०	अग्निदग्धं प्ररोहेत	शंख लि ३२
अगम्यागमनं स्तेयं पेया	ब्र.या. १२.३६	अग्निदाता तथा चान्ये	दा ८९
अगम्यागमनात् पापाद्	वृ हा. ३.२९३	अग्निदाता तथा चान्ये	लिखित ६८
अगम्यागमनात्स्ते	ब्र.या. २.१२	अग्नि दानाञ्च ये लोका	या २.७६
अगम्यागमने प्रायाश्चित	विष्णु ५३	अग्नधामा धरानाथो	आंपू ५१८
अगम्यागमने विप्रो मद्य	लघुयम ३०	अग्निना भस्मनावापि	व्या १९६
अगम्यागमनोपेता	व्या ९३	अग्निनैव दहेद्भार्या	कात्या २३.८
अगम्यागमनापेयपानं	दक्ष ३.११	अग्निपरिचरणं नित्यं	ब्र.या. ८.४८
अगम्यागामिता यत्र	वृ परा १.४६	अग्नि प्रजापति सोमो	बौधा २.५.२४
अगम्यागामिनः शास्ति	नारद १३.७७	अग्नि प्रवेशाद् ब्रह्मलोकः	व १.२९.४
अगम्यानां गमने	बौधा २.२.७२	अग्निप्रवेशे नियतं	वृहस्पति ७५
अगस्ति अगीता मौङ्गल्याः	वृ गौ १.२०	अग्निमील इषेत्वादि	आश्व १.८९
अगस्त्यं भृगिराज	प्रजा १०१	अग्निमीले अग्न	कात्या २०.१६
अगस्त्यो दक्षिणे पूज्यः	ब्र.या. १०.१३३	अग्निमीलेऽनुवाकश्च	आश्व २३.६७
अगस्यागमनात्	बृ. मा. ७.१५५	अग्निमेकप्रपतने	औ ६.६०
अगारदाही गरदः कुंडाशी	मनु ३.१५८	अग्निं परिगताचैवपुनर्भृ	ब्र. या. ८.१६०
अगित च गतिं चैव	बृह ११.१०	अग्निं प्रजापतिस्सोमः	भार ६.५६
अगुप्ते क्षत्रियावैश्ये	मनु ८.३८५	अग्निं स्थाप्य विधानेन	ब्र. या. ८.८६
अगुरु क्षत्रियाणां तु	आ उ ५.९	अग्निं स्थाप्यविधानेन	ब्र.या. ८.२७४
अगुल्यग्रे भानुषम्	व १.३.५९	अग्निराविक वस्त्र हि	व्या ३०५
अगृह्यमाणकारणे	व १.१.६	अग्निर्मन्वेति यजुषा	वृ हा ८.२३०
अगोधूमं तु यच्छ्राद्ध	व्या २५१	अग्निर्वायुस्तथादित्य	बृ. या. २.७०
अग्न आयूषितिस्रो	आश्व १५.३८	अग्निवान्पार्व्वण	ब्र. या. ३.४०
अग्न आयूषि पवस	आश्व ९.७	अग्निश्च मा मन्युश्चेति	व १.२३.२०
अग्नप्रवेशं पञ्च अपि	वृ गौ ५.१११	अग्निश्चमेति सायान्हे	ब्र. या. २.६८
अग्नये त्वग्नि राजाय	वृ परा ११.१०४	अग्निश्चेत्यनुवाकश्च	भार ६.१३७
अग्नयेऽप्सुमते चैव	कात्या १८.१३	अग्निश्चैव तथा सोम	आश्व २.५३
अग्नये समिधमिति	व २.३.६४	अग्निष्टोमेस्त्वनुष्ठेयः	कण्व ४८९

अग्निष्टोमोऽतिपूर्वश्च	कण्व ४१५	अग्निमूर्धेति मंत्रोऽत्र	वृ परा ११.३१७
अग्निदो गरदश्चव	व १.३.१९	अग्नि नरो दीर्घतिभि	वृ हा ५.१३०
अग्निष्वात्तान् सोमापाश्च	बृ.या. ७.७९	अग्निं न वेति सूक्तेन	वृ हा ५.४०६
अग्निष्वात्तारम सर्वे	ब्र. या. ४.६३	अग्निं सोमं तथा सूर्य	वृ परा ११.२५१
अग्निसंरक्षणे शक्ति	आश्व १.६१	अग्निं वाऽऽहारयेदेनमप्सु	मनु ८.११४
अग्निं सोमं स्तथावायु	ब्र.या. ८.३१६	अग्निरिव कक्षं दहति	बौधा १.२.४९
अग्निस्तु नामधेयादौ	कात्या १८.१७	अग्निरेव सहस्राः	वृ हा २.३८
अग्निस्तुविश्रवस्तमं	आश्व ३.६	अग्निर्ज्वलति चान्नार्थ	वृ परा ५.११०
अग्निहीनाश्च ये विप्रा	ब्र. या. ७.५५	अग्निर्ये देवानामव	वृ हा ७.८
अग्निहीनास्तु ये विप्रा	ब्र.या. २.२	अग्निर्वायुः सहस्रांशु	मार १७.९
अग्निहोत्रजयाभूत्या	भार १३.५	अग्निवर्णा सुरां पीत्वा	वृ हा ६.२९२
अग्निहोत्रापरो विद्वान्	औ ४.६	अग्नि वाय्वंभ संयोगाद्	वृ परा १२.२३५
अग्निहोत्रफलावेदा	व्या ३६८	अग्निवायुराविभ्यस्तु	मनु १.२३
अग्निहोत्रं तपः सत्यं	दा ९	अग्निशक्तिपतुणाञ्च	वृ.गौ. ७.३२
अग्निहोत्रं तपः सत्यं	लघुशंख ५	अग्निशब्दं चतुर्थ्येक	वृ परा ७.२०५
अग्निहोत्रं तपः सत्यं	लिखित ५	अग्निनष्टोमसहस्रञ्च	वृ गौ. ९.७१
अग्निहोत्रं त्यजेद्	आप १०.१४	अग्निष्टोमस्त्वनुष्ठेयः	कपिल ९८३
अग्निहोत्री तपस्वी	व्यास ४.४३	अग्निष्टोमातिरात्राणां	का १५
अग्निहोत्री स एव	आंपू ६२५	अग्निष्टोमादिभियज्ञ्ये	वृ गौ. ६.१०१
अग्निकार्यं ततकुर्व्यान्	संवर्त ८	अग्निष्वात्तोपहूताश्च	वृ परा २.१८२
अग्निकुण्ड प्रमाण	वृ परा ११.३७	अग्निसंस्थापन कृत्वा	व २.७.७०
अग्निकुण्डात्परैर्मन्त्रै	वृ.गौ. १०.२७	अग्नि सर्पादि मृत्यूनां	वृ परा ७.१४६
अग्निचित्कपिला सत्री	वृ.गौ. १४.३७	अग्नि सर्पादिमृत्यूनां	वृ परा ७.१४८
अग्निदग्धानग्निदग्धान्	मनु ३.१९९	अग्निं सोमः समस्तौ	वृ परा ४.१६३
अग्निदान् भक्तदाश्चैव	मनु ९.२७८	अग्निस्थापन विचार	विष्णु ६७
अग्निदाश्चैव ये तेषां	वृ परा ८.५६	अग्निहीनास्तु ये	ब्र.या. २.१३५
अग्निनात्मनि वैतानांत	मनु ६.२५	अग्निहोत्रादिपरिभ्रष्टः	बृ. गौ. २१.११
अग्निपक्वाशनो वा	मनु ६.१७	अग्निहोत्रप्रकारन्तु	बृ. गौ. १५.२४
अग्निपरीक्षा वर्णनम्	दिष्णु ११	अग्निहोत्रफला वेदाः	बृ.गौ. १५.४५
अग्निपुच्छामग्निखुरा	वृ.गौ. ९.८	अग्निहोत्रं च जुहुयाद्	मनु ४.२५
अग्निप्रकारमंत्रोऽयं	वृ हा. ३.३९०	अग्निहोत्रं तप सत्यं	अत्रि स ४३
अग्निप्रपतनं केचिद्	वृ हा ६.२४५	अग्निहोत्रं पृथा राजन्	वृ.गौ. २१.५
अग्निप्रवेशं यश्चापि	वृ.गौ. ७.११७	अग्निहोत्रं वनेवासः	बृ.गौ. २१.४
अग्निमध्योद्भवां दिव्यां	वृ.गौ. ९.७	अग्निहोत्रं समादाय	मनु ६.४
अग्निमात्मनि संस्थाप्य	संवर्त १०२	अग्निहोत्रव्रतपरान्	बृ.गौ. २१.७

अग्निहोत्रस्य दर्शस्म	बृ.गौ. १५.५६	अग्नौकरणशेषं तु	लघुशंख २४
अग्निहोत्री च यो विप्रः	आंगिरस ५२	अग्नौकरणशेषं तु	लिखित २९
अग्निहोत्री च यो विप्र	वृ परा ७.२२	अग्नौकरणशेषं तु	वृ परा ७.२१०
अग्निहोत्री तपस्वी च	आंगिरस ६३	अग्नौकरणशेषं तु	व्या १२५
अग्निहोत्रोपचरणं	पु १५	अग्नौ करणहोमश्च	कात्या १७.१२
अग्निहोत्र्यपविध्याग्नीन्	मनु ११.४१	अग्नौकरं तु देवस्य	व्या १७१
अग्नीनामथवाग्नेस्तु	बृ.गौ. १५.४०	अग्नौ करिष्यन्नादाय	या १.२३५
अग्नीन्धनं भैक्षचर्या	मनु २.१०८	अग्नौ क्रियावतां देवो	वृ परा ४.११९
अग्नीन् वाप्यात्मसात्	या ३.५४	अग्नौ प्रताप्य हस्तं	व २.३.६५
अग्नींश्च जुहुयात्प्रातः	शाण्डि २.९०	अग्नौ प्रास्ताहुति	बृह ९.८९
अग्निषोमौ स्थितौ	कण्व ४२	अग्नौ प्रास्ताहुति	मनु ३.७६
अग्ने कुशपञ्चउपयमन	ब्र.या. ८.२५३	अग्नौ यद्भूयते हव्यं	वृ हा ७.१०
अग्ने त्वं चाग्न आयूंषि	आश्व १.५७	अग्नौव्याहृतिभि पूर्व	लिखित ३९
अग्नेत्वं तु अतमेति	व २.४.६३	अग्नौ सुवर्णमक्षीणं रजते	या २.१८१
अग्नेः पश्चिमतो ल	व्यास २.५२	अग्नौहोमं प्रकुर्वीत	वृ हा २.१३
अग्नेः प्रदक्षिणंकृत्वा	ब्र.या. ८.२६	अग्न्यगारे गवां गोष्ठे	आप ९.२०
अग्नेः प्रदक्षिणं कृत्वा	ब्र.या. ८.२२७	अग्नगोर गवागोष्ठे	औ १.१२
अग्ने प्रपाठके तुर्यमन्ति	कण्व ५२३	अग्न्यगारे गवां गोष्ठे	मनु ४.५८
अग्नेरपत्यं प्रथमं	वृहस्पति ३१	अग्न्यभावे तु विप्रस्य	औ ५.४४
अग्नेरपत्यं प्रथमं	व. १.२८.१६	अग्न्यभावे तु विप्रस्य	मनु ३.२१२
अग्नेरपत्यं प्रथमं	संवर्त ९४	अग्न्यागारे गवां गोष्ठे	आंगिरस ६१
अग्नेरपत्यं प्रथमं हिरण्यं	अत्रि ३.१६	अग्न्यागारे गवां मध्ये	बौधा २.३.६५
अग्नेरुतस्तिष्ठन्	व २.३.५७	अग्न्यादि गौतमाद्युक्तो	कात्या १४.४
अग्नेरुतरतः स्थाप्य	व २.३.२३	अग्न्याधानन्तु येनाथ	बृ.गौ. १५.४८
अग्नेर्वायाप्रायाश्चित्ते	ब्र.या. ८.२७९	अग्न्याधानं प्रथमतः	कण्व ५२७
अग्नेः सोमयमाभ्यां	मनु ३.२११	अग्न्याधाने क्षौमाणि	बौधा १.६.११
अग्नेः सोमस्य चैवादो	मनु ३.८५	अग्न्याधेय प्रमृत्यथे	बौधा २.२.८५
अग्नेस्तु पुरतस्तिष्ठन्	कण्व ९१	अग्न्याधेयं पाकयज्ञानं	मनु २.१.४३
अग्नेः स्थाने वायुचन्द्र	कात्या २५.२	अग्न्याशाग्रैः कुशैः कार्यं	कात्या १७.४
अग्नौकरणकार्यातु भवतिति	कपिल १३६	अग्न्युपायं गता या	का. ७
अग्नौ करणतौ वापि	लोहि ३४७	अग्रगण्यश्च भक्तानां वरिष्ठो	कपिल ७
अग्नौ करणपिंडाश्च	वृ परा ७.७३	अग्र जन्मगृहे प्राप्तं	व्या २२
अग्नौकरणमाहुत्या	ब्र.या. ४.८३	अग्र जन्मैः सदाकार्यं	व्या २३
अग्नौकरणमेकं स्यात्	व्या १३८	अग्रतः सम्प्रवक्ष्यामि	ब्र.मा. १.७
अग्नौकरणशेषन्तु	ब्र. मा. ४.८५	अग्रतस्तु हनूमन्तं	वृहा ३.२६४

अग्रतो वामनं चैव श्रीधरं	विश्व २.१४	अंकुरार्पणपात्रैश्च	वृ हा ६.१५
अग्रभागे अन्तरालस्य	आश्व १.१२७	अङ्केनारोहयेत्पादं	शाण्डि ४.११६
अग्रं नवेभ्यः सस्येभ्यो	नारद १८.३४	अङ्कोलं गिरिकर्णी	वृ.गौ. ८.८२
अग्रं वृक्षस्य राजानो	शंखलि २२	अङ्गत्वात् सर्वधर्माणां	वृ हा ५.३७
अग्राह्याभेद्यमुतीनां	आंपू २२८	अङ्गभावेन देवानामर्चनं	व २.२६
अग्राह्याः श्राद्धपाके च	व्या ३१३	अङ्ग प्रत्यङ्ग भूतेन	वृ परा ८.१५५
अग्राह्यास्त्वग्रिमा	वृ या. ७.१५४	अङ्ग प्रत्यङ्गसंपूर्णे	लघुयम ४४
अग्रेणाऽऽहवनीयं ब्रह्मा	बौधा १.७.१९	अङ्गमुपस्मृश्य सिञ्च	बौधा १.७.५
अग्रे प्रदक्षिणं कृत्वा	ब्र.या. ८.२६५	अङ्गलीषु तथाङ्गेषु	वृ हा ३.३४६
अग्रेदिधिषूपति कृच्छ्रं	व १२०.१०	अङ्गहोमसमित् तत्र	कात्या ८.२३
अग्रेऽप्युद्धरतां गच्छेत्	व ११५.१४	अङ्गदङ्गात्संभवति	कण्व ७५४
अग्रे माहिषिकं दृष्ट्वा	बृ.य. ३.१६	अङ्गादङ्गात् संभावसि	बौधा २.२.१६
अग्रे माहिषिकं दृष्ट्वा	यम ३५	अङ्गानि चतुरो वेदा	बृ.गौ. २१.१६
अग्रयाः सर्वेषु वेदेषु	मनु ३.१८४	अङ्गानि तत्तत्कालेषु	आंपू १०३
अग्रयाः सर्वेषु वेदेषु	या १.२१९	अङ्गानि व तन्श्चैव	ब्र.या. ८.२१२
अघमं दशावारं स्यात्	कण्व २४६	अङ्गापकर्षणं नैव	आंपू १०२
अघमर्षणमन्त्रेण स्नाय	विश्व १.७१	अङ्गावपीडनायां च	मनु ८.२८७
अघमर्षणां देवकृतं	व १.२८.११	अङ्गीकुर्वन्ति तस्मात्	कपिल ७८०
अघमर्षणां देवकृतं	शंख ११.१	अङ्गीकृतं महाभागैः	वृ हा ६.४३८
अघमर्षणं वेदवतं	अत्रि ३.११	अङ्गुलिकनिष्ठिकामूले	व १.३.५८
अघमर्षणसाहस्रैर	नारा ३.१५	अङ्गुलिभिस्तरेखाभि	नार ६.१०१
अघमर्षणसूक्तस्य	वृ.या. ७.१७२	अङ्गुलिमूलमार्षम्	बौधा १.५.१८
अघमर्षणसूक्तस्य ऋषि	वाधू ८६	अङ्गुलिमोक्षत्रितयं	बृ.या. ८.११
अघमर्षणसूक्तस्य	वृ परा २.५५	अङ्गुलिमोक्षत्रितयं	बृ.या. ८.१२
अघमर्षणसूक्तेन	बृ.या. ७.१८८	अङ्गुलीभि स्त्रिभि	बृ.गौ. १६.२७
अघमर्षणसूक्तेन	बृ.या. ७.१७०	अङ्गुलीर्ग्रन्थि भेदस्य	मनु ९.२७७
अघृताघ्रि गोधूमाय	ब्र.मा. २.१८८	अङ्गुलीषु यथाऽङ्गेषु	वृ हा ३.३३२
अघोख्येन हृदये	मार ५.३५	अङ्गुलीष्वपि चाङ्गेषु	वृ हा ३.२१९
अघोराः पितर संतु	ब्र.या. ३.६५	अङ्गुलीष्वपि चाङ्गेषु	वृ हा ३.२४६
अघोराः पितरः सन्तु	ब्र.या. ४.१३७	अङ्गुलीष्वपि तेनैव	वृ हा ३.३०३
अघोषमव्यञ्जनमस्वरं	बृ.या. २.१११	अङ्गुलैश्चाष्टभितस्माद्	वृ परा ५.६३
अध्यपात्रस्थिरता दर्भाः	व्या १२७	अङ्गुल्यग्रं दैवम्	बौधा १.५.१७
अङ्कयित्वा स ना चक्रेण	वृ हा २.२७	अङ्गुल्या अङ्गुष्ठयोः रीदि	वृ परा १२.३५७
अङ्कयेच्छुद्धखचक्राभ्यां	शाण्डि ३.७६	अङ्गुल्याक्षसृजावापि	भार ११.१०४
अङ्कार्यत्वा शिशोः पश्चान्नाम	वृ हा २.२६	अङ्गुल्या दंतकाष्ठं च	अत्रि स ३१४

अंगुल्या दन्तकाष्ठं	वृ परा ८.२८८	अंगुलीभिश्चतश्रुभि	भार ६.९३
अङ्गल्या यः पवित्राणि	बृ.य. ३.३२	अङ्गुष्ठस्य कनिष्ठायाः	भार ४.१५
अङ्गल्यास्फोटनं लीला	शाण्डि १.२५	अङ्गुष्ठाभ्यङ्गुला प्राहुः	भार २.५७
अङ्गुष्ठच्छायया तोयं	विश्वा ५.३६	अचक्रधारिणं यस्तु	वृ हा २.१३२
अङ्गुष्ठ तर्जनीदीर्घ	भार २.५६	अचक्रधारी योविप्रो	वृ हा १.२६
अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां तु	वृ हा ४.२१	अचक्रधारी विप्रस्तु	वृ हा २.२९
अङ्गुष्ठपर्वमात्रस्तु	आंगिरस २८	अचक्राय विचक्राय	वृ हा ३.१२३
अङ्गुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तो	वाधू ११०	अचक्राय विचक्राय	वृ हा ३.३८७
अङ्गुष्ठमात्र स्थूलः	आ उ १०.२	अचक्षुर्विषयं दुर्गं	भनु ४.७७
अङ्गुष्ठमात्रः स्थूलो वा	पराशर ९.२	अचक्षुचला विषण्णान्तः	शाण्डि १.८३
अङ्गुष्ठं मात्र हृदयं	कात्या ७.९	अचिन्त्यः अहम् अनन्तः अहम्	वृगौ १.५९
अङ्गुष्ठमात्रस्थूलस्तु	लघुयम ४१	अचोरा अपि दृश्यन्ते	नारद १८.६४
अङ्गुष्ठमूलमध्ये तु	व्या ९६	अचौरे दापिते मोषे	नारद १८.८०
अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं	भनु २.५९	अचौरैश्चैरतां याति	ब्र.या. १२.१८
अङ्गुष्ठामूलस्योत्तरतो	व १.३.२९	अच्छलेनैव चान्विच्छेत्तमर्थं	भनु ८.१८७
अङ्गुष्ठमूलान्तरतो	औ २.१६	आच्छाद्यालंकृत्यैषा	वौधा १.११.३
अङ्गुष्ठ मूले च तथा	शंख १०.२	अच्छिद्रकारिणश्शान्त	शाण्डि ४.१२
अङ्गुष्ठमूले ब्राह्मं तु	बृ.या. ७.७६	अच्छिद्रकारिणां नित्यं	शाण्डि ४.२३०
अङ्गुष्ठस्य प्रदेशिन्या	बृ.या. ७.७७	अच्छिद्रः पञ्चकालज्ञः	वृ.गौ. २२.२५
अङ्गुष्ठस्य प्रदेशिन्या	वृ परा २.२२३	अच्छिद्रमिति यद्वाक्यं	पराशर ६.४९
अङ्गुष्ठायं पित्र्यम्	वौधा १.५.१६	अच्छिद्र सदगुणं	आंपू ९०४
अङ्गुष्ठाग्रे तु संमृज्य	व्या ५०	अच्छिन्नानाले यदृतं	वृ परा १०.३५९
अङ्गुष्ठाङ्गुलमानन्तु	कात्या ७.६	अच्छिष्टं न प्रमृज्यात्	व्या ३.६६
अङ्गुष्ठाङ्गुलकनिष्ठान्तं	भार १९.१९	अच्छिष्टं न प्रमृज्यात्	व १.११.१९
अङ्गुष्ठानामिकाम्याञ्च	लहा ४.३७	अजङ्गव्युन्तु वैश्यस्य	ब्र.या. ८.१८
अङ्गुष्ठानामिकाभ्यातु	वाधू १३६	अजप्यैतान् महामन्त्रान्	वृ हा ३.२७६
अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां च गृहीत्वा	ब्र.या ८.२४२	अजलश्चेदपोगण्डो	नारद २.७२
अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां तु	औ २.२०	अजलश्चेदपोगण्डो	भनु ८.१४८
अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां तु	विश्वा ३.१६	अजस्त्वमगमः पन्था	विष्णु म ४४
अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां तु	शंख १०.८	अजस्य दक्षिणे कर्णे	लिखित ३१
अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां तु	शाण्डि २.३१	अजस्य नाभावुद्भूतं	बृ.या. ३.२७
अङ्गुष्ठेन प्रदेशिन्या	क्ष २.१६	अजस्रं वैश्वदेवा	कण्व ३७५
अङ्गुष्ठेन प्रदेशिन्या	वृ परा २.३४	अजा गावो महिष्यश्च	अत्रिस २९८
अङ्गान्यासं ततः प्रोक्त	भार ६.५७	अजागावो महिष्यश्च	व्या ३५७
अङ्गान्यामूनित्युक्तनि	भार ६.८९	अजातदन्ता या तु स्याद्	वृ परा १०.३०३

अजातदन्ता ये बाला	पराशर ३.१६	अज्ञातदोषादुष्टा या	नारद १३.९८
अजातदन्ता ये बाला	वृ परा ८.४५	अज्ञातपितृको यस्तु	नारद १४.१७
अजातपुत्रस्तैनैव पुत्र्ययं	लोहि २२५	अज्ञातपूर्वं गणिका	भार ७.११५
अजातव्यंजना लोम्नी	कात्या २८.४	अज्ञाताख्यज्ञातिरंडाकृता	कपिल ५८८
अजानन् यस्तु विब्रूया	आ ६.१३	अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	पराशर ८.१४
अजानन् यो द्विजो नित्य	वृ परा ४.१९०	अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	वृ.य. ४.२९
अजानन् यो नरो ब्रूयात्	वृ परा ८.८४	अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	वाधू १७६
अजानन् सम्यग्	वृ परा ८.१९३	अज्ञात्वाऽऽस्यविधि विप्रः	भार १५.३
अजानन् हृदयानतःस्थं	शाण्डि १.६६	अज्ञात्वैतानि होमानि	भार १९.३८
अजानानां च दात्रणा	आं उ ६.१४	अज्ञानतमसाऽन्धानां	बृह १२.३३
अंजाभिधातने चैव	शाता २.५२	अज्ञानतः स्नानमात्र	दा ९८
अजां च महिषीञ्चैव	अ ३५	अज्ञानतिमिरान्धस्य	अत्रि १.१
अजावयो गृहं च कनिष्ठस्य व	१.१७.४१	अज्ञानतिमिरान्धस्य	आप ८.१७
अजाविकं सैकशफं न	मनु ९.११९	अज्ञानाच्च कृतं	वृ.य ५.१२
अजाविकाश्वमहिषी	ब्र.या. १३.२०	अज्ञानाच्चरितो पापे दूष्टवा	शाण्डि २.५४
अजाविके तथा रुद्धे	नारद ७.१६	अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि	लोहि ६५०
अजाविके तु संरुद्धे वृकैः	मनु ८.२३५	अज्ञानात्तान्तु यो गच्छेत	पराशर १०.१२
अजाविको माहिष्श्च	वृ.य. ३.२६	अज्ञानस्तु द्विजश्रेष्ठ	यम ७८
अजाश्व मुखतो मेध्यं	या १.१९४	अज्ञानात् पिवते तोयं	अत्रिस २५१
अजाश्वा मुखतो मेध्या	व १.२८.९	अज्ञानात् पिवते तोयं	अंगिरस ७
अजितोऽस्मीति वक्तारं	लोहि ७०६	अज्ञानात् प्राप्य विण्मूत्र	पराशर १२.२
अजिनमेकवस्त्र च योगे	शाण्डि ४.२०२	अज्ञानात् प्रास्य विण्मूलं	अत्रि स ७५
अजिनं दण्डकाष्ठञ्च	ल हा ३.५	अज्ञानात् प्राश्य विण्मूत्र	औ ९.४२
अजिनं मेखला दण्डो	पराशर १२.३	अज्ञानात् प्राश्य विण्मूत्र	मनु ११.१५१
अजिह्नो अशरणो	व १.१०.२१	अज्ञानात् सुरा पीत्वा	या ३.२५४
अजीवंस्तु यथोक्तेन	मनु १०.८२	अज्ञानाद् भुक्ति शुद्ध्यर्थ	औ ९.५६
अजीगर्तः सुत हन्तुं	मनु १०.१०५	अज्ञानाद् भुजते विप्राः	पराशर ११.१५
अजीर्णविमने स्नान	आंपू १७३	अज्ञानाद् ब्राह्मणो भुक्त्वा	लघुयम २६
अजीर्णः स्यात्तदा	आंपू २९१	अज्ञानाद् ब्राह्मणोऽश्नीयात्	अत्रिस १७४
अजीवन्तः स्वधर्मेण	व १.२.२७	अज्ञानाद्यादिवा ज्ञानात्कृत्वा	मनु ११.२३३
अजेतुलायां मिथुने	भार २.४०	अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा	आश्व २४.२८
अजैकवाद्दहिवर्बुध्न्य	ब्र.या. १०.११३	अज्ञानाद्धारुणी पीत्वा	मनु ११.१४७
अजैकपाद्दुर्बुध्नयो	वृ परा २.१९०	अज्ञानाभिगतौ स्त्रीणां	वृ परा ८.२४८
अज्ञ सभायां विदुषां	लोहि ७१४	अज्ञाना मिच्छया ज्ञानं	विष्णु म ९१
अज्ञातग्रामतातादिर्ज्ञा	आंपू १०५०	अज्ञानेन प्रमादेन	भार ६.१७६

अज्ञेभ्यो ग्रंथिनः श्रेष्ठा	मनु १२.१०३	अत ऊर्ध्वं श्ववायस	बौधा १.४.६
अज्ञोभवति वै बालः	मनु २.१५३	अत ऊर्ध्वं समानोदक	व १.१७.७०
अंजनं कुण्डलादीनि	आश्व १४.४	अतएव द्विजः पुत्री	वृ परा ७.५५
अंजनाद्रज्जनंदद्यात्	व २.६.२८८	अतएव प्रक्ष्यामि	ब्र.या. २.१
अजनाभ्यजनमेवास्या	व १.५.१३	अतएवात्र भूयश्च	कण्व ६९७
अज्जलिना जलमादाय	विश्वा ५.४३	अतः कनिष्ठास्तनयाः निन्दित	कपिल ९२
अंजलीनं परयेद् धृत्वा	आश्व १५.४०	अतः कुर्वनिजं कर्म	ल. हा. ७.२०
अटन्त्यत्रैव सततं नित्यं	कपिल २०१	अतन्द्रिश्च शास्त्रार्थे	शाण्डि ५.४३
अटव्यः पर्वता पुण्या	औ ५.१७	अतन्द्रितस्य स्वाध्याये	शाण्डि २.५
अटेत पृथिवी सर्वा	ब्र. या. ४.१५९	अतः परज्ज दुष्टानां	संवर्त १६९
अणिमादिक सिद्धीनां	वृ परा ११.१८३	अतः परं गृहस्थस्य	पराशर २.१
अणिमाद्यैस्तु संयुक्त	वृ ह ९.१२२	अतः परं गृहस्थस्य	वृ परा ५.१
अणोरणीयान् महतो	शंख ७.१९	अतः परं न भुंजीत त्यक्त्वा	अत्रिस २६७
अण्डजाः पक्षिणः सर्पा	मनु १.४४	अतः परं प्रवक्ष्यामि	अत्रि स ८२
अंडादिसूत्रपर्यन्त प्रमाणं	भार २.५८	अतः परं प्रवक्ष्यामि	अभिन्न १३५
अण्व्यो मात्रा विनाशिन्यो	मनु १.२७	अतः परं प्रवक्ष्यामि	अत्रिस ३४२
अत उर्ध्वं पतन्त्येते	या १.३८	अतः परं प्रवक्ष्यामि	औसं ४
अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते	मनु २.३९	अतः परं प्रवक्ष्यामि	देवल ३६
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि	अंगिरस १२	अतः परं प्रवक्ष्यामि	नारद १९.२२
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि	आप ६.१	अतः परं प्रवक्ष्यामि	नारद १९.३२
अतः ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि	कात्या ११.१	अतः परं प्रवक्ष्यामि	नारद १९.३९
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि	वृ.या. ८.१	अतः परं प्रवक्ष्यामि	पराशर ६.१
अत ऊर्ध्वन्तु ये विप्राः	पराशर ८.२२	अतः परं प्रवक्ष्यामि	बृ.य. ५.१
अत ऊर्ध्वन्तु संस्कारो	२.६.४३३	अतः परं प्रवक्ष्यामि	बृ.या. ३.१
अत ऊर्ध्वन्तु सावित्र्य	व २.६.४८२	अतः परं प्रवक्ष्यामि	बृ.या. ४.१
अत ऊर्ध्वं गुरुभिरनुमता	बौधा २.२.६८	अतः परं प्रवक्ष्यामि	बृ.या. ६.१
अत ऊर्ध्वं तु छन्दासि	मनु ४.९८	अतः परं प्रवक्ष्यामि	ब्र.या. ८.१
अत ऊर्ध्वतु यत्स्नातः	आं उ ९.१३	अतः परं प्रवक्ष्यामि	लहा ५.१
अत ऊर्ध्वं तु ये विप्रा	आं उ ४.८	अतः परं प्रवक्ष्यामि	व्या ३५८
अत ऊर्ध्वं पतित	व १.११.५४	अतः परं प्रवक्ष्यामि	शंख १०.१
अत ऊर्ध्वं प्रत्यहं वा	व २.६.३७४	अतः परं विशेषन्तु	वृ.गौ. १०.१६
अत ऊर्ध्वम्प्रवक्ष्यामि	ब्र.या. ७.५६	अतः परं सुरापस्य	संवर्त ११४
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि	आं उ २.१	अतः परीक्ष्यमुभयमतद्वाज्ञा	नारद १.६१
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि	आं उ १२.१	अतपास्त्वनधीयानः	मनु ४.१९०
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि	पराशर ८.३	अतः पुत्रेण जातेन	नारद २.६

अतः शुद्धिं प्रवक्ष्यामि	पराशर ३.१	अतिथींश्च लभेमहि	ब्र.या. ४.१३९
अतश्च भूमहत्याया	व १.५.११	अतिथेऽमरदेहस्त्वं	वृ परा ४.२०४
अतः सम्यग्विधिं ज्ञात्वा	भार १५.५	अतिथौ तद्धिनभ्रान्त्या	आंपू ९४८
अतस्तस्य तेषां तु	वृ परा २.७६	अतिथ्याराधानादीनि	नारा ५.१६
अतस्तु विपरीतस्य	मनु ७.३४	अतिपक्वमपर्वताक्षेमंदग्धं	कपिल २२१
अतरिस्मन् तत्त्वमारोप्य	आंपू १२३	अतिपक्वाअपक्वा	भार १४.५१
अतः स्यात्कर्ममध्येऽपि	कण्व ३२७	अतिपक्वान्यपक्वानि	भार १४.१५
अतः स्वल्पीयसि द्वये	मनु ११.८	अतिपापादतिखलादति	कपिल ९८२
अतिकृच्छ्रं चरेत्पूर्वं	अत्रि ५.६६	अतुलादिपदैश्चपि संयुक्त	कपिल ९१६
अतिकृच्छ्रं पराकञ्चत्र्यब्दं	वृ हा ६.३८९	अतृप्ता एव नोते	आंपू १०९३
अतिक्रमं मृताहस्य	आश्व २४.२९	अतिरात्रात्परं तस्या	कण्व ४९२
अतिक्रान्तं तु कर्तव्यो	व २.६.४३६	अतिरात्रोऽप्तोर्यामश्च	कण्व ४९४
अतिक्रान्ते दशाहे च	मनु ५.७६	अतिरिक्तं न दातव्य	आप १.१२
अतिक्रान्ते दशाहे तु	अत्रि ५.२९	अतिरोचनकं दिव्यं तृतीयं	वृ हा २.१०५
अतिक्रामन्ति ये कालं	विश्वा ६.१५	अतिर्यगुपेयात	व १.१२.१९
अतिक्रामेत् प्रमत्त या	मनु ९.७८	अतिलोम्नीं च निर्लोम्नी	ब्र.या. ८.१५७
अतिक्षुद्रैककालेषु	आंपू २१३	अतिवादंस्तिक्षेत	मनु ६.४७
अतिगुह्यमिदं शास्त्र	कपिल ५६०	अतिवालातिदोहाभ्यां	आप १.२४
अतिगुह्यमिदं शास्त्र सर्व	लोहि ५७६	अतिवाहातिदोहाभ्यां	दा १०३
अतिमानादतिक्रोधात्	पराशर ४.१	अतिवाह्यातिदोहाभ्यां	लघु शंख ५३
अतिमानादतिक्रोधात्	वृ परा ८.५०	अतिवेला यदि भवेत्	शाण्डि ४.१७१
अतिचातुर्यतोऽतीव	आंपू ५८२	अतिवैदग्ध्यमापन्नां अत्यन्त	लोहि ६७२
अतिदाहे चरेत् पादं	पराशर ९.२९	अतिसूक्ष्मा अतिस्थूलाः	भार ७.२२
अतिदाहेऽति वाते च	पराशर ९.२८	अतीत व्यवहारान्	बौधा २.२.४३
अतिदीर्घं तक्रं	वृ हा ४.११७	अतीतानागतमेयश्च	बृ. या. ८.५५
अतद्वृतकृतं कर्माकृत	लोहि ४३२	अतीते दशारात्रे तु	शंख १५.१२
अतिथित्वेऽपि वर्णेभ्यो	या १.१०७	अतीत्य वीरजामाशु	वृ हा ७.३२२
अतिथिन्तं विजानीयान्	व २.६.१९२	अतीन्द्रियः नमस्तुभ्यं	विष्णु म ५६
अतिथिं च गुरुञ्चैव	व २.५.६०	अतीन्द्रियः सुदुष्पारः	विष्णु १.५१
अतिथिं चाननुज्ञाप्य	मनु ४.१२२	अतैजसानामेव भूतानां	बौधा १.५.५०
अतिथिं श्राद्ध रक्षार्थ	प्रजा १९५	अतैजसानि पात्राणि	मनु ६.५३
अतिथिं श्रोत्रियं तृप्त	या १.११३	अतोऽजयन्मुनयो लोका	भार १८.१२२
अतिथिः यस्य भग्नाशो	वृ गौ ६.८९	अतो देवा इति जपन्	व २.७.९८
अतिथिर्यस्य भग्नाशो	पराशर १.५३	अतो देवोतिसूक्तेन	वृ हा ७.२९८
अतिथिन्स्तर्पयित्वाऽथ	व २.६.२३०	अतोदेवेति सूक्तेन	वृ हा ८.२३१

अतो न निन्तयेत्तीर्थं	वृ परा २.१०३	अत्नंतासक्तनातीव कार्या	कपिल २०५
अतो न भोजयेद् विप्रान्	वृ परा ७.७०	अत्यन्तैकपवित्राहि नान्या	आपू ९१०
अप्रो न्यं कलशं गृह्य	व २.७.३३	अत्यन्तोष्णेन निर्वर्त्यं	कण्व ७७३
अतोऽन्यतममास्थाय	मनु ११.८७	अत्यन्तोस्थासमायुक्तं श्राद्ध	कपिल २७०
अतोऽन्यतमया वृत्त्या	मनु ४.१३	अत्यन्यायमतिदोह	आंपू ९८
अतोऽन्यथा कर्तपत्यन्	बौधा १.१०.३९	अत्याराद्वन्धुपत्यश्च	लोहि ४०९
अतोऽन्यथा क्लेशभाक्	नारद १२.१९	अत्यासन्नान धीयान्नान्	वृ परा ६.२३४
अतोऽन्यथा भुञ्जन्वै	वृ गौ. ८.१८	अत्युक्तमन्नं विप्रस्तु	व्या २४०
अतोऽन्यथा वर्तमानः	नारद १३.९०	अत्युत्क्रान्तिप्रवृत्तस्य	आंपू २९५
अतोऽप्यन्नार्थभावेन	वृ परा ५.११८	अत्युद्यमी क्रियत एव	वृ परा १२.७०
अतोऽप्रवृत्ते राजसि कन्यां	नारद १३.२७	अत्युष्णमतिरूक्षं च	व २.६.१६६
अतो बालतरस्यापि	बृ.य. ३.२	अत्युष्णमशनं कार्यं	वृ परा ७.२६०
अतोबालतस्यापि	यम १६	अत्युष्णं पमानं तद्भक्षणमशन	कपिल ६५
अतो मनुष्ययज्ञार्थं	आम्ब १.१३४	अत्युष्णं सर्वमन्नं	मनु ३.२३६
अतो माखानमेवैतन्	प्रजा १५२	अत्र कुर्याद्विधानेन पश्चात्	व २.३.४४
अतो विवाहयेत्कन्यां	ब्र.या. ८.१४५	अत्र गाथा वायु गीताः	मनु ९.४२
अतो वेदाधिकारित्वं	वृ परा ६.३५०	अत्र त्र्यहमनध्याय	वृ परा ६.३५७
अतोव्याध्यातुरः	व्या ३३०	अत्र पितरोऽमुत्र च	आंपू ८५५
अतोहि ध्रुवः कुलापकर्ष	व १.१.२७	अत्र विष्णुर्मतं स्वस्य	आंपू ९९७
अत्यग्निष्टोममुख्यान्तान्	कपिल ९८४	अत्रसद्बन्धुसुहृद्भि	कण्व ५८३
अत्यन्तं कलौ भूम्यां तिष्ठे	कपिल २	अत्र स्नानं जपो होमो	संवर्त २०६
अत्यन्तचपलं श्रीं	आंपू ७५६	पुत्रस्वर्गश्चमोक्षश्च	व्या ३९१
अत्यन्तपितृवृत्त्यैक	आंपू ६०३	अत्र ह्येष्यदपत्यं	व १.२०.४३
अत्यंतबाल्यसंप्राप्तवैधव्या	कपिल ५२८	अत्रख्यातानि पुष्पाणि	भार १४.१८
अत्यन्तमलिनः कायो	दक्ष २.७	अत्राङ्ग वर्णमिप्युक्तं	वृ हा ७.५२
अत्यन्तमलिनः कायो	बृ.या. ७.१२३	अत्रानुक्तैर्महाकाल	आंपू ८४४
अत्यन्तमलिनः कायो	वृ परा २.९५	अत्रापि कश्यपस्यार्ष	वृ परा ११.३३५
अत्यन्तमलिने काये	नारा ३.२	अत्रापि षष्ठसप्तमौ	बौधा १.१.१३
अत्यन्तविषमे देशे	व २.६.४७५	अत्राप्यर्चनमात्रेण	वृ हा ५.४२६
अत्यन्तार्तो यदि ब्रह्मन्	नारा ९.३	अत्राप्य सपिण्डेषु	बौधा १.५.१३२
अत्यंतावश्यकत्वेन कारणं	कपिल १३२	अत्राप्युदाहरन्ति	व १.१३.१६
अत्यन्तावश्यकत्वेन	कपिल ९८८	अत्राप्युदाहरन्ति	व १.१४.५
अत्यन्तावश्यकत्वेन	लोहि ३४८	अत्राप्युदाहरन्ति	व १.१४.८
अत्यन्तावश्यकज्ञेया	कण्व ५७९	अत्राप्युदाहरन्ति	व १.१५.१३
अत्यन्तावश्यको न स्याद्	आंपू ६३६	अत्राप्युपदवं राज्ञा	वृ परा ५.१३१

अत्राहं कथयिष्यामि	ल हारी १.३	अथ चेन्मंत्र विद्युक्तो	वृ. म. ३.३९
अत्रिर्भृगुःकुत्ससशज्ञा	भार १९.९	अथ चैव द्विजः कुर्यात्	आश्व २३.१
अत्रिर्विशिष्टः काश्यप	भार १७.७	अथ तद् विन्यासो वृद्धि	कात्या १४.१
अत्रेति चानुमंत्र्याथ	आश्व २३.७५	अथ तेषां क्रमेणैव	शाता ६.१६
अत्रेन्दुराद्ये प्रहरे	कात्या १६.७	अथ त्रयाणां वक्ष्यामि	आंड १.२
अत्रेर्विष्णो साम्बर्ता	पराशर १.१४	अथ देयमदेयंच दत्त	नारद ५.२
अत्रैव गायेत्सामनि	व १.२३.४२	अथ द्विराचमेदेवं सदैव	भार १६.७
अत्रैव पितृयज्ञश्च	आंपू ६१५	अथ द्विजोऽभ्यनुज्ञातः	संवर्त ३५
अत्रोक्तं सर्वमंत्राणां	भार ५.५२	अथ नावं सुविस्तीर्णी	वृ हा ७.२५३
अत्रोचुरपरे केचित्	वृ परा १०.९५	अथ नित्योत्सवे पूजा	वृ हा ६.५१
अत्रौरसः प्रकृथितः धर्म	लोहि ७९	अथ नैमित्तिकं वक्ष्ये	व २.६.२३२
अर्थिनामिष्टदानेन सर्वदा	शाण्डि १.२७	अथ पंगुजङ्गोन्मत्तमूका	कपिल ३४४
अत्वरः सुमनाः क्रोधकामं	शाण्डि ४.२७	अथ पतनीयानि	बौधा २.१.५०
अथ ऊर्ध्वं दन्तजन्म	औ ६.१६	अथ परिविविदानः	व १.२०.९
अथ कमण्डलुचर्या	बौधा १.४.१	अथ पश्चिम संध्यायां	भार ६.१३६
अथ कमण्डलुचर्या	बौधा १.१२.१६	अथपादादिमूर्ध्वतं	भार ६.८२
अथकर्णवेधं धः वर्षे तृतीये ब्र.या.	८.३५६	अथ पिण्डावशिष्टान्नं	औ ५.५०
अथ कल्पं प्रवक्ष्यामि	भार १९.१	अथ पुत्रादिनाप्लुत्य	कात्या २१.८
अथ कश्चित्प्रमादेन	औ ७.३	अथ पुष्पांजलि कृत्वा	ल हा ४.४९
अथकिं बहुनोक्तेन	वृ परा १०.२२३	अथ पूजा प्रवक्ष्यामि	भार ११.४
अथ कृष्णायसीं दद्यात्	औ ९.९	अथ प्रक्षालयेत्पादौ	वृ.गौ. ७.२७
अथ कृतापसव्ययो	शंख १३.८	अथ भागवतीमिष्टि	वृ हा ७.२०४
अथ खल्वयं पुरुषो	व १.२२.१	अथ भ्रातृणा दायविभागः	व १.१७.३९
अथ गोघ्नस्य वक्ष्यामि	वृ परा ८.१२४	अथ मासे चतुर्थे तु	व २.३.१
अथ चप ब्रजेद् विद्वान्	वृ हा ८.२१४	अथ मूलमनाहार्य	मनु ८.२०२
अथ चान्द्रायण विधि	व १.२३.३९	अत यज्ञोपवीतस्य	भार १५.१
अथ चेत्त्वरते कर्तुं	व १.२७.१७	अथ यज्ञोपवीतस्य	भार १६.१
अथ चेददधिकच्छिष्टी	बौधा १.५.३१	अथ यदर्वाचीनं	व १.२.९
अथ चेदनृतं ब्रूयुः	नारद १२.७	अथ यदि दशरात्रा	बौधा १.५.१२४
अथ चेदन्नेनोच्छिष्टी	बौधा १.५.३०	अथ राजधर्माः	विष्णु अ ३
अथ चेन्न लभेतान्यां	कात्या ६.१५	अतर्वेदिनं तद्वदुत्तरे	वृ परा ११.२८२
अतचेन्मंत्रविद्युक्तः	अत्रि स ३४८	अथवीगिरसस्तुष्टै	भार ४.२६
अथ चेन्मंत्रविद्युक्त	लघु शंख २२	अथवीशिरसि प्रोक्तमूर्ध्व	वाधू १०३
अथ चेन्मंत्रविद्युक्तः	लिखित २८	अथर्वेदस्योपवेदं	ब्र.या. १.४७
अथ चेनमंत्रविद्युक्तः	व १.११.१७	अथ वक्ष्यामि गायत्र्या	भार १२.१

अथवक्ष्यामि राजेन्द्र	वृ हा ४.१	अथ स्नातक व्रतानि	बौधा २.३.१३
अथ वक्ष्यामि राजेन्द्र	वृ हा ८.१	अथ स्नातकस्य	बौधा १.३.१
अथ वक्ष्यामि राजर्षे	वृ हा ७.९१	अथ स्व ज्ञातिजोवापि	ब्र.या. ७.३६
अथव ब्रह्मकूर्चन्तु	वृ.गौ. २०.३९	अथहस्ताङ्गदेहेषु कुर्यान्नि	भार १३.९
अथ वसेद्यदा राजावज्ञानाद	लघु यम ६५	अथ हस्तौ प्रक्षाल्य	बौधा २.५.१
अथवा कालिनयमो न	नारद २.१.४९	अथ हैके ब्रुवते	बौधा २.५.२
अथवा क्रियमाणेषु	आप ३.८	अथागम्य गृहं विप्रः	व्यास २.१
अथवा जपमात्रेण काला	विश्वा १.१०	अथाग्रभूमिमासिजचैत्	कात्या ४.५
अथवा तण्डुलेनापि	विश्वा ६.५१	अथागम्य निदिध्यास्य	ल हा ६.२०
अथवा तुलसी पुन्नां कृत	शाण्डि ३.१४	अथाञ्जलिनाऽप उपहंति	बौधा २.५.७
अथवा दैत्यसङ्घाः च	वृ गौ ३.४४	अथातः पुरुषनि श्रेय	व १.१.१
अथवा द्वौ विश्वेदेवो	व्या १८८	अथातः प्रायश्चित्तानि	बौधा २.१.१
अथवानुमतो यः स्याद्	नारद २.१.७१	अथातः शौचाधिष्ठान्	बौधा १.५.१
अथ वाऽपि त्रयोवाऽपि	आश्व २४.११	अथातः शौचाधिष्ठानम्	बौधा १.१२.१४
अथवा ब्राह्मणास्तुष्टाः	पराशर ६.५१	अथातः संध्योपासनविधिं	बौधा २.४.१
अथवा ब्रह्मबन्धुः	कण्व २२६	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	ब्र.या. ३.१
अथवा भोजयेदेकं	औ ५.२७	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	ब्र.या. ५.१
अथवा मार्गपाल्येऽह्नि	कात्या २६.८	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	ब्र.या. ६.७
अथवा मुच्यते पापात्	अ १२९	अथातः संप्रवक्ष्यामि	भार १३.१
अथवा मूलमंत्र तु	वृ हा ६.७७	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा १.४९
अथवा यभ्यसन् वेदं	या ३.२०४	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ८.१
अथवा योषितं गच्छेद्	वाधू १४६	अथातः संप्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.७१
अथवात्यकशस्त्राणि	भार १२.२२	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ११.२०३
अथवाऽसौ पदेनाम	आश्व १०.१९	अथातः समप्रवक्ष्यामि	वृ परा ११.२४१
अथ विजानीयात्पूर्वादि	भार २.१	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ११.२६३
अथ विप्रो वनं गच्छेद्विना	वृ परा १२.९६	अथातः सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा १२.१.४५
अथ वृक्षप्रमाणेन दृश्य	शाण्डि ५.२	अथातः संप्रवक्ष्यामि	ब्र.या. ११.१
अथ शक्तिविहीनः	नारद २.१.१०	अथातः सिद्धिकामः	वृ परा ११.१.५९
अथ शब्दस्तु रवि भागे	प्रजा १५५	अथातः स्नातकव्रतानि	व १.१२.१
अथ संवत्सरादूर्ध्वं	देवल १५	अता तः स्यादनध्यायो	वृ परा ६.३५४
अथ संस्थापन विधिं	व २.७.२	अथातः स्वाध्याय	व १.१३.१
अथ सन्तुष्टमनसाः	पराशर १.१०	अथातस्संप्रवक्ष्यामि	विश्वा ७.१
अथ संध्यात्रयोपास्ति	भार ६.१	अथाति कृच्छ्रः	व १.२४.१
अथ सर्पेण वा दष्टो	ब्र.या. १२.२५	अथातो गोभिलोक्तानां	कात्या १.१
अथ सावित्री मन्वा	ब्र.या. ८.२९	अथातो द्रव्य संशुद्धि	पराशर ७.१

अथातो नृपतेर्धर्म	वृ परा १२.१	अथापि मुख्यसार्थ निश्चयैः	कपिल ९
अथातो भोज्याभोज्यं	व १.१४.१	अथापि यमगीता	व १.१८.१०
अथातो यमधर्मस्य	वृ.य. १.१	अथापि वक्ष्यामि विधेः	वृ परा १०.३३६
अथातो ह्यस्य धर्मस्य	यम १	अथापि वः प्रवक्ष्यामि	कण्व ८
अथातो हिमशैलाग्रं	पराशर १.१	अथापि सम्यक्कुर्वीत	कण्व ६८७
अथातो हिमशैलाग्रं	वृ परा १.२	अथवोऽभिप्रपद्यते	बौधा २.५.४
अथत्तरोर्ध्वकाष्ठासु	भार २.१०	अथाप्यत्र भाल्लविनो	बौधा १.१.२९
अथवात्मानं हृत्कमले	व २.६.६५	अथाप्यत्रान्नगीतौ	बौधा २.३.२१
अथात् संप्रवक्ष्यामि	वृ परा ११.३१४	अथाप्यत्रोशनसश्च	बौधा २.२.८९
अथादाय स पुष्पाणि	वृ. गौ. ८.४७	अथाप्युदाहरन्ति	बौधा १.१.८
अथादायाद बन्धूनां	व १.१७.२८	अथाप्युदाहरन्ति	बौधा १.१.३३
अथाऽऽदित्यनुपतिष्ठत	बौधा २.५.२०	अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.६
अथाद्भिस्तरपयेद्देवान्	कात्या १२.१	अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.१०, १३
अथद्भुतानि जायन्ते	वृ परा ११.८८	अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.३०
अथानवेक्षयेत्पापः सर्व	कात्या २२.१	अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.३१
अथानित्वमभाग्यत्वं	वृ परा ५.१८८	अथाप्युदाहरन्ति	व १.२.५२
अथान्नप्राशनं कुर्यात्	व २.३.९	अथाप्युदाहरन्ति	व १.३.१८
अथान् यत् किञ्चित्	वृ परा ७.३२५	अथाप्युदाहरन्ति	व १.३.५२
अथान्यत् पापमृत्यूनां	वृ परा ७.३०२	अथाप्युदाहरन्ति	व १.४.२७
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.६९	अथाप्युदाहरन्ति	व १.४.२४
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ८.१७५	अथाप्युदाहरन्ति	व १.५.३
अथान्यत्संवक्ष्यामि	वृ परा १०.१०४	अथाप्युदाहरन्ति	व १.१६.१२, १५, २५
अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.२४९	अथाप्युदाहरन्ति	व १.१७.६०
अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि	वृ परा ११.२९७	अथाप्युदाहरन्ति	व १.१२.२०, ३७
अथान्यत्स सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा १२.२७७	अथायमर्थं गायत्र्य	भार १०.१
अथाप उपस्पृश्यत्रि	बौधा २.५.१०	अथार्चनोक्तद्रव्याणां	भार १४.१
अथापरः कृच्छ्रविधि	व १.२३.३६	अथार्द्धोर्ध्वयं कुर्यात्स्त्रीषि	ब्र.या. ८.२५५
अथापरं भ्रूणहत्यायां	व १.२३.३२	अथार्हमिहियैरात्मा	शाण्डि ४.२०८
अथापरेद्युरभ्यज्य	आश्व १०.३	अथाव वन्धीते मद्य	ब्र.या. ८.११९
अथापि तस्य यो वह्नि	लोहि १२१	अथास्य ज्ञातयः परिषद्	बौधा २.१.४४
अथाऽपि तस्याऽकरणेसद्यः	कपिल १६३	अथास्याः सविदा देवता	शंख १२.९
अथापि न सेन्द्रियः	बौधा २.१.६८	अथेदमूर्ध्वपुण्ड्रन्तु	वृ हा २.६९
अथापि नांघ्रांतस्यापि	कपिल ३६५	अथैकविंशतिदर्भान्न	व २.३.२७
अथापि ब्राह्मणाय वा	व १.४.८	अथैतस्याः प्रवक्ष्यामि	भार ९.१
अथापि भाल्लविनो	व १.१.१३	अथैतानि द्विजेभ्यो	वृ.गौ. १०.६६

अथैतेषां वृत्तयः ब्राह्मणस्य	विष्णु २	अदीक्षितो मवेद्यस्तु	वृ हा ८.२३९
अथै न शास्त्रब्रह्मवर्च	ब्र.या. ८.२७	अदीर्घसूत्रः स्मृतिमान	या १.३१०
अथैनामभिमृश चैवं	ब्र.या. ८.३२३	अदुष्टापतितां भार्या	पराशर ४.१४
अथोच्यते मणीनां	भार ७.२०	अदुष्टां विनतां भार्या	व २.५.३०
अथोच्यते विशेषस्तु	भार ६.१३१	अदुष्यं दू तं यम-	दा ३८
अथोत्तरत ऊर्णाविक्रयः	बौधा १.१.२२	अदूषितानां द्रव्याणां	मनु ९.२८६
अथोद्देशक्रम शास्त्र	वृ परा २.६	अदृष्टपूर्वमज्ञानमतिथि	ल हा ४.५६
अथेनमः शिवायेति	व्याप्त २.४७	अदृष्टऽपृष्टगोत्रादिर्	वृ परा ४.१९५
अथोपतिष्ठेतादित्यं	भार ७.२	अदृष्टलाभो भवति	कण्व ४८७
अथोपिनषदुक्तानि	वृ हा ५.३२८	अदृष्टविग्रहो देवो	वृ.या. २.६१
अथोपपातकाश्चिन्त्या	आंउ १२.९	अदृष्टापतितां भार्या	दक्ष ४.१७
अथोपवीतं विधिना	भार १६.४	अदृष्टे चाशुभे दानं	व्यास ४.२८
अदण्डया हास्तिनोऽश्वाश्च	नारद १२.२९	अदृश्यमानः तैः दीनैः	व.गौ. ५.२३
अदण्डयान्दण्डयन्	मनु ८.१२८	अदृश्रमस्येति मन्त्रै	बृ.या. ७.१०१
अदण्डयान् दण्डयन्	वृ हा ४.१८६	अदेयमथदेयं वा दत्तवा	ब्र.या. १२.२
अदत्तदाना गच्छन्ति	वृ गौ ५.५६	अदेयानि नवान्यानि	दक्ष ३.३
अदत्तदाना जायन्ते	दक्ष २.३४	अदेमानि नवान्यानि	ब्र.या. १२.२८
अदत्तपुत्रेणैव स्यात्	लोहि ९९	अदेयानिन वै दद्यादत्	वृ परा ६.२.६०
अदत्त तु भयक्रोध वेष	नारद ५.८	अदेशं यश्च दिशति	मनु ८.५३
अदत्तादान निरतः	या ३.१३६	अदेशिने च यद्वतं	वृ गौ ३.२३
अदत्तानामुपादान हिंसा	मनु १२.७	अदैवं तस्य देयं	वृ परा ७.१३९
अदत्त्वा तु य एतेभ्यः	मनु ३.११५	अदैवान्तरतः श्राद्धः	प्रजा ६८
अदनात्तनाद्यस्य	वृ परा १.३२	अदोह्य-वाहयौ यौ तत्र	वृ परा १.५०
अदन्त जातमरणे	औ ६.१२	अद्दी याद्वि यथाशक्त्या	व २.३.१३८
अदम्या गर्भिणी गौश्च	ब्र.या. १२.२२	अदग्नि गात्राणि शुध्यन्ति	व १.३.५६
अदर्शने वृश्चिकस्य	आं पू ७१४	अदग्निरेव कांचन पूयते	व १.३.५७
अदर्शयित्वा तत्रैव	मनु ८.१५५	अदग्निरेव द्विजाग्रयाणां	मनु ३.३५
अदः शास्त्र विषं मांसं	मनु १०.८८	अदग्निर्गात्राणि शुध्यन्ति	मनु ५.१०९
अदातरि पुनर्दाता	मनु ८.१६१	अदग्नि वाचा च दत्रायां	व १.१७.६४
अदाता च सदा लुब्ध	वृ परा ८.१९१	अदग्नि शुध्यन्ति गात्राणि	बौधा १.५.२
अदाता पुरुषत्यागी	व्यास ४.२४	अदग्निश्चा सनवाक्यैश्च	शंखलि ९
अदातारं समर्था ये	वृ.गौ. १०.९५	अदग्नि समुदधृताभिस्तु	शंख १०.६
अदाहकः पावको यं चाक्षयो	कपिल ८८०	अदग्निस्तु प्रकृतिस्थाभि	ब्र.या. ८.५४
अदितिद्यौरिति संस्कृत्य	ब्र.या. १०.१२२	अदग्निस्तु प्रोक्षणं शौच	मनु ५.११८
अदिव्यत्यत्तत्तद्वाक्योच्चारणे	कपिल २५	अदभुतं च हितं सूक्ष्म	विष्णु म ७

अद्भ्यश्चाग्निरभूत	नारद १९.४५	अधः शायी ब्रह्मचारी	वृ हा ५.५२६
अद्भ्योऽग्निर्बह्यतः	मनु ९.३२१	अधस्तन्नोपदध्याच्च न	मनु ४.५४
अद्य मे सफलं जन्म	आश्व २३.१०४	अधस्ताज्जान् वोरा	बौधा १.२.२७
अद्यात्काकः पुरोडाशं	मनु ७.२१	अधस्तात्कालशानांतु	नारा ५.४७
अद्यानुवाके प्रथमा	वृ परा ११.१८७	अथही लं कनिष्ठ	भार २.५५
अद्यापि काश्यां रुद्रस्तु	वृ हा ३.२३८	अधार्मिकं त्रिभिर्न्यायैः	मनु ८.३१०
अद्यास्मज्जलदो जातः तो	कपिल ७१७	अधार्मिको नरो यो हि	मनु ४.१७०
अद्यैवेति दृढं नूनं दृढयित्वा	कपिल ६८०	अधाश्वतानि गात्राणि	व्यास ४.१९
अदाक्ष यहं वस्तु	वृ परा १२.१९४	अधिकश्चेति सर्वेषु स्वकर्मसु	कपिल ७३९
अद्रोहं मम भक्तानाम्भूत	बृ.गौ. २२.१९	अधिकस्य च भागौ	बृ.या. ५.२३
अदोहणैव भूतानां	मनु ४.२	अधिकारनिवृत्तश्च	बृ.या. ३.२१
अद्रोहोऽस्तेयकर्मा	प्रजा ३९	अधिकारप्रभेदेन भोजनस्य	आंपू २८८
अद्वारेण च नातीयाद्ग्रामं	मनु ४.७३	अधिकारस्तथा तस्मात्पुत्र	कपिल ५९७
अद्वितीयं यदा मंत्र	वृ ता ३.२७४	अधिकारस्तुत्तेरेषु तेषु	कण्व ४९०
अधनस्य ह्यपुत्रस्य	नारद २.१९	अधिकारीत्वसिध्यर्थ	आंपू ११६
अधनास्त्रय एवोक्ता	नारद ६.३९	अधिकारी यदा न स्यात्	वृ परा ६.३०
अध प्रक्षालनं प्रोक्त	व २.६.४८५	अधिकारो न चान्यस्य	आंपू १६१
अधमं त्रयमित्याहुः	विश्व ५.३९	अधिकारो भवेतस्य	बृ.या. १.३४
अद्यमं याच्यमानं	वृ परा १.२८	अधिकारो मिलितयो	आंपू ३८४
अधमर्णार्थासिद्ध्यर्थ	मनु ८.४७	अधिकारोऽस्ति धर्मेण	लोहि ४१२
अधमे द्वादशी मात्रा	विश्वा ३.१२	अधिकारोऽस्ति सततं	लोहि ४७७
अधमो द्वापरयुगः कलिस्स्या	नारा ९.७	अधिकाशामतृप्तं च दुर्वदि	आंपू ७५१
अधरस्पर्शनं दन्तकर्षणं	भार ८.५	अधिका वन्दनीयाश्च	आंपू २३०
अधरे वसवः सर्वे मुखे	वृ गौ. १०.४८	अधिको दुहितासूनुः	लोहि २९६
अधर्मदण्डनं लोके	मनु ८.१२७	अधिकोऽपि कदाचित्स्या	लोहि ६६
अधर्मप्रभावं चैव	मनु ६.६४	अधिकोऽप्याहिताग्निर्वा	लोहि ४७
अधर्ममेव कुर्वन्त्यः स्वजन	कपिल ५२१	अधिक्रियत इत्याधि स	नारद २.१०५
अधर्म मनसा वाचा	वृ हा ६.१५३	अधितिष्ठेन्न केशास्तु	मनु ४.७८
अधर्मज्ञानवैरग्यनैश्च	भार ११.३८	अधिमासे जन्मदिने	व्या ३२९
अधर्मेण चयः प्राह	मनु २.१११	अधिमारने पि कार्य	वृ परा ७.१०७
अधर्मेणैधते तावत्तो	मनु ४.१७४	अधियज्ञ ब्रह्मा जपेदाधि	मनु ६.८३
अधर्मदण्डनं स्वर्गकीर्ति	या १.३५७	अधिवासादिकं सर्व	वृ हा ६.४११
अधःशायी नरतो	औ ८.२६	अधिविन्ना तु भर्तव्या	या १.७४
अधःशायी ब्रह्मचारी	व २.३.१८३	अधिविन्ना तु या नारी	मनु ९.८३
अधःशायीब्रह्मचारी	व २.६.३४५	अधिविन्नास्त्रियै दद्याद्	या २.१५१

अधिवृक्षसूर्यमध्वान	व १.१२.४१	अध्यापनञ्च कुर्वाणो	औ ३.५९
अधिष्ठानान्नानीहारः	व १.१९.१०	अध्यापनञ्च त्रिविधं	ल हा १.१९
अधीतवेदो जपकृत्	या ३.५७	अध्यापनमध्ययनं	मनु १०.७५
अधीते विधिवन्नित्यं	औ ३.४२	अध्यापनं चाध्ययनं	ल हा १.१८
अधीत्य च गुरो वेदान	लहा ३.१०	अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः	कात्या १३.३
अधीत्य चतुरो वेदान	अत्रि स ३०३	अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः	मनु ३.७०
अधीत्य विधिवद्	औ ३.९४	अध्यापन याजन	बौधा २.२.७७
अधीत्य विधिवद्	मनु ६.३६	अध्यापयति तस्याऽपि	वृ परा १०.२४०
अधीत्य सर्ववेदान	वृहस्पति ७९	अध्यापयामास पितुं	मनु २.१५९
अधीयानस्तथा यज्वा	औ ६.५	अध्यापयित्वा रुद्रादि	आश्व १२.१५
अधीयानानामंतरागमने	व १.२३.२३	अध्यापयेत्ततः शिष्यान्	व २.३.१८२
अधीयानास्तु विद्याप्त्या	वृ परा ११.८	अध्यपयेद् द्विजां	वृ परा ६.७६
अधीयीत तथा वेदान्	औ ४.२४	अध्यापयेद् द्विजान्	वृ परा १०.२३६
अधीयीत शुचौदेशे	औ ३.५.६	अध्यापयेद् वैष्णवानि	वृ हा २.२५२
अधीयीरंस्त्रयो वर्णाः	मनु १०.१	अध्यापिता ये गुरु	व १.२.१७
अधीष्व भोः इति ब्रूयात्	औ ३.३९	अध्यायानामुपाकर्म	या १.१४२
अधीहीत्यादिकं मंत्र	आश्व १०.२९	अध्यायान्ते मण्डलान्ते	वृ हा ६.६७
अधुना वैनतेयेष्टि	वृ हा ७.१७०	अध्यास्मिन्मयोक्तानि	भार ९.५०
अधुना श्रोतुमिच्छामि	वृ हा ७.२	अध्येतव्यं प्रयत्नेन	कण्व २२५
अधुना सम्प्रवक्ष्यामि	व २.५.१	अध्येता चैव मंत्राणां	वृ परा ११.२६८
अधोदृष्टिनैस्कृतिकः	मनु ४.१९६	अध्येष्यमाणं तु गुरु	मनु २.७३
अधोभागविसृष्टाभि	बृ.या. ७.१८७	अध्येष्यमाणस्त्वाचांतो	मनु २.७०
अधो भागविसृष्टैर	ब्र.या. २.६९	अध्वगामी भवेदश्वः	लिखित ६१
अधोमुखेनांजलिना	भार ११.७४	अध्वनीनो तिथिज्ञयः	या १.१११
अधोऽवसक्तमधोवीतम्	बौधा १.५.१०	अध्वर्यौ सति जपति स्वीया	लोहि ५२२
अधोवायुविसर्गेऽपि	व २.३.९६	अध्वानं न तु वै यायान्	वृ परा ७.३१
अध्यग्न्याबाह्निकं	मनु ९.१९४	अनग्नमश्च ये विप्रा	वृ.गौ. १०.७६
अध्यग्न्यध्याह्निकं	नारद १४.८	अनग्निकस्य कुर्वीत	वृ परा ४.१७३
अध्यक्षान्विविधान	मनु ७.८१	अनग्निकस्य विप्रस्य	व्या २३६
अध्ययनं यजनं दानं	व १.२.२२	अनग्निको न पुत्री स्याद्	आंपू ३२०
अध्ययने तु भवेत्	ब्र.या. ४.४५	अनग्निको यदा ज्येष्ठः	आश्व २४.५
अध्य व परिचर्यायां	व २.४.३	अनाग्निरध्वगो वापि	औ ५.८२
अध्यात्मरतिरासीनो	मनु ६.४९	अनग्निरनधीयानः प्रति	बृ.गौ. १४.१६
अध्यापकं कुले जातं	बौधा १.१०.१४	अनग्निरनिकेतः स्याद्	मनु ६.४३
अध्यापनं अध्ययनं	मनु १.८८	अनग्निरब्रह्माचारी च	व्या १७५

अनडुत्सम्प्रदानस्य	वृ गौ. ७.३	अनन्ताश्च यथा भावाः	या ३.१३२
अनडुत्सहितां गाञ्च	पराशर ४.६	अनन्निरस्पृशेन्नोषं	ब्र.या. २.१९०
अनडुहां सहस्राणां	व १.२९.१९	अनन्यचित्तो भुञ्जीत	व्यास ३.६५
अनड्वान् ब्रह्मचारी	व १.६.१९	अनन्यचेतसो शांता	ल व्यास १.२८
अनड्वान् च वस्त्र च	वृ परा ११.१६७	अनन्यदर्शी सततं	औ ३.२०
अनड्वान् च यो दद्यात्	संवर्त ७०	अनन्यदेवता भक्त्या	वृ गौ. ८.९३
अनधीत्य द्वयं मंत्र	वृ हा २.१३४	अनन्यपूर्विकां लध्वीं	व्यास २.३
अनधीत्य द्विजो वेदान्	मनु ६.३७	अनन्यमनसं शांतं	आप १.३
अनधीत्यैव यो वेदं	कण्व ४२७	अनन्यविषयं कृत्वा	या ३.१११
अनध्यायदिनं वर्षं सोमारो	व २.३.१५७	अनपत्यः कूटसाक्षी	औ ४.३३
अनध्यायं प्रकुर्वीत	व २.३.१५८	अनपत्यस्य पुत्रस्य	मनु ९.२१७
अनध्याये तु योऽधीते	ब्र.या. ८.७२	अनपत्यस्य पुत्रार्थं	वृ परा ११.२९८
अनध्यायेऽप्यधीमानो	शाता ६.१५	अनपत्या च या नारी	व्या ६०
अनध्यायेष्वधीयानाः	शंख १४.४	अनुपत्यातु या नारी	आंगिरस ७०
अनध्यायो विनाशेच	औ ३.७८	अनपत्येषु प्रेतेषु न	वृ परा ७.३५३
अननतकृत पापोऽपि	वृ परा ५.१६७	अनभि संधिकृते	व १.२०.१
अनन्तगरुडादीनामयं	वृ हा ७.२२१	अनभ्यस्ताक्षरेणापि न समः	कपिल ६८०
अनन्त दीपारेखादि	वृ हा ४.५१	अनभ्यासेन वेदानाम्	मनु ५.४
अनन्तभोगिपर्य्यके	वृ हा ४.९	अनयन् नादायित्वा	नारद ७.६
अनन्तं चाप्रमेयं च	बृह १२.४०	अनयन् वाहकोऽप्येवं	नारद ७.९
अनन्तं नयते स्थानं	बृ.या. २.११९	अनया निखिलाश्चापि	लोहि ७.१९
अनन्तरं विप्रभुक्तेः	आंपू १०९६	अनया सद्दृशी ज्ञानं न	विश्वा १.४४
अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य	मनु ९.१८७	अनया सह तीर्थेषु	प्रजा ३
अनन्तरः स्मृतः पुत्र	नारद १३.१०६	अनयैवावृता नारी	कात्या २३.७
अनन्तरासु जातानां	मनु १०.७	अनयोर्नान्यथेत्यवक्तं	वृ हा ३.८४
अनन्तःर्गभिणं साग्रं	कात्या २.१०	अनर्क्षार्जवेपश्चात्	व २.४.१८
अनन्तर्गभिणं साग्रं	प्रजा १०५	अनर्चनीया रुद्राद्या	वृ हा ८.२६३
अनन्तं विहगाधीशं	वृ हा ७.७७	अनर्चयित्वा मूढात्मा	वृ हा ८.३१०
अनन्तविहगाधीश	वृ हा ४.६३	अनर्चयित्वा यः अश्नाति	वृगौ ६.६३
अनन्त विहगेशानां	वृ हा ३.१५०	अनर्चितं वृथाप्तांसम	मनु ४.२१३
अनन्ता जायते तृप्ति	ब्र.या. ४.११	अनर्चितम् वृथाप्तांसं	या १.१६६
अनन्तान् भगवान् मंत्रान्	वृ हा ३२८	अनर्चिते पद्मनाभे	वृ हा ६.४३४
अनन्ताः पुत्रिणां लोका	व १.१७.२	अनर्थशीलां सततं	नारद १३.९५
अनन्तरमपस्तस्य	ब्र.या. २.१७३	अनर्पितं भगवते स्वाराध्यायं	शाण्डि ४.७६
अनन्ता रश्मयस्तस्य	या ३.१६६	अनलादर्शनं यावत्	व्या ३७०

अनवेक्षितमर्यादं नास्तिक	मनु ८.३०९	अनादियतृणान्यत्त्वा	वृ परा ५.९
अनंशौ क्लीवपतितौ	मनु ९.२०१	अनादेयस्य चादनादादेयस्य	मनु ८.१७१
अनसूयां द्रौपदीञ्च	वृ हा ७.२१३	अना (मिका) मंग्गुलीनांतु	भार ६.७०
अनस्तमित उपक्रम्य	बौधा २.४.१६	अनामिकांगुण्ठाधो	ब्र.या. ८.२०६
अनस्थानां शकटं हत्वा	शंख १७.१२	अनापदि चरेद्यस्तु	अत्रि स १६२
अनास्थिमतां तु सत्त्वानां	व १.२१.२८	अनाभाव जीर्णो गौः	भार १८.९१
अनास्थिसंचिते रुद्रे	औ ६.४६	अनाम्रातेषु धर्मेषु कथं	मनु १२.१०८
अनस्थीन ब्राह्मणो हत्वा	संवर्त १४८	अनायासेन लभ्यं स्यात्	शाण्डि ३.४८
अनाकालभृतो दास्यान्	नारद ६.२९	अनायुधासो असुरा	वृ हा २.३४
अनाक्ता अपि भोज्याः	वृ परा ६.३१८	अनारभ्योक्तकाले च	आश्व १२.४
अनाख्याय ददद्दोषं	या १.६६	अनारोग्यमनायुष्यम्	मनु २.५७
अनागतानि कार्याणि	वृ.गौ. ११.३४	अनारोग्यं अनायुष्यं	औ १.६१
अनागतां तु ये पूर्वी	बौधा २.४.१९	अनार्तश्चोत्सृजेद्यस्तु	बृ.या. ६.८
अनागतांतु ये पूर्वा	भार ६.१७९	अनार्थितैरनाहूतैर	आंउ ७.५
अनागतां तु ये पूर्वी	बाधू ११२	अनार्यता निष्ठुरता	मनु १०.५८
अनाचम्यैव यो मोहाद्	कण्व १४०	अनार्यमार्यकर्माणमार्यं	मनु १०.७३
अनाचान्तः पिवेद्यस्तु	संवर्त १४	अनार्यायां समुत्पन्नो	मनु १०.६६
अनाचारस्य विप्रस्य	बाधू २२१	अनावृष्ट्यग्निं दुर्भिक्षभयं	वृ हा ६.३
अनाज्ञातमिति द्वाभ्यां	आश्व २.६४	अनाशकमृतानां च	वृ परा ७.१५२
अनातिथ्यं च दुखित्वं	वृ परा ५.१८७	अनाशकान्निवर्तन्ते	अत्रि स २१३
अनातुरः स्वानि खानि	मनु ४.१.४४	अनाशाकान्निवृत्ता ये	वृ परा ८.९०
अनात्रेयी राजन्य	व १.२०.४४	अनाश्रमी तु यः स्तेयो	व्या २०५
अनाथप्रेतसंस्कारादश्व	आंपू १४१	अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु	दक्ष १.१०
अनाथ ब्राह्मणं प्रेत ये	पराशर ३.४५	अनासनस्थितेनापि	व्यास ३.२३
अनाथ ब्राह्मणं प्रेतं ये	बृ.गौ. १४.२३	अनाहिताग्निर्गृह्येण	औ ७.७
अनाथं ब्राह्मणं प्रेतं	वृ परा ८.२६	अनाहिताग्निता स्तेय	मनु ११.६६
अनादिरात्मा कथितः	या ३.११७	अनाहिताग्न्यो येऽन्ये	पराशर ८.१९
अनादिरात्मा सम्भूति	या ३.१२५	अनाहिता वसथ्याग्नि	व्यास ३.२८
अनादिरादिमांश्चैव	या ३.१८३	अनाहूतेषु यद्दत्त	व्यास ४.२६
अनादिश्चाप्यनन्तश्च	नारद १८.१३	अनिकेतो निमिग्रीवो	आंपू ५१९
अनादिष्टेषु पापेषु	अत्रि स १३२	अनिग्रतच्चोन्द्रियाणां	वृ हा ६.१५४
दिष्टेषु पापेषु	या ३.३२६	अनिच्छन्त्यो वा प्रव्रजेरन्	व १.१९.२२
अनादिष्टेषु सर्वेषु	व १.२३.४३	अनित्यो विजयो यस्माद्	मनु ७.१९९
अनादृतसुतं गेही पुरुषं	शाण्डि ४.८४	अनिधाय च तद् दव्यं	औ २.३१
अनादेयं नाददीत	मनु ८.१.७०	अनिन्दितैः स्त्रीविवाहैरं	मनु ३.४२

अनिन्देषु च विप्रेषु	व २.३.७१	अनुक्तवृत्तिस्त्वाज्ञातः	वृ परा ७.९
अनियतकेशवेशाः	व १.२.२६	अनुगच्छेद्यथा प्रेत	अत्रि ५.३७
अनियता वृत्रि	व १.२.२५	अनुगम्येच्छया प्रेतं	पराशर ३.४८
अनियुक्तः सुतो यस्तु	औ ५.९१	अनुगम्येच्छया प्रेतं	मनु ५.१०३
अनियुक्ता तु या नारी	नारद १३.८४	अनुगृह्णामि अहं तस्य	वृगौ १.४९
अनियुक्तासुतश्चैव	मनु ९.१.४३	अनुग्रहाय सौलभ्यकारणाय	कपिल ९९४
अनियुक्तो भ्रातृजायां	या ३.२८७	अनुग्रहार्थं विप्राणां	व १.२३.३८
अनिरुद्धञ्च मां प्राहु	वृ गौ. ८.८९	अनुच्छिष्टमसंदुष्टं	व्यास ३.५२
अनिरुद्धो वामनश्च	वृ हा ५.११९	अनुच्छिष्टेन शूदेण	पराशर ७.२२
अनिर्दशाया गौः क्षीर	मनु ५.८	अनुच्छिष्टेन संसाष्टे	यम ४२
अनिर्दर्शाहगोक्षीर	वृ हा ४.११६	अनुच्छिष्टेन संस्पृष्टे	लघु यम १५
अनिर्दशाहसंधीनीक्षीरं	बौधा ५.१५६	अनुच्छिष्टेन संस्पृष्टौ	आंगिरस ११
अनिर्दशाहगोक्षीर	व २.६.१८१	अनुच्छिष्टोऽपि यत्	वृ परा ८.२५९
अनिर्दशाहगोः क्षीर षष्ठ्यां	वृ हा ८.१२६	अनुज्ञातश्च गुरुणा	शंख ३.३
अनिर्दशाहां गां सूतां	मनु ८.२४२	अनुज्ञारहितायाश्च	शाण्डि ३.१२३
अनिर्दशाहे पक्वान्नं	व १.४.२६	अनुदुत्सहितां गांच	अत्रि स २२४
अनिर्दिष्टस्य पापस्य	वृ परा ८.११५	अनुतापाद्य दा पुंसां	बृ.य. ४.२८
अनिर्देशञ्च प्रेतान्न	वृ गौ. ११.१८	अनुतीर्थमप उत्तिञ्चति	बौधा २.५.२०९
अनिर्देश्यपरामाणम	विष्णु १.४०	अनुतीर्थमपि अत्तिञ्चति	बौधा २.३.३
अनिलं रेचयेद्योगी	वृ परा १२.२१८	अनुत्पन्नप्रजायास्तु	नारद १३.८०
अनिवर्त्यानि घोरणि	कपिल ९६५	अनुद्धतजनैर्युक्तो योग	शाण्डि ५.४४
अनिवेदिते तदर्ध	वृ परा ५.१६४	अनुद्धृत्य तु यः स्नायात्	बृ.या. ७.११०
अनिवेद्य तु यो राज्ञः	नारद १.४०	अनुषघ्नन्मिदृढव्यं	मनु ९.२०८
अनिवेद्य नृपे शुद्ध्यै	या ३.२५७	अनुपासित सिद्धस्तु	औ ९.६५
अनिष्ट ध्वंसिनी माया	वृ हा ७.१९७	अनुपृष्ठमसीत्यादि	व २.४.४२
अनिष्टा प्रतिकूला वा	वाघू १.४८	अनुपोष्य च रात्रिश्च	वृगौ. ७.१३०
अनिष्टा तु पितृश्राद्धे	कात्या १.१७	अनुपोष्य च रात्रिञ्च	वृ गौ ७.१३२
अनिष्टाव नवयज्ञेन	कात्या १८.२०	अनुबन्धं परिज्ञाय	मनु ८.१२६
अनिनष्टा नवयज्ञेन	कात्या २५.१८	अनुब्राह्मणमेवं च सप्ता	कण्व ५२९
अनीतवान् विधिरिमान्	वृ परा ७.१८२	अनुभावी तु यः कश्चित्	मनु ८.६९
अनुकूलफलश्रौयस्तस्य	दक्ष ४.५	अनुभूय च दुःखास्ताश्चिरं	नारद २.१९७
अनुकूला नवागदुष्टा	दक्ष ४.१२	अनुमन्ता विशासिता	मनु ५.५१
अनुक्तनिष्कृतीनां तु	मनु ११.२१०	अनुमासिकभोक्तारं	आंपू ७६०
अनुक्तमन्त्रैः काश्चित्तु	आपू ८०३	अनुयाजप्रयाजांश्च	बृ.गौ. १.५.६५
अनुक्तविधिनामन्त्र प्राणायामं विश्व	३.५७	अनुरक्तः शुचिर्दक्षः	मनु ७.६४

अनुरूपामवाग्दुष्टां	नारद १३.९७	अनृतं च समुत्कर्षं	मनु ११.५६
अनुलिप्ते महीपृष्ठे	वृ परा १०.५२	अनृतं तु वन्ददण्डयः	मनु ८.३६
अनुलिप्ते महीपृष्ठे	वृ परा १०.१२७	अनृतं न वदेद्दुष्टवा	वृ.गौ. ११.३०
अनुलिप्ते सुलिप्ते च	वृ परा ११.१४२	अनृतं मद्यगन्धं च	वाधू २२३
अनुलिप्य घृतं सर्वं	वृ हा ६.११५	अनृतं मद्यगन्धं	वृ परा ६.१४६
अनुलोमविलोमाभ्यां	विश्वा १.११	अनृतं मद्यमांसञ्च	वृ हा ६.२७०
अनुलोमविलोमाभ्यां	विश्वा १.१२	अनृतवचनदोषं दुष्ट	विश्वा ३.७४
अनुलोमविलोमाभ्यां	विश्वा ३.४.६	अनृतात्स्वसमुत्कर्षो	वाधू १७४
अनुवद्धस्य तैः पाशन्	वृ.गौ. ५.५	अनृतानि च वाक्यानि	लोहित २३३
अनुवंशन्तु भुंजीत	अत्रि ५.२५	अनृतावृतुकाले च	मनु ५.१.५३
अनुवाकः श्रुतिसूक्तं	पु २६	अनृतावृतुकाले वा दिवा	बृ.गौ. १४.६
अनुवाकस्यतस्यैवा	भार ६.११३	अनृताह्वानधीयाना	पराशर १.५७
अनुवीतप्रदत्त तत्पत्न्या	कपिल ७८४	अनृते च पृथग्दण्ड्या	या २.१.५६
अनुशिष्यश्च गुरुणा	नारद ६.१२	अनेकानि सहस्राणि	मनु ५.१.५९
अनुष्टुप्च तृतीयश्च	भार १७.१८	अनेकान्तं बहुद्वारं	वृ.गौ. १२.१
अनुष्टुप्छामहावंती	भार १७.२८	अनेके यस्य ये पुत्रा	बृ.य. ५.१४
अनुष्टुभं भवेच्छन्द	बृ.या. ७.१८०	अनेन कर्मणा चेति	कण्व ४११
अनुष्टुभस्य सूक्तस्य	वृ हा ५.१९५	अनेन क्रमयोगेन	मनु २.१६४
अनुष्टा पशूनाम	व १.१४.३१	अनेन क्रमयोगेन	मनु ६.८५
अनुष्ठानाय शौर्येण	मार १८.५१	अनेन जपसंख्यास्या	मार ७.१०२
अनुष्ठेया ब्राह्मणेन	कण्व ४९५	अनेन तु विधानेन	मनु ९.१२८
अनुष्णाभिरफेनाभिरदग्नि	मनु २.६१	अनेनपितृयज्ञेन	आश्व २३.११०
अनुस्वारो मकारस्तु	बृ.या. २.८१	अनेन नारीवृत्तेन	मनु ५.१६६
अनूचानकृतं कुर्यु	वृ परा ६.२९६	अनेन विधिना कार्यो	नारद १९.१९
अनूदकेष्वरप्येषु	आप ९.३४	अनेन विधिनाकुर्याद्	वृ हा ६.४०
अनूढा न पृथक्कन्या	लघुयम ८४	अनेन विधिना गौघ्नो	आंउ ११.९
अनूढानां तु कन्यायां	शंख १५.६	अनेन विधिनाचम्य	ल हा ४.३८
अनूढां तु पिता रक्षेद्	व २.५.१४	अनेन विधिना चैव	आश्व २३.११३
अनूढैव नु सा कन्या	कात्या ६.१४	अनेन विधिना देहं	या १.५०
अनूदकं तु तत्सर्वं	आं उ ८.११	अनेन विधिना नित्यं	मनु ५.१६९
अनूदको तु या संध्या	बृ.या. ६.२२	अनेन विधिना यस्तु	आश्व १.१८६
अनूनं नातिरिक्तं	बृ.या. २.१५४	अनेन विधिना यस्तु	मनु ११.११६
अनृतोऽपि निराचाराः	वृ परा ६.२३५	अनेन विधिना राजा	मनु ८.१७८
अनृतो माणवो ज्ञेय	कात्या २७.११	अनेन विधिना राजा	मनु ८.३४३
अन्टणो गन्तुमिच्छामि	विष्णुम ७५	अनेनविधिना विप्रा	भार ७.१०९

अनेन विधिनाश्रांध	मनु ३.२८१	अन्तर्जलं च कतमै	बृ.या. १.१५
अनेन विधिना श्राद्धं	व्या १८९	अन्तर्जला खेयतोया	आंपू ९३३
अनेन विधिना सर्वाः	मनु ६.८१	अन्तर्जलात् त्रिरावृता	ल व्यास २.२३
अनेन विधिना स्नात्वा	शंख ९.१४	अन्तर्जले जपेन्मग्नस्त्रि	बृ.या. ७.२७
अनेन विधिनोत्पन्नो	आश्व १५.४९	अन्तर्जानुः शुचौ देश	या १.१८
अनेन विप्रो वृत्तेन	मनु ४.२६०	अन्तर्जानुः शुचौ देश	वाधू २१
अनेन भवति स्तेनः	नारद १८.१०५	अन्तर्जानुः शुचौ देशे	शंख १०.५
अनेनैव गृहोद्यान	नारद १२.१२	अन्तर्दशाहे भुक्त्वान्नं	आंड ९.१
अनेनैव विधानेन	ब्र.या. ४.४१	अन्तर्दशाहे चेतस्यातां	मनु ५.७९
अनेनोक्तप्रकारेण धारये	भार १६.९	अन्तर्दशाहे स्याचे	ब्र.या. १३.१३
अनोकानामन्येषां सम	भार १८.२१	अन्तर्दानं स्मृति	या ३.२०२
अनेनियुद्धिरित्य	वृ परा ११.३४१	अन्तर्धाय कुशांस्तेषु	आश्व २३.४२
अनौरसेषु पुत्रेषु	या ३.२५	अन्तर्धाय महीं काष्ठै	औ २.३४
अनौरसेषु पुत्रेषु	शंख १५.१३	अन्तर्बहिश्च संशुद्धि	शाण्डि ३.१३८
अनौषधमभैषज्यं	बृहस्पति ४६	अंतर्भावद्विजेष्वेव प्राप्नोति	कपिल ३.२९
अन्तः पूर्णमधः पूर्णमूर्ध्वं	लोहि ५९१	अन्तर्भीरून् बहि शूरान्	वृ परा १२.३६
अन्तःप्रज्ञ बहिःप्रज्ञ	वृ परा ३.१४	अन्तर्वक्रो वहि सर्पन्	वृ परा १२.२६५
अन्तः प्रज्ञो बहिः प्रज्ञो	बृ.या. २.२३	अन्तर्वर्तीन् स्त्रियों गाश्च	वृ हा ६.१७२
अन्तः प्रविष्टेषु तदा	वृ हा ६.३९४	अन्तर्वर्त्यं तथाऽऽत्रेभ्यः	वृ हा ६.२३९
अन्ताभिगमने त्वंक्य	या २.२९७	अन्तर्वास उत्तरीयम्	बौधा १.३.२
अन्तरं कुशविन्यस्य तूष्णीं	ब्र.या. ८.२६०	अन्तवदन्तसलिल	औ २.२७
अन्तरं शुद्ध्यते यस्मात् वृ परा	१२.२४२	अन्तः शरीरप्रभवमुदान	बृ.या. २.४८
अन्तराच्छाद्य कौपीनं	वाधू ९९	अन्तश्चरति भूतेषु	शंख १०.१७
अन्तराच्छाद्य कौपीनं वाससी	शाण्डि २.३९	अन्तश्चरसीतिरि	ब्र.या. २.७३
अन्तरा जन्ममरणे	या ३.२०	अन्तस्तेजो बहिश्चक्षुरथः	विश्वा ३.३१
अन्तरा तु दशाहस्य	पराशर ३.३५	अन्तिमं मूर्ध्नि विन्यस्य	बृ.या. ५.११
अन्तरिक्षकरं विद्धि	वृगौ १.५३	अन्ते चावभृथोष्टिश्च	वृ हा ७.६६
अन्तरिक्षमथो स्वाहा	विश्वा ५.३७	अन्ते चावभृथोष्टि च	वृ हा ७.२६६
अन्तरिक्षमधश्चैव	बृह ९.१६०	अन्ते वै दिवसेत	ब्र.या. १३.१४
अन्तरिक्षं नखस्पृष्टं	भार ४.२४	अन्ते स्वर्गसुखं भुक्त्वा	नारा ५.२१
अन्तरिक्षे मृताये	दा १.५१	अन्त्यजातिमविज्ञातो	आप ३.१
अन्तरेण चात्वालोत्कारो	बौधा १.७.१४	अन्त्यजातिश्वपाकेन	आप ७.५
अन्तरेऽस्मिन्निमे लोक	बृह ९.१९	अन्त्यजातु प्रतिगृह्या	अ २३
अन्तर्गतं जलेमग्नो	ल व्यास २.२१	अन्त्यजानां गृहेतोयं	अंगिरस ४
अन्तर्गतशवे ग्रामे	मनु ४.१०८	अन्त्यजाभाजने भुक्त्वा	संवर्त १९४

अन्त्यजैः खातिताः कूपः	बाधू ६६	अन्नदानात् परं दानं	संवर्त ८३
अन्त्यजैर्गर्द्धभैस्तुष्टे	ब्र.या. १०.४	अन्नदाने विशेषः स्यात्	आश्व २४.१३
अन्त्यजैः स्वीकृते	दा १५५	अन्नदानैकपात्राणि चण्डाल	कपिल ९६३
अन्त्यजैः स्वीकृते	संवर्त १८३	अन्नदाः सुखिनो नित्यं	बृहस्पति १३
अन्त्यानां भुक्तशेषन्तु	आप ५.९	अन्नदोषार्थं प्रायश्चित्तम्	विष्णु ४८
अन्त्यानुयायिनश्चाद्या	वृ परा १.३६	अन्नद्रव्यादि शुद्धि वर्णनम्	विष्णु २३
अन्त्यपक्षिस्थावरतां	या ३.१३१	अन्नपानमहादानै	नारद १८.६२
अन्त्यस्यात्यायिनो	औ ९.४१	अन्नपूर्णस्य पात्रस्य	वृ परा ७.२१८
अन्त्यतस्ताच्छवे क्षिप्तं	अत्रिस २६५	अन्नप्रकरत्तस्य	बृ.या. ७.४६
अन्त्यानामपि सिद्धान्तं	आंगिरस २	अन्नप्रणाशो सीदन्ति	वृ.गौ. १२.३९
अन्त्यानां संगते ग्रामे	औ ३.६५	अन्नप्रदाता सुचक्षुः	व १.२९.९
अन्त्यावत्यधमौ चोक्ता	वृ परा ६.१५	अन्नप्राशन चूडा च	ब्र.या. ८.३६०
अन्त्योऽकार समायुक्तां	वृ परा ४.४४	अन्नप्राशनं (तु) विज्ञेयं	ब्र.या ८.३३७
अन्यद्रव्यव्यवहितं	नारद ३.२	अन्नप्राशनं विज्ञेयं ततो	ब्र.या. ८.३४४
अन्धकारं परतरम्	वृ गौ ५.२४	अन्नभुक्तं भुक्तं	वृगौ ६.१७
अन्धजडक्लीब	बौधा २.२.४४	अन्नमम्बूनिवस्त्राणि	शाण्डि ४.५९
अंध पंगुजदद्भ्राप्ताः	कपिल २९७	अन्नमादाय तृप्ता	या १.२४०
अंधस्य मंत्रसामर्थ्यं	कपिल ३.४५	अन्नमादाय पक्वान्तु	आंपू ८०९
अंधादयोविशेषेण भर्त	कपिल ३०१	अन्नमामं च वै भिक्षां	आश्व १.१४९
अन्धो जडः पीठसर्पी	मनु ८.३९४	अन्नमिष्टं हविष्यञ्च	या १.२३९
अन्धो मत्स्यानिवाशनाति	नारद १.७६	अन्नमेषां पराधीनं देयं	मनु १०.५४
अन्धो मत्स्यानिवाश्वानाति	मनु ८.९५	अन्नमेव प्रशांसन्ति	वृगौ. ११.११
अन्नकामः ससर्जदं	वृ परा १०.१६	अन्नं क्षीरं घृतं क्षौद्र	वृ परा ७.२९६
अन्नकामेन संसृष्टं	बृह ९.१४६	अन्नं गावस्तिलान् भूमि	वृ.गौ. १९.९
अन्नकुण्डं शरीरं स्वं	वृ.गौ. ११.१२	अन्नं च गोशतं हेम	वृ परा ११.२५९
अन्नञ्चनो बहुभवेद	या १.२४६	अन्नं चो नो बहुभवेद्	आश्व २३.९८
अन्नञ्चैव यथाकामं	औ ५.५३	अन्नं च पायसं भक्ष्यं	आश्व २३.५४
अन्न-तोयप्रशंसा च	वृ परा १.५१	अन्नं च पीडयित्वा	वृ.गौ. १२.३०
अन्नत्यागं च तत्कृत्वा	लोहि ३७५	अन्नं च ये प्रयच्छन्ति	वृ.गौ. ५.६५
अन्नत्यागं प्रकुर्वीत	आंपू ९७१	अन्नं तद्वाक्षसं विद्या	बृ.गौ. १३.१८
अन्नदत्त्वं ब्रह्मवित्तं	लोहि ५७३	अन्नं पर्युषितं भावदुष्टं	व १.१४.२४
अन्नदः सर्वभूतानां	बृह ९.७७	अन्नं पर्युषितं भुक्त्वा	संवर्त १९३
अन्नदस्तु सुखमाप्नोति	ब्र.या. ११.४०	अन्नं पर्युषितं भोज्यं	आश्व १.१७०
अन्नदानफलं श्रुत्वा	वृ.गौ. १३.१	अन्नं पर्युषितं भोज्यं	या १.१६९
अन्नदानं तु ये लोके	वृ.गौ. १२.४६	अन्नं पाणिहुतं यच्च	आश्व २३.५१

अन्नं पितृमनुषयेभ्यो	या १.१०४	अन्यत्र वा शुभे	वृ परा ५.७८
अन्नं पूर्वं नमस्कुर्यात्	वृ.गौ. १३.६	अन्यं हीताशनं मंत्र	वृ परा ४.१८८
अन्नं प्राणो जलं प्राणः	वृ परा १०.२४४	अन्यकार्याय न भवे	कण्व ७६९
अन्नं प्राणो बलं चान्नं	वृ परा ५.१११	अन्यगेहे तथा चान्तः	व २.६.४६३
अन्नं रसमयं कृत्स्नं	बृह १.१३६	अन्यगोत्रप्रदत्तश्चेत्	आपू ९९९
अन्नं विभज्यभूतेभ्यः	शंखलि ४	अन्यगोत्रप्रदत्तो यः	कण्व ७०७
अन्नं विष्णु रसो ब्रह्मा	ब्र.या. २.१६३	अन्यगोत्रप्रविष्टस्य सुतो	कपिल ३५८
अन्नं शूद्रस्य भोज्यं	यम २१	अन्यगोत्रप्रविष्टस्य सूनुश्चेद्वा कपिल	१०२
अन्नं सुसंस्कृतं वाणि	वृ परा ५.१६६	अन्यजातिविवहे च	औ ९.५१
अन्नं सुसंस्कृतं हृद्यं	शाण्डि ४.५२	अन्यतीर्थेन गृहणीया	वाधू ५७
अन्नलाभे तु होतव्यं	वृहा ५.२५६	अन्यत्कुर्यान् मनस्वान्	वृ परा १२.३५०
अन्नशुद्ध्यैव सत्कर्म	शाण्डि ४.१३६	अन्यत्तु ब्राह्मणात्	नारद १४.४९
अन्नहर्तामयावित्वं मौक्यं	मनु ११.५१	अन्यत् प्राणि वधस्थाय	वृ परा ८.१६०
अन्नहीनं क्रियाहीनं	औ ३.१२८	अन्यत्र कारादुचिताद्	नारद १८.४५
अन्नाक्तभाजन स्थानि	आश्व १.१७२	अन्यत्र तु जपं कुर्वन् पुनः	वाधू १२७
अन्नात् तस्मात् प्रवर्तन्ते	वृ.गौ. ६.२५	अन्यत्र देवायतना	व २.६.२३१
अन्तर्जो मनः प्राण	शंखलि १६	अन्यत्र पुष्पमूलेभ्यः	शंख १४.१३
अन्नात्प्राणाः	ब्र.या. ११.३९	अन्यत्र फलमूलेभ्यः	औ ५.५५
अन्नात् भवन्ति राजेन्द्र	वृ.गौ. ६.२४	अन्यत्र ब्राह्मणात्	व १.१.४४
अन्तर्देरपि भक्ष्यस्य	वृ परा ६.३३०	अन्यत्र रजकव्याध	नारद २.१६
अन्नादर्भणहा मार्ष्टे	मनु ८.३१७	अन्यत्र मृणुयाज्ज्ञेयमनु	शाण्डि १.१०८
अन्नादर्भूणहामार्ष्टि	व १.१९.२९	अन्यत्र संप्रहास्य	व १.१७.५३
अन्नाद्यजानां सत्त्वानां	मनु ११.१४४	अन्यत्राङ्कनलक्ष्मभ्यां	आठ १०.१२
अन्नाद्ये कीटसंयुक्ते	पराशर ६.६२	अन्यत्राङ्कनलक्ष्मभ्यां	पराशर ९.२७
अन्नाभावे तु कर्तव्य	ब्र.या. ४.५४	अन्यत्राजाविभ्यः	बौधा ५.१५१
अन्नाभिमर्शनि प्रोक्तं	आपू ८२९	अन्यत्राऽऽततायिनः	बौधा १.१०.१२
अन्नार्थं मातरिश्वायं	वृ परा १०.१५	अन्यत्रोदकवर्मस्वधा	व १.२.१३
अन्नार्थमेतानुक्षाणाः	वृ परा ५.१०९	अन्यत्समाचरेत्सर्व	शाण्डि ४.२२९
अन्नार्थी पवते वायु	बृह १.१४७	अन्यत्सर्वं यथापूर्वं	भार ६.१३५
अन्नार्थी वाप्यमं	ब्र.या. २.१८०	अन्यथा चैव स ज्योति	औ ६.४७
अन्नेन एव हि जीवन्ति	वृ गौ ६.१८	अन्यथा तस्य गोत्रस्य	कण्व ७१२
अन्नेन धार्यते सर्वं	वृ गौ. १२.२९	अन्यथा दापयेद्यस्तु	देवला ६७
अन्नेन पूजनीयः स	वृगौ. १२.३४	अन्यथा दोषमाप्नोति	लोहि ३९
अन्ने भोजनसम्पन्ने	आपू ९.१४	अन्यथा नरकं याति	वृ हा ७.२४
अन्ने श्रिताति भूतानि	बौधा २.३.६८	अन्यथा मन्दबुद्धीनां	विष्णुम १०२

अन्यथा यस्तु कुस्ते	विश्वा ८.४२	अन्यायतो ये तु जनं	वृ परा १२.८१
अन्यथा वाहनादेव	वृ.गौ. ९.५५	अन्याया विधवाया वै	लोहि ५६८
अन्यथा शूद्रधर्मा	बृ.या. ४.४२	अन्यायेन नृपो राष्ट्रात्	या १.३४०
अन्यथा हि कृतं यत्तु	विश्वा २.२९	अन्यायेन हृता	बृहस्पति ३६
अन्यथैवं कृतं स्यादि	कण्व ३७	अन्यायेनार्जितंद्रव्यं चौर्य	कपिल ४४८
अन्यदत्ता तु या कन्या	आंगिरस ६६	अन्यायोपात्तवित्तस्य	वाधू ६५
अन्यदुप्तं जातमन्य	मनु ९.४०	अन्याः सदोषायास्तामि	भार १८.३९
अन्यदेव दिवशौचं	दक्ष ५.११	अन्यासु पितृगोत्रासु मातृ	लघुयम ३७
अन्यदत्ता तु या कन्या	वृ परा ७.३६२	अन्यासे सैकते सम्ये	व २.७.३६
अन्यप्रतिग्रहो विद्वन्	वृ परा १०.२८३	अन्यास्वपि च नारीषु	वृहा ६.२९९
अन्यप्रीतौ न चान्यस्य	वृ परा ७.३८५	अन्यूनमतिरिक्तं वा	भार ११.११२
अन्यं देवं नमस्कृत्वा	वृ हा ३.२७२	अन्ये कलियुगे नृणां	वृ परा १.२२
अन्यवत्किमिदं राजान्मां	वृ.गौ. १८.४४	अन्ये कृतयुगे धर्मा	मनु १.८५
अन्यस्मै विधिवद्देया	ब्र.या. ८.१६७	अन्ये कृतयुगे धर्म्मा	पराशर १.२२
अन्यस्य चेदसं त्यक्त्वा	विश्वा ८.७८	अन्ये च बहवोधर्मा	व्या ३३
अन्यस्यां यो मनुष्य	नारद १३.१८	अन्येत्ववैष्णवा	व २.७.२०
अन्यस्योद्धृत्य तन्मात्र	पराशर ६.७०	अन्येन कारयेद्धोमं	व २.६.४६७
अन्यहस्ते च विक्रीतं	या २.२६०	अन्ये पि वानुगन्तारः	पराशर ४.५
अन्यानपि निषिद्धांच	वृ परा १२.५०	अन्ये पि शंकया ग्रात्या	या २.२७०
अन्यानपि प्रकुर्वीतं	मनु ७.६०	अन्येऽपि श्रोत्रिया वृद्धा	आश्व १०.४२
अन्यानप्सु हुताशे वा	वृ परा ७.२८४	अनेयऽप्यधनयुक्ताश्च	दक्ष २.३०
अन्यानभ्यागतान् विप्राः	लहा १.२७	अन्येऽप्यपहतासुरा	वृ परा ७.१९५
अन्यानभ्यागतांश्चैव	वृ परा ६.८०	अन्ये येनाऽत्र कथिताः	भार १४.२४
अन्यानां पाकशेषाणि	वृहा ८.११८	अन्ये ये मण्डले देवाः	ब्र.या. १०.८३
अन्यानि च निषिद्धानि	वर.६.२४	अन्येषाञ्च	नरेन्द्राणां २६
अन्यानि चैव नामनि	वर.२.२८	अन्येषामग्निहीनानां	ब्र.या. ९.४३
अन्यासि फलमूलानि	व २.३.१७८	अन्येषामपि सर्वेषां	भार १३.३
अन्यानि यानि देयानि	भार ११.११०	अन्येषामपि सारानुरुप्येण	बौधा १.१०.१६
अन्यानि यानि पुण्यानि	भार १३.४२	अन्येषामर्थिनां पश्चात्	वृ परा ५.१७९
अन्यानिषिद्धत्वज्ञातो	भार १५.१४७	अन्येषाम् अपि विप्राणाम्	वृगौ ३.५८
अन्यानि सर्वशास्त्राणि	शाण्डि ४.१७९	अन्येषां करणन्यायं न	कपिल २९२
अन्यान्यत्र वदन्त्येके	आश्व १८.४	अन्येषां चैव गोत्राणां	ब्र.या. ७.५८
अन्यानुच्चावचानीह	वृ परा २.२८	अन्येषां चैवमादीनां	मनु ८.३२९
अन्यान् सलक्षणकुशान्	भार १८.३०	अन्येषां नखकर्णानां	लघुशंख ५९
अन्यां चेदशीयित्वा या	मनु ८.२०४	अन्येषु च विवादेषु	ब्र.या. १२.७

अन्येषु चाद्भुतोत्पातेष्व	बौधा १.११.४०	अन्हो अहनेर्दिनात्तद्वीया	कपिल ८०४
अन्येषु ये तु मथन्ति	कात्या ७.१२	अप एव समाश्रित्य	आंपू ११११
अन्येषु शिल्पशास्त्रेषु	भार २.७०	अपः करनखस्पृष्टाः	यम ६५
अन्येष्वपि तु कालेषु	मनु ७.१८३	अपक्त्यदाने यो दातु	मनु ३.१६९
अन्यैरपहतां दृष्ट्वां	अ ९७	अपक्वचूर्णलवणभाजना	कपिल २०४
अन्यैर्वा यज्ञियैः काष्ठैः	वृ हा ८.११४	अपक्वं वाऽपि पक्वं	शाण्डि ३.४३
अन्यैः वापिशुभैर्द्वयै	व २.४.६१	अपक्वाशनिना स्थेय	वृ परा १०.९८
अन्यैश्चापावभानाद्यैः	व २.६.१३८	अपचस्य च यद्दाने	पराशर ११.४४
अन्यैस्तु खनिताः कूपा	आप २.५	प्रपचो ब्रह्मणश्चोक्तः	बृ.या. २.२१
अन्योदर्यस्तु संस्पृष्टी	या २.१४२	अपत्नीकः कथमयं	कण्व ३९३
अन्योद्वाहेन केनापि	वृ परा १०.१७१	अपत्नीकः प्रवासी च	दा ८१
अन्योन्यमनसा	औ ५.४	अपरत्नीके प्रवासे च	व्या १९२
अन्योन्यं त्यजतोर्नागः	नारद १३.९२	अपत्यमुत्पादयितु	नारद १३.५४
अन्योन्यस्यशतेरिष्टं	व २.४.१०१	अपत्यं धर्मकार्याणि	मनु ९.२८
अन्योन्यस्याव्य भीचारी	मनु ९.१०१	अपत्यलोभाद्या तु स्त्री	मनु ५.१६१
अन्योन्यान्प्रदा विप्रा	संवर्त ९०	अपत्यानि विनश्यन्ति जपं	ब्र.या. ९.२६
अन्योन्यापहृतं द्रव्यं	या २.१२९	अपत्यार्थं स्त्रियं सृष्टाः	नारद १३.१९
अन्योपयुक्तशेषं च वज्र्यं	शाण्डि ५.१२	अपदिश्यापदेशं चार्थं	मनु ८.५४
अन्वये लिंगतोऽर्था	आपू ८	अपनीतेर्ब्रतस्यापि पुनः	कण्व ५१०
अन्वये सति भूदानं सहसा	कपिल ४८३	अपः पयोधृतं पराक	बौधा २.१.९०
अन्वष्टक्यं च पूर्वं	दा ६९	अपः प्राश्य ततः पश्चात्	व्यास ३.६४
अन्वष्टक्ये पितृभ्यश्च	प्रजा १९२	अपमानात्तपोवृद्धि	आप १०.९
अन्वहं कृच्छ्रफलदं	लोहि ४७०	अपेयपयः पाने कृच्छ्रो	बौधा १.५.१५९
अन्वाधेयं च यद्वत्	मनु ९.१९५	अपरक्ष ऊर्ध्वं चतुर्थ्या	व १.११.१४
अन्वारब्धापसव्येन	वृ परा २.१७७	अपराजितां वाऽऽस्थाय	मनु ६.३१
अन्वारब्धे नमत्येन	ब्र.या. २.९१	अप्रराणि सर्वकर्माणि	व २.३.८९
अन्वारब्धेन सव्येन	बृ.या. ७.६८	अपराधं परिज्ञाय	नारद १८.९६
अन्वारब्धौ तथा चारौ	ब्र. या. ८.२८८	अपराधशतैर्जुष्टं	वृ हा २.११९
अन्वारभ्य तु सव्येन	वृ.गौ. ८.५७	अपराधसहस्राणि कृतानि	कपिल ५५५
अन्वाष्टक्यमध्य	कात्या १७.२४	अपराधानुगुण्येन द्वादशा	लोहि ५४३
अन्वाहितं याचितकमाधिं	नारद ५.४	अपराधो यदि भवेत्	शाण्डि ३.१५४
अन्वाहितं याचितकमाधि	ब्र.या. १२.४	अपरान्तकमुल्लोप्यं	या ३.११३
अन्वितान् ब्राह्मणानेव	वृ हा ८.३२९	अपरासु तथानुष्टुप्	वृ परा ११.१८८
अन्वेषणमंगुल्या मुख	भार ८.६	अपराहणस्तथा दर्भा	मनु ३.२५५
अन्वेष्याऽन्वेष्य तत	अ ८	अपराहेसमभ्यर्च्य	ब्र.या. ४.५८

अपराह्वे समभ्यर्च्य	या १.२२६	अपाकयोग्या अपिताः तब	कपिल २०२
अपराह्वे विशुद्धि स्यात्	ब्र.या. २.१९३	अपांक्त्योपहता पंक्ति	मनु ३.१८३
अपरिज्ञातपूर्वश्च	बृ.गौ. १०.७७	अपांक्त्यो यावतः पांक्त्यान्	मनु ३.१७६
अपरे ऋषयः॥दि	वृ.गौ. ८.१५	अपात्रस्य हि यद्वत्	वृ परा ६.२४३
अपरे चावशंसन्ते	बृ.गौ. १५.२२	अपात्रीकरण तदवर्णनम्	विष्णु ४०
अपरेद्युस्तृतीये वा	कात्या २३.९	अपोत्रे पात्रमित्युक्ते	नारद ५.१०
अपर्तावाकलिकमाचर्ये	व १.१३.११	अपात्रेषु च पत्रेषु	व्या ३४९
अपर्युतप्तेषु तापिते	शाण्डि ३.९८	अपात्रे ह्यपि यद्वत्	अत्रि स १५१
अपवर्गाय द्वेचापि	वृ परा १२.३३९	अपानाय ततोहुत्वां	ल व्यास २.७२
अपवादेन संयुक्तो	बृ.या. ४.७२	अपनायाहुति हुत्वा	औ ३.१०३
अपवित्रकरोनग्नः भुक्त	भार ६.१०४	अपाप्युदाहरन्ति	व १.२.४५
अपवित्रसहस्रेभ्यो मुक्तं	आंपू ९११	अपामग्नेश्च संयोगाद्धैमं	मनु ५.११३
अपविद्ध पंचमो यं	व १.१७.३४	अपामार्गैश्वर्यकामः	भार १९.४७
अपविद्धस्ततोग्राह्यो यदि	कपिल ७९४	अपामार्गच विल्वञ्च	ल व्यास १.१८
अपः शतेन पीत्वा तु	बृ.या. ४.५९	अपां द्वादशगण्डूषै	वृ हा ४.२६
अपश्यता कार्यवशाद्	या २.३	अपां यत्तेति सत्कायं	व्यास ३.२६
अपसव्यमग्नौ कृत्वा	मनु ३.२१४	अपां समीपे नियतो	मनु २.१०४
अपसंव्यं ततः कृत्वा	औ ५.३७	अपार्थितः प्रयतेन	शंख ४.४
अपसव्यं तथा शून्यं	आं ६६६	अपावृतास्यं हास्यं च	व २.५.१३
अपसव्यं स्वधाश्राद्ध	आश्व १५.७६	अपावृत्ते तृतीये च	आंपू ८४
अपसव्येत्यनुज्ञातः सव्ये	व्या १२०	अपि कर्ता कृतार्थः स्यात्	आंपू ४९२
अपव्येन कृत्वैतद्	कात्या २१.१२	अपि गोचर्ममात्रेण	वृ परा १०.१७६
अपसव्येन वा कार्यो	कात्या १७.१३	अपिच काठके विज्ञायते	व १.१२.२३
अपसव्येन सव्येन	ल व्यास २.३७	अपि च काठके विज्ञायते	व १.३०.५
अपसव्येन होतव्य	व्या २८९	अपि च प्रपितामाह	बौधा १.५.११३
अपः सुराभाजनस्था	मनु ११.१४८	अपि चाण्डलश्वपच	औ १.१०३
अपसृत्य समादाय	वृ परा १२.३९	अपिचात्र प्रजापति	बौधा २.४.१८
अपस्तत्रापसव्येन	आश्व २३.७४	अपि जीवपितृता पिण्ड	आंपू १०४
अपस्नानन्तु यो विप्रः	बृ.गौ. १९.३४	अपि ताभि कृतं पाकं	कण्व ६००
अपहता इति तिलान्	व २.६.२९६	अपि तैः च एवं गन्तव्या	वृ गौ ५.२७
अपहृत्यं दिनं पापं	ल व्यास १.१९	अपि दुष्कृतकर्मभ्य	वृ परा ६.२३९
अपहृत्य सुवर्णन्तु	पराशर १२.६९	अपिनःश्वो विजनिष्यमाणाः	व १.१२.२४
अपहृत्ये तु वर्णाना	शंख १७.१४	अपि नः स कुले भूयाद्यो	मनु ३.२७४
अपहनवेऽधमर्णस्य	मनु ८.५२	अपि न्यायगतं राजा	कपिल ८१२
अपाकुर्वन् शास्त्रमार्गात्	कपिल ६५७	अपि पत्नी तादृशस्य	लोहि ५५६

अपि पापममाचारः स	विष्णु म ८३	अपुत्रस्य पितृत्यस्य	वृ परा ७.४५
अपि भक्तयात्मनाचार्य	शाण्डि १.११५	अपुत्रस्यपितृत्यस्य	व्या १.१७
अपि भ्राता सुतोऽर्घ्यो	या १.३५८	अपुत्रांगुर्वनुज्ञातो	या १.६८
अपि भ्रूणहनं मासात्	वृ परा १२.२३७	अपुत्राणां पितृव्यानां	आंपू ७२५
अपि भ्रूणहनं मासात्	शंख १२.१९	अपुत्रा तु यदाभार्या	व्या ३२४
अपिमूलफलैर्वापि	औ ५.८६	अपुत्रा म्रियते भर्तुः	व्या १.११
अपि यत्नात् श्राद्धदिने	कपिल ९५९	अपुत्राम्रियते भार्या भर्ता	व्या १.१४
अपि यत्सुकरं कर्म	मनु ७.५५	अपुत्रायां मृतायां तु	मनु ९.१३५
अपिख्यापितदोषाणां	अत्रि १.४	अपुत्रा ये मृताः केचित्	दा ६२
अपि वाज्ञातमित्येषा	कात्या १८.११	अपुत्रा ये मृताः केचित्	लघुशंख ३१
अपि वा प्रतिशौचमा	बौधा १.४.१७	अपुत्रा ये मृताः केचित्	लिखित ३३
अपि वाप्सु निमज्जन्वा	अत्रि २.८	अपुत्राः ये मृता केचित्	वृ परा २.२१७
अपिवाऽप्सु निमज्जान	व १.२६.९	अपुत्रा ये मृता केचित्	वृ परा ७.३५०
अपि वा भोजयेदेकं	व १.११.२६	अपुत्रा योषितश्चैव	वृ हा ४.२४९
अपि वा मार्गमालम्ब्य	आंड ५.१२	अपुत्रा योषितश्चैषा	या २.१४५
अपि वाऽमावास्याय	बौधा २.१.३९	अपुत्रा व सपुत्रा वा	शाण्डि ३.१५९
अपि वैतेन कल्पेन	व १.२३.१८	अपुत्राश्च मृता ये च	वृ परा ७.३५१
अपि शास्त्रकृतं कर्म	आंपू १.४६	अपुत्रेणा परक्षेत्रे	या २.१३०
अपिसर्वान्मनूशास्त्रमं	कपिल ३१९	अपुत्रेणैव कर्तव्य	अत्रिस ५२
अपि सूत्रकृतं तच्च	भार १५.१११	अपुत्रोऽनेन विधिना	मनु ९.१२७
अपि स्मार्तं यथा भूयःतेन	कपिल २७७	अपुत्रो बहुवृत्तिश्रीः विभक्तो	कपिल ४९९
अपि स्वीकृत्य चण्डाला	कण्व ४८४	अपुत्रोऽहं प्रदास्यामि तुभ्यं	लोहि ३२९
अपि ह्यत्र प्राजापत्या	व १.१४.१२	अपुत्रोऽहं प्रदास्यामि	लोहि ३२७
अपिह्यत्र प्राजापत्या	व १.१४.२०	अपुनर्मरणायैव ब्रह्मणः	बृ.या. ३.२८
अपिह्यत्र प्राजापत्या	व १.१४.२५	अपुष्पाः फलवन्तो	मनु १.४७
अपीडाजनकैरेव धर्मः कर्तुं	कपिल ५४६	अपूपंच हिरण्यं च	औ ३.१२१
अपुण्याहे तु भुञ्जीत	अत्रि ५.४६	अपूपं च गुला (डा) नं	शाण्डि ३.१२८
अपुत्रको पशुश्चैव	व्या १६३	अपूपं लवणं मुद्गं	अत्रि ५.४४
अपुत्रदत्तवृत्त्या यः प्राण	आंपू ३२९	अपूपवर्जं तच्चापि वर्ज्यमेव	शाण्डि ५.९
अपुत्रधना मात्रे स्युर्ज्ञातयो	लोहि २३८	अपूपसक्तवो धानास्तक्र	आश्व १.१७१
अपुत्रः प्रार्थनापूर्वं दत्तोऽयं	कपिल ७०१	अपूपानि च वर्ज्यानि	शाण्डि ५.११
अपुत्रप्रार्थनापूर्वं दान	लोहि ६४	अपूपान् पायसं शक्तून्	वृ हा ७.३०९
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति	प्रजा १८८	अपूपान् शर्करोपेतान्	व २.६.२५६
अपुत्रस्य च विशेषा	बृ.या. ५.१९	अपूपैः मंठकादयैश्च	व २.६.२४६
अपुत्रस्य धनं ज्ञातेर्विभक्त	कपिल ४८९	अपूर्वः सुव्रती विप्रो	पराशर १.४४

अपृच्छद्गोत्रचरणेन	व २.६.१९४	अप्रदत्ता भवैकाह	ब्र.या. १३.३
अपेक्षितं न यो दद्यात्	व्या २३८	अप्रदुष्टां प्रियांहत्वा	ब्र.या. १२.५०
अपेक्षितं याचितव्यं	व्या २३७	अप्रदुष्टां स्त्रियं हत्वा	या ३.२६९
अपेक्षितं यो न दद्यात्	व्या १६६	अप्रदेयं देयमिदं अवाच्यं	लोहि ६००
अपेक्ष्यं नास्ति किमपि	कण्व १९३	अप्रमत्तश्चरेद् भैक्षं	या ३.५९
अपेत्थं अंकमित्युक्त	वृ हा २.३५	अप्रमत्ता रक्षत तन्तुमेतं	बौधा २.२.४९
अपेयन्तद्विज्ञानीयात्	बृ.गौ. १३.८	अप्रमत्ता रक्षत तन्तुमेतं	व १.१७.९
अपेयं तद्भवेदापः पीत्वा	अग्नि ५.२४	अप्रमाणस्तु सा ज्ञेया	ब्र.या. ८.१६६
अपेयं येन संपीतं	देवल ७	अप्रयच्छन् समाप्नोति	या १.६४
अपोऽवगाहनं स्नानं	बौधा २.४.४	अप्रयच्छन्समाप्नोति	व २.४.३६
अपोशनिक्षिपेत्पाणौ	व्या १४८	अप्रयत्नः सुखार्थेषु	मनु ६.२६
अष्टाभिर्वा द्विजैर्धीरि	कण्व ५७०	अप्रवक्तारमाचार्यमनधीयान	ब्र.या. १२.१६
अनंशास्वाश्रमान्तरगताः	व १.१७.४६	अप्रवाहोदकं स्नानं	व्या २४१
अप्यनेकाङ्गविकलं क्रियते	कपिल ४४५	अप्रवृत्तौ स्मृतो धर्म	नारद १३.१०३
अप्यागतं तेन	आंपू २८	अप्रसूताः स्मृता दर्माः	वृ हा ४.४३
अप्युद्धृत्य यथाशक्त्या	कात्या १३.७	अप्राणिभिर्यत् क्रियते	मनु ९.२२३
अप्येकपादं पूर्वं वा	लोहि ११४	अप्राप्तव्यवहारश्च दूतो	नारद १.४७
अप्येकमाशयेद् विप्रं	कात्या १३.६	अप्राप्तव्यवहारस्तु	नारद २.२७
अप्येनं कुपितं रोषात्	लोहि ६५७	अप्रामाण्यं च वेदनां	व १.१२.३८
अप्रकाशास्तु विज्ञेया	नारद १८.५६	अप्रायत्ये समुत्पन्ने	बृ.या. ६.३०
अप्रजः स्त्रीधनं भर्तुः	या २.१४८	अप्रावृत्य शिरो यस्तु	वाधू १०
अप्रजां दशमे वर्षे	बौधा २.२.६५	अप्रोक्ष्यापरिषिच्यैव	आंपू २४५
अप्रजा या तु नारी स्यान्	आप ९.२४	अप्सु निमज्जोन्मज्जय	बौधा २.५.११
अप्रजो मृतपत्नीक	प्रजा ७७	अप्सुपाणौ च काष्ठै	व १.१२.१३
अप्रज्ञायमानं कितं	व १.३.१४	अप्सु प्रवेश्यं तं दंडं	मनु ९.२४४
अप्रणामे तु शूदेऽपि	आंगिरस ५०	अप्सु प्राप्तासु हृदयं	वाधू २५
अप्रणोद्योऽतिथि सायं	मनु ३.१०५	अप्सु भूमि वदित्याहु	मनु ८.१००
अप्रतिष्ठित देवानां	वृ.परा ११.२०८	अप्सुमे च समारभ्य	विश्वा ४.१५
अप्रतिष्ठितमालाय साजपे	भार ७.५३	अप्सुमे त्रीणि चोक्तानि	विश्वा ४.१२
अप्रत्ता दुहिता यस्य	व १.१७.२५	अप् स्वग्ने सधिष्टवेति	वृ हा ८.४८
अप्रत्तानां स्त्रीणां	व १.४.१८	अप्स्वग्नौ हृदये सूर्ये	वृ हा ५.८५
अप्रत्याक्षा हिपितरो	आंपू ८६५	अप्स्वात्मानं नावेक्ष्येत	ब्र.या. ८.१३२
अप्रत्यागुत्तर शिरा	व्यास ३.७०	अफालकृष्टे नागर्नीश्च	या ३.४६
अप्रत्यायगश्चैव	वृ परा ७.३५५	अबद्धं मनो दरिद्र	बौधा १.७.३०
अप्रत्या स्यापन	व २.३.७०	अबन्धके स्याद् द्विगुणं	वृ हा ४.२२७

अबीजविक्रयी चैव	मनु ९.२९१	अभावादक्षमालायाः	बृ.या ७.१३९
अब्जानां चैव भाण्डानां	शंख १६.५	अभावादग्नि होत्रस्य	वृ परा ४.१६२
अब्दभेदान्मासभेदात्	कण्व ६२	अभावे कथितं सद्भि	कण्व ७८४
अब्दमेकं न कुर्वीत	ब्र.या. ७.२०	अभावे कारिणं कारि	शाण्डि ४.६५
अब्दवृद्धि र्भवेद्यत्र	वृ परा ७.९९	अभावे जातिपुष्पाणि	व २.६.४०२
अब्दादूर्ध्वं चरन्त्येके	वृ परा ७.१४९	अभावे तस्य सूत्रस्य	आंपू ५५
अब्दार्थं भिनद्मत्येत	मनु ११.२५६	अभावे दन्तकाष्ठानां	ल हा ४.११
अबन्ध्यं यश्च	या २.२४६	अभावे दुहितृणां तु	नारद १४.४८
अब्भक्षः स कृच्छ्रतिकृच्छ्रः	व १.२४.४	अभावे धौतवस्त्रस्य	बृ.या. ७.३९
अब्भक्षस्तृतीयः स	बौधा २.१.९४	अभावे पितृयज्ञे तु	व २.३०४
अब्रह्म अभिहितं यत् तु	वृगौ ३.१९	अभावे ब्रीहियवयोर्दध्ना	कात्या २७.३
अब्राह्मणइतिप्रोक्तो	कण्व २२८	अभावे मृण्मये दद्याद्	अत्रि स १५५
अब्राह्मणः संग्रहणे	मनु ८.३५९	अभावे वामहस्तेवा	ब्र.या. २.७१
अब्राह्मणस्य प्रनष्ट	बौधा १.१०.१७	अभि आगतं शान्तम्	बृगौ ६.४८
अब्राह्मणस्य शारीरो	बौधा २.२.६१	अभिगच्छन् सुतार्थं	वृ परा ८.२८०
अब्राह्मणादध्ययन	बौधा १.२.४०	अभिगच्छेच्च देवेशं	शाण्डि २.६५
अब्राह्मणादध्ययनं	मनु २.२.४१	अभिगति उपजीतानाम्	वृ गौ ३.४६
अब्राह्मणेषु सर्वेषु सर्व	कपिल १२	अभिगन्तासि भगिनी	या २.२०८
अब्रुवन हि नरः साक्ष्यं	या २.७८	अभिगम्य कृते दानं	पराशर १.२८
अभक्तानामसर्हाणां	शाण्डि ४.१९२	अभिगम्य जगन्नाथं	शाण्डि २.८५
अभक्ष्य परिहारश्च	अत्रि स ३५	अभिगम्यैव देवेशं	शाण्डि ४.३२
अभक्ष्य भक्षणं	देवला ४९	अभिगम्योत्तमं दानं	पराशर १.२९
अभक्ष्यभक्षणे चैव	शाता ३.४	अभिघाते तथाच्छेदे	या २.२२६
अभक्ष्यभक्षणे विप्र	वृ परा ८.२१२	अभिधार्यं च तान् भागान्	विश्वा ८.१८
अभक्ष्याणामपेयानाम	बृ.य. ३.६२	अभिधार्यं सुवेगाऽऽज्यं	आश्व २.४६
अभक्ष्याणामपेयानाम	यम ४६	अभिचारमनर्हं च त्रिभि	औ ९.५७
अभक्ष्याः प्रशवो ग्राम्यां	बौधा १.५.१४८	अभिचारादिकं कर्म	वृ हा ६.१९०
अभक्ष्याः प्रशवो ग्राम्या	बौधा १.१२.१०	अभिचारेषु सर्वेषु	मनु ९.२९०
अभक्ष्येण द्विजं दूष्यन्	या २.२९९	अभिज्ञानैश्च वल्मीक	नारद १२.५
अभयञ्च ततः पश्चात्	बृ.गौ. २०.३७	अभितः सर्वदेवानां	वृ हा ३.१५३
अभयं सर्वभूतेभ्यो	व १.१०.३	अभिधार्यं सुवेणेदं	आश्व २.५५
अभयं सर्वभूतेभ्यो	व १.१०.४	अभिधास्येऽथ रुद्राणां	वृ परा ११.१०७
अभयस्य हि यो दाता	मनु ८.३०३	अभिपूजितलाभास्तु	मनु ६.५८
अभयाक्षस्रग्दधानाः	भार १९.१६	अभिपूर्यं ततो दद्याद्	वृ हा ८.१३९
अभया जूनमुखदिनि	कपिल ३९५	अभिप्रियाणीति सूक्तेन	वृ हा ८.२३७

अभिमन्त्र्य च मंत्रेण	वृ हा ४.७६	अभूदेकाद्याष्ट सूक्तौ	वृ हा ५.३८४
अभिमन्त्रय जलः मंत्रै व	व्यास २.१५	अभेद्यांपरमा बुद्धिश्शुद्धेति	शाण्डि १.५२
अभिमन्त्र जलम्पश्चान्	व २.६.२९	अभेयवंश्यातु उहश्च	व २.४.८३
अभिमन्त्रय जलं पञ्चान्	व २.७.५०	अभोज्यन्तद्भवेदनं	बृ.गौ. १३.१६
अभिमन्त्र्य जलं पश्चान्	वृ हा ७.७२	अभोज्यंतद्विजानीयाद्	बृ.गौ. १३.१७
अभिमन्त्र्य जलं पश्चान्	वृ हा ४.२८	अभोज्यन्तद्विजानीयान्	बृ.गौ. १३.१४
अभिमन्त्र्य जलं प्राश्य	वृ हा ६.२६६	अभोज्यमन्नं नात्तव्यमात्मन	मनु ११.१६१
अभिमन्त्रयं तु गायत्रं	विश्वा १०७	अभोज्यानां तु भुक्त्वाऽऽन्नं	मनु ११.१५३
अभिमर्त्याहृतांशाखां	भार ५.२२	अभोज्यान्नं यथा भुक्त्वा	अत्रि स ७२
अभियुक्तायां उत्पन्न	व १.१७.५५	अभोज्यान्नानपाङ्क्तेया	शाण्डि ३.८
अभियोक्ता न चेद् ब्रूयाद्	मनु ८.५८	अभोज्यान्नाः स्युरन्नादो	व्यास ३.४९
अभियोगमनिस्तीर्थं	या २.९	अभोज्याप्रतिग्राह्या त्याज्य	विष्णु ५७
अभियोगात्तथाभ्यास	दक्ष ७.६	अभोज्याश्चप्रतिग्राह्य	बृ.य. २.९
अभिरम्यतामिति वदन्तु	व २.६.३१४	अभोज्याश्चप्रतिग्राह्या	यम १४
अभिवादन शीलस्य	मनु २.१२१	अभ्यक्तमेव होतव्यमतो	वृ परो ४.१८३
अभिवादयेद् वृद्धांच	मनु ४.१५४	अभ्यक्तश्च तथा स्नाया	आंपू २५१
अभिवादात् परं विप्रो	मनु २.१२२	अभ्यक्तेन च धर्मज्ञ	वृ परा १०.२८४
अभिवाद्य गुरोः पादौ	ल हा ३.८	अभ्यग्रचिह्नो विज्ञेयो	नारद २.१५४
अभिवाद्याश्च पूवन्तु	औ १.४५	अभ्यङ्क्ष्वेति च वै तैलं	आश्व २३.७८
अभिशास्तस्य षण्ढस्य	मनु ४.२११	अभ्यङ्गकालनैयत्यं आर्थिकं	लोहि ६४०
अभिशास्तो द्विजोऽरण्ये	अत्रिस २८८	अभ्यंगं मात्र गाज संस्पर्श	व २.५.२२
अभिशास्तो मृषा कृच्छ्रं	या ३.२८६	अभ्यंगमंजनाञ्चक्ष्णोरूपान	मनु २.१७८
अभिभ्रवणहीनं तु यः	वाधू २०८	अभ्यङ्गाद्धरते लक्ष्मी	व्या ४३
अभिषह्य तु याः कन्या	मनु ८.३६७	अभ्यंजनं स्नापनं च	औ ३.२८
अभिषिक्तं तु यच्चूर्ण	वाधू १११	अभ्यंजनं स्नापनं च	मनु २.२११
अभिषिच्चशुभैर्वस्त्रै	व २.७.५२	अभ्यञ्जनादि व्यापारे	शाण्डि १.२६
अभिषिंचेतु सद्गंधं	भार ७.८३	अभ्यञ्जयेत्कुमार	आश्व ९.१८
अभिषेकं कारयित्वा	आंपू ८५	अभ्यनुज्ञानदेवास्ते प्रथमं	लोहि ५०३
अभिसंधिकृतेऽप्येके	व १.२०.२	अभ्यनुज्ञांज्ञातिमता	लोहि २४३
अभिसंधिपूर्णं त्रिरात्र	बौधा १.५.१३८	अभ्यनुज्ञांविशेषेण	कपिल ३८३
अभीक्ष्णं चोद्यमानोऽपि	नारद २.२१३	अभ्यनुज्ञाव्रतस्यास्य	लोहि ५०७
अभीषाङ्गा पदस्तोगाः	व १.२८.१२	अभ्यन्तराणि यज्ञानि	बौधा १.७८
अभीष्टं लोकमाप्नोति	शंख १२.२४	अभ्यन्तरान्तराल	भार २.१४
अभुक्ते मुंचते यश्च	आप ९.१६	अभ्यर्चति क्रमेणैव व्याहृती	कपिल ३१६
अभूतमप्यभिहितं	नारद १.५५	अभ्यर्चयेद् गन्धपुष्पैः	वृ हा ७.१०७

अभ्यच्चर्यैवं रथं	वृ हा ६.३१	अमत्यायुगतोदनैर्निष्कृतः	नारा १.१७
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यै	वृ हा ६.१२९	अमत्या वारूणी पीत्वा	बौधा २.१.२५
अभ्यर्च्य मुसलं पुष्पै	वृ हा ६.८५	अमत्यैतानि षड्जग्ध्वा	मनु ५.२०
अभ्यर्च्य श्रद्धया प्राप्तान्	शाण्डि ४.८८	अमनोरञ्जकान्यद्य शास्त्राणि	नारा ७.२१
अभ्यर्च्य विधिवद्धि	वृ.गौ. ७.८३	अमंत्रकं प्रकुर्वीतं	वृ हा ६.११३
अभ्यर्च्य विप्रमिथुनान्	वृ हा ५.४०८	अमन्त्रतं विधानेन	आंपू ८१२
अभ्यर्च्य समलंकृत्य	कण्व ६२८	अमन्त्रकेण होतव्यं	लोहि १२६
अभ्यसेच्च महापुण्यां	संवर्त २१०	अमंत्रदग्धो न भवेदमंत्रो	कपिल ६५८
अभ्यसेत् प्रणवं नित्यं	वृ परा ४.१०५	अमन्त्रं वा समन्त्रं वा	विश्वा ८.२१
अभ्यसेत् प्रयतो वेदं	औ ३.८८	अमन्त्राणां दहनम्	बौधा १.५.३६
अभ्यस्येत्प्रीतिमान्	वृ.गौ. १८.३२	अमंत्रिका तु कार्येयं	मनु २.६६
अभ्यागत अन्यथा	ल व्यास २.६३	अमात्यमुख्यं धर्मज्ञं प्राज्ञं	मनु ७.१.४१
अभ्यागतो ज्ञानपूर्वः	वृ.गौ. ६.५५	अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थं	मनु ७.१.५७
अभ्यागतो तिथिश्चान्यः	दक्ष २.२९	अमात्यान् मंत्रिणों	वृ परा १२.११
अभ्यासस्सततं सर्वं	शाण्डि ३.६३	अमात्याः प्राड् विवाको	मनु ९.२३४
अभ्यासे तु व्रतं पूर्णं	वृ हा ६.३०५	अमात्ये दण्ड आयतो	मनु ७.६५
अभ्यासे तु व्रतं पूर्णं	वृ हा ६.३८०	अमात्यो न तथा क्वापि किं	कपिल ४९३
अभ्यासे तु षड् ब्दं	वृ हा ६.३७८	अमात्रं च त्रिमात्रं च	बृ.या. २.१.४५
अभ्यासे तु सुराया	व १.२०.२५	अमादशीदिषु तथा	कण्व ७५७
अभ्यासे त्रिगुणं चैव	नारा २.४	अमादिकानां श्राद्धानां	लोहि ३४१
अभ्यासोदशसाहस्रः	व १.२५.१२	अमानिनः सर्वसहा	वृ.गौ. १२.२२
अभ्युक्ष्यानं नमस्कारै	व्यास ३.६३	अमानुषीषु पुरुष	मनु ११.१.७४
अभ्युत्थानानि वक्ष्यामि	ब्र.या. १२.३०	अमानुषीषु गोवर्जं	अत्रि स २७१
अभ्युत्थानमिहागच्छ	दक्ष ३.५	अमान्ते प्रतिपदा यत्र	ब्र.या. ९.३८
अभ्युद्धृत्य यथाशक्ति	ब्र.मा. २.२११	अमामनुयुगक्रान्ति	आंपू ६०६
अभ्युपगम्य दुहितरि	बौधा २.२.१७	अमाययैव वर्तेत न	मनु ७.१०४
अभ्युपेत्य च सु शुश्रूणा	नारद ६.१	अमायामपराह्णे तु	व २.६.२८१
अभ्रातकं मदूकञ्च	व २.६.२१	अमायां कृष्णपक्षे	वृ हा ८.३२६
अभ्रातृका पुंसः पितृन	व १.७.१६	अमायां तु क्षयो यस्या	दा ३०
अभ्रातृकां प्रदास्यामि	लिखित ५४	अमायां मन्दवारे	व २.६.४२१
अभ्रातृकां प्रदास्यामि	व १.१७.१८	अमावस्याष्टकास्ति	औ ३.११२
अभिं कार्णायसीं दद्यात्	मनु ११.१.३४	अमावास्या क्षयो यस्य	लिखित २१
अमत्या दशकृच्छ्राणि	नारा १.२५	अमावास्या द्वादश	आंपू ६१०
अमत्या पाने कृच्छ्राब्दपादं	बौधा २.१.२२	अमावास्या द्वादशी च	संवर्त २०५
अमत्या ब्राह्मणं हत्वा	बौधा २.१.६	अमावास्यामष्टमी च	मनु ४.१.२८

अमावास्या मासिकं	व्या २६५	अमेध्यं दृष्ट्वा जपति	बौधा १.७.२९
अमावास्यां क्षयो यस्य	लघुशंख १७	अमेध्येरेतो गोमांसं	पराशर ११.१
अमावस्या गुरु हंति	मनु ४.११४	अमेध्यशवशूदान्न	व २.३.१६१
अमावास्यायां तिथिं	औ १.१०६	अमेध्याक्तस्य मृत्तयैः	या १.१९१
अमावास्यायां यो ब्राह्मणं	औ १.१०५	अमेध्यानि च सर्वाणि	पराशर ८.३०
अमावस्याकंसंक्रांति	ब्र.या. ४.२	अमेध्यानि सकीटानि	वृ हा ८.११६
अमावास्याष्टका वृद्धि	या १.२१७	अमेध्याभ्याधाने	बौधा १.६.५१
अमाश्राद्धे गयाश्राद्धे	व्या ३२५	अमेध्येषु च ये वृक्षा	बौधा १.५.५९
अमीमांस्यानि शौचानि	अत्रि स १९१	अमेध्ये वा पतेन्मतो	मनु ११.९७
अमीमांस्यानि शौचानि	अत्रि स २४१	अमेयैः संवृतो वेदः	आंपू १५९
अमुक्तयो रस्तगयो	अभि ५.७१	अम्बरं वायुसंयुक्तं	विश्वा ५.१६
अमुक्तयोरस्तगयोर	ल व्यास २.८०	अम्बरीषस्तु तं गत्वा	वृ हा १.१
अमुक्तयोरस्तङ्गतयो	ब्र.या. २.१९२	अम्बाष्टकासु नवभि	प्रजा १९१
अमुष्मै नम इत्यैवं	कात्या १३.११	अम्बष्ठात्प्रथमायां	बौधा १.८.९
अमुष्य पौत्रैवांमुष्यपुत्रीं	व २.४.१९	अम्बष्ठो मागधश्चैव	नारद १३.१०९
अमूनि पंचद्व्याणि	भार १४.२८	अम्बु पूर्णघटं यस्तु	ब्र.या. ११.५३
अमून्याचमनीप्यस्यानि	भार १४.२९	अम्बुपेभ्योऽथ यक्षभ्यो	वृ परा २.२१६
अमृतं चैव मृत्युश्च	बृह ९.७२	अम्बुप्रायास्तथा भोगा	शाण्डि ४.१३
अमृतं ब्राह्मणस्यान्नं	आंगिरस ५७	अंबूनि निर्वपेद् बीजं	भार १५.१५
अमृतं ब्राह्मणस्यान्नं	आप ८.१३	अम्भाप्रपूर्णकुम्भेषु	वृ परा ११.९३
अमृतं ब्राह्मणसयानं	वृ परा ६.३०९	अम्भोभिरुत्तर क्षिप्तः	व्यास ३.१५
अमृतापिधानमसीति	वृ हा ५.२८१	अम्युपेयादय इति	व १.४.३१
अमृतापिधानमसीत्यु	औ ३.९३	अयचिता हूते ग्राह्यमपि	या १.२१५
अमृतापिधानमसीत्यु	औ ३.१०५	अयज्ञीयस्तुणैस्तत्स्यात्	व्या ३४१
अमृतेषु च गव्येषु	भार १८.१०५	अयज्ञेनाविवाहेन	बौधा १.५.९७
अमृतो पस्तरणमसी	आश्व २३.६५	अयथार्थस्य नादद्याद	शाण्डि ३.२७
अमृतोपस्तरणमसीति	वृ हा ५.२५५	अयनग्रहणे मुख्ये	आपू २८६
अमृतोपस्तरणमसीत्याप	ब्र.या. २.१७५	अयनस्यप्रभेदोक्तिर्नदोपाय	कण्व ६३
अमृतोपस्तरणं	औ ३.१०.२	अयने द्वे च विषुवे	आंपू ६४५
अमृतोपस्तरणं	ल व्यास २.७१	अयने द्वे च विषुवे	आं पू ६३९
अमेध्य गन्धादाक्षिप्ता	शाण्डि १.१७	अयने विषुवे चैव	औ ३.११५
अमेध्यद्रव्यन्नार्हस्सदा	शाण्डि ३.७०	अयन्त्रितकलत्रा हि	बौधा १.११.१५
अमेध्यपूर्ण भस्मावत्	वृ परा १२.१८४	अयः प्रतिकृतिं कृत्वा	वृ परा ८.१११
अमेध्यप्राशने प्रायश्चित्	बौधा २.१.८९	अयमुक्तो विभागो च	मनु ९.२२०
अमेध्यं गंधकाष्ठानि	व २.५.४९	अयमेव महामार्गः श्राद्धीये	कपिल २५९

अयमेव महामार्गो	कण्व ४६८	अरक्षिता गृहे रुद्धाः	मनु ९.१२
अयमेव समाख्यातः	कण्व १०६	अरक्षितारमत्तारं नृपं	मनु ८.३०८
अयमेवातिकृच्छ्रः स्यात्	वृ परा ९.१८	अरक्ष्यामाणाः कुर्वन्ति	या १.३३७
अयं अग्नि वैश्वानर	वृ हा ५.२६०	अरणिं कृष्णमार्जारः	पराशर १२.४२
अयं द्वि जैरविद्वद्भि	मनु ९.६६	अरणिस्तन्मयी प्रोक्ता	कात्या ७.२
अयं भवेद् ब्रह्मचारी सदा	लोहि १६४	अरण्यनित्यस्य	व १.१०.११
अयं मे वज्र इत्येवं	या १.१३६	अरण्यनित्यो न ग्राम्य	व १.१०.९
अयं विधि स विज्ञेय	शंख १८.१४	अरण्ये नियतो जप्त्वा	या ३.२४८
अयं हि पन्थाः पुरुषस्य	वृ परा ६.१९२	अरण्ये निर्ज्जने विप्रः	संवर्त १०४
अयं हि परमो धर्मः	वृ परा ६.२०५	अरण्येवा त्रिरभ्यस्य	मनु ११.२५९
अयं हि परमो मन्त्रः	आंपू ७८९	अरण्योः क्षयनाशाग्नि	कात्या २०.३
अयाचित प्रदाता च कष्टं	ल हा २.१२	अरण्योरल्पमव्यंगं	कात्या २०.१८
अयाचितं प्रदा वै	वृ गौ ३.४७	अरत्निमात्रमुत्सृज्य कूर्याद्	वाधू १२
अयाचितं धनं पूतं	प्रजा ४६	अरविन्दनिभः श्रीमान्	वृ.हा २.८४
अयाचितं शिलोज्जैस्तु	शाण्डि ३.१७	अराजके हिलोकेऽस्मिन्	मनु ७.३
अयाचिताहृतं ग्राह्यामपि	वाधू १६७	अराजदैविकं नष्टं भांडं	या २.२००
अयाचिते चतुर्विंशं	अत्रि स १२१	अरि मित्रः उदासीनो	या १.३४५
अयाचितेषु गृहणीया	ब्र.या. ७.४७	अरिषड्वर्गपापानि नाशये	विश्वा ४.२३
अयाज्ययाजनं कृत्वा	संवर्त २१७	अरुणस्य चे ये बाणा	वृ.परा २.७७
अयाज्ययाजनैश्चैव	मनु ३.६५	अरुणाचारुणाख्याता	ब्र.या १०.७४
अयातयामा विज्ञेया	व्या २८०	अरुणोदय वेलायां प्रातः	वृ.हा ५.५.३५
अयातयामैश्छन्दैर्भिर्यत्	कात्या २७.१८	अरोगादुष्टवंसोत्यात्थाम	व्यास २.२
अयाश्याग्नं इदं	आश्व २.६३	अरोगामपरिक्लिष्टां	वृ.परा १०.४८
अयुक्तं साहसं कृत्वा	नारद २.२२०	अरोगा याऽपरिक्लिष्टा	वृ.परा १०.३०५
अयुतं च जपेन्मत्र	व २.३.१९७	अरोगा वत्स संयुक्तां	वृ.परा ११.२२७
अयुतं तु जपेन्मत्र	वृ हा ७.३०	अरोगाः सर्वसिद्धार्था	मनु १.८३
अयुतं तु मुहूर्तानामर्ध	वृ परा ७.९४	अरोगिणी भ्रातृमती	या १.५३
अयुतं वा सहस्रं वा	वृ हा ३.१३७	अरोगिणीं भ्रातृमतीं	व २.४.४
अयुध्यमानस्योत्पाद्य	मनु ४.१६७	अर्कः पलाश खदिरा	या १.३०२
अयुष्मा दक्षिणामुखाः	व १.४.१३	अर्कस्त्वर्काय होतव्यः	वृ.परा ११.४५
अयोग्यं सततं स्याद्धि	आंपू २३२	अर्केण पुष्पाञ्जलि	ब्र.या १०.१४१
अयोग्येषु वदच्छास्त्र	शाण्डि ४.२४१	अर्कः पलाशखदिरापामार्गो	ब्र.या १०.१५१
अयोनिजा ह्यपि पुत्राः	बौधा १.५.१२८	अर्घपंचममासान्	व १.१३.३
अयोनी क्रमते यस्तु	नारद ७.२१	अर्घप्रक्षेणाद्विशं भाग	या २.२६४
अयोनी गच्छतो योषां	या २.२९६	अर्घयन्ति जगन्नाथं	शाण्डि ३.१३

अर्घश्चेदपहीयेत सोदयं	नारद ९.५	अर्चयेद्गुरुवत प्रीतो	वृ.गौ १२.३१
अर्घे अक्षय्योदके चैव	कात्या २४.१५	अर्चयेद् देवदेवेशं	वृ.हा ७.९६
अर्घ्यगन्धपुष्पदीपं	ब्र.या ४.७९	अर्चयेद्भूधरं देवं	वृ.हा ५.३९०
अर्घ्यत्रयप्रयोगार्थं	विश्वा ५.२६	अर्चयेद्मया साह्यं	व २.४.२४
अर्घ्यपात्र समानीय	ब्र.या ४.७०	अर्चयेन् मूलमंत्रेण	वृ.हा ५.४२१
अर्घ्यपात्राणि सर्वाणि	वृ.परा ७.१९९	अर्चयेन् मातुरुत्संगे	वृ.हा ५.४८६
अर्घ्यप्रदानात्परतो गायत्रीं	विश्वा ७.८	अर्चमेन्मालतीपुष्पै	व २.६.२६४
अर्घ्यमेकं तु मध्याह्ने	विश्वा ५.३४	अर्चयेन्मालतीपुष्पै	व २.६.२३६
अर्घ्याक्रोशातिक्रमकृद्	या २.२३५	अर्चयेयेद्गन्धपुष्पा	व २.७.५३
अर्घ्या भवन्ति धर्मेण	व्यास ३.४०	अर्चायामर्चयेत् पुष्पै	वृ.हा ७.२५
अर्घ्येऽक्षय्योदके चैव	कात्या ४.८	अर्चासि केवलान्येव	बृह ९.१६६
अर्घ्येण परिषिच्यान्नं	शाण्डि ४.१३०	अर्चेत पुरुषसूक्तेन	शाता २.६
अर्चतानेन मंत्रेण	आश्व २३.२८	अर्च्चितः पूजितो विप्रो	ब्र.या ७.५२
अर्चनं मंत्रपठनं ध्यानं	वृ.हा ८.१४९	अर्चनाञ्ज यथान्यायं	बृ.गौ १९.१२
अर्चनं वन्दनं दानं	वृ.हा ५.१८१	अर्चयामि भवान्साधुः	ब्र.या ८.१८७
अर्चयन वैदिकैर्मन्त्रै	वृ.परा ४.११२	अर्चयित्वा हृषीकेशं	वृ.हा ३.१९४
अर्चयित्वा चतुर्दिक्षु	वृ.हा ७.१८६	अर्चयेद् रक्त कमले	वृ.हा ५.४६२
अर्चयित्वाऽच्युतं भक्त्या	वृ.हा ६.१४८	अर्थकामेष्वसक्तानां	मनु २.१३
अर्चयित्वा द्विजं भक्त्या	वृ.गौ ७.२२	अर्थधाणं शरीरं च भर्तारं	व २.५.२८
अर्चयित्वा विधानेन	वृ.हा ६.१२४	अर्थपंचकतत्त्वज्ञः	वृ.हा ५.२२७
अर्चयित्वा विधानेन	वृ.हा ७.३४	अर्थसम्पादनार्थं च	मनु ७.१६८
अर्चयित्वा विधानेन	वृ.हा ७.२०५	अर्थस्य संग्रते चैनां	मनु ९.११
अर्चयित्वा विधानेन	वृ.हा ७.२५५	अर्थहानिश्च विज्ञानं	शाण्डि ३.४७
अर्चयित्वा हृषीकेश	वृ.परा १०.२१२	अर्था च वरुणा प्रीता	ब्र.या १०.८०
अर्चयित्वोपचारैस्तु	वृ.हा ५.१४६	अर्थार्थमथवा स्नेहान्ते	वृ.गौ १०.९३
अर्चयेज्जगतामीशं	व २.५.३६	अर्थार्थी यानि कर्मणि	वाधू १८६
अर्चयेज्जगतामीशं	व २.६.२३५	अर्थानिर्थाबुभौ बुद्ध्वा	मनु ८.२४
अर्चयेज्जगतामीशं	वृ.हा ७.२०६	अर्थानां छन्दतः स्तष्टि	या ३.२०३
अर्चयेज्जगतामीशं	वृ.हा ७.२२८	अर्थानां भूरिभावच्च	नारद १८.३९
अर्चयेत्त द्विजं पुष्पैः	वृ.परा ७.१८६	अर्था वै वाचि नियता	नारद २.२०५
अर्चयेत्प्रयतो विष्णुं कर्म	व २.३.२	अर्थाः सर्वेऽपि शुद्धान्ति	कण्व १७९
अर्चयेद्गंधपुष्पाद्यै	व २.६.३१९	अर्थिका निशिवेधेन	ब्र.या ९.३
अर्चयेद् गन्ध पुष्पाद्यै	वृ.हा ७.२१५	अर्थेऽपव्ययमानं तु	मनु ८.५१
अर्चयेदच्युतं भक्त्या	व २.६.२३४	अर्थेष्वधिकृतो यः स्यात्	नारद ६.२२
अर्चयेदतिथि प्रीतः	वृ.गौ १२.३२	अर्द्धं प्रसूतिमात्रन्तु	दक्ष ५.७

अर्द्धप्रसूतिमात्रांतु	वृ.हा ४.१६	अलंकृतश्च संपश्येद्	मनु ९.२२२
अर्द्ध पादं समुद्दिष्टं	वृ.हा ६.३१४	अलंकृताभि सत्यादि	वृ.हा ३.३१४
अर्द्धं पिबति गंडूषं	ब्र.या २.२०२	अलंकृता हरन कन्यां	या २.२९०
अर्द्धमेवाऽऽनुलोम्येषु	वृ.हा ६.३१८	अलंकृते शुभे गेहे	वृ.हा ५.१४३
अर्द्धवृतिमनाशैच	औ ६.२१	अलंकृत्य तु यः कन्यां	संवर्त ६१
अर्द्धगुलस्य सीमाया	वृहस्पति ४१	अलंकृत्य पिता कन्यां	संवर्त ६४
अर्द्धोर्द्धं छिद्रितं	बृ.या ३.२६	अलंकृत्यानलं चान्नं	आश्व १.१२२
अर्द्धं भुक्ते तु यो विप्रः	पराशर १२.३७	अलंकृत्याभिधार्योध्म	आश्व २.५०
अर्धक्षायान्तु परतः	नारद १०.९	अलंकृत्योत्कविधिना	ब्र.या ११.२४
अर्धमन्त्र पूर्णमन्त्र	विश्व ४.६	अलंकृत्वाऽथ स्वांगं	व २.५.३४
अर्धं पिबति भर्तारं	ब्र.या ७.१२	अलब्धमिच्छेद्दण्डेन	मनु ७.१०१
अर्धरात्रात्तदूर्ध्वं वा	आंपू ६४८	अलब्धं चैव लिप्सेत	मनु ७.९९
अर्ध रात्रादर्थपूर्वा	व २.६.४७१	अलब्धं प्रापयेत्लब्ध्वा	व्यास ३.५
अर्धवासास्तु यः कुर्याज् लघु	शंख ७०	अलब्धानु (द्वल्व) णा	शाण्डि ३.१४३
अर्धोच्छिष्टाश्च विप्राद्या	वृ.परा ८.२९४	अलं च सोमपानाय	व १.८.१०
अर्धोच्छिष्टो द्विजः स्पष्ट	वृ.परा ८.२९३	अलर्कं क्षुद्रकन्दं च महा	शाण्डि ३.११२
अर्धोच्छिष्टो द्विजो ज्ञानाद्	वृ.परा ८.२९१	अप्रलाभे तस्य देहे तु	व २.६.४३७
अर्धोदये महोदये	आंपू ९१४	अलाभे दन्तकाष्ठानां	वाधू ३७
अर्या समीपे शयनासने	ब्र.मा २.१५५	अलाभे देवखातानां	अत्रिस ३०
अर्वाक् चतुर्दशादहवो	या २.११५	अलाभे न विषादी	मनु ६.५७
अर्वाक्तु दशारात्रात्तु	व २.६.५३९	अभागे न विषादी	व १.१०.१६
अर्वाक्तु लाजहोमस्य	आंपू ७७	अलाभे पामस कुर्यात्	ब्र.या. ४.१५६
अर्वाक्तु शेषहोमस्य	आंपू ८३	अलाभे प्रसवेनैव	भार १४.३३
अर्वाक् सपिण्डीकरण	या १.२५५	अलाभे मृण्मयं दद्यात्	लिखित ५७
अर्वाक् संवत्सराद् वृद्धौ	वृ परा ७.३४५	अलाभेयज्ञवृक्षेण कुर्वीतं	भार १५.१४८
अर्वाग्संवत्सरादूर्ध्वं	वृ परा ७.३४७	अलाभे सर्वभोगानां	शाण्डि ३.३६
अर्व्वज्जिच सुभगे द्वाभ्यां	वृ हा ८.१६	अलाभे सुमुहूर्तस्य	आश्व १५.७८
अर्शाआद्या नृणा रोगा	शाता १.१०	अलाबुं दारुपात्र च	मनु ६.५४
अर्हति स्वर्गवासेऽपि	आंपू ९७७	अलिगी लिंगिवेषेमेण	मनु ४.२००
अलकालंर्ककारूषा	आंपू ५०४	अलिप्तं मद्य मुत्राद्यै	वृ परा ८.३३६
अलक्षणानि पुष्टानि	भार १४.१२	अतिपिज्ञ ऋणी य स्यात्	या २.९०
अलंकारं नाददीत	मनु ९.९२	अलिसंघालकां शुभ्रां	विष्णु १.२३
अलङ्कारधनस्यान्ते	शाण्डि ४.१७४	अलुब्धाह्लादनिष्पापा	बृ.या. ४.५४
अलंकारानुभूषेण पश्चात्	भार ११.१०९	अलुब्धार्चयो वेषां	बृ.गौ. १२.२३
अलङ्कारासनं दत्त्वा	शाण्डि ४.३४	अलेपं मृण्मयं भाण्ड	वृ परा ८.३३४

अलेहयानाम पेयानाम	आप ९.५	अवनिष्ठीवतो दर्पाद्	नारद १६.२५
अलोलजिह्वः समुपस्थिति	वृ.गौ. ८.११६	अवनेजनयोश्चासु	ब्र.या. ३.६४
अलोलजिह्वः समुपस्थितो	वृ.गौ. ८.११६	अवनेजनवत् पिण्डन्	कात्या ३.१४
अल्पकालमृतायां तु	आंपू १०.४८	अवन्तयोऽङ्गमगधा	बौधा ११.३१
अल्पत्वादोमकालस्य	कात्या १२.६	अवन्तसुग्रमापूर्युर्जीर्ण	शाण्डि ३.९१
अल्पपापस्य शुद्ध्यर्थं	वृ परा ८.२०९	अवमत्य विमूढात्मा	वृ.हा. ८.३०९
अल्पं वा बहु वा यस्य	मनु २.१४९	अवमन्यन्ति ये विप्रान्	वृ.गौ. ४.४२
अल्पांगुलमानेन	भार २.६८	अवमानमसमर्थं हृदोगं	शाण्डि ३.५५
अल्पान्नाभ्यवहारेण	मनु ६.५९	अवमानास्तु तेषां हि	बृ.गौ. १४.६२
अल्पनां चैव धान्यानां	व २.६.५२०	अवमानितं चेतु हन्या	बृ.गौ. १९.३२
अल्पानां यो विधाता स्यात्	कात्या २८.१६	अवरुद्धासु दासीषु	या २.२९३
अल्पेनापि हि शुल्केन	आप ९.२५	अवर्जितैर्यथालाभं	वृ.गौ. ८.८४
अल्पोदकानां कूपानां	व २.६.५२८	अवलम्ब्य मतं तस्य	वृ.हा. ८.१८१
अवकाशेषु चोक्षेषु	मनु ३.२०७	अवशात्सङ्गृहीतश्चेत	लोहि ६८६
अवकीर्णी तु काणेन	मनु ११.११९	अवशादसुसन्देहे पुत्र	लोहि २६१
अवकीर्णी भवेद् गत्वा	या ३.२८०	अवशादागतमहावृत्ति	कपिल ५२०
अवकृष्टञ्च यदुभक्तया	वृ.गौ. १०.७०	अवशादागतं दैवात्सूतकं	कण्व ५७३
अवकृत्वां तया स्मीभि वृ परा	१२.१३०	अवशादेव भवति तन्निवेदि	कपिल २६९
अवक्त्रर्थस्तोङ्कार	शाण्डि ५.६६	अवशादेव मनुजो लभते	कपिल ९०६
अवक्राः सत्वचः सर्वे	शंख २.११	अवशादवह्नितो वापि	आंपू ५९
अवगुण्ठितसर्वाङ्गं तृणै	वाधू ९	अवशाषा (खा) दिनी क्लीब्या.या.	१०.८२
अवगूर्यं चरेत् कृच्छ्रं	मनु ११.२०९	अवशिष्टं मथैकन्तु	बृ.गौय १६.२६
अवगूर्यं चरेत् कृच्छ्रं	वृ परा ८.२८४	अविशष्टं प्राशयेच्च	आंपू ७६
अवगूर्यं त्वब्दशतं	मनु ११.२०७	अवशिष्टवृत्तोत्सर्गशास्त्र	कपिल ५९२
अवगूर्यं त्वहोरात्र	पराशर ११.५१	अवशिष्टान्वरो लाजां	आश्व १५.४३
अवज्ञां तु गरो कृत्वा	वृ परा ८.२७५	अवश्यत्वेन कर्तव्यं	आंपू ७२६
अवतत्यधनुर्वक्त्रये	वृ परा ११.११४	अवश्यं च ब्राह्मणे	व १.११.४१
अवतीर्णं स्ततः कालादिला	बृ.गौ. १७.१९	अवश्यं भोजनीयानाम	शाण्डि ४.७३
अवतीर्यं तु सर्वाणि	वृ परा १०.३३२	अवश्यं मधुपर्केण मध्वा	शाण्डि ४.३८
अवदानं विधानेन	वृ परा ११.२५०	अवश्याद्याति तच्चित्तमथ	शाण्डि ५.३७
अवदित्वा ऋषिच्छन्दो	भार ५.५४	अवश्या सा भवेत पश्चाद	दक्ष ४.३
अवधिर्द्विविधं प्रोक्तं	वृ हा ४.२३३	अवष्णवेन विप्रेण	वृ.हा. ६.४१८
अवध्यो वै ब्राह्मण	बौधा १.१०.१८	अवस्करस्थलश्वभ्र	नारद १२.१३
अवनिज्य तिनान् दर्भान्	वृ परा ७.२६५	अवस्थितब्रह्मचर्यः अयम्	वृ.गौ. ४.७
अवनिष्ठीवतो दर्पाद्	मनु ८.२८२	अवहत्याद्धरिदां तु शुभ	व २.६.३१८

अवहार्यो भवेच्चैव	मनु ८.१९८	अवृतेनाप्यभक्तेन स्पृष्टा	बृ.गौ. २२.२
अवाक्यपौरुषं सूक्तं	वृ.हा. ७.६९	अवेक्षणं जागरुकता	आंपू १००९
अवाक् शिराः प्रविश्याग्नौ	वृ.हा. ६.२४६	अवेक्षेत गतीर्नृणां	मनु ६.६१
अवाकिशरास्तमस्यश्चे	मनु ८.९४	अवेगमपि यद् भूरि	वृ.परा ८.३३७
अवागजं प्रणवस्याय	वृ.परा ३.२७	अवेदयानो नष्टस्य	मनु ८.३२
अवाङ् मुखो न नग्नो	ल.व्यास २.८९	अवेक्ष्योगर्भवासश्च	या ३.६३
अवाच्यो दीक्षितो नाम्ना	मनु २.१२८	अवैदिकं क्रिया जुष्टे	वृ.हा. ७.१८२
अवाप्स्यसि ततः सिद्धिं	बृ.गौ. २२.२३	अवैष्णवत्वं तस्यापि	वृ.हा. ५.२४
अविक्रयं मद्यमासं	पराशर १.६४	अवैष्णवत्त्वं विप्राणां	व २.१.११
अविक्रेयाणि विक्रीणन्	नारद २.६३	अवैष्णवदुर्गोर्मत्र	वृ.हा. २.१३१
अविख्यापित दोषाणां	व १.२५.१	अवैष्णावं द्विजं तस्मिन्	वृ.हा. ५.४८४
अविज्ञातश्च चाण्डाल	पराशर ६.३२	अवैष्णवं द्विजं स्पृष्ट्वा	व २.६.४८६
अविज्ञातहतास्याशु	या २.२८३	अवैष्णवं विकर्मस्थं	वृ.हा. ४.२०३
अविज्ञाता अनर्हाः सामान्याः	शाण्डि ४.७१	अवैष्णवस्तु यो विप्रः	व २.१७
अविज्ञायापि यो मोहात्	औ ८.४	अवैष्णवस्तु यो विप्र	व २.२८
अवितृप्तः प्रसन्न आत्मा	वृ.गौ. ४.२	अवैष्णावस्तु योविप्रः	वृ.हा. २.३१
अविदित्वा तु य कुर्यात्	बृ.या. १.२८	अवैष्णवस्तु योविप्रः	वृ.हा. २.३२
अविद्यामने तु गुरौ राज्ञो	नारद १३.८८	अवैष्णवस्थापितानां	व २.७.२५
अविद्यमाने पित्रर्थे	नारद १४.३४	अवैष्णवस्य शूद्रस्य	वृ.हा. ८.१११
अविद्यानां तु सर्वेषां	मनु ९.२०५	अवैष्णवः स्याद्यो	वृ.हा. २७९
अविद्यो वा सविद्यो	वृ.हा. ८.२८९	अवैष्णावानामपि च	वृ.हा. ८.१३४
अविद्वान् स्नानकाले	वृ.परा २.९८	अवैष्णवानां संसर्गात्	वृ.हा. ६.१५०
अविद्वान् प्रतिगृह्णाति	वृहस्पति ६०	अवैष्णवान् पितृन्पश्चात्	व २.६.४१७
अविद्वान्श्चैव विद्वान्श्च	मनु ९.३१७	अवैष्णवाश्च ये विप्रा	वृ.हा. १.२५
अविद्वान्प्रमलं लोके	मनु २.२१४	अवैष्णवोक्त तत्सर्वं	बृ.गौ. २२.१७
अविधिर्विधिगत्यासु	वृ.परा ६.८७	अवैष्णवोहिषो विप्रो	व २.१.१२
अविप्लुतब्रह्मचर्यैः	बृ.गौ. ४.१७	अवोत्सवं प्रकुर्वीतं	व २.६.२५९
अविप्लुतब्रह्मचर्यं	या १.५२	अव्यक्तमात्मा क्षत्रेजः	या ३.१७८
अविभक्तेषु तैः सर्वैः	कण्व ७४९	अव्यक्तं अव्यंय शातं	वृ.परा २.१४४
अविरोधेन भूतानां	शाण्डि ४.२३१	अव्यक्तलिङ्गो व्यक्ताचार	व १.१०.१२
अविशेषेण सर्वेषामेष	नारद १५.८	अव्यक्तः समधिष्ठाता	विष्णुम ५४
अविहितकृत दोषं राजसेवा	विश्वा ३.४९	अव्यक्ते वै दिनस्यान्तो	बृ.या. ३.२९
अवीचिमन्धतामिस्रं	या ३.२२४	अव्यक्तैरप्यशुद्ध तन्मैन्	शाण्डि ४.२९
अवीरस्त्री स्वर्णकारस्सी	या १.१६३	अव्यंगा कुलजातां	वृ.परा ६.३६
अवीरित्युच्यते नाम्ना	लोहि ४८९	अव्यंगान्विलष्टधैते	वृ.परा २.१६१

अव्यगागी सौम्य नाम्नी	मनु ३.१०	अशित्वा च सहोषित्वा	औ ६.४१
अव्यामच्छविक्रोशन्	नारद ७.१४	अशित्वा सर्वमेवान्नं	आप ९.३
अव्याहृतमिदं ह्यासीत्	बृ.या. ३.८	अशीतिभागो वृद्धि स्यान्	या २.३८
अव्रणाः सत्वचोऽदग्धा	वृ परा ६.१५५	अशीतिर्यस्य वर्षाणि	आंगिरस ३३
अव्रतग्राहकैस्त्यक्तविवाद	शाण्डि १.११९	अशीतिर्यस्य वर्षाणि	आप ३.६
अव्रतः सव्रतो वापि	पराशर ५.५	अशीतिर्यस्य वर्षाणि	देवल ३०
अव्रतानाममंत्राणा	पराशर ८.१२	अशीतीर्यस्य वर्षाणि	यम १७
अव्रतानाममंत्राणा	बौधा १.१.१८	अशीत्यधिकवर्षाणि बालो	बृ.य. ३.३
अव्रतानाममंत्राणा	मनु १२.११४	अशीत्यर्थे तु शिरसि	वृ.गौ. २०.४
अव्रतानाममंत्राणा	व १.३.७	अशुचित्वं न तेषां तु	वृ परा ८.२७
अव्रताश्चानधीयानां यत्र	अत्रि २२	अशुचित्वं शरीरस्य	शंख ७.१०
अव्रता ह्यनधीयमाना	व १.३.५	अशुचिर्वचनाद् यस्य	नारद १८.४९
अव्रती सव्रती वापि शुना	आंड ९.१४	अशुचिशुक्लोत्पन्नानां	बौधा २.१.७३
अव्रतैर्यद् द्विजैर्भुक्तं	मनु ३.१७०	अशुचेस्तस्यमनसो मलिनं	विश्वा १.१०१
आर्विलगा वार्हस्पत्यं	अग्नि ३.१४	अशुच्यशुचिना दत्त	कात्या १०.१३
अशक्तप्रेतनष्टेषु	नारद १२.२०	अशुद्ध कितवो नान्यं	नारद १७.५
अशक्तप्रेतनष्टेषु	नारद १२.३८	अशुद्ध स्वयमप्यन्नं न	अत्रि ५.३१
अशक्तं विधिवत्कर्तुं	बृ.गौ. १४.९	अशुद्धस्तु दशाहानि	शाण्डि ३.१२२
अशक्तश्चेज्जल स्नाने	आश्व १.२३	अशुद्धान्नाशनात् पुंसां	शाण्डि ४.१३९
अशक्तस्तु भवेद् राजा	वृ.हा. ४.१७४	अशुद्धा वा भवेत् तावद्	वृ परा ८.२४०
अशक्तुस्त वदन्नेवं	या २.२१२	अशुद्धा सा भवेन्नारी	अत्रि स १९४
अशक्ता चोपवासे	आप ७.१५	अशुद्धेष्वर्चन्मूढो	शाण्डि ४.१९
अशक्तास्यात्समुदितः	भार ६.१७	अशुभं कारिता कर्म	बृ.म. ५.६
अशक्तो दशग्रामाध्याक्षाय	विष्णु ३	अशुभं तत् भवेद् वीजम्	वृ.गौ. ४.१२
अशक्तो यस्तु वेदेन	वृ.हा. ५.५४४	अशुल्का ब्राह्मणार्हाश्च	व २.४.११
अशक्तो यस्तु वेदेन	वृ.हा. ७.१५३	अशोकमधुकपललक्षवित्वा	भार ५.७
अशक्तोयस्त्वहोरात्र	भार ९.४२	अशोवाध नु कुर्वीत	व २.७.९
अशक्तौ क्रीतोत्पन्नो	वृ.हा. ४.१६	अशौचं क्षत्रिये प्रोक्ते	औ ६.३९
अशक्तौ भेषजस्यार्थे	नारद २.६२	अशौचं न दावत्येव	बृ.य. ५.९
अशक्नुवंस्तु शुश्रूषा	मनु १०.९९	अशौचत्वञ्चाकृतज्ञत्वं	बृ.गौ. २२.१०
अशब्दं सर्वतः कुर्वन्	कण्व ९९	अशौच निर्णय	विष्णु २२
अशास्त्रविहितं धर्मं	वृ.हा. ८.१८२	अशौचं मलिनत्वाञ्च	वृ.गौ. ८.११२
अशास्त्रोक्तेषु चान्येषु	नारद १८.७	अशौचाद्धि वरं बाह्यं	दक्ष ५.४
अशासंस्तस्करानयस्तु	मनु १.२५४	अशौचानन्तरं श्राद्धादिवर्णन	विष्णु २१
अशितिर्यस्य चापूर्णा वर्षा	आंपू १०.२१	अशौचानां विधिवक्ष्ये	व २.६.४३०

अशौचाश्च सशौचाश्च	वृ परा ६.६१	अश्वदानं महादानं	अ ४५
अशौचे सूतके चैव	वृ परा १०.२७९	अश्वप्रतिग्रह विधिं च	वृ परा १०.३४१
अश्नतश्च द्विवरेक	लघुयम ९	अश्वेभस्थान वल्मीक	वृ परा ११.१४
अश्नीयाद्येन स्पष्टेन्	वृ परा ८.२०३	अश्वमेधसहस्रञ्च	वृ.गौ. ९.७२
अश्नुते सकलान् कामान्	वृ.हा. ७.३३४	अश्वमेधसहस्रस्यं	वृ.गौ. ७.४५
अश्मना द्विजनिन्दा	शाता ६.१३	अश्वमेधसहस्रस्य	वृ.हा ८.३४६
अश्मना निहते दद्यात्	शाता ६.३८	अश्वमेध सहस्राणि	वृ.हा ३.५०
अश्मनोऽस्थीनि गोबालां	मनु ८.२५०	अश्वमेधसहस्राणि	वृ.हा ३.२८९
अश्ममयानामलावु	बौधा १.६.४३	अश्वमेध सहस्रात	नारद २.१८९
अश्मरारोहणश्चैव	व २.४.९६	अश्वमेधावभृक्षेवाऽऽत्मानं	बौधा २.१.४
अश्मर्यव्यूढभौ	वृ.परा ५.१४८	अश्वमेधावभृतके स्नात्वा	औ ८.२७
अश्माशानिरवश्याया	बृह ९.७६	अश्वमेधावभृतके	बृ.या. ७.१७३
अश्रद्धया च यद् दत्तम्	वृगौ ३.१८	अश्वमेधावभृतं	व १.११.५८
अश्रद्धा परमः पाप्मा श्रद्धा	बोधा १.५.७५	अश्वमेधावभृतं वा	व १.२३.३४
अश्रद्धेया अपाङ्क्तेया	ब्र.या. ७.३८	अश्वमेधे पुरावृत्ते	वृ गौ १.१
अश्राव्यं श्राव्यामित्येज्ज्ञानं	लोहि ६.१	अश्व रथं हस्तिनं औ	सं २५
अश्रुतस्याप्रदानेन दन्तस्य	वृ गौ. ७.१२७	अश्वयुक्कृष्णपक्षे	वृ.हा ७.३०५
अश्रुतार्थमदृष्टार्थं	नारद २.११८	अश्वयोनौ च गमनाद	शाता ५.३८
अश्रुपाते तथाचामे	औ २.५	अश्वरत्न मनुष्य स्त्री	या ३.२३०
अश्रुभि पतितैस्तेषां	बृहस्पति ३८	अश्वशूकरशृङ्गादि	शाता ६.१
अश्रोत्रियः पिता यस्य	मनु ३.१३६	अश्वस्थानादिमृद्युक्ता	शाता २.३
अश्रोत्रियं श्रोत्रियेण	लोहि ७१५	अश्वे विनिहते चैव	शाता २.४७
अश्रोत्रियश्रोत्रिययोः विवादे	कपिल ८१६	अष्टकारहितो मूढःपितृ	कपिल १७९
अश्रोत्रियसुतं कारुधृत	आंपू ७५७	अष्टका श्राद्धविधि	विष्णु ७८
अश्रोत्रिया अनुवाक्या	व १.३.१	अष्टकासु च पुण्यासु	आं पू ५८४
अश्रोत्रिये वृथादानं	व्या २१७	अष्टाकासु च वृद्धो	दा ६८
अश्रौतस्मार्तविहितं	लघु यम ५९	अष्टाकासु च सर्वासु	प्रजा ३०
अश्लोक (ल) मेतत्साधूना	मनु ४.२०६	अष्टाकासु च सर्वासु	प्रजा ३१
अश्वगंधारस पत्न्या	आश्व ३.७	अष्टाकासु तथाष्टम्यां	वृ परा ६.३५५
अश्वत्थदर्शनं देव किं	वृ.गौ. १९.२७	अष्टाकासु मृताहेषु	कण्व १४४
अश्वत्थमेकपिचुमंदमेकं	वृ परा १०.३७९	अष्टकासु यता दर्श	आंपू ७३०
अश्वत्थं प्लक्षनीपंच	वृ.हा ४.११३	अष्टका ह्यायने द्वे च	वृ परा ७.२
अश्वत्थाद् वा शमी	वृ.हा ५.१२५	अष्टका कुण्डलीज्ञेय	विश्वा १.४०
अश्वात्थानाद् गजस्थानाद्	या १.२७९	अष्टपादं (अष्टा पदं) नवपदं	विश्व ६३
अश्वत्थो य रामीगर्भ	कात्या ७.१	अष्टमाद् वत्सरात्	नारद २.१४७

अष्टमीकामभोगेन	वृ परा ५.१०१	अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य	नारद १८.१०९
अष्टमी नवमी चैव चतुर्दशी	ब्र.या. ८.२९८	अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य	मनु ८.३३७
अष्टमी रोहिणीयोगी	वृ हा ५.४७३	अष्टाभि कलशैः पूर्व	कण्व ६५२
अष्टमी वा एकशाकं ब्र.या.	४.१६३	अष्टावष्टौ समश्नीयात्	मनु ११.२१९
अष्टमे अंशे चतुर्दश्या	कात्या १६.५	अष्टावष्टौ समश्नीयात्	वृ परा ९.४
अष्टमे दिनमेकन्तु	अत्रि स ८८	अष्टावाज्याहुतीहुत्वा	आश्व ४.९
अष्टमे दिवसे चैव	कण्व ६९१	अष्टाविंशतिवारं तु	वृ हा ३.३८
अष्टमे लोकयात्रा तु	दक्ष २.५२	अष्टाविंशतिं वारन्तु	वृ हा ४.१२०
अष्टम्या चौपवीतञ्च	व २.६.१५९	अष्टाविंशति वा शक्त्या	वृ हा ५.३३४
अष्टयुगा भवेत् संध्या	वृ परा १२.३६५	अष्टाविंशत्प्रभृतिवैयाः	आंपू ९३४
अष्टवर्षा भवेद्गौरी	बृ.यौ. ३.२१	अष्टोत्तरं सहस्रं वा	वृ हा ५.१३१
अष्टवर्षा भवेद्गौरी	पराशर ७.६	अष्टोत्तरशतं दर्भाः	भार १८.११८
अष्टवर्षा भवेद्गौरी	संवर्त ६६	अष्टोत्तरशतं मालामणि	भार ७.१६
अष्टशल्यागतौ नीरं	अत्रिस ३८८	अष्टोत्तरशतं रूपं मंत्र	भार ७.७९
अष्टाक्षरं द्वादशी	वृ हा २.१२९	अष्टोत्तरशतं नित्यं	वृ हा ५.३३५
अष्टाक्षरं नवपदं	विश्वा ४.२	अष्टोत्तरशतं पश्चादाज्यं	वृ हा २.११५
अष्टाक्षरविधाने	वृ.गौ. ८.८७	अष्टोत्तरशतं वारं	वृ हा ५.१४४
अष्टाक्षरविधानेन	वृ हा ५.२९०	अष्टोत्तरशतश्राद्धदिव्य	आंपू ४९७
अष्टाक्षरस्य जप्तरं	वृ हा ३.१५४	अष्टोत्तरशतानि स्युःश्राद्धा	कपिल १५४
अष्टाक्षरस्य मंत्रस्य	वृ हा ३.४३	अष्टोत्तरसहस्रन्तु	व २.६.४०१
अष्टाक्षराव्यष्टदिक्ष	व २.६.२२६	अष्टोत्तरसहस्रं चैत्सर्व	आंपू ८९
अष्टाधिकश्चाष्टशतं	ब्र.या. १०.१५२	अष्टोत्तरसहस्रं वा अष्टोत्तर	भार १९.३०
अष्टाङ्गयोगीति	च ४.१६६	अष्टोत्तरसहस्रं वा	वृ हा ३.२७९
अष्टाङ्गुलमितस्थली	आश्व २.२०	अष्टोत्तर सहस्रं वा	वृ हा ३.३८४
अष्टाङ्गुलमुरस्तस्य	वृ परा ५.६४	अष्टोत्तरसहस्रं वा	वृ हा ६.३९७
अष्टाङ्गेन तु योगेन	बृह ९.३६	अष्टोत्तरसहस्रं वृ	वृ हा ८.२२४
अष्टाङ्गे अष्टादशपदः	नारद १.९	अष्टोत्तर सहस्रं	व २.७.८४
अष्टाचत्वारिंशद् वर्षाणि	बौधा १.२.१	अष्टोत्तर सहस्रंवाह्यष्टो	भार ६.९८
अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि	बौधा १.१२.१९	अष्टोत्तरसहस्रन्तु	वृ हा ५.१७१
अष्टादश च लक्षाणां	ब्र.या. १०.३५	अष्टौ ग्रासा मुनेर्भक्तं	व १.६.१८
अष्टादशसहस्रं तु ऋषी	गारा ७.१९	अष्टौ तान्यव्रतघ्नानि	बृ.गौ. १४.८
अष्टादशानां विद्यानां	वृ हा ३.१४१	अष्टौ भिक्षा समादाय	संवर्त १०३
अष्टानामुदकुम्भानां	ब्र.या. ८.१०९	अष्टौ भुञ्जीत वा ग्रासान्	वृ-परा १२.११९
अष्टानां भुक्तिपत्राणां	लोहि ३७१	अष्टौ मासान् यथादित्य	मनु ९.३०५
अष्टानां वा चतुर्णां वा	कण्व १०३	अष्टौ वर्षाण्युदीक्षेत्	नारद १३.१००

अष्टौ विवाहा	बौधा १.११.१	असंख्यानि च पापानि	वृ हा ६.३४२
अष्टौ विवाहा नारीणां	वृ परा ६.२	असंख्या मूर्त्तयस्तस्य	मनु १२.१५
अष्टौ विवाहा वणीनां	नारद १३.३८	असच्छास्त्राधिगमन	या ३.२४१
अष्टौ वृषणयोर्दयात्	पराशर ५.१७	असच्छास्त्राधिगमनं	वृ हा ६.२०२
अष्टौशतानि नवित	ब्र.या. १.३०	असच्छूदेषु अन्नाद्य	बृ.या ३.११
अष्टांगुल प्रमन्थः	कात्या ७.५	असतां पतितानां च	आपू १३९
अष्टोत्तरशतं पश्चान्	वृ हा २.१११	असत्कथानुसरणमसत्कार्यं	शाण्डि १.५४
असंयमेन येऽधीता न	बृह ११.१६	असत्कार्यरतो धीर	या ३.१३८
असंस्कृतप्रमीतानां	मनु ३.२४५	असत्कुलप्रसूतानां क्षेत्र	कपिल ७९६
असंस्कृतस्तु गोषु	वृ हा ६.२३५	असत्क्रियैककर्तारं	लोहि ६०६
असंस्कृतस्त्रियां राज्ञि	वृ परा ८.२२	असत्स्वनेषु तद्गामी	बौधा १.५.११५
असंस्कृतान् पशून् मंत्रैः	मनु ५.३६	असत्प्रतिग्रहं स्तेय	वृ हा ४.१६६
असंस्कृतामनतिसृष्टां	बौधा २.२.२८	असत्य कथनं स्तेयं	वृ हा ८.३३३
असंस्कृतायां भूमौ	बौधा १.६.२२	असत्य कथनं हिंसां	वृ हा ५.१८३
असंस्कृतासु कन्यायासु	व २.६.४३२	असत्यं निहतार्थं च	शाण्डि ४.२३२
असंस्कृतास्तु संस्कार्या	या २.१२७	असत्यं प्रतिष्ठं च जगदा	बृह १२.१४
असंस्कृतेति वै पित्र्ये	आश्व २३.९१	असत्याः सत्यसंकाशाः	नारद १.६२
असंस्कृतौ न संस्कार्यौ	कात्या १६.१८	असत् सन्ततयो ज्ञेया	वृ हा ४.१४९
असंस्पृष्टेन संस्पृष्टः	अत्रिस ७४	असत्सु देवेषु स्त्री	नारद १३.४८
असकृत्वानि कर्माणि	कात्या ५.१	असत्सु देवेषु स्त्री	वृ परा ७.३६४
असकृद्गमनाच्चैव	बृ.य. ४.४४	असद् ब्राह्मणके ग्रामे शुना पराशर	५.९
असकृद् गर्भवासेषु	मनु १२.७८	असद्विषयसत्तनामिन्द्रिया	शाण्डि १.५६
असकृद्वा सकृद्वापि पुमान्	लोहि ५५२	असन्तुष्टे सुखं नास्ति	व्या ३७१
असगोत्रमपि प्रेतं	आंपू १४९	असंदितानां संदाता	मनु ८.३४२
असोत्रमसम्बन्धं	वृ परा ८.२८	असीपिण्डं द्विजं प्रेतं	मनु ५.१०१
असगोत्रमबन्धुञ्च	पराशर ३.४६	असपिण्डं द्विजं प्रेतं	व २.६.४५७
असगोत्रस्तु न ग्राह्यो	आंपू ३४०	असपिण्डा च या मातुरस	मनु ३.५
असंकराणि योग्यानि	औ ८.७	असव्येनाति षड्रुचां	भार ६.१३४
असंकल्पितं च पश्चान्नं	व्या १४०	असभ्य उपासिने दत्तम्	वृ.गौ. ३.२४
असङ्कीर्णञ्च मत्पात्रं	वृ.गौ. ६.१७७	असमक्षन्तु दम्पत्योः	कात्या २०.१
असंख्यकन्दनिर्नाशाद्	वृ परा ५.१४४	असमर्थस्य बालस्य	अंगिरस ३२
असंख्यमासुरं यस्मात्	वृ परा ४.४१	असमर्थी नमेत् सद्यो	आश्व १०.४५
असंख्याकान्यानन्तानि	आंपू १५८	असमानप्रवरगा	औ ४.८
असंख्यातं च यज्जप्तं	वाधू १४१	असमानान् याजयन्ति	औ ४.२३
असंख्यातं धनं दत्त्वा	वृ परा ८.१०४	असमाप्तं व्रतं यस्य	ब्र.या. ८.९४

असमाप्य वेदो यस्य	ब्र.या. ८.९३	असौ स्वर्गाय लोकाय	पराशर ५.२२
असम्भवे परेद्युर्वा	औ ५.३	अरस्कन्मव्ययश्चैव	या १.३१६
असंभाष्ये साक्षिभिश्च	मनु ८.५५	अस्तमित आदित्य उदकं	बौधा १.४.१३
असंभोज्या ह्यसंयाज्या	मनु ९.२३८	अस्तीमिते च स्नानम्	बौधा २.३.२९
असम्यक्कारिण्यश्चैव	मनु ९.२५९	अस्तं गते दिनकरे	व २.३.१२८
असवर्णेन योगर्भः	देवता ५०	अस्तं गते यदा सूर्ये	पराशर ७.११
असवर्णेषु तत्कुर्वन्	आंपू ३३८	अस्तं गते यदा सूर्ये	बृ.या. ३.८
असव्यायात् पर्व चौर्याद्	नारद १८.७१	अस्तंगतो यदा सूर्य	यम १८
असह्यमर्मवचनं आक्षेय	शाण्डि १.२०	अस्त्रप्रयोगकाण्डे काले	विश्वा ३.३८
असाक्षिकं च यो शनीयात्	वृ परा ६.८६	अस्त्रं वृष्टिरिति प्रोक्तं	विश्वा ५.९
असाक्षिकहते चिह्नै	या २.२१५	अस्त्रादीनीश्वरान्	वृ हा ७.२३०
असाक्षिकेषु त्वर्थेषु	मनु ८.१०९	अस्त्रान् दीपांश्च सावित्री	वृ हा ७.१८७
असाक्षिणो ये निर्दिष्टा	नारद २.१६७	अस्त्रान् लोकेस्वरान्	वृ हा ७.१६६
असाक्षिप्रत्ययास्त्वन्ये	नारद २.१५१	अस्त्राहताश्च धन्वानः	अत्रिस ३७५
असाक्ष्याति हि शास्त्रेषु	नारद २.१३४	अस्त्रैश्च शंख चक्र	वृ हा ५.२९७
असाधारण के मुखेऽप्य	कपिल ४९२	अस्त्वित्यापि च तद्धस्ते	आंपू ८८८
असामर्थ्याच्छरीरस्य	वृ.या. ७.१६२	अस्त्वेतत् परिपूर्ण	वृ परा ७.२०३
असामृषिर्विश्वमित्रः	भार ६.११९	अस्थानोच्छ्वास विच्छेद	कात्या २७.१६
असावर्धेदय योगः	आंपू १८१	आस्थिचर्म्मदियुक्तन्तु	आप २.८
असावहम्भो नामेति	औ १.१९	अस्थिभङ्गा गवां कृत्वा	आंड १०.८
असावादित्यमन्त्रेण	कण्व १६९	अस्थिभगं गवां कृत्वा	लघुशंख ५०
असावादित्यो ब्रह्मेति	कण्व २४९	अस्थिभङ्गे तथा श्रृङ्गं	आंड १०.१०
असावहं मो इति श्रेते	बौधा १.२.२६	अस्थिभेदं गवां कृत्वा	दा ९९
असिना तीक्ष्णधारेण	नारा ७.१३	अस्थिमतां तु सत्त्वानां	मनु ११.१.४१
असिपत्रवनं घोरं	वृ हा ६.१६५	अस्थिमतां त्वेकैकम्	व १.२१.२९
असुतस्य धनं तत्तु प्रत्या	कपिल ४९४	अस्थिरत्वाच्छरीरस्य	दा ३४
असुराणां वधादूर्ध्वं	विश्वा ५.४	अस्थिसंचयनात् पूर्वं	पराशर १२.२६
असुराणां वधार्थाय अर्घ्यकाले	विश्वा ५.१८	अस्थिस्थूणं स्नायुयुतं	मनु ६.७६
असुराः पितृरूपेण अन्न	ब्र.या. ४.१३३	अस्थीनि मृत्योर्जुहोमि	व १.२०.३४
असुसप्तमपूर्वाः स्युः	भार १९.४	अस्थनामलाभे पर्णानि	कात्या २३.३
असूता मृतपुत्रा वा या	वृ परा ११.३११	अस्नातः पुनरानर्हा	शंख ८.२
असूयारहितैरस्मि	शाण्डि ४.२३४	अप्रस्नातमातुरत्नाने	व्या ३८६
असेव्यासेविनो विप्रा	बृ.या ४.६२	अस्नात्वा चाप्यहुत्वा	दक्ष ६.८
असोमयाजित्वेनैवं	कण्व ४८५	अस्नात्वा नाचरेत्	वृ.या. ७.१२१
असौम्यापनकेनस्यु	भार १५.२४	अस्नात्वा भोजनं कुर्याद्	वाधू ४९

अस्नेहा अपि गोमूधा	विश्वा ८.१५	अस्यां तु तत्त्वाक्षर	वृ परा ४.९
अस्नेहा यव-गोधूमा	वृ परा ४.१८२	अस्या वेधः सकर्णयाः	वृ परा ५.७१
अस्पृशे च मृते कार्य्यं	शाता ६.४२	अस्यास्तु ब्रह्मविद्यायाः	कण्व १.७६
अस्पृश्यं संस्पृशेद्युस्तु	संवर्त १.७९	अस्यूतनासिकाभ्यां	बौधा २.२.८३
अस्पृश्यस्पर्शनि चैव	वाधू ४३	अस्यैव पुरतो दैवात्	लोहि २.१७
अस्पृष्टस्पर्शिनं कृत्वा	औ ९.७८	अस्रं गमयति प्रेतान्	मनु ३.२३०
अस्मनः समिधो वापि	कण्व ३.६२	अस्वतंत्रा प्रजाः सर्वाः	नारद २.२९
अस्मन्नामस्य तातेन	वृ परा ११.२०४	अस्वतंत्राः स्त्रियः पुत्रा	नारद २.३०
असमर्थस्य तु प्रोक्तो	आंपू ७३२	अस्वतंत्राः स्त्रियः	मनु ९.२
अस्माच्छतगुणः प्रोक्त	वृ परा ११.२७१	अस्वतंत्रा स्त्री पुरुष	व १.५.१
अस्मात् प्रदेयं साधुभ्यो	विष्णु म ९२	अस्वस्थानाद्धातस्थाना द	ब्र.या. १०.१०
अस्मात्त्वामधिजातोऽसी	कात्या २१.१३	अस्वातन्त्रयं स्वतःस्त्रीणां	कपिल ५.४३
अस्माद् विभोक्षणायैव	वृ हा ४.८	अस्वातन्त्रयातु जीवानाम	वृ हा ३.९०
अस्मान् मानुख्यलोकान् ते	वृ.गौ. ५.६३	अस्वाधीनानि पात्राणि	लोहि ३.७९
अस्मिन् कलौ च विदुषा	वृ परा ४.६३	अस्वामिकमदायादं	नारद ४.१६
अस्मिन् धर्मोऽखिलेनोक्तो	मनु १.१०७	अस्वामिना कृतो	यस्तु ८.१९९
अस्मिन्यज्ञोपवीतेऽमी	भार १५.८९	अस्वाम्यनुमताद्	नारद ८.३
अस्मिन्नर्थे न संदेहः	कपिल ९३७	अहंकारं पशुं कृत्वा	वृ परा ६.११३
अस्मीति चैवं संध्या	कण्व २.४६	अहंकारस्तथा बुद्धिं	विष्णु म ६९
असंभाष्यः प्रयत्नेन	आंपू ७६६	अहंकार स्मृतिर्मैधा	या ३.१.७४
अस्य गोत्रद्वयं ज्ञेयं	लोहि ३.३०	अहंकारेण मनसा	या ३.१.६४
अस्य गोत्रप्रदत्तोऽयं	कण्व ७.११	अहतं तद्विजानीयाद्दैवे	वृ हा ६.१००
अस्यधांगुलमेतैस्तु	भार २.५१	अहतं वाससां शुचि	बौधा १.६.५
अस्यन्ध्यमिति संकल्प्य	औ ५.२५	अहन्यद्दुम्भको रात्रौ	वृ हा ४.१.४
अस्य पुरुष सूक्तस्य	ब्र.या. २.११७	अहन्यहनि कर्तव्यं	ल व्यास १.१
अस्य प्रजापति ऋषि	भार ५.२१	अहन्यहनि ते सर्वे	ब्र.या. ६.१३
अस्य ब्रह्मा च रुद्रश्च	वृ हा ३.३४८	अहन्यहनि दातव्यं	अत्रि स ४०
अस्य मन्त्रस्य	वृ परा २.४६	अहन्यहनि योऽधीते	संवर्त २.१८
अस्य वोमेति सूक्तेन	वृ हा ५.१.५६	अहन्यहन्यवेक्षेत	मनु ८.४१९
अस्य वामेति सूक्तेन	वृ हा ५.१.६६	अहन्येकादशे कुर्यान्नाम	आश्व ६.१
अस्यवामेति सूक्तेन	वृ हा ५.३.७५	अहन्येकादशेनाम	ब्र.या.८.५
अस्य वामेति सूक्तेन	वृ हा ५.४.४०	अहन्येकादशे नाम	या १.१२
अस्य वामेति सूक्तेन	वृ हा ६.४.२३	अहन्येकादशे श्राद्धे	वृ परा ७.३.३४
अस्य संकल्पमात्रेण	विश्वा १.४३	अहन्येवास्मिस्तास्मिन्वा	वृ परा ७.२०८
अस्या अहं बृहत्याश्वपुत्र	ब्र.या. ८.२.८८	अहः प्रात रर्हन्क्तं	व १.२३.३७

अहं एवं क्रमेण वक्ष्यामि	भार १९.५	अहुत्वा च द्विजोऽश्नीयाद् वृ परा ४.१५८	
अहमद्यैव तद्धर्मः	पराशर १.३५	अहूयमानेऽश्नंश्चेन्नयेत	कात्या १८.८
अहमश्वत्थरूपेण पालयामि	ब्र.गौ.१९.२८	अहृताभ्युद्यातां भिक्षां	मनु ४.२४८
अहमस्मै ददामीति	कात्या १५.५	अहो धर्माजितांशव	वृ.गौ. १०.६०
अहमाहवनीयोऽग्नि	वृ.गौ.१५.३३	अहोभिर्गुणितैर्यत्स्यात्	वृ परा ७.१०४
अहमेवं न जानामि	अत्रि ५.१५	अहोमकेष्वपि भवेद्	कात्या ९.७
अंहः कुक्कुटिकानां	वृ परा ५.१४५	अहोरात्रकृतात् पापात्	शंख १२.१८
अहं तु परमेत्युत्तनस्त्रि	वृ.या. ७.१७६	अहोरात्र कृतं ह्ये	बृह १०.८
अहं दुष्कृतकर्मा वै	पराशर १२.६०	अहोरात्रं पिशाचैश्च	बृ.गौ.१०.६५
अहं प्रजाः सिसृक्षुस्तु	मनु १.३४	अहोरात्रयोश्च संध्यो	बौधा १.१.३७
अहं भावं स्वकीयत्वं	लोहि ५८८	अहोरात्रेक्षणो दिव्यो	विष्णु १.४
अहं भुवेति सूक्तेन	वृ हा ७.२१६	अहोरात्रेण द्वादश्यां	बृ.गौ. १८.१९
अहं सङ्कल्प कुरुते	ब्र.या. ५.१६	अहोरात्रेण शुद्धयेत	औ ९.५९
अहं सहस्रशीर्षस्त	वृ.गौ. १.५७	अहोरात्रे विभजते सूर्यो	मनु १.६५
अहं संक्रमणे पुण्यमहः	आंपू ६४२	अहोरात्रोषितो भूत्वा	अत्रिस १८०
अहंस्त्वदत्तकन्यासु	दा ११८	अहोरात्रोषिता भूत्वा	अत्रिस १८८
अहस्त्व दत्तकन्याया	लघुशंख ६५	अहोरात्रोषितो भूत्वा	औ ९.५
अहस्त्वदत्तकन्यासु	या ३.२४	अहना चापि संधीयते	बौधा २.४.२९
अहा त्केवलवेदस्तु	ब्र.या.१३.२१	अहना चैकेन रात्र्या च	मनु ५.६४
अहार्यं ब्राह्मदव्यं राज्ञा	मनु ९.१८९	अहना रात्र्या च मान्	बृ.मा. ८.३१
अहिंसयेन्द्रियासंगैः	मनु ६.७५	अहना रात्र्या च यां	मनु ६.६९
अहिंसयैव भूतानां कार्यं	मनु २.१५९	अहनो मासस्य षण्णां	या ३.४७
अहिंसा वैदिक कर्म ब्रह्म	बृ.गौ. १५.७४		
अहिंसासत्यनिरतः	बृ.गौ. १७.१७		
अहिंसा सत्यमस्तेयं	बृ.गौ. ७.१५९		
अहिंसा सत्यमस्तेयं	मनु १०.६३		
अहिंसा सत्यमस्तेयं	या १.१२२		
अहिंसा सत्यवादश्च	पु.२२		
अहिंसोपरता नित्यं	औ ४.७		
अहिंस्युपपद्यते स्वर्गम्	व १.२९.३		
अहिताग्निस्तु यो विप्रो	अत्रिस २५२		
अहिताग्नेर्विनीतस्य	व १.२५.२		
अहीनां क्रतवश्चापि	लोहि १०४		
अहुतं च हुतं चैव तथा	मनु ३.७३		
अहुताशी कृमिं भुङ्क्ते	वाधू ७६		
		आ	
		आ (अ) प्राणाच्छून्यभूतं	बृह ९.७
		आकण्ठजलसम्पन्नः	नारा ९.५
		आकण्ठसम्मिते कूपे	पराशर १०.१९
		आकर शुल्क तरनाग	विष्णु ३
		आकराः शुचयः सर्वे	बौधा १.५.५८
		आकराहृतवस्तूनि नाशुचीनि	अत्रिस २३९
		आकर्ण्य वचनन्तेषां	ब्र.या. ३.१८
		आकर्षणादि षट्कर्म	वृ हा ६.१७५
		आकल्पकोटि पितरः	वृ हा ८.३२२
		आकारत्रयसम्पन्नो	वृ हा ६.१४५
		आकारैरितिर्गत्या	मनु ८.२६
		आकाशमेक हि यथा	या ३.१४४

आकाशं पञ्चशतकं	विश्वा ६.११	आगमेन विना पूर्वं भुक्तं	नारद २.८१
आकाशल्लाघवं सौक्ष्म्यं	या ३.७६	आगमेन विशुद्धेन	या २.३०
आकाशं वायुरग्निश्च	पराशर १०.४१	आगमेनोपभोगेन नष्टं	या २.१७४
आकाशात्तु विकुर्वाणात्	मनु १.७६	आगमेषु पुराणेषु	भार ७.१२.३
आकाशो च क्षिपेद्धारि	लघुयम ९४	आगमोक्ततेन मंत्रेण	ब्र.या. २.११५
आकाशोशास्तु विज्ञेया	मनु ४.१८४	आआगमोऽभ्यधिको भोगाद्	या २.२७
आकृष्णेन इमं देवा	या १.३००	आगर्भसम्भवाद् गच्छेत्	या १.६९
आकृष्णेन च तीव्रांशो	वृ परा ११.६५	आगस्सु ब्राह्मणस्यैव	मनु ९.२४१
आकृष्णेन तु सायाहे	ब्र.या. २.७५	आगारदाही कुण्डाशी	औ ४.२९
आकृष्णेन द्वितीयाध्यं	आश्व १.४२	आगरादभिनिष्क्रान्तः	मनु ६.४१
आकृष्णेनेति मंत्रे	वृ परा ११.३१५	आग्नेयप्रवणे रेखां	आश्व २३.७३
आकृष्य दक्षिणे भागे	विश्वा १.६५	आग्नेयं ब्राह्मभेदो	भार १८.८३
आकृष्य धारयेद्देवीं	विश्वा ६.२३	आग्नेयं भस्मना	पराशर १२.१०
आकृष्य ब्राह्मणो	वृ.गौ. १४.४०	आग्नेयं भस्मना	ल व्यास १.१२
आक्रम्योत्तरस्यान्तु	व २.४.५५	आग्नेयाद्येऽथ सर्पाद्य	कात्या २५.१०
आक्रान्ता दर्भं सूच्योऽपि	वृ परा १२.४२	आग्रयणं चातुर्मास्यं	कण्व ३३०
आक्राशपरिवादाभ्याम्	वृ.गौ. ४.४४	आग्रहायण्यभावास्या	कात्या १६.६
आकुष्य उससि पादेन	वृ.गौ. ४.४५	आधारान्तं ततः कुर्याद्	आश्व ९.६
आक्षिप्तमोघबीजौ च	नारद १३.१६	आधारान्तं ततः कुर्याद्	आश्व १५.३७
आक्षिप्यमाणा हि अवशा	वृ.गौ. ५.३५	आधारावाज्यभागी च तथा	ब्र.या. ८.३३८
आखण्डलधनुश्चैव	ब्र.या. ८.१३६	आघ्रातं शकुनाद्यैश्च	व.६.३२
आख्याता शुद्धिरेषाऽत्र	शाण्डि १.६०	आचक्षाणस्तु तद्धर्म	वृ परा ६.२६३
आख्याय भूभृते वापि	वृ परा ८.२६९	आचक्ष्व विश्वेरेण	व २.२.२
आगच्छन्तिता तां	आंपू ७९९	आचतुर्थाद् भवेत्सावः	दा १२८
आगच्छन्तु महाभागा	आश्व २३.२१	आ चतुर्थाद् भवेत् स्रावः	पराशर ३.१८
आगच्छन्त महाभागा	लिखित ५०	आचतुर्थे तु सम्पूर्णं वि	ब्र.या. ८.२४१
आगतं दूरतः शान्तं	व्यास ३.३७	आ चतुर्विंशद्वैश्यस्य	व १.११.५३
आगातान् सर्वदेवांश्च	ब्र.या. १०.१३५	आचमेन मधुपर्कोऽयं	आश्व १५.९
आगतायै भिक्षुकायै करमात्र	कपिल ९५३	आचम्य गृहमागत्य	आश्व २३.१५
आगतेषु च भक्तेषु	शाण्डि ३.१३२	आचम्य च ततः पश्चाद्	शंख १०.१८
आगत्य देवि तिष्ठं त्वं	विश्वा ५.४४	आचम्य च पुराप्रोक्तं	शंख १०.१६
आगत्य न्यासकल्पे तुनैत	कपिल १५२	आचम्य तर्पयेद्देवान्	वृ हा ४.३२
आगमः प्रथमः कार्यो	नारद १.३०	आचम्य तु ततः शुद्धः	ब्र.या. २.१९१
आगमं निर्गमं शतानं	मनु ८.४०१	आचम्य देवतामिष्टां	ल हा ४.६७
आगमस्तु कृतो येन	या २.२८	आचम्य धारयेद्	वृ हा ८.८५

आचम्य पाव्य चात्मानं	बृ.या. ७.५१	आचान्तः पुन आचमेन	ल व्यास २.१७
आचम्य पुनरुत्थाने	शाण्डि ४.१८७	आचान्तः पुनराचामेद्	व्या ५२
आचम्य पूजयेद् देवं	वृ हा ५.४४९	आचान्तः पुनराचामेन	बृ.या. ७.४९
आचम्य पूर्ववत्पश्चात्	व २.६.२७	आचान्तः पूजयेत्पश्चात्	व २.६.३९२
आचम्य पूर्ववत् पूजां	वृ हा ५.१३५	आचान्तस्य शुचि	वृ हा ४.४२
आचम्यं प्रथमं पश्चात्	वृ.गौ. ८.३१	आचान्ताननुजानी	औ ५.६९
आचम्य प्रयतो नित्य	मनु २.२२२	आचान्तोऽक्रोधनो	औ ३.१००
आचम्य प्रयतो नित्यं	मनु ५.८६	आचान्तोऽप्यशुचि	आप १०.१
आचम्य प्रयतो नियतं	ल व्यास १.१६	आचान्तोऽप्याचमेत	औ २.६
आचम्य प्रयतो भूत्वा	बृ.या. ७.१५०	आचान्तोऽप्यशुचिस्तावत्	व्या १८०
आचम्य प्राणसंरोधं	वृ परा २.३६	आचामेद् ब्राह्मतीर्थेन	संवर्त १६
आचम्य ब्राह्मणः पश्चात्	वृ परा ७.३१७	आचारदोषं देवेश	वृ.गौ. ४.४
आचम्य मार्जनं कुर्यात्	वृ हा ४.२९	आचारः परमोधर्मः	मनु १.१०८
आचम्य वारिणा पश्चात्	वृ हा ८.७३	आचारः परमो धर्मः	व १.६.१
आचम्य वारुणं जाप्यं	आश्व १.१८	आचारमूलं श्रुतिशास्त्र	वृ परा ६.३७७
आचम्य विधिवत्कर्मकृतं	भार ४.२	आचारं चैव सर्वेषां	व्या ९
आचम्य विधिवद्	वृ परा २.३८	आचारं मंगलोपेतं संक्षेपा	शाण्डि १.१०
आचम्य सन्नियम्याऽथ	भार १६.५२	आचाररहिता ये च	ब्र.या. १३.२८
आचम्य संयतो नित्यं	औ ३.३८	आचारवक्त्रान्तरगात्र	बृ.गौ. २०.२४
आचम्य सुमनाः सम्यक्	भार १८.२५	आचावन्तो मनुजा	वृ परा ६.२०८
आआचम्यग्न्यादिसलिलं	या ३.१३	आचारवृक्षस्य फलं व	परा ६.३७८
आचम्यांगुष्ठमात्रेण	ल व्यास २.७५	आचारहीनः क्लीवश्च	मनु ३.१६५
आचम्यांगुष्ठामानीयं	औ ३.१०७	आचारहीन नरदेह	वृ परा ६.२११
आचम्यातः परं मौनी	वृ हा ४.२४	आचारहीनं न पुनन्ति	ब्र.या. १.४३
आचम्याथ द्विज	आश्व १.१६	आचारहीनं न पुनन्ति	व १.६.३
आचम्याथ वटुः गच्छेत्	आश्व १०.१२	आचारहीनस्य तु ब्राह्मणस्य	व १.६.४
आचम्याथ हरेन्मृत्नां	वृ परा २.१२९	आचारहीनो वा मुनिप्रवीर	विष्णु म १०४
आचम्यैव तुभुंजीत	संवर्त १३	आचारात् फलते धर्म	व १.६.७
आचम्योदक्परावृत्य	मनु ३.२१७	आचाराद्विच्युतो विप्रो	मनु १.१०९
आचारहीनं न पुनन्ति	बृह ११.२०	आचारायाश्च योषित	व १.५.१५
आचरेत् त्रीणि कृच्छ्राणि	औ ९.६३	आचारल्लभते ह्यायु	मनु ४.१५६
आचरेत् त्रीणि कृच्छ्राणि	यम ४९	आचारेण सदा विद्वान्	वृ परा ६.३७६
आचरेद् विधिवत्	आश्व २४.३०	आचारो द्विविधः प्रोक्तः	विश्वा १.३२
आचरेयुः परंधर्म	वृ ता ५.३०६	आचार्य कर्तव्यता वर्णनम्	विष्णु २९
आ चात्वालादाबवनीयोत	बौधा १.७.१५	आचार्यत्वं श्रोत्रियत्वं न	ब्र.या. १०.९

आचार्यत्वं श्रोत्रियश्च	या १.२७६	आचार्यो ब्रह्मणो मूर्ति	मनु २.२२६
आचार्यत्समनु प्राप्तं	वृ हा ८.२५५	आचार्यो ब्रह्मलोके शो	मनु ४.१८२
आचार्यपुत्रशिष्य	व १.२०.१७	आचार्य्यपत्नी स्वसुतां	या ३.२३३
आचार्यपुत्रः शुश्रूषर्ज्ञानदो	मनु २.१०९	आचार्य्येणाभ्यनुज्ञात	व २.३.७६
आचार्यः पूजयेद् विष्णु	वृ हा ८.२४२	आचार्य्यो दीक्षितो नाम्ना	औ १.४४
आचार्यः प्राङ्मुख	आश्व १०.१४	आचार्य्योपासनं वेदशास्त्र	या ३.१५६
आचार्य मातृपितृहन्तारः	व १.१५.१५	आचूडाकरणात् सद्यः	दा ११७
आचार्य मृत्विजश्चपि	वृ हा ५.१५१	आचूडाकरणाद्बाल	दा १३०
आचार्य गणनाथं च	भार १६.३	अच्छादनं भक्तेस्यं	वृ.गौ.१६.३१
आचार्य च प्रवक्तारं	मनु ४.१६२	आच्छाद्य चार्चयित्वा	मनु ३.२७
आचार्य देवभक्तं च	शाण्डि २.८७	आच्छाद्य धौतवसनं	व २.३.१०६
आचार्य स्वमुपाध्यायं	मनु ५.९१	आच्छाद्य वस्त्रमन्यच्च	शाण्डि ३.१३६
आचार्य शिक्षयेदेनं	नारद ६.१६	अच्छिन्नेवातनिना	त २.४.५२
आचार्यश्च पिता चैव	मनु २.२२५	आजं वातदलाभे तु	वाधू १५०
आचार्यश्छेदयेतान	आश्व ९.१२	आजानुतः स्नानमात्र	लिखित ८८
आचार्यस्तत्रकर्तव्यः	वृ परा ११.२११	आजानुपादपर्यन्तं मन्त्र	विश्वा १.७३
आचार्यस्तु वदेमंत्र	व २.३.६७	आजानु स्नानमात्रं	लघुशंख ४८
आचार्यस्त्वस्य या जातिं	मनु २.१४८	आजीवन् स्वेच्छया	या २.६८
आचार्य स्नातकादीनां	आश्व १५.४	आज्यपाश्च तथा वत्स	वृ परा ७.१६८
आचार्यस्य पितुश्चैव	शाण्डि ४.६६	आज्यं तेनैव होतव्य	व २.७.११०
आचार्यस्याज्जलौ	आश्व १०.१६	आज्यं श्रीभूमि सुक्ताभ्यां	वृ हा ६.२२
आचार्यादीन् समभ्यर्च्य	आश्व ३.१७	आज्यं संस्कारपर्यन्तं	व २.४.२९
आचार्यानी मातुलानी	प्रजा ५८	आज्यं हव्यमनोदेशो	कात्या ८.१६
आचार्यापित्रुपाध्यानि	या ३.१५	आज्यं हुत्वा ततश्चक्र	वृ हा ८.२२८
आचार्यश्च पितृश्चैव	वृ.या.७.८२	आज्यसंस्कारणं कृत्वा	व २.६.३३१
आचार्य च ते दद्याद्	आश्व १०.६०	आज्यसंस्कारपर्यन्तं	आश्व १०.९
आचार्या विष्णुं अभ्यर्च्य	वृ हा ८.२२६	आज्यसंस्कार पर्यन्त	आश्व १२.६
आचार्याश्चैव गन्धर्वा	ब्र.या.२.९३	आज्यस्थाली च कर्तव्या	कात्या १५.१०
आचार्यास्तु पिता प्रोक्तः	शंख १.७	आज्यस्थाल्याः प्रमाणं	कात्या १५.११
आचार्येणात्र मंत्रोऽयं	आश्व ६.५	आज्यस्यैकपलं दद्याद्	पराशर ११.३०
आचार्ये तु खलु प्रेते	मनु २.२४७	आज्यहोमश्चशलली	आश्व ४.१८
आचार्ये प्रमीतेऽग्निं	व १.७.५	आज्यहोमी सहस्रन्तु	वृ हा ३.१९८
आचार्यैर्गुरुभिः सदिभः	आंपू १०८६	आज्याहुतिना संस्कृत्य	ब्र.या.८.३४६
आचार्योपाध्याय तत्	बौधा १.५.१३३	आज्येन चरुणा वापि	वृ हा ३.१४९
आचार्योपासग्नौ वा	वृ हा ७.२४८	आज्येन चरुमावाऽपि	वृ हा ४.१३४

आज्येन चरुणा वाऽपि	वृ हा ५.१५३	आत्मगुप्ता स्वामिभक्ता	दक्ष ४.४
आज्येन चरुणावाऽपि	वृ हा ६.६८	आत्मचिन्ताविनोदेन	दक्ष ७.७
आज्येन जुहुयादग्नौ	व २.४.४९	आत्मजत्वं दत्तपुत्रे	लोहि ८७
आज्येन मूलमंत्रेण	वृ हा २.१४	आत्मज्ञः शौचवान्	या ३.१३७
आज्येन वा तिलैर्वाऽपि	वृ हा ७.२००	आत्मज्ञाननिमित्त तु	बृह १२.३५
आज्येन वैष्णवैः मंत्रै	वृ हा ५.५३२	आत्मज्ञानं परं यच्च	बृ.या. १.७
आज्येनैवतुहोतव्यं	व २.६.४०९	आत्मज्ञानं हि यो वेत्ति	बृह ११.४
आज्ञातिक्रमणाद् विष्णो	वृ हा ८.३२८	आत्मज्ञाने बहूपाया	वृ परा १२.२९९
आज्ञातिक्रमणादिवज्ञः	वृ हा १६०	आत्मतीर्थमिदं ख्यातं	ल व्यास १.१४
आज्ञातेजः पार्थिवानां	नारद १८.१९	आत्मतुस्वं सुवर्णं	वृ परा १०.२०२
आज्ञानृपाणां परमं	वृ परा १२.१४	आत्मतुल्यसुवर्णं	वृ हा ६.२८१
आज्ञासम्पादिनीं दक्षा	या १.७६	आत्मत्राणे वर्णसंकरे	व १.३.२६
आढंकप्रमिता श्रेष्ठा	भार १४.४८	आत्मदत्तेषु दानेषु	ब्र.या. १२.१४
आढक्यः सितसिद्धार्थ	वृ परा ७.२२०	आत्मनः सर्वयत्नेन	औ १.३४
आढक्यः सितसिद्धार्थ	वृ परा ७.२२१	आत्मनश्च परित्राणे	मनु ८.३४९
आढ्यो वापि दरिद्रोवा	कपिल २१८	आत्मनश्च स्वरूप	वृ हा ३.८५
आवतायिनमायान्तं	व १.३.२०	आत्मनश्चैव शुद्ध्यर्थ	आश्व २३.६
आततायिन मायान्तं	वृ हा ६.३३७	आत्मना जायते ह्यात्मा	वृ परा ६.१८३
आततायिनं हत्वा	व १.३.१६	आत्मनात्मनि संयोज्य	विष्णु म ७९
आतपे यदि मूत्रस्य	कण्व ६४६	आत्मनो ब्राह्मणानां	आंपू ८४९
आतये सति या वृष्टि	वृ परा २.८७	आत्मनो यदि वान्येषां	आंड ११.८
आतर्पणं विधानेन आं	पू २९	आत्मनो यदि वान्येषां	पराशर ४०
आतारकोदयात् स्थित्वा	व २.४.९७	आत्मनो यदि वाऽन्येषां	मनु ११.११५
आतिथ्यं सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.१९४	आत्मनो वा परस्यापि	लिखित १३
आतिथ्य (प्रश्नस) करणार्थ	नारा ७.३	आत्मन्यग्निं समोरोप्य	वृता ८.२१५
आतुरस्य औषधैः कार्यम्	वृ.गौ. ३.५१	आत्मन्यशुचि देशे	वृ परा ६.३६२
आतुरामभिशस्तां वा	आंड ११.६	आत्मबुद्धीन्द्रियं पश्येद्	विष्णु म ७८
आतुरामभिशस्तां वा	मनु ११.११३	आत्मब्रह्मासनार्थं च	मार १८.११९
आतुरे स्नानमुत्पन्ने	दा १५३	आत्मभावविद्धेनस्स्यादतः	नारा ३.७
आतुरे स्नानमुत्पन्ने	पराशर ७.२०	आत्ममातामही पत्नी	व्या १६९
आतुरे स्नानसम्प्राप्ते	यम ५३	आत्मलाभसुखं यावत्	ल हा ७.८
आतुरो दुःखितो वाऽपि	वृ.गौ. १४.४	आत्मविक्रयिणो ये च	वृ.गौ. १.६
आसून इन्द्रवृत्रहं	वृ परा ११.३३९	आत्मविद्भः निराहारैः	वृ परा ११.३००
आसूनीयात् तथा वर्षात्	नारद २.१४८	आत्मशक्ति शिवश्चेति	वृ परा १२.३०८
आस प्राणाकृतं वज्ञः	ब्र.या. ११.६४	आत्माश्रया च वस्त्रश्च	आप २.४

आत्मश्रय्याऽऽसनं वस्त्र	बौधा १.५.६१	आत्रेय्या वधः दात्रिय	बौधा १.१०.२७
आत्मस्त्रीहयात्मबालश्च	वृ परा ८.३०४	आ दत्त जनात्सद्यो	ब्र.या. १३.८
आत्मस्थं वैदिकाग्नि	लोहि १५०	आददीत न शूद्रोपि	मनु ९.९८
आत्महननाध्यवसाये	व १.२३.१६	आददीताथ षड्भागं	मनु ३.१३१
आत्मा नदी भारत पुण्यतीर्थं	वृ.गौर ०.२३	आददीताथ षड्भागं	मनु ८.३३
आत्मानं घातयेद्यस्तु	अत्रिस २१७	आ दन्तजननात सद्य	पराशर ३.२२
आत्मानं घातयेद्यस्तु	लघु यम २०	आ दन्तजननाद्वापि	बौधा १.५.११०
आत्मानं देहमीशश्च	वृ हा ४.२	आदन्तजन्मनः सद्य	औ ६.१३
आत्मानं परमात्मानं	भार ६.१२९	आदन्त जन्मनः सद्यः	दा ११६
आत्मानं पातयेद्धरे	आंपू ७१	आदन्तजन्मनः सद्य	या ३.२३
आत्मानं भूषयेन्नित्यं	बृह १२.१३	आदन्तजन्मनः सद्य	लघुशंख ६४
आत्मानं वहिरन्तस्थं	ल हा ७.६	आदन्तजातमरणं	औ ६.१७
आत्मानं शिरसि स्थाप्य	व २.६.४५	आदानमप्रियंकरं दानं	मनु ७.२०४
आत्मानं शोधयित्वा	अ १०	आदाननित्याच्चादातुरा	मनु ११.१५
आत्मानं समलंकृत्य	वृ हा ८.८७	आदानात् सर्वभूतानां	बृह ९.९०
आत्मानं हिततो	कण्व ७६५	आदाय कलशं शुद्ध	वृ हा ५.६०
आत्मान्यकार्यं स्पृश्येन्न	आंपू २२७	आदाय चापं च	वृ परा १२.२७५
आत्मान्ययोः समान	वृ परा १२.१३४	आदाय तुलसीं त्यक्तो	शाण्डि ४.१६४
आत्मार्यं च क्रियारम्भो	या ३.२३९	आदायं भांडसलिलं	भार ११.२८
आत्मार्येऽन्यो न शक्नोति	दक्ष २.३३	आदाय सर्वं उच्छिष्ट	वृ परा ७.३२७
आत्मा विवाहिताये न	ब्र.या. ८.१८०	आदायाऽऽदौ कुशास्त्री स्त्रीन् आश्व	२.२२
आत्मा संछादितो देवै	बृ.या. १.४०	आदावन्ते च कुर्वीत	बृ.या. ७.२६
आत्मा हि शुक्रमुद्दिष्टम्	वृ.गौ. ४.१५	आदावन्ते च गायत्र्या	वाधू १३५
आत्मीये संस्थितो धर्मे	अत्रिस १८	आदावन्त्ये च पाद्ये च	आंपू ७८२
आत्मैव देवताः सर्वाः	मनु १२.११९	आदावारभ्य आशौचं	दा १२३
आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी	मनु ८.८४	आदावेकां गतिं कृत्वा	लोहि १४८
आत्यन्तिक फल प्रदं	व १.२९.२१	आदावेव तु चोद्भकार	वृ परा ४.४५
आत्रश्च नालिकाशाकं	वृ हा ४.११०	आदृत्येमृत्तिकां कुर्यात्	औ २.४२
आत्रिपक्षात् त्रिरात्र	पराशर ३.१५	आदिकेऽपि तयोरेकं पिंडं	कपिल १०५
आत्रिपक्षात्त्रिरात्र	ब्र.या. १३.६	आदित्यदुहिता धेनुः	ब्र.या. ११.२०
आत्रिपूर्वं ततस्त्वेवं तत्कूले	कपिल ११२	आदित्यमण्डलान्तस्थं	व २.३.११५
आत्रिपूर्वं तत्सुतस्य तेन	कपिल ४२२	आदित्यमण्डलान्तस्था	बृ.या. ४.२८
आत्रिमासात् त्रिरात्र	दा १४३	आदित्य मण्डलान्तस्य	व २.३.६१
आत्रेया विष्णु सम्बर्ता	वृ परा १.१५	आदित्यमण्डले देवं	वृ परा ४.१४०
आत्रेयी वक्ष्यामो	व १.२०.४२	आदित्यमुदितं पश्येन्नत्वा	आश्व १.५१

आदित्यमुपतिष्ठेतु	ब्र.या. ८.११४	आद्यकाण्डाष्टमः प्रश्नः	कण्व ५३४
आदित्यं तत्र संस्थाप्य	ब्र.या. १०.५२	आद्यन्तयोर्व्या हृतीनां	भार १९.२६
आदित्य रक्षणार्थं तु	ब्र.या. ६.६	आद्यन्त रक्षित्तोऽकुर्यादिति	वृ परा ४.४६
आदित्य सदृशाकारैः	वृ.गौ. ५.९४	आद्यन्तौ प्रणवौ मंत्रौ	आश्व १.७९
आदित्यस्य सदा पूजां	या १.२९४	आद्यन्त्यावेव संत्याज्यौ	कपिल ७५७
आदित्याज्जायते वृष्टि	कण्व ३३२	आद्य तं प्रणवं विद्वान्	वृ परा १२.२६४
आदित्यनलविप्राग्नि	भार ३.११	आद्य तु सर्वदानानां	अ १०१
आदित्यान्तर्गतं भर्गः	बृह ९.५७	आद्ययत्यक्षरं ब्रह्म	बृह ११.२७
आदित्याय ततः स्नायादन्नं	वृ.गौ. १६.११	आद्य यत् त्र्यक्षरं ब्रह्म	मनु ११.२६६
आदित्या वसवो रुद्रा	शाता २.११	आद्य यदक्षर ब्रह्मा	वृ.या. २.४१
आदित्ये चैव हृदये	बृह ९.१५७	आद्यसंगी समो दोषी	वृ परा ८.३०७
आदित्येतन्महः साक्षात्	भार ६.८०	आद्यस्प्रष्टु र्वेत्स्नानं	वृ परा ८.३०८
आदित्येन सह प्रातर्मन्देहा	ल हा ४.१३	आ द्वाविंशात् क्षत्रियस्य	व १.११.५२
आदित्येऽस्तमिते	आश्व १.१८३	आद्या आद्यस्य षट्	वृ परा ६.१२
आदित्येऽस्तमिते रात्रा	अत्रिस २४५	आदयाग्नौ वा द्वितीयाग्नौ	लोहि ६
आदित्येऽस्तमिते रात्रौ	अत्रिस २४६	आद्यादाद्यन्तयोरादौ	शाण्डि ४.१४९
आदित्ये हृदये चैव	बृह ९.१५६	आद्याद्यस्य गुणं त्वेषाम्	मनु १.२०
आदित्यो ब्रह्मा इत्येत	बृह ९.१५८	आद्यानुवाके रुद्राणां	वृ परा ११.१८५
आदित्यो वरुणोविष्णुः	अत्रि स ३३५	आद्यान्त्यावेव संत्याज्यौ	लोहि २६६
आदिप्रयत्नं प्रथमं	वृ.या. ८.१६	आद्या परतरा सूक्ष्मा	वृ.या. २.३०
आदिमध्य अवसानेषु	शंख २.१२	आद्यास्तिष्ठो महाप्रोक्ता	वृ परा २.६३
आदिमध्यावसानेषु	कपिल २४०	आद्यास्तु व्याहृतीस्तिष्ठो	वृ.या. २.६५
आदिमध्यावसानेषु	कपिल २४२	आद्यास्त्रयो द्विजाः प्रोक्ता	वृ हा ४.१४७
आदिमध्यावसानेषु	या १.३०	आद्येनावाहयेदेव	व २.६.१५७
आदिशेत् प्रथमे पिण्डे	बौधा २.१९	आद्यतोऽथ धनं त्वा	नारद ६.३०
आदिष्टी नोदकं कुर्यादा	मनु ५.८८	आद्यं पूर्वपक्षस्य	नारद २.१४३
आदेहपातं वनगो	ल हा ५.९	आधानकाला ये प्रोक्ता	कात्या ६.१
आदेहपातात्तद्धित्वा	शाण्डि ४.५	आधानतो द्वितीये तु	वृ परा ६.१४८
आदी कुम्भकमाश्रित्य	विश्वा ३.६	आधानादति शुद्धा	शाण्डि १.८९
आदी देवता ऋषिच्छन्दः	शंख १२.७	आधानादष्टमे वर्षे	व २.३.३७
आदी प्रतिवसन्तस्य वसन्ते	कपिल ९७३	आधानादिकसंस्काराः	वृ परा ६.२०२
आदी यः सर्ववेदानां	भार ६.३७	आधाने पुंसि सीमन्ते	आश्व १८.१
आदी वह्निमुखे दत्त	विश्वा ८.७३	आधाने होमयोश्चैव	कात्या ५.२
आदी श्रौतं तथा चामे	विश्वा २.५४	आधारकालचक्राय	वृ हा ३.१२४
आदी सांगमं च कर्मोक्त	भार ६.६१	आधारवाज्य भागौ च	वृ.गौ. १६.७

आधाराख्यं च संप्रोक्तं	विश्वा ६.४	आपत्स्वपि हि कष्टासु	नारद ५.५
आधारावाज्यभागौच	व २.२.१६	आपत्स्वपिहि कष्टासु	ब्र.वा. १२.५
आधिक्यं तत्प्रकथितं	आंपू ९३९	आपत्स्वापि हि देया	ह.या. १२.९
आधि प्रणश्येद् द्विगुणे	या २.५९	आपत्स्वपिहियदन्तं	ब्र.या. १२.६
आधिर्यो द्विविधः प्रोक्तः	नारद २.११६	आपद्गतः सम्प्रगृहन्	या ३.४९
आधिश्चोपनिधिश्चोभौ	मनु ८.१४५	आपद्गतो द्विजो	वृ परा ८.३२७
आधि सीमा बालधनं	नारद २.७३	आपद्गतोऽथवा वृद्धा	मनु ९.२८३
आधि सीमा बालधनं	मनु ८.१४९	आपद् बन्धुः सदा मित्र	वृ हा ३.११
आधि सीमा बालधनो	व १.१६.१६	आपदं निस्तरेद्वैश्यः	नारद २.९५
आधिसीमोपनिक्षेप	या २.२५	आपदं ब्राह्मणस्तीर्त्वा	नारद २.५५
आधेः स्वीकरणात्	या २.६१	आपद्यते स्थाणु गतं	वृ परा २.५०
आध्यात्मिकीं तथा	व २.६.१४८	आपद्यपि न कर्तव्या	शंख ४.९
आध्यादीनां हि हतारं	या २.२६	आपद्यपि न गृहीत	व २.३.१२०
आनखाच्छोधयेत्पापं	व्या ३५४	आपद्यपि न याचेत ज्ञाति	शाण्डि ३.२१
आनन्दश्च तथा प्राज्ञ	वृ.या. २.९४	आपदर्थं धनं रक्षेद्द्वारान्	मनु ९.२१३
आनन्दसागरे मग्ना	आंपू ५५८	आपन्निवारकस्सोयं	कपिल ७१०
आ नामेः	बौधा १.५.६	आपन्निवारकस्सोऽयं	लोहि २४२
आनीतमम्भो निशियत्	वृ परा ७.२३४	आपन्नो येन वा धर्मो	आंठ ५.१४
आनीतं तु शरं दृष्ट्वा	नारद १९.२९	आपः पवित्रा भूमिगता	बौधा १.५.६५
आनीय विप्रसर्वस्वं	या ३.२४५	आपः पुण्याः समादायः	वृ.या. ७.१८२
आनुलोम्येन वर्णानां	नारद १३.१०५	आपः पुनन्वित्युक्ता	वृ.गौ. ८.३०
आनुष्टभस्य सूक्तस्य	वृ परा ४.१२२	आपः पुनन्तु पृथिवी	व २.५.१६
आनुशंस्यं क्षमा सत्यं	अत्रि स ४८	आपः पुनन्तु मध्याह्ने	आश्व १.३७
आन्तं समन्त्रकं नित्यं	लोहि २७	आपः पुनत्विच्येतस्य	भार ६.१३२
आन्तरं शृण्यति	वृ.या. ७.१८५	आपयित्वा उभेषजीरीति	वृ हा ८.२४
आप इत्यादिपि पादैः	आश्व १.३५	आपः शुद्धा भूमिगता	मनु ५.१२८
आपः करनखैः स्पृष्ट्वा	व्या ५४	आपस्तम्बकृताधर्माः	वृ गौ. १.२१
आरः कृष्णतिलैर्दद्यान्	व्या ९७	आपस्तम्बं प्रवक्ष्यामि	आप १.१
आपत्कल्पेन यो धर्म	मनु ११.२८	आपस्तम्बकृता धर्माः	वृ परा १.१६
आपत्कल्पोक्तमर्यादाः	लोहि ३८६	आपस्तम्बस्य तन्नेष्ट	वाधू १४७
आपत्काले तु विप्रेण	आप ८.२०	आपस्ते घ्नस्तु दौर्भाग्यं	वृ परा ११.१७
आपत्काले तु विप्रेण	पराशर ११.१९	आपिण्डदानतो दद्यात्	वृ परा ७.२५०
आपत्काले तु सम्प्राप्ते	व २.४.९३	आपिठान्मैलिपर्यन्तं	शाण्डि २.८८
आपत्स्यनन्तरा वृत्ति	नारद २.५२	आपूर्य निश्चलीकृत्य	वृ परा १२.२१४
आपत्स्वपि न देयानि	दक्ष ३.१८	आपो अस्मानिदमातः	आश्व १.७०

आपो जनयथानेन	आश्व १.३६	आपोहिष्टेत्यृगभिषिक्ता	वृ.गौ. ३.५८
आपोज्योतीरसोमृतं	कात्या ११.७	आपोहिष्टेत्यृचा कुर्यान्	वाधू ११७
आयोज्योतीरसो	ब्र.या. २.७४	आपोहीति द्विनवकं दधि	विश्वा ४.५
आपो देवगणाः प्रोक्ता	लघुयम ९५	आपो हयायतनं तस्य	वृ परा ४.१२०
आपो देवीति नवभि	बृ.या. ७.२२	आप्तधर्मेषु यत्प्रोक्तं	आंउ ३.७
आपो नरा इति प्रोक्ता	मनु १.१०	आप्तां सर्वेषु वर्णेषु	मनु ८.६३
आपो मूत्रपुराषाद्यै	औ ९.४७	आप्यायते यथा धेनु	आप १०.१०
आपौ मूलं हि सर्वस्य	वृ परा ५.११४	आप्यायत्वेति च क्षीरं	भार ७.७६
आपोयम्बः प्रथममिति	वृ हा ८.२७	आप्यायन अपांस्थान	विष्णु १.५६
आपोवाईतमित्यादि	नार १५.१६	आप्यायनात्तु वरुणाः	बृ ह ९.४८
आपो वायिदमित्यस्य	भार १७.१३	आप्यायस्वेति च क्षीरं	बृ.गौ. २०.४२
आपोशान क्रियापूर्वमग्नौ	ब्र.या. २.१७२	आप्यायस्वेति सोमाऽत्र	वृ परा ११.३१६
आपोशानक्रियापूर्व	व्यास ३.६८	आ प्राणाच्छून्यभूतं	बृ.या. ९.७
आपोशानं करे कृत्वा	व्या २४९	आप्लाव्याहतेवस्त्र	ब्र.या. ८.३०४
आपोशानं करे विप्रे	व्या २४८	आपस्वन्तरिति ऋचा	वृ हा ८.४६
आपोशानं प्रदेयानं	वृ परा ७.२५७	आबध्य मेखलां तस्य	आश्व १०.३४
आपोशानं विना नाद्यान्	वृ परा ६.१७५	आ आब्दिकेऽक्षय्यस्थाने	वृ परा ७.२८८
आपोशानेनोपरिष्टाद	या १.१०६	आब्दिके चैव संप्राप्ते	व्या ३२३
आपोशानोदके विप्र	वृ परा ७.२५८	आब्दिके पादकृच्छ्रं	दा ८६
आपोहिष्ठा ऋचस्तिष्ठो	ब्र.या. २.४३	आब्दिके वानुमासे	आंपू ९६८
आपोहिष्ठात्रयो मन्त्राः	कण्व २४२	आब्दिके समनुप्राप्ते	व्या ५९
आपोहिष्ठादित्र्युचस्य	भार १७.१४	आब्रह्मन्नि त्र मंत्र तु	वृ परा ४.१८७
आपोहिष्ठादितिसृभि	भार ६.४६	आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं	प्रजा १८७
आपोहिष्ठादिभिर्मन्त्रैः	भार ६.४३	आभिमुख्यं जपदीनां	शाण्डि २.८९
आपोहिष्ठादिभिर्मन्त्रैः	भार ७.८०	अभिषिच्य ततः कुर्याद्	व २.६.११०
आपोहिष्ठादिभिर्मन्त्रैः	भार ११.९१	आभौरभाण्ड संस्थानि	वृ परा ८.३३१
आपोहिष्ठादिभिर्मन्त्रैः	भार १५.६४	आभ्यामेव च सूक्ताम्यामग्नौ	वृ हा ६.१३
आपोहिष्ठादिभिर्मन्त्रैः	वाधू ८५	आभ्युदयिकसम्प्राप्तावर्चा	वृ परा ७.१४३
आपोहिष्ठाधिभि षड्भिः	भार ५.२९	आमणिबन्धनाद्धस्तौ	संवर्त १८
आपोहिष्टेति चालो ड्यू	पराशर ११.३३	आ मणेर्बन्धनाद्धरतौ	वृ परा २.३१
आपोहिष्टेति तिसृभि	ब्र.या. २.१९	आमंत्रयितु-भोक्तारौ	वृ परा ८.१८७
आपोहिष्टेति तिसृभि	ब्र.या. ८.२१	आमन्त्रयित्वा यो	औ ५.८
आपोहिष्टेति तिसृभि	वृ.गौ. ८.३५	आमन्त्रिणो गतं विप्रं	व्या २३३
आपोहिष्टेति मन्त्रेण	व २.३.११४	आमान्त्रितस्तु यः श्राद्धे	मनु ३.१९१
आपोहिष्टेति वै मन्त्र	बृ.मा. ७.१६४	आमान्त्रितस्तु यो विप्रो	व्या ८९

आमंत्रितस्तु यो विप्रो	व्या २३४	आमं शूद्रस्य पक्वान्नं	वृ परा ६.३१०
आमंवितो जपेदोर्ध्वं	व्या २०२	आयसेन तु पात्रेण	अत्रि स १५२
आमन्त्रितो द्विजस्त्र	ब्र.या. ४.२९	आयसेनं तु पात्रेण	लघुशंख २७
आमन्त्रय ब्राह्मणान्	व २.६.३६४	आयसेनं तु पाशेन मध्ये	नारद १९.६
आमपात्रेऽन्नमादाय	कात्या २१.६	आयसेष्वपसारेण	पराशर ७.२६
आमपात्रे यथान्यस्त	बृ ह ११.१७	आयातांस्तु ततो विप्रान्	व २.६.३७३
आमपात्रे यथा न्यस्तं	व १.६.२९	आयाति प्रतिपद्यत्रतत्र	ब्र.या. ९.४४
आममन्पतेश्चैव ईशाने	ब्र.या. ८.१९८	आयासो रेचकः पूरो	विश्वा ३.१३
आममांसं घृतं क्षौद्रं	दा १६१	आयाहि शांडिल गोत्र	ब्र.या. २.१३८
आममांसं घृतं क्षौद्रं	लघुशंख ६७	आयुः तेजो वलं वीर्यम्	वृ.गौ. ४.१६
आममांसं घृतं क्षौद्रं	लिखित ९३	आयुधानि समादाय	वृ परा १०.३३१
आममांसं मधु घृतं	आप ८.१८	आयुधान्यायुधीयानां	नारद १८.११
आममेवात्र दातव्यमन्नं	व २.६.३४२	आयुः प्रजा धनं विद्यां	आश्व २३.१०२
आमं मांसं घृतं क्षौद्रं	वृ परा ८.३३०	आयुः प्रज्ञां धनं विद्यां	या १.२७०
आमं वा यदि वा पक्वं	आउ ८.५	आयुः प्रशस्यमैश्वर्यं	व्या २७०
आमश्राद्धगृहीतारं तद्दिने	आंपू ७६४	आयुरित्यादिमंत्रोयं	भार ५.२०
आमश्राद्ध द्विजः कुर्याद्	औ ५.८३	आयुर्निरामयं सम्पद्	वृ हा ३.१३९
आमश्राद्ध प्रकुर्वीति	ब्र.या. ५.२	आयुर्बलं यशोवर्च	कात्या १०.४
आमश्राद्ध प्रकुर्वीति	ब्र.या. ५.३	आयुर्बलं यशोवर्च	वाधू ३५
आमश्राद्धविधानस्य	कात्या २९.११	आयुर्वित्तं यशः पुत्राः	वृ परा ६.४३
आमादिनानुकरममुख्यमिति	कपिल १७०	आयुर्वेदं अथ अष्टांगं	औसं २७
आमान्नहरणाच्चैव	शाता ४.१४	आयुर्वेदो धनुर्वेदो	वृ.गौ. १५.५२
आमानेन तु शूद्रस्य	वृ परा ७.६२	आयुर्हरंतूलशुल्पं तपो	भार १५.७५
आमाशयोऽथ हृदयं	या ३.९५	आयुषं च पठेन्मन्त्र	ब्र.या. ८.४१
आमास्वित्यादिकान्	आश्व २३.५३	आयुष्कामी जपेन्नित्यं	वृ हा ३.१३८
आमिषं कृत्ति पानीय	ब्र.या. ३.५३	आयुष्कामी जपेन्नित्यं	वृ हा ३.१९६
आमुहूर्त्तान्तु वै ब्राह्मणं	शाण्डि २.९१	आयुष्कामो दिवाररात्रौ	विश्वा ८.८
आम्यामेवानुवाकाभ्यां	वृ हा ५.३५७	आयुष्मन्तश्च शिशवो	वृ हा ७.२७०
आग्रमामलकीमिक्ष	शंख १४.२२	आयुष्मान् भव सौम्येति	औ १.२०
आग्नेषु (ख)ण्डताम्बूलचर्वणे	वाधू ३१	आयुष्मान् भव सौम्येति	मनु २.१२५
आर्यति सर्वकार्याणां	मनु ७.१७८	आयुष्यकरणं प्रोक्तं	ब्र.या. ८.३१८
आर्यत्यां गुणदोष	मनु ७.१७९	आयुष्मन्तं सुतं सूते	मनु ३.२६३
आर्यनेति च पुष्पाणि	वृ हा ८.१८	आयुष्यमर्थमारोग्यं	मार ९.२४
आर्यन्तु न इमं मंत्र	आश्व २३.३१	आयुष्यं प्राङ्मुखो भुङ्क्ते	अत्रि ५.२७
प्रायं गौरितिमंत्रेण	वर.३.४	आयुष्यं प्राङ्मुखो	औ ३.९८

आयुष्यं प्राङ्मुखो	ल व्यास २.६७	आराध्यैव जगन्नाथं	शाण्डि ४.६४
आयुष्यसूक्तपठनं	कण्व ६४२	आराध्यो भगवानेव	शाण्डि १.४७
आयुष्याणि च शान्त्यर्थं	कात्या १.१६	आरान्नायक् सोदरसुत	आंपू ३०२
आयुष्यं प्राङ्मुखो भुक्ते	मनु २.५२	आरामायतनग्राम	या २.१५७
आयुष्यं हरते भर्तुः सा	अत्रिस १३७	आरामाश्चापि कर्तव्यः	वृ परा १०.३७४
आयुस्व चिरमाचारं तत्र	ब्र.या. ८.३३४	आरुह्य भर्तुश्चित्तिमंगना	वृ परा ७.३८०
आयोगवश्च क्षत्ता च	मनु १०.१६	आरूढः कामगन्धिव्यङ्गो	बृ.गौ. ६.१७०
आयोगवेन विप्रायां	औ सं १४	आरूढपतिते दानं	वृ परा १०.३१८
आयोग्ययोजनादेव योग्ये	शाण्डि ४.६१	आरूढ यौवनैः दिव्यैः	वृ हा ७.३२५
आरक्तकरवीरैश्च	वृ हा ३.२७८	आरूढवान् इतो ज्ञातः	वृ.गौ. ४.१०
आरंग्वधानि शिग्रूणि	वृ हा ८.११५	आरूढो नैष्ठिके धर्मे	अत्रिस २६९
आरहान् कारस्कारान्	बौधा ११.३२	आरोगया दयितया स्वयं	शाण्डि ५.५०
आरण्यकालशाकादि	वृ परा ७.२३७	आरोग्यं आयुरैश्वर्यं	कात्य १४.६
आरण्यं मम सूक्तं वा	बृ.गौ. १६.१४	आरोग्यं रूपवक्ता च	शाण्डि ४.१३७
आरण्यांश्च पशून्	मनु १०.८९	आरोपयित्वाऽन्योन्यं वै	कपिल ८४५
आरण्यानां च सर्वेषां	मनु ५.९	आरोपिताग्नेः समिधस्तु	वाधू १५५
आरनालं च मद्यं च	वृ हा ८.१२३	आर्जवञ्चैव राजेन्द्र	वृ.गौ. १२.३
आरनालंकारशाकं	वृ हा ८.९८	आर्त्तानां का गतिर्ब्रह्मन्	नारा ५.९
आरनालं तथा क्षीरं	अत्रिस २४९	आर्त्विज्यं वैदिकस्यापि	लोहि ६२२
आरनालं न सेवेत	शाण्डि २.५०	आर्त्तवाभिप्लुतां नारी	अत्रि ५.५०
आरनाले हि विप्राणां	वर.५.४५	आर्त्तवाभिप्लुतां नारी	अत्रि ५.५१
आरभ्याऽऽधानकं कर्म	आश्व १६.५	आर्त्तवाभिप्लुता नारी	अत्रि ५.६०
आरभ्यानुदके रात्रौ	औ २.३२	आर्त्तस्तु कुर्यात्स्वस्थः	मनु ८.२१६
आरम्भकाणि यान्येव	वृ परा १२.१९०	आर्त्तानां मार्गमाणानां	आ उ ७.१
आरंभकाले सङ्कल्पे	कण्व ४०९	आर्त्ताऽऽर्त्ते मुदिते हृष्टा	वृ हा ८.१९८
आरंभं कुतपं कुर्याद्	प्रजा १५८	आर्त्तर्त्ते मुदिते हृष्टा	वर.५.६६
आरम्भयज्ञः शूद्रस्तु	अत्रि २.९	आर्दयन्तु च दुःखानि ऋणं	विष्णुम ७४
आरम्भज्ञाज्जपयज्ञो	अत्रि २.१०	आर्दकं नारिकेलं च	व्या ३१५
आरम्भयज्ञाज्जपयज्ञो	व १.२६.१०	आर्दकं षट्छतसमं	आंपू ५३३
आरम्भरुचिताऽपैर्यं	मनु १२.३२	आर्दतृणं गोमयं भूमिं	बौधा १.५.८६
आरभेतैव कर्माणि	मनु ९.३००	आर्दपादस्तु भुञ्जानो	अत्रि ५.२६
आरवरे च शौके च	वाधू १५९	आर्दपादस्तु भुञ्जीत	मनु ४.७६
आराधनं भगवतः	व २.२.७	आर्दमांसं घृतं तैलं	अत्रिस २५०
आराधयेन् महेशानं व	व्यास २.४५	आर्दं ज्वलति मन्त्रेण	वाधू ८८
आराधितस्तु यः काश्चिद्	पराशर ९.३७	आर्दगलकामत्रास्तु ग्रासा	वाधू १८

आर्दवस्त्रो यदि तरा	वाधू १९६	आवर्तयेत्तदुदकं ये ते	बृ.या. ७.८
आर्दवागानानोभूत्वा	ल व्यास २.७०	आवर्तयेत्सदायुक्तः	अत्रि १.७
आर्दवासा जले कुर्यात्	वाधू ३०	आवर्तयेत् सदा युक्तः	व १.२५.५
आर्दवासास्तु यत्कुर्याद्	लिखित ६३	आवर्तं येद्वा प्रणवं	ल व्यास २.२२
आर्दायां जन्मनक्षत्रे	वृ.गौ. १०.११०	आवर्त्य प्रणवं	वृ परा २.१४३
आर्क्ष सशुषिरा चैव	कात्या ७.१४	आवसेनापि भोक्तव्यं	ब्र.या. ९.२४
आर्क्षेण वाससा च	ल व्यास १.९	आवायव्यया वायव्योर्वा	विश्वा ५.४१
आर्क्षिकं कुलमित्रं च	मनु ४.२५३	आवासोपार्जितैर्वाऽपि कर्म	शाण्डि ३.३५
आर्यता पुरुषज्ञानं शौर्यं	मनु ७.२११	आवाहनाग्नौकरणं	व्या १३६
आर्यं प्रपूजितो यत्र	बृ.या. २.५९	आवाहनादिभैदश्च	विश्वा ६.५०
आर्यावर्तः प्रागादर्शात्	व १.१.७	आवाहनासने पाद्य	वृ हा ३.३०
आर्ष मेधातिथिर्नाम	वृ परा ११.३३०	आवाहनीयो यत्ने	वृ परा ११.२६९
आर्ष कुत्सस्य चामुत्र	वृ परा ११.३२६	आवाहने विनियोगः	भार ६.९६
आर्ष छन्दश्च मन्त्राणा	बृ.मा. १.१२	आवाहयामि त्वां देवि	वाधू ८३
आर्ष छन्दश्च दैवत्यं	वृ.या. १.२७	आवाहयाम्युपास्त्यर्थं	वृ परा २.१७
आर्ष छन्दश्च दैवत्यं	बृ.या. ४.२	आवाहयिष्ये पित्रादीन्	वृ परा ७.१९४
आर्ष छन्दश्च दैवत्यं	वृ परा ११.११०	आवाहयेत्यनुज्ञातो	वृ परा ७.१८४
आर्ष तु काश्यपस्येह	वृ परा ११.३३४	आवाह्य च पितृनैरप	वृ परा २.१८३
आर्ष तु वामदेवोऽस्य	वृ परा ११.३२९	आवाह्य तदनुज्ञातो	औ ५.३८
आर्ष धर्मोपदेशं च	मनु १२.१०६	आवाह्य तदनुज्ञातो	या १.२३३
आर्ष नारायणस्येह	वृ परा ११.३३३	आवाह्य पूर्ववन्मन्त्रैरास्तोर्यं	बृ.या. ७.६९
आर्ष सांख्यस्य चात्रोक्त	वृ परा ११.३३६	आवाह्य यजुषा तेन	बृ.या. ४.२९
आर्षश्चैवाथ दैवश्च	नारद १३.३९	आवाह्याग्नौ जगन्नाथं	शाण्डि ४.९४
आर्षे गोमिथुनं शुल्कं	मनु ३.५३	आवाह्यापां पतिं चैन	नारा ६.५
आलभेद्वै मृदाङ्गानि	बृ.या. ७.१५	आविकं त्रसरं चैव	आश्व १.२९
आलम्ब वारुणैः सूक्तै	वृ.गौ. ८.३२	आविकमौष्ट्रिकमैक	बौधा १.५.१५८
आलयः सुकृतीनां च	बृ.या. ३.१८	आविकाश्चित्रकारश्च	अत्रि ३.८५
आलिखेत् पवित्रे च	ब्र.या. ८.२६९	आविकैकशफोष्ठीणां क्षीरं	संवर्त १.८७
आलिप्यं चंदनेनाथ	भार ७.८४	आ विद्याग्रहणाच्छिष्यः	नारद ६.८
आलिषा (उनिष) निमिषं	ब्र.या ८.३३०	आविष्करोति स यतेज्योती	बृ.या.२.१२२
आलोक्य पूजयन् विष्णु	वृ हा ८.३४७	आवृत्तानां गुरुकुलाद्	मनु ७.८२
आलोच्य धर्मशास्त्राणि	शंख १७.६६	आवृत्य प्राणमायम्य	कात्या १७.२२
आलोलुपश्चरेद् भैक्षं	व्यास १.३०	आवेष्ट्यस्थाप्य गायत्र्याः	भार ७.८९
आवयोः प्रवरः प्रोक्त	लोहि ३२३	आव्रतानां त्रिरात्र	औ ६.२७
आवयो सर्वकार्येषु	वर.४.८१	आ शरीरविमोक्षात्	व १.७.४

आशितो वाचनं कृत्वा	वृ हा ५.१५०	आषाढ्यां प्रौष्ठपद्यां	औ ३.५५
आशितो वाचनं कृत्वा	वृ हा ५.१५७	आषोड्शदिनादर्वाक्	पराशर १२.४६
आशीभिरेनं सततं	आंपू १०१९	आषोड्शदाद्वाविंशदा	बौधा १.२.१२
आशीभिश्च प्रशस्ताभि	आंपू ५६५	आषोड्शाद्ब्राह्मणस्य	मनु २.३८
आशु शिशान इत्यादि	वृ परा ११.१९२	आषोड्शाद् ब्राह्मणस्य	व १.११.५१
आशूदरस्थशूदानो	वृ परा ६.३०७	आषोड्शाब्दाद् द्वाविंश	या १.३७
आशेषप्राणि जिह्वासु	भार ६.१४८	आसत्यादीनां चतुर्णां	भार १७.२१
आशीचं पिण्डदानादि	वर.६.३५१	आसत्येनादिभिर्मित्रै	भार १५.८५
आशीचं मरणोद्दिश्यं	आंपू ९८७	आसत्येनेति मन्त्रेण	विश्वा ७.१७
आशीचिनो गृहात् ग्राह्यं	औ ७.६	आसन आवाहन अर्ध्यं	वृ परा ७.३१२
आशीची प्रवदेन्मोहात्	कण्व ५७	आसनं च क्षणं दत्त्वा	आश्व २३.३०
आशीचे यस्तु शूद्रस्य	व १.४.२५	आसनं चैव यानं च	मनु ७.१६१
आश्रमत्रयधर्मान्वा	वृ परा १२.१२०	आसनं चैव यानं च	मनु ७.१६३
आश्रमाचारसंयुक्तान्	विष्णु १.६२	आसनं शयनं यानं	बौधा १.५.६२
आश्रमाणां चतुर्णाञ्ज	वृ हा ५.४१	आसनं स्वस्तिकं प्रोक्तं	भार १९.१८
आश्रमादाश्रमं गत्वा	मनु ६.३४	आसनं स्वस्तिकरं वद्वा	भार १२.५४
आश्रमे तु यतिर्यस्य	दक्ष ७.४४	आसनाच्छयनाद्यानात्	पराशर १२.७१
आश्रमे वा वने वापि	वृ.गौ. ११.६	आसनाद्यर्थपर्यन्तं	कात्या १७.७
आश्रमेषु च सर्वेषु	संवर्त १०७	आसनाद्यैर्यथाशक्ति	शाण्डि २.३६
आश्रमेषु द्विजातीनां	मनु ८.३९०	आसानारूढपादश्च	संवर्त २२
आश्रमेषु यतीनां वा	वृ परा ४.३९	आसनारूढ पादः सं	वृ परा ८.२००
आश्रयेत्कोऽत्र निर्भाग्य	भार १२.४८	आसनार्चनसंयुक्तं	ब्र.या. ३.३४
आश्रावणे वषट्कारे	बृ.या. २.१५०	आसनवसथौ शय्यां	मनु ३.१०७
आश्रित्य प्रथमं पात्र	वृ परा ७.२०१	आसनावाहनौ चैव	व्या ११८
आश्रित्य भूमिमदत्ता	वृ.गौ. ६.१२५	आसनाशनय्याभिरन्दि	मनु ४.२९
आश्वप्रतिपदिश्राद्ध	प्रजा १७१	आसने चासनं दद्याद्	वृ परा ७.८७
आश्वयुज्यां तथा कृष्या	कात्या २६.१०	आसने देवतादीनां अपि	भार १८.१०४
आश्वलायनं आचार्य	आश्व १.१	आसनेन तु पात्रेण	वृ हा ५.२७३
आश्वालायनशाखानां	विश्वा ४.११	आसने पादमारुढं	व्या २३०
आश्विनं चैकोनविशं	बृ.या. ४.६८	आसने पादमारूढो वस्त्र	वृ.य. ३.३१
आश्विने नवमी शुक्ला	ब्र.या. ६.२२	आसने शयने पाने	औ ३.१३
आषाढऽश्वयुजे चैव	वृ परा १०.३५७	आसनेषूपकल्पेषु	मनु ३.२०८
आषाढीमवधि कृत्वा	आंपू ७०८	आसनेष्वासनं दद्यान्	बृ.य. ३.३०
आषाढे वामनाख्यं मां	बृ.गौ. १८.२४	आसनैरर्घ्यपाद्याद्यैर्व्य	शाण्डि ४.५६
आषाढ्या पंचमे पक्षे	प्रजा १६१	आसनौ पादरूढस्तु	ब्र.या. २.१८५

आसन्ध्यां न भुञ्जीत	बौधा २.३.३२	आसेचनम्पूर्ववत्कुर्याद्धिरं	ब्र.या.८.३०५
आसन्नतां प्रयात्याशु	शाण्डि ५.७०	आसेध्यकाल आसिद्ध	नारद १.४४
आसन्नधोजलं रूढपलाश	शाण्डि १.७६	आसेव्य दक्षिणे कर्णे	व २.३.९०
आसपिण्डक्रियाकर्म	मनु ३.२.४७	आस्तीर्य त्वाविकं भूमौ	वृ परा १०.५३
आसप्तमान् पंचमाच्च	नारद १३.७	आस्तीर्य दक्षिणामेव	वृ हा ६.९८
आसप्तमस्तु पातालादूर्ध्व	बृ.या. ३.२.४	आस्तीर्य दर्भान् प्रागग्राम्	वृ हा ६.१२८
आ सप्तमासादा दन्त	बौधा १.५.१०९	आस्तीर्य शयनं दत्त्वा	वृ परा १०.२६४
आसमाप्तेर्विधानेन	आंपू ८०६	आस्तीर्य साधुशयनं	व्यास २.३२
आ समाप्तेऽऽशरीरस्य	मनु २.२.४४	आस्तीर्याग्नेरुदरदर्भान्	आश्व २.१७
आसमुद्राच्च वै पूर्वा	बृ.गौ. १४.४४	आस्तृश्यलोत्पादेषः	भार १५.३९
आ समुद्रानु वै पूर्वादा	मनु २.२२	आस्नानकालं नाश्नीयाद्	अत्रि ५.५७
आसादनं च पात्राणां	व २.६.३३०	आस्नानकालं नाश्नीयाद्	अत्रि ५.५९
आसादयेत सुवं चाऽऽदौ	आश्व २.४४	आस्यतामिति चोक्तः	मनु २.१९४
आसामन्यतमांगच्छेद	वृ हा ६.१८६	आस्ये आहवनीयोऽग्नि	ब्र.या.२.१६८
आसामन्यतमां गत्वा	नारद १३.७५	आस्वेव तु भुजिष्यासु	नारद १३.७९
आसां तत्प्रभृति स्त्रीणां	वृ परा ८.३२०	आहरेत् त्रीणि वा देवा	मनु ११.१३
आसां महर्षिचर्याणां	मनु ६.३२	आहरेद्यावन्दयानि	औ ३.१९
आसां यताक्रमेणैव	भार १९.१४	आहरेद्विधिवद्भारान् अग्नीं	लोहि १६२
आसीतामरणात्क्षान्ता	मनु ५.१.५८	आहरेन् मृत्तिकां विप्रं	वा १.६.१५
आसीदिदं तमोभूतं	मनु १.५	आहर्तैवाभियुक्तः सन्नर्थ	नारद २.७८
आसीनं च तिष्ठं	व १.७.९	आहवेषु मिथोऽन्योन्यं	मनु ७.८९
आसीनं दक्षिणे वापि	ब्र.या. ८.३०	आहारनिर्हार विहार	व १.६.९
आसीनश्च जपं कुर्यात्	व २.३.१३५	आहारज्जायते व्याधि	यम ७७
आसीनस्त्वासनेशुद्धे	ल व्यास २.६८	आहितस्य कथं वाऽपि	बृ.गौ.१५.५
आसीनस्य स्थितः कुर्याद्	मनु २.१९६	आहिताग्निन्नमत्यूर्ध्वं	बृ.गौ.१५.३
आसीनस्यान्तिके स्नातं	आश्व १०.५	आहिताग्निर्द्विजः कश्चित्	पराशर ५.१३
आसीनायाः शिरः स्पृष्ट्वा	आश्व ३.५	आहिताग्निश्चेत प्रवसन्	व १.४.३०
आसीनैव यदा किञ्चित्	वृ परा ३.७	आहिताग्निसहस्रस्य	वृ.गौ.७.२३
आसीमांतेन पूर्वेण	व्या ९४	आहिताग्निस्तथैकाग्नि	आश्व १.५२
आसु पुत्रास्तु ये जाता	वृ परा ७.३७२	आहिताग्निस्तु योविप्रः	आंठ ८.१
आसुरं स्याद्विदग्धं पदं	शाण्डि ३.११८	आहिताग्निस्तु यो विप्र	बृ.गौ.१४.१९
आसुरि कपिलश्चैव	वृ परा २.१७३	आहिताग्निस्तु यो विप्र	शंखलि १८
आसुरेण तु पात्रेण	कात्या १७.९	आहिताग्निस्तु यो विप्र	शंखलि १९
आसुरेयाः पाशुपता	बृह १२.११	आहिताग्निस्त्रिरात्रेण	आंठ ९.३
आसुरो दविणादनाद्	या १.६१	आहिताग्नेः पूर्वमेव	कण्व २८८

आहिताग्नेरग्निहोत्रं	कण्व २८९	इच्छन्ति के चिदैणेय	आश्व १०.११
आहिताग्ने रूपस्थानं	औ ९.८५	इच्छन्ति त्वेत्य ध्यानेन	वृ हा ६.४७
आहिताग्ने स्त्रियं हत्वा	शंख १७.६	इच्छन्ति पितरः पुत्रान्	नारद २.५
आहिताग्नौ ससन्ताने	वृ परा १०.१४१	इच्छन्तीमिच्छते प्राहुः	नारद १३.४२
आहित्याग्निस्तु यो विप्रः	आप ८.९	इच्छयाऽन्योसंयोगः	मनु ३.३२
आहुतन्तु भवेदन्तं प्रहुतं	वृ.गौ. ८.१३	इच्छातृप्तेषु विप्रेषु	आश्व २३.६८
आहुताः परिसंख्याय	कात्या १८.९	इज्यते यत् समुद्दिश्य	वृ हा ५.८
आहुत्याप्यायते सूर्यः	या ३.७१	इज्याङ्गमेवमेवाद्यैस्संस्कृतं	शाण्डि ३.८५
आहुतश्चाप्यधीयीत	ब्र.या. ८.५९	इज्याचारदमाहिंसा	या १.८
आहुतश्चाप्यधीयीत	या १.२७	इज्याध्ययनदानानि	पु ९
आहुताध्यायी सर्व	व १.७.१०	इज्याध्ययन दानानि	या १.११८
आहुय दीयते कन्या सा	व २.४.१२	इज्याचारो दमोऽहिंसा	बृह ११.३४
आहुय प्रणतं शिष्यं	वृ हा २.१४८	इज्यामध्ये तथा होमे	शाण्डि ४.४६
आहुय योऽग्नि नियतं	बृ.गौ. १५.२८	इडासि मैत्रीवरुणी	ब्र.या. ८.३२५
आहुय शीलसम्पन्नं	संवर्त ५०	इडासुषुम्णे द्वे नाड्यौ	बृह ९.९६
आहुय साक्षिणं पृच्छेन्	नारद २.१७७	इतरत्र दतर्धवाशौ	व २.६.१६
आहुयालङ्कृतांदद्यात्	ब्र.या. ८.१७०	इतरदितरस्मिन् कुर्वन्	बौधा १.१.२३
आहताया मृदापश्चात्	भार ३.४	इतरदभुक्ति जातं वा	भार ११.१०७
आहतास्तेयतस्तमस्मा	भार १५.९७	इतरानपि सख्यादीन्	मनु ३.११३
आहृत्य पूजयेत्तैर्यः	भार १४.२७	इतरे कृतवन्तस्तु	मनु ९.२४२
आहृत्य प्रणवेनैव लघु	यम ७३	इतरेण तु पात्रेण दीयमानं	अत्रिस १५३
आहृत्याम्बु पवित्रेण कृत्वा	शाण्डि २.४२	इतरेण निधौ लब्धे	या २.३६
आ हैव स नखग्रेभ्यः	मनु २.१६७	इतरेषा महोरात्रं	पराशर १०.४०
आह्लादकारणं स्नानं	वृ परा २.२२६	इतरेषा तु पण्यानां	मनु १०.९३
इ		इतरेषां नुवतां स्त्रीधर्मो	व २.५.७५
इक्षु दण्डानि रम्याणि	वृ हा ५.५३०	इतरेषु तु शिष्टेषु	मनु ३.४१
इक्षुः पयो घृतं	ब्र.या. ४.९३	इतरेषु त्वपाक्त्येषु	मनु ३.१८२
इक्षुयाष्टिमया पादाः	वृ परा १०.७८	इतरेषु ससन्ध्येषु	मनु १.७०
इक्षुरापः पयोमूलं	व्या २०७	इतरेष्वगमादद्धर्मः	मनु १.८२
इक्षूनपः फलं मूलं	वाधू १८८	इति उग्रहयोगेन वेदि	शाण्डि ४.८
इक्षुन् य पीडयेत्तस्मादि	बृ.गौ. १३.३३	इति एवं कथिनो देवो	वृ गौ १.११
इक्षोर्विकारहारी च	शाता ४.११	इति चिन्त्य महात्मानः	नारा ७.१५
इक्षुंभिर्गुडजानुश्च	वृ परा १०.११४	इति चोवाच लोकेशं	आंपू ५८८
इक्षुं कुणा तथा चान्यैः	वृ परा १०.४२	इति ज्ञात्वा द्विजः सम्यग्	वृ परा ४.२५
इच्छतउदकपूर्व	व १.१.३०	इति तप्त कृच्छ्रः	व १.२१.२३

इति त्रिदेवता योगात्	वृ परा १२.२३६	इत्थं संचिन्त्य	वृ हा ३.११४
इति त्रिरञ्जलिं दत्त्वा	विश्वा १.८५	इत्यत्र विदमानौऽग्नि	लोहि ३
इति पृष्ठो ब्रह्मनिष्ठ इदं	कण्व ६	इत्यन्यैः भुनिभि प्रोक्तं	वृ परा १०.३१२
इति ब्राह्मणपादेषु	आंपू ८८६	इत्यर्थिने समभ्यर्च्य	ब्र.या. ८.१७३
इति ब्रुवन्तः तेदूताः	वृ गौ. ५.५८	इत्यष्टावाहुतीर्हुत्वा	कात्या २०.१७
इति यज्ञोपवीतस्ये	भार १७.१	इत्यादि दुर्वचो हित्वा	शाण्डि १.२१
इति यासा समुहती	कण्व ६९८	इत्यादिना क्रमेणैव	शाता २.४०
इति योगेश्वरेणोक्त	वृ हा ६.२२४	इत्यादि भूमिदानस्य	वृ परा १०.१८६
इति वा निर्वपेच्छांश्च	वृ परा ७.३४	इत्यादि श्रुतयो भेदं	वृ हा ३.७७
इति वामनमंत्रस्य	वृ हा ३.३७९	इत्याहुः केचनाचार्या	कण्व ४४२
इति वृष्टो पृष्ठो भरद्वाज	भार १.८	इत्याहुतीश्चतस्रस्तु	वृ परा ४.१७४
इति वेद पवित्राण्य	शंख १२.१	इत्युक्तगुणसम्पन्नान्	वृ परा ७.२६
इति व्यास कृतं शास्त्र	व्यास ४.१	इत्युक्तस्तु ततो भूयः	आंपू ८.९६
इति श्राद्धे क्रतुदक्षौ	प्रजा १७९	इत्युक्त्वा गुरवः सर्वे	औ १.२९
इति श्वमार्जानुकुल	व १.२१.२७	इत्युक्त्वा चरता धर्म	बा १.६०
इति संश्रुत्य गच्छेयु	या ३.१२	इत्युक्त्वा तु प्रिया वाच	या १.२४७
इति संचिन्त्य नृपति	या १.३६०	इत्युक्त्वा भगवान् विष्णु	वृ हा ८.१९०
इति (शास्त्र) समाचोत्य	कपिल १०७	इत्युक्ते चेन्मामकानां	लोहि ५३५
इति संपूर्णतां याति	वृ हा ६.७८	इत्युक्ते चेन्मामकानां	लोहि ५३६
इति संप्रार्थ्य तेषां वै	कपिल ३९४	इत्येतेऽदायदा बांधवा	व १.१७.२७
इति सुशिवतौमे	व २.४.१२०	इत्येते दायदा बान्धवा	व १.१७.३६
इति सूक्तेन गायत्र्या	व २.३.१२	इत्युक्तो गुणसंपन्नान्	व्या २७८
इति हासपुराणञ्च गाथा	वृ.गौ. १५.५४	इत्युक्त्वा तेन मन्त्रेण	वृ.गौ. १३.२६
इति हासपुराणं वा	वृ.गौ. ८.६९	इत्युक्तानेन गायत्रिं	भार ६.११४
इति हासपुराणां वा	वृ हा ५.२८७	इत्युक्त्वापो नमस्कृत्या	बृ.या. ७.१०५
इति हासपुराणाद्यै	व २.७.४४	इत्युच्चार्य विष्टज्यैनं	शाता २.१९
इति हासपुराणानां	भार ४.२७	इत्युदीर्य्य प्रणम्याथ	शाता २.२५
इति हासपुराणानां	व २.६.२५३	इत्युदीर्य्य मुहुर्भक्त्या	शाता २.१२
इति हासपुराणानां	व्यास ३.१०	इत्युद्वास्य तु तान्	आंपू ८९५
इति हासपुराणानि	व २.६.२१९	इत्येतत् कथितं पूर्वं	अत्रि स ११४
इति हासपुराणानि	भार १३.१६	इत्ये तत्तप्तो देवा	मनु ११.२४५
इति हासपुराणाभ्यां	अत्रि ३.७	इत्येतत्तद्ब्रह्मणाप्रोक्तं	का ५
इति हासपुराणाभ्यां	व १.२७.६	इत्येतदेन सामुक्तं	मनु ११.२४८
इति हासपुराणाभ्यां	लोहि ७२१	इत्येतद् ध्यानमार्गं	वृ परा १२.३१८
इत्थं कुर्वीत सदा शूद्रो	ल हा २.१४	इत्येतन्मानवं शास्त्रं	मनु १२.१२६

इत्येतौ कथितौ हस्तौ	भार २.६२	इदं रहस्यं कौन्तेय	वृ.गौ. १.३८
इत्येव मखिलं प्रोक्त	ल व्यास २.९०	इदं विष्णुरेनाने	आश्व २३.५६
इत्येवमतिदैनवेन	आंपू ५७१	इदं विष्णुरिति ह्येतं	वृ परा ७.२५५
इत्येव मुक्तो विधिवज्जपः	भार ६.२०	इदं विष्णुर्महा इन्द्र	ब्र.या. १०.९३
इत्येव मुक्त्वा कर्तव्य	शंख ९.८	इदं विष्णुर्महा इन्द्र	ब्र.या. १०.६८
इत्येवमुक्त्वोपस्थाय	भार ६.१२०	इदं विष्णुर्व्याहृतीर्वा	आंपू ८३६
इत्येवं केचन प्राहुराचार्या	लोहि १.४९	इदं विष्णुर्व्याहृतोश्च	कण्व ६.४७
इत्येवं धर्मतः प्रोचुः	कपिल ६.५०	इदं व्यासमतं नित्य	व्यास ४.७२
इत्येवं प्रजपेद्भक्त्या	कण्व १.८७	इदं शरणमज्ञामिदमेव	मनु ६.८४
इत्येवं मार्जनं कृत्वा	विश्वा ४.२६	इदं शास्त्रज्ञं गुह्यज्ञं	कात्या ४.१२
इत्येष धर्म कथितो	ल हा १.३१	इदं शास्त्रमधीयानो	मनु १.१०.४
इत्येषाद्विजवर्णानां विद्या	विश्वा १.२९	इदं शास्त्रं तु कृत्वाऽसौ	मनु १.५८
इत्यौपनिषदं ह्यर्थ	वृ हा ३.६१	इदं सदागमाख्यातु वेद	शाण्डि ५.८०
इदञ्च मम संप्रश्नं	वृ.गौ. १.८.४६	इदं समस्तं सृतिमि	भार ६.१४२
इदन्तु परमं शुद्धं	शंख ७.२९	इदं स्तानंतु सर्वेषां	भार ५.४९
इदन्तु यः पठेद्भक्त्या	दक्ष ७.५३	इदं हि मानसंस्कारं	भार ५.५०
इदन्त्वदुत्तर इति	वृ हा ८.४२	इदं हेयमिदं हेयमुपादेय	शाण्डि १.४३
इद मापउदुत्त ममित्येतन्मु	वृ.या. ७.१९	इदानी महमीर्ष्यामि	बौधा २.२.३९
इदमापः प्रवहत	ल व्यास २.२०	इदं ग्विधां च तां कुर्यात्	वृ परा १०.५९
इदमापः प्रवहतामापो	ब्र.या. २.२०	इध्मजातीयमिध्मार्द्धं	कात्या १५.१४
इदमापः प्रवहते	शंख ९.९	इध्माधानाज्य भागौ	व २.६.३५६
इदमापस्समारभ्य ऋषभं	विश्वा ४.२४	इध्मोऽप्येधार्थमाचार्ये	कात्या ८.२२
इमावर्तमानस्तु श्राद्धे	वृ.गौ. १०.१४	इन्दीवरदलश्यामं	वृ हा ७.७६
इदमेव तु सच्छास्त्रमयं	शाण्डि १.४१	इन्दुक्षयः पिता ज्ञेय	व्यास ४.३१
इदमेव महाराज	विष्णु म ४	इन्द्र-अग्नि-यम-वित्तेशा	वृ परा १२.३
इदं कृत्यमिदं कार्यमिदं	लोहि ५.९९	इन्द्र आसां सुराचार्य	वृ परा ११.६२
इदं तस्योत्तरं ज्ञेयं यतोमूलो	कपिल १.३७	इन्द्रनीलकण्ठारादय	विष्णु १.३८
इदं तु वृत्रिवैकल्यात्	मनु १०.८५	इन्द्र चापेक्षणं रात्रौ	वृ परा ११.१०१
इदं दाल्भ्यकृतं शास्त्र	दा १.६७	इन्द्रनीलनिभश्चक्र	वृ हा २.८९
इदं पठति यः पुण्यं	वृ.गौ. १०.१२	इन्द्रप्रयागं सुरतं	शंख ३.६
इदं पवित्रं पूर्वोक्ता	भार १.८.६६	इन्द्रमेव धीषणेति ऋचा	वृ हा ८.४५
इदं प्रसंगेणोक्तं स्याद्	वृ हा ७.२७	इन्द्रश्च विश्वेदेवाश्च	वृ परा २.६४
इदं मे मानुषं जन्म	वृ.गौ. १.४०	इन्द्रश्च विश्वेदेवाश्च	वृ.या. ३.१५
इदं मे तत्त्वतो देव	वृ.गौ. ११.१	इन्द्रसोमं सोमपतेरिति	वृ हा ६.४०६
इदं यशस्यमायुष्यमिदं	मनु १.१०६	इन्द्रस्यार्कस्य बावोश्च	मनु १.३०३

इन्द्र सोमं च रुद्र	व २.६.३५७	इमं मंत्र समुच्चार्य	शाता ५.१४
इन्द्राग्निसमवर्ति च	भार ११.६२	इमं मंत्र समुच्चार्य	शाता ५.२१
इन्द्रादिभ्यस्तताऽन्येभ्य	वृ परा ६.७९	इमं मंत्र समुच्चार्य	शाता २.२८
इन्द्रान इति यः पादं	बृ.गौ. २०.४५	इमं मे गंगेति ऋचा	वृ हा ८.१२
इन्द्रानिलयमार्काणां	मनु ७.४	इमं मे. त्वन्नः सत्त्वन्न	वृ परा ११.२२४
इन्द्राय सोमसूक्तेन	आंपू ९६२	इमं मे वरुणत्यृचा	वृ हा ८.१५
इन्द्राय सोमसूक्तेन	आंपू ९६३	इमंमे वरुणं चैव	ब्र.या. १०.१०४
इन्द्रिय निग्रह वर्णन	विष्णु ७२	इमं मे वरुण तत्त्वा	बौधा २.४.१२
इन्द्रियभ्रमहीनानाम	शाण्डि ४.२२१	इमं मे वरुणं पूज्य	ब्र.या. २.११०
इन्द्रियाणां जये योगं	मनु ७.४४	इमं योविधिमास्थाय	ल हा ३.१४
इन्द्रियाणां तु सर्वेषां	मनु २.९९	इमं लक्ष्मीनृसिंहस्यं	वृ हा ३.३६०
इन्द्रियाणां तु सर्वेषां	बृ.गौ. ८.५२	इमं लोकं मातृभक्त्या	मनु २.२३३
इन्द्रियाणां निरोधेन	मनु ६.६०	इमं मेगङ्गा इत्युक्त्वा	वाधू ८४
इन्द्रियाणां प्रसंगेन	मनु २.९३	इमं यज्ञ तमोवोचुर्यु	कण्व ३७७
इन्द्रियाणां प्रसंगेन	मनु १२.५२	इमंविधिदारयितुं यो	भार ६.१७३
इन्द्रियाणां मनोनातो	ब्र.या. ३.१७	इमं हि सर्ववर्णीनां	मनु ९.६
इन्द्रियाणां विचरतां	मनु २.८८	इमान् कृत्वा कलियुगे	नारा ७.३२
इन्द्रियाणि गुणान्यातु	विष्णु म ६७	इमान्तु वैभवीमिष्टं	वृ हा ७.१५०
इन्द्रियाणि मनः प्राणो	या ३.७३	इमान्नारायणेष्टिञ्च	वृ हा ७.६७
इन्द्रियाणि यशः स्वर्गमायुः	मनु ११.४०	इमान्नित्यमनध्यायान	मनु ४.१०१
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थाश्च	बृ ह ९.१८३	इमां तु वैष्णवी मिष्टि	वृ हा ७.१०४
इन्द्रियाणि वशीकृत्य	व्यास ४.१३	इमां पादमी शुभामिष्टि	वृ हा ७.२३३
इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु	मनु ४.१६	इमां रहस्यां परमामनुस्मृति	विष्णु म ११२
इन्द्रियैरिन्द्रियार्थैश्च	बृ.या. २.१०९	इयमाभवनं भार्या	वृ परा ६.१८२
इन्देशानयोर्मध्ये	ब्र.या. १०.१०८	इयमित्येव ये दुष्टा तान्	लोहि ७१८
इन्द्रोऽग्नियमानैऋत्यां	ब्र.या. १०.१००	इयं भूमिर्हि भूतानां	मनु ९.३७
इन्द्रो धाताभगः पूषा	वृ परा २.१९२	इयं रण्डाप्यरण्डेव ज्ञात्री	लोहि ६०२
इन्द्रानानि च योदद्यादि	संवर्त ६०	इयं विशुद्धिरुदिता	मनु ११.९०
इन्द्रनार्थं दुमच्छेद	या ३.२४०	इवमेव परं मोक्ष	वृ हा ७.३३६
इन्द्रनार्थं दुमच्छेद	वृ हा ६.२०३	इशानं धान्यमध्ये	ब्र.या. १०.१०३
इन्द्रनार्थमशुष्काणां	मनु ११.६५	इष इत्यादिभिमंत्रै	आश्व १५.४५
इममेव जपेन् मंत्र	वृहा ३.२३७	इषणात्रयकृष्णाहि	वृ हा ४.६
इमं पुण्यं प्रशस्तं च	वृ परा ११.२३७	इषेत्वादिषु मंत्रेषु	वृ परा ११.१०९
इमं मंत्र सकृज्जप्त्वा	विश्वा ६.३१	इष्टकादशकं वाऽपि	वृ परा १०.३६३
इमं मंत्र समुच्चार्य	शाता ५.७	इष्टकालोष्टपाषाणैर्न	विश्वा १.६१

इष्टतः स्वामिनश्चांगै	नारद ६.७	इह जन्मनि शूद्रत्वं	व्यास ४.६८
इष्टः त्वमसि मे त्यक्तुम्	वृ.गौ. १.३९	इह तं चापि पुरुषम्	वृ.गौ. ३.६६
इष्टमध्येऽग्निहोत्र	कण्व ३२६	इह दुश्चरितैः केचित्	मनु ११.४८
इष्टं पूर्तं प्रकर्तव्यं	अत्रिस ४५	इह प्रिय जपेन्मन्त्र	व २.४.७५
इष्टापूर्तं तु कर्तव्य	लघुयम ६८	इह मानुष्यके राजन्	वृ.गौ. २.२८
इष्टापूर्तस्य तु षष्ठमंशं	व १.१.४५	इह मानुष्यके लोके	वृ.गौ. ७.१०४
इष्टापूर्तं तु कर्तव्ये	लिखित १	इह मानुष्यके लोके	वृ.गौ. १५.९३
इष्टापूर्तं द्विजातीनां	लघुशंख ६	इह ये धार्मिका लोके	वृ.गौ. ५.६२
इष्टापूर्तं द्विजातीनां	लिखित ६	इह यो गोबधं कृत्वा	पराशर ९.६०
इष्टापूर्तो तथा विद्वन्	वृ.परा १.५८	इह लोके भवेच्छापैः	वृ.गौ. ६.१३०
इष्टापूर्तो तु कर्तव्यो	दा ५	इहलोके भवेद्विप्रो	वृ.गौ. ७.४९
इष्टापूर्तो कर्तव्यो	लघुशंख १	इहलोके सुखी भूत्वा	भार ७.१०७
इष्टापूर्तो द्विजातीनां	दा १०	इह लौकिक ऐश्वर्यं	वृ.हा ३.४७
इष्टापूर्तो द्विजातीनां	अत्रिस ४६	इहापि पूर्ववत् कुर्याद्	आश्व १५.२९
इष्टापूर्तो फलोपेतौ	वृ.परा १०.१३	इहैव भूमिदानस्य	वृ.परा १०.१८३
इष्ट्यभावेऽपितत्कर्म	कण्व ३०८	इहैव सक्षणाद्धेन	अ ५८
इष्ट्य स्युस्ततः सर्वा	कण्व ५३०	इहैवेति पठेन् मंत्र	आश्व २३.१०१
इष्टिभि पशुबन्धैश्च	व्यास ४.४४	इहोपनयनं वेदान्योऽध्या	वृ.गौ. १४.५९
इष्टिं च वैष्णवोऽकुर्यान्ते	व २.६.३९७	इहोपरि सुखं प्राप्य	भार १६.६१
इष्टिं वैश्वानरी कुर्यात्	शंख ५.१६		
इष्टिं वैश्वानरी कृत्वा	लता ६.४		
इष्टिं वैश्वानरी नित्यं	मनु ११.२७		
इष्टिश्राद्ध क्रतुर्दक्षो	लिखित ५१		
इष्टे गृहसमायाते	प्रजा ३३		
इष्टो वा यदि वा मूर्खो	शंखलि ६		
इष्ट्यश्च विविधाः	वृ.परा १०.३६०		
इष्ट्याऽनया पूजितेशे	वृ.हा ७.१८३		
इष्ट्वा क्रतुशतं राजा	वृहस्पति १		
इष्ट्वा क्रतुशतैरेवं देवराजो	अत्रि ६.१		
इष्ट्वैवेष्ट्याः फलं	वृ.हा ७.१६८		
इष्ट्यते संम्यगान्तं	कण्व ७७८		
इह कर्मप्रभोगाय तै	वृ.ह ९.१७१		
इह क्लेशाय महते	वाधू १९५		
इहगावो निषीदन्तु मंत्रोऽयं	ब्र.या. ८.२३८		
इह चाभुज वा काम्यं	मनु १२.८९		
		ई	
		ईक्षयेद् बटुरादित्यं	आश्व १०.२१
		ईज्जुर्यानिमिसंस्यात्	भार २.३४
		ईडा च पिंगला चैव	वृ.परा ६.९८
		ईदृश्याय सुरश्रेष्ठ	वृहस्पति ५८
		ईर्ष्यापण्डश्च सेव्यश्च	नारद १३.१३
		ईर्ष्यापण्डादयो ये न्ये	नारद १३.१५
		ईर्ष्यासूयासमुत्थे तु	नारद १३.९१
		ईशानकोणतः सूत्रे	आश्व १५.३०
		ईशानादिपदं स्तुत्वा	आश्व २३.६३
		ईशानाभिमुखो भूत्वा	विश्व १.६०
		ईशानेन तु मंत्रेण	भार ५.३४
		ईशाने नाथ वा रुद्रैः व	व्यास २.४६
		ईशान्यादि चतुर्दिक्षु	नारा ५.३६
		ईशान्याभिमुखो भूत्वा	वृ.परा २३०
		ईशान्यां त्वाचमेत्यकर्ता	आश्व २३.१४

ईशो दण्डस्य वरुणो
ईश्वरं पुरुषाख्यं तु
ईश्वरस्तु स एवान्ये
ईश्वरस्यात्मनश्चापि
ईश्वर्या च समासीनं
ईषद्भानानि चान्यानि
ईषद्धौतं नवं श्वेतं
ईषायां तु रथो क्षे वा

मनु १.२४५
बृह १.२३
वृ ता १.९
वृ ता ४.२२३
वृ ता ७.१७४
दक्ष ३.६
वृ ता ६.१०१
वृ परा १०.३३०

उ

उक्तकाले तु यत्कर्म
उक्तधर्म परित्यज्य
उक्तः पञ्च विधो धर्म
उक्तप्रायं विजानीयाद्या
उक्तमुद्देशतो ह्येतद्
उक्तलक्षणकन्यायाः
उक्तः सन् कारयेद्
उक्तस्तु संयमः पूर्व
उक्तं कर्म याथाकाले
उक्तं प्रोक्तं प्रगीतं
उक्तं शौचमशौचञ्च
उक्तं श्रुत्वावंचः पुण्य
उक्तानि सर्वदानानि
उक्तालाभेषु सर्वेषां
उक्ता नमा निष्कृतयः
उक्तामर्मगतं वाक्यं
उक्तिरावश्यकी नेति संकल्पे
उक्तिरेव समाख्याता
उक्तेऽपि साक्षिभि साक्ष्ये
उक्तोऽधोर्ध्वं विभागेन
उक्तो गृहस्थस्य
उक्त्वा चैवानृतं साक्ष्ये
उक्त्वा पित्रादि संबंधं
उक्त्वेदं परिषिञ्चामि
उक्षाणो वेधसा सृष्टा
उख्यानुरणं यत्

विश्वा १.८
वृ हा ५.२०
पु २७
आंपू १३८
वृ परा ३.३३
वृ परा ६.३९
वृ परा १२.१५६
वृ परा १२.२५५
आश्व १.१३८
कपिल ५०४
दक्ष ५.१
वृ.गौ. १०.१
वृ परा १०.३८६
वृ हा ५.४७
वृ हा ८.३४२
शाण्डि २.५६
कण्व ६५
कण्व ११३
या २.८२
वृ परा २.५७
वृ परा ४.१५३
मनु ११.८९
आश्व १.१०१
आश्व १.५५
वृ परा ५.४४
कण्व ३४७

उग्रगन्धान्यगन्धानि
उग्रः पारशवश्चैव
उग्राज्जातः क्षत्र्यां
उग्राद् द्वितीयायां
उचयोः शाखयोर्मुक्तं
उच्चरन्म्रणवं पूर्वं
उच्चारं घ्नसनं कुर्वन्
उच्चार्य्य ग्रामगोत्रे
उच्चार्य्य नामगोत्रे
उच्चार्य्य प्रणवं चाऽऽदौ
उच्चार्यमाणः सर्वत्र
उच्चावचेषु भूतेषु
उच्चिष्टमितस्त्रीणां
उच्चैः संभाषणं हस्त
उच्चैस्स्वरेण योगान्ते
उच्चोर्स्कवऽनत्याश्च
उच्छिन्नशाखा याः काश्चित्
उच्छिष्टजनसंस्पृष्टः
उच्छिष्टन्तु मदादद्या
उच्छिष्टन्तु यदादद्या
उच्छिष्टपात्रं तमभि
उच्छिष्टपुरतो भूमौ
उच्छिष्ट भाजनं येन
उच्छिष्टभोजनश्च
उच्छिष्टमगुरोभोज्यं
उच्छिष्टमन्नं दातव्यं
उच्छिष्टमशुचित्वंच
उच्छिष्ट माज्जीनं
उच्छिष्टमाज्जीनं चव
उच्छिष्टमिष्टोपहतामित्ये
उच्छिष्टं च पदास्पृष्टं
उच्छिष्टं तं द्विवं यस्तु
उच्छिष्टं वैश्यजातीनां
उच्छिष्ट लेपो पहतानां
उच्छिष्ट लेपो पहतानां

शंख १४.१५
नारद १३.१०७
बौधा १.९.१२
बौधा १.८.१०
व १.११.२२
भार १५.६९
शाण्डि १.३७
व.२.४.३८
व २.६.३४०
आश्व १०.३२
वृ.या. २.११६
मनु ६.७३
आप ५.८
आंपू १०२७
शाण्डि २.३
वृ परा ६.१७१
बृह १२.२६
भार १८.३८
ब्र.या. ४.११५
ब्र.या. ४.११६
व २.३.१२७
आश्व २३.७१
वृ.य. ३.४५
कण्व ४५७
व १.१४.१७
मनु १०.१२५
आप २.६
ब्र.या. ४.१४८
देवल १८
बृह १.१४०
वृ परा ६.३१५
बृ.य. ३.४१
आप ५.६
बौधा १.६.२८
बौधा १.६.३५

उच्छिष्टवर्जनं तत् पुत्रे	बौधा १.३५	उच्छेषणं तु नोत्तिष्ठेद्	लिखित ४०
उच्छिष्टशवचाण्डालनखं	व्या १.९१	उच्छेषणं भूमिगतं	व १.११.२१
उच्छिष्टः शूद्रसंस्पृष्टः	पृ परा ८.२५८	उच्छेषणं भूमिगतं	मनु ३.२.४६
उच्छिष्टसंनिधौ कार्यं	शंख १.४.११	उच्यते सहि विप्रस्य	वृ.गौ.१.१.३
उच्छिष्टस्तु यदा विप्रः	आप ७.१६	उच्यन्ते चनिदानानि	शाता १.११
उच्छिष्टस्पर्शने चैव	आश्व १.१६४	उतासितं भवेत् सर्व	बृ.या.४.७१
उच्छिष्टस्पर्शने चैव	आश्व १.१६८	उत्कर आग्नीध्रस्य	बौधा १.७.२३
उच्छिष्टः पर्शति विप्रो	आप ५.११	उत्कीर्णं इव माणिक्यो	शाण्डि ४.१.९६
उच्छिष्टस्पर्शने ज्ञात्वा	आंपू ९८५	उत्कृष्टं चापकृष्टं च	नारद २.५४
उच्छिष्टस्य विसर्गार्थं	वृ परा ७.३२६	उत्कृष्टायाभिरूपाय	मनु ९.८८
उच्छिष्टिनं स्पृशन्	वृ हा ६.३५८	उत्कोच काश्चोपधिका	मनु ९.२५८
उच्छिष्टेन च संस्पृष्टा	लघुयम १४	उत्कोचजीविनो द्रव्यहीनान्	या १.३३९
अच्छिष्टेन चिरकालं	वृ हा ६.३६१	उत्क्रम्य तु वृत्तिं यत्र	नारद १२.२५
उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टा	आप ७.१२	उत्क्रोशतां जनानां	नारद १५.१९
उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टो	अत्रि स २८३	उत्तप्रमाणं सुस्मिग्धं	भार ११.१
उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टो	आंपू ९५४	उत्तमः कथितस्याद्भिः	लोहि ५६०
उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टो	मनु ५.१.४३	उत्तमः पितृकृत्येषु	आंपू ४६०
उच्छिष्टेन पुरीषेण तथा	कपिल ८५४	उत्तमस्त्वायुधीयोऽत्र	नारद ६.२१
उच्छिष्टेन स्पर्शने कृत्वा	वृ हा ६.३५५	उत्तमस्य तु भागस्य	भार १७.१२
उच्छिष्टेऽपि च ये युक्ताः	भार १८.४१	उत्तमं कीदृशं दानम्	वृ.गौ.३.६
उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पर्शं	आंपू ९६१	उत्तमं त्रिगुणं प्रोक्तं	विश्वा ३.१.४
उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टः	आप ९.३२	उत्तमं नवधा चैव	विश्वा ३.३
उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्ट	बृ.य. ३.४४	उत्तमं मध्यमनीचं	भार २.५०
उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टः	बृ.य. ३.४७	उत्तमागमनेऽनार्याः सर्वे	वृ परा ८.२.४५
उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टः	पराशर ७.२१	उत्तमांगोद्भवभाज्येयेष्ट्याद्	मनु १.९३
उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टः	यम ४१	उत्तमा तारकोपेता मध्यमा	विश्वा १.२२
उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टो	बृ.य. ३.४६	उत्तमाधममध्यानाम	बृ.या.७.५
उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टो	लिखित ७८	उत्तमानुत्तमान् गच्छन्	मनु ४.२.४५
उच्छिष्टो ब्राह्मणः स्पृष्ट	वृ परा ८.२५५	उत्तमा पूर्वसूर्या च	विश्वा १.२३
उच्छिष्टो ब्राह्मणः स्पृष्टो	वृ परा ८.२३२	उत्तमामध्यमानी च	भार १५.१.४४
उच्छिष्टो यदि नाचान्त	औ १.७५	उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा	विश्वा १.२४
उच्छिष्टेर्षके श्रियै कुर्याद्	मनु ३.८९	उत्तमास्वैरिणीनां या	नारद २.२१
उच्छेदभीतिमध्यहे	वाधू १३१	उत्तमां सेवमानस्तु	मनु ८.३६६
उच्छेदस्तस्यविस्तारं	भार १५.३३	उत्तमैरुत्तमैर्नित्यं	मनु ४.२.४४
उच्छेषणं तु तात् तिष्ठद्	मनु ३.२६५	उत्तरत उपचोरा	बौधा १.७१

उत्तरत उपचारो विहारः	बौधा १.१२.७	उत्थायातान्द्रि शौचं	वृ हा ४.१५
उत्तरत्र तदर्द्धञ्च	व २.६.१७	उत्थायापररात्रमधीत्य	व .१.१२.४४
उत्तरं वासः कर्तव्यं	बौधा २.३.६६	त्थायार्कं प्रतिप्रोहेत	कात्या ११.१०
उत्तराचमनं पीत्वा	आश्व १.१६०	उत्थायावश्यकं कृत्वा	मनु ४.९३
उत्तराचमनं पीत्वा	आश्व १.५.१४	उत्थायोपासेत्संध्यां	वृ परा २.१६
उत्तराचमानात्पूर्वं	आश्व २३.७२	उत्पत्तिं प्रलयश्चैव	दक्ष १.२
उत्तरारणिनिष्पन्नः	कात्या ७.१३	उत्पत्तिरेव विप्रस्य	मनु १.९८
उत्तरां शेषिमुत्तरेण	बौधा १.७.२२	उत्पत्तिस्थितिसंहार	भार ६.४
उत्तरीयं विना नैव	वृ परा ६.२७१	उत्पद्येत गृहे यस्य	मनु ९.१७०
उत्तरीयं समाख्यातं	औ १.९	उत्पद्यते त्रिपादायाः	वृ परा ४.५
उत्तरीमाभावे च वस्त्र	व्या ११३	उत्पद्यन्ते विनश्यन्ति	मनु १२.९६
उत्तरेण चतुःकोटि रीशाने	ब्र.या. १०.१३९	उत्पन्नमातुरे स्नानं	वृ परा ८.३०५
उत्तरे वोद्धेतस्चैव अवेक्ष्ये	ब्र.या. ८.३२०	उत्पन्नमेतत्तु यतः	वृ परा ३.३१
उत्तरेषामुत्तरोत्तरः	बौधा १.११.१२	उत्पन्नवैराग्यवलेन	ल हा ७.२१
उत्तरोत्तरदानेन	कात्या ४.१	उत्पादकब्रह्माद्रो	मनु २.१४६
उत्तानं किञ्चिदुन्नाम्य	बृह ९.१८९	उत्पादनमपत्यस्य	मनु ९.२७
उत्तानं वा विवर्तं वा	औ ३.१२७	उत्पादयति यत्पुत्र शूद्रायां	बृ.गौ. १.९.३८
उत्तानौ तु यौश्चैव	ब्र.या. २.७७	उत्पादयन्ति सस्यानि	वृ परा ५.५०
उत्तारका व्याहृतयो	आंपू १५	उत्पादयन्नरक्तं च न	शाण्डि २.२०
उत्तरितास्सद्य एव	लोहि २२२	उत्पाद्यन्ते व्ययन्ते	बृह १२.२३
उत्तरेणार्द्धचैव कुर्यात्	व २.३.६३	उत्पाद्यपूर्वकमिमान	वृ परा ७.१८१
उत्तार्य स्नानवस्त्रन्तु	व २.६.१४४	उत्पाद्य शोणितं गात्राम्	बृ.गौ. ४.५२
उत्तार्यार्चम्य उदकं	आंगिरस ६०	उत्पाद्य सस्यानि तृणं	वृ परा ५.५४
उत्तिष्ठ जननाथाऽग्ने	वृ परा ६.११५	उत्पूयाऽऽज्यं पवित्रे	आश्व २.४०
उत्तीर्य च द्विराचम्य देव	वाधू ९१	उत्प्रवेपितसर्वाङ्गो भय	नारा ४.७
उत्तीर्यार्चम्य उदकाद्	आप ९.१९	उत्सर्गं च द्विजः कुर्यात्	आश्व १३.१
उत्तीर्याऽऽचम्याऽऽचान्तः	बौधा २.५.१५	उत्सर्गेऽप्येवमेवं	आश्व १२९
उत्थाने तु पुनस्तस्याः	व २.५.५	उत्सवं वासुदेवस्य	व २.६ २७६
उत्थाय नेत्रे प्रक्षाल्य	कात्या १०.३	उत्सवे वासुदेवस्य	व २.६ २७७
उत्थाय पश्चिमे यामे	व २.३.१३९	उत्पादनं च गात्राणां	मनु २.२०९
उत्थाय पश्चिमे यामे	मनु ७.१४५	उत्सादनं वै गात्राणां	औ ३.२६
उत्थाय वामहस्तेन गृहीत्वा	वाधू ११	उत्सादयन्ति विद्वांसो	अत्रि स १४५
उत्थाय सम्यगाचामेत्	व २.६.२१७	उत्साहाय्ययनंस्वान्त	वृ परा २.११६
उत्थाय हस्तौ प्रक्षाल्य	भार ११.११६	उत्सृज्य मलमूत्रेच	व २.६.१३
उत्थाय चम्य विधिवद्देवता	व २.३.१०५	उत्सृष्टा गृह्यते यद्यत्स्व	ब्र.या. ७.३४

उत्सृष्टो गृह्यते यस्तु	या २.१३५	उदक्यां सूतिकां नारीं	व्या ३६१
उदकक्रियांअशौचं	व १.४.९	उदक्यां सूतिकां वाऽपि	लघु यम ११
उदक परीक्षा वर्णनम्	विष्णु १२	उदक्यां सूतिकां वाऽपि	अत्रिस २७२
उदकस्या प्रदानात्	शंख ९.१५	उदक्यां सूतिकां विप्र	आप ७.१७
उदकं गन्ध धूपांश्च	वृ परा ७.१८९	उदगग्नेः शरावेषु	आश्व ९.४
उदकं निनयेच्छेषं	मनु ३.२१८	उदगयनं पूर्वपक्षे	व २.३.१७६
दकं पिण्डदानं च	लघुशंख ३६	उदगहि तथारात्रौ एवं	कण्व १२३
उदकांजलिनिक्षेपा	लता ४.१४	उदगादित्यं मन्त्र	बृह १०.६
उदकुम्भ कुशान पुष्पं	औ ३.८	उदगाभिमुखे चेतु तज्जलं	कण्व ८३
उकुम्भं पुरस्तास्तु	व २.४.४७	उदगतायाः संलग्नाः	कात्या ६.१०
उदकुम्भं सुमनसो	मनु २.१८२	उदग्धलेदधिस्थाप्य	भार ७.६९
उदकुम्भांश्च दत्त्वाऽथ	व २.६.३६१	उदङ्मुखः प्रसन्नः	भार ७.५७
इदकुम्भैः पवित्रान्तैः	शाण्डि ४.४८	उदङ्मुखश्चाहनि	व १.१२.११
उदके चोदकस्थस्तु	आप ९.१८	उदङ्मुखस्तु देवानां	आंपू ७८४
इदके चोदकस्थस्तु	वृ.या. ७.४७	उदङ्मुखो यथेच्छं	कण्व ९५
उदकेनापि वा कुर्याद् कपिल	१७७	उदपात्रं शिरः स्थाप्य	ब्र.या.८.३२७
उदकेनाभिमन्त्रयाथाग्न्याधानं	ब्र.या.८.२४४	उदपानोदके ग्रामे	बौधा २.३.५९
उदके मध्यरात्रे च	मनु ४.१०९	उदयादित्यं संकाशे	वृ हा ७.२२६
उदक्य ब्राह्मणी स्पृष्टा	वृ परा ८.२६१	उदयानन्तरं सूर्यो	कण्व ३२०
उदक्या दृष्टिपातेन	बृ.य. ३.५१	उदयास्तमने मध्ये	ब्र.या. ८.१३०
उदक्या ब्राह्मणी गत्वा	वृ परा ८.२३७	उदयास्तमयं यावन्	दक्ष २.२
उदक्या ब्राह्मणी शूद्रां	आप ७.१९	उदये मध्यरात्रौ च	औ ३.६६
उदक्या ब्राह्मणी स्पृष्टा	वृ परा ८.१७६	उदरस्थि शूद्रान्नो	वृ परा ६.३०८
उदक्या ब्राह्मणी स्पृष्टा	वृ परा ८.२२६	उदरे गार्हपत्योऽग्नि	वृ परा ५.४०
उदक्या ब्राह्मणी स्पृष्टा	वृ परा ८.२३१	उदरे गार्हपत्योऽग्नि	बृह ९.१२४
उदक्यायाः पति तावत्	वाधू २०९	उदात्त अनुदात्त च	वृ परा २.१५२
उदक्यावीक्षितं भुक्त्वा	शाता ३.५	उदानं च समानं च	वृ.गौ. ६.२२
उदक्याशौचिभिः	या ३.३०	उदानाय ततः कुर्यात्	औ ३.९१
उदक्या सूतिका म्लेच्छ	वृ परा ८.२६२	उदिते तस्य विप्रस्य	वृ.गौ. ८.१०५
उदक्यास्त्वासते	व १.५.१६	उदिते तु यदा सूर्ये	दा १४५
उदक्या स्पर्शने चैव	बृ.य. ३.५४	उदितेऽनुदिते चैव	मनु २.१५
उदक्या स्पर्शने स्नान	वृ परा ३१५	उदितोऽयं विस्तारशो	मनु ९.२५०
उदक्यास्पृष्ट संघुष्टं	वृ परा ६.३१४	उदित्यमिति मन्त्रेण	विश्वा ७.९
उदक्यास्पृष्टसंघुष्टं	या १.१६७	उदीयमाना भर्तारं	मनु ९.९१
उदक्यां यदि गच्छेतु	आप ९.३८	उदीरतामांगिरस	वृ परा २.१८१

उदीरतामङ्गगिरस आयं	वृ .या. ७.८३	उद्धत्यं गन्धतोयेन	वृ हा ४.८३
उदुत्तमेतिमन्त्रेण उन्मुच्ये	ब्र.या. ८.११३	उद्धाय पूर्वं संचायायाः	भार ६.११
उदुत्यमनुवाकास्त्रीन्	कण्व ५२१	उद्धारं पैतृकादेके	वृ परा ७.२८५
उदुत्यमिति प्रस्कण्व	ब्र.या. २.७८	उद्धारं पैतृकादेके	वृ परा ७.२८६
उदुत्यं चित्रमितिद्वाभ्या	व २.७.९६	उद्धारो दशस्वस्ति	मनु ९.११५
उदुत्यं चित्रं देवनाम्	बृह १०.५	उद्धताभिरदभिः कार्यं	व १.६.१४
उदुत्यं चित्रमित्याभ्यां	बृह १०.३	उधृताहं त्वया देवः	विष्णु १.४५
उदुत्यं चित्रमित्येत	आश्व १.४३	उद्धतेनाम्भसा शौचं	शंख १६.२१
उदुम्बरञ्च कामेन	औ ९.३४	उद्धतेप्यशुचिस्तावाद्	अत्रि ५.२१
उदुम्बरशमीबिल्व	व २.७.४९	उद्धत्य निश्चले स्थाने	विष्णु १.१३
उदकं निनयेच्छेषं	औ ५.४.९	उद्धत्य परिपूतादिभ	वृ परा १२.१६२
उदगच्छन्ति हि नक्षत्रा	लघुयम ६६	उद्धत्य प्रणवेनैव	वृ परा ९.३२
उदगत्रन्त्रो होमलिंगो	विष्णु १.६	उद्धत्य प्रणवेनैव	बृ.गौ. २०.४४
उदगीतं तु भवेत्साम	वृ हा ७.४४	उद्धत्य प्रोक्ष्य तत्पात्रे	आंपू ७९४
उदगीथाक्षरमेदब्रह्म	बृ.या. २.११	उद्धत्य भस्म सम्मार्ज्यं	शाण्डि ३.८७
उदगूर्णे हस्तपादे	या २.२१९	उद्धत्यवामहस्तेन	व २.६.२१२
उद्दिश्य देवताः तत्र	व २.३.८४	उद्धत्य वामहस्तेन	वृ परा ८.२०१
उद्दिश्य विप्रपंक्तौ तां	व्या ३७९	उद्धत्यैव च तत्तोयं	आप २.१०
उद्दिश्य विष्णुं जगतां	वृ परा १०.३८४	उदबन्धनमृते चापि	शाता ६.३९
उद्दिश्य वैष्णवान्	वृ हा ७.१५५	उदबन्धनादि निहतं	औ ९.७४
उद्दिष्टक्रतुकालस्य	वृ परा ७.१५५	उद्वबर्हात्मनश्चैव मनः	मनु १.१४
उद्दिष्टं न तथा शुद्ध्ये	व २.६.४८७	उदबुध्यस्वेति मंत्रस्य	वृ परा ११.३१८
उद्दीप्यस्व जातवेद	बौधा १.४.४	उदबोधयित्वा शयने	वृ हा ७.२५२
उद्देशतः किंचिदवादि	वृ परा १२.२७६	उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे	मनु १.४६
उद्देशतो मया प्रोक्तः	वृ परा २.२२९	उद्यतं याचितं वास्यात्	शाण्डि ४.९
उद्देशत्यागकाले च सव्य	आंपू १०७६	उद्यतामाहतां भिक्षां	व १.१.४.१३
उद्देशत्यागमात्रं च प्राचीन	आंपू ८११	उद्यताः सह धावन्त	लघुशंख ३९
उद्देशेन मया प्रोक्तो	वृ परा ४.११०	उद्यताः सह धावन्ते	लिखित ७९
उद्धते दक्षिणे पाणाव	मनु २.६३	उद्यता सह यावन्त	दा ९२
उद्धत्य वाऽपि त्रीन्	बौधा २.३.९	उद्यतैराहवे शस्त्रैः	मनु ५.९८
उद्धरिण्या जलं	वृ हा ४.७१	उद्यतो निधने दाने आर्त्तो	पराशर ३.२९
उद्धरेदर्थ्यणपात्रेतु गृही	व २.६.९१	उद्यत् कोटिर विप्रभं	वृ हा ३.३५०
उद्धरेददुकं सर्वं शोधनं	अत्रिस २२९	उद्यद्दिनकरा माया	व २.६. ७६
उद्धरेद्धटशतं पूर्णं पंचगव्येन	अत्रिस २२८	उद्धर्तनमपस्नानं	मनु ४.१.३२
उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो	पराशर ७.४२	उद्धेहत् क्षत्रियां विप्रो	व्यास २.११

उद्बहेदभिरूपान्तमन्यथा	औ १.१०२	उपनीय गुरु शिष्यं	वृ हा २.१३६
उद्वाहकाले रतिसंप्रयोगे	व १.१६.३१	उपनीय तु तत्सर्वं	मनु ३.२२८
उद्वाहयत्तमश्वत्थं	शाता ३.१९	उपनीय तु यः कृत्स्नं	व १.३.२४
उनद्विवर्षे प्रेते	व १.४.२८	उपनीय तु यः शिष्यं	मनु २.१४०
उन्मत्ततितक्लीव	नारद १३.३७	उपनेया न ते विप्रैः	वृ परा ६.१७७
उन्मत्तं दुर्बलं सन्नं	आंपू ७५४	उपेनेष्यामि यूयं च	कण्व ७२१
उन्मत्तं पतितं क्लीवमबीजं	मनु ९.७९	उपन्यस्तानि तावत्तु यावस्त्या कपिल १२६	
उन्मीलिनी वञ्जुलिनी	ब्र.या. ९.२१	उपपन्नो गुणैः सर्वैः	मनु ९.१४१
उन्मृज्य सर्वगात्राणि	वृ परा २.१३२	उपपातकरो (गा) णां	विश्वा ६.१४
उपकल्प्यततोऽन्मवा	ब्र.या. २.१४७	उपपातक वर्णनम्	विष्णु ३७
उपकारक्रियाकेलि	मनु ८.३५७	उपपातक शुद्धिस्यादेवं	या ३.२६५
उपकुर्वन्ति यावन्ति	वृ परा १०.३७२	उपपातकसंयुक्तो गोघ्नो	मनु ११.१०९
उपकुर्वन्परंकुर्वन्	कण्व २६१	उपपातकसंयुक्तो गोघ्नो	आंड ११.१
उपक्रमोपसंहारकारिपादो	विश्वा ३.५९	उपातकसंयुक्तो मानवो	अत्रिस २९१
उपचार क्रियाकेलि स्पर्शो	नारद १३.६७	उपपातक सर्वाङ्ग	व २.६.६१
उपच्छन्नानि चान्यानि	मनु ८.२४९	उपपंपं प्रकीर्णञ्च	वृ हा ६.२०८
उपजप्यानुपजपेद	मनु ७.१९७	उपभोग्यास्तु ते सर्वे	अत्रिस २०४
उपत्तिः एव विप्रस्य	वृ.गौ. ३.७३	उपयमन कुशानादाय दक्षिणं	ब्र.या. ८.२७०
उपतिष्ठतामित्यक्षय्य	या १.२५२	उपयुक्तानसंग्रहः अपवित्रो	भार १५.१५२
उपदिष्टो धर्म प्रतिवेदम्	बौधा १.१२.२१	उपयुजन्ति सस्यानि	वृ परा ५.१६०
उपधाधिरूप यन्कश्चित्	मनु ८.१९३	उपयेन्यास सुमुखं	वृ हा ३.३५४
उपदिष्टो धर्मः	बौधा १.१.१	उपरम्येच्छनैर्विद्वान्	शाण्डि ४.१७५
उपदीकाहताः केशाः	कण्व ६४१	उपरागे गुरुदीक्षे पुत्रे जाते	ब्र.या. १०.१५७
उपनीतः कलत्रो वा	आंपू ३७९	उपरिष्ठादुपरिचेत्ये	भार २.१५
उपनीतः सदा विप्रो	साम्वर्त ५	उपरुध्यारिमासीत	मनु ७.१९५
उपनीतस्ततोऽज्येष्ठा	लोहि ९१	उपरुन्धन्ति दातारं	व १.२८.१७
उपनीतस्तु चेदुपने	आंपू १३१	उपर्यग्रमधोमूलं कृत्वा	भार १८.११३
उपनीतस्थ दोषोऽस्ति	दक्ष १.६	उपलिप्तं स्थंडिलं	व २.२.१४
उपनीतं यदा त्वन्नं	आप ९.१३	उपलिप्य शुचौ देशे	शाण्डि ४.११७
उपनीति पुनरपि कूर	कपिल ९९२	उपवासकृशं तं तु	मनु ११.१९६
उपनीतेः परं तस्य विप्रत्वं	कपिल ७५९	उपवासञ्च दीक्षाञ्च	वृहस्पति ७८
उपनीतो गुरुकुले	व्यास १.२३	उपवासदिने यस्तु दन्त	वाधू ३३
उपनीतो मानवको	लता ३.१	उपवासदिने श्राद्धे	वृ हा ६.२०६
उपनीयः गुरु शिष्यं	मनु २.६९	उपवासन्तु यः कृत्वा	वृ.गौ. १०.२२
उपनीय गुरु शिष्यं	या १.१५	उपवासपरोभूयः स	शाण्डि ४.२२०

उपवासः स विज्ञेयः	आंपू १७५	उपवेश्यतु तान् विप्रान्	मनु ३.२०९
उपवांसदिने यस्तु	वृ हा ८.३१८	उपवेश्य प्राङ्मुखान्सर्वान्	व २.६.३१०
उपवासं तयोरगुरुशुद्धौ	वाधू ४८	उपव्यु (षस्यु) षसि यत्स्नानं	वाधू ७०
उपवासं न्यायेन	व १.२२.६	उपसर्जन प्रधानस्य	मनु ९.१२१
उपवासान्तथादानात्	शाण्डि १.९७	उपस्तीर्य घृतपात्रे	व २.६.३०१
उपवासान्तराभ्यास	शंख १८.१०	उपस्थमुदरं जिह्वा हस्तौ	नारद १८.९५
उपवासी नरो भूत्वा	संवर्त २०४	उपस्तुमुदरं जिह्वा हस्तौ	मनु ८.१२५
उपवासी विशुद्धात्मा	वृ परा १०.११९	उपस्थानन्तु सर्वत्र	हा ५.५६६
उपवासेन चैकेन	अत्रिस १२७	उपस्थानं जपं कृत्वा	व २.१.४६
उपवासेन तत्तुल्यं	औ ३.९९	उपस्थानं ततः कुर्यात्	या ३.२८२
उपवासेन शुद्धि स्यात्	अत्रि ५.५६	उपस्थानं ततः कुर्याद्	वृ परा ११.३०८
उपवासैव्रतै पुण्यैः	पराशर १०.४२	उपस्थानं ततः पश्चात्	दक्ष २.३९
उपवासो व्रतञ्चैव	पराशर ६.५८	उपस्थानं ततः शीघ्रमिति	आंड २.८
उपवासोव्रतञ्चैव स्नानं	शाता १.२८	उपस्थानं स्वकैर्मन्त्रै	बृह १०४
उपविश्य गृहद्वारि	व्यास ३.३६	उपस्थानादिकं चैव	आश्व १.६४
उपविश्यचु (शु) चौ	भार ५.४३	उपस्थानादिर्यस्तासां	बृ.या. ७.१०८
उपविश्य शुचौदेशे	भार ४.९	उपस्थानाय दानाय	नारद २.१०१
उपविश्याऽऽसने शुद्धे	व २.६.१५०	उपस्थाने विनियोग	भार ६.१४०
उपविश्य शुचौ देशे	वाधू २४	उपस्थाय च सप्ताश्वं	लोहि ६७७
उपविष्टः शुचौ देशे	वृ हा ४.१८	उपस्थाय च सूक्तेन	व २.३.१३६
उपविष्टेषु यच्छ्राद्धे	औ ५.३०	उपस्थाय ततः शीघ्रं	पराशर ८.१०
उपविष्टो गृहे रम्ये	व २.६. ३५	उपस्थाय महादेव	भार ७.३
उपवीतधरास्तस्माद्धार्य	भार १६.१२	उपस्थाय रवेः काष्ठां	व्यास ३.२५
उपवीतमोर्ब्रह्ममुनि	भार १७.२४	उपस्थितस्य भोक्तव्य	वृ हा ४.२३५
उपवीतमिदं दध्युरितरे	भार १६.३३	उपस्थितव्य भोक्तव्य	या २.६३
उपवीतमुखानां वै तेषां	भार १६.१६	उपस्थिते विवाहे च	वृहस्पति ७०
उपवीतं ततो दद्याद्	हा ८.३४	उपस्पर्शकालेन	भार ४.२०
उपवीतं तदुत्सृज्य	भार १६.४३	उपस्पृशं स्त्रिषवणं	मनु ६.२४
उपवीतं तदुत्सृज्य	भार १६.४४	उपस्पृशेत् त्रिषवणं	पराशर १२.५२
उपवीतं द्विजश्रेष्ठे	भार १६.४०	उपस्पृशेत्प्रधानाङ्ग प्रणवेन	विश्व २.५२
उपवीतं यथा यस्मिन्धत्ते	आश्व १.९०	उपस्पृश्यत्रिषवणामब्देन	ब्र.या. ८.८९
उपवीतं वामबाहुं	औ १.१०	उपस्पृश्य द्विजो नित्यं	मनु २.५३
उपवीतानि देवस्य	व २.३.१४८	उपह्न्यादे (डु) दक (के) न कपिल	२३४
उपवीती ततः शुद्धः	भार १६.६२	उपह्न्येत वा पण्यं	नारद ९.६
उपवीती समाचम्य	आश्व २३.७७	उपह्वरे शुचौदेशे विलिप्ते	भार ११.७

उपांशुजपयुक्तस्तु	वृ परा ४.५८	उपासते च तान्ये तु	वृ.गौ.१०.९०
उपांशु तु जपं कुर्यात्	वृ परा ४.५६	उपासते ये गृहस्था	मनु ३.१०४
उपांशुस्तु चज्जिह्वा	अत्रि २.११	उपासनमनुब्रज्यात्	ब्र.या. १२.३१
उपांशु स्याच्छतगुणः	शंख १२.२९	उपासने गुरुणाञ्च	औ १.१३
उपाकरण पर्यन्तं	आश्व १०.५४	उपासने तु विप्राणां	पराशर ३.३
उपाकर्मणि चोत्सर्गे	मनु ४.११९	उपासीत ततः सन्ध्यां	व २.३.१०७
उपाकर्मणि चोत्सर्गे	कण्व ३१४	उपासीत न चेत्सन्ध्यां	औ ९.६७
उपाकर्मणि चोत्सर्गे	कात्या १०७	उपासीत न चेत् संध्यां	संवर्त २३
उपाकर्मणि चोत्सर्गे	कात्या १०.९	उपासीत निरस्तोऽपि	शाण्डि १.९८
उपाकर्मणि चोत्सर्गे	आश्व १३.७	उपासीरन्द्दिविजाः तावत्	वृ परा २.७१
उपाकर्मणि चोत्सर्गे	औ ३.७१	पास्य पश्चिमां संध्यां	वृ परा ६.१३९
उपाकृत्योदगयने	कात्या २८.३	उपास्य पश्चिमां संध्यां	शंख ३.९
उपाकुश्य च राजानं	नारद १६.२७	उपास्य पश्चिमां संध्यां	या १.११४
उपादान प्रकारो यः	शाण्डि ४.१	उपास्य पश्चिमां संध्यां	वृ हा ५.२८९
उपादानविधिं वक्ष्ये	शाण्डि ३.२	उपास्य पश्चिमां संध्यां	ल हा ४.१९
उपादानविधिं सम्यक्	शाण्डि ३.१	उपास्यं तत्सदा ब्रह्म	वृ परा १२.२०९
उपादेयानि पुष्पाणि	व २.६.५७	उपेक्षकः सर्वभूतानां	व १.१०.२२
उपादेयानि शाकानि	व २.६ १६७	उपेक्षणं पंकादौ	वृ परा ८.१३७
उपाधौ समनुप्राप्ते गौणा	विश्वा १.३३	उपेक्षांकुर्वतस्तस्य	नारद २.७१
उपाध्याय-नृपा-आचार्य	वृ परा ८.२५२	उपेक्षिताऽशाक्तिमां	वृ हा ६.२३८
उपाध्यायाद्दशाऽऽचार्य	व १.१३.१७	उपेतारमुपेयं च सर्वो	मनु ७.२१५
उपाध्यायान् दशाचार्य	मनु २.१४५	उपेयादीश्वरञ्चैव योग	या १.१००
उपानत् पादुके चैव	वृ परा १०.२२	उपेयादीश्वरञ्चैव	व्यास २.८
उपानत्प्रदाता यानं	व १.२९.१५	उपोदकी चर्मफलं	प्रजा १२१
उपानयेद् गा गोपाय	नारद ७.१२	उपोध्यान्तजले स्थित्वा	वृ हा ६.३४१
उपानहावमेव्यं वा	आप ९.११	उपोषितः समभ्यर्च्य	वृ परा १०.९२
उपानहौ च छत्रं च	वृगौ ५.६९	उपोष्य द्वादशीमिश्रो	ब्र.या. ९.९
उपानहौ च वासश्च	मनु ४.६६	उपोष्य पूर्वदिवसे	वृ हा ७.९२
उपानहौ परिधाप्ये	ब्र.या. ८.१२२	उपोष्य पूर्व दिवसे	वृ हा ८.२२५
उपानुवाक्यं च तथा	कण्व ५३१	उपोष्य पूर्ववत् सर्व	वृ हा ७.१७१
उपायः कल्पितक्वापि	कार्ल २२६	उपोष्य रजनी रजनीमेकां	वृ.य. ३.४८
उपायाध्यवसायेन	वृ हा ८.१५४	उपोष्य विधिवद् भक्ति	वृ हा ५.५५८
उपायाः साम दानञ्च	या १.३.१६	उपोष्याभ्यर्चयेद	वृ हा ७.१५८
उपायैर्विधैरेषां	नारद १५.१६	उपोष्यैकादसीं तत्र	वृ हा ५.३२२
उपावृत्तिस्तु पाकेभ्यो	आंपू १७४	उपोष्यैकादशीं	ब्र.या. ९.३३

उभयतः प्रणवां ससप्त	बौधा २.४.९	उमामहेश्वरौ पञ्चाललक्ष्मी	लोहि ५०५
उभयत्र दशाहानि	पराशर ३.८	उरगेत्यायसो दण्डः	ब्र.या. १२.६१
उभयत्र प्रकथितं	आंपू ७९८	उरगेष्वायसो दण्डः	या ३.२७३
उभयस्य निमित्तेन	पु ६	उरग्रे निहते चैव	शाता २.५३
उभयस्य पालनाद	व १.१९.५	उरस्यष्टांगुलं धार्य	वृ हा २.७४
उभयं चैव नाऽऽद्वियेत	बौधा ११.२६	उरेद्देशत्यागमखिलं स्वयमेव	कपिल ३१४
उभयं विन्दते यस्तु	वृ .या . २.९५	उर्ध्वं पुङ्गो मृदा	व २.१.२०
उभायानुमतः साक्षी भवत्ये	या २.७४	उर्ध्वं जंघेषु विप्रेषु	अत्रिस ३८९
उभयावसितः पापः श्यामा	लघु यम २४	उर्ध्वपुङ्गं च विधिवद्	भार १२.५२
उभयावसिताः पापायेऽग्राम्य	यम ४	उर्ध्वगत्यां तु यस्येच्छा	वाधू १०७
उभयावसिताः पापा	बृ.य. १.५	उर्ध्वपुङ्गुं विधिवत्	भार ११.६
उभयाव्यवहारश्च	पु २४	उर्ध्वोच्छिष्टस्य संशुद्ध्यै	वृ परा ८.२५४
उभयेन पवित्रस्तु	वृ परा २.१४८	उर्वारुक्षीरिणीपीलुं	प्रजा १२२
उभयोः कर्मकर्ता स्यात्तदा	लोहि २७७	उर्वारुस्सरणस्सारः	कण्व ६१८
उभयोरप्यसौरिकथी	लोहि १९६	उलूकादि जनुर्जित्वा	औ ९.९७
उभयो ब्रह्मणीचार्य	ब्र.या. ८.२६१	उल्काविद्युत्स ज्योतिषम्	व १ १३.१०
उभयोर्भोजनं कुर्यान्	आपू ४६	उल्काविद्युत्समासे	व १.१३.९
उभयोर्विशयोश्चापिपितृणां	कपिल ७८१	उल्काहस्तौऽग्निदो ज्ञेयः	नारद २.१५२
उभयोर्हस्तयोर्मुक्तं	मनु ३.२२५	उल्लिख्य तद्गृहं	पराशर १०.३७
उभयोः सप्त दद्याच्च	वृ हा ४.१७	उवाच तां वरारोहे विज्ञातं	विष्णु १.३१
उभयोस्तातयोश्चापि जनन्योरपिलोहि	२७५	उवाच धर्मान् सूक्ष्मख्यान	वृ.गौ. १.२८
उभयाभ्यामपि पाणिम्यां	ब्र.या.२.९०	उशतीर्हस्तयोश्चैव वक्षे	विश्वा २.३४
उभाभ्यां ज्ञानकर्मभ्यां	शाण्डि १.४८	उशीरं जाति कुसुमं	वृ हा ४.५३
उभाम्यां धारणं वायो	वृ हा ३.३६	उशीरं तुलसी पत्रं केशरं	व २.६.८९
उभाभ्यां सेचयेद्वारि	वृ परा २.२०५	उषाःकाले तु सम्प्राप्ते	दक्ष २.६
उभावपि तु तावेव	मनु ८.३७७	उषः काले प्रशस्तं स्याद्यो	विश्वा १.९६
उभावपि विभक्तौ तौ न तु	शाण्डि १.४९	उषःकाले भानुवारे यो	वाधू ७२
उभावपि समालोक्य	ब्र.या.८.२२५	उषःकाले समुत्थाय	ल हा ४.५
उभावप्यशुची स्यातां	लघु यम १७	उषत्वेति चारु च	व २.६.२९७
उभावेतावभोज्यान्तौ	अत्रि ५.१०	उषसः प्राग्रजः स्त्रीणां	दा १४६
उभे चिह्ने विनाविप्रो	वृ हा ५.४०	उषः स्नानं प्रशंसन्ति	वृ परा २.९६
उभे मूत्रपुरीषे तु दिवा	व १.६.१०	उषस्युषसि यत् स्नानं	वृ. मा. ७.११८
उभे संध्ये तु स्नातव्यं	बृ.या. ६.२६	उषस्युषसि, यत् स्नानं	दक्ष २.११
उभे संध्ये समाधाय	अत्रिस २६	उषित्वैवं गृहे विप्रो	संवर्त ९७
उमामहेश्वरा च एव	वृ.गौ.१.१६	उषित्वैवं वे सम्यग्	संवर्त १०१

उष्ट्रयानं समारुह्य
उष्ट्रयानं समारुह्य
उष्ट्रयानं समारुह्य
उष्ट्र खराजौ महिषं च
उष्ट्रीक्षीरं खरीक्षीरं
उष्ट्रीक्षीरमवीक्षीरं
उष्णं जलपय सर्पि
उष्णं स्निग्धं च
उष्णीषमजिनं उत्तरीय
उष्णे वर्षति शीते वा
उष्णेन वाप्युदके
उष्णेनवायवितिच
उष्णेन वायमंत्रेण
उष्णेन शक्तो न स्नाया
उष्णे वर्षति शीते वा
उष्णे वर्षति शीते वा
उष्णोदकं वृथास्थानं
उष्णोदकेन तु स्नानं
उष्णोदकेन या संन्या
उष्णोदकेन सप्ताहं

ऊ

ऊढाया दुहितुश्चानं
ऊनद्विवर्षं निखनेन
ऊनद्विवर्षिकं प्रेतं
ऊनमभ्यधिकं वार्थं
ऊनस्तीमधिकौ वा या
ऊनं वाप्याधिकं वाऽपि
ऊनाब्दिके त्रिरात्र
ऊनैकादशवर्षस्य
ऊनैकादशवर्षस्य
ऊनैकादशवर्षस्य
ऊरुजस्यापि यत् कर्म
ऊरु जंघे च पादौ च
ऊरुं हीति च मंत्रेण
ऊरून् गृह्यवृषणे

अत्रिस २९४
मनु ११.२०२
औ ९७०
वृ परा १०.२०९
अत्रिस २३५
अत्रिस ९२
वृ परा ९.१०
ब्र. या. ४.९१
बौधा १.३.६
पराशर ८.३९
ब्र. या. ८.३४९
व २.३२६
आश्व ९.१०
आं पू. २५०
मनु ११.११४
आं उ ११.७
व्या १५३
कण्व ६२३
व्या ३३७
व्या २१६

आश्व १५.८०
३.१
मनु ५.६८
नारद २.२१०
अत्रिस २९९
या २.२९८
लिखित ६५
देवल ३१
यम १५
बृ. या. ३.१
ल हा ७.१६
कात्या ७.१०
वृ परा २.१२४
बृ. या. ५.९

ऊर्जं वहन्तीरमृती घृतं
ऊर्जं वहन्तीरिति
ऊर्णामयंकंकगणन्तु
ऊर्णाहारी लोमशः स्यात्
ऊर्द्धमादहनं प्राप्त आसीनो
ऊर्द्धोच्छिष्टांअर्धोच्छिष्टं
ऊर्ध्वनास्यां (सां) समारोज्य विश्वा
ऊर्ध्वन्तु दहनं प्रोक्तं
ऊर्ध्वन्तु प्रोष्ठपद्यास्तु
ऊर्ध्वपुण्ड्रधरं विप्रं
ऊर्ध्वपुण्ड्रधरं विप्रं
ऊर्ध्व पुण्ड्र मृजुं
ऊर्ध्व पुण्ड्रविहीनन्तु
ऊर्ध्व पुण्ड्रविहीनः सन्
ऊर्ध्वपुण्ड्रस्य मध्ये तु
ऊर्ध्वपुण्ड्रस्य मध्ये
ऊर्ध्व पुण्ड्र मृदा शुभ्रं
ऊर्ध्व पुण्ड्रं विना यस्तु
ऊर्ध्व पुण्ड्राणि पद्याक्ष
ऊर्ध्व पुण्ड्रैरलंकृत्य
ऊर्ध्वमेक स्थितरस्तेषां
ऊर्ध्व त्रिरामात्स्नातायाः
ऊर्ध्व दशम एवं
ऊर्ध्व नाभेः करौ
ऊर्ध्व नाभेः करौ मुक्त्वा
ऊर्ध्व नाभेर्मध्यतरः
ऊर्ध्व नाभेर्यानि खानि
ऊर्ध्व पितुश्च मातुश्च
ऊर्ध्व पूर्णाहुते
ऊर्ध्व पुर्णाहुते-
ऊर्ध्व पूर्णाहुते-
ऊर्ध्व प्राणा ह्युत्क्रामंति
ऊर्ध्व मासात्यजेत् सर्व
ऊर्ध्व लोकं न यातो
ऊर्ध्व विभागाज्जातस्तु

बौधा २.५.२१०
बौधा २.३.४
व २.४.४५
शाता ४.२४
कात्या २१.७
पराशर १२.५५
६.१३
वृ हा ६.३८८
वृ परा ७.२८९
वृ हा ८.२८४
वृ हा ८.२८७
व २.३.५०
वृ हा २.६१
वृ हा २.६४
वृ हा २.६७
व २.६.५१
वृ हा २.६६
वृ हा २.६०
वृ हा ८.२५१
शाण्डि ३.१३५
या ३.१६७
अत्रि ५.६५
व २.६.४५५
आप ९.१०
यम ४५
मनु १.९२
मनु ५.१३२
मनु ९.१०४
कात्या १८.२
कात्या १८.३
कात्या १८.६
मनु २.१२०
वृ हा ८.१०४
आंपू ३७२
मनु ९.२१६

ऊर्ध्वं वै पुरुषस्य	बौधा १.५.८८	ऋक्शाखोक्तेन मार्गेण	विश्वा ४.१०
ऊर्ध्वषडभ्यो मासेभ्यो	व १.१.८	ऋक् संहिता त्रिरभ्यस्य	मनु ११.२६३
ऊर्ध्वं संवत्सरात्	देवल २२	ऋक्सामयजुरंगानीत्या	भार १६.२०
ऊर्ध्वं सत्त्विविशाल- अहम्	वृ.गौ.१.५१	ऋक्शाखोक्तेन विधिना	विश्वा ६.७१
ऊर्ध्वं स्वस्तरशायी	कात्या २८.१३	ऋक्षेषु जन्मश्रेष्ठ स्याच्च	भार १५.४९
ऊर्ध्वाग्रं स्थापयेत्कूर्चं	भार १८.१०६	ऋक्षेष्टयाग्रयणं चैव	मनु ६.१०
ऊर्ध्वानाञ्चैव सापिण्ड्य	औ ६.५४	ऋगन्ते मार्जनं कुर्यात्	वाष्पू १२१
ऊर्ध्वं तु निष्कृति	वृ हा ६.३१३	अगन्ते मार्जनं कुर्याद्	आश्व १.३८
ऊषरं लवणञ्चैव	वृ हा ४.११४	ऋगर्थे वा प्रकुर्वीत	वृ परा २.६०
ऊषरे वाऽपितं वीजं	व्यास ४.६३	ऋगादीनामन्यतं	कात्या १४.१२
ॐ अग्ने सुश्रवः सौश्रव	ब्र.या. ८.३७	ऋग्गाथा पाणिना	या ३.११४
ॐ कारं चतुरावर्त्य	ब्र.या. २.८४	ऋग्भि षोडशभि	वृ परा ११.३०४
ॐ कारं तु समुच्चार्य	ब्र.या. २.४७	ऋग्यजु पारगो यश्च	शच १४.७
ॐकारः प्रणवाख्य	शंख १२.१०	ऋग्यजुश्च तथा साम	बृ.या. २.२१
ॐकार ब्रह्मसंयुक्तं	वृ परा २.८१	ऋगमजुः साममन्त्राणां	वृ.गौ.१५.५८
ॐकारं सर्वमुच्चार्य	ब्र.या. २.८२	ऋग्यजुः साममूर्तिस्तु	बृह ९.१०३
ॐत्र्यम्बकमन्त्रस्य	ब्र.या. २.१२७	ऋग्यजुसामवेदानां	भार ६.७
ॐ नमो भगवते तस्मै विष्णु	म ८०	ऋग्यजुः सामवेदानां	वृ.गौ. ६.१६७
ॐपूर्वा व्याहृतीस्तिस्रः	आश्व १.८७	ऋग्यजुः सामवेदाश्च	वृ परा ३.१२
ॐ भगवन्तं शेष	शंख १३.३	ऋग्यजुः सामाथर्वाणि	वृ.या. २.११७
ॐ भूः ॐ भुवः ॐस्वः	शंख १२.११	ऋग्विधेनेति वाग्वदति	बौधा १.४.२८
ॐ भूदित्यादित्रिर्मत्रैः	भार ६.१४३	ऋग्वेदं तद्वहि प्राच्यां	भार ११.४८
ॐ मापो ज्योतिरित्या	भार ६.४०	ऋग्वेदः पूर्वचरणः	भार १३.१३
ॐमापोज्योतिरित्या	भार ६.८५	ऋग्वेद मध्यसेद्यस्तु	संवर्त २२३
ॐ (आ) मापोज्योरित्ये	भार १७.११	ऋग्वेदविद्यजुर्विच्च	मनु १२.११२
ॐ मितिब्रह्मचेत्या	भार १६.१८	ऋग्वेदश्च यजुर्वेदः	ब्र.या. १.८
ॐ रंग मांग संपूर्ण	ब्र.या.११.५५	ऋग्वेदसंहिता यान्तु	वृ हा ७.६२
ॐ वषट्काराय शांताय	भार ७.४	ऋग्वेदे स्वरितोदात्त	बृ.या. २.७८
ॐ सहस्रशीर्षे इत्यावाहनम्	ब्र.या. २.१२४	ऋग्वेदोक्तस्य सूक्तेन	वृ हा ७.१९९
ॐ सूर्याय नमः प्रातः	भार ६.१२७	ऋग्वेदो दैवदैत्यो	मनु ४.१२४
ॐस्वाहा च समानाय	वृ परा ६.११९	ऋचः पठन् मधुमयः	कात्या १४.९
ॐ स्वाहेति अपानाय	वृ परा ६.११७	ऋचामशीतिपादैश्च	वृ हा ५.५४१
		ऋचां यजूंसि सामानि	बृह ९.१६२
		ऋचां दशसहस्रं	ब्र.या. १.१३
		ऋचैकासंयमस्थेन	ब्र.या. ८.६८
		ऋचो यजुषि चाद्यानि	मनु ११.२६५

ऋ

ऋक्थग्राह ऋणं दाप्यो

या २.५

ऋक्पादं वा जपेन्मन्त्र

वृ.गौ.८.३९

ऋचो यजूंषि चान्यानि	बृह ११.२६	ऋतुमत्यां च यस्तो	बौधा १.५.१३९
ऋचो यजूंषि सामानि	वृ हा ३.४५	ऋतुमद्योषितालापं तथा	ब्र.या. ८.१.२९
ऋजवस्ते तु सर्वेऽस्तु	कात्या २७.१३	ऋतुव्यत्यस्ततः पूर्वं	कपिल ३.५१
ऋजवस्ते तु सर्वे	मनु २.४७	ऋतसत्याभ्यामिति	वृ हा ५.२.५२
ऋणकर्ता च यो विप्रो	वृ.गौ. १०.७८	ऋतुस्नातदिने सोऽयं	आंपू ३.२३
ऋणदान वर्णन	विष्णु ६	ऋतुस्नाता तु या नारी	व २.५.२७
ऋणं अस्मिन् संनयति	व १.१७.१	ऋतुस्नाता तु या नारी	पराशर ४.१.२
ऋणं च सर्वदा नित्यं	ब्र.या. ११.२८	ऋतुस्नाता स्त्रियाः	ब्र.या. ८.१.४०
ऋणं दातुमशक्तो	८.१.५४	ऋतुस्वभाविनी स्त्रीणां	ब्र.या. ८.२.९१
ऋणं देयमदेयं च	नारद २.१	ऋतुः स्वाभाविक स्त्रीणा	मनु ३.४६
ऋणं लेख्यकृतं देयं	या २.९२	ऋतून् संवत्सरञ्चैव	वृ.गौ. ८.५५
ऋणाच्च मोक्षितोऽनल्पाद्	नारद ६.२५	ऋतौ तु गर्भशंकित्वा	लघु यम १६
ऋणादानं ह्युपनिधि	नारद १.१६	ऋतौ तु प्रथमेप्राप्ते	व २.४.१०७
ऋणानां सार्वभौमोऽयं	नारद २.९०	ऋतौ स्नातान्तु यो भार्या	पराशर ४.१.३
ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य	मनु ६.३५	ऋत्विक् तु त्रिविधः प्रोक्तः	नारद ४.१०
ऋणिकः सधनो यस्तु	नारद २.१०९	ऋत्विक् पुत्रोऽथवा	व्यास २.२
ऋणि व्यसनि रोगार्त	वृ परा ८.४०	ऋत्विक् पुत्रोगुरुभ्राता	दक्ष २.२१
ऋणिष्वप्रतिकुर्वत्सु	नारद २.१०२	ऋत्विक् पुरोहिताचार्यै	मनु ४.१.७९
ऋणे देये प्रतिज्ञाते	मनु ८.१३९	ऋत्विक् पुरोहितापत्य	या १.१.५८
ऋणे धने च सर्वस्मिन्	मनु ९.२१८	ऋत्विक् श्वशुर	व १.१३.१३
ऋतमुंछशिलं ज्ञेयममृतं	मनु ४.५	ऋत्विक् श्वसुर	बौधा १.२.४४
ऋतं च सत्यं चेत्य	ब्र.या. २.७२	ऋत्विक् स्वस्रीय	या १.२.२०
ऋतं च सत्यमारभ्य	विश्वा ४.२५	ऋत्विग् आचार्याव	व १.१३.१९
ऋतं चेति त्र्युचं वाऽपि	आश्व १.३९	ऋत्विग्गुरुरुपाध्याय	वृ परा ७.२१
ऋतामृताभ्यां जीवेत	वाधू १६२	ऋत्विग्भि ब्राह्मणै	वृ हा ६.१४
ऋतामृताभ्यां जीवेतु	मनु ४.४	ऋत्विग्भि ब्राह्मणैः	वृ हा ८.२.५०
ऋतावृत्तो स्त्रियं	वृ परा ६.४१	ऋत्विग्भि सार्द्धं आचार्यौ	वृ हा ७.२.४२
ऋतुकाल उपासीत	अत्रिस १९७	ऋत्विग्यादि वृत्तो यज्ञे	मनु ८.२.०६
ऋतुकालगामी स्यात्	व १.१२.१८	ऋत्विग् याज्यमदुष्टं	नारद ४.९
ऋतुकालाभिगामी सन्	वृ परा १२.१५२	ऋत्विग्योनि संबंधेषु	व १.१३.१२
ऋतुकालाभिगामी स्यात्	मनु ३.४५	ऋत्विजश्च गुरु चैव	वृ हा ६.७३
ऋतुकालेऽभिगम्यैवं	व्यास २.४५	ऋत्विजं यस्त्यजेद्याज्यो	मनु ८.३.८८
ऋतुक्षपासु पुत्रार्थी	वृ परा ६.१४२	ऋत्विजां दीक्षितानां च	या ३.२८
ऋतुत्रयाख्याविधिना	विश्वा ८.३९	ऋत्विजां व्यसनेऽप्येवं	नारद ४.८
ऋतुबाणघटीमानमरुणो	विश्वा १.३	ऋत्विजो वरयेत्त्र	व २.७.१०

ऋत्विवाभांदुश्रोत्रिये	कपिल १८९	ऋषीच्छंदांसि देवानश्च	भार ९.३
ऋप परित्यजेद्धीमानि	व २.६.५२६	ऋष्यादिषट्कं विन्यस्य	विश्वा ६.३५
ऋषभवेहतौ च दद्यात्	व १.२१.२४		
ऋषभैकसहस्रा गा	या ३.२६६	ए	
ऋषभैकादशा गाश्च	आंड ११.१०	एक एव चरेनित्यं	मनु ६.४२
ऋषयः पितरो देवा	मनु ३.८०	एक एव तु यो भुङ्क्ते	ब्र. या. २.१६१
ऋषयश्च महात्मानो	वृ हा ३.२३४	एक एव द्विरात्रं वा	व २.६.५४०
ऋषयः संयतात्मनः	मनु ११.२३७	एक एव भवन्नूनं	लोहित २२४
ऋषयो दीर्घ सन्ध्यात्वाद्	मनु ४.९४	एक एव यदा धिप्रो	आं पू ९६९
ऋषिच्छन्दो देवता च	विश्वा ६.४४	एक एव सुहृद्धर्मो	मनु ८.१७
ऋषि दैवतच्छन्दांसि	आश्व १.८८	एक एव हि विज्ञेयः	बृ. या. २.६६
ऋषिभि कथ्यामानं तु	वृ. गौ. ५.२६	एक एवौरस पुत्र	मनु ९.१६३
ऋषिभिर्बाह्यणैश्चैव	मनु ६.३०	एककं त्रिदननन्या पूरणा	भार १५.१४९
ऋषिभिर्विराजाजाप्यै	वृ. या. ४.५५	एककालं चरेद्भक्ष	मनु ६.५५
ऋषिभिश्च पुरा गाथा	अ ४७	एककालस्य चित्तं स्यादेव	कण्व १३०
ऋषिम्यः पितरो जाताः	मनु ३.२०१	एकगोत्र ब्राह्मणानां	व्या ७२
ऋषिमेकान्तमासीनं	व्या १	एकचित्यां समारूढौ	आंपू ९८०
ऋषियज्ञं देवयज्ञं	मनु ४.२१	एक जातिर्द्विजातींस्तु	मनु ८.२७०
ऋषियज्ञं ब्रह्मयज्ञं	वृ. गौ. ८.९	एकतश्चतुरो वेदान	औ ३.४८
ऋषिरासां समस्तानां	भार १९.८	एकतो रुद्रजापी तु	वृ परा ११.१५७
ऋषिर्गृत्समदश्छन्दो	ब्र. या. २.९२	एकत्र पंचगव्येषु	वृ हा ५.१५९
ऋषिर्ब्रह्मा समाख्यातो	विश्वा ६.३७	एकत्र पृथिवी सर्वा	वृ परा ५.१९
ऋषिविकत्राच्छ्रुता	पराशर ६.३३	एकत्र पृथिवी सर्वा	वृ परा १०.४६
ऋषिविद्वन्नृपवर	बौधा २.३.६३	एकत्र संस्कृतानान्तु	अत्रिस ९१
ऋषिविद्वन्प्राः प्राप्ता	बौधा २.३.६४	एकत्वमिच्छन्ति पति	वृ परा ७.३८१
ऋषिश्छन्दो देवताश्च	भार १२.५५	एकत्वं च यो तयोर्य	वृ परा ७.३७९
ऋषिश्छन्दो देवताश्च	भार १३.८	एकत्वाश्रयणे धर्मो	वृ परा ७.३८६
ऋषिश्छन्दो देवताश्च	भार १७.५	एकदण्डधरा मुण्डा	वृ परा १२.१७१
ऋषिश्छन्दो देवताश्च	भार ११.१७	एकदण्डडरा हंसा	वृ परा १२.१६९
ऋषिश्छन्दो देवताश्च	भार १७.२७	एकदा नैमिषारण्ये	नारा १.१
ऋषिस्तु कुण्डलोमा च	वृ परा ११.३२७	एकदेशं तु वेदस्य	मनु २.१४१
ऋषीणां अथ तत्प्रोक्तं	कण्व ३८२	एकदेशमुपाध्याय	या १.३५
ऋषीणां कुर्वतां नित्यं	ल व्यास १.५	एकदैव सतो नूनमभन्नान्यथा	कपिल २९१
ऋषीणां श्रृण्वतां पूर्वं	औ १.२	एकदैव हि देया स्यान्	आं पू ६९७
ऋषीणां सिध्यमानानां	कात्या १०.११	एकद्रव्याणि कार्याणि	वृ परा ७.१२१
		एकद्वित्रिचतुर्नारीनष्टा	आंपू ४८

एकद्वित्रिचतुर्वृत्तिमत्प्रभेद	कपिल ४७१	एकमोवाभ्यसेत्तत्वं	वृ परा १२.३४९
एक द्वि त्रिचतुः संख्यान	देवल ७५	एकं कलशमादाय स्थापये	नारा ५.४०
एकधा यो विजानाति	बृ हा ९.२७	एकं गोमिथुनं द्वे वा	मनु ३.२९
एकपंक्त्युपविष्टानां	अत्रिस २४३	एकं धन्तां बहूनां च	या २.२२४
एकपंक्त्युपविष्टानां	पराशर ११.८	एकं च बहुभि कैश्चिद	लघु शंख ५४
एक पंक्त्युपविष्टानां	व्या १७२	एकं पवित्र मेकं वा	औ ७.१४
एकपंक्त्युपविष्टेषु	शंख १७.५७	एकं पश्वनृतेहन्ति	अ ९३
एकपाकाशिनः पुत्रा	आश्व १.११७	एकं पिवति गंडूषं	वृ परा ६.१२७
एकपादं चरेद्रोधे	दा १०५	एकं मध्याह्न काले च	विश्वा ५.२
एकपादं चरेद्रोधे	लघुशंख ५५	एकं मध्याह्नकाले च	विश्वा ५.२५
एकपादे तु लोमानि	वृ परा ८.१२६	एकं वाजपि यथाशक्त्या	व २.६.२९१
एकपाश्वे द्विधा होमौ	विश्वा ८.२५	एकं वा भोजयेद् विप्रं	वृ हा ६.१४०
एक पिण्डाश्च दायादाः	वृ परा ८.४३	एकं वासो यथाप्राप्तं	वृ परा २.१६४
एकपिण्डास्तु दायादाः	पराशर ३.७	एकं वृषभ मुद्धरं	मनु ९.१२३
एकपिण्डीकृतानां तु	वृ परा ७.३४६	धकं व्योम यथानैकं	वृ परा १२.३२१
एकः प्रजायते जंतुरेक	मनु ४.२४०	एकं शस्त्रास्त्रनाशाय	विश्वा ५.३
एकः प्रजायते जन्तुरेक	वृ.गौ. ११.३२	एकं हविर्नान्यकार्य	कण्व ७६७
एकभक्तं चरेत् पश्चाद्	पराशर १०.२२	एकया च शिरः	बृ.या. ७.१०
एकभक्तेन नक्तेन	देवल ८५	एकरात्रञ्चरेन्मूत्र पुरीषं	अत्रिस २७४
एकभक्तेन नक्तेन	या ३.३१८	एकरात्रमुपाध्याये	औ ६.३२
एक भुक्तं च नक्तं च	वृ परा ९.१७	एकरात्र तु निवसन्	मनु ३.१०२
एक भुक्तेन यश्चापि	वृ.गौ. ७.९१	एकमात्र तु निवसन्	व १.८.७
एकभुक्तेन वर्तेत नरः	बृ.गौ. १८.३	एकरात्र त्रिरात्र च	शंख १५.१७
एकभुक्तैश्च नक्तैश्च	वृ परा ९.९	एकरात्र द्विरात्र वा	औ ९.९६
एक भुक्त्वाह्यधः स्नायी	व २.५.७८	एकरात्र वदन्त्येके	वृ परा ८.२९
एकमपीह यो दद्याद्	परा १०.१६७	एकरात्र समुद्दिष्टं	औ ६.२९
एकमप्यभ्यर्च्य गुरु	अत्रिस ९	एकरात्रोषितः स्नातो	वृ परा १०.३४
एकमप्यभ्यर्च्य मित्रं	ब्र.या. २.२१०	एकरात्रोषितः स्नातो	व्या ५८
एकमप्यभ्यर्च्य मित्रं	मनु ३.८३	एकवर्णैश्चतुर्भिश्च	वृ परा ११.१३
एकमात्रं द्विमात्रं च	बृ.या. २.३५	एकवर्षे हते वत्से	ब्र.या. १२.६२
एकमुक्ताः सुराः सर्वे	वृ.गौ. १०.३८	एकवस्त्रा तु या नारी	व्या ९०
एकमेव तु शुद्रस्य	मनु १.९१	एकविंशं कुवेरस्य	वृ परा ४.२४
एकमेव दहत्याग्निर्नरं	मनु ७.९	एकविंशति मूर्ध्नित्यात्	विश्वा ४.१८
एकमेव हि विज्ञेयं	बृह १२.२७	एकविप्राख्यापक्षस्य	आपू ६९५
एकमेवाद्वितीयं तत्प्राहुः	नारद २.१८८	एकविंशत्यहर्हृते	दा १३३

एकव्यूहं चतुर्वक्त्रं	विष्णु १.६१	एका चेद्बहुभि कापि	परशर ९.४९
एकः शतं योधयति	मनु ७.७४	एकाचेद्बहुभि कैश्चिद्	संवर्त १३६
एकः सयीत शर्वत्र न	मनु २.१८०	एका चेद्बहुभि कौश्चिद्	संवर्त १०४
एकशाखासमारूढा	आप ७.१३	एक चेद् बहुभि बद्धा	वृ परा ८.१४३
एकशाटी परिवृतो	व १.१०.८	एकादश ऋचां जप्त्वा	ब्र. या. ८.३१४
एकश्चेदन्नयेत् सीमां	नारद १२.१०	एकादशगुणान् रुद्राना	वृ परा ११.१५५
एकसंख्यादिपर्यंतं	भार १६.२८	एकादशं कण्ठ देशे	व २ ६ १५५
एक सहस्रमणिभि	भार ७.१२	एकादशं मनोज्ञयं	मनु २. ९२
एकसाधयेष्ववर्हिषु न	कात्या २७.२	एकादशविधं साक्षी स	नारद २.१२६
एकस्तम्भे नवाद्वारे	वृ.गौ. ८.१०४	एकादश शुभान् कुंभान्	वृ परा ११.१६३
एकस्मादधिकस्वेकः	भार ७.१०	एकादशानाभंगानां	कात्या २९.५
एकस्मिन्दिवस यत्र	व २.६.४१९	एकादशाब्दप्रभृतिवैधव्यं	लोहि ४९३
एकस्मिन्नेव दिवसे	आं पू २७२	एकादशाहमात्मानमन्यं	वृ परा ११.१६५
एकस्मिन्नेव देवेशं	शाण्डि ४.४	एकादिपंचपर्यंतं	भार ७.१०१
एकस्मिन्विंशति हस्ते	शंखं १६.२२	एकादशाहे प्रेतस्य	दा १९
एकस्य ग्रहणं कार्यं धर्मतो	लोहि २४६	एकादशाहे प्रेतस्य	लघु यम ८९
एकस्य चेतुतद् व्यसनं	नारद ४.७	एकादशाहे प्रेतस्य	लघुशंख ९
एकस्य प्रथमं श्राद्धं	वृ परा ७.३३५	एकादशो प्रेतस्य	लिखित ९
एकस्य वैश्वदेवानि	वृ परा ७.१२२	एकादशाहे भुजन्ताः	वृ परा ७.११
एकस्याच्चैवं संकल्पो	कण्व २८३	एकादशाहेऽहोरात्र भुक्त्वा	अत्रि स ३०८
एकस्यापि ततः सद्यः	कपिल ८९१	एकादशाह्निकं त्वाद्यं	वृ परा ७.१४०
एकस्मिन् हि दत्तेन	ब्र.या.३.३२	एकादशाह्निकं भुक्त्वा	व्या २९६
एकांशेन जगत् कृत्स्नं	विष्णु म ४९	एकादशीं परित्यज्य	ब्र.या. ९.१०
एकाकारमना मन्दं	ल हा ७.५	एकादशी यत्रपूर्णा नोपौष्या	ब्र.या. ९.३४
एकाकिनश्चात्ययिके	मनु ७.१६५	एकादशेन्द्रियाण्याहुर्यानि	मनु २.८९
एकाकी चिन्तयोनित्यं	मनु ४.२५८	एकोदशो भवेत्पुत्री द्वादशे	ब्र.या. ८.२९४
एकाक्षर द्वयपरं च	विश्वा ३.६४	एकादशेऽह्नि निर्वर्त्य	कात्या २४.१२
एकाक्षरं परं ब्रह्म	अत्रि १.१५	एकादशेऽह्नि सम्प्राप्ते	व २.६.३५३
एकाक्षरं परं ब्रह्म	वृ.या. २.६३	एकादशेऽह्नि संप्राप्ते	विश्वा ८.३०
एकाक्षरं परं ब्रह्म	मनु २.८३	एकादश्य उपवासश्च	वृता ८.२७८
एकाक्षरं परं ब्रह्म	व १.१०.६	एकादश्यष्टमीषष्ठि	भार ५.३
एकाक्षरं परं ब्रह्म	व १.२५.११	एकादश्यान् भुंजीत	वृ हा ८.३०८
एकाक्षर प्रदातारं यो	अत्रिस १०	एकादश्या मुपोष्याथ	वृ.गौ. १८.४८
एकाग्रः प्रयतो भूत्वा	विष्णु म १५	एकदश्यां कृष्णपक्षे	वृ हा ७.७०
एकाग्रमानसो भूत्वा	भार १२.५७	एकादश्यां द्वादश्यां वा	बौधा १.५.१३०

एकादश्यां न भुञ्जीत	वृ हा ८.३१६	एकाहात् क्षत्रिये शुद्धि	औ ६.४५
एकादश्युपवासस्य	वृ हा ६.३४३	एकाहिकं तु कुर्वीतं	वृ परा १२.१०२
एकादहेहि कुर्वीत	औ ७.१३	एकाहेन तु गोमूत्र	देवल ७६
एकादेव (मेव) ऋषीणां	दा १५	एकाहेन तु वैश्यस्तु	पराशर ११.४२
एकाधिकं हरेज्ज्येष्ठ	मनु ९.११७	एकाहेन तु षण्मासा	कात्या २४.९
एकान्तमशुचि स्त्रीभिः	औ ३.२१	एकीकृत्य चैतेषां महारंगेन	ब्र.या. ८.३११
एकान्तरद्वयन्तर	व १.१८.६	एकीकृत्य ततः प्राश्य	ब्र.या. ८.३४२
एकान्तरद्वयन्तरा	बौधा १.८.७	एकीकृत्याऽथ वा मूला	भार १८.५७
एकान्तरस्तु दोष्यन्तो	नारद १३.११३	दीर्घायु शूराः एके	वृ.गौ. १.३६
एकान्तरे त्वानुलोम्याद्	मनु १०.१३	एकेन दत्तेन वृषेण	वृ परा १०.३२
एकान्त मप्यविरोधे	व्यास १.३३	एकेन दत्तेन वृषेण	वृ परा ५.५३
एकान्नाशिषु पुत्रेषु	आश्व १.११९	एकेनापि भवेत्तेन	वृ ह १२.३९
एकान्हे अहेषड	ब्र. मा. ७.२५	एके वै तच्छमशानं	व १ १८.९
एता पादात्तु बहुभि	आप १.३१	एकोदराणां विज्ञेयं	औ ६.२८
एकार्चमथवैकं वा यजुः	औ ३.७७	एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने	प्रजा १७५
एकर्णवेन यत्प्रोक्ता	९.१९	एकैकखंडैरपि वा यत्र	भार १८.६४
एकालिंगे करे तिस्र	आश्व १.१०	एकैकन्यूनमित्याहुर्वर्णे	ब्र.या. २.४०
एका लिंगे करे तिस्र	व १.६.१६	एकैकमीपविद्वांसं दैवे	ब्र.या. ४.२५
एकालिंगे करे तिस्र	व्या २१३	एकैकमपि विद्वांसं दैवे	मनु ३.१२९
एका लिंगे गुदे तिस्रः	मनु ५.१३६	एकैकमष्टद्वितयशत	भार १४.५
एका लिंगे गुदे तिस्रोदस	दक्ष ५.५	एकैक मुपवासः स्यात्	अत्रिस १२९
एका शूद्रस्य	बौधा १.८.५	एकैकमुपवीतन्तु	वृ हा ५.४२
एकाशौचेन वा पश्चाद्य	आंपू ५४	एकैकं ग्रासमश्नीयात्	अत्रिस ११३
एकाहमपि कर्तव्यं	लिखित २	एकैकं ग्रासमश्नीयात्	मनु ११.२१४
एकाहमपि कर्मस्थो	कात्या २६.१६	एकैकं ग्रासमश्नीयाद्	पराशर ६.३१
एकाहमपि कौन्तेय	दा ६	एकैकं चाथ द्वौ द्वौ	आश्व १.९५
एकाहमपि कौन्तेय	लघुशंख २	एकैकं वर्द्धयेच्छुक्ले	यम १०
एकाहमेकभृताशी	पराशर ८.४४	एकैकं वर्द्धयेद्ग्रासं	बृ.य. २.६
एकाहम् अपि कौन्तेय	वृ.गौ. ६.७	एकैकं वर्द्धयेन्नित्यं शुक्ले	अत्रिस ११२
एकाहंतत्र निर्दिष्टं	आप ४.१०	एकैकं वर्द्धयेत् पिंड	व १.२७.२१
एकाहं तु स्थितं तोयं	वृहस्पति ६५	एकैकं वा भवेत्तत्र	औ ५.२६
एकाहस्तु समाख्यातो	दक्ष ६.६	एकैकं हासयेत् पिण्डं	पराशर १०.२
एकाहाच्छुद्ध्यते विप्रो	अत्रिस ८३	एकैकं हासयेत् पिंड	मनु ११.२१७
एकाहाच्छुद्ध्यते विप्रो	दा १२०	एकैकसम्भवेच्छ्राद्धे	ब्र.या. ४.१०
एकाहाच्छुद्ध्यते विप्रो	पराशर ३.५	एकैकस्य चोद कमण्डल	बौधा १.७.२६

एकैकस्य त्वष्ट शतं	या १.३०३	एको लुब्धस्त्वसाक्षी	मनु ८.७७
एकैका तु भवेन्मात्रा	बृ.या. २.२६	एको हतायैर्बहुभि	पराशर ९.४८
एकैकाष्ट गुणिज्ञेयाः	भार २.४७	एकोऽहमस्मीत्यात्मानं	मनु ८.९१
एकैको वोभयत्र	वृ परा ७.३३	एतच्चतुर्विधं विद्यात्	मनु ७.१००
एकैव भार्या विप्रस्य	शंख ४.७	एतच्चानुमतं तत्र ऋषि	ब्र.या. ४.१५१
एकोत्तरकुलं चापि सद्य	कपिल ७७२	एतच्छ्राद्धः प्रकथितः नान्य	कपिल २७३
एकोत्तरशतानां च कुलानां	कपिल ९३१	एतच्छ्रुत्वा तु वचनं	बृ.या. १.२०
एकोत्तरेण वृद्धया तु	व २.६.३४६	एतच्छ्रुत्वा तु वचनं	बृ.या. ६.३१
एकोद्दिष्टन्तु विज्ञेयं	औ ३.१२९	एतच्छौचं गृहस्थस्य	आश्व १.११
एकोद्दिष्टमदैवं	वृ परा ७.१५३	एतच्छौचं गृहस्थस्य	व्या २१४
एकोद्दिष्टं तस्य सूनोः	कपिल ११९	एतच्छौचं गृहस्थानां	मनु ५.१३७
एकोद्दिष्टं तु मातुः	ब्र.या. ३.३३	एतच्छौचं गृहस्थानां	वाधू १५
एकोद्दिष्टं दैवहीन	दा ७७	एतच्छ्रौतं ततः स्मार्त	वृ हा ८.७६
एकोद्दिष्टं दैवहीनं	या १.२५१	एतच्छिनः चतुष्कोण पाद	बृ.य. ४.२६
एकोद्दिष्टं परित्यज्य	ब्र.या. ३.२५	एतज्जपेदूर्ध्वबाहुः	बृ.या. ७.५३
एकोद्दिष्टं परित्यज्य	लघुशंख १४	एतत् इच्छामि विज्ञातुम्	वृ.गौ. ३.८
एकोद्दिष्टं परित्यज्य	लिखित २०	एतत्तु त्रिगुणं तज्ज्ञैः	वृ परा ९.१२
एकोद्दिष्टं षोडशं च	आंपू ९९१	एतत्तु त्रिगुणंतज्ज्ञैः	वृ परा ९.१६
एकोद्दिष्टं सदा कुर्यात्	ब्र.या. ३.१२	एतत्तु न परे चकुर्नापरे	मनु ९.९९
एकोद्दिष्टं सदातेषां	ब्र.या. ३.२८	एतत्तु परमध्येयं	बृह ९.१६
एकोद्दिष्टं रकार्धमेक	व २.६.३१३	एतत्तुल्यं तु सर्वेषामति	व २.६.४३५
एकोद्दिष्टविधिर्ह्ये	ब्र.या. ३.७१	एतत्तु विहितं पुण्यं	आंड १२.७
एकोद्दिष्टस्य ये चान्नं	वृ.गौ. १०.७४	एतत्ते कथितं सर्वगवां	बृ.म.४.११
एकोद्दिष्टे तथा काम्येदे	ब्र.या. ३.६१	एतत्ते कथितं सर्व प्रमाद	यम ६८
एकोद्दिष्टे निमित्त	ब्र.या. ३.१०	एतत्तेति च मन्त्रेण	आंपू ८५४
एकोद्दिष्टेऽपिकर्तव्यं	ब्र.या. ३.४१	एतच्छौचं गृहस्थस्य	व १.६.१७
एकोद्दिष्टे विशेषेण	वृ परा ७.८५	एत्रयात्पूर्वकस्य	आंपू ६७५
एकोद्दिष्टो परित्यज्य	दा २८	एतत् त्रिदैवं ज्ञेयं	बृ.या. २.७६
एकोनत्रिंशल्लक्षाणि	या ३.१०१	एतत् पञ्चविधं योगं	बृ.या. १.४४
एकोन वा ततो विप्रः	भार १५.६६	एतत् पराशरं शास्त्र	पराशर १२.७३
एकोनवत्यंगुलैः	भार १५.१३७	एतत्पादकयुक्तानां	आंपू १२.८
एकोऽपि वेदविद्धर्म	मनु १२.११३	एतत्पुण्यं पवित्रञ्च	बृ.गौ. २२.३३
एकोऽपिहि वृषो देयो	वृ परा १०.३१	एतत्प्रकाशपापानां	नारा १.१२
एकोऽब्द शतमश्वेन	वृ परा ६.३३१	एतत्प्रत्यङ्मुखस्थित्वा	भार ६.१३८
एकोभिधुर्यथोक्तस्तु	दक्ष ७.३५	एतत् प्रदक्षिणो कृत्य	वृ परा ११.२३२

एतत् प्रमाणमेवैके	कात्या २.१२	एतदेव व्रतं कुर्याद्	औ ९.२१
एतत्रयं हि पुरुषं	मनु ४.१३६	एतदेव व्रतं कुर्युरुप	मनु ११.११८
एतत् संहत शौचानां	दक्ष ६.१४	एतदेव व्रतं कृत्स्नं	मनु ११.१३१
एतत् संक्षेपतः प्रोक्तं	औसं ५१	एतदेव व्रतं पुण्यं	अत्रिस १२६
एतत् संक्षेपतः प्रोक्त	बृ.या. २.१५७	एतदेव स्त्रिया केशवपन	बौधा २.१.९९
एतत् सन्ध्यात्रयं प्रोक्तं	कात्या ११.१५	एतदेवहि कुर्वन्ति	वृ हा ७.११
एतत्सपिण्डीकरण	ब्र.या.७.७	एतदेवहि पिंजल्या	कात्या २.११
एतत्समष्टिलोकानां	आंपू ४९५	एतदेवाक्षरं ब्रह्म एतदेवा	बृ.या.२.३८
एतत् समस्त पापानां	वृ हा ६.४३७	एतदेवोच्यते श्राद्ध	ब्र.या. ३.३०
एतत्समतमित्युक्तं	विश्वा १.९०	एतद्ग्रासं विज्ञानीयत्	अत्रिस १२२
एतत्समस्तं विज्ञाय	भार ७.१०६	एतद्दण्डविधिं कुर्याद्	मनु ८.२२१
एतत्सर्वं चैकपात्रे	आंपू ५३१	एतद्देशप्रसूतस्य	मनु २.२०
एतत्सर्वं हि देवेश भक्तया वृ.गौ. १५.१०		एतद्ध्यानं ततः कुर्यात्	भार १३.४०
एतत्सर्वेषु कुण्डेषु	वृपरा ११.२७८	एतद्धि जन्मसाफल्यं	मनु १२.९३
एतदक्षरमेतांच जपेन	मनु २.७८	एतद्धि तनुच्छकर्म प्रविष्ट	कपिल १२३
एतदक्षरमोंकारं भूतं	बृ.या. २.८९	एद्धि पंचकं ज्ञात्वा	वृ परा २.४७
एतदन्तास्तु गतयो	मनु १.५०	एतद्धि वरणं प्रोक्तं	आंपू ७७७
एतदर्थं त्वया चैवमेतत्	कपिल ८३७	एतद्धि सोममध्य	बृह ९.१२७
एतदर्थं पुरा ब्रह्मा	कण्व २१६	एतदप्यर्चनं प्रोक्तं	वृ हा ५.८८
एतदर्थं विशेषेण	शंखलि २०	एतद् ब्रह्म त्रयीरूपं	वृ परा १२.२७४
एतदाचक्ष्व भगवन्	नारा ८.४	एतद्धिन्न तृतीयं	कण्व ३१८
एतदाद्य परं गुह्यं पवित्र	बृ.गौ.१६.४७	एतद्योगप्रधानाय कार्याणि	आंड ६.५
एतदार्यावर्तमित्या चक्षते	व १.१.१०	एतद् यो न विजानाति	या ३.१९७
एतदालम्बनं श्रेष्ठ	बृ.या. २.६०	एतद्दहस्यं गायत्र्यां	भार ६.४१
एतदुक्तं द्विजातीनां	मनु ५.२६	एतद्दहस्यं परमं एतद्दे	भार ११.१२१
एतदुच्चारयन्मर्त्यो	विष्णु म १७	एतद्द इति मंत्रेण	आश्व २३.७९
एतदुच्चार्य वै विप्रः	बृ.या. ९.५	एतद्ददनमित्येवं संकल्प्य	भार ७.४५
एतदुच्चार्य वै विप्रः	बृह ९.५	एतद्दः सारफल्युत्वं	मनु ९.५६
एतदेव चोदब्दं	मनु ११.१३०	एतद्द्विदत्तो विद्वांसः	मनु ४.९१
एतदेव चाण्डाल पतित	व १.२०.१९	एतदविदन्तो विद्वांसः	मनु ४.१२५
एतदेव परं प्रीति	वृ हा ७.१२	एतद्द्विदित्वा यो विप्र	बृ.या. ६.१६
एतदेव मनुप्रोक्तं	बृह ९.१५९	एतद्द्विद्वानं योधित्य	भार ६.१७५
एतदेव रेतसः प्रयत्न	व १.२३.२	एताद्विधानमातिष्ठेदरोगः	मनु ७.२२६
एतदेव विधिं कुर्याद्	मनु ११.१८९	एतद् विधानामातिष्ठेद्	मनु ८.२४४
एतदेव विपरीतममत्र	बौधा १.५.३२	एतद्द्विधानं विज्ञेयं	मनु ९.१४८

एतद् विधानं विदधाति	वृ परा ११.२३९	एतेन चण्डाली व्यवायो	बौधा २.२.७३
एतद्धिरुद्ध तत्सर्व	आंपू ६७३	एतेन मातृवृत्ति	व १.१९.१९
एतद्वेदप्रमाणन्तु शाखा	ब्र.या. १.३७	एतेन विधिना प्रजापते	बौधा १.३.१३
एतद्वै पावनं स्नानं	वृ परा ११.१५	एतेन विधिना सर्वे देवाः	बृ.गौ. १८.३४
एतद् वैश्यस्य धर्मोयं	ल हा २.१०	एतेन सम्पूज्य गणाधिनाथं	वृ परा ११.३१
एतद्वोऽभिहितं शौचं	मनु ५.१००	एतेन सर्वपालानां विवादः	नारद ७.१९
एतद्वोऽभिहितं विधानं	मनु ३.२८६	एतेन सोमविक्रयी	व १.२१.३४
एतद्वोऽभिहितं सर्व	मनु १२.११६	एतेनैव गर्हिताध्यापक	व १.२३.३०
एतद्वोऽयं भृगुः शास्त्र	मनु १.५९	एतेनैव चाण्डाली	व १.२३.३५
एतन्नाम्ना मुनिस्तत्र	वृ परा ११.१९३	एतेनैव विधानेन	कण्व ६७७
एतन्नाम्नां गति	वृ हा ७.५८	एतेनैवाभिशास्तो	व १.२३.३१
एतन्मन्त्रत्रयं वाचा	आंपू ८२६	एतेऽन्त्यजाः समाख्याता	व्यास १.१२
एतन्मात्राप्रयोगेण	बृ.या. ८.१८	एते परमहंसा वैनौष्टिकां	वृ परा १२.१७३
एतमेके वदन्त्यग्निं	बृह ११.५६	एते परस्य यत्नेन	वृ परा १२.३२
एतमेके वदन्त्यग्निं	मनु १२.१२३	एतेनपानशरीरांगदेवता	भार ४.१९
एतमेव विधिं कृत्स्नं	मनु ११.२१८	एते पूर्वर्षिभिः प्रेप्तनाः	वृ.गौ. १०.९८
एतयर्चा विसंयुक्तः	मनु २.८०	एते प्रशस्ताः कथितां	ल हा ४.८
एतया दिवा रेतः सिक्त्वा	बौधा २.१.३४	एते प्रशस्ताः कथिताः	विश्वा १.६३
एतयोरन्तरा यत्ते	बौधा १.१०.३३	एतेभ्यः प्रतिह्वीया	अ १.२७
एतयोरेव संयोगाज्जगत्	वृ परा ४.६	एतेभ्योऽप्यधिक प्रोक्तं जीव	कपिल १५०
एतस्मात् कारणाद्ध्यानं	बृह ९.३३	एतेभ्यो हि द्विजाग्रयेभ्यो	मनु ११.३
एतस्मिन्नन्तरे तत्र	आंपू ५८६	एते मनुस्तु सप्तान्यान्	मनु १.३६
एतस्मिन्नेनसि प्राप्ते	मनु ११.१२३	एते महर्षि देशास्तु	बृ.गौ. १४.४७
एतस्मै नवचस्त्रेण	व २.३.४७	एते मुद्राश्चतुर्विंशा	विश्वा ६.६४
एतस्य ब्रह्मणान्यस्तं	बृह ९.७०	एते यस्य गुणाः संति	दक्ष २.५०
एते चतुर्णां वर्णानामापद्धर्माः	मनु १०.१३०	एते यान्त्यन्धतामिसं	वृ परा ६.२३१
एते च पितरो दिव्यास्तथा	वृ परा ७.१७०	एते राष्ट्रे वर्तमाना	मनु ९.२२६
एतेचस्फटिकाप्रख्याः	भार ७.३८	एते वज्र्याः प्रयत्नेन	बृ.य. ३.३८
एतेचान्ये च पितर	वृ परा २.१९५	एते वाऽनेऽपि मुनयो	भार १.५
एते चान्ये च राजेन्द्र	बृ.गौ. १९.८	एते वृक्षा प्रशस्तास्यु	भार ५.१०
एते चैव विशुध्यन्ति	अ ८२	एते वै द्वादशादित्या	वृ परा २.१९३
एते तिलास्तु विधिना	वृ परा ७.१९७	एते शुभग्रहास्त्वेषां	भार १५.५४
एते दोषा नराणां स्युः	शाता ५.३९	एते श्राद्धे च दाने च	बृ.य. ३.३७
एते दोषा भवन्तीह	आंपू ८.४	एते श्राद्धे च दाने च	यम ३२
एते धर्मास्तु चत्वार	शंख ४.३	एते श्राद्धेषु सन्तपर्या	वृ परा ७.१७१

एते षट्सदृशान् वर्णानां	मनु १०.२७	एता न स्युर्दिता	औ ३.६१
एतेषान्तु मुनिस्थानां	भार १५.५६	एतानामपि सर्वेषां	भार १८.९०
एतेषामल्लयोगेन तद्	आंपू ५२८	एतानाहुः कौटसाक्ष्ये	मनु ८.१२२
एतेषामुदकं पीत्वा	अत्रिस ११७	एतानि क्रमतोऽश्नीयाद्	संवर्त १३१
एतेषां ग्रहणे विप्रः क्षयेन्	अ ८७	एतानि नव कर्माणि	दक्ष ३.१०
एतेषां निग्रहो राज्ञः	मनु ८.३८७	एतानि नवकर्माणि	ब्र.या. १२.३५
एतेषां परिचर्या शूद्रस्य	व १.२.२४	एतानि ब्राह्मणः कुर्यात्	आश्व १.७
एतेषां पावनार्थाय	ब्र.या. २.८	एतानि सततं पश्येन्	नारद १८.५२
एतेषां ब्राह्मणाद्याश्च	हा ४.१५०	एतानुद्दिश्यजुहुयादाज्यं	व २.६.३३४
एतेषां ब्राह्मणानि	कण्व ५१५	एतानुद्दिश्य होतव्य	व २.६.१८८
एतेषां मासजानां स्याद्	आंपू ५०६	एतानुद्दिश्यहोतव्य	व २.३.८१
एतेषां यस्तु भुंक्ते	अत्रिस १७१	एतानेके महायज्ञान्	मनु ४.२२
एतेषां विहीतं पुण्यं	आंड ११.११	एतान् दोषानवेक्ष्य	मनु ८.१०१
एतेषां शाखयामध्ये	ब्र.या. १.३३	एतान् द्विजातयो देशान्	मनु २.२४
एतेषां स्पर्शानात्पापं	वृ.य. ३.५३	एतान्नियोजयेद्यस्तु	यम ३४
एतेषु ख्यापयन्नेनः	पराशर १२.६२	एतान्यकामतः स्पृष्ट्वा	वृ हा ८.१०१
एतेषु चान्येष्वपि	वृ परा ११.१०६	एतान्यन्यानि राजेन्द्र	वृ.गौ. ८.९१
एतेषु त्रिषु नष्टेषु	ल हा ३.९	एतान्यप्यभिमर्त्याध	भार ७.७३
एतेषु दद्याद् विप्राय	शाता ३.१७	एतान्यमूनि द्रव्याणि	बार १३.२९
एतेषु भागं गृह्णानो	अ ११२	एतान्यष्टादशर्क्षाणि	भार १५.४७
एतेष्वपि यथालब्धो	भार १५.१५१	एतान्येनांसि सर्वाणि	मनु ११.७२
एतेष्व विद्यमानेषु	मनु २.२४८	एतान्येव त्रीणिवैश्यस्य	व १.२.२३
एतेष्वेकस्त वद्धे	भार ६.१३	एतान्येव प्रमाणानि	नारद २.२३
एते सर्वेऽपि विप्राणां	पराशर ७.३९	एतान्येवानादेशे	ब १.२२.९
एते स्युः पितरस्तीर्थे	व्या २९५	एतान् विहर्गोता	मनु ३.१६९
एते ह्यण्डकपाले द्वे	बृह ९.६८	एतान् व्याहृत्य रौद्रा	बृ.या. ७.१५२
एतांस्त्वभ्युदितान्	मनु ४.१०४	एतान्सन्तर्पयेत्पश्चाद	व २.६.१४३
एता एतां सहानेन	कात्या ११.८	एताः पाकं न भुंजीत	व्या २२६
एता गभस्तिभि पीता	बृह ९.४९	एताः प्रकृतयो मूलं	मनु ७.१५६
एतादृक्पुत्रकरणे गुणा	लोहि ५६९	एता भवन्ति सततं तस्मात्	कपिल ४२५
एतादृगर्भिसन्ध्येकरहितेन	लोहि ३३१	एताभ्यां तु हुतेनैव	वृ परा ४.१८०
एतादृशान्युत्सवास्तु	कण्व ६९६	एताभ्यां स्थापयेदकं	वृ परा ११.६०
एतादृशी लोकरिति	लोहि ४५२	एतभ्योऽप्यधमास्वेव	वृ परा १२.३३७
एतादृशेषु कृत्येषु सा	आंपू २१७	एता मयोक्तास्तव	वृ परा १०.१२१
एता दृष्ट्वाऽस्य जीवस्य	मनु १२.२३	एतावती च तद्दृष्टि	कण्व १९६

एतावद्देहि मे द्रव्यं	वृ परा ६.८	एधोदकयवसकुशलाजा	व १.१६.७
एतावन्त्येव सर्वत्र	आंपू ३.५१	एनं रक्ष जगन्नाथ	वृ हा २.१.४९
एतावानेन पुरुषो	मनु ९.४५	एनं रक्ष जगन्नाथ	वृ हा २.१.२१
एताश्चतस्रो यो वेत्ति	भार १९.३६	एनसां स्थूलसूक्ष्माणां	मनु ११.२.५३
एताश्चान्याश्च लोके	मनु ९.२४	एनास्विभिर्निर्णितैः	मनु ११.१.९०
एताश्चान्याश्च सेवेत	मनु ६.२९	एनो राजनामृच्छति	व १.१९.३१
एता सर्वा द्विजो विद्वान्	अ ११.८	एपद्विधानं सकलं	भार ६.१.७२
एतासां तनयाः सर्वे	आंपू ४.५७	एभि पंचामृतैः स्नाप्य	वृ हा ८.३०
एतासां दशधेनूनामितरासां	अ ३३	एभि गुणैः पूर्ववाक्यः	वृ हा ३.१.६१
एतासु मतिदुष्टासु	वृ हा ६.२.९५	एभिरुद्धृत्य होतव्यं	पराशर ११.३.४
एतास्तिमस्तु भार्यार्थे	मनु ११.१.७३	एभि सन्दूषिते कूपे	अत्रिसर ०.६
एतास्तु द्विजवर्येण	अ ११.६	एभि सप्ताशनैरुक्तं	वृ परा ९.१.५
एतास्तु व्याहृती	बृ.या.३.१०	एभि सम्पर्कमायाति	संवर्त १.२.४
एतै गुणैः विहीनस्तु	वृ हा ५.८०	एभ्यस्तूत्कृष्टमूल्यानां	नारद १.८.८५
एतैर्द्रव्यैस्तुविधिवत्	भार ७.७८	एभिर्द्रव्यैर्यथाकालं	व्या ४२
एतैः द्विजातयः शोध्या	मनु ११.२.२७	ए यथाकुलं चौलं कर्तव्यं	व २.३.३६
एतैरवितरं धार्य उपवीत	भार १६.३५	एरण्डमरुवं चैव कोविदार शाण्डि	३.१०.७
एतैरुद्धृत्य होतव्य	पराशर ११.३.५	एलालवंगकंकोलं पत्र	व २.७.६४
एतैरुपायैरन्यैश्च	मनु ९.३.१२	एवञ्च कुर्वता येन	ल हा ५.८
एतैरेव गुणैर्युक्त	या १.५५	एवञ्च क्षत्रियां वैश्या	आप ७.२०
एतैरेव गुणैर्युक्तं	शंख ५.१.८	एवञ्चरति यो विप्रो	मनु २.२.४९
एतैरेव यदा स्पृष्टः	आप ४.८	एवञ्च सर्व भूतानि	ब.या. २.१०.२
एतैर्मन्त्रैः प्रयुञ्जीत	बृह १०.७	एवमाग्निञ्च जुहुयाद	व २.४.६५
एतैर्लिङ्गैर्येत्सीमा	मनु ८.२.५२	एवमध्ययनं कुर्यात्	व २.३.२७०
एतैर्ब्रतैरपोहेत पापं	मनु ११.१.०३	एवमध्यापयेच्छिष्यान्	व २.३.१६७
एतैर्ब्रतैरपोहेत पापं	मनु ११.१.७०	एवमननञ्च सूर्यश्च	वृ.गौ. १.२.४३
एतैर्ब्रतैरपोहेयुर्महापातकिनो	मनु ११.१.०८	एवमन्येषु नवस्तु	आंपू ४०.६
एतैर्ब्रतैरपोह्य स्यादेनो	मनु ११.१.४६	एवमन्यैर्महादानै	अ १६
एतैर्विवादान् संत्यज्य	मनु ४.१.८१	एवमन्वहमभ्यासी	व्यास १.३.५
एतैस्तु तर्पितैः सदिम्	वृ परा २.१.९८	एवमभ्यर्च्य गोविंद	वृ हा ५.४.१९
एतैस्तु त्र्यहमभ्यस्तं	शंख १८.९	एवमभ्यर्चयेद्देवं	व २.६.१६५
एतैस्तु पुनरावृत्ति	वृ परा १२.२.५४	एवमर्थं विदित्वैव	व २.६.२२४
एतैः स्पृष्टो द्विजो नित्यं	अत्रिस २.८६	एवमशुचि शुक्लं	बौधा २.१.७२
एतौ तु पार्श्वगौशेयौ	बृह ९.९७	एवमाचमनस्योक्तं विधानं	भार ४.४१
एधोदकं मूलफलं	मनु ४.२.४७	एवमाचारतो दृष्ट्वा	मनु १.१.१०

एवमादिगुणोपितमाचार्य	शाण्डि १.१०७	एवमेवगृहीताग्ने	कात्या २३.१४
एवमादिगुणोपेत नारी	शाण्डि ३.१.४६	एवमेव नवाब्दान्तं	नारा ३.१४
एवमादिगुणोपेतं निर्मलं	शाण्डि १.५९	एवमेव परे चापि तनयाः	लोहि २८९
एवमादिगुणोपेतं भक्ति	शाण्डि १.८६	एवमेव प्रातः प्राङ्मुख	बौधा २.४.१३
एवमादिगुणोपेतं भूतलं	शाण्डि १.७७	एवमेव प्रातरुपस्थाय	बौधा २.४.२८
एवमादिगुणोपेतं शिष्य	शाण्डि १.११२	एवमेव भवेदन्य	आंपू ३३१
एवमादि निषिद्ध यत्	वृ हा ४.१.७९	एवमेवं वृत्तिगेहक्षेत्रेष्व	कपिल ६७९
एवमादि यथाशास्त्र	नारा ८.१४	एवमेवनुवर्ततेरन्देशं	वृ परा १.४७
एवमादीनि चान्यानि	व २.६.३१	एवमेवाष्प नड्वाहो	वृ.गौ. ९.५१
एवमादिनि शाकानि	व २.६.१७३	एवमेवाहिताग्नेषु	कात्या २३.१
एवमाद्य मसद् द्रव्यं	वृहा ४.१.५६	एवमेषोऽग्निमान्	कात्या २१.१६
एवमाद्यान् विजानीयात्	मनु ९.२६०	एवं अभ्यर्चनं विष्णो	वृ हा ८.८१
एवामाद्येषु चान्येषु	अत्रि ४.६	एवम् आत्म उद्भवव्य	वृ.गौ. २.१
एवमाब्धिकमानेन	वृ परा १२.३६८	एवम् उको हृषीकेशो	वृ.गौ.६.४
एवमिन्द्रेण पृष्टोऽसौ	वृहस्पति ३	एवं एद्यप्यानिष्टेषु	मनु ९.३१९
एवमिष्टिम्कुर्वीत	व २.६.४२४	एवं कर्मविशेषेण जायन्ते	मनु ११.५३
एवमिष्टिम्प्रकुर्वीत	व २.६.४१४	एवं कुर्यात्सदावृत्तिं	व २.६.१३०
एवमुक्तः क्षणं ध्यात्वा	आप १.८	एवं कुर्यात् सुतस्यैव	आश्व ५.५
एवमुक्तः सुरैः सर्वैः	वृ.गौ.१०.३३	एवं कृते कथाज्ञित्	आप १.७
एवमुक्तस्तु विप्रर्षिस्तेन	वृ हा १.६	एवं कृते तु यत् किञ्चित्	वृ परा ११.२७०
एवमुक्ता व्रजेयुस्ते	कात्या २२.१०	एवं कृते त्वन्यस्तुः कर्मणे	कपिल ३९०
एवमुक्त वसुमती देवदेव	विष्णु १.४८	एवं कृते भवेत्स्पष्टं	नारा ५.४८
एवमुक्तो हृषीकेशो	वृ.गौ. ९.५	एवं कृते विशुद्धोऽभूतं	नारा ३.१८
एव मुक्त्वा विषं शाङ्ग	या २.११३	एवं कृतोदका सम्यक्	कात्या २२.३
एवमुद्दीश्य वर्णेषु	आंउ ५.१०	एवं कृत्यन्तु कुर्वीत	शंख ३.१२
एवमेतत्पुरावृत्त वैष्णवं	वृ.गौ.२२.४६	एवं क्रमेण सम्पूज्य	ब्र.या. २.१२५
एवमेतत्समासाद्य तद्योगं	आंउ ६.४	एवं क्षीराब्धियजनं	हा ७.२६७
एवमेतद्वत्सरस्य स्थलेऽस्मिन्	कपिल ५८	एवंक्षुद्रसमिधाम्	बौधा १.६.२४
एवमेद्विधं चर्म	वृ परा १०.१२५	एवं गच्छन् स्त्रियं	या १.८०
एवमेतादृशीं संम्यक्	कपिल ४१७	एवं गां च हिरण्यं	व १.६.३०
एवमेताः समभ्यर्च	भार ११.६५	एवं गृहपतिर्दग्धः सर्व	कात्या २१.१४
एवमेतेरिदं सर्व	मनु १.४१	एवं गृहार्ची बिम्बस्य	वृ हा ५.१.७६
एवमेनः शमं याति	ब्र.या. ८.६	एवं गृहाश्रमे स्थित्वा	मनु ६.१
एवमेनः शमं याति	या १.१३	एवं चरन् सदा युक्तो	मनु ९.३२४
एवमेव तथान्यो पि	आंपू १०५१	एवं चतुर्विधोहस्तः	भार २.६१

एवं चतुर्विंशतिस्तु मूर्ती	वृ हा ७.१२७	एवं दिग्विषयाः प्रोक्ता	भार २.१९
एवं चतुष्पदानाञ्च	पराशर ६.१४	एवं दृढव्रतो नित्यं	मनु ११.८२
एवं चापि दिवा कृत्वा	आश्व १.१३७	एवं देवीं नृसिंहस्य	वृ हा ३.३५९
एवं चेहात्विजामन्यद्	कण्व ३०१	एवं देवीं स्मरेन्नित्यं	व २.६.८४
एवं छेदनेभेदन	बौधा १.७.६	एवं देहादिभिर्युक्तः	औ ३.१
एवं जनानां पुरतो लज्जयेतं	लोहि ६२१	एवं द्रव्याणि निक्षिप्य	वृ हा ८.२०
एवं जातीयका ये स्युस्ते	आंपू १०६८	एवं द्रव्यार्जनं शक्त्या	व २.६.१२८
एवं ज्ञात्वा तु मन्त्राणां	बृ.या. ७.१८३	एवं द्वादशकृत्वस्तु	भार ३.१४
एवं ज्ञात्वा तु यो विप्रो	बृह ९.१५०	एवं द्वादशवर्षाणि	वृ. गौ. १८.३१
एवं ज्ञात्वा तु यो विप्रो	ब्र.या. २.१८२	एवं द्वादश विप्राणां	वृ परा ११.२८३
एवं ज्ञात्वानुवर्त्याऽधः	भार १५.७६	एवं द्विजातिमापन्नो	व्यास १.२२
एवं ज्ञात्वा मनोरथं	वृ हा ३.१७४	एवं द्विजोत्तमः सम्यङ्ग	भार १३.३०
एवं ज्ञात्वा प्रभाते तु	विश्वा १.४	एवं द्वितीयो विज्ञेयः	लोहि ३२.८
एवं ज्ञात्वा विधानेन	व २.३.११२	एवं धर्मः कृतः सद्यो	वृ.गौ. १.३६
एवं तु तनये दत्ते भिन्न	कण्व ७००	एवं धर्म प्रसक्तेन पृष्ठः	बृ.गौ. ३.९
एवं तु त्रिविधं कृत्वा	बृ.या. ८.५०	एवं धर्मविदां श्रेष्ठ	वृ.गौ. १०.८३
एवं तृतीयपर्याये	व २३.३३	एवं धर्मात्परः नास्ति	वृ.गौ. २.३२
एवं तृतीय संस्कारं कृत्वा	वृ हा २.१०६	एवं धर्मो गृहस्थस्य	ल हा ४.७५
एवं तैलसर्पिषी उच्छिष्ट	बौधा १.६.५०	एवं धर्म्याणि कार्याणि	मनु ९.२५१
एवं तैः समनुज्ञातः	आंउ ३.५	एवं ध्यात्वा जगन्नाथं	वृ हा ३.२६९
एवं त्रयाणामेकस्य	कपिल ७८९	एवं ध्यात्वा जपेन्	वृ हा ३.३८३
एवं त्रि पूर्ववच्चैव	आश्व १०.२०	एवं ध्यात्वा हरिं	वृ हा ३.१३३
एवं त्रिरात्रं कुर्वीत	वृ हा ५.४४४	एवं ध्यात्वा हरिं	वृ हा ३.३१७
एवं त्रिर्मृत्तिकास्नाने	वाधू ८०	एवं ध्यात्वा हरि नित्यं	वृ हा ३.३३६
एवं त्रिवासरं कर्त्वा	वृ हा ७.२९५	एवं नवविधा प्रोक्ता	वृ हा ८.१५०
एवं त्रिविदमुद्दिष्टं	बृ.या. ८.४७	एवं नारायणबलिं कृत्वा	व २.६.३९६
एवं त्रिषष्टिभेदैस्तु	बृ.या. २.१०६	एवं नारी कुमारीणां शिरसो	पराशर ९.५६
एवं त्रिषु च संध्यासु	भार १२.१७	एवं नित्योत्तत्सवं कुर्याद	वृ हा ६.६२
एवं दत्तस्य पुत्रस्य काले	कपिल ४१८	एवं निर्वपणं कृत्वा	मनु ३.२६०
एवं दत्ता सहस्राक्ष	वृहस्पति १५	एवं न्यासविधिं कृत्वा	वृ हा ५.२००
एवं दत्त्वा तु राजेन्द्र	वृ.गौ. ९.७०	एवं न्यासविधिं कृत्वा	व २.६.७२
एवं दत्त्वा महीं राजन्	वृ.गौ. ६.१३४	एवं न्यासविधिं कृत्वा	वृ परा ४.१२९
एवं दशविधं प्रोक्तं दानं	कपिल ९१४	एवं न्यास विधिं कृत्वा	वृ हा ३.१९
एवं दशविधं स्नान	भार ११.८९	एवं न्यासविधिं कृत्वा	हा ३.१२५
एवं दशाहं निर्वर्त्य	व २.६.३५२	एवं पंचत्रिंशद्वर्षपर्यन्तं	आंपू १५१

एवंपंचदशार्ध	आंपू ३४८	एवं यः सर्वभूतेषु	मनु १२.१२५
एवं पन्था महान्प्रोक्तं	कण्व ७१७	एवं यो भुज्यते नित्यं	ब्र.या. २.१८४
एवं परिचन्ती सा	व्यास २.३६	एवं यो वर्तते गोषु	वृ परा ५.४१
एवं पश्यन् सदा राजा	नारद १.६५	एवं राजन्य पंक्त्यांचेदू	कपिल ३३७
एवं पाशुपते विद्यात्	वृ.या. २.९७	एवं राजन्यं हत्वाऽष्टौ	व १.२०.४१
एवं पितामहे चैव	आश्व २३.३५	एवं राजन्यवैश्ययोः	व १.२१.१८
एवं पितामहे जीवे	आंपू १०७	एवं लब्ध्वा गुरोर्विम्ब	वृ हा २.१५०
एवं पूर्वं मयाप्युक्तं	आंपू ४.६	एवं वक्ष्यामहे किन्तु	वृ हा ३.२११
एवं पृष्टः प्रत्युवाच	पु २	एवं वदति देवेशे केशवे	वृ.गौ. १८.३५
एवं पृष्टः स इन्द्रेण	अत्रि ६.३	एवं वनाश्रमे तिष्ठन्	ल हा ६.२
एवं प्रक्रमादूर्ध्वम्	बौधा १.६.७	एवं वर्षाष्टकेऽतीते ताती	आंपू ६४
एवं प्रतिग्रहीतापि	वृ परा १०.६८	एवं वारि द्विजः सिंचन	वृ परा २.५९
एवं प्रतिष्ठां कुर्वीत	व २.७.१०६	एवं विजयमानस्य	मनु ७.१०७
एवं प्रदक्षिणं कृत्वा	या १.२५०	एवं विदित्वा सत्कर्म	वृ हा ७.२६
एवं प्रयत्नं कुर्वीतं	मनु ७.२२०	एवं विधं चिन्तयेतु	बृह ९.१२३
एवं प्राचीप्रतिच्यास्तु	भार २.७५	एवं विधानेन माता	व २.६.३०६
एवं प्राणहुति कुर्यात्	ल हा ४.६६	एवं विधानूपो देशान्	मनु ९.२६६
एवं प्रात्याह्निकं धार्यं	वृ हा ५.६४	एवंविधास्तु ये संध्या	बृह १०.१८
एवं बाल्ये महद्दुःखं	वृपरा १२.१८१	एवं विनायकं पूज्यं	या १.२९३
एवं ब्राह्मणी पंच प्रजाता	व १.१७.६९	एवं विप्रान् लोकानां	अ ७
एवं भुक्त्वा द्विजश्चैव	आश्व १.१८०	एवं विष्णुमते स्थित्वा	वृ परा ७.३२०
एवं भुक्त्वा विधानेन	व २.६.२१५	एवं वृत्तस्य नृपतेः	मनु ७.३३
एवं भूताश्च ये विप्रास्तेष्मं	परा १२.२०७	एवं वृत्तांसवर्णा स्त्री	कात्या २०.६
एवं मध्यद्वयं ज्ञात्वा	भार २.७४	एवं वृत्तांसवर्णा स्त्री	मनु ५.१६७
एवं मंत्रान् समुच्चार्य	शंख ९.१०	एवं वृत्तोऽविनीतात्मा	या ९.१५५
एवं महाधरादानं गोमेध	कपिल ९२५	एवं वेत्ति य आत्मान	दृह १.५५
एवमाग्रयणस्मार्ततण्डुलानां	कण्व ७७६	एवं वेदे धर्ममूले परं	कपिल २१
एवं मातामहाचार्यं	या ३.४	एवं वैश्यो राजन्यायां	व १.२१.६
एवं मातुः सपिण्डे तु	आंपू १००६	एवं व्रतसमाचारा	व २.५.८२
एवं यः कुरुते विप्रः	वृह ९.१२०	एवं शनिदिने देवं	हा ५.३६२
एवं यज्ञवपुः विष्णुः	वृ हा ७.१६	एवं शरीरं संस्नाप्य	व २.६.३१६
एवं यज्ञ वराहेण भूत्वा	विष्णु १.१२	एवं शुद्धस्ततः पश्चात्	पराशर ६.३९
एवं यथोक्तं विप्राणां	मनु ५.२	एवं शुद्धिं सुरापस्य	संवर्त ११९
एवं यः सर्वदेवानां	वृ परा १०.३६४	एवं श्रद्धैः समस्तान्यः	वृ परा ७.३२२
एवं यः सर्वभूतानि	मनु ३.९३	एवं श्रुत्वा वचः तस्य	वृ.गौ. ३.१

एवं श्रुत्वा वचः पुण्यम्	वृ.गौ. २.५	एवं सम्पूजयित्वा	व २.६.११४
एवं षड्गुणमायाति	ब्र.या.३.३१	एवं संपूजयेद्देवं	वृ हा ५.३४९
एवं सङ्कल्प्य सपुष्पं	ब्र.या. २.१५६	एवं सम्पूजयेद् विष्णु	वृ हा ५.५६२
एवं संख्याक्रमं ज्ञात्वा	भार ९.१०	एवं सम्प्रार्थ्य देवेशं	व २.४.२८
एवं संख्याफलं प्रोक्तं	भार ७.१७	एवं सम्यग् धविर्हुत्वा	मनु ३.८७
एवंस जाग्रत् स्वप्न	मनु १.५७	एवं सम्यग्विधाने	भार ६.१०८
एवं संचिन्त्य मनसा	मनु ११.२३२	एवं संवत्सरं जप्त्वा	वृ हा ३.३४०
एवं सति तु यो मूढो	कण्व २२०	एवं सर्वमिदं राजा सह	मनु ७.२१६
एवं सति पुनर्नार्या अधिकार	लोहि ४८४	एवं सर्वं जगदिदं	वृ.गौ. १.७१
एवं सति शरीरस्थः	बृह ९.३१	एवं सर्वं विधायेदमिति	मनु ७.१४२
एवं सत्यत्र जगति वनितानां	लोहि ५१२	एवं सर्वं स सृष्ट्वेदं	मनु १.५१
एवं सत्यत्र जनने	आंपू ३४३	एवं सर्वविधिं ज्ञात्वा	भार ८.१२
एवं सत्यत्र भूयश्च	लोहि ९८	एवं सर्वानिमान् राजा	मनु ८.४२०
एवं सत्यत्र यः कश्चिद्	आंपू ५५५	एवं सर्वासु अवस्थासु	वृ.गौ. ३.८८
एवं सत्यत्र यो मर्त्यः	आंपू ५४३	एवं सर्वेऽपि तिथयो	कण्व २८
एवं संध्यां बिनासवीं	भार ६.१७०	एवं सह वसेयुर्वा	मनु ९.१११
एवं संध्यामुपास्याधा	भार ६.१३०	एवं साधुभिराचीर्णमेव	शाण्डि १.४४
एवं संन्यस्य कर्माणि	मनु ६.९६	एवं सिद्धहविषाम्	बौधा १.६.४७
एवं सप्तविधं स्नानं	भार ५.५१	एवं सुनियताहारा	वृ हा ८.२११
एवं सप्रार्थं येदेवं ईश्वरं	व २.४.८२	एवं सूर्याभिनिर्मुक्तो	व १.२०.६
एवं स भगवान् देवो	मनु १२.११७	एवं स्नातकतां प्राप्तो	व्यास २.१
एवं समर्चनं कृत्वा	व २.६.१०२	एवं स्पष्टं पदंन्यास	भार ६.८६
एवं समाचरेद्धीमान्	वृ हा ६.३२३	एवस्मिन्नेव तत्पिण्डे	आंपू ३९४
एवं समार्जनं कृत्वा	बृ.या. ७.१९०	एवं स्वभावं ज्ञात्वाऽऽसां	मनु ९.१६
एवं समाहितमनाः प्राणान्	भार १९.२७	एवं हि कपिला राजन्	वृ.गौ. ९.३३
एवं समुद्धृते त्वेषामियं	मनु ९.११६	एवं हि तर्पणं कृत्वा	वृ परा २.२०७
एवं संपूज्य देवेशं	बृ.या.७.१०६	एवं हि नामकरणं कर्तव्यं	व २.२.३०
एवं संपूज्य देवेशं	वृ हा ५.३३९	एवं हि नाम संस्कारं	वृ हा २.१०३
एवं सम्पूज्य देवेशं	वृ हा ५.३८०	एवं हि प्रणवं ज्ञात्वा	ब्र.या. २.१४३
एवं संपूज्य देवेशं	वृ हा ५.३८८	एवं हि मृत्तिकाशौचं	कण्व १२७
एवं सम्पूज्य देवेशं	वृ हा ५.३९३	एवं हि यः चतुर्वेदी	वृ.गौ. ४.३१
एवं सम्पूज्य देवेशं	वृ हा ५.५१५	एवं हि विधिना सम्यक्	वृ हा २.१४१
एवं सम्पूज्य देवेशं	वृ हा ५.५६१	एवं हि विप्राः कथितो	ल हा ४.७७
एवं सम्पूज्य देवेशं	वृ हा ७.८६	एवं हि शुक्लपक्षादौ	व १ २३.४१
एवं सम्पूज्य मानस्तु	वृ हा ५.४१०	एवं हि सर्ववेदानाम्	वृ.गौ. ४.३०

एवं हृद्ययनं विष्णोरुत्तमं	वृ हा ५.१००	एष संक्षेपतश्चौक्तः	बृ.या.३.३१
एवं हि सर्वभावस्थं	बृह ९.१५२	एष सर्वं समुद्दिष्टः	मनु १२.८२
एवं होमत्रयं कृत्वा	विश्वा ८.७६	एषसर्वं समुद्दिष्टास्त्रि	मनु १२.५१
एवं होमविधानेन सायं	व २.४.६६	एष सर्वाणि भूतानि	मनु १२.१२४
एवं ह्यपात्रसंयोगात्त	बृह ११.१८	एष स्त्रीपुंसयोरुक्तो	मनु ९.१०३
एवास्मै वचो वेदयन्ते	बौधा १.२.५०	एष स्वर्ग्यः समायातः	वृ परा ४.१९८
एष इत्यनुवाकाम्यां	वृ हा ६.१०५	एष हि प्रथमो यज्ञो	कण्व ४९३
एष एव परो धर्मो	वृ परा १२.५४	एषा धर्मस्य वो योनि	मनु २.२५
एष एव मया प्रोक्तः	संवर्त १९९	एषा पापकृता मुक्ता	मनु ११.१८०
एष एव विधि दृष्टो	नारद ३.७	एषामन्यतमत्कृत्वा	बौधा २.१.५७
एष एव विधि प्रोक्त	शंख १०.१९	एषामन्यतमं प्रेतं	संवर्त १७३
एष दण्डविधि प्रोक्तो	मनु ८.२७८	एषामन्यतमं यच्चाप्यु	आंपू १२.६
एषधर्मः समासेन	औ ३.७९	एषामन्यतमाभावे	वृ. ल. हा १.२०
एवधर्मः समुद्दिष्टो	ल हा १.३०	एषामन्यतमे स्थाने	मनु ८.११९
एषधर्मः समाख्यातः	संवर्त ३४	एषामन्दतमो यस्य	मनु ३.१४६
एष धर्मोऽखिलेनोक्तो	मनु ८.२१८	एषामभावे पूर्वस्त्य	या २.१३९
एष धर्मो गवाश्वस्य	मनु ९.५५	एषामलामे कार्याःस्यु	भार १४.६१
एषधर्मोऽनुशिष्टो वो	मनु ६.८६	एषामसम्भावे कुर्यादिष्टं	या १.१२६
एषधाता विधाता च	बृह ९.७९	एषामुच्छिष्टतानास्थित	भार १५.१५३
एष निष्कण्टकः पंथा	वृ हा ५.१७	एषामेव प्रभेदोऽन्यः	नारद १.२०
एष नौयायिनामुक्तो	मनु ८.४०९	एषां गत्वा तु योषां वै	यम ५५
एष प्रोक्तो द्विजातीनाम	मनु २.६८	एषां यदेककं वापि कृतं	कपिल ९१७
एष मन्त्रा प्रयोग	बृ.या. ८.६	एषां तु धर्म्याश्चत्वारो	नारद १३.४४
एष वः कथितः सम्यक्	औ ७.२२	एषां त्रिरात्रंअभ्यासाद्	या ३.३२२
एष वृद्धिविधि प्रोक्तः	नारद २.९४	एषां त्रिरात्र वासश्च	देवल ८८
एष वै पुष्पो विष्णुः	शंख ७.२१	एषां पत्न्यः क्रमाद्	प्रजा १८२
एष वै प्रथमः कल्पः	औ ४.१३	एषां पुष्पाणि सततं	भार १४.११
एष वै प्रथमः कल्पः	मनु ३.१४७	एषां लघुषु कार्येषु	आंड ४.७
एष वोऽभिहितः कृत्स्नः	वृ.या. ७.१६१	एषां समस्तमंत्राणां	भार १७.२२
एष वोऽभिहीतः सम्यक्	औ ५.८१	एषां ह्यन्तः शरीरस्थं	बृ.या. ९.६
एष वोऽभिहितो	मनु ६.९७	एषां ह्यन्तःशरीरस्थं	बृह ९.६
एष व्यासकृतः कृच्छ्रः	अत्रिस १३१	एषा विचित्राऽभिहिता	मनु ११.९९
एष शौचविधि कृत्स्नो	मनु ५.१४६	एषाविश्वभूतीनां	बृह ९.१४५
एष शौचस्य व प्रोक्तः	मनु ५.११०	एषा हि चोदनाप्रोक्ता	लोहि ३६०
एषः श्राद्धविधि कृतस्	कात्या ४.११	एषा हि त्रिपदा देवी	बृ.या. ४.८१

एषु चेत् पीडयेद्वस्त्र	वृ परा २.२१०
एषु सर्वेषु भूतेषु	शंख ७.३४
एषु स्थानेषु भूयिष्ठं	मनु ८.८
एषैव दर्वी यस्तत्र	कात्या १५.१५
एषो उषेति चाप्यत्र	वृ परा ११.३४३
एषोऽखिलः कर्मविधिरुक्तो	मनु ९.३२५
एषोऽखिलेनाभिहितो	मनु ८.२६६
एषोऽखिलेनाभिहितो	मनु ८.३०१
एषोदिता गृहस्थस्य	मनु ४.२५९
एषोदिता लोकयात्रा	मनु ९.२५
एषोऽनाद्यनस्योक्तो	मनु ११.१६२
एषोऽनापदि वर्णानामुक्तः	मनु ९.३३६
एषोऽनुपस्कृतः प्रोक्तो	मनु ७.९८
एष्टव्या बहवः पुत्रा	औ ३.१३४
एष्टव्या बहवः पुत्रा	लघुशंख १०
एष्टव्याः बहवः पुत्रा	लिखित १०
एष्वर्थेषु पशून् हिंसन्	मनु ५.४२
एहीत्यग्निं समादाय	आश्व २.७

ऐ

ऐकायोगत्व नानत्वं समवाय	कपिल ८
ऐणरौववाराह	ब्र.या. ४.१५४
ऐणरौरव वाराह	या १.२५९
ऐणेयमुत्तरीयं स्याद्	वृ हा ५.४६
ऐन्द्रं स्थानमभिप्रेप्सुः	मनु ८.३४४
ऐरावती वेदवती	हा ७.१७६
ऐशान्यभिमुखो भूत्वा	बृ.या. ७.१८४
ऐश्वर्यं गुणसम्पन्ना	बृ.गौ. १५.९७
ऐश्वर्यं च तथा वीर्यं	वृ हा ३.१६०
ऐश्वर्यं ज्ञान वैराग्यः	वृ हा ७.८०
ऐश्वर्यं तु विकारः	वृ हा ३.२१३
ऐश्वर्यं रूपा सादेवा	वृ हा ३.१६२
ऐहिकामुष्मिकं लोके	संवर्त २१३
ऐहिकामुष्मिकार्थीयस्त	अ ५९

ओ

ओघवाता हतं बीजं	मनु ९.५४
ओघवाताहतं बीजं क्षेत्र	नारद १३.५६
ओघवाताहतं बीजं यथा	परशर ४.१६
ओंकारपद्मनालेन	बृ.या. २.१३७
ओंकारः पूर्वमुच्चार्यो	बृ.या ४ २६
ओंकारपूर्वा गायत्री	बृ.या.७.१८९
ओंकारपूर्विकास्तिष्ठो	मनु २.८१
ओंकार प्रणवं चैव	वृ. या.२.११४
ओंकारः प्रणवस्तार	बृ.या. २.१५
ओंकारः प्रणवे योज्यो	बृ.या. २.५१
ओंकार विन्दते यस्तु	बृ.या. २.७२
ओंकार विन्दते यस्तु	बृ.या.२.१४६
ओंकार विपुलमचिन्त्य	बृ.या.२.११२
ओंकारव्याहृतियुतां	ल व्यास १.२३
ओंकार व्याहृतीः सप्त	बृ.या.८.८
ओंकार व्याहृतीस्तिष्ठः	बृ.या. ४.३८
ओंकारं समभिध्यायेद्	बृ.या.२.९९
ओंकार ब्रह्मसंयुक्तं	बृ.या.६.१५
ओंकार वर्त्मनालेन	वृ परा १२.२६२
ओंकार संज्ञा त्रिगुणं	बृ.या.२.१७
ओंकारस्तत्परं ब्रह्मण	औ ३.५२
ओंकारस्तु समुच्चार्यो	कण्व १११
ओंकारस्य तुगायत्र्या	बृह १०.१९
ओंकारस्याथ गायत्र्या	बृह १२.४५
ओंकाराभिष्टुतं सोमसलिलं	या ३.३०६
ओंकारणैव श्रीशब्दः	वृ हा ३.६३
ओंकारो व्याहृतयश्च	बृ.या. १.२५
ओंकारो व्याहृतीः	बृ.या. ६.५
ओमादित्यं तर्पयामि	बौधा २.५.१०४
ओमदित्यांश्च तर्पयामि	बौधा २.५.२७
ओमापो ज्योतिरित्ये	बृ.या. ८.५
ओमापो ज्योतिरित्ये	बृह ९.१०९
ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं	शंख १२.१२

ओमित्यच्चाणेनैव वाच्य	शाण्डि ५.५९	ओं गरुत्मन्तं तर्पयामि	बौधा २.५.१३०
ओमित्युद्गीयते ह्येष	बृ.या.२.८६	ओं गायत्रीतर्पयामि	बौधा २.५.१७४
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म	बृ.या.२.४०	ओं गुरून् स्वधा नमस्त	बौधा २.५.१९९
ओंमित्येकाक्षरं ब्रह्म	बृ.या. २.१०५	ओं गुरूपत्नीः स्वधा	बौधा २.५.२००
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म	विश्वा ६.१	ओं गोविन्द तर्पयामि	बौधा २.५.११६
ओमित्येवेति तत्राग्नौ	कण्व ७२९	ओं चतुर्मुखं तर्पयामि	बौधा २.५.३३
ओं अग्नि तर्पयामि	बौधा २.५.३९	ओं चन्द्रमसं तर्पयामि	बौधा २.५.४३
ओं अंगारकं तर्पयामि	बौधा २.५.१०६	ओं चित्रगुप्तं तर्पयामि	बौधा २.५.१४१
ओं अथर्वाङ्गिरस	बौधा २.५.१७९	ओं छन्दांसि तर्पयामि	बौधा २.५.१७५
ओं अन्तरिक्ष तर्पयामि	बौधा २.५.१४७	ओं जनस्तर्पयामि	बौधा २.५.५४
ओं आचार्यपत्नी स्वधा	बौधा २.५.१९८	ओं ज्ञातीन् स्वधा	बौधा २.५.२०३
ओं आचार्यान् स्वधा	बौधा २.५.१९७	ओं ज्ञातीपत्नि स्वधा	बौधा २.५.२०४
ओं आपस्तम्बं सूत्रकारं तर्पयामि	बौधा २.५.१६६	ओं तत्सदिति निर्देशो	बृ.या.२.९
ओं आश्वलायनं शौनकं	बौधा २.५.१६९	ओं तत्सवितुरित्येषा	विश्वा ५.१२
ओं इतिहासपुराणं तर्पयामि	बौधा २.५.१८०	ओं तपस्तर्पयामि	बौधा २.५.५५
ओं इन्द्र तर्पयामि	बौधा २.५.९६	ओं तुष्टि तर्पयामि	बौधा २.५.१२७
ओं ईशानं देवं तर्पयामि	बौधा २.५.५९	ओं त्रिविक्रमं तर्पयामि	बौधा २.५.११९
ओं ईशानस्य देवस्य	बौधा २.५.६७	ओं दामोदरं तर्पयामि	बौधा २.५.१२४
ओं ईशानस्य देवस्य	बौधा २.५.७५	ओं देवर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५७
ओं उग्रं तर्पयामि	बौधा २.५.६२	ओं धन्वन्तरि तर्पयामि	बौधा २.५.१४९
ओं उग्रस्य देवस्य	बौधा २.५.७०	ओं धन्वन्तरिपार्षदीश्च	बौधा २.५.१५०
ओं उग्रस्य देवस्य	बौधा २.५.७८	ओं धन्वन्तरीपार्षदीश्च	बौधा २.५.१५१
ओं ऋग्वेदं तर्पयामि	बौधा २.५.१७६	ओं धर्म तर्पयामि	बौधा २.५.१३५
ओं ऋषिकांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१६२	ओं धर्मराजं तर्पयामि	बौधा २.५.१३६
ओं ऋषिपत्नीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१६७	ओं नक्षत्राणि तर्पयामि	बौधा २.५.४४
ओं ऋषिपुत्रकांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१६४	ओं नमोभगवते पश्चाद्	वृ हा ३.३३१
ओं ऋषीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५३	ओं नमो भगवते मातासुदर्शनम्	हा ३.३९२
ओं एकदन्तं तर्पयामि	बौधा २.५.९०	ओं नमो भगवते वासुदेवाय	वृ हा ३.३४७
ओं औदुम्बरं तर्पयामि	बौधा २.५.१४२	ओं नारायणं तर्पयामि	बौधा २.५.११४
ओं कण्डं बौधायनं	बौधा २.५.१६५	ओं नीलं तर्पयामि	बौधा २.५.१३८
ओं काण्डर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१६१	ओं पद्मनाभं तर्पयामि	बौधा २.५.१२३
ओं कालं तर्पयामि	बौधा २.५.१३७	ओं परमर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५५
ओं काश्यपं तर्पयामि	बौधा २.५.१४६	ओं परमेष्ठिनं तर्पयामि	बौधा २.५.३७
ओं केतुं तर्पयामि	बौधा २.५.११२	ओं पशुपति देव तर्पयामि	बौधा २.५.६०
ओं केशवं तर्पयामि	बौधा २.५.११३	ओं पशुपते देवस्य	बौधा २.५.६८

ओं पशुपते देवस्य	बौधा २.५.७६	ओं महासेनं तर्पयामि	बौधा २.५.१००
ओं पितरोऽर्यमा भगः	बौधा २.५.२६	ओं मातामहान्स्वधा	बौधा २.५.१९१
ओं पितामहान् स्वधा	बौधा २.५.१८६	ओं मातामहीः स्वधा	बौधा २.५.१९४
ओं पितामहीः स्वधा	बौधा २.५.१८९	ओं मातुः पितामहान्स्वधा	बौधा २.५.१९२
ओं पितृन् स्वधानामः	बौधा २.५.१८५	ओं मातुः पितामहीस्वधा	बौधा २.५.१९५
ओं पुष्टिं तर्पयामि	बौधा २.५.१२७	ओं मातुः प्रपितामहान्	बौधा २.५.१९३
ओं प्रजापतिं तर्पयामि	बौधा २.५.३२	ओं मातुः प्रपितामहीः	बौधा २.५.१९६
ओं प्रणवं तर्पयामि	बौधा २.५.१७१	ओं मातुःस्वधा नमस्त	बौधा २.५.१८८
ओं प्रतितामहान् स्वधा	बौधा २.५.१८७	ओं मात्यपत्नीः स्वधा	बौधा २.५.२०६
ओं प्रपितामहीः स्वधा	बौधा २.५.१९०	ओं मात्यान् स्वधा	बौधा २.५.२०५
ओं प्राणोष्णिपरात्मानं	बृह ९.१.४३	ओं माधवं तर्पयामि	बौधा २.५.११५
ओं बुधं तर्पयामि	बौधा २.५.१०७	ओंमीशाय नमः परायेति	वृ हा ४.६६
ओं वैवस्वतं तर्पयामि	बौधा २.५.१४०	ओं मृत्युञ्जयं तर्पयामि	बौधा २.५.१३९
ओं ब्रह्मपार्षदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.३६	ओं यजुर्वेदं तर्पयामि	बौधा २.५.१७७
ओं ब्रह्मपार्षदीश्चतर्पयामि	बौधा २.५.३८	ओं यमं तर्पयामि	बौधा २.५.१३३
ओं ब्रह्मर्षींस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५६	ओं यमराजं तर्पयामि	बौधा २.५.१३४
ओं ब्रह्मणं तर्पयामि	बौधा २.५.३१	ओं राजर्षींस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५८
ओं भवंदेवं तर्पयामि	बौधा २.५.५७	ओं रां नमः परायेति	वृ हा ४.६७
ओं भीमं देवं तर्पयामि	बौधा २.५.६३	ओं राहु तर्पयामि	बौधा २.५.१११
ओं भवस्य देवस्य	बौधा २.५.६५	ओं रुद्रपार्षदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.८२
ओं ऋवस्य देवस्य	बौधा २.५.७३	ओं रुद्र देवं तर्पयामि	बौधा २.५.६१
ओं भीमस्य देवस्य	बौधा २.५.७१	ओं रुद्रस्य देवस्य	बौधा २.५.६९
ओं भीमस्य देवस्य	बौधा २.५.७९	ओं रुद्रस्य देवस्य	बौधा २.५.७७
ओं भुवस्तर्पयामि	बौधा २.५.५१	ओं रुद्रांश्च तर्पयामि	बौधा २.५.८१
ओं भूमिदेवांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१४५	ओं लम्बोदरं तर्पयामि	बौधा २.५.९१
ओं भूः पुरुष तर्पयामि	बौधा २.५.४८	ओं लां नमः परायेति	वृ हा ४.६८
ओं भूर्भुवः सुवीरिति	आंपू ७८७	ओं वक्रतुण्डं तर्पयामि	बौधा २.५.८९
ओं भूर्भुवः स्वः पुरुषं	बौधा २.५.४९	ओं वदं तर्पयामि	बौधा २.५.८७
ओं भूस्तर्पयामि	बौधा २.५.५०	ओं वरुणं तर्पयामि	बौधा २.५.४१
ओं मधुसूदनं तर्पयामि	बौधा २.५.११८	ओं वसवो वरुणोऽज	बौधा २.५.२८
ओं महतो देवस्य	बौधा २.५.७२	ओं वसुंश्च तर्पयामि	बौधा २.५.२५
ओं महतो देवस्य	बौधा २.५.८०	ओं वाजसनेयियाज्ञवल्क्यं	बौधा २.५.१६८
ओं महर्षीं स्तर्पयामि	बौधा २.५.१५४	ओं वामनं तर्पयामि	बौधा २.५.१२०
ओं महस्तर्पयामि	बौधा २.५.५३	ओं वायुं तर्पयामि	बौधा २.५.४०
ओं महान्तं देवं तर्पयामि	बौधा २.५.६४	ओं विघ्नपार्षदास्तर्पयामि	बौधा २.५.९२

ओं विघ्नपार्षदीश्च तर्पयामि	बौधा २.५.९३	ओं सर्ववेदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१८१
ओं विघ्नं तर्पयामि	बौधा २.५.८३	ओं सरस्वती देवीं	बौधा २.५.१२६
ओं विघ्नांतर्पयामि	बौधा २.५.१४८	ओं सर्वान् स्वधा नमस्त	बौधा २.५.२०७
ओं विनायकं तर्पयामि	बौधा २.५.८४	ओं सर्वाः स्वधा नमस्त	बौधा २.५.२०८
ओं विशाखं तर्पयामि	बौधा २.५.९९	ओं साध्यांश्च तर्पयामि	बौधा २.५.३०
ओं विश्वान्देवां	बौधा २.५.२९	ओं सामवेदं तर्पयामि	बौधा २.५.१७८
ओं विष्णु तर्पयामि	बौधा २.५.११७	ओं सावित्रीतर्पयामि	बौधा २.५.१७३
ओं विष्णु तर्पयामि	बौधा २.५.१२८	ओं सुब्रह्मण्यं तर्पयामि	बौधा २.५.१०९
ओं विष्णु पार्षदीश्च	बौधा २.५.१३२	ओं सूर्य तर्पयामि	बौधा २.५.४२
ओं विष्णु पार्षदांश्च	बौधा २.५.१३१	ओं सोमं तर्पयामि	बौधा २.५.१०५
ओं वीरं तर्पयामि	बौधा २.५.८५	ओं स्कन्दपार्षदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१०२
ओं वृत्तस्पतिं तर्पयामि	बौधा २.५.१०८	ओंस्कन्द पार्षदीश्च	बौधा २.५.१०३
ओं वैवस्वतपर्षदां	बौधा २.५.१४३	ओं स्कन्दं तर्पयामि	बौधा २.५.९५
ओं वैवस्वत पार्षदीश्च	बौधा २.५.१४४	ओं स्थूलं तर्पयामि	बौधा २.५.८६
ओं व्यासं तर्पयामि	बौधा २.५.१७०	ओं स्वयंभुवं तर्पयामि	बौधा २.५.३५
ओं व्याहृतीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१७२	ओं स्वस्तर्पयामि	बौधा २.५.५२
ओं शनैश्चरं तर्पयामि	बौधा २.५.११०	ओं हस्तिमुखं तर्पयामि	बौधा २.५.८८
ओं शर्व देवं तर्पयामि	बौधा २.५.५८	ओं हिरण्यगर्भं तर्पयामि	बौधा २.५.३४
ओं शर्वस्य देवस्य	बौधा २.५.६६	ओषधि फलसम्पन्नान्	वृ.गौ.६.९९
ओं शर्वस्य देवस्य	बौधा २.५.७४	ओषधीनां तु सद्भावे	वृ परा ६.३५२
ओं शुक्र तर्पयामि	बौधा २.५.१०९	ओषध्य पशवो वृक्षा	मनु ५.४०
ओं श्रियं देवी तर्पयामि	बौधा २.५.१२५	ओष्ठौ विलोमकौ कृत्वा	आश्व १०.२४
ओं श्रीधरं तर्पयामि	बौधा २.५.१२१	औ	
ओं श्रुतर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५९	औडुश्च सोमकपिल	वृ हा ७.८१
ओं षण्मुखं तर्पयामि	बौधा २.५.९८	औदनव्यंजनार्थन्तु	कात्या २९.८
ओं षष्ठीं तर्पयामि	बौधा २.५.९७	औदुम्बरश्च नीलश्च	व परा २.१९७
ओं सखिपत्नि स्वधा	बौधा २.५.२०२	औदुम्बरी ताम्रचौरौ	शाता ४.२
ओं सखीन् स्वधानमस्त	बौधा २.५.२०१	औदुम्बरेण पात्रेण	प्रजा ११७
ओं सत्यं तर्पयामि	बौधा २.५.५६	औद्धत्याद्वा बलाद्वा	वृता ४.२२९
ओं सत्याषाढं हिरण्य	बौधा २.५.१६७	औपनायनिका मंत्रा	वृ परा ६.१५७
ओं सनत्कुमारं तर्पयामि	बौधा २.५.१९४	औपासनञ्चावसथं	वृ.गौ. १५.२४
ओं सप्तर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१६०	औपासनद्वये चैव प्राणायाम	विश्वा ३.६८
ओं सयोजातं तर्पयामि	बौधा २.५.४५	औपासनं विना होम	आंपू १०.२२
ओं सर्वदेवजनांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१८२	औपासनं वैश्वदेवं	कण्व ४१४
ओं सर्वभूतानि तर्पयामि	बौधा २.५.१८३	औपासनं वैश्वदेवः	कण्व ४९९

औपासनाग्नौपचनं प्रवरं	कपिल २२७	औषधं लवणञ्चैव	आप १.११
औपासनारंभतुर्यया	कण्व ५५४	औषधान्नप्रदानाद्यैः	या ३.२८४
औपासने किलाधानार्थं	कण्व ३२९	औषधान्यगदो विद्या	मनु ११.२३८
औपासने परा देवा	कण्व ३३८	औषधित्वेत्वोषधीश्च	व २.३.३०
औमापोज्योतिमन्त्रेण शिक्षा विश्वा १.१११			
औरभ्रिको माहिषिकः	मनु ३.१६६		
और भ्रेणाथ चतुरः	औ ३.१४०		
औरसः क्षेत्रजश्चैव	मनु ९.१५९		
औरसः क्षेत्रजश्चैव	नारद १४.४३		
औरसः क्षेत्रजश्चैव	पराशर ४.१८		
औरसक्षेत्रजश्चैव	ब्र.या.७.२७		
औरसक्षेत्रज पुत्रौ	मनु ९.१६५		
औरसः पुत्रिकापुत्रकं	कपिल ७९५		
औरसस्य च दत्तस्य न्यून	कपिल ६९९		
औरसाः क्षेत्रजास्तेषां	या २.१४४		
औरसाद्याः स्मृताः पुत्रा	वृ परा ७.३९३		
औरसे तूत्पन्ने सवर्णा	बौधा २.२.११		
औरसेन समाज्ञेया	बृ.य. ५.२०		
औरसेन समोनायं स्वयं	लोहि ७५		
औरसेनैव तुलितौ	आंपू ४२१		
औरसे दत्तकश्चैव	वृ हा ४.२५६		
औरसो धर्म पत्नीजः	या २.१३१		
औरसो धर्मपत्नीजस्त	लोहि २०२		
औरसो धर्मपत्नीतस्त	ब्र.या. ७.२८		
औरसो वयसा न्यूनो	आंपू ३७८		
और्णनामादित्येन	बौधा १.५.४२		
और्णानां नेत्रपट्टानं	पराशर ७.३०		
और्ध्वं दशाहं उत्कर्षे	औ ३.१२४		
औषधं पथ्यमाहारं	संवर्त ८७		
औषधं पथ्यमाहारो	दा ११२		
औषधं स्नेमाहारं	आंपू १०.१४		
औषधं स्नेहं आहारं लघु	शंख ६१		
औषधं स्नेहमाहारं	लघुयम ५०		
औषधं स्नेहमाहारं	संवर्त ५९		
औषधस्यापरणे	शाता ४.२६		
		क	
		क आचारः क आहार	व २.३
		क इहोत्पद्यते विद्वान्	वृ परा १२.१८७
		ककुभं कोविदारञ्च	वृ.गौ. ८.८१
		कक्षागुहाशिरः श्मश्रु	देवल ५६
		कक्ष्यानन्तरा निष्ठेन	आंपू ४७०
		कङ्कणोद्वासनोबन्धो	कण्व ३५६
		कं खं भूर्धोस्तथा वायुः	लोहि ५८०
		कच्छद्वयं वस्त्रमध्ये	विश्वा १.९३
		कटकारास्ततः पश्चात्	औसं ४७
		कटिमंडलमावृत्य नाम्य	व्या ५७
		कटीसूत्रजच कौपीनं	वृ हा ५.४९
		कटूर्वारौ यथाऽपक्वे	या ३.१४२
		कटे च मणिसूत्र च	व २ ३ १९५
		कणानामथ वा भिक्षां	वृ परा ६.३१२
		कणान्वा भक्षयेदब्दं	मनु ११.९३
		कण्टकक्षीरवृक्षोत्थं	व २.६.१९
		कण्टकाकीर्णमार्गेण	वृ.गौ. ५.३६
		कण्टकानि ततो भूयः	आंपू ५७०
		कण्ठपाशविपन्नामे	ब्र.या.५.२८
		कण्ठमात्रजले स्थित्वा	वृ हा ६.३३९
		कण्ठे त्रयोदशीं न्यस्य	वृ परा ४.१२८
		कंठे यद्वाक्षमालां तु	व २.३४
		कण्ठकेऽवसक्तं निवीतम्	बौधा १.५.९
		कण्डक्या अपि गङ्गाया	कण्व २२
		कण्डवी पेषणी चुल्ली	पराशर २.११
		कण्डनी पेषणी चुल्ली	ब्र.या. २.७
		कण्डन्युकुम्भी	वृ परा ६.७५
		कति वा कपिलाः प्रोक्ता	वृ.गौ.९.४
		कण्वं नत्वा महाभागं	कण्व १
		कतरस्मिन्नु वा स्थाने	वृ.गौ. १५.६

कतिचिच्छाद्धदिवसा	कपिल १८२	कदाचिदधिकश्चापि	लोहि २०१
कत्सस्तु कालोविज्ञेयः	कपिल ३०३	कदाचिदपि केनपि	कण्व ११
कथमेताद्विमुह्यामः	या ३.११८	कदाचिदपि नो धार्य	भार १६.१४
कथमेवाथ हूयन्ते	बृ.गौ. १५.७	कदाचिदपि पुत्रस्य	लोहि २४५
कथयन्तीति पितरः	प्रजा १४१	कदाचिदैवयोगेन	कण्व ७७९
कथयस्व महादेव	वृ.गौ. ५.४	कदाचिद्धर्म कृत्यानां न	आंपू २१८
कथया तृप्तिरेतेषां	आंपू १०२०	कदाचिद्वशादृष्ट	लोहि ६३६
कथांज्ञिचद् ब्राह्मणी गत्वा	संवर्त १६६	कदाचिद् विदुषा मिथ्या	वृ परा २.१०६
कथचिदं वृषभं हत्वा	दा १०८	कदाचिद्विधवासाध्वीसपुत्रा	कपिल ५५६
कथं ज्ञातर्विर्भक्तस्य धनं	लोहि २३२	कदाचिन्न च हीयन्ते	शाण्डि ५.३६
कथं तत्कर्मकरणं	आंपू १८५	कदाचिन्मोहतो विप्रः	कण्व १४२
कथं तदिति हि प्रोक्ते	कण्व ४१९	कदांबाजुं कौशीर	भार ५.१९
कथं दास्यं हि दद्वत्ति	वृ हा ५.३४	कद्या (क्ष) दिकटिपर्यन्तं	विश्वा ६.१८
कथं धर्मरता यान्ति	वृ.गौ. ५.८	कनिष्ठतर्जन्य अंगुष्ठैः	वृ हा ५.२५९
कथं निष्कृतिरादिष्टा	नारा ९.२	कनिष्ठवर्जमेवात्र	वृ हा ६.८०
कथं वानुगृहीतास्ता	वृ.गौ. १०.४	कनिष्ठस्थानकश्चोति	बार १५.२७
कथं वेत्यत्र देवेशो	लोहि ४८७	कनिष्ठस्य च गृह्णाग्न	आश्व २४.६
कथं स्नानं कथं शौचं	देवल ३	कनिष्ठा अनामिका	वृ परा ६.१२०
कथं हि लांगलमुद्रपेदन	व १ २.४१	कनिष्ठाग्रमित स्थूल	वृ हा ४.२५
कथितं तत्समासेन	कण्व ४१३	कनिष्ठांगुष्ठानाभिञ्च	वृ हा ४.२२
कथिताः किल सर्वाण्य	आंपू ६५७	कनिष्ठांगुष्ठया नाभि	दक्ष २.१७
कथितानि महाभागेः कानि	कपिल १५३	कनिष्ठांगुष्ठयोगेन	औ २.२१
कथितास्तु समासेन	कण्व ४१६	कनिष्ठांगुष्ठयोर्नाभि	या १.७
कथितो हस्तपर्यायः	भार २.६४	कनिष्ठादि समारभ्य	शाण्डि २.८६
कथितो हि महाभागैः तस्मात्	लोहि ९६	कनिष्ठादेशिन्युगुष्ठ	या १.१९
कदम्बञ्च शिरीषञ्च	व २.६.२२	कनिष्ठो धर्मतो दत्तो	आंपू ३.८०
कदर्यदीक्षितबद्धातुर	व १.१४.३	कनिष्ठो मूलतः पश्चात्	औ २.१७
कदर्यवद्धचौराणां	या १.१६१	कनिष्ठोसौ समाख्यातः	भार २.३२
कदर्यस्त्रीजितानार्य	यास ३.४७	कनीनिके साक्षिकूटे	या ३.९६
कदर्यस्य नृशंसस्य	शंख १७.३९	कनीयान् गुणवान् श्रेष्ठः	अत्रिस २५६
कदलीकन्दफलकं धात्री	प्रजा १२०	कन्दमूलफलादीनि दधि	विश्वा ८.३
कदली करल्ली च	व २ ६.१६८	कन्दमूलफलाहारा	वृ परा ११.२४६
कदलीजातयस्सर्वा चृतं	शाण्डि ३.११०	कन्दमूलफलैर्वाऽपि	प्रजा १७४
कदलीस्तभपूगालिमिश्रितां	नारा ५.३४	कन्दमूलस्य हरणाद्	शाता ४.१९
कदाचित्तु जलाभावे	कण्व ११०	कन्यका विधुरा बालाः तीर्था	कपिल ९६२

कन्याकुम्भलीरेषु	कण्व ३०६	कन्यैव कन्यां या	मनु ८.३६९
कन्यागते सवितरि पितरो	अत्रिस ३५९	कन्यैवाक्षतयोनिर्या	नारद १३.४६
कन्यागते सवितरि	प्रजा १७३	कपालनखकेशैश्च	भार ७.११३
कन्या च अक्षतयोनि	वृ.गौ. ४.८	कपालं वृक्षमूलानि	मनु ६.४४
कन्या चैव वरश्चौभौ	वृ परा ६.७	कपालानि संहृत्याप्सु	बौधा १.४.१०
कन्यादाता ब्रह्मलोकं पुत्रदो	कपिल ४१३	कपालिसांश्चिइत्येते	भार ११.५५
कन्यादातृगृहात्तस्य	कण्व ५४२	कपाली खट्वाङ्गी गर्दभ	बौधा २.१.३
कन्यादान विधिवत् सर्वं वृ	परा १०.१७२	कपालोच्छिष्टनिर्माल्य	भार १५.७२
कन्यादानं च तत्कार्यं	बृ.य. ५.१०	कपित्थवा कुचीसर्ग	भार १४.२३
कन्यादानं च तत्कार्यं	बृ.य. ५.११	कपित्थ-विल्लामल की	वृ परा १०.३८०
कन्यादानं पिंडदानं	व्या २०३	कपित्थं पैलवं चैव	व २.५.५४
कन्यादानं पितृश्राद्ध	आं पू ७४२	कपित्थैः श्रीफलैर्वापि	ब्र.या. ४.११४
कन्यादानं वृषोत्सर्गो	दक्ष ३.१४	कपिलदीनि दानानि	वृ.गौ. ५.६७
कन्यादानात्परां ब्रूयुः	वृ परा १०.१७३	कपिलश्चासुरिश्चैव	वृ.या. ७.६६
कन्यादाने च वृद्धौ	आश्व १८.६	कपिलश्चासुरिश्चैव	ब्र.या. २.१००
कन्यादाने विवाहे च	व्या ८४	कपिलक्षीरपानेन	ब्र.मा. २.१९५
कन्यापुत्रविवाहेषु प्रवेशे	कपिल ७६	कपिलक्षीरपानेन ब्राह्मणी	पराशर १.६५
कन्याप्रतिगृहं कृत्वा	अ ६२	कपिलक्षीरपानेन	वृ परा ४.२२५
कन्याप्रतिगृहस्तेन	अ ६३	कपिलापञ्चगव्येन	वृ.गौ. १०.२४
कन्याप्रदानसमये तेन	लोहि ३२६	कपिलां गर्मिणीं गाञ्च	वृ हा ६.२४९
कन्याप्रवेशे वस्त्राणां	वृ परा १०.२७५	कपिलां प्रतिगृह्णीयाद्धो	अ ६६
कन्या भजन्तीमुत्कृष्टं	मनु ८.३६५	कपिलाया घृतं क्षीरं	वृ.गौ. ९.१३
कन्यां कन्यावेदिनश्च	या १.२६२	कपिलाया घृतं क्षीरं	वृ.गौ. १०.२१
कन्यां दातुं पिता योग्यः	ब्र.या. ८.१५५	कपिलाया घृतं ग्राह्यां	लघु यम ७२
कन्यां वरयमाणा नामेवंध	ल २.४.१६	कपिलाया घृतं ग्राह्य	पराशर ११.२९
कन्यायां दत्तशुल्कायां	मनु ९.९७	कपिलाया घृतं तद्वन	वृ परा ९.२५
कन्याया दूषणं चैव	मनु ११.६२	कपिलाया घृतेनापि	वृ.गौ. ९.२९
कन्याया दूषणं चैव	वृ हा ६.१९४	कपिन्नयान्तु दत्तायाम्	वृ गौ. ६.४९
कन्यायां तु गते भानौ	व्या १३१	कपिलायाश्च गोदुःलग्ध्वा	देवल ६८
कन्यायां प्राप्तशुल्कायां	नारद १३.३०	कपिलाशतस्य मत्पुण्यं	बृ.गौ. १७४७
कन्यायामसकामायां	नारद १३.७१	कपिला सर्वयज्ञेषु दक्षिणार्थ	वृ.गौ. ९.६३
कन्याया विक्रयश्चैव	वृ हा ६.१९२	कपिला ह्यग्निहोत्रार्थ	वृ.गौ. ९.२२
कन्यायाश्च वरस्यापि	वृ परा ६.२४	कपिलोपजीवी शूद्रस्तु	वृ.गौ. ९.१४
कन्यायै वाससी दद्याद्	आश्व १५.३२	कपिलोजीविनः शूद्राद्यः	वृ.गौ. ९.२०
कन्यासंदूषणश्चैव	या ३.२३८	कपोलयोस्ताडयित्वा	लोहि ६३४

कपोलयोस्तोडायित्वाद्दीकृत्य कपिल ८२०	करिष्ये वेति वा नित्यं कण्व ५४
कबलं कबलं हस्ते लोहि ३८२	करीरजं कुमारीजं प्रजा १२८
कबले तु सुभुञ्जाने आपू ९५२	करेकंठेथवास्कान्धे भार ७.११०
कमण्डलुद्विजातीनाम् बौधा १.१२.१५	करेणादाय मुसलं लगुंड औ ८.१७
कण्डलुः द्विजातीनां बौधा १.४.१९	करेणोद्धृत्य सलिलं कात्या ११.९
कमण्डलूदकेनाभिषिक्त बौधा १.४.१६	करोति कर्मनान्यत्तु कण्व ४०१
कमार्थं काममोक्षादि विश्वा ५.१९	करोति ब्राह्मणे मूढो नरो कपिल ४६
कंबलस्य प्रदानेन वृ परा १०.२६७	करोति भक्त्या शूद्रोऽपि कपिल ८९५
कम्बलानां च दिव्यानां कपिल ४३६	करोति हि स्वपितृभिस्मम लोहि २९८
कम्बले वाऽजिने पीठे आश्व १.८०	करोत्येव न चान्यस्मिन् कपिल ९०७
कम्बुकण्ठी संहतोरू विष्णु १.२४	करौ विमृदितव्रीहे या २.१०५
करकं कुसिकां वापि यो वृ.गौ. ७.६६	कर्कन्धुक्षुद्रवृहती कूष्म शाण्डि ३.१११
करकैरपिधायाथ वृ हा ८.१३६	कर्कन्धुभिर्यवैः पुष्पैः वृ परा ७.१५९
करंज-पिप्पल-वट-प्लक्ष व्या ३४६	कर्क प्रवेशे सकतून् वृ परा १०.२७४
करंजं लशुनञ्चानुगच्छति वृ हा ६.३५०	कर्कशाभिर्वस्त्रीभि वृ.गौ. ७.९६
करंजं लशुनं शिगु वृ हा ६.२५२	कर्कोटकं कार्वेल्लं प्रजा १२३
करणस्यापि करणं कण्व ३९६	कर्णकारोऽक्षिरोद्यनः आपू ५१६
करणाज्जातकादीनां आपू २०७	कर्णजाः पशवः सर्वे वृ परा १०.३२९
करणादेव शेषाणां दानानां कपिल ८८५	कर्णमूलं कर्णदानं कण्व ६१७
करणैरन्वितस्यापि या ३.१३०	कर्णयुग्मं स्वहस्ता भार ६.१०९
करन्यासक्रमोऽयंत्याद् बार १९.२०	कर्णयोः स्पृष्टयोः औ २.२५
करन्यासं पुराकृत्वा भार ११.१८	कर्णवेधो व्रतादेशो व्यास १.१४
करन्यासं हृदिन्यासं विश्वा ६.४६	कर्णश्रवेऽनिले रात्रौ मनु ४.१०२
करपाददतो भंगेच्छेदेने या २.२२२	कर्णस्थं ब्रह्मसूत्रस्तु वृ हा ४.१३
करयो वरूणो राजन् वृ.गौ. १०.४६	कर्णादिब्रह्मरन्धान्तं विश्वा ६.१९
करयोः स्थलयोराद्य वृ हा ३.१५	कर्णे नेत्रे मुखे घ्राणे पराशर ५.२१
करवै करवाणीति पृष्ट्वा वृ परा ७.१७६	कर्णो चर्म च बालांश्च मनु ८.२३४
करस्य मध्यते देवाः वृ परा ७.३२९	कर्तव्यत्वेन विद्वभि लोहि ३४६
करंतु हृदि विन्यस्य वृ परा १०.३२७	कर्तव्यत्वेन विहिते कण्व १२१
कराग्रेणैव यद्वत् वृ हा ६.२५८	कर्तव्यत्वेन विहितो लोहि १३६
कराङ्गन्याससंयोगे षट्पदा विश्वा ६.५६	कर्तव्यत्वेन संप्राप्तान्यापि कपिल २८३
कराभ्यां संस्पृशेद्धिमान भार ६.८७	कर्तव्यत्वेन सौलभ्या कण्व ११७
कराष्टीलामाषः शरमध्यायः व १.१९.१५	कर्तव्यं दिवसं भाण्ड शाण्डि ३.८१
करिष्ये कर्मचेत्युक्त्वा कण्व १४	कर्तव्यं प्रत्युपतायाः लघुशंख २०
करिष्ये कर्म चैवेति आपू ७७५	कर्तव्यं ब्रह्मणा ब्र.या. ५.४

कर्तव्यं यत्नतः शौचं	वृ परा ६.२१२	कर्मणा मनसावाचा प्रयत्नेन	कपिल ८७४
कर्तव्यं वचनं सर्वैः	या २.१९१	कर्मणा मनसावाचा	अत्रि २.२
कर्तव्यं विधिवच्छास्त्र	ब्र.या. ४.१	कर्मणा मनसावाचा	वृ हा ८.१९४
कर्तव्यं सततं विप्रैरिष्टीः	वृ परा ७.१०९	कर्मणा मनसा वाचा	या १.१५६
कर्तव्यायुगक त्याज्यं	कण्व ५८७	कर्मणा मनसा वाचा	वृ हा २.१४०
कर्तव्यासयशुद्धिस्तु	या ३.६२	कर्मणा ममसा वाचा	व १.२६.२
कर्ताऽऽदाय सकृद्धस्ते	आश्व १५.१२	कर्मणा मनसा वाचा	व १.२६.३
कर्ताऽनाचम्य यद्भोक्ता	आंपू ७८३	कर्मणा मनसा वाऽपि	शाण्डि ४.७७
कर्तारः प्रभवैर्युर्वे न चान्येषां	कपिल ६७७	कर्मणां च विवेकाय	मनु १.२६
कर्तुं किलाथ च पुनः	कण्व ८१	कर्मणाम्फलाप्नोति	ब्र.या. १०.२३
कर्तुंच्युतेः स्वभिन्नस्य	कपिल ३७१	कर्मणां फलसन्त्यागः	वृ हा ५.५६
कर्तुं तच्च कृते भूयस्तच्च	कण्व ५०४	कर्मणां मरकादीनां	भार ९.४५
कर्तुं तथा तादृशेन चोपायेन	कपिल ५६७	कर्मणां याजुषादीनां	आश्व २४.१७
कर्तुं न शक्यतेऽतीवभूमि	लोहि ४८२	कर्मणां समनुष्ठानमा	बृह ११.४०
कर्तुरौपासानाग्नौ तु	वृ हा ५.१६५	कर्मणे यस्य वा लोके	कपिल ९८७
कर्तुणां गौणतः प्रोक्ते	कण्व ७७४	कर्मणो वैदिकस्यैवं	आंपू ४२
कर्तृत्वफलसंगित्वे	वृ हा ६.१५२	कर्मण्येष्वपि भिन्नेषु	शाण्डि ४.१११
कर्तुनथो साक्षिणश्च	नारद १.१३	कर्मनिष्ठा स्तपोनिष्ठा	या १.२२१
कर्तुर्भोक्तृमहादोष	आंपू ९००	कर्मनैमित्तिकं तस्माद्	आंपू २५२
कर्त्रीणां तु पुरोक्तानाम	लोहि ४२३	कर्ममध्ये पुराणोक्तं	आंपू ६
कर्पूर अगरु लालाटा	वृ परा १०.११२	कर्ममात्रस्य सर्वत्र प्राणा	आंपू २६८
कर्पूरमिव सुज्वालाशेषं	विश्वा ६.१७	कर्ममार्गस्य कालं वै	कण्व ३२१
कर्पूरं गोघृतं तैलं	भार १४.३८	कर्म यद्यपि ततप्रोक्तं	कण्व ४१८
कर्पूरं रामठञ्जै	ब्र.या. ४.८९	कर्मयोगस्तथा वास्याद्योगः	शाण्डि ५.७८
कर्पूरसंयुतं दिव्यं	वृ हा ७.१४७	कर्मलोपं मकुर्वन्वै	वृ हा ४.१६४
कर्पूरं सहितंयत्तत्तांबूल	भार १४.५९	कर्मविप्रस्य यजनं	अत्रिस १३
कर्मकर्ता प्रकथितो	लोहि ३१२	कर्मषट्कं प्रवक्ष्यामि	वृ परा २.५
कर्मकर्तुं तादृशं चालं युक्तं	लोहि ५७०	कर्मसदिभप्रकथितं तत्	लोहि ९७
कर्म कर्मान्तरेणैव	कण्व ५०९	कर्मसंन्यासयोगेन	बृह ११.५७
कर्मकाले तु सर्वत्र	आश्व १.६०	कर्म स्मार्तं विवाग्नौ	या १.९७
कर्म कुर्यात्ततः पश्चात्	व २.२.३२	कर्मानुवप्रतिश्रुत्य	नारद ७५
कर्मज्ञानं तथा योगं विना	शाण्डि ४.२०५	कर्माणि कानीहं कथंच	वृ परा २.४
कर्मज्ञानं तथा योगं विना	शाण्डि ५.१६	कर्माणिद्विविधं श्रेयमशुभं	नारद ६.५
कर्मणादिष्टिसिद्धश्च	कण्व ३०९	कर्माणि ह्यविनाश्रीनि	बृह ९.३२
कर्मणापि समं कुर्याद	मनु ८.१७७	कर्माण्यन्यानि संत्यज्य	भार ६.१६०

कर्मात्मकस्विह प्रोक्त	वृ परा १२.२७८	कलापपादकटमोर्नूपुरा	भार १२.२५
कर्मादिषु तु सर्वेषु	कात्या १.१३	कलापहीनकृतवो	कण्व ४८८
कर्मादिषु प्रकुर्वन्ति	कण्व १५	कलावस्थान् द्विजान्	वृ.गौ. ३.७६
कर्मानुरूपं ब्रह्मत्वं प्रतित्वं	कपिल १६	कलां या मूर्धिविन्यस्य	ब्र.या. १०.४३
कर्मान्तरेष्वसंसक्ति फल	शाण्डि ३.६२	कलिका वरुणा वामा	आंपू ९२८
कर्माति ग्रन्थिमुत्सृज्य	भार १८.१०८	कलिंग चैव वृन्ताकं	प्रजा १२७
कर्मान्ते च प्रदातव्या	ब्र.या. ८.२४०	कलि प्रसुप्तो भवति	मनु ९.३०२
कर्माति पुनरादाय	भार १८.८६	कलिभि दशाभि ब्रह्मन्	वृ परा १२.३६४
कर्मान्यम्मोहतः कुर्यात्तिद्धि	कपिल २७४	कलीत्वैवायशुचिस्नाने	भार ७.१११
कर्मारभवपिपत्र च प्रणवं	शाण्डि ४.१२६	कलौ तु कानि कर्माणि	नारा ७.१
कर्मारम्भेण मन्त्रेण	शाण्डि २.६४	कलौ तु केवलं तिष्ठे	कण्व २६८
कर्मारस्य निषादस्य	मनु ४.२१५	कलौतु पापबाहुल्यात्	नारा ७.२
कर्मारिं तक्षकं व्याधं	व २.६.४९०	कलौ पापै कबहुले धर्मा	कपिल ४
कर्मावसाने कर्मादौ	भार ४.३३	कलौ पापैकबहुले श्रान्दाख्यः	कपिल ५४
कर्मातिसर्गे भवेत्सर्व	आश्व १३.४	कलौ युगे विशेषेण पति	नारा ७.६
कमोपकरणं चैषां क्रियां	नारद ७.४	कल्पकोटिशतैर्वापि नरकान्	विश्वा १.५३
कर्मापयुक्तमात्रैकपुत्राध्ययन	कपिल २२	कल्पकोटि सहस्राणि	वृ हा ८.२८६
कर्षणशुश्रूषाधि	बौधा १.११.१६	कल्पकोटि सहस्राणि	वृ हा ६.१५५
कर्षन्निबोदगुद्वास्य	आश्व २.३८	कल्पपादपदानं च	अ १०२
कर्षुसमन्वितं मुक्त्वा	कात्या २४.१४	कल्पमाष्यपुराणनि	बृह ९.१६१
कलत्रैः परिवारैश्च	आंपू ८६३	कल्पयित्वाऽस्य वृत्ति	मनु ११.२३
कलधौतमयं पात्र	वृ हा ३.३७१	कल्पवृक्षाख्यकं देवदेवस्य	कपिल ९२४
कलाविकं प्यवं हंसं	मनु ५.१२	कल्पवृक्षा भवेयुर्हि किं	कपिल ९४६
कलविड्कप्लवहंस	व १ १४.३७	कल्पान्ते ह्युपभोगाय	बृ.या. ३.१७
कलविड्कं सकाकोलं	या १.१७४	कल्पायुतशतं गत्वा	वृ हा ६.३२४
कलशात्रितयं दक्षे वामे	नारा ५.४३	कल्पायुत सहस्राणि	वृ हा ६.१५६
कलशः पंचगव्यादि	भार ७.६४	कल्पे कल्पे क्षयोत्पत्तौ	पराशर १.२०
कलशास्तु चतुर्दिक्षु	वृ हा ६.८२	कल्पे कल्पे च भूतानि	वृ.गौ. १.६५
कलशान्दश विन्यस्य	नारा ५.४५	कल्याणदेश वृक्षोऽथ	व २.४.७३
कलशान् द्विशतं सम्यक्	नारा ५.३८	कल्याणमध्ये कुरुते	कण्व ६३२
कलशान् स्थापयेत	आश्व १०.५६	कल्याणाराजसदसि रागेण	लोहि ६०८
कलहो नात्र कर्तव्यो	कण्व ५८२	कल्याणवार्ताकोपादि	आंपू १०२६
कलाकालक्षणं त्वेवं	भार १५.२८	कल्याणवेदिकामध्ये	कण्व ५९८
कलाकाष्ठादि रूपेण	वृ परा १२.३२३	कल्याणं पुत्रयो कृत्वा	कण्व ६७८
कलाः पञ्चदश प्रोत्का	ब्र.या. १०.७८	कल्योणी ग्राम्या	ब्र.या. १०.७०

कवचं चा प्रतिरथं	वृ परा ११.१४८	काकश्ववावलीढन्तु	पराशर ६.६७
कव्यवानलंसोमं	ब्र.या. १०.१२६	काकश्वानावलीढं तु	पराशर ६.६९
कव्यवाहपूर्वं विन्यस्य	ब्र.या. १.८२	काकं गृध्रं च श्येनं	वृ परा ८.१६८
कव्यवाहादयो येऽमी	प्रजा १९६	काकादीनां तन्तु कृतां	भार १५.३५
कव्यवाहो नलः सोमो	वृ परा २.१९४	काकाल्लौल्यं यमात्	औसं ३५
कव्यानि चैव पितरः किं	कपिल ८७९	काके हंसे च गृध्रे	आंउ १०.१६
कव्यवाटं पूर्वं विन्यस्य	ब्र.या. ८.२७७	काकोच्छिष्टे गवाऽऽघ्रातं	शंख १७.४६
कश्चिच्चेत् संचरन्	नारद ४.१४	ककोच्छिष्टे ग्रहग्रस्ते	ब्र.या. २.१९७
कश्चित् कृत्वात्मनश्चिह्नं	नारद २.१५५	काङ्क्षते स च मोक्षार्थी	विश्वा ८.१०
कश्चित् पुरा नृपश्रेष्ठ	वृ हा ८.१७९	कांक्षन्ति पितरः सर्वे	अत्रिस ५६
कश्चिदारादनाकामो	बृ.या. २.५७	काङ्क्षन्ति भर्तुरायानं	शाण्डि ३.१३७
कश्मलं तद्गृहे	कण्व ५८८	काञ्चेन चन्देन लिख्य	ब्र.या. १०.५९
कश्यपश्चांगिराश्चैते	भार १७.६	काञ्चनेन तु पात्रेण	औ ५.६०
कषायमोह विक्षेप	दक्ष ७.१६	काञ्जिकं दधि तक्रं च	वृ परा ७.२४९
कष्टेन वतमानोऽपि	बृ.य. ४.१५	काणः पौनर्भवो रोगी	वृ परा ७.५
कस्तूरी घनसांखा	व २.५.४७	काणस्तत्रैकया हीनो	वाधू १९१
कस्मिन् काले च कर्तव्यं	प्रजा ७	काणं वाऽप्यथ वा खंजमन्यं मनु	८.२७४
कांस्यकस्य च यत्पापं	अत्रिस १५८	काणं वा यदि वा खंजमन्यं नारद	१६.१७
कांस्य खर्परशुक्राश्म	प्रजा ११६	काणाः कुब्जा वामनाः च	वृ.गौ. ४.३९
कांस्यताम्रादिलोहानां	व २.६.५१२	काण्डात् काण्डादिति	वृ परा ११.३२२
कांस्यदोहन संयुक्ता	ब्र.या. ११.१४	काण्डात् काण्डेति दूर्वाग्रान्	वृ हा ८.१९
कांस्यदोहा प्रकर्तव्या	वृ परा १०.७९	काण्डोद्भवं यत् वशनेषु	वृ परा ७.२४१
कांस्यपात्राच्चतुतं वारि	प्रजा ११८	कात्यायनकृताश्चैव	पराशर १.१५
कांस्यपात्रे समायुक्तं	ब्र.या. ८.२०२	कादिवर्णस्तत्त्वयुक्ते	विश्वा ६.३९
कांस्यभांडेषु यत् पाको	ल हा ६.१८	कानीनः पञ्चमः	व १ १७.२२
कांस्यं कुम्भीदलं पादमं	शाण्डि ४.१०७	कानीनश्च सहोढश्च	मनु ९.१६०
कांस्यस्य पात्रमक्लिष्टं	वृ परा १०.२५१	कानीनश्च सहोढश्च	नारद १४.१६
कांस्यस्य भाजनं दद्याद्	अत्रिस ३२७	कानीनं च सहोढं च	बौधा २.२.३७
कांस्यहारी च भवति	शाता ४.३	कान्तारगास्तु दशकं	या २.३९
कांस्येनामसपात्रेण	व्या ५६	कान्तारवदुर्गेषु कृत्स्ने	विष्णु म १०५
कांस्यनैवार्हणीयस्य	कात्या २९.१९	कापालिकादिकां नारी	वृ परा ८.१७७
काकण्यादिस्तु यो दण्डः	नारद १८.११३	कापालिकान्भोक्तृणां	बृ.य. २.२
काकण्यादिस्त्वर्थदण्डः	नारद १८.११२	कापालिकान्तुभोक्तृणां	लघुयम २९
काकयोनिं व्रजन्त्येते	औ ५.३२	कापालिकाः पाशुपताः	औ ४.२५
काकश्वरविदोढता	भार ४.११	कापेयरहितस्सूनुः तत्	लोहि ७७

कामं क्रोधञ्च लोभं च	वृ.गौ.१७.११	कामं तु क्षपयेद्देहं	मनु ५.१५७
कामक्रोधविनिर्मुक्तः	वृ.गौ. ५.१०८	कामं तु गुरुपत्नीनां	मनु २.२१६
कामक्रोधविनिर्मुक्ता	विष्णु म ५७	कामं तु परिलुप्तकृत्याय	बौधा १.५.९६
कामः क्रोधश्च लोभश्च	वृ.गौ. ८.१०७	कामं वा परिलुप्त	व १ २.४७
कामः क्रोधस्तथालोभः	शाण्डि ४.१३८	कामं वा स्वयं कृष्योत्	व १.२.३६
कामक्रोधादिषड्वर्गं मद्य	विश्वा ४.८	कामं श्राद्धेऽर्चनन्मित्र	मनु ३.१.४४
कामक्रोधाभियुक्तार्त	नारद २.३७	कामं श्राद्धेऽर्चयेन् मित्र	औ ४.१६
कामक्रोधौ तु संयम्य	मनु ८.१७५	कामाकामकृतक्रोधो	पराशर ९.१०
काममः कामरूपी च	वृ.गौ. ७.११५	कामात्क्रोधाच्च लोभाच्च	नारद १.२१
कामजा इति हि प्रोक्ताः	लोहि ४९	कामात्पारशव इति पुत्राः	बौधा २.२.३४
कामजेषु प्रसक्तो हि	मनु ३.४६	कामात्मता न प्रशस्ता	मनु २.२
कामतः कृतमज्ञाता मनृतं	वृ.गौ. १०.४१	कामाद्दशगुणां पूर्वं	मनु ८.१२१
कामतस्तु चरेद् धर्मं	वृ हा ६.२६२	कामान्ते च भवेयातां	कात्या १४.३
कामतस्तु चरेत्	वृ हा ६.२९८	कामान्माता पिता चैनं	मनु २.१.४७
कामतस्तु द्विजः कुर्याद्	वृ परा ८.१७८	कामान् मोहाद्यदा गच्छेत्	पराशर १०.३२
कामतस्तु प्रसूतो वा	अत्रिस १८६	कामाभिदुग्धोऽस्म्यभि	बौधा २.१.४१
कामतस्तु यदा कस्विद्	दा ९६	कामावकीर्णोऽस्म्य	बौधा २.१.४०
कामस्तु सुरां पीत्वा	वृ हा ६.२६८	कामिकं तु वरं पुत्र	ब्र.या. ५.१८
कामतो द्विगुणं तत्र	वृ हा ६.३०९	कामिनीषु विवाहेषु	मनु ८.११२
कामतोऽभ्यास विषये	वृ हा ६.२९७	कामेद्भिगतेषु सर्वत्र	वृ हा ४.१९९
कामतो रेतसः सेकं	मनु ११.१२१	कामोकाषिन्मनपुरका	भार ६.१२३
कामतो वत्सरादूर्ध्वं	वृ हा ६.३१०	काम्यकातिथि कर्त्तव्या	ब्र.या. ४.१६०
कामतो व्यवहारस्तु	वृ हा ६.२२३	काम्यके विश्वे दद्यात्	या४.११८
कामन् ददाति राजेन्द्र	वृ.गौ.६.१०	काम्यं चैतेषु सर्वेषु	कपिल ५६
कामप्रदं नमस्कृत्य	वृ परा ११.३०९	काम्यपूजां पक्षपूजां	कण्व ४४९
कामप्रदं कामदं	आंपू ५११	काम्यमाभ्युदयं चैव	वृ परा ७.५९
कामप्रसंगसंलापन	वृ हा ८.१४४	काम्यश्राद्धविषाय	विष्णु ७७
काममग्नीन् परित्यज्य	नारा ७.२५	काम्यहोमफलावाप्ति	भार १९.७
काममन्यस्मै साधुवृत्ताय	बौधा १.२.२५	काम्यानामखिलानां	कण्व ६३४
काममा मरणातिष्ठेद्	मनु ९.८९	काम्ये कर्मणि वाक्ये च	विश्वा ८.९
काममुत्पाद्य कृष्यांतु	मनु १०.९०	कायक्लेशांश्च तन्मूलन	व व्यास १.२
काममिच्छामि नात्यान्ता	लोहि ५८९	काययोरेव संबन्धः	आंपू २२६
कामवान्मोहयाल्लभ	भार ६.१७८	कायाविरोधिनी शश्वत्	नारद २.८८
कामंक्रोधं भयं निंदा	औ ३.१७	कायिक कालिका चैव	नारद २.८७
कामंतु केशकीटान्	व १.१४.१९	कारणत्वं तथैवास्य	वृ हा ३.६७

कारणन्येवमादाय	या ३.१४८	कार्पास शणानां तु त्रिवृ हावृ परा ६.१५३
कारणानिमित्त वा यदा	नारद १८.२५	कार्यमात्रस्य कृत्स्नस्य लोहि ३५६
कारण्डवचकोराणां	परशर ६.७	कार्यः शरीरसंस्कारः बृ.गौ. १४.५३
कारमुपितृत्वतोतीव पुत्रत्वं	कपिल २०८	कार्यः सर्वांगिरो वेदः भार ४.१८
कारयन्ति च कुर्वन्ति	वृ.गौ. १०.१०३	कार्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिं च मनु ७.१०
कारयित्वाथस्पर्शयित्वा	कपिल २३०	कार्यं तु आब्धिकं चैव बृ.य. ४.३२
कारयित्वा स्वयंचापि कृत्वा	कपिल २१९	कार्यं भवति तच्छ्राद्धं आं पू १०३२
कारयेज्येष्वमुखतस्तथा	आंपू ४३१	कार्यान्तरं न कुर्वीतं कण्व ३२८
कारयेत् चतुर्हस्ता समां	नारद १९.४	कार्ये चैव विशेषेण बृ.य. ५.५
कारयेद्वा विशेषेण यद्य	लोहि ६१५	कार्येष्वधिकृतो यः नारद २.१२९
कारयेद्विप्रमुखतः ऋग्य	आंपू ८३२	कार्ये हेममये श्रृंगे वृ परा १०.५५
कारयेन् मंत्रदीक्षायां	वृ हा २.२८	कार्षापणं भवेदण्ड्यो मनु ८.३३६
कारवल्ली त्रयी कारु	आंपू ५१०	कार्षापणाद्या ये प्रोक्ता नारद १८.११५
कारावरो निषादानु	मनु १०.३६	कार्षापणो दक्षिणस्यां नारद १८.११६
कारुकांछिलिपिनश्चैव	मनु ७.१३८	कार्षापणोऽब्धिका रोयः नारद १८.११८
कारुकानं प्रजा हंति	मनु ४.२१९	कार्षारौरववास्तानि मनु २.४१
कारुण्यं प्राणिषु प्रायः	प्रजा १४८	कार्षी च रौरवं वृ परा ६.१५४
कारुण्यात्सर्वभूतेषु	प्रजा १५०	कार्षीयसं गृहं व १ १७.४२
कारुहस्तगतं पुण्यं	आप २.१	कालं कर्मात्मबीजानां या ३.१६३
कारुहस्तः शुचि पुण्यं	व २ ६.५०२	कालः कात्यायनेनोक्त कात्या २६.६
कार्तिकगौरी पूजायाः	लोहि ४९९	कालज्ञानेनयोगोऽयं वृ परा १२.३७२
कार्तिकाद्यास्तु ये मासा	बृ.गौ. १७.४	कालञ्च आयसं स्थाप्य ब्र.या. १०.८६
कीर्ति के यस्तु वै मासे	बृ.गौ. १७.५	कालत्रयेऽप्यशक्ताश्चेद आश्व १.४७
कार्तिके सर्वपाप विमुक्ति	विष्णु ८९	कालदोषादसामर्थ्यान् बृ.या. ६.२७
कार्तिक्यां श्रावणे वाऽपि	वृ हा ६.६३	कालद्वयेऽपि कुरुते आश्व २३.४७
कार्पासकोटजीर्णानां	मनु ११.१६९	कालद्वये यदा होमं आश्व १.६५
कार्पास भाण्डसंयुक्तां	शाता ५.२५	कालधर्मं गते तस्मिन् नारा ५.१७
कार्पासमार्कं क्षैमञ्च	वृ हा ४.१०२	कालपत्र वसद्धावं गुप्तं ब्र.या. ११.७
कार्पासमुपवीतं स्याद्विप्रो	व्या ३४५	कालशाकं महाशल्काः मनु ३.२७२
कार्पासमुपवीतं स्याद्	मनु २.४४	कालशाकं महाशाकं ब्र.या. ४.९५
कार्पासमुपवीतात्	औ १.६	कालशाकं महाशाकं औ ३.१४३
कार्पासमुपवीतार्थ	भार १५.१०	कालशाकं सशल्कांश्च शंख १४.२६
कार्पासं यत्तदुत्कृष्टं	भार १५.१३	कालश्च चित्रगुप्तञ्च ब्र.या. १०.८४
कार्पासज्जुशापेन कुर्वीत	भार १५.२१	कालं कालविभक्तीश्च मनु १.२४
कार्पासवटतंत्वोर्वी	भार २.३५	कालं देशं तथाऽऽत्मानं बौधा १.५.५५

कालं राहुं चित्रगुप्तं	वृ परा ११.४४	काष्ठपादुकदा यान्ति	वृ.गौ. ७.७७
कालागतोऽतिथिर्दष्ट	व्यास ३.३९	काष्ठपादुकतर्दायाम्	वृ.गौ. ५.८७
कालाग्निरुद्र तु ततो	शंख १३.४	काष्ठभारगतेनापि धृत	विश्व ८.४७
कालातीतं न कर्तव्यं	विश्व १.७	काष्ठमूलकन्दभाण्ड	आंपू १०२५
कालालकं वार्धुषिकं	प्रजा ९०	काष्ठलोष्टाश्मभिर्गावः	लघुयम ४८
कालंसहिष्णवो वृद्धा	नारा ७.१२	काष्ठलोष्टकपाषाणैः	पराशर ९.२३
कालिङ्गं कतकं विल्वफलं	वृ हा ४.११२	काष्ठेन जलगण्डूषै	व २.६.२१८
कालिन्दी गोमये तस्या	वृ परा ५.३९	काष्ठे सांतपनं कुर्यात्	लघुयम ४९
काले कर्म प्रकुर्वीत	व्या १६४	कासत्यनिभृतोऽकस्माद	नारद २.१७३
कालेऽदाता पिता वाच्यो	मनु ९.४	कासां तु गर्भस्य न	वृ परा १२.७४
कालेन दत्तासद्यो	कपिल ४६३	कास्यं च भस्मना	वृ परा ८.३३५
काले निजस्त्रीसंसर्गस	शाण्डि १.३८	किङ्करामृत्युदण्डाश्च	वृ .गौ. ६.११४
कालेन महता तस्मान्न	लोहि ५२५	किञ्चिच्चान्नं यथाशक्ति	द ३.७
कालेन महता पश्चात्	लोहि ५६५	किञ्चित् कालं विनाऽन्नाद्यै	वृ परा ५.११६
काले पात्रे तथा देशे	वृ परा १०.३४९	किञ्चित् सुप्तेषु लोकेषु	वृ परा १२.४४
कालेऽपूर्णे त्यजन् कर्म	नारद ७.७	किञ्चिदुच्छिष्टमादाय	व २.३.१२५
कालेषुक्त्वा समुत्थाय	वृ परा ६.१३६	किञ्चिदेव तु दाप्य	मनु ८.३६३
काले समागते तस्मिन्	वृ हा ५.२२८	किमर्थमेवमिति चेत्सा	लोहि १३७
कालोऽग्नि कर्म मृदायु	या ३.३१	किञ्चिदेव तु विप्राय	मनु ११.१४२
कालो ग्निर्मनसः शुद्धि	बौधा १.५.५३	किञ्चिद् भेदं समास्थाय	वृ परा १२.१२५
कालोऽग्निर्मनसः	व १.२३.२७	किञ्चिद् वेदमयं	व्यास ४.३२
कालोऽतिक्रम्यते नित्यं	विश्व १.१३	किं चिद् वेदमयं पात्र	व १.६.२४
कालो ह्यनन्तरूपस्तु	प्रजा १६९	कितवान् कुशीलवान्	मनु ९.२२५
कां गतिं वदतां श्रेष्ठ	बृ.गौ. १५.८	कितवेष्वेवतिष्ठेयु	नारद १७.४
का विद्या का ह्यविद्या	बृ.या. १.१९	किन्तु तान्निखनेद् भूमौ	वृ परा ८.५३
कावेरी चन्द्रभागादि	वृ हा ३.२९१	किन्तु राज्ञा विशेषेण	नारद १.५९
काव्यालापोऽपि जप्यो	शाण्डि ४.१८२	किन्त्वयं याचते देवा	वृ परा ८.७९
काशा दशविधा दर्भा	आंपू ५३६	किन्नरान् खेरान्	वृ परा २.१७२
काश्मरीबृहतीसाल	भार ५.९	किन्नरान् वानरान् मत्स्यान्	मनु १.३९
काषायमात्रसारोऽपि	वृ.गौ. १२.१०	किन्तु स्मरन् कुरुश्रेष्ठ	विष्णु म ६
काषायवासः कौपीनं	वृ परा १२.१२७	किमप्यसाध्यमेताभि	भार १९.४९
काषायवाससश्चैव	या १.२७३	किमत्र बहुनोक्तेन	वृ हा ८.३०४
काष्ठ उपल शिलाघातैः	वृ.गौ. ५.३८	किमस्ति वचने तस्मिन्	कपिल ८४९
काष्ठकाण्ड तृणादीनां	नारद १८.८२	किमप्य मदकाक्षत तदाद्येन	कपिल ६०
काष्ठजललोष्ट जल	व १.२३.१२	किमासीदिति चालोच्य	कण्व ७०३

किमाहिताग्ने कुर्वन्ति	वृ.गौ. १५.९	कीदृशा ब्राह्मणा पुण्या	वृ.गौ. २१.१
किमिदं देव ! देवेश	वृ.गौ. १०.३२	कीदृशा साधवो विप्राः	वृ.गौ. १२.२०
किमुक्तं भवतीत्येतज्ज	बृ.या. १.१३	कीदृशासु व्यवस्थासु	वृ.गौ. ३.३.
किमेतदिति तूष्णीकं	लोहि ४६२	कीनाशो गोवृषो यानं	मनु ९.१५०
किमौरसस्य समतां तुर्यता	लोहि ७३	कीर्तितानि द्वादश	आंपू ६१३
किं कार्यमिति तैः प्रोक्ते	लोहि ४५६	कीलकंकीलवकील	भार ७.३६
किम् च अत्र बहुनोक्तेन	वृ.गौ. १६९	कुकुमाद्य चन्दनं	वृ परा ७.१२८
किं च जप्यं तपेन्नित्यं	विष्णु म ११	कुक्कुटः शूकरश्वानो	औ ५.३३
किं तस्य दानै किं तीर्थे	विष्णु म ९९	कुक्कुटश्वानमाजिरान्	वाधू १७०
किं तस्य बहुभिर्मन्त्रैः	विष्णु म ९७	कुक्कुटं विड्वराहं	व २.६.४७६
किं तु तज्जन्मजनक	लोहि ७१	कुक्कुटाण्डकमात्र	वृ.य. २.५
किं ते कार्यं किमर्थं	आंड २.१०	कुक्कुटाण्डप्रमाणन्तु	पराशर १०.३
किं त्वग्नौ करणाद्ब्रह्मं	आंपू ६३१	कुक्षौ तिष्ठति यस्यानं	आंपू ७३५
किं दण्डैरजिनैस्तीर्थः	वृ परा ६.१८६	कुङ्कुमं चापि सिन्दूरं	लोहि ६६२
किं दानं नयतेबुद्धिर्गतिम्	वृ.गौ. ३.७	कुङ्कुमेन लिखेत्ताम्रे	ब्र.या. १०.५१
किं धनेन करिष्यन्ति	व्यास ४.१८	कुङ्कुमे स्थापयेद्विष्णुं	ब्र.या. १०.४६
किंवा न जाने तद्युयं	कपिल ८०३	कुचपादस्तु भुञ्जीयात्	वृ.गौ. १३.४
किं निष्कामस्य नारीभिः	वृ परा ६.२१८	कुचप्रयोगो यत्प्रोक्तः	भार १८.११०
किं रत्नैः भूषणैः दत्तैः	वृ परा १०.२४३	कुदशाभोस्तु नादेयं	ब्र.या. ३.५९
किं रूपं किं प्रदानं वा	वृ.गौ. ५.९	कुर्वादिग्रंथनाग्राणा	भार १८.१०३
किं वाच्यमस्ति तज्ज्ञांवा	आंपू ४११	कुञ्जवामनखंजेषु	अत्रिस १०५
किं वा सत्यं भवेद्	वृ.या. १.१४	कुटुम्बभरणाद् द्रव्यं	नारद ५.६
किं वेदैः पठितैः सर्वै	वृ परा ४.१४	कुटुम्बसक्तो मूढात्मा	शाण्डि ३.६९
किं स्विद्वनमित्यान्तं	वृ हा ८.६४	कुटुम्बं बिभृयाद् भ्रातुर्यो	नारद १४.१०
कियन्मात्राणि देवानां	ब्र.या. १०.२८	कुटुम्बार्थेऽध्यदीनोऽपि	मनु ८.१६७
किरीट केयूरधरं	वृ हा ३.३६९	कुटुम्बार्थेषु चोद्युक्तं	नारद १४.३५
किल्बिषं गजमुष्ट्रञ्च	वृ हा ४.१५४	कुटुम्बाश्रमनिष्ठानां पञ्च	शाण्डि १.४
किष्कुमात्रांच यो दद्याद्	वृ परा १०.१८९	कुटुम्बाश्रममाश्रित्य तथा	शाण्डि १.९
किष्कुर्नामभवेद्धस्त	भार २.५९	कुटुम्बिने दरिद्राय	पराशर १२.४५
कीकटादिषु तच्छून्ये	लोहि ३६१	कुटुम्बिन्यपि कर्त्तव्यं	शाण्डि ३.७१
कीटपक्षिमृगाणाञ्च	वृ.गौ. २१.२४	कुटुम्बैः पंचभिर्ग्राभ्यैः	दक्ष ७.१७
कीटप्रेवेशे वस्त्राणां	वृ परा १०.२७६	कु इयलग्नां वसोद्धारां	कात्या १.१५
कीटाः चैव पुरीषस्य	वृ.गौ. १.३५	कुड्येन्तर्जलवल्मीक	लघुयम ६७
कीटाश्चाहिपतंगाश्च	मनु ११.२४१	कुणपादिव च स्त्रीभ्यः	वाधू १९३
कीदृशानान्तु शूद्राणां	वृ.गौ. २२.१	कुण्डलाकृतिसंस्थानं	बृह ९.९

कुण्डालिन्यां समुद्भूतां	विश्वा १.३९	कुरुते ब्रह्मयज्ञं च	आश्व २४.२
कुंडं सुमंगलीजातः	भार १६.३६	कुरुष्वेति ह्यनुज्ञातो	औ ५.४१
कुण्डानि खनितव्यानि	वृ परा ११.२४८	कुरुष्वेति ह्यनुज्ञातो	वृ परा ७.२०४
कुण्डाशि पतितश्चैव	ब्र.या. ४.१३	कुर्याच्च गृष्टिवद् विद्वान्	वृ परा १०.६०
कुत एवमीति प्रोक्ते दत्तोऽयं	कपिल ९१	कुर्याच्चैव पुरोडाशं	संवर्त ९९
कुतपः श्रोत्रियो बीरोभूणो	लोहि ३१५	कुर्याच्छूद्रवधं प्राप्तं	संवर्त १२८
कुतपं तिलसंयुक्तं ज्योति	ब्र.या. ३.४६	कुर्यच्छ्राद्धविधानेन	व २.६.२४३
कुतपानामरिष्टैः	बौधा १.५.४१	कुर्यात्कुम्भमार्गेण	विश्वा ८.६७
कुतपो वेदवचसा मुख्यः	आंपू ६५३	कुर्यात्तस्मिन् दिने युक्ते	अत्रि ५.७३
कुत्र काले च कर्तव्यं	वृ परा ७.९०	कुर्यात्त्रय्याद्विकर्माद्ध इत्येव	कपिल २७६
कुद्दालपाणिर्विज्ञेयः	नारद २.१५३	कुर्यात् त्रिषवणं स्नायी	या ३.३२५
कुनखी श्यावदन् श्वित्रो	नारद २.१३३	कुर्यात् पंच महायज्ञं	आश्व १.१४३
कुनखी श्यावदन्तुस्तु	व १.२०.७	कुर्यात् पंचमहायज्ञान्	ल व्यास २.५०
कुन्दसहस्रकुसुमै	वृ हा ५.५५९	कुर्यात् पंचमहायज्ञान्	आश्व २४.४
कुन्दैश्च कुटजैर्हामस्तु	व २.६.२६२	कुर्यात्पवित्रवैर्त्यस्या	बार १८.६७
कुप्यं जाति त्रयोदश्यां	ब्र.या.४.१६४	कुर्यात् पुंसवनं मासि	आश्व ४.१
कुप्यंति विर (पितर) स्त्वेन	कपिल २४९	कुर्यात् पुरुषसूक्तेन	शाता ६.२१
कुबुद्धयं कुबोर्दारः कुत्सिता	कपिल ५१	कुर्यात् प्रत्यभियोगाञ्च	या २.१०
कुब्जवामनषण्डेषु	पराशर ४.२२	कुर्यात् प्रदक्षिणं विष्णोरतो	वृ हा ८.६
कुब्जवामनषण्डेषु	लिखित ७९	कुर्यात्स्वकर्मानुष्ठान्	भार १८.५२
कुमारभोजनेऽप्येवं	कण्व ६०१	कुर्यादनशनं वाद्य	औ ८.८
कुमारस्याञ्जलौ चैव	आश्व १०.१७	कुर्यादिवभृथं तत्र	वृ हा ५.५००
कुमारीगमने चैवमेतत्	संवर्त १६१	कुर्यादिवभृतं तत्र	वृ हा ६.४३
कुमारी तु शुना स्पृष्टा	वृ परा ८.२७६	कुर्यादिवभृतेष्टिञ्च	वृ हा ५.४४७
कुमारी मातुरुत्संगं	व २.३.२८	कुर्यादहरहः श्राद्ध	ब्र.या.२.२०९
कुमार्युतुमती त्रीणि	व १.१७.५९	कुर्यादहरहः श्राद्ध	शंख १३.१६
कुम्भकेन् हृदिस्थानं	ब्र.या. २.६१	कुर्यादहरहः श्राद्धं	औ ३.१२६
कुम्भकेन हृदिस्थाने	बृ.या. ८.२४	कुर्यादहरहः श्राद्ध	मनु ३.८२
कुम्भीपाकं लोहशंकु	वृ हा ६.१६२	कुर्यादाधारपर्यन्त	व २.३.४३
कुम्भस्य जलसिक्तान्तं	आश्व १५.५७	कुर्यादाब्धिकपर्यन्तं	आंपू ८७७
कुम्भस्य सलिलं सिंचेद्	आश्व १५.४६	कुर्यादालोकनं नित्यं	वृ परा १२.१७
कुम्भं रौप्यमयञ्चैव	शाता २.२२	कुर्यादेव त्रिराचे (त्रै) ण	कपिल १०३
कुम्भाडः कुण्डली चक्रः	आंपू ५२०	कुर्यादेव न चेत्सेयं भूमि	कपिल ५५२
कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च	मनु २.१९	कुर्यादेव विधानेन न	कण्व ३६७
कुरुक्षेत्रे महात्मानं	पु १	कुर्यादेव पितुः श्राद्धतुल्यं	आंपू ७१७

कुर्यादेव विधानेन दक्षिणां	लोहि ३७८	कुर्वीतैव प्रयत्येन पूर्वशेषेण	कपिल २८४
कुर्यादेव समन्त्रास्ते	लोहि २३	कुलकोटिं समुद्धृत्य	वृ हा ७.८९
कुर्यादेवेति हारीतो	आंपू २६४	कुलक्षयिणी ज्ञेया	ब्र.या. ८.१५२
कुर्याद् अध्ययनं नित्यं	औ ३.४१	कुलघ्नो नरकस्यान्ते	शाता ४.१
कुर्याद् अध्ययनं नित्यं	संवर्त १००	कुलंकारी मनुर्मानो	आंपू ५१२
कुर्याद् उरतोऽभ्यर्णे	वृ परा १०.५४	कुलंजं सप्तमं पूर्वं षष्ठं	कपिल ७८
कुर्याद्येदं विधिवत्	वृ परा ११.१९९	कुलजां सुमुखी स्वांगी	आश्व १५.२
कुर्याद्वयाहृतिभिर्न्यासं	वृ.या. ५.४	कुलजे वृत्तसम्पन्ने	मनु ८.१७९
कुर्याद्वलिहतिं विद्वान्	वृ परा ५.८१	कुलटाषण्डपतिवैरिभ्य	शाण्डि ३.१८
कुर्याद्वा कारयेद्वापि	आंपू १८३	कुलत्थशाकैः पूषैश्च	शाता २.४५
कुर्याद्विनयनं तत्र उर्जीव	ब्र. या. ८.३१२	कुलत्था मुदमाषाश्च	वृ परा ५.१३९
कुर्याद्विशेषवत्कर्म यथा	शाण्डि ५.५५	कुलंदा (पा) षण्डपतित	वाधू १६८
कुर्याद् वृत्तपशु संगे	मनु ५.३७	कुलप्रतिष्ठानाशाय पापैपात्र	कपिल ५८५
कुर्यान्नामानि देवस्य	शाण्डि ३.१६	कुलार्विजमधीयानं	कात्या १५.४
कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु	ब्र.या. ८.५०	कुलस्य पावनार्थाय	व २.६.४२७
कुर्युं पंचमहायज्ञान्	वृ परा ६.७४	कुलं तस्या न शंकेत	वृ परा ५.४२
कुर्वती चातकी वृत्तिं	कपिल ४०२	कुलाचारविनिर्घृष्टो	ब्र.या. ४.१८
कुर्वन्नज्ञा द्विजः कर्म	वृ परा २.४९	कुलाचारो पि कर्तव्य	वृ परा ६.२०४
कुर्वन्नुक्तानि कर्माणि	वृ परा ४.२१८	कुलानां हि सहस्रं तु	वृ परा १०.११७
कुर्वन्ति चैतद् विधिना	वृ परा ११.८५	कुलानि जाती श्रेणीश्च	या १.३६१
कुर्वन्ति ते महापापात्तद्धवि	विश्वा ८.५६	कुलानि श्रेणयश्चैव	नारद १.७
कुर्वन्ती भोजनं भतुर्भुक्तेः	आंपू ८७१	कुलासि सन्तति प्राण	वृ.गौ. ३.५५
कुर्वन्वै कल्पना साल्दै	ब्र.या. ५.१७	कुलान्ते पुष्पिता गावः	वृ परा ५.१८
कुर्वन्वै प्रतिपच्छाद्ध	ब्र.या. ४.१६१	कुलान्यकुलतां यान्ति	ब्र.या. ८.१८६
कुर्वन् सुभोजनं कर्म	शाण्डि ४.१२१	कुलालचक्रनष्पिन्नं	कात्या १७.१०
कुर्वस्तत्पलमाप्नोति	विष्णु म ८४	कुलालवृत्त्या जीवेत	औ सं ३३
कुर्वाणां वीक्षितैर्नित्यं	विष्णु १.२८	कुलित्थशालिशालूकाः	व २.७.९३
कुर्वीत परया भक्त्या	वृ हा ६.१४६	कुलीनः कर्मकृद्द्वेद्य	वृ.गौ. १४.१२
कुर्वीतं ब्रह्मविद्विप्रो	वृ परा ३.२४	कुलीनस्फीता सुचाख्याताः	ब्र.या. ८.१५१
कुर्वीत महतीं शान्तिं	वृ हा ६.४१४	कुलीना ऋजवः शुद्धा	नारद २.१३०
कुर्वीत वासुदेवेष्टिं	वृ हा ६.४१९	कुले ज्येष्ठतया श्रेष्ठ	नारद २.३८
कुर्वीत वैनतेयेष्टिं	वृ हा ६.४१५	कुले तदवशेषे तु संतानार्थ	नारद १३.८६
कुर्वीत सर्वकृत्यानि धर्मोऽयं	कपिल ६८९	कुले मुख्येऽपि जातस्य	मनु १०.६०
कुर्वीत् सुविशालानि	वृ हा ४.२०९	कुले समाने सा चापि	लोहि ८३
कुर्वीतैवादिवा शौचं	भार ३.१७	कुविवाहैः क्रियालोपैः	मनु ३.६३

कुवेरसदृश श्रीमान् भवेत्	वृ हा ३.३७६	कुशीलवोऽवकीर्णो	मनु ३.१५५
कुशः कर्मस्वयोग्यः	भार १८.४०	कुशूलं कुम्भीधान्यानि	ब्र.या. ७.४९
कुशकाशैस्तु बघ्नीया	आंउ १०६	कुशेनैव पवित्रेण	वृ हा ८.१०९
कुशकुर्चक्षिपेधीमान्	भार ७.६३	कुशेवृत्तानपाणिस्तु आहुती	व्या १२१
कुशकुर्चानिजत्वाध	भार ७.७०	कुशेषु तेषु दद्यात्	वृ हा ६.१३०
कुशकूर्चं यथापूर्वं	भार ७.८८	कुशैः काशैश्च बघ्नीनीयाद्	पराशर ९.३४
कुशग्रंथि कृत्वा	शंख १२.६	कशैः काशैश्च बघ्नीयाद्	आप १.२६
कुशग्रन्थिषु बिम्बेषु	वृ हा ७.१४४	कुशैः प्रमृज्य पादौ	शंख १७.५०
कुशग्रंथिषु संपूज्य	वृ हा ८.२३२	कुशोदकेन यत्कण्ठं	वृ हा ४.४४
कुशग्रंथिसहस्रन्तु	वृ हा ५.३२०	कुष्ठञ्च राजयक्ष्मा	शाता १.६
कुशनालुलतारूप यत्	भार १८.४९	कुष्ठी गोवधकारी	शाता २.१३
कुसपञ्चाशको ब्रह्मा	ब्र.या. ८.१८८	कुष्माण्डैर्वापि जुहुयाद्	मनु ८.१०६
कुशपुष्पेन्धानादीनि	ल हा ४.२२	कुसीद वृद्धिर्द्वैगुण्यं	मनु ८.१५१
कुशपूतन्तु यत्स्नानं	पराशर १२.२८	कुसीदञ्चैव वाणिज्यं	वृ हा ४.१७३
कुशप्रसून दुर्व्वाग्र	वृ हा ५.४६६	कुसीद कृषिवाणिज्य	नारद २.४२
कुशमय्यामासीनः	शंख १२.४	कुसुमैः धूपदीपैश्च	वृ हा ६.३७
कुसलः कर्मसुखकृत्	आंपू ५१७	कुसुम्भगुडकार्पासलवणं	पराशर ६.३८
कुशः सौम्यस्तुमुमुकः	भार १८.१५	कुसुम्भरक्तं वस्त्राणि	भार १५.१२०
कुशस्य च पवित्रस्य	भार १८.१	कुसूल कुम्भीधान्यो	या १.१२८
कुशस्य मूले मध्ये	भार १८.६	कुसूलधान्यको वा स्यात्	मनु ४.७
कुशहस्तः पिबेत्तोयं	वाधू २७	कुसूलेषु दुकूलेषु	आंपू १०१६
कुशहस्तः पिबेत्तोयं	भार १८.७७	कुह्वै चैवानुमत्यै च	मनु ३.८६
कुशहस्तश्चरेत्स्नानं	भार १८.५	कूटञ्च भद्रमूलञ्च	औ ३.१४६
कुशहस्त सत्यवक्ता	देवल २५	कूटशासन कर्तृश्च	मनु ९.२३२
कुशाग्रकृततोयेन	ल हा ४.३०	कूटसाक्ष्यं तथैवोक्त्वा	शंख १७.५
कुशाग्रे मूलसमृज्य	कुशमूले ब्र.या. ८.२६४	कूटस्वर्णव्यवहारी	या २.३००
कुशाग्रे स प्रदातव्यं	ब्र.या. ४.१२६	कुटाक्षदेविनः पापान्	नारद १७.६
कुशानथाहरेत्साग्रान्	व २.६.१३३	कूपखाते तटीखाते	पराशर ९.४०
कुशानामांतरं तेषां	भार १८.११४	कूपखाते तटीबन्धे	पराशर ९.३९
कुशानसंगृह्य कर्माणि	भार १८.१२७	कूपतडागखनन विधान	विष्णु ९१
कुशा-ऽब्जा-ऽश्वत्थ	वृ परा ८.२१३	कूप तोयैरपि स्नायात्	शाण्डि २.४९
कुशा शाकं पयो मत्स्य	या १.२१४	कूपस्थाने तथारण्ये	आंउ ८.१६
कुशासनं सदापूतं	वृ हा ४.४५	कूपस्थान्यपि सोमार्क	वाधू ५२
कुशासने प्राग्वदनः	भार १३.६	कूपादुत्क्रमणे चैव	पराशर ९.३८
कुशास्तान् द्विगुणी	व्या ३९३	कूपे च पतितं दृष्ट्वा	पराशर ११.३८

कूपे विण्मूत्रसंस्पृष्टे	संवर्त १८५	कृच्छ्राणि त्रीणी वा	वृ परा ८.१२०
कूपैकपानेर्दुष्टानां	आप ३.४	कृच्छ्रतिकृच्छ्रः कुर्वीत	औ ९.९५
कूपो मूत्र पुरीषेण	आप २.९	कृच्छ्रतिकृच्छ्रः पयसा	देवल ८६
कूर (क्रू) सग्रे (ग्रहे)	तथाब्रह्म १०.१५६	कृच्छ्रतिकृच्छ्रः पयसा	या ३.३२०
कुचलो विलमण्डश्च	प्रजा १४२	कृच्छ्रान्तिकृच्छ्रौ चान्द्रायण	व १.२२.१०
कूर्चाक्षसूत्र श्रृंगदंघा	नार १२.२१	कृच्छ्रादि व्रत विधानं	विष्णु ४६
कूर्मपित्तयोअस्थेक	ब्र.या ८.३०६	कृच्छ्राद्य स्थापयेच्छीते	शाण्डि ३.८६
कूर्मपृष्ठोद्धता मध्ये	वृ परा ११.२७७	कृच्छ्राब्दमाचरेज् ज्ञानाद्	अत्रिस १९९
कूर्मश्च मकरश्चैव	वृ परा ११.२३५	कृच्छ्रार्थः पतितस्यैव	अत्रिस २६०
कूष्माण्डं गौरवृन्ताकं	वृ परा ७.२२६	कृच्छ्रेण वस्त्रघातेऽपि	यम ७१
कूष्माण्डं त्रपुषं दत्त्वा	वृ परा १०.२२७	कृच्छ्रे त्रिषवणमुदको	बौधा २.१.९५
कूष्माण्डं महिषीक्षीरं	ब्र.या. ३.५०	कृच्छ्रैः वाऽपि नयेत कालं	शंख ६.७
रकूष्माण्डं महिषीक्षीरं	व्या १७९	कृतकर्मत्रयकृतो यो	आआंपू ३०३
कूष्माण्डं राजपुत्रैत्येतेस्वाहा	ब्र.या. १०.१७	कृतकानां सुराणाञ्च	औ सं १८
कूष्माण्डावालवृ हांक	ब्र.या. ४.९४	कृतकृत्याधियो मूढाः अहो	शाण्डि १.५१
कूष्माण्डे गणहोमे	कण्व ३१५	कृतकेशविभागं	आम्ब ४.११
कूष्माण्डैर्जुहुयात्पंच	वृ परा ११.२५४	कृतध्न पिशुनः कूरो	औ ४.३५
कूष्माण्डैः जुहुयान् मंत्रैः	वृ परा ९.३३	कृतध्नश्चकलीनश्नच	ब्र.या. ४.२४
कूष्माण्डैर्वा द्वादशाहम्	बौधा २.१.८४	कृतध्नो ब्राह्मणागृहे	औ ९.९२
कूष्माण्डो राजपुत्र	वृ परा ११.२३	कृत चाण्डालसंस्पर्शः	वृ परा ८.२५३
कृक खालाषया आयुः	ब्र.या. ८.३४३	कृतचूडस्तु कुर्वीत	अत्रिस ९६
कृच्छ्र कृद्धर्मकामस्तु	या ३.३२७	कृतशोऽदोही मेधावी	या १.२८
कृच्छ्रचान्द्रायणं कुर्यात्	औ ९.६१	कृतशोऽदोहि मेधावी	ब्र. या. ८.६०
कृच्छ्रचान्द्रायणादीनि	कण्व ३३९	कृतत्रयविवाहस्य पत्नीं	आंपू ४०२
कृच्छ्रत्रयं चरेद्विप्रो	अ ४२	कृतत्रेताद्वापरे (पु) तु मरण	नारा १.९
कृच्छ्रत्रयं प्रकुर्वीत	कण्व ५.९५	कृतदाराः संगृहीताः पुत्र	कपिल ६७६
कृच्छ्रदेव्ययुतंचैव	पराशर १२.५६	कृतदारोऽग्निपत्नीभ्यां	व्यास २.१६
कृच्छ्रपादेन शुद्धयेत पुनः	अत्रिस २०३	कृतदारो न वै तिष्ठेत्	वाधू १५३
कृच्छ्रपादेन शुद्धयेत	अत्रिस २०५	कृतदारोऽपरान्दारान्	मनु ११.५
कृच्छ्रमदण्ड्यदण्डने	व १.१९.२७	कृतपूर्वाहणकार्या च	व्यास २.२५
कृच्छ्रमेकंचरेत्सा तु तदर्धं	अत्रि ५.६१	कृतप्रहारं खड्गेन गृहीत	लोहि ६९६
कृच्छ्रं चान्द्रायणं चैव	बौधा २.१.८	कृतमात्रे तु तस्मिन्वै	कण्व ७१
कृच्छ्रं चैवातिकृच्छ्रञ्च	या ३.२६४	कृतमाध्याह्नकोऽश्नीयाद्	व्यास १.३१
कृच्छ्रं विधानतः	आंपू २०२	कृतमेव भवेन्नूनं नात्र	लोहि ३८१
कृच्छ्राणां व्रतरूपाणि	व १.२४.५	कृतमोदनशक्तवादि	कात्या २४.३

कृतयुगेपिचैस्मिन्	भार ६.१६३	कृते चास्थिगताः प्राण	पराशर १.३०
कृतरक्षः सदोत्थाय	या १.३२७	कृते चोपसेत्सम्यक्तथा	व २.७.७९
कृतवापनो निवसेद्	मनु ११.७९	कृते तु तत्क्षणाच्छाप	पराशर १.२७
कृतसिल्पोऽपि निवसेत्	या २.१८७	कृते तु मानवो धर्म	पराशर १.२४
कृतशौचस्तथाऽऽचान्तो	वृ हा ८.७	कृतेन दानेन यथा परपीडा	कपिल ४४९
कृतशौचौ निषेव्याग्निं	व्यास ३.३	कृतेन धनदानेन	आंपू ३३३
कृतसंध्यस्ततो रात्रिं	ल हा ६.२१	कृतेन येन मुच्यन्ते	वृ परा २.९०
कृतस्य सूतके यत्तु	लोहि ६१६	कृतेष्वपि तथा तेन त्वक्षतो	लोहि ७०२
कृतहोमस्तु भुञ्जीत	ल हा १.२८	कृते सम्भाषणात् पापं	पराशर १.२६
कृतं चेत्कर्म तद्भूयः	आंपू १३५	कृते संभाष्य पतति	वाधू १८४
कृतं चेत् तत्परं सर्वं	कपिल ८८८	कृतोदकान् समुत्तीर्णान्	या ३.७
कृतं चेत्तत्पुरं सम्यक्	आंपू ८८०	कृतोपनयनयनस्यास्य	मनु २.१७३
कृतं त्रेतायुगं चैव	मनु ९.३०१	कृतोपनयनो वेदानधीयीत	औ १.४
कृतं दत्त वस्तुतस्तु सूतकान्ते	कपिल ८८	कृतोपवासस्तत्राहि	वृ परा ७.३९
कृतांकृतां तण्डुलांश्च	या १.२८७	कृतोयदि तथा सूनू रंडागर्भ	कपिल ६०१
कृताग्निं कार्यदेहोऽपि	वृ परा ५.१६२	कृत्तिकादि भरण्यन्तं	या १.२६८
कृताग्निकार्यो भुञ्जीत	या १.३१	कृत्यैश्चरित्रैः सुस्पष्टं	लोहि ७२
कृतग्निकार्यो भुञ्जीत	ब्र.या. ८.६२	कृत्वा आधानं विधानं	वृ परा ६.१४३
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा	पराशर १.९	कृत्वा कर्माणि नित्यानि	कण्व ४३२
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा	वृ परा १.१०	कृत्वा कुशमयीं पत्नी	वृ हा ८.२१३
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा	वृ परा ११.२३३	कृत्वा गार्ह्याणी कर्माणि	संवर्त ९६
कृताञ्जलिरूपश्रान्तः	बृ.गौ. १६.१३	कृत्वाऽग्निहोत्र स्मार्तं च	कपिल ६९
कृताञ्जलिस्तस्यमनो	व २.३.१६९	कृत्वाग्न्यभिमुखौ	कात्या १५.१८
कृतादिश (क) लिप्यन्त	भार ९.७	कृत्वाऽघमर्षणस्नानं	व २.६.२८
कृतानि सम्भवं येननात्र	कपिल १७३	कृत्वां च यावकाहारा	आंपू २०४
कृतानि सर्वदानानि	भार १३.४१	कृत्वा च विधिवच्छ्रीद्धं	वृ परा ६.३२४
कृतानुसारदधिका	मनु ८.१५२	कृत्वा च शपथं बाढं	आंपू ३६२
कृतान्नसाधना साध्वी	व्यास २.३१	कृत्वा चैवं ततः पश्चात्	दक्ष २.५३
कृतांप्रतिष्ठां तां कृत्वा	भार ११.६८	कृत्वा चैवं महापापं	औ ८.३३
कृताभिषेकं दालभ्यं	दा १	कृत्वाऽऽज्याहुतिपर्यन्तं	आश्व १०.१३
कृतार्थतां प्रापयति	आंपू ३३९	कृत्वा ततः परंभूयः	नारा ८.२
कृतार्थभुरकर्माणं तुच्छं	आंपू ७५३	कृत्वा तत्रैव निवसेदत्तांशः	लोहि ४७३
कृतावापो वने गोष्ठे	आंड ११.२	कृत्वा स्मिन्वीहितहोत्रे	लोहि १२५
कृताशौचं विधानेन	व २.३.९८	कृत्वा तं मूढबुद्धिस्तु	अ ८१
कृतिस्सा श्रीमती पुण्या	कपिल ८६	कृत्वा तु वरणं पश्चादों	आंपू ७७८

कृत्वा तु स्नातकः पश्येत्	आश्व १४.६	कृत्वा लब्ध्वा स्वयं	औ ३.१४४
कृत्वा त्रिवारं तत्पश्चात्	कण्व २५६	कृत्वा वचांसि तत्पश्चत्तमेव	कपिल ८४७
कृत्वा त्रिषवणस्नान	बृ.गौ. १७.४१	कृत्वा विधानं मूले तु	मनु ७.१८४
कृत्वा यज्ञोपवीतंतु	व २.६.७	कृत्वा व्याहृतिहोमान्तं	कात्या २०.१५
कृत्वा दण्डं गन्धलिप्तं	कण्व ५६८	कृत्वा शुभां समीचीनां	कण्व २३६
कृत्वऽऽदौ तर्पणं संख्यां	आश्व १.११५	कृत्वा शौचं विधानेन	कण्व १२४
कृत्वा ध्यात्वा महायोनि	विश्वा ६.४७	कृत्वा शौचं विधानेन	वृ हा ८.८४
कृत्वा नारायणीमिष्टिं	वृ हा ६.४१०	कृत्वा श्राद्धं प्रकुर्वीतं	विश्वा ८.६८
कृत्वाऽन्यतममेतेषां	वृ परा ८.२८९	कृत्वा षडंगविन्यास	भार ६.८८
कृत्वा न्यासत्रयं पश्चाद्	भार १२.५६	कृत्वा सङ्कल्प्य तत्पश्चात्	कपिल ४७
कृत्वा पापं न गूहेत	आंउ २.४	कृत्वा सचैलं स्नात्वा	वृ हा ६.३०३
कृत्वा पापं न गूहेत	पराशर ८.६	कृत्वा सम्यक् प्रकुर्वीत	औ ९.१००
कृत्वा पापं बुधः कुर्यात्	शंख १७.६२	कृत्वा सहवसनन्यास	भार ६.७२
कृत्वा पापं हि सन्तप्य	मनु ११.२३१	कृत्वा सुखोष्णं संस्कृत्य	आंपू २४१
कृत्वाऽपिपापकर्माणि	वृहस्पति ६७	कृत्वेध्मानादि पर्यन्तं	वृ हा ७.२७९
कृत्वा पूर्वमुदाहार्य	आंउ १.७	कृत्वेष्टि विधिवत्	शंख ७.१
कृत्वा प्रतिकृतिं कुर्याद्	बृ.गौ. २१.३०	कृत्वैत द्रलिकर्मवमतिंथि	मनु ३.९४
कृत्वा प्रदक्षिणं नत्वा	कण्व ७१९	कृत्वैव धारयेच्छश्वत्	भार १५.९०
कृत्वाऽऽभ्युदयिकं श्राद्ध	आश्व ४.४	कृत्वैव पश्चात्तच्छ्राद्ध	आंपू १०४२
कृत्वाऽऽभ्युदयिकं श्राद्ध	आश्व ८.२	कृत्स्नक्रियाविशेषेषु	आंपू ५९४
कृत्वाऽऽभ्युदयिकं श्राद्ध	आश्व ९.२	कृत्स्नमारण्यकं काण्डं	कण्व ६१२
कृत्वाऽऽभ्युदयिकं श्राद्ध	आश्व १०.२	कृत्स्नं चाष्टविधं कर्म	मनु ७.१५४
कृत्वाऽऽभ्युदिकं श्राद्ध	आश्व १४.२	कृत्स्नेष्वशुचिषु स्नानं	आंपू १६७
कृत्वा मनुष्य यज्ञान्तं	आश्व १.१३५	कृत्स्नो गृहस्थधर्म	वृ परा १.५४
कृत्वा माध्याह्निकीं सन्ध्यां	विश्वा ७.१०	कृद्धाक्त यमहोक्वाय	व २.६.२२५
कृत्वा माध्याह्निकीस्नान	वृ हा ५.२११	कृपया दत्तपुत्रः श्रीभूमि	लोहि ५३
कृत्वा मूत्र पुरीषं वा	मनु ५.१३८	कृपया विप्रमात्रत्व	कण्व ७२७
कृत्वा मूत्र पुरीषं वा	शंख १६.१९	कृपाद् उद्धृत्य कलशौ	वृ हा ६.३९१
कृत्वा मूत्र पुरीषं वा	संवर्त १७७	कृपायमिन्द्र ते रथ	वृ हा ८.३७
कृत्वा मूलेन भूशुद्धिं	विश्वा ६.९	कृमिकण्टकदोषाणि निहीरद्वा	शाण्डि ३.९४
कृत्वा मूत्रपुरीषे च	ब्र.या. ८.८१	कृमिकीट पतंगत्वं	या ३.२०८
कृत्वा यज्ञोपवीतं	व्या ३३९	कृमिकीटपतंगानां	मनु १२.५६
कृत्वा यज्ञोपवीतानि	भार १६.५५	कृमि कीट पतंगानां	वृ परा ४.१७१
कृत्वा यत्नात्सुखोष्णं	आंपू २४३	कृमिकीट पतंगश्च	मनु १.४०
कृत्वा यत्फलमाप्नोति	वृ परा ११.२९१	कृमिकीटवयोहत्या मद्य	मनु ११.७९

कृमिदुष्टानि जीर्णानि	भार १४.६३	कृष्णाजिनप्रतिग्राही	वृ परा ६.२२९
कृमिभिर्ब्रह्मसंयुक्त मक्षिकै	बृ.य. ८१.७	कृष्णाजिनस्य दानस्य	वृ परा १०.१२२
कृमिभिर्व्रणसंभूतैर्मक्षिका	लघुयम ६२	कृष्णाजिनं उत्तरीयं	व १ ११.४८
कृमिभिर्व्रणसंभूतैर्मक्षिका	यम ६	कृष्णाजिनानां बित्त्व	बौधा १.५.४०
कृमि भूत्वाश्वविष्टायां	बृ.गौ.१३.३१	कृष्णाजिने कुशे वापि	व २.६.४३
कृशशक्रस्य वृत्तस्य	वृ.गौ. ६.११८	कृष्णाजिने तिलान्कृत्वा	व १ २८.२२
कृशान् भागवतान्	शाण्डि ४.१०३	कृष्णाजिने तिलान्	वृ परा १०.१३८
कृषि कर्मरतो यश्च गवाञ्चअत्रिस ३७.६		कृष्णान्मणीश्च तत्कण्ठे	कण्व ६५९
कृषि कृमानवस्तवेवं	वृ परा ५.१३२	कृष्णाय नम इत्येष	वृ हा ६.२८९
कृषिगोपालनिरतः	वृ.गौ.२.२७	कृष्णावध्रयतकपिला	ब्र.या.१०.८०
कृषि-गौरक्ष-वाणिज्यैः	वृ परा १२.१५४	कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां	वृ हा ५.४११
कृषितो विंशतिं दैव	वृ परा ५.१९०	कृष्णां प्रौढां (ढां) वृषारूढा	भार १२.१३
कृषिर्भूति पाशुपाल्यं	वृ हा ४.१७५	कृष्णाष्टम्यां महदिवं	औ ९.१०७
कृषि शिल्पं भृतिर्विद्या	या ३.४२	कृष्णेति मंगलं नाम	वृ हा ३.२८७
कृषिस्तु सर्ववर्णानां	वृ हा ४.१७२	कृष्णैश्च तुलसीपत्रैः	वृ हा ५.३७४
कृषिं साध्विति मन्यन्ते	मनु १०.८४	कृष्येकवृत्तिजीवी यो	वृ परा ७.२३
कृष्टजानामोषाधीनां	मनु ११.१४५	कृसरं मुद्गसूपं च	व २.६.२४८
कृष्णः केतु कुशानूत्यः	वृ परा ११.४०	कृसरापूपसंयावपायसं	व्यास ३.५३
कृष्णकेशोऽग्नीनादधीतेति	बौधा १.२.५	केचिच्छरमयीं पत्नीं	वाधू १४९
कृष्णजीरक-वंशाग्रा	वृ परा ७.२२४	केचित्तमेव पिण्डं तु	आंपू ९८२
कृष्णपक्षे दशम्यादौ	मनु ३.२७६	केचितु चक्रशंखौ द्वौ	वृ हा २.२३
कृष्णापक्षे यदा सोमो	पराशर ५.८	केचितु मुनयः प्राहुः	भार ६.११७
कृष्णपक्षे विशेषेण विहीतानि कपिल १५६		केचित्पत्न्याः पितृव्य	आंपू १०३७
कृष्णरम्भाफलैर्जुष्टं	वृ हा ५.४५६	केचित् सापिण्ड्य	वृ परा ७.७७
कृष्णरुरुबस्ताजिनान्य	बौधा १.२.१४	केचित् सापिण्ड्य मिच्छन्ति	वृ परा ७.८०
कृष्णवर्णा या रामा	व १ १८.१६	केचिदिच्छन्ति निष्क्रान्तं	बृ.या. ४.२२
कृष्णावस्त्रसमाच्छन्नं	शाता ६.१९	केचिदेतद्विशुद्ध्यथ	वृ परा ८.१९६
कृष्णसारस्तु चरति	मनु २.२३	केचिदेवंत्यार्याः प्राक्	भार २.४२
कृष्णसारो मृगो यत्र	ल हा १.१६	केचिद् देवात् स्वभावाच्च	या १.३५०
कृष्णसर्गभूषणयुक्ताः	वृ परा २.२३	केचिदेवालयद्वारं	भार २.११
कृष्णाजिक मृतशय्यां	अ ७०	केचिद्धि दैवस्य तु	वृ परा १२.६९
कृष्णाजिनातिलग्राही	आप ९.४३	केचिद्धुताशं वदनं	वृ परा ४.१०
कृष्णाजिनमथास्तीर्य	व २.६.३२७	केचिद् यज्ञ विदो	आश्व २३.८
कृष्णाजिनप्रदानं च	वृ परा १०.८	केचिद् रात्रौ कु पूर्वे	आ पू ७८५
कृष्णाजिनश्च यो दद्यात्	अत्रिस ३३४	केचिद् वदन्ति चैतानि	वृ परा १०.२११

केचिद् वदन्ति तज्ज्ञास्तु	वृ परा ८.२२४	केशवादीन् समुद्दिश्य	वृ हा ६.१३५
केचिद् वदन्ति मुनयः	वृ परा ८.२९०	केशवादीन्समुद्दिश्य	व २.६.४३४
केतकी द्यूतकी चैव	व्या १७८	केशववार्पितसर्वहं शशिभं	वृ हा ६.१०८
केतितस्तु यथान्यायं	मनु ३.१९०	केशवेनैवमाख्याते चान्द्रायण	बृ.गौ.१७.१
केतु कृष्णनाग्नि सूनोरिति	वृ परा ११.६७	केशवेनैवमाख्याते	बृ.गौ.१९.१
केतुं कृष्णान्निप्रोक्तं	वृ परा ११.३२३	केशश्मश्रुलोमनख	वौधा २.१.९८
के ते ब्रह्महत्या समाः पातकाः	विष्णु ३६	केशसंमितो ब्राह्मणस्य	व १.११.४६
केन द्रव्येण भूयश्च	लोहि ८	केशादि दूषिते तीरे न	अत्रि ५.४१
केन रूपेण ता वर्ण्या	वृ परा १०.१९६	केशानां रक्षणार्थं च	लघुयम ५७
केनाक्षरेण मन्त्रेण	बृ.या. १.१६	केशानां रक्षणार्थाय	दा ११०
केनैव विधिना सन्यग्	नारा ८.३	केशानां रक्षणार्थाय	लघुशंख ५७
केयूरांगदहारादि	व २.६.७८	केशानां रक्षणार्थाय	पराशर ९.५२
केयूरांदहाराद्ये	वृ हा ३.२२५	केशानां रक्षणार्थाय	वृ हा ६.३७३
केवलज्ञान सन्तृप्तास्ते	शाण्डि ४.१४	केशानां रंजनार्थं वा	वृ हा ८.१०२
केवलं लोकवृत्त्यर्थं	बृह ११.१५	केशानारंजनार्थाय	व २.६.१०६
केवलं चारुमावाऽपि	वृ हा ५.३१४	केशान्तकर्मणां तत्र	व्यास १.४१
केवलं प्रणवो वाऽपि	भार १६.५०	केशान्तश्च विवाहश्च	ब्र.या.८.३६१
केवलं भगवत्पादसेवया	शाण्डि १.९३	केसान्तः षोडशे वर्षे	मनु २.६५
केवलं मलमश्नन्ति ते	वृ.गौ. ८.१७	केशान्तिको ब्राह्मणस्य	मनु २.४६
केवलं यो वृथाऽश्नाति	वृ हा ५.२७६	केशान्तिको ब्राह्मस्य	कात्या २७.१२
केवलानि च शुक्तानि	शंख १७.३२	केशान्ते मुखमण्डले	विश्वा ६.४१
केशकीटकशंबूकमस्थि	दा १३	केशाया क्षालयेत्रित	व २.५.४६
केश-कीटकसंदुष्टं	वृ परा ८.२२५	केशैषु गृहहस्तौ	नारद १६.२६
केशकीटादिदुष्टानां	व २.६.५२२	केशेषु गृहहतो हस्तौ	मनु ८.२८३
केशकीटादिभिर्दुष्टं विद्	शाण्डि ३.११९	केशां चित्तेन वै मासं	वृ परा ८.३
केशकीटानुसरणा नरवरो	शाण्डि १.२३	केशां सन्निधौ श्राद्धं	विष्णु ८४
केशग्रहान् प्रहारांश्च	मनु ४.८३	केशां हि पुंसा महतो	वृ परा १२.७२
केशवर्हि समाच्छ	बृह १२६	कैवर्तमेदमिल्लाश्च	अत्रिस १९८
केशरंजनताम्बूल	वृ हा ८.२०५	कोटिजन्मर्जितं पापं	वृ हा ३.२९२
केशरोगमृते चापि अष्टौ	शाता ६.४६	कोटिजन्मर्जित् पुण्याद्	वृ हा ५.२२५
केशलेपादि संयुक्ता	व २.५.५०	कोदया स्यात्तु भवेद्	बृ.या.७.१३८
केशवस्तु सुवर्णाभिः	वृ हा २.७९	कोदवाणि च सूरणि	व २.६.१३४
केशवस्त्रादिविन्यासं	व २.५.११	कोदवान् कोविदारांश्च	औ ३.१४७
केशवादि नमोऽन्तैश्च	वृ हा २.७५	कोदवा यूपकाश्चैव	ब्र.या. ३.५१
केशवादीन् समुद्दिश्य	वृ हा २.११६	कोपसंरक्तनयनः कुटिल	नारा ४.३

कोपादालोलजिह्वं	वृ हा ३.३५१	क्रतूनामपि सर्वेषाम	कण्व ४९१
कोपो न स्याद्यदि पुनः	नारा ५.४	क्रतौ श्राद्धे नियुक्तो	व्यास ३.५४
को भेदः कर्मणां चेति	कण्व ३२३	क्रन्या नर्तुमुपेक्षेत	नारद १३.२५
कोयाष्टिप्लवचक्राह	या १.१७३	क्रमशश्चतुर्भिरंगुल्यो	भार १८.८५
कोऽयं लोकोऽस्त्य	वृ हा ७.१९	क्रमागतं प्रीतिदायं	नारद २.४७
कोविदारकदस्त्रेषु न	ल हा ६.१७	क्रमागतेष्वेष धर्मे	नारद ४.११
को विधिः सन्निर्दिष्टः	बृ.या. ४.१९	क्रमागतैर्धनैर्वाऽपि स्व	शाण्डि ३.३४
कोशातकमभावं च दूरतः	शाण्डि ३.११६	क्रमाते सम्भवन्तार्चिचरतः	या ३.१९३
कोशातकी बिम्बफलं	वृ हा ४.१११	क्रमाद्भवन्ति तंतूना	भार १५.१०३
कोशानां आत्मनः स्पर्शं	औ २.८	क्रमादम्भागतं द्रव्यं	या २.१२१
कोष्ठार गायुधागार	मनु ९.२८०	क्रमादव्याहतं प्राप्तं	नारद २.४
कौटिल्यं तु कुर्याणां	मनु १२३	क्रमादेते प्रपद्येरन्	नारद १४.४६
कौटिल्यसमाविष्टा	वृ.गौ. २.८	क्रमान्न शक्यते यस्मात्	कपिल ३६०
कौत्सं जप्त्वाप इत्येतद्	अत्रि २.४	क्रमेण संहितारण्यं	आश्व १२.१४
कौत्सं जप्त्वाप इत्येतद्	मनु ११.२५०	क्रमेणेतर्कराणि न व्यत्या	लोहि ३०
कौपीन आच्छादनं वासो	शंख ७.५	क्रमेणैव महापापा	लोहि ४४०
कौमारं पतिमुत्सृज्य	वृ परा ७.३६३	क्रमेणैभिस्तु संयोज्य	व २.६.३७०
कौमारं पतिमुत्सृज्य	नारद १३.५०	क्रमेणैव तु वक्ष्यामि	वृ हा ३.३२९
कौमोदकीं रथांगं	भार ५.४७	क्रमेणैव लभन्ते त	कण्व ४६६
कौ युवामिति पृच्छन्ति	कपिल ३७३	क्रयक्रीतां च या कन्या	अत्रिस ३८७
कौरुक्षेत्रांच मत्स्यांश्च	मनु ७.१९३	क्रयविक्रयमध्वानं	मनु ७.१२७
कौलंक सौचिकं नाहं	लोहि ३९५	क्रयश्चतादृशस्यैव वस्तुनः	कपिल ४५६
कौशमी नामया प्रोक्ता	ब्र.या.१.२८	क्रव्यादञ्च तथा भेकं	वृ हा ६.२५५
कौशं सूत्रं वा त्रिस्त्रिवृद्	बौधा १.५.५	क्रव्याद पक्षिदात्यूह	या १.१७२
कौशिका कृष्णलोह	भार ७.३५	क्रव्यादः शकुनीन्	मनु ५.११
कौशेय केश कुतपानीरं	वृ परा ६.२८४	क्रव्यादसूकरोष्ट्राणां	मनु ११.१५७
कौशेयनीलीलवण	या ३.३८	क्रव्यादास्तु मृगान् हत्वा	मनु ११.१३८
कौशेयं तित्तिरिहत्वा	मनु १२.६४	क्रव्यादास्तु मृगान्	औ ९.१२
कौशेयावियोरूपैः	मनु ५.१२०	क्रव्यादानां पक्षिणाञ्च	औ ९.४३
कौशीदकास्तथाभोक्तु	शाण्डि ३.२८	क्रव्यादाः शकुनयश्च	बौधा १.५.१४९
क्रत्वः सर्व एवैते त्रिगर्वैर्द्वैर्बृ.गौ. १५.४९		क्रव्यादै सारमेयाद्यैर्हतं	वृ परा ६.३२८
कुतकोटिफलं तत्र	वृ हा ७.२७१	क्रान्तप्रयुक्तानि विना	कण्व ३५
क्रतुर्दक्षोवसुः सत्य	लिखित ४९	क्रिमयः किं न जीवन्ति	व्यास ४.२२
क्रतु साहस्रिणं वाऽपि	वृ हा ८.२८०	क्रिमिभिर्भक्ष्यमाणाश्च	बृ.गौ. १५.६९
क्रतूनां दशकोटीनां	वृ हा ६.७४	क्रियते कृतिना तत्तु	आंपू ६२३

क्रियन्ते नैव वैदाश्च	वृ परा १.२०	क्रेता पण्यं परीक्षेत	नारद १०.४
क्रियमाणं कृतं यद्वा	शाण्डि ४.२२४	क्रेतारश्चैव भाण्डानां	नारद १८.७४
क्रियमाण क्रिया सर्वा	वृ परा ११.३०१	क्रोधनं दुष्क्रियाध्यानं	भार ८.८
क्रियमाणानि कर्माणि	शाण्डि ३.४	क्रोधयुक्तो यद् यजते	आप १०.८
क्रियर्णादिषु सर्वेषु	नारद २.८५	क्रोधलोभविनिमुक्ताः	वृ.गौ, ५.११८
क्रिया कर्ता कारयिता	कण्व ९	क्रोधलोभविनिमुक्ताः	वृ.गौ. १५.९४
क्रिया काश्चिन्न सन्त्यत्र	लोहि २१५	क्रोधाद्वा यदि वा द्वेषा	वृ.गौ. ११.८
क्रियाम्युपगमात्त्वेतद्	मनु ९.५३	क्रौंच सारस-हंसादि	वृ परा ८.१६६
क्रिया स्नानं प्रवक्ष्यामि	शंख ९.१	क्लान्तसाहसिक शान्त	नारद २.१६१
क्रियाहीनश्च मूर्खश्च	अत्रिस ३८१	क्लिद्यन्ति हि प्रसुप्तस्य	वृ.या. ७.१२२
क्रियाहीनस्य मूर्खस्य	औ ६.९	क्लिद्यन्ति हि प्रसुप्तस्य	दक्ष २.८
क्रियाहीनस्य मूर्खस्य	ब्र.या.१३.२९	क्लिन्नभिन्नशवं यत्	अत्रिस २३४
क्रोडाथ देवकी सूनो	शाण्डि ३.१०	क्लिन्नानां तंडुलानं	भार १४.४९
क्रोडां शरीरसंस्कार	या १.८४	क्लिन्नाया मेध्यामाहृत्य	बौधा १.६.१९
क्रोडित्वा तु तत् तस्मिन्	वृ.गौ. ६.७६	क्लिन्ने भिन्ने शवे चैव	प २.१४
क्रोडित्वा मानुषे लोके	वृ.गौ. ७.७३	क्लीवं त्यक्त्वा पतति	बौधा २.२.३१
क्रोडित्वा मामके लोके	वृ.गौ.७.६५	क्लीब श्वित्री च कुष्ठी	वृ.गौ.१०.७२
क्रोणीयाद्यस्त्वपत्यार्थं	मनु ९.१७४	क्लीबा अन्ध बधिरा	वृ परा १०.२४७
क्रोतलब्धाशिनो भूमौ	या ३.१६	क्लीबा अन्ध बधिर	वृ परा ५.१८०
क्रोतस्तु ताम्यां विक्रीत	या २.१३४	क्लीबाऽभिशास्त वाग्दुष्ट	वृ परा ७.७
क्रोतस्तृतीयस्तच्छुनः	व १.१७.३०	क्लीबे देशान्तरस्थे च	अत्रिस १०६
क्रोतं विप्रधृतं नीत्वा	प्रजा १३६	क्लीबे देशान्तरस्थे	लिखित ८०
क्रोता द्रव्येण या नारी	बौधा १.११.२०	क्लीबेनाविप्रयोक्तव्यः	भार १८.१२
क्रोतेन गोविकारेण	वृ परा ४.१८१	क्लीबोऽथ पतितस्तज्ज	या २.१४३
क्रोत्वा नानुशयं कुर्याद्	नारद १०.१६	क्लीबोन्मतत्पतिताश्च	व १.१७.४७
क्रोत्वा मूल्येन यत्	नारद १०.१	क्लीबोन्मतान् राजा	व १.१९.२३
क्रोत्वा मूल्येन यत्	नारद १०.२	क्लीबो वा यदि वा काणः	वृ परा ४.२०८
क्रोत्वा विक्रीय वा किंचिदं	मनु ८.२२२	क्लृपकेशनखश्मश्रु	मनु ४.३५
क्रोत्वा स्वयं वाऽप्युपत्पाद्य	मनु ५.३२	क्लृप्तकेशनखश्मश्रु	मनु ६.५२
कुड्मोल्काय सहस्रोल्काय	वृ हा ३.११८	क्लेशकर्मविपाकैश्च	वृ.मा. २.४३
कुड्यन्तं न प्रतिकुड्येद्	मनु ६.४८	क्लेशभागी च सततं	वृ परा ६.२०६
कुश्यद्भिच कदद्भिच	वृ.गौ. ५.४०	क्लेशमात्र हि किमपि	लोहि २२९
क्रूरग्रहांतितप्तस्य	आंपू २९३	क्वचित्पागं क्वचित्पागं	विश्व २.१२
क्रूरतुरा वृद्ध चिकित्सक	वृ परा ६.२७८	क्व जाता तत्परं चास्य	कण्व ७०५
क्रूरो बीजनकश्चैव	औ ४.२८	क्षणं कृत्वा प्रसादेऽद्य	आंपू ७७६

क्षणद् गोनिष्कयं	वृ परा ८.१६२	क्षत्रियं चैव सर्पं च	मनु ४.१३५
क्षणे चाह्वान संकल्पे	व्या २६२	क्षत्रियं मृतमज्ञानाद्	पराशर ३.४९
क्षतृवैदेहकयो प्रतिलोमः	बौधा १.९.११	क्षत्रिया चैव वैश्यस्य	शंख ४.८
क्षतुर्जातस्ततो ग्रायां	मनु १०.१९	क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां	मनु १०.९
क्षत्राविद् शूद्र जातीनां	वृ हा ६.२७८	क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां	पराशर ११.२२
क्षत्रविद् शूद्रदायादा	औ ६.३५	क्षत्रियादीनां ब्राह्मणवधे	बौधा १.१०.२०
क्षत्रविद् शूद्रयोनिस्तु	मनु ९.२२९	क्षत्रियाद् ब्राह्मण्या	बौधा १.९.९
क्षत्रवृत्ति सदाचारो	वृ परा ७.२४	क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां	मनु १०.११
क्षत्रस्याति प्रवृद्धस्य	मनु ९.३२०	क्षत्रियाद् वैश्यायां	बौधा १.९.५
क्षत्रादीनां प्रवक्ष्यामि	लहा २.१	क्षत्रियान्नं यदुच्छिष्टं	अत्रिस ७१
क्षत्रादीनां विप्रसाम्यं कुतो	कपिल ३५०	क्षत्रियामागधं वैश्या	वृ हा १.९४
क्षत्रिणी चैव वैश्यां च	वृ परा ८.२३८	क्षत्रियायामगुप्तायां	मनु ८.३८४
क्षत्रिण्यादिभिरुच्छिष्टैः	वृ परा ८.२३५	क्षत्रियायां तु यो जातो	वृ परा ७.६०
क्षत्रियः पूजयेद् रामं	वृहा ५.१८७	क्षत्रियामथ वैश्यां वा	संवर्त १५२
क्षत्रियवधे गोसहस्रम्	बौधा १.१०.२२	क्षत्रिया षट् समास्तिष्ठेद्	नारद १३.१०३
क्षत्रियवधे गोसहस्रं	बौधा १.१०.२३	क्षत्रियेण तु संस्पृष्टो	वृ परा ८.२५६
क्षत्रियवधे गोसहस्रम्	बौधा १.१२.३	क्षत्रियेण यदा स्पृष्टं	अंगिरस ९
क्षत्रियः वा अथ शूद्रः वा	वृ.गौ. २.१३	क्षत्रियेणापि वैश्येन	पराशर ६.१८
क्षत्रियश्चापि वैश्यो	पराशर १०.८	क्षत्रियेणापि वैश्येन	वृ परा ४.२०९
क्षत्रियश्चेत्समा वैश्या	कपिल ३३६	क्षत्रियो द्वादशाहेन	शंख १५.३
क्षत्रियः सप्तविज्ञेयो	वृ.गौ. ८.१०६	क्षत्रियो द्वादशाहेन	पराशर ३.२
क्षत्रिय स्तप्तकृच्छ्रं	औ ९.४५	क्षत्रियो द्वादशेन	व्यास ३.५५
क्षत्रियस्तु रणे दत्त्वा	शंख १७.५३	क्षत्रियोऽपि कृषिं कृत्वा	पराशर २.१५
क्षत्रियस्य च पादोनं	शंख १७.८	क्षत्रियोऽपि सुवर्णस्य	पराशर ६.४७
क्षत्रियस्य तु तन्नित्यमेव	व १.३.२७	क्षत्रियो बाहुवीर्येण	मनु ११.३४
क्षत्रियस्य तु सप्ताहं	शंख १७.४४	क्षत्रियो बाहुवीर्येण	बृह १०.१६
क्षत्रियस्य द्वयञ्चैव	ब्र.या. ८.१७६	क्षत्रियो बाहुवीर्येण	अत्रिस २.१३
क्षत्रियस्य परोधर्मः	मनु ७.१४४	क्षत्रियो बाहुवीर्येण	व १.२६.१७
क्षत्रियस्य वधं कृत्वा	संवर्त १२६	क्षत्रियो ब्राह्मवीसक्तः	बृ.य. ४.४७
क्षत्रियस्य विशेषेण	शंख १.४	क्षत्रियो यदि वा गच्छेद्	वृ परा ४.२०६
क्षत्रियस्य सुतश्चैव	वृ परा ७.६१	क्षत्रियोहि प्रजा रक्षन्	पराशर १.५८
क्षत्रियस्यापि यजनं	अत्रिस १४	क्षत्रीमैथुनमासाद्य	औ ९.६
क्षत्रियस्यार्धमासं तु	आंउ ९.२	क्षत्रुग्रमुक्कसानां तु	मनु १०.४९
क्षत्रियं चैव वैश्यं च	मनु ८.४११	क्षत्रे बलं अध्ययन	बौधा १.१०.३
क्षत्रियं च एव स पंच	वृगौ. ३.६५	क्षन्तव्यं प्रमुणा नित्यं	मनु ८.३१२

क्षपा च पक्षिणी सद्भि	वृ परा ८.३८	क्षीणां क्षीरसरीरागांदद्याद्दो	ब्र.या.११.१३
क्षमा गुणो हि जन्तूनां	आप १०.५	क्षीरकाष्ठेन कुर्वीत	विश्वा १.५७
क्षमा दमः क्षमा दानं	वृ.गौ. २०.२०	क्षीरञ्च लवणोन्मिश्र	वृ परा ८.१.२५
क्षमा दमा क्षमा यज्ञः क्षमा	वृ.गौ.२०.२१	क्षीरतोयं प्रदातृणाम्	वृ.गौ.६.११
क्षमावतामय लोकः	वृ.गौ. २०.१९	क्षीरविक्रयिणश्चपि ते	वृ.गौ.१०.९२
क्षमावान् प्राप्नुयान्मोक्ष	वृ.गौ.२०.२२	क्षीरं दधि घृतं तक्रं	प्रजा १.२९
क्षमा सत्यं दमः शौचं	विष्णु २	क्षीराज्यमधुदध्यनं	आश्व ८.३
क्षयञ्च दृश्यते तस्य	अत्रिस ३३७	क्षीराज्यसर्करोपेतं	व २.६.२२७
क्षयं वृद्धिञ्च वणिजा	या २.२६१	क्षीरान्नं शर्करोपेतं	वृहा ५.४१८
क्षयाहे पातसंक्रान्ते	व्या १३४	क्षीराब्धौ शेषपर्यंके	वृहा ७.२३९
क्षमाहे पर्वणि पूर्वं	ब्र.या.६.१२	क्षीरेण कपिलायास्तु	वृ.गौ. ९.२८
क्षयेऽहनि समासाद्य	ब्र.या.३.२	क्षीरेण तु त्र्यहं भुङ्क्ते	अत्रिस १२५
क्षयेऽहनि समासाद्य	ब्र.या. ३.५	धुते निष्ठीविते चैव	पराशर १२.१८
क्षयेऽहनि समासाद्य	ब्र.या.३.८	क्षुत्तप्याऽध्वश्रमश्रान्त	वृ परा ४.१९६
क्षयैरकारः सम्पोकतो	वृ हा ३.१०१	क्षुत्तृभ्यां प्रथमे	वृ परा १२.१८२
क्षरन्ति सर्वा वैदिक्यो	मनु २.८४	क्षुत् पिपासाश्रमार्तः च	वृ.गा. ६.४६
क्षराक्षविष्टस्तु	विष्णु म २५	क्षुत्पिपासाश्रमार्तताय	वृ.गौ. ६.७२
क्षात्रेण कर्मणा जीवेद्विशां	या ३.३५	क्षुत्पिप्तिर्मवेत्तीक्ष्ण	कण्व ५६५
क्षान्तान् दान्तान्	वृ.गौ. १०.९६	क्षुद्रकर्मसुसर्वेषु तर्जनि	भार ७.१९
क्षान्ती दान्ती जितक्रोधी	वृ.गौ. २१.६	क्षुद्रकाणां पशूनां तु	मनु ८.२९७
क्षान्तोदान्तः शुचिः	ब्र. या. ४.५७	क्षुद्राभिशास्तवार्षुष्य	व्यास ३.४५
क्षारं च लवणं दिव्यं मधुरं	कपिल ५७६	क्षुद्रमध्यमहाद्रव्य हरणे	या २.२७८
क्षारेण शुद्धि कांसस्य	शंख १६.४	क्षुद्र वस्तु समायातं	शाण्डि ४.१३४
क्षालनं दर्भकूर्चन	कात्या २९.१	क्षुधा परीतस्तु किंचिदेव	व १ १२.३
क्षालयित्वा करैर्भीड	व २.५.४३	क्षुधार्तश्चात्तुमभ्यागाद्	मनु १०.१०८
क्षितिशायी भवेद् रात्रौ	वृहा ८.२०८	क्षुधा व्याधिकतायानां	आप ३.९
क्षितिस्थाश्चैव या	व १.३.४६	क्षुधितं तृषितं श्रान्तं	पराशर २.४
क्षिपेच्चतुर्विधान् भूतान्	वृहा ४.१३९	क्षुरस्नानात्परं यस्तु	आंपू २५६
क्षिपेदञ्जलीन्स्तत्री	ब्र.या. २.१०४	क्षुरेणेति च तीक्ष्णेन	आश्व९.१३
क्षिप्त्वाऽग्नावशुचि	शंख १७.५५	क्षुरोमांसावदानार्थः	कात्या २९.३
क्षिप्त्वा कूपे यथा	वृ परा ७.३००	क्षेत्र कूपतडागानामा	मनु ८.२६२
क्षिप्त्वा चार्थ्यं तथा	औ ५.३९	क्षेत्रजादीन् सुतानेतान्	मनु ९.१८०
क्षिप्त्वा तिलानयः पूर्य	आश्व २३.३२	क्षेत्रजेष्वापि पुत्रेषु	नारद १४.१४
क्षीणस्य चैव क्रमशो	मनु ७.१६६	क्षेत्रज्ञः पंचधाभुङ्क्ते	विष्णु म ५५
क्षीणायुस्त्वं दरिद्रत्वं	वृ परा ६.१७३	क्षेत्रदानं वृत्ति दानं सेतुदानं	लोहि ५३२

क्षेत्रदारापहारी च	ब्र.या. १२.४५
क्षेत्रभूतास्मृता नारी	मनु ९.३३
क्षेत्रवेश्मवनग्राम	या २.२८५
क्षेत्रसीमविरोधे तु	नारद १२.२
क्षेत्र त्रिपुरुषं यत्र गृहं	नारद १२.२४
क्षेत्र हिरण्यं गामस्त्वं	मनु २.२४६
क्षेत्रिकस्य यदज्ञानात्	नारद १३.५५
क्षेत्रिकानुमतं बीजं यस्य	नारद १३.५८
क्षेत्रिणः पुत्रो जनयितुः	व १.१७.६
क्षेत्रियस्यात्ये दण्डो	मनु ८.२४३
क्षेत्रेष्वन्येषु तु पशु	मनु ८.२४१
क्षेत्रो विमुच्यते दोषात्	वृ परा ५.१६३
क्षेमाक्षेमञ्च मार्गेषु	वृ.गौ. १०.१०८
क्षेमोत्सवो द्वितीयेऽथ	कण्व ६९३
क्षेम्यां सस्यप्रदां	मनु ७.२१२
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रजातस्तु	ब्र.या. ७.२९
क्षैरं कठिनपक्वं	प्रजा १३२
क्षोणीतुल्या तदा सा	वृ परा १०.४५
क्षौद्रा आज्य-तिलसंयुक्तान्	वृ परा ७.३०८
क्षौमकार्पासकैशोर्य	व २.६.११७
क्षौमजं वाऽथ कार्पासं	अत्रिस ३२६
क्षौमवच्छंखश्रृंगाणां	मनु ५.१२१
क्षौमवच्छंखश्रृंगं	बौधा १.५.४८
क्षौमाणां गौरसर्षप	बौधा १.५.४३
क्षौं ह्रीं श्रीं नृसिंहाय	वृहा ३.३६०
क्ष्यान्त्या शुद्ध्यन्ति	मनु ५.१०७

ख

खड्गमांसैयदा पिण्डान्	प्रजा १३९
खंजो वा यदि वा काणो	मनु ३.२४२
खट्वतल्पादिशयनं शरीरो	कपिल ५७४
खट्वांगी चीरवासा वा	मनु ११.१०६
खट्वाशयनदन्तप्रक्षालन	व १ ७.११
खड्गे तु विवादन्त्य	व १ १४.३५
खड्गचर्मधरं कृष्णा	विश्वा ६.१५
खड्गपात्र हि कुतपो	आंपू ९४४

खड्गामिषं महाशल्कं	या १.२६०
खड्गामिषं महाशल्कं	ब्र.या. ४.१२५
खड्गास्थि यदि विद्येत	प्रजा १४०
खड्गोपरि श्रीफलानां	वृ परा ११.१८२
खण्डादि तोलितं पश्चाद्वृ	परा १०.२०८
खंडितानां पुनस्तेषां लवणा	कपिल ६३०
खदिरश्चार्थलाभाय	वृ परा ११.४६
खननाद्दहानाद्दर्षाद्	व १.३.५३
खननोत्पन्नसलिला	आंपू ९४०
खनाद्य वायुपूर्वं स्याद्	विश्वा ५.१५
खनित्वैव विनिक्षिप्य	आंपू ८७५
खर उष्ट्रयान हस्त्यश्वनौ	या १.१५१
खराश्वोष्ट्रमृगेभानां	मनु ११.६९
खरेण कुक्कुटेनैव स्पष्टः	भार १८.३५
खरोष्ट्रयानहस्त्यश्वनौ	व २.३.१६३
खर्वात्मकास्ता विज्ञेया	आंपू ३७
खलक्षेत्रेषु यद्धान्यं	बौधा १.५.६३
खलभव्यसुतोत्पत्ति	लोहि ४०१
खलयज्ञे विवाहे च	पराशर १२.२२
खलात्क्षेत्रादगाराद्	मनु ११.१७
खल्लीट परनिन्दावान्	शाता ३.२१
ख-वाखवग्न्यंबु धात्री	वृ परा १२.१७७
खं संनिवेशयेत् खेषु	बृह ११.५३
खं सन्निवेशयेत्खेषु	मनु १२.१२०
खातखातस्य केदारमाहुः	नारद १२.३७
खातयित्वा तडागादि	वृ परा ११.२३८
खातवाप्योस्तथा कूपे	यम ६६
खाते च पतिता या गौः	बृ.य. ४.३
खादितं चावलीदञ्च	वृ.गौ. १०.६९
खादिरञ्च समीपुण्यं	व २.६.६०
खादिरो वाऽथ पालाशो	कात्या ८.१२
खान्यद्भि संस्पृश्य	बौधा १.५.२८
खान्याद्भि संस्पृशेत	व १ ३.३०
खिन्नवृत्तिर्विकर्मस्थ	शाण्डि ३.७
खुरमध्येषु गन्धर्वाः	वृ.गौ. १०.५२

ख्यातनाम्नः पुत्रवतः
ख्याताशंक्कुतमा प्रोक्ताः
ख्यातो महालयः सद्भिः

व्यास २.४
भार २.४३
आंपू ७००

गजे वाजिनी वा व्याघ्रे
गणद्रव्यं हरेद्यस्तु
गणशः क्रियमाणेषु

आंड १०.१५
या २.१९०
कात्या ५.१०

ग

गइत्यागच्छतेऽजस्त्र
गङ्गमंत्रेण ज्ञावह्य
गंगा गयात्वमावस्या
गंगा च यमुना चैव
गङ्गातोयेषु यस्यास्थि
गङ्गदिपुण्यतीर्थानि
गंगादि पुण्य तीर्थानि
गंगाद्वारञ्च केदारं
गंगायमुनोस्तीरे
गंगायमुनयोरन्तरे
गंगायां मरणं चैव दृढा
गंगायमुयोरन्तमित्येके
गंगायां वापिकायां च
गङ्गा स्नानं च केदारं
गङ्गास्नानं वर्षमात्र मासं
गच्छ गच्छेति तां
गच्छन्तु देवताः सर्वा
गच्छं स्तीर्थानि कौन्तेय
गच्छेत्यु (डु) च्चाटयेत्तूष्णीं
गच्छेदादित्यलोकं
गच्छेदेवं वनं प्राज्ञः
गच्छेद् ग्रामाद्बहिः
गच्छेमानन्तरंवापि
गज उष्ट्रयान प्रासाद
गजगवयतुरंगानां
गजचोरं महाघोरे पल्लवे
गजच्छाया तथा चैका
गजच्छायातीर्थदधिघृता
गजच्छायोपरागश्च
गजश्च तुरंगं हत्वा
गजे नीलवृषाः पंचशुके

बृह ९.४६
विश्वा १.६८
अत्रिस ३९४
शंख १०.११
लघु यम ९०
बृ.या.७.१३
वृ परा २.१२६
व्यास ४.१४
शंख १४.२८
व १.१.११
विष्णुम ११३
बौधा १.१.२८
व्या ३३५
ब्र.या. १२.५३
नारा ८.५
वृ परा ५.२५
विश्वा १.४८
बृ.गौ. २०.१५
कपिल ९५०
वृ.गौ. ७.४८
संवर्त ९८
व २.६.६
व २.३.१६६
औ ३.१४
पराशर ६.१२
लोहि ६९३
आंपू ६१२
लोहि ३४३
आश्व २४.२४
संवर्त १४१
या ३.२७१

गणानां गणिकान्त्रच
गणानं गणिकानं
गणास्त एव कथिता
गणिका-गणयोरनं
गणिवृद्धदयस्वन्यो
गणेशामाताहं बाले
गणेशमातुः पार्वत्याः
गण्डमाल्यां रसं कन्यां
गण्डूषं पादशौचञ्च
गण्डूषं पादशौचञ्च न
गण्डूषाचमनं दद्यात्सुवा
गण्डूषैः शोधयेदास्य
गण्डोपलादयो भूत्वा
गतपादिकं यांति
गंतभीरद्वितीयोऽपि
गतस्य प्रकृति चापि
गतानां तत्र निर्लज्जं
गतिभिर्हृदयं विप्रः
गता विनान्यायवर्त्मद्वारा
गते तु पञ्चमेवर्षे
गतेषु तेषु सर्वेषु केशवः
गत्वा कक्षान्तरं
गत्वा गत्वा निवर्तन्ते
गत्वा गत्वा निवर्तन्ते
गत्वा दहितरं विप्रं
गत्वा भार्या विना होमं
गत्वा वनं वा विधिवत्
गत्वोदकसमीपे तु शुचौ
गत्वोदकान्तं विधिवत्
गत्वा सद्यः
गदां पद्मगदाशंखं

ब्र.या.१०.२
वृ.गौ. ११.२२
अ २०
कण्व ३८६
वृ परा ८.१९२
नारद १२.८
वृ परा ११.२८
वृ परा ११.२६
औ ३.१६
पराशर ७.२५
अंगिरस ४१
व २.६.१०४
आश्व १.१४
बृह ११.५०
शंख १८.१५
वृ परा ३.८
कपिल १२४
लोहि ४५३
बौधा १.५.२४
लोहि ५२३
व्या ३८१
बृ.गौ.२२.४२
मनु ७.२२४
विष्णु म ११०
वृहा ३.१७५
औ ९.१
आश्व १.७०
औ ३.८४
वृ.गौ.८.२३
बृ.या.७.४
बौधा ५.१५५
वृहा ७.११७

गन्तव्यमिष्टासिद्ध्यर्थं	शाण्डि ४.१.८४	गन्धोदकतिलैर्युक्तं	या १.२५३
गन्त्री वसुमती नाशं	या ३.१०	गन्धोदकतिलैर्युक्तं	व २.६.३६८
गन्त्री वसुमती नाशं	कात्या २२.६	गन्धोदकतिलैर्युक्तं	ब्र.या.७.५
गन्ध अक्षत कुशांश्चैव	आश्व २३.२५	गमनागमनायोगात्	का १३
गन्धतोयं तथैवेशदिग्दले	भार ७.७२	गमि (ज) च्छाया च कथिता कपिल	१५९
गन्धद्वारांकरिषस्य	भार ११.८६	गयाफल्युनिकाशाकं	आंपू ४८९
गन्धपुष्प कुशादीनि	आश्व २३.३३	गयाशिरे तु यात्किंचिन्नाम्ना	लिखित १२
गन्धपुष्पाक्षतैर्धूप दीपा	भार ११.२७	गयां प्राप्यानुषंगेण	औ ३.१३५
गन्धपुष्पादिभिर्देवं	व २.६.२३३	गयां यो यास्यति	वृहस्पति २१
गन्ध पुष्पादिभि सत्य	व २.६.१५१	गयाश्राद्धसमः कोऽपि	आंपू ७०२
गन्धपुष्पादि सकलं	वृहा २.५५	गयाश्राद्धसमं प्रोक्तं	व्या ३०४
गन्धपुष्पादिसम्पूर्णः	ब्र.या.४.७१	गयाश्राद्ध च फल्युन्याः	आंपू ४७६
गन्धपुष्पाचितैः सार्धं	भार ७.११८	गये गांगेऽपि यद्वत्	ब्र.या. १२.१३
गन्धपुष्पैश्च धूपैश्च	वृहा ७.१६०	गरीयसि गरीयांसं	नारद १८.९३
गन्धमादनसंज्ञं च लोका	कण्व ७५	गर्दभाजाविकानां तु	मनु ८.२९८
गन्धमाभरणं माल्यं	संवर्त ४८	गर्दमारोहणेनाथ राष्ट्रा	लोहि ७०१
गन्धमाल्यैः अलंकृत्य	वृहा ६.८९	गर्भकर्त्ता तु यो विप्रो	वाधू २१७
गन्धरूपरसस्पर्श	या ३.९१	गर्भ ते कर्म च आयाति	वृ.गौ. ३.४
गन्धर्व अप्सरसः	वृहा ५.५.१२	गर्भपातनजा रोगा यकृत	शाता ३.१६
गन्धर्वा गुह्यका यक्षा	मनु १२.४७	गर्भमध्ये विपत्ति	ब्र.या. १३.१०
गन्धर्वाप्सरसो यक्षाः	वृ.गौ.१०.२९	गर्भमध्ये विपत्तिः	ब्र.या. १३.११
गन्धर्वाप्सरसो यक्षा	भार १२.४०	गर्भश्रावे मासतुल्यानि	व २.६.४५३
गन्धलेपक्षयकरं शौचं	ब्र.या.८.५१	गर्भस्थ सदृशो ज्ञेयं	नारद २.३१
गन्धलेपक्षयकरं शौचं	व २.३.९३	गर्भस्थोऽपि दौहित्रो	प्रजा १७०
गन्धलेह पापहं वाह्य	वृ परा ६.२१५	गर्भस्य पातने पादं	वृ परा ८.१५४
गन्धं पुष्पं फलं तोयं	वृ.गौ. १८.३३	गर्भस्य स्फुटताज्ञाने	शंख २.१
गन्धाक्षतादिभि सम्यक्	कण्व ५६०	गर्भस्यैव विपत्तिः स्यात्	व्या ३८३
गन्धादिभ समभ्यर्च्य	आश्व २३.४०	गर्भस्रावे गर्भमाससंमिता	बौधा १.५.१३६
गन्धादीनिः क्षिपेत्तूष्णीं	कात्या ४.३	गर्भादि संख्या वर्षाणा	बौधा १.२.७
गन्धान् ब्राह्मणसात्	कात्या १७.११	गर्भाद् एकादशे राज्ञो	शंख २.६
गन्धारिकापटोलानि	ब्र.या.४.५३	गर्भाधानमृतौ पुंस	या १.११
गन्धाश्च बलयश्चैव	या १.२.९९	गर्भाधानमृतौ १ पुंसवन	ब्र.या. ८.४
गन्धैः पुष्पै धूपदीपैः	वृ हा ७.२८३	गर्भाधानं दिजः कुर्याद्	आश्व ३.१
गन्धै पुष्पैश्च	वृ हा ७.१२८	गर्भाधानं पुंसवनं	व्यास १.१३
गन्धोदक अक्षतैः युक्तान वृ परा ११.१६४		गर्भाधानं पुंसवनं	कण्व ४२१

गर्भाधानं पुसवं	ब्र.या. ८.३५९	गवां निष्पीडनं क्षीरं	वृहा ६.१७७
गर्भाधानादिभि मंत्रैः	व्यास ४.४२	गवां प्रचारे गोपालाः	नारद १.४६
गर्भाष्टमेऽब्दे तृतीये वा	मनु २.३६	गवां प्रशस्तं त्रितयं	भार १४.५२
गर्भाष्टमेषु ब्राह्मणं	व १ ११.४४	गवां बन्धनयोक्त्रेतु	पराशर ८.१
गर्भाष्टमेऽष्टमेचाब्दे	ब्र.या. ८.७	गवां मूत्रपुरीषेण दध्ना	पराशर ६.४६
गर्भाष्टमेऽष्टमे चाब्दे	या १.१४	शवां शतसहस्राणां	वृहस्पति २८
गर्भिणी गर्भशल्या	वृ परा ८.१५३	गवां शतं सैकवृषं	पराशर १२.४३
गर्भिणी तु द्विमासादिस्तथा	मनु ८.४०७	गवां शताद् वत्सतरी	नारद ७.११
गर्भिणी नानुगन्तव्या	वृहा ८.२०४	गवां श्रृंगोदकस्नानफलां	वृ परा ५.२९
गर्भिण्यतुरभृत्येषु	व्यास ३.४३	गवां श्रृदके स्नातो	पराशर ५.२
गर्भिण्या वा विवत्साया	औ ९.३७	गवां श्रृदके स्नात्वा	अत्रिस ६५
गर्भधृतेऽथ तच्चिह्नै	लोहि १७५	गवां संरक्षणार्थाय	पराशर ९.१
गर्भे यदि विपत्तिः स्यात्	पराशर ३.२३	गवां सर्पि शरीरस्थं	बृह ९.३०
गर्वोदम्भोऽप्यहङ्कार	वृ.गौ. ८.१०८	गवां सहस्रन्तेनेह दत्त	वृ.गौ. ९.४६
गलेऽसत्कर्मणां रूपादमे	शाण्डि ४.१४२	गव्यन्तु पायसं देयं	ब्र.या. ४.५१
गवाघ्रातानि कांस्यानि	आंगिरस ४३	गव्यन्तु पायसं देयं	ब्र.या. ४५२
गवाघ्रातानि कांस्यानि	आंप ८.२	गव्यस्य पयसोऽलाभे	आंड १२.५
गवाघ्रातानि कांस्यानि	पराशर ७.२४	गव्ये तु त्रिरात्रमुपवास	बौधा १.५.१६०
गवा चान्मुपाघ्रातं	मनु ४.२०९	गहनत्वाद्द्विवादानाम	नारद १.३८
गवाज्यञ्च दधि क्षीरं	वृहा ४.१०५	गाणिक्यां माणिक्यां वपनानि	वृहा ४.१७८
गवाज्य संयुतैः दीपैः	वृहा ५.५१३	गाथामिमां पठेयुस्ते	आश्व १५.२२
गवाज्यं जुहुयाद् वहवौ	वृहा ५.४७९	गाथामुदाहरन्त्यत्र	वृ परा १०.३७८
गवाज्यं तिलतैलं	वृहा ४.१०३	गानविद्यासमर्थस्सन्	शाण्डि ४.१७३
गवाज्येन युतं दत्त्वा	वृहा ५.३८६	गानैः वेदैः पुराणैश्च	वृहा ७.२६०
गवाज्येन युतं दद्यात्	व २.६.११६	गान्धर्वस्तु स विज्ञेयो	ब्र.या. ८.१७७
गवाञ्च कन्यकानाञ्च	वृहा ३.२९०	गान्धर्वोदि विवाहेषु	ब्र.या. ८.१७५
गवाद्यः शक्रदीक्षायाः	वृहस्पति ७३	गांधर्वादि विवाहैस्तैर्यदि	माता कपिल ४०६
गवादिषु प्रनष्टेषु	नारद १५.२१	गान्धर्वे होम जायैश्च	वृ.गौ. १९.१८
गवादीनां प्रवक्ष्यामि	आप १.१०	गामन्नमश्वं वित्तं वा	वृ.गौ. १२.२६
गवार्थं ब्राह्मणार्थं	बौधा २.२.८०	गामेकां स्वर्णमेकं	वृहस्पति ४०
गवां क्षीरं दधि घृतं	प्रजा १२५	गां गत्वा शूद्रावधेन	व १.२३.४
गवां गर्भी (र्ष) विपत्ति	ब्र. या. ९.५२	गां चेद्धन्यात्तस्या	व १.२१.१९
गवां च विंशति दद्याद्	वृ परा ८.९९	गां धयन्ती परस्मै	बौधा २.३.४४
गवां चैव सहस्रं तु	नारा १.२७	गां नृपं चैव वैश्यं च	वृ परा ८.१८४
गवां निपातने चैव गर्भोऽपि	लघु यम ४२	गायका नर्तकाश्चैव	वृ.गौ. १०.७५

गायत्रितत्परं नान्यत्	भार ९.२०	गायत्रीवर्ण संयुक्ता	कण्व २२१
गायत्रिमयुतं तप्त्वा	भार ९.१७	गायत्री वा त्रिरावर्त्य	बृ.या.७.५०
गायत्रियाभिर्मन्त्रोर्ध्वं	भार ६.४९	गायत्री वै जपेन्नित्यं	औ ३.४७
गायत्री च तदा वेदा	वृ परा ४.१६	गायत्री शक्तितो जप्त्वा	वृ परा २.१६८
गायत्री च भवेच्छन्द	बृ.या. २.४	गायत्रीशिरसा त्रिनाडि	विश्वा ३.१०
गायत्री जननी शस्ता	भार १२.४९	गायत्री शिरसा सार्द्धं	या १.२३
गायत्री जप एवस्यानि	कपिल ९९०	गायत्रीशिरसा सार्धं	बृ.या.८.३
गायत्रीजप्यनिरता ब्राह्मणा	बृह १.१७	गायत्रीसम्यगुच्चार्य	विश्वा ५.२०
गायत्रीञ्च जपेन्नित्यं	पराशर १०.७	गायत्री सा च विज्ञेय	वृ परा ६.९५
गायत्रीञ्च यथाशक्ति	लहा ६.११	गायत्र्ययुतहोमाच्च	शंख १२.२३
गायत्रीञ्च सगायत्रां	कात्या २७.१९	गायत्र्यष्टशतं जप्यं	त्राघू १२९
गायत्री तु परं तत्त्वं	वृ परा ४.४	गायत्र्यष्टशतं जप्त्वा	वृहा ६.३४७
गायत्री त्रिष्टुब्जगती	बौधा १.२.११	गायत्र्यष्टसहस्रन्तु	आप ४.५
गायत्रीध्याननिरतो यो	भार १३.३९	गायत्र्यष्टसहस्रं तु	वृ परा ८.३०१
गायत्री नाम पूर्वाह्ने	वाधू ११४	गायत्र्यष्टसहस्रन्तु	औ ९.८७
गायत्री प्रकृतिर्ज्ञेया	बृ.या.४.१७	गायत्र्यष्टसहस्रन्तु	औ ९.८८
गायत्री ब्राह्मणो दद्याद्	ब्र.या. ८.३४	गायत्र्यष्टसहस्रेण	पराशर ११.१६
गायत्रीभक्तितस्तेषां	भार १२.३४	गायत्र्यसोतिनत्वाध	भार ६.१२६
गायत्रीमप्यधीयीत	औ ३.४६	गायत्र्य गृहीयात्लजाः	ब्र.या.८.१९२
गायत्रीमात्रसंतुष्टः श्रेयान्	बृह ११.२१	गायत्र्यागृह्णा गोमूत्र	पराशर ११.३१
गायत्रीमात्रसारोऽपि	ब्र.या. १.४४	गायत्र्या चाभिमन्त्रयाथ	वाधू १२४
गायत्री मेव यो ज्ञात्वा	वृ परा ४.१५	गायत्र्या चाभि सम्मन्त्रय	ब्र.या. २.१६५
गायत्री मेषपर्णी च योगे	ब्र.या.१०.१०७	गायत्र्या चैव गोमूत्र	वृ परा ९.२८
गायत्री रहितो विप्रः	पराशर ८.३१	गायत्र्या छन्दसा	व १.४३
गायत्री लक्षषष्ट्या	ब्र.या. १२.४३	गायत्र्याज्जुहुयाद्धीमान्	भार ७.९४
गायत्रीवर्णरहिते	कण्व २७९	गायत्र्या दशलक्षेण	अ १२१
गायत्री वा इदं सर्वं	बृ.या.४.६	गायत्र्या दश लक्षेण	अ १३३
गायत्री साऽभवत् पत्नी	वृ परा ३.९	गायत्र्याघत लाभाय	भार ९.१८
गायत्री सिद्धिदा यत्ना	कण्व २३७	गायत्र्य परमं नास्ति	शंख १२.२५
गायत्रीच जपन् विप्रो	बृह १०.१२	गायत्र्याऽपश्चसृणां	आश्व १.७६
गायत्रीचैव वेदांश्च	बृ. पा. ४.८०	गायत्र्या प्रणनेनैव	नारा ६.७
गायत्री जपमानस्तु	पराशर १०.२८	गायत्र्या प्रोक्षयेत् पात्रे	आश्व २३.२३
गायत्रीमम वा देवीं	बृ.गौ.१६.१५	गायत्र्यमविशेषो वा	वृ परा ६.१५६
गायत्री यः सदा विप्रो	संवर्त २१९	गायत्र्या वत्सप्रस्थानं	व्या ७७
गायत्री यो च जानाति	वृ परा ४.१३	गायत्र्या व्याहृतीभिश्च	बृ.य. ३.५९

गायत्र्याश्च पिबेत	आश्व १.७७	गिरिपृष्ठं समारुह्य	मनु ७.१.४७
गायत्र्याश्चैव माहात्म्यं	बृ.या. १.९	गीतज्ञो यदि गीतेन	या ३.११६
गायत्र्या संस्कृतं	आश्व १.१६९	गीतोत्सवो वाद्य	कण्व ३५२
गायत्र्या संस्मरेद्योगी	वृ परा ४.७५	गुग्गुलुं महिषाक्षीञ्च	वृहा ४.१००
गायत्र्यासप्रणव व्याहृति	भार ११.२०	गुडकार्पासिलवण	वृहा ६.१८०
गायत्र्या संप्रवक्ष्यामि	भार ९.२३	गुडधेन्वादिदानानां	अ ३०
गायत्र्या संप्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.१	गुडमिक्षुरसंचैव लवणं	संवर्त ८८
गायत्र्यास्तु छन्दो वै	कण्व २०८	गुडमिक्षुरसं खंडं	वृ परा १०.२२५
गायत्र्यास्तु परं जप्यं	वृह १०.११	गुडं वा यदि वा खंडं	वृ परा १०.२०५
गायत्र्यास्तु परं नास्ति	संवर्त २१४	गुडाज्यलवणक्षीरदधि	कपिल ४३३
गायत्र्यास्तु समस्थाया	भार ६.५१	गुडाज्यलवणं क्षीरदधि	कपिल ८९९
गायत्र्या स्थानमास्थं	व्या ७६	गुडा दानं पायसं च	ब्र.या. १०.१५३
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप	भार ६.५४	गुडो रसस्ततोदश्चिद्	आं उ ८.१७
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप	भार १७.८	गुडौदनेन वा राजंस्तस्य	बृ.गौ. १७.४२
गायत्र्योद्दकरपूताभि	वृ परा ८.३२९	गुच्छगुल्मं तु विविधं	मनु १.४८
गायनं जायते यस्मात्	बृ.या. ४.३५	गुणवान् हि शेषाणां	बोध २.२.१३
गायन्ति गाथां ते सर्वे	औ ३.१३३	गुणांश्च सूपशाकाद्यान्	मनु ३.२२६
गायेत् सामानि भक्त्या	वृहा ६.३५	गुणा इत्येव तेषां तद्विधानां	कपिल ९९
गारुडानि च सामानि	अत्रि ३.१३	गुणाकरः स मे विष्णुः	विष्णु म ३६
गार्गेया गौतमीयाः च	वृ.गौ. १.१५	गुणागुणवतीचन्द्रा	ब्र.या. १०.७६
गार्हपत्यो दाक्षिणाग्नि	बृ.या. २.७५	गुणाद्या गुणदा शेषा	आं पू ९३०
गार्होमैर्जातकर्म	मनु २.२७	गुणा दशस्नानकृतो हि	विश्वा १.८६
गार्हस्थ्यं धर्मकार्याय	कण्व ४५९	गुणा दशस्नानवरः	ब्र.या. २.२४
गार्हस्थ्याङ्गानां च	व १ १९.९	गुणानामपि सर्वेषां	औ १.३२
गालवस्तु पुरा विप्रो	आंपू ५५६	गुदादिद्व्यङ्गुलादूर्ध्व	विश्वा ६.२०
गावो दूरप्रचोरण हिरण्यं	बृ.य. ४.६०	गुप्तिहोमं करिष्येति	कण्व ५४६
गावो देयाः सदा रक्ष्या	वृ परा ५.२३	गुप्तोति वैश्येविज्ञेयं ततो	ब्र.या. ८.३३५
गावः पूर्णदुधानित्यं	वृहा ७.२६९	गुखे तु वरं दत्त्वां	या १.५१
गावो भूमि कलत्र	शंख लि २४	गुखे दक्षिणां दत्त्वा	व २.३.१९०
गावो मे अग्रतः स्थातु	ब्र.या. ११.२१	गुखे दक्षिणां दत्त्वा	व २.४.१
गावो मे मातरः सर्वाः	वृ.गौ. १३.२५	गुरुकुब्रह्मचारिणां वर्णनम्	विष्णु २८
गावो विप्रास्तथाश्वत्थो	बृ.गौ. १९.३१	गुरुधाती च शय्यायां	शाता ६.१०
गावो वृषा वाहाय हस्तिनो	वृ परा ५.५८	गुरुजायाभिगमनाम्	शाता ५.८
गाश्चैवैकशतं दद्यातं	पराशर १२.६६	गुरुञ्च ऋत्विजश्चैव	वृहा ६.४६
गाश्चैवानुव्रजेन्नित्यं	आंड ११.४	गुरुञ्चैवाप्युयासीत	ल व्यास २.६

गुरुणा चाम्यनुज्ञातः	शंख ३.८	गुरुवहनयतिथीनां तु	आंउ ८.६
गुरुणाऽनुमतः स्नात्वा	मनु ३.४	गुरुवत् प्रतिपूज्याः	मनु २.२१०
गुरुणामत्याधिकक्षेपो	या ३.२२८	गुरुवत् प्रतिपूज्या	औ ३.२७
गुरुतल्पगमुद्दिष्टं	वृहा ६.३१९	गुरु वा बालवृद्धौ वा	मनु ८.३५०
गुरुतल्पगः सवृषणः	व १.२०.१४	गुरु शुक्र कुजे बुद्धे	ब्र.या.८.१०६
गुरुतल्पस्ताप्ते	बौधा २.१.१४	गुरुश्रुश्रूषणे नित्यं	ब्र.या.८.९१
गुरुतल्पव्रतं कुर्यादितः	मनु ११.१.७१	गुरुश्रुश्रूणं चैव यथा	लहा १.२५
गुरुतल्पव्रतं केचित्केचिद्	लघु यम ३९	गुरुश्रोत्रियसद्विप्रबन्धु	कपिल १८६
गुरुतल्प सुरापानं	व १.१.१९	गुरुश्वशुरजामातृ	प्रजा ७३
गुरुतल्पे भगः कार्यः	नारद १८.१०२	गुरुषु त्वभ्यतीतेषु	मनु ४.२५२
गुरुतल्पे भगः कार्य	मनु ९.२३७	गुरुसंकरिणश्चैव	बौधा २.३.१२
गुरुतल्पे शयानस्तु	संवर्त १२३	गुरुहस्तेनलब्धेन	भार ७.९९
गुरुतल्प्यभिभाष्यैनः	मनु ११.१०४	गुरुणां तु गुरु दण्डं	वृहा ४.१८९
गुरु त्वंकृत्य हुंकृत्य	या ३.२९१	गुरुणां प्रतिकूलाश्च	शंख १४.३
गुरुदारागमं चैव	बृ.या. ४.५६	गुरुन् भृत्यांश्चोज्जिहीर्षन्	मनु ४.२५१
गुरु दृष्टा समुत्तिष्ठेद्	औ १.३०	गुरुपदेशतो भक्त्या	वृ परा १२.३०१
गुरुदेवेषु निरतः	वृ.गौ. २.३०	गुरुपदेशमार्गेण अन्यथा	विश्वा १.१०४
गुरुपत्नीं च भगिनी भ्रातृ	कपिल ९६८	गुरुपदेशविधिना स्नानं	विश्वा १.२८
गुरुपत्नी च युवती	औ ३.२९	गुरोः कुले न भिक्षेत	औ १.५६
गुरुपत्नी तु युवतिर्नाभि	मनु २.२१२	गुरोः कले न भिक्षेत	मनु २.१८४
गुरुपत्नी द्विजो गत्वा	वृपरा ८.२५१	गुरोः गुरौ संनिहिते	व १.१३.२२
गुरुपत्नीं न गच्छेत	का २	गुरो परम्परं जप्त्वा	वृहा २.१२५
गुरुप्रयुक्तश्चेन् प्रियते	व १ २३.७	गुरोः पादोपसंगृह्य	ब्र.या. ८.१०८
गुरुप्रयुक्तशेनिम्रयेत्	बौधा २.१.२७	गुरो पूर्वं समुत्तिष्ठेच्छेयीत	शंख ३.१०
गुरुप्रियो विनीतश्च	आंपू ५९२	गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु	मनु ५.६५
गुरुभक्तो भृत्यपोषी	व्यास ४.३	गुरोरप्रतीतिजनके	वृ परा १०.३१९
गुरुभार्या समारुह्य	औ ८.२३	गुरोराज्ञांसदा तिष्ठेद्	ब्र.या. ८.४६
गुरुमिक्षाकुवंशस्य	व २.१.१	गुरो र्गायत्र्यदानाच्च	ब्र.या.८.३३
गुरुमित्रहिरण्यञ्च	वृहस्पति ५४	गुरोर्गुरौ सान्निहिते	मनु २.२०५
गुरुरग्निद्विजातीनां	व्या २०८	गुरुर्गृहे देवगृहे पुष्प	शाण्डि २.८३
गुरुरग्निद्विजातीनां	औ १.४८	गुरोर्दुहितरं गत्वा	संवर्त १५६
गुरुराजा यमो वाऽपि	आंउ ६.८	गुरोर्यत्र परीवादो	मनु २.२००
गुरुरात्मवता शास्ता राजा	नारद १८.१०८	गुरोर्यत्र परीवादो	औ ३.६
गुरुरात्मवतां शास्तां	आंउ ६.७	गुरोर्वा गुरुपुत्रस्य	वृ परा १२.१५१
गुरुरात्मवतां शास्ता	व १.२०.३	गुरोर्वाऽप्यन्यतो ग्राह्या	शाण्डि १.१०९

गुरौ वासोऽग्निशुश्रूषा	पु १२	गृहदेवताभ्यो बलि	व १.११.३
गुरोश्चालीकनिर्बन्धः	व १.२१.३१	गृहद्वाराशुचिस्थान	नारद ६.६
गुरोस्तु चक्षुर्विष	औ ३.४	गृहद्वारेऽतिथौ प्राप्ते	वृ परा ८.१९७
गुर्वधीनो जटिलः	व १.७.८	गृहधान्याभयोपान	या १.२११
गुर्वर्थे दारमुज्जिहीषन्	व १.१४.९	गृहपदो नगरं आप्नोति	व १ २९.१४
गुर्वर्थे बहवः शुद्ध्यै	औ ८.२५	गृहपूजां ततः कुर्याच्	ब्र.या. २.१५१
गुर्वादिपोष्यवर्गार्थं	वृ परा ६.२३७	गृहप्रतिग्रहस्तेन दुस्तरो	अ४१
गुर्वी योनौ पतत वीजम्	वृ.गौ. ४.१३	गृहप्रवेशहोमाख्यं	कण्व ५४१
गुर्वीषद्भाविताश्चैते	वृ.गौ. ९.५३	गृहमध्येश्रितं पूज्य	ब्र.या. २.१५२
गुर्वी सा भूस्त्रिवर्ष्य	व्यास २.१५	गृहवासः सुखार्थाय	दक्ष ४.७
गुलौदनं पायसञ्च	या १.३०४	गृहशुद्धिप्रवक्ष्यामि	अत्रिस ७७
गुल्मगुच्छक्षुपलता	या २.२३२	गृहस्थ एव यजते	व १.८.१४
गुल्मांश्च स्थापयेदाप्तान्	मनु ७.१९०	गृहस्थ कामतः कुर्याद्	पराशर १२.५७
ल्मान् वेणूश्च विविधा	मनु ८.२४७	गृहस्थधर्मो यो विप्रो	पराशर ११.४७
गुह्यका राक्षसाः सिद्धा	ल व्यास २.३२	गृहस्थ पुत्रपौत्रादीन्	लहा ५.२
गुह्यानामपरद्वगुह्यं वक्तु	वृ.गौ. १०.५	गृहस्थः प्रत्यहं यस्मात्	दक्ष २.४२
गुह्यारण्यस्थयोर्दण्डो	भार १५.१२७	गृहस्थ यव यजते	शंख ५.६
गुह्ये कट्यां तथैकैकं	वृ परा ४.२८	गृहस्थ शौचमाख्यातं	दक्ष ५.६
गूहमानस्तु दौर्गशील्याद्	नारद २.२२१	गृहस्थस्तु चतुर्भेदो	वृ परा १२.१५३
गृज्जनारुणवृक्षासृग्	व्यास ३.५९	गृहस्थस्तु यदा पश्येद्	मनु ६.२
गृध्रं परिवारं वा राजा	व १.१६.२०	गृहस्थस्तु यदा पश्येद्	शंख ६.१
गृध्र परिवारं स्यान्नं	व १.१६.२१	गृहस्थस्तु यदा युक्तो	पराशर १२.३९
गृध्रमुष्टं नृमांसं	वृहा ६.२५३	गृहस्थस्यनितं वस्त्र	भार १५.११७
गृध्रश्येनशिखिग्राह	पराशर ६.५	गृहस्थस्य वनस्थस्य	भार १६.८
गृध्रो द्वादश जन्मानि	अत्रि ५.१६	गृहस्थस्यवस्थस्य	भार १५.१२६
गृध्रो द्वादश जन्मानि	पराशर १२.३४	गृहस्थाश्रमिण अर्थोपार्जन	विष्णु ५८
गृध्रो द्वादश जन्मानि	व्यास ४.६६	गृहस्थाश्रमिणां कर्तव्य	विष्णु ५९
गृभिष्व दया प्रागेव	वृहा ३.७६	गृहस्थैर्यतयः पूज्या	वृ.गौ.१२.९
गृष्टिदानं प्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.३३	गृहस्थोदेवयज्ञाद्यै	दक्ष १.१३
गृष्ट्यादीनथ वक्ष्यामि	वृ परा १०.३०२	गृहस्तो ब्रह्मचारी वा	आश्व १७.५
गृहक्षेत्र विरोधे	व १६.९	गृहस्थो वाऽपि सर्वेभ्यो	शाण्डि १.१२२
गृहजातस्तथा क्रीतो	नारद ६.२४	गृहस्थो वा वनस्थो	वृहा ८.२१६
गृह दण्ड चक्रसंयोगात्	या ३.१४६	गृहस्थो विनीतक्रोध	व १.८.१
गृहदानं महादानं न	अ ३७	गृहस्थो वैश्यदेवस्य	विश्वा ८.४
गृहदाहाग्निनाग्निस्तु	कात्या १८.१४	गृहस्थस्य व्रतं वक्ष्ये	ब्र.या.९.१

गृहस्याम्यन्तरे गच्छेत्	पराशर ६.४३	गृहीतस्य भवेद	वृ.गौ. २.३८
गृहस्योत्तरतोभागे	व्या ७९	गृहीता तु क्रमाद्वाप्यो	या २.४२
गृहगृहं गत्वाऽर्चयेद्देवं	वृहा ७.७४	गृहीता स्त्री बलादेव	देवता ४७
गृहं गत्वा विधानेन	व २.६.४००	गृहीतोऽयं हतान्कृत्वा	लोहि ६९९
गृहं गत्वा हरे पूजां	व २.६.४०५	गृहीतो यो बलान्	देवता ५३
गृहं तडागमरामं क्षेत्र	मनु ८.२६४	गृहीत्वा गोद्वयं कन्या	ब्र. या. ८.१७२
गृहं नित्यदलङ्कुर्याद्	व २.५.८	गृहीत्वग्निं समारोप्य	पराशर ११.४५
गृहं वा मठिकं वाऽपि	वृ परा १०.२३३	गृहीत्वा तस्यभागं	अ १११
गृहं विलेपयेत्सर्वं	व २.६.५३६	गृहीत्वा द्विमुखीधेनु	अ ८३
गृहा गावो नृपा विप्रा	वृ परा ४.१५१	गृहीत्वा मुसलं राजां	मनु ११.१०१
गृहाग्निं शिशु देवानां	वृ परा ७.२४८	गृहीत्वा मुसलं राजा	औ ८.१६
गृहाण चैनां ममपापहृत्यै	वृ परा १०.८१	गृहीत्वोपगतं दद्यात्	नारद २.९८
गृहाणान्तु पतित्वाद्धि	बृ.गौ. १.५.२६	गृहीत्वोपासनं क्ता	व २.६.३२३
गृहाद्दशगुणं नद्यां	अत्रिस ३९१	गृहीयादाहुतीः पंच	आश्व १.१५७
गृहानात्य होमांते	व्या ३९	गृही स्याद् गृहधर्मेण	वृ परा ६.७२
गृहान्न इति मन्त्र च	आंपू ८५८	गृहे गुरावरण्ये वा	मनु ५.४३
गृहान्निष्क्रिम्य तत्सर्वं	अत्रिस ७.८	गृहे गूढोत्पन्नोऽन्ते	बौधा २.२.२६
गृहान् व्रजित्वा प्रस्तारे	व १.४.१५	गृहे च गूढोत्पन्नः	व १.१७.२६
गृहाचीयां स्थापने	वृहा ५.१५८	गृहे तु मुषिते राजा	नारद १८.७८
गृहालंकरणं चापि	आं ६६९	गृहे पचन्तु युष्माकं	नारा ७.१०
गृहाश्रमात् परोधर्मो	व्यास ४.२	गृहेऽपि शिशुदेवानां	व्या १८१
गृहाश्रमेषु धर्मेषु	आंगिरस १	गृहे प्रच्छन्नउत्पन्नो	ब्र.या. ७.३२
गृहिणः पुत्रिणो मौलाः	मनु ८.६२	गृहे प्रच्छन्नउत्पन्नो	ब्र.या. ७.३३
गृहिणं त्वन्नभिक्षायै समागत	कपिल ९४८	गृहे प्रच्छन्नउत्पन्नो	या २.१३२
गृहिणो वर्णिनो भोज्या	कण्व ६०७	गृहे भागवतं प्राप्तं	शाण्डि ४.१०५
गृही च गृहमध्यस्थो	वृ परा १२.१९६	गृहे भागवते प्राप्ते	शाण्डि ४.५५
गृहीतचामरादेव्यो	व २.६.१०१	गृहेषु भित्तिसंस्थं च	शाण्डि ४.११
गृहीत पद्म युगल	व २.६.८३	गृहे मृतासु दत्तासु	औ ६.३०
गृहीतमूल्यं यं पण्यं	या २.२५७	गृहेषु सेवनीयेषु	व्यास ४.६
गृहीतवेतनः कर्म त्यजन्	या २.१९६	गृहेष्वभ्यागतं	व १.८.१२
गृहीतवेतना वेश्या	या २.२९५	गृहे सूतके ग्रन्थभेदी	ब्र.या. ७.३९
गृहीतवेदाध्यन	लहा ४.१	गृहे ह्येकगुणं प्रोक्तं	बृ.या. ७.१४३
गृहीतः शंकया चौर्वै	या २.२७२	गृहोपकरणं दत्त्वा	वृ परा १०.१८८
गृहीत शिल्प समये	नारद ६.१९	गृहोकरणान् सर्वान्	अ ३८
गृहीत शिश्नश्चोत्थाय	या १.१७	गृहोपरागे विषुवायनादि	बृ.गौ. १.४.२८

गृह्णात्यदत्तं योलोभाद्	नारद ५.११	गोत्रहा पुरुषः कुष्ठी	शाता २.३६
गृहीत योऽश्व विधि	वृ परा १०.३३७	गोत्र वर्ज्यं विवाहा	आंपू ३५४
गृहीयातु तदन्तर्वे	आंपू २३७	गोत्राणां चैव कर्मणां	ब्र.या. ४.६९
गृहीयात् प्रागपोशानं	वृ परा ६.१३५	गोत्राणि शास्त्रसिद्धानि	आंपू ३५०
गृहीयात् सर्वदा राजा	वृ परा १२.६५	गोत्रान्तव (तर) प्रतिष्ठस्य	कपिल ७९
गृहीयादर्पयद् दद्यात्	वृ परा १२.१९२	गौत्रे चैवाथ संबन्धे	आश्व १५.१८
गृहीयादित्येतदपरम्	बौधा १.४.१४	गोदा (?) दक्षिमादाय	ब्र.या. ८.३५०
गृह्यवन्दिरिमौ मंत्र	आश्व २.५२	गोदानं रत्नदानञ्च पुष्प	कपिल ४३१
गृह्याग्निर्यस्य चेन्न	आश्व २३.४८	गोदान महत्त्व	विष्णु ८८
गृह्यग्नौ पचनं पिण्डं	आश्व २३.४६	गोदान विधि संयुक्तं	ब्र.या.११.२५
गृह्योक्तविधिनेवात्र	वृहा ५.१२६	गोदानं षोडशोवर्षे	आश्व १४.१
गेयकाले सामगानां	बृ.या. ४.२१	गोदाने वत्सयुक्ता गौः	शाता १.१३
गोकर्णकृतिरित्याहुः	विश्वा २.११	गोदावरी भीमरथी	आंपू ९१८
गोकर्णकृतिहस्तेन माष	वाधू २२	गोदावर्याः शवर्या वा	वृहा ६.२८८
गोकुलस्य तृषर्त्तस्य	वृ.गौ. ११.५	गोदेहने चर्मपुटे च तोयं	अत्रिस २३०
गोकुलेषु वसेच्चैव	पराशर १२.६१	गोदोहमन्नपाको	बृ.या. ८.१३
गोकृते स्त्रीकृते च एव	वृ.गौ. ५.११५	गोदायं दक्षिणां दद्यात्	पराशर १२.८
गोक्नीडां न च	ब्र.या. ९.५१	गोधूमचूर्णं सदृशः	भार ७.३२
गोक्षत्रियं तथा वेश्यं	बृ.य.२.४	गोधूमाः कण्टकफलं	लोहि ३१४
गोक्षीर सर्पिर्मधु खण्ड	वृ परा १०.७३	गोधूमाश्च मसूराश्च	वृ परा ५.१३७
गोगामी च त्रिरात्रेण	पराशर १०.१६	गोधूमैश्च तिलैः मुद्गैः	औ ३.१३८
गोधाती पंचगव्याशी	वृ परा ८.१२५	गोनृपब्रह्महतानामं	या ३.२६
गोधृतं जुहुयाल्लक्ष	भार ९.३७	गोपं क्षीरभृतो यस्तु	मनु ८.२३१
गोधृतं मधुसंमिश्रं	भार ९.३८	गोपतिर्मृत्युमाप्नोति	पराशर ९.९
गोघ्नस्य देहि मे	वृ परा ८.१३०	गोपयित्वैव यत्नेन	आंपू १०.१८
गोघ्नस्यातः प्रवक्ष्यामि	संवर्त १२९	गोप शोण्डिक शैलुष	या २.४९
गोघ्नातेऽन्ने तथा कीट	या १.१८९	गोपालस्तत्रचै वान्यो	ब्र.या. १२.२०
गोचरे यस्य मुषितं	नारद १८.७६	गोपालस्तुवद प्रौवैसे	ब्र.या. १२.१९
गोचर्म मात्र मन्विन्दुः	बौधा १.५.६८	गोपीचन्द खण्डांश्च	व्या २५
गोजाश्वस्यापहरणे	शंख १७.१५	गोपुच्छरोमभि कृत्वा	भार १८.८२
गोत्रनामानुबन्धनां	आंपू १३०	गोपुच्छरोमभिर्दग्धैः	भार १८.९६
गोत्रनामानुवादान्तं	कात्या २२.२	गोपुच्छेषुशिरादासी	११.४७
गोत्रपानं भवत्येव	विश्वा ८.७४	गोप्याधिभोगेनो वृद्धि	या २६०
गोत्रप्रवेशसिद्ध्यर्थं प्रतिगृह्य	कपिल ३८८	गोप्याधिभोग्ये नो	वृहा ४.२३४
गोत्ररिक्थे जनायितुर्न	मनु ९.१४२	गोप्रदानेन यत्पुण्यं	बृ.गौ. ७.८४

गोप्रयुक्ते सर्वतीर्थोप्	व १.२९.११	गोमयेनीदकै पूर्व	औ ५.१
गोबधस्यानुरूपेण	पराशर ८.४३	गोमयेनोपलिप्ता भू	प्रजा १०९
गोवधे च कृते विप्रैरमत्या	नारा १.१९	गोमयेनोपलिप्याऽथ	व २.६.२८६
गोबधो ब्रात्यया स्तेयं	या ३.२३४	गोमांस मानुषञ्चैव	संवर्त १९५
गोब्राह्मणगृहं दग्ध्वा	लघुयम २७	गोमातृहापितृघ्नो वा	भार ९.१६
गोब्राह्मणनृपति मित्र	विष्णु ४३	गोमिथुनेनचाऽऽर्ष	व १.१.३२
गोब्राह्मणपरित्राण	वृहा ६.२४४	गौमूत्रगोमक्षीर	भार ७.६५
गो ब्राह्मण हतादीनां	वृ परा ८.८८	गोमूत्रमग्निवर्णं वा पिवेद्	मनु ११.९२
गोब्राह्महंतं दधं	बृ.य. १.६	गोमूत्रयावकाहारः	अत्रिस १७३
गोब्राह्मणहतानाञ्च	अत्रिस २६२	गोमूत्रयावकाहारः	अत्रिस २१६
गोब्राह्मणहनं दग्धा	यम ५	गोमूत्रयावकाहारः	औ ९.५८
गोब्राह्मणनलानि	या १.१५५	गोमूत्रयावकाहारैः	औ ९.२८
गोभिरश्वैश्च यानैश्च	बौधा १.५.९९	गोमूत्रयावकाहारो	औ ९.३६
गोभिर्विप्रहते चैव	संवर्त १७२	गोमूत्रयावकाहारो	औ ९.३८
गोभिर्हतं ततो बद्ध	दा ९१	गोमूत्रं अग्निवर्णं	औ ८.१३
गोभिर्हतं ततोद् बद्ध	पराशर ४.४	गोमूत्रं कृष्णवर्णायाः	पराशर ११.२८
गोभिर्हतं तथोद् बद्ध	लिखित ६७	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	मनु ११.२१३
गोभिर्वेदा समुद्गीर्णा	वृ परा ५.३२	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	पराशर १०.२९
गोभिनो राजपुत्रस्तु	वृ परा २.५२	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	पराशर ११.२७
गोभिश्चध्रियते लोको	अ ११४	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	बौधा ५.१४२
गोभिस्तु भक्षति धान्यं	नारद १२.३४	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	बृ. य. १.१३
गोभूतिल हिरण्यादि	या १.२०९	गोमूत्रं गोमयंक्षीरं	भार ११.८२
गोभूहिरण्यमिष्टान्न	शाता २.३९	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	व १ २७.१३
गोभूहिरण्यवस्त्राद्यै	व २.७.१०५	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	या ३.३१४
गोभूहिरण्यवासोभि	वृहा ४.२०५	गोमूत्रं गोमयं क्षीरं	शंख १८.८
गो-भू-हिरण्य संयुक्तं	वृ परा १०.१४८	गोमूत्रं गोमयं चैव	व १.२७.१४
गोभूहिरण्ययस्त्रीस्तेय	नारद १.३९	गोभूत्रं ताम्रवर्णायाः	देवल ६३
गोभूहिरण्यहरणे	लिखित ७०	गोमूत्रं यावकाहारं	ब्र.या. १२.५१
गोभूहिरण्यरहणे	लघुशंख ३८	गोमूत्रेण तु संमिश्र	आंगिरस ३१
गोभूहिरण्यहरणे स्त्रीणां	दा ९०	गोमूत्रेण तु संमिश्र	आप १.२९
गोमयगर्ते कुशप्रस्तरे	व १.२१.१०	गोमूत्रेणा संमिश्र	अत्रिस १६३
गोमायांब्बु तथा विद्वान्	भार ७.६८	गोमूत्रेण स्नापयित्वा	व २.६.४६४
गोमयेन ततो लिप्य	ब्र.या. ८.२४३	गोमूत्रे वा सप्तरात्रं	बौधा १.६.४०
गोमयेन शुचौ देशे	भार १५.८०	गोरक्षकान् वाणिजकान्	मनु ८.१०२
गोमयेनस्थापयेदिन्द्रम	ब्र.या.१०.१०१	गोरक्षकान् वाणिजकान्	बौधा १.५.९५

गोरक्षांकृषिवाणिज्य	लहा २.६	गो सहस्रं शतं वापि	वृ परा ११.२२६
गो-रम्भा-भृंगराज	वृ परा ७.१२६	गोसहस्राधिकं चैव	अ ११९
गोरसे क्षुविकाराणां तथा	नारद १८.२३	गैसूक्तेनाश्वशूक्तेन	वृ.गौ. ८.३६
गौरोचनप्रभावीतं नीलो	भार ६.६४	गोस्वामिने च गां दत्त्वा	वृहा ६.३२९
गोर्वत्सस्य च लोमानि	वृ परा १०.४७	गोहिरण्यदि दानानां	वृ परा १०.१४
गो रुत्वं वाप्यमावास्यां दीपं	ब्र.या. ९.५३	गौडी पैष्ठी च माध्वी	मनु ११.९५
गोवधे चैव यत्पापं	बृ.या ४.२	गौड़ी पैष्ठी तथा साध्वी	संवर्त ११५
गोवधोऽयाज्यसंयाज्य	मनु ११.६०	गौणमातिर मातृत्वं	आंपू १२१
गोवालैः फलमयानां	व १ ३.५०	गौतमञ्च भरद्वाजं	ब्र.या. २.९७
गोवालैः शणसंमिश्रैः	कात्या ७.७	गौतमभरद्वाज विश्वामित्र	ब्र.या.२.१४३
गो विंशति वृषं चैकं	वृ. परा. ८.२०८	गौतमोऽय भरद्वाजो	ब्र.या.१०.१११
गोविन्दमग्रतोऽन्यस्य	विश्वा २.१३	गौधेरकुंजरोष्ट्रं च	शंख १७.२१
गोविन्दः शशि वर्णः	वृ. हा. २.८२	गौः प्रसूता दशाहात् तु न	नारद १२.२७
गो विपत्तिं बधाशंकी	वृ. परा ८.१५८	गौरगवयसरभाश्च	व १.१४.३३
गो विप्र नृप हन्तृणा	दा ८८	गोरवत्सा न दोग्धव्या	वृ परा ५.१६
गो-विप्रार्थविपन्नाना	वृ परा ८.२०	गौर वर्णो भवेद विष्णु	वृहा २.८३
गोवृषाणां विपत्तौ च	पराशर ९.४७	गौरसर्षपकल्पेन	वृ परा १०.२५३
गोशकृत्मत्कुशांश्चैव	वृ परा २.१२०	गौरस्तु ते भयः षट् ते	या १.३६३
गोशकृन्मृण्मयंभिन्नं	ब्र.या. २.१५७	गौरीदनं वृषोत्सर्गः	आंपू ४८२
गोशतस्य प्रदानेन	वृ परा ८.१०१	गौरी पद्या शचीमेघा	कात्या १.११
गोशतं विप्रमुख्येभ्यो	वृहा ६.३६६	गौरीमिमायेति ऋचा	वृहा ८.६१
गो शते गो सहस्रे च	अ ११५	गौरैकस्य प्रदातव्या	वृ.गौ. १४.३८
गोशत् कृत् पिंडघाते	वृ परा ८.१४१	गौर्वीहि भानवाच्छाया	वृ परा ६.३४०
गोश्रृङ्गमात्रमुत्सृज्य	वाधू १२५	गौर्विशिष्टतमा विप्रः	कात्या २७.१४
गो श्रृंगमात्र मुद्धृत्य	वृ परा २.२०४	ग्रन्थार्थं यो विजानाति	दक्ष ६.४
गोश्रृङ्गमात्रमुद्धृत्य	वाधू ५६	ग्रन्थि पृथक्पृथक्	भार ७.४३
गोऽश्वोष्ट्रयानप्रासादा	मनु २.२०४	ग्रन्थिर्यस्य पवित्रस्य	व्या २४२
गोश्चरयान् ये हिरण्यं च	वृ.गौ. ५.४७	ग्रहणं चन्द्र सूर्याभ्यां	ब्र.या. ४.३
गोषु ब्राह्मणसंस्थासु	मनु ८.३२५	ग्रहणं त्रिषु मध्यस्य	लोहि २६३
गोष्ठे वसन् ब्रह्मचारी	या ३.२८९	ग्रहणं नैव कुर्वीत कुर्याद्	लोहि २४८
गोष्ठे वा पल्वले वापि	ब्र.या. ८.३५४	ग्रहणादि शुभाः काला	अ ७७
गोसर्पिदधिपिण्यासमे	भार ९.४६	ग्रहणान्तं वा जीवितस्या	बौधा १.२.४
गोसहस्रमतिश्लाघ्यं	कपिल ९२०	ग्रहणादिषु शक्तश्चे	आंपू २७८
गोसहस्रस्य चित्रस्य तिल	कपिल ४३८	ग्रहणेजुहुयादिहो सहस्रं	भार ९.२६
गोसहस्रहतं तेन	वृ.गौ. ९.४५	ग्रहणे रविसंक्रान्तो	वृहा ५.३८९

ग्रहणे रविसङ्क्रान्तौ	व २.६.२४४	ग्राममाहक्षिणदिग्भागे	विश्वा १.४७
ग्रहणे शून्यमानसे च	व २.७.८	ग्रामाद्बहिर्विनिगत्य	शाण्डि २.७
ग्रहणे श्राद्धकालेषु	आंपू २५८	ग्रामान्त्यजस्त्रीगमनं	वृहा ६.१९५
ग्रहणोद्वाहसंक्रातौ	अत्रिस ३२५	ग्रामाद्बहि शिरश्छित्वा	लोहि ६८४
ग्रहदोषादुपाकर्म	आश्व १२.२	ग्रामान्तरे पृथक्कुर्याद्दर्श	व्या २८३
ग्रहं पंक प्रपातश्च	वृ परा ८.१३५	ग्रामान्त्यजैश्चचण्डालैः	व २.६.५२१
ग्रहशांतिकपूर्वञ्च दशांशं	शाता ६.२३	ग्रामार्चायाः प्रकुर्वीत	वृहा ६.२
ग्रहशांतिश्च सर्वत्र शनैः	वृ परा ११.१०५	ग्रामाश्च नगरादेशा	वृ परा १२.११०
ग्रह संक्रमण काले	वृ परा १०.३५५	ग्रामेच्छया गोप्रचारो	या २.१६९
ग्रहस्पृशादथ यतन	आंपू ४८६	ग्रामेपानेतच यत् क्षेत्र	नारद १२.३५
ग्रहांश्च पूजयेद् विद्वान्	वृ परा ४.१५०	ग्रामेयककुलानां च	मनु ८.२५४
ग्रहाधीनमिदं सर्वं	वृ परा ११.८३	ग्रामे राष्ट्रे च सर्वत्र	लोहि ७१६
ग्रहाधीना नरेन्द्राणा	या १.३०८	ग्रामे वा वसेत	व १ १०.२०
ग्रहाधीना नरेन्द्राणा	ब्र.या. १०.१६०	ग्रामे ब्रजे विवीते वा	नारद १५.२२
ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या	वृ परा ११.५२	ग्रामे शस्य नृपस्यपि	वृ परा ५.१४९
ग्रहीता यदि नष्ट स्यात्	मनु ८.१६६	ग्रामेशस्य नृपस्यापि	वृ परा ५.१५६
ग्रहीता यो न चेद्विद्वान्	वृ परा ६.२२२	ग्रामेष्वन्वेषणं कुर्युः	नारद १५.२५
ग्रहीतु सहयोऽर्थेन	नारद ३.६	ग्रामेष्वापि च ये केचिद्	मनु ९.२७१
ग्रहे मुहूर्तद्वितये गते	आंपू २७९	ग्राम्यपशूनामेकशफा	व १.२.३२
ग्रहोपरागे संक्रान्तौ	लघु यम ८३	ग्राम्यारण्याश्च पशवः	बृ.गौ. १५.५०
ग्रामघाते शरौघणे	पराशर ९.४३	ग्राम्यारण्याश्च पशवः	वृ.गौ. १५.६४
ग्रामघाते हितांभगे	मनु ९.२७४	ग्रासमुष्टिं परगवे	बृ.गौ. १३.२४
ग्रामदाहृत्य वा ग्रासानष्टौ	या ३.५५	ग्रासमेषाङ्गवे दद्यात्	वृ.गौ. ८.९८
ग्राम दोषाणां ग्रामाध्यक्षः	विष्णु ३	ग्रासशेषं न चाश्नीयात्	व २.६.२०७
ग्रामदोषान् समुत्पन्नान्	मनु ७.११६	ग्रासं वा यदि गृहीयस्तोयं	लघुयम ४७
ग्रामद्रोहजनद्रोहसवद्रोह	लोहि ७१०	ग्रासं वा यदि गृहीयस्तोयं	पराशर ९.१२
ग्राममध्ये स्वशुद्ध्यर्थ	कपिल ८३५	ग्रासाच्छादनं स्नान	व १.१७.५४
ग्रामः सस्वामिको यो वा	कपिल ४८१	ग्रासादर्थमपि ग्रासं	व्यास ४.२३
ग्रामसीमासु च बहिर्ये	नारद १२.३	ग्राहकस्य न कुर्वीत	आंपू १३६
ग्राम स्थानं यथा शून्यं	व्यास ४.३८	ग्राहकैर्गृह्यते चौरौ	या २.२६९
ग्रामस्थानं यथा शून्यं	पराशर ८.२४	ग्राहयन्तीं धर्ममात्र	लोहि ६७५
ग्रामस्याधिपतिं कुर्याद्	मनु ३.११५	ग्राहयित्वा रोधयित्वा	लोहि ६२३
ग्रामं विशेष्य भिक्षार्थ	शंख १७.२	ग्राहादिसेविते रुक्षे नीचा	शाण्डि २.५२
ग्रामादाहृत्य चाश्नीयाद्	शंख ६.४	ग्राह्यतेति धर्मज्ञः निश्रितो	कपिल १३८
ग्रामादाहृत्य वाऽश्नीयादष्टौ	मनु ६.२८	ग्राह्य क्षारविकारं	आश्व १.१७३

ग्राह्यास्तत्र विशेषेण
ग्रीष्म प्रेवसेमणिकंदति
ग्रीष्मे पंचतपास्तु
ग्रीष्मे पंचाग्निध्यस्थो
ग्लहे शतिकवृद्धेस्तु

लोहि २६७
ब्र.या.११.५२
मनु ६.२३
या ३.५२
या २.२०२

घृतं तैलं तथा क्षीरं
घृतं ददति यो विप्र
घृतं दधि तथा दुग्धं
घृतं लवणसंयुक्त
घृतं वा यदि वा तैलं
घृतं वै कृष्णवर्णाया
घृताशी प्राप्नुयान्मेधा
घृते त्वेकादशगुणां
घृतेन गव्येन न
घृतेन वाथ तैलेन पादौ
घृतेन दीपो दातव्य
घृतेन पूरितं प्राहु पंच
घृतेन वा तिलै वापि
घृतेन स्यापयेद् विष्णु
घृतेनाभ्यक्तमाप्लाव्य
घृतेनाभ्यज्य गात्राणि
घोषयित्वा विशेषेण यद्य
घ्राण प्रमाणं वैश्यस्य
घ्राणेन शूकरो हन्ति
घ्रात्वा पीत्वा निरीक्ष्या

पराशर ११.१४
वृ परा १०.२१७
वृ परा ८.२१९
वृहा ४.११८
अत्रिस ३९५
देवल ६४

घ

घट (तुला) धर्म वर्णनम्
घटप्रहरणाभावे कर्तव्य
घटप्रहारात्परतः तत्
घटिका पञ्चदश च
घटिकाषष्टिसाध्या हि
घटिकैकाऽवशिष्टा
घटेऽपवर्जिते ज्ञाति
घटोऽग्निरुदकं चैव विषं
घण्टाभरणदोषेण
घण्टाभरणदोषेण
घण्टाशब्दवदोकार
घण्टाशब्दवदोकार
घनाया भूमेरुपाघात
घ घाणं तनु दशाब्दे
घातयन्ति च ये पापा
घातयित्वा समाप्नोति
घातितेऽपहृते दोषा
घासं यो नक्षुधार्तस्य
घृतकुंभं वराहे तु
घृतं क्षीरवहानद्यो
घृतञ्चैव सुतप्तञ्च
घृतपक्वे गुडाक्ते च
घृतमामिक्षेति घृतं
घृतस्य दुर्लभं जाते कदाचित्
घृतहीनं तु योऽधीते
घृतं गुग्गुलु धूपं च
घृतं घृतपावानश्च
घृतं च वह्निर्धृतमेव
घृतं चाष्टपलं ग्राह्यं

विष्णु १०
लोहि १३४
लोहि १५८
विश्वा ८.३४
कण्व २९
आश्व १.१८१
या ३.२९९
नारद १९.२
वृ परा ८.१५७
आंगिरस २६
बृ.या.९.२
बृह ९.८
बौधा १.६.१७
ब्र.या.१२.४४
बृ.गौ. ५.४५
वृहा ६.१७३
या २.२७४
वृ परा ८.१४८
मनु ११.१३५
वृ परा १०.८४
संवर्त ११७
ब्र.या. २.१८९
वृहा ८.२९
लोहि ३६४
व्या २०६
व्या १३५
ब्र.या.१०.९६
वृ परा १०.७४
वृ परा ९.२७

च

चक्रवदभ्रमयेनाङ्गं पृष्ठ
चक्र पद्य गदां शंखं
चक्रवाकप्रयुक्तैः तु
चक्रवाकञ्च जग्ध्वा
चक्रवाकं तथा क्रौञ्चं
चक्रवाकं प्लवं कोकं
चक्रवाकैः प्रयुक्तेन
चक्रवृद्धिं समारूढो
चक्र शंखगदा पद्य
चक्रशंखसमेताभ्यां
चक्रशंखाभय पर चतुर्हस्तं
चक्रस्य धारणं यस्य
चक्रस्य धारणे काले
चक्रं पद्य गदां शंखं

शाण्डि २.७२
वृहा ५.२०२
वृ.गौ.५.७४
औ ९.२५
संवर्त १४५
शंख १७.२४
वृ.गौ. ५.९८
मनु ८.१५६
वृहा ७.२२७
वृहा ३.३१३
वृहा ३.३५७
वृहा २.९८
व २.१.४१
वृहा ७.१२४

चक्रं पद्य तथा शंखं	वृहा ७.१२३	चण्डालश्वपचैः स्पृष्टे	लघुयम ६४
चक्रं शंखं गदां पद्य	वृहा ७.१२२	चण्डालसूतकशवां	औ ९.७६
चक्रांकितस्य विप्रस्य	वृहा ८.२९१	चण्डालसूत कशवैः	औ ९.७७
चक्रांकितस्य विप्रस्य	वृहा ८.२९३	चण्डालस्तु तथा शूद्रात्	वृहा ४.१४७
चक्रांकितं भुजंविप्रं	वृहा ८.२९७	चण्डालस्पर्शनेसद्यः	व २.६.४७२
चक्रांकितं विप्रमेव	वृहा ८.२९६	चण्डालं पतितं मद्य	वृहा ६.३६०
चक्रात्तीव्रतरो मन्यु	वृहस्पति ५०	चण्डालात् ब्राह्मणात्	वृहा ६.३६४
चक्रादिचिह्नरहितं	वृहा २.३	चण्डालाद्यै रूपहरेतं	व २.६.५३१
चक्रादिचिह्नैर्हीनं	व २.७.२४	चण्डालानांमर्चनीया मद्य	वृहा २.४६
चक्रायुध नमस्तेऽस्तु	बृ.गौ.१६.१	चण्डालीगमने विप्रस्त्व	नारा १.२१
चक्रिणो दशमीस्थस्य	मनु २.१३८	चण्डाली ब्राह्मणो गत्वा	बौधा २.२.७५
चक्रेण सह बघ्नामीत्	वृहा ३.३८९	चण्डालेनतु संस्पृष्ट	अत्रिस २३८
चक्षुर्घ्राणानुकूल्याद्वा	बौधा १.५.४९	चण्डालेष्वेन निष्कम्पं	आंपू ३५७
चक्षुः श्रोते स्पर्शनञ्च	शंख ७.२४	चण्डालै श्वपचै स्पृष्टौ	लघुयम १०
चक्षुषा रूपाण्यः श्चैव	ब्र.या. ८.३४०	चण्डालो जायते यज्ञ	या १.१२७
चक्षुषोः विन्यसेद् द्वे	वृ परा ११.११३	चण्डालोदकसंस्पर्शे	दा ९७
चक्षुस्याभिनवो दंडो	भार १५.१३१	चण्डालोदक संस्पर्शे	लिखित ८३
चंचुलिगुगुलुञ्चैव	व २.६.१७८	चतस्रश्चा ऽऽदिमा रात्रीः	व्यास २.४३
चणका राजामषाश्च	व्या ३१२	चतस्रो जुहुयात्तस्मै	वृ परा ४.१७८
चण्डादि द्वारपालांश्च	वृहा ४.८७	चतुः कोटिन्तु याम्यां	ब्र.या. १०.१३६
चण्डाल कूपभाण्डस्थं	वृहा ६.२६४	चतुः कोणमिति स्पष्टं	ब्र.या. २.३२
चण्डालग्राम भूमिन्तु	व २.६.५४१	चतुः त्रिकोणं वृत्त च	वृ परा ६.१३४
चण्डाल घटभाण्डस्थं	लिखित ८४	चतुःपञ्चघटीमानं मुहूर्तं	विश्वा १.२
चण्डालत्वमवाप्नोति	कपिल ५७	चतुः पारणमेतेषां	ब्र.या १.११
चण्डालपतितं चापि	व २.६.४७४	चतुः प्रक्षाल्य शुद्धा	शाण्डि ३.९६
चण्डालपतितादीनां	वृहा ६.३७७	चतुरः प्रातः अशनीयात्	वृ परा ९.६
चण्डालपुक्कसानां च	लघुयम २८	चतुः युगानि वे त्रिंशत्	वृगौ २.२६
चण्डालमपि मद्भक्तं	वृ.गौ. २१.२२	चतुरंगुलमग्रस्य मध्य	भार १८.५९
चण्डालम्लेच्छ संभाषे	औ २.४	चतुरंगेषु विन्यस्य	वृहा ३.१८५
चण्डालवाटिकायान्तु	वृहा ६.३८३	चतुरंगुलविस्तारः	भार २.३०
चण्डाल वाटिकायान्तु	वृहा ६.३८४	चतुरः प्रातरशनीयात्	मनु ११.२२०
चण्डालशायूपपाद्य	शंख ८.३	चतुरश्चरस्त्वंघ्नयो	वृ परा २.१५७
चण्डालशुद्धपतितान्	व्यास २.३३	चतुरश्रं तीर्थपीठं पाणि	वाधू ८२
चण्डालश्वपच महीं	व २.६.५३७	चतुरश्रांमध्यदेशे	नारा ५.३५
चण्डालश्वपचानां तु	मनु १०.५१	चतुरश्रेषु शुद्धेषु सद्यः	शाण्डि ४.११२

चतुरस्रं चतुर्द्वारं	वृ परा ११.२१३	चतुर्थं याममुत्थाय	शाण्डि ५.५७
चतुरस्रं ततः स्वर्गं	वृ .गौ. १५.३५	चतुर्थस्य तु वर्णस्य	आप ५.३
चतुरस्रं त्रिकोणं वा	वृहा ५.२४३	चतुर्थस्य न दोषस्तु	वृहा ६.२१२
चतुरस्रं ब्राह्मणस्य	अत्रि ५.१	चतुर्विंशति संख्याकान्	वृहा ६.११९
चतुरस्रं शुचौ देशे	व २.६ ३१७	चतुर्थं ताम्रपात्रेण	वृ परा ९.३१
चतुरहन्त्वेकभक्ताशी	पराशर ८.४७	चतुर्थांशेन धेन्वास्तु	वृ परा १०.१०८
चतुराज्याहुतीस्तत्र	व २.६.३३३	चतुर्थाद्येषु साग्नी	दा ७०
चतुराश्रम धर्माण	वृ परा १२.२०६	चतुर्थी क्षुद्रपशवः	ब्र.या. ४.१६२
चतुराश्रमभेदोऽपि	वृ परा १.६०	चतुर्थी त्रिदिवस्यांते	आश्व १५.६४
चतुरोऽन्यासकृदग्नि कार्यं	वृ परा १२.१६१	चतुर्थी संयुताकार्या तृतीया	ब्र.या. ९.३
चतुरो ब्राह्मणस्याद्यान्	मनु ३.२४	चतुर्थे दशरात्र स्यात्	अत्रिस ८७
चतुरोऽंशान् हरेद् विप्र	मनु ९.१५३	चतुर्थे दशरात्र स्यात्	पराशर ३.१०
चतुर्गवं नृशंसानां	अत्रिस २२१	चतुर्थे दशरात्र स्यात्	दा ११९
चतुर्गुणं तदुच्छिष्टे	अत्रि ५.५५	चतुर्थे दशरात्र स्यात्	पराशर ४.१०
चतुर्गुणेन मंत्रेण	वृ परा ११.१८१	चतुर्थेनेह भक्तेन ब्रह्मचारी	वृ.गौ. ७.९४
चतुर्णामपि वर्णानामेष	पराशर २.१७	चतुर्थे पञ्चमे चैव	लघुयम ८८
चतुर्णामपि चैतेषां	मनु ९.२३६	चतुर्थेमासि कर्तव्यं	मनु २.३४
चतुर्णामपि चैतेषां	मनु ४.८	चतुर्थे मासिगर्भस्थं	व २.४.१२१
चतुर्णामपि वर्णानामाचारो	वृ परा २.२	चतुर्थे संचयं कुर्यात्	संवर्त ४०
चतुर्णामपि वर्णा नामाचारो	पराशर १.३७	चतुर्थेऽहनि कर्तव्य	दक्ष ६.१५
चतुर्णामपि वर्णानां प्रेत्य	मनु ३.२०	चतुर्थेऽहनि कर्तव्यं	अत्रि ५.४५
चतुर्णामपि वेदानां	प्रजा ६	चतुर्थेऽहनि तद्वर्त्मनि	लोहि ६३९
चतुर्णामपि वेदानां	आंड ५.२	चतुर्थेऽहनि विप्रस्य	संवर्त ४१
चतुर्णामाश्रमाणाञ्च	वृहा ६.२४३	चतुर्थेऽहनि संप्राप्ते	वाधू ४५
चतुर्णामाश्रमाणां तु	वृ परा १२.१४६	चतुर्थेऽहनि तथा नद्यां	वृहा ५.४४५
चतुर्णामाश्रमाणां तु	वृ परा १२.१७५	चतुर्थेऽहनि समप्राप्ते	व २.४.१०८
चतुर्णामाश्रमाणां तु	वृ परा १२.२८५	चतुर्थ्यन्तमभून्नित्य	शाण्डि ५.६३
चतुर्णां सन्निकर्षेण पदं	दक्ष ७.२२	चतुर्थ्यंतं सगोत्रं च	वृ परा ७.१९१
चतुर्णां वर्णानां गोरवाजावयो	बौधा २.२९	चतुर्थांस्तेन तत्पश्चात्	कण्व ३६६
चतुर्थकालमश्नीयाद्	मनु ११.११०	चतुर्थ्याउर्ध्वं सा स्नाता	ब्र.या. ८.२८५
चतुर्थकालमितभोजिनः	बौधा २.१५८	चतुर्थ्या नमसश्चैव	वृहा ३.२४४
चतुर्थदिवसे कुर्यान्	आश्व १०.५५	चतुर्थ्यार्ध्वं प्रदातव्यं	व २.६.१५८
चतुर्थं महइत्येतद्ब्रह्म	भार १९.३४	चतुर्थ्यार्ध्वं प्रदातव्य	वृ परा ४.१३६
चतुर्थमाददानोऽपि क्षत्रियो	मनु १०.११८	चतुर्थ्या शुक्लपक्षे	वृ परा ११.१०
चतुर्थमायुषो भागं	मनु ४.१	चतुर्दशषटीभ्यस्तु मार्तण्ड	विश्वा ८.३८

चतुर्दशविंश सर्ग	बृ.या. ३.७	चतुर्वर्ग फलं प्राप्य	ब्र.या. २.१२६
चतुर्दशविधः शास्त्रे स	नारद १३.११	चतुर्विंशत् समाख्यातं	नारद १९.१३
चतुर्दशाङ्गनि शृणु	वृ.गौ. २०.३४	चतुर्विंशति अगुष्ठदैर्ध्यं	कात्या ७.४
चतुर्दशीं पंचदशीं	शंखं ३.५	चतुर्विंशति कृच्छ्र स्याद्	औ ९.५२
चतुर्दश्यष्टमी चैव	वाधू १८५	चतुर्विंशति गायत्र्या	वृ परा २५३
चतुर्दश्यां तु यच्छ्राद्धं	वृ परा ७.३३८	चतुर्विंशतिनामानि तत्त	विश्वा २.३
चतुर्दश्यां नमस्कारं	वृहा ५.२०८	चतुर्विंशति देशेषु	भार ६.७५
चतुर्दश्यां समारम्भः	प्रजा १६२	चतुर्विंशति द्वादश वा	बौधा १.२.२
चतुर्दिक्षु च सैन्यस्य	वृ परा १२.२८	चतुर्विंशतिपणान्वापि	लोहि ६२६
चतुर्दिक्षुजपेत्सम्य	व २.७.६७	चतुर्विंशति पादानि	विश्वा २.२५
चतुर्दिक्षु ध्वजाः कार्या	वृ परा ११.७२	चतुर्विंशति पादानि	विश्वा २.४९
चतुर्निमज्य विधिवद्	शाण्डि २.३८	चतुर्विंशतिरेतान् छंदा	भार ६.५५
चतुर्धाद्वादशाब्दानि	वृ परा १२.१५०	चतुर्विंशतिरेवास्यां	वृ परा ४७
चतुर्धा ब्रह्मचारी स्याद्	वृ परा १२.१४८	चतुर्विंशतिवर्णानां	कण्व १८०
चतुर्था विभजेत्तां तु	शाण्डि २.३४	चतुर्विंशतिवर्णानां	भार ६.५३
चतुर्थ्यन्ताः पल्लवारिक्ता	भार ६.९०	चतुर्विंशतिवर्णानां	भार ६.५७
चतुर्भि पंचमि ध्यात्वा	वृहा ८.९४	चतुर्विंशतिवर्णानां	भार ६.६५
चतुर्भिरपि चैवेतै मनु	६.९१	चतुर्विंशति वाचं वै	कण्व १२५
चतुर्भि वैष्णवैः मंत्रै	वृहा ६.४०३	चतुर्विंशतिसंख्याकान् द्विगुणं	कपिल ८२१
चतुर्भि वैष्णवै मंत्रैः	वृहा ७.२२०	चतुर्विंशतिसंख्यान्	वृहा ७.१३६
चतुर्भि वैष्णवैमंत्रै	वृहा ७.३००	चतुर्विंशतिस्थानेषु	बृ.या. ५.८
चतुर्भि शुद्ध्यते भूमि	बौधा १.६.२०	चतुर्विंशत्यथैतानि	शंख ७.२८
चतुर्भि शोभनोपायै	वृहा १.१५	चतुर्विंशाक्षरा देवी	बृ.या. ४.२०
चतुर्भि संवृतै पातै	वृ परा १०.९१	चतुर्विंशशरीराणि	वृहा ३.१०४
चतुर्भिस्तोरणैर्युक्तं	व २.७.३७	चतुर्विंशेभ्यो भूतेभ्यो	वृहा ५.२२०
चतुर्भुजमुदारांगं शंख	व २.६.४०	चतुर्वेदाश्च होतव्या	व २.७.७४
चतुर्भुजं दण्डहस्तं	शाता ६.१७	चतुर्वेदी द्विजः श्रीमान्	वृ.गौ. ६.४१
चतुर्भुजं सुन्दरांगं	वृहा ४.६४	चतुर्वेदी च यो विप्रो	व २.१.१४
चतुर्भुजं सुन्दरांगं	वृहा ३.२०	चतुर्हस्तं युगं कार्यं	वृ परा ५.७२
चतुर्भुजं सुन्दरांगं	वृहा ३.२२३	चतुर्हस्तेन बिभ्राणां	भार १२.१२
चतुर्भुजं सुन्दरांगं	वृहा ७.९४	चतुर्हस्तेन बिभ्राणां	भार १२.७
चतुर्भेदः परिब्राट	वृ परा १२.१६४	चतुश्चतुश्च षट्	वृहा ३.३४३
चतुर्युगानि वै तत्र	वृ गौ. ७.२५	चतुष्पादकृते दोषो	या २.३०१
चतुर्भन्तं समग्युच्चार्य	विश्वा ५.३३	चतुर्ण्येष्वमन्त्रेण	लोहि २१
चतुर्भन्त्रेण संप्रोक्ष्य पीत्वा	शाण्डि २.४७	चतुः षष्टिफलं कांस्यं	वृहा ५.२४५

चतुः षष्टिपलश्चैव	व २.६.२००	चत्वार्याहुः सहस्राणि	मनु १.६९
चतुष्कुलैकपर्यन्तं जातानां	आंपू १००७	च नैऋत्यां वः प्रकीर्तिताः	ब्र.या. १०.३२
चतुष्केषु बिभ्राणां	भार १२.१५.	चन्दन अगुरु कपूर	वृ हा ३.२५१
चतुष्कोणं तु विप्राणां	ब्र.या. ४.११०	चन्दन अक्षत दूर्वाश्च	वृ हा ५.१६१
चतुष्पात् सकलो धर्मः	मनु १.८१	चन्दनस्फटिकेलिख्य	ब्र.या. १०.५३
चतुः स्तम्भां चतुर्धाम	वृ हा ५.५०४	चन्दनं कुंकुमोपेतक	वृ हा ५.४०३
चतुस्रिह्येकभागीनाः	या २.१२८	चन्दनं गन्धपुष्पं च	शाण्डि ४.१६०
चलवृध्ने प्रमन्याग्रां	कात्या ८.२	चन्दनं चाक्षतं पुष्पं	भार १३.२७
चत्राधेः कीलकाग्रस्था	कात्या ८.३	चन्दनं वा सुवर्णं वा	वृ हा ४.७५
चत्वरं वा श्मशानं	औ २.३	चन्दनाक्षतपुष्पाणि तथा	भार ११.७९
चत्वारः कथिताः सद्भिः	आंपू १०५६	चन्दनागरुकपूरकाश्मीर	भार १४.२
चत्वारः कलशाः कार्य्या	शाता २.२	चन्दनागरुकपूरकुंकुम	भार १४.३
चत्वारः पाकयज्ञाश्चबहि	ब्र.या. ८.२१६	चन्दनागरुकपूरं कुंकुमं	व्या १३२
चत्वारश्चेद् द्विजाः	आश्व २४.१०	चन्दनागरुकपूरचंपको	भार १४.४४
चत्वारिंशच्च ते सर्वे	वृ परा ६.२०३	चन्दनागरुकस्तूरी	व २.६.३६
चत्वारिंशत्तथा चष्टाव	वृ परा ५.६१	चन्दनागरुकस्तूरी	वृ हा ४.५९
चत्वारिंशत्संस्कारा	कण्व ४२०	चन्दनेन सुगन्धेन	वृ हा ५.४५४
चत्वारिंशद्देवताकमथवा	आं पू ६८०	चन्दनैः लिप्यते अंग	शंख ७.७
चत्वारिंशाश्चते	ब्र.या. १.२५	चन्द्रक्षयाऽनाशक	वृ परा ७.१४७
चत्वारिंशाष्टमधिकं	ब्र.या. ८.६६	चन्द्रक्षये तु य कुर्यात्	वृ परा ५.९७
चत्वारि अर्घ्यपात्राणि	व्या ६३	चन्द्रक्षये तु योऽविद्वान्	वृ परा ५.९५
चत्वारि खलु कर्माणि	यम ७६	चन्द्रक्षयेऽमतिर्विप्रो	वृ परा ५.९४
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते	व्या ३५०	चन्द्रगहे लक्षगुणं	प्रजा २८
चत्वरेषु चतुष्के वा रात्रौ	वृ. गौ. ७.५०	चन्द्रताराबलान्विते	व २.४.११४
चत्वारोऽपि त्रयो	व १ ३.६	चन्द्रवृध्द्या अश्नीयात्	वृ परा ९.२
चत्वारो बहवो द्वौ वा	शाण्डि ४.९९	चन्द्रसूर्यग्रहे यान्ति यम	वृ.गौ. १९.१६
चत्वारो ब्राह्मणा दैवे	आश्व १५.७०	चंद्रसूर्यग्रहौ लंघेहणं	ब्र.या. २.२०१
चत्वारो वर्णा पुत्रिणः	बौधा १.१०.३७	चन्द्रसूर्यं प्रकाशेन विमानेन	बृ.गौ. १९.२१
चत्वारो वर्णा ब्राह्मण	बौधा १.८.१	चन्द्रादीनर्चयेत्पश्चा	व २.७.३९
चत्वारो वर्णा ब्राह्मण	व १ २.१	चन्द्राननं जपापुष्प	वृ हा ३.३०७
चत्वारो वा त्रयो वापि	पराशर ८.१५	चन्द्रा प्रतीतौ पुरुषस्तु	वृ परा ५.१०२
चत्वारो वा त्रयो वापि	वाधू १७७	चन्द्रर्कयोस्तु संयोगे	वृ परा ५.९६
चत्वारो वा त्रयो वापि	आंड ४.३	चन्द्रावभाससंयुक्त	ब्र.या. २.१३३
चत्वारो वेदधर्मज्ञा यत्र	बृह ११.३५	चन्द्रासने समासीनः	विश्वा ३.३४
बत्वारो वेदधर्मज्ञा	या १.९	चन्द्रा सूर्या च दुर्धर्षा	वृ हा ७. १६२

चन्द्रे वा यदि वा सूर्ये	वृ परा १०.३५०	चरेत् सांतपनं विप्रः	लघुशंख ४५
चम् ष च्छयेन इति च	वृ हा ८.६५	चरेत् सांतपनं विप्रः	लिखित ८६
चंपका पुष्पवलिमतं	भारं ६.६२	चरेत्सांतपनं विप्रः प्राजापत्यं	बृ.य. १.११
चम्पकाशोकपुन्नाग	व २.६.५८	चरेत् सान्तपनं विप्रः	आप ४.२
चम्पकैः पाटलीभिश्च	आंपू ५४६	चरेत् सान्तपनं विप्रः	आंगिरस ६
चम्पकैः शतपत्रैश्च	वृ हा ५.३५०	चरेत् सान्तपनं विप्रः	पराशर ६.२७
चम्पको दमनः कुन्द	प्रजा १०४	चरेदेव न संदेहस्त	आंपू ३००
चरणाय विसृष्टं	वृ परा ५.१०५	चरेद्यत्नेन शुद्ध्यर्थं	आं पू १७२
चरमस्त्वपविद्धस्तु कृता	लोहि १९९	चरेद्यदि विशेषेण	आंपू ७०१
चरमा सा तुला ज्ञेया	कपिल ९०१	चरेद्वा वत्सरं कृत्सनं	औ ८.२२
चरमा सा प्रकथिता सप्त	कपिल ९००	चरेद् वृथा हि तत्कर्म	कण्व ३६८
चरवो ह्युपवासश्च	बृ. या. ७.१४५	चरेद् व्रतमहत्वापि	या ३.२५१
चरं दारुणभं पौष्णं	आश्व ३.२	चरेद् व्रतं तथा पूर्ण	वृ हा ६.२५६
चराचरगुर्देवः स मे विष्णु	म ३२	चरेन् माधुकरी वृत्तिमपि	अत्रिस १६१
चराचरस्य जगतो जलेश	नारद १९.४४	चरेयुस्त्रीणि कृच्छ्राणि	आप ९.८
चरणामन्नमचरा	मनु ५.२९	चरौ समशनीये तु	कात्या २६.५
चरितव्यमतो नित्यं	मनु ११.५४	चर्चकः श्रावणी पारः	ब्र.या. १.१०
चरितव्रत आयातो	या ३.२९५	चर्मकारस्य धूर्तस्य	शंक १७.३८
चरितं रघुनाथस्य	वृ हा ५.४४६	चर्मको रजको वैण्यो	अत्रि स २८५
चरितं रघुनाथस्य	वृ हा ७.२९१	चर्मचार्मिक भाण्डेषु	मनु ८.२८९
चरितार्था श्रुति कार्या	कात्या २९.६	चर्मण्य स्थाप्यं	ब्र.या.१०.१२
चरित्रबन्धककृतं	या २.६२	चर्मासनं शुष्ककाष्ठं	वृ हा ५.२३९
चरित्वाऽप्य पयोधृत	बौधा २.१.४५	चर्मास्थि समवेतामि	व २.५.५१
चरुपक्वं श्रुतं पक्वं	वृ परा ८.२२३	चर्वाज्यैरथमन्नीति	वृ हा ६.१०
चरुमाज्यं तिलैवापि	वृ हा ६.४५	चर्वाहुतिन्नयं दत्त्वा	आश्व १०.५१
चरु समशनीयो यस्तथा	कात्या २६.१	चर्वाहुतित्रयं हुत्वा	आश्व ११.४
चरु कृत्वाऽर्धसावित्र्यां	कपिल ३२३	चलिते वासने विप्रो	व २.६.२१४
चरु सशर्कराज्यन्तु	वृ हा ६.१२५	चषके पुटके वाऽपि	वृ हा ५.२६७
चरूणां श्रुकुसुवाणाञ्च	परासर ७.३	चाक्रिकं ग्रहणं मुख्य	आंपू २८०
चरूणां मुक्कुवाणां च	मनु ५.११७	चाटुतस्कर दुर्वृत्त	या १.३३६
चरूस्थालीं ततः स्थाप्य	ब्र.या. ८.२५२	चाणूरो निहतो रंगे स म	विष्णु म ४०
चरेच्च विधिना कृच्छ्रं	औ ९.६२	चाण्डाल अपि अतिथि प्राप्तो	वृ.गौ.६.६२
चरेत् सान्तपनं काष्ठे	पराशर ९.२४	चाण्डालकूपपानेन	वृ परा ८.२१८
चरेत् सान्तपनं कृच्छ्रं	औ ९.१८	चाण्डालकूभाण्डेषु	आप ४.१
चरेत् सान्तपनं कृच्छ्रं	वृ हा ६.२६७	चाण्डालकूपभाण्डेषु	आंगिरस ५

चाण्डालकूपभाण्डेषु	औ १.४८	चाण्डालैर्भाण्डसंस्पृष्टं	लघुशंख ४२
चाण्डालखातवापीषु	पराशर ६.२३	चाण्डालैः सह सम्पर्क	पराशर १०.१८
चाण्डालघट भाण्डस्थं	बृ.य. १.९	चाण्डालैः सह सुप्तन्तु	पराशर ६.२१
चाण्डालघटमध्यस्थं	लघुशंख ४३	चाण्डालैस्तु हता ये	संवर्त १७६
चाण्डालदर्शनिनैव	पराशर ६.२२	चाण्डालोदकभाण्डे तु	पराशर ६.२५
चाण्डालपतितादीनां	वृ हा ६.३८२	चाण्डालोदक संस्पृष्ट	वृ परा ८.३१४
चाण्डालन्तु शवं स्पृष्ट्वा	औ १.८०	चाण्डालोदक संस्पृष्ट	लघुशंख ४७
चाण्डालप्रत्यवसित	दक्ष ४.२१	चातुर्मास्यनिरुद्धे	कण्व ४१७
चाण्डाल भाण्डसंस्पृष्टं	बृ.या. १.८	चातुर्मास्ये द्वितीयायां	वृ परा ६.३५६
चाण्डालभाण्डसंस्पृष्टं	संवर्त १८२	चातुर्वर्ण्यस्य कृत्तनस्य	वृ गौ. ४.५
चाण्डालभाण्डसंस्पृष्टं	पराशर ६.२४	चातुर्वर्ण्यस्य कृत्तनोऽयं	मनु १२.१
चाण्डालमूर्तिका ये च ये	बृ.या १.१४	चातुर्वर्ण्यस्य गेहेषु	वृहा ६.३६९
चाण्डालम्लेच्छश्चपच	अत्रिस १८५	चातुर्वर्ण्यविवाहोऽपि मांसेन	लोहि १६८
चाण्डालश्च वराहश्च	मनु ३.२३९	चातुर्वर्ण्यस्य नारीणां	पराशर १०.२४
चाण्डालस्य करे विप्रः	संवर्त १९६	चातुर्वर्ण्यस्य सर्वत्र	पराशर १०.१
चाण्डालं पतितं म्लेच्छं	अत्रिस २६६	चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोका	मनु १२.९७
चाण्डालं पतति स्पृष्ट्वा	संवर्त १७८	चातुर्वर्ण्यात्तु या नारी	वृ परा ८.२७८
चाण्डालं पुक्वशञ्चैव	संवर्त १६८	चातुर्वर्ण्योपपन्नस्तु	पराशर १२.५८
चाण्डालांश्च श्वपाकांश्च	वृ परा ५.१८१	चातुर्विद्य विकल्पी	व १ ३.२३
चाण्डालात्पाण्डुसोपाक	मनु १०.३७	चातुर्विद्यो विकल्पी	आंउ ५.१
चाण्डालाद्यैस्तु संस्पृष्ट	संवर्त १८०	चातुर्विद्यो विकल्पी	पराशर ८.३४
चाण्डालान्त्यस्त्रियौ	मनु ११.१७६	चातुर्विद्यो विकल्पी	बौधा १.१९
चाण्डालान्नं भक्षयित्वा	बृ.य. १.१२	चात्वार आश्रम ब्रह्मचारी	व १ ७.१
चाण्डालिकासु नारीषु	बृ.य. १.१५	चान्द्र-कृच्छ्र-पराकाद्यै	वृ परा १२.१०४
चाण्डालीञ्च श्वपाकीञ्च	पराशर १०.५	चान्द्रायणत्रयं कुर्यात्	पराशर १०.११
चाण्डालीमेव भिल्लनाम्	वृ परा ८.२४६	चान्द्रायण विधानैर्वा	मनु ६.२०
चाण्डाली यो द्विजो	संवर्त १४९	चान्द्रायण व्रतादिवर्णन	विष्णु ४७
चाण्डालेन च संस्पृष्टं	औ १.४९	चान्द्रायणञ्च यत्कृच्छ्रं	बृ.गौ. १३.१५
चाण्डालेन तु संस्पृष्टो	आप १.४०	चान्द्रायणं चरेत् सम्यक्	औ १.४०
चाण्डालेन तु सोपाको	मनु १०.३८	चान्द्रायणचरेत् सर्वान्	या ३.२६१
चाण्डालेन यदा स्पृष्टो	आप ४.६	चान्द्रायणं चरेद् विप्रः	अत्रिस १७५
चाण्डालेन यदा स्पृष्टो	आप ५.१	चान्द्राणं तथाऽन्यासु	वृता ६.३०२
चाण्डालेन श्वपाकेन	पराशर ५.१०	चान्द्रायणं त्वाहिताग्नेः	देवल २०
चाण्डालैः निर्धूणैः चण्डैः	वृ.गौ. ५.५१	चान्द्रायणद्वयं नित्यं	नारा ८.१०
चाण्डालैः श्वपचैर्वापि	आप ७.१८	चान्द्रायणं नवश्राद्धे	वृ परा ८.२०४

चान्द्रायणं नवश्राद्धे	लघु शंख ३४	चिकित्सकान् देवलकान्	मनु ३.१५२
चान्द्रायणं नवश्राद्धे	लिखित ६४	चिकित्सकानां सर्वेषां	मनु ९.२८४
चान्द्रायणं नवश्राद्धे	दा ८५	चित्तां च चित्तिकाष्ठं	वृ परा ८.२७२
चान्द्रायणं परस्ताद्	व १ २३.१५	चित्तिभ्रष्टा तुया नारी	अत्रिस २११
चान्द्रायणं पराको या	आप ३.२	चित्तजं श्रुतिजं भावं	वृ परा १२.३०७
चान्द्रायणं पराकं वा	वृ हा ६.२८२	चित्तदर्पणसङ्क्रान्त	शाण्डि ५.६९
चान्द्रायणं पराकं वा	वृहा ६.३०१	चित्तप्रसाद बल-रूप	वृ परा २.२२७
चान्द्रायणं पराकं वा	वृ हा ६.३८१	चित्तबर्हिण्युक्तेन विचित्र	वृ .गौ.७.९५
चान्द्रायणं यावकञ्च	पराशर १२.७२	चित्तव्यामोहरुक्क्रोधो	लोहि १२७
चान्द्रायणं वा त्रीन्मासान्	मनु ११.१०९	चित्तशुद्धिकरं ब्रह्म	कण्व ७
चान्द्रायणानि चत्वारि	औ ९.३	चित्तशुद्धिर्ब्राह्मणाय नान्यैः	कण्व ४३५
चान्द्रायणानि वा कुर्यात्	औ ८.२९	चित्तसद्यस्तत्रतत्र संग्रहे	कण्व ५
चान्द्रायणानि वा त्रीणि	संवर्त ११८	चित्पतिं मां पुनात्	वृ परा २.१३८
चान्द्रायणान्तु सर्वेषां	संवर्त २२६	चित्पतिर्मेति च शनैः	बृ.गौ.७.२३
चान्द्रायणे च कृच्छ्रे	वृ परा ९.२१	चित्याग्निधूमकाष्ठोल्मूक	लोहि ५३०
चान्द्रायणे ततश्चीर्णे	पराशर १२.६८	चित्याग्निसदृशी प्रोक्ता	लोहि ४८८
चान्द्रायणेन नश्यन्ति	बृ.गौ. १६.३५	चित्युल्मूकैव सा ज्ञेया	लोहि ४९०
चान्द्रायणेन शुद्ध्येत	औ ९.३९	चित्र कर्म यथानेकै	पराशर ८.२६
चान्द्रायणैर्नयेत्कालं	या ३.५०	चित्रकर्म यथानेकैर	आंड ४.१०
चाणोत्साहयोगेन	मनु ९.२९८	चित्रकृन्त वेश्यानां	प्रजा ५०
चापग्रस्नानशतकैर्मन्त्र	आंपू १०६६	चित्रगुप्तः कलि कालो	वृ.गौ.६.११६
चापाग्रयानं कृत्वादौ	आंपू १८९	चित्रभित्त्यत्र कुत्सस्तु	वृ परा २.५४
चामीकरमयी पश्चात्	कपिल २९८	चित्रं देवानामिति च	व २.३.७
चारणाश्च सुपर्णाश्च	मनु १२.४४	चित्रयन्मौक्तिकच्छत्र	भार १५.१४२
चारित्रनियता राजन्	वृ.गौ. १०.८१	चित्रान्नमग्नि सूनोश्च	वृ परा ११.७७
चार्मिके रोमबद्धे	या २.१८३	चिन्तयन्तोऽपि यन्नित्यं	विष्णु म ७७
चार्वाकशैवगाणेश सौर	विश्वा ३.६५	चिन्तयस्व सदा विष्णु	बृ.गौ. २२.४७
चालयित्वा तु पात्राणि	आश्व २३.९०	चिन्तयन् परमात्मानं	वृ हा ८.११९
चाषांश्च रक्तपादांश्च	या १.१७५	चिन्तयित्वा नमस्कृत्वा	वृहा ४.११
चिकित्सक मृगयुपुंश्चली	व १.१४.२	चिन्तयेत्परमात्मानमिव	विश्वा ५.४२
चिकित्सकस्य मृगयो	मनु ४.२१२	चिन्तयेत् सर्वमात्मीयं	वृ परा ५.१४१
चिकित्सकस्य मृगयोः	व १.१४.१६	चिन्तयेत् हृदिमध्यस्थं	वृ परा १२.३१३
चिकित्सकस्य सर्वस्य	वृ.गौ.११.१४	चिन्वयेद्धरणी देवी	वृ हां ३.१३२
चिकित्सकातुरकुद्ध	या १.१६२	चिन्तयेन्निश्चलीकृत्य	वृ परा १२.२४८
चिकित्सकान् देवलकान्	वृ.गौ. १०.७३	चिन्तापर्युषिततृष्टं	भार ४.२५

छन्दश्च परमादेवी	वृ हा ३.२४५
छन्दः सर्वासु वाऽनुष्टुप्	वृ परा ११.१९१
छन्दसामेकविशानां	कात्या २७.२०
छन्दसां पोषणात्	बृ.या. ४.३६
छन्दस्तथार्थ सहदैवतेन	वृ परा ११.३४५
छन्दस्तु देवी गायत्री	व २.६.६९
छन्दस्तु देवीं गायत्री	भार १७.३
छन्दांसि कूबरे सप्त	वृ हा ६.२९
छन्दांसिपादौ वेदस्य	ब्र.या. १.४१
छन्दोदैवतमार्षेयं	वृ परा ११.१८४
छन्दोनुष्टुग्विश्वादेवा	भार ६.४७
छन्दोभिर्विनियोगैश्च	वृ परा २.४०
छन्दोभि सह युज्यन्ते	वृ.गौ. ७.२४
छन्दो यज्ञानृषीन्	वृ परा २.१७०
छन्न पञ्चोशना शान्त्याः	वृ हा ५.३५६
छपेटिकाप्रदानेन	लोहि २७९
छलं निरस्य भूतेन	या २.१९
छागस्य दक्षिणे कर्णे	बौधा १.४.२
छादनाच्छन्द उद्दिष्टं	वृ परा २.४२
छायाकूपनदी गोष्ठे	औ २.३५
छायानुवर्तिनी नित्यं	लोहि ६५९
छायामन्त्यश्वपाकानां	वाधू ४२
छायायां अन्धकारे वा	मनु ४.५१
छायायां अन्धकारे	व १.६.१३
छायां यथेच्छेच्छर	कात्या १२.३
छाया श्वपाकस्यारूढा	औ ९.९०
छायासु सोमोद्भवजासु	प्रजा २७७
छाया स्वी दासवर्गश्च	मनु ४.१८५
छायेयं पुरुषस्यैवं	वृ परा ७.९३
छायेवानुगता स्वच्छा	व्यास २.२७
छित्वालिङ्गं वधस्तस्य	ब्र.या. १२.५८
छित्वा हस्तौ प्रथमतः	कपिल ८६०
छिद्रेष्वेतेषु विप्राणां	औ ३.७५
छिन्दते पूर्वदेहस्तं	बृह ९.८२
छिन्ननस्येन यानेन	यार. ३०२

छिन्ननास्ये भग्नयुगे	मनु ८.२९१
छिन्नपादा तु गायत्री	वाधू १४३
छिन्नं प्रभिन्नं स्फुटतं	भार ११.२
छिन्नभिन्नह्यतोन्मृष्टं नष्टं	नारद २.१२३
छिन्ने दग्धेऽथवा पत्रे	वृ हा ४.२३०
छिन्ने यदि प्रमादाद्वा	भार १६.३२
छिन्नोत्पन्नास्तु ये केचित्	व १.१८.५
छुन्छुन्दरीः शुभान् गंधान्	मनु १२.६५
छेदने चैव यंत्राणां	मनु ८.२९२

ज

जकारपञ्चकं त्वेकं	आपू ४७५
जगज्जगाम लोकानाम	विष्णु १.१९
जगतः कणत्वं च	वृ हा ८.१५२
जगतश्च समुत्पत्तिं	मनु १.१११
जगतेद्घृतं सर्वमनडघदग्धि	वृ परा ५.४७
जगत्करणभूतान्ता विद्ये	शाम्दि १.६१
जगत्कृत्यं जगत्कर्त्ता	कण्व १९७
जगत्परायण नारायण वर्णनम्	विष्णु ९८
जगदाधानसिद्ध्यर्थं	बृह ९.४७
जगदेतन्निराक्रन्दं ननु	शंख ७.१२
जगद्वाधिर्यकृन्नादं दण्डं	वृ परा ११.१३५
जगाम कश्यपं द्रष्टुं	विष्णु १.२२
जगुप्सा सा प्रकथिता स्व	कपिल ७९७
जग्ध्वा चैव वराहश्च	औ ९.२७
जग्ध्वा परेऽह्युपवसेदेष	अत्रिस ११८
जघनं च घनं मध्यं	विष्णु १.२७
जघनेन गार्हपत्यं	बौधा १.७.२४
जघनेनाऽऽहवनीयं	बौधा १.७.२१
जघन्या याति तिर्यक्षु	वृ.गौ. ३.४९
जङ्गमानां त सर्वेषां	कण्व ३३४
जघान्तं जानुपर्यन्तं	भार ४.४
जटिलं चानधीयानं	मनु ३.१५१
जटिवमग्निहोत्रित्वं जटिव	पु १७
जठराग्ने क्षयं चैके	वृ परा ४.१८४
जठरे रक्तवर्णा तु	वृ परा ४.८४

जडमूकान्धवधिर	कात्या ६.५	जन्मप्रभृति यत्पापं	अत्रिस ३३३
जडमूकान्धवधिर	मनु ७.१४९	जन्मप्रभृतिसंस्कारे	आप ९.२१
जगमूढान्धमत्ता ये मूक	कपिल ७९०	जन्मप्रभृतिसंस्कारे	आंगिरस ६४
जथाकथंचितं पिण्डानां	या ३.३२४	जन्मभूम्यादिकं तत्र	आंपू ४७८
जनकस्य न किंचित	वृ परा ७.३९७	जन्मर्क्षे वैधृतौ पुण्ये	वाधू ७३
जनकाद्यैर्नृपवरैः शिष्यै	बृ.या. १.२	जन्मशारीरविद्याभिराचारेण	आंउ ४.९
जननमरणयो संनिपाते	बौधा १.५.१२३	जन्मान्तरसहस्रेषु	विष्णु म १०७
जननस्य च मध्ये तु	व २.६.४५२	जन्मान्तरसहस्रैः तु	वृ.गौ. १.३४
जननादेव दौहित्रः तत्	लोहि ३३६	जन्माष्टमी तथाशोकी	ब्र.या. ९.३५
जननी भगिनी धात्री	वृ हा ६.१८४	जपकाले न भाषेत	बृ.या.७.१४६
जनने तावन् मातापित्रो	बौधा १.५.१२५	जपकाले न भाषेत	ल व्यास २.३१
जनने मरणे चैष	शंख १५.१	जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं	शाता १.२६
जनन्या जनकश्चेति जनको	कपिल ४२०	जप तर्पण होमादौ	वृ परा ११.१५३
जनन्या दोहदाभावे	वृ परा १२.१७९	जपता जुह्वतां चैव	आंउ १२.१२
जनन्यां संस्थितायां	मनु ९.१९२	जपन् द्वादशवारं तु	वृ हा ३.३९
जनः पादं वामनेत्रेतपः	विश्वा २.३६	जपन्नेव तु गायत्री	बृ.गौ. १७.१२
जनमत्या ज्ञातिमत्या बंधु	कपिल ४८५	जपन्वन्यन्तमं वेदं	मनु ११.७६
जनलोकं कटिदेशे	बृ.या. ५.६	जपन् वै पावनीं देवीं	बृ.या. ४.६०
जनानां शृण्वतां मार्गे	वृ परा ६.३७०	जपन्वै वैष्णवान्सूक्ता	व २.७.५१
जनार्दनं स्तथा पद्यं	वृ हा ७.१२५	जपभोदनहोमास्तु	शाण्डि ४.१२४
जनार्दनं हृदिन्यस्या	विश्वा २.१८	जपमालाविशेषश्च	भार ७.८
जनिष्यन्ति विशेषेण	नारा ५.२५	जपयज्ञजलस्थं च	व्या ३६४
जनिष्यमाणानिच्छन्ति	वृ परा ६.१९३	जपशङ्खानुगुणनव्यापारेण	शाण्डि १.३०
जनेष्वयं प्रसिद्धत्वा	भार १८.४८	जपस्तपः श्राद्धकर्म	वाधू २००
जन्मकर्मपरिभ्रष्टः	पराशर ३.६	जपस्थानांतरेव्याख्या	भार १०.६
जन्मकुशादि नियमः	विष्णु ७९	जपस्याथ प्रवक्ष्यामि	वृ परा ३.१
जन्मजन्मसुदीर्घायुः प्रजावान्	कपिल ६१४	जपस्येकस्यैकर्मणिं	भार ६.१०३
जन्मजात्यनुसारेण	वृ परा ८.८७	जपस्येह विधिं वक्ष्ये	बृ.या. ७.१२९
जन्मज्येष्ठेन चाह्वानं	मनु ९.१२६	जपहोमविहीनन्तु न	वृ हा ७.३०४
जन्मत्रयाराणर्कदिव	भार ५.४	जप होमादि कर्तव्यं	वृ परा ९.३७
जन्मद्विवर्षगे प्रेते	औ ६.११	जपहोमार्चनारंभे स्मृत्या	भार १९.३७
जन्मना यस्तु निर्विणो	शंख ७.९	जपहोमैरपैत्येनो	मनु १०.१११
जन्मनैव हि विख्याता	लोहि ४४७	जपं करोति यस्सोऽयं	कण्व १८८
जन्मप्रभृति यत्किंचित्	व्या ३६७	जप देवाचर्चनं होमं	पराशर २.६
जन्मप्रभृति त्किंचित्	मनु ८.९०	जपं होमं तथा दानं	ब्र.या. ३.७

जपांगुलिसमस्थू	भार ७.३९	जपवोऽहुतो हुतो होमः	मनु ३.७४
जपासने स्वकार्यार्थं	विश्वा ८.५	जपो होमस्तथा दानं	अ ४
जपित्वा तु महारुद्र	शाता ३.२	जप्तं हुतं तथा दानं	वृ हा १९३
जपित्वा त्रीणि सावित्र्याः	मनु ११.१९५	जप्तुकामः पवित्राणि	शंख ८.५
जपित्वा दशसाहस्रं	वृ हा ३.१९५	जप्त्वा कृष्णमनुं	वृ हा ५.१११
जपित्वा वैष्णवान्सूक्ता	व २.६.३८०	जप्त्वा कौत्समपेत्येतद्	व १ २६.६
जपेच्चदशसाहस्रं	व २.६.४०३	जप्त्वाखादिर समिधो	वृ परा ११.१.७६
जपेच्च भगवन् मंत्रान्	वृ हा ७.२६१	जप्त्वा च श्रीफलैर्हुत्वा	वृ परा ११.१.७२
जपेत्तु तुलसीकाष्ठैः	वाधू १.४२	जप्त्वा च पौरुषं सूक्तं	व २.३.१३
जपेत्पीयूष दैवत्यान्	वृ हा ४.१२३	जपत्वाऽथ मन्त्र	व ७.९९
जपेत्पृथिव्यै स्वाहेति	कण्व ६२०	जप्त्वा चैव तु गायत्री	आश्व १.१.३६
जपेत्सहस्रं गायत्री	ब्र.या. २.१९४	जप्त्वा पुष्पांजलि	वृ हा ४.१.३२
जपेदअन्यत्र वा विद्वान्	वृ परा ११.१.७०	जप्त्वाभिगमनं मन्त्र	शाण्डि २.८४
जपेद् अष्टाक्षरं मन्त्र	वृ हा ३.१.५२	जप्त्वा मन्त्र गुरु	वृ हा ८.८६
जपेदअष्टोत्तरशतं	व २.७.१०२	जप्त्वा वै वैष्णवान्	वृ परा ७.२.५९
जपेदअष्टोत्तरशतं	भार ६.१००	जप्त्वा व्याहृतिभि	वृ परा ७.२.५६
जपेद् ऊर्ध्ववता सूक्त	व २. ७.३८	जप्त्वा सहस्रं गायत्र्य	अत्रिस ११६
जपेद्गोष्ठे तथारण्ये	वृ परा ११.१.६९	जप्त्वा सहस्रं गायत्र्य	बृ.या. ४.५८
जपेद्द्वादशलक्षाणि गायत्राः	अ ८८	जप्त्वा सहस्रं गायत्र्य	वृ हा ६.३.२१
जपेद् ब्रह्मा पवित्र वा	शाण्डि ५.४	जप्यकालेषु संचिन्त्य	बृ.या ४.७०
जपेद् भोगतया मन्त्र	वृ हा ८.२.२३	जप्यान्तु मम गायत्री	बृ.गौ. १९.२६
जपेद्वा पौरुषं सूक्तं	अ ३४	जप्यात्यन्तैकनियम	कण्व १७२
जपेद्वाप्यस्यवामीयं	अ १२५	जप्यानि घ्नन्ति पापानि	वृ परा ४.५१
जपेन देवता नित्यं	भार ६.१.६६	जप्यानि ब्रह्मसूक्तानि	वृ परा ३.२
जपेन देवता नित्यं	ल हा ४.४५	जप्येनैकेन सिद्धेन	वृ परा ४.६०
जपेन येनेह कृतेन	वृ परा ४.१.०७	जप्येनैव तु संसिद्ध्येद्	मनु २.८७
जपेननिषिद्धकर्माणि	भार ८.१	जप्येनैव हि संसिद्ध्येत्	वृ.या.७.१.३०
जपेनैव तु संसिद्ध्येद्	शंख १२.२८	जप्येनैव तु संसिद्ध्येत्	व १.२६.१२
जपेनैव हि संसिद्ध्येद्	बृह १०.१.५	जप्ये यथाविधा कार्या	वृ परा ४.२
जपे पारायणे चैव	विश्वा ६.५३	जमदग्नि भरद्वाजस्त्वेते	वृ हा ३.१.८२
जपेश्मशानाक्रमेण	भार ४.३९	जम्बूद्वीपं ततः प्रोक्तं	शंख १३.५
जपेहोमे तथा दाने	दक्ष १.११	जम्बूद्वीपं भारतस्य	कण्व २०
जपोपस्थानयोरन्ते सौरं	विश्वा ७.१.४	जम्बू-निम्ब-कदम्बैश्च	वृ परा १०.३.७५
जपोमोक्ष प्रदोऽंगुष्ठं	भार ७.१.८	जम्बू पुन्नागपर्णे	व २.६.२०२
जपो विशेष फलदः	भार ७.६	जम्भारिका सुजम्बीरा	वृ परा ७.२.२७

जयकामोऽर्चयेद्	बृ.गौ. २१.३१	जलाक्षताभ्यां संस्कृत्य	कण्व ६५७
जयन्त्यामुपवासश्च	व २.६.२५०	जलाग्निपतने चैव	पराशर १२.५
जरागच्छजपेन्मन्त्रः	ब्र.या. ८.२२२	जलाग्निबन्धनभ्रष्टा	बृ.य. १.३
जरायुजाण्डजादीनि	वृ परा १२.२०१	जलाग्न्युद्वन्धनभ्रष्टाः	यम २
जरायुजैः चाण्डवैः च	वृ.गौ. ५.२८	जलादिषु विपन्ना ये	ब्र.या ५.२७
जराशोकसमाविष्टं	मनु ६.७७	जलादीनि च दिव्यानि	वृ परा ८.८६
जरां चैवा प्रतीकारां	मनु १२.८०	जलाद्युद्वन्धनभ्रष्टाः	लघु यम २२
जलकुंजर गोधाश्च	वृ परा ११.२३६	जलाधारश्च कर्तव्यो	वृहस्पति ४३
जलकुम्भं द्विजश्रेष्ठ	वृ परा १०.८८	जलानि तण्डुलामासा मुद्	लोहि ३५२
जलकेन नीलवस्त्र	व २.६.४७८	जलान्ते वाग्मन्यगारे	बृ.या. ७.१४२
जलक्रीडांरुचि शुभं	विष्णु १.२	जलान्नपानं गन्धादि	ब्र.या.४.८८
जलक्रीडाविधानं च	कण्व ६६६	जलाभावे किमपि तन्	लोहि ३५४
जलधेनुं प्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.८७	जलार्द्रवासाः प्रयतो	औ ८.१४
जलजानि च सर्वाणि	व २.६.३०	जलावगाहनं नित्यं	वृ परा २.११९
जलतीरं समासाद्य	लता ४.३३	जलावगाहनं स्वप्ने	वृ परा ११.५
जलदस्तृप्तिमतुलां	संवर्त ८०	जलाशयेषुजननं यस्या	भार १८.४६
जलपानं पिवेन्मासो	बृ.गौ. १७.६	जलेचरांश्च जलजान्	शंख १७.२६
जलपूर्णानि भण्डानि	व २.५.३९	जले चैव जलं देयं	दा १७
जलपूर्वं प्रदद्यात् पितृतीर्थेन	कपिल २३२	जले जलगत शुद्ध स्थल	वृ.गौ. ८.४३
जलबुद्बुदच्छायं	बृह १२.१५	जले जलस्त आचामेत	संवर्त १७
जलबुद्बुदसंकाशं	आपूं ३१५	जले जलस्थ आचामेत्	भार ४.७
जलमंजलिना दद्या	भार ११.१११	जलेन तेन वै हौता	आश्व २.७२
जलमञ्जलिनाऽऽदाय	आश्व १.४०	जलेन त्रिषवणास्नायी	अ ११३
जलमध्यस्थितो विप्र	बृ.या. ७.२५	जले निमग्न उन्मज्य	शंख ९.२
जलमध्ये च य कश्चिद्	वृ परा २.२१३	जलेऽपि हि जलेनैव	वृ परा ४.१४५
जलमध्ये वामकरे दक्षिणे	विश्वा २.१	जले वा प्रविशेदग्नौ	औ ८.३४
जलमेकाहमाकशे स्थाप्यं	या ३.१७	जले संलिख्य गायत्र्या	कण्व २७२
जलशायी जगज्ज्योति	वृ परा १०.९७	जले स्थलस्थो नाचामे	पराशर १२.१६
जलस्थमुधृतांवापि	भार ४.६	जलोदरं यकृत प्लीहा	शाता १.८
जलस्थश्च जलेसिंचेत	वृ परा २.२०१	जलौकं जालपातञ्च	औ ९.२६
जलस्नानं सर्वथा	कण्व १६३	जलौका रक्तमादत्ते	दक्षे ४.१०
जलं अर्चन पात्र स्थान्	आश्व २३.९४	जस्मात् अन्नेन तुष्यन्ति	वृ.गौ. ६.२६
जलपिबेन्नाञ्जलिना	या १.१३८	जहाति भगवत्कर्म	शाण्डि ५.३२
जलं पीत्वा तयोर्विप्र	वृ हा ६.३८६	जाग्रतः स्वपन् वाअपि	वृ.गौ. ३.८६
जलं पीत्वा तु तुष्यन्ति	वृ परा ६.१२२	जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तयर्थं	विश्वा ४.२१

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याथ	विश्वा ४.७	जाताः सुरक्षिताया	व्यास २.५५
जाग्रत् स्वप्नं सुषुप्तं	बृ. या. २.८८	जातिकेतककुन्दाद्यैः	वृ हा ७.७५
जाग्रत् स्वप्नं च सुप्तं	बृ. या. २.१२४	जातिजानप्रदान् धर्मान्	मनु ८.४१
जाग्रत्स्वप्नं सुप्तञ्च	ब्रा.या. २.१७९	जाति प्राधान्यकं नास्ति	बृह १२.१६
जाग्रद्भि वा प्रसुप्तैः वा	वृ.गौ. ५.३४	जातिभ्रंशकरं कर्म	नर ११.१२५
जाघ्नयंमृद्वादशाहुत्वा	ब्र.या. ८.२२९	जातिभ्रंशकरं प्राहुस्तथा	नारा १.१६
जांगलं सत्यसम्पन्नं	मनु ७.६९	जातिमात्रोपजीवी वा	मनु ८.२०
जातकर्मणि वा चोले	वृ हा २.१३५	जातिरूपवयोवृत्ति	या ३.१५१
जातकर्मादिकं प्रोक्तं पुनः	अत्रिस २१४	जातिं रूपं च शीलं च	वृ परा ६.२०
जातकर्मादि कर्मणां	व्या ८६	जातिर्विद्या च रूपं च	वृ परा ६.१९
जातवेदं सुवर्णञ्च	पराशर ७.१२	जाति-विद्या-वय-शक्ति	वृ परा ६.१८
जातके नैव मृतकं क्षयं	बृ.य. ४.२०	जाति विप्रो दशाहेन	दक्ष ६.९
जातके मरणे चापि सूतकं	कपिल १११	जातिस्मरः च भवति	वृ.गौ.६.८८
जातपुत्रे पिता स्नात्वा	वृ हा २.२५	जाती दर्शनमात्रेण	दा ५१
जातमात्रः शिशुस्तावद्	दक्षत १.४	जातीपुष्पं तथाकर्कच	बृ.या. ३.६०
जातमात्रस्य तस्यैव	नारा ५.१४	जातीफलञ्च कर्पूर	वृ हा ४.७३
जातमात्रस्य व तस्य	औ ६.१४	जातीफलं धात्रीफल	व २ ६.११५
जातमात्रेण पुत्रेण पितृणां	अत्रिस ५४	जातीर्यद्योगमात्मानं तदा	शाण्डि ३.६८
जातये वाति सूक्तेन	वृता ५.३९६	जाते कुमारे तदह आमं	औ ७.४
जातरूपं न दद्याच्च सुगन्ध	कपिल ९५२	जाते तु सद्यः पतितस्त	कण्व १३५
जातरूपं सुवर्णञ्च	यम १९	जातेन शुध्यते जातं	लघुयम ७६
जातरूप्यं सुवर्णं तु दिवा	बृ.य. ३.९	जातेन्द्रियाणां दौर्बल्ये	कपिल ७०७
जातवीर्यबलैश्चवर्याः	वृ.गौ. १०.३६	जाते पुत्र पिता स्नात्वा	व २.२.३
जातवेदस इत्यत्र	वृ परा ११.३४०	जातेऽपि चौरसे भूयः	आंपू ३६३
जातवेदस इत्येषां प्रातः	विश्वा ७.५	जाते विप्रो दशाहेन	पराशर ३.४
जातः सुवर्ण इत्युक्त	औसं २४	जाते सुते पिता स्नायान्	आश्व ५.१
जातः सूत्रौञ्च निर्दिष्टः	औसं ३	जातोऽधिकः प्रदत्तानु	आंपू १०११
जातस्य जातकर्म	वृ परा ६.१४९	जातोऽप्य नार्यादार्यायां	मनु १०.६७
जातस्य बालरोगाद्यैः	वृ परा १२.१८०	जातो निषादाच्छूदाया	मनु १०.१८
जातस्य लक्षणं कृत्वा	कात्या ८.९	जात्यशुक्तिललाटा च	वृ परा १०.११३
जातस्यापि विधिर्दष्ट	संवर्त ४२	जात्यादिगुणयुक्ताय	वृ परा ६.३
जातं जातेन शुद्ध स्यात्	दा १२५	जात्युत्कर्षा युगे ज्ञेय	या १.९६
जाता यदि तदा तस्या	लोहि १२८	जानकी लक्ष्मणोपेतं	वृ हा ५.९८
जातायामपि तस्याः	कण्व ७०४	जानीयादक्षरं देव्याः	वृ परा ४.१८
जप्ता ये त्वानियुक्तायामेकेन नारद	१४.१८	जानुद्वयेवरेण्यन्तु	भार६.८३

जानोरधस्तास्तविले	भार ४.८	जीर्णोवयुक्तो योदंडो	भार १५.१३०
जान्वा च दक्षिणं दर्भैः	व्यास ३.१३	जीर्यन्ति जीर्यतः केशा	व १.३०.१०
जान्वा वै पाणि संगृह्य	व २ ३.६६	जीवतो वाक्यकरणात्	वृ परा ६.१९६
जापारूदेतीतिजपेत्	व २ ४.७४	जीवतो वाक्यकरणे	ब्र.या. ४.१४७
जापिनां होमिनां चैव	व १ २६.१३	जीवतातोऽपिकर्ता	आंपू ७२१
जाप्ये तु त्रिपदा ज्ञेया	वृ परा ४.९९	जीवदेतेन राजन्यः	मनु १०.९५
जामयोऽप्सरसां लोके	मनु ४.१८३	जीवनांशैकसंलब्धभूमिका	लोहि ५४५
जामयो यानि गेहानि	मनु ३.५८	जीवन्तमति दद्याद्	कात्या १६.१५
जामाता श्वशुरो बन्धु	वृ परा ७२०	जीवन्ति जीविते यस्य	व्यास ४.२१
जाम्बूनदविचित्रेण	वृ.गौ. ७.३९	जीवन्ति वृत्या रस दान	वृ परा ६.२८१
जायते हि विशेषेण	लोहि ४६९	जीवन्तीनां तु तासां ये	मनु ८.२९
जायानामग्रजस्त्याज्यः	लोहि २७२	जीवन्पि भवेच्छुद्धो	वृ परा ८.११०
जायन्ते तु पुनः सर्गे	वृ.या. ३.२०	जीवन्नात्मत्यागी कृच्छ्रं	व १.२३.१७
जायन्ते बहवः पुत्रा	अत्रिस ५५	जीवन् पितामहोयस्य	व्या ६२
जायायास्ताद्धि जायात्वं	वृ परा ६.१९०	जीवन्मुक्तश्च ब्रह्मैव	कण्व २५२
जायोक्ता तेन भर्ता वै	वृ परा ६.१८१	जीवन्वापि मृतोवापि	वृ परा ६.५०
जारे चौरैत्यभिवदन्	या २.३०४	जीवपुत्रा तु या नारी	कपिल ५९३
जारेण जनयेद् गर्भगते	पराशर १०.३०	जीवमात्रोभवेच्छुद्धो	ब्र.या. २.८८
जालसूर्यमरीचिस्थं	या १.३१२	जीवसंज्ञोऽन्तरात्माऽन्यः	मनु १२.१३
जालान्तरगते भानौ	मनु ८.१३२	जीवातुश्च ततःश्राद्ध	कपिल ५५
जिघांसन्तं जिघांसीयान्	ब्र.या. १२.४६	जीवात्मा कायमध्यस्थ	वृ परा १२.३१७
जितेन लभते लक्ष्मी	पराशर ३.३९	जीवात्मा योजितः षष्ठ	वृ परा ६.१०८
जितेन्द्रियः स्यात् सततं	औ ३.१५	जीविताथमपि द्वेष्टं	औ १.३१
जितेन्द्रिया जितात्मानो	विष्णुम ४८	जीवितव्ये च तद्विप्राः	ब्र.या.११.२
जितेन्द्रियान् शुभाचारान्	व २.७.११	जीवितात्ययमाप्नोति	मनु १०.१०४
जितेन्द्रियैस्तु भाव्यं	वृ परा ७.२८	जीवते चैव तृप्ताय	औ ९.१३
जितोर्धर्मश्च पापेन	वृ परा १.३५	जीवे क्षीणेऽथवा पुण्यकामी	वृहा ६.२९१
जित्वा स सकलान्	विश्व १.१६	जीवे पितरि चेच्छ्राद्धे	आंपू १०६
जित्वा सम्पूजयेद्देवान्	मनु ७.२०१	जीवो यत्र विशुद्ध्येत	वृ परा ६.९२
जिह्वं त्यजेयुः निर्लभं	या २.२६८	जीवो वैश्वानरोज्ञेयो	ब्र.या. २.१६७
जीनकार्मुकवस्तावीन्	मनु ११.१३९	जुगुप्सितन्तु यच्चान्नं	वृ.गौ. १३.७
जीमूततस्येति सूक्तेन	वृहा ६.३२	जुर्व्वप्येनो न तं स्पृशेत	कात्या १४.१४
जीर्णं नीलं संघितं	व्या ३८८	जुहुमाच्च दशांशेन	शाता २.३३
जीर्णशक्तिमतो नुश्चेत्	आंपू २९०	जुहुयाच्चरूणा वापि	वृहा ३.२७०
जीर्णोद्यानान्यरण्यानि	मनु ९.२६५	जुहुयात् कुसुमैः शुभ्रै	वृहा ३.३२०

जुहुयात् त्र्यम्बकं	वृ परा ४.१७६	ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे	वृ परा १०.३४६
जुहुयात् सार्षपं तैलं	वृ परा ११.२२	ज्येष्ठोत्तरकरान् युग्मान्	कात्या २.९
जुहुयादग्निंको विप्रो	वृ परा ४.१८५	ज्येष्ठो भ्राता यदा	दा १६०
जुहुयादग्नये स्वाहा	आश्व २.५८	ज्येष्ठो भ्राता यदा	अत्रिस १०९
जुहुयादयुतं वह्नौ	वृ हा ७.९०	ज्येष्ठो भ्राता यदा	लघुशंख ६६
जुहुयादाहुतीस्तिष्ठो	वृ परा ११.१००	ज्येष्ठो भ्राता यदा	पराशर ४.२४
जुहुयाद्गार्हपत्यं यो भू	बृ.गौ. १५.३६	ज्येष्ठो यवीयस्ते	मनु ९.५८
जुहुयाद् ग्रहणेभानोः	भार ९.२७	ज्येष्ठोऽहमेकतनयः पितृभ्यां	लोहि २८६
जुहुयाद् पुष्यैः सहस्रं	वृ हा ३.१४०	ज्यैष्ठमासे तु भो	बृ.गौ. १७.३६
जुहुयाद् रुद्र भागादीन	आश्व १३.६	ज्यैष्ठ्यकानिण्ट्यधर्मेषु	लोहि ५०
जुहुयाद्वै गार्हपत्यो	वृ हा ६.७०	ज्योति मेप्येकी	ब्र.या. ३.१४
जुहुयाद् व्यंजन क्षार	वृ परा ४.१५९	ज्योतिर्मयानि छिद्राणि	शाण्डि ५.२४
जुहुयान्मूर्द्धनिकुशा	ब्र.या. १०.१६	ज्योतिर्विदो ह्यथर्वाणः	अत्रिस ३८३
जुहुं दक्षिणहस्तेन	पराशर ५.१९	ज्योतिश्चैव तु जीवं	ब्र.या. ३.४८
जुहुत्येनुदितेभानावित्येकं	व्यास ३.४	ज्योतिषश्च विकुर्वाणादापो	मनु १.७८
जुह्वत् चापि जपन्वापि	अत्रि ५.१३	ज्योतिषां ज्योतिरित्याहुः	बृह ९.११९
ज्यायसीमपि षोडश	व १ १७.५१	ज्योतिष्ठोमादिसत्राणां	संवर्त ६३
ज्यायांसमनयोर्विद्यात्	मनु ३.१३७	ज्वराभिभूता या नारी	वाधु ४४
ज्येष्ठ एवं तु गृहणीयात्	मनु ९.१०५	ज्वरे रौद्र जपेत् कर्णे	शाता ४.३१
ज्येष्ठता च निवर्तेत	मनु ११.१८६	ज्वलदग्निं समरेद्यो	विष्णु म ८५
ज्येष्ठपत्नीसुतस्यैव चौर	कपिल ६९८	ज्वलनं मध्यं संस्थाप्य	ब्र.या.२ १३७
ज्येष्ठपुत्राः पितृणां	कपिल ७९१	ज्वलनो जननोत्	आपू ४८५
ज्येष्ठः पूज्य तमो लोके	मनु ९.१०९	ज्वालाचारिष्मती चैव कव्यब्र.या. १०.४१	
ज्येष्ठभार्या कनिष्ठो वा	नारद १३.८७	ज्वाला हविष्मती चैव	ब्र.या. ८.२७५
ज्येष्ठश्चेद्यदि निर्दोषो	अत्रिस २५७	ज्वीकृष्णाजिनं तथा देवता	कपिल ३१०
ज्येष्ठश्चैव कनिष्ठश्च	मनु ९.११३	ज्ञातमित्या कृता बन्धु	हि २५३
ज्येष्ठस्तु जातो ज्येष्ठायां	मनु ९.१२४	ज्ञातयः प्रभवन्त्येव	लोहि २२७
ज्येष्ठस्य विशं उद्धार	मनु ९.११२	ज्ञातव्यं हि प्रयन्तेन	बृ.या. १.३८
ज्येष्ठा चेद्बहुभार्यस्य	कात्या २०.४	ज्ञातज्ञातेतिरण्डे	लोहि ४३५
ज्येष्ठाद्वितीययोरारत्ततेन	लोहि ९३	ज्ञातिभार्याश्च निखिला	लोहि ४२४
ज्येष्ठायांशोऽधिकोदेयो	नारद १४.१३	ज्ञातिभ्यो द्रविणं दत्त्वा	मनु ३.३१
ज्येष्ठेन जातमात्रेण	मनु ९.१०६	ज्ञातिष्वपि च तुष्टेषु	औ ५.७६
ज्येष्ठेन दत्तपुत्रेण	आं पू ४४१	ज्ञातिसम्बन्धिभिस्त्वेते	मनु ९.२३९
ज्येष्ठेन वा कनिष्ठेन	बृ.य.२.२१	ज्ञाती खलु सगोत्रस्य धनार्थं	कपिल ४९०
ज्येष्ठेन्द्राणाम् भद्राद्या	वृ परा ६.२७३	ज्ञातीनामभ्यनुज्ञा चेत्	लोहि ५१५

ज्ञातो विप्रमुखादाजा सद्यः	लोहि ६३१	ज्ञेया एव न चान्येऽत्र	कण्व ३८४
ज्ञात्वा चानुतिष्ठन्	व १.२	ज्ञेयो बहूदको नाम	वृ परा १२.१६७
ज्ञात्वा तप्प्रीतये सर्वान्	वृ हा ५.२५		
ज्ञात्वा तु निष्कृतिं	पराशर ६.४२	झ	
ज्ञात्वा देशं च कालं च	वृ परा ८.७६	झल्ला मल्ला नटाश्चैव	मनु १२.४५
ज्ञात्वा देशं च कालं च	वृ परा ८.९३	झल्लो मल्लश्च राजन्	मनु १०.२२
ज्ञात्वा पराधं देशाञ्च	या १.३६८	झष प्रेवशे सर्वेषां	वृ परा १०.२७७
ज्ञात्वापराधं मनुजस्य	वृ परा १२.८४	ज्ञात्वादीनांतु विज्ञेया	कपिल १६०
ज्ञात्वायोपास्तिमाचरेत्	भार ६.१५२		
ज्ञात्वा विप्रस्त्वहोरात्र	पराशर ११.१३	ट	
ज्ञात्वैताननूते दोषान्	नारद २.१९८	टिट्ठिभं जालपादं च	सर्वत १४६
ज्ञात्वैतानि शुचिकथ्यानि	भार ९.६		
ज्ञानकर्मसमायोगात्	बृह ९.२८	ड	
ज्ञानतीर्थन्तपस्तीर्थ	बृ.गौ.२०.१८	डामरे समरे वापि	पराशर १०.१७
ज्ञाननिष्ठा द्विदाः केचित्	मनु ३.१३४	डिम्बाहवहतानां च	मनु ५.९५
ज्ञाननिष्ठेषु काव्यानि	मनु ३.१३५	डो (दो) लोत्सवोऽपि	कण्व ६६५
ज्ञानमम्यस्यमानं तु	वृ परा १२.३३४		
ज्ञानयोगफलेनाय	वृ परा १२.१९७	ण	
ज्ञानयोगे त्रिषाष्टिर्वो	वृ परा १२.२७२	णकारो बलमित्युक्तः	वृ हा ३.२०८
ज्ञान वैराग्य संपन्न	वृ हा २.६	णकारश्च षकारश्च	वृ हा ३.२९५
ज्ञानं एव तथायुः च	वृ. गौ. ६.१९	त	
ज्ञानं तपोग्निराहारो	मनु ५.१०५	त एते किल सर्वेऽपि	आंपू १०५४
ज्ञान धनमरोगित्व	वृ परा ४.१८९	त एतेद्वादशादित्याः सर्व	भार ११.५९
ज्ञान प्रधानं न तु	बृह ९.२९	त एते निखिलाः पुत्राः	लोहि १९८
ज्ञानं भवति विज्ञानात्	शाण्डि ४.२१२	त एते शुभदेवाः स्यु	कण्व ६७६
ज्ञानं विद्याश्च सकलं	भार १२.४७	त एव पिण्डाः पितर	आंपू ८६४
ज्ञानेन येन विज्ञानुज्ञान	वृ परा १२.३३३	त एवं सृजते लोकान्	विष्णु म २२
ज्ञानेऽज्ञानतो वाऽपि	आंपू ५४४	त एव हि त्रयो लोकास्त	मनु २.२३०
ज्ञानेनैव तु वक्तव्यं	ब्र.या. ८.१३५	तकारादियकारान्तैः चतुर्विंशति विश्वा	२.४
ज्ञानेनैवापरे विज्ञो	मनु ४.२४	तक्षणं दारुश्रृंगास्थनां	या १.१८५
ज्ञानोत्कर्षश्च तस्य	ल हा ४.७६	तच्चक्षुश्च ऋचां जप्त्वा	ब्र.या. ८.३३६
ज्ञानोत्कृष्टाय देयानि	मनु ३.१३२	तच्चर्याज्ञाननिष्ठाद्याः सर्व	लोहि ५९४
ज्ञापितं शूद्रगेहे नं	वृ परा ८.३२८	तच्च पञ्चशताब्दानामे	आंपू २८२
ज्ञेऽज्ञे प्रकृतो चैव	या ३.१५४	तच्च श्रुतिविरोधत्वान्न	वृ हा ३.७३
ज्ञेयं धारण्यकमहं	या ३.११०	तच्चापि वैष्णवं धाम	आंपू ९१३
		तच्चेदन्तः पुनरापते	व १.४.२२
		तच्चैतच्चद्वयग्राह्य	कपलि ३६९

तच्छब्देन तु यच्छब्दो	बृह ९.४१	तण्डुलं गरलं ज्ञेयं तुल्यं	विश्वा ८.१४
तच्छयोरनुवाकेन शांत्यर्थ	आश्व १.४८	तण्डुलानवहंस्त्रीस्त्रीन्	आश्व २.३५
तच्छवं केवलं स्पृष्ट्वा	संवर्त १७४	तण्डुलान् प्रकिरेदेखा	आश्व २.५
तच्छान्तं निर्मलं शुद्ध	वृ परा १२.२५९	तण्डुलांभःकरणं तद्वद्	शाण्डि ३.९७
तच्छान्तिस्तेन नान्येन	आंपू १९०	तण्डुलान् सफलान्	आश्व १०.३८
तच्छाश्वत ब्रह्मलोका	कपिल ९३२	तण्डुला ब्रीहयश्चैव	व्या ३१४
तच्छास्त्रमेव सच्छात्र	शाण्डि १.५०	तण्डुलाः सहरिद्रास्तु	वृ हा ८.४९
तच्छुद्ध ज्योतिषां	वृ परा ४.३५	तण्डुलोपरि संस्थाप्य	व २.७.६३
तच्छुद्धं ज्योतिषां	वृ परा ४.१३३	तत आचमनं दद्यादनु	ब्र.या. ४.१०८
तच्छुद्ध्यर्थ रसायां	आंपू २२०	तत आचम्य विधिवद्	शाण्डि २.४६
तच्छुल्वनेत्रिवलया	भार १५.७८	ततः आरम्भ षण्मासं	आश्व १२.१६
तच्छूद्राणां विधि प्रोक्तो	वृ हा २.४४	तत उदकं समादाय	ब्र.या. ८.२४७
तच्छेदपापशुद्ध्यर्थ	भार १६.४७	तत एकं समुद्दिश्य	कपिल १०१
तच्छेषतिलदर्भैस्तु पूर्वं	आंपू ७१९	ततः करुणया दृष्ट्या	नारा ४.८
तच्छौर्यकृत्यमित्येव निश्चित	लोहि २५८	ततः कर्तारो यजमानः	बौधा १.७.१६
तच्छास्त्रदेवतानां वा श्राद्ध	लोहि ३४०	ततः कर्त्ताऽर्चयेदेनं	आश्व १५.१५
तच्छास्त्र भवतीत्या	आंपू ४१	ततः कलशमादाय	वृ हा ८.११
तच्छ्रावणं परान्नं	वृ हा ६.२०५	ततः कलियुगे प्राप्ते पादे	नारा १.६
तच्छ्रुत्वा ऋषिवाक्यन्तु	पराशर १.३	ततः कालावर्तीर्णाश्च	वृ.गौ. ७.८१
तजश्च मायावी	ब्र.या. ८.१५४	ततः कृत्वा इदं कर्म	वृ परा ११.३१०
तज्जनस्यापराधित्व	वृ हा ८.१५६	ततः क्रुद्धो जगन्नाथ	वृ हा ८.१८३
तज्जपेन्मूलमनुभि प्राणायाम	विश्वा ३.४४	ततः च अपि च्युतः कालात्	वृ.गौ. ६.६१
तज्जातानां परं तत्तु	कण्व २७३	ततः च अपि च्युतः	वृ.गौ. ६.८२
तज्जातिनालं तस्य	भार १५.३६	ततः च मुक्ताः कालेन	वृ.गौ. ५.५३
तज्ज्ञातिप्रार्थनापूर्वं व्यूहयित्वा	कपिल ३९१	त तद्यदेतद्धर्मशास्त्र	व १.२४.७
तज्ज्ञात्वा परमं तत्त्वं	वृ परा ६.९७	ततः ते वासुदेवेन दृष्टाः	वृ.गौ. १२.११
तज्ज्ञानमात्रे विकलो	कण्व २६०	ततः पंचामृतैः गव्यैः	वृ हा ८.२८
तडागकूपगर्ते तु	दा १५६	ततः परं च पिण्डेषु	कण्व ७७२
तडागपालिपष्ठे तु	वृ परा ११.२१२	ततः परं न कर्मार्हः कृतं	नारा ३.८
तडागभेदकं हन्यादप्सु	मनु ९.२७९	ततः पात्र समादाय	वृ.गौ. १६.१७
तडागसेतुं यो भिन्द्यात्	वृ हा ४.२१०	ततः पितामहाश्चैव तथैव	वृ.गौ. १०.२०
तडागस्यापि शुद्ध्यर्थ	वृ हा ६.३९२	ततः पितृभ्योदातव्य	व २.६.१८९
तडागादि निपानानां	वृ परा ११.२०७	ततः पीठस्य नैऋत्यां	भार ११.३३
तडागान्युदपानानि	मनु ८.२४८	ततः पुनश्च संकल्प्य	कण्व ६६०
तण्डुलानामुत्सर्ग	बौधा १.६.४६	ततः पुराणाह संकल्पं	भार ७.५८

ततः पुष्पांजलिं दत्त्वा	भार ११.९५	ततश्चापि च्युतः कालादिह	वृ.गौ. ६.१४०
ततः पुष्पांजलिं दत्त्वा	वृ हा २.१०२	ततश्चापि च्युतः कालादिह	वृ.गौ. ७.८५
ततः पुष्पांजलि दद्या	भार ११.११७	ततश्चापि च्युतः कालादिह	वृ.गौ. १७.३९
ततः पूर्णाहुतिं हुत्वा	कात्या ८.१०	ततश्चापि च्युतः कालादिह	वृ.गौ. १७.४४
ततः पूर्वाग्रदग्नेषु	वृ परा २.१७६	ततश्चापि च्युतः कालादिहं	वृ.गौ. १९.१५
ततः पूर्वादि दिक्षादौ	भार ११.५१	ततश्चापि च्युतः कालादिहं	वृ.गौ. १९.२३
ततः पूर्वोक्तहोमैश्च प्राच्यो	नारा ३.१६	ततश्चापि च्युतः कालादिहं	वृ.गौ. १७.१५
ततः प्रक्षालयेत् पादौ	ल हा ४.३४	ततश्चापि च्युतः कालान्	वृ.गौ. १७.९
ततः प्रक्षाल्य पादौ द्वौ	वृ.गौ. ८.४२	ततश्चालोकयेदकं हंसः	वृ.गौ. ८.५२
ततः प्रणम्य गोविन्दं	वृ.गौ. २२.४३	ततश्चावसथं प्राप्य	ल हा ४.२०
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	व २.७.१०३	ततश्चैव महानाम्नि	आश्व १८.२
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	वृ हा २.१७	ततश्चैवापसव्येन मधु	आश्व २३.६२
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	वृ हा २.११७	ततश्चैवाभ्यसेद्वेदं	आश्व १.७३
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा	भार ७.९६	ततः श्राद्धेषु के मंत्रा	प्रजा ९
ततः प्रदक्षिणं भक्त्या	भार ११.११५	ततः श्राद्धैकसाद् गुण्य	आंपू ८९३
ततः प्रधानं होमञ्च	व २.३.५६	ततः संस्तीर्य तत् स्थाने	औ ५.४७
ततः प्रभृति देवेशं	वृ हा २.१५१	ततः संस्तूय तान्	आश्व २३.११
ततः प्रभृति पुत्रादौ	ल हा ६.५	ततः संकल्पयेत्प्रातः	भार ६.४२
ततः प्रयाति सविता	ल हा ४.१५	ततः स जडतां प्राप्त	शाण्डि ४.१.७२
ततः प्रविश्य भवन	व्यास ३.२७	ततः सद्भक्तितोदद्याद्	भार ७.९७
ततः प्रसन्नवदने गायत्र्या	भार ११.११८	ततः स धर्मविद्विप्रः	ब्र.या .२.२०४
ततः या (प्रा) णस्य संतु	भार ४.२९	ततः संतर्पयेद्देवानृषीन्	वृ.या. ७.६१
ततः प्राणाद्याहुतयो	वृ हा ८.५३	ततः सन्तर्पयैद्देवान्	स व्यास २.३५
ततः शक्ततरा पश्चाद	कात्या ८.८	ततः सन्तुष्टमनसा	वृ परा १.११
ततः शिरःप्रदेशे तु प्राच्या	नारा ५.४२	ततः संख्यां प्रकुर्वीतं	कण्व १६८
ततः शिष्याहेतार्थाय	ल हा ४.२१	ततः संध्यामुपासीत	ल व्यास २.८६
ततः शुक्लाम्बरधरः	या १.२९२	ततः सन्ध्यामुपासीत	ल हा ४.६८
ततः शुद्धिमवाप्नोति	पराशर १२.७०	ततः सन्निधिमन्त्रेण	पराशर १२.४८
ततः शौचं ततः पानं	बौधा १.४.२०	ततः सप्रणवां सव्याहृति	शंख १२.८
ततश्च मुक्तः पापेन	वृ.गौ. ९.१५	ततः समर्चयेत्ताक्ष्यं	वृ हा ७.१७७
ततश्चाऽऽग्नेय पर्यन्तं	आश्व २.५१	ततः समस्तनिर्माल्यं	भार ११.८०
ततश्चापि च्युतः काला	वृ.गौ. १७.५३	ततः संमार्जनं कृत्वा	वृ हा ६.९७
ततश्चापि च्युतः कालात्	वृ.गौ. १७.२८	ततः सपुष्पहस्तेन दक्षिणे	भार ११.१०२
ततश्चापि च्युतः कालात्	वृ.गौ. १७.४८	ततः सम्पूजयेद्देवं	व २.६.२२०
ततश्चापि च्युतः कालादिह	वृ.गौ. ६.१३८	ततः संपूजयेद्देवं	वृ हा ५.१२१

ततः सम्पूजयेद्धरिम्	व २.६.२४७	ततः स्विष्टकृतं कृत्वा	आश्व १४.८
ततः सर्वप्रयत्नेन प्राणायामं	विश्वा ५.४०	ततः स्विष्टकृतं हुत्वा	आश्व ११.७
ततः स वासुदेवेति	वृ हा ३.१.७३	ततः स्विष्टकृतं हुत्वा	व २.४.८६
ततः सव्यं करं न्यस्य	वृ परा ७.१.८३	ततः स्विष्टकृतं हुत्वा	व २.६.३८६
ततः साक्षात्पुष्पाणि	भार ११.७७	ततः स्विष्टकृतं हुत्वा	वृ हा ८.७२
ततः सूतकनिवृत्यर्थं	व २.२.५	ततः स्विष्टकृतादीनि	व २.६.४११
ततस्तज्ज्वलमादाय पात्रेण	भार ११.२२	ततः स्विष्ट कृताहीति	व २.३ ७५
ततस्तथा स तेनोक्तो	मनु १.६०	ततः स्विष्टकृदादि	आश्व ४.१५
ततस्तदूर्ध्वतस्योर्ध्वरेज	भार ११.४१	ततः स्विष्टकृदादि	आश्व १५.४७
ततस्तदैव गायत्रिं	भार ७.११	ततः स्विष्टकृदादि	आश्व ३.८
ततस्तद्धारिकूर्चैः समं	भार ११.२३	ततः स्वैर विहारी	या १.३२९
ततस्तन्मध्यस्थाने	भार ११.३९	ततोऽर्कमंडले विष्णुं	व २.३.५
ततस्तान् परुषोऽभ्येत्य	या ३.१.९४	ततोऽग्निस्थापनं	व २.६.४०६
ततस्तीरं समासाद्य	ल हा ४.२९	ततोऽग्नौ करणं कुर्याद्	विश्वा ८.६०
ततस्तीर्थं समासाद्य	वृ.गौ. ८.२७	ततोऽतिथिं भोजयेत्	व १.११.५
ततस्तुक्रमयोगेनपित्र्य	ब्र.या. ४.७४	ततोऽधिको यज्ञदत्त	आंपू ३३२
ततस्तु तर्पयेदद्भिः	वृ.गौ. ८.५३	ततोऽधीमीत एकाग्रं	औ ३.४९
ततस्तु दक्षिणां दद्यात्	ब्र.या. ४.१३६	ततोऽनुपहतैः रौतैः	भार १८.३३
ततस्तु देवताः स्थाप्य	ब्र.या. १०.९९	ततोऽन्तर्मातृकान्यासं	विश्वा ६.४३
ततस्तु दद्वहिर्देशे रुद्रा	भाग ११.५३	ततोऽन्नं बहुसंस्कारं	औ ५.१९
ततस्तु वाससी शुक्ले	वृ परा ११.२९	ततोऽन्नसाधनं कृत्वा	व्यास २.२८
ततस्तु हव्यमानाग्निं	वृ.गौ. ८.५९	ततोऽन्यथा राजामंत्रिभि	व १ १६.१८
ततःस्तुप्तान् द्विजान्	वृ परा ७.२६२	ततोऽन्यदन्नमादाय	व्यास ३.३५
ततस्ते ऋषयः सर्वे	पराशर १.५	ततोऽन्यमुत्सृजेद्	औ ५.६८
ततस्ते प्रणिपातेन दृष्ट्वा	आंड २.९	ततोऽपि कृतया मौञ्ज्या	कपिल ८९७
ततस्तैरभ्युनुज्ञातो	औ ५.४५	ततोऽपिद्विगुणस्तस्मात्	लोहि ५०६
ततः स्नात्वा विधानेन	वृ हा २.१०७	ततोऽभिवादयेत्तृद्धा	ब्र.या.८.५८
ततः स्नानत्रयं कुर्यात्	विश्वा १.७८	ततोऽभिवादयेद् वृद्ध	या १.२६
ततः स्यन्दनमानीय	वृ हा ६.२५	ततोऽभिवाद्य स्थविरान्	व्यास १.२६
ततः स्वगृहमागच्छे द्वाग्यतो	व २ ६.१.४९	ततोऽभिषिञ्चेन्मन्त्रैस्तु	बृ.या. ७.१८
ततः स्वपेद्यथाकामं	आश्व १.१८५	ततोऽभिषेचनं कुर्याद्	ब्र.या.८.११२
ततः स्वमालयं गच्छेद्भार्य	व २. ४.७१	ततोऽभिषेचनं कुर्यान्मन्त्र	ब्र.या. ८.११०
ततः स्वयं च नित्यं	आंपू २०९	ततोऽभिषिञ्चेदाचार्यो	शाता ६.२६
ततः स्वयम्भूः भगवान्	मनु १.६	ततोऽअम्भिस निमग्नः	शंख ९.१२
ततः स्वर्गफलान् भुक्त्वा	भार १२.५९	ततोऽम्भिस निमग्नस्तु	ब्र.या. २.२३

ततोऽर्ध्यं मानवे दद्यान्	ब्र.या. २. ११२	ततो नारायण वलि कर्त्तव्यः	शाता ६.२७
ततोऽर्ध्यं मानवे दद्यात्	लता ४.५३	ततो निघृष्य गात्राणि	वृ.या. ७.१६
ततो लब्ध्वा शनैः संज्ञाम्	वृ.गौ. ५.६०	ततो निवृत्ते मध्याह्ने	औ ५.२०
ततोऽल्पेनापि सददव्य	लोहि ४०५	ततो निवृत्य तत्पात्रं	ल हा ६.१४
ततोऽवतीर्णं कालेन	वृ.गौ. ७.११९	ततो निष्कल्मषीभूता	या ३.२१८
ततोऽवतीर्णं कालेन	वृ.गौ. ६.१४६	ततोऽनुपहतैर्गव्यैः प्यंच	भार ११.८१
ततोऽवतीर्णो जायेत	वृ.गौ. १७.३१	ततो नैवाचरेत् कर्माण्य	ल व्यास १.६
ततोऽस्य स्रवति प्रज्ञा	शाण्डि ५.७२	ततो ब्रह्म समभ्यर्च्य	ब्र.या. २.१०८
ततोऽहमखिलं वक्ष्मे	ब्र.या. १.५	ततो भद्रासने शिष्य	वृ हा ८.२४९
ततोऽहि ग्रसते प्रेत्य	औ ४.१८	ततो भ्रातृजले कुर्व	भारं ११.१९
ततो गङ्गाजले स्नात्वा	नारा ९.११	ततो भुक्तवतां तेषां	औ ५.७०
ततो गंधाक्तपुष्पेन	भार ११.३२	ततो भुक्तवतां तेषां	मनु ३.२५३
ततो जपेत् पवित्राणि	शंख १०.२०	ततो मध्याह्नकालो वै	वृ.गौ. १६.१६
ततो जयादीन्जुहुयात्	भार ७.९५	ततो मध्याह्नसमये	व्यास २.९
ततो ज्येष्ठस्य चेत्	आंपू ४०७	ततो मध्याह्निकं स्नान	आश्व २३.४
ततोऽत्थाप्य तु	ब्र.या. ८.२५९	ततो मांसं प्रवक्ष्यामि	ब्र.या. ४.१५३
ततो दंडनमस्कारं कुर्वीत	भार ७.९८	ततो मातामहानां च	ब्र. या. ६.९
ततो दद्याद्यथाशक्ति	शाता २.१०	ततो मातामहानां च	व २ ६ ३०९
ततो दर्भासनं दद्यादेवेभ्यः	वृ परा ७.१७७	ततो मातामहानां च	आंपू ६६५
ततो दानञ्च शिष्येभ्यो	दक्ष २.२७	ततो मातामहानाञ्च	औ ५.९६
ततो दुर्गं च राष्ट्रं च	मनु ७.२९	ततो माला शिरोग्रथि	भार ७.४७
ततो देवगणाः सर्वे	वृ परा २.८०	ततो मौनी जपेन्मंत्र	वृ हा ७.३१
ततो देवगणाः सर्वे	वृ.गौ. ६.१४	ततो लोकावतीर्णश्च	वृ.गौ. ७.९७
ततो देवं नमस्कृत्य	ल हा ४.५४	ततो वलोकयेदर्कं हंसः	वृ.या. ७.१००
ततो देवं समाहूय	ब्र.या. २. १२३	ततो वस्त्रं ब्रह्मसूत्र	भार ११.९७
ततो देवलकश्च व	यम ३३	ततो वहिस्थले धीमान्	भार ११.६१
ततो देवस्य पुरतो	व २.३.४१	ततो वह्निं तु संस्थाप्य	ब्र.या. १०.४०
ततो द्वादशकृत्वस्तु	वृ.गौ. ८.४८	ततो वह्निं तु संस्थाप्य	ब्र.या. ११.३८
ततो द्वितीयासंभूतः	लोहि ८८	ततो विंशतिसंख्याकान्	नारा ५.४१
ततो धूपं ततो दीपं	भारं ११.९९	ततो विद्यासंहितायां	व २ ४.२३
ततो धैर्यं समालम्ब्य	नारा ४.९	ततो विप्रान् समभ्यर्च्य	आश्व १.१४८
ततो ध्येयः स्थितो	या ३.२०१	ततो विप्रास्तथैवेति	आश्व २३.९९
ततो नदीं समागम्य गङ्गा	विश्वा १.६४	ततो विभवसारेण	आश्व ८.५
ततो नानाविधैः पुष्पैः	भार ११.९८	ततो वृश्चिकसंप्राप्ते	अत्रिस ३६०
ततो नारायणं देवं	ल हा ४.३१	ततो वेदमधीयीत श्रोत	भार १५.७

ततोहरिदयालिप्य शुद्ध	भार ११.९०	तत्क्रान्ति युग्मश्राद्धा	आंपू ६५५
ततो हैमवते वर्षे जायते	वृ.गौ. १७.३५	तत्क्रियाकरणे तत्तु न	आंपू २३
ततो होमं प्रकुर्वीत	विश्वा ८.७१	तत्क्रियामथ कुर्वीत	आंपू २४
ततो होमे कृते तावन्	लोहि ३२	तत्क्रिया मन्त्रपूर्वैव	आंपू ४८०
तत्कर्तव्यत्वेन कुर्यात्कर्म	लोहि ४३०	तत्छुभ्रं ज्योतिषां	बृ. या. ५.७
तत्कर्तव्यत्वेन नान्यः	लोहि ४३१	तत् तत्कर्मणि तन्मंत्र	वृ हा ७.७३
तत्कर्तव्यं यत्र कुत्र	लोहि ३५७	तत्तत्कर्मनुरूपेण चा	भार १८.५५
तत् कर्तव्यं हि सर्वेषां	वृ हा २.४	तत्तत्कलशपात्रेषु गंध	भार ७.७४
तत्कर्मणः फलस्यार्द्धं	वृ.गौ. १२.१८	तत्तत्कार्यानुगुण्येन व्याहृतीनां कपिल ९९१	
तत्कर्मणः सर्वकर्मजालं	कण्व २९०	तत्तत्कालानुगुण्येन	नारा २.३
तत्कर्मयोग्यो नैवस्याद्य	कपिल ७६०	तत् तत्काले तु तन्मूर्ते	वृ हा ५.३०८
तत्कलत्रस्य तत्पुत्र	कण्व ७८४	तत्तत्कालेषु विधिवच्छ्राद्ध	आंपू १०९
तत्कलत्रादिजनताप्रद्वेषः	लोहि ४६८	तत्तत्कालेषु संप्राप्त	लोहि १२९
तत्कलावृद्धिजनकं सा	आंपू ११०२	तत्तत्कालोचितं विष्णो	वृ हा ७.३१४
तत्कांक्षितयश्चश्रूण्यात्	कपिल २३९	तत तत्कालोचित सर्व	वृहा ५.५६७
तत्कारणं हि गायत्री	कण्व २०३	तत्तत्कुलप्रसूतानां बिना	लोहि ४७८
तत्कार्यत्रयौ दुर्बोधम्	कपिल ५२२	तत्त्रिपादं प्रयोक्तव्य	विश्वा ५.१७
तत्कार्यमखिलं कुर्यात्तेन	लोहि ४२९	तत्तत्समो दुर्बलोऽयं	कपिल ४७८
तत्काल कृतमूल्ये	वृ हा ४.२३६	तत्तत्स्ववृत्तिषु परं कर्तारो	कपिल ४६७
तत्काल कृतमूल्यो	या २.६४	तत्तद्व्यैहोतव्य मित्य	व २.७.७८
तत्कालं भक्षणावृत्तिर्न	आंपू २९६	तत्तद्वेदी जपेदभक्त्या	कण्व २५८
तत्कालसम्भवं पुष्प	वृ हा ४.५८	तत्तनाम शिशोस्त्रिस्त्रि	आश्व ६.७
तत्कालाजीर्णराहित्ये	आंपू २८९	तत् तन् मंत्रान् जपेद्दिक्षु	वृ हा ६.५४
तत्काष्ठपत्रकुसुमशलाटु	आंपू ५४९	तत् तन्मूर्तिपृथक् ध्यात्वा	वृ हा ७.१०८
तत्किंचिद्विगुणीभूयात्	आंपू ८०४	तत्तन्मूलं विनामन्त्रं	विश्वा ३.५८
तत्कुलं वैष्णवै तस्य	व २.६.४२६	तत् तत् पात्रेषु सलिलं	वृ हा ८.१७
तत्कुलं सत्कुलैस्साम्यं	कपिल ११७	तत्तत्फलप्रसिद्धयर्थ	भार १९.१७
तत्कृता दुष्क्रियासर्वा	लोहि ६०५	तत् तत्प्रकाशकैः मंत्रै	वृ हा ६.४२९
तत्कृतेन तु पाकेन यो मोहाज्कपिल ५४०		तत्तादृशं कर्म तस्माद्	कण्व ३०२
तत्कृत्वा तूक्तदिवसै	वृ परा ८.५५	तत्तालुनि निविष्टं	बृ.या. ४.२३
तत्कृत्वा स्वगृहं	वृ परा ५.१८३	तत्तु प्रयत्नसाध्यं	कण्व १६६
तत्कोष्ठपूरणे यावत्ताव	लोहि ६३	तत्तुरीय्याख्यमादेशकाले	कपिल १५१
तत्कौपीनमिति प्रोक्तं	भार १५.११५	तत्तु वित्तमहं मन्ये	दक्ष २.३५
तत्क्रमं च प्रवक्ष्यामि	कण्व ७८१	तत्तोयपीतजीर्णागः	वृ परा ८.२१६
तत्क्रमाच्चापि वक्ष्यामि	कण्व ६८८	तत् तोयं सर्वदानानाम्	वृ .गौ. ६.१४

तत्त्वं तस्यास्तु विज्ञायं	आंपू २१४	तत्पुण्यं समनुप्राप्तो	वृ.गौ. ६.१६६
तत्त्वस्मृतेरुपस्थानात्	या ३.१६०	तत्पुत्रपौत्रपर्यन्तं तस्य	कपिल ३५९
तत्त्वानि नत्र वै देवे	बृह ९.१७६	तत्पुनर्द्वादशाविधं	नारद २.४६
तत्त्वावमानी मुनिभिः	वृ हा ७.२२२	तत्पुनास्त्रिविधं ज्ञेयं शुक्ल	नारद २.४०
तत्पञ्चमेऽथ दिवसे	आंपू ९१	तत् पुनस्त्रिविधं ज्ञेयं	नारद १५.२
तत्पत्यपि तकीत्पाला	कपिल २१७	तत्पूर्वसंध्या ब्राह्मी	भार ६.६
तत्पत्राणि पवित्राणि	आंपू ५६०	तत्पैतृकमहासङ्गसौख्य	आंपू ६६४
तत् पथं ते सुखं यान्ति	वृ.गौ. ५.११७	तत् प्रकृति स स्वातं	वृ परा ४.७१
तत्पदं च पदातीतं	वृ परा १२.२९२	तत्तत्प्रक्षालनतोयेन	व २.३.५४
तत्पदं विदितं येन स	वृ परा ६.९४	तत्प्रतिष्ठत स्मृतो धर्मो	नारद १.७०
तत्पदं समवाप्नोति	वृ हा ३.३६८	ततः प्रभातसमये	वृ हा ५.४९२
तत्पद्यस्यवहिदेव्या	भार ११.१४	ततः प्रभृति यो मोहात्	मनु ९.६८
तत्परं देवताभ्यस्तु	विश्वा ८.५५	तत्प्रवक्ष्यस्तु संदिग्धं	ब्र.या. ११.६
तत्परं निष्फलं ज्ञानं	वृ परा १२.२४४	तत्प्रसूतिप्रजननयोग्यता	कपिल ६०२
तत्परं प्रातरेव स्यादि	आंपू १७८	तत्प्रसूतिप्रजननयोग्यता	कपिल ६०३
तत्पश्चाद्या कुलीना वा	आंपू ४४८	तत्प्राचीमध्यमं प्रोक्तं	भार २.७२
तत्पाणिष्वक्षतान् दत्त्वा	आश्व २३.८८	तत्प्राज्ञेन विनीतेन	मनु ९.४१
तत्पात्रक्षालनं कृत्वा	वृ हा ४.७७	तत्प्रार्थितप्रदानस्य	लोहि २०४
तत्पादतीर्थसेवा च	व २. ३१	तत्प्राश्चोयेद्विधानेन तेनासौ	कपिल ३२७
तत्पादं संवत्सरं	कण्व २४	तत्प्रेष्यत्वेन कुर्वीत	आंपू १३४
तत्पाद वन्दनंचैव	वृ हा ५.७८	तत्फलं लभते मर्त्यो	वृ हा ५.५३४
तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं	नारा १.२४	तत् भात्साण्डाम्यां	व १.२.३७
तत्पित्रोरेव पत्न्याश्चत्	कपिल १३३	तत्र अम्बष्ठोग्रसंयोगे	बौधा १.९.१०
तत्त पुण्यफलम् आदाय	वृ.गौ. ६.३९	तत्र एव पतिताः पापाः	वृ.गौ. ५.५२
तत्पुण्यफलमाप्नोति	वृ.गौ. ६.१६३	तत्र काम्यं तु कर्तव्यं	शंख ८.८
तत्पुण्यफलमाप्नोति	वृ.गौ. ७.६३	तत्र च सूर्याभ्युदित	व १.२०.४
तत्पुण्यफलमाप्नोति	वृ.गौ. ७.७१	तत्रचामरवादित्र भृंगारे	वृ हा ६.५२
तत्पुण्यफलमाप्नोति	वृ.गौ. १७.१४	तत्र चेत् ब्राह्ममेधाद्या	कपिल ६६३
तत्पुण्यफलमासाद्य	वृ.गौ. १७.३८	तत्र चैतासु या क्रूराः	आंपू ५८५
तत्पुण्यफलमासाद्य	वृ.गौ. १७.४३	तत्र च्युतश्चतुर्वेदी	वृ.गौ. १७.२४
तत्पुण्यफलमासाद्य	वृ.गौ. १७.५७	तत्र जागरणं कुर्याद्	वृ हा ५.१३३
तत्पुण्यफलमासाद्य	वृ.गौ. ७.१२	तत्र जाम्बूनदमये विमाने	वृ.गौ. ७.१२६
तत् पुण्यम् अखिलं प्राप्यं	वृ.गौ. ६.३६	तत्र तत् परमं धाम्	बृह ९.९९
तत् पुण्यफलम् आप्नोति	वृ.गौ. ६.३४	तत्र तत्र च गच्छामः	कपिल ८६५
तत्पुण्यं समनुप्राप्त	वृ.गौ. ६.१४८	तत्र तत्र च निष्णातान्	या १.३२२

तत्र तत्र तिलैर्होमो	बृ.या. ४.५७	तत्र रत्नमयं पीठं	वृ हा ३.२२२
तत्र तत्र देशप्रामाण्यमेव	बौधा १.१.२४	तत्र वह्निं प्रतिष्ठाप्य	वृ हा ७.३५
तत्र तत्र यजेदिष्टिं	वृ हा ६.४१७	तत्र वेदी प्रकुर्वीत	वृ परा ११.२४७
तत्रत्यानां च सर्वेषां	कण्व ६६४	तत्र शक्रपुरे रम्ये शक्र	वृ.गौ. ७.४०
तत्रदानं प्रकुर्वीत	व २.२.४	तत्र शिष्टं छलं राजा	नारद १.२५
तत्र दिव्याप्सरोभि	तु वृ.गौ. २.२५	तत्र संस्थापयेदग्नि	व २.३.१४५
तत्र दिव्याङ्गनाभिस्तु	वृ.गौ. ७.८७	तत्र सङ्कल्पना	ब्र.या. ५.१२
तत्र दिव्याङ्गनाभिस्तु	वृ.गौ. ६.९२	तत्र सङ्कल्पना श्राद्ध	ब्र.या. ५.१५
तत्र दिव्याप्सरोभिस्तु	वृ.गौ. ७.५३	तत्र सत्ये स्थितो धर्मो	नारद १.११
तत्र दिव्याप्सरोभिस्तु	वृ.गौ. ७.८०	तत्र सदो ब्राह्मणस्य	व १.३०.४
तत्र दिव्याप्सरोभिस्तु	वृ.गौ. ७.९०	तत्र सर्वगुणोपेतः	वृ.गौ. ७.११८
तत्र दुर्गात्सवं कुर्यात्पूजाथेषु	ब्र.या. ९.४८	तत्र सर्वत्र सततं प्रथमाग्नौ	लोहि २८
तत्र दुर्मिश्ररोगादिभयं	वृ हा ५.३३१	तत्र सवर्णासु सवर्णा	बौधा १.९२
तत्र देशाखिलाना	कण्व १९	तत्र सायमतिक्रमे	बौधा २.४.२१
तत्र द्वादशसंख्यानि मासि	कपिल १५५	तत्रस्थं च शुभं वर्ण	बृह ९.१३१
तत्र ध्यानादि स्मरणयोः	कण्व ८०	तत्रस्थं भावयेद्देवं	शाण्डि ४.२२
तत्र ध्याने तु संलग्ने	वृ परा १२.३०४	तत्र स्थितः प्रजाः सर्वाः	मनु ७.१.४६
तत्र निक्षिप्य तच्चाहम्भस्त	आंपू ७९५	तत्रस्थित घनरसं	भार १५.१५४
तत्र नैमित्तिकं कार्यं	वृ परा ७.१०३	तत्र स्नात्वा निवृत्तेभ्यः	औ ५.२२
तत्र पक्षे यतीनां तु	आंपू ७०९	तत्र स्नानं विधानेन	व २.३ १४२
तत्रपत्न्यनुवाकेयाः	कण्व ३८७	तत्रस्यै ब्राह्मणैरेवानु	वृ हा ६.२२७
तत्र पाकं वितांते तु	व २.४.८८	तत्र स्वादूदकं श्रेष्ठं	भार १४.४०
तत्र पीत्वा जलं विप्रः	वृ परा ८.१८२	तत्रहिंसाफलं पापं	वृ हा ५.९
तत्र पूजा प्रकर्तव्या	आंपू ६८६	तत्रागतेभ्यः सर्वेभ्यो	व २.६.१९०
तत्र पूजा प्रकर्तव्या	वृ परा ११.१४३	तत्राऽऽमवृक्षच्छायायां	वृ हा ७.२७६
तत्र पूर्वश्चतुर्वर्गो	नारद ६.२७	तत्राऽऽराध्य पुनमा तु	वृ हा ८.१८९
तत्र भुक्तानुभुक्त	व १.१६.१४	तत्राज्ञातेति या सेमं न	लोहि ४३६
तत्र भुक्त्वा पुनः	मनु ७.२२५	तत्रात्मभूतै कालज्ञैः	मनु ७.२१९
तत्र भुक्त्वा महान् भोगां	बृ.गौ. १७.५८	तत्रात्मा हि स्वयं किंचित	या ३.६८
तत्र भूयश्चेरत् पूर्णं	वृ हा ६.३०६	तत्रात्मव्यतिरेकेणं	दक्ष ७.५१
तत्र मूलेन मंत्रेण	वृ हा ५.३६७	तत्रादौ ऋग्वेदस्य	ब्र.या. १.९
तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं	मनु १२.२७	तत्रापाकवर्त्येका	लोहि ४०७
तत्र यद् ब्रह्मजन्मास्य	मनु २.१९०	तत्राद्यावत्प्रतीकारौ	नारद १३.१४
तत्र यद्यपि दत्तस्तु शुद्ध	कपिल ३६४	तत्राधुना मेदेवेश	विष्णु १.४६
तत्र ये भोजनीया स्युर्ये	मनु ३.१२४	तत्रापरिवृत्त धान्यं	मनु ८.२३८

तत्रापि कामतः कुर्यात्	वृहा ६.३६५	तत् शुभ एकस्य भागः तु	वृ.गौ ६.३०
तत्रापि कामतस्तेषां	वृ हा ६.३२२	तत् श्रुत्वा वचनं विष्णो	वृ.गौ. ५.५९
तत्रापि कुम्भकं कृत्वा	विश्वा १.९७	तत् श्रुत्वा वै स्तुतः च	वृ.गौ. ४.५४
तत्रापि कामतः स्मृष्ट्वा	वृ हा ६.३५९	तत्षट्कं वत्सरः प्रोक्त	कण्व ४९
तत्रापि किञ्चित् संस्पृष्टं	बौधा १.४.५	तत् षडर्णविधानेन	वृ हा ३.२१४
तत्रापि च द्विजन्मादि	भार १८.८	तत्षष्ठी सप्तमी च	भार १९.३
तत्रापि जैष्ठ्यकानिष्ठ्ये	लोहि ५५	तत्संख्याकैः पुष्पदीपैः	कण्व ६५५
तत्रापि दशसंख्याया	भार ७.१०३	तत्सदद्रव्यं ब्राह्मणस्य	लोहि ३९१
तत्रापि दृष्टं त्रैविध्यं	नारद १६.५	तत्सदभिर्द्विविधं प्रोक्त	वृ परा ६.२१३
तत्रापि दोषदुष्टानि	भार ७.६६	तत् सदमनाथं वृद्धान्वै	वृ परा १२.१४०
तत्रापि परिशुद्धस्य	आंपू १६२	तत्संततौ चतसृणां त्रयाणां	कपिल ३६२
तत्राप्यकामत्स्वर्थ	वृ हा ६.३१२	तत्संततौ ततो घोरं सकटं	कपिल १२२
तत्राप्यराधनात्वेन	वृ हा ५.३६	तत्सन्निधानाद्गौर्याश्च	कण्व ५९४
तत्राप्युच्छिष्टमूत्रासृक्	शाण्डि १.७९	तत्समस्त्वं (त्वौ) रसस्तज्जः	कपिल ७२३
तत्राप्येवं विधानेन	व २.६.२७५	तत्समापनपर्यन्तं न	आंपू ९४
तत्रापि यद्यशक्तश्चेत्सर्व	कण्व १६०	तत्समुत्थो हि लोकस्य	मनु ८.३५३
तत्राप्यज्य विषाणानि	वृ परा ५.१०३	तत्संप्रक्षालयेच्छुद्धै	भार १५.६३
तत्रार्चयेद् विधानेन	वृ हा ५.११५	तत्संबन्धानुसन्धान	शाण्डि ५.१३
तत्रावाह्य जपित्वा	वृ.या. ४.३०	तत्संभूतमहादोष	आंपू १०७०
तत्राष्टाशीतिसाहस्रा	या ३.१८६	तत्सर्वतत्क्षणादेव	वृ.गौ. ६.१६९
तत्रासीनं श्रिया सार्द्धं	व २.६.७३	तत्सर्वं तस्य दोषाय न	कपिल ९७८
तत्रासीनः स्थितो वाऽपि	मनु ८.२	तत् सर्वं तोयदानेन	वृ.गौ. ६.१६
तत्रास्य माता सावित्री	व १२.४	तत्सर्वं नाशमाप्नोति	विश्वा ३.५१
तत्रेहाष्टावदेयानि	नारद ५.३	तत् सर्वं प्रणवेनैव	वृ.या. ७.९६
तत्रेहाष्टावदेयानि	ब्र.या. १२.३	तत्सर्वं प्रीतये तेषां	आंपू १०९५
तत्रैते पातकाः सर्वे	भार १२.३७	तत्सर्वं भगवत्प्रीत्यै	वृ हा ५.२६
तत्रैव क्षितिशायी	संवर्त १३०	तत्सर्वं विष्णुपूजायां	ब्र.या. २.१५४
तत्रैव च द्वयं तूष्णी	ब्र.या. ८.३५२	तत्सर्वं सम्यगाहृत्य	वृ.गौ. १५.८२
तत्रैवांगारकं स्थाप्य	ब्र.या. १०.५६	तत्सर्वं स्थगितैः वस्त्रै	वृ परा १०.१५२
तत्रैव विकिरेत्पात्र	आंपू ८४१	तत्सर्वसुरेन्द्राणां ब्रह्मा	व्या ३९०
तत्रैव विहितोऽयं हि	आंपू ६२८	तत्सर्वमेव कर्तव्यं	औ ५.३५
तत्रैव सकला धर्मा	आंपू १११३	तत्सर्वं तत्क्षणादेव	वृ.गौ. १६.३३
तत्रोत्तानं निपात्यैनं	कात्या २१.९	तत्सवितुर्वीर्यं च	वृह ९.५१
तत्रोभयथाऽप्युदातरांति	व १.१७.७	तत्सवितुः सवितारं	ब्र.या. २.१०९
तत्त्वानिद्य गायत्र्या	भार ७.९२	तत्सवितुर्वृणा महे	व २.३.५८

तत्सहस्रगुणन्यूना	लोहि ५२९	तथा तथैव कार्य्याणि	दक्ष २.५५
तत्सहायश्च सर्वे ते	आंपू १००	तथा ताम्रषष्टिपलं	ब्र.या. ११.१६
तत्सहायानधर्मज्ञान्	लोहि ५४१	तथा ताश्चैव लोकेशा	वृ हा ७.१९८
तत्सहायैरनुगतैः नाना	मनु ९.२६७	तथा तिलप्रदानाद्वै पापं	वृ.गौ. ६.१४९
तत्सान्निध्यस्पर्शमात्रात्	आंपू ४७३	तथात्रिमासेषण्मासे	ब्र.या. ७.२६
तत्साम्यचेतसो यस्माद्	आंपू ५७८	तथा त्रैलोक्य चक्राय	वृ हा ३.१८७
तत्साम्यं तत्रयस्यैव	आंपू ५७९	तथा दास कृतं कार्य	नारद २.२५
तत्सिद्धौ सिद्धि माप्नोति	या २.८	तथा देवानुगान्नागा	ब्र.या. २.९४
तत्सुतः तस्य पौत्रो वा	लोहि ३०२	तथा दोषवृत्तीकन्या	ब्र.या. ८.१५६
तत्सूत्रं त्रिगुणीकृत्य	भार १५.६८	तथा द्वि परिमृज्येति	विश्वा २.५०
तत्सुतः पावयेद् वंशान्	वृ परा ६.२०१	तथा धर्मिमेयानां	मनु ८.३२१
तत्सुतः सिचयेत्पात्र	ब्र.या. ७.१६	तथा धेन्वनडुहौ	व १.१४.३४
तत्स्तोत्रपठनं चैव	व २.३२	तथा न कुर्यात्	व १ १.२६
तत् स्त्रीणां च तथा संग	देवल १९	तथा नांदीमुखंश्राद्ध	व २.६.३०७
तत्स्थाननामगोत्रेण	आंपू ९५५	तथा नित्यं यतेयातां	मनु ९.१०२
तत् स्थानं परमाप्नोति	वृ परा ४.१७२	तथा नित्याश्च मुक्ताश्च	व २.६.३९१
तत्स्पृष्टस्पृष्टिनौ	वृ हा ६.३५१	तथानियुक्तो भार्यायां	नारद १३.८५
तत्स्वामिने दापयेच्च	लोहि ५४८	तथा निवेदितं भूयो	आंपू २३४
तथर्श्यहरिणपृषतमहिष	बौधा १.५.१५३	तथा निवेदितेनापि	कण्व ७६१
तथा कुक्कुटसूकरम्	बौधा १.५.१५०	तथा निष्फलजन्मानि	वृ परा १०.३१५
तथा कृतः तु राजेन्द्रः	वृगौ २.३९	तथानुचेद्धविदत्त्वा	औ ४.१७
तथागतांस्त्यक्तज्ञान्	कण्व ४८१	तथान्यहस्ते विक्रीय	नारद ९.८
तथा घोषः प्रकर्तव्य	आपू ८३४	तथान्ये बहवः प्रोक्ता	ल हा ४.३
तथा चतुर्थकाले तु	ल हा ५.६	तथा पङ्क्तिरभोजी	ब्र.या ७.४३
तथा चर्म तथानंगा दौषा	अत्रि १.९	तथाऽऽपणेर्यानां च	बौधा १.५.७०
तथा च श्रुतयो वह्वयो	मनु ९.१९	तथा पयोदधिग्राह्य	वृ २.६.१८०
तथा चात्मगुणैर्युक्त	बृह १२.३८	तथा पल्लविकं क्रूर	आंपू ७४६
तथा चान्येष्वभोज्येषु	आंउ ९.६	तथा पंचसहस्राणि	वृ परा ११.२५५
तथा चैकशफानां च	वृ परा १०.३२८	तथा पातकिनां चैव	बृ.य. ४.२४
तथात्छादानञ्च	या १.२३२	तथा पिण्डप्रदानस्य	आंपू ८२७
तथा जगदिदं सर्व	बृ.या. २.१४७	तथा पिण्डाश्च वर्धन्ते	वृ.गौ. १६.२८
तथा जातेषु जातं यत्	भार १५.१७	तथाऽपि न परिग्राह्यः पाप	नारा ७.३३
तथा तथा दृढं योगी	शाण्डि ३.४५	तथापि पुरवाक्यानि	वृ गौ १.२३
तथा तथा स तन्निष्ठो	शाण्डि ५.३८	तथापि मनसः शुध्यै	अ ७१
तथा तथा समुत्सृत्य	शाण्डि ४.२१०	तथा पुंसोऽभिगमनं	वृ हा ६.१९३

तथा पुष्पाक्षतञ्चैवाक्ष	ब्र.या. ४.१३१	तथैव क्रियते सर्वैः तेन	कपिल ८२
तथा उप्यसंशयापन्नं	प्रजा ५	तथैव क्षत्रियो वैश्य	पराशर ११.२
तथा भागवतादन्यो	वृ हा ८.३०६	तथैव जुहुयादग्नी	वृ हा ५.३७६
तथा भागवताश्चैव	बृ.गौ. २२.३९	तथैव जुहुयादाज्यं	वृ हा ५.३४५
तथाभिमंत्रणं दिक्षु	भार ११.२५	तथैव ज्ञानकर्मभ्यां	ल हा ७.११
तथा मद्याभरण्योश्च	ब्र.या. ५.१४	तथैव तण्डुलामावे न	लोहि ३५५
तथा महालयश्राद्धे	आंपू ९५३	तथैव तु पुरोडाशं	वृ हा ५.२७४
तथा मांसं च कुल्माषान्	वृ परा ११.२५	तथैव दशमुद्राश्च	वृ हा ५.१४८
तथा यतेत पुरुषो	शाण्डि ५.३९	तथैव धारयेयातां अवश्यं	भार १५.११४
तथारूढविवादस्य प्रेतस्य	नारद २.८०	तथैव पश्चात्कुर्वीतं	आंपू ३९६
तथा वाजसनेयिनः प्रोक्ताः	ब्र. या. ४.१५२	तथैव पादखातं स्यात्	भार १५.३४
तथावाऽऽज्येन होतव्यं	वृ हा ५.२१०	तथैव पैतृके कुर्यात्	कण्व १५१
तथा वामे जपेन् मेधां	आश्व ५.४	तथैव फलजातीनां गोपाले	व २.६.४९४
तथा विदितवेद्यानां	विष्णु १.५८	तथैव ब्रह्महस्तेन	व्या ५३
तथाविधे भद्रपीठे	भार १२.३०	तथैव मन्त्ररत्नेन	व २.६.३८४
तथा विलोममार्गेण	विश्वा ३.४५	तथैव मन्त्रविद्युक्तः शरीरैः	बृ.यं. ३.४१
तथावेधं विजानीयान्न	ब्र.या. ९.३०	तथैव मरणे स्नानमूर्ध्व	औ ६.२३
तथा शास्त्रस्य माहात्म्यं	साण्डि ५.८१	तथैवमवशाद्भृत्वा	लोहि ६७०
तथा शून्यललाटं च	आंपू ६६७	तथैव माघद्वादश्यां	वृ परा १०.३.४५
तथा संघट्टशूर्पादेः	व्या ३५२	तथैव मातृवर्गेऽपि	आंपू ६७२
तथा सत्यपि चैकोऽयं	वृ परा ३.१९	तथैव रामस्मरणाद्	वृ हा ३.२८५
तथा स धर्मं स्मरति	वृ परा १.२१	तथैव वृषलस्यान्नं	अत्रि ५.९
तथा समाहितः कुर्यात्	वृ.गौ. १३.१०	तथैव वैष्णवान्सूक्तान	व २.७.४३
तथा सर्वाणिभूतानि	कात्या १२.४	तथैव सङ्गृहीतो	लोहि २८०
तथा सर्वेषु कालेषु	वृ परा १२.११७	तथैव सप्तमे भक्ते	मनु ११.१६
तथा सव्यकरांगुष्ठं	आश्व १.८५	तथैवसाक्षतं पुष्पं	भार ११.९४
तथा सायमतिक्रामेद्वात्रिं	वाधू १३०	तथैव साम्यासिद्धिस्यात्	कपिल ४०४
तथासूर्यं मूदीक्ष्यै व	ब्र.या.८.२३४	तथैव स्थापयेद्धीमान्	भार ७.७१
तथा स्मृति पुराणानि	कपिल ९४३	तथैव होमं कुर्वीत	वृ हा ५.३५२
तथा स्नानं प्रकर्तव्यं	लोहि ६४३	तथैवाक्षेत्रिणो बीजं	मनु ९.५१
तथास्यापि स्मृतं तूष्णी	लोहि ३०८	तथैवाग्निं समाधाय	आंपू ९७०
तथा स्वाराधनेनैव न	शाण्डि ४.८२	तथैवान्येय होतव्यं	व २.६.१६३
तथा हि तासां सर्वासां	लोहि ४९८	तथैवान्ये प्रणिहिताः	नारद १८.६१
तथैपि पु (न) रन्येऽपि ततः	कपिल ९६	तथैवा भक्ष्यभोक्तृणां	वृ हा ८.१३३
तथैकामपि गां हत्वा	वृ परा ५.१२८	तथैवार्थानुसंधानं	कण्व १९०

तथैवाशौचमित्युक्तं	कण्व ७३४	तदभावे तु बंधुः स्यात्	व २.४.३५
तथैषामुक्तमंत्राणां	भार ६.३६	तदभावे दशावरा	बौधा १.१.७
तथोत्सवे हरिद्राद्यै	व २.६.२७९	तदभावे निषिञ्चेन्तु	वृ.या. ७.७८
तदकृत्वा पितृश्राद्ध	कपिल १८०	तदभावे पिताऽऽचार्यो	बौधा १.५.११७
तदक्षरं सदाध्यायेद्यः	वृ परा ३.२३	तदभावे पितृव्यः स्यात्	व २.४.३४
तदक्षयममोघ स्याद्	कण्व १२	तदभावे राजा तत्त्वं	बौधा १.५.११८
द्वतगतेन्यतप्रगृहणीया	ब्र.या. ४.५०	तदभावेशिलोञ्छेन	व २.६.१२६
तदगोत्रिवीर्यं (र्यं) जेष्वेव	कपिल ९४	तदभ्यासादवाप्नोति	वृ परा १२.३४२
तदग्निरक्षणायैव	कण्व ५४८	तदर्चनं प्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.११७
तदग्निहोत्रं सृष्टं वै	वृ.गौ. १५.४४	तदर्थद्योतनादेतमुदितं	शाण्डि ५.६१
तदग्नौ करणं कुर्यात्	ब्र.या. ४.८१	तदर्थन्यासमुद्गादि	वृ हा ८.२५३
तदग्नौ करणं कुर्यात्	लोहि २०	तदर्थतुगवालम्भं गौरितित्रि	ब्र.या. ८.२१३
तदङ्गतर्पणं कार्यं मृत	आंपू ११०६	तदर्थं प्रणवं जप्यं	बृ.या. २.४५
तदंगभूतया दिव्यं	कण्व ४२३	तदर्थं शिरसा	ब्र.या. ८.२०१
तदङ्गमेवतस्याः स्यात्	कण्व ३८१	तदर्थमधिदातव्यं	व २.३.१८५
तदण्डमभवद्दधैमं	मनु १.९	तदर्थमाचरेद्यस्तु स	वृ हा २.८
तदद्य तव वक्ष्यामि रहस्य	नारा ८.९	तदर्थमथवा कार्यम्	भार १६.२९
तदद्य ते ह सर्वार्थः	वृ. गौ. १.४७	तदलाभे गृहस्थस्तु	औ ४.१०
तद् अल्पं क्षपयेत् विप्रम्	वृगौ २.३६	तदलाभे दधिग्राहाम्	व्या ३११
तदधस्तादधोदिकस्यात्	भार २.५	तदलाभे नियुक्तायां	व ११७.१४
तदधीनं कारयित चिरकालेन	कपिल ३१७	तदलाभे शिष्टाचार	व १.१.४
तदधीनो यतो वह्निस्तथा	लोहि ४१	तदवश्यकृत्येषु कर्तव्य	आंपू २६२
तदध्यास्योद्वहेद्भार्या	मनु ७.७७	तदवान्तरभेदयज्ञस्त	कण्व २५९
तदनित्यं स वेद्यस्मान्न	अ ७३	तदवाप्य नृपो दण्ड	या १.३५४
तदनेहृणरत्कांग भौमबीजं	ब्र.या. १०.५५	तदवेक्ष्य करे सव्ये	आश्व १५.१०
तदन्ते ब्रह्मभावेन यावदा	भार ६.१६९	तदष्टभागोपयाद्	नारद १२.२२
तदन्यथाकृतं तच्चेत्	आंपू १३३	तदसंसक्तपार्ष्णिर्वा	कात्या ११.१२
तदन्यस्मिन् तादृशे	आंपू ७१३	तदस्पर्शीपितुं यद्वत्प्रास्या	कपिल २२३
तदन्नमतिशुदयद्योग	लोहि ३८८	तदस्माकं धियो यस्तु	वृ परा ४.३६
तदन्यादभिन्नगोत्राद्वायं कंचनं	कपिल ६७८	तदस्यानिकमिति ऋचा	वृ हा ८.५२
तदन्यायार्जितं द्रव्यं	लोहि ३९०	तदहं भक्तिदत्त यन्मूर्ध्ना	बृ.गौ. २२.१४
तदपि त्रिविधं प्रोक्तं	नारद १५.१२	तदा कन्या स्वरूपेण	अ ६४
तदब्दोऽभिशांसितुः	बौधा २.१.८७	तदाग्रश्रृङ्गयोस्तस्या	वृ.गौ. १०.४४
तदभावे गुरुसुते	पु १३	तदाज्यपात्रस्पर्शश्च	कपिल २३१
तदभावे तु पर्णानि	आश्व २३.४३	तदा तदा तुविहीता	आंपू ६५२

तदा तदा भूषणाध्यां	लोहि ६७३	तदुक्तावधिकारोऽऽ सम्यक् कपिल ८९४
तदा ताभिर्विशेषेण धनै	कपिल ५४५	तदुक्तिलंघनकरा ह कण्व ७४०
तदा तु तद्धनं सर्व	आंपू ३११	तदुत्तरक्रमाणां चेदनुष्ठानस्य कपिल ९८६
तदा तु पनसः किञ्चित	आंपू ५३२	तदुत्थानं ततः कुर्याति ब्र.या. ४.१.३५
तदात्मा तन्मनः शांत	ल व्यास २.४४	तदुत्पत्त्या क्षणान्मर्त्योमुच्यते कपिल ६७१
तदादि वर्षसंचारी	वृ हा १.२५	तदुत्सर्गः प्रकर्तव्यो वृ परा ११.२०९
तदा द्विजैस्तु द्रष्टव्य	वृ परा ८.२७१	तदुन्मुखास्तत्सहायान् कण्व ७८३
तदा निर्विषयो वायु	वृ परा १२.२२३	तदूर्ध्वं चेतसमुद्भूतः लोहि १५७
तदानुक्रमशस्त्वेक	कण्व ७८०	तदूर्ध्वेग्न्यकर्मसो मा नां भार ११.४०
तदा पुनस्तत्संपाद्य	आंपू ७२	तदृष्ट्वा पापवर्माणमादित्यं वृ.गौ. १६.२२
तदापोघ्नन्तु दौर्भाग्यं	वृ परा ११.२१	तदेतदन्त्यत्र निर्देशात् बौधा १.६.३०
तदाभ्युदयकं सद्यः कर्तव्यत्वे कपिल ३०२		तदेतेन वेदितव्यं बौधा २.१.६९
तदावरण रूपेण यजेद्	वृ हा ८.२७०	तदेनं संशयारूढं नारद १९.११
तदाविनाख्य पशुना	कण्व ४३४	तदेनं संशयारूढं नारद १९.३१
तदाविशन्ति भूतानि	मनु १.१८	तदेव निरयं प्रोक्तं वृ हा ३.१११
तदाशौचनिवृत्तेषु	औ ६.५०	तदेव बन्धनं विद्यात् पराशर ९.८
तदा संवत्सरं दृष्ट्वा	आंपू ५२	तदेव बीजं शक्ति वृ हा ३.३६४
तदा सकृत्सन्निपाते	आंपू ६८	तदेवं गतिभिः ब्रह्मध्यानं वृ परा १२.३१०
तदा सा शङ्क्यते नारी	अत्रिस १९५	तदेवं सप्तपूर्णख्यं आंपू ६७६
तदाऽसौ तु कुटुम्बानां	देवल १४	तदेव जुहुयाद् वहनौ वृ हा ५.६९
तदासौ वेदवित् प्रोक्तो	अत्रिस १४२	तदेव भुक्त्वा सायाह्ने नारा ९.१०
तदाऽस्य मध्यगं	बृह ९.११५	तदेव विष्णुः कृष्णेति वृ हा ३.२१२
तदास्यान्मङ्गलस्नानं	कण्व ६४४	तदेव सौमिकं तीर्थ और २.१८
तदाहि तत्सम्यगेव	कण्व ४१	तदेव हि भया राजन् वृ हा ८.३४३
तदाहुतिद्वयं कुर्यान्	कण्व ५४७	तदेवाग्नि स्तदायु वृ हा ३.६२
तदाहुः ब्रह्मवादिन	व १.५.१२	तदेवाऽभिवदित बौधा १.६.३
तदिति द्वितीयेकवचनं	भार १०.५	तदैवं हृदि सन्धाय वृ परा १२.६७
तदिष्णोरिति मन्त्रेण	बृ.या. ७.३५	तदौपासनहोमः स्यात् आंपू ८२
तदीयं तत्क्रियार्हं च तवै	शाण्डि ५.६०	तद् आचार्यपदं तत्र जायते आम्ब १०.४१
तदीयमार्गभाग्यो वै	कण्व ४०८	तद्गङ्गास्नानतुलितं कण्व १६७
तदीयसर्वश्राद्धानि गया	लोहि ३०९	तद्गृहन्तु परित्यक्त्वा वृ हा ६.७०
तदीनायानां पूजनञ्च	वृ हा ८.३०५	तद्गृहक्षेत्रमनसां आंपू ९२
तदीयानामर्चनञ्च	वृ हा ५.७९	तद्गृहे मरणानि कण्व ६०४
तदीयां स्तर्पयेशनि	व २.६.५६	तद्गोत्रद्वययुक्त्यर्थ आंपू ३४४
तदीयार्चनपर्यन्तं	व २.७.१९	तद्गोत्रशर्माभिस्तातपितामह कपिल ९०

तद्ग्रंथद्व्यंगुलो ज्ञेय	भार १८.९८	तद्ध्यानं तत्तु वै योगो	बृ.या.९.४
तद्वत्तमुदकं तासां परं	कपिल ७२६	तद्ध्यानं तत्तुवै योगो	बृह ९.४
तद्वम्पती महापूजा	कण्व ३५४	तद् ध्यानम सुसरोधस्तुर्य वृ	परा १२.२५७
तद्दाने तु यथापित्रो सम्मति	कपिल ३७९	तद्धयायेद्यस्तु स	वृ परा ३.२५
तद्दायादि प्रकर्तव्यो	कण्व ७०२	तद्धियस्तस्यौ केशवन्ते	वृ हा ८.२६
तद्दिनं चोपवासश्च	दा ४८	तद्बन्धुभिस्तेन राज्ञा	आंपू ३६९
तद्दिने चोपवासः स्यात्	आं पू ९.४९	तद्बुद्ध्या पंचतांगच्छन्	वृ परा १२.३५४
तद्दिनेतिप्रयत्नेन दोमये	कपिल २४५	तद्बिबम्बमूर्ति मंत्रेण	वृ हा ५.१६७
तद्दिने वा परेद्युर्वा	आंपू ९८४	तद्ब्रह्मण्यविषयमेव	व २.१.१८
तद्दीक्षानियमा दिव्या	कण्व ३५०	तद्ब्रह्ममेधाध्यायी चेदु	कपिल ६६६
तद्दीक्षायामनुष्ठेया	कण्व ५५६	तद्ब्रह्मसायुज्यनामा मुक्ति	कपिल ९३३
तद् दुर्ब्राह्मण्यमेवस्या	कण्व २१२	तद्ब्रह्माण्डकटाहाख्यं दानं	कपिल ९१५
तद् दुर्यत्नादिशतक	कपिल ७४७	तद्ब्राह्मण्यं तादृगेव	कण्व १७८
तद् दूयं (भूयः) चोदितं	कण्व ५१७	तद्भस्मना प्रकुर्वीत	कण्व ५७६
तद्देवतेयं विधवा तदधीनैव	लोहि ५१०	तद्भार्याकर्मकर्ता चेत्	आंपू ४३५
तद्देव मातृकं देशं	वृ.गौ. १४.४५	तद्भिन्ना ज्ञातिपुत्राश्चेद	लोहि ५६१
तद्देवहपतने तस्य	वृ हा ३.२७१	तद्भिन्नैर्दुर्बलैरन्यैः दत्त	कपिल ४५८
तद्दोषपरिहाराय गायत्री	कण्व ९७	तद्भैक्ष मेरुणा तुल्यं	अत्रि ५.६
तद्दोषपरिहाराय पूर्वचित्त	कण्व १००	तद्भोक्ता दीयनाशेन प्रापाना	कपिल २४३
तद्दोषपरिहारार्थं कुर्यात्	आश्व ३.१६	तद्द्यायाद्यंशसाम्यादि कुण्ठिता	कपिल ४०१
तद्दोषशमनायाथ	आं पू १४३	तद्द्युवानः प्रमीयन्ते	अ ४४
तद्दोषशमनायाथ पुनरग्निं	लोहि ३७	तद्द्योगी वान्यपाणी	भार १२.३६
तद्दोषशमनायैव पुण्यं	आंपू १९९	तद्द्योग्यता जायते च तावत्	कपिल ४००
तद्दोषाय भवेदेव तथा	कण्व १०८	तद्द्योग्यं षोडशाख्यानां	कपिल ५९१
तद् द्वय ऋतुरित्युक्तं	वृ परा १२.३६०	तद्दक्षणाय तनयं स्वीयं	कपिल ६९६
तद् द्वयं च मुहूर्तः	वृ परा १२.३५९	तद्दक्षणाय बाहुभ्याम	वृ परा ५.१५२
तद् द्वयं तु कलि प्रोक्त	वृ परा १२.३१२	तद्दाक्षं भवेच्छ्राद्ध	आंपू ८१५
तद्द्वं कुलनाशाय	वृहस्पति ५३	तद्दूषं च प्रवक्ष्यामि	वृ परा ८.६४
तद्द्वं तु न चेत्सद्य	आंपू ३१२	तद्दूषेणावतीर्णं तत्	कण्व ३९७
तद्द्वरन्त्यसुरास्तस्य	वृ परा २.१५१	तद्द्वंशजानां सुस्पृष्टं	कण्व ७२४
तद्द्वर्माः पृथगेवस्यु	कण्व ३०३	तद्द्वश्यानामर्मकाणां	आंपू १०८७
तद्द्वस्तेनैव विधिना स्वमंत्रो	कपिल ६९०	तद्द्वचः संप्रवक्ष्यामि	ल हा ११.४
तद्द्वार्यममरैर्भूशशुचये	भार १८.७२	तद्द्वत् परस्त्रिया पुत्रौ	पराशर ४.१७
तद्द्वार्यगुपवीतन्तु अतिलम्बं	ब्र.या. ८.७९	तद्द्वत्फलानां च पुनर्द्वं	आंपू ५०८
तद्धि भृत्यजनस्यानं	वृ.गौ. ८.६५	तद्द्वत् सम्पूजयेद्	वृ हा ८.३१४

तद्वत्सूतकिनश्चापि	लोहि १९०	तद्ब्रवीमि परंधर्मं	वृ हा १.८
दद्वन्धर्मतोऽर्थेषु	मनु ८.१०३	तनयग्रहणे यो वा	कण्व ७४१
तद्वद्भर्तारमादाय दिवं	व २.५.७३	तनयं मम ते यूयं कृपया	कपिल ३९३
तद्वस्त्रं सहसाच्छित्त्वा	लोहि ६१०	तनयाः शास्त्रमार्गेण	आंपू ४०९
तद्वहि पूर्वदिक्पत्रे प्रज्ञा	भार ११.४५	तनयासु विभक्तानां प्रत्तासु	लोहि २९०
तद्वहि परितोभागे	भार २.४५	तनयोऽहमिति ज्ञात्वा	शाण्डि ४.१५६
तदवाक्यतः पुनर्लोकेऽप्यल्प	कपिल २६	तनूनपा अग्नेऽसि	ब्र.या. ८.३८
तद्वाक्यादेव देवस्य	वृ हा ८.१८६	तंतुकर्म न कर्तव्य	बार १५.२३
तद्वाचकत्वकार्याय भवन्ति	कण्व ४८	तन्नुवाया भवन्त्येन	औ सं १३
तद्वाससोरसम्पत्तौ	वृ परा २.१६२	तन्नुवायो दशपलं	मनु ८.३९७
तद्वाहौ निक्षिपेच्छिष्य	वृ हा २.५६	तन्नुनि चोपवीतानां	वृ हा ५.४५
तद्विच्छित्तिर्दशायां चेद्यने	कपिल ९७४	तन्त्र श्राद्धदिने यत्नाद्देवता	कपिल २४८
तद्विदः कोचिदिच्छन्ति	वृ परा ६.३४८	तंत्रमंत्रे प्रकुर्वीत कृत्सने	कपिल ३०८
तद्विदस्तु दिवं यांति	वृ परा ६.८९	तन्नार्यः कामतः प्राप्ताः	आंड १०.२०
तद्विधानं च वक्ष्यामि	कण्व ६५०	तन्निमित्तमिदं रूपं	आंपू १०१
तद्विधानं ममाचश्व	वृ हा २.२	तन्निमित्तस्य तृप्त्यर्थं	वृ परा ७.१५१
तद् विधाना मिदं ये	वृ हा ५.७३	तन्निरोधे कथं त्वं वै	लोहि ५३७
तद् विधिज्ञः शुचि शांतो वृ	परा ११.२१०	तन्निर्माल्यं ततो गङ्गा	आंपू ९०८
तद्विना किं शरीरेण	वृ हा ३.११०	तन्नृभि क्रियमाणानां	वृ परा ११.३
तद्विना वर्तते मोहात्	वृ हा ५.३२	तन्नयूनमधिकं चैव	व्या ४८
तद् विशिष्टमिति प्रोक्तं	वृ हा ५.३०	तन्नयूना एव कथिता	आंपू ४१०
तद् विष्णो परमं धाम	वृ हा ७.३२४	तन्मण्डलस्थं मां ध्यायेत्	वृ.गौ. ८.५०
तद् विष्णोरिति च द्वाभ्यां	वृ हा ८.२४४	तन्मध्यमंडले ह्यात्मा	वृ परा १२.२८७
तद् विष्णोरिति मंत्राभ्यां	वृ हा ७.१८५	तन्मध्याह्नः शिशुर्जातो	बृह ९.६९
तद् विष्णोरिति मंत्राभ्यां	वृ हा ७.१९०	तन्माध्ये कल्पवृक्षस्य	वृ हा ३.२५२
तद् विष्णो रिति मंत्रेण	वृ परा ७.२४७	तन्मध्येऽग्निं प्रतिष्ठाप्य	व २.२.१५
तद्विष्णोरिति मन्त्रेण	वाधू ८९	तन्मध्ये चिन्तये	वृ परा १२.३१४
तद्विष्णोरिति मंत्रोयं	वृ परा ४.१०४	तन्मध्ये तु विधित्पदम्	भार ७.५५
तद् विष्णोरिति वै विष्णु वृ	परा ११.२२२	तन्मध्ये पदममालिख्य	भार ७.६२
तद्विष्णोश्चैव गायत्री	ब्र.या. २.२१	तन्मध्ये पृथुलैः कुम्भै	कण्व ६५३
तद्वीथ्यां तेन तच्छ्राद्ध	आंपू २६	तन्मनुष्यैः कथं प्राप्यं	वृ परा १२.३४७
तद्व्ययारणं पाककाष्टा	कपिल २०३	तन्मंत्रकृत्प्रणत्वेवं दशाहं	कपिल ३३२
तद्वैदिकेषु शास्त्रेषु सदकर्मसु	कपिल २७	तन्मंत्र मूलमंत्र वा	वृ हा २.१००
तद्वै युगसहस्रान्तं ब्राह्म	मनु १.७३	तन्मंत्रमंत्ररत्नाभ्यां	वृ हा ५.४५५
तद्वरणं बहिल्लोम	वृ परा १०.१४३	तन्मनत्रविनियोगज्ञः	कपिल ३६

तन्मन्त्रस्य च भेत्तारं	कपिल ८६१	तपस्यवगाहनम्	बौधा २.३.१
तन्मयत्वेऽपि पुत्रस्य	शाण्डि ४.१५.७	तपस्विनश्च ये युक्ता	वृ.गौ. १०.८२
तन्महत्तारतम्येनन्यूनं	कपिल १४	तपस्विनि ब्रह्मविदि	वृ हा ६.२४०
तन्महामुनिर्भिर्वन्द्यै	भार १५.८७	तपस्विनीप्रसंगेन जायते	शाता ५.३४
तन्माता पतिता पश्चाद्य	लोहि १७८	तपस्विनो दानशीलताः	या २.६९
तन्मातामहगोत्र्येकः दौहित्रो	लोहि ३२५	तपस्वी चाग्निहोत्री च	नारद २.७
तन्मातृपितृभि साकं न	कपिल ८१	तपस्वी यश शीलश्च	शंख ४.१०
तन्मात्रस्य समीचीन	आंपू ८४५	तपोजपैः कृशीभूतो	दक्ष ७.४०
तन्मार्गेणैव कुर्येत	कण्व ७३३	तपो दा नापमानश्च	ब्र.या. १२.३८
तन्मिथ्यासंशिनं दुष्टं	वृ हा ४.१९१	तपोदानावमानौ च नव	दक्ष ३.१३
तन्मूर्तिप्रीतये शक्त्या	वृ हा ५.१५४	तन्मिदं सर्वं	मनु ११.२३५
तन्मूले द्वे ललाटास्थि	या ३.८९	तन्वेद्या च विप्रस्य	मनु १२.१०४
तन्मे क्षणेनोद् धृतं	कण्व ७७१	तपोवीजप्रभावैस्तु	मनु १०.४२
तन्वन्ति पितरस्तस्य	व १.११.३९	तपोमहर्बहिश्चाक्षो	भार १९.२५
तपः क्रीता प्रजा राज्ञा	नारद १८.२३	तपोमासि सिते पक्षे	व २.६.२४५
तपणं ऋषियज्ञः स्यात्	वृ.गौ. ८.१०	तपोयुक्तस्य तस्यापि	वृ.गौ. ७.९९
तपत्यादित्यवच्चैष	मनु ७.६	तपोवनमृषीणां यत्तत्	भार १५.५७
तपः परं कृतयुगे	पराशर १.२३	तपो वाचं रतिचैवं	मनु १.२५
तपः परं कृतयुगे	मनु १.८६	तपोविशेषैर्विविधैः	मनु २.१६५
तपयेद् विधिनाऽनेन	आश्व १.९४	तपो वेदविदां क्षान्ति	या ३.३३
तपश्चरणयुक्तानां	व २.६.४६१	तपो हियः सेवति वन्यवासः	लहा ५.१०
तपश्चरणसंयुक्ता	वृ हा ८.२०९	तप्त काचनं वर्णाभं	वृ हा ३.२२७
तपश्चर्तुमशक्तश्चेद्	शाण्डि १.९५	तप्तकृच्छ्रं चरन्निषो	मनु ११.२१५
तपसा द्रुतमन्यस्य	औ ८.२०	तप्त कृच्छ्रं विजानीयाच्छीतैः	शंख १८.५
तपसान्तप एवाग्रं व्रताना	वृ.गौ. ९.२४	तप्तक्षीरघृताम्बू	देवल ८४
तपसाऽपनुनुत्सुस्तु	मनु ११.१०२	तप्तक्षीरघृताम्बू	या ३.११७
तपसा ब्रह्मचर्येण	या ३.१८८	तप्तचक्रेण विधिना	वृ हा ८.२८८
तपसा वा सुतीव्रेण सर्व	बृह ११.३३	तप्तत्रिशतपूर्वं तु भूगर्भे	नारा ५.५४
तपसा शोषयेन्नित्यं	शंख ६.५	तप्तं गोमूत्रमाज्यं वा	वृ परा ८.१०६
तपसा सुसमुद्ध्यत्य	बृ.या. ४.११	तप्तोदकस्य मध्येस्तु तण्डुलं विश्वा	८.१३
तपसैव विशुद्धस्य	मनु ११.२४३	तप्तोऽयः शयने सार्द्धं	या ३.२५८
तपस्तत्त्वाऽसृजब्रह्मा	या १.१९८	तं कर्मण्यमासां च वत्सो	शाण्डि ३.१२६
तपस्तपति योऽरण्ये	अत्रि ३.५	तं चापि तनयं स्वीकृत्य	लोहि १८०
तपस्तप्त्वाऽसृजघ्नं	मनु १.३३	तं चेदम्युदियात् सूर्यः	मनु २.२२०
तपस्तप्याति योऽरण्ये	व १ २७.५	तं ज्ञेयं तामसं स्वल्पं	ब्र.या.११.९

तं तस्य पितरः सर्वे	आंपू ५५२	तमोनिविषृचित्तेन	वृ गौ.३.३३
तं त्यजेच्छक्तिमान्सोऽय	नारा ३.५	तमोऽयं तु समाश्रित्य	मनु १.५५
तं दण्डयेद् वर्षं शतं	वृ हा ४.२१४	तया चेत्येषु कृत्येषु	आंपू २१९
तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्ष	विष्णु १.४४	तयाधर्मार्थकामानां	दक्ष ४.२
तं देशकालौ शक्तिं च	मनु ७.१६	तया न कुर्यात्पाकंचे	कपिल १९८
तं पूजयित्वा वा अन्नेन	वृ.गौ. ६.४७	तया वा तेन वोक्ते वाडभ्य	लोहि ५०२
तं पृच्छन्ति महात्मान	वृ.या. १.४	तयैवाक्षन्जानित्या	भार ७.११६
तं प्रतीतं स्वधर्मेण	मनु ३.३	तयैवाभ्यच्चर्यगोविन्दं	वृ हा ५.१०५
तं प्रतैवेति सूक्तेन	वृ हा ८.५	तयोः प्रत्युपकारोऽपि	औ १.३७
तं भोजयित्वापासीता	व १.११.१३	तयोरनियतं प्रोक्तं वरणं	नारद १३.३
तं मयूस्वकायायां	भार ६.३	तयोरन्नमदत्त्वा च भुक्त्वा	अत्रि ५.५
तं यस्तुद्वेष्टि संमोहात्स	मनु ७.१२	तयोरपि च कुर्वीत	विश्वा १.५८
तं योगं सुसमीक्ष्येत	आंपू १८४	तयोरपि पिता श्रेयान्	नारद २.३३
तं राज्ञा चानुशिष्यात्	व १.१.४२	तयोरप्युभयो रत्नं	वृ.गौ. ११.२०
तं राजा प्रणयन्सम्यक्	मनु ७.२७	तयोरलम्भे राजाहरेत्	व १.१७.७४
तं वनस्थमनाख्याय	वृ हा ४.२३७	तयोरेकान्तरं ज्येष्ठं	ब्र.या. ८.१८१
तं श्रुत्वा वा अथवा दृष्ट्वा	वृ.गौ. ३.८३	तयोरेवाधिकारोऽयं	आंपू ३०४
तं सङ्गृह्य विधानेन	लोहि २०६	तयोरेवाधिकारोऽयं	कपिल ३८२
तं स्वीकुर्वन्ति विद्वांसः	वृ हा १.१६	तयोर्दासो मकारेण	वृ हा ७.३८
तं हि स्वयम्भू स्वादास्यात्	मनु १.९४	तयोर्नित्यं प्रियं कुर्याद्	मनु २.२२८
तमग्रयं ब्राह्मणं मन्ये	वाधू १९४	तयोर्मध्ये अमा ह्येषा	बृह ९.९८
तमजानन्नपि तदा शास्त्र	लोहि ३११	तयोर्विद्वद्भ्यं मध्ये	भार २.२५
तमाभिः प्रणयतेति	वृ हा ६.३८	तयोस्तदेव पावनम्	बौधा १.२.४२
तमसः परंगतस्या	व २. ६.२२२	तयोस्तु देवताषिदि	वृ परा ३.६
तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः	मनु १.४९	तयोः स्वरीति जीवस्तु	वृ हा ३.८८
तमसा मूढचित्तस्तु जायते	नारा ५.२२	तरक्षु-गोमायु-मृगारि	वृ परा ११.८७
तमसो लक्षणं कामो	मनु १२.३८	तरत् समन्दीधावति	वृ परा २.१३९
तमात्मरूपं परमव्ययं	वृ परा १२.३७१	तरत्समाः शुद्धवत्यः	बृ.या. ७.२४
तमुत्तायणे कर्यादुत्तरा	आंपू ६५४	तरन्ते मानवाः देवाः	वृगौ ५.३
तमुद्दिश्यदिवात्रात्र प्रलपन्	लोहि २१०	तरुणादित्य संकाश	वृ हा ३.२५८
तमुपनयेत्षष्ठं	बौधा १.८.१४	तरुणां स्थापने गोप कृष्णं	वृ हा ६.४३१
तमेव पूजयेद् रामं	वृ हा ३.२७३	तरुणारूप संपन्ना	ब्र.या. ११.१९
तमेव प्रतिगृह्णानो नरंके	अ ४६	तरुणी सुकुमारांगी	वृ हा ३.२५
तमेवं विद्वांसमेवं	बौधा १.२.५५	तरुणौ सुविषाणौ च	वृ परा १०.२९
तमेव मनसा ध्यायेद्	वृ हा १.२३	तरुणादित्यवर्णानि	वृ.गौ. १२.४८

तर्जनी मध्यमांस्पृष्ट्वा	वाधऊ १३७	तस्माच्च पापिना ग्राह्य	वृ. य. ४.७
तर्जनीमध्यमं अंगुष्ठ	आश्व २.५६	तस्माच्च वैष्णवा	व २.१.६
तर्जन्यंगुष्ठ योगेन	शंख १०.७	तस्माच्च श्रुतवान्	वृ परा ११.२०६
तर्जयन्तीह दैत्यानां	ब्र.या. ३.३७	तस्माच्छास्त्रानुसारेण	वृ.य. ४.३०
तर्पणं कुरुते पित्र	आश्व २४.३	तस्माच्छास्त्रेदृढा कार्या	शाण्डि ४.१९४
तर्पमं गेवतादिभ्यः	भार ४.१६	तस्माच्छुक्रमथार्द वा	ल हा ४.६
तर्पणान्तेऽस्य विधिना	विश्वा ८.४०	तस्माच्छूद्रं च भिक्षेरन्	वृ परा ६.३११
तर्पणे ब्रह्मयज्ञादिनित्य	कपिल ७१६	तस्माच्छूद्रं समासाद्य	आंउ ५.१३
तर्पणेष्वखिलेष्वेनं सर्व	कपिल ७३१	तस्माच्छूद्रं कृत्वा	बौधा १.४.३
तर्पणेष्वपि सर्वेषु नित्य	लोहि ३००	तस्माच्छूद्रेषु सर्वेषु	कात्या ४.२
तर्पयेदम्भसा भक्त्या	वृ परा ६.७७	तस्माच्छूष्टं स्वयं वीजं	भार १५.१२
तर्पयेद्देवता सर्वा	आश्व १३.५	तस्माच्छूत्रियं	व १.२.१०
तर्पितं च भवेत्तेन विश्व	बृह ९.१.५१	तस्माज्जगति यो मोहात्	कपिल ७२७
तर्पितं तेन सम्पूर्ण	ब्र.या. २.१८३	तस्माज्जनै प्रदातव्य	आंउ ७.६
तर्पयित्वा तु देवांश्च	ल हा ६.१०	तस्माज्जातानुतापस्य	वृ हा ६.२१९
तर्पयेन्नामभिः स्वैः स्वै	व २.६.३८१	तस्माज्जितेन्द्रियो नित्यं	भार ६.१६८
तर्प्यमाणेषु कर्मत्वं	वृ परा २.१७९	तस्माज्ज्येष्ठं पुत्र	बौधा २.२.५
तर्हि तेषां पुनः प्रायश्चित्त	कपिल ९७२	तस्माण्णकारषकारावनु	वृ हा ३.२०९
तर्हि पत्न्याः कथंचेति	कपिल	तस्मात् अन्नान् परं दानम्	वृ.गौ. ६.२७
तलमध्यमविन्यासं	भार ६.६९	तस्मात् अन्नात् परं दानम्	वृ.गौ. ६.२८
तलयोर्मध्यमेविप्रः	भार ६.६८	तस्मात् अन्नं प्रदातव्यम्	वृ.गौ. ६.३१
तलवद् दृश्यते व्योम	नारद १.६३	तस्मात् अन्नं विशेषणे	वृ.गौ. ६.७४
तलास्थि श्वेतवृन्तांक	वृ हा ५.२७७	तस्मात् अष्टाक्षरं मन्त्रम्	वृ.गौ. ३.५७
तल्पस्थोऽपि सकामां	वृ परा १२.३५३	तस्मात्कर्मावशिष्टेन	कपिल २८७
तल्लिङ्गैः पूजयेद्देवा	ब्र.या. २.१०६	तस्मात् कलौत्विमान्	नारा ७.३०
ताल्लिङ्गैरर्चयेन्मन्त्रैः	बृ.या. ७.९४	तस्मात् कल्याणं गुणवान्	वृ हा ३.१६६
तवास्मीतिय आत्मानम	नारद ६.३८	तस्मात् कुश पवित्रेण	वृ हा ४.४६
तवाहं वादिनं क्लीवं	या १.३२६	तस्मात् कृष्णेति मंत्रोऽयं	वृ हा ३.२९६
तवाह मित्युपगतो युद्धप्राप्त	नारद ६.३२	तस्मात् तदा भूपतयो	वृ परा ११.२९६
तव्रपाध्यमितिब्रू यादयोऽसौ	व २.४.२०	तस्मात्तदिच्छया प्रीति	वृ परा ६.६४
तस्करश्वापादाकीर्णे	शंख १७.६३	तस्मात्तदुदयात्पूर्वं	कण्व २९१
तस्मा अरंगमामवेति	वृ हा ८.५१	तस्मात्तदुपशान्त्यर्थं	वृ परा ११.९
तस्माच्चक्र विधानेनं	वृ हा २.३३	तस्मात्तदुत्तमुदकमस्माकं	कपिल ६१८
तस्माच्चतुर्थ्या मंत्रस्य	वृ हा ३.११३	तस्मात् तं नावजानीयान्	नारद १८.३०
तस्माच्च नम इत्यत्र	वृ हा ३.९४	तस्मात् शोधयेद् यत्ना	वृ परा १२.३५१

तस्मात् तस्मादपीहंते	वृ परा ७.३९५	तस्मात् प्रकाशयेत्	पराशर ९.६२
तस्मात् तस्यास्तत्र	व १.५.१४	तस्मात्प्रतिग्रहधनं च	अ १३९
तस्मात्तानि न शूदाय	बृ.गौ. २१.१८	तस्मात्प्रतिग्रहस्यैव	अ १०७
तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यं	शख १२.२६	तस्मात् प्रत्यक्ष दृष्टोऽपि	नारद १.६४
तस्मात्ताः सर्वथा रक्ष्या	वृ परा ६.५८	तस्मात् प्रयन्नातीर्थेषु	औ ५.३१
तस्मातास्तु न हन्तव्यास्तभि	वृ.गौ. ८.२६	तस्मात् प्रातः प्रशंसन्ति	बृ.या. ७.१२४
तस्मात् क्लृप्ता इत्युक्तां	आंपू ६३८	तस्मात् प्राप्ताय यतये	ल हा ४.६३
तस्मात् तत्कृतं राजा दान	कपिल ६४१	तस्मात् विमुक्तिमन्विच्छन्	वृ.गौ.९.५८
तस्मात् नमसेवैषां	वृ हा ३.९८	तस्मात्संकल्पयित्वाऽथ	आंपू ८०८
तस्मात् ब्राह्मणो	व २.२७	तस्मात् सदैव कर्तव्यं	कात्या १२.५
तस्मात् यदि वर्णीस्या	लोहि ४१९	तस्मात्सर्द्धि सदाकार्यं कर्म	कपिल ४४६
तस्मात् विधिवच्चक्रं	व २.१.४०	तस्मात्संततिविच्छित्तौ	कपिल ५१०
तस्मास्तु वैष्णवास्वेव	व २.७.२६	तस्मात्सभ्यः सभां प्राप्य	नारद १.७५
तस्मात् वैष्णवो भूत्वा	वृ हा ५.२९	तस्मात्समस्तकार्येषु	भार १८.३
तस्मात् सततं धार्य	वृ हा २.६२	तस्मात् समिद्धे होतव्यं	कात्या ९.११
तस्मात् सात्त्विको भूत्वा	वृ.गौ. ८.११५	तस्मात्सम्यक्स्वर	कण्व १८१
तस्मात्तेजो यशो वीर्यं	वृ.गौ. १२.४५	तस्मात्सर्वत्र ता दृष्टाः	आंपू १३
तस्मात्ते तु नगन्तव्या	वृ.गौ. ९.६१	तस्मात् सर्वपर्यत्नेन	औ ५.८५
तस्मात् ते न अवमन्तव्या	वृ.गौ. ३.७५	तस्मात्सर्वप्रकारेण जप	भार ८.२
तस्मात्तेनेह कर्तव्य	या ३.२२०	तस्मात्सर्वप्रयत्नेन	भार १.११
तस्मात्ते हरिसंस्कारा	वृ हा १.२७	तस्मात्सर्वप्रयत्नेन	भार ४.३
तस्मात् तोयं सदा देयम्	वृ.गौ. ६.१३	तस्मात् सर्वप्रयत्नेन	दक्ष २.५६
तस्मात्त्रिपुंड्र विप्राणां	व २.१.१९	तस्मात् सर्वप्रयत्नेन	ल व्यास १.४
तस्मात् त्रिवर्षपर्यन्तं	नारा २.७	तस्मात्सर्वप्रयत्नेन	ल व्यास १.३०
तस्मात्पापं न कर्तव्यं	नारा २.६	तस्मात् सर्वप्रयत्नेन	लहा १.२४
तस्मात् त्यक्तकषायेणा	दक्षु ७.२८	तस्मात्सर्वप्रयत्नेन	वृ.गौ. १९.४३
तस्मात् दानं सदा कार्यम्	वृ.गौ. ३.५२	तस्मात् सर्व प्रयत्नेन	वृ.गौ. २.४०
तस्मात् धर्मः सदा कार्यो	वृ.गौ. २.३३	तस्मात् सर्व प्रयत्नेन	वृ परा ७.९८
तस्मात् न अकुशलं ब्रूयात्	वृ.गौ. ४.५३	तस्मात्सर्व प्रमत्नेन	ब्र.या. ३.२१
तस्मात्परां गतिं दिव्यां	कपिल ३७८	तस्मात्सर्वप्रयत्नेन	ब्र.या. ४.४६
तस्मात्पित्र्यादिके	व २.६.३७८	तस्मात् सर्वप्रयत्नेन	वृ हा ८.१६९
तस्मात् पुंस्कृत्या	व १.२०.२७	तस्मात् सर्वप्रयत्नेन	शंख ५.१३
तस्मात्पुरश्चरेद्धीमान्	भार १९.४०	तस्मात् सर्व प्रयत्नेन	शंख १२.३१
तस्मात्पुत्रविवाहस्य	कण्व ६८४	तस्मात्सर्वप्रयत्नेन	बृ.गौ. ३.४०
तस्मात्पुत्राः श्राद्धदिने	कपिल २०९	तस्मात् सर्व सुविमलं	वृ हा ५.२७९

तस्मात्सर्वसपिण्डानां	कण्व ७५९	तस्मादिष्टिं विधानेन	व २.६.४१८
तस्मात्सर्वाणि कर्माणि	कण्व ३४	तस्मादुद्धृत्य पश्चात्	आं २२९
तस्मात् सर्वास्व	वृ परा १.३२५	तस्मादुपास्यविधिना	भार ६.१.५९
तस्मात् सर्वे प्रसूयन्ते	बृह ९.१२	तस्मादुष्णानिदेयानि	ब्र.या. ४.९.७
तस्मात्सर्वेषु कालेषु	कण्व ११६	तस्मादेकाधिकेषु वैश्यम्	बौधा १.२.९
तस्मात्सर्वेषु चाब्दादिका	कण्व ३१	तस्मोदेतत्प्रभृति ते भुवने	आं पू ५७४
तस्मात् सर्वेषु दानेषु	वृ.गौ. ६.१५	तस्मादेतं मतामंत्र	वृ हा ३.२१६
तस्मात्सहस्रपत्रन्तु	वृ.गौ. ८.७७	तस्मादेताः सदा पूज्या	मनु ३.५९
तस्मादंशविनिष्क्रान्तं	बृह ९.२९	तस्मादेनत्तादृशेषु योजयेन्	कपिल ९८
तस्माद् उक्त प्रकारेण	वृ हा ८.२४१	तस्मादेवविधिख्यातो	कण्व २१९
तस्माददंगिरसा पुण्यं	आंड १.५	तस्मादोमिति प्रणवो	वृ हा ३.५७
तस्माद् एकान्त शीलेन	वृ परा १२.१३७	तस्मादोमित्युदाहृत्य	ब्र.या. २.१०
तस्माद तिथये कार्ये	ल हा ४.५९	तस्मादौणसनसमं न धर्मान्	कण्व ३३१
तस्मादध्ययनं नित्यं	कण्व २१८	तस्मादत्यल्पसलिल	लोहि १११
तस्मादनादिमध्यांतं	ल व्यास २.४२	तस्माद्वत्सुतो लोके	कपिल ३७६
तस्मादनुग्रहं कुर्याच	अ १२४	तस्माद्वत् स्वयं पश्चाज्जातं	आंपू ३८१
तस्मादनुमतिं श्वश्रवोः	लोहि ५३८	तस्माद्वत्सुतः स्वस्व	आंपू ३४१
तस्मादन्नमपोद् धृत्य	व १.१४.२३	तस्माद्वत्सुमर्तो भार्या	आंपू ३२२
तस्मादन्नं प्रदातव्यं	वृ. गौ. १२.४०	तस्माद् दास्यं परां	वृ हा १.२१
तस्मादन्नं प्रयत्नेन	वृ.गौ. १२.३८	तस्माद्विद्युक्तमार्गेण	भार ९.२
तस्मादपापसंयुक्ता	वृ हा ४.१८२	तस्माद् दीक्षा विधानेन	वृ हा २.१३३
तस्मादपूर्वमेवात्र	वृ परा ४.२०२	तस्माद् दुहितृमते	व १.१.३६
तस्मादभ्यर्चयेत् प्राप्तं	वृ परा ४.२०१	तस्मादेव इति प्रोक्त	बृह ९.५५
तस्माद् वैदिकं धर्मं	वृ हा ८.१९२	तस्माद् देशे काले च	नारद ९.१२
तस्माद्वैष्णवत्वेन	व २.१.१५	तस्माद्दोषं समुत्पन्नं	कण्व ७३
तस्माद्वैष्णवत्वेन	वृ हा ५.२३	तस्माद् दौहित्रतुलितो	लोहि २२१
तस्मादशून्यहस्तेन	व १.११.२३	तस्माद् द्विजो मृतं शूद्र	पराशर ३.५४
तस्माद् स्नात् पुनर्यज्ञः	या ३.१२४	तस्माद् द्वितीयादि भार्या	लोहि ११८
तस्मादहरहर्वेदं	व्यास १.३८	तस्माद् द्विनामा द्विमुखो	बौधा १.११.३४
तस्मादात्महितं नित्यं	आंपू ३१६	तस्माद्धर्मं यमिष्टेषु	मनु ७.१३
तस्मादार्तं समासाद्य	आंड ७.२	तस्माद्धर्मं सदा कुर्यात्	अत्रिस १११
तस्मादिदं वेदविद्भि	अत्रिस ९	तस्माद्धर्मं सहायार्थं	मनु ४.२.४२
तस्मादिदं वेदविद्भि	व्या ८	तस्माद्धर्मं सहायोऽस्तु	वृ.गौ. ११.३५
तस्मादिमान् कलियुगे	नारा ८.७	तस्माद् धर्मासनं प्राप्य	नारद १.२८
तस्मादियं सदोपास्या	भार ६.१५०	तस्माद् धान्यं धरित्रीञ्च	वृ हा ४.१६०

तस्माद्बृषलभीतेन	पराशर १२.३०	तस्मान्मानस्तु चान्द्रोऽयं	कण्व ३३
तस्माद् ब्रह्मचारी या	बौधा १.२.५१	तस्मिन् कुम्भे लिखेद्	वृ परा १०.९३
तस्माद् भागवत श्रेष्ठ	वृ हा ६.१.४२	तस्मिन्कौशेयवसने	व २.७.५८
तस्माद्भगवतैर्भुक्तैः	वृ.गौ. १८.१७	तस्मिन्ताताहिता ये वा पितरः	कपिल २२४
तस्माद्यत्नेन कर्त्तव्य	भार १५.४	तस्मिन् तिष्ठति बाढं	लोहि ८९
तस्माद्यत्नेन महता	आंपू ८२८	तस्मिन् देवमर्चयेद्	व २.६.३८
तस्माद्यत्नेन योगीन्द्र	औ ४.१२	तस्मिन् देव्या समासीनं	वृ हा ३.३०६
तस्माद्यम इव स्वामी	मनु ८.१.७३	तस्मिन् देशे येधर्मा	व १.१.८
तस्माद् रजस्वलानं	व १.५.१०	तस्मिन् देशे य आचारः	मनु २.१८
तस्माद् रागान्वितं	वृ हा २.७०	तस्मिन्मग्नौ तु जुहुयाद्	व २.४.१२७
तस्मात् राजा ब्राह्मणस्वं	बौधा १.५.१२२	तस्मिन्नण्डे स भगवानुषित्वा	मनु १.१२
तस्माद्विक्थं भूमिरूपं ज्ञातेय	कपिल ५१७	तस्मिन् तिष्ठते पापं	शंख १२.२७
तस्माद्दामत एवात्र	वृ परा ७.८९	तस्मिन्तीते वर्षः	कण्व ३६०
तस्माद्विद्वान्नाद्याद्	वृ परा ६.२२६	तस्मिन् नवम्यां शुक्ले	वृ हा ५.४३२
तस्माद् विद्वान् विभियाद्	मनु ४.१.९१	तस्मिन्नादौ शुभदिने	वृ हा ६.७
तस्माद्विद्वान् सूत्रवेद	आंपू ८४८	तस्मिन्नास्तीर्य पर्यङ्कं	व २.६.३७
तस्माद्विना कमण्डलुना	बौधा १.४.२५	तस्मिन्नुत्सरिते पापे	आंड ३.६
तस्माद्विनिर्गतः पश्चात्	अ १३६	तस्मिन् निर्मत्रितः श्राद्धे	औ ५.१२
तस्माद् विवर्जयेत्	परा १२.२८३	तस्मिन्निविशते जीव	नारा ५.१३
तस्माद् विवाहयेत्	संवर्त ६८	तस्मिन् निवेश्य तं	वृ हा ६.९९
तस्माद् वेदव्रतानीह	ल हा ३.४	तस्मिन् निवेश्य देवेशं	वृ हा ६.२७
तस्माद् वेदस्य विष्णोश्च	वृ हा ८.१.७८	तस्मिन्नुपोष्य मध्याह्ने	वृ हा ५.४३३
तस्माद्वेदाहते नान्य	बृह १२.२१	तस्मिन्नृषिसभामध्ये	वृ परा १.९
तस्माद् वेदान्विधानेन	कण्व १८३	तस्मिन्नृषिसभामध्ये	पराशर १.८
तस्माद्वेदेन शास्त्रेण	अत्रिस ३५१	तस्मिन्नेव नयेत्	ल हा ३.१२
तस्माद् व्याहृतयो	वृ हा ३.८६	तस्मिन्नेव प्रधानाग्नौ	लोहि १३१
तस्माद् व्रतोपवासाद्य	नारा ५.२.६	तस्मिन्नैव यजन्नित्यं	वृ हा ५.११
तस्मान्नं गोत्रिणं विप्रं	वृ परा ७.१.१५	तस्मिन्नेवानले सर्व	लोहि १५५
तस्मान्नं प्रतिगृह्णीयात्	अ ५१	तस्मिन्नेवौपासनेऽन्य	लोहि १२२
तस्मान्नं ब्राह्मणसमं	कपिल ८७८	तस्मिन् पञ्च महायज्ञा	वृ.गौ. १५.२०
तस्मान्नं लंघयेत्	व्या २१९	तस्मिन् प्रतिष्ठितं	वृ हा ९.११२
तस्मान्नं लंघयेत्	ल हा ४.१६	तस्मिन् बालार्कं संकारो	वृ हा ३.२५३
तस्मान्नारायण इति	वृ हा ३.१०८	तस्मिन् मनोरमे पीठे	वृ हा ७.३२९
तस्मान्नारायणं देवं	ल व्यास २.१६	तस्मिन्मन्त्रे समीचीन	कण्व २१७
तस्मान्नाभिसमं दद्यात्	भार १५.९३	तस्मिन्मूर्वा हरिन्दे	व २.७.६६

तस्मिन् मृत्यु भवेच्छ्रेयो	वृ हा ४.२१६	तस्य प्रतिक्रयां कर्तुं	शाता ५.२
तस्मिन् विकसिते पद्मे	वृ परा ६.१०५	तस्य प्रतिवसन्तस्य तादृशं	कपिल ९७५
तस्मिश्चतुर्थीयुक्तवान्	वृ हा ३.७२	तस्य प्रतिक्रियां कर्तुं	शाता ५.१६
तस्मिश्चेत् प्रतिगृहीत	व १.१५.९	तस्य प्रदानविक्रय	व १.१५.२
तस्मिन् श्राद्धदिने	आंपू ११५	तस्य प्राप्तव्रतस्यायं	व्यास १.२०
तस्मिन् सम्पूजिते	वृ हा ६.१४३	तस्य भुक्तावशेषन्तु	वृ हा ५.६८
तस्मिन् सम्पूजितो	वृ हा ५. ४६५	तस्य भृत्यजनं ज्ञात्वा	मनु ११.२२
तस्मिस्तावन्निरोद्धव्यं	बृ.या. २.१३८	तस्य भोक्तुः प्रकथिता	लोहि ४४३
तस्मिन् स्वपति सुस्थे	मनु १.५३	तस्य मध्यगतं ब्रह्म	वृ परा १२.३१६
तस्मै तु नित्य को	व २.६.२२३	तस्यमध्येकुसं विद्या	बृह ९.१३०
तस्मै दत्रं च तदभुक्तं	वृ परा ११.१५८	तस्य मध्ये सुपर्याप्तं	मनु ७.७६
तस्य कर्मविवेकार्थं	मनु १.१०२	तस्य मत्पुण्यमाख्यातं	वृ.गौ. ७.११
तस्य कार्यो व्रतादेश	आं उ ७.३	तस्य वर्षशते पूर्णे	नारद २.१८४
तस्य कर्मादिकं ज्ञानं	विश्वा ५.७	तस्य वृत्त कुलं शीलं	या ३.४४
तस्य कालेऽप्यतीते तु	कण्व ५०७	तस्य वृत्ति प्रजारक्षा	नारद १८.३१
तस्य चान्तर्गतं धाम	बृह ९.२६	तस्य वै तारयेत् पूर्वान्	वृ परा १२.१४१
तस्यचेष्टानदिग्भागे	भार ७.९३	तस्य वोढा शरीराणि	या ३.८४
तस्यतत्तत्फलप्राप्ति	भार १७.३०	तस्य शक्तेरानुगुणो दण्डो	कपिल ८३८
तस्य तुलायान्तु समारूढो	अ १०८	तस्यशक्तेरानुगुण्यात् समं	कपिल ८२२
तस्य दक्षिणकर्णन्तु	व २.२.२४	तस्यशासने वर्तेत	बौधा १.१०.८
तस्य दण्ड क्रियापेक्ष	नारद १५.६	तस्य शीघ्रं विधायैव	आंपू ९५९
तस्य दर्शनमात्रेण सचैल	विश्वा १.१४	तस्य शुद्धिं प्रवक्ष्यामि	देवल ८
तस्य दानस्य कौन्तेय	बृ.गौ. १९.११	तस्य श्रवणमात्रेण	वृ हा ३.२३९
तस्य दानात्परो	वृ परा १०.१८२	तस्य श्राद्ध ततः कार्यं	आंपू १०६१
तस्य दासा भविष्यन्ति	वृ हा ६.५	तस्य सर्वाणि भूतानि	मनु ७.१५
तस्य नन्दन्ति ते सर्वे	कण्व ६७५	तस्य सुप्तस्य नाभौ	ल हा १.१०
तस्य नश्यति तत्पापं	वृ.गौ. ९.३९	तस्य सूक्तस्य सर्वस्य	वृ परा ४.१२३
तस्य नारायण वन्तु	व २.६.६८	तस्य सुनुस्तथा न्यून	आंपू ४०८
तस्य निष्क्रयणानि	व १.२२.३	तस्य सोऽहर्निशस्यान्ते	मनु १.७.४
तस्य पापं न गच्छेत यथा	विश्वा १.१०३	तस्य स्वरूपं रूपञ्च	वृ हा १.२१
तस्य पापमगण्यं स्यान्	विश्वा ४.२७	तस्य स्वरूपं रूपञ्च	वृ १.२२
तस्य पुण्यफलं यद्वै	वृ.गौ.७.५८	तस्य स्वर्थधनं	लोहि ६२४
तस्य पुण्युपलं यद्वै	वृ.गौ. ७.६२	तस्य हस्तोदकं दद्यात्	वृ परा १०.१६४
तस्य पुण्यफलं वक्तुं	आंपू ५०२	तस्या औपासने श्राद्ध	आंपू ३९९
तस्य प्रजापतिश्च	बृ.या. ४.९	तस्याक्षयो भवेल्लोकः	बृ.गौ. २२.२०

तस्यक्षयो भवेल्लोक	विशु म ८८	तस्या सीरविदारेण	वृ परा ५.१.४३
तस्या चान्तर्गतो ह्यात्मा	बृ.या. १.१०	तस्यास्य नवकस्यापि	कण्व ५१६
तस्या जातो जगन्नाथ	वृ हा ५.४७२	तस्या स्वरूपं सत्त्वं	शाण्डि १.६२
तस्याज्ञालङ्घयित्वैव	व २.५.३	तस्याहं न प्रणश्यामि	विष्णु म ७६
तस्यादायुधसम्पन्नं	मनु ७.७५	तस्याहु सम्प्रणेतारं	मनु ७.२६
तस्याऽऽदौ पंच संस्कारान्	वृ हा २.१०	तस्येत्युक्तवतो लोहं	या २.१०७
तस्यानध्यायाः	व १.१३.४	तस्येह त्रिविधस्यापि	मनु १२.४
तस्यानुव्याख्यास्याम	बौधा १.१.२	तस्येह दुर्लभं किञ्चिदिह	भार १२.५०
तस्यानुहरणं पशचादथस्यो	कण्व ३४८	तस्यैतस्य तु कृत्स्नस्य	लोहि २०५
तस्यांते भवते तस्य	अ १४८	तस्यैताः कथिता सद्भि	आंपू २०
तस्यान्नं नैव भोक्तव्यं	अत्रिस १४७	तस्यैव किंकरोऽस्मीति	वृ हा ३.१०९
तस्यान्नं नैव भोक्तव्यं	अत्रिस १४८	तस्यैव चौर संवृत्या	औसं ४२
तस्या पतित्वा धीशस्य	वृ हा ३.१६३	तस्यैव दीयते दानं	अत्रिस ३४१
तस्यापि तत्स्पृष्टितश्च	व २.६.४८०	तस्यैव पुरतः पश्चात्	व २.४.१२६
तस्यापि वारको याग	आंपू ३०	तस्यैव पौर्णमास्याञ्च	वृ हा ५.४५२
तस्याः पुत्रशतं नष्ट	ब्र.या. ९.३२	तस्यैव भेदः स्तेयं	नारद १५.११
तस्याऽपि यन्निदानं	कपिल ९५	तस्यैवायुष्यमित्युक्तं	वृ हा ३.२१०
तस्यापि शतशोभाग	शंख ७.३२	तस्यैवैवं महाघोरे संकटे	कपिल २९५
तस्याप्यन्नं सोदकुम्भं	आंपू ८७६	तस्योत्तरत्र कार्येषु	लोहि ५
तस्याप्यन्नं सोदकुम्भं	दा ३३	तस्योल्वा (ल्व) हृतिथतो	बृह ९.६६
तस्या प्रतिगृहीता च	वृ.गौ. १०.६१	तस्योपनयनं भूयश्चो	आंपू ६९
तस्याभर्तुरभिचार	व १.५.५	तस्योपरि घृतं क्षिप्त्वा	विश्वा ८.१६
तस्यां कृतायामिष्टयां	वृ हा ७.२२४	तस्योपरि न्यसेहेवं	शाता २.५
तस्यां निवेश्य दोलायां	वृ हा ५.५०७	तस्योपरि न्यसेहेवं	शाता ५.३
तस्यां यावन्ति रोमाणि	संवर्त ७८	तस्योपरि न्यसेहेवं	शाता ५.१०
तस्यां शस्यानि रोहन्ति	वृ.गौ. १२.४२	तस्योपरिष्ठत्कलशं	भार १५.८१
तस्यां स्नान उपवास	वृ हा ५.५१७	तस्वास्य दिव्यरूपस्य	आंपू ४९८
तस्यां स्नानोपवासाद्यैः	व २.६.२५८	ताडयन्तमहोरात्र	लोहि ६५८
तस्यामुत्पादितः पुत्रो	व्यास २.१०	ताडयित्वा तृणेनापि	मनु ४.१६६
तस्यामेव तु यो वृत्तौ	नारद २.५६	ताडयित्वा तृणेनापि	मनु ११.२०६
तस्यामेव प्रकुर्वीत	वृ हा ७.२२३	ताडयित्वा तृणेनापि	पराशर ११.५०
तस्यार्थे सर्वभूतानां	मनु ७.१४	ताडयित्वा तृणेनापि	वृ परा ८.२८३
तस्याश्चैव तु ओंकारो	वृ परा ३.५	ताडयित्वा स्थापयित्वा	लोहि ६९०
तस्याश्चैव तु ओंकारो	वृ परा ३.५	ताडयेन्मुंच मुंचेति	वृ परा ११.१७५
तस्या समन्वारब्धायां	व २.४.४८	तातगोत्रेव विज्ञेय एवं	लोहि ३३२

ताततत्ताततातानां यावदेकं	कपिल ११४	तानेकाञ्जलिदाने	व्यास ३.१९
ताते सति कलत्रस्य	आंपू ४४२	तान्तवस्य च संस्कारे	नारद १०.१३
तात वत्स न भेतव्यं	नारा ४.१०	तान्दोषांश्चमते यस्तु	प्रजा ८७
तादृग्गुणसमयुक्तमाचार्य	व २.७.१२	तान्नित्यं धार्मिको राजा	लोहि २३४
तादृङ्मातृस्वसृभ्रातृपत्नी	कपिल ६१९	तान्यजन्नेव विधिना	लोहि ३१०
तादृशं तमिमं यो वै	आंपू ६०४	तान्येव सप्त च्छन्दांसि	बृ.या. ३.२
तादृशं तमिमं राजा बला	लोहि ६१७	तान् विदित्वा सुचरितै	मनु ९.२६१
तादृशं परमं दिव्यं दर्श	कपिल १७१	तान् विदित्वा सुनिपुणैः	नारद १८.५८
तादृशं प्रयतं दान्तमलो	आं पू ७७०	तान् सर्वानाभिसंदध्यात्	मनु ७.१५९
तादृशं रूपमाप्नोति ततः	शाण्डि १.६७	तान् सर्वान्दीप्यमाने ऽस्मिन्	लोहि २५
तादृशश्राद्धकर्तापि	आंपू ७०३	तापयेन्नीलवृतेन वह्निं	व २.५.५६
तादृशस्तनयः पूर्वैस्तत्ताता	कपिल १०६	तापसा यतयो विप्रा	मनु १२.४८
तादृशस्य कथंदाने ऽधिकारः	लोहि ५१४	तापसेष्वेव विप्रेषु	मनु ६.२७
तादृशस्यास्य करणं	लोहि १०६	तापादि पञ्च संस्कारा	व २.७.१५
तादृशान्येव सर्वाणि नात्र	कपिल ९०३	ताबुभावप्यसंस्कार्या	मनु १०.६८
तादृशायै शपत्येन	लोहि १५१	ताभिरेव तमुद्दिश्य	वृ हा ७.४५
तादृशेष्वेव कृत्येषु	लोहि ४३३	ताभिरेव तु दद्यात्	वृ हा ८.९५
तादृश्येव तथा कुर्यात्	कपिल ५६१	ताभिर्यदि कृताः पाकाः	कपिल ५३५
तानताय गृहीत्वा	अ ५	ताभिश्चसृभि प्रस्थ	वृ परा १०.३०९
तानि कुर्यात्तु मोहेन	आंपू ९६	ताभिश्च राजकन्यानां	वृ हा ३.३१६
तानि शिष्टानि सर्वाणि	आंपू ७२९	ताम्य सारं तु गायत्री	बृ.या. ४.७८
तानि तानिस्पृशेत्पाणि	वृ हा ८.९२	ताभ्यां चापि बलिं	आश्व १.१३१
तानि वै यज्ञियान्यत्र	वृ हा ८.२६५	ताभ्यां स शकलाभ्यां	मनु १.१३
तानि सर्वाणि कृत्यानि	भार १८.७५	ताभ्यामाच्छाद्य तत्पश्चात्	आंपू ८७
तानि सर्वाणि पुष्पाणि	भार १४.१४	तां कन्यां वरये पूर्व	व २.४.१७
तानि स्वकरतः शीघ्रं	आंपू ५६१	तां कलां यो विजानाति	वृ परा ६.९६
तानेतानखिलान्नो चेद्वागिर	कपिल ८७२	तां क्रियां तत्स्वरूपं	कण्व ४०६
ताम्विण्डान्निक्षिपेदग्नौ	व २.६.२८९	तां गायत्रीपरित्यज्यं	भार १२.४४
तान् पृच्छेदन्न संपन्नं	आश्व २३.७०	तां चारयित्वा त्रीन्	बृ.या. ४.७३
तान् प्रजापतिराहृत्य	मनु ४.२२५	तां तां सिद्धिमवाप्नोति	वृ हा ३.२०२
तान् प्रतिग्रहजान्	अ १३२	तांतु प्रोवाच प्रीतात्मा	बृ.या. ७.२
तानर्चयन्ति मदभक्त्या	बृ.गौ. १७.१३	तां दिशं निरुक्षति	बौधा २.५.९
तानन्यांश्च द्विजान्	वृ परा ११.३०	तां देवता नमस्कृत्य	लोहि ५०८
तानि दद्यात् स्नानपात्रे	वृ हा ४.७४	तां पवित्रं दैवत्यैरिज्यते	वृ हा ७.२३६
तानि पातकसंज्ञानि	वृ हा ६.२०९	तां रात्रिं क्षपयेत्	व २.७.८०

तामभ्यनुज्ञाभार्यायाः पुत्र	कपिल ७१३	तारयेत्तत् सहस्रांशु	वृ.गौ. १५.८३
तां विवर्जयतस्तस्य	मनु ४.४२	तारव्याहृतिगायत्र्या	औ २.४५
तामसानां विमूढानां	शाण्डि ४.१९५	तारानक्षत्रसंचारै	या ३.१७२
तामसान् यक्षभूतानि	बृह ९.७८	तारिकः स्थलजं शुल्कं	या २.२६६
तामिस्रमन्धतामिस्रं पूयं	अ ७८	तार्थ अभावे तु कर्तव्यं	शंखं ८.९
तामिस्रं लोहशंकुञ्च	या ३.२२२	तार्यन्ते प्राक्ततो ऽधस्ता	वृ परा ६.१६
तामिस्रमन्धतामिस्रं	मनु ४.८८	तार्यते कर्मणा चायं	वृ परा १२.१९८
तामिस्र मन्धातामिस्रं	वृ हा ६.१६१	तालत्रयमीपतत्वज्ञा	ब्र.या. २.५१
तामिस्रादिषु चोग्रेषु	मनु १२.७५	तालमस्वत्थकाष्ठं च	शाण्डि ३.१०५
तामुद्दिश्य च ये मूर्खा	कपिल ५८७	तालहिन्तालमाधूक	वृ हा ६.१७८
तामुद्बहेद् भेद सूर्यः	ब्र.या.८.१६१	तालुस्थाऽ चलजिह्वश्च	बृह ९.१९०
तामेव द्विगुणाधीत्य	ब्र.या. १.३८	तालूदरं वस्ति शीर्षं	या ३.९८
तामेव विक्रयं कुर्वन्	अ ९५	तावकीमभिगन्तास्मीत्यहं	कपिल ८१९
ताम्बूल फल पुष्पाद्यै	वृ हा ५.५१४	तावच्च संग्रहेदग्निं	व २.६.४२०
ताम्बूलं च ततो दद्यात्	आश्व २३.१०५	तावच्चोर्णव्रतस्यापि	बृ.य. ३.६०
ताम्बूलं चैव यो दद्याद्	संवर्त ५६	तावत्कालं प्रमोदन्ते	वृ.गौ. १५.७१
ताम्बूलं भावयेच्छ्राद्ध	भार १४.६०	तावत्कोटिसहस्राणि स्वर्गं	वृ.गौ. ६.१६४
ताम्बूलमासनं शय्यां	ब्र.या. ११.६३	तावत्क्रियाभि सम्यञ्चै	कण्व २७४
ताम्बूलहरणाच्चैव	शाता ४.१७	तावत्तत्र न भोक्तव्यं	ब्र.या.९.२५
ताम्रचर्माश्वबालांबु	भार ४.३४	तावत् तिष्ठेन् निराहारा	वृ हा ६.३६८
ताम्र पट्टे पटे वाऽपि	वृ परा १०.१७९	तावत्तिष्ठेन्निहारा	व २.६.४८८
ताम्रपर्ण्याश्चसेतोश्च	कण्व २३	तावत्तु तस्य स्वीकारे	लोहि २६०
ताम्रपात्रं न्यसेत्तत्र	शाता २.१५	तावत्रिगुणितं सूर	ब्र.या. ८.७५
ताम्रपात्रे न गोक्षीरं	प्रजा ११४	तावत् प्राणस्तु विज्ञेयो	वृ परा १२.२२८
ताम्रपृष्ठे क्षुपादा च	वृ परा १०.५६	तावत् संख्यानि वर्षाणि	वृ परा १०.३७३
ताम्रमाज्यभृतं पात्र	वृ परा १०.१३२	तावत्संख्यान्नाहुतीश्च	कण्व ३७६
ताम्ररजत सुवर्णानां	बौधा १.५.३५	तावत्सर्गोभोगानां भोक्तारं	वृ.गौ. ६.१०३
ताम्रस्थो पायसं भुक्त्वा	ब्र.या. २.१८७	तावदप्रयतो ऽन्ये	औ ६.२२
ताम्रायः कांस्यरैत्यानां	मनु ५.११४	तावदेय हि विप्रत्वं	कण्व ७०६
ताम्रिकात् स्फटिकाद्	या १.२९७	तावद्गोपुच्छलोमानि	आंपू ६०
ताम्रे पंचपलं विद्याद्	नारद १०.१२	तावद्भवेद्यज्ञसूत्र यदि	भार १६.४५
तारणेषु चतुर्दिक्षु	वृ हा ५.१२३	तावद्यदिच्छेत् कपिला	वृ.गौ.१०.६३
तारतम्येन दातव्यं	बृ.य. ४.४१	तावद्वर्षसहस्राणि दाता	वृ.गौ. १०.८
तारयन्ति हि दातारं	वृहस्पति १९	तावद्वर्षसहस्राणि मम	वृ.गौ. ७.१३
तारयन्तीह दत्तानि	वृ.गौ. ६.१७३	तावद्वर्ष सहस्राणि	वृ.गौ. ६.१७१

तावद्वर्षसहस्राणि सोऽग्नि	वृ.गौ. ९.६६	तिरस्करणिकानां च रज्जूनां	कपिल ४३७
तावन्न प्राशयेत् पिंड	आश्व २३.८५	तिरस्कुर्वन्ति सहसा	आंपू ३७३
तावन्त्यष्ट सहस्राणि	वृ परा २०.१४२	तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठ	मनु ४.४९
तावन्मात्रस्य कर्तारः मिलित्वा कपिल ४६६		तिरी (रो) हितस्तत्रवेदः	कपिल १८
तावन्मात्रेण तेषान्तु नित्यमेव	कपिल ६३	तीर्थनिन विधानेन	नारद १९.१८
तावन्मात्रेण संतुष्टा	आंपू ५६४	तीर्थस्नानं महादानं	अत्रिस ३९३
तावन्मात्रेण सर्वेषां	कण्व ३३३	तीर्थानि यानि पुण्यानि	वृ परा १.४४
तावन्मासस्तु पक्षो वा	कण्व ५५०	तीर्थेन सहितं हव्यं	वृ हा ४.१२६
तावुऔ ब्रह्मणा प्रोक्तं	ब्र.या. ५.७	तीर्थे पापं न कुर्वीत	वाधू १६१
तावुभौ भूतसंपृक्तौ	मनु १२.१४	तीर्थे पुण्यै पवित्रैश्च	लोहि ४१४
ताश्च धृत्वाऽथ तच्च	भार १६.५९	तिर्यक् पुण्ड्रधरं विप्रं	वृ हा ८.२८३
ताश्च स्वाध्यायतिथयो	भार १५.४५	तिर्यक् पुण्ड्रधरं विप्रं	वृ हा २.४९
तासांच तस्य प्रवराः	वृ.गौ. १०.१७	तिर्यक् पुण्ड्रधरं विप्रं	वृ हा २.६३
तासां क्रमेण सर्वासां	मनु ३.६९	तिर्यक्पुंड्रं न कुर्वीत	व्या ३६
तासां च पितरः सर्वे	आंपू ३९३	तिर्थगूर्य समिन्मात्रा	कात्या १५.१२
तासां चेदवरूक्षानां	मनु ८.२३६	तिर्यङ्मनुष्ययोनौ	प्रजा ४२
तासां पाको न भोक्तव्यो	विश्वा ८.६२	तिल अक्षत ओदकैः	वृ परा ७.१५६
तासां प्रकथिता सद्भि	लोहि ४४९	तिलकं यत्र संयुक्तं मन्त्र	विश्व १.१०९
तासां सोमोऽददाच्छौचं	व १.२८.६	तिलकेन विनाविप्रो	व्या १९७
तासामनवरूक्षानां	नारद ७.१७	तिलकेन विना संध्या	व्या ३२
तासामाद्याश्चतस्रस्तु	मनु ३.४७	तिल तण्डुल पक्वान्नं	व १.२.४३
तासुश्चैवेति मन्त्रेण	व २.३.८२	तिल तण्डुलमुदगाश्च	ब्र.या. ८.३०८
तास्युस्ता निखिलान्यत्र	कण्व ५०८	तिलद्रोणत्रयं कुर्यात्	आंपू १०९७
तासु पुत्राः संवर्ण	बौधा १.८.६	तिलधेनुं च यो दद्यात्	संवर्त २०२
तित्तिरं च मयूरं च	शंखं १७.२७	तिलधेनुं प्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.४९
तित्तिरी तु तिलेद्रोणं	या ३.२७४	तिलधेनुस्तृतीया तु	अ ३१
तिथि काल इति प्रोक्तो	आंपू २७१	तिलपर्वकरं यस्तु	वृ.गौ. ६.१४७
तिथिक्षयपुयोमुंक्ते स	ब्र.या. ९.२७	तिलपात्रच्युतं तोय	वृ परा ५.८९
तिथिनक्षत्रयोगानां मुहूर्त	वृ.गौ. १५.५७	तिलपात्र तु यो दद्यात्	अत्रिस ३२९
तिथि वृद्ध्या चरेत्	देवल ८९	तिलपुष्पकुशादीनि	दक्ष २.३६
तिथिवृद्ध्या चरेत्	या ३.३२३	तिल प्रसृतिभि भाण्डं	वृ परा १०.३१०
तिथ्यग्नी न तिथिस्ति	आंपू ६३७	तिल प्रादानाद्रमते पितृ	वृ.गौ. ६.१६१
तिथ्यादीन्यदि संकल्पे	कण्व ५१	तिलं द्विगुणकं प्रोक्तं	ब्र.या. ११.३८
तिहुंरक्कदिरश्चेति	भार २.२९	तिलं मासं तथाऽऽन्नं	शाण्डि ३.३८
तिभिश्चतुर्भिश्च कुशैः	भार १८.११२	तिलमाषत्रीहियवान	आंपू १०१३

तिलवत्सर्ववस्तूनि	वृ परा ६.२५७	तिष्ठगे विवशोदीनो	व २.५.७२
तिलविक्रयणे चान्द्र	नारा १.२०	तिष्ठत्युरसि तस्यास्तु	वृ.गौ. १०.५१
तिलहोमं प्रकुर्वीत	देवल ६९	तिष्ठन तदेक्षमाणोऽर्क	व व्यास २.२९
तिलहोमायुतं कृत्वा	वृ हा ३.२३१	तिष्ठनचेद्वीक्ष्यमाणोऽर्क	वृ.या. ७.१३५
तिला अपि समा देया	वृ परा ६.२५६	तिष्ठन्ति किल तत्पूजा	आं पू ८६८
तिलानां तु तदर्धस्यात्	वाधू १४५	तिष्ठन्तीभिश्च तिष्ठेत	वृ परा ८.१२८
तिलानां धान्यवस्त्राणां	शंख १७.१६	तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेस्तु	मनु ११.११२
तिलानचावाकिरेस्तत्र	औ ५.१८	तिष्ठन्तोऽपि च ते	वृ परा २.१५०
तिलानद्यत्तिलान्	वृ.गौ. १३.२९	तिष्ठन्त्येकत्र मंत्रास्तु	वृ परा ५.३१
तिलान् कृष्णाजिने कृत्वा	अत्रि ३.२३	तिष्ठन्धावन्प्रजल्पन्	कण्व १४८
तिलान् न्दर्भाश्च नित्यार्थं	वृ परा १०.२२४	तिष्ठन्नग्नेरूपस्थानं	आश्व २.७५
तिलान्वाथ घृतं वाऽपि	वृ.गौ. १७.५१	तिष्ठन्नमन् स्वपन्	भार ४.१०
तिला पवित्रा पापघ्ना	वृ.गौ. १३.२८	तिष्ठन्नासीनः प्रह्वो	कात्या १.१०
तिला बहुविधाश्चोप्या	वृ परा ५.१३८	तिष्ठन् पश्चात् प्राङ्मुखो	आश्व ४.१२
तिलां त्रयाल्दूवी	व २.७.६५	तिष्ठन् पिंडान्तिके	वृ परा ७.२७५
तिला रसा न विक्रेया	पराशर २.८	तिष्ठन् पूर्वा जपं	संवर्त ९
तिलार्चनं तिलमुखं	आंपू १०९९	तिष्ठन्प्रक्षालयेत्पादौ	व्या १०२
तिलास्तु देवतारूपा	वृ.गौ. १३.३०	तिष्ठन्मनो न कुर्वीत	ब्र.या. ८.१३७
तिलास्पृताक्तान्जुहुया	भार ९.३४	तिष्ठन् स्थित्वा तु	व्यास ३.९
तिलेन वै भवान्ते	वृ हा ५.४७५	तिष्ठन् व्रजस्तथा ऽऽसीनः	वृ परा ४.१४६
तिलैः प्रच्छादितां दद्यात्	वृ.गौ. १०.९	तिष्ठेतं प्रत्यङ् मुखी	आश्व १५.२३
तिलैरूथ्याप्यते मूर्द्धा	ब्र.या. ३.४७	तिष्ठेदुदयनात् पूर्वा	कात्या ११.१४
तिलैर्दर्भाभिर्निधायथ	व २.६.३२८	तिष्ठेद्यश्च शिलेच्छायां	वृ परा १२.१५७
तिलैर्वा कुसुमै वाऽपि	वृ हा ४.१३५	तिष्ठेन् मासं पयोऽशित्वा	वृ परा ८.११६
तिलैर्ब्रीहियवैमाषैरद्भि	मनु ३.२६७	तिष्ठेन्नाव्रतिकस्तत्र	वृ परा १२.१०५
तिलैश्च जुहुयात्	वृ हा ६.१०६	तिष्ठः पुनर्वसूचेतिताराः	भार १५.४८
तिलैश्च जुहुयाद् वह्नौ	वृ हा ५.५५३	तिसृणामपि चैतासामन्वहं	कपिल ६३८
तिलैश्च पंचगव्यैश्च	वृ हा ६.८७	तिसृभिर्भूः प्रभृतिभिः	आश्व १.४६
तिलैश्च ब्रीहिभि	व २.६.४०७	तिस्रः कोटयर्द्धकोटी च	पराशर ४.२७
तिलैः स्नात्वा विधानेन	वृ हा ५.३५४	तिस्रः कोटयर्द्ध कोटी	वृ हा ८.२९२
तिलोऽसि तारापति	वृ परा ७.१९८	तिस्रः कोटयोर्ध	व २.५.६८
तिलोदकं करेदत्वा	वृ परा ७.३१८	तिस्रश्चैता पौर्णमास्यो	वृ परा १०.३५४
तिलोदकं पितृन्सम्यक्त	व २.६.१४२	तिस्रः सार्धास्तथा मात्राः	वृ. या. २.१३३
तिलो ऽसिपितृदैव	ब्र.या. ४.७५	तिस्रः सार्धास्तु कर्तव्या	वृ.या. २.६
तिलौदनं च नैवेद्य	ब्र.या. १०.१४७	तिस्रस्तु पादयोर्ज्ञेयाः	शंख १६.२३

तिस्रो ब्राह्मणस्य भार्या	व १.१.२४	तुरिय्यपादमेतस्या ज्ञात्वा	बार ६.१.५४
तिस्रो मात्रा लयं यान्ति	बृ.या. २.३२	तुरीयपञ्चमाभ्यां च सप्त	लोहि ३.८३
तिस्रो राजन्यस्य	बौधा १.८.३	तुरीपदस्य विमल	ब्र.या. २.८१
तिस्रो रात्रीरापगास्ता	आंपू ९२९	तुरीये धाम्नि यस्तिष्ठेत्	प्रजा ७९
तिस्रोवर्णानुपूर्वेण	र.या. ८.२२०	तुरीयो ब्रह्महत्यायाः	मनु ११.१.२७
तिस्रो वर्णानुपूर्वेण	या १.५७	तुर्यपादं न्यसेद्वामे भुजे	विश्वा २.३८
तिस्रो वैश्यस्य	बौधा २.१.१०	तुर्यपादं विनान्याससमा	विश्वा ६.५४
तिस्रोष्टकागजच्छाया	कपिल १.५७	तुर्यभागीति कथित न	लोहि ५१
तीक्ष्णता निकृतिर्माया	वृ.गौ. ८.१०९	तुर्ये निष्क्रमणं मासे	वृ परा ६.१.५०
तीक्ष्णश्चैव मृदुश्च	मनु ७.१.४०	तुर्ये प्राणे तथाऽऽदित्ये	ब्र.या. २.२२
तीन्द्रुपुरुषोम्मथ्य	ब्र.या. ८.२३६	तुलसी काचनं गाञ्च	वृ हा ४.१२
तीरितं चानुशिष्टं च यो	नारद १.५६	तुलसी कानने रम्ये	वृ हा ३.३०१
तीरितं चानुशिष्टं च	मनु ९.२३३	तुलसी गन्धमाघ्राय पितर	ब्र.या. ३.६२
तीर्थे भूयो न पश्येत	बृ.या. ४.५२	तुलसीं चाहरेत्पत्रपुष्पाद्य	शाण्डि ३.१२
तीर्थं दानं व्रतं यज्ञ	बृह १२.३१	तुलसी जाति पुष्पं च	व २.६.५८
तीर्थप्रतिग्रही दृष्टो यदि	आंपू ७६८	तुलसी भृंगराजं च	ब्र.या. ३.६३
तीर्थं प्राप्यानुषंगेण	शंख ८.१२	तुलसीमंजरीश्चैव	व २.६.९५
तीर्थाभावे ऽप्यशक्त्यां	व्यास ३.७	तुलसी राजवृक्षौ च	व २.५.५५
तीर्थमावाहयिष्यामि	शंख ९.४	तुलसीवाटिकाः कुर्याद्	शाण्डि ३.१५
तीर्थमावाहयिष्यामि	ब्र.या. २.१६	तुलसी वा पितृणाञ्च	वृ हा ८.३२४
तीर्थयात्रा विवाहेषु	व्या २२८	तुलसी विल्व पत्राणि	वृ हा ४.५२
तीर्थश्राद्धं गयाश्राद्धं	वृ परा ७.३४३	तुलस्यः सर्वदेवानां	प्रजा १००
तीर्थानि वेदाः सकलं	भार १२.४५	तुलाग्न्यापो विषं कोशो	या २.९७
तीर्थे नद्यां तटाके वा	व २.६.१३१	तुलाधृतं अष्टगुणं	व १.२.५१
तीर्थे नद्यां हृदे वापि	व २.६.३३९	तुलापुरुष इत्येष ज्ञेयः	अत्रिस १३०
तीर्थेः पवित्रैः परमै	कपिल २१४	तुलापुरुष-भूमौ च	वृ परा १०.२०४
तीर्थे शौचं न कुर्वीत	व्या ३४२	तुलामादौ गोसहस्रं कल्प	कपिल ८८७
तीर्थत्रिकानृतोन्माद	व्यास १.२८	तुलामानं प्रतीमानं	मनु ८.४०३
तुच्छानतुच्छैः समतः	कपिल ८१३	तुलाशासनमानाना	या २.२.४३
तुच्छेन येनकेनापि	लोहि १७९	तुलास्त्री बाल वृद्धा	या २.१.००
तुच्छो दूष्यः प्रभवति	लोहि २१२	तुलितो न क्रियायोग्यो	लोहि २७१
तुण्डिकेरान्यलाबूनि	वृ परा ७.२४४	तुलितो यदि वर्धेन स	नारद १९.८
तुभ्यं दास्यम्यहमीति	व्यास २.८	तुल्यो भवेदौरसेन न पित्र्येषु	कपिल ७०५
तुभ्यन्ताद्यास्तथा प्रोक्ता	कण्व ५३६	तुल्यफलानि सर्वाणि	वृ परा २.८९
तुभ्यं हिन्वान इत्यनेन	वृ हा ८.५५	तुल्यं गोशतदानस्य	वृ परा ५.२८

तुल्यार्थानां विकल्पः	पु २५	तृतीयः पुत्रिका विज्ञायते	व १.१७.१५
तुषांगारकपालेषु	औ २.३८	तृतीयं क्रीतविक्रीतं	वृ परा ५.१४२
तुषाज्जलं यवस्थं	वृ परा ५.११	तृतीयं नाम संस्कारं	वृ हा २.९२
तुष्टिश्च परमाख्याता	ब्र.या. १०.७३	तृतीयं पितृमेधार्थं वैश्वेदवे	विश्वा ८.१२
तुष्ट्यर्थं वासुदेवस्य	वृ हा ६.७९	तृतीयं सूर्यं दैवत्यं	बृ.या. ४.६४
तुष्यन्ति अन्नेन यस्मात्	वृ.गौ. ६.२९	तृतीय मण्डलं पश्चात्	वृ हा ७.१०१
तू ययं तारयध्वं मा	वृ परा ११.२३४	तृतीयया च तत्पाद्यं	वृ हा ५.२०५
तूर्यधौषैर्नृत्यगीतै	व २.६.२६६	तृतीयवत्सरे चौलं	व २.३.१९
तूर्यधौषैर्नृत्तगीतै	व २.७.५४	तृतीय वामपादे तु	व २.६.१५३
तूलिका उपधानानि पुष्पं	यम ५०	तृतीयः शिष्टागमः	बौधा १.१.४
तूष्टि (ष्णी) करणवा (रा)	कपिल २३७	तृतीयांगुलमुष्टीनां	भार ८.११७
तूष्णीकं परमेशस्य तुष्टये	कपिल ९१८	तृतीयावरणं तस्य	वृ हा ३.२६८
तूष्णीं कुचं ततो गृह्यस्वयं	कपिल ३१५	तृतीये चैवभागे तु	दक्ष २.२८
तूष्णीं तिष्ठन्ति वा	कण्व १५५	तृतीये तूदकं कृत्वा	अत्रिस २१८
तूष्णी पृथगपो दत्त्वा	कात्या १७.८	तृतीये येन भूयश्च	आश्व ९.१५
तूष्णी यत्र तु होमादौ	वृ परा ७.२०७	तृतीये ऽब्दे चतुर्थे वा	वृ परा ५.५५
तूष्णीं वा प्रति विप्राणा	कपिल ७१	तृतीये वत्सरे चौलं	आश्व ९.१
तूष्णीं समिधमादाय	आश्व १०.२३	तृतीये सप्तमे षष्ठे	भार १५.५०
तूष्णीमदग्निं परिषिच्य	वृ हा ६.१११	तृतीये ऽहनि मध्याह्ने	वृ हा ५.४४२
तूष्णीमश्ना समास्थाप्य	कपिल ३०७	तृप्ता जातास्तथा त्वं	आंपू १०९१
तूष्णीमासीत तु जपं	बृ.या. ७.१४९	तृप्तान् ज्ञात्वा ततो विप्रां	वृ परा ७.३१३
तूष्णीं सागुष्ठं	व १.१२.१६	तृप्ताः प्रश्नविहीनस्तु	ब्र.या. ५.५
तृणकाष्ठदुर्माणांच	औ ९.१९	तृप्ता यान्त्यग्निं	बृहस्पति २०
तृणकाष्ठदुर्माणां च	मनु ११.१६७	तृप्ताः स्थेति तथा प्रोक्ते	आंपू १०९०
तृणकाष्ठमविकृतं	बौधा २.१.८०	तृप्तिं कृत् पितृ मातृणां	वृ परा ७.१६१
तृणकाष्ठादिरज्जुना	पराशर ७.३२	तृप्तिकृतसौरभेयाश्च	वृ परा ६.३३९
तृणगुल्मतुरुणां च	व २.६.४९८	तृप्तिदं फाल्गुनी	आंपू ४८१
तृणगुल्मलतानां च	मनु १२.५८	तृप्तिर्न जायते तेषां किंतु	कपिल २१६
तृणपर्णोस्सदाकुर्याद्	कण्व १४३	तृप्त्यर्थं वै पितृणां	बृ.या. ७.९१
तृणभृम्यग्न्युदक	व १.१३.२८	तृप्त्यै संतरणायापि	आंपू ४८४
तृणं वा यदि वा काष्ठं	वाधू १६४	तृप्यतामिति सेक्तव्यं	वृ परा २.१६९
तृणमुष्टिविधानञ्च	वृ.गौ. १३.२१	तृष्णा बुभुक्षांचालस्यं	वृ.गौ. ८.११०
तृणा इच्छन्ति दर्भत्व	वृ.गौ. १५.७२	ते अपि सारसयुक्तेन	वृ.गौ. ५.१०४
तृणानि भूमिरुदकं वाक	मनु ३.१०१	ते अपि हस्तिरथैः यान्ति	वृ.गौ. ५.१०७
तृणेषुकाष्ठतक्राणां	शंखं १७.१७	तेकारं दक्षिणे हस्ते	वृ परा ११.१२२

ते चापि मनुजैः साम्यं	कपिल ८०६	तेन संपीड्यमानास्ते घोष	नारा ७.२०
ते चापिं वाहान् सुबहू	मनु १०.२९	तेन सर्वे ऽपि विप्रस्य प्राप्नु	कपिल ३५३
ते जन्मबन्धनिर्मुक्ता	बृ.या. ४.४४	तेनाग्नयो हुताः सम्यक्	अत्रिस ३३२
तेजः शक्तिं समाविश्य	वृ हा ३.१७०	ते नाग्नौ करुणं कुर्याद्	ब्र.या. ५.६
तेजस्कामस्तथा ऽऽज्येन	भार १९.४४	तेनानुभूय ता यामी	मनु १२.१७
तेजस्तिमिररेतमैतच्छेषेणैव	कपिल २५७	तेनान्नेन सुरान्	बृ.गौ. १३.१२
तेजस्वीनां सहस्रांशुरि	बृ.या. ४.१५	तेनापराधः सुमहान्	आंपू २३१
ते जायन्ते तादृशानां	कपिल ८०२	तेनायं समभागेव न तुरीयां	कपिल ६९४
तेजोमध्ये स्थितः सत्यः	बृह ९.१२९	तेनास्याहवनीयत्वं	बृ.गौ. १५.२९
तेजो ऽसि शुक्रमित्याज्य	पराशर ११.३२	तेनैव जुहुयाद् भक्त्या	वृ हा ५.५४५
तेजो ऽसि शुक्रमित्याज्यं	वृ परा ९.२९	ते नैव तस्यसिद्धि स्यात्	व्या ३०३
तेजो ऽसीति तुरीयंच	ब्र.या. २.४४	तेनैव परितुष्टो ऽहं	बृ.गौ. २१.२९
तेजो ऽसीति परमेष्ठी	ब्र.या. २.७९	ते नैव बहूनिना दाहं	लोहि १३२
ते तमर्थमपृच्छंत देवा	मनु २.१५२	तेनैव सर्वमाप्नोति	बृ.या. ७.९२
ते तृप्त तर्पयन्त्येनं	कात्या १४.१३	तेनैव वांछित प्राप्ति	वृ परा १२.३४१
ते तृप्तास्तर्पयन्त्येनं	या १.४७	तेनैव सीदमानेन	दक्ष २.४३
ते तिलाः कृमितुल्या	वाधू १९७	तेनैव सूक्तजाप्येन	आश्व १.४४
ते द्विजा नावमन्तव्या	वृ परा १.३१	तेनैव हि विशुद्धः स्याद्	वृ हा ६.३२८
तेन कार्यं विशुद्ध्यर्थ	शाता ५.२३	तेनैवारभ्यते देवी	बृ.या. ४.२४
तेन क्रयो विक्रयश्च	नारद २.४४	तेनोदकेन द्रव्याणि	बृ.या. ७.११२
तेन गच्छन्ति वै स्वर्ग	बृ.गौ. २२.६	तेनोपतिष्ठेल्लभते न	ब्र.या. १०.६
तेन गच्छेच्छ्रियायुक्तो	वृ.गौ. ७.२०	तेनोपसृष्टो यस्तस्य	या १.२७२
तेन तत्पापशुद्ध्यर्थ	शाता २.४३	तेनोपसृष्टो लभते	या १.२७५
तेन तावत्तस्य कुले जातानां	कपिल ४२३	तेनोपहतपुंसा तु कर्म	वृ परा ११.४
तेन तुष्टो भवेद्देवो	व २.६.४२९	ते परेषां हव्यकव्ययो	कण्व २७७
तेन दानेन पूतात्मा	वृ.गौ. ९.६५	तेषां वाक्येन दौहित्र	लोहि ५५७
तेन देवनिकायानां	बृह ९.१७०	ते पापिनः प्रतिष्यन्ति	भार १६.५७
तेन देवास्त्रयस्त्रीशत्पितर	वृ.गौ. ९.५९	ते पृच्छन्तिमहात्मानं	ब्र.या. ६.१४
तेन दोषश्च सुमहान्	आंपू १००४	ते पृष्टास्तु यथा ब्रूयु	मनु ८.२६१
तेन मामभिषिञ्चामि	ब्र.या. १०.१३	ते पृष्टास्तु यथा ब्रूयुः	मनु ८.२५५
तेन पुत्रेण सर्वास्ता	ब्र.या. ७.१४	ते ऽप्यरोषाधनिर्मुक्ता	वृ परा १०.६५
तेन मंत्रेण तत्प्रीत्यै	कपिल २६६	ते ब्राह्मणाद्याः स्वकर्मस्था	बौधा १२.१८
तेन मन्त्रेण पानीयमन्	ब्र.या. ४.८०	तेभ्यः प्रणम्य भक्त्या ऽथ	वृ हा ४.१४०
तेन यद्यत्सभृत्येन	मनु ७.३६	तेभ्यश्चैवाऽऽशिषो	आश्व २३.१०३
तेन सप्तर्षयः सिद्धाः	बृ.गौ. १५.२१	तेभ्यः सुत ततः प्रीत्या	आंपू २

तेभ्य स्तेज समुद्धृत्य	वृ.गौ. ९.२६	तेषां तु निर्वेशो द्वादशा	घा २.१.६५
तेऽभ्यासात्कर्मणां	मनु १२.७४	तेषां तु पावनायाह	वृ.गौ. ३.५६
तेभ्यो दत्तमनन्तं हि	वृ.या. ४.५५	तेषां तु सततं कर्म नित्य	कपिल ६२६
तेभ्योऽधिगच्छेद् विनयं	मनु ७.३९	तेषां तेषां क्रियामेदा	आंपू १०४४
तेभ्योऽनुज्ञाभिप्राप्य	शाता १.३१	तेषां त्रयाणां शुश्रूषा	मनु २.२२९
तेभ्यो लब्धेन भैक्षेणं	मनु ११.१२४	तेषां त्रेताग्निना दग्धं	आंड ६.११
ते यान्ति अमलवर्णीभैः	वृ.गौ. ४.७६	तेषां त्ववयवान् सूक्ष्मान्	मनु १.१६
ते यान्ति अश्वैः वृषैः	वृ.गौ. ५.७०	तेषां दत्त्वा तु हस्तेषु	मनु ३.२२३
ते यान्ति आदित्यवर्णीभिः	वृ.गौ. ५.६८	तेषां दोषानभिख्याप्य	मनु ९.२६२
ते यान्ति काञ्चनैः यानैः	वृ.गौ. ५.७२	तेषां न दद्याद्यदि	मनु ८.१८४
ते यान्ति नरकं घोरं	वृ.गौ. १५.६८	तेषां नाहं यथा योग्यं	भार १५.१३८
ते यान्ति नरशार्दूल	वृ.गौ. ४.२६	तेषां परेषां विदुषां धर्म	लोहि २३५
ते यान्ति निरयं घोरं	वृ हा ८.२६७	तेषां पापव्यपोहार्थं	वृ परा ७.३०६
ते यान्त्यादित्यकल्पेन	वृ.गौ. ९.३१	तेषां प्रतिग्रायिता यजमानस्य	कपिल ४६१
ते रुक्तमाचरेद् धर्ममेको	वृ हा ६.२२८	तेषां प्रथम एवेत्यहौय	बौध २.२.३८
तेषां कर्मफलत्यागं	बृह ११.४८	तेषां प्राक्श कुशैः कार्यं	कात्या ८.१४
तेषामपि निवासत्वान्	वृ हा ३.१०५	तेषां ब्राह्मणो धर्मान्	व १.१.४१
ते विमानैः महात्मानो	वृ.गौ. ५.६६	तेषां मध्ये तु यन्नित्यं	दक्ष २.३७
ते विष्णुं नैव जानन्ति वृथा	ब्र.या. ९.१३	तेषां मातुरग्रेऽधिजननं	व १.२.३
ते वै खरत्वमुष्ट्रत्वं	अत्रि ५.१७	तेषां मासत्वनामेदं	कण्व ४०
ते शुद्धगोत्रिणः स्युर्वे तदा	कपिल ३५७	तेषां यत्प्रीतये दत्त	वृ हा ४.१७०
तेषान्तु नरके घोरे	ब्र.या. ८.१७९	तेषां यशोभि कामाना	वृ.गौ. ६.६८
तेषान्तु समवेतानां	मनु २.१३९	तेषां वदमधीत्य वेदौ	व १.७.२
तेषां अलाभ आचार्यं	व १.१७.७३	तेषां विनिमयेनैव शुद्धि	शाण्डि ३.५१
तेषां अवाप्तव्यवहारान्	बौधा २.२.४२	तेषां शङ्कानिरासाय	आंपू ८८२
तेषा उपरिहस्तं तु	वृ हा ४.१९६	तेषां श्राद्धैककरणमेतेषां	आंपू १०६९
तेषां ग्राम्याणि कार्याणि	मनु ७.१२०	तेषां श्राद्धे त्यागमात्रा	आंपू १०७९
तेषां घोरमहाकायम्	वृ.गौ. ४.४७	तेषां संकरयोगाश्च	वृ हा ४.१४४
तेषां चतुर्दशी प्रोक्ता	वृ परा ७.२९०	तेषां सततमज्ञानां	मनु ११.४३
तेषां चत्वारं पूर्वं	बौधा १.१.१०	तेषां सभागतोवह्नि	वृ.गौ. १५.३१
तेषांच धर्माः ब्राह्मणस्य	विष्णु २	तेषां स्वं स्वं अभिप्रायं	मनु ७.५७
तेषां च विश्वेदेवास्ते	आंपू ६७१	तेषांभनुरोधेन पारत्र्यं	मनु २.२३६
तेषां तद्विलयं यातु तमः	वृ.गौ. १०.४२	तेषांभन्नं सोदकञ्च	वृ हा ५.२८३
तेषां तामाशिषं गृह्य	आंपू ८९७	तेषांभन्यतमो भूत्वा	वृ हा ७.३३२
तेषां तु निर्वेशः पतित	बौधा २.१.६२	तेषांमपि हितार्थाय	कण्व ६३७

तेषामर्थे नियुंजीत	मनु ७.६२	तैजसानि तु पात्राणि	वृ परा ७.११८
तेषामाद्यमृणादानं	मनु ८.४	तै पंचदशभिः काष्ठा	वृ परा १२.३५८
तेषामारक्षभूतं तु पूर्वं	मनु ३.२०४	तैरेव शुभ्रतां चन्द्रे	विष्णु १.३६
तेषामिदं तु सप्तानां	मनु १.१९	तैरेव स्पर्शमात्रे तु	व २.६.५२४
तेषामुदकमानीय स	मनु ३.२१०	तैलचौरस्तु पुरुषो	शाता ४.१३
तेषामेव तुल्यापकृष्टोवधे	बौधा १.१०.२१	तैलधारावदच्छिन्नं	बृ.या. २.७
तेषामुपराताक्षाणां	वृ परा ८.६२	तैलपिष्टकजीवी तु	औसं २३
तेषा वर्णानुपूर्व्येण	बौधा १.८.२	तैलभैषज्यपाने च	लघुयम ५१
तेषा वेदविदो ब्रूयु	मनु ११.८६	तैलभ्यंजनं स्नानं	औ ५.२१
तेषु काले काल एव	बौधा १.७.२५	तैलं कुम्भहसं चैव	अ ८०
तेषु गव्यानि निक्षीप्य	वृ हा ८.२४३	तैलं प्रतिनिधिस्तस्य	लोहि ३६५
तेषु तेषु च गृणही	ब्र.या. ८.४५	तैलं शुक्तं तथा मांसं	वृ हा ५.३३७
तेषु तेषु तु कृत्येषु	मनु ९.२९७	तैलं सोमञ्च विक्रीणन्	बृ.गौ. १६.३७
तेषु तेष्वपि देवस्य	वृ हा ७.३३३	तैलमास्तरणं प्राज्ञः	संवर्त ६९
तेषु दिक्पतयः पूज्याः	व २.७.४२	तैलाभावे गृहीतव्यं	व्या ३०७
तेषुवह्निषु तत्पश्चात्	कपिल १.४१	तैलाभ्यक्तो घृताभ्यक्तो	अत्रिस १८७
तेषुषड् बन्धुदायादाः	नारद १४.४५	तैलाभ्यंग महाराज	वाधू ४०
तेषु सम्यग्वर्तमानो	मनु २.५	तैलेन लवणेनापि	आंपू २३५
ते षोडश स्याद्धरणं	मनु ८.१३६	तैश्चेदगो खरमत्स्याश्च	वृ परा २.१४७
तेष्वपि पूर्वं पूर्वं श्रेमान्	बौधा १.११.११	तैः श्राद्धं तु ततः कुर्यात्	लोहि ३८०
तेष्वपचरत्सु दण्डं	व १.१९.६	तै सार्द्धं चिन्तयेन्नित्यं	मनु ७.५६
तेष्वर्चयेत्ततो धीमान्	वृ हा २.५४	तै स्तस्य च सुसंस्कारा	वृ हा ६.२३३
ते सपिण्डाः प्रकथितास्ते	कण्व ७५६	तैस्तु दत्तं हुतं तप्तं	बृ.गौ. १५.८१
ते सर्वे पनसस्तत्वेकः	आंपू ५४१	तैस्तैस्ते निखिला ज्ञेया	आंपू २९८
ते सर्वे पापसंयुक्ताः	वृ परा ८.५७	तोयदः सर्वकामसमृद्ध	व १.२९.८
ते हि पापकृतां वैद्या	आंड २.५	तोयपूर्णानि रम्याणि	वृ .गौ. ७.८६
ते हि पापे कृते वेद्या	पराशर ८.७	तोयमन्नं च वाच्छन्ति	वृ परा १०.५
तेह्यावश्यकस्थकार्यस्य	कपिल ४६९	तोयवर्त्रितवापीव निरर्थो	वृ हा ५.३१
तैजसं चेदादायोच्छिष्टी	बौधा १.५.२९	तोयोद्भवानि देयानि	शंख १४.१६
तैज समृण्मयदारवतान्	व १.३.४८	तौ तु जातौ परक्षेत्रे	मनु ३.१७५
तैजसवदुपलमणीनां	व १.३.४९	तौधर्म पश्यतस्तस्य	मनु १२.१९
तैजसवदुपलमणीनाम्	बौधा १.५.४६	तौर्यस्त्वयामूर्ध्नि	व २.४.३२
तैजसानां पात्राणं पूर्ववत्	बौधा १.६.३७	त्यक्तमातामहश्वाचापि	कपिल ३८१
तैजसानां मणीनां च	मनु ५.१११	त्यक्ता येनोढभार्या	वृ परा ६.२८९
तैजसानामुच्छिष्टानां	बौधा १.५.३४	त्यक्त्वा तदाश्विने	वृ परा १२.१०३

त्यक्त्वा पितामहं	आंपू १००२	त्रयोदर्भाश्च पिञ्जुल्यां	ब्र.या. ८.३१०
त्यक्त्वा सम्यग्विचार्यै	आंपू १००३	त्रयोदश तृतीये स्याद्	आंपू ६०९
त्यक्त्वा विषयभोगांश्च	दक्ष ७.२१	त्रयोदश दक्षिणं बाहुं	ब्र.या. २.१२०
त्यक्त्वोन्द्रियसुखं	आश्व १.१८८	त्रयोदशीं दक्षिणे तु	वृ हा ५.१९९
त्यजेन्तोऽपतितान्	लघुयम १९	त्रयोदशी मघा कृष्णा	औ ३.११३
त्यजेत्पितामहं यत्ना	आंपू १००५	त्रयोदशेऽह्नि सम्प्राप्ते	व २.६.३७९
त्यजेन्नग नदीनाम्नी	वृ परा ६.३२	त्रयोदशेऽह्नि वा कुर्यात्	व २.६.३६३
त्यजेन्नदुष्टां दण्ड्य	व्यास २.९	त्रयोदश्यां तथा रात्रौ	औ ९.१०८
त्यजेत्पर्वितं पुष्पं	प्रजा १०८	त्रयो धर्मो निवर्तन्ते	मनु १०.७७
त्यजेदाश्वयुजे मासि	मनु ६.१५	त्रयोऽपि नियता यस्य	वृ परा १२.१२६
त्यजेद्वेशं कृतयुगे	पराशर १.२५	त्रयोलक्षास्तु विज्ञेया	या ३.१०२
त्यागं कृत्वा चित्तमपि	कपिल ९.७६	त्रयोलोकास्त्रयो	अत्रिस २५
त्रपु-सीसक- ताम्रादि	वृ परा १०.११	त्रयो वर्णा द्विजातयो	व १.२.२
त्रपुसीसकताम्राणां	या १.१९०	त्रयो वर्णा ब्राह्मणस्य	व १.१.४०
त्रपुहारी च पुरुषो जायते	शाता ४.६	त्रसरेणवोष्टौ विज्ञेया	मनु ८.१३३
त्रय एव पुरा रोग	व १.२१.२६	त्रातारमिन्द्र इत्युचा	वृ हा ८.३८
त्रयणामपि वह्नीनामग्नि	बृ.गौ. १५.४१	त्रातारमिन्द्र त्वन्नोऽग्ने	वृ परा ११.१२३
त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति	मनु ८.१६९	त्रातारमिन्द्रमितीन्द्र	वृ परा ११.२२१
त्रयस्तु वैष्णवा दण्डा	वृ हा ४८	त्रायते दानम् अपि एकम्	वृ.गौ. ३.८०
त्रयस्तु स्नातका	वृ परा ६.१६५	त्रासाख्यः स्पष्टिकप्रख्यः	भार ७.३३
त्रयस्त्रिंशंच विप्राणां	वृ परा ५.१९१	त्रासितोऽपि यथा मूर्खै	शाण्डि ४.२३७
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसंख्य	आंपू ६०२	त्राहि त्राहीहि लोकेश	वृ हा ८.१८७
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसंख्य	कण्व ६५१	त्रिंशत् कोदयस्तु विख्याता	वृ परा २.७४
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसंख्य	कण्व ३५३	त्रिंशत्कोदयस्तु विख्याता	बृ.या. ६.१२
त्रयस्त्रिंशद्धि अमरैः सेंदैः	भार १२.३२	त्रिंशद्गुगसहस्राणि	ब्र.या. ११.६०
त्रयस्त्वञ्ज त्रयःश्रीकाःशङ्ख	कपिल ७२०	त्रिंशद्वर्ष त्यक्तपितृ	आंपू १८२
त्रयः स्वतन्त्रता लोकैऽस्मिन्	नारद २.२८	त्रिंशद्देहेत्कन्या	मनु ९.९४
त्रयाणां चैव देवानां	वृ.या. ६.१९	त्रिंशाशो रोमविद्धस्य	नारद १०.१५
त्रयाणामपि चैतेषां	मनु १२.३०	त्रिंशाहं कन्यकामाता	ब्र.या. १३.२२
त्रयाणामपि चैतेषां	मनु १२.३४	त्रिसद्वर्षकृतात्पापात्पूयते	वृ.गौ. ९.३८
त्रयाणापि यज्ञानां श्रेष्ठ	लता ४.४१	त्रिकालं च त्रिलिङ्गं	बृ.या. २.८३
त्रयाणामप्युपायानां	मनु ७.२००	त्रिकालमर्चयेन्नित्यं	व २.५.८१
त्रयाणामुदकं कार्यं	मनु ९.१८६	त्रिकालस्नानयुक्तस्तु	लहा ५.५
त्रयीमय त्रयीनाथ त्रयीलम्भ	बृ.गौ. १८.३९	त्रिकालस्नानयुक्तस्य	बृ.गौ. १७.२२
त्रयोऽग्नयस्त्रयोवर्णा	भार १५.८८	त्रि कृत्वोऽभ्युपेयादपो	व १.७.१२

त्रिकृत्वोलिंगशौच तु	भार ३.१६	त्रिपदां वा त्रिरावृत्य	औ ३.१०६
त्रिकोटिकलमुद्गत्य	वृ हा ५.५२७	त्रिपदा वापि सर्वेषां	ब्र.या. ८.३५
त्रिकोणमध्ये बिन्दुश्च	विश्वा ३.३५	त्रि परिमृजेत	बौधा १.५.२०
त्रिकोणमध्ये ह्रिकारं	विश्वा १.११३	त्रिपलं हेमसंयुक्ता	ब्र.या. ११.१५
त्रिकोणयन्त्रसंलेख्य	विश्वा १.१०५	त्रि पिवेत्किंपिबसीति	आश्व ४.५
त्रिगुणन्तु वनस्थानां	दक्ष ५.९	त्रि पिवेदीक्षितं तोयमास्यं	लहा ४.३६
त्रिगुणं क्षत्रियस्यैव	बृ.या. ४.१४	त्रिपूर्वं वेदिविच्छित्ता	कण्व ४३३
त्रिगुणं च वनस्थानां	शंख १६.२४	त्रिप्रज्ञं च त्रिधामं च	बृ.या. २.१८
त्रिगुणं वाचरेद्वेदं	अ ९८	त्रिप्राणासंयमो भूत्वा	भार १३.७
त्रिगुणं वा जपेद्वेदं	अ २९	त्रि प्राश्नीयादपः पूर्वं	औ २.१९
त्रिगुणं सूत्रमाद्यात्	प्रजा १०२	त्रि प्राश्नीयाद्यदम्भस्तु	शंख १०.१०
त्रिणाचिकेतः पंचाग्नि	व १.३.२२	त्रि प्राश्यांगुष्ठमूलेन	वृ हा ४.१९
त्रिणाचिकेतः पंचाग्नि	मनु ३.१८५	त्रि प्राश्यापो द्विरुन	या १.२०
त्रितीयामग्निदीक्षी च	व्या ३५५	त्रि प्राश्यापो द्विरुन्	कत्या १.५
त्रितीया रक्तपिङ्गाक्षी	वृ.गौ. ९.४८	त्रि प्रोक्ष्य स्थापयेत्	आश्व १२७
त्रिदण्डग्रहणादेव	वृ परा १२.१३८	त्रिफलान्यहसंयुक्ता	ब्र.या. १३.३१
त्रिदण्डग्रहणादेव	दा ३१	त्रिभि पादैरपः पीत्वा	विश्वा २.३३
त्रिदण्डग्रहणादेव	लिखित २२	त्रिभिलिंगे कस्तद्	व २.३.९५
त्रिदण्डग्रहणादेव	लघुशंख १८	त्रिभिश्चकुशपिजलैर्जपदे	व २.४.१२९
त्रिदण्डधारणं मौनं	बृ.गौ. २१.३	त्रिभिश्च प्राणायामै	बौधा २.४.१०
त्रिदण्डभृद्योहि पृथक्	लहा ६.२३	त्रिभिः श्लोकसहस्रैस्तु	वृ परा १२.३७७
त्रिदण्डं वैणवं सम्यक्	लहा ६.६	त्रिभि स्वरैर्यदा	बृ.या. ४.३३
त्रिदण्डमवलम्बन्ते	वृश ८.१७१	त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः	बृ.या. ४.१३
त्रिदण्डमेतन्निक्षिप्य	मनु १२.११	त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः	मनु २.७७
त्रिदंडं व्यपदेशेन	दक्ष ७.३०	त्रिमात्रः प्रणवस्तत्र	वृ परा १२.२४३
त्रिदिनंचैकभक्ताशी	पराशर ८.४६	त्रिमात्रं च त्रिकालं च	वृ परा ३.११
त्रिदिनं चैकदिवसं	आंपू ६७८	त्रिमात्रं चैव त्रिब्रह्म	बृ.या. २.६९
त्रिदिनं षष्ठशाखीनां	ब्र.या. १३.२४	त्रिमुखं च त्रिदैवत्यं	बृ.या. २.७४
त्रिधाचाचमनं प्रोक्तं	विश्वा २.६	त्रिमुहूर्तस्तु प्रातः	प्रजा १५६
त्रिपक्षादब्रुवन् साक्ष्य	मनु ८.१०७	त्रिरहर्त्रीर्निशायां च	मनु ११.२२४
त्रिपक्षे चैव कृच्छ्र स्यात्	अत्रिस ३०५	त्रिराटामेदपः पूर्वः द्वि	मनु २.६०
त्रि पंच सप्त वा हुत्वा	वृ परा ११.९५	त्रिराचामेदपः पूर्व द्विः	मनु ५.१३९
त्रिपदा चैव गायत्री	बृ.या. ४.४७	त्रिरात्मा त्रिस्वभावश्च	बृ.या. २.१००
त्रिपदाजपसाद्गुण्यं	विश्वा ७.१५	त्रिरात्मानं तैजसं च	बृह ९.११०
त्रिपदा नामगायत्री	कण्व ११९	त्रिरात्रं प्रथमे पक्षे	पराशर ४.९

त्रिरात्रं च व्रतं कुर्यात्	शंख १७.५१	त्रिरारंशोधयित्वाथ	व २.५.४२
त्रिरात्रं तु व्रतं कुर्यात्	शंख १७.४९	त्रिरारमष्टवारं वा निमज्	वाधू ८७
त्रिरात्रं दशरात्र वा सम्बत्	व २.४.७०	त्रिवारमेवं कृत्वा तु	आश्व १५.२५
त्रिरात्रफलदा नद्यो माः	बृ.या. ७.११९	त्रिवासरं प्रकुर्वीत	वृ हा ७.२७३
त्रिरात्रं उत्सवं तत्र	बृहा ५.१५२	त्रिविक्रमो रक्तवर्णः	वृ हा २.८५
त्रिरात्रं उपवासः स्यात्	आप ७.६	त्रिविक्रमोऽग्नि संकाशो	वृ हा ७.११०
त्रिरात्रं दक्षिणि चाहर्दिनं	कपिल ११०	त्रिविक्रमन्तु वामांसे	वृ हा २.७७
त्रिरात्रं दशरात्र	औ ६.१०	त्रिविधं क्षत्रियस्यापि	नारद २.४९
त्रिरात्रं दशरात्र	या ३.१८	त्रिविधं केचिदच्छन्ति	बृ.या. ८.७
त्रिरात्रं रजस्वला	व १.५.७	त्रिविधं पापशुद्ध्यर्थं	बृ.या. ४.५१
त्रिरात्रं स्वश्रुमरणे	औ ६.३३	त्रिविधं प्राणसंरोधं	वृ परा १२.२४५
त्रिरात्रं सतिलाहारः	वृ परा १०.६६	त्रिविधः साहसेष्वेवं	नारद १८.९०
त्रिरात्रं स्यात्तथाचार्यो	औ ६.३१	त्रिविधस्यास्य दृष्टस्य	नारद २.६७
त्रिरात्रमथ षड्रात्र	शंख १५.१८	त्रिविधा त्रिविधैषा	मनु १२.४१
त्रिरात्रमाचरेच्छूदो दानं	अत्रिस १७६	त्रिविधानं त्रिधा	बृह ९.१३७
त्रिरात्रमाशुद्धिं प्रोक्ता	व २.६.४३९	त्रिविधो जपयज्ञः स्यात्तस्य	ल हा ४.४०
त्रिरात्र माहुराशौचमाचार्ये	मनु ५.८०	त्रिवृच्च ग्रंथिनेकेन	वृ हा ५.४४
त्रिरात्रमुपवासी स्यात्	पराशर ११.१२	त्रि वृत्ताग्रन्थि संयुक्तं	व २.३.४६
त्रिरात्रव्रतवन्ध्यं	बृ.या. १२.१६	त्रिवृत्सोम इति प्रश्नः	कण्व ५२४
त्रिरात्रेण विशुद्धिं स्याद्	अत्रिस २२७	त्रिवृद्ग्रन्थिरिति प्रोक्ता	भार १५.११२
त्रिरात्रेण विशुद्ध्येत	औ ९.६०	त्रिवृद्ध्वं वृतं कार्यं	कात्या १.२
त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे	बृ.गौ. १४.२२	त्रिवृद्ब्रह्मणि निष्णातः	बृ.या. ४.७९
त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे	वृ परा ८.२८७	त्रिवेदमन्त्रसंयोगादग्नि	बृ.गौ. १५.४६
त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे	पराशर ३.५२	त्रिशंकुं वर्जयेद्देशं	देवल ४
त्रिरात्रोपोषितो जप्त्वा	या ३.३०१	त्रिशत्कर्कटके नाड्यो	आंपू ६४६
त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा	या ३.३०३	त्रि-षट्-दश-दशद्वाभ्यां	वृ परा ८.४
त्रिरात्रोपोषितो वैश्यः	वृ परा ८.२९७	त्रिषण्णवैकधाऽऽवर्त्य	वृ परा २.१४२
त्रिराप्लुत्य समाचम्य	आश्व १.१७	त्रिषवणमुदमुपस्पृशेत्	व १.९.६
त्रिरावर्त्य ततः पश्चाद्	बृ.या. ४.३१	त्रिषु पञ्चसु षट्ष्वेवं	लोहि २६४
त्रिरुद्रेष्ट्याथ नेत्रेण	कात्या ८.४	त्रिषु वर्णेषु सादृश्य	बौधा १.८.१६
त्रिर्वित्तं पूर्णपृथिवी	या १.४८	त्रिषु स्थानेषु सा	व्या ८७
त्रिलोकनाथ भो कृष्ण	वृ.गौ. ४.३३	त्रिष्टुप् च जगती चैव	बृ.या. ३.१४
त्रिवारं क्षालये पश्चात्	व २.५.४८	त्रिष्टुप् च जगती चैव	भार १९.१३
त्रिवारं चैव सावित्री	आश्व १२.१३	त्रिष्टुप् च जगती चैव	वृ हा ७.५३
त्रिवारं वैष्णवैर्मन्त्रैः	वृ हा ७.३०८	त्रिष्टुप् च जगती चैव	वृ परा २.६५

त्रिष्वप्येतेषु दत्त हि	मनु ४.१९३	त्रैन् कृच्छानाचरेद्	या ३.२८८
त्रिष्वप्रमाद्यन्नैतेषु त्रीन्	मनु २.२३२	त्रेताग्नि संग्रहश्चेति	व्यास १.१५
त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यं	मनु २.२३७	त्रेतायां ग्राममात्रं तु द्वापरे	नारा १.८
त्रिष्वेध्वाद्याः त्यक्तपिता	कपिल ३६३	त्रेतायुगे तु सम्प्राप्ते	नारा १.५
त्रिसन्ध्यासु जपेदेवं	वृ हा ३.३४	त्रेधा विभज्य तत्पिण्डं	आंपू १७८
त्रिसन्ध्यास्वयुतं	वृ हा ६.२९०	त्रैयम्बकं करतलं	कात्या २८.१८
त्रि सप्तकुलमुद्धृत्य	वृ परा ६.१२५	त्रैलोक्यधारणाय	वृ परा ५.४९
त्रिसहस्रजपं कुर्यात्	विश्वा १.९	त्रैलोक्येऽस्मिन्निरुद्धिग्नौ	बृ.गौ. २२.३
त्रिसहस्रजपं मासं	कण्व १०४	त्रैवार्षिकाधिकान्नो यः	या १.१२४
त्रिस्त्रि स्यात्प्रतिनामैव	आश्व ६.६	त्रैविद्यनृपदेवानां	या २.२१४
त्रिस्नानं ब्रह्मचर्यं	भार १९.४१	त्रैविद्यवृद्धा यं ब्रूयुः	व १.१.१५
त्रिस्पृशानाम सा प्रोक्ता	ब्र.या. ९.२२	त्रैविधसाधुम्यः संप्रयच्छेत्	व १.१७.७८
त्रीस्तु तस्माद्धविशेषात्	मनु ३.२१५	त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्या	मनु ७.४३
त्रीस्त्रीन्यथाक्रमेणैव	भार ११.५७	त्रैविद्यो हेतुकस्तर्को	मनु १२.१११
त्रीणि कृच्छ्रापय कामश्चेद	अत्रिस १६८	त्र्यक्षरं त्रयाणाञ्च	वृ हा ७.३६
त्रीणि त्रीणि त्रिधाप्रोक्तं	विश्वा ६.६६	त्र्यंगुलैरुद्धता तद्दद्	वृ परा ११.२७५
त्रीणि देवाः पवित्राणि	बौधा १.५.६४	त्र्यधिकेषु राजन्यम	बौधा १.२.८
त्रीणि देवाः पवित्राणि	मनु ५.१२७	त्र्यब्दं चरेद्वा नियतो	मनु ११.१२९
त्रीणि देवाः पवित्राणि	व १.१४.२१	त्र्यभिष्टवं दुपदा चैव	शंख ११.२
त्रीणि राजन्यस्य	व १.२.२१	त्र्यम्बकऋचा रुद्रमान	वृ हा ८.६८
त्रीणिवर्गाणि शुद्ध्यर्थं	वृ परा ८.११८	त्र्यम्बकमिति चैवात्र	वृ परा ११.१९४
त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत	मनु ९.९०	त्र्यम्बकश्च चतुर्वक्त्र	वृ परा १२.३११
त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि	मनु ३.२३५	त्र्यम्बकेसापुनस्स्थाप्य	ब्र.या. २.१३०
त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि	व १.११.३२	त्र्यवरं प्रतिरोद्धा वा	मनु ११.८१
त्रीणि षष्टिशतान्याहुः	बृ.गौ. २०.३	त्र्यवराः साक्षिणो ज्ञेयाः	या २.७०
त्रीणि स्त्रियः पातकानि	व १.२८.७	त्र्यशं दायार्द्धरेविप्रो	मनु ९.१५१
त्रीण्याज्यदोहानि	शंख ११.५	त्र्यहाद् दोहं परीक्षेत	नारद १०.५
त्रीण्याज्यदोहानि रथंतरं	व १.२८.१५	त्र्यहं तूपवसेद्युक्तः	मनु ११.२६०
त्रीण्याज्यदोहानि रथन्तरं	अत्रिस ३.१५	त्र्यहं त्रिषवणस्नायी	शंख १८.१
त्रीण्यादौ नव सप्तधा	विश्वा २.४२	त्र्यहं दिवा भुङ्क्ते	व १.२१.२१
त्रीण्याद्यान्याश्रितास्तेषां	मनु ७.७२	त्र्यहं द्वयहं च षण्मासं	व २.६.५१८
त्रीण्याहुःरतिदानानि	व १.२९.२०	त्र्यहं निरशनात् पाद	आप १.१३
त्रीण्येव साहसान्याहुः	नारद १६.६	त्र्यहं परचं नाश्नीयात्	अत्रिस १२०
त्रीनाविकेनच्छन्दो	औ ४.५	त्र्यहं प्रातस्तथा	व १.२४.२
त्रीनेव च पितृनहंति	बौधा १.१०.३४	त्र्यहं प्रातस्तथा	बौधा ३.१.९१

अहं प्रातस्त्रयहं सायं	मनु ११.२१२	त्वया न कार्यं कर्मेति	कपिल ८३९
अहं प्रेतेष्वनध्यायः	या १.१४४	त्वयां पृष्ठं कदा श्राद्धं	प्रजा १६
अहं प्रेतेष्वनध्यायः	व २.३.१५६	त्वयि तानि चलेषु त्वं	विष्णु म ५८
अहं भुंजीत दध्ना	पराशर ६.३५	त्वरमाण इवापृष्टो	नारद २.१७५
अहं सायं अहं प्राप्तः	शंख १८.३	त्वष्टा मित्रोयमश्चैव	ब्र.या. १०.१२०
अहमुष्णं धृतं पीत्वा	अत्रिस १२३	त्वसो ऽथ इति सूक्तेन	व २.६.२८४
अहमुष्णं पिबेत्तोयं	शंख १८.४	त्वां वयं मोचयिष्याम	लोहि ६८८
अहमुष्णं पिबेदा	लिखित ६९	त्वामेवाहं स्मरिष्यामि	विष्णु म ७३
अहमुष्णं पिबेदा	व १.२१.२२	त्वीयेन कर्मणा येषां	वृ परा १२.२७९
अहेन तु चतुर्थस्तु	वृ परा ८.२६६		
त्वग्भेदकः रातं दण्ड्यो	मनु ८.२८४	द	
त्वचं मृत्योर्जुहोमि	व १.२०.२९	दंष्ट्राग्रेण समुद धृत्य	विष्णु १.११
त्वकारं तु गुरोः कृत्वा	वृ परा ८.२८१	दंष्ट्रिभ्यश्च पशुभ्यश्च	व २.६.३९५
त्वतोऽहं श्रोतुमिच्छामि	विष्णु १.४९	दकारमुत्तरे वक्त्रे	वृ परा ४.९६
त्वात्प्रियाणि प्रसूनानि	वृ.गौ. ८.७३	दक्षशास्त्रं यथा प्रोक्तं	दक्ष ७.५२
त्वंदघ्नियुगलं प्राप्य	वृ हा ८.३४८	दक्षश्रोत्र समंलाहुं	भार ६.११०
त्वदुक्तिं संपरिज्ञाय मम	नारा ४.११	दक्षिणप्रवणे देशे शुचि	वृ परा ७.३११
त्वदभक्ताः कीदृशा देव	वृ.गौ. ८.९२	दक्षिणं च भुजं पश्चा	व २.२.२०
त्वं अस्माकं तपस्येव	वृ हा ३.७५	दक्षिणं चोपविश्योरु	आश्व १.८२
त्वं च धारय मां देवि	विश्व ६.६	दक्षिणं जानुमालम्ब्य	ब्र.या. ४. २८
त्वं तुले सत्यधामासि	या २.१०३	दक्षिणं तु युगच्छिद्रं	व २.४.४३
त्वं मां भजस्वं भद्राक्षि	लोहि ६६८	दक्षिणं दक्षिणेन सव्यं	बौधा १.२.२४
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार	ब्र.या. २.१७४	दक्षिणं पाणिमुद्धृत्यं	भार १६.५
त्वं यज्ञस्त्वं व षट्कार	ल व्यास २.१८	दक्षिणं पातयेज्जानु	कात्या २.५
त्वं विषब्रह्मणः पुत्र	या २.११२	दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य	बौधा १.५.७
त्वं सोम इति रूक्तेन	वृ हा ५.३६८	दक्षिणं वामतो वाह्यं	कात्या १५.१७
त्वमक्षरं परं ब्रह्म निर्गुणं	विष्णु म ९	दक्षिणश्रवणे विप्रो	भार १६.४१
त्वमग्ने ह्यभिरित च	वृ हा ५.१२९	दक्षिणस्यानासिकया	ब्र.या. ८.२८७
त्वमग्ने सर्वभूतानाम	या २.१०६	दक्षिणांसोपवीतः स्यात्	व्यास ३.१७
त्वमप्येकमना भूत्वा	विष्णु म ९४	दक्षिणाग्निमुखे विश्वो	बृ.या. २.९१
त्वमुर्वारो स्थाणुमृष्टो	आंपू ५९१	दक्षिणाग्नेययोर्मध्ये	ब्र.या. १०.१२१
त्वमेको ह्यस्य सर्वस्य	मनु १.३	दक्षिणाग्रेषु दर्भेषु	व २.६.२८७
त्वमेव देवः जानीषे न	नारद १९.१०	दक्षिणाग्रैकदर्भाणि	औ ५.२४
त्वमेव देव जानीषे न	नारद १९.३०	दक्षिणाघ्राणरंध्रेण	भार ६.१८
त्वमेव परमो धर्म	वृ हा २.१२३	दक्षिणांके तु विन्यस्य	वृ हा ५.२१४
		दक्षिणाग्निं तदाहुस्ते	बृ.गौ. १.५.२७

दक्षिणाञ्च यथाशक्ति	वृ.गौ. ७.५७	दग्धं परावितं तालमायसं	वृ हा ५.२४०
दक्षिणादानरूपेण सदस्या	लोहि ४०२	दग्धव्या साऽग्निहोत्रेण	वृ हा ८.२१२
दक्षिणादिकृते तस्मिन्	कण्व ८७	दग्ध्वा तालपलाशम्बा	वृ हा ६.२५७
दक्षिणां च ततो दद्यात्	आश्व २३.८९	दग्ध्वारस्थीनि पुनर्गृह्य	पराशर ५.१२
दक्षिणा प्रवणं स्निग्धं	औ ५.१४	दण्ड इवप्लवेत	बौधा १.२.३९
दक्षिणाप्रवणे देशे	वृ परा ७.११६	दण्डपात्रयुतौ रास्तौ	आश्व २.२६
दाक्षिणाप्रवणेदेशे	व्या २७६	दण्डं छत्रं वैणवं च	कण्व ५६९
दक्षिणाप्लवने देशे	कात्या ४.४	दण्डं दम्भेषु कुर्वाणो	वृ परा १२.२२
दक्षिणाभिमुखः सव्यं	व्यास ३.१६	दण्डव्यूहेन तन्मार्गं	मनु ७.१८७
दक्षिणाभिमुखा गाव	वृ परा ५.२१	दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा	मनु ७.१८
दक्षिणाभिमुखोच्छिद्या	भार १८.२९	दण्डस्तु देशकाल	व १.१९.७
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ	व २.३.९१	दण्डस्य पातनं चैव	मनु ७.५१
दक्षिणाभिश्च ताम्बूलै	आंपू ८६२	दण्डाजिनोपवीतानि	ब्र.या. ८.६१
दक्षिणाभिश्चैव	ब्र.या. ८.११७	दण्डाजिनोपवीतानि	या १.२९
दक्षिणायनकाले तु	आंपू ९२०	दण्डादुक्ताद्यदान्येन	आंगिरस २९
दक्षिणार्थं तु यो विप्रः	पराशर १२.३५	दण्डादूर्ध्वं मदन्येन	पराशर ९.३
दक्षिणावतामिति ऋचा	वृ. हा ८.५८	दण्डादूर्ध्वप्रहारेण	लघुयम ४०
दक्षिणा वर्तशङ्खाद्वा	वृ.गौ. २०.३०	दण्डादूर्ध्वं तु यत्नेन	आंउ १०.१
दक्षिणाश्च ततो दद्यात्	वृ.गौ. ७.१०६	दण्डापतनकश्चित्रवपुः	शाता १.९
दक्षिणासु च दत्तासु	मनु ८.२०७	दण्डेच मेखलासूत्रे	औ १.५
दक्षिणासु नीयमाना	बौधा १.११.५	दण्डो महान् मध्यम	वृ परा १२.८२
दक्षिणास्योऽपसव्येन	व्या ३७४	दण्डो हि सुमहत्तेजो	मनु ७.२८
दक्षिणाहृदयो योग महामंत्र	विष्णु १.८	दण्ड्यास्तत्पुत्रमित्राणि	लघुयम २१
दक्षिणा हेम देवानां	वृ परा ७.२७४	दत्तको द्वितीयो यं माता	व १.१७.२९
दक्षिणेकटिदेशे तु	ब्र.या. ४.६४	दत्तजः पितरं चेत्तु	कण्व ७१५
दक्षिणेऽक्षस्रजं कूर्चं	भार १२.८	दत्तजः पितरं वृत्तं	कण्व ७१४
दक्षिणे तु भुजे चक्रं	वृ हा २.१९	दत्तमूल्यस्य पण्यस्य	नारद ९.१०
दक्षिणेन धरासूनुबुधः	वृ परा ११.५३	दत्तं तथा प्रोक्षितं च मन्त्रेण	कपिल ८५३
दक्षिणेन मृतं शूद्रं	मनु ५.९२	दत्तं नैव पुनर्दद्यादपक्वं	आश्व १.१५३
दक्षिणेन मृतं शूद्रं	वृ हा ६.९५	दत्तप्रक्षालनादीनां छत्रो	ब्र.या. ८.१२३
दक्षिणेनाथ सव्येन	आश्व ९.९	दत्तस्तत्स्वीकृतश्चेत्तु	कपिल ६९३
दक्षिणे पितृतीर्थेन	ब्र.या. ७.७४	दत्तस्य तद्भूलाभः	आंपू ३०९
दक्षिणे वसति पत्नी	व्या ८५	दत्तस्यैषोदिता धर्म्या	मनु ८.२१४
दक्षिणोत्तरसंस्थानावु	नारद १९.५	दत्तः स्वप्रार्थनापूर्वप्राप्त	लोहि ७४
दग्धं तष्टं मुष्टिकाद्यैः	भार १५.४१	दत्ताभिरद्भिरेतस्यां	वृ परा ५.११७

दत्तांविवाह्य तज्ज्ञात्वा	आंपू २११	दत्त्वा समस्तव्याहृत्या	भार २१.१०१
दत्तेथ (ध) नालमेतन्मे चेति	लोहि ४६१	दत्त्वा स्थानमवाप्नोति	वृ परा १०.२६
दत्तेवाधांज्जलिबध्वा	भार ५.२६	दत्त्वैवं दिव्यभोगानि	ब्र.या. ११.२२
दत्तेवाप्यथवादते भूमौयो	व्या २६४	ददाति सकलान् कामानिह	वृ हा ७.२३५
दत्तेषु दशभिर्नृणां	वृ परा १.३९	ददाति स्वपदं दिव्यं	वृ हा ५.५५७
दत्तोऽधिकश्चेद्भवति	आंपू ४३४	ददात्यध्येति यजते	वृ परा १२.१५५
दत्तोऽपि तैर्नदत्तो हि तन्माता	कपिल ३७४	ददामि तस्मै प्रेताय	शाता ६.२५
दत्तोऽयं बालिशो भ्रष्टो	लोहि २६९	ददीत स्वेच्छया दण्डं	वृ हा ४.२३९
दत्तवर्णं पाटयेत्लेख्यं	या २.९६	ददौ स तत्र चित्राय	ब्र.या. २.१६९
दत्त्वा कन्यां हरन्	या २.१४९	ददौ स दश धर्माय	मनु ९.१२९
दत्त्वाग्नौकरणं चान्यत्	वृ परा ७.२१५	दद्याच्च शर्काराधेनुं	शाता २.३८
दत्त्वा चान्नं स विदुषे	औ ८.१०	दद्याच्च शिशिरे यानानि	संवर्त ५८
दत्त्वांज्जनाभ्यञ्जने	आंपू ८५७	दद्याच्छक्त्या ततो दानं	वाधू ४७
दत्त्वा तु दक्षिणामन्ते	बृ.गौ. १७.२१	दद्यात्तमर्ध्यं देवेभ्यः	आंपू ७९७
दत्त्वा तु दक्षिणां	व २.६.३०५	दद्याप्पाद्यं पदान्ते	भार ११.९६
दत्त्वा तु दक्षिणां शक्त्या	या १.२४३	दद्यात् पापेषु षष्ठांशं	शाता १.१२
दत्त्वा तु शक्तितो दानं	अत्रि ५.६३	दद्यात् पिण्डत्रयं चैव	वृ हा ६.१३२
दत्त्वा तु सोदयमृणमृणौ	नारद ६.३१	दद्यात् पितृणां यद्भक्ष्यं	वृ हा ८.३२०
दत्त्वादकं जपेद	भार ६.१२८	दद्यात् पुरुषसूक्तेन	बृ.या. ७.१७
दत्त्वाद्यविद्यया पश्चात्	भार ११.७८	दद्यात् पुरुषसूक्तेन	वृ परा ४.१२१
दत्त्वा द्रव्यञ्च यः	ब्र.या. १२.१	दद्यात् पुष्पसहस्राणि	वृ हा ६.४०५
दत्त्वा द्रव्यमसम्यग्	नारद ५.१	दद्यात्पुत्रा विधवा	नारद २.१४
दत्त्वा धनं तु विप्रेभ्य	मनु ९.३२३	दद्यात् श्राद्धे प्रयत्नेन	औ ३.१३९
दत्त्वा नमस्येत्	बृ.या. ७.१०४	दद्यादतिथये नित्यं	ल व्यास २.६१
दत्त्वान्नं पृथिवी	या १.२३७	दद्यादहरहस्तस्मादन्नं	वृ परा १०.१७
दत्त्वान्नं पृथ्वीपात्रे	ब्र.या. ४.९८	दद्यादेव न प्रतिगृह्यात	व १.९.५
दत्त्वा न्यायेन यः कन्यां	नारद १३.३२	दद्याद्ग्रहा क्रमादेत	ब्र.या. १०.१५४
दत्त्वा पिण्डान् सम्भ्यर्च्य	वृ हा ६.१३१	दद्यादानं द्विजातिभ्यो	ल हा २.३
दत्त्वा पितृभ्यो देवेभ्यो	ल हा ६.३	दद्यादेवपितृमनुष्येभ्य	व १.९.९
दत्त्वा भूमिं द्विजेन्द्राय	वृ.गौ. ६.१२८	दद्यादुदकप्रणवं	व २.६.३१२
दत्त्वाध्वं क्षालयेत्पादा	ब्र.या. ४.५९	दद्याद्अष्टांगं दीपं	वृ हा ५.५२९
दत्त्वाध्वं संभ्रवा स्तेषा	या १.२३४	दद्याद्धेमं च वैशाखे	वृ परा १०.२६३
दत्त्वावशिष्टं यक्षाणां	वृ हा ६.२६०	दद्याद् बलिं वृषाणां	वृ परा ५.८३
दत्त्वा शतं सहस्रं वा परं	कपिल ३९२	दद्याद्भूमा भूत बलिं	ल व्यास २.५६
दत्त्वा श्राद्धं ततो शुक्त्वा	औ ५.७८	दद्याद् भूमिं निबन्धं	या १.३१८

दद्याद्वा यदिवा स्नेहा	बृ.गौ. १६.४२	दन्तजननादित्येके	व १.४.१०
दद्याद्विप्राय विदुषे	शाता ५.२८	दन्तजातेऽनुजाते च	पराशर ३.२१
दद्यान्मातु पिता यस्मा	ब्र.या. ७.३१	दन्तजातेऽनुजाते च	मनु ५.५८
दद्युः पुत्रांश्च पौत्रांश्च	शाता ६.४७	दन्तधावनगण्डूष	वृ हा ४.८१
दद्युस्ते बीजिनः पिण्डं	नारद १४.१९	दन्तधावनतः पश्चात्	कण्व १४६
दधतीं श्वेतरूपां तां	भार १२.९	दन्तधावनतः पश्चात्	कण्व १५०
दधिक्कापुनयित्यस्य	भार १७.१५	दन्तधावनताम्बूलं	प्रजा ९२
दधिक्षीरघृतादीनां लवणस्य	शाण्डि ३.२५	दन्तधावन ताम्बूलं	व्या १५५
दधिक्षीराज्यतक्राणां	औसं २१	दन्तधावन प्रकरण	विष्णु ६१
दधि-क्षीराऽऽज्यमांसानि	वृ परा ६.२३८	दन्तवदन्तलनेषु	बौधा १.५.२७
दधिचौर्येण पुरुषो	शातां ४.९	दन्तवदन्तसक्तेषु	बौधा १.५.२५
दधिधानीसधर्माः स्त्रिय	बौधा २.१.७१	दन्तवदन्तसक्तेषु	व १.३.४०
दधितक्रकाभिक्षा	व्या १५८	दन्तशौचं ततः कृत्वा	वाधू ५५
दधिनानं दर्मेनानं	आंपू ८१६	दन्तानां धावनं कुर्यात्	व २.६.२०
दधिपूरितमन्यतु तृतीय	कपिल ९१०	दन्तानां धावनविधिं	भार ५.१
दधि भक्ष्यं च शुक्तेषु	मनु ५.१०	दन्तानां शोधनं कुर्यात्	व २.६.१८
दधि भैक्ष्यं च शुक्त्रेषु	शंख १७.३३	दंतानकाष्ठेन संशोध्य	व २.३.१२६
दधि-मधु-घृताक्तानां	वृ परा ११.२५२	दन्तान्तुशोधयेत्प्रातः	शाण्डि २.१९
दधिवदराक्षतमिश्रं	ब्र.या. ६.६	दंति-श्रृंगि-गर-व्याल	वृ परा ७.३०३
दधिहस्तेन मथितं	वृ हा ५.२७२	दन्तोलूखलिक कालपक्वाशी	या ३.४९
दध्ना च सर्पिषा चैव	पराशर ६.३४	दन्तोलूखलिको वापि	वृ परा १२.१०७
दध्नेदधिक्रापुण्ण इति	भार ११.८७	दंशूकः पतङ्गो वा	बृह ९.१७२
दध्यक्तं पयभाक्तं वा	ब्र.या. २.१.४०	दन्शूकः पतङ्गो वा	या ३.१९८
दध्यन्नं पापसंचैव	या १.२८९	दमने दामने रोधे	आंगिरस २७
दध्यन्नं पायसं वाऽऽपि	वृ हा ३.३७५	दमने वा निरोधे वा	आप १.१८
दध्यन्नं फलसंयुक्तं	वृ हा ५.४६३	दमं सेवेत सततं	वृ परा ६.२५२
दध्याज्यमाक्षिकैर्युक्तं	व २.३.१४	दमूनसौ अपस इति	वृ हा ८.४०
दध्यात्पवित्रमनयो	भार १८.७१	दम्पती चोपवेश्योभौ	कण्व ६६२
दध्याद्वदं नृपस्त	भार १५.१३२	दंपती तु व्रजेयातां	आश्व १५.३६
दध्यादिना ततो भूयः	कपिल २६४	दम्पती दम्पतीचित्तं	आंपू ३८७
दध्यानपयसा चैव	ब्र.या. १०.१९	दंपती नियमेनव	आश्व १५.६३
दध्योदनं हविश्चूर्णं	या १.३०५	दम्पती शिशुना सार्द्धं	अत्रि ५.४०
दंडेन वाधसूत्रेण ग्राम	भार २.७१	दम्पत्योरेव नान्यस्य	लोहि १८८
दन्तकाष्ठप्रदानेन	वृ.गौ. ७.७८	दम्पत्योस्तद्धिनेवा तत्र	कपिल २४६
दन्तकाष्ठेन पूर्वस्यात्	ब्र.या. २.११	दम्भमोह विनिर्मुक्तस्तथा	ल हा २.७

दयादाक्षिण्यसौभाग्य	लोहि ४४६	दर्शश्चपौर्णमासश्चाग्रयणं	कण्व ४९६
दरिद्रं व्याधितं चैव	दक्ष ४.१८	दर्शश्राद्धं च य कुर्याद्	प्रजा २१
दरिद्रं व्याधितं मूर्ख	पराशर ४.१५	दर्शश्राद्धे गयाश्राद्धे	व्या ६५
दरिद्रस्य वृथा जन्म	वृ परा १०.३१७	दर्शसिद्धिस्तावता स्याद्	आंपू १०.३१
दरिद्रायेव दातव्यं न	वृ.गौ. ७.९	दर्शादिकमनुष्ठेयमिति	आंपू १०३८
दरिद्रो मानुषे लोके	वृ.गौ. ६.४५	दर्शादिकं तु यच्छ्राद्धवृद्धिं	कपिल १६८
दर्पाद् वा यदि वा मोहच्छ	नारद १३.६८	दर्शादिकं प्रकुर्वीत	आंपू १०४१
दर्भ-ताम्र-तिलैर्वीपि	वृ परा २.७३	दर्शादिकानि श्राद्धानि	आंपू ११०४
दर्भपाणिः कृतप्राणाया	आंपू ७७३	दर्शादिदेवताश्चापि	कण्व ७३२
दर्भस्तंवेऽप्सुवा जाया	कण्व ३७१	दर्शादिष्वागतानां समाप्यैव	आंपू १०३६
दर्भस्य समिधं तत्र	व्या २८८	दर्शादिष्वेव कथितं	आंपू ९७३
दर्भाः कृष्णाजिनं मंत्रा	लिखित ४१	दर्शानुष्ठानतः सर्व	आंपू ६२०
दर्भानास्तीर्य भूपृष्ठे	आंपू ७९३	दर्शान्तः पूर्णमामध्यः	कण्व ४५
दर्भाः पवित्रमित्युक्तमतः	कात्या ११.३	दर्शितं प्रतिकालं यच्छ्रावितं	नारद २.११७
दर्भाः पवित्रं पूर्वाह्न	मनु ३.२५६	दर्शं द्वे पार्वणे कार्ये	प्रजा १९०
दर्भाश्च परितः स्थाप्या	औ ५.९५	दर्शष्टिका व्यतीपातो	आश्व २४.२३
दर्भाश्च स्वयमानेया	वृ परा ७.३३०	दवे तु चतुरस्रे तु	आश्व २३.४१
दर्भाश्चैवासने दद्यात्पितृ	ब्र.या. ४.६६	दवेन निहते चैव	शाता ६.३७
दर्भासीनो दर्भपाणिः	लहा ४.५२	दश कामसमुत्थानि	मनु ७.४५
दर्भेषु दर्भपाणिः सन्	वृ.गौ. ८.४४	दशकृत्वः पिवेदापो	दा ८४
दर्भेषुवाग्यतत्तिष्ठन्	भार ६.५०	दशकृत्वः पिवेदाप	व्या १५४
दर्भेष्व्वासीनो दगर्भान्	बौधा २.४.७	दशकृत्वः पिवेच्चापः	लघुशंख ३३
दर्भं कुंडं प्रकर्त्तव्यं	व्या २८७	दशकृत्वः पिवेदापः	लिखित ६२
दर्भं लोहितदर्भैश्च	वृ परा २.१८६	दशकोटि समा राजन्	वृ.गौ. ६.४०
दर्भैश्च पावयेन्मन्त्रै	वृ.या. ७.२०	दशकोटिसमास्तत्र क्रीडित्वा	वृ.गौ. ७.९३
दर्शके पूर्ववत्सर्व	आश्व २.७९	दशागुणं सहस्रं स्यात्	वृ परा ४.४०
दर्शनप्रतिभूर्यत्र मृतः	या २.५५	दशजन्मकृतं पापं ज्ञान	वृ.गौ. १८.१०
दर्शनप्रातिभाव्ये तु	मनु ८.१६०	दशतुल्यं व्यतीपाते	आंपू ७०७
दर्शनस्पर्शनध्यानैर्ज	आंपू ९१६	दश दद्याच्चरणयोरेषा	वृ.गौ. २०.६
दर्शन स्पर्शनाभ्यां	वृ परा १२.१९५	दशदशैकादश वा	वृ परा ११.१५२
दर्शनादिष्वयोगत्वमंधादीनां	कपिल २९९	दशदानं भूरिदानं सहस्र	नारा ३.१७
दर्शने प्रत्यये दाने	या २.५४	दश द्वादशकृत्वोवा	वाधू ४६
दर्शयामि इति यत्रूपं	वृ.गौ.१.४८	दश द्वादश चाष्टौ	वृ परा १२.३७४
दर्शश्च पौर्णमासश्च	वृ परा ६.२९५	दशधेनु समोऽनड्वाने	ब्र.या. ११.३१
दर्शश्च पौर्णमासश्च	कपिल २७५	दशधेनुसमोऽवज्जे कोऽपि	वृ.गौ. ७.६

दशानामानि नैरुक्ता	बृ.या. २.११३	दशरात्रेण शुद्धिः स्यादि	व २.६.४६८
दशनैः स्पृष्टमात्रेण	वृ परा ६.१०९	दशरात्रेष्वतीतेषु	पराशर ३.१३
दशपंचाष्टचतुर उपवेश्य	शाता १.२२	दशलक्षणकं धर्ममनुतिष्ठन्	मनु ६.९४
दशपूरुषविख्याता	या १.५४	दशलक्षणानि धर्मस्य	मनु ६.९३
दशपूरुषविख्यातां	व २.४.५	दशवर्षाणि राजेन्द्र!	वृ.गौ. ६.३८
दश पूर्वान् परान् वंश्यान्	मनु ३.३७	दशवर्षाभिवेदगौरी	ब्र.या. ८.१६२
दशप्रणवगायत्रीमनुलोम	विश्वा ३.४८	दश व्याघ्रादिनिहिता	शाता ६.६
दश प्रणवगायत्र्या	विश्वा ३.११	दशषट् त्रितथैकाहं	अत्रिस २०९
दशमूले स्थितो ब्रह्म	वृ परा ७.३३३	दश सहस्रं जप्त्वा तु	शंख १२.१६
दशप्रणवगायत्री	विश्वा ३.७३	दशसाहस्रिकोऽभ्यासो	बृ.या. ४.५४
दशप्रणवगायत्रीं	कण्व २.५५	दशसाहस्रमभ्यस्ता	अत्रि ४.४
दशप्रणवगायत्र्या विनियोग	विश्वा ३.५२	दशसूनासमं चक्रं	मनु ४.८५
दशभार्योऽप्यपत्नी कंसत्वसौ	कपिल ६६१	दशसूनासहस्राणि यो	मनु ४.८६
दर्शभिर्जन्मजनितं	वृ परा ४.६२	दशस्थानानि दण्डस्य	नारद १८.९४
दशभिर्वारुणैर्मन्त्रै	वृ परा ११.२२५	दश स्थानानि दण्डस्य	मनु ८.१२४
दशमं मंडलं सर्वं	वृ हा ७.२१७	दशहस्तेन दंडेन	वृहस्पति ८
दशमासांस्तु तृप्यान्ति	औ ३.१४१	दसहस्तेन दंडेन	शाता १.१५
दशमासांस्तु तृप्यन्ति	मनु ३.२७०	दशहस्तैः भवेद वंश	वृ परा १०.१७५
दशमीद्वादशीश्राद्धे	व्या १९५	दशांशं सर्षपैर्हुत्वा	शाता २.१७
दशमीप्रभृति प्रोक्तास्ति	आंपू ९२६	दशांशेन ततो होमो	शाता २.८
दशमीमिश्रितां त्यक्त्वा	वृ हा ५.३४०	दशाक्षरेण मंत्रेण	वृ हा ५.४१३
दशमीवेधसविद्धा तदा	ब्र.या. ९.३१	दशांगुलीषु तलयोः	वृ हा ३.१८४
दशमी स्नानमात्रेण	ब्र.या.१३.२५	दशाध्याक्षान् शताध्यक्षान्	विष्णु ३
दशमे तु दिने प्राप्ते	पराशर १०.३३	दशाननक्रमेणैवशतं	भार ९.९
दशमेऽहानि वैश्यस्य	अत्रिस १०१	दशानामपि पूर्वेषां	कपिल ९३०
दशमेऽहानिसम्प्राप्ते	व २.६.४४९	दशानामश्वमेधानां	बृ.गौ. १९.१३
दशं कालं च पात्रं च	वृ.गौ. ६.६९	दशानां वैकमुद्धरेज्ज्येष्ठः	बौधा २.२.६
दशम्या धूपकंचैव	वृ हा ५.२०७	दशाब्दाख्यं पौरसख्यं	मनु २.१३४
दशम्येकादशी	ब्र.या. ९.२०	दशां विवर्जयेत् प्राज्ञो	शंख १४.१७
दशरात्रकृतं पापं	वृ.गौ. ९.४१	दशायां च रमायां तु कुर्या	कपिल ९०८
दशरात्रं सपिण्डानां जातकं	कपिल १०९	दशावरा वा परिषद्यं धर्मं	मनु १२.११०
दशरात्रार्द्ध मासेन	आप १.२२	दशाष्टौ वा गृहस्थस्य	भार १५.१०६
दशरात्रेचरेद्वज्रमापत्सु	आंड ९.७	दशास्वेवं फलानां च	आंपू ५९५
दशरात्रेण शुद्ध्यति	वृ परा ६.३२०	दशाहं निर्गुणं प्रोक्तं	औ ६.७
दशरात्रेण शुद्धिः	औ ६.४०	दशाहं प्राहुराशौचं	औ ६.१

दशाहं बान्धवैः सार्द्धं	औ ७.९	दातारं नोपतिष्ठन्ति	अत्रि ५.८
दशाहं ब्राह्मणानान्तु	व २.६.३५०	दातारं स्वजनोपेतं	वृ.गौ. १०.५९
दशाहं शावमाशौचं	मनु ५.५९	दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां	ब्र.या. ४.१३८
दशाहाच्छुध्यते विप्रो	आंगिरस ५१	दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां	मनु ३.२५९
दशाहाच्छुध्यते विप्रो	आप ९.१२	दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां	या १.२४५
दशाहात्तु परं सम्यग	औ ६.८	दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां	आश्व २३.९७
दशाहात्तु परं सम्यग्	संवर्त ४५	दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां	औ ५.७३
दशाहुतीन्दुत्वा तु	ब्र.या. २.१४२	दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां	वृ परा ७.२७८
दशाहेन द्विजः शुद्ध्येत	औ ६.४२	दाता वदेदिमं मंत्रं	आश्व १५.२८
दशाहे समतिक्रान्ते	व २.६.४३१	दाता सत्यः क्षमी प्राज्ञः	या ३.१६५
दशौकुलं तु भुजती	मनु ७.११९	दाता सेतुगतः द्यो	आंपू १९६
दशेन्द्रियाणि मनसो	विष्णुम ७७	दातास्या स्वर्गमाप्नोति	या १.२०५
दशैक पंचसप्ताह	या २.१८०	दातुः कर्मफलप्राप्तिर्भोक्ता	व्या २८२
दशै (एकै) कस्मिन्पञ्च	ब्र.या. ४.३६	दातुरन्धस्तु यत्पुण्यं	कण्व ३३७
दशैताः कपिला प्रोक्ता	वृ.गौ. ९.५०	दातुर्विशुद्धपापस्य	वृ परा १०.६७
दस्युवृत्ते यदि नरे शंका	नारद १८.७२	दातुश्च नोपतिष्ठेत	दा ४०
दहत्यग्निस्तेजसा च	शंखलि ३०	दातुश्च नोपतिष्ठेत	दा ४१
दहद्भिः वेदनातैः तु	वृ.गौ. ५.३६	दातुश्च यस्मिन् मनसो	वृ परा ७.२३३
दहनाञ्च पिपद्येत	पराशर ९.३०	दातृणां व्रतिनामेके	वृ परा ८.११
दहाद्यशौचं कर्तव्यं	औ ६.५१	दातृन प्रतिग्रहीतृश्च	मनु ३.१४३
दह्यत्यग्निर्यथा कक्ष	व १.२.१८	दातृलोकमवाप्नोति	वृ परा १०.१७०
दह्यन्ते ध्यायमानानां	वृ या. ८.३०	दातृहरतं च छिन्दन्ति	आंपू ७४०
दह्यन्ते ध्यायमानानां	मनु ६.७१	दातृहस्तो भवेदूर्ध्व	वृ परा ६.२४५
दह्यमानं तु भर्तारं	आंपू ९९३	दात्रं प्रणवसंयुक्तं	भार १८.२३
दह्यमाना दवीयांस	वृ परा ११.१२९	दात्रा द्विजेनात्र तु	वृ परा १०.८३
दाक्षायणी ब्रह्मसूत्री	या १.१३३	दानकालो तु सम्प्राप्ते	वृ परा १०.२९६
दादयार्थं दृश्यते	वृ परा ७.३५६	दानग्रहणपश्वन्नगृह	नारद १४.३८
दातव्यं प्रत्यटं पात्रे	या १.२०३	दानञ्च विधिना देय	दक्ष ६.१३
दातव्यं सर्ववर्णभ्यो	मनु ८.४०	दानञ्चैव यथा शान्ति	वृ.गौ. १४.५२
दाता च न स्मरेद्दानं	वृ परा ६.२४२	दानतीर्थव्रतादिभ्यः	आंपू ४३
दातां चाङ्गारशयननामकं	आंपू १९५	दानधर्मफलं श्रुत्वा	वृ.गौ. ९.१
दाता चैव तु भोक्ता	वृ परा ६.१२६	दानधर्मं निषेवेत	मनु ४.२२७
दाता तत्फलमाप्नोति	वाधू १५१	दानन्तीर्थं दयातीर्थं	वृ.गौ. २०.९
दाताऽपि चतद्व्रतं	वृ परा १०.३४०	दानप्रतिग्रहौ यागं	वृ हा ८.२२१
दातारं किं विचारेण	शंखलि ७	दानफलवर्णन	विष्णु ८७

दानमध्ययनं यज्ञः	नारद १८.४७	दानेन सर्वकामान	व १.२९.१
दानमन्यच्च यद्वत्	ब्र.या. १२.१२	दानैश्च विविधैः सम्यक्	संवर्त ८९
दानमानादिना नित्यं तेनात्य	लोहि २३७	दानैर्होयैर्जनिर्नित्यं	संवर्त २००
दानं अध्ययनं चैव	शंख १.३	दानोद्वाहोष्टि-संग्रामे	वृ परा ८.१०
दानं अध्ययनं वार्ता यजनं	अत्रिस १५	दानोथवा महोमाद्यं	व २.६.२६१
दानं कुर्यात्तदग्नस्य नो	कपिल २१२	दान्तस्त्रिषवणस्नायी	या ३.४८
दानं कृत्वा कथं कृष्ण	वृ.गौ. ६.३	दापनीयस्त्वसौ सम्यक्	कपिल ८६४
दानं दम स्तपः शौच	वृ हा ८.३३७	दाप्यः परर्णमेकोऽपि	नारद २.१२
दानं दातव्यम् इति एव	वृ.गौ. ३.३७	दाप्यपिण्डां स्ततस्तत्र	औ ५.४८
दानं पितृणामत्यन्तकलि	कपिल ९३६	दाप्यश्शतपणान्सद्यः तत्सत्यं	लोहि ६१९
दानं प्रतिग्रहो होमः	दक्ष ६.१२	दाप्यस्तु दशमं भागं	या २.१९७
दानं प्रतिग्रहो होमः	दा ५९	दामोदरं ब्रह्मरन्ध्रे नाम	विश्वा २.१५
दानं प्रतिग्रहो होम	शंख १५.२५	दाम्भिको बकवृत्तिश्च	ब्र.या. ४.१५
दानं यत्ते प्रियं किञ्चित	वृ.गौ. १०.८४	दाम्यन्स सर्वदाऽऽत्मानं	वृ परा ६.२५३
दानं मत्सफलं नैव	वृ.गौ. ७.१३१	दायादेऽस्ति बन्धुभ्यो	नारद ४.१५
दानशिष्टप्रतिग्राहौ	आश्व १.४	दायाद्यकाले वा दद्यात्	वृ परा ६.४०
दानस्य यत्फलं नृणां	वृ हा ३.५२	दार वाणां तक्षणम्	बौधा १.५.३७
दानादियोग्यतालव्यभूमिः	कपिल ६४६	दाराग्निहोत्रसंयोगं	दा १५७
दानादिव्यपदेशेन स्ववश	कपिल ५८३	दाराग्निहोत्रसंयोगं	पराशर ४.२०
दानाद्दशानुगृह्णाति	वृ.गौ. ६.१२४	दाराग्निहोत्रसंयोगं	मनु ३.१७१
दानाधिकारी ब्राह्मण लक्षण	विष्णु ९३	दाराधिगमनं चैव	मनु १.११२
दानाध्ययनदेवार्चाज	आंपू १०२३	दाराधिगमनाधाने यः	कात्या ६.२
दानानान्तु फलञ्चान्यत्	वृ.गौ. ११.२४	दारिद्र्यनाशिनी देया	आंपू ९२५
दानानामुपदेशञ्च	वृ.गौ. १०.१०४	दारुणा घातने कृच्छ्रं	यम ६९
दानानि च प्रदेयानि	ल हा ४.७४	दारुणां सत्यजेद्वाऽपि	वृ हा ८.१०५
दानानि विधिना सार्धं	वृ परा १०.१	दारुवदस्थनाम्	बौधा १.५.४७
दानानि सर्वाण्यामिधाय	वृ परा १०.३८५	दारु (क्षीर) हारीच पुरुषः	शाता ४.२१
दानान्यथैतानि मया	वृ परा १०.२७८	दावाग्निदवग्धानां	शंखलि २७
दानान्येतानि देयानि	संवर्त ९१	दावाग्निदायकश्चैव	शाता ३.१३
दाने तु तादृशेधारे ह्यशक्ये	लोहि ४८६	दासनापितगोपाल	पराशर ११.२०
दानेन तपसा चैव सत्येन	वृ.गौ. १०.९९	दास नापित गोपाल	वृ परा ८.३२५
दानेन प्राप्यते स्वर्गो	वृ परा १०.२	दासनापितगोपालकुल	बृ.य. ३.१०
दानेन यस्य कस्यापि यथा	कपिल ४५१	दासनापितगोपालकुल	यम २०
दानेन वधनिर्णेकं	मनु ११.१.४०	दासनैकृतिकाश्रद्धवृद्ध	नारद २.१५७
दाने विवाहे यज्ञे च	या ३.२९	दासमयाणां पात्राणां	बौधा १.६.२७

दासी कुम्भ बहिर्ग्रीमा	या ३.२९४	दिनैकसाध्याः कतिथा	आंपू १६
दासी घटमपां पूर्ण	मनु ११.१८४	दिनैर्द्वादशभिः प्रोक्तः	वृ परा ९.१९
दासी दासे तथा कन्या	ब्र.या. १३.२	दिवश्च पृथिवी चैव	बृह ९.६७
दासी दृशतनो भृत्यां	व २.५.३५	दिवसद्वयसाध्य याः परा	आंपू १७
दासीप्राणहरो दण्डः शिरो	लोहि ६८१	दिवसस्य च रात्रेश्च	वृ परा २.११
दास्यमेव परंधर्म	वृ हा १.१८	दिवसस्याद्यभागे तु	दक्ष २.४
दास्यमेव हरेर्मोक्षं	वृ हा ३.११२	दिवसस्याष्टमे भागे	व १.११.३२
दास्यमेव हि जीवानां	वृ हा ३.९९	दिवसस्याष्टमेभागे	वृ परा ७.९६
दास्यं तु कारयंल्लोभाद्	मनु ८.४१२	दिवसात् प्रभृति प्रोक्ता	आंपू ९२३
दास्यं विना कृतं यत्तु	वृ हा ५.३३	दिवसे तु यदा ग्रामे	वृ परा ८.२७७
दास्यं स्वरूपं सर्वेषां	वृ हा ३.७९	दिवा कपिच्छ (त्थ)	दा १६४
दास्यां वा दासदास्यां	मनु ९.१७९	दिवा कपित्थच्छायायां	अत्रिस ३१५
दाहः कार्यो यथान्यायं	औ ७.८	दिवा कपित्थच्छायायां	लिखित ९५
दाहयित्वाग्निभिर्भायी	कात्या २०.५	दिवा कपित्थच्छायासु	लघुशंख ६८
दाहयित्वाग्निहोत्रेण	या १.८९	दिवाकरकरैः पूतं	पराशर १२.२०
दाहयित्वा विधानेन	व २.६.४३८	दिवाकरोदयात्पूर्वं	ब्र.या. १३.१५
दाहयेत् तप्त तैलेन	वृ हा ४.१९८	दिवाकीर्तिमुदक्यां च	मनु ५.८५
दिवसंधयः स्युद्विदशः	भार २.४	दिवा कीर्त्यैस्तथान्यैश्च	बृ.या. ७.५५
दिग्दण्डस्त्वथ वाग्दण्डो	वृ हा ४.१८७	दिवाच मैथुनं गत्वा	शंख १७.५४
दिग्दर्शनं तृतीयं स्यात्	विश्व १.४९	दिवाचरेयुः कार्यार्थं	मनु १०.५५
दिग्दैवतैः समायुक्तं	वृ परा ११.१४०	दिवा चैवार्कसंस्पृष्टं	बृ.य. ३.७०
दिग् (ङ्) निर्णयं समारभ्यो	भार १.१८	दिवादीना मृषाभित्वां	ब्र.या. २.१०३
दिङ्नामानिस्तूपावास	भार २.८	दिवानुगच्छेद्गास्तास्तु	मनु ११.१११
दिङ्मात्रमपि चोच्यन्ते	कण्व ३०८	दिवार्क रश्मिसंस्पृष्टं	यम ६४
दिधिषूपतिः कृच्छ्राति	१.२०.११	दिवा वा यदि वा रात्रौ	आम्ब १५.५०
दिनत्रयेण वा कर्म यथा	कात्या १९.५	दिवा वक्तव्यता पाले	मनु ८.२३०
दिनद्वयञ्च नाशनीयात्	आप ९.४२	दिवा सन्ध्यासु कर्णस्थ	वधू ८
दिनद्वयं चैकभक्तो	पराशर ८.४५	दिवासन्ध्यासु कर्णस्थ	या १.१६
दिन रात्रिकाल वर्षा दीनावर्णं	विष्णु २०	दिवा सूर्याय रात्रौ	विश्व ८.६
दिनानि यानि मार्गे	कण्व ५४३	दिवा सूर्याशुभिस्तप्तं	लघुयम ९६
दिनाष्टकात्पूर्वमेव	कण्व ५९०	दिवा स्वपिति यः स्वस्थो	संवर्त ३३
दिनेऽतीते द्वादशे तु	कण्व ५०५	दिवास्वापी भवेन्नैव	कण्व ५६७
दिने दिने वैष्णवेष्ट्य	वृ हा ५.५४८	दिवेष सन्ध्ययोः कुर्यान्	शाण्डि २.१६
दिने दिने सहस्रांशु	वृ परा २.७५	दिवैवाराधनं तस्य	कण्व ४५४
दिने दिने स्नानकाले	शाण्डि ३.५९	दिवोदितस्य शौचस्य	दक्ष ५.१२

दिव्य अप्सरोगणैः	वृ हा ७.३२०	दीपाश्च वहवोदेयाः	वृ परा ७.१६२
दिव्यकन्याव्रता यान्ति	वृ.गौ. ५.९२	दीपिकाभिरनेकाभि	वृ हा ७.२५८
दिव्यगंधानुलिप्तांगं	भार १२.२७	दीपि स्थापरोदेषु	व २.७.५७
दिव्यचन्दनलिप्तांगी	वृ हा ३.२७	दीपैर्नीराजनः कृत्वा	वृ हा ७.२५७
दिव्यचन्दनं लिप्तांगः	भार १९.१२	दीपैर्नीराजनं कुर्यात्	व २.३.१७
दिव्यचन्दनलिप्तांगना	व २.६.८२	दीपैः नीराजनं कृत्वा	वृ हा ५.३५३
दिव्य चन्दन लिप्तांगी	वृ हा ३.३५८	दीपोत्सवो दीपशान्तिः	कण्व ३५१
दिव्यं ज्ञानं भवेन्मुक्तिः	कण्व ४७१	दीप्तो यं न दहत्यग्नि	नारद २.२१६
दिव्यं वर्षं सहस्राणि	ब्र.या. ११.५१	दीप्तनक्षत्रमालवदक्ष	वृ परा ११.१३४
दिव्यरत्नमये पीठे	वृ हा ३.१२९	दीयते तमसालक्ष्यं समंदानं	ब्र.या. ११.१०
दिव्यवर्षं शतं विप्र	वृ हा ८.१८८	दीयते पुच्छं संगृह्यसत्पात्रे	ब्र.या. ११.१७
दिव्यवस्त्रं परिच्छन्नं	वृ परा १०.१५८	दीयते यद्द्विराद्य	वृ परा १०.३१३
दिव्यशास्त्रानभिज्ञोऽपि	शाण्डि ४.६८	दीयते वेदविदुषे	वृ परा १०.३१४
दिव्यसम्पूर्णविप्रत्वमपि	कपिल ३४९	दीयमानं न गृह्णाति	या २.४५
दिव्यानां देवपुष्पाणां	कपिल ४३५	दीयमानं न गृह्णाति	नारद ९.९
दिव्यानुलेपलिप्तांगा	वृ परा १०.१९७	दीयमानस्य तस्यापि	कपिल ४१६
दिव्याभरणं सम्पन्नं	वृ हा ४.१३६	दीयमानां च पश्यंति	वृ परा १०.६४
दिव्यायतनयात्रायाम्	शाण्डि १.३५	दीर्घकुत्सितरोगार्ता	नारद १३.३६
दिव्याश्च अप्सरसो	वृ परा १०.१९२	दीर्घतीव्रामयग्रस्त	या ३.२४४
दिव्यैर्विभूषितां देवीं	भार १२.२६	दीर्घतीव्रामयग्रस्ता	नारद १४.२१
दिश दिक्पतिन्श्चैव	ब्र.या. २.१११	दीर्घं प्रणवमुच्चार्य	बृह ९.११७
दिशश्च विदिशश्चैव	वृ.गौ. १०.५४	दीर्घप्लुतः सामवे	वृ.या. २.७९
दिश्यैशान्यां तथाऽग्नेन्यां	नारा ६.३	दीर्घवैरमसूया च	व १.६.२३
दीक्षामहत्यस्ता ज्ञेया	आंपू ३६	दीर्घसत्रं हवा एष	बौधा १.२.५२
दीक्षितः सभवेत्तावद	वृ हा ६.११	दीर्घसामेषु सत्रेषु	बौधा १.६.८
दीक्षितस्त्रीप्रसंगेन जायते	शाता ५.३५	दीर्घाध्वनि यथादेश	मनु ८.४०६
दीक्षितस्य कदर्यस्य	वृ.गौ. ११.१३	दीर्घाध्वानं ब्रह्मद्विद्वान्	शाण्डि ४.१८५
दीक्ष्वष्टमध्ये चत्वारि	वृ हा २.५३	दीर्घायुर्दीर्घसप्तकः	कण्व ६३०
दीपकाभिरनेकाभिः कुर्यात्	व २.७.४५	दीर्घायुष्यं दारिद्र्यं	वृ परा ६.१७२
दीपज्योतिरिवान्तश्च	ब्र.या. ११.६२	दीर्घिकासु तडागेषु	वृ परा ११.२०५
दीपन्नीराजयेत् पश्चाद्	वृ हा ८.५९	दीर्घश्चुर्भिर्दीर्घिश्च	वृ हा ३.१९०
दीपशय्यानसच्छाया	अत्रिस ३९०	दुकूलवस्त्रसम्बीतां	वृ हा ३.२६२
दीपहर्ता भवेदन्धः	मनु ११.५२	दुकूलवस्त्रसंवीतां	व २.६.८१
दीपान् नीराजयेद् भक्त्या	वृ हा ५.४३८	दुःखमुत्पादयेद्यस्तु	या २.२२५
दीपालोकं प्रदानेन	वृहस्पति ६६	दुःखा ह्यन्या सदा	दक्ष ४.८

दुःखितो यस्तु यस्य	वृ परा ११.८१	दुर्मिक्षं भूतपीडा च	ब्र.या. ९.४९
दुःखे च शोणितोत्पादे	या २.२२८	दुर्मिक्षरोगाग्निभयं	वृ हा ६.७५
दुःखोत्पादि गृहे द्रव्ये	या २.२२७	दुर्मिक्षे अन्नदाता च	अत्रिस ३३०
दुग्धं क्षीरं शर्कराञ्च	वृ हा ५.४७८	दुर्मिक्षे धर्मकार्ये च	या २.१५०
दुग्धं सलवणं सक्तून	वृ परा ८.१७९	दुर्मिक्षे राष्ट्रभंगे	वृ परा ८.१९
दुग्धहारी च पुरुषो	शाता ४.८	दुर्मिक्षे राष्ट्रसम्पाते	वृ.गौ. १४.२
दुग्धाब्धौशेषपर्यंके	वृ हा ६.३४४	दुर्भीसभक्षणेनैव दुस्संसर्ग	नारा ३.१
दुनोति तण्डुलान्यत्र	ब्र.या. ३.५४	दुर्मृत्युमरणं प्राप्ता	बृ.य. ४.३३
दुराचारस्य विप्रस्य	पराशर १२.५३	दुर्मित्रिया इति द्विष्यं	बृ.या. ७.९
दुराचारो हि पुरुषो	मनु ४.१५७	दुर्लभायां स्वशाखायां	आंपू ७४१
दुराचारो हि पुरुषो	व १.६.६	दुर्वाक्षताभ्यां तत्सव	कण्व ६७९
दुराधर्षैः ह्यियते वा	वृ.गौ. ५.७	दु (दा) र्वाधीनं कारपाठं	कपिल ४४
दुरालापादिकथनं दुष्ट	विश्वा २.५७	दुर्वाभिर्जुहुयात् तद्	वृ हा ३.१४४
दुराशी वा दुराचारी	वृ हा ८.२९०	दुर्वृत्त सद्गुणनरेषु	वृ परा १२.८०
दुरितानां दुरिष्टानां	व १.२७.२०	दुर्वृत्ता ब्रह्मविदक्षत्	या ३.२६८
दुर्गन्धत्यागपर्यन्तं कृत्वा	विश्वा १.५६	दुर्वृत्ता वा सुवृत्ता वा	वृ.गौ. ३.६४
दुर्गन्धधूमयोनीति (नि)	शाण्डि ३.१०९	दुर्व्यापारदिना तेषां	लोहि ६०४
दुर्गन्धं सर्वरन्ध्रेषु	वृ परा १२.१८५	दुःशीलोऽपि द्विजः पूज्यो	पराशर ८.३२
दुर्गाणि तत्र कुर्वीत	वृ हा ४.२२५	दुश्चरित्रात्पूर्वमेव समुद्	लोहि १५६
दुर्गा कात्यायनी चैव	वृ परा ४.१४८	दुश्चर्माणं शीर्णकेशं	अत्रिस ३४५
दुर्दृष्टांस्तु पुनर्दृष्टा	या २.३०८	दुष्कर्म करणात् पापात्	शाता २.२९
दुर्दृष्टे व्यवहारे तु	नारद १.५७	दुष्कर्मजा नृणां रोगा	शाता १.४
दुर्देशगमने चैव नौयानम	नारा ५.५०	दुष्कृतं हि मनुष्याणां	आंगिरस ५८
दुर्बलं स्नापयित्वा तु	कात्या २१.३	दुष्टनिग्रहमात्रेण तद्	लोहि २८५
दुर्बलानामनाथानां	शंखलि २५	दुष्टबुद्धेर्दुर्मुखस्य ज्ञाते	लोहि ५४०
दुर्बला व्याधि संयुक्ता	वृ परा ५.१७	दुष्टं सतो दूषयन्तं स्वकार्य	लोहि ७०७
दुर्बलेन स्वामिनैवं विवदन्तं	कपिल ८१४	दुष्टवादी खण्डितः	शाता ३.२०
दुर्बुद्धे मामकं धर्मं	वृ हा ८.१८४	दुष्टव्रणं गण्डमाला	शाता १.७
दुर्बोधं तु भवेद्यस्मा	बृह १२.२	दुष्टा दशगुणं पूर्वात्	वृ परा ६.२४७
दुर्बलेऽनुग्रहः कार्य्यस्तथा	पराशर ६.५२	दुष्टा दुराचाररता अपि	कण्व ५८५
दुर्भगो हि तथा षण्ढः	बृ.य.३.३५	दुष्टाग्रहरोगघ्नं अभक्ष्या	भार ६.७६
दुर्भगो हि तथा षण्ढः	यम ३०	दुष्टोऽयमसतो मुख्यः	लोहि ६३०
दुर्भीडसातमसद्यस्कं	भार १४.५३	दुष्टप्रतिग्रहं भुक्त्याहं	भार ६.१४६
दुर्भात्स्थान्पराधार्थानं	भार १४.५०	दुष्टप्रतिग्रहं कृत्वा विप्रो	अ २७
दुर्मिक्षं पीडा नास्त्यत्र	व २.६.४२८	दुष्टप्रतिग्रहहतो विप्रो	अ १३८

दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च	मनु ७.२४	दूषयन्तश्च तान्भूयः	कपिल ७४६
दुष्टस्त्रीदर्शनैव	बृ.य. ४.३७	दूषयन्श्रोत्रियान्विप्रा	कण्व २३४
दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य	अत्रिस २८	दृढकारी मृदुर्दान्तः	मनु ४.२४६
दुःसहं यमपुरं च	वृ.गौ. ५.२५	दृढवतो वधत्रस्यात्सर्वे	ब्र.या. ८.१३८
दुःसृष्टिं दोषविज्ञेयो	भार ७.११९	दृढश्चेदाग्रहायण्यां	कात्या २८.१५
दुःस्वप्ननाशकत्वेन	भार १८.५०	दृढोत्संगे समादाय	ब्र.या. ८.२३७
दुःस्वप्नपापनाशार्थी	भार १९.४६	दृताश्चेयेते मणयः	भार ७.२३
दुःस्वप्नं यदि पश्येतु	पराशर १२.१	दृश्यते कालदानन्तमाहु	वृ.गौ. १०.६
दुहिता च स्वसा	व्या २९४	दृश्यन्ते ब्राह्मणाः सप्त	आंपू ३५२
दुहिताचार्यभार्या च सगोत्रा	नारद १३.७४	दृष्टञ्च तत्परं ध्येयं	वृ परा १.६१
दुहिता (वृ) तनयो लोके	लोहि २९७	दृष्टं स्पृष्टं च दत्तं	वृ हा ८.१३०
दुहितापि तथा साध्वी	वृ परा ६.१९९	दृष्टामात्रैर्बल्य एव	आंपू १०४९
दूत एव हि सन्धत्ते	मनु ७.६६	दृष्टवाति दुःखिता सर्वे	कपिल ७७६
दूतं चैव प्रकुर्वीत	मनु ७.६३	दृष्टिपूतं न्यसेत्	मनु ६.४६
दूतसम्प्रेषणं चैव	मनु ७.१५३	दृष्टिपूतं न्यसेत्	शंख ७.६
दूतीप्रस्थापनैश्चैव	नारद १३.६४	दृष्टैव कामदेवोऽपि	वृ परा १०.१९३
दूयमानेन मनसा	आंपू १०९२	दृष्ट्वाचैव नमस्कृत्वा	व २.४.५९
दूरदेशस्थितैर्बन्धुजातै	लोहि १८२	दृष्ट्वा ज्योतिर्विदो	या १.३३३
दूरदेशान्तरस्थानां	कण्व ५८१	दृष्ट्वादत्त्वाऽपि वा मूर्खः	बौधा १.५.७६
दूरस्थाभ्यामपि द्वाभ्यां	कात्या १५.६	दृष्ट्वा निवृत्तपापौघः	बृ.य. ४.४२
दूरस्थो नार्चयेदेनं	मनु २.२०२	दृष्ट्वा पितामहः शूद्रमभि	बृ.गौ. २२.११
दूरस्थो नार्चयेद्देवान्	औ ३.७	दृष्ट्वा महापातकिनं	औ ९.५३
दूराच्छान्तं भयग्रस्तं	बृ.य. ३.२५	दृष्ट्वा विलोक्य मार्तण्डं	कपिल ९५१
दूरादतिथयो यस्य गृहं	विश्वा ४८	दृष्ट्वा सेतुं समुद्रस्य	वृ परा ८.९६
दूरादावसथान्मूत्र दूरात्	मनु ४.१५१	देयमेव भवेन्नूनं	कण्व १५६
दूरादाहूय सत्कृत्य	वृ.गौ. १२.२७	देयं चानाथेऽवश्यं	आप १.६
दूरादाहृत्य समिधः	मनु २.१८६	देयं चौरहृतं द्रव्यं	या २.३७
दूरादुच्छिष्टं विण्मूत्र	या १.१५४	देयं सवृद्धयाधविके	वृ हा ४.२२८
दूरादेव परीक्षेत ब्राह्मणं	मनु ३.१३०	देयस्य सवितुर्यच्च	बृह ९.४३
दूराद्धवानं पथि श्रान्तं	पराशर १.४१	देया भवद्भिरित्येवं भूमि	लोहि ४६४
दूराध्वचलनात्खिन्नो	बृ.गौ. १४.३	देव असुर मनुष्याद्यैः	वृ.गौ. ५.२९
दूर्वाक्षतान्सर्षपाश्च	व २.६.३४९	देवकार्याद् द्विजातीनां	मनु ३.२०३
दूर्वा चैतेषु यो लब्धः	भार १८.४३	देवकार्यं ततः कृत्वा	दक्ष २.२२
दूर्वा सर्षपपुष्पाणि	ब्र.या. १०.२०	देवकीपुत्र एवान्ये सर्वे	शाण्डि १.४५
दूषणेन पदेत्यादि	व २.४.५६	देवकीफलमाख्यात	बृ.गौ. १९.२

देव कृतस्यौषणां प्रजा	ब्र.या. २.१.४४	देवता हृदि विन्यस्य	विश्वा ६.३६
देवगृहेरंगवल्ली करणं व्रत	कपिल ६.२७	देवतीर्थेन संगृह्य ब्रह्मा	विश्वा २.२२
देवताः कथितास्साद्भिः	कपिल १.४५	देवतोत्तरसम्पर्कं विना	वृ.हा ६.४०९
देवतातिथि भक्तश्च	दक्ष २.४९	देवर्त्विक् स्नातका	या १.१.५२
देवतातिथिभृत्यानां	मनु ३.७२	देवत्वं अमरेशत्वं	वृ.हा ३.३६२
देवतादि पितृयज्ञान्तं	आश्व १.१.४०	देवत्वं सात्त्विका यांति	मनु १२.४०
देवतादीन्मः कुर्यात्	ल.व्यास २.५	देवदत्तापतिर्भायी	मनु ९.९५
देवतानां गुरोराज्ञः	मनु ४.१.३०	देवदानवगंधर्वा रक्षांसि	मनु ७.२३
देवतानां पितृणां च जले	लघुयम ९८	देव देव नमस्तेऽस्तु	वृ.गौ. ८.१९
देवतानां पितृणां च	लघुशंख ८	देवदेव! नमस्तेऽस्तु	वृ.गौ. ६.११०
देवतानां पितृणां च	लिखित ८	देवदेवश्च कपिला सदा	वृ.गौ. १०.२
देवतानां विपर्यास	कात्या २५.१६	देव देवेश दैत्यघ्न	वृ.गौ. ५.१
देवतान्तरशंका तु न	वृ.हा ७.५९	देव! देवेश! दैत्यघ्न!	वृ.गौ. ६.१
देवताः पञ्चविन्यस्य	ब्र.या. १०.९५	देव! देवेश! दैत्यघ्न	वृ.गौ. १०.६७
देवता परमात्मास्या	भार ६.३५	देवदव्य विनाशेन	व्यास ३४.३४
देवतापितृभूतानां काचि	आंड १२.१४	देवद्रोण्यां विवाहेषु	आप १०.१६
देवताप्रतिमां दृष्ट्वा	व्या ३६६	देवद्रोण्यां विवाहेषु	व १.१.४.२२
देवता प्राणशक्तिः स्याद्	विश्वा ६.२६	देवद्रोण्यां विहारेषु	आप १.३०
देवताब्रह्मविष्णुवीशाः	भार १८.७०	देवद्रोण्यां वृषोत्सर्गे	आंगिरस २३
देवता ब्राह्मणाधीना	वृ.गौ. २२.२८	देवद्रोही श्रुतिद्रोही	आंपू ६०५
देवता भाववृत्तश्च	शंख ९.११	देव धर्माभूतमिदं	वृ.गौ. ७.२
देवताभ्यस्तु तद्धुत्वा	मनु ६.१२	देवनामान्यनन्तानि	आंपू १६३
देवतायतने कृत्वा ततः	व १.११.२८	देवपात्रादितश्चाऽऽज्यं	आश्व २३.५२
देवतायतनोद्यान	वृ.पर ५.१.२२	देवापितृकर्मविधानं	विष्णु ६६
देवतायाश्च सायुज्यं	वृ.या. १.३३	देवपितृतिथिभ्यश्च	पु १६
देवतायै हवि स्थाप्य	आश्व २.४८	देवपूजां सर्वकाल	कण्व ७८६
देवताराधनञ्चैव स्त्रीशूद्र	अत्रिस १३६	देवपूजाविधिः प्रोक्त	वृ.परा ४.१.५४
देवतार्चकृतां नित्यं	वृ.परा १२.२०८	देवब्रह्मपितृणां च जात्या	भार २.३७
देवतार्थं हवि शिगुं	या १. १७१	देवब्राह्मणगोमांसं मातृमांसं	कपिल ९६७
देवता विनियोगोपापाने	भार ६.४५	देव ब्राह्मण पाषण्डि	वृ.परा १२.६३
देवता संख्या ग्राह्या	कात्या २६.३	देव ब्राह्मणसान्निध्ये	मनु ८.८७
देवतास्तत्र विन्यस्य	ब्र.या. १०.४४	देवभूतपितृ ब्रह्म	कात्या १३.२
देवतास्तर्पयित्वा	बौधा २.३.२	देवमानुषपित्र्येषु	भार १.५.९४
देवतास्वपि हूयन्ते	कात्या २५.१२	देवमालापनयनम्	वृ. गौ. ६.५९
देवता हृदयं प्रोक्तं	कण्व २०७	देवं अंशुमदं वह्नि	शंख ९.६

देवं सुगन्धतुलसी	व २.७.५९	देवानामपि तद्भोज्यं	आंपू २३८
देवयज्ञादिकं वक्ष्ये गृह्यो	विश्वा ८.१	देवानामाशसनं दद्यात्	आश्व २४.१४
देवयज्ञो भूतयज्ञः	शंख ५.३	देवानामासनं दद्यात्क्षणे	आश्व २३.१९
देवयात्राविवाहेषु	अत्रिस २४८	देवानां ऋजवोदर्भा	व्या २६०
देवरा एव विख्याता	लोहि ५५९	देवानां क्षालयेत्पादौ	आश्व २३.१३
देवरादिसुतोत्पत्तिः विधवा	लोहि १६९	देवानां च पितृणां	दा १२
देवराद्वा सपिण्डाद्वा	मनु ९.५९	देवानां दक्षिणेदद्या	ब्र.या ४.६७
देवर्षितर्पणं चैव स्नानं	वाधू ७७	देवानुग्रान् समभ्यर्च्य	या २.११४
देवर्षिपितृतृप्त्यर्थं	कण्व १.५२	देवानृषीन् पितृन्श्चैव	वृ हा ५.२१७
देवर्षिं नरिदस्तस्य	वृ हा ३.२९९	देवानृषीन् पितृन्श्चैव	व्या २१
देवलः शूककीटो यूष	बृ.गौ. २१.२०	देवानृषीन्पितृस्कंदं	भार १८.२६
देवलाजभिषः शूदान्	भार ४.१२	देवानेताहृदि स्मृत्वा	भार १५.१०५
देवलोकस्तथा सूर्यो	वृ परा १२.३३१	देवान् इव स्वयं विप्रान्	वृ.गौ. ६.८०
देव! संवत्सरं पुण्यमेकं	बृ.गौ. १८.१	देवान् ऋषीन् मनुष्यांश्च	मनु ३.११७
देवस्थ पुरतो वह्निं	व २.६.३८२	देवान् देवानुगांश्चैव	वृ परा २.१७१
देवस्य त्वेतिगृह्णवीयात्	आश्व १०.१८	देवान् पितृन् मनुष्यांश्च	वृ परा ७.२५३
देवस्य प्रतिमां कुर्यात्	व २. ६.३९	देवान् ब्रह्मऋषीश्चैव	ल व्यास २.३६
वस्य त्वेति मन्त्रेण	व २.३.५९	देवाः पितृगणाः च एव	वृ.गौ. ३.४३
देवस्य हरणाच्चैव	शाता ४.३०	देवाः पितृगणाश्चैव	वृ.गौ. ७.१९
देवस्वं ब्राह्मणस्वं	मनु ११.२६	देवा ब्रह्मर्षयः सर्वे	वृ.गौ. २.६
देवांश्च हृदयेध्यायन्	भार १८.२७	देवाभ्यर्चान्ततः कुर्यात्	औ १.१८
देवा ऋषिगणाः च एव	वृ.गौ. ४.२८	देवा मनुष्याः पितरश्च	वृ परा ५.१९२
देवा गातुविद इति	बृ.या. ७.१०७	देवा मनुष्याः पितरश्च	वृ परा ४.२११
देवा गात्विति वामदेव	ब्र.या. २.८६	देवार्चनं प्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.१११
देवागारे द्विजातीनां	संवर्त ९३	देवार्चनं सदा होमः	वृ परा १२.१८
देवआतिथ्य अर्चनं	या १.२१६	देवार्चने जपे होमे स्वाध्य	वाधू १३४
देवादितर्पणं चैव स्नानं	विश्वा ७२	देवार्चने जपे होमे	वृ हा ४.३९
देवादिब्राह्मण वस्त्रं	वृ.गौ. १.५२	देवाची दक्षिणादि स्यात्	आश्व २३.२७
देवादिस्थापनार्चासु	भार १९.३१	देवालयमखस्थान	भार ३.९
देवादीना मृणी भूत्वा	दक्ष २.४७	देवालयानि यौप्यानि	वृ हा ८.११७
देवाद्यं पार्वणं प्रोक्तं	वृ परा ७.१३६	देवालये नदीतीरे	भार ५.४१
देवानभ्यर्च्यगं धेन	व्या ३१	देवाः सर्वे विमानस्था	वृ हा ७.२९३
देवानभ्यर्च्य गंधेन	व्या ४०	देवास्तत्र तु विन्यस्य	ब्र.या. ८.७८
देवानाम तिथीनां च	वृ परा १०.२८१	देवीद्वादशलक्षं तु जपं	नारा १.३७
देवानामधिपोदेवो	शाता ५.२०	देवीध्यानरतं विप्र न	भार १२.३९

देवीभ्यां सहितं तस्मिन्	वृ हा ३.१३०	देशं कालं वयः शक्तिं	अत्रिस २.४७
देवीमावाहयेछीना	भार ११.७३	देशं कालं वयः शक्तिं	या ३.२९३
देवीं च विभ्रतीं दोर्भिः	वृ हा ३.२८	देशं कालविशेषांस्तान्	कण्व ६०
देवीराप इति द्वाभ्यामापो	बृ.या. ७.२१	देशस्यत्वेति गृण्हीया	ब्र.या. ८.२०४
देवेड्चयेमरुक्पुत्र	भार १५.५२	देशाचारं कुलाचारं	व्या २९३
देवे द्वौ प्राक्त्रयः पित्र्ये	व २.६.३६७	देशाचाराविरुद्धं यद्	नारद २.११३
देवेभ्यश्च नमः स्वाहाः	वृ परा २.१७८	देशात्प्रवासयेत्सद्यः तत्प्रति	कपिल ५२३
देवेभ्यश्च हुतादन्नाच्छेषाद्	या १.१०३	देशादुच्चाटयित्वाथ दद्यात्	कपिल ८५८
देवेभ्यश्च हुतादन्ना	ल व्यास २.५५	देशाद् देशान्तरं	या २.१३
देवो ध्येतव्यइत्युक्ते तदुपर्यपि	कपिल २३	देशानान्तु विशेषेण	औ ३.१३२
देवो मुनिर्द्विजो राजा	अत्रिस ३.७१	देशान्तरकृतं चापि न	लोहि २५७
देव्यर्थं परिवारार्थं	भार ११.२६	देशान्तरगतः श्रुत्वा	शंख १५.११
देव्याः कुशाश्चयुग	भार १८.१२१	देशान्तरगते जाते मृते	वृ परा ८.१३
देव्या द्वादशलक्ष तु जपं	नारा १.३६	देशान्तरगते प्रेते द्रव्यं	या २.२६७
देव्यापादै स्त्रिराचम्य	विश्वा २.५	देशान्तरगते प्रेते	वृ परा ६.३५८
देशकाल उपायेन	या १.६	देशान्तरं तु विज्ञेय	दा १३९
देशं कालञ्च भोगञ्च	या २.१८४	देशान्तरमृतः काश्चित्	पराशर ३.१४
देशकालवयोद्रव्य	नारद २.२०९	देशान्तरस्थ क्लीवैक	कात्या ६.४
देशकालातिवृत्त्या च	शाण्डि ३.१२४	देशान्तरस्थे दुर्लब्धे	या २.९३
देशकालादिनियमं	वृ हा ३.५	देशान्तरस्थे प्रेत ऊर्ध्व	व १.४.२९
देश-कालादापेक्ष्यैव	वृ परा ७.३७१	देशान्तरे दुरन्नानां	वाधू २२०
देशकालानुसारेण	बृ.या. ८.१४	देशान्तरे मृतः काश्चित्	दा १३८
देशकालाभियाताय	वृ.गौ. ६.४२	देशान्तरे गते विप्रे	बृ.गौ. २०.१
देशकालौ च संकीर्त्य	विश्वा १.७०	देशेऽकाले च पात्रे च	वृ परा ७.११७
देशकालौ च संकीर्त्य	विश्वा ८.१९	देशेऽशुचावात्मनि च	या १.१.४९
देशग्रामगृहानाश्च	नारद १८.५७	देशेऽशुचावात्मनि च	व २.३.१६०
देशजातिकुलादीनां	नारद १६.१	देहद्वयं विहायाशु	ल हा ७.१२
देशधर्मानवेक्ष्य स्त्री	नारद १३.४७	देहन्यासकरं प्रोक्तं	भार १९.२४
देशधर्मान् जातिधर्मान्	मनु १.११८	देहमध्यस्थितं देवं	वृ परा १२.३२४
देशधर्मं जातिधर्मं	व १.१.१६	देहस्तु पिण्ड इत्युक्तो	विश्वा ५.८
देशः पर्व च कालश्च	वृ परा ७.२९७	देहादुत्क्रमणं चास्मात्	मनु ६.६३
देशं कालञ्च योऽतीयात्	या २.१९८	देहान्ते नरकं भुक्त्वा	नारा ५.२४
देशं कालं च संकीर्त्य	आंपू ७७४	देहाशुद्धिरितिख्याता सेयं	शाण्डि १.८१
देशकालं तथा जाति	नारद १८.६९	देहिनां चैव सर्वेषां देहे	विश्वा ३.१
देशं कालं तथात्मानं	यम ५१	देहे तस्याऽवतिष्ठन्ति	वृ परा १२.२२०

देहे दुःखसुखे न स्तः	लोहि ५९६	दोः पत्सन्धितदग्रपाद	विश्वा ६.४२
देहेन्द्रियात्परः साक्षात्	वृ हा ४.३	दोलयेच्च ततो दोलां	वृ हा ७.२८९
देहेन्द्रियादिभ्योऽन्यत्वं	वृ हा ८.१५३	दोलाया दर्शनं विष्णोः	वृ हा ७.२९२
देवेन्द्रियान्तकरणबुद्धि	शाण्डि १.८७	दोलायां दर्शनं विष्णोः	वृ हा ५.५१०
दैत्यदानवयक्षाणां	मनु ३.१९६	दोषयुक्तं च भवति	कण्व १७७
दैदीप्यमानं चन्दार्क	वृ परा ११.१३३	दोषवत्करणीयत् स्याद	नारद ११.७
दैनन्दिनं प्रकथितं श्राद्धं	कपिल २७१	दोहदस्याप्रदानेन	या ३.७९
दैत्यं साद्यं जह्यं	बौधा २.२.८८	दौर्ब्राह्मण्यं कुले तेषां	कण्व ६३५
दैव कर्मणि तृतीयेऽहनि	व २.६.४६९	दौर्भाग्यं घन्तु मे	वृ परा ११.१९
दैवतं ब्राह्मणं गात्रं च	वृहा ४.१९५	दौहित्र एव सर्वेषां पुत्राणां	कपिल ४९८
दैवतस्करराजोत्थे	नारद ४.६	दौहित्रः कर्त्ता? तनयश्चापि	कण्व ७४६
दैवतान्यभिगच्छेत्तु	मनु ४.१५३	दौहित्रजनानादूर्ध्वं तद्	लोहि २५९
दैवत्यमस्यां सविता	वृ परा ४.८	दौहित्रजननादेव के केचिदत्र	कपिल ७४३
दैव-पर्जन्य-भू	वृ परा ५.९२	दौहित्रजनने पूर्वं तस्माद्दौहित्र	कपिल ७२४
दैवपात्रेऽभिद्यायीथं	आपू ८१३	दौहित्रजनने सद्यो नष्ट	लोहि २३९
दैवैपित्र्यातियेयानि	मनु ३.१८	दौहित्रः पावनः श्राद्धे	वृ परा ७.५८
दैवपूर्वं तु यच्छ्राद्धं	लिखित ४७	दौहित्रमात्रस्य तु चेल्लोके	लोहि ३०६
दैवं पूर्वाहिकं कर्म	वृ. गौ. १०.६८	दौहित्रंगोधृतं ज्ञेयं	ब्र. या. ३.५६
दैवं पैतृकमार्घं च कर्म	भार १५.८	दौहित्रश्चेच्छनाभावेऽप्यस्य	कपिल ४९१
दैवयोगेन चिद्बुद्धे	आंपू ४०	दौहित्रसाम्यमात्रा येविभक्ता	कपिल ४८७
दैवयोगेन विद्वां	आंपू १०५७	दौहित्राणामनेकेषां समावाये	कपिल ४९५
दैवाकीर्त्यैकचषकगतमेव	लोहि ६४४	दौहित्रे जननादत्र परवि	कपिल ७४१
दैवात्प्रत्याब्दिके श्राद्धे	व्या ३२१	दौहित्रे दुहितु द्वारा स्वकीया	कपिल ७३७
दैवात् मघोनोऽपि	वृ परा १२.७६	दौहित्रे सतिपुत्रस्य	कपिल ७११
दैवाद्यान्तं तदीहेत	मनु ३.२०५	दौहित्रे सति सोऽयं स्यात्	लोहि २१४
दैविकं चाष्टमं श्राद्धं	औ ३.१३१	दौहित्रोत्पत्तिमात्रेण तत्कुल	कपिल ७१२
दैविकानां युगानां तु	मनु १.७२	दौहित्रोत्पत्तीमात्रेण माता	कपिल ७१४
दैविकेषु च पित्र्येषु	आंपू ५९३	दौहित्रो भागिनेयश्च	आश्व १.९९
दैवि पैतृवापि भुक्त्वा	अ १४	दौहित्रो ह्यखिलं रिक्थम	मनु ९.१३२
दैवेन केचित् प्रसभेन	वृ परा १२.७८	द्यावापृथ्वी देवेभ्यो	ब्र.या. ८.२५
दैवे पुरुषकारे च	या १.३४९	द्यावाभूभ्योः स्विष्टकृते	वृ परा ४.१६४
दैवे युग्मायथाशक्ति	ब्र.या. ४.६१	द्युचरेभ्यश्च भूतेभ्यो	वृ परा ४.१६९
दैवे वृद्धो तीर्थकाम्यन दोत्पन्नेः प्रजा ६५		द्युतमेकमुखं कार्यं	या २.२०६
दैवे श्राद्धे च विप्रः सन्	वृ.गौ. ३.५९	द्युतमेतत्पुरा कल्पे	मनु ९.२२७
दैवोढाजः सुतश्चैव	मनु ३.३८	द्युतं अभिचारोनाहित	बौधा २.१.६४

द्यूतं च जनवादं च	मनु २.१७९	दुपदां वा जपेदेवीमजपां	वृ परा ४.५२
द्यूतं समाह्वयं चैव	मनु ९.२२१	दुपदां वा तिजो जप्त्वा	वृ परा ८.२२०
द्यूतं समाह्वयं चैव	मनु ९.२२४	दुमशाकं महाशाकं	व २.६.१७२
द्योतयन् प्रथमं व्योम	वृ.गौ. ७.१०३	दुमेण राजदन्तिहृदती	शाता ६.१४
द्यौः पुमान्धरणी नारी	वृ परा ५.११३	दुमैः नाना विधैरन्येः	वृ परा १०.३७६
द्यौर्नय इन्द्रेति दद्यात्	वृ हा ८.४३	द्रोणाढकं तदर्धं वा	वृ परा ८.२२२
द्यौर्भूमिरापो हृदयं	मनु ८.८६	द्रोण्यम्बूशीर कुम्भाभः	वृ परा ८.२१४
द्रवद्रव्याणि शुद्धचंति	वृ परा ६.३३८	द्रोण्यान्दोलायामपि	वृ हा ५.३०९
द्रवाणां चैव सर्वेषां	मनु ५.११५	द्वदेर्भे प्रोक्षणी स्थाप्य	ब्र.या. ८.२५६
द्रव्यपाणिश्च शूदेण	आप ८.२१	द्वन्द्वान्येतानि बहु	कात्या २५.११
द्रव्य ब्राह्मणसम्पत्तौ	औ ३.११७	द्वयंशं ज्येष्ठो	व १.१७.४०
द्रव्यमन्त्रे च मन्त्रेषु	शाण्डि १.८४	द्वयंगुलस्तत्र विस्तारः	वृ परा ११.२७६
द्रव्यमन्नं जलं शाकं	कण्व ७८७	द्वयन्तरः प्रतिलोम्येन	नारद १३.११७
द्रव्यमात्रन्तु सर्वत्र	व २.६.५०७	द्वयभियोगस्तु विज्ञेयः	नारद १.२२
द्रव्यस्य नाम गृहीयाद्	वृ परा १०.२८५	द्वयमु वै ह पुरुषस्य	व १.२.७
द्रव्यस्य भूमिमुख्यादेर	कपिल ५८२	द्वयमेतत्प्रकथितं स्त्रिय	आंपू १८०
द्रव्यस्य संपत्सु	प्रजा १८	द्वयं निष्ठं द्वयार्थज्ञ	व २.७.१४
द्रव्य हर्तृणां प्रायश्चित्त	विष्णु ५२	द्वयंमुहवै सुश्रवसो	गैधा १.१.३३
द्रव्याणाञ्च तथा शुद्धि	वृ परा १.५५	द्वयं समाप्य यः स्नायात्	वृ परा ६.१६७
द्रव्याणामप्यलाभे तु	व २.६.९२	द्वयुनर्विश्रामसंस्थाप्य	ब्र.या. ८.२४६
द्रव्याणामल्पसाराणां	मनु ११.१६५	द्वयेन मूलमंत्रेण	वृ हा ७.१३५
द्रव्याणि धर्मकृत्येषु	लोहि ६९२	द्वयेन वृत्तियाथात्म्यं	वृ हा २.१३९
द्रव्याणि निक्षिपेत्	वृ हा ४.७१	द्वयेनैव प्रकुर्वीत	वृ हा ५.१३८
द्रव्याणि हिंस्याद्यो	मनु ८.२८८	द्वयोरप्यनयोः श्रीशं	वृ हा ५.४२०
द्रव्याण्यमूनिपद्राहुः	भार १४.३०	द्वयोरप्येतयोर्मूलं यं	मनु ७.४९
द्रव्याण्यमूनिपात्रेषु	भार ११.८४	द्वयोरापन्नयोस्तुल्यं	नारद १६.११
द्रव्याण्यन्यानि चादाय	वृ परा १०.३३३	द्वयोर्विवदतोरर्थं द्वयोः	नारद २.१४२
द्रव्यान्तरयुतं तैलं न	वाधू ४१	द्वयोर्विवदमानयो	व १.१६.३
द्रष्टारो व्यवहाराणां	या २.२०५	द्वयोश्चापि हविःशेषं	आश्व २.६०
दंष्ट्राभिर्भक्षिता ये च ये	वृ.य. ४.३१	द्वयोस्त्रयाणां पंचानां	मनु ७.११४
द्रहिणेन तदा प्रोक्तं	ब्र.या. १२.११	द्वात्रिंशन्निष्कसंयुक्तं	वृ.गौ. ६.१६५
द्राक्षोत्थैश्चैव खजूरैः	वृ परा १०.७७	द्वादश इत्येव पुत्राः	व १.१७.१२
द्रुपदाघमर्षणं सूक्तं	वृ परा २.५६	द्वादशपुत्र वर्णनम्	विष्णु १५
द्रुपदा नाम सावित्री	वृ.या. ७.१८१	द्वादश प्रतिमास्यानि	कात्या २४.८
द्रुपदां नाम गायत्री	आंपू २०१	द्वादश मासान् द्वादशाधि	व १.४.२७

द्वादशं विश्वचक्रं तु	अ १०४	द्वादशो नवमो वापि	वृ परा ५.१४७
द्वादशरात्रं तप्तं पयः	बौधा १.१०.४०	द्वादश्या दीपदानञ्च	व २.६.१६०
द्वादशश्चाग्निं सर्वश्च	ब्र.या. ६.१६	द्वादश्यान्तत् प्रकुर्वीत	वृ हा ८.३३१
द्वादशाक्षरं तत्त्वज्ञश्चातु	वृ.गौ. ६.१८२	द्वादश्या माश्वयुद्धमासे	बृ.गौ. १८.२७
द्वादशाक्षरमन्त्रोऽयं	शाण्डि ५.७४	द्वादश्यामेव वा कुर्यादुप	बृ.गौ. १८.१८
द्वादशाक्षरयोगेन दूरस्थं	शाण्डि ५.६८	द्वादश्यां कार्तिके मासि	वृ.गौ. १८.२८
द्वादशाक्षररूपेण परिणाम	शाण्डि ५.६४	द्वादश्यां कुतये स्नातान्	वृ परा ७.३१०
द्वादशांगुलविस्तारं	भार १५.११८	द्वादश्यां ज्यैष्ठमासे मां	बृ.गौ. १८.२३
द्वादशानां तथान्येषां	आंपू ६५१	द्वादश्यां दीपकं दद्यात्	वृ परा ४.१३८
द्वादशानां तु यत्तजस्त	बृह ९.७१	द्वादश्यां द्वादश चरून्	वृ परा ११.३०६
द्वादशाब्दं च विचरेत्	वृ परा ८.९५	द्वादश्यां पुत्रकामो	वृ परा ११.३०३
द्वादशाब्दं जपेद्देव	वृ हा ३.१४६	द्वादश्यां पूजयेद् विष्णु	वृ हा ३.२०३
द्वादशाब्दं मनु जप्त्वा	वृ हा ६.२४८	द्वादश्यां पौषमासे तु	वृ.गौ. १८.२०
द्वादशाब्दं व्रतं धार्य	वृ परा ६.१६४	द्वादश्यां प्रातरुत्थाय	वृ हा ७.७१
द्वादशाब्दाद् विमुच्यते	वृ हा ६.२९३	द्वादश्यां माघमासे तु	बृ.गौ. १८.२१
द्वादशारं नवव्यूहं	वृ परा ४.१४४	द्वादश्यां विषुवे चैव	बृ.गौ. १९.२५
द्वादशार्णं मनुं जप्त्वा	वृ हा ३.१७९	द्वादश्यां श्रावणे मासि	बृ.गौ. १८.२५
द्वादशार्णं मनुं जप्त्वा	वृ हा ३.१८०	द्वादश्यां द्विधिवद्वाजन	बृ.गौ. ६.१७४
द्वादशार्णमनोरेवं	वृ हा ३.२०४	द्वादश्यां कुलमेकं तु	वृ परा १.२५
द्वादशार्णं मनोर्जप्तु	वृ हा ३.१७७	द्वादश्यां भक्षणेन्नस्य	वृ परा १.२६
द्वादशार्णं सकृज्जप्त्वा	वृ हा ३.१७६	द्वादश्यां यज्ञमेवाहुः	वृ परा १.२३
द्वादशार्णेन मनुना	वृ हा ५.८७	द्वादश्यां याच्यमानस्तु	वृ परा १.२७
द्वादशार्णेन मनुना	वृ हा ६.४२७	द्वादश्यां युतदस्य स्यात्	वृ परा १.४०
द्वादशाहमिदं कर्म	शाता २.९	द्वादश्यां रुधिरयावत्	वृ परा १.२९
द्वादशाहे त्रिपक्षे च	ब्र.या. ७.३	द्वादश्यां शाख-लिखिताः	वृ परा १.२४
द्वादशाहोपवासेन	अत्रिस १२८	द्वादश्यां कुशाभ्यामथवा	भार १८.१०२
द्वादशी दशमीत	ब्र.या. ९.११	द्वादश्यां वा शांतिकार्येषु	भार १८.५३
द्वादशीविमुखत्वं च	वृ हा ८.१५७	द्वादश्यां द्रामुध्यायणको दद्यात्	औ ५.९०
द्वादशी सा महापुण्या	व २.६.२६०	द्वादश्यां गवाक्ष सन्दर्भैः	कात्या २९.१६
द्वादशीसु च शुक्लासु	वृ परा १०.३५१	द्वादश्यां वत्युद्भवं गोपी	वृ हा ५.६५
द्वादशोऽहनि संप्राप्तो	आ.वृ ९८१	द्वादश्यां यपि ततः पूर्णान्	शाण्डि ५.२५
द्वादशैताः कला दिव्या	ब्र.या. १०.९१	द्वादश्यां देवताभ्योऽन्नं	आश्व १.१४१
द्वादशैते पितृगणाः	शाता ६.५	द्वादश्यां एवं तथा गुह्ये	वृ परा २.१५८
द्वादशैव तु मासास्तु	वृ हा २.९४	द्वादश्यां प्रतिपद्येत	नारद १४.६२
द्वादशैवसहस्राणि	ब्र.या. १.३५	द्वादश्यां पुरुषौ लोके	पराशर ३.३७

द्वावेतावशुची स्यातां	आंगिरस ४०	द्विजातीनामभोज्यन्	अत्रि ५.२३
द्वावेव वर्जयेन्तित्यमन	मनु ४.१.२७	द्विजातीनां प्राजापत्यादि	विष्णु ६२
द्वा सप्ताति सहस्राणि	या ३.१०८	द्विजानामेव नान्येषां	वृ हा ५.१.८४
द्विकक्ष एककक्षश्च	ब्र.मा. २.२८	द्विजान् यः पाययेत्तोयं	वृ परा १०.२०
द्विकं त्रिकं चतुष्कं च	मनु ८.१.४२	द्विजाविधियथस्नात्वा	भार ७.५४
द्विकं शतं वा गृहीयात्	मनु ८.१.४१	द्विजोग्निहूब्रजनैव	भार ५.५५
द्विकाल मतिथञ्चैव	बृ.गौ. १५.९१	द्विजोत्तमान्भुक्त्वाथ	भार ९.१४
द्विकालं विधिवत् स्नानं	वृ परा १२.१.२८	द्विजोदधिसमालोक्य वाणं	ब्र.या. ८.२२६
द्विगुणचं जपेद्वेदं	अ ५३	द्विजो ध्यात्वैवं आत्मानं	वृ परा ११.१.४१
द्विगुणं क्षत्रियस्यान्ने	अ १९	द्विजात्ऽध्वगः क्षीणवृत्ति	मनु ८.३.४१
द्विगुणं चेन्न दत्तं	लघुयम ५८	द्विजोवैश्योनृपश्शूद्रो	भार १८.१०
द्विगुणं तत्प्रदातव्यं	वृ हा ४.२.४४	द्वितीयञ्च तृतीयञ्च	कात्या ३.१२
द्विगुणं त्रिगुणं चैव	नारद २.११	द्वितीयमेके प्रजनं	मनु ९.६१
द्विगुणं त्रिगुणं वापि	बृह ९.१.९१	द्वितीयं तु पितुस्तु	दा ३७
द्विगुणं निखिलं कृत्यं	आंपू २१२	द्वितीयवर्षमारभ्य यावद्	नारा ५.२७
द्विगुणं राजयोगेन	आंपू १९२	द्वितीयवारनिक्षिप्तं तार्त्तियोकेन	कपिल २८९
द्विगुणं हिरण्यं त्रिगुणं	व १.२.४८	द्वितीयाग्नि मुखाद्यद्यत्कर्म	लोहि १४२
द्विगुणां पलाशसमिधं	वृ परा ११.१.८०	द्वितीयाचमने सम्पद्	कण्व १०७
द्विचतुष्पद् दशाष्टाद्वैः	शाण्डि २.७१	द्वितीयाञ्चैव यः पत्नी	कात्या २०.७
द्विजकर्मादिभिः पश्चाद्	भार १५.२६	द्वितीयादिपुरोदभूता	आंपू ४३२
द्विजः कुर्यात्कुमारस्य	व २.३.३८	द्वितीयादिसमुदभूत	लोहि ८१
द्विजदास्याय पण्याय	वृ परा ५.१.५३	द्वितीयादिसमुदभूतो न	आंपू ४१४
द्विजछत्रमिति प्रोक्तमिति	भार १५.१.३९	द्वितीयादिसुतानां स्यात्	आंपू ४३२
द्विजन्मा सपरं ब्रह्म	भार ९.४९	द्वितीयादिसुतान् सर्वान्	आंपू ४१५
द्विजपादजलक्लन्ना	वृ.गौ. ६.५०	द्वितीयाद्यनले लौकिक	लोहि १४४
द्विजः पुण्ड्रमृजुं सौम्यं	वाधू १०६	द्वितीयाद्यग्नयः शिष्टाः	लोहि १२
द्विजयोनि विशुद्धानाम्	वृ.गौ. ४.३	द्वितीयाब्दं समारभ्य	नारा ३.९
द्विजः शाखामृगं हत्वा	वृ परा ८.१.७२	द्वितीयां आहुतिं तदवत्	आश्व १.५४
द्विजशुश्रूणन्तीर्थ तीर्थ	वृ.गौ. २०.१३	द्वितीयावरणं पश्चात्	वृ हा ४.८८
द्विजशुश्रूषणादन्यन्नास्ति	वृ.गौ. २२.७	द्वितीयाऽऽवाहने षष्ठी	आश्व २४.१२
द्विजः सदा माहध्याना	भार १३.४४	द्वितीया वेधगोक्रोडा सर्वथा	ब्र.या. ९.५०
द्विजाग्रजो यदा पश्येत्	वृ परा १२.१.२१	द्वितीयो च तथा भागे	दक्ष २.२५
द्विजाः च सर्वभूताना	वृ.गौ. ३.७१	द्वितीये चैव यच्छेष	नारद १८.९१
द्विजातयः सवर्णासु	मनु १०.२०	द्वितीये तु पतिष्ठी	कात्या २५.४
द्विजाति प्रवराच्छूद्रायां	बोधा २.२.३३	द्वितीयेऽह्नि ददन्तु क्रेता	नारद १०.३

द्विधा कृत्वाऽऽमनो	मनु १.३२	द्वे तिस्रो वा स्थितां	आंपू ३९१
द्विनिशामर्चयेदितु	वृ हा ७.२८६	द्वे पंच द्वे क्रमेणैता	कात्या २६.११
द्विनेत्रभेदिनो राजद्विष्टा	या २.३०७	द्वे पितुः पिण्डदानं (ने)	लघुयम ७९
द्विपक्षञ्च वृथामांसं	बृ.गौ. १६.४४	द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये	बृ.या २.४७
द्विपदानं नगर्यन्नं	वृ.गौ. ११.१५	द्वेभार्ये क्षत्रियस्यान्ये	नारद १३.६
द्विपदामर्धमांसं स्यात्	नारद १०.६	द्वे वैश्यस्य	बौधा १.८.४
द्वि पार्वणं प्रकर्तं	ब्र.या. ४.३३	द्वे सन्ध्ये सद्यमित्या	ब्र.या. १३.९
द्विपितुः पिण्डदानं	बौधा २.२.२३	द्वैतञ्चैव तथा द्वैतं	दक्ष ७.४८
द्विभार्यके क्रियाकृच्चे	आंपू ४१९	द्वैतपक्षाः समाख्याता	दक्ष ७.५०
द्विभूतोयदि संसृज्येत्	कात्या १८.१५	द्वै द्वै पितृकृत्ये	व १.११.२४
द्विरक्षरं चतुर्व्यापि घोष	ब्र.या. ८.३३३	द्वैधे बहूनां वचनं	या २.८०
द्विरभ्यस्ताः पतन्त्यक्षा	नारद १७.३	द्वै मातृणां मातृतश्च	वृ हा ४.२५२
द्विराचामेनु सर्वत्र	वृ हा ४.२३	द्वैविध्यं किल संप्राप्तं	आंपू ५०७
द्विरामुष्यायणा दद्युर्द्वाभ्यां	नारद १४.२२	द्वौ कृच्छ्रौ परिवित्तेस्तु	पराशर ४.२१
द्विमातुः पिण्डदानं तु	लिखित २७	द्वौतुयौ विवदेयातां	मनु ९.१९१
द्विमात्रश्चार्धमात्रस्तु	बृ.या. २.१२८	द्वौ दैवाथर्वणौ विप्रौ	व्या १८७
द्वियज्ञोपवीतीं	बौधा १.३.५	द्वौ देवे च त्रयः पित्र्य	प्रजा १७८
द्विवर्ष जन्ममरणे	औ ६.२६	द्वौ दैवे प्राक्त्रयः पित्र्य	या १.२२८
द्विवर्ष पूर्ववद्वाऽपि	वृ हा ६.३३१	द्वौ दैवे प्राक्त्रयः	ब्र.या. ४.४७
द्विवर्षे निक्षिपेद्भूमौ	ब्र.या. १३.१२	द्वौ दैवे पितृकार्येत्रीनेक	ब्र.या. ४.३७
द्विवारं भोजनाञ्च	वृ हा ८.२०६	द्वौ दैवे पितृकार्ये	मनु ३.१२५
द्विविधं तु समुद्दिष्टं	बृह ११.२५	द्वौ दैवे प्राक्त्रयः	दा ६५
द्विविधस्तु जपः प्रोक्त	वृ परा ४.५७	द्वौ दैवे प्राङ्मुखौ त्रीन्वा	शंख १४.९
द्विविधा देहशुद्धिश्च	शाण्डि १.१८	द्वौ द्वौ गुणावाधिष्ठाय	वृ हा ३.१६८
द्विविधास्तस्करा ज्ञेयाः	नारद १८.५३	द्वौ द्वौ चक्षुषोः श्रुत्यो	वृ परा २.१५९
द्विविधास्तस्करान्	मनु ९.२५६	द्वौ पिण्डावेकनामा	दा ४७
द्विविधो ब्रह्मचारी तु	दक्ष १.८	द्वौ पिण्डौ निर्वपेत्ताभ्यां	औ ५.९२
द्विषद् लक्षप्रमाणं च	ब्र.या १०.३६	द्वौ मार्गावात्मनो ज्ञेयो	वृ परा १२.३२७
द्विसन्ध्यं वा त्रिसन्ध्यं	बृ.गौ. १७.५५	द्वौ मासौ दापयेद्	आप १.२१
द्विस्तत्पीरमृजेद्वक्तं	वृ.गौ. ८.२८	द्वौ मासौ पञ्चगव्येन	बृ.य. ३.६
द्वीपमुन्तमाख्याते	कात्या २९.१५	द्वौ मासौ पालयेद्वत्सं	दा ११,
द्वीपोन्तरगतौ चैव चण्डाल	नारा ५.५१	द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन	मनु ३.२६८
द्वे कृच्छ्रे परिवित्तेस्तु	अत्रिस १०४	द्वौ मासौ यवकेन	व १.११.५७
द्वे जन्मनी ज्ञातीनां	व्यास १.२१	द्वौ वापि दैविके पिप्रौ	वृ परा ७.४१
द्वे द्वे जानुकपोलोरु	या ३.८७	द्वौ शंखकौ कपालानि	या ३.९०

ध

धण्टाभरणदोषेण
 धनग्राममहाशिष्यबन्धु
 धनतो यस्य यो लोके
 धनदं धन्वनागेति
 धनदस्य पुरं रम्यम्
 धनत्यागं गृहे कृत्वा
 धनमूलाः क्रियाः सर्वा
 धनं चिकित्सासंबन्धि
 धनं पवित्रं विप्राणामाति
 धनं फलति दानेन
 धनं यो विभूयाद्भ्रातुः
 धनं विद्यांभिषक् सिद्धिं
 धनवन्तमदातारं दरिद्र
 धनवार्द्धषिकं राजसेवकं
 धनवृद्धिं प्रसक्तांश्च
 धन स्त्रीहारिपुत्राणां
 धानानामपि धान्यानां
 धनानि तु यथाशक्ति
 धनानि येषां विफलानि
 धनान्तं चैव वैश्यस्य
 धनाशयान्यं कुरुते य
 धनुग्रहोण ग्रामादीन
 धनुर्दुर्गं महोदुर्गं दुर्गं
 धनुर्मुष्टिं करेणैव प्रकुर्वीत
 धनुः शतं परीहारो
 धनुः शतं परीहारो
 धनुः शरणां कर्ता च
 धनुश्च वनमाल्यश्च
 धनुः सहस्राण्यष्टौ
 धनेभ्योपतोभ्याऽऽसुर
 धनैर्विपानभोजयित्वा
 धरणानि दश ज्ञेयः
 धरादानक्रयाद्येवं वैश्वस्तं

आप १.१७
 कपिल ५६९
 आपू ३३०
 वृ परा ११.२२०
 वृ.गौ. ५.७१
 आंउ १०.१९
 नारद २.३९
 प्रजा ४९
 प्रजा ४४
 वृहस्पति ७१
 मनु ९.१.४६
 या १.२६७
 लोहि ६७९
 कात्या ६.७
 कात्या ६.६
 नारद २.२०
 कपिल ४३४
 मनु ११.६
 वृ.गौ. १४.३१
 शंख २.४
 कपिल ७७३
 भार २.६६
 मनु ७.७०
 बार २.६७
 या २.१७०
 मनु ८.२३७
 मनु ३.१६०
 व २.७.९२
 कात्या १०.६
 बौधा १.११.६
 ल हा २.८
 मनु ८.१.३७
 लोहि २५५

धरादानं प्रशंसन्ति सर्वदानो कपिल ४२९
 धरः सोमौनिलश्चैव भार ११.५२
 धर्म एव हतो हन्ति मनु ८.१५
 धर्मकार्येषु सर्वेषु आश्व १६.२
 धर्मज्ञं च कृतज्ञं च मनु ९.२०९
 धर्मज्ञस्य कृतज्ञस्य नारद १८.४१
 धर्मज्ञानच्च वैराज्ञ भार ११.३७
 धर्मतः कारयेद्यश्च वृ हा ४.२०८
 धर्मतोऽस्यास्तुरण्डाया लोहि ४५८
 धर्मध्वजी सदा लुब्धः मनु ४.१९५
 धर्मपत्नीवीतिहोत्रे प्रधाने लोहि ३३
 धर्मपत्नीवीतिहोत्रे स्मार्त लोहि १३
 धर्मपत्नी समारख्याता दक्ष ४.१६
 धर्मपत्नीसमुद्भूतो आपू ४५०
 धर्मपत्नीसुते बाले आपू ४६९
 धर्मपत्नीसुतो बालो आपू ४२९
 धर्मपत्नीसुतो बालो आपू ४५९
 धर्मपत्नी सुतो वर्णी आपू ४२८
 धर्मपत्न्यतिरिक्तानां लोहि ११५
 धर्मपत्न्यनलावेव लोहि २४
 धर्मपत्न्याः संघटते न कपिल ५६५
 धर्मपत्न्येव सततं ज्यैष्ठ लोहि ४५
 धर्मपर्यायवचनै नारद १९.९
 धर्मः पिता च माता च वृ.गौ. १.३०
 धर्मप्रधानं पुरुषं तपसा मनु ४.२४३
 धर्मप्रिया! ब्रुवे राजन्नित्य वृ.गौ. २२.३१
 धर्मभेदाद्विरुद्धं हितच्छेषेण कपिल २६७
 धर्ममार्गेण सर्वैस्तैः गन्तव्यो कपिल ७५१
 धर्मं चरत माऽधर्मं व १.३०.१
 धर्मं चरेत्प्रयत्नेन साध्वी लोहि ६५६
 धर्मं जिज्ञासमानानां वृ.गौ. १४.४३
 धर्मं तु त्रियुगाचारं स वृ परा १.१८
 धर्मं शनैः संचिनयाद् मनु ४.२३८
 धर्मयुक्तान् प्रबाधन्ते शाण्डि ४.२३५
 धर्मविद्यार्थं कृद् दर्भः वृ परा ११.४९

श्लोकानुक्रमणी

धर्मशास्त्रकुशलाः कुलीनाः	नारद १.६९	धर्माधर्मविधिः कृत्सुनो	वृ.गौ. १२.२८
धर्मशास्त्रनुजीवः	ब्र.या. १.४२	धर्माधर्मविवेकं	दा २
धर्मशास्त्रमिदं पुण्यं	संवर्त २.२७	धर्माधर्मैः महापाशैः	वृ परा १२.२२७
धर्मशास्त्रमिदं सर्वं	ल हा ७.१५	धर्माधर्मैरवष्टब्धौ	वृ परा १२.२२६
धर्मशास्त्रं पुस्कृत्य	नारद १.२९	धर्माधर्मौ च कथितौ	वृ.गौ. १०.१११
धर्मशास्त्रं स्थावरूढा	परशर ८.३३	धर्मानुचारिणी भार्या	आश्व १.७२
धर्मशास्त्रं रथारूढा	बौधा १.१.१४	धर्मान् अर्थः च कामः च	वृ.गौ. १.३१
धर्मशास्त्रविरोधे तु	नारद १.३४	धर्मान् कथय देवेश !	वृ.गौ. १.१४
धर्मशास्त्रानुसारेण	वृ.य. ४.२७	धर्मान् कामान् तथाञ्च	वृ.गौ. ६.१००
धर्मशास्त्रार्थशास्त्राभ्यां	नारद १.३१	धर्मान्वः पुरतो वक्ष्ये	आश्व १.२
धर्मशास्त्रेतिहासादि	व्यास ३.१२	धर्माभासो द्विजो यस्मा	अ १२८
धर्मशास्त्रेषु सर्वेषु	भार १.१२	धर्मायत्वेति मन्त्रेण संतत्यै	कपिल ३८९
धर्मशास्त्रदितानद्यात्	वृ परा ६.३२३	धर्मासनगतः श्रीमान्	नारद १८.२८
धर्मश्च व्यवहारश्च	नारद १.१०	धर्मासनमाधिष्ठाय	मनु ८.२३
धर्मश्चार्थश्च कीर्तिश्च	नारद १.२७	धर्मासनस्थः श्रुतिशास्त्र	वृ परा १२.९१
धर्मः श्रुतो वा दृष्टो वा	वृ.गौ. १.२९	धर्मं चार्थं च कामे च	व २.४.३९
धर्मसत्यमयः श्रीमान्	विष्णु १.५	धर्मेण च द्रव्यं वृद्धावा	मनु ९.३३३
धर्मसारं महाराजं! मनुना	वृ.गौ. १.४.३६	धर्मेण यजनं कार्यं	ल हा २.५
धर्मस्य पर्पदश्चैव	आंउ ५.३	धर्मेण लब्धुं मीहेत	या १.३१७
धर्मस्य ब्राह्मणो मूलमग्रं	मनु ११.८४	धर्मेण व्यवहारेण	मनु ८.४९
धर्मं स्याच्चोदना	आंपू ३	धर्मेणाधिगतो येषां	बौधा १.६
धर्मस्यार्थस्य यशसो	नारद १.१४	धर्मेणाधिगतो यैस्तु	मनु १२.१०९
धर्मधनानां तथा च एव	वृ.गौ. ३.१३	धर्मेणोद्धरतो राज्ञो	नारद १.२६
धर्महानिर्न कर्तव्यां	शाण्डि १.४०	धर्मं पंचाग्नि मध्यस्थ	ल हा ५.७
धर्महानिर्यथा न स्याद्यथा	शाण्डि १.१५१	धर्मेप्सवस्तु धर्मज्ञाः	मनु १०.१२७
धर्माङ्गानि पुराणानि	औ ३.४५	धर्मो जयति नाधर्मः सत्यं	वृ.गौ. ८.११८
धर्मादीनर्चयेत् सर्वान्	व २.६.१००	धर्मो जितो ह्यधर्मेण	पराशर १.३१
धर्माथमेतानि कृतानि	वृ परा ९.४१	धर्मोपदेशं दर्पेण	नारद १६.२२
धर्मार्थं येन दत्तं स्यात्	मनु ८.२१२	धर्मोपदेशं दर्पेण	मनु ८.२७२
धर्मार्थावुच्यते श्रेयः	मनु २.२२४	धर्मोऽयं भूतले साक्षाद्	वृ परा ५.४८
धर्मार्थो यत्र न स्याताम्	बौधा १.२.४७	धर्मोवशे विपन्नञ्च	वृ.गौ. १.३२
धर्मार्थो यत्र न स्याताम्	बौधा १.२.४८	धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण	मनु ८.१२
धर्मार्थो यत्र न स्याताम्	बौधा १.१२.१८	धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च	ब्र.या. ८.२९५
धर्मार्थो यत्र न स्यातां	मनु २.११२	धर्मपिण्डोदकं	औ ३.१२३
धर्मार्थो यस्य महतां	वृ.गौ. १.४.५५	धाता ददातु मंत्रौ	आश्व ४.८

धातारं हृदयान्तस्थं	शाण्डि ४.१३१	धारयेद् उत्तरीये द्वे	वृ हा ६.९०
धाता विधाता निजकर्म	वृ परा १२.७५	धारयेद् ऊर्ध्वपुण्ड्राणि	वृ हा ४.३४
धातुदार्वादिपाषाणैः	ब्र.या. २.५८	धारयेद्वैल्वपालाशौ	औ १.१५
धातूनामुत्तमं	ब्र.या. ११.४३	धारं धाराकृतं चेत्तु	लोहि २५६
धात्री चूर्णेन लिप्ताङ्गो	व २.६.३९९	धाराच्युतेन तोयेन	ब्र.या. २.७०
धात्री तु तुलसी पत्रं	व २.६.१६	धारादिकं चनो चेत्तत् न	कपिल ७५५
धात्रीफलानुलिप्ताङ्गो	वृ हा ६.१२१	धार्मिकैस्सेवितं शश्वद्	शाण्डि १.७३
धात्रीमथतिला क्षताञ्ज्वैव	व.२.६.१३६	धार्थं न जातुचिद्धैममन्त	भार १६.२४
धात्रीविल्ववटाश्वत्थ	प्रजा ५४	धार्थं सहोपवीतेन	भार १६.२५
धानालाजे मधुयुते	शंख १४.२३	धावंश्च न पठेद	वृ परा ६.३६४
धान्यकुप्यपशुस्तेयं	मनु ११.६७	धावकोऽनुलिप्तस्य	औ ३.६८
धान्यदाने शुभं धान्यं	शाता १.२१	धावतः पूति गंध	व १.१३.८
धान्यबन्धुविनाशेन	शाण्डि ३.५६	धावन्तमनुधावेद्	बौधा १.२.३७
धान्यं करोति दातारं	वृ हा ४.१५९	धिकारं शान्तमक्षणोश्य	वृ परा ४.९१
धान्यं दशभ्यः कुम्भेभ्यो	मनु ८.३२०	धिगदण्डस्त्वथ वाग्दण्डो	या १.३६७
धान्यमिश्रोऽतिरिक्ताङ्ग	या ३.२११	धिद्धेषंतं त्यजेद्भर्तुं	व २.५.२४
धान्यं हत्वा भवत्याखुः	मनु १२.६२	धिया पदाक्षरश्रेण्या	ल हा ४.४४
धान्यरूप्यपशु स्तेयं	या ३.२३७	धीकारं वसुदैवत्यं	वृ परा ४.८८
धान्यादिकं शाकमूलं	लोहि ३९२	धी नासा च म वाचा	वृ परा ४.७३
धान्यानां च तथा पौषे	वृ परा १०.२६८	धूपः क्षपाऽस्तितः पक्षो	वृ परा १२.३२९
धान्यानां तिलनानाहु	व १.२.३३	धूप गुग्गुलुना कार्यं	प्रजा १०३
धान्यास्तिलाश्च विविधाः	औ ५.५४	धूपं दीपञ्च नैवेद्य	वृ हा ५.४८९
धान्यानधनचौर्याणि	मनु ११.१६३	धूपं दीपञ्च नैवेद्य	वृ हा ७.१.७९
धान्येक्षुतृणतोयैश्च	वृ परा १२.२५	धूपं दीपञ्च पाद्यञ्च	व २.६.१६२
धान्येनैव रसा	व १.२.४९	धूपं दीपं च तद्वाथ	भार ७.९०
धान्येऽष्टमं विशां शुक्लं	मनु १०.१२०	धूपं दीपं च ताम्बूलं	व २.३.४०
धान्यैश्च वनसंभूतैः	ल हा ५.४	धूपं दीपं च नैवेद्यं	आश्व २३.८०
धान्योदकप्रदायी च	संवर्त ५४	धूपं दीपं च नैवेद्यं	वृ हा २.९९
धान्योन्मानं सदा कुर्यात्	वृ परा ५.१७४	धूपार्थं गुग्गुलुं दद्याद्	शंख १४.१८
धारयित्वा गुरुं त्वा	व २.३.१९६	धूमकेतुं लिखेत्कांस्ये	ब्र.या. १०.६६
धारयित्वा ततो दद्यात्	आश्व १०.१०	धूमवर्णाः कृतधर्माः	वृ.गौ. १.१७
धारयित्वा तुलाचार्यं	शंख १७.५८	धूरिलोचनसंयक्तुं	आंपू ७०४
धारयेत्तत्र चात्मानं	बृह ९.१९२	धूर्तं पतितमित्यादीन्	वृ हा ४.१८३
धारमेत्पूर्वबन्मत्रैणै	व २.३.८३	धूर्तं वन्दिनि मन्दे च	दक्ष ३.१६
धारयेदूर्ध्वं पुंङ्गं न	व्या ३५	धूर्त्तोऽपस्माररोगी स्यात्	शाता ३.११

धृतयश्चापि पाताशंच	आंपू ६११	धौतवासास्त्वधः शायी	वृ परा ११.१७१
धृतवत्सां काकवन्ध्यां	वृ परा ११.१६६	धौतं सप्ताष्टहस्तैः	प्रजा १०७
धृतव्रतेति सूक्तेन	वृ हा ७.२६३	ध्यात्वा सहस्रं जुहुयाद्	वृ हा ३.३२२
धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं	मनु ६.९२	ध्यात्वा कमलपत्राक्षं	वृ हा ५.१९४
धृतिवृद्धिकरा (सा च)	ब्र.या. १०.७२	ध्यात्वा कृष्णं जगन्नाथं	वृ हा ५.११०
धृतिहोमे न प्रयुज्याद्	कात्या २५.५	ध्यात्वा जपेत्तमेवेशं	वृ हा ५.१३
धृतोर्ध्वपुण्ड्र आचम्य	व २.६.१४५	ध्यात्वा तन्मनसा	ल व्यास २.७४
धृतोर्ध्व पुण्ड्रदेहश्च	वृ हा ३.१३४	ध्यात्वा देवीं कुमारीं च	आश्व १.४५
धृतोर्ध्व पुण्ड्रदेहश्च	वृ हा ८.९	ध्यात्वाध्येयं यथाप्रोक्तं	भार ६.९७
धृतोर्ध्व पुण्ड्रदेहश्च	वृ हा ८.२२२	ध्यात्वा नारायण देवं	वृ हा ४.४७
धृतोर्ध्वपुण्ड्र देहस्तु	व २.६.५२	ध्यात्वा निमज्य देवेशं	व २.३.१०४
धृतोर्ध्वपुण्ड्रः परमीशितां	वाधू १०१	ध्यात्वा यज्ञमयं विष्णु	वृ हा ५.२९१
धृतोर्ध्व पुण्ड्रदेहत्वं	वृ हा ८.३३४	ध्यात्वा रूपं ततो	आश्व २.९
धृत्वा चैतत्प्रसादेन	भार १६.१३	ध्यात्वा वह्नौ वासुदेवं	वृ हा ७.८७
धृत्वाऽञ्जलि कुमारस्य	आश्व १०.६	ध्यात्वा षडक्षरं मंत्रं	वृ हा ६.२३१
धृत्वा तूतानपाणिभ्यां	आश्व २.३९	ध्यात्वा संपूज्य होमं	वृ हा ३.३२५
धृत्वा पद्माक्षमालां च	वृ हा ३.४२	ध्यात्वा सर्वगतं	वृ हा ५.१०७
धृत्वा पूर्णं करे सव्ये	आश्व २.३२	ध्यात्वा सुदर्शनं	व २.२.१०
धृत्वा सर्वाणि कृत्यानि	भार १८.७६	ध्यात्वा हृत्पंकजे	वृ हा ५.२५३
धृत्वैव सर्वकर्माणि	भार १८.६२	ध्यात्वैव जुहुयात्तस्मै	वृ हा ५.१०
धृत्वोख्या विशेषेण	कण्व ३४१	ध्यात्वैवं देवदेवेशं	ब्र.या. २.१३४
धृष्टिर्जयतो विजय	वृ हा ३.२६७	ध्यानकाले परं ब्रह्म	भार १७.४
धेना सेना सना सोमा	आंपू ९२७	ध्यानज्ञानस्य तद्भक्तेः	वृ परा १२.३०२
धेनुचौर्यं वाहचौर्यं मेघ	लोहि ६८५	ध्यानध्यायो यथाप्रोक्तं	भाग ११.६६
धेनुः पूर्वं वसिष्ठस्य	वृ परा १२.११५	ध्यानप्रदक्षिणापश्चादो	कण्व २५४
धेनुं दद्याद् द्विजातिभ्यो	शाता १.२३	ध्यानमेव परं शौचं	बृह ९.१८०
धेनुर्देया सुवर्णस्य	वृ परा १०.१०५	ध्यानमेव वरो धर्मो	अत्रिस ४.९
धेनु शंख स्तथानड्वा	या १.३०६	ध्यानं कृत्वा चतुर्थं	बृ.या. ९.२
धेनुः शंखस्ताडनड्वा	ब्र.या. १०.१५८	ध्यानं कृत्वा चतुर्थं	बृह ९.२
धेनुः शंखो वृषाः स्वर्ण	वृ परा ११.७९	ध्यानं कृत्वा ततः सम्य	भार १३.३१
धेनुश्च योद्धिजे दद्याद्	संवर्त ७२	ध्यानं चत्वारि भृंगेति	आश्व २.८
धेनुस्तस्य विराजश्च	ब्र.या. ८.१९४	ध्यानं जपप्रयोगश्च	बृ.या. ४.३
धेन्वनडुहोश्च वधे	बौधा १.१०.२६	ध्यानं मुक्ताविद्रुम हेम	विश्व ६.६५
धौतवस्त्रं शुभंवेष्टाय	व २.७.८५	ध्यानं विना जपं सर्व	भार १२.३
धौतवस्त्रं सोत्तरीयं	वृ हा ४.३३	ध्यानं शौचं तथा भिक्षां	दक्ष ७.३९

ध्यानं संध्यान्त्ये
 ध्यानयोगेन चार्वाङ्गि
 ध्यानस्य तु विधिं
 ध्यानस्य तु विधिं वक्ष्ये
 ध्यानाग्निः सत्योपचयनं
 ध्यानात् कर्मफलत्याग
 ध्यानिकं सर्वमेवैत
 ध्यानेन जन्म निर्घातं
 ध्यानेन पुरुषो यस्तु
 ध्यानेन सदृशं नास्ति
 ध्यानेनात्मनि संपश्येद्
 ध्यानञ्जपन् सर्वसुखा
 ध्यायत् नारायणं देवं
 ध्यायत्यनिष्टं यत्किञ्चित्
 ध्यायत्वै मनसा देवं
 ध्यायन्नेवं परं ब्रह्म
 ध्यायन् कमलपत्राक्षं
 ध्यायन्तः पद्मनाभं
 ध्यायन् देवान् सुमुहूर्ते
 ध्यायन्नारायणं देवं
 ध्यायन्नारायणं देवं मंत्र
 ध्यायन् नारायणं देवं
 ध्यायन् स्त्रिमासमयुतं
 ध्यायन् हृदि शुभं
 ध्यायन्वै पुण्डरीकाक्षं
 ध्यायेच्च मनसा मन्त्रं
 ध्यायेत् कमल पत्राक्षं
 ध्यायेत्स्व शिरसिप्राज्ञ
 ध्यायेतः देवमीशानं
 ध्यायेन्नाध्ययनं देवं
 ध्येयं न जप्यं न च
 ध्येयो दिनेश परिमंडलं
 ध्यायेच्छिशुतनुं कृष्णं
 भ्रवोभ्रुवश्च सोमश्च
 ध्रियमाणे तु पितरि

भार १२.२
 विष्णु १.३३
 बृ.या. ९.१
 बृह ९.१
 व १.३०.९
 बृह १९८
 मनु ६.८२
 बृ.या. २.१४८
 बृह ९.५८
 बृ.या. ८.४२
 बृह ११.५२
 भार १२.३५
 वृ हा ५.२६१
 मनु ९.२१
 वृ हा ३.३३
 शाण्डि ४.१३२
 वृ हा ५.३४६
 वृ हा ५.३०५
 आश्व १०.७
 व २.३.१२४
 व २.६.५४
 वृ हा ५.२८०
 वृ हा ३.३२७
 वृ हा ५.२९९
 वृ हा ५.२१६
 वृ. या. ७.१४०
 वृ हा ३.२५०
 व २.६.६४
 ल व्यास २.४९
 बृ.या. ७.३३
 वृ परा ३.३२
 वृ परा ४.१४१
 वृ हा ३.३२१
 ब्र.या. १०.१०९
 मनु ३.२२०

ध्रुवः क्षितिः स्वन (ना) मानः ब्र.या. १०.१३४
 ध्रुवं चारून्धतीं दृष्ट्वा आश्व १५.४८
 ध्रुवसूक्तमृचं स्मृत्वा वृ हा ६.४०४
 ध्रुवाक्षर ! सुसूक्ष्मेश ! विष्णु १.५७
 ध्रुवो धरश्च सोमश्च वृ परा २.१८९
 ध्वजाहृतो भक्तदासो मनु ८.४१५
 ध्वजिनी जीविका वाऽपि औसं ३२
 ध्वजे पताकराजानं वृ हा ६.३०

न

न आसनारूढ पादस्तु वृ हा ५.२६२
 न कण्ठावृतवस्त्रः स्याद् वाधू १४०
 न कथञ्चन कुर्वीत नारद २.५३
 न कदाचिद् द्विजे तस्माद् मनु ४.१६९
 न कन्या क्रियतेपाकं व्या २२५
 न कन्यायाः पिता विद्वान् मनु ३.५१
 न करं मस्तके दद्यान् वृ परा ६.२७६
 न करीन्देति सूक्तेन वृ हा ५.३५१
 न करोति स मूढात्मा व्या ४६
 न करोत्येव सा यत्नात्तथा लोहि ४२
 न कर्षिभिर्न दिग्धै बौधा १.१०.१०
 न कर्मणि तु भिन्नस्य कण्व ३२५
 न कर्मयोग्यस्तस्यापि लोहि २७०
 न कल्क कुहका साध्वी वृ हा ८.२०७
 न कश्चिद्योषितः शक्त मनु ९.१०
 न कश्चिद् वेदकर्ता च पराशर १.२१
 न कामतश्चरेद् धर्म वृ हा ६.२१८
 न कारं तु मुखे पूर्व वृ परा ४.९३
 न कार्यमेव तन्नो चेन्मते लोहि ५६३
 न कार्यं नैव चाकार्यं बृहा १२.१७
 न काव्यं (ण्ठयं) नैव बृहा ९.१४
 न काष्ठतैलैरन्यैस्तु वृ परा ७.१३२
 न किञ्चित् कस्य वृ परा ५.१५१
 न किञ्चित् प्रतिगृहणीयात् वृ परा १२.१००
 न किञ्चित् फलमाप्नोति वृ परा २.१४९
 न किञ्चिदपि कुर्वीत कण्व २९४

न किंचिद्बाधकं	कण्व ७३६	न क्लेशेन विनादव्यं	दक्ष ३.२२
न किंचिद् वर्जयेत्	औ ५.६५	नक्षत्रकल्पोद्विविधो	ब्र.या. १.३४
न किल्बिषेणापवदेच्छास्त्रतः	नारद १६.१८	नक्षत्रज्योतिरारभ्य सूर्य	वाधू ६
न कुट्यां नोदके संगे	व १.१०.१७	नक्षत्रतिथिवारेषु	औ ३.११६
न कुत्रचित्सद्धर्मेषु यदि	कपिल ५४४	नक्षत्रविशेषेण श्राद्ध	विष्णु ७८
न कुत्सयेदम्बुतीर्थमन्य	शाण्डि २.२४	न खण्डयेन्मिथोऽज्ञानानानं	आं प २३६
न कुर्यात् कस्यचित्	बृ.या. ७.३७	नखरोमाणि च तथा	ल हा ५.३
न कुर्यात् तर्पणं श्राद्ध	आश्व १.८१	नख लोम विहीनानां	देवल १०
न कुर्यात् परपाकेन	वृ परा ७.७५	न गच्छेत् क्रूर दिवसे	वृ हा ५.३०३
न कुर्यात्प्रेतकर्माणि	ब्र.या. ७.२४	न गतिर्मूर्खदानेन	वृ परा ६.२१९
न कुर्यात् यो विधाने न	वृ हा ८.३२७	नगरं हि न कर्तव्यं	दक्ष ७.३६
न कुर्यात् शुभकर्ता	आश्व १९.३	नगरे नगरे चैकं	मनु ७.१२१
न कुर्यादार्द्रवस्त्रेण कर्म	शाण्डि २.५८	नगरे पट्टणे वापि	वाधू १७२
न कुर्यादेव धर्मेण सा	लोहि ५९५	नगरे प्रतिरुद्धः सन्	नारद २.१८१
न कुर्यादेव सहसा	आंपू २६३	न गर्तमवेक्षेत	बौधा २.३.५५
न कुर्यादेव सोऽयं वै	कपिल ५०	न गायत्र्याः परं	औ ३.५४
न कुर्याद् ब्रह्मयज्ञ	आश्व १.११३	न गायेतकामगीतानि	ब्र.या. ८.१२६
न कुर्यान्मोहस्तूष्णी	आंपू १०८४	न गुणान् गुणिनोहन्ति	अत्रिस ३४
न कुर्यात् क्षिप्रहोमेषु	कात्या ९.५	न गूहेदागमं क्रेता	नारद ८.४
न कुर्वीत वृथाचेष्टां न	मनु ४.६३	न गृह्णन्ति महात्मानो	आंपू ३३४
नकुलोलूकमार्जारं	औ ९.२३	नगो गगनदिक्तारागृहा	शाण्डि २.१३
न कुशं कुशमित्याहुः	वृ परा ७.३३१	न गोमये न कुड्ये	औ २.३६
न कूटैरायुधैर्हन्याद्यु	मनु ७.९०	नग्नश्राद्धे नवश्राद्धे	लोहि ४३९
न कूपमवरोहेत्	व १.१२.२६	नग्नश्राद्धे वर्षमात्र	आंपू ७६१
न कूपमवेक्षेत	बौधा २.३.५४	नग्नो मुण्डः कपाली	मनु ८.९३
न कुर्याच्छ्राद्धदिवसे	कपिल २५०	गग्नो मुण्डः कपाली	व १.१६.२८
न कृतं मैथुनं ताभिर	देवल ३९	नग्नो मुण्डः क्रपालेन	नारद २.१८०
न केनापि च तस्मात्तु	आंपू ६२१	न ग्रामो न आश्रमः वा अपिवृ.गौ. ५.१४	
नक्तभोजी भवेद् विप्रो	अत्रिस १७८	न घोषं नैव चाघोषं	बृह ९.१३
नक्तमालार्कं किंपाकस	भार १८.१९	न च आत्मनं तरन्ति एते	वृ.गौ. ३.२६
नक्तं चान्नं समश्नीयाद्	मनु ६.१९	न च कांस्येषु भुंजीय	अत्रिस १५७
नक्तं शिवाविरावे	बौधा १.११.३६	न च क्रमन् च हसन्	वृ परा ४.६५
नक्तेन वा समश्नीयात्	वृ परा ९.३५	न चक्रमन् विहसन्	बृ.या. ७.१३१
नक्तोपवासी बाह्ये तु	वृ परा ८.२९२	न च गोष्ठे वसेद् रात्रौ	पराशर ९.५७
न क्लिन्वासाः स्थलगो	बृ.या. ७.४२	न च तच्छक्यते कर्तुं	वृ परा ४.६४

न च तीव्रेण तपसा न	अत्रिस १.११	न चैव पुत्रदारेण स्वकर्म	दक्ष २.४६
न च नीत्वा स्पृश्य	व २.३.२९	न चैव वर्षधाराभिर्न	औ २.११
न च पथ्यायाशनद्योगो न	दक्ष ७.४	न चैवाभिमुखः स्त्रीणां	औ २.४०
न च पश्यन्ति पुरुषं	बृह ९.१.७७	न चैवामेव हेम्ना वा	कपिल १.७६
न च पश्येत काकादीन्	औ ५.५८	न चैवास्यानुकुर्वीत	औ ३.५
न च पादेन वा हन्याद्धस्ते	वृ.गौ. ८.२५	न चोत्पातनिमित्ताभ्यां	मनु ६.५०
न च भार्याकृतमृणं	नारद २.१५	न चोत्पातनिमित्ताभ्यां	व १०.१०.१५
न च भिन्नासनगतो	ल व्यास २.८४	न छायां भार्गवे दीने	व्या १.३०
न च मिथ्याभियुंजीत दोषो	नारद १.५०	न जपो नाधिवासश्च	वृ हा ५.१.७८
न च मुखशब्दं	व १.१२.१७	न जापं प्रसभं कुर्यात्	वृ परा ४.५५
न च वक्त्र च लाभा च	शाण्डि ३.१.४५	न जीर्णदेवायतने	औ २.३७
न च वैश्यस्य कामः	मनु ९.३.२८	न जीर्ण-नील- काषाय	वृ परा २.१६३
न च संभाषयेत् किंचित्	व २.५.६४	न जाति पूज्यते राजन्	ह.गौ. २१.८
न च सस्ययुतेक्षेत्रे	व २.६.१०	न जातिं न च विद्यां	वृ परा ६.२२
न च सीमान्तरं गच्छेन्न	प्रजा ९५	न जातु कामः कामानाम्	मनु २.९४
न च स्थूलं न च ह्रस्वं	बृ.या. २.१०८	न जातु ब्राह्मणं हन्यात्	नारद १८.९९
न च हन्यात्स्थालारूढं	मनु ७.९१	न जातु ब्राह्मणं हन्यात्	मनु ८.३८०
न चातिव्ययशीला	व्यास २.३४	न जाने निर्गमं तस्य	वृ.गौ. ७.४६
नचानुगमनम्भर्तुर्बह्वचर्य	व २.५.७७	न जीवात्पितृकः कुर्यात्	व्या १.२९
न चापोऽञ्चलिना पिबेत्	व १.६.३२	न जीवत् पितृको दद्याद्	औ ५.८७
न चाश्नत्सु जपेदत्र	कात्या ३.८	न जीवेन विना तृप्ति	प्रजा १.४५
न चाहं सर्व्वतत्त्वज्ञ	पराशर १.४	न ज्येष्ठस्य कनिष्ठस्य	लोहि २.४७
न चेज्जलचरेभ्यो वा	आंपू ६८८	नटां (टीं) शैलूषिकां	बृ.या. २.१
न चेत्किमपि नास्त्येव	कण्व ७५१	नटीं शैलूषिकीं चैव	वृ परा ८.१.८३
न चेत्तत्करशुद्धिश्च न	आंपू ८८५	नटीं शैलूषिकीं चैव	संवर्त १.५१
न चेत्तप्तशतं कुर्यात्	आंपू २०३	न तच्छ्रेयोऽग्निहोत्रेण	दक्ष ३.३१
न चेत्तान्पीडयेद्राजा	लघुयम ६०	न तत्कर्तुं मूढशतं किं	कपिल ८५२
न चेत्तुगौणपुत्रः स्यात्	कपिल ६७४	न तत्र गोपिनोदण्डया	ब्र.या. १२.२४
न चेत्तु पौरुषं सूक्तं	आंपू ८३७	न त्रय पातयेत् पिंडान्	वृ परा ७.२९१
न चेत्तु वैष्णवोनाम	व २.२.२९	न तत्र पालदोषः स्यान्नैव	नारद १२.३३
न चेत्तु सर्वशान्त्यर्थं	कण्व ६२६	न तत्र वृक्षछाया च	वृ.गौ. ५.१२
न चेत्सर्वत्र ताः प्रोक्ताः	आंपू ८९८	न तत्रापि च बालः	नारद २.१६९
न चेदेकेन लोपेन सती	कपिल ५६८	न तत्रोपविशेद्यत	बौधा २.३.५६
न चेदेषो महानेव	आंपू ३६४	न तत्पूर्वमवाप्नोति	ब्र.या. १२.८
न चैकत्र पचेदामं	आश्व १.१.७९	न तथतऽसिस्तथा तीक्ष्णः	आप १०.४

न तथा हविषा होमैः	वृ.गौ. ६.४८	न तद्व्रतं तासां	अत्रिस २०२
न तथैतानि शक्यन्ते	मनु २.९६	न तेन वृद्धो भवति	मनु २.१५६
न तद्धनमवाप्नोति	आंपू ३०६	न तेन सार्द्धं सम्भाषेन्	वृ.गौ. ९.१८
न तद्भासयते सूर्यो	बृह ९.२०	न ते विष्णो रित्यनेन	वृ.हा ८.२४५
न तदस्ति क्वचिद्वाजन् यत्र	वृ.गौ. १.६७	म तेषाम शुभं किंचिद्	पराशर ३.४७
न तप्तायां धरायां वा	कण्व ५७२	न तेषामशुभं किंचित्	वृ.गौ. ९८.२४
न तमः कारणं किंचित्	बृह ११.४३	न तेषां ब्राह्मणः कश्चित्	वृ.गौ. ९.१०
न तमं हो न दुरितमित्या	वृ.हा ८.४७	न तैः समयमन्विच्छेत्	१०.५३
नतं सूक्तं शुचीवोऽग्नि	आश्व २३.७	न तैस्समो भवेत्ता	कण्व ७३०
न तं स्तेना न च नामित्रा	मनु ७.८३	न त्यजेत् सूतके कर्म	कात्या २४.५
न तयोन्तरं किंचित्	वृ.परा ५.१५५	न त्याजयमप्येतद्गृहीतव्यं	वृ.गौ. १५.८९
न तर्पयेत् पतन्तीभिः	वृ.परा २.१८७	न त्याज्या दूषिता नारी	व १.२८.३
न तस्मिन्धारयेदण्डं	मनु ११.२१	न त्रिपुंड्रं द्विजैर्धार्यो	व २.२४
न तस्य पितरोऽश्नन्ति	व १.१४.१५	न त्वन्ये प्रतिलोम	व १.१.९
न तस्य फलमाप्नोति	दक्ष २.२४	नत्वा गुरुन् परं धाम्नि	वृ.हा ५.१.४५
न तस्य फलमाप्नोति	वृ.हा ५.५९	नत्वा गुरुयथाऽऽदित्य	आश्व ११.८
न तस्य शुद्धिर्निर्दिष्टा	वृ.हा ६.२१९	नत्वा दीर्घप्रणामैश्च	वृ.हा ४.१.२९
न तस्या सदभवेत्	औ ४.२६	नत्वाध नित्यकर्माणि	भार ९.१२
न ताडयेन्नातिमात्रं	शाण्डि ३.१५५	नत्वा स्वयमथाऽऽत्मानां	आश्व १.५०
न तापसैर्ब्राह्मणैर्वा	मनु ६.५१	न त्वेकं पुत्र दद्यात्	व १.१५.३
न तां तीव्रेण तपसा	व १.२५.७	न त्वेव कदाचित्स्वयं	बौधा १.५.११९
न तावत् पापमस्तीह	विष्णु म १०९	न त्वेवाधौ सोपकारे	मनु ८.१.४३
न तिर्यग्धारयेत्	वृ.हा ८.२६०	न त्वैवैकं तु सर्वेषां	वृ.परा ७.४२
न तिलैर्न यवैर्हीनं	वृ.परा ५.८८	न दत्वा कस्यचित्कन्यां	मनु ९.७१
न तिष्ठति तु यः पूर्वा	मनु २.१०३	न ददाति च य साक्ष्यं	या २.७९
न तिष्ठन्नैकहस्ते न	शाण्डि २.३३	न ददाति हरेर्भुक्तं	वृ.हा ८.३२३
न तिष्ठेत्पात्रदौर्बल्या	ब्र.या. ८.६९	न दद्यात्तत्र हस्तेन	औ ५.५९
न तीर्थे स्त्रयाकुले	वृ.परा २.१०५	न दद्यात्सति दौहित्रे	लोहि २२३
न तु कदाविज्ज्यायसीम	व १.२.२८	न दद्यादारनालस्य	वृ.हा ८.९७
न तु खलु कुलीन विद्यमाने	व १.१७.७१	न दद्याद्गुग्गुलं श्राद्धे	वृ.परा ७.१२७
न तु चारणदारेषु	बौधा २.२.६२	न दद्याद्याचमानेभ्यः	आंपू १०२४
न तु ब्राह्मस्य राजा	व १.१७.७५	न दद्युः प्रतिगृह्णीरन् अपि	कपिल ७६५
न तु मेहेन्नदीच्छाया	या १.१३४	न दन्ति च प्रगायन्ति नटन्ति	कपिल ७६७
न तु सा शम्भुसंबन्धा	आंपू ९२१	न दर्शादिषु विज्ञेया	आंपू १०८२
न तेऽग्नि होत्रिणां	वृ.गौ. १५.८६	न दशाग्रंथिके चैव	कात्या ५.९

न दानं दीयते तस्य	वृ परा १०.७०	न दृश्यते तथा देवैः	वृ गौ. १.४६
न दानं यशसे दयान्न	वृ परा १०.२९०	न देयमेतदध्याय	भार १२.६१
न दानात् परमो धर्म	वृ परा १०.३	न देवायतनात् कुड्याद्	औ २.४४
न दानार्हो ज्येष्ठपुत्रः	लोहि २८८	नद्यां तडागे खाते वा	वृ हा ४.२७
न दाप्योऽपहृतन्यक्ता	वृ हा ४.२३८	नद्यां तु विद्यमानायां	ल हा ४.२५
न दाप्योऽपहृतं तत्तु	या २.६७	नद्यां सत्यां न च स्यायादन्	वृ.गौ. ८.२२
न दास्यमीशस्य	वृ हा ७.१६९	न नद्यांमेहनं कार्य	व १.६.१२
न दिवापि स्त्रियं गच्छेद्	वृ परा ६.६६	न नद्यां मेहनं कुर्यान्	व २.६.९
न दिवा स्वप्नशीलेन	बौधा २.२.८७	नद्यां स्नात्वाऽथ गायत्री	भार १६.४६
न दिव्य पुरुषो धीमान्	विष्णु म १०६	नद्या श्च पुष्करिण्या	वृ हा ७.२४०
नदीकक्षवनदाह	व १.१९.१७	न द्रव्याणामविज्ञाय विधिं	मनु ४.१.८७
नदीकूलं यथा वृक्षो	मनु ६.७८	न द्वयोर्विप्रपिण्डानां	वृ परा ६.२६८
नदीगाः सिन्धुगा वापि	आंपू ९३५	न धर्मस्यापदेशेन	मनु ४.१.९८
नदी ज्योतीषि वीक्षित्वा	औ २.४१	न धावेदुदपानार्थ	ब्र.या. ८.१.२७
नदीतटाकूपेषु स्नान	कण्व १५९	न ध्यातव्यं न वक्तव्यं	दक्ष ७.३३
नदीतीरेऽब्धितीरे	भार १८.७	न नक्तं स्नायात्	बौधा २.३.५२
नदीतीरेषु तीर्थेषु	औ ५.१५	न नग्नः स्नायात्	बौधा २.३.५१
नदीतीरे सरित्कोष्ठे	विश्वा ६.२	न नदीं बाहुकस्तरेत	बौधा २.३.५३
नदीनां संगमे तीर्थेष्व	नारा १३.६३	न नहं गृहमित्याहुः	प्रजा ५५
नदीष्वतसरोधे मृते	अत्रिस २२०	न नामापि हि दुःखस्य	वृ परा १२.३१९
नदीं तर्तुमानां पारं	प्रजा १२	न नारिकेल बालाभ्यां	आप १.२५
नदीवेगेन शुद्धिस्यात्	व २.६.४९७	न नारिकेलेन न फालकेन	आंड १०५
नदी वैतरणीनाम यममार्गे	ब्र.या. ११.२६	न नारिकेलैर्न च शाणबालैर्न	पराशर ९.३३
नदीषु देवखातेषु	मनु ४.२०३	न निरीक्षेत देवानाम्	वृ हा ८.१.४३
नदीषु देवखातेषु	ल व्यास २.१०	न नासाचपलः कर्मी न	शाण्डि ५.४०
नदीषु देवखातेषु	वाधू ६३	न निधायकरं भूमौ	व २.६.२०६
नदीष्वपि समुदेषु	पराशर ९.६	न निर्व्वपति यः श्राद्ध	अत्रिस ३५७
नदीष्ववैतनस्तारः	नारद १८.३६	न निर्हारं स्त्रियं कुर्युः	मनु ९.१.९९
नदीसङ्गतीर्थेषु शुचौ	वृ.गौ. १६.६	न निषेधोऽल्पबाधस्तु	या २.१.५९
नदीसन्तारकान्तार	१.४३	न निष्कयविसर्गाम्यां	मनु ९.४६
नदीसानामं गृह्णाति ततो	ब्र.या. ८.३१३	न निष्ठीवेत्	व १.१२.९
नदीस्नानानि सर्वत्र	आंपू १५३	ननु भूताण्डपिण्डस्य	वृ.या. ७.१.७४
नदुष्येच्छक्तिजः प्राह	वृ परा ६.३४३	न नृत्येनैव गायेच्च	मनु ४.६४
न दुष्येत् सन्तता धारा	आप २.३	नन्दं कुञ्जजल्पंश्च	शाण्डि ४.२८
न दूरे तास्तु नेतव्या	वृ परा ५.७	नन्दं च वसुदेवञ्च	वृ हा ७.२१४

नन्द दृष्टि समानास्ति	विश्वा ३.२०	न प्रतिसायं ब्रजेत	बौधा २.३.५०
नन्दायां भार्गवदिने	प्रजा १.६५	न प्रधानो न च महान्	विष्णु म ४६
नन्नोः सम्प्राप्तकालस्य	वृ.गौ. ५.१५	न प्रवृत्ते पुण्य हानि	प्रजा १.४७
न पंकत्या विषमं	औ ५.६२	न प्रसज्याति गोविप्रो	पराशर १.५४
न पंचमी मातृबन्धुस्य	व १.८.२	न प्रसारित पादश्च	वृ हा ५.२६४
न पतितैर्न स्त्रिया न	बौधा २.३.४९	न प्राणेनाप्यपानेन	बृ.या. ८.४४
न पतितैः संव्यवहारो	बौधा २.२.४७	न प्राप्नोत्येव विधिना	कण्व ७९१
न पदा पदमाक्रम्य	बृ.या ७.१३२	न प्राप्यते परं ब्रह्म	वृ परा १२.३४८
न परपापं वदेन्	बौधा १.७.२८	न प्राशयेद् विमूढात्मा	वृ हा ८.३१९
न परामृश्यते यस्माद्	बृह ९.६३	न फलेनं फलं न कल्को	व १.६.३५
न परिहितमधिरूढम्	बौधा १.६.१५	न फालकृष्टमधिपिष्ठेत	व १. ९.२
न परेण समुद्दिष्टमुपेयात्	नारद २.१.४४	न फालकृष्टमशनीयद्	मनु ६.१६
न पर्युषन्ति पापानि	बृह १०.१०	न फालकृष्टे न जले न	मनु ४.४६
न पश्यतस्तल्लपनमृणा	आंपू ३२५	न बहिर्मांलां धारयेद्	व १.१२.३५
न पाणिपाद चपलो	मनु ४.१७७	न बहिर्मांलां धारयेत्	बौधा २.३.३६
न पाणिपादचपलो	व १.६.३८	न बान्धवा न सुहृदो	नारद २.१९९
न पादुकासनस्थो वा	औ २.१२	न ब्रह्मणान् परीक्षेत	वृ.गौ. ३.६१
न पादेन पाणिना वा	व १.६.३३	न ब्रह्मयज्ञादधिकोऽस्ति	कात्या १.४.८
न पादेन स्पृशेदन्नं	औ ५.५६	न ब्राह्म्यं सन्त्यजेद्	वृ हा ४.१६५
न पादौ धावयेत्कांस्ये	मनु ४.६५	न ब्राह्मण क्षत्रिययो	मनु ३.१४
न पादौ स्थापयेदस्य	औ ३.११	न ब्राह्मणवधाद्भूयान	मनु ८.३८१
न पालकक्रियायोग्यो	लोहि २६८	न ब्राह्मणं परीक्षेत	मनु ३.१.४९
न पाषण्डैर्नालैश्च	शाण्डि २.२६	न ब्राह्मणसमं क्षेत्र	आं उ १२.११
न पिण्डशेषं पात्रायाम्	बौधा २.३.२७	न ब्राह्मणस्य त्वतिथि	मनु ३.११०
न पुंसकस्तथोकारो	बृ.या. २.८२	न ब्राह्मणो वेदयेत्	मनु ११.३१
न पुत्रपुत्री तदपत्यभार्या	प्रजा ८१	न भक्षणैकयोग्याः स्युर्नै	कपिल ५३६
न पुत्रेण पिता दद्यात्	नारद २.८	न भक्षयति यो मासं	मनु ५.५०
न पुत्रेण समो धर्मः न पुत्रेण	कपिल ६६७	न भक्षयेदकंचरान्	मनु ५.१७
न पुनः करणां कुर्याच्	आंपू १०८०	न भर्त्सयन् बालपुत्रान्	शाण्डि ४.१.४५
न पुनर्दिविधः प्रोक्तो	नारद २.१०६	न भवेत् पितु यज्ञश्चेद्	आश्व २३.४५
न पूर्वं गुरवे किंचिद्	मनु २.२.४५	न भवेत्येव यदि सः श्रोत्रियो	कपिल ६५९
न पृच्छेत् गोत्रचरणं	वृ.गौ. १२.३३	न भवेत्स्वाभृन्मयपायी	ब्र.या. ८.१३९
न पृच्छेद् गोत्रचरणं	पराशर १.४२	न भवेदनुपाकर्मा ब्राह्मण	वृ परा ६.३५३
न पृथग्विद्यते स्त्रीणां	व्यास २.१९	न भवेदिति च प्रोचु	कण्व ३२४
न पैतृयज्ञियो होमो	मनु ३.२८२	न भवेद्देवदैत्योभ्यो	बृ.गौ. २२.४

न भवेयुर्भ्रातृजा हि	कण्व ७५५	नमस्कुर्वन् प्रतिदिशं	शाण्डि २.७०
नभसः पंचदश्यां तु	वृ परा ६.३.४७	नमस्कृत्य च ते सर्व	अत्रिसं २
न भस्म धारयेद् विप्रः	वृ हा २.४८	नमस्कृत्य च ते सर्वे	व्या ३
नभस्यमासस्य च कृष्ण	बृ.गौ. १.४.२९	नमस्कृत्वा गुरून्	वृ हा ३.३२
न भुक्त्वा नातुरो जीर्णो	शाण्डि २.५३	नमस्कृत्वा तथा भक्तया	व २.३.२२
न भुंजीतोद्धृतस्नेहं	मनु ४.६२	नमस्ते कपिले पुण्ये	वृ.गौ. १०.५८
न भुज्यते स. एवैकौ	दक्ष २.४८	नमस्ते घृणिने तुभ्यं	भार ७.५
न भूदानेऽधिकारोऽस्ति	लोहि ५.४७	नमः स्वाहेति मंत्रेण	वृ परा ५.८२
न भिन्नकार्षापणमस्ति	व १.१९.२५	न मांसभक्षणे दोषो न	मनु ५.५६
न भिन्नग्रामिणा कार्यः	कपिल ४७६	न मांशमश्नीयान्	बौधा १.११.३८
न भिन्न भाण्डे भुञ्जीत	ब्र.या. २.१५९	न मांसानां हतानान्तु	औ ९.२२
न भैक्षेर्न च मौनेन	शंख ५.११	न माता न पिता न स्त्री	मनु ८.३.८९
न भोक्तव्यमभोज्यान्	वृ परा ६.२.४९	न मातामहिकं श्राद्ध	वृ परा ७.४३
न भोक्तव्यो बलादाधि	मनु ८.१.४४	न मित्रकारणाद् राजा	मनु ८.३.४७
न भोजनार्थं स्वे विप्रः	मनु ३.१०९	न मित्रकारणाद् राज्ञो	नारद १८.९७
न भोजयेत्प्रत्नेन	आंपू ७५९	न मुख्या विप्रुष उच्छिष्टं	व १.३७
न भोजयेत् स्त्रियं श्राद्धे	वृ परा ७.७१	न मृगयोरिषुचारिण	व १.१४.१०
न भ्रातरो न पितर पुत्रा	मनु ९.१.८५	न मृल्लोष्ठं च मृदनीयान्	मनु ४.७०
न मण्डपं सभा वाऽपि	वृ.गौ. ५.१३	न मे धर्मो ह्यधर्मो वा	विष्णु म ६३
न मण्डलमतिक्रामेन	नारद १९.१६	न मे भूतेषु संयोगो न	विष्णु म ६२
नमत्याश्च तथा कुर्यात्	कपिल १०८	नमो नारायणायेति ये	विष्णु म १०३
न मद्रांयां गवां क्रीडा	ब्र.या. ९.५४	नमोतं त्रिविधं ज्ञेयं	विश्वा २.२८
न मंत्रवतायज्ञांगेना	बौधा १.७.७	नमो देवेभ्यो नम इति	वृ हा ३.१.००
नमः प्रकाशदैवत्य	वृ परा ११.३.४२	नमोद्वादशसंयुक्तं पठनीयं	आंपू ९०३
नम (कु) र्यात्तद्विधानेन	कपिल १८४	नमो ब्रह्मण इत्यादि	वृ हा ४.४९
न मलिनवाससा सह	व १.१२.४	नमोब्रह्मणसुस्पष्टाः	कण्व ३८३
नमःश्वभ्यः इत्यमुना	वृ परा ११.१.७९	नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्यर्च	वृ.गौ. १७.३३
नमः श्वावास्यायां नाशने	ब्र.या. ८.२०५	नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्यर्च	वृ.गौ. १७.२५
नमसैव हि संसिद्धि	वृ हा ३.९२	नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्यर्च	वृ.गौ. १७.३७
नमसैवेक्षते राजन्	वृ हा ३.९३	नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्युक्त्वा	वृ.गौ. ७.११४
नमस्करोति यो भक्तया	वृ.गौ. ५.१०१	नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्युक्त्वा	वृ.गौ. १७.४५
नमस्कारात्तमद्भिस्तु	वृ.गौ. ८.७१	नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्येतन्	वृ.गौ. ७.१२०
नमस्कारानूनीराजनोपचारानि	कपिल ३२६	नमो ब्रह्मण्यमन्त्र वा	आंपू ८३८
नमस्कारेन पुष्पाणि	बृ.या. ७.९५	नमो भगवते तस्मै विष्णवे	विष्णु म ७२
नमस्कुर्यात्ततो गौरी	आश्व १५.३५	नमो यज्ञवराहाय	वृ हा ३.३३७

नमो व इति जपत्वा	वृ. या . ७.८५	नरकेषु गता ये वै	वृ. परा ७.३२८
नमो व इति मंत्रो वै	आश्व २३.८१	नरकेषु सर्वेषु समाः	वृ. गौ. ९.५७
नमोऽस्तु मित्रावरुण	व १.३०.१२	नरके हि पतन्त्येते	मनु ११.३७
नमोस्तु याज्ञवल्क्याय	वृ. परा १२.३७८	नरकोत्तारकौ सद्यो जन्म	लोहि २००
नमोऽस्तु वासुदेवाये	बृ. गौ. १८.७	नरकोत्तीर्णं वर्णनम्	विष्णु ४५
न मौनमंत्रकुहकैरनेकैः	दक्ष ७.५	न रक्तकृष्णमलिनं	शाण्डि २.६८
न म्लेच्छः पतितैः सार्धं	वृ. परा ७.३२	न रक्तमुल्बणं वासो	ल. हा ४.३४
न म्लेच्छभाषां शिक्षेत्	व १.६.३६	नरसिंहाकृतेरस्य संयोगं	कपिल ८९
न यज्ञशिष्टादन्यत्वात्	ल. व्यास २.८१	नरस्वत्वगदोषदुष्टः	भार १६.३९
न यज्ञार्थं धनं शूदाद्	मनु ११.२४	न राज्ञः प्रतिगृह्णीयाद्	मनु ४.८४
न यज्ञैः दक्षिणाभिश्च	शंख ५.१२	न राज्ञामदोषोऽस्ति	मनु ५.९३
नयनं उन्मीलनं दीक्षां	वृ. हा ६.४०१	नरादापः प्रसूता वैतेन	बृ. या. ७.३१
नयनोन्मीलनं कुर्यात्	व २.७.८६	नरान् दण्डधृतः कुर्यात्	वृ. परा १२.९
नयनोन्मीलनं कुर्यात्	वृ. हा ५.१३७	नरा मृगाः पतंगाश्च	भार १५.७०
नयनोन्मीलनं कृत्वा	वृ. हा ५.१६९	नराशयो मुख्यमासास्ते	कण्व ४३
न यमं यममित्याहुरात्मा	आप १०.३	न रेचको नैव च	बृ. या. ८.२०
न याज्या नार्यकार्येषु	वृ. परा ६.१७०	न रेचको नैव च	ब्र. या. २.५८
न युक्तमेवं करणं तदिदानीं	लोहि ६२०	नरोगोगमनं कृत्वा	संवर्त १५५
न युद्धमाश्रयेत्प्राज्ञो न	वृ. परा १२.४०	नरोविहृत्यतेऽरण्ये	शाता ६.११
नयेयु रते सीमानं	वृ. हा ४.२५५	नर्क्षवृक्षनदीनाम्नी	मनु ३.९
नयेयुरेतैः सीमान्तं	या २.१५४	नर्ते क्षेत्र भवेत् सस्यं	नारद १३.५९
न योषायाः पतिर्दिद्याद्	कात्या २४.११	न लक्षणापि मूर्खाणां न	वृ. परा ८.६८
न योषित् पति पुत्राभ्यां	या २.४७	न लंघयन्त्रजेद्विप्रो गवां	शाण्डि ४.१८८
न योषिद्भ्यः पृथग्	कात्या १६.२२	न लंघयेत् पशुर्नाश्वो	वृ. परा ५.१३०
नरकं घोरतामिस्रं	वृ. परा ५.१२६	न लंघयेद्वत्सतन्त्रीं	मनु ४.३८
नरकं पीडने चास्य	दक्ष २.३१	न (म) लापकर्षणं सर्वं	ब्र. या. ४.१११
नरकस्थानां यमयातना	विष्णु ४४	नलिनी निर्मला नारा	आंपू ९२४
नरकस्थामलुं (मुं) लोका	ब्र. या. ११.३५	न लिप्यते यथा वह्नि	१८.१८
नरकस्था विमुच्यन्ते ध्रुवं	अत्रिस ३५६	न लौकवृत्तवर्तत	मनु ४.११
नरकानौ प्रपच्यन्ते	वृ. परा ५.२४	न वक्ता वाक्यदुत्वेन	व्यास ४.६०
नरकाणां संज्ञा तेषां वर्णनम्	विष्णु ४३	न वक्त्रे भिगमं कुर्यात्	वृ. परा ६.६९
नरकान्नरकं घोरं	वृ. गौ. ९.६०	नवग्रहमखं तस्मात्	अ ९९
नरकान्निःसृतः काले	अ १३५	न वच्यते वंच्यतो	भार १८.१३०
नरकान्निः सृतः पश्चाद्	अ ११०	नवतंतु स्मरेच्चैव	भार १६.२६
नरके पतते घोरे	अ ९६	नवतीससंगृह्णीयात्तत्सूत्र	भार १५.६२

न वर्त्मनि शिलास्पृष्टे	व २.६.११	न वाहयेदनडुहं क्षुधार्तं	वृ हा ४.१६३
न वदेच्चापि तूष्णीकं किंतु	कपिल ८७१	नवाह्निकं च सप्ताहं	वृ हा ६.६
नव दैवतकं श्राद्धेऽब्रवीत	ब्र.या. ६.८	न विगृह्य कथां कुर्याद्	मनु ४.७२
नवदैवतकान्येवं व्यष्टकादीनि	कपिल १४९	न वित्त नैव जातिश्च	वृ परा ६.५४
नवनवकवेत्तारं अनुष्ठान	दक्ष ३.१९	न विद्यया केवलया तपसा	बृह ११.२२
नवतंतुकृतं सूत्र प्रणवे	भार १६.५३	विद्यया केवलया तपसा	वृ हा ४.२२२
नवन्निंकांतर्हितां च	व २.४.३०	न विद्या न तपो यस्य	वृ परा ६.२२४
नवप्रणवयुक्तेन ह्यापो	वाधू १२०	न विना ब्रह्मचर्येण	व्या २७९
नवभि पावमानीभि	वृ परा ११.१६	न विप्रं स्वेषु तिष्ठत्सुं	मनु ५.१०४
नवमिर्दधैः पंचभि	भार १८.९७	न विवादे न कलहे	मनु ४.१२१
नवमप्रभृत्यष्टानां	भार १७.१९	न विवाहो न संन्यासो	ल हा ३.१३
नवमं कन्यकादानदातु	कपिल ९२७	न विषं विषमित्यार्हुः	व १.१७.७७
नवमं नाभिमध्येतु	ब्र.या. २.११९	न विसर्गं न तद्वीनं	वृ परा १२.२७१
नवमी द्वादशी नन्दा	आश्व १.१५	न विस्मयेत तपसा	मनु ४.२३६
नवमी नाभिमध्ये तु	वृ परा ४.१२७	न वृक्षमारोहेत	व १.१२.२५
नवमी नाभिदेशे तु	वृ हा ५.१९८	न वृथा शपथं कुर्यात्	मनु ८.११
नवमी रोहिणीयोग	वृ हा ५.४७४	न वृद्धातुरबलेषु न च	नारद १९.३५
नवमे दशमे वाऽपि	या ३.८३	न वृद्धिं प्रतिदत्तानां	नारद २.९३
नवम्यां तु ततो भक्त्या	आंपू ७२८	न वेदपलमाश्रित्य पापं	बृह ११.१९
नवयज्ञे च यज्ञज्ञावदंत्येवं	कात्या ५.३	न वेदपाठमात्रेण	औ ३.८१
न वर्णगन्ध रस	व १.३.३६	न वेदबलमाश्रित्य	अत्रि ३.४
न वर्णरस दुष्टाभिरनैव	अ २.१४	न वेद बलमाश्रित्य	व १.२७.४
न वर्द्धयेदघाहानि	मनु ५.८४	न वेदशास्त्रादन्यत्तु	बृह १२.१
नवश्राद्ध त्रिपक्षं च	लिखित १५	न वेदैर्ज्ञेयता तस्य न	वृ परा १२.३००
नवश्राद्धे त्रिपक्षे च	अत्रिस ३०४	न वेदैः कैवलैर्वापि	वृ परा ७.१५
नवश्राद्धे त्रिपक्षे च	दा २३	नवेनानार्चिता हास्य	मनु ४.२८
नव श्राद्धे त्रिपक्षे च	लघुशंख १२	न वै कन्या न युवती	मनु ११.३६
नव समाराजन्यस्य	बौधा २.१.९	नवैत प्रत्यवसिताः सर्व	बृ.य. १.४
नवानां चर्मणामेव	वर.६.५३४	नवैत प्रत्यवसिताः सर्व	लघुयम २३
नवान्ने नवतोये च	वृ परा ७.४	नवैतानि विकर्माणि	दक्ष ३.१२
वाल्मीकेन रन्ध्रेषु	शाण्डि २.१२	नवैतानि विकर्माणि	ब्र.या. १२.३७
न वारयेद्गांधयन्तीं	मनु ४.५९	न वै तान्नातकान्	मनु ११.२
न वार्यपि प्रयच्छेत्तु	मनु ४.१९२	न वैदिकः पुराणोक्तै	आंपू ५
न वासुदेवात्परमस्ति	विष्णु म १११	न वैदिक पुराणोक्तै	कण्व २६६
नवाहमति कृच्छ्रं स्यात्	पराशर ११.५२	न वै देवान पीवरो	बौधा १.५.१०२

न वै स्वयं तदशनीयादतिथिं	मनु ३.१०६	नष्टशौचे व्रतध्रष्टे	व्यास ४.५१
नवोढा मानयेत पत्नी	आश्व १५.५५	नष्टापहृतमासाद्य	या २.१७२
न व्याहृतिसमो यज्ञो	आंपू १२	नष्टे धर्मे मनुष्येषु	नारद १.२
न व्याहृतिसमो होमो	व्या ३६९	नष्टेऽपि दत्ततनये न	लोहि ५५१
न व्रतैर्नोपवासैश्च	शंख ५.८	नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे	पराशर ४.२५
न शक्तिशास्त्रभिरतरय	आप १०.६	नष्टे मूले च तस्यैव	अ १०९
न शक्नोति परं हन्तुं	शाण्डि ५.२२	नष्टो विनष्टो मणिकः	कात्या २८.११
न शङ्कुर्मध्यगोग्रस्य	भार २.३१	न संवदेच्च पित्राद्यैः	वृ परा ६.२६१
न शब्द शास्त्रीभिरतस्य	व १.१०.१४	न संवसेच्च पतितैर्न	मनु ४.७९
न शयानो नातिसंगो	वृ हा ५.२६५	न संशयं प्रपद्येत	या १.१३२
न शूद्रराज्ये निवसेन्न	मनु ४.६१	न संसिद्धिमवाप्नोति	वृ हा ३.११५
न शूद्रस्याव्यसनिनः	नारद १९.४०	न संसिद्धो भवेत्तस्मात्	शाण्डि ३.५०
न शूद्रादभिक्षितेनैतत्	वृ परा ६.२९९	न संहताभ्यां पाणिभ्यां	मनु ४.८२
न शूद्रा भगवद्भक्ता	बृ.गौ. २२.२४	न संकल्पं विना कम	आंपू २६९
न शूद्राय मतिं दद्यान्	व १.१८.१२	न संकल्पादि तत्र	कण्व १६५
न शूद्राय मतिं दद्यान्नोच्छिष्टं	मनु ४.८०	न संति साक्षिण स्तत्र	वृ हा ४.२३१
न शूद्रायाः स्मृतः कालो	नारद १३.१०२	न संदेहोऽत्र कथितः	कण्व १९२
न शूद्रे पातकं किञ्चिन्	मनु १०.१२६	न संध्याविघ्नकरणा	कण्व २८६
न श्मश्रुर्ण्य जनमर्ते	ब्र.या. ८.१५८	न समवायेऽभिवादनं	बौधा १.२.३१
नश्यतीषुर्यथा विद्धः	मनु ९.४३	न समो धर्मतः प्रोक्तः	लोहि ४८
नश्यते ब्राह्मणस्येह	अ १२	न संभाषां परस्त्रीभि	मनु ८.३६१
नश्यन्ति तामसा भावा	बृ.गौ. २२.१२	न ससत्त्वेषु गर्तेषु न	मनु ४.४७
नश्यन्ति हव्यकव्यानि	मनु ३.९७	न साक्षाद्वेदमन्त्रोक्ति तस्य	कपिल ८९२
नश्येद् द्रव्यपरीमाणं	नारद २.१११	न साक्षी नृपतिः कार्यो	मनु ८.६५
न श्राद्धे भोजयेन् मित्र	औ ४.१५	न सामान्यं धनं देयं अल्पं	कपिल ४५२
न क्षाद्धे भोजयेन्मित्र	मनु ३.१३८	न सामान्यं धनं देयं	लोहि ४८०
न श्री कुलक्रमायाता	पराशर १.५९	न सावित्र्या समं जप्यं	शंख १२.३
न श्रुतिर्न स्मृतिर्यस्य	अत्रिस ३५०	न सा वृद्धैः भवेद विप्रैः	वृ परा ८.७२
नष्ट एवेतिनिश्चत्य	लोहि १४१	न सा वृद्धैर्न तरुणैर्न	वृ परा ८.७०
नष्टक्रियेर्नष्टधनेर्मृत	आंपू ६३४	न सा सभा यत्र न संति	नारद १.८०
नष्टपुत्रेति सम्प्रोक्ता	कपिल ५३२	न सा सभा यत्र न संति	वृ परा ८.७३
नष्टमेव प्रभवति तेन	कण्व ६७	न सिध्यत्येव तेषां सा	सोहि ५२१
नष्टं भ्रष्टं प्रभग्नं च	लोहि ४१५	न सीदन्नपि धर्मेण	मनु ४.१७१
नष्टं विनष्टं कृमिभिः	मनु ८.२३२	न सीदेत् प्रतिगृह्णान्	बृ.या. ४.६१
नष्टं विनष्टं कृमिभि	नारद ७.१५	न सीदेत्स्नातको विप्रः	मनु ४.३४

न सीरं क्षीरवृक्षस्य	वृ परा ५.६८	न स्वाध्याय विरोध्यर्थ	या १.१२९
न सुप्तं न विसन्नाहं	मनु ७.९२	न स्वामिना निसृष्टो ऽपि	मनु ८.४१४
न सुस्वाक्रुद्ग्नयः	ब्र.या. ३.१३	न स्वीकुर्याच्छास्त्रदुष्टास्त	७८६
न सूतकं कदाचित्	दक्ष ६.१०	न स्वीकुर्यादतस्तेन न	कपिल ७८२
न सोन्मत्तामवशां	व १.१७.५०	न स्वेऽग्नावन्यहोम	कात्या १८.१६
न सोमेनोच्छिष्टा	बौधा १.५.५२	न हन्यात् मुक्तकेशं	वृ परा १२.४९
न स्कन्दति च च्यवते	मनु ७.८४	न हन्याद् बन्दिनं राजा	वृ हा ४.२१८
न स्कन्दते न व्यथते	आंठ १२.१३	न हसेच्च न वीक्षेत	वृ.गौ. १६.२०
न स्कन्दते न व्यथते	व १.३०.८	न हायनैर्न पलितैर्न	मनु २.१५४
नस्तस्मास्तैर्यद्देवीं	भार १४.२५	न हि तेषामतिक्रम्य	आंठ १.९
न स्त्रियां वपनं कार्यं	लघुयम ५५	न हि दण्डादृते शक्यः	मनु ९.२६३
न स्त्रीजितो भवेद्भर्ता	शाण्डि ३.१६१	न हि ध्यानेन सदृशं	अत्रि ४.८
न स्त्रीणामजिनं वासो	पराशर ९.५८	नहि नारायणादन्यः स्त्रिषु	विष्णु म २१
न स्त्रीणां वपनं कुर्यात्	यम ७३	न हि प्रत्यर्थिनी प्रेते	नारद २.८३
न स्त्रीणां वपनं कुर्यान्	वृ.य. ४.१६	न हि स्नानेन सदृशी	आंपू १५४
न स्त्री दुष्यति जारेण	व १.२८.१	न हि स्पशं	ब्र.या. १०.४९
न स्त्री पतिकृतं दद्यादृणं	नारद २.१३	न हि स्पृशसमुच्चार्यं	ब्र. या. १०.१२५
न स्त्रीपुत्रं दद्यात्	व १.१५.५	न हीदृशमनायुष्यं	मनु ४.१३४
न स्त्रीस्वातन्त्र्यं	बौधा २.२.५०	न हीनांगो न रोगी च	अत्रिस ३४३
न स्थिरं क्षणमप्येकमुदकं	दक्ष ७.२९	न हेन्मामेनवा मंत्रै अग्नौ	कपिल १६६
न स्नातः सर्वतीर्थेषु	वृ हा ५.१८२	न हेम्नान्नेन कार्यं	आंपू ६३०
न स्नानमाचरेदभुक्त्वा	मनु ४.१२९	न होढेन विना चौरं	मनु ९.२७०
न स्नानादौ विपन्नस्य	वृ परा ८.५२	न ह्यस्य विद्यते	व १.२.१२
न स्नानेन न होमेन	शंख ५.९	ना आस्वादयेत् तथैवान्नं	शंख ७.४
न स्नायाच्छूदहस्तेन	वृ परा २.११३	नाकस्था नरकस्थाश्च	व्या २६१
न स्नायात् क्षोभितास्वप्सु	वृ परा २.१११	नाकिनां पुरतो भूयः	आंपू ५७२
न स्नायान्नोदकं दद्यान्नापि	वृ परा ८.५१	नाकृत्वा प्राणिनां	व १.४.७
न स्पृशन्तीह पापानि	अत्रिस ११५	नाकृत्वा प्राणिनां	मनु ५.४८
न स्पृशेत पाणिनोच्छिष्टो	मनु ४.१४२	नाके चिरं स वसते	वृहस्पति ७६
न स्पृशेयुरिमानन्ये	औ ६.४	नाक्रमेदमरादीनां	वृ परा ६.३७३
न स्मायाच्छन्नगात्रो	व २.६.२८०	नाक्षैर्दीव्येत्कदाचित्तु	मनु ४.७४
न स्यातां काम्यसामान्ये	कात्या १४.२	नागपृष्ठे निवसति	वृ.गौ. ७.११२
न स्यादैवे च पित्र्ये	व्या १४	नागयज्ञगृहस्थाने	वृ.गौ. ८.१०२
न स्वर्णेन चामेन	कपिल १७५	नागराजज्ञं दोलायां	वृ हा ७.२८५
न स्वाध्यायं न वा	आंपू ९५	नागाधिपतिरुदकवासात्	व १.२९.६

नागोप्रदास्तत्र पयः
नाग्नयः परिविन्दन्ति
नाग्निं चित्वा रामा
नाग्निं ब्राह्मणं चांतरेण
नाग्निं मुखेनोपधमेत्
नाग्निं मुखेनोपधमेन्नग्नं
नाग्निशुश्रूषया क्षान्त्या
नाग्न्योर्न ब्राह्मणयोर
नाग्रहीष्यत् पुरोडाशान्
नाग्रासनोपविष्टस्तु
नांगनखवादनं कुर्यात्
नांगुलीभिर्न लवणाभिर्न
नांगुष्ठादधिका ग्राह्या
नांधिणा पीडयेत्
नाचक्षीत धयन्ती गां
नाचरन्ति यथोक्तं ये
नाचरेत्प्लवनक्रीडां न
नाचरेद्विदुषां भुक्ति
नाचामेद्यदि तूष्णीकं
नांजयन्तीं स्वके नेत्रे
नाणायणीसात्यमुग्रा
नाततायिवधे दोषो
नातः परतरो धर्मो
ना तादृशं भवत्येनो
नातिकल्पं नातिसायं
नाऽतिदूरे न चाऽसन्न
नातिदोषावहं कांस्यं
नातिशब्देन भुंजीत
नाति सांवत्सरी वृद्धि
नात्ता दुष्यत्यदन्नाद्यान्
नात्मानमनवमन्येत
नाऽऽत्मीयान् प्रलपन्
नात्युच्छिन्ते नाति नीचे
नात्र दोषोऽस्ति राज्ञां
नात्र शूर्पप्रयुज्जीत

वृ.गौ. ७.१२८
अत्रिस ११०
व १.१८.१५
व १.१२.२८
व १.१२.२७
मनु ४.५३
शंख ५.१०
व १.१२.२९
वृ परा १२.६
औ ५.६४
व १.६.३१
बौधा १.५.१९
कात्या ८.१७
वृ परा ४.६६
या १.१४०
शाण्डि ३.२६
शाण्डि २.२३
कण्व ५९६
कण्व १३९
मनु ४.४४
ब्र.या. १.२७
मनु ८.३५१
या १.३२३
मनु ५.३४
मनु ४.१४०
वृ परा ६.२७
शाण्डि ४.१०८
वृ परा ५.२६६
मनु ८.१५३
मनु ५.३०
मनु ४.१३७
वृ हा ५.२५३
बृह ९.१८७
व १.१९.३४
कात्या ८.७

नात्रापसव्यकरणं न
नात्रिवर्षस्य कर्तव्या
नाथवत्या परगृहे
नाथेनन्दविणादाना
नाददीत नृपः साधु
नादीक्षितः प्रकुर्वीत
नादुष्टां दुषयेत् कन्यां
नाद्याच्छूदस्य पक्वानं
नाद्यात् सूर्यगृहात्पूर्वं
नाद्याविधिना मांसं
नाद्यादगृध्येन
नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः
नाधार्मिके वसेद् ग्रामे
नाधिकस्य तु कर्तारः भवेयु
नाऽधिकांगो न हीनांग
नाधिकारोस्ति मन्त्रा
नाधीयीतभियुक्तोऽपि
नाधीयीत रहस्यानि
नाधीयीत श्मशानान्ते
नाधीयीताश्वमारूढो न
नाधनुमधेनुरिति ब्रूयात्
नाध्यधीनो न वक्तव्यो
नाध्यापनाद्याजनाद्या
नाना कुसुमसम्बद्ध
नानाच्छन्दोगतिपथो
नानादेशेषु विप्राद्याः
नाना पक्षैः सुहृद्यैश्च
नानापुष्पलता कीर्णै
नानाभावैः प्रयत्नेन
नाना भावैः प्रयत्नेन
नाना मतानि सर्वेषां
नानारत्नप्रभाजालस्यु
नानारूपधरैः घोरैः
नानावर्णस्त्रीपुत्रसमवाये
नानावर्णांसु भार्यासु

कात्या २.८
मनु ५.७०
नारद १३.६०
ब्र.या. ८.१७४
मनु ९.२४३
वृ हा ८.२४०
नारद १३.३१
मनु ४.२२३
ल व्यास २.७९
मनु ५.३३
व्यास ३.४४
मनु ४.१७२
मनु ४.६०
कपिल ४७२
वृ परा ५.१०७
बृ.या. १.३०
शंख ३.७
कात्या २८.२
मनु ४.११६
मनु ४.१२०
बौधा २.३.४५
मनु ८.६६
मनु १०.१०३
वृ हा ३.१९१
विष्णु १.९
नारा ७.२२
व २.४.१२५
वृ परा १.७
विश्वा ८.६१
विश्वा ८.६६
वृ परा ६.२५
भार ५.४५
वृ.गौ. ५.१९
बौधा २.२.१०
व्यास २.२.१२

नानाविधद्रव्यचौरो	शाता ४.३२	नान्यस्थितस्य दातव्य	ब्र.या. ३.३९
नानाविधानि द्रव्याणि	संवर्त ४७	नान्यास्मिन् विधवानारी	मनु ९.६४
नानाविधानि द्रव्याणि	संवर्त ५१	नान्येन पुण्ड्रं कुर्वीत	कण्व ५६२
नानावृक्षसमाकीर्ण	पराशरसं. ६	नान्येषामन्यमंत्राणां	भार ७.११२
नानाहिताग्निस्तिष्ठेत्तु	कण्व ४८३	नान्यैखमतोदह्यान्नान्	शाण्डि ५.४१
नानासंस्थानि रूपाणि	वृ.गौ. १२.४७	नान्योत्पन्ना प्रजास्तीह	मनु ५.१६२
नानास्वेदसमाकीर्ण	दक्ष २.९	नान्यो विमुक्तये	ल व्यास २.९२
नानिपीडयल्लंगलं	व १.२.३९	नापक्षिप्तोऽपि भाषेत	व्यास १.२७
नानायुक्तेन वक्तव्यं	नारद १.६६	नापण्डिश्चतुर्वेदी	ब्र.या. ८.७१
नानुतापस्य पुंसस्तु	वृ हा ६.३१६	नाऽपमान्याः स्त्रियः	वृ परा ६.४६
नानुतिष्ठति यः पूर्वा	ल व्यास २.८७	नापराहणे न सामान्हे	व २.३.१८४
नानुशुश्रुम जात्वेतत्	मनु ९.१००	नापल्पूलितं मनुष्यंसयुक्त	बौध. १.६.१६
नानृगब्राह्मणो भवति	व १.३.४	नापहृत्य हरेर्द्वयं	वृ हा ५.७५
नान्तरागमनं कुर्यान्	वृ.गौ. १२.१४	नापि नीरस-निर्गन्धं	वृ परा ७.२२२
नान्तरेणोदकं सस्यं	नारद १२.१६	नापि पिवेत् स्वपाणिभ्यां	वृ परा ६.२६५
नान्द्रि (न्दी) ताभ्यां प्रकुर्वीत	आंपू २६५	ना पुत्रस्य सपिण्डत्वं	वृ परा ७.१४१
नान्दीमुखेभ्यो देवेभ्य	वृ परा ७.१५८	नापूपधृतनिष्पन्नं	भार ११.१००
नान्दीमुखे मातृवर्गः प्रपूर्य	कपिल ८३	नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयात्	मनु २.११०
नान्दीमुखोत्सवे दाने	व्या २४३	नाऽऽपो मूत्रपुरीषाम्यां	अत्रिस १९२
नान्दी श्राद्धं तु पूर्वाहणे	व २.४.१२२	नापो मूत्रपुरीषाम्यां	वृ परा २.११०
नान्दीश्राद्ध द्विजः कुर्यात्	आश्व १५.६७	नापो मूत्र पुरीषाम्यां	वृ परा ६.३४५
नान्दीश्राद्ध पति कुर्यात्	आश्व ३.३	नाप्यकुर्म स्वीकरण	आंपू ३७५
नान्दीश्राद्धे कृते चैव	आश्व १५.७५	नाप्रोक्षितमप्रपन्नं क्लिन्नं	बौधा १.७.१८
नान्दीश्राद्धे कृते मोहात्	आश्व १५.७७	नाप्सु मूत्रपुरीषे	व १.१२.८
नान्दीश्राद्धे कृते यावत्	आश्व १९१	नाप्सु मूत्र पुरीषं वा	मनु ४.५६
नान्दी श्राद्धे कृते विप्र	आश्व १९.६	नाप्सु श्लाघमानः	बौधा १.२.३८
नान्नमद्यादेकवासा न	मनु ४.४५	नाप्सु सतः प्रयमणं	बौधा २.५.१२
नान्नसूक्तं त्यागकाले	आंपू १०७५	नाब्रह्म क्षत्रमृघ्नोति	मनु ९.३२२
नान्यकाले प्रशंसन्ति	ब्र.या. ३.२७	ना ब्राह्मणे गुरौ शिष्यो	मनु २.२४२
नान्यत् किञ्चित् करिष्यामः	नारा ७.१८	नाभिञ्च तत्कनिष्ठाभ्यां	वृ परा २.३५
नान्यथा तु पितामह्या	वृ परा ७.३४९	नाभिनन्देत मरणं	मनु ६.४५
नान्यदन्येन संस्पृष्टरूपं	मनु ८.२०३	नाभिभाषेत तं दृष्ट्वा	अ ५६
नान्यदाच्छायेद्वस्त्र	वृ.गौ. ८.९६	नाभिमध्यस्थितं विद्धि	वृ परा १२.३१२
नान्यदभिक्षितमादद्याद्	व्यास १.३२	नाभिमात्र वदन्त्येन्ये	वृ परा १०.१२९
नान्य प्रसादं भुञ्जीत	वृ हा ५.८२	नाभिमात्रे जले विप्र	वृ परा ११.१७८

नाभिमात्रे जले स्थित्वा	दा १६	नामान्येतानि तुच्छानि	लोहि ४९४
नाभिमात्रे जले स्थित्वा	लघुयम ९२	नामास्ति याति शक्तिश्च	विष्णु म १०८
नाभियुक्तोऽभियुंजीत	नारद १.४८	नामुत्र हि सहायार्थं	मनु ४.२३९
नाभियोज्यः स विदुषा	नारद १९.४३	नाम्ना द्वादशभि मूर्ध्नि	वृ हा ४.३७
नाभिरोजो गुदंशुक्र	या ३.९३	नाम्नामादौ च वर्णानां	विश्वा २.२४
नाभिवाद्यास्तु विप्राणां	औ १.४६	नाम्ना विष्णो सहस्राणां	वृ हा ३.२४०
नाभिव्याहारयेद् ब्रह्मा	मनु २.१७२	नायन्त्रित चतुर्वेदी	वृ.गौ. ४.२७
नाभिशास्तान् पतितान्	नारद १८.३८	नायन्त्रितश्चतुर्वेदः	बृ.या. ४.७७
नाभिसृशान्दीतोयं	वृ परा १०.१४६	नायं तद्धनभागी	कण्व ७५०
नाभिसंस्थं तु विज्ञाय	वृ परा १२.२२५	नायुधव्यसनप्राप्तं	मनु ७.९३
नाभेः ऊर्ध्वं तु वपनं	औसं ३४	नारण्य सेवनाद्योगो न	दक्ष ७.३
नाभेरथ (ध) स्तात्सकलं	भार ४.५	नारदाद्युक्तवार्क्ष	कात्या १०.२
नाभेरधस्तादंगानि	वृ परा २.१५६	नारदेन च सम्प्रोक्तं	वृ हा ४.२६३
नाभेरधः स्पर्शनं	बौधा १.५.८७	नारन्तु कूपे काकञ्च	पराशर ११.३९
नाभेरूर्ध्वं तु द्रष्टव्य	आंउ ९.१२	नारं स्पृष्ट्वाऽस्थि	मनु ५.८७
नामगोत्रस्वधाकार	बृ.या. ४.१२४	नारा इति समूहत्वे	वृ हा ३.१०२
नामगोत्रस्वधाकार	ब्र.या. ४.१२५	नारायणः जगन्नाथ शंख	विष्णु १.५०
नामगोत्रे समुच्चार्य	व्या ३१७	नारायणपदप्राप्ति	कपिल ७१९
नामजातिग्रहं तेषां	नारद १६.२१	नारायण पुराणेश योगवास	बृ.गौ. १४.३५
नाम जातिग्रहं त्वेषां	मनु ८.२७१	नारायणबलि कार्यो	वृ परा ७.३०५
नामतस्तु स्वधाकारैस्त	बृ.या. ७.८७	नारायणमवमाप्नोति	अ १४६
नामधेयं दशम्यां तु	मनु २.३०	नारायण महायोगिन्	१.४
नामधेयस्य ये केचिद्	मनु २.१२३	नारायणमिदं प्राहः वाचा	नारा ४.४
नामधेये मुनि वसु	कात्या २५.९	नारायणं मूलमन्त्र संज्ञा	विश्वा ५.११
नामन्त्रणं न होमञ्च	ब्र.या. २.१०	नारायण मृषीन्देवं	विष्णु म ९६
नाम ब्रूयुर्वरस्याथ	आश्व १५.१७	नारायणं जगन्नाथं	वृ हा ५.५३६
नामभि कीर्तनैर्द्विव्यैः	व २.४.१३०	नारायणं परं ब्रह्मा	व २.१.१६
नामभि कीर्तयन् देवमेव	वृ हा ७.२९०	नारायणं परित्यज्य	वृ हा ८.२७४
नामभि केशवाद्यैश्च	व २.६.३८५	नारायणबलि कार्यो	लघुशंख ३७
नामभि केशवाद्यैश्च	वृ हा ४.१३८	नारायणस्य दासा ये	वृ हा १.२०
नामभि केशवाद्यैश्च	वृ हा ५.१६३	नारायणानुवाकेन	वृ हा ८.८
नामभि बालमंत्रैश्च	या १.२८६	नारायणानुवाकेन	वृ हा ६.८८
नामभिस्तैश्चतुर्थ्यन्तैः	वृ हा ७.१२९	नारायणानुवाकेन	वृ हा ५.३७७
नाममन्त्रविभक्तानां	बृ.गौ. १५.६२	नारायणानुवाकेन	वृ हा ७.२९९
नामान्यमूनि सर्वेषां	भार १८.४४	नारायणानुवाकेन	व २.३.१७९

नारायणाय नमः ओ	विष्णु म. ९८	नावृतो यज्ञं गच्छेत्	व १.१२.३९
नारायणी वासुदेवी	वृ हा ७.४	नावेक्ष्या एव चैते	आंपू ७६७
नारायणो घनश्यामः	वृ हा २.८०	नावैष्णवान्नं भुञ्जीत	वृ हा ८.३०७
नारायणोऽच्युत श्रीमान्	वृ हा ३.१०	नाशंकरोत्येकवर्षं स्यादे	व्या ३७७
नारायणो महाशब्दो	वृ हा ३.१४	नाशयन्त्याशु पापानि	ल व्यास २.६५
नारिकेलोदकैः पूर्णं तथा	कपिल ९१३	नाशये जनितं पापं	भार ६.१६२
नारी च शुभभर्तारं	वृ परा १०.२५९	नाशुचिर्मालिनो वाऽपि	वृ हा ५.३०२
नारीणां च नदीनां च	वृ परा ६.५६	नाशौचं सूतके पुंसः	व १.४.२१
नारीरपुरुषहन्ता च कन्या	आंड ७.९	नाऽऽशौचं सूतके स्यातां	वृ परा ८.१६
नारी प्रसूयते पुत्रं	ब्र.या. ५.१९	नाशनन्ति पितरस्तस्य	मनु ४.२४९
नारीणामपि कर्तव्या	वृ हा ८.८३	नाशनान्चि श्ववतो	व १.१४.६
नारीणां चैव वत्सानां	शंख १६.१६	नाशनीयाच्छयनारूढो	शाण्डि ४.११९
नारी वाऽपि कुमारो वा	बृ.या. ४.५	नाशनीयात् संधिवेलायां	मनु ४.५५
नारुन्नुदः स्यादार्तोऽपि	मनु २.१६१	नाशनीयाद्भार्याया सार्धं	मनु ४.४३
नार्चयेन्न प्रणमेच्च	वृ हा ८.१४६	नाश्रम कारणं धर्मं	या ३.६५
नार्तो न मत्तो नोन्मत्तो	मनु ८.६७	नाश्रेत्रियतते यज्ञे	मनु ४.२०५
नार्थसम्बन्धिनो नाप्ता	नारद २.१५६	नाष्टमी सप्तमीयु सप्तमी	ब्र.या. ९.४
नार्थसम्बन्धिनो नाप्ता	मनु ८.६४	नाष्टकासु भवेच्छ्राद्ध	कात्या ५.४
नार्दवासाः स्थलस्थस्तु	वृ परा २.२०३	नासदासीति सूक्तानि	आश्व २३.६६
नार्य्यश्च रमणैः सार्द्धं	वृ हा ५.४९८	नासनस्तु स्वधाकारै	बृ.या. ७.७०
नार्वकं संवत्सराद्विशात	नारद २.११	नासन्दिष्टः प्रतिष्ठेत	नारद ६.१०
नालंकृतेषु विधिषु	वृ हा ६.४१३	नासहस्राद्धरेत फालं	या २.१०१
नालपेद् विष्णवभक्तै	व २.१९९	नासान्ते भूपदं न्यस्य	विश्वा २.३५
नालिकेर्याख्यशाकञ्च	वृ हा ८.१००	नासापुटे (ह्य) अक्षकर्णं	विश्वा २.३१
नावज्ञेयाः कदापि स्युर्नृप	वृ परा ६.३७४	नासावेधनकीलं तु	वृ परा ५.५६
नावबुध्यन्ति ये	बृ.गौ. १५.७९	नासिकाकृष्टं उच्छ्वासो	बृ.या. ८.२२
नावं च सांशयिकी	व १.१२.४२	नासिका कृष्ण सोध्यानं	ब्र.या. २.५३
नावगाहः प्रकर्तव्य	आंपू १७४	नासिका मूलमारभ्य	व २.६.४९
नावमन्याश्चनायत्ना	कण्व ६०६	नासिकामूलमारभ्य	वृ हा २.७१
नावमन्येत पूजयित्वा	कपिल ८१८	नासिकायां तथाक्षणाश्च	वृ हा ३.१२२
नावराद्ध्यर्वावलयो भवन्ति	कात्या १३.१४	नासिकौष्ठान्तरं पश्चात्	वृ हा ४.२०
नावश्यं भोजने मौनं	शाण्डि ४.१२८	नाऽऽसीनोनाऽऽसीनाय	बौधा १.२.२८
नावाहनं सविरेन	ब्र.या. ३.३८	नासृक्षद्यदि राजानं नापि	वृ परा १२.५
नाविनीतैर्ब्रजैर्द्धुयै न च	मनु ४.६७	नासोदकं नेत्रवारि स्वे	शाण्डि ३.१०३
नाविस्पष्टमधीयीत	मनु ४.९९	नासौ तत्पदमाप्नोति	बृ.गौ. २२.२२

नासौ फल मवाप्नोति	विष्णु म ९३	निकटस्थायिनो नित्यं	वृ परा १२.३१
नास्तमयन्तम्	व १.१२.७	निकृत्तकर्णनासोष्ठी	वृ हा ४.१.८५
नास्तिकं किं भविष्यन्त	आंपू ७५२	निकृष्टं नैच्यन्यं गाम्या	कपिल ११५
नास्तिकः कृच्छ्रं द्वादश	व १.२१.३२	निक्षिपेत कुशयोरग्ने	आश्व २.३७
नास्तिक पिशुनश्चैव	व १.६.२२	निक्षिप्तं वा परद्वयं	नारद ८.१
नास्तिकवृत्तिस्त्विति	व १.२१.३३	निक्षिप्तस्य धनस्यैवं	मनु ८.१.९६
नास्तिकव्रात्यदारानि	नारद २.१५९	निक्षिप्तानि स्वमर्यादाजनेन	कपिल २१०
नास्तिकाद्यादि कुर्वीत	औ ९.६९	निक्षिप्य तज्जले	व २.६.३४१
नास्तिकाय चयन् दत्तम्	वृ.गौ. ३.२५	निक्षिप्य हस्त शिरसि	वृ हा २.१.२६
नास्तिक्यभावन्मूढात्मा	बृह १२.३२	निक्षेप्याग्निं स्वदारेषु	कात्या १९.१
नास्तिक्यं वेदनिन्दां	मनु ४.१.६३	निक्षिप्योरसि दृशदं	पराशर ५.२०
नास्तिक्यादथवालस्यात्	ल व्यास २.९१	निक्षेपवार्धुष्यगतं यदन्य	लोहि ३९८
नास्तिताह शनित्यत्वं	कपिल १६२	निक्षेपस्यापहरणं	मनु ११.५८
नास्तिभूम्याः समं दानं	अ ९०	निक्षेपस्यापहर्तारम्	मनु ८.१.९०
नास्ति विप्रान् परोधर्मः	वृ.गौ. ३.७९	निक्षेपस्याहर्तारं	मनु ८.१.९२
नास्ति विप्रान् परोबन्धुः	वृ.गौ. ३.७८	निक्षेपेष्वेषु सर्वेषु	मनु ८.१.८८
नास्तिवेदात परं शास्त्र	अत्रिस १५०	निक्षेपोपनिधी नित्यं	मनु ८.१.८५
नास्तिक्यावस्थितो यस्तु	वृ परा २.२१९	निक्षेपो य कृतो येन	मनु ८.१.९४
नास्तिपयेनापि यो	वृ परा २.२१८	निखिलानामपक्वानां	कपिल ६३१
नास्ति सत्यात्परो धर्मो	नारद २.२०३	निखिला मातरो ज्ञेयां	आंपू ३९२
नास्ति सूनोश्शतगुणो	लोहि ३१३	निखिलेभ्यो सुतेभ्यो	आंपू ४४६
नास्ति स्त्रीणां क्रिया	मनु ९.१.८	निगमागमनन्त्रेषु मूल	विश्वा ३.४१
नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो	मनु १५५	निगमादिषु सर्वेषु	विश्वा ३.६३
नास्त्यघमर्षणात्	शंख १२.२	निगिरन्यदि मेहेत	लघुयम ६
नास्त्येवेति ततः	कण्व २९९	निगुणोअहन् निर्गन्धात्माः	वृ.गौ. १.६०
नास्मात्परमकं ज्ञानं	शाण्डि ५.७९	निगृह्य चात्मनः प्राणान्	संवर्त २२१
नास्य कर्म नियच्छन्ति	बौधा १.२.६	निगृह्य दापयेच्चैनं	मनु ८.२.२०
नास्य कार्योऽग्नि संस्कारो	मनु ५.६९	निगृह्य भूवृत्ति बन्धुदानं	कपिल ५१४
नास्य छिद्रं परोविद्याद्	मनु ७.१०५	निग्रहणे हि पापानां	मनु ८.३११
नास्य निर्मात्य शयनं	औ ३.९	निग्रहं प्रकृतीनां च	मनु ७.१.७५
नास्यानश्नन्गृहे	व १.८.५	निग्रहानुग्रहौ सर्व	कण्व १७४
नास्रमापातयेज्जातु	मनु ३.२२९	निजधर्माविरोधेन	या २.१.८९
नाहं नैवान्यसन्बन्धो	दक्ष ७.४९	निजं कायं समुत्सृज्य	बृह ९.१.९६
नाहरेन् मृत्तिकां विप्रः	औ २.४३	निजोदरं पूरयन्ती भृत्यवर्गं	शाण्डि ३.१.४९
ना हुतयश्चैवतस्मिन्	व २.४.९८	नित्यकर्माणि यः कुर्यात्	विश्वा १.२०

निकर्म ततः कुर्यात्	ब्र.या. ३.७२	नित्यं जाप्यं विना यस्तु	विश्वा ७.११
नित्यतः समुपक्रान्त	कण्व ३१२	नित्यं तास्मिन् समाश्वस्तः	मनु ७.५९
नित्यतुष्टा नष्टदुःखा	लोहि ५९०	नित्यं तीर्थोदकस्नायी	शाण्डि २.६३
नित्यतृप्ता भवेयुः	आंपू ३३	नित्यं त्रिवारं तत्रैव	आंपू १९१
नित्यतृप्ता महात्मानो	वृ.गौ. ५.८२	नित्यं त्रिषवणस्नायी	शंख १७.१
नित्य देवालये गोष्ठे	भार ५.१४	नित्यं ददाति य	आश्व १.१५०
नित्यनैमित्तिकं काम्यं	ब्र.या. २.४	नित्यं निष्फलः ससंतर्प्य	ब्र.या. ३.६६
नित्य नैमित्तिकं	व २.१.८	नित्यं नैमित्तिकं कामं	शंख ८.१
नित्यनैमित्तिके चैव	ब्र.या. ३.११	नित्यं नैमित्तिकं काम्यं	लघुयम ८२
नित्यनैमित्तिकेष्वेवं	लोहि १३०	नित्यं नैमित्तिकं	दा २९
नित्यनैमित्तिकेष्वेषु काम्येषु	कपिल १३५	नित्यं नैमित्तिकं	ब्र.या. ३.६
नित्यन्तु वैश्वदेवः	ब्र.या. २.५	नित्यं नैमित्तिकं	व्यास ३.१
नित्यभव्याय स मुनि	लोहि ६६६	नित्यं पार्श्वगतो मृत्युः	शाण्डि ४.२२२
नित्यमग्नौ पाकयज्ञैः	वृ.गौ. ६.६७	नित्यं प्रतिगृहे लुब्धो	वृ.या. ३.३६
नित्यमभ्ययर्चयेद्देवं	व २.५.७९	नित्यं प्रतिगृहे लुब्धो	यम ३१
नित्यमाकाशरूपास्ते	आंपू ८६६	नित्यं भुक्तिं क्रियते तस्मात्	लोहि ५०१
नित्यमामलक स्नानं	वृ हा ८.३१२	नित्यं मूत्रपुरीषादिकर्म	कण्व १०५
नित्यमाराधनं विष्णो	व २.३०	नित्यं यदेत निखिलै	कण्व ४७९
नित्यमाराधयेदेनमा	व्यास १.३६	नित्यं योगरतो विद्वान्	शंख १४.८
नित्यमावर्तयेद्भक्त्या	कण्व १८४	नित्यं वर्तेत चाजस्रं	वृ परा ६.३७५
नित्यमावश्यकं स्त्रीणां	लोहि ६६३	नित्यं शुद्धः कारुहस्त	बौधा १.५.५६
नित्यमास्यं शुचि स्त्रीणां	मनु ५.१३०	नित्यं शुद्धः कारुहस्त	बौधा १.१२.१३
नित्यमुक्तः स योगी च	वृ परा ६.१०१	नित्यं शुद्धः कारुहस्तः	मनु ५.१२९
नित्यमुक्तान्तसमुद्दिश्य	व २.६.३८७	नित्यं श्राद्धेऽपि वर्ज	वृ परा २२९
नित्यमुद्धतपाणि	मनु २.१९३	नित्यं स्नात्वा शुचि	मनु २.१७६
नित्यमुद्यतदण्डः	मनु ७.१०२	नित्यं स्वाध्यायशील	औ ३.८९
नित्यमुद्यतदण्डस्य	मनु ७.१०३	नित्यं युक्तं तया देव्या	वृ हा २.१२०
नित्यमुष्णेन तत्कुर्यात्	कण्व ५५९	नित्यं शौच कृत्यवर्णनम्	विष्णु ६०
नित्यमेव यतस्तस्मा	कण्व ४२५	नित्यश्राद्धमदैल स्याद्	दा ८०
नित्यं अष्टसहस्रं तु	वृ हा ३.३३९	नित्यश्राद्धं तदुद्दिष्टं	ल व्यास २.५८
नित्यं उत्साहयुक्तश्च	वृ परा १२.२०	नित्यं श्राद्धं सदा कार्यं	प्रजा ३६
नित्यं उद्यतपाणिश्च	औ ३.२	नित्यश्राद्धविधिः	ब्र.या.२.२०६
नित्यं कर्तुं भवेद्भूयस्त्व	कण्व ५०३	नित्यश्राद्धेषु तीर्थेषु	व्या १६८
नित्यं गुणाः प्रवर्द्धन्ति	नारा ५.११	नित्यश्रीको नित्यपुष्पो	आंपू ५२२
नित्यं च सलिलाकाङ्क्षी	आंपू ४६४	नित्यसत्त्वाद्धिरण्य	वृ हा ७.४९

निर्झर देवखातेब्धौ	भार ३.१९	निर्वर्त्य तत्परं सर्वं	कण्व २९७
निर्णयो व्याहृतीनां	बृ.या. ३.३२	निर्वर्त्य विधिना धर्मं	वृ हा ६.११७
निर्णिक्ते व्यवहारे तु	नारद १.५३	निर्वर्त्य सकलं सापि	वृ परा ६.१३८
निर्दयं दानविमुखं	आंपू ७५०	निर्वपन्त्यपरे पिंडान्	वृ परा ७.२७२
निर्दशे गुरुपाते	दा १४२	निर्वपेण पूरोडाशं	संवर्त २७
निर्दहष्यति सत्सर्वं	वृ.गौ. १२.८	निर्वारतंडुला श्रेष्ठाः	भार १४.४६
निर्दहेत् सर्वपापानि	वृ परा ४.७९	निर्वास्यस्ताडनीयश्च	लोहि ५६
निर्दहेत् सर्व पापानि	वृ परा ९.३६	निर्वाहक स्यादित्येव जाबाला कपिल	४७५
निर्दिष्टमन्योद्देशेन	कण्व ७६०	निर्वाहकेण ज्येष्ठेन	लोहि १९१
निर्दिष्टेष्वर्थजातेषु	नारद २.२०८	निर्विघ्नेन त्रिवारं तु	आश्व १०.५२
निर्देशं ज्ञातिमरणं श्रुत्वा	अत्रि ५.३०	निर्वृणाः शंककपोयेत	भार २.३३
निर्दोषम (मि) ति भेदेन	कपिल १५	निर्वर्तेरंश्च तस्मात्तु	मनु ११.१८५
निर्दोषं दर्शयित्वा तु	नारद ९.७	निवसन्ति पुरोडाश मग्नौ	वृ हा ७.९
निर्दोषा सैव कथिता	आंपू ९०९	निवसन्त्यित्यकर्माणि	कपिल ६५५
निर्दशा संधि संबंधि	व्यास ३.५८	निवसेदेव सततं तस्मादौ	आंपू ४६५
निर्धनांश्चरतो लोके	शाण्डि ४.८६	निवारको दुर्गतेश्च	लोहि ३३७
निर्धनोऽपि यथाशक्ति	शाण्डि ३.१३३	निवारशीतकर्कुडुक्षिरिका	भार ५.६
निर्भयं तु भवेद्यस्य	मनु ९.२५५	निवारितो दानकाले न	कपिल ५१२
निर्भयास्सुहृदोलोको	शाण्डि ३.१६२	निवार्य च पुनर्वाचा	बृ.गौ. १८.४३
निर्भाल्यमितरेषां तु	वृ हा ८.२७६	निर्वायतत्प्रत्नेन	ब्र.या. १२.२१
निर्भेदं स्वबलं	वृ परा १२.३०	निवासराजनि प्रेते जाते	संक १५.१५
निर्भोगो यत्र दृश्येत	नारद २.७६	निवासो गुह्यसंभाषा	कपिल ५७१
निर्मत्सरः सदाचारः श्रीत्रियो	वृ.या. ३.४२	निवीतं मनुष्याणां	भार १५.९
निर्मश्य स्थापयेत्	ब्र.या. ८.२१९	निवृत्त वैदिकं कर्मयत्प्रोक्तं	शाण्डि १.३
निर्ममो निरहंकारः	वृ हा ३.१३	निवृत्तः सर्वकार्येषु	ब्र.या. ७.४०
निर्मलात् फेनपूताभि	वृ परा २.३२	निवृत्तानर्चयेत् पिंडान्	वृ परा ७.२६८
निर्मलादोषरहिताः	भार ७.२८	निवृत्तेन न पातव्यं	आंड ८.१५
निर्मथितेति सूक्तेन	वृ हा ६.९	निवेदताप्तरंछाध तत्संकल्प	कपिल २६८
निर्मोक्तमिव शेषाहेर्विस्तीर्णं	विष्णु १.३९	निवेदयति मन्मूर्त्या	वृ.गौ. ७.१२२
निर्यासश्चंदनं चेति	भार १४.३६	निवेदायित्वा स्वात्मानं	ल व्यास २.४८
निर्यासानां गुडानां च	शंख १६.११	निवेदयेच्च नैवेद्य	विम्बा ३.२९
निर्यासश्च्यवनश्चेति	भार १४.३२	निवेदयेच्च दध्यन्नं	व २.६.२३८
निरलज्जा मातृदत्ताः	लोहि २९२	निवेदयेत् पवित्राणि	वृ हा ५.३२६
निरलेपं काचनं भाण्डं	मनु ५.११२	निवेधयेदौष्यपात्रे पायसं	व २.६.२४०
निर्वर्तेतास्य यादव	मनु ७.६९	निवेदयेन्न देवाय	कण्व ७६३

निवेदितस्तु राजा वै	वृहस्पति ६९	निषेकादीनि कर्माणि	मनु २.१.४२
निवेदितस्य हविषो	आंपू २३९	निषेकाद्या श्मशानान्ताः	औसं ४८
निवेदितानि वस्तू न	पू २४६	निष्कत्रयमितस्वर्णं	शाता ६.४४
निवेदितान्तः पञ्चयज्ञ	आंपू १०७८	निष्कत्रयस्य प्रकृतिं	शाता २.४९
निवेद्यकानि सर्वाणि	भार १४.५६	निष्कामात्रसुवर्णस्य	शाता ६.३२
निवेश्य दक्षिणे स्वस्य	वृ हा २.११३	निष्कर्षस्सुमुखोऽयं च	कपिल ११
निवेष्टुकामो रोगार्तो	नारद १.४५	निष्कल्मषो भवेन्मर्त्य	शाण्डि ४.१३५
निशाकृत्यो रंडपाकः न	कपिल ६०७	निष्कारणं वृथा मोहात्	लोहि ३३५
निशाबन्ध निरुप्येषु	संवर्त १३८	निष्कालको वा घृताक्तो	व १.२०.४६
निशायां वा दिवा वाऽपि	या ३.३०७	निष्कालको वा ध्रुताम्यक्तः	व १.२०.१६
निशाबन्धनिरुद्धेषु	दा ११३	निष्कृतिं तदगिरा दद्याद्	वृ परा ८.१०३
निशाबन्धनिरुद्धेषु	पराशर ९.४२	निष्कृतिर्विहिता सद्	कण्व ६४३
नि शेष जलवाप्यादौ	वृ हा ८.१२७	निष्कृतौ व्यावहारे च	वृ परा ८.७४
निश्चयं मनसः कृत्वा	वृ परा १२.१२३	निष्कैवल्यं पदं देव	विष्णु म ७१
निश्चयान्मोचयिष्यामो	लोहि ६९१	निष्क्रम्यकल्पितं कुम्भं	ब्र.या. ८.२३३
निश्चलं रमते चित्त	शाण्डि ५.३१	निष्क्रम्य नासा प्रवराव	ब्र.या. २.५९
निश्चित्य तूष्णी तिष्ठन्ति	कपिल ७४४	निष्क्रम्याद्युक्तषेषु	भार १८.२४
निश्वासेषु स्थिता	वृ.गौ. १.४७	निष्काम्य नासाविव	बृ.या. ८.२१
निश्शेषदेशलोकादिवर्णा	कपिल १६१	निष्टेवजृम्भण क्रोध	भार ६.१०५
निषादस्त्री तु चण्डालात्	मनु १०.३९	निष्ठा-नाशौ न विद्यते	वृ परा १२.२८१
निषादाच्छूद्रायां पुल्कसः	बौधा १.९.१४	निष्ठीवन्तं सभामध्य	लोहि ६०७
निषादात्तृतीयायां पुल्कसः	बौधा १.८.११	निष्ठुराश्लील तीव्रत्वात्	नारद १६.२
निषादेन निषद्यामा	बौधा १.८.१३	निष्पद्यन्ते च शस्यानि	मनु ९.२.४७
निषादो मार्गवं सूचे	मनु १०.३४	निष्पन्नसर्वगात्रन्तु	पराशर ९.१६
निषिद्धकर्मणि संप्राप्ते	शाण्डि ४.२१९	निष्पन्नेषु च पाकेषु	व्या २७२
निषिद्धकाम्ययोगश्च	शाण्डि ४.२१४	निष्पावञ्च मसूरञ्च	वृ हा ४.१०७
निषिद्धद्रव्ययोगेन	शाण्डि ४.९३	निष्पीडनं वाऽपि तेषु	वृ हा ६.३३४
निषिद्धभक्षणं जैहन्यं	या ३.२२९	निष्पीडयति च पूर्वं	ब्र.या. ७.४१
निषिद्धानि च वाक्यानि	व्या २७	निष्पीडयति यः पूर्वं	वृ परा २.२०८
निषिद्धानि च शाकानि	वृ हा ८.१२०	निष्पीडयेत् स्नावस्त्र	वृ परा २.२०९
निषिद्धानि न देयानि	वृ परा ७.२३०	निष्पीडिञ्च गोक्षीर	वृ हा ६.२५४
निषिद्धेऽपि दिने कुर्यात्	व्या २०	निष्पीडयवस्तु वस्त्र	ल व्यास २.३९
निषेकादिश्मशानान्त	ब्र.या. ८.२	निष्प्रकम्पं जगत व्योम	वृ परा १२.३६९
निषेकादिश्मशानान्तो	मनु २.१६	निष्प्रदीपस्यगेहस्य	शाण्डि ४.१९७
निषेकादीनि कर्माणि	बृ.गौ. १४.५८	निष्प्रदीपेन भुञ्जीत विशेष	शाण्डि ५.४७

नित्यस्नायी भवेदर्कः	वृहस्पति ७४	निधावे पतिते वर्षे	वृ.गौ. ८.९७
नित्यहोमे तु काल	आश्व १५.६२	निधीनां तु पुराणानां	मनु ८.३९
नित्याग्निं पूर्ववयसं	आंपू ७७१	निधीनामधिपो देवः	शाता ५.६
नित्यानध्याय एव	मनु ४.१०७	निध्याय एवं स्याद्	औ ३.६४
नित्यानि कथितानि	कण्व ४९८	निनयेत् सलिलं चैव	आश्व २३.६४
नित्यानि चैव कर्माणि	औ ६.२	निनेतारं चास्य प्रकीर्णं	व १.१५.११
नित्यानुष्ठानरहितै	भार १.१०	निन्दन्ति ये भागवतान्	शाण्डि ४.१०४
नित्याऽप्रयतवर्षाणि	आंपू ७४४	निन्दितेभ्यो धनादानं	मनु ११.७०
नित्याभिवन्दने सन्ध्या	आंपू ३४५	निद्याऽऽलृणु द्विजान्	वृ.गौ. १४.१५
नित्याभ्यसनशीलस्य	दक्ष ७.२५	निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु	मनु ३.५०
नित्याम्लयुक्तो वर्तस्व	आंपू ५७७	निपातयसि नो घोरे निरये	नारा ७.१७
नित्यास्वतंत्र नारीणां	कपिल ६३९	निपातो नहिं सव्यस्य	कात्या २.६
नित्ये नैमित्तिके काम्ये	विश्वा ३.७	नि पावा राजमाषाश्च	दा ५३
नित्ये नैमित्तिके काम्ये	संवर्त ९४	निबद्धध्ययते तन्निर्मूलं	शाण्डि ५.२७
नित्योदकी नित्य	बौधा २.२.१	निमज्ज्याप्सु जले	वृ हा ४.३०
नित्योदकी नित्य	व १.८.१७	निमन्त्रणं च पूर्वेद्युं	आंपू ७३४
नित्योदकी नित्ययज्ञो	वृ.गौ. ६.१८०	निमन्त्रणं स्वयं दद्याद्	प्रजा ६४
निदध्याच्छकलं तत्र	आश्व २.६	निमन्त्रणेऽप्रयातव्यं	प्रजा ६९
निदद्यात् नवे कास्ये	आश्व १५.६	निमन्त्रयीत पूर्वेद्युं	या १.२२५
निदध्यान्तांचरो स्थाली	आश्व २.४७	निमन्त्रयेत तान् भक्त्या	वृ परा ७.२९
निदध्यार्ध्यापात्रेषु	आश्व २३.२६	निमन्त्रितश्च यः श्राद्धे	औ ५.११
निदध्यादुदगग्रे	आश्व २.३३	निमन्त्रितश्च यो विप्रो	औ ५.१०
निदध्युः पृथगुद्धृत्य	वृ परा ७.२८७	निमन्त्रितस्तु यः श्राद्धे	शंख १४.२५
निदर्शं ज्ञातिमरणं	मनु ५.७७	निमन्त्रितस्तु यो विप्रो	बृ.गौ. १४.७
निदाघकाले पानीयं	वृहस्पति ६४	निमन्त्रितातिक्रमणं	वृ हा ६.१९९
निदाघेऽयं प्रछच्छेत	वृ १.२.३८	निमान्त्रिताहिनपितर	मनु ३.१८९
निदुखं सुखं शुद्ध	शंख ७.३०	निमन्त्रिते यदा विप्रे	दा १३६
निदान्तरे प्रबुद्धस्सन्	शाण्डि ५.४९	निमन्त्रितो द्विजः पित्र्य	मनु ३.१८८
निद्रालस्यविवादासद्	शाण्डि ३.१४२	निमित्तग्रहणश्राद्धं कृत्वा	आं पू २७६
निद्रालु क्रूरकृल्लब्ध	या १४.१३९	निमित्तमक्षरः कर्त्ता	या ३.६९
निद्रालु स्तामसो याति	वृ हा ६.१६०	निमित्तं चोपरागादे	आश्व १.११०
निधानस्य पवित्रस्य	आंपू ५००	निमीलिताक्षः सत्वस्थो	या ३.१९९
निधाय दक्षिणे कर्णे	औ २.३३	निमृजेत् त्रिसिरेकं	आश्व २.४३
निधाय दण्डवद्देहं प्रसार्य	शाण्डि २.७३	निमेषा दश चाष्टौ च	मनु १.६४
निधाय शक्त्या पात्राणि	वृ परा १०.१४४	निमेषादि क्षणः काल	बृह ९.९४

निम्नगापहृतोत्सृष्ट	नारद १२.६	निराधारा खाद्यास्तु	वृ.गौ. ६.११५
निम्नां हि वाहयेद् भूमिं	वृ परा ५.१३३	निरालम्बं यदा ध्यानं	वृ परा १२.२९१
नियतात्मा पावकाशी	आंपू २२२	निराशम् अतिथिं कृत्वा	वृ.गौ. ६.६४
नियमः कथितस्सद्भिः	लोहि ११७	निराशा निर्ममा साध्वी	लोहि ५९७
नियमतत्र संपन्ना	वृ परा ११.२४५	निराशाः पितरस्तस्य	कपिल १९९
नियमानामनुष्ठानं	बृह ११.४१	निराशाः पितरस्तस्य	व्यास ३.२१
नियमेन च षण्मासं	आस्व १२.१७	निराशाः पितरो यान्ति	वृ परा ७.१२९
नियमोऽयं याजुषस्य	कण्व ३७२	निराशास्ते निर्वर्तन्ते	पराशर १२.१३
नियमोऽयं सर्वधर्म	लोहि ४८१	निराशास्ते निर्वर्तन्ते	वाधू ६०
नियामकं किमत्रेति	कपिल १३४	निराहाराज्जायते च	वृ परा ८.२७०
नियुक्तकर्माणि नियुक्त	विश्वा १.२१	निहारो जपेल्लक्षो	भार ९.४८
नियुक्तः सुव्रत शेष	वृ परा १६२	निरिन्द्रियाह्लादायाश्च	बौधा २.२.५३
नियुक्तस्तु यदा श्राद्धे	व १.११.३१	निरुक्तं ज्योतिषं शिक्षां	भार ११.५०
नियुक्तस्तु यथान्यायं	मनु ५.३५	निरुक्तं यत्र मन्त्रस्य	वृ.या. १.४३
नियुक्तायामपि पुमान्मार्या	मनु ९.१.४४	निरुक्तं ह्येनः कनीयो	व १.२०.३८
नियुक्तौ यो विधिं हित्वा	मनु ९.६३	निरुद्धप्रेतकृत्या ये तद्	आंपू ९३
नियोज्यगृहकृत्येषु	वृ परा ६.५२	निरुद्धासु न कुर्वीरन्	बौधा २.३.७
निरंशैर्वेदमन्त्रैकन	लोहि २४९	निरुध्य प्रकिरेद्वायुं	आस्व २३.१६
निरग्निके विधिहोष	ब्र.या. २.२०५	निरुद्ध्याद्विधिवद्योगी	वृ परा १२.२४७
निरिग्निरग्नौकरणं कुर्यात्	व्या १.२४	निरुप्तमन्योद्देशेन न	आंपू २३३
नरग्नि साग्निकश्चैव	ब्र.या. ३.१६	निरुप्यते च सुस्पष्टं	कपिल ७३३
निरंकचन्दनखरं सर्व	वृ हा ३.३०९	निरुद्धव्या दशाप्येते	वृ परा १२.२४९
निरङ्गुष्ठं तु यच्छ्राद्ध	ब्र.या. ४.९९	निरोधकाले प्राणस्य	वृ.या. ८.१५
निरन्तरालं यः कुर्याद्	वृ हा २.६८	निरोधं कुरुते मूढं तस्य	कपिल ८३२
निरन्नो निर्धनो देवाः	वृ परा ७.३५	निरोधयेद्गृहेष्वेव नो	लोहि ४४
निरयं ये च गच्छन्ति	वृ.गौ. १०.८५	निरोधाज्जायते वायु	अत्रि १.८
निरये रौरवे घोरे स	वृ.गौ. १३.१९	निरोधाज्जायते वायु	वृ.या. ८.२७
निरयेषु च ते शश्व	नारद २.१९५	निरोधाज्जायते वायु	ब्र.या. २.६६
निरयेष्वक्षयं वासं	व्यास ३.५६	निरोधाज्जायते वायु	व १.२५.६
निरस्तः परावसे	ब्र.या. ८.२४५	निर्गच्छति शनैर्वायू	वृ परा ६.१०७
निरस्य तु पुमाच्छुक्कं	मनु ५.६३	निर्गुणं तु पदे तस्मान्	नारद १८.७७
निरस्य नैर्ऋतान्दर्भान्	आस्व २.३०	निर्गुणं निरहंकारं	आस्व १.८
निरस्य शुक्रवाक्यानि	प्रजा १५	निर्गुणोऽपि यथा स्त्रीणां	वृ परा १२.७
निराचारश्च ये विप्राः	वृ परा ७.१४	निर्घाते भूमिचलने	मनु ४.१०५
निरादिष्ट धनश्चेतु	मनु ८.१६२	निर्घाते वाऽथ चलने	औ ३.६२

नैपालकं बलेनादि गव्य	कपिल २१३	नो चेदति प्रणीते	आश्व २३.८४
नैमित्तिकब्रह्मकूर्चे	कण्व ३१६	नोच्चरेत तदान्यानि	कण्व ६१३
नैमित्तिकं च काम्यं च	विश्व ६.३	नोच्चैर्वदेन परुषं	व्यास २.३३
नैमित्तिकं तु कर्तव्यं	औ ३.११४	नोच्छिन्नादात्मनो मूलं	मनु ७.१३९
नैमित्तिकाश्च ये चान्ये	वृ परा ७.१०५	नोच्छिष्टं कुर्वते मुख्या	मनु ५.१४१
नैयायिकार्थमालोक्य	बृह १२.१८	नोत्यापदयेत्स्वयं कार्यं	मनु ८.४३
नैरात्मवादकुह	बृह १२.१०	नोत्पादयेद्दत्तकाष्ठं	ल व्यास १.२०
नैर्ऋतः-पशुपुरोडाशश्च	बौधा २.१३७	नोत्संगेऽन्नं भक्षयेत	बौधा २.३.३१
नैर्ऋत्यां निषुनिक्षेपे	कण्व १२२	नोत्संगे भक्षयेन्न	व १.१२.३३
नैवकश्चित्तरामत्र	कण्व ५९७	नोदकं धारयेद् भैक्षं	औ १.२४
नैव कुर्यात् तथा श्राद्ध	कपिल २८१	नोदकान्ते न गोवासे	शाण्डि २.११
नैव गच्छति कर्तारं	आंउ ६.१०	नोदके नैव चाज्येन	व्या २२७
नैव गच्छति कर्तारं	पराशर ८.१८	नोदकेषु च पात्रेषु	दा १८
नैव गच्छेद विनाभार्या	आश्व १.६९	नोदक्यां न दिवागच्छेत	वृ परा ६.६८
नैवनिर्माल्यतां यान्ति	ब्र.या. २.४१	नोऽदत्त्वान् तदश्नीयाद्	वृ परा ५.१८४
नैव भागं वनस्थानां	वृ हा ४.२५०	नोदन्वोतोऽम्भसि स्नानं	अत्रिस ५.३९
नैव स्नानं प्रकुर्वीत	कण्व ५५७	नोदाहरेदस्य नाम	मनु २.१९९
नैवेद्यं च ततो दद्यात्प्रातः	व २.६.११९	नोद्यन्तमादित्यं	व २.१२.६
नैवेद्यं भोजनं विष्णो	वृ हा ८.२७७	नोद्यानोपसीपे वा	औ २.३९
नैवेद्य शेषविप्रेभ्यो	व २.६.१२२	नोदध्वं मन्त्रप्रयोगः	कात्या २८.१४
नैवेद्य शुभ हृद्यान्	वृ हा ४.१०४	नोद्वहेत् कपिलां कन्यां	मनु ३.८
नैवेद्यैर्विविधैर्भक्ष्यैः	व २.४.७८	नोद्वाहिकेषु मंत्रेषु	मनु ९.६५
नैवेद्यैर्विविधैः श्लक्ष्णैः	व २.६.२५२	नोद्वीक्षेत तदुच्छिष्टं	औ ५.७७
नैः श्रेयसमिदं कर्म	मनु १२.१०७	नोन्मत्ताया न कुष्ठिन्या	मनु ८.२०५
नैष चारणदारेषु	मनु ८.३६२	नोपगंगं सुरार्चादि	वृ परा ६.२७२
नैषामङ्गाङ्गिगभावोऽस्ति	कण्व ३८०	नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि	मनु ४.४०
नैषु विद्युत्यर्जुनस्य	कण्व ६१०	नोपतिष्ठति यः पूर्वा	ब्र.या. ६.३
नैष्ठिकानां वनस्थानां	औ ६.६१	नोपरे न च सस्येषु न	शाण्डि २.१०
नैष्ठिकेन व्रतेनापि	व २.४.२	नोपशाम्योपशाम्याग्निं	शाण्डि ३.१०४
नैष्ठिकेषु च मासेषु	वृ गौ. ७.७०	नोपेयात्तत्प्रविष्टः सन्नो	आंपू ७०
नैष्ठिको ब्रह्मचारी तु	या १.४९	नोषरां वाहयेद्भूर्मी	वृ परा ५.१२४
नैसर्गिकं तथा कुर्यात्	वृ हा ७.२३	नौयात्राद्यत्वष्टकर्महनु	नारा ७.२६
नोङ्कुर्याद्धोम मंत्राणा	कात्या १७.१६	नौशिलाफलककुञ्जर	बौधा १२.३३
नोचिष्टं कस्यचिद्वयान्	मनु २.५.६	न्यग्जानु दक्षिणं कृत्वा	आश्व १.९२
नो चेत्पष्ठेऽष्टमे वाऽपि	आश्व ४.२	न्यङ्गता नैच्यतातीव	कपिल ४२४

न्यसेद् द्वितीयं हृदये	विश्वा २.३७	पक्वान्नाद्यं यथा पक्वं	वृ हा ८.१३५
न्यस्तपूर्वन्तु यत्पात्र	ब्र.या. ४.१३४	पक्वेन् जलतैलाभ्यां	आंपू ५३०
न्यस्त्वा तु व्याहृतीः	वृ परा ४.११५	पक्वेष्टकचित्तं कृत्वा	वृ परा १०.२५
न्यस्याक्षराणां फल	भार ६.८१	पक्वेष्टकफलं पञ्च	ब्र.या. ११.५६
न्यायागतेन द्रव्येण	दक्ष ३.२४	पक्षः उपवासिनो यान्ति	वृ.गौ. ५.१०९
न्यायः प्रकथितस्सद्भि	लोहि ५७	पक्षद्वयाभि सम्बन्धाद्	नारद १.२३
न्यायागतधनः तत्त्वज्ञान	या ३.२०५	पक्षद्वयावसाने तु राजा	नारद १.४.२९
न्यायागताये मणयः	भार ७.२१	पक्षमात्रे तदर्थन्तु	व २.६.५२७
न्यायापेतं यदन्येन	नारद १८.९	पक्षमासर्तुभेदः स्यात्त	कण्व ३६
न्यायेन पालयेद् राजा	वृ हा ४.२०४	पक्षयोरुभयोर्वापि सप्त	व्या १७
न्यायेन पृच्छते सर्वं	शाण्डि ४.२४०	पक्षश्राद्धं तु निवृत्य	व्या ६४
न्यायेन शक्यते कर्तुं कथं	कपिल २९४	पक्षश्राद्धं वा पंचमी प्रभृति	प्रजा १६८
न्यायोपार्जितवित्तेन	पराशर १२.४०	पक्षादावेव कुर्वीत	कात्या १६.११
न्यासमंत्रैश्च सोंकारैः	वृ परा ११.१४५	पक्षादूर्ध्वं न कर्तव्या	शाण्डि ३.१०१
न्यास मुद्रादिपूर्वेण	वृ हा ४.१३१	पक्षान्तं जुहुयादिष्टं	व २.४.१०५
न्यासं च विष्णुगायत्री	व २.३.६८	पक्षिजग्धं गवा घ्रातं	मनु ५.१.२५
न्यासं तनुत्र न बवन्ध	वृ परा ४.१०९	पक्षिणस्तिस्तिरिक्	बौधा ५.१.५४
न्यासं तु संप्रवक्ष्यामि	वृ.या. ५.१	पक्षिणाधिष्ठितं यच्च	आप ५.१.२
न्यासे वाप्यर्चने वापि	वृ हा २.१३०	पक्षिणां बलमाकाशं	शंखलि २८
न्युप्य पिंडांस्ततस्तांस्तु	मनु ३.२१६	पक्षेण केनचित्कुर्यात्	आंपू ७०५
न्युब्जपिंडार्घ्यपात्राणि	वृ परा ७.२७९	पक्षे पक्षे पौर्णमास्यां	वृ हा ५.३६५
न्यूनकादशवर्षस्य	आप ३.७	पक्षेऽपरे च भरणी महती	प्रजा १६४
न्यूनं चैवातिरिक्तं	आश्व २३.६१	पक्षे वा यदि वा मासे यस्य अत्रिस ३०९	व्यास ४.७१
न्यूनातिरिक्तमात्रेण तज्जलं	विश्वा २.९	पंक्तिभेदी वृथापाकी	आश्व १.१.५९
न्यूनाधिकं न कर्तव्यं	दक्ष ५.१३	पंक्तिभेदेन यो भुंक्ते	वृ परा ७.२०६
न्यूनाधिकाभ्यां तच्चेत्तु	कण्व ११८	पंक्तिमूर्धन्यमेवात्र	वृ परा ११.१८६
न्यूनोऽपि तादृशो दत्त	लोहि ६७	पंक्तिस्तिस्तिष्ठु विज्ञेया	वृ परा ६.३१६
न्येष्टयावत्स्थलं तावद्	भार १५.१४	पंक्त्युच्छिष्टं गवाघ्रातं	कपिल ३१८
प			
पकाराद्यष्टभिर्वर्णैः जानुपादे	विश्वा १.७५	पचनं कुरुते मोहत्तद्वाष्ट्रं	लोहि ४१३
पक्वमन्नं समानीय	ब्र.या. २.१५३	पच्युर्वाऽपितानन्नं	शाण्डि ३.९३
पक्वंसफेनकलुषं	भार ४.२३	पच्छन्नानि च दानानि	वृ परा ४.६७
पक्वान्नं च निषिद्धं	पराशर ६.६५	पच्छः पादशिरोहस्तु	आश्व १.२४
पक्वान्नवर्जं विप्रेभ्यो	आंउ ८.१०	पंच कन्यानृते हंति	व १.१६.२९
पक्वान्नहरणाच्चैव	शाता ४.१५	पञ्चकालक्रमपरा गान्	शाण्डि ४.१६८

श्लोकानुक्रमणी

निष्प्रयोजनदेहानां तेषां	शाण्डि ५.३४	नीला धरंयौ सपूज्य	व २.६.११२
निष्फला तस्य सातस्मात्	भार १६.४८	नीलिका च सितच्छत्रा	वृ परा ७.२२५
निष्फलायाश्च गुर्विण्या	विश्वा ८.५७	नीलिकायास्तु गोमूत्र	वृ परा ९.२४
निष्पन्दं सर्वशास्त्राणां	शंखलि १३	नीलीमध्ये यदा गच्छेत्	आप ६.७
नि सरन्ति यथा लोहं पिंड	या ३.६७	नीलीदारु यदा भिनद्याद्	आप ६.६
निसर्गपण्डो वधश्च	नारद १३.१२	नीलीदारु यदा भिन्द्याद्	आंगिरस १६
निह्वे भावितो दद्याद्धनं	या २.२१	नीलीरक्तं यदा वस्त्र	आंगिरस १५
निह्वते लिखितं नैकं	या २.२०	नीलीरक्तं यदा वस्त्र	आप ६.४
नीचं शय्यासनं चास्य	मनु २.१९८	नीलीरक्तेन वस्त्रेण	आप ६.८
नीचं संभाषणं याज्यं	प्रजा ९४	नीलीरक्तेन वस्त्रेण	आंगिरस २०
नीचाभिगमनं गर्भपातनं	या ३.२९७	नीलीवृक्षेण पक्वन्तु	आंगिरस १७
नीडमध्यगतं सूर्यं न	बृह ९.१६५	नीलोत्पलदलश्यामं	ब्र.या. २.६०
नीतिशास्त्रार्थं कुशलः	ल हा २.४	नीलोत्पलदलश्यामं	बृ.या. ८.२३
नातोपवीतहृदयः सपवित्रे	भार १९.१५	नीलोत्पलदलश्यामं	व २.३.१३३
नीत्याऽन्यस्य गृहं	आश्व ७.३	नीलोत्पलं तूत्पलञ्च	वृ हा ४.५७
नीत्वा रात्रिं नर्तनाद्यैः	वृ हा ५.३२३	नीलौरक्तेन वस्त्रेण	आंगिरस १९
नीपार्जुने शिशपंच	वृ हा ४.५५	नील्या चोपहते क्षेत्रे	आंगिरस २२
नीयते तु सपिण्डत्वं	शंख ४.११	नीवीमध्येषु येदर्भा	लिखित ४५
नीयन्ते नरकेष्वेव ते	कपिल ७७५	नीवारा माषमुद्गश्च	प्रजा ११९
नीयमानं शवं दृष्ट्वा	ल हा ४.७३	नीवीं विस्रस्य परिधायप	बौधा १.५.८५
नीरजस्कामनिच्छन्तीं	नारद १३.८३	नीवीस्तनप्रावरण	या २.२.८७
नीरजस्तमता सत्त्व	या ३.१५९	नीहारे वाणशब्दे	मनु ४.११३
नीराजनं ततो दत्त्वा	वृ हा ४.१२७	नीहारैः बाणशब्दै	औ ३.७०
नीराजनं ततो तद्यादयं	वृ हा ५. ५२४	नियोज्यास्ते अग्निकार्यादौ	वृ परा ११.७४
नीराजनं प्रकुर्वन्ति ये वा	कपिल ६२५	नाभ्यां विद्वान् न्यसेन्	वृ परा ११.११६
नीरुजः क्षीणकोशः	व १.२९.७	निधायतेषु दर्भेषु	वृ परा ११.२४
नीरुजश्च युवा चैव	दक्ष ७.४१	नुतान्यस्यानिलब्धानि	भार १४.६४
नीरुजश्च युवा चैव	द७ ७.४२	नृणामथाश्मनः स्पर्शे	औ २.७
नीलकाषायवसनं	औ ५.३४	नृणामाचरतो धर्मः	वृ परा ६.२०७
नीलकौशेयचर्मस्थि	नारद २.५९	नृणां पापकृतां तीर्थे	शंख ८.१६
नीलजीमूतसंकाशं	वृ हा ३.१८९	नृणां भवति दत्तायां	वृ परा १०.१००
नीलजीमूतसंकाशं	वृ हा ५.३१०	नृणा विप्रतिपत्तौ च	संवर्त १७१
नीलं नलञ्चांगदञ्च	वृ हा ३.२६५	नृत्तगीतवादित्रगंध	बौधा १.२.२३
नीलं रक्तं वसित्वा	औ ९.७२	नृत्यं गीतं तथा वाद्य	वृ हा ५.३६०
नीलया च धरण्या	व २.६.४१	नृपतिर्धार्मिकः सद्यः पणा	कपिल ८२५

नृपते प्रथमं तस्मात्	वृ परा १२.११४	नैकजनन्योः पुंसो रेक	व्या ३७८
नृपवैश्यश्राद्धभिरसा	आंपू ७६३	नैकत्वं तु तयोरस्माद्	वृ परा ७.३९१
नृपस्य कोशवृद्ध्यर्थ	वृ परा ५.१५८	नैकयापि विना कार्यमाधानं	कात्या ८.५
नृपस्य स्वस्य वैश्य	भार १५.१२५	नैकवस्त्रो न न खिन्नश्च	शाण्डि २.६७
नृपस्यापदि जातायां	वृ परा १२.६१	नैकवस्त्रो नाऽऽर्द्धवासा	बौधा २.५.२११
नृपायामेव तस्यैव	औसं २२	नैकवासास्तु भुञ्जीयान्	वृ.गौ. १३.५
नृपायां विधिना विप्राज्जातो	औ सं २८	नैकश्चेत्स्यान् देहे	वृ परा १२.१९३
नृपायां विप्रतश्चौर्यात्	औसं २६	नैक समुन्नेत सीमां	नारद १२.९
नृपायां वैश्यतश्चौर्यात्	औसं १६	नैकस्य तनयास्ते	आंपू ३३६
नृपायां शूद्रतश्चौर्याज्जातो	औसं १९	नैक स्वाप्याच्छून्यगेहे	मनु ४.५७
नृपायां शूद्रसंगज्जात	औसं १७	नैकान्नाशी भवेच्चापि	कण्व ५६३
नृपेणाधिकृताः पूगा	या २.३१	नैकाश्रमे वसन् विप्रो	वृ परा ४.२०५
नृपोऽप्यस्वजनां गत्वा	वृ परा ८.२४३	नैकेन चक्रेन रथ प्रयाति	वृ परा १२.६८
नृपो वेधा नृपः कर्ता	वृ परा १२.४	नैकोऽध्वानं व्रजेत	बौधा २.३.४८
नृयज्ञः कथितः सद्भि	कण्व ३७९	नैतत् पौत्रेण कर्तव्य	कात्या १६.१७
नृशेसराजरजक कृतघ्न	या १.१६४	नैतस्मात्परमं दानं	वृ परा १०.१९०
नृसिंहं भीषणं भद्र	वृ हा ३.३४२	नैतस्तमादधिकं तुल्यं	कपिल ८८३
नृसिंहो मणिवर्णः स्याद्	वृ हा ७.११३	नैतस्मादधिकं दानं	लोहि ६५४
नेक्षेतार्कं न नग्नां स्त्री	या १.१३५	नैतस्मादधिकाः कृच्छ्राः	लोहि ६५५
मेक्षेतोद्यन्तमादित्यं	मनु ४.३७	नैतादृशमितः कर्म परंस्यात्	कपिल ८३०
नेज्यमेवेतिसृभि प्रजा	व २.४.१२८	नैतानि कुर्यादयत्नेन	आंपू १०२८
नेतःपरमहं त्वस्मिचेति	लोहि ५९२	नैतानुपनयेन् अध्यापयेन्	व १.११.५५
नेति गौतमीऽस्त्युग्रो	बौधा २.२.७८	नैता रूपं परीक्षन्ते	मनु ९.१४
नेत्रपातैर्भगवता स्वात्मानं	शाण्डि ४.२६	नैतेन तुल्यन्यत्तु दानं	कपिल ९२२
नेत्रशोभी यथाजाति	भार १६.२७	नैते मन्त्रा याजमाना	आंपू ८१८
नेत्रे प्रक्षाल्य नोचेत्तु	लोहि ६६९	नैतेषां तुल्यमपरं	आंपू ४९१
नेन्द्रधनुरिति परस्मै	बौधा २.३.३८	नैतैरपूतैर्विधिवद्	मनु २.४०
नेन्द्रधनुर्नाम्ना	व १.१२.३०	नैत्यकं तर्पणं कुर्याद्	आश्व १.१०७
नेष्टकाभि फलानि	व १.६.३४	नैत्यकं तर्पणं कुर्याद्	आश्व १.१११
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति	बृह ११.२	नैत्यके नास्त्यनध्याय	औ ३.७६
नेहेतार्थान् प्रसंगेन	मनु ४.१५	नैत्यके नास्त्यनध्यायो	मनु २.१०६
नैवकाले द्वयं स्नानं	व्या २५३	नैत्यं कर्म विधेयं वै	शाण्डि ३.१३४
नैकग्रामीणमतिथि विप्रं	पराशर १.४३	नैत्राम्यां सदृशो मंत्रो	ल व्यास २.४.३
नैकग्रामीणमतिथि विप्रं	मनु ३.१०३	नैनं छन्दांसि वृजिनात्	व १.६५
नैकग्रामीणमतिथि विप्रं	व १.८.८	नैनं तपांसि न ब्रह्म	व १.६.२

पंचैतान् यो महायज्ञान्	मनु ३.७१	पतितञ्च तथाध्वान्	बृ.गौ. १६.२१
पंचैतेऽतिप्रशस्ताःस्युर्न	भार १४.५७	पतितंचैतदनुज्ञाता	व्यास २.२९
पञ्चैते ब्रह्मपुरतो	आंपू ५६९	पतति चाण्डालशव	व १.२३.२९
पंचैवा स्युःद्विजा	आश्व २४.९	पतिततज्जातवर्जम्	बौधा २.२.४६
पटे वा ताम्रपट्टे वा	या १.३१९	पतितः पिता परित्याज्यो	व १.१३.१५
पटे वा मंडले लेख्या	वृ परा ११.५५	पतितं पतितेत्युक्त्वा	नारद १६.२०
पट्टनेत्रादिकक्षौ तौ	वृ परा १०.१६१	पतितं पतितेत्युक्त्वा	व १.२०.४०
पट्टवस्त्रेण संवेष्ट्य	शाता २.२३	पतित संप्रयोगं	व १.२०.५०
पट्टसूत्रस्य हरणान्निर्लोमा	शाता ४.२५	पतितसावित्रीक	व १.११.५६
पठनादप्यपत्नीकः	कण्व ३८८	पतितस्य च विप्रस्य	बृ.य. ४.४०
पठन्वैशाकुनान् मंत्रान्	वृ हा ७.२४३	पतितस्योदकं कार्यं	मनु ११.१८३
पठेद्वाऽप्यर्चयेद् विष्णुं	वृ हा ५.१८५	पतिताच्चान्मादाय भुक्त्वा	अत्रिस २६४
पडब्दं षड्गुणत्वेन	आंपू १०६५	पतितात्यय पाषंडं	भार ५.१६
पणं यानं तरे दाप्यं	मनु ८.४०४	पतितानां च विप्राणां	बृ.य. ४.३५
पणानां द्वे शते सार्धे	मनु ८.१३८	पतितानाञ्च सम्भाषे	पराशर ७.३८
पणानेकशफे दद्याच्चतुरः	या २.१७७	पतितानां तु चरित	व १.१५.१२
पणान् दण्डं गृहीत्वा	कपिल ८५६	पतितानां न दाहः	औ ७.१
पणित्वा धनक्रीतां	व १.१.३५	पतितानामेव एव विधिः	या ३.२९६
पंडितोज्ञानिनो वापि	व्या २४६	पतितानं यदा भुक्तं	अत्रिस २६१
पणिवंस्य ऋषिर्ब्रह्म	भार ६.२६	पतितानं यदा भुक्ते	लिखित ७३
पणे तु पर्वत्कल्पस्य	आंड ६.१	पतिताप्तार्थसम्बन्धि	या २.७३
पणो देयोऽवकृष्टस्य	मनु ७.१२६	पतितां च द्विजाग्र्यस्त्री	वृ परा ८.२४७
पण्डितत्वं शताधिक्यं	लोहि ५७२	पतितां पंकलग्नां वा	वृ परा ८.१४२
पण्यमूलं भूतिस्तुष्ट्य	नारद ५.७	पतितामपि तु मातरं	बौधा २.२.४८
पण्योस्योपरि संस्थाप्य	या २.२५६	पतितेन सुसम्पर्कं	संवर्त १९७
पतत्यर्द्धशरीरस्य यस्य	पराशर १०.२७	पतितैः सह संसर्गं	अत्रिस २५९
पतत्यर्धं शरीरस्य	व १.२१.१६	पतितोत्पन्नः पतितो	व १.१३.२०
पतनीयानां तृतीयोऽंशः	बौधा २.१.७४	पतितो नात्र सन्देह	कण्व १३६
पतनीये कृते क्षेपे	या २.२१३	पतित्वा निरये घोरे दुःख	नारा ७.३१
पतनीयेषु नारीणां	वृ हा ६.३१६	पतिपुत्र पुनः स्त्रीभिस्त	व २.४.२१
पतन्ति नरके घोरे	बौधा १.११.२२	पतिपुत्रवती नारी	आश्व ४.१४
पतन्ति पितरस्तस्य	दा ५७	पतिप्रियहिते युक्ता	या १.८७
पतन्ति पितरस्तस्य	अत्रिस ३०७	पतिभिर्नष्टपत्नीकैः विधवा	कपिल ६००
पताका विवधाः कार्या	वृ परा ११.२१४	पतिं या नातिचरति	वृ हा ८.१९७
पतिघ्नी च विशेषेण	व १.२१.१२	पतिं या नाभिचरति	मनु ५.१६५

पतिं या नाभिचरति	मनु ९.२९	पत्युः पूर्वं समुत्थाय	व्यास २.२०
पतिं विहाय या नारी	वृ परा ७.३६९	पत्यौः जीवति यः स्त्रिभिः	मनु ९.२००
पतिं हित्वा तु या नारी	वृ परा ७.३६७	पत्यौ प्रव्रजिते नष्टे	नारद १३.९९
पतिं हित्वापकृष्टं	मनु ५.१६३	पत्रकं चन्दनंकुष्ठं	व २.६.९४
पतिमुल्लङ्घ्य मोहात्	कात्या १९.११	पत्रचूर्णेषु यत्तोयं	दा १६२
पतिमृत्युः स्त्रियो	वृ परा ७.३८८	पत्र वाप्यथवा पुष्पं फलं	वृ.गौ. २१.२५
पतिरेव गुरुः स्त्रीणां	वृ.गौ. १२.७	पत्रं सर्वं कुशहस्तं च	व २.३.७८
पतिर्भार्या संप्रविश्य	मनु ९.८	पत्रमोह सन्नीनि	व २.४.५०
पतिर्विशति यज्जायां	वृ परा ६.१८०	पत्रशाकतुणानां च	मनु ७.१३२
पतिलोकं न सा याति	या ३.२५५	पत्रसाकादिदानेन	आश्व २३.१०६
पतिवत्याश्च दुर्भेद्य	आश्व ३.१४	पत्राणि नागवत्याश्च	भार १४.५८
पतिव्रता तु साध्वी	वृ परा ६.४९	पत्रालाभे तु शाखाभिः	वृ.गौ. ८.७९
पतिव्रतानां गृहमेधिनीनां	व १.३१.१५	पत्रैः पुष्पैः फलैरर्चा	कण्व ४४८
पतिव्रता त्वन्यदिने	आंपू ९८८	पत्रैः पुष्पैश्च तत्	आंपू ५४७
पतिव्रता धर्मपत्नी	मनु ३.२६२	पथि क्षेत्रे परिवृते	मनु ८.२४०
पतिव्रतानां धर्मोऽयं तत्	लोहि ६६४	पथिक्षेत्रे वृतिः कार्या	नारद १२.३६
पतिव्रताः पार्वतीम्बा	कण्व ७६	पथि ग्रामविवीतान्ते	या २.१६५
पतिशुश्रूषणे तासां	व २.५.४	पथि दर्भाश्रिता दर्भा	वृ हा ४.४०
पतिशुश्रूषयैव स्त्री	कात्या १९.१२	पथ्यं मितं च शुद्धं	शाण्डि ४.१४३
पतेः सूनोर्विनाशोऽपि या नारी कपिल	५९४	पदत्रयात्मकं मंत्र	वृ हा ३.५४
पत्तो ह्यसृज्यन्तेति	बौधा १.१०.६	पदं पदं महेशस्य	भार ६.७९
पत्नी दुहितरश्चैव	या २.१३८	पदं प्राप्य निवर्तन्ते	वृ परा १२.२६९
पत्नी पाकं यदा कुर्यात्	प्रजा ५६	पदादित्यगतं तेजो	बृह ९.१८
पत्नी पुत्रोऽथवा मौर्ख्या	आंपू ३७४	पदानजनमंत्रस्य	भार १०.४
पत्नीं विना न तत्कुर्यात्	आश्व १६.६	पदानि क्रतुतुल्यानि	या १.३२५
पत्नीमन्त्रैकसंलब्ध	कण्व ३९२	पदे पदे तु यज्ञस्य	वृ परा १०.४०
पत्नीमात्रस्य सामान्या	लोहि ११०	पदे पदे समग्रस्य	वृ हा ४.२१९
पत्नीमूलंगृहं पुंसां	दक्ष ४.१	पदे प्रमूढे भग्ने वा	नारद १५.२३
पत्नीयजमाना वृत्तिरभ्यो	बौधा १.७.९	पदैस्त्रिभिर्यदा त्या	बृ.या. ४.३४
पत्नीसहोदराश्चश्रूस्वसृ	कपिल ६०८	पदोमहतं पक्षालयेत्	बौधा १७.४
पत्नी स्नुषा स्वयं	आश्व १.१७६	पदौ यथाक्रमं लिपेत	शाण्डि २.३५
पत्या चाप्यवियोगिन्या	कात्या १९.३	पदमपि न गच्छेत	बौधा १.४.२६
पत्या न नर्दत्तवस्तु	वृ हा ५.२५१	पद्भ्यां स कुरुते	बौधा १.१.३४
पत्यादीनामालंकारः	आंपू १०९४	पद्भ्यां नाभ्यां ललाटे	बृ.या. ५.१२
पत्या सह परासुत्वात्	वृ परा ७.३८४	पद्भ्यां स्पृश्यं गवाद्यं	वृ परा ६.२६७

पञ्चकालपरा यत्र यत्र	शाण्डि ३.११	पञ्चपूजानुसारेण प्राणा	विश्वा ३.३६
पञ्चगव्यप्राशनं च सर्वं	नारा ५.२९	पञ्चपूजां प्रकुर्वीत	विश्वा ६.२२
पञ्चगव्यं च गोक्षीरं	देवल ८१	पञ्चपूजां विना यस्तु	विश्वा ३.२६
पञ्चगव्यं न दातव्यं	आप ५.४	पञ्चपूर्वं मया प्रोक्तः	पराशर ८.२१
पञ्चगव्यं पिवन गोध्नो	वृ हा ६.३२५	पञ्चपश्वनृते हन्ति दश	नारद २.१८६
पञ्चगव्यं पिवेच्छूद्रो	पराशर ११.३	पञ्च पश्वनृते हन्ति	मनु ८.९८
पञ्चगव्यं पिवेच्छूद्रो	अत्रिस २९७	पञ्चपिंडाननुद्धृत्य न	या १.१५९
पञ्चगव्यं पिवेद गोध्नो	या ३.२६३	पञ्चपिंडान् प्रदद्याद्वा	वृ परा ७.३१४
पञ्चगव्यसतिलैः श्वेतैः	आंपू ८८	पञ्चप्राणाहुतिं कुर्यात्	बृ.गौ. १३.९
पञ्चगव्यानिमुनयः	भार ७.६१	पञ्चभागश्च षड्नातः	वृ परा ११.२०२
पञ्चगव्येन शुद्धि	व्या ३३२	पञ्चभिः पुरुषैर्युक्ता	पराशर ३.११
पञ्चगव्यैः स्नापयित्वा	व २.७.४७	पञ्चभिस्तैर्युग्मं प्रोक्तं	वृ परा १२.३६१
पञ्चगुंजो भवेन्माष	वृ परा १०.३०७	पञ्चभूत ! नमस्तेऽस्तु	बृ.गौ. १८.४१
पञ्चचक्राकृतिरियं	नारा ५.४९	पञ्चभूतामत्मिकां चैव	विश्वा ३.२५
पञ्चतालं विशच्छत्रं	भार १५.१३४	पञ्चभूतात्मिकामेतां पूजां	विश्वा ३.१९
पञ्च तीर्थानि विप्रस्य	बृ.या. ७.७५	पञ्चभ्य एवं भूतेभ्य	मनु १२.१६
पञ्च तीर्थानि विप्रस्य	वृ परा २.२२१	पञ्चमण्डलमध्यस्थो	बृह ९.१२८
पञ्चत्वक पल्लवयुक्तं	वृ हा २.१०९	पञ्चमध्यगतः षष्ठो	बृह ९.१३३
पञ्चत्वक पल्लवान्	वृ हा ७.३०७	पञ्चमं ज्योतिषं शीर्षं	भार १३.१९
पञ्चत्वकं पञ्चरात्रं	व २.६.५३३	पञ्चमं तु पदं विदवान्	वृ परा १२.२६८
पञ्चत्वं पञ्चभिर्भूतै	वृ.गौ. ८.४	पञ्चमं वाम जानौ	ब्र.या. २.११८
पञ्चत्वं पाण्डवश्रेष्ठ	वृ.गौ. ८.३	पञ्चमश्च तथा षष्ठः	वृ परा ६.१३
पञ्चदशमुहूर्ताहस्तत्	वृ परा ७.९१	पञ्चमस्तिलशैलस्तु	अ ८५
पञ्चदश्यां चतुर्दश्या	व २.३.१५४	पञ्चमस्य च दोषः	वृ हा ६.३१५
पञ्चदश्यां चतुर्दश्यां	या १४६	पञ्च महापातकान्य	व १.१.१८
पञ्चधालिङ्गशौचं स्याद्	वाधू १४	पञ्चमाच्चोपलेपनात्	बौधा १.६.२१
पञ्चधा विप्रतिपत्तिः	बौधा १.१.१८	पञ्चमाष्टमौ वैश्य	बौधा १.११.१४
पञ्चधा विप्रतिपत्तिः	बौधा १.१.१९	पञ्चमी च तथा षष्ठी	ब्र.या. ८.१०४
पञ्चधा विप्रतिपत्ति	बौधा १.१२.२०	पञ्चमी वामजानौ तु	वृ हा ५.१९७
पञ्चधा सम्भृतः कायो	कात्गा २२.७	पञ्चमी वामजानौ तु	वृ परा ४.१२६
पञ्चधा सम्भृतः कायो	या ३.९	पञ्चमे घृतसंपूर्णं	देवल ७७
पञ्चनद्या प्रदेशे तु या	नारद १८.११७	पञ्चमेन अपि मेधेन	वृ.गौ. १.२
पञ्चनार्गिं न गृहीयात्पर	वृ.गौ. १२.१७	पञ्चमे नवमे चैव	औ ७.१२
पञ्चपक्वान्त्यजेद्विप्रः	विश्वा ८.६३	पञ्चमे मङ्गलाख्यश्च	कण्व ६९४
पञ्चपाकास्तापनीया	कण्व ३६१	पञ्चमेऽहानि विज्ञेयं संस्पर्शं	अत्रिस १००

पञ्चम्यगणैरलंकृत्य	नारा ५.३७	पञ्चसप्ताषिकं वैत	आंपू ३४७
पञ्चयक्षरताः च एव	वृ.गौ. २.१९	पञ्च सान्तपने गावः	पराशर ९.२५
पञ्चयज्ञकृतो नित्यं	वृ परा १२.२०५	पञ्चसूना गृहस्थस्य	शंख ५.१
पञ्चमज्ञरता नित्यं	वृ.गौ. ६.१७८	पञ्च सूना गृहस्थस्य	मनु ३.६८
पञ्चयज्ञ विधानं च	संवर्त ३६	पञ्चसूनापनुत्यर्थ	विश्वा ८.२४
पञ्चयज्ञं स्वयं कृत्वा	पराशर ११.४६	पञ्चसूनापनुत्यर्थ वैश्वदेवं	विश्वा ८.५४
पञ्चयज्ञविधानञ्च गृही	शंख ५.२	पञ्चहस्तकदण्डानां	वृ परा १०.१७७
पञ्चयज्ञविधानेन	वृ परा ६.७३	पञ्चांगुलीभिर्नासां च	विश्वा ३.२३
पञ्चयज्ञांच कुर्वीत	वृ हा ८.३१५	पञ्चाग्निरप्यधीयानो	औ ४.४
पञ्चयज्ञाः कथं देव	वृ.गौ. ८.७	पञ्चाग्नि स्मरेदष्टप्रणवं	वृ परा ११.१४९
पञ्चयज्ञानकृत्वा तु	औ ९.८४	पञ्चाचमनं चैतानि प्रोक्तं	विश्वा २.४५
पञ्चयोजनपर्यन्तप्रवह	आंपू ९४१	पञ्चादशाक्षरविनिर्मित	विश्वा ६.४०
पञ्चरात्रस्य सर्वस्य	बृह १२.६	पञ्चानांतु त्रयोधर्म्या	मनु ३.२५
पञ्चरात्रन्तु द्रव्येषु	व २.६.५०८	पञ्चानां त्रिषु वर्णेषु	मनु २.१३७
पञ्चरात्रविधानेन	वृ परा ४.१४३	पञ्चानां त्रिषु वर्णेषु	औ १.५०
पञ्चरात्रे पञ्चरात्रे	मनु ८.४०२	पञ्चानामथ सत्राणां	कात्या १३.१
पञ्चरूपाणि राजानो	नारद १८.२४	पञ्चापि जप्त्वा विधिना	लोहि ३७६
पञ्चवक्त्रां दशभुजां	भार १३.११	पञ्चाब्दात्प्रागगोर्द्ध	व्या ३८२
पञ्च वा सप्त वा पिंडान्	वृ परा १०७	पञ्चामृतैः पञ्चगव्यैः	व २.७.२८
पञ्च वा स्युस्त्रयो	बौधा १.१.१०	पञ्चमृतैः पञ्चागव्यैः	वृ हा ६.३९६
पञ्चविंशति कर्माणि	भार १.१९	पञ्चारलिमिता तिर्यक्	व्या ३२०
पञ्चविंशतिस्त्वेव पञ्चमाषमी	बौधा १.५.११	पञ्चार्दकमिति प्रोक्तं	विश्वा १.७९
पञ्चविंशाक्षरो मंत्रः पदे	वृ हा ३.८	पञ्चाद्रोभोजनं कुर्यात्	ल व्यास २.६९
पञ्चविंशाक्षरोमंत्रः	व २.६.६७	पञ्चालाङ्गलदानस्य ग्रहणे	नारा १.३२
पञ्चविंशात्मके देहे	व २.६.७१	पञ्चाशच्छतसंख्याकै	भार ७.१५
पञ्चविंशोऽयंपुरुषः	वृ हा ३.६०	पञ्चाशतस्त्वभ्यधिके	मनु ८.३२२
पञ्चवैतेषु विप्राणां मुख्य	विश्वा ८.११	पञ्चाशद् ब्राह्मणो दंड्य	मनु ८.२६८
पञ्चशाखं शरीराणां	भार १९.६	पञ्चाशद्भाग आदेशो	मनु ७.१३०
पञ्चपेभ्योऽपि मासेभ्यो	कपिल ८०५	पञ्चाशद्द्वार्षिको यस्तु	वृ परा ७.२७०
पञ्चपेवेषु चशौचेषु	वृ.गौ. २१.१०	पञ्चास्यं सौम्यं आत्मानं	वृ परा ११.१३०
पञ्चसंस्कार सम्पन्नाः	वृ हा ३.७	पञ्चास्यवदनं भीमं	वृ हा ३.३५३
पञ्चसंस्कारसम्पन्नो	वृ हा ५.१११	पञ्चास्यानि त्रयः पादाः	भार १२.१८
पञ्चसप्तति वैश्यस्य	ब्र.या. ८.१७	पञ्चाहान् सहवासेन	देवल ७४
पञ्च सप्तत्रयो वाऽपि	वृ हा ५.३१९	पञ्चाहेन नृपः शुद्ध्येत्	वृ परा ८.२६५
पञ्च सप्ताथ वा	वृ.गौ. १६.२४	पञ्चेन्द्रियस्य देहस्य	शाण्डि १.११

परान्विघ्नकरणाद	शाता ३.७	(परिपूताः) ततः सद्य	आंपू २१
परान्विनं पराधीनं	आंपू ७५५	परिपूतेषु धान्येषु	मनु ८.३३१
परान्वेन तु भुक्तेन	शंखलि १५	परिपूर्णं यथा चन्द्रं	मनु ९.३०९
परान्वेन मुखं दग्धं हस्तौ	कपिल १७	परिभुक्तं तु यद् वासः	नारद १०.७
परापवादं पारुष्यं विवाद	शाण्डि १.१९	परिमार्जनदव्याणि	बौधा १.६.३८
परापुत्रत्वदुःखज्ञो भूत्वा	लोहि ५९	परिवित्तस्य यच्चान्नं	वृ.गौ. ११.१९
परामप्यापदं प्राप्तो	मनु ९.३१३	परिवित्तिः कृच्छ्रं	व १.२०.८
परमात्य प्रधानाना	वृ परा १२.३३	परिवित्तितानुजेऽमूढे	मनु ११.६१
परार्थे तिलहोतारं परार्थे	वाधू १६९	परिवित्तिः परिवेत्ता	दा १५८
परावमानिनं सर्वश्रेष्ठं	शाण्डि १.११७	परिवित्तः परिवेत्ता	बौधा २.१.४८
पराशर व्यास शंख	या १.५	परिवित्तः परिवेत्ता	बौधा २.१.४९
पराशरोदितं शास्त्रं	वृ परा १२.३७३	परिवित्तः परिवेत्ता	शंख १७.४५
पराशरो व्यास वचो	वृ परा १.६३	परिवित्तः परिवेत्ता	मनु ३.१७२
पराशौचे नरो भुक्त्वा	शंख १५.२४	परिवित्तः परिवेत्ता	पराशर ४.१९
परिगृह्यविधानेन होमपूर्वा	कपिल ६७३	परिवित्तिपरिवेत्तारा	कात्या ६.३
परिग्रहं संप्रदानमन्यथा	कपिल ३८६	परिविष्टेषु चान्नेषु	आश्व २३.५८
परिग्रहे प्रकथितं तत्	कण्व ७३५	परिवृत्तितो तामेके विज्ञेयां	आंपू ४५६
परिक्षीणे प्रतिकूले	नारद १४.२८	परिवेषयेत् समं सर्वं	वृ परा ७.२५१
परिचारके तु यद्वत्तं	वृ परा १०.३२१	परिवेषे च पर्यन्तं	आश्व २३.६०
परिज्ञानाद्भवेन्मुक्ति	बृह ९.३४	परिवेष्टितशिरा भूमिं	व १.१२.१०
परिणामश्च योगेन	वृ परा १२.१४२	परिवेष्य हविः सर्वं	वृ परा ७.२१७
परितः परिकल्प्याथ	नारा ५.४६	परिव्राजकः सर्वभूता	व १.१०.१
परितः पूजनीयाश्च मूर्तयः	व २.६.११३	परिशुष्य त्सखलद्	या २.१४
परितः पूजयेद्वानृषींश्च	व २.३.१४३	परिशोध्यं च गंधाद्यैः	व २.६.२७१
परित व्यपरिस्तीर्य	व २.६.१८५	परिषत्कल्पतो कार्या	आंउ ६.३
परित्यजदर्शकामौ यौ	मनु ४.१७६	परिषद्ब्राह्मणानां च	आंउ ५.७
परित्यागो भवेत्तत्र	व २.६.५३५	परिषिच्यानलं चैव	आश्व १.१२४
परित्यज्येतरं धर्मं	वृ हा ३.२१५	परिषिच्यत्वेनैव	वर.३.१२३
परित्रस्तं च नष्टं च दूरतः	शाण्डि २.२७	परिषेचनमंत्रेण	औ ३.१०१
परित्राणाय भक्तानां	बृ.गौ. २१.२८	परिस्तरणदर्शीश्च	आश्व २.७३
परित्वागिर्वणोगिर इमा	विश्वा २.२०	परिस्तरणमुद्दिष्टं पात्रं	व्या २९१
परिधाने सितंशस्तं	आश्व १.२८	परिस्तरणप्रयुक्षं सर्वं	व २.६.३३२
परिधाप्याऽहते वस्त्रे	वृ परा १०.१३४	परिस्तीर्यं कुशैः पात्रं	व २.६.३०३
परिधायाहतं वासः	कात्या ८.१	परिस्तीर्याथतन्मध्ये	भार ७.५६
परिधास्यै यशोधास्यै	ब्र.या. २.२६	परिस्त्वैतिमंत्रेणं यश	ब्र.या. ८.११८

परिहाराय यत्नेन	कण्व २१३	पर्युषितं शाकयूषमांसर्पि	बौधा १.५.१६१
परिहासो भवेत्किंवा	नारा ४.५	पर्युषिते त्वहोरात्रं	अत्रिस २०८
परीक्षिताः स्त्रियश्चैनं	मनु ७.२१९	पर्युह्य परिषिच्याथ	आश्व २.७४
परीक्ष्य पुरुषं पुंस्त्वे	नारद १३.८	पर्यूहनं ततः कुर्याज्जलेन	आश्व २.११
परीक्ष्य विविधोपायैः	शाण्डि १.११३	पर्वण्ययतिक्रमे वापि	व २.४.९९
परीवादात् खरो भवति	मनु २.२०१	पर्वद्वयं समुद्दिष्ट सविशेष शाण्डि ३.१३०	
पुरुषं न वदेत्किञ्चित्	व २.५.६२	पर्वद्वये समायोगे	विश्वा ८.८०
परेण तु दशाहस्य न	मनु ८.२२३	पर्वभिश्चैवगानेषु	कात्या २७.२१
परेण निहितं लब्धवा	नारद ८.६	पर्वसु च केशश्मश्रु	बौधा १.३.७
परेणाग्नौ हुते स्वार्थं	कात्या १८.१९	पर्वसु हिरक्षः पिशाचा	बौधा १.११.३९
परेतेनेति मंत्रं वै	आश्व २३.८२	पर्वस्वपि निमित्तेषु	वृ परा ७.८१
परेषां तु सहायेन तद्वाक्य	कपिल ८७०	पर्वणि श्रपयेदन्नं	शाण्डि ३.१२१
परेषां दोषवचनं	वृ हा ६.२०१	पर्वकाले क्रतुर्दक्षोश्चमुः	ब्र.या. ६.१७
परेषां परिवादिषु	आप १.२	पर्वद्दशावरा प्रोक्ता	वृ परा ८.६५
परेऽहनि समुत्थाय	विश्वा ८.२६	पलं सुवर्णाश्चत्वारः	मनु ८.१३५
परेऽहनु पोष्य विधिवत्	वृ हा ५.४८२	पलं सुवर्णाश्चत्वारः	या १.३६४
परैरन्नम्प्रदातव्यं	व २.६.४६२	पलमेकन्तु वै सर्पिस्तप्त	अत्रिस १२४
परैरपि च संत्यागात्	नारा ३.३	पलमेकं घृतं ग्राह्याद्विपलं	ब्र.या. ८.२०३
परोक्षमधिश्रितस्यान्न	बौधा १५.६९	पलमेकं जलं पीत्वा	वृ परा ९.११
परोक्षोपहतानामभ्युक्षणम्	बौधा १.६.२३	पलाण्डुं विड्वराहञ्च	या १.१७६
परोपतापैशुन्यं	औ ३.१८	पलाण्डुं वृक्षनिर्यासं	पराशर ११.११
पर्णपिप्यलबित्वानां	शंख २.१०	पलाण्डुलशुनं जगध्वा	संवर्त १९१
पर्णेदुम्बराजीव	देवल ८३	पलानि पंच मूत्रस्य	वृ परा ९.२६
पर्णेदुम्बर राजीव	या ३.३१६	पलान्येकादश तथा	शाता २.३४
पर्यग्निकरणं त्वेतन्	व १.१२.१४	पलायते य आहूतः प्राप्तश्च	नारद १.५२
पर्यवस्यति यत्रैतद्	वृ परा ३.१७	पलालधान्यशूकादि	बृह ११.२८
पर्युक्ष्याग्निं प्रणीताग्रं	ब्र.या. ८.२५८	पलाशखदिराश्वद्धा	भार १५.७९
पर्यायात् त्रिस्त्रिः पायोः	बौधा १.५.८३	पलाशपत्रं पुष्पञ्च	वृ.गौ. ८.७५
पर्यायेण प्रदातव्यं	विश्वा ८.८२	पलाश-पदम-पत्राणि	वृ परा ७.११९
पर्यायेण समुच्चार्य	विश्वा ५.२८	पलाशपत्रपत्रे तु गृही	वृ हा ५.२४६
पर्यावृत्त्या पुनश्चैवं	वृ हा ३.३७	पलाश पत्रपत्रेषु	व्यास ३.६२
पर्युक्षणञ्च सर्वत्र	कात्या ९.६	पलाश-शिंशिपाकाष्ठ	वृ परा ८.३०९
पर्युक्षणेऽप्युदकसंस्थं	आश्व २.१३	पलाशाश्वत्थखदिर	भार १८.२०
पर्युक्ष्यं च परस्तीर्य	वृ परा १०.१४५	पलाशस्य द्विजश्रेष्ठ	शंख १७.५२
पर्युषितं चिरस्थं च	वृ परा ८.३२६	पलाशविल्व पत्राणि	अत्रिस ६२

पद्यनाभं श्रियायुक्तं	व २.३.१३४	पयस्तु दधि मासेन	आप ८.६
पद्यनाभं हृषीकेशं	विष्णु म २९	पयोदधि च मासेन	आंगिरस ४७
पद्यनाभस्तथा शंखं	वृ हा ९.१२०	पयोदधि तिलानाञ्च	वृ हा ६.१९८
पद्यनाभो धनश्यामो	वृ हा ७.१११	पयो मधुघृतं चान्ते	आंपू ८१४
पद्यपत्र विशालाक्षं	वृ हा ३.१२७	पयोयदाज्यसंयुक्तं	कात्या २६.१२
पद्यं गदां तथा चक्रं	वृ हा ७.११८	परकीयनिपानेषु न	ल व्यास २.११
पद्यं चक्रं गदाशंखं	वृ हा ७.११९	परकीय निपानेषु न	मनु ४.२०१
पद्यष चैव महापद्मशंखं	ब्र.या. १०.१३०	परकीयनिपानेषु न स्नान्	वाधू ६४
पद्यं शंखं गदा चक्रं	वृ हा ७.११५	परकीयनिपानेषु यदि	बृ.या. ७.१०९
पद्यमध्यस्थितं सौम्यं	वृ परा ४.७७	परकीयनिपानेषु यदि	वाधू ६७
पद्यमालयां पद्यहस्तां	वृ हा ७.२२९	परक्षेत्रस्य मध्ये तु	नारद १२.१४
पद्यवीजस्यवदनं	भार ७.४१	परगात्रेष्वभिद्रोहो	नारद १६.४
पद्यहस्तविशालाक्ष्मीं	वृ हा ३.१३१	परचिन्ता न कर्तव्या	ब्र.या. ८.१४१
पद्याक्षी पद्यवदनां	वृ हा ३.२६१	परतन्तोस्तुवयसा कर्मभ्रष्ट	कपिल २८६
पद्यापद्यवती गौरी	ब्र.या. १०.७९	परतो व्यवहारज्ञः	नारद २.३२
पद्याश्मः लोहं फल-	वृ परा ८.३१०	परदारनिवृत्ताश्च ते नराः	वृ.गौ. १०.१०२
पद्याश्मलोहा फल	वृ परा ६.३४६	परदारपरद्रव्यपरिग्रह	नारा ५.२३
पद्यासनं च बध्वा	बृह ९.१८८	परदारपरद्रव्यसव्य	शाण्डि ४.१४०
पद्यासनस्थं देवेसं	व २.३.६	परदारपरं दुष्टं परदारै	आंपू ७४८
पद्यासनेऽथवा सौम्ये	भार १३.२६	परदारप्रयोक्तार	वृ.गौ. १०.८७
पद्योदुम्बरविल्वाश्च	यम ४७	परदारान् परद्रव्यं	व्यास ४.५
पद्यैर्वा पद्यपत्रैर्वा	वृ हा ३.१४३	परदाराभिर्मर्शेषु	मनु ८.३५२
पद्योदुम्बरविल्वानां	बृ.य. ३.६३	परदारेषु जायेते द्वौ	मनु ३.१७४
पद्योदुम्बर विल्वाश्च	आप ९.६	परद्रव्यगृहाणा च	या २.२७१
पद्योदुम्बर राजीव	वृ परा ९.१३	परद्रव्याण्याभिध्यायं	या ३.१३४
पनसं नारिकेलं च	व २.६.१६९	परद्रव्येष्वभिध्यानं	मनु १२.५
पनसं सहकारैश्च	आंपू ५४५	परपत्नी तु या स्त्री	मनु २.१२९
पनसस्थापकं प्रोचुः	आंपू ४९६	परपाकनिवृत्तस्य	पराशर ११.४३
पन्था देयो ब्राह्मणाय	बौधा २.३.५७	परपाकनिवृत्तस्य	शंखलि १४
पन्था पादस्य प्रक्षालन	बौधा २.३.३५	परपाकं वृथा मांसं	वृ परा ६.२४८
पप्रच्छुरखिलज्ञप्त्यै	कण्व २	परपाकरुचिर्न स्याद	आश्व १.१६७
पयः पिबेत त्रिरात्रं वा	मनु ११.१३३	परपीडाकरं दानं दातुस्तग्राहककपिल	४५०
पय पृथिव्यां तु पयः	ब्र.या. ८.१९६	परपूर्वपतेर्जाताः सर्वे	वृ परा ७.३७५
पय प्रतिदनिधिः प्रोक्तं	लोहि ३६६	परपूर्वापतिः स्तेनः	प्रजा ८४
पयस्तासामकर्मण्यं लीलं	शाण्डि ३.१२७	परपूर्वाः स्त्रियस्त्वन्या	नारद १३.४५

परप्रयोजनदशायां प्राप्तायां	लोहि ६१८	परसैन्ये बहु गतान्	वृ परा १२.३४
परं कूपशताद् वापी	नारद २.१९०	परस्त्रियं योऽभि वदेत	मनु ८.३५६
परं चिन्तयतां तत्र महादेवः	लोहि ३६७	परस्त्रिया सहाकालेऽदेशे	नारद १३.६२
परं तद्विषये तूष्णीं कलहं	कपिल ५१९	परस्परमुखं पश्यन्	आश्व १५.२१
परं तु तत्र लोकानां पश्यतां	लोहि ४५१	परस्परविरुद्धानां तेषां	मनु ७.१५२
परं त्रिरात्राद्दहनं कुर्यु	आंपू ९९०	परस्मिन्दिवसे कुर्यात्	शाण्डि ३.८२
परं त्वत्र प्रवक्ष्यामि	कण्व १९४	परस्मिन् बन्धुवर्गेवा	अत्रिस ४१
परं त्वत्रविशेषोऽस्ति यदि	कपिल ६९१	परस्मै पुत्रकार्याय धर्म	कपिल ७९८
परं ब्रह्म नयत्येव	वृ.या. २.१२६	परस्मै पुत्रदाने तु	कण्व ७४५
परं ब्रह्म परं धाम परं	कण्व १९१	परस्य चात्मनां तस्माद्भद	वृ हा ३.७४
परं भागवतं धर्म	वृ हा ४.२६४	परस्य दण्डं नोद्यच्छेत्	मनु ४.१६४
परं सपिण्डीकरणात्	कपिल १२९	परस्य पत्न्या पुरुषः	मनु ८.३५४
परमं यत्नमातिष्ठेत्	मनु ८.३०२	परस्य भूमिभागे तु	औ ५.१६
परमं विक्रमं कुर्यान्	अ ६८	परस्य योषितं हत्वा	या २१२
परमं वैदिकं शास्त्रमेतद्	वृ हा ८.३५१	परस्वान्यपि (दि) गृहाति	कपिल ७५०
परमा चोत्तमा चेति सा	आंपू ९४२	परहस्तस्तिश्चैव	वृ.गौ. १६.३९
परमांशस्य मुनयो विश्वे	भार १७.१७	परहिंसारताः क्रूराः परदार	वाधू १७१
परमात्मा च लक्ष्मीशो	वृ हा ३.११७	पराकं पंचदशाभिः	देवल ७९
परमात्मा परं ब्रह्म	वृ हा १.११	पराकं तत्साराधे	देवल २७
परमात्मेति गायत्री	विश्वा ५.२४	पराक्रमेकं क्षत्रस्य	देवल ९
परमाधिगनिः तेषाम्	वृ.गौ. ४.३७	पराकेण विशुद्धिः स्याद्	अत्रिस १७२
परमापदगता वापि	व २.५.६३	पराङ्मुखस्या भिमुखो	मनु १२.१९७
परमापदगतेनापि	अ २२	पराङ्मुखीकृते सैन्ये	वृ परा १२.५१
परमापद्यपि सदा मनोवाक्का	व २.५.१९	पराङ्मुखे हते सैन्ये	वृ परा ८.३२
परमावगतेनापि कर्तव्यं	वृ हा ६.१०९	पराजयन्ति कुप्यन्ति	कपिल ८०९
परमेश्वरतुष्ट्यर्थकृतं	कण्व १३	पराजयेत्तान्धर्मेण न्याये	कपिल ८११
परमेश्वरशब्दं ये	कण्व १६	पराजयेत् सोप्यरीस्तान्	वृ परा १२.२४
परम्पराणां परमं विचिन्त्य	वृ परा १२.३७०	पराजिरे गृहकृत्वा स्तोमं	नारद ७.२२
परयोः सन्निधौ भुक्तौ	कण्व ५९३	पराणि तत्कलत्राणि	आंपू ४३७
परविन्नावकीर्णा च	ब्र.या. ४.१४	पराणि दैविकान्याहु	कण्व ४४०
परवेश्मनिवासं वा पुंसां	व २.५.१०	परा दुर्वर्णनामानि यानि	आंपू ४५५
परव्योम्नि स्थितं देवं	वृ हा ४.६२	परानथाऽऽचामयतः	व १.३.४१
परशय्यासनोद्यान्	या १.१६०	परान्त्यागिनामेव	आश्व १.१५१
परशवोपस्पृशनेऽनभि	बौधा १.५.१३७	परान्नं नैव भुंजीयाद्	आश्व १.१७४
परश्रियं समुद्दीक्ष्य	लोहि ५८	परान्नं परवस्त्रं	शंखलि १७

पलैश्च तैश्चतुर्भिः	वृ परा १०.३११	पशुवु स्वामिनां चैव	मनु ८.२२९
पत्व च त्पात ब्रह्मचारी	ब्र.या. ८.१६	पशुवेश्यादिगमने	पराशर १०.१५
पवते सदवाक्यानि	कण्व ६२१	पशुवेश्याभिगमने	अत्रिस २७०
पवद्वयञ्च द्वादश्यां	वृ.गौ. १८.१६	पशून् हत्वा तथा ग्राम्यान्	शंख १७.१०
पव नार्थानिभांडानि	व २.५.४०	पशूनां रक्षणं दानं	मनु १.९०
पवमानः सुवर्जन	बौधा २.५.१९	पश्चाच्छास्तेऽप्य पूर्वम्य	कपिल ६७
पवमानानुवाकेन ततो	भार १५.६५	पश्चाज्जातः कनिष्ठोऽपि	आंपू ४१६
पवमानानुवाके पादा	भार ५.३०	पश्चाज्जाते धर्मपत्न्यां	लोहि २०७
पवित्रकूर्चैयस्याग्रं	भार १८.१०९	पश्चाज्जातेन धर्मेण	लोहि ६२
पवित्रेञ्च पवित्राणां	वृ.गौ. ९.२३	पश्चात्कालेन सा ज्येष्ठा	लोहि ९५
पवित्रपाणिः शुद्धात्मा	ल व्यास २.३	पश्चात्तद्दकोस्मिन्पविष्टो	कपिल ३२४
पवित्रं पितृकायेषु	भार १८.६३	पश्चात्तदज्जुमादाय	भार १५.७७
पवित्रं यदि वा दर्म	वृ परा ७.२७१	पश्चात्तस्यापि सर्वस्वं	लोहि ६३५
पवित्रं भगवद्भुक्तं	शाण्डि ४.६३	पश्चात्तु मातृभिक्षार्थं	कपिल ३९७
पवित्रं हि पवित्राणां	वृ.गौ. ९.६९	पश्चात्तु ग्रामरूपस्य	कपिल ५६३
पवित्रपाणिराचम्य	भार १६.२	पश्चात्तु तावता गाढं बाधकं	कपिल ४२६
पवित्रवत्तइत्यस्मिन्	भार ६.३९	पश्चात्तु धरणीवीजं	वृ हा ३.३३०
पवित्रवन्तं इत्यादि	भार १८.६९	पश्चात्तु वैष्णवैसूक्तै	व २.२.१७
पवित्रस्य भवन्त्येते	भार १८.६०	पश्चात्तु ध्यात्वा जगन्नाथं	वृ हा ३.१३६
पवित्रहस्तोऽध्यायति	भार ५.४६	पश्चात्तिपण्डप्रदानेऽपि	आंपू ८३१
पवित्राद्यन्तकाभिज्ञाः मन्त्रैः	शाण्डि २.३७	पश्चात्पुष्पाक्षतैस्तेषुं	भार ११.७०
पवित्रारोपणं कुर्यान्	वृ हा ५.३१९	पश्चात्पूर्वोत्थिते वह्नौ	लोहि १५४
पवित्रीकरणं त्वेवं	भार १८.५८	पश्चात्तु समर्चनीया	वृ हा ७.१९५
पवित्रे कृत्वाऽद्भिः	बौधा २.५.१८	पश्चात्सम्पूजयेच्छक्त्याः	व २.६.२९५
पवित्रे प्राग्यथा प्रोक्ता	भार १८.९९	पश्चात्तु सशक्तयः पूज्या	वृ हा ४.९४
पवित्रैर्विविधैश्चान्यै	बृ.या. ७.५६	पश्चात्तु सिन्धुर्विधरणी	बौधा ११.३०
पवृत्तमन्यथा कुर्याद्यदि	कात्या ३.४	पश्चात्तु सिन्धुः विहरिणी	व १.१.१४
पशवश्च मृगाश्चैव	मनु १.४३	पश्चात्तु दर्शनं तस्मिन्	व २.२.१९
पशाचिकानां यक्षाणां	वृ हा ८.१४१	पश्चादग्नौ विनिक्षिप्य	वृ हा २.१५
पशुघ्नी च गृहघ्नी च	ब्र.या. ८.२८०	पश्चादधस्तात्पीठस्य	भार ११.३५
पशुमण्डूकनकुलश्वा	व २.३.१६४	पश्चादभ्यञ्जनस्नानं	आंपू २५३
पशुमण्डुकमार्जार	मनु ४.१.२६	पश्चादाचमनं दत्त्वा	व २.६.१११
पशुमण्डूक नकुल	या १.१.४७	पश्चादाचमनं दत्त्वा	व २.६.१२०
पशुयोनौ च गमने	शाता ५.३७	पश्चादाचमनं दत्त्वा	भार ११.१०८
पशुयोन्यामतिक्रम्य	नारद १३.७६	पश्चादाचमनं यद्याद्	वृ हा ८.३५

पश्चादाचमनं दद्याद्	वृ हा ४.१२४	पश्वश्चैकतोदन्ता	स्मृति सन्दर्भ
पश्चादारोपयेद् विष्णु	वृ हा ५.३२५	पश्वार्धैरन्तायातैर	बौधा २.१.८२
पश्चादुदभवद्वाणि दिव्या	आंपू १८६	पश्व्वा (त) प्रत्यग्वारुणीति	वृ पर ६.३६०
पश्चादुभाभ्यां हस्ताभ्यां	वाधू १२२	पांशुवर्षे दिशां दाहे	भार २.१३
पश्चादुभाभ्यां हस्ताभ्यां	वाधू १२३	पांशुवर्षे दिशां दाहे	या १.१.५०
पश्चादुभाभ्यां हस्ताभ्यां	भार ६.४८	पांशुवर्षेऽम्बुमध्ये	मनु ४.११५
पश्चादृशी प्रकुर्वीत	आं पू १०२९	पांसुलानां विटानां वा सा	वृ परा ६.३६३
पश्चाद्धोमं प्रकुर्वीत	वृ हा ५.४६८	पाककर्मणि संप्रोक्तरसुत्स	कपिल ७९९
पश्चाद्धोमं प्रकुर्वीत	वृ हा ७.३१०	पाकक्रियादूरगाश्च	लोहि ४१०
पश्चाद्रूपं विजानीयात्	व्या २५७	पाकपश्व्वादभूतानाम	कपिल ५२७
पश्चाद् वस्त्रादिकं	वृ परा १०.१४७	पाकपात्राणि शौल्वानि	शाण्डि ३.८९
पश्चाद्विष्वात्मकच्छाया	भार २.३९	पाकभिन्नानि कार्याणि	प्रजा ११२
पश्चाद् वै जुहुयात्	वृ हा ५.९९	पाकभेदकरा ये च	लोहि ४१६
पश्चान्निवासो भवने	लोहि ४६७	पाकभेदी कृतघ्नः च	वृ.गौ. ३.१४
पश्चान्नीराजनं कृत्वा	व २.४.२६	पाककृतं तथा नाद्यात्	वृ.गौ. १.६
पश्चान्यासस्तदर्थ	कण्व २३९	पाकं पायसपूर्वाणां सन्	कपिल ५२४
पश्चान् मन्त्रेणाऽऽज्यहोमो	वृ हा ५.३९८	पाकं वातु वहिः शालां	शाण्डि ३.१२९
पश्चान्मातामहस्यापि	आंपू १०३४	पाकमेकम्प्रकुर्वीत	ब्र.या. ६.४
पश्चिमादिक्तृतीयास्याः	भार १३.१५	पाकयज्ञमितिप्रश्न	ब्र.या. ३.४५
पश्चिमाभिमुखाद्वापि	कण्व ६०३	पाकस्य हेतवे हिस्यात्	कण्व ५२५
पश्चिमां तु समासीनो	बृह १०.९	पाकान्तरेण कुर्यात्तु	लोहि ६३७
पश्चिमायां शनिः कुर्याद्	वृ परा ११.५४	पाखण्ड शामत पत्तितां	व्या ३००
पश्चिमे तु शनिस्याप्यवा	ब्र.या. १०.९८	पाखण्डचयस्पृसंस्पर्श	व २.४.६
पश्चिमेन ततः स्थाप्य	ब्र.या. ८.२६६	पाखण्डप्रमाणं च नित्यं	व्या ३८५
पश्चिमे पुनराचम्य	व्या ४७	पाचकानि बहिष्ठाणि	शाण्डि ३.६६
पश्यतस्तस्य पुरतो	आंपू ५६७	पाचयेत्कन्दमूलानि	वृ हा ८.९०
पश्यतो ब्रुवतो भूमे	या २.२४	पाचयेद्दत्सपवित्रेण	व २.५.५९
पश्यत्येव सदा मां तु	वृ.गौ. ७.१०१	पाञ्चरात्रैः सदोद्युक्तैः	वृ हा ८.११०
पश्यदिभरखिलैर्भूयो मामके	लोहि ५३८	पाटलारुणपीताःस्पृः	बृ.या. २.६८
पश्यन्ति दीयमानां	वृ परा १०.४३	पाटितोऽयं द्विजाः पूर्वं	भार १८.९
पश्यन्तीह रथं ये	वृ परा १०.१६६	पाठयेद्वादशनाम्नां	व्यास २.१३
पश्यन्त्यात्मनमेवेह	वृ परा ११.६	पाठीनरोहितावाद्यौ	शाण्डि २.४५
पश्येद् गुर्वर्क्ष संयुक्ता	वृ परा १०.२७२	पाणिगण्डूषकावोष्ठी	मनु ५.१६
पश्यादनंतरं पृथ्विं ततो	भार ११.३६	पाणागाथाइति प्रोक्ताः	आश्व १.७८
पश्येमशरदः शतम्पठेन्मत्र	ब्र.या. ८.२८४	पाणिग्रहीतभार्यायां	भार ६.१४७
			वृ परा ६.२८८

पाणिग्रहणग्रह्यात संगृह्य	व २.४.९१	पात्रपूर्वतु यदुत्तं सकलं	ब्र.या. ११.४
पाणिग्रहणसंस्कारः	मनु ३.४३	पात्रंदार्वं च शैलं च	शाण्डि ४.१०९
पाणिग्रहणिका मंत्रा	मनु ८.२२६	पात्रं भवेदलाभे वा	भार १५.३१
पाणिग्रहणिका मंत्रा	मनु ८.२२७	पात्रभूतोऽपियोविप्रः	वृ परा १०.२९१
पाणिग्रहे मृते बाला	व १.१७.६६	पात्रं धनं वा पर्याप्तं	या ३.२४९
पाणिग्राहस्य साध्वी स्त्री	मनु ५.१५६	पात्रं मनसि संचित्य	वृ परा १०.२९५
पाणिना सपवित्रेण	आश्व ८.४	पात्रं वामकरे स्थाप्य	ल हा ६.१३
पाणिनासोदकेनानेः	आश्व २.१२	पात्रं सम्मार्जनार्थं च	भार १८.१२०
पाणिना हृदयं तस्य	आश्व १०.३३	पात्रस्थं चापि दर्वीस्थं	आश्व २.५७
पाणिप्रक्षालनं दत्त्वा	या १.२२९	पात्राणि चालयेच्छ्राद्धे	आश्व १.१६६
पाणिभ्यां उत्तरेणांसौ	आश्व १०.२२	पात्रस्थं प्रोक्षयेदन्नं	आश्व २३.५५
पाणिभ्यां तूपसंगृह्य	मनु ३.२२४	पात्रस्थितोदकेनैव	व्या ३३६
पाणिं च संस्पृशन्नदिभः	शाण्डि २.२९	पात्रस्य हि विशेषेण	मनु ७.८६
पाणिमध्य आग्नेयम्	व १.३.६०	पात्राणामपि तत्पात्रं	वृ.गौ. ६.१७६
पाणिमुखो हिराह्यण	बौधा १.११.२९	पात्राणाञ्चमसानाञ्च	या १.१८३
पाणिमुद्यम्य दण्डं वा	मनु ८.२८०	पात्राणामप्यलाभे तु	वृ हा ४.७८
पाणिग्रह्यः सर्वाणां सु	शंख ४.१४	पात्राणासादनं	ब्र.या. ८.२५१
पाणिग्रीहय सर्वणां सु	या १.६२	पात्राण्यर्ध्याणि खड्गानि	प्रजा ११०
पाणिहोमे कथं कुंडं	व्या २८६	पात्रादिरहितं तोय	बृ.या. ७.११३
पाणै यश्च निगृह्णीयाद्	नारद १३.६९	पात्रादुत्थाप्य देवेशं	व २.७.४६
पाणौ होमस्य ये	व्या १२८	पात्राभिधारणं कृत्वा	कण्व ५९१
पाण्डिकेयापिये प्रोक्ताः	ब्र.या. १.२३	पात्राय संसमादाय भैक्ष्यं	ब्र.या. ८.८८
पाण्याहति द्वादश	कात्या ९.११	पात्रे धनं वा पर्याप्तं	वृ हा०६.२३६
पातकवर्जं वा बभ्रुं	बौधा २.१.८३	पात्रे धनं वार्धुषितं	ब्र.या. १२.३९
पातकाभिशांसने कृच्छ्रः	बौधा २.१.८६	पात्रेण पूर्वतश्चैव	ब्र.या. ८.१९७
पातकेषु च सर्वत्र	वृ हा ६.२२०	पात्रे तु पूरयेत्पश्चाद्	व २.६.९३
पातकेषु शतं पर्षत्	आंड ७.७	पात्रे तु मृगमये यो	औ ५.६१
पातयित्वा खनिवैनं	लोहि ६९४	पात्रे निर्णेजनञ्चैव	ब्र.या. २.१४६
पातालसप्तकं चक्रे लोकानां	विष्णु १.१५	पात्रे पवित्रं संस्थाप्य	भार १५.२०
पातित्येन मृते कुर्यात्	शाता ६.४३	पात्रेभ्योऽपि तथा ग्राह्यं	आंड ८.१४
पाति त्राति च दातारं	व १.३०.७	पात्रैराराधितं छत्रं	भार १५.१४१
पात्राञ्च ब्रह्मकूर्चस्य	बृ.गौ. २०.४०	पाद उदकं पादघृतम्	वृ.गौ. ६.५३
पात्रद्वयं कृतं तोयं	आश्व २३.३६	पादकेशांशुककरालु	या २.२२०
पात्रद्वयमतोऽर्थार्थं	वृ परा ७.१७८	पादद्वयं मुखं योऽन्यां	वृ परा १०.४४
पात्रनिर्णेजनं वारि	व्यास ३.३३	पादद्वयं शिरश्चाऽऽस्यं	आश्व १.३३

पादद्वये चतुः संख्या	विश्वा १.५४	पादाभ्यङ्गोऽन्नपानैः	वृ.गौ. ६.५६
पादधावनसम्मान	व्यास ३.३८	पादार्धं पादमर्धं वा	बृ.या. ४.५३
पादपं पल्लवाकीर्णं	वृ.गौ. ७.३७	पादार्धं पादमात्रं च	विश्वा ३.६१
पादं पादं क्षिपेन्मूर्ध्ना	विश्वा ४.१	पादावुपस्मृश्य जुहुयादित्	व २.७.१४
पादप्रक्षालनं कुर्यात्	व २.६.१९६	पादुकादि च पालाशं	वृ परा ६.२६६
पादप्रक्षालनं कुर्याद्	आश्व १.१४६	पादुकासनमारूढो गेहात्	अंगिरस ६२
पादप्रक्षालनं पश्चात्	कण्व ८४	पादुकास्थो न भुञ्जीत	पराशर ६.६४
पादप्रक्षालनं व्याविष्टरं	शाण्डि २.७९	पादुके चापि ग्रहणीयात्	ल हा ६.८
पादप्रक्षालनं श्राद्धे वरं	आंपू ७८०	पादुकोपानहौच्छत्रं	संवर्त ५७
पादप्रक्षालनादूर्ध्वं	व्या २१०	पादेऽङ्गरोमवपनं	लिखित ८२
पादप्रक्षालनार्थाय	व्या ८१	पादेऽङ्गरोमवपनं द्विपादे	पराशर ९.१४
पादप्रक्षालनार्थाय प्रदेय	आंपू १०८१	पादे चैवास्य रोमाणि	लगुयम ५३
पादप्रक्षालनोच्छेषणेन	बौधा १.५.१२	पादेन पाणिना वापि	बृ.या. ७.३६
पादप्रभृतिपादान्तं	व्या ८२	पादेन क्षत्रियस्योक्तं	देवल २८
पादप्रसारणं वार्ता	भार ८.३	पादे वस्त्रद्वयं दद्याद्	दा १०७
पादं तु शूद्रहत्यायां	शंख १७.९	पादे वस्त्रयुगञ्चैव	पराशर ९.१५
पादमुत्पन्नमात्रे तु	लघुयम ४३	पादोदकं पादघृतं	व्यास ४.८
पादमूले शिखायांच	ब्र.या. २.३४	पादौऽधर्मस्य कर्तारं पादः	नारद १.७४
पादमेकं चरेद्रोधे	आप १.१६	पादो धर्मस्य कर्तारं	बौधा १.१०.३०
पादमेकं चरेद्रोधे द्वौ	आंउ १०.४	पादौ धर्मस्य कर्तारं पादः	मनु ८.१८
पादमेकोवकनानुपत्रा	व.२.६.४४०	पादौ प्रक्षाल्य गण्डदूषं	कण्व ७४
पादयोरधरां प्राची	कात्या २१.१०	पादौ भूमौ त्रिवारं	विश्वा ४.१९
पादयोः सत्यपाणौ च	भार ४.२८	पादौ शिरस्तथा हस्तौ	शाण्डि २.७४
पादशौचक्रिया कार्या	आंउ ११.३	पाद्यं अर्घ्यं तथा दत्त्वा	आश्व १५.८
पादशौचं तथाभ्यं	ब्र.या. १२.३२	पाद्यं सुखोपविष्टञ्च	ब्र.या. ८.१८९
पादशौचन्तु योदद्यात्तथा	संवर्त ८६	पाद्यार्घ्यगन्धपुष्पाद्यैर	व २.६.३४३
पादशौचेन पितरः	ल हा ४.५८	पाद्यार्घ्याचमनं दत्त्वा	वृ हा ४.८०
पादांगुल्यो शतार्द्धञ्च	पराशर ५.१८	पाद्यार्घ्याचमनस्नान	वृ हा ४.७०
पादांगुष्ठयुगे त्वेकं	वृ परा ४.२७	पान आचमने चैव	लिखित ४३
पादांगुष्ठादिमूर्ध्ना	वृ परा ४.२६	पानत्रयं यथा पूर्वं	भार ४.३६
पादादौ प्रणवं चोक्त्वा	विश्वा ४.४	पानं आचमनं कुर्यात्	लिखित ४२
पादादौ प्रणवं चोक्त्वा	विश्वा ४.१३	पानं दुर्जनसंसर्गः	मनु ९.१३
पादान्ते प्रक्षिपेद्वापि	वृ परा २.५८	पानमक्षाः स्त्रियश्चैव	मनु ७.५०
पादान्ते मार्जनं कुर्याद्	विश्वा ४.२०	पानमार्जनसानादिस्पर्शा	भार ४.१७
पादाभ्यंगं तथा स्नानं	वृ परा १०.२३८	पानमैथुनसम्पर्कं	आप ४.७

पानाशनां च बौद्धाया	ब्र.या. १.२०	पारभृतारकाज्योतिरा	भार ६.८
पानीयपाने कुर्वीत	आंउ ८.२०	पारं गतस्तु तत्त्वानां	बृह ११.११
पानीयं न पिबेद्योगी	शाण्डि ४.१२०	पारमेश्वरतुल्यैकद्वारा नो चेत्तु कपिल	४४२
पानीयं परमं लोके	वृ.गौ. ६.८	पारमेश्वरसायुज्यं लभन्ते	आंपू ९१२
पानीयं ये प्रयच्छन्ति	वृ.गौ. ५.७७	पारम्पर्यागतो येषां	व १.६.३९
पानीयमप्यत्र तिलै	वाधू १९८	पारवित्तं पारदार्यं	वृ हा ६.१९७
पानीयस्य गणा दिव्या	वृ.गौ. ६.९	पारशव इत्येके	बौधा १.९.४
पानीये मज्जयेस्तु	नारद १९.२३	पारावत कपोतघ्न	वृ परा ८.१६७
पाने भोजनकाले च	वृ हा ४.४१	पराशरमतं पुण्यं पवित्रं	पराशर १.३६
पापक्षयक्रियापूर्ति	शाण्डि ४.९२	पराशरमतं पुण्यं	वृ परा २.१
पापपूरितदेहानां धर्म	वाधू १९२	पाराशरैश्चतुर्मात्रस्तथा	बृ.या. २.१३०
पापरूपापोरूपाप जना	भार ८.९	पारिभाषिक एव स्यात्	कात्या २६.७
पापा नवविधाः प्रोक्ताः	नारा १.१०	पारिव्रज्यं गृहीत्वा च	दक्ष ९.३४
पापानांचैव संसर्गः	अत्रिस १६७	पारुष्यदोषधुतयोर्युगपत्	नारद १६.९
पापानेवाङ्कयित्वाऽस्य	वृ हा ४.२०२	पारुष्यमनृतं चैव	मनु १२.६
पापान्यनेकान्युच्यन्ते	नारा १.४१	पारुष्ये सति संरम्भादुत्पन्ने	नारद १६.८
पापहवयः कुशब्द	भार १८.४	पार्जन्यं अष्टमं तत्त्वं	वृ परा ४.२०
पापिष्ठं दुर्भगामन्य	कात्या १९.१०	पार्थिवं शतमेकं च	विश्वा ६.१०
पापिष्ठमिति शुद्धेन	कात्या १६.१९	पार्वणं च क्षयाहे स्याद्	प्रजा १८४
पापिष्ठो वादवर्षेण मोह	शाण्डि ४.२३८	पार्वणं तद्विधानेन	आंपू ११२
पापोवा यदि चाण्डालो	पराशर १.५२	पार्वणं तेन कार्यस्यात्	वृ परा ७.४६
पायसं शूद्रतो ग्राह्यं	प्रजा १३४	पार्वणानि मयोक्तानि	प्रजा १९४
पायसं सक्तवो धानाः	प्रजा १३५	पार्वणेन विधानेन	औ ७.२०
पायसं सगुडं साज्यं	वृ हा ६.१३६	पार्वणं कुरुते यो वै	ब्र.या. ३.१९
पायसान्नं शर्करान्नं	वृ हा ५.५३८	पार्श्वकघ्नतदूतार्त	नारद २.४३
पायसापूपहृद्यान्नपान	व २.६.३५४	पार्श्वयोरर्द्धधरणी	वृ हा ४.८६
पायसेन गवाज्येन	वृ हा ५.१२७	पार्श्वयोश्च श्रियं	वृ हा ७.१६१
पायसेनाथ पुष्पाणि	वृ हा ७.१८८	पार्श्वस्थितजनैश्चोतुं	भार ६.२१
पायसेनार्चयन्विप्रान्	बृ.गौ. १७.४६	पार्श्वे चांगुलमात्रन्तु	वृ हा २.७२
पायसेनैव होतव्यमाज्येन	व २.३.११	पार्श्वे चांगुलमात्रन्तु	मनु ७.२०७
पारगः सर्वविद्यानां	ब्र.या. ४.७	पार्श्विग्राहं च संप्रेक्ष्य	भार १५.३२
पारणं च त्रयोदश्यां हन्ति	ब्र.या. ९.१५	पालदोषविनाशो च	या २.१६८
पारित्रिकं तु यत्किंचिद्	वृ परा १२.११३	पालनीया गोपनीया रक्षणी	कपिल ३३५
पारदोषेण वेदोऽपि	ब्र.या. ८.७०	पालने विक्रये चैव	आंगिरस १३
पारपाकरुचिर्न स्याद	या १.११२	पालने विक्रये चैव	आप ६.२

पालयन् पश्चतो	वृ परा ८.१५१	पाषण्डनैगमश्रेणी	नारद ११.२
पालयेदेव धर्मेण पश्चात्	आंपू ३५६	पाषण्डनैगमादीनां स्तिथि	नारद ११.१
पालाक्यवर्णं श्रीपर्णं	वृ हा ५.२५०	पाषाण्डः पतितो वाऽपि	वृ हा ५.२३४
पालाशाखादिगश्वत्थ	आश्व २.८०	पाषण्डपतिद्येषु न पतन्ति	शाण्डि १.१५
पालाशदण्डमादाय ब्रह्मचारी	वृ.गौ. १६.५	पाषण्डमाश्रितानां च	मनु ५.९०
पालाशबिल्वपत्राणि	व १.२७.१२	पाषण्डमाश्रिताः स्तेना	या ३.६
पालाशबिल्वौ विप्रस्य	भार १५.१२३	पाषण्डाः पतिताः पापाः	वृ हा ४.१५२
पालाशं आसनं पादुके	व १.१२.३२	पाषण्डिनं विकर्मस्थं	वृ हा ६.३४६
पालाशं चैवोपचारेण	व २.३.७९	पाषण्डिनो विकर्मस्थान्	मनु ४.३०
पालाशमासनं पादुके	बौधा २.३.३०	पाषाणां शोधनं कुर्यात्	व २.६.८७
पालाशे मध्यमे पत्रे	ब्र.या. २.१६०	पाषाणे नैव दण्डेन	पराशर ९.१७
पालाशे मध्यमे पर्णे	लघुयम ७४	पाषाणैः लघुदैः वापि	आप १.१९
पालाशेवटतालानामश्व	शाण्डि ४.११३	पाषाणैर्लघुदैर्दण्डैस्तथा	संवर्त १४०
पालाशो बैल्वोवा	व १.११.४५	पाषाण्डैः उल्मकैः दण्डैः	वृ.गौ. ५.४८
पालाशो ब्राह्मणः प्रोक्तो	वृ परा ११.२१६	पाहि त्रयोदशाख्य	कण्व १४१
पालिकाः सद्दिगीशाश्च	वृ हा ७.२४६	पाहित्रयोदशानां च होमानां	नारा ३.११
पालितां वर्धयेन्नित्यं	वृ हा ४.२२१	पिंगलां कपिलां कृष्णां	वृ परा ६.३१
पालिताश्च प्रजाः सर्वा	वृ.गौ. १०.३७	पिंगवर्मकृताकान्ता	वृ.गौ. १.२४
पावकप्रतिमं साक्षान्	आंपू १	पिञ्जजूल्याद्यभिसंगृह्य	कात्या १७.१८
पावकः सर्वमेध्यं च	अत्रिस १४०	पिण्डजं चरुहोमं च	व्या ३३१
पावकस्य सन्तसूर्य	भार ६.३२	पिण्डजश्च परश्चैषां	वृ हा ५.२५७
पावकाइव दीप्यन्ते	अ १३१	पिण्डदानं च यजुषां	व्या १७३
पावनत्वान् पवित्रत्वान्	वृ.गौ. १.२६	पिण्डदानं च वै श्राद्धे	आश्व २३.८६
पावनं परमं प्रोक्तं वमनं	आंपू ९४३	पिण्डदानान्तरं यस्य	आंपू ९६४
पावनं चरते धर्म	वृहस्पति ८०	पिण्ड निर्वपणं केचित्	मनु ३.२६१
पावनं सर्वपापानां	वृ.गौ. १६.४६	पिण्डनिर्व्वपनं पूर्णमर्च्चं	ब्र.या. ३.५७
पावानानि हरेरन्य	कण्व ४७८	पिण्डप्रदाः क्रमेण स्युः	वृ परा ७.३९४
पावनी नर्मदा चैव	आंपू ९१९	पिण्डप्रदाएहीति पुनः	कपिल २३३
पावमानानुपाकेन	भार ७.८१	पिण्डप्रदानं निर्व्वर्त्य	लोहि ३७७
पावमानानुवाकेनन (स्न)	भार ११.९२	पिण्डं तं प्राशयेत्पत्नीं	आश्व २३.८३
पावमानैः विष्णुसूक्तैः	वृ हा ५.४३५	पिण्डं श्राद्धेषु कर्तव्यं	ब्र.या. ५.९
पावमान्यैश्च तन्मासं	वृ हा ५.३३३	पिण्डमासनदर्भाग्ने दक्षिणे	ब्र.या. ४.११५
पावमानी तथा कौत्सं	संवर्त २२४	पिण्डवर्जमसंक्रान्ते	वृ परा ७.१००
पावयेद्द्रश्मिभिः सर्व	बृह ९.८८	पिण्ड श्राद्धनं कुर्वीत	ब्र.या. ५.११
पाशको मत्स्यघाती च	पराशर २.१०	पिण्डस्थे पादमेकन्तु	पराशर ९.१३

पिंडास्तुगोऽजविप्रेम्यो	या २.२५७	पितर्यपि मृते नैषा	कात्या २४.६
पिण्डांस्तु भोज्यं	औ ५.७४	पितर्युपरते त्रिरात्रम्	बौधा १.११.३२
पिण्डादेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः	औ १.५१	पितस्थिस्थूलयित्युक्तः	भार २.४९
पिंडानां मध्यमं पिंडं	वृ परा ७.२८१	पिताऽऽचार्यः सुहृन्माता	मनु ८.३३५
पिण्डान्वाहार्यकं श्राद्ध	कात्या १६.१	पिता जातस्य पुत्रस्य	वृपरा ६.१८५
पिण्डान्वाहार्यकं श्राद्ध	औ ३.११०	पिता दद्यात् स्वयं कन्यां	नारद १३.२०
पिण्डायत्र न पूज्यन्ते	ब्र.या. ६.२५	पिता पितामहश्चैव	औ ५.८८
पिंडार्थं ये स्तुता दर्भाः	कात्या २.४	पितापितामहश्चैव तथैव	व १.११.३६
पिण्डीभूता भवन्त्यत्र	औसं ११	पितापितामहश्चैव	ब्र.या. ४.३१
पिण्डे कृतास्तु ये दर्भा	लिखित ४६	पितापितामहश्चैव	औ ६.५३
पिण्डे दद्यात् पूर्वेषु	ब्र.या. ४.१२३	पिता पितामहो भ्राता	वृ परा ६.२९
पिण्डेभ्यस्तत्वाल्पिकां	मनु ३.२१९	पिता पितामहो भ्राता	या १.६३
पिण्याकंवा कणान्नं	ब्र.या. १२.४२	पिता पितामहो यस्य	औ ९.१०४
पिण्याकाचामतक्राम्बु	या ३.३२१	पितापितामहो यस्य	अत्रिस १०७
पिण्याकशाकतक्र	देवल ८७	पितापुत्रविरोधे तु	या २.२४२
पितरं कर वक्त्राश्च	वृ परा ७.२१२	पिता पुत्रस्य जातस्य	अत्रिस ५३
पितरं भ्रातरं पत्नीं	आंपू १४०	पितापुत्रस्वसृभ्रातृ	या २.२४०
पितरं मातरं च एव	वृ.गौ. ३.१५	पिता पुत्रेण जातेन	वृ परा ८.४८
पितरं मातरं पुत्रान्	शाण्डि ४.१०२	पितामहः पितु पश्चात्	१६.१६
पितरः शुन्धध्वं कुर्यात्	ब्र.या. ८.११६	पितामहः महाप्राज्ञ	विष्णु म ५
पितरश्च पितामहास्तथा	प्रजा १८१	पितामहस्तदन्यो वा	वृ परा ७.५१
पितरश्च समायान्ति	व २.६.३९३	पितामहस्य गोत्रेण संयुक्तो	कपिल ३९८
पितरस्तत्र मोदन्ते	वाधू २१९	पितामहस्य तत्पश्चाद्	कण्व ७२३
पितरस्तव तुष्टा वै	प्रजा ११	पितामहाख्याः स्वर्देवाः	भार १६.६३
पितरस्तस्य कुप्यन्ति	वृ.गौ. ६.१०४	पितामहा च वर्तते	व्या ११६
पितरस्तस्य नश्यन्ति	वृहस्पति २५	पितामहादिपिण्डेषु तं	आंपू ९९२
पितरस्तस्य यान्त्येव	वृ हा ८.३२१	पितामहादिभिर्दत्तं ज्ञातिदत्तं	कपिल ७८५
पितरस्तवल्बन्ते	नारद २.२००	पितामहादिभिः सम्यक्	आंपू १००१
पितरि प्रोषिते प्रेते	या २.५१	पितामहाः पितृव्याश्च	कपिल ५०९
पितारि प्रोषिते प्रेते	वृहा ४.२४१	पितामहाश्च जीवंति	व्या ६१
पितरैरपि वा शुद्धं	भार १५.१९	पितामहे ध्रियति च	कात्या १६.१३
पितरोपासनं कृत्वा	व २.६.३२०	पितामहेन दैवेन	कण्व ४४५
पितरो वृषभा ज्ञेया	वृ.गौ. १३.२२	पितामहे वा तच्छ्राद्धं	मनु ३.२२२
पितरौ चेन्मृतौ	ब्र.या. १३.७	पितामहाऽपि तत्स्मिन्	लिखित २४
पितरौ भ्रातश्चैव	वृ हा ४.२५३	पितामहापि स्वनैव	ब्र.या. ७.११

पितामह्या सहैतस्याः	दा ३५	पितुः श्राद्धसमत्वेन	आंपू १०३०
पिता यस्य निवृत्तः	मनु ३.२२१	पितुः श्राद्धात्परं श्राद्ध	आंपू २७५
पितासस्य मृतश्चेत्	आश्व १७.२	पितुस्तु पाकं एकोद्दिष्ट	ब्र.या. ४.३५
पिता रक्षिति कौमारे	नारद १४.३१	पितुस्तु भ्रंशमात्रेण	आंपू १०.६२
पिता रक्षिति कौमारे	बौधा २.२.५२	पितुः स्वसारं मातुश्च	या ३.२३२
पितारक्षिति कौमारे	मनु ९.३	पितुंश्च तर्पयेन्नित्यं	वृ परा १२.९९
पितारक्षिति कौमारे	व १.५.४	पितुंस्तु दक्षिणास्यस्तु	वाधू ५८
पिता व यदि वा भ्राता	का ९	पितृक्षयाहे संप्राप्ते	प्रजा १७६
पिता वा यदि वा माता	वृ ता ६.७९	पितृक्षये अमावस्यां	व्या १५७
पिता वैगार्हपत्योऽग्नि	मनु २.२३१	पितृगीता वर्णन	विष्णु ८०
पिता स्वांके समादाय	ब्र.या. ८.३३२	पितृणमासनं दद्याद्दाम	व्या २५९
पितुः कर्म कृतं तेन	आंपू ४४५	पितृणांअर्घ्यपात्राणि	वृ परा ७.१३७
पितुः पिण्डप्रदानेन	आंपू १११	पितृणांच चतुर्थस्तु	वृ परा ६.८४
पितुः पितुः पितुश्चैव	कात्या १६.१४	पितृणां तृप्तयेऽतीव द्विजो	कपिल १७२
पितुः पितृश्वसुः पुत्रा	ब्र.या. ८.१४८	पितृणां न भवेद्वस्तु	कपिल २२२
पितुः पुत्रेण कर्तव्या	वृ परा ७.४९	पितृणां नरकस्थानां	प्रजा २९
पितुः प्रमादस्तु यदाह	व १.१७.६१	पितृणां पनसः श्रीमान्	अंपू ५६८
पितु मुख्ये न कर्त्तव्यं	ब्र.या. ६.१०	पितृणां पितृतीर्थेन	वृ परा २.२२०
पितुरब्दमशौचस्यात्	ब्र.या. ७.५७	पितृणां पुरतः सिचंज्जलं	आश्व २३.१७
पितुरित्यपरे शुक्र	बौधा १.५.१२७	पितृणां मासिकं श्राद्ध	मनु ३.१२३
पितुरुत्तरकर्ष्वशे	कात्या १७.२०	पितृणां वा एषा दिक्	व १.४.१४
पितुरुर्ध्वं तु ये सप्त	वृ परा १०.८५	पितृणामपराहणे च	दक्ष २.२३
पितुरेकैव दातव्यं	ब्र.या. ३.४२	पितृणामपि सर्वेषां	आंपू ४८३
पितुरेव नियोगाद्यत्	नारद २.९	पितृतत्पितृभ्रातृषु	व्यास २.६
पितुरेव सपिण्डत्वे	आंपू ९९८	पितृतः सप्तमीमेके	वृ परा ६.३८
पितुर्गुरोर्नरेन्द्रस्य भार्या	बौधा २.२.७६	पितृ तीर्थेन संतर्प्य	ब्र.या. २.१०१
पितुर्गेहे तु या कन्या	बृ.या. ३.१८	पितृत्वं जनितर्येव	आंपू १२४
पितुर्दशगुणं माता	बृ.गौ. १४.६१	पितृत्वं मातरि गतमं	आंपू ११७
पितुर्दशाहमध्ये तु	व २.६.४५०	पितृत्वं मातरि गतमे	आंपू ४२४
पितुर्मग्न्यां मातुश्च	मनु २.१३३	पितृत्वमपि दत्तेन	आंपू ४२२
पितुर्युपरते पुत्रा ऋणं	नारद २.२	पितृत्वमपि मातृत्वं	आंपू ११९
पितुर्युपरते पुत्रा	नारद १४.२	पितृत्वमपि मातृत्वं	आंपू १२०
पितुर्विक्यार्थकारी च	प्रजा १	पितृत्वमपि मातृत्वं	आंपू ४२३
पितुर्वियोगात्परतः	आंपू १०५	पितृदत्तातुयाकन्या	ब्र.या. ८.१६८
पितुः शतगुणं दानं	व्यास ४.३०	पितृदारान् समारुह्य	पराशर १०.१३

पितृदाराः समारुह	संवर्त १५९	पितृभ्यश्च प्रथमतः	आंपू ८९०
पितृदेवता तिथि पूजायां	व १.४.५	पितृभ्य स्थानमसीति	आश्व २३.३७
पितृ-देव-मनुष्याणां	वृ परा ५.१५९	पितृभ्यां यस्ययदत्त	या २.१२६
पितृदेवमनुष्याणां	दत्त २.४१	पितृभ्यां यस्समुत्सृष्टः	लोहि १९७
पितृदेवमनुष्याणां	दक्ष ३.९	पितृभ्यो बलिशेषं	वृ परा ४.१७०
पितृदेवमनुष्याणां	ब्र.या. १२.३४	पितृभ्रात्रादिदुष्टौधान्	कपिल ५८१
पितृदेवमनुष्याणां	मनु १२.९४	पितृमन्यत्प्रकर्तव्यं	व्या २५६
पितृदेवसखिद्रोहं कुर्यात्	कपिल ९६६	पितृ मातृ गुरु भ्रातृ	व २.६.३१५
पितृदेवग्निकार्येषु	बौधा १.४.२४	पितृमातृगुरुर्विप्र	ब्र.या. ८.१४३
पितृद्रव्या विरोधेन	या २.१२०	पितृमातृपतिभ्रातृ	या २.१४६
पितृ द्वारं तथा प्रेतं	ब्र.या. ७.२१	पितृमातृपरो नित्यं	ब्र.या. ४.९
पितृद्विद पतितः पण्डो	नारद १४.२०	पितृमातृवचः कर्ता गुरु	प्रजा ४०
पितृनभ्यर्चयेद्यस्तु	शंख लि १०	पितृमातृवधाधघ्नं	भार ६.७८
पितृनुद्दिस्य यत्कर्म	वृ.गौ. ८.११	पितृ-मातृ-वधोद्भूतं	वृ परा ४.८६
पितृन् ध्यायन् प्रसिञ्चैद्वै	बृ.या. ७.८४	पितृमातृसुतभ्रातृ	या १.८६
पितृन् पितामहाश्चैव	वृ.गौ. ८.६१	पितृमातृसुता भ्रातृ	वृ हा ४.२४८
पितृन्प्राणमज्जाक्ष	भार १५.६१	पितृमात्रेण संज्ञातजननो	लोहि १७३
पितृन्यज्ञे तथान्येषु	ब्र.या. ६.१९	पितृमानवदेवानां	प्रजा १३३
पितृन्वा एष विक्रीणीते	बौधा २.१.७७	पितृमानेव भुंजीयात्	आश्व २४.२१
पितृपक्षे चतुर्दश्यां	ब्र.या. ५.२१	पितृयज्ञचरोरन्नं	आश्व २३.४४
पितृपाकं समुदधृत्य	व्या २९८	पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य	मनु ३.१२२
पितृपाणिष्वपो दद्यात्	आश्व २३.३९	पितृयज्ञ वर्जयित्वा	व २.६.३०८
पितृपात्र पितृणां	दा ३९	पितृयज्ञकृत्वा	आश्व २४.१
पितृप्रसादः श्राद्धेन न	काव्य ४३७	पितृयज्ञविधानन्तु त	व २.६.३६६
पितृप्रिये कर्मणि तु यजमान	कपिल १९०	पितृयज्ञविधानेन श्राद्ध	कपिल १८१
पितृपिण्डार्चनं यैस्तु	आंपू ८६०	पितृयाणोऽजवीथ्याश्च	या ३.१८४
पितृपुत्रकलत्राद्या दासी	ण्डि ४.९७	पितृरूपाश्च असुरा	ब्र.या. ४.११२
पितृपुत्राविवादश्च	नारद १८.३	पितृलोकं चन्द्रमसं	या ३.१९६
पितृबन्धुगुरुक्तिश्च	कपिल ४१४	पितृलोकं पूजयित्वा	बृ.गौ. १७.२३
पितृदोषैकजननौ न	लोहि १८६	पितृवंशे मृता ये च	वृ परा २.२१२
पितृभि सममेतेन	भौ ५.४०	पितृवत्तान् द्विजान्	ब्र.या. ४.१०५
पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः	मनु ३.५५	पितृवत्पूजनं कृत्वा	ब्र.या. ४.२७
पितृभिश्शिक्षिता सम्यक्	कण्व ४८३	पितृवेश्मनि या कन्या	शंख १६.८
पितृभ्य इति दत्तेषु	कात्या २.७	पितृवेश्मनि कन्या तु	मनु ९.१७२
पितृम्य इदमित्युक्त्वा	कात्या १३.८	पितृव्यदारगमने	संवर्त १५८

पितृव्यपत्नीभगिनी तादृश्यो	कपिल ६०६	पित्रा यत्र सगोत्रत्वं	वृ परा ६.२३
पितृव्यपत्न्यादीनां	आंपू ४२५	पित्रार्जितेन वा कुर्यात्	व २.६.१२४
पितृव्यपत्न्यादीनां	आंपू ११८	पित्राविवदमानश्च	मनु ३.१.५९
पितृव्य-भ्रातृजायां च	वृ परा ८.२४९	पित्रे न दद्याच्छुल्कं	मनु ९.९३
पितृव्यभ्रातृजार्थी	प्रजा ६०	पित्रे पितामहाय	शंख १३.१०
पितृव्यमातृभ्रातृभार्या च	बृ.या. ३.४	पित्रैव तु विभक्ता ये	नारद १४.१५
पितृव्यं पुत्रः सापत्न्य	पराशर ४.२३	पित्रोः क्षयाहे संप्राप्ते	व्या २४७
पितृव्यमातुलादीनामपि	कण्व ६८०	पित्रोः प्रत्यादधि	कपिल १७८
पितृव्यापुत्राः सापत्ना	दा १५९	पित्रोर्दशाहमध्ये तु	व २.६.४५१
पितृव्येणाविभक्तेन भ्रात्रा	नारद २.३	पित्रोर्मृताहः कथितो	आंपू ६०८
पितृशेषं तथोच्छिष्टं	व्या २९७	पित्रोर्मृताहं सततमपि	आंपू २७७
पितृश्चमनसाध्यात्वा	ब्र.या. ४.१२८	पित्रोः श्वसुरयोर्मर्तुरनुज्ञा	लोहि ५२८
पितृश्चेत् सूतकं पूर्णं तथा	कपिल ४०८	पित्रोस्तु दशारात्रं स्यात्	व २.६.४४७
पितृश्राद्धेषु यो दद्याद्	वृ परा ७.८८	पित्रोस्तु सूतकं मातु	या ३.१९
पितृष्वन्नभिगमनाद	शाता ५.२९	पित्रोः स्वदितमित्येवं	औ ५.७१
पितृसंयुक्तानि चेत्येकेषां	बौधा २.५.२१२	पित्र्य प्रतिग्रह भोजनयोश्चबौधा	१.११.२७
पितृस्तुषा सा स्वस्तुषा	कपिल १९१	पित्र्यं वा भजते शीलं	मनु १०.५९
पितृस्वसा च भगिनी	ब्र.या. ८.१४६	पित्र्यमान्त्रानु द्रवण	कात्या २.१३
पितृस्थानस्य विप्रस्य	आंपू ९६७	पित्र्यर्थं देवतार्थं च	व २.६.२९०
पितृहा चेतानाहीनो	शाता २.२०	पित्र्यर्थं पायसं कुर्यान्	ब्र.या. ४.१५७
पितेव पालयेत्पुत्रान्	मनु ९.१०८	पित्र्य यः पंक्तिमूर्द्धन्य	कात्या १७.१५
पितेव पालयेद् भृत्यान्	वृ हा ४.२१५	पित्र्य राज्यहनो मासः	मनु १.६६
पितैव वा स्वयं पुत्रान्	नारद १४.४	पित्र्य स्वदितमित्येवं	मनु ३.२५४
पित्तान् दर्शनं पक्तिं	या ३.७७	पिप्पलस्य प्रबालानि	वृ हा ४.५४
पित्रर्थं अर्घ्यं पात्राणि	वृ परा ७.१९२	पिप्पलीक्रमुक्तं चैव	औ ३.१४५
पित्रात्यन्तैककलहे	आंपू १०४७	पिप्पली मरिचं चैव	शंख १४.२०
पित्रादयस्त्रयश्चाऽऽदौ	आश्व १.९७	पिबत्यनेकतरसा पितृ	आंसू ५६३
पित्रादयस्त्रयो यस्य	वृ परा ७.३३९	पिबन्ति देहनिश्रावं	ब्र.या. २.१०५
पित्रादीनां त्रयाणां च विप्र	कपिल ७३	पिबन्ति देहनिःश्रावं	बृ.या. ७.८९
पित्रादीनां त्रयाणाश्च क्रमोक्ते	कपिल ४०३	पिबन्ति सर्वसत्वानि	वृ परा १०.३७१
पित्रादीनां सगोत्रा ये	वृ प्रा ७.७६	पिबन्निवमहाह्लादमध्य	शाण्डि ४.२५
पित्राद्याः पिण्डभाजः	शाता ६.४	पिनेत्पात्रात्तरोद्विधो	व २.६.२१३
पित्रापुत्रेणयन्मुखैराप्तैः	कपिल ६५२	पिबेद्भोजनपात्रेण	शाण्डि ४.१४७
पित्राप्रमात्रादाध	ब्र.या. ८.२२३	पिवत पतितं तोयं	पराशर ११.३७
पित्राभर्त्रा सुतैर्वाऽपि	मनु ५.१४९	पिवन्ति कपिलां यावताव	वृ.गौ. ९.१२

पिवन्तीषु पिवेतोयं	पराशर ८.४१	पीत्वावशिष्टं चषके	शाण्डि ४.१४८
पिवेतु पञ्चगव्यं यः	बृ.गौ. २०.३८	पीत्वा सभक्तिजननं	भार १०.२
पिशाचत्वं स्थिरन्तस्य	ब्र.या. ७.९	पीयूषश्चेतलसुन	पराशर ११.१०
पिशाचांश्च सुपर्णा	ब्र.या. २.९५	पुंश्चीलीवानरखैः	या ३.२७७
पिशाचोरगगन्धर्व यक्ष	विष्णु १.१७	पुंसश्चेद्वनितादाने ऽधिकारो	कपिल ६४८
पिशुनः पौतिनासिक्यं	मनु ११.५०	पुंसां के ते शत्रव	विष्णु ३३
पिष्टं जलेन संयोज्य	लोहि ३६८	पुंसा ब्राह्मणादीनां	बौधा २.२.५८
पिशुनानृतिनोश्चान्नं	मनु ४.२१४	पुंसा शतावरार्थं	व १.१९.१४
पिशुनानृतिनोश्चैव	या १.१६५	पुंसाश्चात्मनि वेषेण	औ १.४१
पिशुनो नरस्यान्ते जायते	शाता ३.१०	पुंसो यदि गृहं गच्छेत	पराशर १०.३६
पिष्टमालोड्यते येन	व्या ३०९	पुक्कसीगमनं कृत्वा	संवर्त १५०
पीठं तन्मध्यमेस्थाप्य	भार ११.१५	पुच्छे शिरसि यः शुक्लः	वृ परा ६.१९७
पीठस्यांतः पूर्वदले	भार ११.४२	पुजितं ह्यशनं नित्वं	मनु २.५५
पीठे निवेश्य देवेशं	वृ हा ६.३९	पुटीभूतमधोवक्त्रं	वृ परा १२.२८८
पीडनानि च सर्वाणि	मनु ९.२९९	पुटे पणमय वाऽपि	वृ हा ८.९६
पीडयेद्यदि तन्मोहादेवाः	वृ.गौ. ८.६६	पुण्डरीकाक्षदशकं जप	कण्व १०९
पीडयेद्यदि तान् मोहान्नरकं	वृ.गौ. १३.३२	पुण्डरीकास्तु विज्ञेया	ब्र.या. २.४२
पीडां करोति चामीषां	वृ परा १२.२३	पुण्ड्रकाश्चोद्भविडा	मनु १०.४४
पीडितस्य विशेषेण	आंपू २९४	पुण्ड्रसंस्कार इत्येवं	वृ हा २९१
पीतक्षीरा ये हि चास्या	वृ.गौ. १०.३५	पुण्य कालनिमित्तं	आश्व १.१०९
पीतच्छत्र विशः कृष्ण	भार १५.१३३	पुण्यकाले त्वसंभाष्यः	आंपू ७६५
पीतपुष्पं तथा पत्री	ब्र.या. १०.१४४	पुण्यकृतिं पुण्यशीलं	भार १.२
पीतवास विशालाक्षो	वृ हा २.९०	पुण्यक्षेत्रेषु नियतं	आंपू २१०
पीतवाससमक्षोभ्यं सर्व	विष्णु १.४२	पुण्यक्षेत्रे समुद्भूतां	शाण्डि २.४१
पीतशेषंजलं पीत्वा	वृ परा ८.१८८	पुण्यतीर्थाभिगनात्	औ ८.३२
पीतानि नागपर्णानि	वृ हा ५.४३७	पुण्यदान उभाभ्यां	अ ६७
पीताम्बरधरं देवं	वृ हा ४.१०	पुण्यमेवादधीताग्नि	कात्या ६.१२
पीताम्बरधरं देवं	वृ हा ५.१०८	पुण्यंतीर्थेथवा विप्रो	भार ७.११७
पीताम्बरप्रकटितां रत्न	भार १२.५	पुण्यं श्राद्धविशेषं वै	आंपू ७०६
पीताम्बरं भूषणाद्यं	वृ हा ३.३१०	पुण्य लांगुल कल्याण	वृ परा ५.८५
पीताम्बरं युवानं च	वृ हा ५.९६	पुण्यव्रता पुराणोक्ता	वृ हा ८.१६१
पीतावशेषं पानीय	शंख १७.५६	पुण्यस्त्रीणां तथा ज्ञेयं	विश्वा २.२१
पीतोच्छिष्टं पादशौचं	व्या ५५	पुण्यात् षड्भागमादत्त	या १.३३५
पीतो ब्रह्मसुराचार्य	वृ परा ११.३३८	पुण्याद्भिरभिमेत्याथ	व २.६.४६५
पीत्वा मंत्रजलं	वृ हा ५.२८५	पुण्याधिकारकल्याण यज्ञ	कपिल ५७५

पुण्यान्यन्यानि कुवीत	मनु ११.३९	पुत्रवान् पित्रमांश्चैव	आश्व १.१५८
पुण्याभिषके यत्प्रोक्तं	वृ परा ११.२५६	पुत्रश्च दुहितुः पुत्रः	वृ परा ७.५६
पुण्या व्याहतयश्चेति	आंपू १०	पुत्रसङ्ग्रहणं सद्यः	लोहि २०३
पुण्यास्तु गावो वसुधातले	वृ परा ५.५२	पुत्रसङ्ग्रहणे जाते द्वतीया	लोहि ८६
पुण्याहं वाचयित्वाऽथ	वृ हा ६.३९५	पुत्रसंपादनं धीमान्	आं पू ३२६
पुण्याहं स्वस्थि वृद्धि	आश्व १५.३४	पुत्रस्यग्रहणं दुष्टं शास्त्र	लोहि ५६२
पुण्याहवाचनं कुर्यात्	व २.७.२७	पुत्रस्य भ्रातृपुत्रस्य	वृ परा १२.१६५
पुण्येऽहनि गुर्वनुज्ञातः	व्यास १.२४	पुत्र स्वार्जितमेकाशी	आश्व १.१२०
पुत्रः कनिष्ठो ज्येष्ठायां	मनु ९.१२२	पुत्रस्वकीरसमये	कण्व ७३९
पुत्र इत्युच्यते	ब्र.या. ७.३०	पुत्राणां पितृकृत्येषु पृथिवीते	कपिल २०७
पुत्रग्रहणकाले तु	आंपू ३६१	पुत्रादयः सपत्नीकाः	आश्व १.१००
पुत्रग्रहः प्रकथितो	आंपू ४०३	पुत्रान्तरस्ये सद्भावे मूक	कपिल ३३३
पुत्रग्राहकुसौभाग्यासंपच्छ्री	कपिल ७००	पुत्रान्देहिधनं देहि	ब्र.या. १०.२१
पुत्रघ्न प्रभवेत्सद्यः वीर	कपिल ७८८	पुत्रान् द्वादश यानाह	मनु ९.१५८
पुत्रजन्मनि यज्ञे च	पराशर १२.२३	पुत्रापराधे न पिता न	नारद १६.२९
पुत्रजन्मादिषु श्राद्ध	औ ३.११८	पुत्राभावे तु दुहिता	नारद १४.४७
पुत्रत्वं समनुप्राप्तः निर्धनस्य	कपिल ७०३	पुत्राभावेसम्पत्ति विभाग	विष्णु १७
पुत्रत्वहेतुना सोऽयं	लोहि २८७	पुत्रा येऽनन्तरस्त्रीजाः	मनु १०.१४
पुत्रत्वेन समश्चेति	कपिल ७४०	पुत्रार्थं नोद्वहेदन्यां	शाण्डि ३.१६०
पुत्रदत्ताच्छतुगुणा विना	लोहि ३१६	पुत्रान् भृत्यान् कलत्र	शाण्डि ३.१५८
पुत्रदा पंचमी कर्तुः	वृ परा ७.२९५	पुत्रार्थं सापि काले न	लोहि ८४
पुत्रदारं यैः च पाशैः	वृ.गौ. ५.२०	पुत्रार्थी चेतु युग्मासु	वृ हा ५.३०१
पुत्रदारदयोऽपि गोस्तर्पणाः	व १.३.३५	पुत्रिकायां कृतायां तु	मनु ९.१३४
पुत्रपौत्रज्ञातिबन्धुसमान्	कपिल ४८२	पुत्रिकायाः सुत श्राद्धं	वृ परा ७.५४
पुत्रपौत्रमधस्ताच्च	वृ परा १०.६२	पुत्रिणः श्रोत्रियस्यात्र	कपिल ६६४
पुत्र पौत्र समायुक्तं	ब्र.या. ११.६१	पुत्रिणी त समुत्सृज्य	नारद २.१७
पुत्र प्रतिग्रहीष्यन्	व १.१५.६	पुत्री च भ्रातरश्चैव	वृ हा ४.२५८
पुत्र प्रत्युदितं सद्भिः	मनु ९.३१	पुत्रीदानं प्रशास्तं	कण्व ६९९
पुत्रप्रदानसमये तत्पित्रो	आंपू ३६८	पुत्रीविवाहः परमो	कण्व ६८३
पुत्रप्रदानसमये प्रोक्तं	आंपू ३७०	पुत्रीसाक्षाद्ब्रह्म	आंपू ३१८
पुत्र प्रासूत सोऽयं चेदत्तो	लोहि ९२	पुत्रे जाते पितुः स्नानं	संवर्त ४३
पुत्रः प्रेष्यस्तथा शिष्य	शाण्डि ३.७४	पुत्रेणं च कृतं कार्यं	नारद २.२६
पुत्रं वा भ्रातरं वापि	अत्रिस ३६१	पुत्रेणं जातमात्रेणं	आंपू ३२४
पुत्रयोस्तनयाभावे नष्टयोरपि	कपिल ७०८	पुत्रेणं प्राप्यते स्वर्गो	वृ परा ६.१८९
पित्रयोः स्वस्य वामूढ	कण्वं ६८१	पुत्रेण लोकांजयति	मनु ९.१३७

पुत्रेण लोकाञ्जयति	व १.१७.५	पुनर्भोजनमध्वानं	व्या १.५६
पुत्रेषु दारान्निक्षिप्य	शंख ६.२	पुनर्भोजनमध्वानं	लिखित ६०
पुत्रेषु सत्सु दत्तेन	आंपू ४४३	पुनर्भोजनमध्वान्	ब्र.या. ४.४३
पुत्रोपनयनं तस्माद्	कण्व ६८५	पुनर्लेपनया तेन	पराशर ६.४०
पुत्रो वा पुत्रिका वापि	लोहि ५४९	पुनर्विवाहिता मूढैः	आंपू १९३
पुथितस्त्वग्निचिन्निष्टपुत्रो	लोहि ५५४	पुनर्विवाहिता सा तु	आं पू १९४
पुनःकरणसंप्राप्तौ शिव	आंपू ९४५	पुनर्वावाहितेनैवं तद्भार्या	आंपू ३९८
पुनः कुर्वस्तथा नापि	लोहि १६५	पुनर्विशेषः कोऽप्यस्ति	आंपू १०४५
पुनः नवीकृतं सद्य	वृ परा ११.७३	पुनर्व्याहृतित्रयमुच्चार्य	विश्वा ६.५५
पुनन्ति इह पृथिव्याम्	वृ.गौ. ४.२२	पुनः शुद्धाम्बुनाचम्य ततः	विश्वा १.६६
पुनन्ति सकलं लोकं	वृहा ३.१५५	पुनश्च पुत्रे संजाते	कण्व ७४२
पुनः पाकं च कृत्वा	व्या २८१	पुनश्चाऽऽवर्तयेत	आश्व २३.७६
पुनः पादत्रयं शीर्षं	विश्वा २.४०	पुनश्छत्रं तत्तन्मन्त्रा	कण्व ६४८
पुनः पित्र्ये तथैवैत	भार १८.७३	पुनः संवृतमन्त्रेषु	वृ परा १०.१०३
पुनः पुत्रं न गृह्णीयादेकस्यैव कपिल ७९३		पुनः संस्कार करणा	वृ परा ८.१०७
पुनः पुनरुदीक्ष्यैव किमासी	कपिल ७७७	पुनः संस्कारं मर्हन्ति	वृ हा ६.२५०
पुनः प्रक्षाल्ययचनं	वृ २.५.४१	पुनसत्कुलजो न्यूनकुलाय	कपिल ७०४
पुनः प्रक्षाल्य सन्तप्त्वा	वृ हा ८.९३	पुनः सम्पद्यते नारी	का ११
पुनः प्रत्यागतो वेश्म	पराशर १२.६५	पुनः सम्मार्जनं कृत्वा	व २.३.१३२
पुनः प्राप्य स्वकं	देवल ४६	पुनस्तथैव यजुषां	ब्र.या. १.२२
पुनर्भुवामेष विधि	नारद १३.५३	पुनस्तदग्निसिध्यर्थमियं	कण्व ५४५
पुनरग्नौ च तान्हुत्वा	व्या २९२	पुनस्तपस्वी भवति	बृह ९.१८१
पुनरन्यानि दानानि पात्र	कपिल ४४१	पुनस्तान् परिपूर्णार्था	शाता १.२५
पुनरन्ये ह्यश्मकुट्टाः	कण्व ४४४	पुनस्तामार्त्तवस्नातां	व्यास २.५०
पुनरागत्य संतिष्ठेदाधाय	आश्व १४.५	पुनस्तेषु सदा प्रोक्तं	कपिल ६३२
पुनराचम्य तत्रैव	ब्र.या. १.४२	पुनस्त्वकरणे तेषां प्रत्यवायो	कपिल ९८९
पुनरेव पुनर्जाप्यं	ब्र.या. २.१३२	पुनाति पंक्तिं वंश्यांश्च	मनु १.१०५
पुनर्जप्त्वा पुनस्सनात्वा	नारा ९.६	पुना राजाऽभिषेकेण	व १.२.५४
पुनर्दहिन् शुष्येत	शंखलि १२	पुनागकेतकीपद्मै	वृ हा ५.३९५
पुनर्द्धात्रीं पुनर्गर्भं	या ३.८२	पुन्नागं वकुलं नागकेशर	वृ हा ४.५६
पुनर्न इति भूयश्च	आंपू ८५९	पुन्नादवकुलांभोजाः	भार १४.८
पुनर्न्यासं ततः कृत्वा	ब्र.या. २.१२१	पुन्नामानि यानि विष्णो	वृ हा ७.५६
पुनर्भूः पुनरेता च	आप ९.२९	पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात्	मनु ९.१३८
पुनर्भूर्विकृता येन कृता	बृ.या. ४.४५	पुमांसं दाहयेत्पाप	मनु ८.३७२
पुनर्भोजनमध्वानं	लघुशंख २९	पुमांस्त्रीकलीब इत्येवं	भार १८.११

पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे	मनु ३.४९	पुराणेष्चितिहासेषु	वृ हा .२.४१
पुमान् प्रद्युम्नवत् स	वृ परा १०.२०६	पुराणैर्धर्मवचनैः सत्य	नारद २.१७९
पुमान् विमुच्यते सद्यः	विष्णु म १६	पुराणोक्तेष्वेषु सत्सु	आंपू ७
पुमान् संग्रहणे ग्राह्यः	या २.२८६	पुरा तु शौनकः श्रीमान्	कपिल १
पुरतः पितुरासीनो	आश्व १०.२७	पुरा देवो जगत्प्रष्टा	लहा १.९
पुरतःस्थे शरावे च	आश्व ९.५	पुराभवत्तथा चोत्त आर्ष	कपिल ५६६
पुरतो जुहुयादग्नौ	वृ हा ७.२३१	पुरीषभूमालिरिणे निवासे	भार ३.६
पुरतो देवता तत्र	व २.३.८०	पुरीषे मैथुने होमे	अत्रिस ३२१
पुरतो नात्मनः कर्षू	कात्या १७.१	पुरुषाख्यः स विज्ञेयो	बृह ९.१३५
पुरतो याचमानं च	व २.५.२९	पुरुषारायस्पोषमीभ	ब्र.या. २.२७
पुरतो याचमानं च	व २.५.२९	पुरुवरार्दश्चैव	लिखित ५२
पुरतो वासुदेवस्य	वृ हा ५.३४३	पुरुवरामाद्रवासौ क्षये	ब्र.या. ६.१८
पुरद्वरीन्द्रकील परिघा	बौधा २.३.४०	पुरुषं मण्डलान्तस्थं	बृह ९.१०६
पुरन्दरपुरं याति गीयमानो	वृ.गौ. ६.८६	पुरुषं च तथा सत्यं	बृ.या. ३.४
पुरन्दरपुरे तत्र दिव्य	वृ.गौ. ७.३४	पुरुषं व्रतं च माषं च	शंख ११.३
पुरप्रधानसम्भेद	नारद १८.२	पुरुषव्रतं न्यासं च	व १.२८.१३
पुरं तत् प्रेतनाथस्य	वृ.गौ. ५.८४	पुरुषसूक्तजपो वापि	आंसू १५६
पुरंप्रवेश्य देवेशं	व २.७.५५	पुरुषसूक्तं यजुषां	ब्र.या. ४.१०३
पुरेणुकुण्ठित शरीर	बौधा २.३.६०	पुरुषसूक्तेन जुहुया	आंपू ९५६
पुरश्चरणमेतद्धि गायतर्या	भार ९.८	पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव	मनु ९.१
पुरश्चर्या च दीक्षायां	विश्वा २.५६	पुरुषान् परं किञ्चित्	बृह ९.१८६
पुरस्तात् त्रिविकल्पं	कात्या १९.१६	पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव	मनु ९.१
पुरस्थात्प्रणवोच्चारः	भार ६.२५	पुरुषाणां कुलीनानां	मनु ८.३२३
पुराकल्पे समुत्पन्ना	औ ३.५०	पुरुषाणां देवतानां कृतं	कपिल १८३
पुराकल्पे समुद्दिष्टा	बृ.या. १.४२	पुरुषा संति ते लोभाद्ये	नारद १.६०
पुराकालात् प्रमीतानां	व १.२०.४८	पुरुषोत्तमं वामनेत्रे	विश्वा २.१७
पुरा किलं पितृतृप्ति	आंपू ५०३	पुरुषो यो जगद्बीज	व २.६.१५२
पुरा तु ब्रह्मसदने	कण्व ३६९	पुरुषेण प्रदत्तं वा कन्या	कपिल ७८३
पुराचोला आज्यशेषेण	कपिल २८५	पुरुषोऽनृतवादी च	या ३.१३५
पुराणतर्कमीमांसाधर्म	बृह १२.३	पुरुहूतः पुरा दैत्यं	वृ परा ८.३१९
पुराणधर्मशास्त्राणि	बृ.या. ४.७	पुरोक्तान्यन्यथाकृत्वा	आंपू ३६५
पुराणन्यायमीमांसा	या १.३	पुरोहितं च कुर्वीत	या १.३१३
पुराणधर्मशास्त्र	ब्र.या. ७.५९	पुरोहितं च कुर्वीत	मनु ७.७८
पुराणं श्राद्धकाले च	विश्वा २.५५	पुरोहिताचार्ययोश्च	आंपू १०४३
पुराणाद्यकथातर्क धर्म	भार ११.४९	पुलहः स्वायम्भुवो	वृ हा ७.८२

पुष्करादि तार्थेषु श्राद्धमहत्त्व	विष्णु ८५	पुष्पेचाश्विनिरेवत्यां	ब्र. या. ८.३५५
पुष्कलं हंतकारस्यात्	ह व्यास २.६२	पुष्पे तु च्छन्दसां कुर्याद्	मनु ४.९६
पुष्कालानि च चत्वारि	ब्र.या. ८.२५४	पुष्पेन (ण) मूलमुत्थाप्य	ब्र.या. ८.२८६
पुष्पाति हि जगत् सर्व	बृह ९.९३	पु स्त्री प्रयोगादयशुक	वृ परा १२.७३
पुष्पा धूप प्रदीपादि	वृ परा ११.१४६	पूजानाद्वन्दनाद् वाऽपि	वृ हा ८.२६२
पुष्पयत्रोदकादीनि प्रातरेव	शाण्डि ३.५	पूजनीयायथार्हेणं	वृ हा २.४५
पुष्पाफलोपगान्	व १.१९.८	पूजनीया यथोक्तेन	व २.७.६२
पुष्पं चित्र सुगन्धञ्च	या १.२८८	पूजनीया समस्ताश्च	वृ हा ७.१६३
पुष्पं दत्वाततो हस्तं	भार ११.१०३	पूजयन्तं सहस्रारं	व २.२.११
पुष्पं धूपं तथा दीपं	वृ हा ३.३१	पूजन्ति नमस्यन्ति	वृ.गौ. ५.१२०
पुष्पं पुष्पं विचिनुयानं	पराशर १.६०	पूजयन्त्यतिथीश्चैव	वृ.गौ. ९.३०
पुष्पं पुष्पं विचिनुयान्	वृ परा ४.२२०	पूजयामास गोविन्दं	बृ.गौ. २२.३७
पुष्पं सितं	ब्र.या. १०.१८	पूजयित्वा गुरु पूर्वं	व २.६.४४
पुष्पमूलफलानि च	व १.२.५०	पूजयित्वाऽच्युतं भक्त्या	वृ हा ५.२१८
पुष्पमूलफलैर्वापि	मनु ६.२१	पूजयित्वा जगन्नाथं	वृ हा ७.३१७
पुष्पवृष्टिं प्रमुञ्चन्ति	वृ.गौ. १०.५७	पूजयित्वाऽथ होमन्तु	वृ हा ५.४१५
पुष्पागमानाञ्च तथा	औ ९.१५	पूजयित्वा श्रियासार्द्धं	व २.४.६०
पुष्पांजलि सहस्रं मु	वृ हा ५.३९७	पूजयेत्कुसुमैः कुन्दैः	व २.६.२४१
पुष्पाणि च ततो दत्वा	वृ हा ७.१८१	पूजयेत्पूर्वतया केशवाद्यै	व २.६.४१३
पुष्पाणि च तथा दत्वा	वृ हा ७.१६७	पूजयेत् श्राद्धकालेषु	व्या २३२
पुष्पाणि च तथा दद्यात्	वृ हा ७.६४	पूजयेत् स्तुतिभि मां च	वृ.गौ. ४.३५
पुष्पाणि दद्याद् भक्त्या	वृ हा ५.१४९	पूजयेदच्युतं भक्त्या	व २.६.२३९
पुष्पाणि फलमूलाद्य	वृ हा ४.१५७	पूजये दशनं नित्यं	औ १.६०
पुष्पावतंसाज्योतिषि	भार १३.२१	पूजयेदशनं नित्यं	मनु २.५४
पुष्पे चैवोपलेपादि	आश्व १३.२	पूजयेद् गन्ध पुष्पादाद्यै	वृ हा ५.३१२
पुष्पेषु हरिते धान्ये	मनु ८.३३०	पूजयेद्देवदेवेशं मृत्युरोग	ब्र.या. २.१३१
पुष्पैः धूपैश्च नैवेद्यै	औ ५.९८	पूजयेद्धिरपत्रैश्च	व २.६.२६८
पुष्पैः धूपैश्च नैवेद्यै	वृ हा २.१२	पूजयेद् विधिना यस्तु	वृ परा १०.३६७
पुष्पैरपि न युध्येत	वृ परा १२.४८	पूजयेन्मंत्रसंयुक्तं	ब्र.या. १०.१५०
पुष्पैरिष्ट्वा चावभृथं	वृ हा ७.२१९	पूजापीठं स्नानपीठं	भार ११.११
पुष्पैर्मनोहैः शुभ्रैर्गन्धै	व २.४.७७	पूजाभिकांक्षिणो ये च	वृ परा २.२७
पुष्पैर्वा तुलसीपत्रैः	वृ हा ७.२०७	पूजाभोजनकालेषु	कपिल ८२८
पुष्पैः सम्पूयेद् भक्त्या	वृ हा ७.१३१	पूजां कुर्याद्विधानेन	व २.७.८१
पुष्पस्नानादिकं स्नानं	शंख ८.४	पूजां पुष्पांजलिं होमं	वृ हा ५.४४३
पुष्पादित्याश्विनी	आश्व ४.३	पूजायां स्नानकाले च	शाण्डि २.६२

पूजाविधानं त्रिविधं	वृ हा ८.२५८	पूर्वकालगृहीतं तं कुमारं	लोहि २०८
पूजितः सकलैः भोगे	वृ हा ७.३३१	पूर्वं कृत्वा द्विजः शौचं	लघुयम ५
पूजिताः तत्र धर्मेण	वृ.गौ. ५.१२१	पूर्वजन्मकृतं पापं	शाता १.५
पूजितानमवाग् जुष्टं	वृ परा ६.१३२	पूर्वजान् मनुजान्	प्रजा २६
पूजिताश्च भविष्यन्ति	आंपू १०८९	पूर्वजांश्च पितृस्तर्प्य	ब्र.या. ७.८८
पूजितैः कलशैः पुण्यैः	व २.७.८२	पूर्वजानां शंत सैकं	वृ परा ११.१५६
पूज्यान् पूजयेत्	बौधा २.३.६२	पूर्वाजास्तुष्टिनायन्ति	प्रजा १९८
पूज्यमाना वस्त्रीभिः	वृ.गौ. ५.९६	पूर्वतो सर्वदेवाश्च	व्या २००
पूज्या नित्यं भगवत्	शाण्डि ४.५८	पूर्वद्वारेऽपि संस्थाप्य	वृ परा ११.२८१
पूतः पंचभि ब्रह्मयज्ञै	२.५.२३	पूर्वधर्मं विनिक्षिप्य	आंपू २०८
पूतानि सर्वपण्यानि	वृपरा ८.३३२	पूर्वपक्षेऽधरीभूते	बृ.य. ५.२६
पूचिमृगमदादीनि	भार १४.४	पूर्वपवृत्तमुत्सन्नमपृष्ट्वा	नारद १२.१७
पूयं चिकित्सकस्यान्	मनु ४.२२०	पूर्वपूर्वतरः श्रेयान्	वृ परा ६.३०२
पूयेशोणितसंपूर्णे अन्धे	पराशर ४.२	पूर्वं पूर्वं गरीयान्	व १.१३.२५
पूरकं कुम्भकं चैव	ब्र.या. २.४८	पूर्वभागे षड्ऋतून्	ब्र.या. १०.१३२
पूरकः कुम्भकश्चैव	बृ.या. ८.९	पूर्वं तु शेषहोमस्य	कण्व ३४५
पूरकः कुम्भको रेच्य	वृ हा ३.३५	पूर्वं निष्पीडनं केचित्	बृ.या. ७.४५
पूरक कुम्भको रेच्यः	बृ.या. ८.१०	पूर्वं न्यासिविधिश्चैव	बृ.या. ५.२५
पूरके विष्णु सायुज्यं	बृ.या. ८.४३	पूर्वं स्त्रियः सुरैर्भुक्ता	व १.२८.५
पूरणे कूपवापीनां वृक्ष	लिखित ८१	पूर्वन्त्राक्षरं मन्त्रन्तु	शाण्डि १.८५
पूरयित्वावंटं पंक	कात्या २३.१३	पूर्वमाक्षारयेद् यस्तु नियतं	नारद १६.१०
पूरयित्वा शुभजलैः	व २.७.२९	पूर्वमापोशनं ग्राह्यं	व्या १४५
पूर्णं कुम्भान् शस्ययुतान्	वृ हा ७.२४४	पूर्वमावायेद्देवान्	व २.६.२९३
पूर्णचन्द्र प्रकाशेन	वृ.गौ. ६.७५	पूर्वमेव निरीक्षेत	औ ४.२
पूर्णचन्द्रप्रकाशेन	वृ.गौ. ६.१४५	पूर्वमेव यतन् बाढं येन	लोहि ३५१
पूर्णचन्दाननं स्निग्धं	वृ हा ३.२५७	पूर्ववच्च विधानं स्यान्	आश्व १५.१३
पूर्णपात्र शर्मपात्र	आंपू ५२४	पूर्ववत् पूजयित्वेशं	वृ हा ५.४८३
पूर्णपात्रनिधानान्त	आश्व १०.४९	पूर्ववत्पूजयेद्देवं ब्राह्मणां	व २.६.२५४
पूर्णपात्रोदकं गृह्य	व.२.२.२२	पूर्ववत् प्रणवस्यार्थं	वृ हा ३.२०६
पूर्णमसीयनेनैव तत्	आश्व २.६९	पूर्ववत्प्राणसंरोधं कृत्वै	भार १९.२९
पूर्णमुष्टिस्ततुतन्नाभौ	भार २.४४	पूर्ववत्सकलं कृत्वा	भार ५.३९
पूर्णसूत्रावृत्तेनेह	आश्व ४.१०	पूर्ववदुपविश्यां	आश्व १०.२८
पूर्णाब्दात् प्रवृत्ताद्वा	व १.१५.१६	पूर्ववद् ग्रहदेवानां	वृ परा ११.२७२
पूर्णन्दुशंखधवलं	भार ६.६३	पूर्ववद् द्वादशाब्दानि	वृ हा ६.२४७
पूर्णेऽपि कालानियमे	आप ३.१०	पूर्ववद् विकरेद् भूमौ	व्या १५१

पूर्ववद् विधिना मंत्र	वृ हा ३.३००	पूर्वोक्तकुसुमालाभे	भार १४.२१
पूर्वविद्धा न कर्तव्या शेषा	ब्र.या. ९.३७	पूर्वोक्त गुण संयुक्ता	वृ परा १०.३०६
पूर्वविद्धापदाकृत्वा	ब्र.या. ९.४०	पूर्वोक्त प्रत्यवायानां	वृ परा ८.१००
पूर्वविद्धैव कुर्वीत	ब्र.या. ९.४२	पूर्वोक्तफलदं ज्ञेयं	कपिल ९२६
पूर्वं शौचन्तु निर्वर्त्य	आप ९.२	पूर्वोक्त विधिना पीठे	वृ हा ३.३६५
पूर्वश्च स्रावितोयश्च	आंगिरस ६७	पूर्वोक्तस्य तु मन्त्रस्य	बृ.या. ८.१७
पूर्वसंध्यार्चिता पुष्पं	भार ११.६९	पूर्वोक्तहोमसंयुक्तमद्य	नारा ५.२८
पूर्वऽह्नि पूर्ववत् पूज्यः	वृ हा ८.२५६	पूर्वोक्ताचारसम्पन्नं	शाण्डि १.९९
पूर्वाग्रैः दैविकेपात्रे	आश्व २३.२२	पूर्वोक्तानि च पर्णानि	व २.६.२९९
पूर्वादि कुम्भेषु ततो	शाता २.७	पूर्वोत्तरप्लवे देशे	वृ परा ७.१५४
पूर्वादिचतुराशेषा	भार २.१७	पूर्वोत्तरविरुद्ध तद्विदन्	लोहि २८३
पूर्वादि दक्षिणा वारुण्य	भार २.२	पृच्छन्तं मामतीवार्त्तं	नारा ५.६
पूर्वादिषु महादिक्षु	भार ११.२१	पृथक्कर्तुमशक्यं	वृ परा ७.७८
पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु	भार ११.६०	पृथक् तानि प्रवक्ष्यामि	वृ परा १०.३१६
पूर्वी लाजाहुतिं हुत्वा	बौधा १.११.४	पृथक्पाकं न कुर्वीत	विश्वा ८.१७
पूर्वी संध्यां जपस्तिष्ठं	मनु २.१०१	पृथक् पाकात्तस्य भुक्ति	आंपू ७४
पूर्वासंध्यां जपस्तिष्ठं	मनु २.१०२	पृथक्पाको न कर्तव्य	विश्वा ८.८३
पूर्वी संध्या तु गायत्री	बृ.या. ६.१७	पृथक् पिण्ड मृते बाले	वृ परा ८.१७
पूर्वी संध्यां सनक्षत्रां	लहा ४.१८	पृथक् पृथक् च नैवेद्यं	वृ हा ७.१४५
पूर्वाह्णं एव कुर्वीत	आंपू ६८७	पृथक् पृथक् दण्डनीया	या २.८३
पूर्वाह्णं चतुर्थाह्ण	भार ६.९९	पृथक् पृथक् प्रकुर्वीन्	वृ हा ६.३७१
पूर्वाह्णे कानिकं श्राद्ध	प्रजा १७७	पृथक् पृथक् प्रणवं	भार १५.८६
पूर्वाह्णे चैव कर्त्तव्यं	औ ५.९४	पृथक् पृथक् सम्यगेव	कपिल ८४२
पूर्वाहो ह्यपराह्णस्तु	वृ परा २.१३	पृथक् पृथगुदञ्चानि	वृ हा ८.९१
पूर्वाह्नब्रह्मणानां तु ये	वृ.गौ. ३.१७	पृथक् पृथग्वा मिश्रौ वा	मनु ३.२६
पूर्वाह्न्यभ्युदयं	वृ हा ७.१४०	पृथक् प्राणादिवायुश्च	वृ परा १२.१८९
पूर्वाह्ने वा पराह्ने वा	वृ.गौ. ५.३१	पृथक्संयोजयेददग्धि	व २.६.३६९
पूर्वाह्ने सूर्योदयात्	व २.४.११५	पृथक्सान्तपनद्वयैः	या ३.३१५
पूर्वेक्तान् शिक्षयेत्सम्यक्	लोहि ७१२	पृथक्सान्तपनं द्वयै	देवल ८२
पूर्वेद्युः क्षणितं विप्रं	व्या ७५	पृथग् गणान् ये विर्मन्धुस्ते	नारद ११.६
पूर्वेद्युः क्षणितोविप्रो	व्या ७४	पृथगग्नौ स्थापितेऽथ	आंपू ७९
पूर्वेद्युः नियमं कुर्याद्	वृ हा ५.४७६	पृथगात्मा पृथक् स्वान्तं	वृ परा १२.१८८
पूर्वेद्युः पौरुषं सूक्तं	व २.७.७१	पृथिवीतेति मंत्रेण पुनः	कपिल २३५
पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा	मनु ३.१.८७	पाकात्परं तद्दिनेऽस्मिन्पुनः	कपिल २३६
पूर्वेव योनि पूर्ववृत्	कात्या २०.१४	पृथिवी पादतस्तस्य	या ३.१२७

पृथिवीपालनं राज्ञः कृषि	व २.६.१२९	पैशाचश्चाष्टमः सर्वे	ब्र.या. ८.१७८
पृथिवीं च वलं यद् वै	वृ.गौ. १.५४	पैशुन्यं साहसं दोह	मनु ७.४८
पृथिवीमन्तरीक्षं वा	बृ.गौ. १.५.३७	पैशुन्यमत्सरमभि	व १.१०.२३
पृथुत्वं शिरसो धार्य	वृ परा ५.६६	पैशुन्यहिंसा विद्वेषं	व्यास २.३५
पृथुस्तु विनयाद् राज्यं	मनु ७.४२	पोत्रघृष्टां वराहस्य	बृ.गौ.२०.२९
पृथिव्यापस्तथा तेजो	शंख ७.२३	पोष्यवर्गसमोपेतो	आश्व १.१५४
पृथिव्यां यानि तीर्थानि	वृ.गौ. ९.२५	पौंश्चल्याच्चलचित्ताच्च	मनु ९.१५
पृथिव्यां यानि दानानि	अ २५	पौत्रदौहित्रयोर्लोके	मनु ९.१३३
पृथिव्यास्तु स्वतुल्येन	वृ.गौ. १०.१०	पौत्रदौहित्रयोर्लोके	मनु ९.१३९
पृथोरपीमां पृथिवीं	मनु ९.४४	पौत्रे नप्तरि दौहित्रे सति	कपिल ७०९
पृथ्वी ते पात्रमित्येतत्	वृ परा ७.२५४	पौनर्भव कुसीदी च	औ ४.३०
पृवृत्ता ऋषिवाक्येन	नारा ७.२८	पौनर्भवश्चतुर्थः	व १.१७.१९
पृष्टा युष्माभिरधुना	भार १.९	पौनर्भवोऽपविद्धश्च	नारद १४.४४
पृष्टास्ये पुत्रजीवस्य	भार ७४२	पौराणं स्मार्तनित्येतत्	विश्वा २.१९
पृष्टोऽपि न वदेदर्थं	शाण्डि ४.२३९	पौरुषेण तु सुक्तेन	वृ हा २.११४
पृष्टोऽप्यव्ययमानस्तु	मनु ८.६०	पौरुषेण तु सुक्तेन	वृ हा ४.८४
पृष्ट्वा स्वादितमित्येवं	मनु ३.२५१	पौरुषेण तु सुक्तेन	वृ हा ५.१३६
पृष्ठतस्तु शरीरस्य	मनु ८.३००	पौरुषेण तु सुक्तेन	व २.७.१००
पृष्ठवंशं च नाभ्यां	कात्या १.३	पौरुषेण तु सुक्तेन	व २.६.३८३
पृष्ठवास्तुनि कुर्वीत	मनु ३.९१	पौरुषेण विधानेन	वृ हा ६.६५
पृष्ठे च जघने कट्यो	वृ हा ३.१८	पौर्णमासात्यये हव्यं	कात्या १८.७
पृष्ठे च जान्वोः पदयो	वृ हा ३.१२१	पौर्णमासीषु चैतासु	वृ परा १०.२६०
पृष्ठे च नक्षत्रगणा	वृ.गौ. १०.४९	पौर्णमास्यष्टकामावास्य	बौधा १.११.२३
पृष्ठे च पद्यानाभन्तु	वृ हा २.७८	पौर्णमास्यादिसंयोगे	प्रजा १६६
पेतुकेषु प्रसक्तेषु	लोहि ३२२	पौर्णमास्यां प्रकुर्वीत	वृ हा ७.१५७
पेय्याषदद्याधाराख्यं	भार ११.८३	पौर्णिमा(पूर्णिमा)पूजयिष्यामि	ब्र.या. ९.४५
पेषणक्रियया पूर्वमन्नं	वृ हा ४.१२२	पौर्णिमायाममावास्यां	ब्र.या. ३.२६
पैतृकं कर्म परमामधिकं	कपिल २९३	पौर्विकीं संस्मरन् जाति	मनु ४.१.४९
पैतृकं क्रीतमाधेयं	व १.१६.१३	पौषामासं क्षपेदेक	वृ.गौ. १७.१६
पैतृकं तु पिता द्रव्यं	मनु ९.२०९	पौष मासस्य रोहिण्यां	या १.१.४३
पैतृकं परणं यत्र तदे	आंपू ९८५	पौषादि चत्वारो मासास्तत्र	ब्र.या. ८.१०२
पैतृके कर्मणि तथा प्राप्ता	कपिल ३३१	पौषे शुक्ले तथा वत्स	वृ परा १०.३४४
पैतृके कर्माणि पुनः यावद्	कपिल २६३	पौष्णमेकादशं ज्ञेयं	वृ.या. ४.६६
पैतृकेण तु तीर्थेन	वृ हा ५.२८२	पौष्णक्षसंयुक्ता चोर्जे	वृ परा २१०.२७१
पैतृष्वसेयौ भगिनौ	मनु ११.१७२	प्याप्यं द्वितीयपादेन	भार ६.१.४४

प्रकृतुमसमर्थश्चेत्	बृ.या. ७.१५६	प्रक्षाल्य पाणीपादौ	ब्र.या. २.१३
प्रकर्तव्यं प्रयत्नेन न	लोहि ४४२	प्रक्षाल्यपादावाचम्य	व २.४.२२
प्रकर्तव्या विशेषेण	वृ परा ११.२६७	प्रक्षाल्य पादावाचम्य	शाण्डि ५.५६
प्रकर्षणगते प्रेते	ब्र.या. ७.१७	प्रक्षाल्य पादावाचम्य	बृ.गौ. १६.२३
प्रकर्षेणासमन्ताच्च	वृ परा १२.२५०	प्रक्षाल्य पादावाचम्य	शाण्डि ४.१२३
प्रकल्पितानां शास्त्राणामसतां	कपिल २०	प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ	वृ हा ५.२३६
प्रकल्प्या तस्य तैर्वृत्ति	मनु १०.१२४	प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च	दक्ष २.१४
प्रकान्ते सप्तमं भागं	या २.२०१	प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च	व २.६.३४
प्रकारं दक्षिणे वक्त्रे	वृ परा ४.९४	प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ	वाधू ३४
प्रकारान्तरतः प्रोक्तः सूते	लोहि १७७	प्रक्षाल्य प्रोक्षयित्वा च	कपिल २२०
प्रकाशमेतत्तात्पर्यं	मनु ९.२२२	प्रक्षाल्याचम्य विधिवत्	भार १५.५९
प्रकाशायितुमात्मानं	शाण्डि ४.१९३	प्रक्षाल्याअपूर्य ततोय	भार १५.१५०
प्रकाशवंचकास्तत्र	नारद १८.५४	प्रक्षाल्य भूमिं कर्मार्थं	शाण्डि २.२५
प्रकाशवंचकास्तेषां	मनु ९.२५७	प्रक्षाल्य वातं देशमग्निना	बौधा १५.१४४
प्रकीर्णं प्रायाश्चित्त	विष्णु ४२	प्रक्षाल्य हस्तावाचम्य	मनु ३.२६४
प्रकीर्णके पुनर्ज्ञेया	नारद १८.१	प्रक्षाल्य हस्तावाचम्य	वृ परा २.१२३
प्रकुर्याच्चैव संस्कार	औ ९.२४	प्रक्षाल्य हस्तौ चाचम्य	बृ.या. ७.११
प्रकुर्याद् वैष्णवैसार्वर्द्ध	वृ हा ६.११८	प्रक्षाल्य हस्तौ पादौ	वृ हा ५.२८४
प्रकुर्यान्मद्यपानं वा गोमासं	कपिल ९६९	प्रक्षाल्याजानुतरणौ मृज्जलैः	शाण्डि २.५९
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य	वृ.गौ. १.५०	प्रक्षाल्योदक् शुचौदेशे	व्या ३४४
प्रकृति विशिष्टं चातुर्वर्ण्यं	व १.४.१	प्रक्षाल्योरूमृताचादभि	व्या ३८७
प्रकृतिश्राद्धमात्रश्च	आंपू ६२७	प्रक्षिपेद्भाजने विप्रो	दा ४६
प्रकृतेगुणतत्त्वज्ञ	औ ४.११	प्रक्षिप्य दद्यात्तद्रूपं	भार १४.३५
प्रक्षालनार्थं सलिल	भार ११.३०	प्रक्षिप्य देवमादित्यं	ल व्यास २.२६
प्रक्षालनेन स्वल्पानामादभि	पराशर ७.२९	प्रक्षिप्योद्वयमुदुत्यं	बृ.या. ७.५२
प्रक्षा (लये) ज्जगन्नाथं	शाण्डि ३.८३	प्रख्यातदोषः कुर्वीत	वृ परा ६.३३८
प्रक्षालयेततोमालां	भार ७.५९	प्रख्यातशुद्धचरितं	शाण्डि १.१००
प्रक्षालितकरान् विप्रान्	आश्व २३.८७	प्रख्यापनं प्राध्ययनं	वाधू १५८
प्रक्षालित पादपाणि	बौधा २.४.२	प्रगृह्याञ्जलिना भक्त्या	आंपू ८७०
प्रक्षालितो पवातान्य	बौधा १.६.६	प्रचरपशोर्हिंसं	नारा ७.२३
प्रक्षाल्य चरणौ हस्तौ	भार ४.२१	प्रचरन्नभ्यवहार्येष	व १.३.४२
प्रक्षाल्य चरणौ हस्तौ	भार ५.२	प्रचेतंस वशिष्टं	वृ.या. ७.६५
प्रक्षाल्य तु मृदा पादा	वृ.गौ. ८.६७	प्रचेता अत्र चोवाच	आंपू ९८६
प्रक्षाल्य पाणिपादं	आश्व १.१४२	प्रच्छन्नपापिनो ये स्युः	बृ.य. ४.६
प्रक्षाल्य पाणिपादौ	औ १.६३	प्रच्छन्नं वा प्रकाशं वा	मनु ९.२२८

प्रच्छन्नानि च दानानि	बृ.या. ७.१३३	प्रजाभिरग्ने अमृतत्वं	व १.१७.४
प्रच्छन्नानि नवान्यानि	दक्ष ३.२	प्रजाभिर्नृतु सर्वाभि	वृ परा ८.८५
प्रच्छन्नानि मनुष्याणां	नारद १९.२०	प्रजाभ्यो वल्यर्थं संस्वत् सरेण विष्णु ३	शंख १४.३३
प्रच्छादयति तच्छिद्ध	बृहस्पति ५५	प्रजां पुष्टिं यशः स्वर्ग	व १.१७.३
प्रच्छादितादित्यपथे	व्यास २.४४	प्रजाः सन्त्वपुत्रिण	वृ.गौ. ७.४७
प्रजनार्थं महाभागा	मनु ९.२६	प्रज्ज्वालयति यो दीपं	व २.६.३२९
प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टा	मनु ९.९६	प्रज्ञाश्रुताभ्यां वृत्तेन	वृ.गौ. १२.२५
प्रजा पेदेव तस्मात्तु पाद	कण्व ९३	प्रणमेतार्चयेद् वाऽपि	वृ हा ८.२६१
प्रजा पेद् ब्रह्मणो	कण्व १८५	प्रणम्य दण्डवद्भूमौ	शाण्डि २.६९
प्रजापेयु कंचनात्र	आंपू ८००	प्रणम्य पादयोर्देवं जप्त्वा	शाण्डि ५.५४
प्रजापेहस्य सूक्तेन	वृ हा ८.२२७	प्रणम्य शिरसा विष्णु	बृ.गौ. २२.४१
प्रज्ञाता चेत्कृच्छ्राब्दपादं	बौधा २.१.४७	प्रणम्यशिरसाग्राह्य न्	व्या ३९६
प्रज्ञाता रण्डयाचोन्नं कृतं	कपिल ५८९	प्रणम्याग्निञ्च सोमञ्च	बृ.गौ. १६.१०
प्रजानां पालनं दानं	वृ परा ४.२१९	प्रणवञ्चऽऽतपत्रे तु शेषं	वृ हा ५.५०६
प्रजानां रक्षणं दानं	वृ परा ४.२१४	प्रणवं हि परं ब्रह्म नित्यं	बृ.गौ. २२.५
प्रजानां रक्षणं दानं	मनु १.८९	प्रणवं चोर्ध्वपुण्ड्रं च	विश्वा १.११०
प्रजानामायुष कीर्तेः	वृ परा ११.१९७	प्रणवं प्राणशक्तिं च	विश्वा ६.२९
प्रजापतय इत्युक्त्वा	आश्व १.१२३	प्रणवं प्राक् प्रयुजीत	संवर्त ९
प्रजापतये स्वाहेति	आश्व ४.७	प्रणवव्याहृतिभिश्च	विश्वा ८.७
प्रजापतिकृताश्चान्ये	बृह १२.१२	प्रणवव्याहृतिभ्यां च	बृह ९.३७
प्रजापतिपितृब्रह्मदेव	ब्र.या. ८.५३	प्रणव व्याहृति सप्त	भार ६.१५
प्रजापतिभ्यो ह्यभि	आंपू ४२६	प्रणवः सूयते सर्वं वेत्ता	बृ.या. २.९६
प्रजापतिं च वै स्थाप्य	ब्र.या. १०.९१	प्रणवस्य व्याहृतीनां	भार ७.५०
प्रजापतिं तथा चोर्धर्मधश्च	वृ हा ६.५७	प्रणवादि चतुर्थ्यन्त	वृ हा ६.४२६
प्रजापतिरिदं शास्त्र	मनु ११.२४४	प्रणावादिचतुर्थ्यन्तै	वृ हा २.१४६
प्रजापतिर्हि वैश्याय	मनु ९.३२७	प्रणवादि नमोऽन्तं च	विश्वा ३.१५
प्रजापति शिखायांतु	ब्र.या. २.१२२	प्रणवाद्यन्त गायत्री	वृ परा २.७०
प्रजापतिस्तु तानाह न	बौधा १.५.७३	प्रणवाद्यन्तमध्यस्थं	विश्वा ६.५२
प्रजापतेऽनन्वं दिति	व २.३.२५	प्रणवाद्या तु विज्ञेया	बृ.या. ४.३९
प्रजापतेर्मुखोत्पन्नस्तपः	बृ.या. २.३	प्रणवाद्या भवेद्विद्या	बृह ९.३९
प्रजापतेश्चरोरेकां	आश्व ३.४	प्रणवाद्यास्तथा वेदा	व १.२५.१०
प्रजापत्योस्विष्टकृते	ब्र.या. ८.३०९	प्रणवाद्या स्मृता वेदा	अत्रिस १.१३
प्रजापरिपालनं वर्णाश्रमाणां	विष्णु ३	प्रणवाद्या स्मृता वेदा	बृ.या. २.१
प्रजापीडन सन्ताप	या १.३४१		बृ.या. २.१४
प्रजाप्रवृत्तौ भूतानां	नारद १३.१०४		

प्रणवाद्याः स्मृता वेदा	वृ परा ३.२९	प्रतिकल्पैपठितं सोम	आंपू ८१०
प्रणवान्तस्त्रिलोकैश्च	विश्वा ६.६८	प्रतिकूलं गुरोः कृत्वा	या ३.२८३
प्रणवान्ता च गायत्री	वृ परा २.१६६	प्रतिकूलं च यदाज्ञः	नारद ११.४
प्रणवेण च सावित्र्या	वृ हा ५.१०४	प्रतिकूलं वर्त्तमाना	मनु १०.३१
प्रणवेन च गायत्र्या	वृ परा ४.१७९	प्रतिकृतिं कुशमयीं	अत्रिस ५०
प्रणवेन च वै सर्वे	आश्व १२.१२	प्रतिगृहेण सौम्येन	वृ हा ५.५३
प्रणवेन तु संयुक्ता	वाधू १३३	प्रतिगृह्णातिपोगण्डं	नारद ३.८
प्रणवेन तु संयुक्ता	संवर्त २२०	प्रतिगृह्य च य कन्यां	नारद १३.२४
प्रणवेन द्विराचामेद	आश्व १.३२	प्रतिगृह्या च तान् सर्वान्	अ ४०
प्रणवेन पिबेत्तोयं	आश्व १.२६	प्रतिगृह्यतु य कन्यां	नारद १३.३५
प्रणवेन बहिर्वेष्ट्य जलं	विश्वा १.११४	प्रतिगृह्य त्वहोरात्र	वृ परा ६.३५९
प्रणवेन समायुक्तं	वृ हा ३.१५९	प्रतिगृह्य द्विजो विद्वान्	मनु ४.११०
प्रणवेन स्वरूपं स्यात्	वृ हा ३.५५	प्रतिगृह्या द्विजो मोहात्	अ २४
प्रणवे नित्ययुक्तः	व १.२५.९	प्रतिगृह्य द्विजो विद्याद्	औ ३.६७
प्रणवे मित्ययुक्तस्य	बृ.या. २.६४	प्रतिगृह्या धरादानं	नारा १.३३
प्रणवे नित्यमुक्तस्य	बृ.या. २.१४१	प्रतिगृह्य वैतरणीं	अ १२२
प्रणवे विनियुक्तस्य	अत्रिस १.१४	प्रतिगृह्याप्रतिग्राह्याभुक्त्वा	वाधू ९०
प्रणवो धनुः शरोह्यात्मा	बृ.या. २.५४	प्रतिगृह्येप्सितं दण्ड	मनु २.४८
प्रणवो बीजमन्त्र स्याद्	विश्वा ५.१०	प्रतिगृहे तु तत्तातभ्रातर	लोहि ४४८
प्रणवो भूर्भुवः स्वश्च	कात्या ११.५	प्रतिग्रह काश्यपेय	अ २
प्रणवो विमलः शुद्धो	बृ.या. २.१४०	प्रतिग्रहञ्च वृत्यर्थ	वृ हा ४.१५१
प्रणवो व्याहृतयः	बौधा २.५.२२	प्रतिग्रहधनो विप्रो	अ १
प्रणवो हि परं तत्त्वं	वृ परा ३.१०	प्रतिग्रहनिवृत्ताश्च जप	वृ परा ६.२९७
प्रणवो हीश्वरो देवो	बृ.या. २.१४४	प्रतिग्रहनिवृत्तिश्च	पु १८
प्रणवः सर्ववेदानां	.या. ४.१९	प्रतिग्रह परीमाणं	या १.३२०
प्रणवो ह्यपरं ब्रह्मप्रण	या. २.१४२	प्रतिग्रहः प्रकाशः स्यात्	या २.१७९
प्रणष्टस्वाभिकं रिक्थं	मनु ८.३०	प्रतिग्रहमृणं वापि	वृ परा ६.२४१
प्रणष्टाधिगतं देयं	या २.३४	प्रतिग्रहरतानां तु ब्राह्मणानां	अ ७६
प्रणीताकुशमादाय	ब्र.या. ८.२७१	प्रतिग्रहसमर्थोऽपि	या १.२१३
प्रणीतापश्चिमेन्यस्य	ब्र.या. ८.२६८	प्रतिग्रहसमर्थोऽपि प्रसंगं	मनु ४.१८६
प्रत आश्विनी पवमान	वृ हा ८.५६	ग्रहसुदीप्तानि	वृ परा १०.६९
प्रतद्विष्णुमन्त्रमिरावती	आंपू ८३९	प्रतिग्रहादन्नदोषात्	वाधू ११५
प्रतप्तासमतोयेन	वृ हा ६.२९४	प्रतिग्रहाद् ब्राह्मणस्य	अ ६
प्रतापयुक्ततेजस्वी	मनु ९.३१०	प्रतिग्रहाद्भवेदे (दो) षः	शाण्डि ३.४२
प्रताप्य सकुशौ दर्वीसुवौ	आश्व २.४१	प्रतिग्रहाद्याजनाद्वा	मनु १०.१०९

प्रतिग्रहाद् द्विजश्रेष्ठ	वृ परा १०.३३४	प्रतिमाया अभावे तु	व २.६.४२
प्रतिग्रहाधिकं नास्ति	अ १३४	प्रतिमासदजभेदेन स्मृता	आंपू ५०५
प्रतिग्रहीता सावित्र सर्व	वृ परा १०.२८६	प्रतिमासदिनं हृष्टमन्यथा	आंउ ९.८
प्रतिग्रहे गृहीते तु कां	अ २	प्रतिमांस तदा दर्श	आंपू ८८३
प्रतिग्रहेण नश्यन्ति	अत्रिस १४४	प्रतिमासमुद्वाहकरं	व १.१९.१८
प्रतिग्रहेण लब्धाय भूमिग्रामो कपिल	४६०	प्रतिमासु च शुभासु	कात्या १.१४
प्रतिग्रहेण विप्रणां	अ २६	प्रतमासे पौर्णमास्यां	व २.६.२७०
प्रतिग्रहेण सहसा यदेनो	अ ५५	प्रतिरूपकराश्चैव	नारद १८.५५
प्रतिग्रहे न दोषः स्याद्	अ ९४	प्रतिसंवत्सरं श्राद्धमेकोद्दिष्टं	कपिल १.४७
प्रतिग्रहेषु सर्वेषु जपहोमा	अ २८	प्रतिलोमास्वायोग	बौधा १.८.८
प्रतिग्रहे संकुचिता	वृ.या. ४.५७	प्रतिलोभा प्रयोक्तव्या	वृ.या. ४.४१
प्रतिग्रहे सूनि चक्रिध्वनि	या १.१.४१	प्रतिलोम्याच्च जातेभ्य	शाण्डि ३.३३
प्रतिग्रहोऽध्यापनं च	अत्रिस २०	प्रतिलोम्यापवादिषु	या २.२१०
प्रतिग्रह्याप्रतिग्राह्या	मनु ११.२५४	प्रतिवर्गं च चेद्विप्रा	आंपू ६९९
प्रतिचर्याकृतः सोऽपि	वृ परा १२.१६६	प्रतिवर्षं प्रयत्नेन	आंपू ६१४
प्रतिजन्म भवेत्तेषां	शाता १.२	प्रतिवर्षं प्रयत्नेन	आंपू १३७
प्रतिनित्यं पञ्चगव्यं	आं पू २००	प्रतिवातेऽनुवाते च	मनु २.२०३
प्रतिपक्षेष्टितस्तद्वत्क्षुर	कण्व ३०५	प्रतिवेद्ब्रह्मचर्यं द्वादशा	ब्र.या. ८.७३
प्रतिपत्पर्वषष्ठीषु	ल हा ४.१०	प्रतिवेदं द्वादशाब्द	व २.३.८६
प्रतिपत्पर्वषष्ठीषु नवमी	वाधू ३८	प्रतिवेदं ब्रह्मचर्यं	या १.३६
प्रतिपत् प्रभृति	औ ३.१११	प्रतिवेदसमाप्तौ तु	व २.३.१८६
प्रतिपत्प्रभृतिष्वेकां	दा ७२	प्रतिवेश्यानु वेश्यौ च	मनु ८.३९२
प्रतिपत् प्रभृतिष्वेतान्	.या १.२६४	प्रतिशयप्रदानं च	वृ.गौ. ६.५२
प्रतिपत्प्रभृतिह्येत	ब्र.या. ५.२०	प्रशिश्यं पादशौचं	व्यास ४.७
प्रतिपत्सु द्वितीया स्यात्	ब्र.या. ९.२	प्रतिश्रवमसम्भाषे	औ ३.३
प्रतिपच्चअमावस्या	ब्र.या. ९.६	प्रतिश्रवणसम्भाषे	मनु २.१९५
प्रतिपन्नं स्त्रिया देयां	या २.५०	प्रतिश्रुतं च भुक्तं च	वृ परा ७.२४३
प्रतिपन्नं स्त्रिया देवं	वृ हा ४.२४५	प्रतिश्रुत्य चयत् किंचिद्	वृ परा १०.३०१
प्रतिपादनसामर्थ्यं युक्त	शाण्डि १०.१०९	प्रतिश्रुत्य द्विजायार्थं	वृ परा १०.३००
प्रतिपाद्य परं ब्रह्म	कण्व २०६	प्रतिश्लोकेन पुष्पाणि	वृ हा ५.५४६
प्रतिप्रदानादातारः श्रद्धया	वृ.गौ. १.१०१	प्रतिषिद्धमनादिष्टं	या २.२६३
प्रतिप्रदानमपि वा दद्यात्	शाण्डि १.११४	प्रतिषिद्धेष्वसक्तं हि	शाण्डि १.१३
प्रतिभाव्यं वृथादानं	व १.१६.२६	प्रतिषेधे पिनेद्या तु	मनु ९.८४
प्रतिभूर्दापितो यत्तु	या २.५७	प्रतिष्ठत्येव किं तेन	लोहि ९०
प्रतिमाभंगकारी च	शाता ३.१८	प्रतिष्ठा कीर्तनाध्यायः	भार ७.१२१

प्रतिष्ठाप्य ततः काम	विश्वा ६.१६	प्रत्यब्द वत्सरादूर्ध्व	व २.६.३७५
प्रतिष्ठाप्यानलं कुर्याद्	आश्व १५.५२	प्रत्यभिलेख्यविरोधे	व १.१६.११
प्रतिष्ठासु च कर्तव्यो	व २.७.१०७	प्रत्यभिवोदं इतिकृत्य	बौधा १.२.७५
प्रतोदश्च समग्रन्थि	वृ परा ५.७४	प्रत्यार्थिनोऽग्रतोलेख्यं	या २.६
प्रतिसंवत्सरं त्वर्थाः	या १.११०	प्रत्यार्थिनोऽग्रतोलेख्यं	भार ९.४०
प्रतिसंवत्सरं पश्चात्	आं पू १०६७	प्रत्यहं कर्मकोयोगः	आश्व १.१८७
प्रतिसंवत्सर सिद्धि	आंपू ११३	प्रत्यहं जुहुयादन	भार ९.३६
प्रतिसंवत्सरं सोमः	या १.१२५	प्रत्यहं देशदृष्टैश्च	मनु ८.३
प्रतीचीमाद्यपास्तद्वदु	ब्र.या. ३.३५	प्रत्यहं प्रतिमाहं च	वृ परा ११.८०
प्रतुदान् जालपादांश्च	मनु ५.१३	प्रत्यात्मिकं तु दृश्येत	नारद १९.४२
प्रत्यक्परागपि राजेन्द्र	वृ.गौ. ६.११२	प्रत्यानीते तु तेनाथ तस्य	नारद १९.२४
प्रत्यक्ष परिभोगाच्च	नारद २.७५	प्रत्याब्दिके शतं जप्यं	वाधू २१३
प्रत्यक्ष चानुमानं च	बृह १२.१९	प्रत्याहारश्च योगश्च	वृ परा १२.३५६
प्रत्यक्ष चानुमानं च	मनु १२.१०५	प्रत्याहारस्य ध्यानस्य	बृह १२.४६
प्रत्यक्षलवणञ्चैव	व २.६.२१०	प्रत्याहारो विशेषस्तु	वृ परा १२.२५३
प्रत्यक्षवारक्याणानु	ब्र.या. १२.२३	प्रत्युपोषिताश्चैव	ब्र.या. ८.१३३
प्रत्यक्षश्रुतिमूलत्वादग्नि	कपिल २७९	प्रत्युच्चार्य ततोर्ध्वास्यं	नारद १९.४१
प्रत्यक्षः सर्वभूतानां	वृ परा १२.२२४	प्रत्यषे च प्रदोषे च	शंखलि २१
प्रत्यगासूर्यमालोक्य	विश्वा ७.१२	प्रत्यञ्चं कलशै स्नाप्य	वृ हा ६.३६३
प्रत्यगेव प्रयागश्च	बृ.गौ. १४.४९	प्रत्यञ्च जुहुयात्	वृ हा ५.४४८
प्रत्यग्दले धीमही च	भार ७.८६	प्रत्यञ्च पावमानीभिः	वृ हा ७.२८१
प्रत्यग्निं प्रतिसूर्यं च	मनु ४.५२	प्रत्यञ्च प्रणवाद्यन्तं	व २.६.३३७
प्रत्यग्निं प्रति सूर्यं	व १.६.११	प्रत्यञ्च वैष्णवै सूक्तै	व २.६.४१२
प्रत्यग्विद्विष्णो वृक	व २.७.७२	प्रत्येकं जुहुयात्	वृ हा ६.२३
प्रत्यङ्मुख सव्यम्	बौधा १.७.१३	प्रत्येकं प्रत्यहं प्राश्य	वृ परा ९.१४
प्रत्यङ् मुखाय विप्राय	वृ परा १०.३७	प्रत्येकं प्रयास्य	व १.१९.१३
प्रत्यञ्जलि समुच्चार्य	आश्व १.९६	प्रत्येकं सूक्तेन द्वयं	व २.७.७५
प्रत्यब्दकरणे चापि न तु	कपिल ६७५	प्रत्येकं शतमष्टौ च	वृ हा ७.१३४
प्रत्यब्दं पार्वणं कुर्यान्	व २.६.३७६	प्रत्येकमष्टसाहस्रं	व २.६.४०८
प्रत्यब्दं पार्वणश्राद्ध	वृ हा ८.३२५	प्रत्येकमष्टसाहस्रं	व २.७.७६
प्रत्यब्दं पार्वणे नैव	दा ६४	प्रत्येह चेदृशा विप्रा	मनु ४.१९९
प्रत्यब्दं यदुपाकर्म	कात्या २७.१७	प्रत्योकारमसौ कुवर्नक्षरं	वृ परा ४.४७
प्रत्यब्दमागतं प्रत्यासत्ति	आंपू १०३३	प्रत्योङ्कारवदार्षादि	वृ परा २.६९
प्रत्यब्दमास्तन्मास	आंपू ३४	प्रत्योङ्कारसमायुक्ताः	वृ परा २.१६५
प्रत्यब्दमेवं कुर्वीत	वृ हा ५.३३०	प्रथमः कथितस्सादृभिः	लोहि १०५

प्रथमं प्रणवोऽव्यक्त	वृ परा १२.२६७	प्रदक्षिणं नमस्कारं	वृ हा ७.१८०
प्रथमं भूपतेस्तस्मात्कृत्यं	वृ परा १२.१११	प्रदक्षिणं नमस्कारं	वृ हा ६.४०७
प्रथमं महिषीसंघं	वृ हा ७.७९	प्रदक्षिणं परामृज्य	वृ.गौ. ८.४९
प्रथमं सरस्वतीनाम्नी	व्या ११५	प्रदक्षिणप्रणामांश्च	भार १३.२८
प्रथमश्राद्धमेवो चुः श्राद्ध	आंपू ११०७	प्रदक्षिणं समावृत्या	बृ.या. ७.५७
प्रथमातस्य अकारो	बृ.या. २.२७	प्रदक्षिणंसमावृत्या	वृ.गौ. ८.२४
प्रथमा धर्मपत्नी च सुभागा	आंपू ४५८	प्रदक्षिणमनुब्रज्य	या १.२४९
प्रथमाधर्मपत्नी च	दक्ष ४.१५	प्रदक्षिणमुपावृत्य	ल हा ४.५०
प्रथमायां धर्मपत्न्या	लोहि १२४	प्रदक्षिणात्रयं कुर्याद्	आश्व १०.५८
प्रथमां विन्यसेद् वामे	वृ परा ४.१२५	प्रदक्षिणानमस्कारं जप	शाण्डि २.७८
प्रथमां विन्यसेद् वामे	वृ हा ५.१९६	प्रदक्षिणां ततः प्रत्यगूर्द्धा	भार १२.१९
प्रथमे पंचके पापी	कात्या २५.३	प्रदक्षिणीकृतातेन	वृ परा ५.२६
प्रथमे मासि संक्लेद्भूतो	या ३.७५	प्रदक्षिणेन चेकैन	वृ.गौ. ९.४०
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली	आंगिरस ३८	प्रदक्षिणे प्रणामे च पूजायां	शाण्डि २.८१
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली	अत्रिस ५.४९	प्रदद्यात् पितृतीर्थेन	शाता ६.२४
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली	परशर ७.१९	प्रदद्यादर्धकेभ्यो वै	आंपू २४८
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली	वृ परा ८.३१८	प्रदद्याद्वा पुष्पाणि	ल व्यास २.४१
प्रथमेऽह्नि चाण्डाली	आप ७.४	प्रदद्यान् तु हस्तेन	व १.१४.२७
प्रथमेऽह्नि चेदज्ञः किं कार्यं	कपिल ९४९	प्रदर्शनार्थमेतत्तु	या ३.२१६
प्रथमेऽह्नि षडात्र	आप ७.८	प्रदर्शयेन्मुखे देव्याः	भार ११.७५
प्रथमेऽह्नि तृतीये	दा २२	प्रद्युम्न मनिरुद्धश्च	वृ हा ५.१८८
प्रथमेऽह्नि द्वितीये वा	लघुयम ८७	प्रद्युन्न मनिरुद्धश्च	वृ हा ६.८४
प्रथमेऽह्नि निमन्त्रीत	ब्र.या. ३.४	प्रद्युम्नो रक्तवर्ण	वृ हा ७.११२
प्रथमेऽह्नि मन्त्रे च	ब्र.या. ४.२७	प्रदानशपथप्रोक्तमर्यादा	लोहि ७६
प्रथमोद्वाहपर्यन्तं	आश्व १५.६९	प्रदानसमये स्वस्य सन्तु	लोहि २७६
प्रथमोधान्यशैलस्तु	अ ८४	प्रदास्यति महाभागः	कण्व ३३५
प्रथितानि च पुष्पाणि	व २.६.३३	प्रदीपतापप्रकाशयै	बृह ९.१७४
प्रथिता प्रेतकृत्यैषा	मनु ३.१२७	प्रदीयतेऽस्मै मत्तातसंलब्धा	लोहि ५४६
प्रथितो भव सर्वेषां	आपू ५९८	प्रदुष्टपत्यक्तदारस्य	नारद १३.६१
प्रदक्षिणक्रियासक्तः	शाण्डि १.३४	प्रदूरीकृत्य तज्ज्ञाती	आंपू ३१०
प्रदक्षिणद्वयोज्वोराणीया	भार १८.६५	प्रदूषयन्ति तं दृष्ट्वा	कपिल ७७९
प्रदक्षिणन्तु त्रिः कुर्यात्	बृ.गौ. २०.२८	प्रदेयं शास्त्रमार्गेण	लोहि ४६०
प्रदक्षिणप्रकारेण	आश्व ९.११	प्रदेवत्रेति सूक्तेन	वृ हा ७.२६२
प्रदक्षिणं चरेत्पृथ्व्याः	विश्वा ५.३१	प्रदेशिन्यंगुष्ठयोरन्तरा	व १.३.६१
प्रदक्षिणं नमस्कारं	वृ हा ६.१३३	प्रदोषे श्राद्धमेकं स्याद्	कात्या ५.६

प्रधानकुम्भमादाय	व २.७.८३	प्रबलस्तेन कथितस्तास्मिन्	लोहि १३९
प्रधानदेवते चोक्त्वा	आश्व २.१०	प्रबूयात्पक्षतो यच्च	आंउ ६.१२
प्रधानं क्षत्रिये कर्म	या १.११९	प्रभवेत्पतितः सद्यः	आंपू १७९
प्रधानं पुंसवनं न	आश्व ४.१९	प्रभवेदपि ते नैव इदं	कण्व २२४
प्रधानं पुरुषः कालो	औ ३.५१	प्रभवेदिति तत्कर्त्ता	कपिल ३०९
प्रधानं पुरुषे योज्यं	बृह ९.१८४	प्रभवेद्धि विशेषेण	आंपू २२
प्रधानं वैष्णवं तेषां	वृ हा २.२२	प्रभाषादीनि तीर्थानि	वाधू २८
प्रधानं स तु विज्ञेय	बृ.या. ४.२५	प्रभुंजानोऽतिसस्नेहं	अत्रिस २९२
प्रधानस्याक्रियायत्र	कात्या ३.६	प्रभुविभुमनाद्यन्तं प्रपद्ये	विष्णु म ३०
प्रधानादेवं संभूतं	बृ.या. ३.२५	प्रभुः प्रथमकल्पस्य	मनु ११.३०
प्रधानहोमं कुर्वीत	लोहि ३८	प्रभूतकदलीचुतनालि	शाण्डि १.७५
प्रनष्टाधिगतं दव्यं	मनु ८.३४	प्रभूतसर्पिषान्यस्य	कण्व ७६८
प्रनू वाचं चिकितुषे	ब्र.या. ८.२१५	प्रभूते विद्यमाने तु	बृ.या. ७.६
प्रन्यामुच्चाभिवचनां	व २.४.५४	प्रभूतैर्धोदकग्रामः सर्व	आंपू १११२
प्रपतन्त्यतिघोरेषु नरकेषु	कपिल ५४१	प्रभूतैर्धोदक यव ससमित	बौधा २.३.५८
प्रपद्ये चरणौ तस्य	वृ हा ३.१२	प्रमदाद् धनिनस्तद्वदाधौ	नारद २.१०७
प्रपद्येत ततः शिष्यो	वृ हा २.१२२	प्रमाणाभिहितं यत्तु	आं उ १.४
प्रपद्ये पांजलिर्विष्णु	विष्णु म २६	प्रमाणं लिखितं भुक्ति	या २.२२
प्रपद्ये पुण्डरीकाक्ष	विष्णु म २७	प्रमाणमार्गं मार्गन्तो	पराशर ८.१६
प्रपद्ये वरुणं देवं	शंखा ९.३	प्रमाणानि च कुर्वीत	मनु ७.२०३
प्रपद्ये वरुणं देव	ब्र.या. २.१५	प्रमाणानि प्रमाणस्थैः	नारद २.६४
प्रपद्ये सूक्ष्ममचलं	विष्णु म ३१	प्रमात्ययं सद्य एव तस्मात्	कपिल ७२९
प्रपन्नं साधयन्नर्थ	या २.४१	प्रमादाकरणे कृत्स्ने	आंपू १४
प्रपन्नश्शरणं कश्चितं कथं	नारा ३.४	प्रमादात् कुर्वतां	बृ.या. ७.३४
प्रपातनं प्रकथितं ब्राह्मणीनां	लोहि ७०४	प्रमादात्षोडशो वापि	ब्र.या. ७.२३
प्रपात विष वह्न्यम्बु	वृ परा ८.१९५	प्रमादाद् धनिनो यत्र	नारद २.२११
प्रपालयेत्तांयत्नेन स्वयं	कपिल ६१३	प्रमादाद्यदि वा ज्ञानात्	वृ.गौ. १२.१९
प्रपास्वरण्ये झढकस्य	अत्रिस २३२	प्रमादान्नाशितं दाप्यः	नारद ४.५
प्रपास्वरण्येषु जलेऽथ	आप २.२	प्रमादक्षन्मद्यः सुरां	अत्रिस २०९
प्रपितामहपूर्वं स्यात्त	आपू ६७०	प्रमादेनाप्रयत्नेन कदाचित्	विश्वा ३.७२
प्रपितामहमेवं च	आंपू ११०५	प्रमादेन ह्यपनयेत् स्यातां	आंपू ३८२
प्रपेदिरेयेऽस्य	वृ परा ११.२९२	प्रमापणे प्राणभृतां	पराशर ९.२६
प्रफुल्लपद्मपत्राभं	व २.७.७५	प्रमाप्रदस्तथाश्वाश्च	वृ परा ११.४७
प्रबद्धा रज्जुदोषेण	वृ परा ८.१४०	प्रयच्छत्यमलं लोकं	शाण्डि ३.५२
प्रबलं वैदिकं कर्म	कण्व २९५	पयच्छन्ति द्विजाग्रेभ्यो	वृ.गौ. ५.९३

प्रयच्छन्ति नरा ये च	वृ.गौ. १०.८८	प्रविशन् परदेशे च	वृ परा १२.३७
प्रयच्छेन्नग्निकां कन्या	व १.१७.६२	प्रविशेत् स महातेजा	वृ.गौ. ७.१२४
प्रयच्छेन्मध्यमं पिण्डं	आंपू ८६९	प्रविशेयुः समालम्भ	या ३१४
प्रयतं प्रयतो नित्यम्	वृ.गौ. ५.१००	प्रविश्य पर्वदं ते वै	वृ परा ८.७८
प्रयतो वैश्वदेवान्ते	कण्व ३७४	प्रविश्य सर्वभूतानि	मनु ९.३०६
प्रयत्न आकृतिर्वर्णः	या ३.७४	प्रविष्टपरकायेन यदि	आंपूर २२४
प्रयत्नाद्वापि कूपेषु	दा १०२	प्रविष्टपरवर्ष्माणं	आंपू २२५
प्रयत्नेन हि दातव्यः	वृ.गौ. ३.५३	प्रविषुः अन्नः जले यः	वृ.गौ. ५.११३
प्रयद् इति सूक्ताभ्यां	वृ हा ५.४२४	प्रवृत्तचक्रताञ्जैव	या १.२६६
प्रयोगे सेतुबन्धादि	वृ हा ६.२२६	प्रवृत्तं कर्म संसेव्यं	मनु १२.९०
प्रयाति तत्परं दिपैः	शाण्डि ५.२३	प्रवृत्तं सेवमानस्तु	बृह ११.४२
प्रयुक्तैरप्रयुक्तैर्वा भगवत्	शाण्डि ५.१४	प्रवृत्ति वचनात् कुर्वन्	प्रजा १४६
प्रयुञ्जते तदोङ्कारं	शाण्डि ५.६५	प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च	बृह ११.३९
प्रयुतेनाभिषेकेन शम्भो	नारा १.३४	प्रव्रज्यावसितो राज्ञो	या २.१८६
प्रयोगकाले मंत्राणं	भार ५.५३	प्रशंसावृत्तिको जीवेद्	औसं ८
प्रयोगकाले मंत्राणि	भार ६.१४१	प्रशस्तपात्रे चान्नु	५.२८
प्रयोगे चोपसंहारे प्राणायामं	विश्वा ३.३९	प्रशस्ताचरणं नित्यम	अत्रिस ३६
प्ररोहत्यग्निमादाय	का ८	प्रशस्तानीति नोचुर्हि	लोहि १७०
प्ररोहिशाखिना शाखा	या २.२३०	प्रशस्य कीदृशो विप्रो	वृ.गौ. १४.१०
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव	विश्वा ६.६३	प्रशासितारं सर्वेषां	मनु १२.१२२
प्रालिम्प्य मधु सर्पिर्भ्यां	वृ परा ५.८४	प्रशासितारं सर्वेषां	बृह ११.५५
प्रवदन्ति महात्मान् नदीं	कपिल ९९३	प्रश्ने द्वितीये देवा वै	कण्व ५२६
प्रवदन्त्यन्यथा केचित्	वृ परा १२.३०६	प्रसंस्पर्शाल्लोचनयो	औ २.२४
प्रवदिष्यन्ति तां वाचं पितृ	कपिल ७१५	प्रसक्ते सति तैरेतच्छाब्द	कपिल ६२
प्रवदेत्तेन मनुना यज्ञ	आंपू ८९९	प्रसन्नांक्षीरिणो पुण्यां	वृ.गौ. ६.१६८
प्रवः पान्तमिति सूक्तेन	वृ हा ८.२३६	प्रसन्नात्माभवेत्कर्ता	आश्व ३.१३
प्रवरः कथितः सद्	आंपू १०४	प्रसन्नो नित्यमनेन	वृ हा ५.५६०
प्रवराग्रन्थिभेदश्च	ब्र.या. ८.७७	प्रसन्नरजेति सूक्तं वै	वृ हा ८.१४
प्रवराग्रन्थिभेदश्च	ब्र.या. ८.२०	प्रसवं सूतकं प्राहुरशौचं	वृ परा ८.२
प्रव (वे) शं सर्वतीर्थानां	वृ.गौ. २०.८	प्रसवे गृहमेधी तु न	पराशर ३.३०
प्रवासयेत् स्वराष्ट्रात्तु	वृ हा ४.१८४	प्रसवे च द्विजातीनां	वृ परा ८.४९
प्रवासयौच्छिक्षयेद्वा	कपिल ५८६	प्रसह्यधातिनश्चैव	या २.२७७
प्रवासस्थैः वनस्थैः वा	वृ.गौ. ५.३२	प्रसह्य दास्यभिगमे	या २.२९४
प्रवासे यजमानस्य	कण्व ३७०	प्रसह्यहरणादुक्तो	नारद १३.४३
प्रवाहनादिकर्माणि	आंपू ८१	प्रसह्य हरणाद्वाक्षस	बौधा १.११.८

प्रसादस्तीर्थं सैवा च	वृ हा ८.३३५	प्राक्संध्यामध्यसंध्या	भार ६.५
प्रसादो द्विविधो ज्ञेयो	वृ परा ८.८०	प्राक् सायमाहुते प्रातः	कात्या २७.८
प्रसादो भवता कार्यं	कपिल ७०	प्रागग्रेषु कुशेष्वेव	व २.३.१५०
प्रसाद्यतामितीत्युक्त्वा	प्रजा ६६	प्रागग्रेषु समासीनं	वृहा २.१२४
प्रसाधनोच्छादन स्नापन	बौधा १.२.३४	प्रागग्नौकरणं दद्याद्वा	वृ परा ७.२१६
प्रसाधनोच्छादन	बौधा १.२.३६	प्रागग्रमुदगग्रंवाशुचौ	भार १८.३८
प्रसाधनोपचारज्ञमदासं	मनु १०.३२	प्रागग्रमुदगग्रंवा स्थापये	भार १८.१०७
प्रसारयेदुदक्संस्थानं	आश्व २.१४	प्रागग्रेष्वथ दर्भेषु	कात्या ३.११
प्रसारितं च यत्पण्यं	व १.३.४५	प्रागग्रावभितः पश्चाद्	कात्या १५.२०
प्रसार्यं बाहू पादौ च	वृ हा ४.१२८	प्रागग्रे द्वे पवित्रे तु	आश्व १.८६
प्रसीद मम नाथेति	वृ हा ५.१७४	प्रागचामेदमृतस्यात्	विश्वा २.२
प्रसीद मे महर्षे त्वं	नारा ५.२	प्रागादिप्रत्यगंतस्य	व्या २१२
प्रसूता वाप्रसूता वा	नारद १३.४९	प्रागादिष्व्वाहुति द्वे द्वे	आश्व १.१२६
प्रसूतिकाले संप्राप्ते	पराशर ३.१९	प्रागुक्तेन प्रयोगेण	वृ परा १२.२३९
प्रसृतं यवशस्येन	आष ९.४	प्रागुदीच्याञ्च सदृशं	वृ हा ४.९८
प्रस्थवामि नवान्यानि	ब्र.या. १२.२७	प्रागेव केतितान्विप्रां	वृ परा ७.१७२
प्रस्था द्वात्रिंशतिर्दोणः	पराशर ६.६८	प्रागदक्षिणोत्तरप्रत्य	भार ६.७४
प्रहर्षयेद्वलं व्यूह्य	मनु ७.१९४	प्रागदुकृतेष्वग्निषु	औ ३.६३
प्रहीणद्व्याणि राज	व १.१६.१७	प्रागदृष्टदोषशैलूष	नारद २.१६०
प्रहृत्य पृष्ठे हस्तेन	लोहि ६११	प्रागं द्वारं सर्वं वर्णना	वृ हा ६.९६
प्रहृष्टवदनं दत्त्वा वाक्यं	शाण्डि ४.५७	प्राग्वद्विप्रार्चनं कार्यं	वृ परा ७.१९६
प्रहृष्टः सुमना भूत्वा	वृ.गौ. २२.३६	प्रागवा पत्यङ्मुखो वाऽपि	वृ हा ५.२६१
प्रह्वाङ्गो भीतवद्भोगैस्त	शाण्डि ४.२३	प्रागवा ब्राह्मणे तीर्थेन	व २.३.९९
प्राकारोर्ध्वे विषमप्रदेशे	अत्रिस २३१	प्रागवा ब्राह्मणे तीर्थेन	ब्र.या. ८.५२
प्राकारस्य च भेत्तारं	मनु ९.२८९	प्राग्विनशनात् प्रत्य	बौधा १.२७
प्राकारे शंखचक्र	व २.७.४१	प्राग्वोदग्वाऽऽसीनः	व १.३.२८
प्राकृतं च कुशास्त्राणि	वृ परा ६.२७५	प्राङ्कसीनः समाचम्य	आश्व १.१८२
प्राकृत्ये सति चैवायं	वृ परा २.१४१	प्राङ्नाभिवर्धनात् पुंसो	मनु २.२९
प्राक्कूलान् पर्युपासीन	मनु २.७५	प्राङ्मध्यम विजानीयात्	भार २.६
प्राक्तानात् कर्मणः पुंसां	वृ परा ११.३०२	प्राङ्मुख उदङ्मुखो	बौधा १५.११
प्राक् तु तेन समासीनो	ल व्यास १.२४	प्राङ्मुखऽनानि भुञ्जीत	व १.१२.१५
प्राक्पूर्वैदिति नामानि	भार २.१२	प्राङ्मुखं तु समासीनं	वृ हा २.१८
प्राक्प्रातराशात्कषी	बौधा २.२.८२	प्राङ्मुखश्चेद् दक्षिणं	बौधा १.७.१२
प्राक्संस्कारं प्रमीतानां	व १.११.२०	प्राङ्मुखश्चरणौ हस्तौ	भार ५.३७
प्राक्संस्थानन्तरालं	आश्व १.१२५	प्राङ्मुखश्चैव पूर्वाह्णे	ब्र.या. ८.३५७

प्राङ्मुखस्तानि भुंजीत	औ ३.९७	प्राजापत्यं स्विष्टकृतं	व्यास ३.३०
प्राङ्मुखी कन्यका	आश्व १५.२०	प्राजापत्यमदत्वाऽश्व	मनु ११.३८
प्राङ्मुखोदङ्मुखो वापि	ल हा ४.६५	प्राजात्यमसत्याच्चेत्	अत्रिस ५.५४
प्राङ्मुखोदङ्मुखो वापि	वाधू २९	प्राजापत्यर्क्षसंयुक्ता	वृ हा ५.४७१
प्राङ्मुखो दैवते प्रोक्तः	व २.६.२९२	प्राजापत्याख्य काण्डानि	कण्व ५१२
प्राङ्मुखो निर्वपेत	औ ५.९७	प्राजापत्यात्तु होतव्यं	व २.३.१०१
प्राङ्मुखोऽन्नानि भुंजीत	औ १.६२	प्राजाप्तयानि कुर्वीत	शाता २.२१
प्राङ्मुखोऽमरतीर्थेषु	वृ परा ७.१७९	प्राजापत्यानि चत्वारि	शाता २.४१
प्राचीतरं तु यत्स्थानं	भार २.७७	प्राजात्यां निरुप्येष्टि	मनु ६.३८
प्राचीनगर्भतमृषिं	बृह १२.७	प्राजापत्येन तत्तुल्यं	वृ परा २.९२
प्राचीनवीतकः पित्र्यं	औ ५.४२	प्राजापत्येनतीर्थेन	व २.४.६२
प्राचीनावीतमन्यस्मि	भार १५.९५	प्राजापत्येन तीर्थेन	शंख १०.३
प्राचीनावीतिनाकार्यं	कपिल २५६	प्राजापत्येनमंत्रेण	व २.४.११७
प्राचीनवीतिना कार्यं	कात्या २९.१३	प्राजापत्येन मुख्येन	कण्व ५११
प्राचीनावीतिना भूत्वा	ब्र.या. ४.१३२	प्राजापत्येन शुद्धि स्यात्	औ ९.३३
प्राचीनवीतिना सम्यग्	मनु ३.२७९	प्राजापत्येन शुद्ध्येत	अत्रिस २००
प्राचीनवीतिना हुत्वा	व २.६.२८५	प्राजापत्ये मुहूर्ते	व १.१२.४५
प्राचीनप्रतीच्योस्थं मध्ये	भार २.२६	प्राजापत्ये मुहूर्ते	व १.१७.५२
प्राचीं च दक्षिणांचाध	भार ६.१२४	प्राजापत्यैस्त्रिभिः	बृ.या. ४.२५
प्राचीं विश्वजिते सूक्त	वृ हा ६.५५	प्राजाप्योत्तरेन्द्राग्नेर्दक्षिणे	ब्र.या. ८.२९३
प्राचीमध्यं विनान्यत्र	भार २.२१	प्राज्ञ कुलीनं शूरं च	मनु ७.२१०
प्राच्यादिशस्तधामन्त्र	कण्व ८८	राज्ञः क्षयाहे कुर्वीत	ब्र.या. ४.३४
प्राच्योदीच्यांगसहितं	नारा ३.१३	प्रापं प्राचमुदगने	कात्या ८.१५
प्राजकश्चेद्भवेदाप्तः	मनु ८.२९४	प्रांजला सप्तहस्ता	वृ परा ५.७०
प्राजापत्यकरेणैव प्रासाद	भार २.६५	प्राज्ञलिंविधभृत्याश्च	ब्र.या १.२९
प्राजापत्यत्रयं कुर्यान्त	ब्र.या. ८.३६	प्राणदानं च यो दद्यात्	वृ परा १०.२४५
प्राजापत्यद्वयं कृत्वा	नारा १.२३	प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य	विश्वा ६.२५
प्रादजापत्यं चरेज्जग्ध्वा	औ ९.३१	प्राणरज्वा न्यसेदग्निं	वृ परा ६.१०३
प्राजापत्यं चरेद् विप्रः	आप १.२०	प्राणसंयमनेष्वेता	वृ परा २.६८
प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं	या ३.२५९	प्राणस्त्वग्निस्तथाऽऽदि	बृह ९.१३८
प्राजापत्यद्वयं तस्य	देवल ५४	प्राणस्य त्रिपुटीग्रास	ब्र.या. २.१७६
प्राजापत्यद्वयेनापि	पराशर १२.६	प्राणस्यान्नमिदं सर्वं	मनु ५.२८
प्राजापत्यं चरेन्मृत्सा	अत्रिस २२३	प्राणस्यायमनं कृत्वा	बृ.या. ८.४६
प्राजापत्यं विशः पत्या	वृ परा ८.२२७	प्राणस्यायमने चैव	बृ.या. ४.१०
प्राजापत्यं सकृच्चैवं	शाता २.४२	प्राणाग्निहोत्रविधिना	वृ परा ६.८५

प्राणाग्निहोत्रविधिना	बृह १.१३९	प्राणायामत्रयं कुर्यात्	विश्वा १.६७
प्राणाग्नि होत्र समये	वृ हा ५.९२	प्राणाध्यामत्रयं प्रातः	विश्वा ३.२
प्राणात्यये तथा श्राद्धे	या १.१७९	प्राणायाम प्रयोगे च	ब्र.या. ३.१६
प्राणाद्येवाग्निहोत्रादि	वृ परा ६.१११	प्राणायामफलं हत्वा	वृ परा ६.१३१
प्राणानाग्रंत्थिरसीत्य	भार १.७.२५	प्राणायाम विधाने न	व २.६.६३
प्राणानामयुताभ्यां	वृ परा ४.४५३	प्राणायाम विधाने न	वृ हा ४.६१
प्राणानायम्य संकल्प्य	आश्व १.३४	प्राणायामशतं कार्यं	बृ.या. ८.३६
प्राणानायम्य संकल्प्य	आश्व १.८३	प्राणायाम शतं कार्यं	या ३.३०५
प्राणानायम्य संकल्प्य	आश्व २.४	प्राणायामशतं कुर्युः	बृ.या. ८.४०
प्राणानायम्य संकल्प्य	आश्व ९.३	प्राणायामशो वा शतकृत्वः	बौधा २.४.८
प्राणानायम्य संकल्प्य	आश्व १५.७	प्राणायामस्तथा ध्यानं	दक्ष ७.२
प्राणानायम्य संकल्प्य	आश्व २३.५	प्राणायामस्तथा संध्या	बृ.या. १.२६
प्राणानायम्य संकल्प्य	भार ५.३३	प्राणायामस्यमात्रां	ब्र.या. २.५४
प्राणानायम्य सम्प्रोक्ष्य	या १.२४	प्राणायामान्धारयेत्	व १.२६.१
प्राणनाशस्तु कर्तव्यो	व्यास ४.२५	प्राणायामान् पवित्रांश्च	अत्रिस १.६
प्राणान् त्यजति यो विप्रो	वृ.गौ. ५.११२	प्राणायामान् पवित्राणि	व १.२५.४
प्राणापानव्यानानि अर्क	भार १९.३५	प्राणायामाः ब्राह्मणेन	ब्र.या. २.६४
प्राणापानसमानबिन्दुसहितं	विश्वा ३.९	प्राणायामा ब्राह्मणेन	बृ.या. ८.२९
प्राणापानादिसंयुक्त प्राणायामं	विश्वा ३.४३	प्राणायामां (स्तु) स्तथा	अत्रि २.१
प्राणायामं तथा ज्ञात्वा	विश्वा ३.२४	प्राणायामी जले स्नात्वा	या ३.२९०
प्राणायामत्रयं कृत्वा	व २.३.११०	प्राणायामे च संप्राप्ते	विश्वा ३.३७
प्राणायाम त्रयं कृत्वा	भार ८.११	प्राणायामे तथा ध्याने	बृ.या. ४.३७
प्राणायामत्रयं धीमान्	ल हा ४.३९	प्राणायामेन वचनं	ल हा ७.४
प्राणायामन्तः कृत्वा	बृ.गौ. १६.१२	प्राणायामैः पवित्रैश्च	अत्रि १.५
प्राणायामन्तु यत्काले	वृ.गौ. ८.११४	प्राणायामैः पवित्रैश्च	व १.२५.३
प्राणायामः ब्राह्मणस्य	मनु ६.७०	प्राणायामैर्दहित् दोषात्	अत्रि १.१०
प्राणायामं च पञ्चाणैः	विश्वा ६.१२	प्राणायामैर्दहिदोषान्	मनु ६.७२
प्राणायामं च विधि	व २.३.१३१	प्राणायामैर्दहिदोषान्	बृ.या. ८.३२
प्राणायामं प्रकुर्वीतं	विश्वा ६.३४	प्राणायामैर्य आत्मानं	अत्रि २.३
प्राणायामंततः कुर्याद्	ब्र.या. ४.६५	प्राणायामैर्य आत्मानं	व १.२६.४
प्राणायामं तथा ध्यानं	बृ.या. १.८	प्राणायामैस्तदभ्यस्य	वृ परा १२.२१२
प्राणायामं प्रकुर्वीत	विश्वा ३.७०	प्राणायामै स्त्रिभिः पूर्वं	औ ३.४०
प्राणायामं प्रकुर्वीत	विश्वा ६.३३	प्राणेभ्योजुहुयादनं	व २.६.२०५
प्राणायामं विना यस्तु	विश्व ३.४०	प्राणिलोके ततस्तनु	आं पू ७११
प्राणायामं स्मरेदन्यं	विश्वा ३.६०	प्राणि वा यदि वाऽप्राणि	मनु ४.११७

प्राणोऽन्नमस्मिन्	वृ परा ६.१८७	प्रातः सन्ध्यामुपासीत	वाधू ९६
प्राणो व्यानस्तथाऽपानः	बृह ९.१४१	प्रातः सायं जपेन मंत्र	आश्व १.५८
प्राणो व्यानो हापानश्च	बृह ९.१३२	प्रातः सायं दिनार्द्धञ्च	आप १.१४
प्रातःकाल इति ज्ञात्वा	विश्वा १.१८	प्रातः सायमयाचितं	बौधा २.१.९२
प्रातःकाल जपं कुर्यान्नि	विश्वा १.६	प्रातः सूर्याहुत होम प्राजापत्य	व २.४.६४
प्रातःकाले च सायाह्ने	विश्वा ७.२	प्रातः स्नातोऽपि विधवत	शाण्डि ३.५७
प्राप्तः काले शुचि स्नात्वा	व्या ११०	प्रातः स्नात्वा विधानेन	वृ हा २.१०७
प्रातः कृत्यं समाप्याथ	औ ३.९६	प्रातः स्नात्वा विधानेन	वृता ७.२४९
प्रातः दृष्टदिगानी तै	वृ परा १२.१६०	प्रातः स्नानं प्रशंसन्ति	दक्ष २.१२
प्रातः पादं चरेच्छूद्रः	आप १.१५	प्रातः स्नानेन पूयंते	ल व्यास १.७
प्रातः मध्याह्नयोरप्सु	आश्व १.४१	प्रातः स्नायो हि यो विप्रः	वृ परा २.९७
प्रातरितक्रमेऽरूपवास	बौधा २.४.२२	प्रातिभावं मृणं साक्ष्यं	वृ हा ४.२४३
प्रातरामान्त्रितान् विप्रान्	कात्या २.१	प्रातिभावं वृथादानमाक्षिकं	मनु ८.१५९
प्रातरुत्थाय कर्त्तव्य	दक्ष २.१	प्रातिलोम्येन यो याति	दक्ष १.१२
प्रातरुत्थाय यो मर्त्यो	वृ.गौ. ९.३५	प्रातिलोम्ये महत्पापं	वृ.य. ४.४८
प्रातरुत्थाय यो विप्रः	बृ.या. ७.११७	प्राथम्येन पुरस्कृत्य	लोहि १९
प्रातरुत्थाय यो विप्रः	दक्ष २.१०	प्राथम्येनैष ददभोक्तुः	लोहि ४४४
प्रातरुत्थाय यो विप्रः	वाधू ९८	प्रादुर्भावगुणं चापि	शाण्डि २.४
प्रातरुत्थाय यो विप्रः	विश्वा १.३८	प्रादुष्कृतेष्वग्निषु तु	मनु ४.१०६
प्रातरुत्थायसने हुत्वा	व २.४.१०९	प्रादेशद्वयमिध्मस्य	कात्या ८.१९
प्रातरेव हि दोग्धव्या	वृ परा ५.८	प्रादेशमात्रकाः सर्वा	वृ परा ११.५०
प्रातरौपासनं कुर्यात्	व २.६.१२३	प्रादेशमात्र तपते	बृह ९.१७५
प्रातरौपासनं हुत्वा	आश्व २.२	प्रादेशमात्रौ कौशेयो	वृ हा ४.३८
प्रातरौपासने हुत्वा	वृ हा ८.६२	प्रादेशान्नाधिका नो न	कात्या ८.१८
प्रातरौपासनाग्नेस्तु	आश्व २३.३	प्रादेशिन्या पैतृकन्तु	व २.३.१००
प्रातर्मध्याह्नकाले	विश्वा ८.२२	प्राधानानैव निश्चित्य	लोहि १४७
प्रातर्मध्याह्नकाले तु	विश्वा ६.६९	प्राधान्यं पिण्डदानस्य	कात्या २९.९
प्रातर्मध्याह्नयो स्नात्वा	विश्वा १.९५	प्राधान्येनैव चोक्तानि	कण्व ४३९
प्रातर्मध्याह्नयो स्नानं	विश्वा १.९१	प्रापणं भगदमुक्तं लब्ध्वा	शाण्डि ४.७५
प्रातर्वा यदि वा सायं	वृ परा ६.१७४	प्रापणं साधितुं नित्य	शाण्डि ४.७४
प्रातः संक्षेपतः स्नानं	कण्व १६२	प्राप्तमंत्र स्ततः शिष्य	वृ हा २.१३७
प्रातः सतारकां संध्यां	भार ६.१५६	प्राप्तमूत्रपुरीषस्तु न	वृ.गौ. १२.१६
प्रातः संध्यां उपास्याग्नि	आश्व १०.५३	प्राप्तयतो स्त्रियं भर्ता	व २.४.११८
प्रातः संध्यां सनक्षत्रा	बृ.या. ४.५०	प्राप्ता देशाद्धनक्रीता	नारद १३.५२
प्रातः सन्ध्यां सनक्षत्रा	वाधू ७	प्राप्तान् भावगतास्तत्र	शाण्डि ४.४४

प्राप्तन्येव भवन्त्यस्या	लोहि ४७२	प्राथश्चित्तं पुरश्चैव	अत्रिस २०७
प्राप्ता भवेयुः तत्कुल	कपिल ७७१	प्रायश्चित्तं प्रकुर्वीत	वृ हा ६.४३६
प्राप्तिं निरुक्तिदिनभागे	भार ११.४३	प्रायश्चित्तं प्रदातव्यं	वृ हा ६.२८५
प्राप्ते द्वादशे वर्षे	यम २२	प्रायश्चित्तं प्रयच्छन्ति	पराशर ८.२७
प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे	बृ.य. ३.२०	प्रायश्चित्तं भवेत् पुंसः	पराशर ११.४१
प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे	पराशर ७.७	प्रायश्चित्तं वाऽप्यपदिश्य	व १.१७.५८
प्राप्ते द्वादश.वर्षेऽत्र	वृ परा ७.३६५	प्रायश्चित्तं विधाया	आश्व ९.२०
प्राप्ते नृपतिना भागे	या २.२०४	प्रायश्चित्तं विशिष्टं	वृ हा ७.१३३
प्राप्त्युपायं फलञ्चैव	वृ हा ८.१५१	प्रायश्चित्तं सदा दद्याद्	पराशर ८.३७
प्राप्त्याद् वैष्णवं	वृ परा ११.३०५	प्रायश्चित्तं समाख्यातं	देवल ७२
प्राप्तुवन्तु भवन्तश्च	आंपू ७९२	प्रायश्चित्तं समारभ्य	देवल २४
प्राप्तुवंत्यनिशं हर्ष	कपिल १८८	प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि	देवल ५
प्राप्नोति सूतकं गोत्रे	पराशर ३.९	प्रायश्चित्तमकुर्वाणाः	या ३.२२१
प्राप्यते चोपभोगार्थ	बृ.या. ३.२३	प्रायाश्चित्तमकृत्यानां	वृ हा ८.८२
प्राप्य देशं च कालं च	आंउ ३.८	प्रायश्चित्तमिदं कुर्याद्	वृ हा ७.१०५
प्राप्य विप्रोऽप्यविधिवत्	औ ३.३७	प्रायश्चित्तमिदं गुह्य	वृ हा ५.३६४
प्रामाणिको हितद्विन्ने	आंपू ८४७	प्रायाश्चित्तमिदं प्रोक्तं	वृ हा ७.१३२
प्रायः किञ्जल्पनैर्बधैः	भार १३.३७	प्रायश्चित्तमुपक्रम्य	बृ.य. २.७
प्रायशोखिलमंत्राणां	भार ६.१९	प्रायश्चित्तरपैत्येनो	वृ हा ६.१६७
प्रायश्चित्तक्रियाहेतो	आंपू ११	प्रायश्चित्तविशेषं तु पश्चात्	वृ हा ८.३०१
प्रायश्चित्तन्तु तस्यैव	वृ हा ६.२१५	प्रायश्चित्तं विहीनं तु	देवल ११
प्रायश्चित्तनिमित्तेवा	अ ११७	प्रायश्चित्तं विहीनानां	शाता १.१
प्रायश्चित्तप्रणेतारः	आंउ ४.४	प्रायश्चित्तशतैश्चापि तीर्थ	कपिल ९७१
प्रायश्चित्तं त. कृत्वा	लघुयम ६३	प्रायश्चित्तसमं चित्त	आंउ ४.२
प्रायश्चित्तं चतुष्पादं	आंउ १.३	प्रायश्चित्तस्य पादन्तु	संवर्त १३९
प्रायश्चित्तं चरेद् विप्रो	पराशर १०.३९	प्रायश्चित्तादि दर्तिहि	व २.४.१००
प्रायश्चित्तं चिकीर्षति	मनु ११.१९३	प्रायश्चित्ताद्याहुतयोहो	व २.४.१०३
प्रायश्चित्तं तु कुर्वाणाः	मनु ९.२४०	प्रायश्चित्तपानोद्या सा	कपिल ९०२
प्रायश्चित्तं तु तस्मैव	अ १४५	प्रायश्चित्तार्थं सहसा	वृ हा ७.२३७
प्रायश्चित्तं तु यत्प्रोक्तं	अ १४२	प्रायश्चित्तार्थमपि वा	वृ हा ७.६
प्रायश्चित्तं दृश्यते न	आंपू ९	प्रायश्चित्तावसाने तु	देवल २९
प्रायश्चित्तं द्वितीयार्थं	विश्वा ७.७	प्रायश्चित्ताहुती हुत्वा	व २.६.३३६
प्रायश्चित्तं न कुर्याद्य	कात्या २३.५	प्रायाश्चित्तीयतां प्राप्य	मनु ११.४७
प्रायश्चित्तं न यत्प्रोक्तं	वृ परा ८.३४१	प्रायश्चित्ते कृते विप्रो	अ ४३
प्रायश्चित्तं नास्ति तेषां	वृ हा ६.१८७	प्रायश्चित्ते चतुर्विंश	विश्वा ३.६७

प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे
 प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे
 प्रायश्चित्ते तत्रश्चीर्णे
 प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे
 प्रायश्चित्ते तथा चीर्णे
 प्रायश्चित्ते तु चरिते
 प्रायश्चित्ते यदा चीर्णे
 प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने
 प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने
 प्रायश्चित्ते ह्युपक्रान्ते
 प्रायश्चित्तैरपैत्येनोयद्
 प्रायश्चित्तोक्तमन्त्राणां
 प्रायेण धर्मतो वृद्धि
 प्रायेण मरणं नाम
 प्रायेणाकृतकृत्यत्वाद् भूय
 प्रायो नाम तपः प्रोक्ते
 प्रारम्भकर्मणश्चैव
 प्रारम्भ व्रतमध्ये तु
 प्रारंभो वरणं यज्ञे
 प्रारम्भो वरणं यज्ञे
 प्रारेवमुपासित्वा प्रात्
 प्रार्थनासु प्रतिप्रोक्ते
 प्रार्थितः संप्रदानेन
 प्रावीण्यं प्रापणं नित्यं
 प्रावृत्य परिधायाथ
 प्रावृत्य वाससा वाचं
 प्रावृष्य आकाशशायी
 प्राशनं यत्पुंसवनं
 प्राशान्ति अत्रि अम्बुपातेन
 प्राशयित्वाऽग्नि वर्णन्तु
 प्राशयित्वा त्रिराचम्य
 प्राशयेत्त हिरण्येन
 प्राशयेदग्नौ तदन्नन्तु
 प्राशयेद्दधिसक्तुंश्च
 प्राशयेद्भोजयेन्नित्यं

लघुयम ६१
 परशर १०.२३
 पराशर १.४
 पराशर ८.४८
 वृ हा ६.४३९
 मनु ११.१.८७
 आंड ६.९
 पराशर ८.८
 आंड २.६
 यम १२
 या ३.२२६
 कण्व १२०
 कपिल ७४९
 वृ.गौ. ८.५
 वृ.गौ. ८.६
 आंड ४.१
 आश्व १५.७३
 वृ हा ६.२३४
 दा १३५
 आश्व १५.७४
 भार ६.१५७
 कात्या ४.९
 शंख ४.५
 कपिल ६३३
 आश्व १.३१
 व २.६.८
 शंख ६.६
 आश्व ४.१७
 वृ.गौ. ६.१२
 वृ हा ६.२७७
 व २.६.४७
 आश्व ५.३
 औ ५.२९
 आश्व १२.१०
 कपिल ५७७

प्राशयेन प्रधन्वेन
 प्राशितं बलिदानञ्च
 प्रासादं कारयित्वा
 प्रासादं पर्णशालां वा
 प्रासादा पाण्डराभ्राभाः
 प्राह्णेशुचि शुचौ देशे
 प्रियंगुपप्रसंयुक्तं
 प्रियंवदात्मनो नित्यं
 प्रिय वा यदिवा द्वेष्यः
 प्रियाप्रियपरिष्वङ्गः
 प्रियासूक्तं समुच्चार्य देवीं
 प्रियेषु स्वेषु सुकृतं
 प्रियेषु स्वेषु सुकृत
 प्रियो वा यदि वा द्वेष्यो
 प्रियो वा यदि वा द्वेष्यो
 प्रीणाति तर्पयन्त्येनं
 प्रीणन्ति पितरः सर्वे
 प्रीणयेदश्वशिरसं
 प्रीणिताः पितरस्तेन
 प्रीतये वासुदेवस्य
 प्रीतये सर्वयज्ञस्य
 प्रीतिमानानृशंस्यार्थ
 प्रीतिदत्त श्राद्धकालमहं
 प्रीत्यासन्नस्सपिण्ड
 प्रीत्ये विद्धि राजेन्द्र
 प्रीयतां धर्म राजेति
 प्रीयतां धर्मराजेति
 प्रीयन्तां पितरः पश्चात्
 प्रेक्षणं शशिनोऽर्कस्य
 प्रेतकार्यस्पर्शमात्र स्नात्वा
 प्रेतकृत्यैकभिन्नेषु
 प्रेतत्वाच्च न निर्मुक्त
 प्रेतपत्नी षण्मासान्
 प्रेतपूर्वादिकं वृद्धि
 प्रेत भूतादिनामानि

ब्र.या. ८.२०८
 वृ.गौ. ८.१२
 शाता २.४४
 शाण्डि १.७८
 वृ.गौ. १२.५३
 भार १५.४४
 वृ परा १०.९०
 शाण्डि ४.४९
 वृ.गौ. ६.७१
 पु २०
 विश्वा ७.२०
 मनु ६.७९
 बृह ११.५१
 वृ परा २.८
 पराशर १.४०
 औ ३.४३
 दा ४४
 वृ परा १०.२६६
 आपू ८६१
 वृ हा ५.१२
 वृ हा ५.२१९
 वृ.गौ. ८.६४
 लोहि ४००
 कण्व ७५३
 वृ.गौ. ६.१०५
 व १.२८.१९
 अत्रि ३.२०
 आपू ८९२
 वृ परा ८.३००
 आपू ४६६
 लोहि ६८
 आपू ४६३
 व १.१७.४९
 ब्र.या. ३.४४
 वृ परा ५.१७२

प्रेतमूढ्वा च दग्ध्वा	वृ परा ८.२८५	फट्फट् कारेण जुहूयात्	वृ परा ११.१.७७
प्रेतशुद्धिं प्रवक्ष्यामि	मनु ५.५७	फणा सहस्र विस्फूर्ज	वृ परा ११.१.३१
प्रेतश्राद्धे पृथक्पाकं	विश्वा ८.३१	फलत्येवेति धर्मज्ञा न	लोहि २५४
प्रेतश्राद्धे विनायेन	विश्वा ८.३२	फलत्रयमपूपं च गुडान्नं	शाण्डि ४.१५९
प्रेतश्राद्धेषु सर्वत्र	आंपू ६८४	फलादानन्तु विप्राणां	औ ९.१४
प्रेतस्पृक तैलनिर्णेक्ता	वृ परा ७.१२	फलदानां तु वृक्षाणां	मनु ११.१.४३
प्रेतस्य प्रकार्याणि	शंख १७.६१	फलपुष्पदुमाणां हि	वृ हा ६.१८९
प्रेतस्य तु जलं देयं	संवर्त ३९	फलपुष्पान्नरसज	या ३.२७५
प्रेतस्य दहनार्थन्तु	व २.६.३२५	फलपुष्पाम्बुकाष्ठाद्यं	शाण्डि ३.६
प्रेतस्य प्रेतपात्र	ब्र.या. ७.६	फलबीजसमुत्पत्ति	आंपू ६०१
प्रेताय च गृहद्वारि	औ ७.१०	फलं कतकवृक्षस्य	मनु ६.६७
प्रेतार्थं पितृपात्रेषु	औ ७.१६	फलं त्वनभिसन्धायं	मनु ९.५२
प्रेताहुतिस्तु कर्तव्या	आंपू ९५१	फलं यत्पूर्वं मुद्दिष्टन्त	बृ.गौ. १८.२९
प्रेतीभूतञ्च यः शूद्र	बृ.गौ. १४.२१	फलं यद्विधिवत्प्रोक्त	वृ.गौ. १७.३४
प्रेतीभूतन्तु यः शूद्र	पराशर ३.५१	फलं वृक्षस्य राजानः	शंखलि २३
प्रतीभूतं च यः शूद्र	वृ परा ८.२४	फलमयानां गोवालरज्जवा	बौधा १.५.३९
प्रेतीभूतं च यः शूद्र	वृ परा ८.२८६	फलमूलानि विप्राय	संवर्त ५५
प्रेते राजनि सज्योतिर्यस्य	मनु ५.८२	फलमूलाशनात् पूज्यं	बृहस्पति ७२
प्रेरयन् कूपवापीषु	पराशर ९.३६	फलमूलाशनैर्मैर्ध्वैः	मनु ५.५४
प्रेषयेच्च ततश्चारान्	या १.३३२	फलमूलैक्षुदण्डे च	औ २.२९
प्रेषितः पुरुषो वाऽपि	बृ.य. ४.१३	फलमूलोदकादीनां	नारद १५.३
प्रेष्यो ग्रामस्य राज्ञश्च	मनु ३.१५३	फलमोदकहस्ताभिः	वृ हा ६.५३
प्रोक्तप्रतिग्रहाभावे	वृ परा ६.२३६	फलस्नेहा यदा न स्यु	वृ परा १२.११६
प्रोक्तं ममेरितं तेन	वृ हा ७.७	फलहारी च पुरुषो	शाता ४.१६
प्रोक्तं मातामहश्राद्धे पितृ	कपिल १६४	फलहेतोरुपायेन कर्म	नारद ४.२
प्रोक्तवानिदमत्युग्रं ज्ञानं	बृह १२.८	फलाकृष्टां महीं दद्यात्	अत्रि ६.६
प्रोक्तं स द्विगुणः सन्ने	नारद १२.३०	फलाधिकानि वर्तन्ते	कण्व ३४०
प्रोक्तेन चैतेन मुनीश	वृ परा १०.१.४९	फलानि पिण्याकमथो	आंउ ८.१८
प्रोक्षणं चमसाज्येन	वृ हा ६.१०२	फलानीक्षुञ्च शाकञ्च	औ ७.५
प्रोक्षणं न्यक्पावत्राभ्यां	आश्व २.२७	फलान्यत्ति स्थितं तत्र	अत्रिस १७९
प्रोक्षणाचमने कृत्वा	शाण्डि ५.३	फलान्यत्ति स्थितस्तत्र	अत्रिस १७७
प्रोक्षणात् कथितां	शंख १६.१२	फलान्यत्ति स्थितस्तत्र	अत्रिस १८१
प्रोक्षणातृणाकाष्ठं च	मनु ५.१२२	फलान्यपस्तिलान्भक्षा	व १.१३.७
फ		फ (प) लाशकृष्ण छत्रे	भार १५.१.४३
फट्कारान्तां च कुर्वीत्	वृ परा ४.४८	फलाष्टकप्रमाणेन तण्डुले	नारा ९.९

बहुकालं विल्वपत्रैः	वृ हा ३.२००	बह्वर्चं यजुषं चैव	व्या १९०
बहुजन्म बहुक्लेश	वृ हा ४.७	बह्वर्थैः पदावावय (दा) न	विश्वा ६.४८
बहुज्ञातिमती साध्वी	कपिल ५१८	बह्वः स्यु प्रतिभूवो	नारद २.१०३
बहुत्वं परिगृहीयात्	मनु ८.९३	वह्वीनामेक पत्नीनामेका	व १.१७.११
बहुत्वं यत्र भिक्षूणां	वृ परा १२.१३६	बह्वृचानां तु यत्कर्म	आश्व २४.१८
बहुदुग्धदां स्निग्धांच	ब्र.या. ११.१२	बाधकं च करञ्जञ्च	शाण्डि ३.१०६
बहुद्वारस्य धर्मस्य	बौधा १.१.१३	बाधकानि बहून्वेव संभवं	कपिल २६१
बहुनात्र किमुक्तेन	औ ४.३६	बाधयेयुर्विदमानास्त	कपिल ८४१
बहुनाऽत्र किमुक्तेन	देवल ७०	बांधवाश्च ततो राजा	व २.५.१५
बहुप्रजास्तु या नार्यो	प्रजा ५९	बाहिस्पत्यं सप्तमं	बृ.या. ४.६५
बहुप्रतिग्राह्यस्या	बौधा २.३.१०	बालकृष्णं विधानेन	व २.६.२५१
बहुप्रोक्तेषु सर्वेषु	कण्व १६४	बालक्रीडादिचरितैः कर्म	शाण्डि ३.७५
बहुभिर्दीपदण्डैश्च	वृ हा ७.३१३	बालखिल्यादिमुनयो	वृ हा ३.२३६
बहुभिस्तु धनैर्युक्तं	व २.२.९	बालखिल्या महात्मानो	वृ.गौ. २.७
बहुभोक्ता दीनमुखो	अत्रि स ३४७	बालखिल्यास्तु संभूत्वा	कण्व ४६१
बहुवर्ष सहस्राणि	वृ.गौ. ४.५०	बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च	मनु ११.१९१
बहुविप्रतिरस्कार	आंपू १४७	बालघ्नीनां तु रागेण परेषां	लोहि ७०३
बहुशः पूर्वमेवायं समाचारो	शाण्डि १.६	बालदायादिकं रिक्थं	मनु ८.२७
बहुशिष्यधनाग्रामवती	कपिल ५५७	बालप्रमूढास्वतन्त्र	नारद ५.९
बहुश्रुताय दातव्यं	वृहस्पति ६१	बालंगोपालवेषं	वृ हा ५.१८९
बहूनां तु प्रोक्षणम्	बौधा १.६.४५	बालं सुवासिनी वृद्ध	या १.१०५
बहूनां न प्रदातव्या	वृ.गौ. १४.३९	बालया वा युवत्या वा	मनु ५.९.४७
बहूनां प्रोक्षणाच्छुद्धिः	शंख १६.९	बालवत्सकधेनूनां	वृ परा १०.१७८
बहूनामपि दोषाणां	बौधा १.१.३५	बालवासा जही वाऽपि	सा ३.२५३
बहूनामपि बन्धूनामे	दा ६६	बालवृद्धातुराणां च	मनु ८.७१
बहूनांमार्जिनं प्रोक्त	व २.६.५२३	बालवृद्धातुरान्दासानां	शाण्डि ४.१२२
बहूनां शस्त्रघातानां	लिखित ७२	बालश्चैव दशाहे तु	लिखित ८९
बहूनां शस्त्रघातानां	दा ९३	बालः समानजन्मा	मनु २.२०८
बहून् वर्षं गणान् घोरान्	मनु १२.५४	बालः समानजन्मा	औ ३.२५
बहूनामेकजातानामेक	व १.१७.१०	बालसूर्यं प्रकाशेन	वृ गौ ६.९१
बहूनामेकं भार्याणामेका	दा ६७	बालस्त्वन्तर्दशाहेतु	अत्रिस ९५
बहूनामेक लम्नानामेक	अत्रिस २४२	बालस्त्वन्तर्दशाहे तु	लघुशंख ६३
बहून् हि याजयेद्यस्तु	वृ परा ७.३५८	बालानां स्तन्यपानादि	आप १.९
बहुनामेककार्येषु यद्वैको	लघुशंख ४०	बालानामथ वृद्धानां	वृ.गौ. १०.९७
बहिप्रदहित्वैव	व २.६.५०३	बालुकानां कृता राशि	अत्रिस ३३६

बालु रून्मनसाभ्यत्वा	व २.६.४	बुद्धिवृद्धिकराण्याशु	मनु ४.१९
बालेदेशान्तरस्थे	मनु ५.७८	बुद्धिश्च न विचेष्टेत	शाण्डि ५.७३
बालोऽज्ञानादस्त्यात्स्त्री	नारद २.१७०	बुद्धिश्चपूजीयास्ते	वृ हा ७.९८
बालोऽपि नावमन्तव्यो	मनु ७.८	बुद्धीन्द्रियाणि पंचैषा	मनु २.९१
बालो वद्धस्तथा रोगी	आप ३.५	बुद्धीन्द्रियाणि सार्थानि	या ३.१७७
बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्	मनु ५.१४८	बुद्धेरुत्पत्तिव्यक्तात्	या ३.१७९
बाल्ये पित्रोरधीना सा	कपिल ४१२	बुद्धेर्बोधियिता यस्तु	बृह ९.४४
बाष्कलैरेकमात्रास्तु	वृ.या. २.१२७	बुद्ध्यहंकारमनसां	बृह ९.१८२
बाहयेद्धुङ्कुतेनैव	वृ.गौ. ९.५२	बुधस्त्वाभरणं भावं	दक्ष ७.२६
बाहुग्रीवानेत्रसक्थि विनाशे	या २.२११	बुध्वा च सर्वं तत्त्वेन	मनु ७.६८
बाहु द्वौ च ततः स्पृष्ट्वा	वृ.गौ. ८.२९	बुभुक्षितस्यहं स्थित्वा	या ३.४३
बाहुभ्यां न नदीं तरेत	व १.१२.४३	बुरी (गुरु) भूतं च गर	नीरं शाण्डि ५.१०
बाहुभ्याञ्च शतं दद्याद्	पराशर ५.१६	बृषणेकटिनाभ्योश्चा	भार ६.७३
बाहुमात्रं वदन्त्येके	वृ परा ११.७०	बृहत्वाद् बृंहणत्वाच्च	बृह ९.८३
बाहुमात्राः परिधय	कात्या १५.१९	बृहस्पते अतीत्यत्र	वृ परा ११.३१९
बाह्यस्तु विषयाक्षेप	बृह ९.३	बृहस्पतेरिति गुरोरन्नात्	वृ परा ११.६६
बितानपुष्पमालादि	वृ हा ७.२४१	बौद्धः कापिलकुहकौ	बृह १२.९
बिन्दुमाधवविश्वेश	आंपू ५३८	ब्याध्रचर्म समास्तीर्य	वृ हा ५.१२२
बिन्दुहीनं तु यद्वीजं वृथा	विश्वा १.१००	ब्रजमानंतथात्मानं मन्यते	ब्र.या. १०.५
बिभर्ति शूद्रो यदिदः	भार १६.५८	ब्रह्मकर्माः शान्ता	प्रजा ७०
बिभीतकं तथा शिग्रु	व २.५.५३	ब्रह्मकुर्वविधानेन	कण्व २६३
बिभृयादपि (च) य (त्ने) न	कण्व ५७८	ब्रह्मकूर्चं प्रवक्ष्यासि	वृ परा ९.२३
बिम्बप्रस्थापकाच्चैव	शाण्डि ३.३०	ब्रह्मकूर्चं मिदं प्रोक्तं	वृ परा ९.३४
बिम्बं दृष्ट्वा त्यजेदर्घ्यं	विश्वा १.१९	ब्रह्मकूर्चो दहेत्सर्वं	वृ परा ९.३९
बिम्बं बिड्जञ्च निर्यासं	वृहा ८.९९	ब्रह्मकूर्चोपवासं वा	वृ हा ६.३७४
बिल्वापार्मागमरुवतुलसी	भार १४.१९	ब्रह्मकूर्चोपवासेन	पराशर ६.२९
बिल्वैरामलकैर्वाऽपि	शंख १८.७	ब्रह्मकेशवरुद्रादि देवता	भार ६.१५५
बिशेषेण तु विप्राणाम्	वृ.गौ. २.२९	ब्रह्मक्षत्रविशां काल	ब्र.या. ८.९६
बीजमेके प्रशंसन्ति	मनु १०.७०	ब्रह्मक्षत्रविशां चैव	वृ.या. ७.१५८
बीजराजं पाशबीजं	विश्वा ६.२७	ब्रह्मक्षत्रियविद् शूद्रा	या १.१०
बीजशक्त्यादिकीलानां	विश्वा ६.६७	ब्रह्मक्षत्रिय विड्जाता	वृ परा ८.३२३
बीजस्य चैव योन्याश्च	मनु ९.३५	ब्रह्मक्षत्रियवैश्यनामेवं	भार १८.१०१
बीजानामुप्तिविच्च स्यात्	मनु ९.३३०	ब्रह्मक्षय इतेनापि	वृ परा १२.३६७
बीजापचारं तत् सर्वं	नारद १२.३९	ब्रह्मखानिलजेजांसि	या ३.१४५
बुद्धिमान् धर्मवित्तिकु	आंपू ३५८	ब्रह्म गोवधादि प्रायश्चित्त	विष्णु ५०

ब्रह्मग्रन्थिसमायुक्तं	ब्र.या. २.३६	ब्रह्मचारी गृहस्थो वा	बृह ११.४४
ब्रह्मघ्नः कृच्छ्रं द्वादशरात्रं	व १.२०.१३	ब्रह्मचारी गृहे येषां हूयते	पराशर ३.२५
ब्रह्मघ्नं च सुरापं वा	वृ हा ४.१९४	ब्रह्मचारी च मौजूजीव	आश्व १२.११
ब्रह्मघ्नं या सुरापं वा	वृ हा ८.२००	ब्रह्मचारी चरेद् भैक्षं	नारद ६.९
ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च	वृ परा ८.९४	ब्रह्मचारी चेत्सित्रयं	व १.२३.१
ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च	संवर्त १०८	ब्रह्मचारी चेन्मांसं	व १.२३.८
ब्रह्मघ्नादिसहावासे	नारा ५.५२	ब्रह्मचारी जितक्रोधो	वृ.गौ. १७.४०
ब्रह्मघ्नो ये स्मृता	मनु ८.८९	ब्रह्मचारी ततः शुद्धौ	ब्र.या. ८.९०
ब्रह्मघ्नोवा सुरापोवा	व २.५.६९	ब्रह्मचारी तुयः स्कन्देत्	संवर्त २८
ब्रह्मचर्यनिवृत्तिस्सा	लोहि ९	ब्रह्मचारी तु यो गच्छेत्	संवर्त २५
ब्रह्मचर्यं दया क्षातिर्ध्यानं	या ३.३१२	ब्रह्म (व्रत) चारी तु	मनु ११.१५९
ब्रह्मचर्यं परन्तीर्थ	वृ.गौ. २०.१४	ब्रह्मचारी तु योऽश्नीयान्	संवर्त २६
ब्रह्मचर्यमनाथाय मास	अत्रिस ३०६	ब्रह्मचारी भवेत्तत्र	ब्र.या. ४.१४९
ब्रह्मचर्यं महत्त्वं च	लोहि ४७१	ब्रह्मचारी भवेद्भुक्त्वा	दा ६१
ब्रह्मचर्यमार्यभागा	ब्र.या. ८.११	ब्रह्मचारी मिताहारः	संवर्त २१६
ब्रह्मचर्य्य सदा रक्षेदत्	दक्ष ७.३१	ब्रह्मचारी यतिश्चापि	आंउ ९.९
ब्रह्मचर्य्यमधः शय्या	ल हा ३.२	ब्रह्मचारी यतिश्चैवं	अत्रिस ९७
ब्रह्मचर्यमित्यादीनान्तुलोप	कपिल ३१२	ब्रह्मचारी यतिश्चैव	अत्रिस १६४
ब्रह्मचर्यादिकं भिक्षा	आश्व १०.३५	ब्रह्मचारी यतिश्चैव	ब्र.या. १३.१९
ब्रह्मचर्यादि नियमो	ब्र.या. २.२०८	ब्रह्मचारी शुना दष्ट	आंउ ९.११
ब्रह्मचर्याश्रमादूर्ध्वम्	आआंउ ५.६	ब्रह्मचारी सदा चापि	वृ.गौ. १६.२९
ब्रह्मचर्यं तु यत्प्रीते	वृ.गौ. ७.६७	ब्रह्मचारी समादिष्टो	कात्या २५.१३
ब्रह्मचर्यं स्थितो नैक	ब्र.या. ८.६३	ब्रह्मचारी स्त्रियं गत्वा	ब्र.या. ८.८५
ब्रह्मचर्य्यं स्थितोनैक	या १.३२	ब्रह्मचार्य्यचार्यं परिचरेत	व १.७.३
ब्रह्मचर्योक्तमार्गेण	व २.३.१९८	ब्रह्मज्ञानं च संप्राप्य	कण्व ६३१
ब्रह्मचारिण एवात्र	आश्व १०.४७	ब्रह्मणः प्रणवं कुर्यादा	मनु २.७४
ब्रह्मचारिणः शवकर्मणा	बौधा २.१.३०	ब्रह्मणाकथिता पूर्व संस्काराणि	ब्र.या. ८.८
ब्रह्मचारिणः शवकर्मणो	व १.२३.५	ब्रह्मणागदितमूर्वं	ब्र.या. २.३
ब्रह्मचारियतिभ्यश्च	संवर्त ९२	ब्रह्मणा तत्समीकृत्य	शाण्डि २.४३
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च	पु ७	ब्रह्मणा पूज्यमानास्तु	वृ.गौ. ९.३२
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च	शाण्डि १.१२१	ब्रह्मणावस्थान् सर्वान्	औ ८.६
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च	मनु ६.८७	ब्रह्मणी में शर्म्मा श्चैव	ब्र.या. १०.१२४
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च	व्या १४	ब्रह्मणे च तथाहुत्वा	वृ.गौ. २०.४३
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च	दक्ष १.३	ब्रह्मणे चाग्नये चैव	वृ.गौ. १६.२५
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च	वृ परा १२.१४७	ब्रह्मणे दक्षिणा देया	कात्या १५.१

ब्रह्मतत्त्वं न जानाति	अत्रिस ३७९	ब्रह्मयज्ञे विशेषोस्ति	भार ४.३५
ब्रह्मत्वं काश्यपो	वृ हा ३.२३५	ब्रह्म यस्त्वननुज्ञातं	मनु २.११६
ब्रह्मत्वं च प्रयातेभ्यो	आश्व २३.९५	ब्रह्मयोनिर्हि विश्वस्य	विष्णु म ३४
ब्रह्मत्वं च प्रयातेभ्यो	आश्व २३.९६	ब्रह्मयोनिषु जातानामपि केषां	कपिल २८
ब्रह्मदण्डहतानां तु न कार्यं	अत्रिस २१५	ब्रह्मराक्षस ग्रस्तं च	वृ परा ११.१७४
ब्रह्मदण्डादियुक्तानां	कात्या २४.१६	ब्रह्मराक्षसपूर्वाश्च पिशाचा	भार १२.३८
ब्रह्मदेयानुसंतानो	शंख १४.६	ब्रह्मरात्र्यां व्यतीतायां	विष्णु १.१
ब्रह्मध्यान समायुक्तं	वृ परा १२.२१५	ब्रह्मलोकं व्रजत्येव	बृ.या. ४.५३
ब्रह्मध्यानार्घ्यमात्रो यः	कण्व १८२	ब्रह्मलोकमतिक्रम्य	बृह ९.१६९
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति	प्रजा २	ब्रह्मलोक मतिक्रम्य	वृ हा ७.३२१
ब्रह्मनिष्ठान्महाभागा	कण्व ७८	ब्रह्मलोकमवप्येह तत्	आंपू ५४८
ब्रह्मपर्वस्तु विज्ञेयः	ब्र.या. ८.७६	ब्रह्मलोकादयो लोकाः	आंपू ३१७
ब्रह्मपालाशकौतांकी	ब्र.या. १.३२	ब्रह्मलोके ततः कामम्	वृ.गौ. २.२०
ब्रह्मपुरोहितं राष्ट्रं	व १.१९.४	ब्रह्मलोके प्रमोदन्ते	वृ.गौ. २.२१
ब्रह्मपुष्पं तु	ब्र.या. १०.१४३	ब्रह्मवर्चसकामश्चेत्	भार १९.४३
ब्रह्मप्रजापतिपितृस्वर्गौ	भार ४.१४	ब्रह्मवर्चसकामस्तु	शंख १२.२२
ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च	विश्वा १.५९	ब्रह्मवर्चसकामस्य	मनु २.३७
ब्रह्मबीजसमुत्पन्नो	व्यास ४.४१	ब्रह्मवर्चस्विनः पुत्रान्	या १.२६३
ब्रह्म ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च	वृ हा ८.१७२	ब्रह्मवित्सोऽतिमृत्युं	वृ परा १२.३४४
ब्रह्मभूतस्य तस्यास्य	आंपू ११४	ब्रह्मविदोऽनेकविधाः	बृ.या. २.६२
ब्रह्मभूतं हि संचिन्त्य	बृह ९.११६	ब्रह्मविद्भिरिति ध्यानं	भार १३.३५
ब्रह्ममेध इति प्रोक्तं	वृ हा ६.१०७	ब्रह्मविद्येति विख्याता	वृ परा ६.९३
ब्रह्ममेधक्रियाशुद्धः पूर्व	कण्व ७९३	ब्रह्मविष्णुमहेशाश्च	औ २.२३
ब्रह्ममेधस्तथा कृत्यं	कण्व ५३२	ब्रह्मवीर्यसमुत्पन्नः	कण्व २२७
ब्रह्मयज्ञन्ततः कुर्या	ब्र.या. २.८९	ब्रह्म वै चतुर्होतारः तेभ्यो	कण्व ३९४
ब्रह्मयज्ञं च वै कुर्यात्	आश्व १.११४	ब्रह्म वै स्वं महिमानं	बौधा १.१०.२
ब्रह्मयज्ञः स विज्ञेयः	दक्ष २.२६	ब्रह्मव्याकारभेदेन	भार ६.२
ब्रह्मयज्ञाङ्गकस्नानं	विश्वा १.९८	ब्रह्मशीर्षकमेतद्धि सर्व	विश्वा ५.२२
ब्रह्मयज्ञादिकं कुर्यादन्यथा	कपिल २६०	ब्रह्मसूत्रं तयोर्हीन	भार १५.५१
ब्रह्मयज्ञे जपेत्सूक्तं	वाधू १५६	ब्रह्मसूत्र द्विजः कुर्यान्नि	भार १६.४२
ब्रह्म यज्ञेति केतुंच चित्रं	वृ परा ११.६४	ब्रह्मसूत्रमितिख्यातं	भार १५.९८
ब्रह्मयज्ञे त्रिधाचामेच्छु	विश्वा २.४७	ब्रह्मस्थानं च तन्मध्ये	वृ परा ११.२१९
ब्रह्मयज्ञे त्रिराचामेच्छौतं	विश्वा २.५१	ब्रह्मस्यब्राह्मणा यत्र दद्या	व २.४.१३१
ब्रह्मयज्ञेन दर्शादिश्राद्धेषु	लोहि ३२१	ब्रह्मसूत्रन्तु कण्ठेन	ब्र.या. २.१४५
ब्रह्मायज्ञेन वै तद्वत्तथाकारं	व्या ३१८	ब्रह्मसूत्रं स्व कं धेयो	ब्र.या. २.९९

ब्रह्मस्व त्रिषु लोकेषु	वृहस्पति ४८	ब्रह्माणां शंखरं का सूर्य	ल व्यास २.४०
ब्रह्मस्वन्यासापहरणाम्	बौधा २.१.५२	ब्रह्माणं श्वसज्ज्ञानगिं	वृ.गौ. ८.७०
ब्रह्मस्वं तु विषं घोरं	व १.१७.७६	ब्रह्मांत्वेतान् सृजन्	वृ.गौ. १५.१२
ब्रह्मस्वं पुत्रपौत्रघ्नं	बौधा १.५.१२१	ब्रह्मादयश्च ये देवाः	आश्व १.२०
ब्रह्महत्याकृतं पापं	वृ परा ४.७८	ब्रह्मादयोऽन्तरालस्य	आश्व १.१२८
ब्रह्महत्याघहरणं नृह	भार ६.७७	ब्रह्मादयो मयाहूता	वृ परा २.१७५
ब्रह्महत्यामनि गोमायौ	वृ परा १२.१.४३	ब्रह्मादित्रिदशैः सर्वैः	वृ परा ३.३३५
ब्रह्महत्यादिपापानि आगम्या	विश्वा ३.५०	ब्रह्मादिनां ततः पूजां	कण्व ६६८
ब्रह्महत्यादि पापैस्तु	वृ परा १०.२०३	ब्रह्मादिवर्णहा गोघ्नः	वृ परा १०.५०
ब्रह्महत्यादिभिर्मर्त्यैः	पराशर १२.४४	ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तमेवं	बृह ९.१५३
ब्रह्महत्यादि वा गोघ्नो	वृ.गौ. १०.११	ब्रह्माद्यानुपवीती तु	वृ.या. ७.६७
ब्रह्महत्यामवाप्नोति	वृ.गौ. १३.३४	ब्रह्माद्याः सनकाद्याश्च	वृ हा ३.२१७
ब्रह्महत्याव्रतं चापि	ब्र.या. १२.४८	ब्रह्माद्यैः प्रार्थनीयञ्च बहुजन्म	कपिल ३.५४
ब्रह्महत्यासमं ज्ञेयम्	वृ हा ६.१७०	ब्रह्मान्तरिक्षसंज्ञो मनोरजः	वृ.या. २.२८
ब्रह्महत्या सुरापानं	मनु ११.५५	ब्रह्माप्तिर्जा यतो पुंसां	वृ परा १२.३४६
ब्रह्महत्या सुरापानं	वृ हा ६.१६८	ब्रह्मा मुखं शिक्षा रुद्रः	भार १३.२३
ब्रह्महा क्षयरोगी स्यात्	या ३.२०९	ब्रह्मारम्भेऽवसाने च	मनु २.७१
ब्रह्महा च सुरापश्च	वृ.या. ८.३८	ब्रह्मार्पणधिया नित्यं कृता	कपिल ६५६
ब्रह्महा च सुरापश्च	मनु ९.२३५	ब्रह्मार्पणं ब्रह्महवि	बृह ९.११८
ब्रह्महा च सुरापयी	लिखित ७६	ब्रह्मार्पणं ब्रह्महवि	ब्र.या. ४.४२
ब्रह्महा द्वादशसमाः	मनु ११.७३	ब्रह्मार्पणं हविस्तत्स्या	विश्वा ८.७२
ब्रह्महा नरकस्यान्ते	शाता २.१	ब्रह्मार्प तत्र विज्ञेयं	वृ परा ३.३०
ब्रह्महा प्रथमंचैव	अत्रिस १६६	ब्रह्मावाने प्रारम्भे	शंख ३.४
ब्रह्महा मद्यपः स्तेनो	औ ८.१	ब्रह्मा विश्वसृजो धर्मो	मनु १२.५०
ब्रह्महा मद्यपः स्तेनो	या ३.२२७	ब्रह्मा विष्णु शिव	व्यास ३.२४
ब्रह्महा पातकिस्पर्श	लिखित ७५	ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च	पराशर १२.१९
ब्रह्महा वा दशाब्दानि	औ ८.५	ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च	वृ.या. २.२०
ब्रह्महा स्वर्णहारी	आंड ७.८	ब्रह्मा विष्णुस्तथेशान्	वृ परा ३.१३
ब्रह्महा हेमहारी	वृ.या. ४.६२	ब्रह्माविष्णुहराश्चैव	भार १३.३४
ब्रह्मा च विश्वेदेवाश्च	व २.६.१८७	ब्रह्मा वै गार्हपत्योऽग्नि	वृ.गौ. १५.३२
ब्रह्माणं तर्पयेत्	वृ.गौ. ७.६२	ब्रह्मासने निवेश्यैव	वृ हा ५.२२३
ब्रह्माणं वरयेदस्मिन्	आश्व २.३१	ब्रह्मास्त्रं बीजमित्याहु	विश्वा ५.१३
ब्रह्माणं विष्णुं रुद्रं	कात्या १२.२	ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदण्डं	विश्वा ५.२७
ब्रह्माणं वैधसैर्मन्त्रैः	वृ परा ४.११३	ब्रह्माहं शङ्करश्चापि	वृ.या. १९.५
ब्रह्माणं व्यानमित्येके	वृ परा ६.११२	ब्रह्मेष्टानां भवेदेवं	वृ.या. २.८७

ब्रह्मेश हरि सूर्याणां	वृ परा १०.३६२	ब्राह्मणं न सगोत्रं च	वृ परा ७.११२
ब्रह्मेशार्कहरीणां तु	वृ परा २.२६	ब्राह्मणं भिक्षुकं वाऽपि	मनु ३.२४३
ब्रह्मेनेति निहितनैव	वृ हा २.३७	ब्राह्मणं भोज्येत्पश्चात्	व २.३.८
ब्रह्मेनोज्ज्माता वेदनिन्दा	मनु ११.५७	ब्राह्मणं स्वयमादाय	वृ.गौ. ११.२
ब्रह्मेनौदने च श्राद्धे च	आप ९.२३	ब्राह्मणम नृतेनाभिशांस्य	व १.२३.३३
ब्रात्यताबान्धवत्यागो	मनु ११.६३	ब्राह्मणराजन्यौ	व १.२.४४
ब्रात्यास्तु जायते विप्रातन्	मनु १०.२१	ब्राह्मणवदात्रेय्या	बौधा २.१.१३
ब्राह्मणस्तु वनं गच्छेत	संवर्त १०९	ब्राह्मणस्यैव कर्मैतद्	मनु २.१९०
ब्राह्मण कुले वा यल्लभेत	व १.१०.१८	ब्राह्मणश्चापि यस्तेषां	वृ.गौ. ९.१७
ब्राह्मणः क्षत्रियं हत्वा	वृ परा ८.११७	ब्राह्मणश्चेदधि गच्छेत्	व १.३.१५
ब्राह्मणक्षत्रियवशः	ब्र.या. ८.७४	ब्राह्मणश्चेद प्रेक्षापूर्व	व १.२१.१७
ब्राह्मणः क्षत्रियविशां	प्रजा ४७	ब्राह्मणश्चैव राजा च	नारद १८.४०
ब्राह्मणक्षत्रियविशां	बृ.य.४.३४	ब्राह्मणः स भवेच्चैव	व्यास ४.४७
ब्राह्मणक्षत्रियविशां	व १.२१.१४	ब्राह्मणः सम्भवेनैव	मनु ११.८५
ब्राह्मणक्षत्रियविशां	नारद १३.४	ब्राह्मणसुवर्णहरणे	व १.२०.४५
ब्राह्मणक्षत्रियविशां	मनु ९.१५५	ब्राह्मणस्तु कृषिं कृत्वा	पराशर २.९
ब्राह्मण क्षत्रियाभ्यां तु	मनु ८.२७६	ब्राह्मणस्तु त्रिरात्रेण	आप ५.२
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वृद्धि	मनु १०.११७	ब्राह्मणस्तु शुनः दृष्ट	औ ९.८२
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	वृ.गौ. १६.३	ब्राह्मणस्तु शुना दृष्टो	व १.२३.२६
ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्य	व्यास १.५	ब्राह्मणस्तु शुना दृष्टो	वृ परा १.२
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	शंख १.६	ब्राह्मणस्तु सुरापस्व	मनु ११.१५०
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	वृ हा ८.२९८	ब्राह्मणस्त्वनधीयान	मनु ३.१६८
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	विष्णु २.१	ब्राह्मणस्य चतुः षष्टिः	मनु ८.३३८
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः	पराशर ११.२५	ब्राह्मणस्य चतुष्षष्टि	नारद १८.११०
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो	मनु १०.४	ब्राह्मणस्य च यद्दयं	नारद २.९६
ब्राह्मणस्य परित्राणाद् गवां	या ३.२४३	ब्राह्मणस्य चातुर्वर्णेषु	विष्णु १८
ब्राह्मणत्वं कुतस्तस्य	भार १२.५१	ब्राह्मणस्य तथा भुक्त्वा	शंख १७.४२
ब्राह्मणन् स्वस्ति वाच्य	व १.१३.२	ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं	मनु ११.२३६
ब्राह्मणः पात्रतां याति	या ३.३३२	ब्राह्मणस्य तु देवस्य	बृ.गौ. १४.४२
ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत्	औ १.२५	ब्राह्मणस्य तु विक्रेयं	नारद २.६०
ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत्	मनु २.१२७	ब्राह्मणस्यतु सूक्तैश्च	वृ हा ५.३४८
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं	शाण्डि ४.६७	ब्राह्मणस्य दशाहं	या ३.२२
ब्राह्मणं तदनुब्रज्य	ब्र.या. ३.७०	ब्राह्मणस्य प्रवक्ष्यामि	पराशर १२.७
ब्राह्मणं दशवर्षं तु शतवर्षं	मनु २.१३५	ब्राह्मणस्य ब्रह्महत्या	बौधा १.१०.१९
ब्राह्मणं न परीक्षेत	व्या २७५	ब्राह्मणस्य मलद्वारे	यम ७

ब्राह्मणस्य मुखं क्षेत्रं	पराशर १.५५	ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायां	मनु १०.८
ब्राह्मणस्य मुखं क्षेत्रं	व्यास ४.४८	ब्राह्मणानां गृहाणान्तु	बृ.गौ. १६.१९
ब्राह्मणस्य यदा भुंक्तं	पराशर ११.१७	ब्राह्मणानां परीवादं	वृ.गौ. ३.६२
ब्राह्मणस्य यदोच्छिष्टं	आप ५.५	ब्राह्मणानां पुरा सृष्टं	कण्व ६३६
ब्राह्मणस्य रुजः कृत्य	मनु ११.६८	ब्राह्मणानां स्वस्य चापि	कपिल ५३८
ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे	पराशर ६.४५	ब्राह्मणानां हितार्थाय	बृ.या. १.२१
ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे	बौधा १.५.१४१	ब्राह्मणा नाममात्रेण	वृ.गौ. ४.२३
ब्राह्मणस्य सदाकालं	आप ९.३३	ब्राह्मणानामसान्निध्ये	कात्या २८.९
ब्राह्मणस्य सदा भुंक्ते	आप ८.१२	ब्राह्मणानासनं वस्त्रं	व्या १०६
ब्राह्मणस्य सदा भुंक्ते	अंगिरस ५५	ब्राह्मणानि च तेषां वै	कण्व ५१९
ब्राह्मणस्य हृते क्षेत्रे	वृ.गौ. ६.१२७	ब्राह्मणानुपसेवेत नित्यं	नारद १८.३२
ब्राह्मणस्यानुपूर्व्येण	मनु ९.१४९	ब्राह्मणान् अविचार्य एव	वृ.गौ. ४.५१
ब्राह्मणस्यानुलोभ्येन	नारद १३.५	ब्राह्मणान् तु वै भुक्त्वा	अ १८
ब्राह्मणस्यापराधेषु	नारद १८.१०१	ब्राह्मणान् दच्छूदः	वृ.परा ८.१८५
ब्राह्मणस्यापरीहारो	नारद १८.३३	ब्राह्मणान् परीक्षेत	शंख १४.१
ब्राह्मणस्याष्टमे वर्षे	आश्व १०.१	ब्राह्मणान् यदुच्छिष्टं	अत्रिस ७०
ब्राह्मणस्यैव तद्विद्या	कण्व ४६९	ब्राह्मणान् पर्युपासीत	मनु ७.३७
ब्राह्मणस्वं न हर्तव्यं	मनु ११.१८	ब्राह्मणान् दरिद्रत्वं	अंगिरस ५६
ब्राह्मणः स्वर्णहारी	या ३.२५६	ब्राह्मणान् बाधमानं तु	मनु ९.२४८
ब्राह्मणस्वेन देहेन	बृ.गौ. १९.३३	ब्राह्मणान् भोजयित्वा	पराशर ८.४९
ब्राह्मणांश्च व्यतिक्रम्य	पराशर ८.३६	ब्राह्मणान् भोजयेच्छक्त्या	वृ.हा ७.१८९
ब्राह्मणा एव च क्षेत्रं	आंड १२.१०	ब्राह्मणान् भोजयेत्	कात्या १८.४
ब्राह्मणाः कीदृशास्तत्र	प्रजा ८	ब्राह्मणान् भोजयेत्	लोहि ६१३
ब्राह्मणाः क्षत्रियावैश्याः	नारद २.१३१	ब्राह्मणान् भोजयेत्	व २.४.११०
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः	वृ.हा ३.२४८	ब्राह्मणान् भोजयेत्	अत्रि ५.५८
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः	वृ.हा ३.६	ब्राह्मणान् भोजयेत्	वृ.परा ९.३८
ब्राह्मणाः च एव ये भूत्वा	वृ.गौ. ३.१६	ब्राह्मणान् भोजयेत्	वृ.हा ६.१३४
ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं	पराशर ६.६०	ब्राह्मणान् भोजयेत्	वृ.हा ५.१७२
ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं	शाता १.३०	ब्राह्मणान् भोजयेत्	वृ.हा ५.३२९
ब्राह्मणात् क्षत्रियायां	बौधा १.९.३	ब्राह्मणान् भोजयेत्	वृ.हा ५.३८७
ब्राह्मणातिक्रमोनास्ति	बौधो १.५.९८	ब्राह्मणान् भोजयेत्	वृ.हा ७.२०१
ब्राह्मणातिक्रमोनास्ति	व १.३.११	ब्राह्मणान् भोजयेत्	ब्र.या. १०.२२
ब्राह्मणाति क्रमोनास्ति	व्यास ४.३५	ब्राह्मणान् भोजयेद्	वृ.हा ७.३०२
ब्राह्मणादिहते ताते	कात्या १६.२०	ब्राह्मणान् भोजयेद्	वृ.हा ७.८८
ब्राह्मणादुग्रकन्यायां	मनु १०.१५	ब्राह्मणान् भोजयेद्	बृ.गौ. १६.३२

ब्राह्मणान् वेदनिदुषः	अत्रिस २४	ब्राह्मणेभ्यः प्रदानानि	वृ.गौ. ५.६४
ब्राह्मणान् समनुज्ञाप्य	आप ४.१२	ब्राह्मणेभ्यश्च दत्त्वाऽथ	वृ हा ५.६३
ब्राह्मणा ब्रह्मयोनिस्था	मनु १०.७४	ब्राह्मणे वाऽपरे वाऽपि	औ ६.४९
ब्राह्मणाभिक्रमोनास्ति	कात्या १५.९	ब्राह्मणे विप्रस्तीर्थे	मनु २.५८
ब्राह्मणा मन्त्रिताश्चैव	वृ.य. ५.८	ब्राह्मणेषु क्षमी स्निग्धेष्व	या १.३३४
ब्राह्मणाय दरिद्राय	वृ.गौ. ६.९४	ब्राह्मणेषु चरेद्भैक्ष्य	ब्र.या. ८.४४
ब्राह्मणाय दरिद्राय	वृ.गौ. ७.१८	ब्राह्मणेषु तु विद्वांसो	मनु १.९७
ब्राह्मणाय विशेषेण	वृ.गौ. १२.३७	ब्राह्मणेषु तु विद्वांसो	वृ ह ११.३७
ब्राह्मणायानि भाषन्ते	पराशर ६.६१	ब्राह्मणेषु च यद्धतं	व्यास ४.३९
ब्राह्मणा यानि भाषन्ते	शाता १२७	ब्राह्मणैर्नैव मृद्ध्यर्था	व २.२३
ब्राह्मणायावगुर्यैव	मनु ४.१६५	ब्राह्मणैः सह भोक्तव्यो	वृ परा ४.१९९
ब्राह्मणा ये किकर्मस्था	शंख १४.२	ब्राह्मणो जायमानो हि	मनु १.९९
ब्राह्मणा येन जीवन्ति	व्यास ४.४६	ब्राह्मणो ज्ञानतो भुङ्क्ते	पराशर ६.३०
ब्राह्मणार्थं गवार्थं वा	मनु ११.८०	ब्राह्मणो दशरात्रेण	अत्रिस ८५
ब्राह्मणार्थं गवार्थं वा	औ ८.९	ब्राह्मणोद्वाहनंचैव	शाता २.३०
ब्राह्मणार्थं गवार्थं वा	मनु १०.६२	ब्राह्मणो नैव भुञ्जीयाद्	आश्व १.१७५
ब्राह्मणार्थं गवार्थं वा	पराशर ८.४२	ब्राह्मणो नैव हन्तव्यः	का १
ब्राह्मणार्थं विपन्नानां	पराशर ३.३६	ब्राह्मणोऽपि निधिं सर्वः	नारद ८.७
ब्राह्मणा वह्निहीनाश्च	ब्र.या. ७.५३	ब्राह्मणो बिल्वपालाशौ	ब्र.या. ८.१५
ब्राह्मणाः सर्वजगतां	कण्व २०२	ब्राह्मणो बिल्वपालाशौ	मनु २.४५
ब्राह्मणाः सर्ववर्णानां	१.४७	ब्राह्मणो ब्राह्मणानां	आंउ ५.८
ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या	देवल ३७	ब्राह्मणो ब्राह्मणी गत्वा	संवर्त १६५
ब्राह्मणी क्षत्रियां स्पृष्टा	वृ परा ८.२२९	ब्राह्मणो भवत्यग्निरग्निर्वै	व १.३०.२
ब्राह्मणी गमनेऽस्मात्त्वोद	अत्रिस ४.३	ब्राह्मणो भूष्वेस्तांस्तु	वृ.गौ. ८.१६
ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्	पराशर १०.३१	ब्राह्मणो यस्तु मदभक्तो	वृ.गौ. ६.१८१
ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्	पराशर १०.३५	ब्राह्मणो विधिवत् स्नात्वा	वृ परा ११.१०८
ब्राह्मणी तु शुना दष्टा	आंउ ९.१५	ब्राह्मणो वै ब्रह्मचर्यं	बौधा १.२.५३
ब्राह्मणीत्वमनुजाता	ब्र.या. २.८७	ब्राह्मणो वैष्णवो विप्रो	वृ हा ५.२२
ब्राह्मणी भोजयेन्	देवल ३८	ब्राह्मणोऽस्य मुखं	व १.४.२
ब्राह्मणी यद्यगुप्तां	मनु ८.३७६	ब्राह्मणोऽहं भवानीह	आश्व १०.३०
ब्राह्मणी शूद्रसम्पर्के	संवर्त १६७	ब्राह्मण्यनशनं कुर्यात्	देवल ४३
ब्राह्मणेन तु कर्तव्यं	लोहि १६	ब्राह्मण्यं गोपनीयं हि	हि कण्व २५०
ब्राह्मणे पूजिते नित्यम्	वृ.गौ. ४.३६	ब्राह्मण्यं तच्च पूज्यं	कण्व २६९
ब्राह्मणेभ्यः करादानं	विष्णु ३	ब्राह्मण्यं तत्समीचीनमतितीक्ष्ण	कपिल १०
ब्राह्मणेभ्यः प्रकुर्वीत	कण्व ६६१	ब्राह्मण्यं तस्य नष्टं	आंपू ६६

ब्राह्मण्यं ब्राह्मणे जातो	कण्व ४५०	ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय	विश्वा १.५
ब्राह्मण्यं ब्राह्मणोहन्यात्	नारद १८.१५	ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय	या १.११५
ब्राह्मण्यमूलं नैव स्यान्	कण्व १७१	ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय	व २.६.३
ब्राह्मण्यसूचनायैवं	आंपू ६३	ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय	वृ हा ८.४
ब्राह्मण्यस्य स्थापनार्थं	भार १५.११	ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय	व्यास ३.७१
ब्राह्मण्या ब्राह्मणी स्पृष्टा	वृ परा ८.२२८	ब्राह्मेमुहूर्ते चोत्थाय	भार ३.३
ब्राह्मण्यां क्षत्रिया	औ सं ५	ब्राह्मे मुहूर्ते निद्रां च	वाधू ५
ब्राह्मण्यां क्षत्रियात् सूतो	या १.९३	ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्धयेत	मनु ४.९२
ब्राह्मण्यां ब्राह्मणेनैवं	ल हा १.१५	ब्राह्मे मुहूर्ते संप्राप्ते	वाधू ४
ब्राह्मण्यां वैश्य संसर्गा	औ सं ७	ब्राह्मे विवाह आहूय	या १.५८
ब्राह्मण्यामपि चण्डाल	नारद १३.१०८	ब्राह्मेनैर्मन्त्रैस्तु पूतन्तु	अत्रिस ७९
ब्राह्मण्याः शिरसिवपनं	व १.२१.२	ब्राह्मे दैव आर्षो गांधर्वः	व १.१.२९
ब्राह्मण्याः शिरसिवपनं	व १.२१.४	ब्राह्मे दैव तथैव आर्षः	शंख ४.२
ब्राह्मण्यां शूद्रजनित	व्यास १.९	ब्राह्मे दैवस्तथाचार्यः	ब्र.या. ८.१६९
ब्राह्मण्यां शूद्र जनित	व्यास १.१०	ब्राह्मे दैवस्तथैवार्षः	मनु ३.२१
ब्राह्मण्या सह योऽश्नीयाद्	आप ५.७	ब्राह्मेद्वाहविधानेन	व्यास २.५
ब्राह्मण्येकान्तरं वेश्यात्	नारद १३.११६	ब्राह्मैदने च सौमेच	अत्रिस ३००
ब्राह्मण्यो जीवपत्यस्तु	व २.४.५७	ब्राह्मणी तु शुनादष्टा	अत्रिस ६७
ब्राह्मदैवार्धगान्धर्व	मनु ९.१९६	ब्राह्मादीन्यथवाशक्तौ	ल व्यास १.१०
ब्राह्मः पूर्वच्छुद्धो जायते	नारा ५.५५	ब्रीहिभिश्च यवैर्माषैर्दिमः	औ ३.१३७
ब्राह्मं पश्चिमलेखायां	वृ परा २.२२२	ब्रीहिमुद्गादिकं सर्व	शाण्डि ३.९०
ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कार	मनु ७.२	ब्रीहिक्षता अपि क्षुद्राः	भार १४.७
ब्राह्मराजन्यवैश्य	बौधा १.३.९	ब्रीहः शालयो मुद्राः	मनु ९.३९
ब्राह्मस्थानमिदं प्रोक्तं	भार ५.३१	ब्रूयात्कस्यानि कै	व २.३.६२
ब्राह्मस्य जन्मनः कर्ता	मनु २.१५०	ब्रूयुरस्तु स्वधेत्येवं	या १.२४४
ब्राह्मस्य तु क्षपाहस्य	मनु १.६८	ब्रुवन्तु च भवन्तो वै	आंपू ८९१
ब्राह्मादिषु विवाहेषु	नारद १३.२९	ब्रूहि वर्णाश्रमाणान्तु	वृ हा १.४.१
ब्राह्मादिषु विवाहेषु	मनु ३.३९	ब्रूहि साक्षिन्यथातत्त्वं	व १.१६.२७
ब्राह्मान्नेन दरिद्रः	अ १५	ब्रूहिति ब्राह्मणं पृच्छेत्	मनु ८.८८
ब्राह्मान् मुहूर्तादारभ्य	प्रजा १६३	ब्रूहीत् युक्तश्च न	मनु ८.५६
ब्राह्मान्मुहूर्तादारभ्य त्रिकाले	वाधू ३		
ब्राह्मीसभामहानित्या	भार ६.५८		
ब्राह्मणे तीर्थेनाऽऽचामेत	बौधा १.५.१५		
ब्राह्मेण वा यौनेन	व १ १.२०		
ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय	वृ परा ६.१४४		
		भ	
		भकराद्यष्टभिर्वर्णै	विश्वा १.७४
		भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव	नारद ६.२६
		भक्तप्रिय ! नमस्तेऽस्तु	वृ.गौ. १८.४०
		भक्तस्योपेक्षणात् सद्यो	नारद ६.३४

भक्तानां पातकान्याशु	शाण्डि ४.२१७	भक्ष्याः पंचनखाः	शंख १७.२२
भक्तानां यद्धितं देव	विष्णु म ६५	भक्ष्याः पंचनखाः	या १.१७७
भक्तावकाशदातारः	नारद १५.१८	भक्ष्याभक्ष्ये तथा पेये	दक्ष १.५
भक्तावकाशाग्न्युदक	या २.२७९	भक्ष्याः श्वाविड्गोधाश	बौधा १.५.१५२
भक्तिगद्गदया वाचा स्तु	बृ.गौ. १८.४२	भक्ष्यास्तिलमयाः कार्या	आंपू १०९८
भक्तिज्ञानक्रियावृद्धि	शाण्डि ५.७	भक्ष्यैर्वा यदि वा भोज्यैः	नारद १३.६६
भक्ति सा सात्विकी	वृ हा ५.८१	भगं ते वरुणो राजा	या १.२८२
भक्तैस्सहाश्रनतां तुष्टिर्न	शाण्डि ४.२२८	भगमिन्द्रश्च वायुश्च	ब्र.या. १०.१४
भक्त्या चैताः प्रदातव्याः	वृ परा ११.२३०	भगर्क्षसंयुक्ता चैते	वृ परा १०.२६९
भक्त्या नीराजनं	वृ हा ७.२९४	भगवज्जन्मदिवसे	वृ हा ९.१३९
भक्त्या परमया युक्त इमां	नारा ५.५३	भगवते श्रीमते चेत्येकार्थे	वृ हा ३.१६७
भक्त्या पुलकितस्वाङ्ग	शाण्डि ४.१७०	भगवत्कर्मसिद्धयर्थ	शाण्डि १.५५
भक्त्या योऽप्यर्चयेद्देवं	वृ हा ५.७६	भगवत्पादतोयेन मोक्ष	शाण्डि ४.१२९
भक्त्या वै देवदेवेश	वृ हा ७.३१६	भगवत्पादपूजायां चरन्	शाण्डि १.२९
भक्त्या सम्पूजयेद्देवं	व २.६.२६३	भगवत्प्रापकैश्शुद्धै	शाण्डि ४.३३
भक्त्या सर्वं प्रदत्तं	वृ परा ५.१७५	भगवत्सन्निधौ वापि	वृ हा ३.२३०
भक्त्यैकादशवस्त्राद्यैः	वृ परा ११.१६८	भगवद्भक्तियुक्तेभ्यो दद्यात्	शाण्डि ३.४१
भक्त्योपकल्पयेदेकं	व्यास ३.४१	भगवद्भुक्तमन्नाद्यम्	शाण्डि ४.६२
भक्षणीयं च यद्वस्तु	वृ परा १०.१०२	भगवद्भुक्तशेषं यद्भुक्तं	शाण्डि ४.१५१
भक्षणे चापि भक्ष्याणां	कण्व ९८	भगवद्भगयोग्यं यत्	शाण्डि ४.१४४
भक्षणे प्रमादतोनीली	आंगिरस १८	भगवद्भक्ति दीप्ताग्नि	वृ हा ८.२८१
भक्षयन्नरके तिष्ठेत्	वृ परा ६.३२६	भगवद्वाचक्रः प्रोक्तः	बृ.या. २.१०३
भक्षयित्वा तु तद्ग्रास	लघुयम ८	भगवद्वासुदेवस्य पादा	शाण्डि ५.५८
भक्षयित्वोपविष्टानां	या २.१६३	भगवन् केन दानेन	अत्रिस १.३
भक्षयेद् यस्य नीलीन्तु	आप ६.९	भगवन् केन दानेन	अत्रिस ६.२
भक्षितं भगवत्पाद	शाण्डि ४.१६५	भगवन् केन दानेन	वृहस्पति २
भक्षिते मानुषे मांसे	अ ७५	भगवन् तव गायत्री	बृ.गौ. १९.२४
भक्ष्यं भक्ष्यविधौ	प्रजा १५४	भगवन् तव भक्तस्य	बृ.गौ. १५.१
भक्ष्य भोज्यं च विविधं	मनु ३.२२७	भगवन् ! त्वत्प्रसादं तु	बृ.गौ. १८.४५
भक्ष्य भोज्यं तथा पेयं	ब्र.या. ४.९०	भगवन्तं प्रपन्नोऽस्मि	विष्णु म २८
भक्ष्यंभोज्यमया शैला	बृ.गौ. १२.५२	भगवन्तं मनुद्दिश्य	वृ हा ५.१८
भक्ष्यभोज्यादिकांश्चापि	कण्व ६९०	भगवन्! देवदेवशा! पंचमी	बृ.गौ. १८.१५
भक्ष्यभोज्यापहरणे	मनु ११.१६६	भगवन् ! ब्रह्मणा यत्	वृ हा ५.१
भक्ष्यभोज्यैः फलै	कण्व ६६९	भगवन् ब्राह्मणादीनामाचार	वाधू २
भक्ष्यभोज्योपदेशैश्च	मनु ९.२६८	भगवन्ब्रूहि तत्त्वेन	व २.६.१

भगवन् ब्रूहि विप्राणां	व २.२.१	भतृणा च हता नारी	व्या २०४
भगवन्भवता प्रोक्ता	व २.१.२	भद्र कर्णेभिः संविधात्	ब्र.या. ८.३५८
भगवन् ! भवता प्रोक्ता	वृ हा ७.१	भद्रं नरैकहस्ताभि	वृ परा १०.३०८
भगवन् भूतभव्येश !	विष्णु म १०	भद्रंभद्रमिति ब्रूयाद	मनु ४.१३९
भगवन्मन्दिरं चैव पुण्य	शाण्डि ३.३२	भं नभोवलि वर्णाभं	वृ परा ४.८३
भगवन्मन्दिरं वृद्धान्	शाण्डि १.३१	भयं वा जायते शत्रो	वृ परा ११.९०
भगवन्मन्दिरे नित्यं मार्जना	शाण्डि १.२८	भयं वितथतां जाल्म्यं	वृ.गौ. ८.१११
भगवन् मंदिरे विष्णुं	वृ हा ६.८६	भयकारुण्यहानं जरामयं	व १.१९.२
भगवन्मन्दिरे वृद्धान्	शाण्डि २.८२	भयपत्वेन भयपे	आंपू १३२
भगवन् मानवा सर्वे	आप १.४	भयात् पातयते यस्तु	नारद १९.१७
भगवन्मुनिनाथ त्वं मयि	नारा २.१	भयादभ्युत्तरेतकश्चित	आंठ ७.४
भगवन्मुनिशार्दूल	नारा ५.१	भरणं क्लीवोन्मत्तानाम्	व १.१७.४८
भगवन् मुनिशार्दूल	नारा १.२	भर्तृभ्रातृपितृज्ञातिश्व	या १.८२
भगवन् म्लेच्छनीता	देवल २	भरणीयैरन्पानप्रदान	लोहि २५०
भगवन्वेद वेदांश्च	ब्र.या. १.२	भरणी प्रेतपक्षे तु	व्या ३२६
भगवन् ! वैष्णवाधर्माः	वृ.गौ. १.३	भरतो वर्णकैश्चित्तैः	वृ परा १२.२००
भगवन् वैष्णावाः	वृ हा २.१	भरद्वाजः क्षुधार्तस्तु	मनु १०.१०७
भगवन् श्रोतुमिच्छामः	सम्बर्त २	भरद्वाजं बलिंभीष्म	वृ हा ७.२१०
भगवन् सर्वधर्मज्ञ	नारा ९.१	भरमैथुनमध्वानं	औ ५.७
भगवन् ! सर्वधर्मज्ञ	लहारीत १.५	भर्गाख्याश्च मुनिश्चात्र	वृ परा ११.३२५
भगवन् सर्वधर्मज्ञ	वृ हा १.३	भर्ता चैव चरेत् कृच्छ्रं	पराशर १०.३४
भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्व	भार १.६	भर्ता यत्पदमाप्नोति	व २.५.७६
भगवन् ! सर्वपापघ्नं	बृ.गौ. २०.२५	भर्तारं लंघयेद्या तु मनु	८.३७१
भगवन् ! सर्वमंत्राणां	वृ हा ३.१	भर्तारमनुगच्छन्ती	आंपू ९८९
भगवन् सर्वयोगीश	बृ.या. १.५	भर्तारो वो भविष्यन्ति	वृ परा ६.६३
भगवन् सर्ववर्णानां	व्या १०	भर्तुः पुत्रं विजानन्ति	मनु ९.३२
भगवन् सर्ववर्णानां	मनु १.२	भर्तुः पुत्रस्यपौत्रस्य नप्तुः	कपिल ६४९
भगवान् इति शब्दोऽयं	वृ हा ३.१६४	भर्तुः प्रियहिते युक्ता	व २.५.१६
भगवान् याज्ञवल्क्यस्तु	बृ.या. १.२२	भर्तुः भ्रातापितृव्यश्च	व २.५.१८
भगवान् वासुदेवोऽसौ	वृ हा ३.१६९	भर्तुः शरीरशुश्रूषां	लघुयम १८
भगास्येकं तथा पृष्ठे	या ३.८८	भर्तुरर्धशरीरा च सर्व	लोहि १०
भगिनी मातरं पुत्री	वृ हा ४.२११	भर्तुरादेशवर्त्तिन्या	कात्या १९.७
भगिन्यश्च प्रमुदिताः	वृ हा ४.२४७	भर्तुरारोपितां निदां	व २.५.२३
भगीरथप्रार्थनया तद्	आंपू ९०७	भर्तुर्धनं च लोभात्स्त्री	शाण्डि ३.१४८
भग्ने कमण्डलौ	बौधा १.४.८	भर्तुः शरीर शुश्रूषां	मनु ९.८६

भर्तुः शासनमुल्लंघ्यं	वृ परा ७.३६८	भवन्ति चात्र श्लोकाः	शंख १२.१३
भर्तुश्चित्यां समारोहे	वृ परा ७.३७७	भवन्ति पितरस्तस्य	अत्रि ५.१८
भर्तुतो वा तदा तां कुं	कपिल ५५१	भवन्ति पुत्राः शुभवंश	वृ परा ११.३४७
भर्तृशासनमुल्लंघ्य	आंगिरस ६९	भवन्ति वै सुक्तिरसा	कण्व ४५८
भर्तृशुश्रूषणं नार्याः परमो	लोहि ६५३	भवन्तो ह्यनुगृह्यन्तु	वृ.गौ. १०.३४
भर्तृहिते यतमानाः	बौधा २.२.५४	भवन्त्यपि न संदेह	आंपू ४१७
भर्त्रा प्रीतेन यद्वत्तं	नारद २.२४	भवन्त्यल्पायुपस्ते वै	पराशर ५.२५
भर्त्रा सपिण्डता स्त्रीणां	वृ परा ७.३५२	भवन्त्येवात्र सततमौर	लोहि ८०
भर्त्रासह मृता भार्या	वृ परा ७.३८९	भवंत्येवावशात्तूष्णीं त्यक्त	कपिल ३७०
भर्त्रा सह मृता या तु	वृ परा ७.३८७	भवन्त्येवेति सर्वत्र निर्विवादो	कपिल ११३
भर्त्रा स्नानं नित्यमेव	लोहि ६४५	भवेच्चसुभगश्रीणां	वृ.गौ. ७.७५
भर्मणेयं यतः साध्या	आंपू ४५४	भवेजातिजातिसहस्रेषु	या ३.६४
भल्लातकं कपित्थं	वृ हा ५.२४१	भवेत् कर्मवशादेव	वृ.या. २.१३१
भल्लातकाश्वपर्णानां	वृ हा ५.२४८	भवेत्क्षीणततस्तस्मात्तत्कर्म	कपिल ६२४
भल्लेक्षणानिरत्नानि	भार ७.३७	भवेत् तु तत् क्षणात् उष्णम्	वृ.गौ. २.३५
भवतः श्रोतुमिच्छामो	व २७.१	भवेत्तु शैशवेऽत्यन्ते	कपिल ६३५
भवति भिक्षांमे देहि	वृ परा ६.१६३	भवेत्पत्युत्पत्ति कृता न	व २.५.६५
भवतीति पदं चोक्त्वा	आश्व १०.३७	भवेत्स्वकर्ममात्रस्य भविता	नारा ८.६
भवत्कालेन निष्कर्षः	लोहि ४६५	भवेत् स्थण्डिलशायी वा	वृ.गौ. १६.३०
भवत्पूर्वं चरेद् भैक्षं	औ १.५३	भवेदजस्रः पत्नीकः श्रोत्रिय	कपिल ६६२
भवत्पूर्वं चरेद्भैक्षं	मनु २.४९	भवेदपि प्रत्यवायी	आंपू २५७
भवत्पूर्वा ब्राह्मणो भिक्षेत	बौधा १.२.१७	भवेदेव न संदेहः	आंपू ३१३
भवत्पूर्ती ब्राह्मणो	व १.११.५०	भवेदेव न संदेहः	आंपू ८२२
भवत्पूर्वी भिक्षामध्यां	बौधा १.२.१६	भवेदेव न सन्देहः	कण्व ५९
भवत्ययं वायुसखा	लोहि १५३	भवेदेव न संदेह	कण्व १३१
भवत्ययि तथा त्यक्तपिता	आंपू १०६३	भवेदेव न सन्देह	कण्व १०२
भवत्येव ततो यत्ना	कण्व ३५७	भवेदेव न संदेहो न	कण्व ७२
भवत्येव न सन्देह	आंपू ९०५	भवेदेव वरस्तेष्व्यो	कण्व ६७०
भवत्येव न संदेह	कपिल २८८	भवेदेवान्वहं भित्वा मुक्तोऽयं	कपिल ६१७
भवत्येव न संदेह	कपिल ६१५	भवेदेवेतिनिखिलाः प्राहुस्ते	लोहि ४६
भवत्येव विशेषेण	कपिल ५३९	भवेद्दोषी नैव भवेदिति	कपिल ३८०
भवत्येव हि तत्पश्चात्	आंपू १००८	भवेद्दिदेशगमनं संप्यन्नस्य	भार ९.४१
भवदन्तस्तु वैश्यस्य	ब्र.या. ८.४३	भवेन्नरस्तोन कृतेन	वृ परा ७.३७
भवन्ति कर्माण्येतानि	भार ८.१०	भवेन्नित्याहिताग्नित्वं	कपिल ६६०
भवन्ति किल भूयोऽपि	लोहि २३१	भवेद्युरेव तस्मात्तु	आंपू ७१८

भवेयुरेव नितरां	कपिल ७७८	भार्यागोधात्त्वनकुल	ब्र.या. १२.६०
भवेयुरेव सततं मूढा	कपिल ८५१	भार्याजितोऽनपत्यश्च	वृ परा ७.८
भव्यानुहरणे पूर्व	कण्व ३४४	भार्यादिरग्निस्तस्मिन्	बौधा २.२.८४
भस्मना कांस्यलौहाद्याः	व २.६.४९३	भार्याधीनं सुखं पुंसां	वृ परा ६.७०
भस्मना तु भवेच्छुद्धि	पराशर ६.३७	भार्या पुत्रश्च दासश्च	मनु ८.२९९
भस्मना शुद्धयते	आप ८.१	भार्या पुत्रश्च दासश्च	मनु ८.४१६
भस्मना शुद्धयते	पराशर ७.२३	भार्याः पुत्राश्च शिष्याश्च	व १.१३.१८
भस्मपंकरजः स्पर्श	या २.२१६	भार्या भोजनवेलायां	वृ परा ६.१३७
भस्मात्सर्वपाद्यैश्च	व २.६.५३२	भार्यामरणपक्षे वा	अत्रि १०८
भस्मास्थिरोमतुष	बौधा २.३.४३	भार्या मरणमापन्ना	कात्या २०.१२
भागधेयं च सकलं	भार १२.४६	भार्यायै पूर्वमारिण्यै	मनु ५.१६८
भागधेयमयी कृत्वा तां	वृ परा ५.१७६	भार्यायां विद्यमानानां तद्वजो	कपिल १९७
भागांशादि प्रश्नमूल	लोहि ४५४	भार्यायै पूर्वमालिरायै दत्त्वा	कपिल १४०
भागिनेयं दशविप्रेषु	व्या १६०	भार्या रजस्वला यस्य	प्रजा ७४
भागिनेयं भगिनीभर्ता	व्या १५९	भार्यारतिः शुचिर्भृत्य	या १.१२१
भागीरथी फल्गुनी	आंपू ५३९	भावदुष्टं क्रियादुष्टं	वृ हा ८.१२१
भाजनं लभनंयावद्	ब्र.या. ४.१००	भावदुष्टं न भुञ्जीयान्नो	पराशर ६.३६
भाजनानान्तु शैलानां	व २.६.५११	भावयन्ती महाकरुदं	आंपू ८७२
भाजनेषु च तिष्ठत्सु	पराशर १२.३८	भावयन्तो जगन्नाथं	शाण्डि ४.१७७
भाजनोपस्करयुक्तं धान्यं	वृ.गौ. ७.१७	भावशुद्धेन मनसा तादृशेनान्	लोहि ४०६
भाण्डपिण्डव्ययोद्धार	नारद ४.४	भावामितेति सूक्तेन	वृ हा ८.५०
भाण्डपूर्णानि यानानि	मनु ८.४०५	भाषयित्वा तु संमोहाद्	अत्रि ५.५३
भाण्डं व्यसनमागच्छेद्	नारद ७.१०	भाषाग्रध (न्य) कुतर्काणामाग	कपिल १९
भाण्डस्थम त्यजानान्तु	पराशर ६.२८	भासकाककपोतानां	पराशर ६.४
भाण्डस्थितमभोज्येषु	पराशर ११.२४	भासमण्डुककुत्सुर	औ ९.४४
भाण्डस्थितमभोज्यान्नं	वृ परा ८.२९५	भास्कालोकनास्त्रील	या १.३४
भांडानां सेचनैः कुर्यात्	व २.५.३८	भृत्यानामुपरोधेन	मनु ११.१०
भातृभार्याभिगमनाद्	शाता ५.२२	भौममाकाशगं वापि	वृ परा ११.२६१
भादे कलिः द्वापरे	प्रजा २३	भिक्षवस्सर्ववर्णेषु भिक्षाचर्यं	नारा ७.२४
भानात्सेकात् शोषाद्	व २.६.४९६	भिक्षाच आहत्य शिष्टानां	औ १.५२
भानौभौमे त्रयोदश्यां	व्या १६	भिक्षांच भिक्षवे दद्यात्	ल हा ४६०
भान्तं वह्निसमायुक्तं	विश्वा ५.१.४	भिक्षाचर्यमतः कुर्याद्	ब्र.या. ८.४२
भारतं मानवोद्धर्मः	वृ गौ. ३.६०	भिक्षाचर्या यतेः प्रोक्ता	वृ परा १२.१२९
भारतद्वाजकृता ये च	वृ.गौ. १.१८	भिक्षाटनमतः कृत्वा	संवर्त २९
भारद्वाजदययः सर्वे	वृ हा ८.३४९	भिक्षादानं गृहस्थाय	कपिल ९३८

भिक्षाप्रदानात्परतः तत्	कपिल १४२	भुक्तवत्स्वथ विप्रेषु	मनु ३.११६
भिक्षाददाति यः साधु	आश्व १.१५२	भुक्तवान्विहरेच्चैव	मनु ९.२२१
भिक्षादद्यात्प्रयत्नेन	व २.६.२०३	भुक्तशेषस्य भक्तस्य	वृ.गौ. ३.५४
भिक्षां वा भिक्षवे दद्यात्	शाण्डि ४.१०१	भुक्तिकाले दण्डनीयः	कपिल ८६६
भिक्षामनभिशस्तेषु	वृ परा ६.१६१	भुक्तिरेव विशुद्धिः स्यात्	नारद २.७९
भिक्षामप्युदपात्रं वा	मनु ३.९६	भुक्तेषु तेषु स्ववशे	वृ.गौ. ३.७४
भिक्षालब्धं च यद्द्रव्य	व २.३.१२१	भुक्तोच्छिष्टं समादाय	व २.६.२१६
भिक्षार्थिनं गृहस्थं च	कपिल ९३९	भुक्तोत्सृष्टं भगवता	शाण्डि ४.१५८
भिक्षार्थी च चरेद्ग्रामं	संवर्त ११०	भुक्त्युद्भवश्च तन्मध्ये	कण्व ६९५
भिक्षाव्रतं द्विजातीनां	वृ परा ६.१५९	भुक्त्वा गच्छति तत्	बृह ११.६
भिक्षुका वन्दिनश्चैव	मनु ८.३६०	भुक्त्वा चास्पृश्य	शाता ३.६
भिक्षुकैर्वा न प्रस्थव	व १.२१.३६	भुक्त्वा चैव व्रतं तत्र	औ ९.३५
भिद्यते मुखवर्णोऽस्य	नारद २.१७४	भुक्त्वा चैव स्वयं	आश्व १.१६१
भिद्यन्ते कवचाधोरा	ब्र.या. २.१४	भुक्त्वा चैषां स्त्रियो	लघुयम ३४
भिन्दन्त्यवमता मंत्रं	मनु ७.१५०	भुक्त्वा चोभयतोदन्तं	शंख १७.२८
भिन्द्याच्चैव तडागानि	मनु ७.१९६	भुक्त्वा तु संकटे विद्यात्	कपिल ६११
भिन्नगोत्रस्य कथिता	कपिल ११८	भुक्त्वा तु सुखमास्थाय	दक्ष २.५१
भिन्नपाकाद्देवपूजावैश्व	कपिल २५४	भुक्त्वाऽतोऽन्यतम्	मनु ४.२२२
भिन्नभाण्डे तु योभुङ्क्ते	वृ.गौ. १६.३८	भुक्त्वा त्रिरात्रं कुर्वीत	शंख १७.४८
भिन्नभावौ भवेतां तौ	वृ परा १२.३५२	भुक्त्वा नयेदहः	व्यास २.३०
भिन्नभिन्नाः प्रकर्तव्याः	आंपू ६९८	भुक्त्वान्ते दिवमासाद्य	नारा ५.१९
भिन्नभिन्नोपनयनाः वैश्य	कपिल २९८	भुक्त्वानं ब्राह्मणस्येह	अ १७
भिन्नं विशीर्णं तंतूणं	भार १६.३१	भुक्त्वा पलाण्डुं	शंख १७.२०
भिन्नवर्णास्तु सापिण्ड्य	औ ६.५५	भुक्त्वा पात्रे यतिर्नित्यं	ल हा ६.१९
भिन्नानि विक्लाङ्गानि	शाण्डि ३.१००	भुक्त्वा पीत्वा च	औ २.१
भिन्ने पणे तु पंचाशत् पणे	या २.२५१	भुक्त्वा भोगान्	वृ हा ५.४०१
भिषङ् मिथ्याचरन्	या २.२४५	भुक्त्वा मासञ्चरेदेत	औ ९.३०
भिषजा रोगिणा स्पृष्टः	भार १८.३६	भुक्त्वा शय्यागतः	वृ परा ८.१९९
भीतः अस्मि अहं महादेव !	वृ.गौ. ५.६१	भुक्तवोच्छिष्टं स्त्वंना	आप ४.४
भीतमत्तोन्मत्तं प्रमत्तं	बौधा १.१०.११	भुक्तवोच्छिष्टं तथा	पराशर ७.३४
भुक्तं चान्नं त्रयोदश्यां तै	ब्र.या. ९.१४	भुक्ते मुखमास्थाय	ल व्यास २.८५
भुक्तं प्रतिगृहीतं	बौधा १.११.३१	भुक्ते स यानि नरकान्	ल व्यास २.६६
भुक्तं भगवता यद्यद्	शाण्डि ४.७२	भुजाद्यास्फालनं रज्जुं	भार ८.४
भुक्तये सर्वभक्ष्यादी (न्)	कण्व ६०९	भुजानो हि यदा विप्रः	पराशर ६.६३
भुक्तवत्सु च विप्रेषु	संवर्त १३४	भुज्यतेऽनागमं यत्तु न	नारद २.७७

भुज्यमानं यदाह्वानं	ब्र.या. १२.१५	भूता यक्षा ग्रहाश्चैव	बृ.गौ. २२.३८
भुज्यमानान् परैरर्थान्	नारद २.६९	भूताविष्टनृपद्विष्टवर्ष	नारद २.१६२
भुञ्जते कपिलां ये तु	वृ.गौ. ९.९	भूतास्तानां करपात्रेण	वृ.गौ. ४.४३
भुञ्जते मानवाः पश्चान्न	अत्रिस १९३	भूतुणं सुरसं शिशुं	शंख १४.१९
भुञ्जते ये तु शूद्रानं	आप ८.७	भूतेभ्यश्च प्रजापत्यं	ब्र.या. ८.२४
भुञ्जदभिवां लिखदभिवाः	वृ.गौ. ५.३३	भूदांसिगायत्युष्णिश्च	भार ६.२९
भुञ्जन्ति क्रमशः श्राद्धे	वृ परा ७.३०	भूदीपाश्वन्न वस्त्रां	या १.२१०
भुञ्जन्ति विप्रकोशेषु	ब्र.या. ४.३२	भूधराः सागराः सर्वे	वृ हा ७.२८८
भुञ्जानस्तरु त प्राण	ब्र.या. ४.१०१	भूमिन्मखिलं दातुं तयैव	कपिल ५५०
भुञ्जानस्य तु विप्रस्य	लघुयम ४	भूमिर्बुधसुवरित्येतैः	विश्वा ८.२७
भुञ्जानस्य तु विप्रस्य	आप ९.१	भूः भुवः स्वःरिति ब्रह्म	वृ.गौ. ४.२५
भुञ्जनेषु विप्रेषु सूतकं	दा १३७	भूभृद्भूमौ परो देवः	वृ परा १२.२
भुञ्जीतचेत् समूढात्मा	ल व्यास २.६४	भूमावन्नं प्रतिष्ठाप्य	आप ९.३७
भुञ्जीत पात्रपुटके पात्रे	ल हा ६.१६	भूमावपि च लिप्तायां	आप १०.२
भुञ्जीत वाग्यतो स्पृष्टं	औ ५.६३	भूमावप्येककेदारे	मनु ९.३८
भुञ्जीत स्वजनैः सार्धं	ल व्यास २.६७	भूमिगैस्ते समाज्ञेया	अत्रिस ५.२०
भुञ्जीतातिथि संयुक्तो	ब्र.या. ७.४८	भूमिगैस्ते समाज्ञेयाः	औ २.२८
भुनक्ति च पुनर्भोगान्	वृ परा १०.१८४	भूमिदाता कुलेजाता	वृहस्पति १८
भुवन पतिं चैव	ब्र.या. २.१७१	भूमिदानफलं चैव	वृ परा १०.१०
भुविदर्भान् समास्तौर्य्य	व्यास ३.३१	भूमिदानस्य पुण्यानि	वृहस्पति १६
भू कदम्बं च कल्हारी	ब्र.या. १०.१४८	भूमिदानात्परो धर्म	वृ परा १०.१८१
भूगर्भविधानेन पत	नारा ३.१२	भूमिदानेन ये लोका	दा ७
भूतच्छलानुसारित्वाद्	नारद १.२४	भूमिदानेन ये लोका	लिखित ३
भूतप्रवाचने पत्नी	कात्या १८.२२	भूमिदानेन ये लोका	लघुशंख ३
भूतं भव्यं भविष्यं च	वृ.या. २.८४	भूमिदायान्तितं लोका	वृ.गौ. ५.९१
भूतले कलिना सृष्टोः न	कपिल ४९	भूमिदो भूमिमाप्नोति	वृ.गौ. ११.२५
भूतले ब्राह्मणाः सन्तः	आंपू ५३४	भूमिदो भूमिमाप्नोति	मनु ४.२३०
भूतविद्धा सिनीवाली न	ब्र.या. ९.४१	भूमिदो भूमिहर्ता	वृहस्पति ३०
भूतात्मनस्तपोविद्धे	या ३.३४	भूमिपृथिव्यन्तरिक्ष	वृ परा ११.३३२
भूतानां पतयेचेति	व्यास ३.३२	भूमिः भूमिमगान्माता	बौधा १.४.९
भूतानां पति धर्मस्तु	ब्र.या. २.१७०	भूमिं निखातं यूपांश्च	वृ परा ५.१२३
भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः	मनु १९६	भूमिं यः प्रतिगृह्णाति	अ ८९
भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः	बृह ११.३६	भूमिं यः प्रतिगृह्णाति	वृहस्पति ३३
भूतानामात्मभूतस्य	वृ परा १२.२९३	भूमिं यस्तु प्रगृह्णाति	वृ हा ४.१५८
भूताभयप्रदानेन	संवर्त ५३	भूमिं शस्यवर्ती श्रेष्ठां	संवर्त ७३

भूमिं हि दीयमानाञ्च	वृ.गौ. ६.९६	भूर्भुवः स्वरिति ज्ञेया	वृ.या. ३.३
भूमिमाक्रमते प्रातः	वृ.गौ. ५.१०२	भूर्भुवः स्वरिति यः	बृह ९.१०८
भूमिर्गाव स्तथा दाराः	वृहस्पति ६८	भूर्भुवः स्वस्तथा	वृ.या. ३.९
भूमिर्गोकर्णमात्रेण	वृ.गौ. ६.१०८	भूर्या पितामहो	या २.१२४
भूमिहर्त्री स्वयं राजा यत्नेन	कपिल ५५४	भूर्लोकं पादयोर्मध्ये	वृ.या. ५.५
भूमे गंध तथा घ्राणं	या ३.७८	भूलग्न सव्यजानुः	वृ परा ७.१९३
भूमे प्रतिग्रहं कुर्याद्	वृ परा १०.३२६	भूलग्नसव्यजानुश्च	वृ परा २.१८४
भूमेर्ग्रामादिरूपाया दत्तया	कपिल ४६८	भूशुद्धिः मार्जनाद्वाहात्	या १.१८८
भूमेस्तु संमार्जन	बौधा १.५.६६	भूषणाच्छादनदीनि पात्र	लोहि ४७६
भूमौ तु गार्हपत्यस्य	कण्व. ३४२	भूषणानां च पात्राणां	कपिल ५४७
भूमौ त्रीणी ततोत्पूय	ब्र.या. ८.२५७	भूषयित्वाप्रीणयित्वा रत्न	कपिल ६८२
भूमौ निक्षिप्य तद्	औ २.३०	भूषितोऽपि चरेद्धर्म	मनु ६.६६
भूमौ निधाय तद्व्यमाचान्तः	अत्रि ५.१९	भूस्त्री तस्याः प्रदानेऽस्या	कपिल ६४७
भूमौ पिण्डद्वयं दद्यात्	ब्र.या. ३.४३	भृगुणा च मनोः प्रोक्तं	वृ हा ८.३४२
भूमौ यस्तर्पणं कुर्यात्	व्या २५०	भृगुपाते मृतेचैव	शाता ६.३६
भूमौ विपरिवर्तेत	मनु ६.२२	भृगुरात्रिर्विशिष्टश्च	भार १.३
भूमौ हस्तौ प्रतिष्ठाप्य	व्या ३३४	भृगु वह्नि प्रपाते च	वृ परा ८.४४
भूम्यास्तु संमार्जन	व १.३.५१	भृग्वग्निपतनं चाष्टौ	नारा ७.५
भूरग्निचादि सूक्तस्य	भार १७.२०	भृग्वग्निमरणे चैव	पराशर ३.१२
भूरश्वः कनकं गावो	वृ.गौ. १०.६४	भृग्वग्न्यनशनम्भोभिः	शंख १५.२१
भूरदिकेन त्रितयेन	वृ परा ४.११	भृतकाध्यापकः कुष्ठी	प्रजा ८३
भूरदिनामत्रिभृगुकुत्स	भार ६.२८	भृतकाध्यापकः क्लीवः	या १.२२३
भूरदिव्याहृतीनां तु मुनयो	भार ६.३०	भृतकाध्यापकश्चैव	ब्र.या. ४.१७
भूरदिसप्तकं न्यस्य	भार १९.२१	भृतकाध्यापको यश्च	मनु ३.१५६
भूरग्राश्चैव सत्ययान्ता	वृ.या. ३.६	भृतकाध्यापनं चैव	वृ हा ४.१६७
भूरग्रास्तिष्ठ एवैता	कात्या ११.६	भृतकास्त्रिविधो ज्ञेय	नारद ६.२०
भूरितिन्यस्य शिरसि	भार १९.२२	भृतादध्ययनादानं	या ३.२३५
भूरितिव्यहति पूर्वाः	भार १९.२	भृतानां वेतनस्योक्तो	नारद ७.१
भूर्धारयति सत्येन	नारद २.१९१	भृतावनिश्चितायां तु	नारद ७.३
भूर्भुवः सुवरित्येत्	भार १६.१९	भृतिषड्भागमाभाष्य	नारद ७.८
भूर्भुवः स्वत्रयोलोक	आंड ३.२	भृतोऽनार्तो न कुर्याद्यो	मनु ८.२१५
भूर्भुवः स्वःमहाजन	वृ.या. ८.४	भृत्यानां च भृतिं विद्याद्	मनु ९.३३२
भूर्भुवः स्वः महः जन	ब्र.या. २.५६	भृत्याय वेतनं दद्यात्	नारद ७.२
भूर्भुवस्वःमहाजनस्तपः	भार ६.२७	भृत्याश्च द्विविधा ज्ञेया	शाण्डि ४.९६
भूर्भुवः स्वरिति चैव	वृ.या. २.७७	भृदोंगुष्ठ कनिष्ठाभ्यां	भार ४.३१

भृशं न ताडयेदेनं	नारद ६.१३	भोजनान्ते च संपन्नं	आंपू ८४०
भेदकारी भवेच्चैव	अत्रिस ३.४६	भोजनाभ्यंजनाद्	व १.२.३५
भेदं सर्वं परित्यज्य	लोहि ५८२	भोजनाभ्यंजनाद्	मनु १०.९१
भेदयन्तं भीषयन्तं	लोहि ७०८	भोजनाभ्यञ्जनाद्	बौधा २.१.७६
भेरूण्डश्येनभासञ्च	पराशर ६.८	भोजनायोपविष्टस्य	वृ परा ६.३६५
भेषजकरणं ग्रामयाजनं	बौधा २.१.६१	भोजनासनमुत्सृज्य	ब्र.या. २.२०३
भेषज स्नेहलवण	या २.२४८	भोजने चैव पाने च	आंगिरस २५
भैक्षञ्चैव समादाय	संवर्त १११	भोजने तु प्रसक्तानां	अत्रिस २७५
भैक्षाग्निकार्यं त्यक्त्वा	या ३.२८१	भोजने मैथुने मूत्रे	व्या ४४
भैक्षुण वर्तयेन्नित्यं	मनु २.१८८	भोजने मैथुने मूत्रे	व्या ४५
भैक्षेण वर्तयेन्नित्यं	औ १.५९	भोजने वर्तुलोग्रन्थि	ब्र.या. २.३९
भैक्ष्यं चरेद् यथापूर्वं	व २.३.१३७	भोजनेष्वाजीर्णान्तम्	बौधा १.११.२८
भैक्ष्यं द्रव्यं हि विप्राणां	प्रजा ४३	भोजनोत्तिष्ठ पात्रे	व्या १४२
भैक्ष्यस्याचरणे दोषः	बौधा १.२.५४	भोजनोत्तरनिर्माल्यं प्रक्षाल्य	विश्वा १.९४
भैखाय नमस्तुभ्य	विश्वा १.४६	भोजयित्वा ततः पिण्डान्यथा	व २.६.३८९
भोगवन्तो द्विजश्रेष्ठा	वृ.गौ. ७.८८	भोजयित्वा ततो विप्रान्	वृ हा ५.५०२
भोगांश्च दद्याद् विप्रोभ्यो	या १.३१५	भोजयित्वा ततो विप्रान्	वृ हा ६.४२८
भोगानुपाज्ययागधर्म	शाण्डि ४.२	भोजयित्वा ततोविप्रान्	व २.७.१०४
भो गुरो ब्रूहि मंत्रं मे	वृ हा २.१२७	भोजयित्वा द्विजान्	शंख १४.२४
भोजन आच्छादने दत्त्वा	वृ परा १०.२३१	भोजयित्वा द्विजान्	आश्व ३.११
भोजनं कदलीपत्रे	व्या १६७	भोजयित्वा महाभागान्	वृ हा ५.२३१
भोजनं च मलोत्सर्गं	आश्व १.३०	भोजयित्वा यथा शक्त्या	वृ हा ५.२३२
भोजनं नैव कर्तव्यं	आंपू २८३	भोजयेच्चाऽऽगतान् काले	वृ हा ५.२२१
भोजनं भगवत्कर्म	शाण्डि ४.१५५	भोजयेत् आत्मनश्श्रेष्ठान्	वृ.गौ. ६.७३
भोजनं शयनं ध्यानं	भार १.१६	भोजयेत्पायसान्नेश	व २.६.३८८
भोजनं शयनं स्नानं	आश्व १५.६५	भोजयेदथवाऽप्येकं	शंख १४.१०
भोजनस्य द्विजातीनां	वृ.गौ. १३.२	भोजयेदन्नपान्नाद्यै	व २.६.१९७
भोजनस्य प्रधानत्वं	कात्या २९.१०	भोजयेदन्नपानाद्यै	व २.६.३११
भोजनं स्वापमुद्धोषं	शाण्डि २.८०	भोजयेद् गृहिणोभिक्षां	व्यास ३.४२
भोजना च मनान्नं	ब्र.या. १३.२६	भोजयेद्ब्राह्मणाने दद्यात्	कपिल ८७५
भोजनाच्छादनैः पुष्प	शाण्डि ३.१५६	भोगयेद् ब्राह्मणान्	वृ हा ५.५३३
भोजनादिषु नासक्तां	वृ परा ६.२७०	भोजयेद् ब्राह्मणान्	वृ परा ८.८९
भोजनादौ च भुक्त्यन्ते	विश्वा २.३०	भोजयेद् ब्राह्मणान्	वृ परा ८.१३२
भोजनाद्यं तथाद्विव्यं	शाण्डि ४.१५४	भोजयेद् ब्राह्मणान्	व २.६.२४२
भोजनाद्यंतयोर्मूत्रशौच	शाण्डि २.४०	भोजयेद्भोजनीयांस्तान्	शाण्डि ४.१०६

भोजयेद् योगिनं पूर्वं	औ ४.९	भ्रातृणामथदम्पत्यो	या २.५३
भोजयेद्वापि जीवन्तं	औ ५.८९	भ्रातृणामप्रजः प्रेयात्	नारद १४.२४
भोजयेद् वैष्णवान्	वृ हा ५.३१८	भ्रातृणामविभक्तानां	मनु ९.२१५
भोजयेद् वैष्णवान्	वृ हा ५.३३८	भ्रातृणामविभक्तानां	नारद १४.३७
भोजयेद् वैष्णवान्	वृ हा ५.४२५	भ्रातृणामेक जातानामेक	मनु ९.१८२
भोजयेद् वैष्णवान्	वृ हा ५.४७०	भ्रातृपत्नीनां युवतीनां	बौधा १.२.३२
भोजितेन तु विप्रेण	वृ परा ७.६५	भ्रातृपुत्रं ज्ञातिपुत्रः बन्धुं	कपिल ७०२
भोज्यानेव रसात्रस्या	शाण्डि १.१६	भ्रातृपुत्रशिष्येषु	बौधा १.२.४३
भोज्यऽअलंकारवासोभि	वृ परा ६.४२	भ्रातृपुत्रेषु तिष्ठत्सुं	आंपू ३६०
भोज्याशनास्तु सच्छूद्रा	वृ परा ८.३२४	भ्रातृभार्योपसंग्राह्या	औ ३.३२
भो भो ब्रह्मन् वदस्वाद्य	नारा ८.१	भ्रात्रादीनामपि तथा	लोहि ४५०
भो भो वेन महीपाल	नारा ७.१६	भ्रात्रे भगिन्यै पुत्राय	व्या २८५
भोः शब्दं कीर्तयेदन्ते	मनु २.१२४	भ्रात्रे भगिन्यै पुत्राय	कपिल १४६
भ्रंशयित्वा बहिष्कृत्य	लोहि ५४२	भ्रामयित्वा पुनर्वक्त्र	भार ७.१००
भ्रमन्ति पितरस्तस्य	व्या २७१	भ्रामरी गण्डमाली च	मनु ३.१६१
भ्रमन्ति सर्वभूतानि	शाण्डि १.४२	भ्रुवौःमण्डलमध्यमस्थं	ब्र.या. २.३०
भ्रष्टाद्वा पतिताद्वापि	कपिल ९८०	भ्रवोः ललाट सन्ध्योस्तु	वृ परा ४.३४
भ्रष्टानामपि तुच्छानां	आंपू १३८	भ्रुवोललाटसन्ध्योस्तु	वृ परा ४.१३२
भ्रष्टाभ्रष्टयवाश्चैव तथैव	अत्रिस २४०	भ्रूणहत्यां प्रसिद्धिं	वाधू १६६
भ्रष्टाणां पतितायां वा	लोहि १६०	भ्रूणहत्यामवानोति	व्यास २.४६
भ्राजते च यदा भर्गः	बृह ९.५०	भ्रूणहत्यासमंचैतदुभयं	वृ.गौ. १.२.१३
भ्राजते दीप्यते यस्माज्	बृह ९.५३	भ्रूणहत्यासमं पापं	वृ.गौ. ९.५६
भ्राजते स्वेन रूपेण	बृह ९.५४	भ्रूणहत्या सुरापानं	वृ.गौ. १६.३४
भ्रातरः कुर्वते श्राद्धं	व्या २८४	भ्रूणहनं वक्ष्यामो	व १.२०.२६
भ्रातरश्च पृथक्कुर्युर्ना	वृ.या. ५.१६	भ्रूणहनावेक्षितं चैव	मनु ४.२०८
भ्राता पितृव्यो भ्रातृव्यः	प्रजा ६२	भ्रूणहा द्वादश समाः	बौधा २.१.२
भ्रातुः पुत्रो भवेन्न्यूनः	आंपू ४०५		
भ्रातृर्ज्येष्ठस्य कुर्वीत	वृ परा ७.४८		
भ्रातृर्ज्येष्ठस्य भार्या	मनु ९.५७		
भ्रातृभार्योपसंग्राह्या	मनु २.१३२		
भ्रातृर्मतस्य भार्यायां	मनु ३.१७३		
भ्रातृस्तथापिमूकस्य स्वयं	कपिल ३०६		
भ्रातृजेषु विवाहो	आंपू ३.५९		
भ्रातृजो वाक्यतः	आंपू १२६		
भ्रातृणां यस्तु नेहेत	मनु ९.२०७		

म

मकारं पद्मरागाभं	वृ परा ४.८९
मकारं मूर्ध्नि विन्यस्य	बृ.या. ५.३
मकारे पीड्यमानायां	बृ.या. २.३४
मकारेवाच्यो जीवोसौ	वृ हा ३.८२
मकारेस्तु भवेज्जीव	वृ हा ३.५९
मक्षिकामशक्तेनापि	शंख १७.४७
मक्षिका विप्रुषश्छाया	मनु ५.१३३
मघामूलश्विनी ज्येष्ठा	ब्र.या. ८.२९९

मघायुक्तत्रयोदश्यां	वृ परा ७.२९३	मण्डलं ब्राह्मणं रुद्र	संवर्त २२५
मघाशक्र शिव आदित्य	आश्व ३.१५	मण्डलस्य प्रमाणं तु	नारद १९.१२
मंगल द्रव्य संयुक्तैरद्भिः	वृ हा ६.४०२	मंडलस्योत्तरे भागे	व्या १०३
मंगलाचारयुक्त स्यात्	मनु ४.१४५	मण्डलात्पश्चिमे भागे	आंपू ७७९
मंगलाचारयुक्तानां नित्यं	मनु ४.१४६	मण्डलात्पूर्वतो देवा	व्या १०४
मङ्गलाचार युक्ताश्च	वृ.गौ. १०.१०२	मण्डलानि चतुः षष्टि	ब्र.या. १.१२
मंगलानि कुतस्तस्य	अत्रिस २१९	मंडलान्युपजीवन्ति	अत्रि ५.२
मंगलार्थं स्वस्त्ययनं	मनु ५.१५२	मण्डलाभ्यांच क्रग्यांच	व २.३.१४७
मंगलाशासनं कुर्यात्तूर्य	व २.६.२२९	मण्डले चतुरस्रे च	व २.६.१९९
मङ्गल्य पावनो धन्यः	बृ.या. २.२	मण्डले चतुरस्रेति	व २.६.२९८
मंगल्यं ब्राह्मणस्य	मनु २.३१	मण्डलेन तु संस्थाप्य	ब्र.या. १०.८९
मज्जनं गोमयहनदे गोदानं	नारा ८.१३	मण्डले पात्रं संस्थाप्य	ब्र.या.२.१६२
मज्जनं मृत्योर्जुहोमि	वे १.२०.३५	मण्डूकञ्चैव हत्वाच	संवर्त १४७
मज्जेदोमित्युदाहृत्य	वृ.गौ. ८.३३	मतानुगमनं नास्ति	वृ परा ७.३७६
मठश्चैतेषु लब्धेषु	भार १५.५५	मत्ताभियुक्तस्त्रीबाल	नारद २.११४
मणिकं कलशान् वाऽपि	वृ परा १०.१९	मतिपूर्वघ्नतस्तस्य	बौधा २.१.७
मणिधनुरिति ब्रूयात्	व १.१२.३१	मतिपूर्वं वधे चास्याः	औ ९.१६
मणिनेकमुखाः सर्वा	भार ७.४०	मतिं शूद्रस्य यो	वृ परा ६.२६२
मणिपाषाणशंखाश्च	पराशर ७.२७	मति स्वार्थः सदारेषु	वृ हा ५.१५
मणिप्रबालरत्नानां	औ ९.२०	मत्कृतानि च कर्माणि	शाण्डि २.७७
मणिभिर्मोक्षमाला च	भार ७.१४	मत्कोपजातकालग्नौ मूर्द्धा	नारा ४.६
मणिमुक्ताप्रवालादि	व २.७.९७	मत्कुब्जातुराणां च न	मनु ४.२०७
मणिमुक्ताप्रवालानां	मनु ९.३२९	मत्तेभकुम्भसंकाशौ	विष्णु १.२५
मणिमुक्ताप्रवालानां	मनु ११.१६८	मत्तोन्मत्तार्ताध्यधीनैः	मनु ८.१६३
मणिमुक्ताप्रवालानि	मनु १२.६१	मत्तोन्मत्तार्ता व्यसनि	या २.३३
मणिमुक्ता फलै युक्तं	वृ परा १०.१६८	मत्या द्विमासमभ्यासे	नारा १.२२
मणीनां राजतां कुर्यान्	औसं ४०	मत्यामत्या तथा पापात्	नारा २.२
मण्डकान् विविधान्	वृ हा ५.३५९	मत्या मद्यपाने त्वसुरायाः	व १.२०.२२
मंडतां (लांत) र्गतायस्य	भार २.२४	मत्वा चार्थवतः सर्वान्	वृ परा १२.५९
मण्डपस्य च वेद्याश्च	वृ परा ११.२७३	मत्सुतागर्भसंभूतं शिशुमेनं	कपिल ३७२
मण्डलं कारयित्वा तु	बृ.गौ. १३.३	मत्स्यकूर्मादिभिश्चैव	वृ हा ६.११२
मण्डलं चतुरस्रं वा	औ ५.४६	मत्स्यकूर्मादिमूर्तीनां	वृ हा ४.९३
मंडलं तस्य मध्यस्थ	या ३.१०९	मत्संघातो निषादानां	मनु १०.४८
मण्डलं पूर्वतः कृत्वा	औ १.६४	मत्स्यं कूर्मं च वाराहं	वृ हा ७.१४२
मंडलं बाहुमात्रं च	व्या ७८	मत्स्या नकादयः कार्यं	वृ परा ११.२२८

मत्स्यानं पक्षिणां चैव	मनु ८.३२८	मधुपर्कप्रदानेन	वृ हा ५.२२२
मदनं कुटजादर्क	व २.६.१७०	मधुपर्कं क्षिपेत् किंचिद्	आश्व १.५.११
मदमात्सर्यमानाद्या दोषा	शाण्डि ३.४४	मधुपर्कं विनारात्रौ	आश्व १.१.४७
मदर्चनपरः क्रोधलोभमोह	वृ.गौ. १७.२६	मधुपर्कविधानं च ये	ब्र.या. ८.१.११
मदीयां वहते चिन्तां	विष्णु १.२१	मधुपर्कस्तथान्नाद्यं	शाण्डि ४.४३
महालयषोडशत्वेगज	आंपू ६९१	मधुपर्काय कौठजं	व २.६.२०१
मद्भक्तानां तु मानुष्ये	वृ.गौ. १.४३	मधुपर्कं च यज्ञे च	मनु ५.४१
मद्भक्ता मद्गतप्राणाः	वृ.गौ. २२.२१	मधुपर्कं च यज्ञो च	व १.४.६
मद्भक्ता ये द्विजश्रेष्ठा	बृ.या. १४.१४	मधुपर्कं च सोमे च	पराशर ९.३५
मद्भक्तिः क्रियते तात	वृ.गौ. १.४५	मधुपाः सोमपाश्चैव	ब्र.या. १०.१.२७
मद्यगन्धं समाधाय	वृ हा ६.२६५	मधुमध्वितियस्तत्र	कात्या ३.७
मद्यपस्त्रीमुखं मोहादा	वृ.गौ. १९.३९	मधुमन्नं समासाद्य	ब्र.या. ४.१.०९
मद्यपस्य निषादस्य	अत्रिस २१०	मधुमांसजनोच्छिष्टमु	ब्र.या. ८.६४
मद्यपाऽसत्य वृत्ता	मनु ९.८०	मधुमांसांजनोच्छिष्ट	या १.३३
मद्यपो रक्तपित्ती	शाता ३.३	मधुमांसैश्च शाकैश्च	व १.११.३७
मद्यभाण्डगताः पीत्वा	शंख १७.४३	मधुमा साशनं चैव	व २.३.८८
मद्यभाण्डाद् द्विज कश्चिद्	अत्रिस ६१	मधुराणां तु सम्पर्को	शाण्डि ४.४०
मद्यभाण्डे स्थिता आपो	व २०.२४	मधुवाताक्रतयितिदेव	भार ७.७७
मद्य वाऽपि सुरां वाऽपि	वृ हा ६.२७५	मधुव्वाता ऋचा	ब्र.या. ३.६७
मद्यमप्यानुतं श्राद्धे	प्रजा १५१	मध्यकाले तु मध्याह्ने	विश्वा ८.३६
मद्य मासं तथैवोष्ट्रं	वृ हा ६.३४९	मध्यच्छिन्ना यदा	आंपू ५८
मद्यमांसादि निषेधं सर्व	विष्णु ५१	मध्यन्दिने जपान्ते च	विश्वा ७.१३
मद्यमांससमं प्रोक्तं	वृ हा ५.७०	मध्यन्दिने दृढङ्गो यः	वाधू २१८
मद्यमांसाशिनश्चान्ये	वृ हा ८.२६८	मध्यन्दिनेऽर्धरात्रे वा	मनु ७.१.५१
मद्यमांसे च विमूत्र	व २.६.४७७	मध्यन्दिने यदशनीयादष्टौ	वृ परा ९.७
मद्यैर्मूत्रैः पुरीषैर्वा	मनु ५.१.२३	मध्यदिनेऽर्धरात्रे च	मनु ४.१.३१
मद्यैः मूत्रैः पुरीषैर्वा	व १.३.५५	मध्यप्रविष्टगोत्रस्य तत्त्वं	कपिल ९७
मधुकं कुटजं ब्राह्म	वृ हा ५.२४९	मध्यमं तं ततः पिंडं	औ ५.७५
मधुचौरस्तु पुरुषो	शाता ४.१०	मध्यमं युग्मपिण्डौ	ब्र.या. ५.२४
मधुदंशः पल गृध्रो	या ३.२१५	मध्यमस्तु भवेद्विन्दु	बृह ९.११
मधुना कुशतोयेन	भार ७.६०	मध्यमस्थापयेच्चक्कु	भार २.२३
मधुनाऽऽज्येन वा युक्तं	आश्व १५.५	मध्यमस्य प्रचारं च	मनु ७.१.५५
मधुना पयसा चैव	या १.४१	मध्यमा अन्तमिका	वृ परा ६.१.२१
मधुना पूरितं पुण्यमत्य	कपिल ९१२	मध्यमांगुलमध्यस्त	भार २.५४
मधुपद्यात्मृतं (द्रव्यात्मकं)	भार १४.३७	मध्यमानामिकांगुष्ठैः	वृ हा ५.२५८

मध्यमानामिकादर्भे	ब्र.या. २.३५	मनः शुद्धिरन्तः शौचम्	बौधा १.५.३
मध्यमेकेन होमेन देव	कपिल ६८१	मनः शौचं कर्मशौचं	बृ.गौ. २.१.९
मध्यमेन पलाशस्य	वृ परा ९.३०	मनश्चैतन्य युक्तोऽसौ	या ३.८१
मध्यमैः युवाभिः वालैः	वृ.गौ. ५.३०	मनः सन्तापकरणं	वृ हा ६.२९२
मध्यसंध्या च कर्तव्या	कण्व २४७	मनसश्च परा बुद्धि	बृह ९.१८५
मध्यस्थ स्थापितं	या २.४६	मनसश्चात्मनश्चैव	दक्ष ७.१४
मध्यस्थ स्थापितं	वृ हा ४.२३२	मनसश्चन्द्रमा जातः	या ३.१२८
मध्यांगुलेर्मध्यरेखा	भार ७.१०४	मनसः संयमः तज्ज्ञैः	शंख ७.१४
मध्याद्विप्रस्थवाङ्मौना	भार १५.१४५	मनसा कर्मणा वाचा	वृ.गौ. १०.१३
मध्यामध्यस्पृशतोपि	ब्र.या. २.१९६	मनसा केवलं रात्र्यां	शाण्डि ५.२६
मध्याह्ने मृत्तिकास्नानं	विश्वा १.८८	मनसा गणनापूर्वं	विश्वा ३.४२
मध्याह्नान्ते वैश्वदेवं	विश्वा ८.३७	मनसा नैत्यकं कर्म	कात्या १९.२
मध्याह्ने च पुनः स्नायाद	आश्व १.७५	मनसाऽपि जलेनापि	वृ हा ८.२७२
मध्याह्नचलितो भानुः	वृ परा ७.९७	मनसापि न कुर्वीत	आंपू ९७
मध्याह्ने चैव सावित्री	ब्र.या. २.४६	मनसापि हि दुष्टास्त्री	वृ परा ६.५१
मध्याह्ने तु गते सूर्ये	वृ परा ७.९५	मनसा भर्तुरतिचारे	व १.२१.७
मध्याह्ने ब्रह्मयज्ञो वै	आश्व १.१०६	मनसि वाऽर्चयित्वास्मिन्	वृ हा ४.१३३
मध्याह्नो नापाराह्ण स्यात्	लोहि ६४७	मनसीन्दुं दिशः श्रोते	मनु १२.१२१
मध्ये तु पावनो देशो	वृ परा १.४३	मनः सृष्टिं विकुरुते	मनु १.७५
मध्ये तु भास्करं स्थाप्य	ब्र.या. १०.९७	मनसेत्यादि मंत्रेण	व २.६.५
मध्ये तु मधुपर्कार्थे	व २.६.८८	मनसैवार्चयित्वाऽथ	वृ हा ५.२५४
मध्येतु वारुणं कुम्भं	वृ हा ५.१२०	मनसैवार्चयेद्देवं	वृ हा ३.४०
मध्ये तु विषुवं ज्ञेयं	वृ परा ६.१००	मनसैवोपचाराणि	वृ हा ३.२२८
मध्ये तेषां तुलादीनां	कपिल ९०५	मनस्था (खानि) स्थिरां	विश्वा ८.२०
मध्ये ब्रह्मसमारोप्य	ब्र.या. १०.८७	मनिवर्ती यथा श्येनो	का १०
मध्ये शाकुटकादीनी	आंपू ५२९	मनुना चैवमेकेन	पराशर ९.५१
मध्येस्कन्धभुजाभ्या	वाधू १३८	मनुः पुत्रेभ्यो दायं	बौधा २.२.२
मध्ये स्थाप्य	ब्र.या. १०.१०६	मनुः प्रजापतिः यस्मिन्	नारद १.१
मध्यक्षद्वन्निति मंत्रं	आश्व २३.६९	मनुः भृगुः वशिष्ठश्च	वृ हा ५.३
मध्यवाज्यतिलमिश्रेण	व २.६.३७२	मनु मेकाग्रमासीनं	मनु १.१
मध्वाज्यं दधि संयोज्य	शाण्डि ४.३९	मनुर्वा याज्ञवल्क्यस्तु	वृ परा ८.६०
मध्वाज्यशर्करायुक्तं	शाता ६.१८	मनुष्यतर्पणं चैव स्नान	वाधू ६२
मध्वासव मधूच्छिष्ट	वृ परा ६.२८३	मनुष्यं ब्रह्मयज्ञश्च	ल व्यास २.५१
मनः प्रसादजननं	बृ.या. ७.१२६	मनुष्यमारणे क्षिप्रं	मनु ८.२९६
मनः प्रसादनं कुर्यात्	शाण्डि २.१८	मनुष्यविषशस्त्राम्बु	नारद २.१६५

मनुष्याकृतयो देवा
मनुष्याकृतिदेवेषु नरः
मनुष्याणां तु हरणे
मनुष्याणां पशूनां च
मनुष्याणां हितं धर्मं
मनुष्यान्मध्यमानुष्यं
मनो ज्योतिरबोध्याग्निः
मनो बुद्धि तथैवा आत्मा
मनो यस्य निषण्णं
मनो युञ्ज्यात्तथोकारे
मनोवाक्कर्मभिः शातं
मनो विभक्ता त्वग्
मनोहराणि कान्तानि
मनोहरे शुचौ देशे
मनोहिरण्यगर्भस्य
मन्त्रकर्मपरिश्रष्टाः
मन्त्रक्रियापरिज्ञानविकलो
मन्त्राज्ञाः श्राद्धकार्याय
मन्त्रतन्त्रादिवैकल्यरहितं
मन्त्रतस्तु समृद्धानि
मन्त्रतस्तु समृद्धानि
मन्त्र त्रिनेत्रं जुहुयात्
मन्त्रदीक्षा विधानन्तु
मन्त्रद्वयन्तथाजप्त्वा
मन्त्र द्वयेन पुष्पाणां
मन्त्रद्वयेनाभि मन्य तस्मिन्
मन्त्रन्यासं पुरा कृत्वा
मन्त्रः पुमान् क्रिया स्त्री
मन्त्रपूतं तु यच्छ्राद्ध
मन्त्रपूता हरिद्वर्णाः
मन्त्रपूतो वेदजन्यः
मन्त्रं पंचविधं ज्ञात्वा
मन्त्रमुच्चार्य चतुर्थ्यन्तं
मन्त्रमूलं यतो राज्यमतो
मन्त्रमेकं जपेत्तत्र

शाण्डि ४.१८
शाण्डि ४.१७
मनु ११.१६४
मनु ८.२८६
वृ परा १.३
ब्र.या. ११.३
वृ परा ११.१११
शंख ७.२७
वृ परा १२.३०३
बृ.या. २.१३९
ल व्यास २.६०
वृ परा ६.११४
वृ.गौ. ५.८३
व २.३.१७७
मनु ३.१९४
दा १२१
लोहि ६२९
लोहि ३५३
कपिल ४४४
मनु ३.६६
बौधा १.५.१००
वृ परा ११.२०१
वृ हा ८.२३८
व २.६.१३९
वृ हा ५.४०४
व २.३.१०३
वृ परा ४.११४
वृ हा ७.४२
आंपू ७३७
प्रजा ९८
लोहि ११
वृ परा ४.३७
आश्व २.५९
या १.३४४
आश्व ९.२१

मन्त्रयन्त्रविहीनं यत्तिलकं
मन्त्ररत्नं त्रिवारं तु
मन्त्ररत्नविधानेन
मन्त्ररत्न विधानेन
मन्त्ररत्न विधानेन
मन्त्ररत्न विधानेन
मन्त्ररत्नार्थविच्छान्त
मन्त्ररत्नेन जुहुयात्
मन्त्ररत्नेन तद् बिम्बं
मन्त्ररत्नेन वा नित्यं
मन्त्ररत्नेन वाऽभ्यर्च्य
मन्त्ररत्नेन वै कुर्याद
मन्त्रराजं चतुष्पष्टि
मन्त्रराजं परार्थं च प्राणायामं
मन्त्रराजेन गायत्र्या
मन्त्रलोपादि होमान्तं
मन्त्रवर्ज्यस्तु शूद्राणां
मन्त्रशून्यकृतैः सर्वैः
मन्त्रसंस्कार विज्ञेयः
मन्त्र संस्कार विज्ञेया
मन्त्र संस्कारेण प्रोक्ताः
मन्त्रसन्मार्जितजलं
मनस्तदाहं मुग्धं रमते
मन्त्रस्नानं विना विप्रो
मन्त्रस्वरै रक्षरैश्च
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं
मन्त्रक्रियाजुष्टमेव
मन्त्राक्षराणि मनसा
मन्त्राणि सर्वाणि च सद्
मन्त्राण्यमूनिद्वयाणि
मन्त्राद्युच्चारणाभावात्
मन्त्राध्ययनकाले वा चक्रं
मन्त्रान् शृण्वन्त
मन्त्राम्नायेऽग्न इत्येतत्
मन्त्राणानि तु विन्यस्य
मन्त्रार्थं चिन्तनं योगो

स्मृति सन्दर्भ

विश्वा १०८
वृ हा ४.३१
वृ हा २.१.४३
वृ हा ४.६५
वृ हा ६.१७
वृ हा ८.३०३
वृ हा ५.४०७
वृ हा २.१.४७
वृ हा ५.५५१
वृ हा ५.४२८
व २.७.३४
विश्वा ३.५४
विश्वा ३.५५
वृ हा ५.३५५
आश्व १५.५४
ब्र.या. ८.२२१
कण्व २३०
ब्र.या. १०.६९
ब्र.या. १०.९४
ब्र.या. १०.१०५
वृ हा ६.३५३
शाण्डि ५.२८
विश्वा १.७६
वृ हा १७३
आश्व २३.१०९
वृ हा ७.४३
भार ६.२३
वृ परा ११.२००
भार ११.८८
लोहि २५२
व २.१.४२
आश्व २.३.११२
कात्या २५.१
वृ हा ३.१.८६
वृ हा ६.१.४४

मंत्रार्थं तत्त्वविदुषं	वृ हा २.१४२	मन्यून न उत्पादयेत् तेषाम्	वृ.गौ. ३.६९
मंत्रेण अष्टोत्तरशतं	वृ हा ५.३६९	मन्वतारिं यदा राजा	मनु ७.१७३
मंत्रेण च सहस्रं तु	वृ हा ५.३९१	मन्वन्तर द्वयेनेह	वृ परा १२.३६६
मंत्रेण तस्य तत्	बृ.या. १.३९	मन्वन्तरशतं विष्णु	वृ हा ५.४०९
मंत्रेणानेन गायत्रिं यथा	भार ६.११२	मन्वन्तराण्यसंख्यानि	मनु १.८०
मंत्रेणानेन दत्त्वा गां	भार १८.९५	मन्वन्तरैः युगप्राप्त्या	या ३.१७३
मंत्रेणानेन वै तत्र भूर्भुवः	ब्र.या. ८.३१५	मन्वन्त्रि विष्णु हारीत	या १.४
मंत्रेणार्थं प्रदातव्यं	व २.३.१८१	मम कोपः प्रशमितः तव	नारा ५.५
मंत्रेणाष्टोत्तरशतं	वृ हा ५.४५७	मम च एव अन्धकारस्य	वृ.गौ. १.६६
मंत्रेणैव तु गायत्र्या	व २.६.१३४	मम दारसुतामात्या	या ३.१५३
मन्त्रेणैव भिमन्त्र्याऽथ	व २.६.९२	मम प्राणा इरात्यादि	विश्वा ६.३०
मन्त्रेणैवाभिमन्त्र्याथ	व २.७.३२	मम मदभक्तभक्तेषु	बृ.गौ. २१.२३
मन्त्रेणैवाभिमन्त्र्याथ	वृ हा ४.३५	ममलोकं व्रजेद्युक्तो	वृ.गौ. १०.२६
मन्त्रेणैवार्चनं कृत्वा	वृ हा ५.१७०	मम लोकं सपत्नीका	बृ.गौ. १५.९६
मन्त्रेणैव सावितिस्थाननाम	कपिल ३१३	मम लोकावतीर्णश्च	वृ.गौ. ७.१२१
मन्त्रैर्वा जुहुयादाज्यं	वृ हा ७.१५२	मम लोके प्रमोदन्ते	बृ.गौ. १५.९२
मन्त्रैर्होमैर्मार्जनाभ्युक्षणै	बृ.या. ८.३५	मम लोकेषु रमते	वृ.गौ. ७.१६
मन्त्रैः शाकलहोमीयैरब्द	मनु ११.२५७	ममवल्लभ या चैताः न	ब्र.या. ९.१९
मन्त्रैश्चैव स्वशाखोक्तैः	आश्व २४.१६	मम सालोक्य मायाति	बृ.गौ. १८.३०
मन्त्रैस्तोत्रैश्च	वृ.गौ. १०.३०	मम सूक्तं जपेद्यस्तु	बृ.गौ. २०.४६
मन्त्रोच्चारणसामर्थ्याद्यभावे	कपिल ६८८	ममाग्र इति सूक्ताभ्यां	वृ हा ५.४९४
मन्त्रोणोद् बुध्य हृदय	वृ हा ५.९३	ममापि संशयस्तत्र	प्रजा १३
मन्त्रो मन्त्रेश्वरश्शास्त्रं	शाण्डि ३.५४	ममायमिति यो ब्रूयान्	मनु ८.३५
मन्त्रो हि बीजं सर्वत्र	वृ हा ७.४१	ममाश्रयो किञ्चितु	बृ.गौ. २२.३०
मन्दं पठेच्च राजन्यो	वृ परा १०.२८८	ममेति द्वयक्षरं मृत्युर्न	वृ हा ३.९५
मन्दारनागविजयस्वेत	भार १४.९	ममेदमिति यो ब्रूयात्	मनु ८.३१
मन्दार पारिजातादि	वृ हा ३.३१२	मयाकृते मूत्रपुरीषशौच	विश्वा १.११२
मन्देहानां विनाशाय	वृ.गौ. ८.४६	मयाऽऽख्यातं रुदित्वा	वृ परा ७.३८
मन्दोदराग्निर्भवति सति	शाता ३.८	मया ते कथितः सर्व्वो	ल हा ७.१३
मन्निरोधाय सम्बन्धः	लोहि ५३९	मया श्रद्धानि यानि	वृ.गौ. १.७०
मन्यन्ते वै पापकृतो	मनु ८.८५	मया श्राद्धविधिः	वृ परा ७.३९९
मन्यमाना महाभागा	लोहि ५८७	मयि तेज इतिच्छायां	या ३.२७९
मन्युदग्धस्य विप्राणां	वृहस्पति ५१	मयि भक्तिन्न कुर्वन्ति	बृ.गौ. २२.१५
मन्युना स्यन्ति ते	वृ.गौ. ३.७०	मयिसन्नयस्तकर्मणः	वृ.गौ. १२.१२
मन्युप्रहरणा विप्राश्चक्र	शंखलि ३१	मयि सायुज्यतां याति	वृ.गौ. ६.१०६

मयैष धर्मोऽभिहितः	अत्रिस १६	मला ह्येते मनुष्येषु	नारद १६.१३
मयोमवायचत्वारिपशुभ्यः	ब्र.या. ८.२३२	मलिनीकरणं तत्प्रशमनवर्णनम्	विष्णु ४१
मरणं चाश्य कुर्वीरं	नारद १४.२५	मलिनीकरणं प्राहुः दुर	नारा १.१४
मरणाच्छुद्धिमाप्नोति	वृ हा ६.२७६	मलिनो हि यथादर्शो	या ३.१४१
मरणात् प्रभृति दिवस	व १.४.१७	मलिम्लुचेऽपि कर्तव्यं	वृ परा ७.१०६
मरणान्तं तथा चान्यद्दश	दक्ष ६.३	मल्लापकर्षणं ग्रामे	औसं १०
मरणाब्धमाशौचं संयोगो	लिखित ९२	मसूरांजनपुष्पं च	वृ परा ७.२२८
मरणे तु यथा बालं	बौधा १.५.१२९	मस्तकं संपुटं चैव	शाण्डि २.७५
मरणेषु च द्यायै	व २.६.३९४	मस्तके तु तथा शार्ङ्ग	वृ हा २.२०
मरीचं च मधुश्चैव	व्या ३१६	मस्तके भार्जनं कुर्यात्	आश्व १.२५
मरीचं शीरकं चैव	शाण्डि ३.११३	महतः परं अव्यक्तं	शंख ७.३३
मरीचं हिंगु तैलानि	प्रजा १२४	महतां काष्ठानामुपघाते	बौधा १.६.२५
मरीचिपाः संभवन्ति	कण्व ४६२	महतां श्ववायस	बौधा १.६.४८
मरीचिमत्र्यङ्गिरसं	ब्र.या. २.९६	महतोऽप्येनसो मासात्	बृ.या. ४.५०
मरीचिमत्र्यङ्गिरसौ	मनु १.३५	महत्तु वैदिकं कर्म	कण्व ६३९
मरीचिमिश्रं दध्यन्नं	वृ हा ४.११९	महत्या दीक्षया कर्म	आंपू ३८
मरीचिमिश्रं दध्यन्नं	वृ हा ७.२७७	महत्त्वं व्यपदेश्यं च गुरु	कपिल ८४३
मरीचिरत्रिंशिरा	व २.६.१४१	महत्सु चातिपापेषु	वृ हा ६.२२२
मरीच्यादीन्मुनी श्चैव	वृ.गौ. ८.५८	महत्सु सत्सु तिष्ठत्सुनरो	कपिल ५१५
मरुताकैर्ण शुद्धयन्ति	पराशर ७.३६	महद्भिः पातकैर्मुक्तो	वृ हा ५.५४९
मरुतो यस्य हिक्षये	वृ परा ११.३४४	महन्तो मे गुणाः	वृ.गौ. १.५६
मरुतो वसवो रुद्रा	पराशर १२.२१	महर्षि पितृदेवानां	मनु ४.२५७
मरुत्मण्डलमध्यस्थात्रिः	ब्र.या. १०.१३८	महर्षिभिश्च देवैश्च	मनु ८.११०
मरुदभ्य इति तु द्वारि	मनु ३.८८	महाकुलप्रविष्टा चेत्	कपिल ५९५
मरुदैवतकं ज्ञेयं	वृ परा ४.२२	महाकुलेषु चान्येषु	वृ परा १२.२०३
मरुद्भिश्च क्षिपेद्वारि	वृ परा ४.१६६	महागणपतेश्चैव	ब्र.या. १०.२४
मर्त्यं खान्तपि वा स्नाया	शाण्डि २.४८	महाचारित्रं बन्धुत्वशुश्रूषा	लोहि ५२
मर्मज्ञाः शुचयोऽलुब्धा	या २.१९४	महात्मनः (त्मानं) सत्कुलीन्	कपिल ८०८
मर्यादायाः प्रभेदे तु	या २.१५८	महात्मानं चतुर्बाहुं	वृ परा १२.२३२
मर्यादाया स्थितिश्चैव	वृ.गौ. १२.४	महात्मनो नाशयन्ती	लोहि १८३
मलद्वार्यस्य सततं तिष्ठन्ति	कपिल ६१	महादवभृताच्चापि शावा	आंपू २६७
मलमूत्रवसापंके	वृ हा ४.५	महादानं विदानं	ब्र.या. ११.६६
मलापकर्षणार्थं तु	शंख ८.६	महादानसमं लोके न	अ १००
मलापकर्षणं स्नानं	औ ३.२२	महादानादिकं व्यास !	वृ परा १०.२३४
मलापकर्षणार्थाय तद्धि	आंपू २५५	महादानदिसंप्राप्तं गज	लोहि ३९३

महादानानि चामूनि तुला	कपिल ९६४	महापातकसंयुक्तो	कात्या २३.४
महादाहकरोऽम्बुतथः	आंपू ५३२	महापातक संयुक्तो	संवर्त २०९
महादीक्स्थि कुंभेषु	व २.७.६१	महापातकसंयुक्तो	बृ.गौ.१९.२०
महादीक्षामध्यगतं	आंपू ३५	महापातकसंयुक्तो	अत्रिस ३६४
महादेवः शिवोरुदः	भार ११.५४	महापातक संयुक्तो	मनु ११.२५८
महाद्रिमलयाउरू वासौ	भार १३.१४	महापातकसंस्पर्शो	लघुशंख ४१
महाधनपतिः श्रीमान्	वृ.गौ. ६.७८	महापातकसंस्पर्शो	औ ९.५०
महाधुनीधुनीश्रोतः सरो	भार ६.१२	महापातकसंस्पृष्टः	अत्रिस २५८
महाध्यानमिति प्रोक्तं	भार १३.४३	महापातकिनश्चैव	मनु ११.२४०
महानदीमल्पनदी यत्ना	लोहि १०९	महापातकिनश्चोरा	शाण्डि ३.१९
महान्त्यपि समृद्धानि	मनु ३.६	महापातकिनाञ्चैव तथा	संवर्त १७५
महानदी पुण्यतीर्थं	भार १४.३९	महापातकिनामानं	वृ परा ८.१९४
महानदीमुपस्पृश्य	अत्रिस ५८	महापातकिसंयोगे	संवर्त १२५
महानदीस्नानाशतं	आंपू १५२	महापातकिसंस्पर्शो	दा ९४
महानद्यावैवम्	बौधा १.६.४१	महापातकैः घोरेः	या ३.२२५
महानवम्यां द्वादश्यां	ल हा ४.७१	महापातकोपपातकेभ्यो	अत्रि ४.२
महानसेऽन्नं या कुर्यात्	कात्या १८.२३	महापापं चातिपापं	वृ हा ३.४९
महानाम्नीभ्यः स्वाहेति	आश्व ११.५	महापापी महापापैरन्वितो	वृ हा ८.३००
महानाम्नीव्रतं कुर्यात्	आश्व ११.१	महापापोपपापाभ्यां	या ३.२८५
महानिशा तु विज्ञेया	पराशर १२.२४	महापितृयज्ञश्च पितृ	कण्व ४३८
महान्ति निष्क्रियाणीति	आंपू ४९०	महापुर्वासु चैसासु	वृ परा १०.२६१
महान्तमेव चात्मानं	मनु १.१५	महाप्रस्थानमेकाग्रो याति	वृ.गौ. ७.११०
महापथिकसामुद्रवणिक	नारद २.१५८	महाबिन्ध्याटवीमार्गे	आंपू ५५९
महापदिः कदाचित्तु	लोहि ३५९	महाभयेष्विदं ध्यानं	वृ हा ३.३५२
महापराधाः सुकूराः	आंपू ९०१	महाभागवतं दैत्यनाशकं	वृ हा ३.३६७
महापशूनां चैव रत्नानां	मनु ८.३२४	महाभागवतं विप्र	व २.७.२२
महापातककर्तारश्चत्वारो	लघुयम ३१	महाभागवतः स्पृष्टा	व २.७.१०९
महापातकजं चिह्नं	शाता १.३	महाभागवतं विप्रं	वृ हा २.७
महापातकजान् घोरान्नरकान्	या ३.२०६	महाभागवत स्पर्शात्	वृ हा ४.१६८
महापातकजैः घोरे	वृ हा ६.१६६	महाभागवतानाञ्च	वृ हा ५.२२९
महापातकदुष्टा च	व्यास २.४७	महाभागवताः पूज्या	वृ हा ७.९९
महापातकदुष्टोऽपि	व्यास २.४८	महाभागवतो विप्रः	वृ हा ५.८४
महापातकनाशाय महारोग	विभ्रा ३.४७	महाभागवतो विप्रः	वृ हा ५.६७
महापातक परामर्शं वर्णनम्	विष्णु ३५	महाभागवतो विप्र	वृ हा ६.१२
महापातक शुद्ध्यर्थं	वृ परा ८.२१०	महाभूतात्मकं चैव	अ १०५

महाभूतान्यहंकारो	वृ हा ३.१०३	महिषीं गर्दभश्चैव	वृ हा ४.१५५
महाभूतानि सत्यानि	या ३.१४९	महिषीघातने चैव	शाता २.४८
महामणिविचित्रेण सुवर्णेन	वृ.गौ. ७.१११	महीषीत्युच्यते भार्या सा	बृ.या. ३.१७
महामते ! महाप्राज्ञ !	विष्णु म १	महिषीत्युच्यते भार्या	यम ३६
महामन्त्रस्य तस्यान्	कण्व २१०	महिषीं माहिषे दाने	शाता १.१७
महामहतयोः स्थानात्पथः	व १.१९.११	महिषैः च मृगैः च अपि	वृ.गौ. ५.४२
महामाली जीवमाली	आंपू ५२५	महिष्येण करणयान्तु	वृ हा १.९५
महामाहानामद्येवं	व २.६.३००	महीपतीनां नाशौचं	या ३.२७
महायत्नः कुमारानां	वृ परा १२.१३	महीं सागरपर्यान्तां सशैल	विष्णु १.१०
महायज्ञरतः शान्तो	प्रजा ३२	महोक्षं वा महाजं वा	या १.१०९
महायज्ञविधानस्तु	अत्रिस ९४	महोक्षो जनयेद् वत्सान्	नारद १३.५७
महारुद्रजपंचैव	शाता २.३१	महोक्षोत्सुष्टपशवः	या २.१६६
महारोग गृहीतो वा	वृ परा ७.२८३	महोत्सवविधिं कुर्याद्	वृ हा ६.१
महारोग ग्रहेश्चैव	वृ हा ६.४	महोत्सवहिं बिम्बं च	वृ हा ६.१६
महारौववर्त्माग्रयनयनं	कपिल ७६१	महोत्सवे सर्वत्रार्थव	व २.६.२७४
महारणवे नौरिव	वृ.गौ. ९.७५	महोत्साहः स्थूल लक्ष्यः	या १.३०९
महालयः पाक्षिकोऽयं	आंपू ६९४	महोपनिषदि प्रोक्तमूर्ध्व	वाधू १०२
महालयश्च पनसस्त	आंपू ४७७	मासं क्षीरौदनमधु	या १.४६
महालया अष्टकाश्च तथा	कपिल १५८	मांसं क्षीरौदनमधु	कात्या १४.११
महालये गयाश्राद्धे	व्या २६७	मांसं कीटादिभिर्जुष्टं	वृ परा ६.३२१
महालये गयाश्राद्धे	दा ७६	मांसं गृध्रोवपां मग्दस्तैलं	मनु १२.६३
महालये त्रयोदश्यां	प्रजा १६७	मांसं मृत्योर्जुहोमि	व १.२०.३१
महालये त्रिरात्रं स्यात्	वाधू २१५	मांसमत्स्यतिल	बौधा २.३.२८
महालिङ्गस्य लिङ्गस्य	कपिल ४४०	मांसमधुधृतोषधि	विष्णु ३
महावते प्रचलित रात्रौ	लोहि ६८३	मांसस्य विक्रयं कृत्वा	शंख १७.५९
महावरुण देवाय जलानां	वृ परा ११.९९	मांसेन लेपितं बद्धं	वृ परा १२.१८३
महाविपिने (वने) भयं नास्ति	भार १२.४२	मांसौदनतिलक्षौम	नारद २.५८
महाविस्तररूपोऽयमाचारः	शाण्डि १.७	मागधो बुध इत्युक्तः	वृ परा ११.४१
महाव्याहृतिभिः पश्चाद्	वृ परा २.१२७	मागधो माधुरश्चैव	अत्रिस ३८६
महाव्याहृतिभिः होमः	मनु ११.२२३	माघकृष्णाष्टमी यस्यां	आंपू ७२७
महाव्याहृतिसंयुक्ता	संवर्त २१५	माघमासन्तथा यस्तु	बृ.गौ. १७.२०
महाव्रतं द्वितीये तु	आश्व ११.२	माघमासे तु सप्तम्यां	ल हा ४.७२
महासुमङ्गलीवृन्दगीत	लोहि ५००	मागमासे तु सप्तम्या	वृ हा ५.५१९
महाहानि करा	ब्र.या. ९.२९	माघमासे तु संप्राप्ते	संवर्त २०३
महिउष्ट्रगजाऽश्वानां	वृ परा ८.१७३	माघे पंचदशी कृष्णा	प्रजा २२

माघेपञ्चदशी कृष्णा	ब्र.या. ६.२१	मातापितृभ्यामुत्सृष्टं	मनु ९.१७१
माघे वा मासि संप्राप्ते	औ ३.५७	माता पितृभ्यामुत्सृष्टो	बौधा २.२.२७
माजनं प्राणासंरोधो	बृह १०.१	मातापितृविहीनन्तु	दक्ष ३.३०
माणिक्य गारुडैर्ब्रजैः	वृ परा १०.२७	मातापितृविहीनो यस्त्यक्तो	मनु ९.१७७
माणिक्यादिसमप्रभं	वृ हा ३.३४९	मातापितृषु यद्दद्याद्	व्यास ४.२९
माणिक्यानि विचित्राणि	वृ परा १०.२१५	मातापितृसुतत्यागो	वृ हा ६.१९१
मातरः प्रथमं पूज्याः	प्रजा १९३	मातापित्रोः परंतोर्थं	व्यास ४.१२
मातरं गुरुपत्नीं च	बृ.य. ३.७	मातापित्रोरुपोष्टारं गुरु	आंपू ७४९
मातरं गुरुपत्नीं च	लघुयम ३५	मातापित्रोरेकदिवसे	व्या १३७
मातरं च परित्यज्य	देवल ६०	मातापित्रोर्गुरो मित्रे	दक्ष ३.१५
मातरं पितरं जायां	मनु ८.२७५	मातापित्रोर्भृताहे च	आश्व १९.५
मातरं पितरं वाऽपि	अत्रिस ५१	मातापित्रोर्विहीनो यः	बौधा २.२.३२
मातरं पितरं वाऽपि	वृ.गौ. ११.७	माता पित्रोः सुतैः कार्यं	औ ७.२१
मातरं यदि गच्छेत	पराशर १०.१०	मातापित्रोः हस्तात्	बौधा २.२.३०
मातरं योऽधिगच्छेच्च	संवर्त १६०	माताभावे तु सर्वेषां	नारद १३.२१
मातरं यो न जानाति	आंपू १०.५३	मातामहं मातुलं च	औ ४.१४
मातरं वा स्वसारं वा	मनु २.५०	मातामहं मातुलञ्च	मनु ३.१४८
मातरं वा स्व सारं	औ १.५४	मातामहस्य गोत्रेण मातुः	कपिल ४०७
मातरं सर्वजगतां	वृ हा २.११८	मातामहस्य तत्पत्न्याः	आंपू ७२४
मातरो जातिपत्यश्च	लोहि ४०८	मातामहस्य तत्पत्न्याः	कपिल १३१
मातर्वाग्देवि ! वरदे	वृ परा २.२५	मातामहश्च दौहित्रो	परा ७.१९
माता कुमारमादाय	ब्र.या. ८.३४७	मातामहान् मातुलांश्च	वृ परा २.१९९
माता चैव तु रुद्राणां	ब्र.या. ८.२१४	मातामहान् शास्त्र	कण्व ७५८
माता चैव पिता चैव	पराशर ७.८	मातामहांश्च सततं	बृ.या. ७.७२
माता चैव पिता चैव	यम २३	मातामहानामप्येवं	वृ हा १.२४२
माता चैव पिता चैव	वृ.य. ३.२२	मातामहानामप्येवं	वृ परा ७.१६०
माता चैव पिता चैव	संवर्त ६७	मातामहानामप्येवं	वृ परा ७.२७३
माता पिता गुरुभार्या	आश्व १.७४	मातामहाः सपत्नीकाः	कपिल ३६७
माता पिता गुरुश्चैव	शंख ३.२	मातामहाः सपत्नीका	व्या २९३
मातापिता गुरुणाम	विष्णु ३१	माता मातामही गुर्वी	औ १.२८
माता पिता वा दद्यातां	मनु ९.१६८	मातामही पितामही	वृ हा ६.१८३
मातापितृ गुरुत्यागी	या १.२२४	मातामहीर्पितृणान्तु	ब्र.या. ३.२०
मातापितृभ्यां जामीभिः	मनु ४.१८०	मातामहे व्यतीते तु	शंख १५.१४
मातापितृभ्यां तद्गोत्रस्या	कपिल ८०	मातामहेषुयोदद्याद्	ब्र.या. ४.८६
मातापितृभ्यां दत्तो	बौधा २.२.२४	मातामह्यादयास्तिष्ठः	आश्व १.९८

मातामह्या सहेच्छंति	वृ परा ७.१३४	मातुः श्राद्धं तु पूर्वं	दा ८३
माता मातृष्वसा श्वश्रूः	नारद १३.७३	मातुः श्राद्धं पृथक्	आंपू ६६३
माताम्लेच्छत्व	देवल ५९	मातुः सपत्नी सार्वभौमी	वृ हा ६.१८५
माता रुद्राणा मिति	व २.६.३५९	मातुः सपिण्डीकरणं	कात्या १६.२१
मातुः पत्नीं स्वभगिनी	ब्र.या. १२.५७	मातुः सपिण्डीकरणं	लघुशंख १९
मातु पारिण्येयं स्त्रियो	व १.१७.४३	मातुस्तु यौतकं यत्स्यात्	मनु ९.१३१
मातुः पितृश्वसुः पुत्रा	ब्र.या. ८.१४९	मातृगामी भवेद्यस्तु	शाता ५.१
मातुः प्रथमतः पिंडं	मनु ९.१४०	मातृणां च पितृणां च	वृ परा ७.३७४
मातुः प्रथमतः पिण्डं	लिखित ५५	मातृणां पूजनम्पूर्वं	ब्र.या. ८.३४५
मातुः प्रथमतः पिण्डं	कात्या १६.२३	मातृत्वकार्यका (क) रणे	आंपू १०४०
मातुः प्रथमतः पिण्डं	लघुशंख २१	मातृपक्षाणं तर्पणं	शंख १३.११
मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं	मनु २.१६९	मातृपाकं तु भुजीमात्	व्या २२३
मातुरग्रे प्रमीतिः स्याद्	दा १२६	मातृ-पितृनुपाध्यायान्	वृ परा ६.२५१
मातुरेकोपविष्टस्य	आश्व ९.८	मातृपितृ पराश्चैव	प्रजा ७१
मातुरित्येके तत्	बौधा १.५.१२६	मातृ पितृपरे चैव	अत्रिस ३४०
मातुर्मातामहीं चापि	वृ.गौ. ८.६३	मातृभिः पितृभिः च एव	वृ.गौ. ५.२२
मातुर्निर्वृत्ते रजसि	नारद १४.३	मातृपित्रितिथिभ्रातृ	या १.१५७
मातुर्यदग्रे जायन्ते	या १.३९	मातृमातृष्वसुःश्वश्रू	बृ.या. ७.८६
मातुलंकारं दुहितरः	बौधा २.२.४९	मातृवत् परदारांश्च	आप १०.११
मातुलत्वपितृव्यत्व	आंपू १२८	मातृवद् वृत्तिमातिष्ठेन	औ ३.३३
मातुलपितृष्वसा भगिनी	बौधा २.२.७१	मातृघ्नश्च पितृघ्नश्च	आप ९.३०
मातुलश्वशुरभ्रातृ	औ १.२७	मातृवर्गादितः कुर्यात्	आश्व १८.५
मातुलः श्वशुरो बन्धुरन्यो	वृ परा १२.५७	मातृवर्गेण तुलितं तत्पत्नीं	लोहि ३०१
मातुलस्य सुतां वाऽपि	औ ९.४	मातृवर्गो यत्र पूर्वं	आंपू ६६८
मातुलस्य च पौत्री	व २.४.१०	मातृश्राद्धं द्विजः कुर्याद्	वृ परा ५.७९
मातुलस्यस्नुषा कन्या	कपिल ६१०	मातृष्वसां तथा चापि	वृ.गौ. ८.६२
मातुलांश्च पितृव्यांश्च	मनु २.१३०	मातृष्वसा मातुलानी	औ ३.३१
मातुलांश्च पितृव्यांश्च	औ १.४३	मातृष्वसां मातुलानी	औ ९.२
मातुलानीं सगोत्राञ्च	पराशर १०.१४	मातृष्वसा मातुलानी	मनु २.१३१
मातुलानीं सनाभिञ्च	संवर्त १५७	मातृष्वस्रभिगमने वामांगे	शाता ५.३१
मातुलान्यान्तु गमने	शाता ५.३०	मात्रं पार्थिवमाग्नेयं	वृ परा २.८५
मातुलिङ्गं नारिकेलं	आश्व ३.९	मात्रा च स्वधनं दत्तं	नारद १४.७
मातुले पक्षिणीं रात्रिं	शंख १५.१६	मात्रादि गमन पातक वर्णनम्	विष्णु ३४
मातुः श्राद्धं तु पूर्वस्मात्	लघुशंख ३२	मात्रादित्रयसाम्येन तर्पणे	कपिल ७२५
मातुः श्राद्धं तु पूर्वं	लिखित ४८	मात्रा द्वादशकं प्रोक्तं	ब्र.या. २.४९

मात्राप्रमाणयोगेन	बृ.या. ८.४८	मानुष्यास्थि च संस्पृष्ट्वा	औ ९.११
मात्रायोगप्रमाणेन	बृ.या. ८.४९	मानुष्ये कदलि स्तम्भ	या ३.८
मात्रास्तिस्त्रो व्यक्ता	बृ.या. २.१२	मानुष्ये कदलीस्तम्भे	कात्या २२.५
मात्रा स्वप्ना दुहित्रा वा	मनु २.२१५	मानेन तुलया वाऽपि	या २.२४७
मा दम्या इति यो	बृ.गौ. १४.४१	मानोमहान्त इत्यूर्वोः	वृ परा ११.११७
माधवश्योत्पल प्रख्य	वृ हा २.८१	मान्नं भौमं तथऽऽग्नेयं	बृ.या.७.१६३
माधवस्तु गदा चक्रं	वृ हा ७.११६	मान्धाता वाऽप्यलर्को	आंपू ४९४
माधवः स्यादुत्पलाभो	वृ हा ७.१०९	मान्मथो मधुरस्रावा	आंपू ५१५
माध्यंदिनस्य कृत्यस्य	आंपू २५४	मान्या चेन्म्रियते	कात्या २०.१३
माध्यां कुर्वन् तिलैः	वृ परा १०.२५७	माम् अधः पातयेत् एव	वृ.गौ. ४.१४
माध्याह्निकं ततः कृत्वा	नारा ९.७	माम् अर्चयन्ति सद्क्ताः	वृ.गौ. ३.८१
माध्याह्निकं प्रकुर्वीत	विश्वा १.९९	मां सभक्षयिताऽमुत्र	मनु ५.५५
मानकूटं तालकूटं	वृ हा ६.१७९	मामकस्तनयो जातस्तावक	कपिल ७८७
मानकूटं तुलाकूटं	वृ हा ४.२००	मामर्चयन्ति भद्रक्तास्ते	वृ.गौ. ८.१०१
मानक्रियायामुक्तायामनुक्ते	कात्या ६.११	मामेव तस्माद्देवर्षे ध्याहि	विष्णु म ९०
मानवं चात्रश्लोकं	व १.३.२	मायया मोहयामास	आंपू २१५
मानवं चात्र श्लोकं	व १.२०.२०	मायाबीजं संमुल्लिख्य	विश्वा १.६९
मानवं चात्र श्लोकं	व १.१३.६	मायावित्वं च मूकत्वं	वृ परा १२.१९९
मानवः श्वखरोष्ट्राणां	संवर्त १९२	मारुतं पञ्चदशकं	बृ.या. ४.६७
मानवांदुदुभाश्चैव	ब्र.या. १.१६	मारुतं पुरुहूतं च गुरुं	मनु ११.१२२
मानसं प्रणवस्नानं	बृ.या. ७.१६७	मारुतं मोगरं चैव	दा ५२
मानसं मनसैवायमुपभुङ्क्ते	मनु १२.८	मार्कण्डेयं चाम्बरीषं	वृ हा ७.२०९
मानसं वाचिकं चैव	बृ.य. ४.४९	मार्कण्डेयश्च माण्डव्यः	भार १.४
मानसं वाचिकं पापं	संवर्त २२२	मार्कण्डेयश्च मौद्गल्य	वृ हा ३.२६६
मानसः शान्तिकजप	बृ.या. ७.१३४	मार्गक्षेत्रयोः विसर्गे	व १.१६.८
मानसा वाचिका दोषाः	वृ परा ८.६१	मार्गशीर्षं समारभ्य	आश्व ६.२
मानसेऽपि जननमरण	बौधा १.२१.४१	मार्गशीर्षे तथा पौषे	औ ३.७२
मानस्तोक इति ह्युक्त्वा	वृ परा २.१३३	मार्गशीर्षे शुभे मासि	मनु ७.१८२
मानितः पालितः सम्यक्ते	लोहि २२०	मार्जनं च तथा कृत्वा	बृ.या. ७.१८६
मानुषाणां हितं धर्मं	पराशर १.२	मार्जनं तर्पणं श्राद्धं	व्या १५२
मानुषास्थि स्निग्धं	व १.२३.२१	मार्जनं यज्ञपात्राणां	मनु ५.११६
मानुषी क्षीरपानेन	वृ हा ६.२५१	मार्जनं वारुणैः मंत्रै	ल व्यास १.२२
मानुष्यं भावमापन्नं ये	वृ.गौ. १.४१	मार्जनस्य च जप्यस्य	बृह.१०.२०
मानुष्यं लोकम् आगत्य	वृ.गौ. ६.८७	मार्जनाद्यज्ञपात्राणां	पराशर ७.२
मानुष्यस्य च लोकस्यं	वृ.गौ. ५.२	मार्जनाद्देशमनां शुद्धिः	शंख १६.८

मार्जनान् मखपात्राणां	वृ परा ६.३३४	मासर्क्षेषु महाहर्षे	शाण्डि ३.१३१
मार्जनीरजमेषण्डं	लिखित ९४	मासत्र्वयनरूपेण विप्र	कपिल ८५५
मार्जनीरेणुकेशाश्वु	अत्रिस ३१७	मासवाचकशब्दाः स्युस्त	कण्व ४६
मार्जने चामिषेके	आश्व १६.३	माससामान्यशब्दाः	कण्व ४४
मार्जने विनियोगस्तु	भार ६.४४	मासस्य वृद्धिं गृहीयाद्	व १.२.५५
मार्जनैः लेपनैः प्राप्य	व्यास २.२१	मासादूर्ध्वं दशाहन्तु	वृ हा ६.३८७
मार्जयन्तेति मन्त्रेण	आंपू ८५३	मासाद्वयगतं श्राद्धं	व्या ३२७
मार्जयेदथ चांगानि	आश्व १.१९	मासान्ते तु विशेषेण	वृ हा ५.५४७
मार्जयेद्वस्त्रशेषेण नोत्तरीयेण	वाधू ९४	मासान्ते भोजयेद् विप्रान्	वृ हा ५.५५६
मार्जनाद् यज्ञपात्राणां	शंख १६.६	मासाद्धं मासमेकं वा	पराशर ४.८
मार्ज्जरगोधानकुल	या ३.२७०	मासिकानि यश	दा २४
मार्जनकुलौहत्वा	मनु ११.१३२	मासिकानं तु योऽश्नीयाद्	मनु ११.१५८
मार्जरं चाथ नकुल	औ ९.८	मासिके च सपिण्डे च	वाधू १९९
मार्जिरं मूषकं सर्प	वृ परा ८.१६९	मासिके पक्षमेकं स्याद्	वाधू २१४
मार्ज्जरमशकस्पर्श	कात्या २.१४	मासिकऽव्दे तु संप्राप्त	दा ७३
मार्जरे निहते चैव	शाता २.५४	मासि चैत्रे शुक्लपक्षे	व २.६.२५७
मार्जिते पितरः सर्वे	वृ परा २.१००	मासि भाद्रपदे शुक्ले	वृ हा ५.५१६
मातर्यग्रे प्रमीतायां	व २.६.४४३	मासि मासि रजस्तस्य	ब्र.या. ८.१६३
मार्दवंह्रीर्दयाक्षान्तिरद्रोह	शाण्डि ३.६७	मासि मासि राजो ह्यासां	व १.५.६
मालत्या शतपत्र्या	वृ परा ७.१६३	मासिश्राद्धानि तान्येवं	आंपू ६०७
मा शोकं कुरुतानित्ये	कात्या २२.४	मासि षष्ठे तच्च कर्म	कण्व ५०६
माषं गांदापयेद् दण्ड	नारद १२.२८	मासे चैवं चतुर्थे तु	आश्व ७.१
माषमुदगं महामुदगं	शाण्डि ३.११४	मासे द्वितीये तृतीये वा	ब्र.या. ८.३०३
माषमुदगादि चूर्णं वा	वृ हा ८.१०३	मासेन द्वापरे ज्ञेयः	वृ परा १.३०
माषः सर्वत्र नैवेद्यः	ब्र.या. ३.४९	मासे नभसि न स्नायात्	वृ परा २.१०९
माषादिचूर्णमृदिभर्वा	शाण्डि ४.१६२	मासेनाशनन् हविष्यस्य	मनु ११.२२२
माषानपूपान् विविधान्	औ ५.५२	मासेऽन्यस्मिन्तिथौ	ब्र.या. ३.७५
माषानष्टौ तु महिषी	या २.१६२	मासे पूर्णे तथा कुर्यात्	आश्व ११.३
माषान्नं पायसं दद्या	व्या २५२	मासे भाद्रपदे यो मां	वृ.गौ. १८.२६
माषाः सर्वत्रयोज्याः स्युः	व्या १४४	मासे मार्गाशिरे दानं	वृ परा १०.२५०
मासद्वयेऽपि तत्कार्यं	व्या ३२८	मासे यस्मिंस्तु योजातस्त	व २.२.२७
मासं चैव मांसेन	ब्र.या. ८.२८३	मासं सहसि यात्रार्थी	वृ परा १२.२६
मासं सुरार्चनेनैव	शाता ३.१५	मासैश्च वत्सरैश्चैव	व २.२.२६
मासमाराहणं कुर्यात्	औ ३.१२२	माहिषं मृतवत्सागो	प्रजा १३०
मासमेकं जपेद्गोष्ठे	अ २१	मितं दोणाढकस्यानं	पराशर ६.६६

मितश्च संमितश्चैव	या १.२८५	मुक्ताङ्गुष्ठनिष्ठाभ्यां	व्या ५१
मितसंभाषिणी हासरोदनो	शाण्डि ३.१४१	मुक्तादाम लसज्ज्यो	व २.६.७७
मित्रच्छेदं गृहच्छेदं	वृ.गौ. १०.८९	मुक्ताफलशफा कार्या	वृ परा १०.१११
मित्रदोहकृतं पापं	वृ परा ४.८१	मुक्ताफलाभदन्तालं	वृ हा ३.२२६
मित्रध्वक्पिशुनोव्याधि	ब्र.या. ४.१९	मुक्ता श्रू शोकाच्छ्रुत्वा	शाण्डि २.५५
मित्रधुक् पिशुनश्चैव	औ ४.३२	मुक्ताहारी च पुरुषो	शाता ४.५
मित्र-बन्धु-सपिण्डेभ्यः	वृ परा ७.३५४	मुक्तिदान्येवं सर्वेषां वर्णा	कपिल ९०४
मित्रस्य चर्षणीमन्त्र याजु	विश्वा ७.१६	मुक्तिर्नात्र विरोधो	कण्व ४४७
मित्रस्येत्यादिभिरङ्गिभः	भार ६.११८	मुक्तो न जायते भूयः	बृह ९.१०८
मित्रादीनां च कर्तव्यं	वृ परा ७.५०	मुक्तो नवानिवासांसि	व २.३.१९४
मित्रान् भृत्यानपत्यांश्च	वृ परा २.२००	मुक्तो बन्धाद् भवेत	वृ हा ३.३७८
मित्राय गुरवे श्राद्धं	आंपू ६८९	मुक्त्वाग्निः मृदित	या २.१०९
मित्रावरुणकौ पादौ	वृ.गौ. २०.३६	मुक्त्वा ग्रान्थि विमुच्या	भार १८.७९
मित्रे चैव सगोत्रे च	वृ परा ७.१११	मुक्त्वा प्रयाति स	अ १४७
मित्रो धाता भगस्त्वष्टा	बृह ९.८०	मुखजानमूर्ध्वपुण्ड्रं तिलकं	वाधू १००
मिथः संघातकरणमिहते	नारद ११.५	मुखजा विषुषोमेध्या	या १.१९५
मिथिलास्थः स योगीन्द्र	या १.२	मुखबाहूरुपज्जानां	मनु १०.४५
मिथिलास्थं महात्मानं	वृ.या. १.१	मुखं हि सर्वदेवानां	वृ हा ५.२२६
मिथुनं च तथा कन्यां	वृ परा १०.३५८	मुखग्निः समाख्यात	कण्व २०९
मिथो दायः कृतो येन	मनु ८.१९५	मुखमेकं समालोक्य	बृह ९.१६४
मिथ्यापवाद शुद्ध्यर्थं	वृ हा ४.१९०	मुखवासञ्च यो दद्यादन्त	संवर्त ८५
मिथ्याभिसस्तपापञ्च	या ३.२६२	मुखशब्दमकुर्वन्वै	कण्व ९४
मिथ्यावदन् परीमाणं	या २.२६५	मुखाऽवलोकने येन	अ ५७
मिथ्याश्रमी च विप्रेन्द्रा	औ ४.२७	मुख्यं कल्पममुख्यं च	कण्व ४
मिथ्यैतदिति गौतमः	बौधा १.२५	मुकेचापगृहीते प्राणा	ब्र.या. ८.११५
मिथ्यैतदिति हारीतः	बौधा २.१.७०	मुखे तस्य प्रदातव्य	ब्र.या. १२.५९
मिलित्वा तात्क्रिया पौर्वा	लोहि ७१७	मुखेन वमितं चान्नं तुल्यं	अत्रि ५.२२
मिश्रितं धेनुपयसा	प्रजा १३१	मुखेन श्रमितं भुङ्क्ते	दा ५५
मिष्टान्न भोजनं गानत्यजे	व २.५.९	मुखेनैके धमन्त्यग्निं	कात्या ९.१५
मीने रवौ हरेर्जीवे	ब्र.या. ८.९९	मुख्यः कल्पः पावके	कण्व ३७३
मीमांसते च यो वेदान्	व्यास ४.४५	मुख्यकाले षोडशाब्द	आंपू १८
मुकुन्दं कुण्डलं हारं	भार १२.२४	मुख्यकालो व्रतस्यैष	वृ परा ६.१६८
मुक्तकेशा तु या नारी	व्या ९१	मुख्यत्वेनैव कुर्वीत	कण्व ६१९
मुक्तं ज्ञात्वा ततः स्नात्वा	आंपू २९९	मुख्यं तत्समनुष्ठानं	कण्व ४०२
मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां	विश्वा २.८	मुख्यं यथापितुः श्राद्धं	वृ परा ७.५७

मुख्याचारं परित्यज्य	विश्वा १.३५	मुषलेन सह न्युब्ज	कात्या २१.११
मुख्याचारो महान्श्रेष्ठो	विश्वा १.३६	मुष्टिं तु कल्पयन्धान्यं	वृ परा ५.१६५
मुख्यानुबन्धनं त्यक्त्वा	आंपू १.२९	मुष्टिमात्रतृणं दत्त्वा रात्रौ	विश्वा १.५०
मुख्यो वैदिककृत्यानां	लोहि १००	मुष्टिमात्रैः कुशैरग्नै	आश्व २.१५
मुख्यो साधारणो धर्म	आंपू २९७	मुष्टिमात्रोपरिष्ठातु	भार १८.२८
मुच्यते पातकैः सर्वैः	वृ.गौ. १.४४	मुष्ट्या वा निहता या	वृ.य. ४.१०
मुच्यते ब्रह्महत्याया	वृ हा ६.२३२	मूकमात्रास्यकोप्येको विशेषो	कपिल ३२२
मुंच त्ववभृथैत्	वृ परा २.१३४	मूकस्य मंत्रसामान्याभावादेव	कपिल ३४८
मुंजते ब्राह्मणा यावत्	वृ परा ७.२६१	मूकस्यापि च विप्रत्वं	कण्व २७१
मुंजालाभे तु कर्तव्या	मनु २.४३	मूत्रपुरुषलोहितरेतः	बौधा १.४.७
मुंजोपवीताजिन दंड	वृ परा ६.३५१	मूत्रपुरीषलोहित रेतः	बौधा १.६.१२
मुण्डितस्तु शिखावर्ज्यः	वृ परा ८.९७	मूत्रपुरीषलोहितरेतः	बौधा १.६.२९
मुण्डितौ सूक्ष्मशिखिनौ	वृ हा ५.५०	मूत्रपुरीषलोहितरेतः	बौधा १.६.३३
मुण्डोऽममोऽपरिग्रह	व १.१०.७	मूत्रपुरीषतोहितरेतः	बौधा १.६.३६
मुण्डो वा जटिलो वा	मनु २.२१९	मूत्र पुरीषलोहितरेतः	बौधा १.६.३९
मुदाश्चशंख चक्रादिन	व २.७.८९	मूत्रपुरीषे कुर्वन्दक्षिणे	बौधा १.४.२२
मुद्गानं च गुडानं	शाण्डि ३.१२०	मूत्रवद्रेतसः उत्सर्गे	बौधा १.५.८४
मुद्गाभावे भाषमात्रैः	लोहि ३५८	मूत्रशक्च्छुक्राभ्यव	व १.२०.२३
मुद्गाम्रद शयित्पश्चा	व २.६.८५	मूत्रेण कपिलायास्तु यस्तु	वृ.गौ. ९.३७
मुनयः केचिदिच्छन्ति	वृ परा ८.१३३	मूत्रे मृदाऽदिभः प्रक्षालनम्	बौधा १.५.८०
मुनिः धर्मं तनुः नाम	वृ परा ११.३२८	मूत्रोच्चारं द्विजः कृत्वा	आप ९.३६
मुनीनां व्यासमुख्यानां	वृ परा ११.३४	मूत्रोच्चारसमुत्सर्गं	मनु ४.५०
मुनीनामपि चेतांसि	वृ परा १०.१९८	मूर्च्छितः पतितोवाऽपि	लघुयम ४६
मुनीनामात्मविद्यानां	पराशर ८.२०	मूर्च्छितः पतितोवापि	पराशर ९.११
मुनिप्रियो दन्तरिपुः शर्म	आंपू ५२७	मूर्च्छिते पतिते चापि	आंगिरस ३४
मुनिभिः द्विरसनमुक्तं	कात्या १३.९	मूर्तीनान्तु हरे स्तस्य	वृ हा ५.१७९
मुनिभिः सनकाद्यैश्च	वृ हा ३.१९३	मूर्त्यन्तरमविम्बे तु	वृ हा ५.१८०
मुनिभिः सेवितत्वाच्च	वृ परा १.४५	मूर्त्यन्तरेण संभुक्तं	शाण्डि ४.७९
मुनिसाम्यं मयाप्नोति	व्यास ३.५७	मूर्द्धाश्रितकर्णवक्त्राणि	कात्या ७.८
मुन्यन्नानि पयः सोमो	मनु ३.२५७	मूर्धन्यपो निनयेत्	व १.३१
मुन्यन्नैर्विविधैर्मध्यैः	मनु ६.५	मूर्धललाट साग्रप्रमाण	बौधा १.२.१५
मुमुक्षवोऽपि योगीशा	वृ परा १०.४	मूर्धामिव इत्यनेन	वृ हा ८.२५
मुमुक्षवो विरज्यन्ते	वृ परा १२.१७६	मूर्ध्नि भाले नेत्र नासा	वृ हा ३.१७
मुमुक्षुभिर्वितरागैरप्रमत्तैः	व २.२२	मूर्ध्नि संस्पर्शनादेव	औ २.२६
मुमूर्षवस्तथा बाला	शाण्डि ४.८१	मूलकं तिलपिष्टं च	व २.६.१७५

मूलफलमैक्षेणाऽऽश्रम	व १.९.४	मृण्मयेन न चेध्वेव	शाण्डि ३.९९
मूलमन्त्रं च मनसा	विश्व १.८१	मृण्मयेषु च पात्रेषु	आत्रि स १५४
मूलमन्त्रमिदं प्राहुर्वाराहं	वृ हा ३.३३८	मृतकञ्च श्वपाकं	ब्र.या. १२.६३
मूलमन्त्रेणाभिमन्त्र्य	व २.६.१३७	मृतकेन तु जातेन	यम ७५
मूलस्तम्भो भवेद्देवः	बृह १२.२५	मृतके सूतके चैव	आप ९.२८
मूलानि दक्षिणे हस्ते	भार १८.५६	मृतभार्य्याभिगमने	शाता ५.३२
मूलानिशाकुटादीनि	कण्व ६१६	मृतभार्य्यो यतिर्वर्णी	आंपू ३८३
मूलेन षष्ठी	ब्र.या. ९.४७	मृतं भर्तारिमादाय	व्यास २.५३
मूलेनाष्टोत्तरशतं वार्येत	भार १४.४५	मृतं शरीरं मुत्सृज्य	वृ.गौ. ११.३३
मूलेनैव विनष्टेन	दक्ष २.४४	मृतं शरीरमुत्सृज्य	मनु ४.२४१
मूल्याष्टभागे हीयेत	नारद १०.८	मृतवत्सा यथा गौश्च	व्यास ४.२७
मूल्यैश्चिकित्सां कुरुते	प्रजा ५१	मृतवत्सोदितः सर्वोविधिरत्र	शाता ४.२९
मूषलोलूखले वार्क्षे	कात्या १५.१६	मृतवस्त्रभृत्सु नारीषु	मनु १०.३५
मूषिकोधान्याहारी	या ३.२१४	मृतश्चेत्तस्य ते सर्वे	लोहि २२६
मुहूर्तास्तत्र विज्ञेया	प्रजा १५९	मृतसंजननादूर्द्ध्वं	अत्रिस ९९
मृगनाभि च कर्पूरं	वृ परा २.२१९	मृतसूतकपुष्टांगीद्विजः	पराशर १२.३३
मृगपक्षिगणादयंच	पराशर १.७	मृतसूतकपुष्टांगो	व्यास ४.६४
मृगपक्षिमहासर्पयादसां	वृ हा ६.१९६	मृतसूतकपुष्टाङ्गो यस्तु	वृ.गौ. १४.१७
मृगपक्षिभिराकीर्णे	वृ परा १.८	मृतसूतकयोश्चान्नं	वृ.गौ. १६.३६
मृगं रुद्रं वराहञ्च	पराशर ६.१३	मृतसूतके तु दासीनां	अत्रिस ८९
मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः	मनु ७.४७	मृतसूते तु दासीनां	देवल ६
मृ (भृ) गराजं पीतपुष्पं	ब्र.या. १०.१४५	मृतस्य तस्य च अहंच	वृ.गौ. १.६१
मृगश्वरशूकरोष्ट्राणां	या ३.२०७	मृतस्य प्रसूतो य क्लीब	बौधा २.२.२०
मृच्चर्मतृणकाष्ठाम्बु	वृ हा ६.२०४	मृतस्यैतानि प्रोक्तानि	आंपू ४७४
मृच्चर्ममणिसूत्रायः	या २.२४९	मृतांगलग्नविक्रेतुः	या २.३०६
मृण्मयं गृहसम्पूर्णं	ब्र.या. ११.५७	मृता द्वितीया तस्यास्तु	लोहि ९४
मृण्मयं भाजनं सर्वं	शंख १६.१	मृतानां कथितास्सदिभ	लोहि ३१७
मृण्मयानां पात्राणां	बौधा १.६.३४	मृतानां स्नुषया पाकं यथा	कपिल १९४
मृण्मयानांच पात्राणां	अत्रि ५.३४	मृतानामग्निहोत्रेण	व्यास २.५६
मृण्मयानां पात्राणाम्	बौधा १.१२.८	मृतायान्तु द्वितीयायां	कात्या २०.८
मृण्मयेषु च पात्रेषु	लिखित ५६	मृतायामपि भार्य्यायां	कात्या २०.९
मृण्मयेषु पात्रेषु मुक्तिका	व्या १४१	मृताः स्युःसाक्षिणो यत्र	नारद २.११५
मृण्मयेषु च पात्रेषु	लघुशंख २५	मृताह एव कथितो नान्	आंपू १०.८३
मृणामकृतचूडानां	मनु ५.६७	मृताहदिवसे पुण्ये	आंपू ५४२
मृणालतन्तव पश्चात्	वृ हा ५.३२१	मृताहनि तु कर्त्तव्यं	या १.२५६

मृताहस्तादृशः क्लृप्तः	आंपू ६३५	मृत्तोयैः शुध्यते शोध्यं	मनु ५.१०८
मृताहस्य परित्यागे	आंपू १५०	मृत्तोयैः शुद्ध्यते शोध्यं	बृह ११.४९
मृताहोऽलङ्घनीयः स्याद्	आंपू ६३२	मृत्वात्रसंपुटं कृत्वा	कात्या २३.१२
मृते जीवति या पत्यौ	या १.७५	मृत्युकाले मतिर्या स्यात्तां वृ	परा १२.३५५
मृतेजीवति वा पत्यौ	वृ हा ८.१९६	मृत्युञ्ज च नाभिनन्देत	संवर्त १०५
मृते पितरि कुयुस्तं	या २.१३७	मृत्युभीतैः पुरा देवैः	वृ परा २.४१
मृते पितरि वै पुत्रः	औ ७.१९	मृत्युं समधिगच्छेच्चेन्	शंख १५.७
मृते भर्तरि नारीणां	व २.५.८३	मृत्युस्थानानि चैतानि	वृ परा ८.१३६
मृते भर्तरि या नारी	दक्ष ४.१९	मृत्योरिति उरौन्यस्य	ब्र.या. २.१२९
मृते भर्तरि या नारी	अंगिरस २१	मृत्सना तथाकांस्यं	ब्र.या. ४.५६
मृते भर्तरि या नारी	वृ हा ८.२०३	मृदकूले च नद्यांतु	व २.६.१५
मृते भर्तरि या नारी	पराशर ४.२६	मृदंग पटहादीनाम	वृ परा ११.९७
मृते भर्तरि यानारी	व २.६.४७०	मृदञ्च गौमयं चैव	वृ.गौ. ८.२१
मृते भर्तरि या प्राप्तान्	नारद १३.५१	मृदन्तरेण भूयश्च पूरयेत्तां	लोहि ६१२
मृते भर्तरि साध्वी स्त्री	मनु ५.१६०	मृदं गां दैवतं विप्रं	मनु ४.३९
मृते भर्तरि तूष्णीकं सर्वं	लोहि ५७७	मृदं यज्ञोपवीतं च	व्या २६
मृते भर्तरि या नारी	वृ परा ७.३६१	मृदम्बुभिः स्वहात्राणि	वृ परा २.१२२
मृते भर्तरि या याति	वृ परा ७.३७०	मृदाकुं काक संसर्गं	वृ परा ११.१०३
मृते भर्तर्यपुत्रायाः	नारद १४.२७	मृदा चेलानाम्	वौधा १.५.४४
मृते वा स्वाभमिन पुनः	नारद १२.१८	मृदा जलेन शुद्धिः स्यान्	दक्ष ५.१०
मृतेस्तस्य परं प्रोष्य	आंपू १०६०	मृदा शुभ्रेण च तथा	व २.३.४९
मृतेऽहनि तु कर्तव्यं	दा २५	मृदा शुभ्रेण सततं	वृ हा २.५०
मृतेऽहनि तु कर्तव्यं	औ ५.९३	मृदुम्बुयोगजं सर्वं	वृ परा ५.१४०
मृतेऽहनि तु कर्तव्यं	ब्र.या. ७.२	मृदैकया शिरक्षाल्य	ल व्यास २.१२
मृत्कियास्थाप्यवरुणं	ब्र.या. १०.१०२	मृद्गोमयतिलान् दर्भान्	बृ.या. ७.३
मृत्तिका गोशकृत दर्भा	व्या २४	मृद्धारुशैललोहानां	वृ हा ४.१८०
मृत्तिका गोशकृद्भानु	व्या १७०	मृद्भाण्डदहनाच्छुद्धिः	पराशर ७.२८
मृत्तिका च समाविष्टा	ल व्यास २.१३	मृद्भाण्डासनखट्वाः	नारद १५.१३
मृत्तिका पृथिवीन्यस्य	ब्र.या. १०.९०	मृद्भिरदिभ्रनालस्यं	वृ परा ६.२१४
मृत्तिकाभक्षणं चैव	दा ५६	मृद्भिरद्विश्च चरणौ	बृ.या. ७.७
मृत्तिकां गोशकृद्भानुपवीतं	संवर्त ८४	मृद्भिरभ्युदधृतैरिन्द्रियं	व २.३.९२
मृत्काष्ठोपललैर्हेषु	ब्र.या. ५.२६	मृद्भिश्च शोधयेच्चुल्लीं	व्यास २.२४
मृत्तिकाः सप्त न ग्राह्या	अत्रिस ३१८	मृषैव यावकान्नेत्रे	औ ९.८९
मृत्तिकेहनमन्त्रादि कृत्वा	कण्व १२९	मृष्यन्ति ये चोपपतिं	मनु ४.२१७
मृत्तिके हरमे पापं	वृ परा २.१३०	मेखलाकिंकिणी माला	वृ परा ११.१३६

मेखलाञ्चैव दण्डञ्च	व २.३.४५	मोक्षकाले तथा दानं	ब्र.या. २.२००
मेखलां तत्र विन्यस्य	ब्र.या. ८.१३	मोक्षदं तु समुद्दिष्टं	बृह ११.३२
मेखलां वेष्टयेमोन्मती	व २.३.४८	मोक्षधर्ममना नित्यं सुखं	शाण्डि ३.४६
मेखलामजिनं दण्डं	मनु २.६४	मोक्षभूमिरितिख्यातमलाभे	शाण्डि १.७४
मेखला मजिनं दंडं	आश्व १०.५९	मो (क्ष) षमानोति	लोहि १६७
मेघं धूपं प्रोनयन्ति	वृ.गौ. ६.६५	मोक्षावाप्तिर्भवेत् पुंसां	वृ परा १२.१३३
मेघेन्द्र चापसम्पातान्	विष्णु १.१८	मोक्षो भवेत् प्रीति	आप १०.७
मेदः शोणितपूर्वादिः	वृ.गौ. ५.३९	मोचनं कौतुकस्याथ	कण्व ६७३
मेदसा तपयेद्देवान्	या १.४४	मोचयेन् मन्दमन्दं	वृ परा १२.२१७
मेदो मृत्योर्जुहोमि	व १.२०.२३	मोदकान् पृथुकान्	वृ हा ५.५३९
मेधातिथिरिहाप्यार्ष	वृ परा ११.३३१	मोदते पतिना सार्द्धं	व २.५.७४
मेधाम्मेऽश्विनौ देवा	ब्र.या. ८.३९	मोदते ब्रह्मलोकेषु	वृ.गौ. ७.२१
मेध्यामेध्यं स्पृशन्त्येव	पराशर ७.३३	मोहजालमपास्येदं	या ३.११९
मेरुः धरित्री कुलपर्वताश्च	वृ परा १०.२०१	मोहना (तू) क्षालानान्	कण्व १३३
मेरुमन्दरतुल्यानि	वाधू १५२	मोहात्तत्कृतपाकेन कृतं	लोहि ४३४
मेरुरुत्तरतः स्थाप्य	ब्र.या. १०.२६	मोहात् प्रमादात् संलोभाद्	अत्रिस ६९
मेषकर्त्तिकतुनश्चत्वारो	भार २.२०	मोहात् प्राणापरित्यागे	आंपू १८७
मेघं च मेष संक्रान्तौ	वृ परा १०.२७३	मोहादतद्दिनकृतश्राद्धं	आंपू २७३
मेघं च शशकं गोधां	वृ परा ८.१७०	मोहादतो ज्येष्ठसुनुः स्वयं	कपिल ७५८
मेघं सूर्योदये यत्र	भार २.७	मोहाद् राजा स्वराष्ट्रं य	मनु ७.१११
मेघाऽजघ्नो वृष दद्यात्	वृ परा ८.१६५	मोहाद्वा लोभातस्तत्र	पराशर ११.९
मेघादीनामनेनैव नक्षत्रस्य	कण्व ६४	मोहाद्विरुढमाचार्य	आंड १०.१७
मेहनादि क्रियां कुर्यान्	शाण्डि २.१५	मोहान्न कुरुते श्राद्ध	आश्व २४.२७
मेहने चैकवारं स्याद्	कण्व १२६	मौक्तिकान् वितनासाग्रं	वृ हा ३.३११
मेहने मैथुने स्नाने भोजने	शाण्डि २.८	मौक्तिकान्वितनासाग्रं	वृ हा ५.१०९
मैत्र प्रसाधनं स्नानं	मनु ४.१५२	मोज्जिकानं सूतिकानं	शंख १७.४०
मैत्राक्षिज्योतिकः प्रेतो	मनु १२.७२	मौञ्जी त्रिवृत्समा	औ १.१४
मैत्रावरुणमन्यद्वै तथा	वृ परा ४.२१	मौञ्जी त्रिवृत् समा	मनु २.४२
मैत्रीभ्यामहरुपतिष्ठते	बौधा २.४.१४	मौञ्जी धनुर्ज्या शणीति	बौधा १.२.१३
मैत्रेयकं तु वैदेहो	मनु १०.३३	मौञ्जीबन्धो द्विजानान्	शंख २.९
मैथुनं कुरुते यस्तु	वृ.गौ. १९.४०	मौञ्ज्यन्तेनातिहर्षेण	आंपू ३०७
मैथुनं तु समासेव्य	मनु ११.१७५	मौञ्ज्यां मोहेन चेद्	कण्व ९०
मैथुनं हसनं स्नेहसंलापं	व २.५.२१	मौञ्जी ब्राह्मणस्य	व १.११.४७
मैथुने पादकृच्छ्रं	आप ४.९	मौण्ड्यं प्राणान्तिको	मनु ८.३७९
मोकारं तु ललटे तु	वृ परा ११.१२१	मौनव्रतं समाश्रित्य	पराशर १२.३६

मौनात्सौभाग्यम्	व १.२९.५	य एतै (स्सह) संयोगी	नारा १.११
मौनिन्मधोमुखी चक्षु	व्यास २.३९	य एव धर्म्मो नृपते	या १.३४२
मौलाञ्छास्त्रविदः शूरा	मनु ७.५४	य एवमभ्यसेन्नित्यं	वृ परा ४.६८
प्रियते च परार्थेषु	ब्र.या. १२.४	य एवमेनं विन्दन्ति	या ३.१९२
प्रियमाणोऽप्याददीत न	मनु ७.१३३	य एवं कुरुते राजा	अत्रिस २७
म्लेच्छ चण्डाल पतित	वृ हा ६.२६३	य कण्टकैर्वितुदति	या ३.५३
म्लेच्छदेशे तथा रात्रौ	शंख १४.३०	यः करोति सुभामिष्टं	वृ हा ७.१३७
म्लेच्छ-लूताशनास्पर्शे	वृ परा ८.३१२	यः करोत्येकरात्रेण	पराशर ७.१०
म्लेच्छव्याप्तानि सर्वाणि	वृ परा १२.१०९	यः करोत्येकरात्रेण	बृ.म. ३.१२
म्लेच्छान्त्यश्वपच	नारा ५.८	यः कर्म कुरुते विप्रो	वृ हा ५.२१
म्लेच्छान्नं म्लेच्छ	देवल ४४	यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो	बृह १२.२०
म्लेच्छैर्नीतेन शूद्रैर्वा	देवल १२	यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो	मनु २.७
म्लेच्छैः सहोषितो	देवल ५५	यः कश्चित् कुरुते धर्म	ल हा ३.३
म्लेच्छैः हृतानां	देवल ४५	यः कश्चिदर्थो निष्णात	या २.८६
म्लैच्छं हौणं कौड्कणं	लोहि ३९६	यः कुर्यात् तु बलात्	वृ हा ४.१९२
य		य कुर्यादाहुतः पञ्च	बृ.गौ. १३.११
य आतृणत्यवितथेन	व १.२.१६	यः कृष्णाजिनमास्तीर्य	वृ परा १०.१३९
य आत्मत्यागिन	व १.२३.१४	य कोऽपि भूमिदानं तत्तेभ्य	कपिल ५१६
य आत्मत्याग्यभिशालो	व १.२३.११	य कोरोति नरश्रेष्ठ	वृ.गौ. ७.६१
य आत्मव्यतिरेकेण	दक्ष ७.११	य क्वचिन्मानवो लोके	आश्व १.१८९
य आवृणोत्यवितथं	मनु २.१४४	यः क्षत्रियस्तथा वैश्यः	यम ८
य आहवेषु वध्यन्ते	या १.३२४	यक्षरक्षः पिशाचांश्च	मनु १.३७
य आहूय द्विजाग्रयाय	वृ परा १०.३०	यक्ष-रक्ष-पिशाचाद्या	वृ परा ११.१२६
य इदं ारयिष्यन्ति	अत्रिस ३९७	यक्षरक्ष- पिशाचान्नं	मनु ११.९६
य इदं धारयिष्यन्ति	या ३.३२९	यक्षरक्षः पिशाचान्न	वृ हा ६.२७४
य इदं श्रृणुयाद्वापि	वृ परा १२.३७६	यक्षराक्षस भूतानामर्चनं	वृ हा ६.१७६
य इदं श्रृणुयाद् भक्त्या	वृ हा ८.३४४	यज्ञराक्षसभूतानां	वृ हा ७.१९२
य इदं श्रावयेद् विप्रान्	या ३.३३३	यज्ञराक्षसभूतानि	बृ.या. ७.१४१
य उत्पाद्येह सस्यानि	वृ परा ५.१०४	यक्षराक्षसवेतालग्रह	भार ६.१६७
य एतावन्त एतेन	वृ परा ११.११९	यः क्षिप्तोर्मर्षयत्यार्तं	मनु ८.३१३
य एताव्याहृतीर्हुत्वा	वृ हा ३.८९	यक्षभासान् कामयेन्	अत्रिस १६५
य एते कथिताः सद्भिरन्ये	कण्व ३९	यक्ष्मी च पशुपालश्च	मनु ३.१५४
य एते तु गणा मुख्या	मनु ३.२००	यस्य इत्येतद्वाक्येन	आंपू २७०
य एतेऽन्ये त्वभोज्यान्ताः	मनु ४.२२१	यस्यत्यन्योऽश्वमेधेन	वृ परा ६.१९४
य एतेऽभिहिता पुत्रा	मनु ९.१८१	यस्यमाणं निबोध्वं	वृ परा ८.५

यः चन्दनैः च अगुरु	वृ.गौ. ४.५६	यजमानेन सहिताः स्वर्गं	बृ.गौ. १५.७०
यः च यच्छति तीव्रोष्णम्	वृ.गौ. ३.५०	यजुर्वेदस्य ये धर्मा	ब्र.या. १.६
यचा दत्ती मनोदत्ता	ब्र.या. ८.१५९	यजुर्वेदस्य वेदानां	ब्र.या. १.१४
यच्चध्यात्वा द्विजश्रेष्ठ	विष्णुम ३	यजुर्वेदस्योपवेदश्च	ब्र.या. १.४६
यच्च पाणितले दत्तं	दा ७१	यजुः शाखा तु देवानां	व्या १.४९
यच्च पाणितले दत्तं	व्या १.७७	यजुःशुक्ला च गुह्या	बृह ९.१०५
यच्च भुक्ते तु भुक्तं	आप ९.१७	यजुषां पिंडदाने तु	व्या २.११
यच्च यस्योपरणं येन	नारद १८.१२	यजुषाः सामगाः पूर्वं	व्या २.७४
यच्च श्मश्रुषु केशेषु	वृ परा २.९९	यजूंषि लब्ध्वा पुण्येन	कण्व ४६४
यच्चान्माद्यैकोदिष्ट	वृ परा ६.२६१	यजूंषि शक्तितोऽधीते	या १.४२
यच्चान्यच्चमयानेक्ति	बृ.गौ. १९.१०	यजूंष्यभ्यस्यमानेन	बृ.या. १.११
यच्चान्यदखिलं भूयस्सद्	लोहि ४०४	यजेच्छ्री भूप्रकाशैश्च	वृ हा ५.१६८
यच्चान्यन् महापातकेभ्य	व १.२३.१९	यजेत पुरुषसूक्तेन	शाता २.१६
यच्चास्य सुकृतं	मनु ७.९५	यजेत पुरुष सूक्तेन	शाता ५.४
याच्चिद्धेति प्रतीच्यान्तु	वृ हा ६.५६	यजेत पुरुषसूक्तेन	शाता ५.११
यच्चोक्तं दृश्यमानेऽपि	कात्या १६.४	जेत पुरुषसूक्तेन	शाता ५.१८
यच्चोपास्य विमुच्येत	बृ.या. १.१७	यजेत राजा क्रतुभि	मनु ७.७९
यच्छन्ति ये कपिलां	वृ.गौ. ९.७४	यजेत वाश्वमेधेन	पराशर १२.६४
यच्छाखयोपनीत	वृ परा ६.३४९	यजेत वाऽश्वमेधेन	मनु ११.७५
यच्छास्त्रेणैव विहितं	लोहि ४५७	यजेत वाश्वमेधेन	वृहस्पति २२
यच्छास्त्रेषु निषिद्ध	वृ हा ४.१०६	यजेत विधिवद्विप्र	कपिल ९८१
यच्छिद्रं नरके घोरे	भार १८.१२९	यजेतव्यं पुरोक्तेन न	कपिल ९८५
यच्छिष्टं पितृदायेभ्यो	नारद १४.३२	यजेतैव सदा विष्णो	कण्व ४८०
यच्छ्राद्धं कर्मणामादौ	कात्या २७.१	यजेद्गंगादिभिस्सद्यः	बार १५.८३
यच्छ्रुच्चासर्वतापेभ्यो	नारा ५.३२	यजेयुर्हृदयाम्भोजे भोगै	शाण्डि ४.१५
यजतां जुह्वतां चैव	शाण्डि ४.२१८	यज्जपेद्यांसमारोप्य	वृ हा ५.११६
यजदेव भृथेष्टि च	वृ हा ६.७२	यज्जले शुष्कवस्त्रेण	वृ परा २.२०२
यजनं याजनं चैव	आश्व १.६	यज्जाग्रतादिषट्के	वृ परा ११.१८९
यजनं याजनं दानं	शंख १.२	यज्जातं तिलधान्यादि	नारा १.१३
यजनं याजनं विप्रे	वृ परा ४.२१३	यज्जातिहृतुष्टिकरदानं शिव	कपिल ५१३
यजनाऽध्ययने दानं	वृ परा ४.२१५	यज्वान् ऋषयो देवा	मनु १२.४९
यजनाध्यापनादानात्	वृ हा ६.३११	यज्ञ अध्ययनं दानानि	ल हा २.९
यजनार्थं द्विजा सृष्टा	बृ.गौ. १५.७७	यज्ञकाले विवाहे च	दक्ष ६.१७
यजनीयेऽहनि सोमश्चेद्	कात्या २७.५	यज्ञकृच्छ्रसहस्रीद्यै भूमि	कपिल ५५३
यजन्ति केचित् त्रितयन्त्रि	वृ हा ८.७८	यज्ञगर्भं हिरण्यांग पंचयज्ञ	विष्णु म ४३

यज्ञतंत्रे वितत ऋत्विजे	व १.३१	यज्ञेषु पशुहिंसायां	प्रजा १४९
यज्ञ दानं जपो होमं	व्या ३८९	यज्ञैर्वा पशुबन्धैश्च	शंख ५.१५
यज्ञपात्रपवित्रार्थं द्रव्य	बृ.गौ. १५.६१	यज्ञोदानं तपः कर्म	विष्णु म ८६
यज्ञरूपं महात्मानं	वृ हा ५.८९	यज्ञोऽनृतेन क्षरति	मनु ४.२३७
यज्ञरूपं हरिं ध्यायन्	वृ हा ६.६९	यज्ञोऽनृतेन क्षरति	बृ.गौ. ११.३१
यज्ञवृक्ष समाकीर्ण	वृ हा ६.९६	यज्ञोपवीतकारस्य परं	भार १५.१०४
यज्ञशालावृता वैषा	भार १८.११६	यज्ञोपवीतञ्च कुशाः	भार १.१७
यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः	मनु ११.११	यज्ञोपवीतमित्यादि	भार १६.६
यज्ञसिद्ध्यर्थमनधान्	ल हा १.१२	यज्ञोपवीतमित्युक्तं	भार १५.१००
यज्ञसूत्र देवलक्ष्य	भार १५.९६	यज्ञोपवीतं चाष्टाम्यां	वृ परा ४.१३७
यज्ञस्थः ऋत्विजः कन्यां	ब्र.या. ८.१७१	यज्ञोपवीतं धृत्वैव	भार १५.२
यज्ञस्थऋत्विजे दैव	या १.५९	यज्ञोपवीतं विधिवत्	भार १६.५४
यज्ञस्यऋत्विजो दद्यात्	व २.१३	यज्ञोपवीतं संधार्य	भार १५.११०
यज्ञस्यत्वेतिमन्त्रेण	ब्र.या. ८.१४	यज्ञोपवीतं संधार्य	भार १६.३०
यज्ञस्वरूपिणां वह्नौ	वृ हा ४.१३७	यज्ञोपवीतशिल्पस्य	भार १५.७३
यज्ञांगेभ्य आज्यं	बौधा १.७.१०	यज्ञोपवीतसूत्रेण	कपिल ३०५
यज्ञात्मन्यज्ञसम्भूत	बृ.गौ. १८.३६	यज्ञोपवीतस्य भवेज्जातुं	भार १५.३८
यज्ञा देवानामिति सूक्तेन	वृ हा ८.६०	यज्ञोपवीती देवानां	ल व्यास २.३८
यज्ञाद्वा सप्तसंस्थेषु	अ १४०	यज्ञोपवीतीना कार्यं	कपिला २५५
यज्ञानां तपसाञ्चैव	या १.४०	यज्ञोपवीती भुंजीत	ल व्यास २.७८
यज्ञान्तकृद्गुह्य	वृ हा ७.१८	यज्ञोपवीत्युदक मण्डलु	व १.१०.२४
यज्ञाय जग्धिर्मासस्येत्येषे	मनु ५.३१	यज्ञो यज्ञपति यज्वा	वृ हा ७.१७
यज्ञार्थमर्थं भिक्षित्वा	मनु ११.२५	यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा	वृ हा १.१३
यज्ञार्थमेव संसृष्टं	वृ हा ७.१३	यत एतानि दृश्यन्ते	आश्व ३.१७६
यज्ञार्थं पशवः सृष्टा	मनु ५.३९	यत एवमिति प्रोक्ते	कण्व ७५२
यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्बध्या	मनु ५.२२	यतः पत्नीमृतदिनं पितृ	आंपू ४००
यज्ञियानां च पात्राणां	व २.६.४९२	यतः पापाय भवति	अ १०६
यज्ञे कर्मणि दाने च	ब्र.या. ७.३५	यतः प्रवृत्तिभूतानां	बृह ११.४६
यज्ञे तु वितते सम्यग्	मनु ३.२८	यतमपि वा नित्यं	शाण्डि ५.७७
यज्ञेतु संभारयजुंषि	कण्व ९२	यतयस्सर्ववर्णेषु भिक्षां	नारा ७.११
यज्ञे दाने तथा श्राद्धे	ब्र.या. ७.४६	यतये कांचनं दत्त्वा	पराशर १.५१
यज्ञेन तपसा दानैर्ये	या ३.१९५	यतयो न प्रवेश्याः	कण्व ६०८
यज्ञेन देवेभ्य प्रजया	व १.११.४३	यतश्च गोपा इत्यादि	वृ हा ५.५२१
यज्ञे यज्ञमिति ऋचा	वृ हा ५.५५५	यतश्च भयमाशङ्केत्ततो	मनु ७.१८८
यज्ञे विवाहकाले च	औ ६.५८	यतात्मनोऽप्रमतस्य	मनु ११.२१६

यः तान् पूजयति प्रीतिः	वृ.गौ. ४.३८	यत् किञ्चित् पच्यते	शंख १४.१४
यति द्विजाभ्युपास्त्यादि	वृ परा १.३८	यत्किञ्चित्पितरि प्रेते	मनु १.२०४
यति पात्राणि मृद्रेणु	या ३.६०	यत्किञ्चित् पितरि प्रेते	या २.१२२
यतिभिस्त्रिभिरेकत्र	वृ परा १२.१३५	यत्किञ्चित् स्नेहसंयुक्तं	मनु ५.२४
यतिर्यस्य गृहे भुङ्क्ते	वृ परा ५.८३	यत्किञ्चिदपि कुर्वाणो	बृ.गौ. १४.५
यति वर्णिं प्रदत्तास्ते	कपिल ९४७	यत्किञ्चिदपि दातव्यं	मनु ४.२२८
यतिव्रतिब्रह्मचारि	शंख १५.२२	यत्किञ्चिदपि वर्षस्य	मनु ७.१३७
यतिव्रत्यग्निहोत्री च	वृ परा ४.२०३	यत्किञ्चिदपि वा तेषु	आंपू ५५४
यतिश्चब्रह्मचारी च	भार १५.११३	यत् किञ्चिदेनः कुर्वन्ति	मनु ११.२४२
यति सर्वातिथिर्वापि	वृ.गौ. १२.११	यत्किञ्चिद्दश वर्षाणि	नारद २.७०
यतिहस्तेजलं दद्याद्	अत्रिस १६०	यत्किञ्चिद्दशवर्षाणि	मनु ८.१४७
यतिहस्ते जलं दद्याद्	पराशर १.४७	यत्किञ्चिद्दीयते श्राद्धे	व्या २५८
यती च ब्रह्मचारी च	पराशर १.४६	यत् किञ्चिद् दुष्कृतं	देवल ८०
यती च ब्रह्मचारी च	वृ हा ५.३०४	यत्किञ्चिन्निखिला	कण्व २३३
यतीनाम गृहस्थानां	प्रजा ६७	यत्किञ्चिन्मधुना मिश्रं	मनु ३.२७३
यतीना मनुकूलः स्यादेव	वृ.गौ. १२.६	यत्कृतं दुष्कृन्तेन	बृ.गौ. १३.२७
यतीनां ब्रह्मयज्ञविदुषो	ब्र.या. १३.१८	यत् क्षीरसौरश्रव खंड	वृ परा ७.२३५
यतीन् साधूनां गृहस्थान्	व १.१०.१९	यत्क्षुरेणोति मंत्रेण	व २.३.३४
यतेर्वा वर्णिनोदत्ताः	कपिल ९४५	यत्क्षुरेणोति मंत्रेण	आश्व ९.१६
यतेस्तु मरणाच्छुद्धि	वृ हा ६.३२०	यत्क्षुराहतभूमये	वृ परा ५.१४
यतो पितामहत्यागः पति	कपिल १२०	यत् ग्रामयाचकर्णान्तम्	वृ.गौ. ३.२०
यतोऽवश्यं गृहस्थेन	आप १.५	यत्तत् कारणं अव्यक्तं	मनु १.११
यतो वाचो निवर्तन्ते	बृ.या. २.५३	यत्तत्त्रिरप्रायकं श्राद्ध	आंपू ७३
यतो विवाहं पुत्रस्य	कण्व ६८६	यत्तद्गृह्यमिति प्रोक्तं	कात्या ७.११
यतो हि जगतो राजा कर्त्ता	कपिल ४७०	यत्तु क्षेत्रगतं धान्यं	आंड ८.१२
यत्करोत्येकरात्रेण	मनु ११.१७९	यत्तु दत्तमजानदभि	आंड ६.१५
यत् करोत्येकरात्रेण	यम २६	यत्तु दुःखसमायुक्तं	मनु १२.२८
यत्कर्तव्यं तेन कर्म	आंपू ७२३	यत्तु पाणितले दत्तं पूर्वं	व्या १२६
यत् कर्म कुर्वतोस्य	मनु ४.१६१	यत्तु वाणिजके दत्तं नेह	मनु ३.१८१
यत्कर्म कृत्वा कुर्वश्च	मनु १२.३५	यत्तु सातपवर्षेण	पराशर १२.११
यत्कालपक्वैः मधुरै	वृ परा १०.३८३	यत्तु सातपवर्षेण	बृ.या. ७.१६५
यत्किञ्चित्किञ्चित् विप्रे	वृ परा ७.६७	यत्तु स्यान्मोहसंयुक्तं	मनु १२.२९
यत्किञ्चित् कुरुते	वृहस्पति ७	यत्ते कृष्णेति मन्त्रेण	आंपू ९५०
यत् किञ्चित्क्रियते	कण्व ४५५	यत्ते केशेषु दौर्भाग्यं	या १.२८३
यत्किञ्चित् क्रियते	पराशर ९.५५	यत्ते पवित्रमर्घ्यं	वृ हा २.३९

यत्त्वगस्थिगतं पापं	पराशर ११.३६	यत्रदिङ् नियमो न	कात्या १.९
यत्त्वग्नौ हूयते नैव	वृ परा ४.१६०	यत्र धर्मो ह्यधर्मेण	नारद १.७२
यत्त्वस्यां स्याद्धनं	मनु ९.१९७	यत्र धर्मो ह्यधर्मेण	मनु ८.१४
यत्नस्तु सङ्ग्रहेसदभि	शाण्डि १.७१	यत्र नार्य्यास्तु पूज्यन्ते	मनु ३.५६
यत्नात्पिण्डप्रगृहणी	ब्र.या. ४.११३	यत्रनोक्तो दमः सर्वै	या २.२१६
यत्नात्संत्यादीया न मयात्ते	कपिल ६५	यत्र भार्या गृहं तत्र	वृ परा ६.७१
यत्नाद्दिनत्रयात्पूर्वं ०	आंपू १०.२१	यत्र मातुर्विवाहे तु दानं	कपिल ४०९
यत्नेन कीर्तितमार्पि	भार १५.४०	यत्र यत्र अस्थिताः	वृ.गौ. ४.२१
यत्नेन धर्मपत्नीत्व	लोहि ८५	यत्र यत्र च संकीर्णं	दा १६६
यत्नेन धर्मो गृहमेधिविप्रै	वृ परा ६.३८०	यत्र यत्र च संकीर्णं	या ३.३०९
यत्नेन भोजयेच्छ्राद्धे	मनु ३.१४५	यत्र यत्र च संकीर्णं	लघुशंख ७१
यत्नेन राजा निश्चित्य	लोहि ७११	यत्र यत्र च संकीर्णं	लिखित ९६
यत्नेनैवाहयित्वैनं सभा	कपिल ८२९	यत्र यत्र च संकीर्णं	संवर्त १९८
यत्पाकत्रेति मंत्रेण	आश्व २.६५	यत्र तत्र प्रदातव्यं	लिखित ३२
यत्पापं शाम्यमानस्य	आंड ६.६	यत्र यत्र स्वभावेन	व्यास १.३
यत् पुण्यफलमाप्नोति	मनु ३.९५	यत्र यत्र हतः शूर	पराशर ३.३८
यत्पुरा पातितं बीजं	व्यास ४.५८	यत्र यत्रैक देवत्यावृत्तिस्तत्र	कपिल २९०
यत्पूजितं मया देवी	भार ११.११४	यत्र यत्रोच्चार्यते स	कण्व ५५
यत्पूर्वमुषिभि प्रोक्त	आंड १.८	यत्र यत्रोत्सवं विष्णो	वृ हा ७.२९७
यत् पूर्व तु समुद्दिष्ट	बृ.या. २.१३४	यत्र यातापुनर्नेह	वृ परा १२.३३२
यत्पूर्वम्ब्रह्मणा प्रोक्त	ब्र.या. १.४	यत्र वर्जयते राजा	मनु ९.२४६
यत् प्रजापालने पुण्यं	अत्रिस २९	यत्र वा तत्र वा काले	वृ परा १०.३४७
यत् प्राग्द्वादशसाहस्रं	मनु १.७९	यत्र वा तत्र त्वरया कृत्वा	वृ.गौ. ९.५४
यत्फलं कपिलादाने	व्यास ४.१०	यत्र विप्रतिपत्ति स्याद्	नारद १.३३
यत् फलं जपहोमादौ	वृ परा ४.३	यत्र वेदास्तपो यत्र	वृ परा ७.१६
यत्फलं लभ्यते राजन्	वृ.गौ. ६.१३७	यत्र व्याहृतिभि होम	कात्या १८.१०
यत्फलं विधिवत्प्रोक्तं	बृ.गौ. १७.५२	यत्र श्यामो लोहिताक्षो	मनु ७.२५
यत्फलं समवाप्नोति	अत्रिस १३३	यत्र सभ्यो जन सर्वः	नारद १.७९
यत्र कर्मणि चारब्धे	वृ परा २.४५	यत्र स्थाने च यत्तीर्थ	बृ.या. ७.१२
यत्र काष्ठमयो हस्ती	व १.३.१२	यत्र स्थाने तु यत्तीर्थ	वृ परा २.१२५
यत्र क्वपतितस्यान्नं	अत्रिस ५.४	यत्र स्यात् कृच्छ्रभयस्त्वं	कात्या ११.१३
यत्रगावो भूरिशृंगा	वृ हा ७.३२७	यत्र हैमानि सद्यानि	वृ परा १०.१९१
यत्र चैव तु लौहानामु	व २.६.५१९	यत्राचल सरोरक्षा	वृ परा १२.२७
यत्र तत्र भवेच्छ्राद्ध	कात्या ५.११	यत्रानिबद्धोपीक्षेत	मनु ८.७६
यत्र त्वेते परिध्वंसा	मनु १०.६१	यत्रान्योत्याभिलाषेण	वृ परा ६.९

यत्रापवर्तते युग्यं	मनु ८.२९३	यथा काष्ठमयो हस्ती	वाधू १७९
यत्राशुचिस्थलं कृ स्यादु	बृ.या. ७.४८	यता काष्ठमयो हस्ती	व्यास ४.३७
यत्रास्ते लिखिता गेहे	वृ परा १०.१२०	यथा कौटुम्बिकश्रीमान्	शाण्डि ४.८३
यत्राहं न स्थितो राजन्	बृ.गौ. १९.२९	यथा क्रमेण तन्मंत्रान्	वृ हा ४.६९
यत्रैतेन्वेषयन्नित्यं	ब्र.या. ४.५०	यथा खनन् खनित्रेण	मनु २.२१८
यत्रैते भुजते हव्यं	औ ४.१९	यथा गोश्वोष्ट्रदासीषु	मनु ९.४८
यत्रैव प्रतिहन्यात्तत्र	व १.२०.१५	यथाऽग्निर्वायुना धूतो	व १.२६.१४
यत्रैवं नैक्रुतिमध्यं	भार २.७३	यथाग्निर्वै देवतानाम्	बृ.या. ४.१४
यत्रोदेति सहस्रांशु	भार २.३	यथाघमर्षणं सूक्तं	ल व्यास २.२५
यत्रोपदिश्यते कर्म	या १.८	यथाचरति धर्मं	मनु १२.२०
यत् श्रृणोति शुचिर्भूत्वा	वृ.गौ. २.३	यथा चैवापरः पक्षः	मनु ३.२७८
यत् श्रुत्वा पुरुषः स्त्री वा	वृ.गौ. ६.६	यथा जनित्री क्षीरेण	वृ.गौ. ६.१२०
यत् सद् विप्राय वृद्धाय	वृ परा १०.३२४	यथा जातबलो वह्नि	मनु १२.१०१
यत्संदिग्धं परास्वाद्य	कपिल ४५३	यता जातबलो वाग्नि	अत्रिस ३.२
यत् सर्वं प्राणि हृदयं	ल हा ७.७	यथा जातोऽग्निमान्	आश्व १.७१
यत् सर्वसारं सतुषं च	वृ परा ७.२४२	यथात्मानि तथा देवे	वृ हा ३.२९
यत्सर्वेणोच्छति ज्ञातुं	मनु १२.३७	यथात्मानि तथा देवे	५.२०४
यत्सोदकलशश्राद्धं	आं पू ८७८	यथात्मानं सृजत्यात्मा	या ३.१८१
यत्सोर्द्धर्चं समारभ्य	ब्र.या. ८.३१	यथा त्रयाणां वर्णानां	मनु १०.२८
यत् स्थूलं तादृशं ज्ञेयं	बृह ११.२९	यथा त्वचं स्वां भुजगो	वृ.गौ. ९.७८
यथर्तुलिङ्गान्यृतव	मनु १.३०	यथा दहति चैधांसि	वृ परा १२.३३५
यथा कथंचित् पिंडानां	देवल ९०	यथादहनसंस्कारस्तथा	पराशर ५.२३
यथाकथंचित् पिंडानां	मनु ११.२२१	यथा दारुमयो हस्ती	बौधा १.१.११
यथाकथंचित्पुत्रस्य	आंपू ३१४	यथा दुर्गाश्रतानेतान्नाप	मनु ७.७३
यथा कथंचिद् गणयेत्	वृ परा ४.४३	यता दृढं यथाशोभं	वृ परा ५.७६
यथा कथंचिद्दत्त्वा	या १.२०८	यथादृश्यं तथाधार्यं	भार १५.९२
यथा कथंचित् त्रिगुणः	या ३.३१९	यथा देवै तथा देहे	वृ परा ४.१३५
यथाकर्मर्तिवदो न	बौधा १.७.११	यथा द्विजा निराहन्ति	वृ.गौ. ६.१२२
यथाकर्मफलं प्राप्य	या ३.२१७	यता धातृक्रमादेते	वृ परा १२.३३०
यथाकामं महातेजाः	वृ.गौ. ६.३७	यथाधीयीत तथा रात्रौ	व २.३.१५३
यथा कामी भवेद् वापी	या १.८१	यथाध्ययनकर्माणि	पराशर १२.७४
यथाकालमधीयीत	नारद ६.११	यथा नदीनदा सर्वे	मनु ६.९०
यथाकालं यथादेशं	बृ.या. ७.१७१	यथा नदीनदा सर्वे	व १.८.१५
यता काष्ठमयो हस्ती	पराशर ८.२३	यथा नयत्यसृक्	मनु ८.४४
यथा काष्ठमयो हस्ती	मनु २.१५७	यथान्धकारं भुवनेषु	वृ.गौ. ९.७९

यथान्नं मधुसंयुक्तं	अत्रिस २.१५	यथा रथो विनाश्वै	बृह ११.२३
यथान्नं मधुसंयुक्तम्	ल हा ७.१०	यता रथोश्वहीनस्तु	ल हा ७.९
यथान्नं मधुसंयुक्तं	व १.२६.१९	यथारुच्चशनं कुर्याद्	कपिल ५७९
यथान्नं मधुसर्पिभ्यां	बृह ११.२४	यथार्चा क्रियते तस्य	वृ परा ४.१३४
यथा निर्मन्थनादग्नि	अत्रिस ३६२	यथार्थकथनान्नित्यं	कण्व १३४
यथा निवेदितं पूर्वं	कण्व ७६२	यथार्थेन च सृष्टानां	अ ५४
यथा पक्वेषु धान्येषु	नारद १.५४	यथार्पितान् पशून् गोपः	या २.१६७
यथा पर्वतधातूनां	बृ.या. ८.३३	यथार्हमेतानभ्यर्च्य	मनु ८.३९१
यथा पुत्रस्य तातस्य चोभयो	कपिल ४०५	यथार्हं च यथाशक्ति	शाण्डि ४.९८
यथाप्रियातिथिं योग्यं	शाण्डि ४.३०	यथार्हं बिभ्रयुस्सर्वे	शाण्डि ३.७९
यथा प्लवेनौपलेन	मनु ४.१९४	यथाल्पाल्पमदत्याद्य	मनु ७.१२९
यथाप्सु पतितः सद्य	बृहस्पति १२	यथावदेव वाचा ते	आंपू ८३०
यथा फलेन युज्येत	मनु ७.१२८	यथावर्णं यथाकाष्ठं	वृ परा ११.२१५
यथाबलं समभ्यर्च्य	शाण्डि ३.८०	यथावर्णानि वासांसि	वृ परा ११.७८
यथा बलिष्ठं मांसत्वान्	प्रजा १५३	यथा वह्निश्च गोमांसं	वृ परा १२.६४
यथा बातबलो वह्नि	व १.२७.२	यता वा कन्यकादाने गोत्र	कपिल ५०२
यथा बिभर्ति गौर्वत्सं	वृ.गौ. ६.१२१	यथा वायुं समाश्रित्य	मनु ३.७७
यता ब्रह्मवधे पापं	बृ.य. ४.८	यथा वा श्रोत्रियजयः भवेत्	कपिल ८१७
यथा भर्ता प्रभु स्त्रीणां	शंख ५.७	यथा विकसिते पुष्पे	वृ.गौ. ४.२९
यथा भवति तद्वीति	कपिल ४९७	यथाविधानेन पठन्	या ३.११२
यथा भस्म तथा मूर्खो	वृ परा ६.२२०	यथाविधि तत कुर्यात्	आश्व १.९
यता मधु च पुष्येभ्यो	बृ.या. ४.१६	यथाविधेन द्रव्येण	नारद २.४५
यथा महाद् ददे लोष्टं	अत्रि ३.३	यथाविध्यधिगम्यैनां	मनु ९.७०
यथा महाहृदं प्राप्यं	मनु ११.२६४	यथाविध्युक्तमार्गेण कुर्याद्	विश्वा १.५२
यथा मातरमाश्रित्य	व १.८.१६	यथाविभवसारेण	आश्व १०.४६
यथा मृगस्य विद्धस्य	नारद १.३२	यथाविहंगो पक्षाम्यां	ब्र.या. ५.२५
यथा यथा च ह्रस्वत्वं	वृ परा ७.९२	यथा वीजानि रोहन्ति	बृहस्पति ११
यथा यथा नरोधर्म	मनु ११.२२९	यथा वेगगतो वह्नि	अ १३०
यथा यथा निषेवन्ते	मनु १२.७३	यथा वै शङ्कुना	बृ.या. २.४२
यथायथा मनस्तस्य	मनु ११.२३०	यथा व्योम्नि यथा	शाण्डि ४.९१
यथा यथा हि पुरुष	मनु ४.२०	यथाशक्ति जपेद्विद्वान्	विश्वा १.१७
यथा यथा हि सुदुवृत्त	मनु १०.१२८	यथाशक्ति तपः कृत्वा	शाण्डि १.९६
यथा यमः प्रवेष्टुं	मनु ९.३०७	यथाशक्त्याचरेत्सन्ध्यां	विश्वा १.३१
यथायुक्तो विवाहः	बौधा १.११.१८	यथाशक्त्युपवासी स्याद्य	शाण्डि ४.२२५
यथायुक्तो विवाह	बौधा १.१२.१	यथा शल्यं भिषग्विद्वान्	नारद १.७८

यथाशक्ति चान्नेन	व १.८.१३	यथेष्टाचरणाद ज्ञातौ	औ ६.१९
यथाशास्त्रमधीत्यैव	कण्व १७५	यथैतदग्निं होत्रे धर्मो	बौधा १.६.३१
यथाशास्त्रमुपादान	शाण्डि ३.१६३	यथैतदनुपेतेन सह	बौधा १.१.२१
यथाशास्त्रं कुत्वैवं	मनु ४.९७	यथैतदभिचरणीयेष्विष्टि	बौधा १.६.१०
यथाशास्त्रं प्रयुक्तः	या १.३५६	यथैतदेतत् परमं निश्शेष	कपिल ९३५
यथाशास्त्रादिविहितै	कण्व ४०४	यथैधस्तेजसा वह्नि	मनु ११.२४७
यथा शूद्रस्तथा मूर्खो	वृ परा ६.२२१	यथैनं नाभिसन्दध्यु	मनु ७.१.८०
यथाश्मनि स्थितं तोयं	पराशर ८.१७	यथैव दृष्ट्वा भुजगा	वृ.गौ. ९.७७
यथश्मनि स्थितं तोयं	बौधा १.१.१५	यथैव शूद्रो ब्राह्मण्यां	मनु १०.३०
यथाश्वमेधः क्रतुराट्	बृ.या. ७.१७७	यथैवात्मा तथा पुत्रः	मनु ९.१३०
यथाश्वमेध क्रतुराट्	मनु ११.२६१	यथैवात्मा परस्तद्वद्	दक्ष ३.२०
यथाश्वमेधः क्रतुराट्	शंख ९.१३	यथोक्तकार्ये राज्ये च	वृ परा १२.१६
यथाऽश्वा रथहीनाः	व १.२६.१८	यथोक्त पुष्पालाभे तु	वृ हा ५.५६३
यथाश्वा रथहीनास्तु	अत्रि २.१४	यथोक्तमार्तः सुस्थो	मनु ८.२१७
यथाषण्डोऽफलं दानं	पराशर ८.२५	यथोक्तवस्त्वसम्पत्तौ	कात्या १५.२१
यथा षण्डोऽफलः स्त्रीषु	मनु २.१५८	यथोक्त विधिना चैता	वृ परा ५.२०
यथासनमपराधो	व १.१६.४	यथोक्तविधिना देवान्	आश्व २३.२९
यथासमाम्नातं च	बौधा १.६.९	यथोक्तान्यपि कर्माणि	मनु १२.९२
यथासम्भव मुक्तानि	वृ परा ८.३४०	यथोक्तेन नयन्तस्तु	मनु ८.२५७
यथा सर्वगतो विष्णु	वृ हा ३.७१	यथोक्तेन विधानेन	नारद १९.३७
यथा सर्वाणि भूतानि	मनु ९.३११	यथोक्तेन विधानेन	नारद १९.४६
यथा सर्वासु अवस्थासु	वृ.गौ. ३.६७	यथोक्तेनैव कल्पेन	बौधा १.५.११२
यथास्थितस्सण्वासौ	शाण्डि ४.२०	यथोत्पन्नेन कर्तव्यं	अत्रिस ३८
यथा स्वायुधधृक्	कात्या २१.१५	यथोदयस्थसूर्यस्तु तमः	वृ.गौ. ६.१२३
यथाहनि तथा प्रातः	कात्या १०.१	यथोदितानि दुर्गाणि	वृ परा १२.१४
यथाऽहमिन्द्रियैरात्मा	शाण्डि ५.१९	यथोदितेन विधिना नित्यं	मनु ४.१००
यथा हि क्षुधिता बाला	बृह ९.१४८	यथोद्धरति निर्दाता	मनु ७.११०
यथा हि गौर्वत्सकृतं	बृ.या. २.४६	यदक्षरं वेदविदो वदन्ति	बृ.या. २.१०४
यथा हि सोमसंयोगा	बौधा १.४.२३	यदक्षरेषु दैवत्यं	वृ परा ४.१७
यथाहि क्षुधितो बालो	ब्र.या. २.१८१	यदक्षरेषु यद्वर्णं यत्र	वृ परा ४.७०
यथा हि भरतो वर्णो	या ३.१६२	यदगम्याभिगमनाज्जायते	शाता ५.२४
यथा ह्येकेन चक्रेण	या १.३५१	यदग्निहोत्रं य पुण्यः	बृ.गौ. १७.३०
यथेदमुक्तवांछास्त्र पुरा	मनु १.११९	यदधीतेऽन्वहं शक्त्या	बृ.या. ७.५९
यथेदं शावमाशौचं	मनु ५.६१	यदधीते यद्यजते	मनु ८.३०५
यथेरिणे बीजयुप्त्वा	मनु ३.१४२	यदनुष्ठानतः सर्वानुष्ठानं	आंपू ६१९

यदन्नं पिण्डदाने	ब्र.या. ४.११७	यदा त्रयेण कुर्वीत	वृ हा ३.१२०
यदन्नं लेपरूपं तु	वृ परा ७.२६७	यदा त्वामात्य द्विज	वृ परा १२.९२
यदन्नं साधितं साधु	शाण्डि ४.९०	यदा दृष्टस्तदा सूर्य	आंपू ७६९
यदन्यगोषु वृषभो	मनु ९.५०	यदानिरोधसंयोगा	वृ.या. ८.२६
यदन्यत् कुरुते कर्म	दक्ष २.२०	यदा परबलानां तु	मनु ७.१७४
यदपित्यमेध्यांशं	वाधू ८१	यदा प्रहृष्टा मन्येत	मनु ७.१९०
यदप्ययोधे लवणोदकत्वं	वृ परा १२.७७	यदा भवेत्तदा तत्र	आंपू ८२१
यदप्सु मलनिक्षेपः	वृ परा २.२१४	यदाभावेन भवति	मनु ६.८०
यदमेध्यमशुद्ध वा	वृ.या. २.१५३	यदा भोजनकाले	लघुयम ७
यदर्वाचीमेनो भ्रूणहत्या	बौधा २.१.८५	यदामन्येत भावेन	मनु ७.१७१
यदलीकं कृतं सर्व	भार २१.११३	यदावगच्छेदायत्यामं	मनु ७.१६९
यदशक्यं त्यजेदेव	कपिल ३११	यदाबहसनेपत्नीस्थालीपाका	कपिल १९६
यदशनं केस कीटोपहतं	व १.१४.१८	यदा विरोधात्संयोगा	ब्र.या. २.६५
यदस्यान्यद् रश्मिशत	या ३.१६८	यदाश्रयति विद्यादि	वृ हा ३.९
यदस्येत्यनया हुत्वा	आश्व २.६१	यदाश्रिताय सायज्ञं दानं	ब्र.या. ११.८
यदहना कुरुते	वृ.या. ८.३७	यदा स देवो जागर्ति	ब्र.या. २.६७
यदाकरोत्तथैवाहं करिष्या	लोहि ५३३	यदा स देवो जागर्ति	मनु १.५२
यदाक्षराभिधानाना बलयो	भार ७.१२२	यदा सम्यग् गुणोपेतं	या १.३४८
यदा च कश्चित् स्वं	नारद १८.४४	यदा स्वयं न कुर्यात्तु	मनु ८.९
यदा च क्रयते पापः	वृ.गौ. १.३३	यदाह भगवान् धातुस्तेन	वृ हा ४.२६५
यदा चतुर्दशीयामं	कात्या १६.२	यदाहारो भवेत्तेन	शंख ६.३
यदा च ते भवेच्चीर्णं	आंड ३.११	यदि कर्तव्यधीः स्यात्	आंपू ७९६
यदा च न सकुल्या	नारद २.९७	यदि कर्ता ब्रह्मचारी	लोहि ४११
यदा चाग्नौ स्थितं	नारद १८.४३	यदि कालवशात् कर्तुं	आश्व १५.५६
यदा चेद्रोगवमनं तदा	आंपू १७६	यदि कुर्वीत मोहेन	आंपू ९९
यदा जिगीषुर्धृतशस्त्र	वृ परा १२.८९	यदि कुर्वीत मोहेन	आंपू २४०
यदाणुमात्रिको भूत्वा	मनु १.५६	यदि गण्डूषकाले तु	कण्व ९६
यदातिथिगुरुप्राज्ञान्	नारद १८.२९	यदि गर्भोविपद्येत	पराशर ३.१७
यदातु द्विगुणीभूतं	या २.६५	यदि गुर्वादिसच्चिन्ता	कपिल ५८०
यदा तु नैव कश्चित्	नारद १३.२२	यदि गोधूम शाखायां	वृ परा ११.९१
यथा तु यानमतिष्ठे	मनु ७.१८१	यदि चेद् ब्राह्मणो दुष्ट	लोहि ६९८
यदा तु वशतां याति	वृ परा १२.५५	यदि चेद्भक्ष्यते सत्यं	आंड ३.३
यदा तु स्यात्परिक्षीणो	मनु ७.१९२	यदिचेद्दोषं संस्पृष्टि	भार ७.१२०
यदा तेजः समालम्ब्य	नारद १८.२६	यदिच्छेद्भूमिसंततिमिति	बौधा १.४.२७
यदात्र न स्युर्ज्ञातारः	नारद १२.११	यदि जातस्सुतः सोमं	कपिल ३९९

यदि जानसि मां भक्तम्	वृ.गौ. १.१३	यदि प्रक्षालनं त्यक्त्वा	कण्व १३२
यदि जानासि मां भक्तं	वृ परा १.१३	यदि प्रमादेन कृतमन्यथा	कण्व ६९
यदि जानासि ये भक्तिं	पराशर १.१२	यदि प्रविष्टं नरकं बद्ध्वा	व २.५.७१
यदि जीवति स स्तेन	संवर्त १२१	यदि बहूनां न शक्नुयाद	बौधा २.३.१५
यदि तज्ज्येष्ठभार्याया	आंपू ४४४	यदि ब्राह्मणस्य ब्राह्मणी	व १.१७.४४
यदि तत्र भवेच्छोकः	आंउ १०.७	यदि ब्रूयाद्धेनुमव्येत्येव	बौध २.३.४६
यदि तत्र भवेत काण्डं	पराशर ९.३५	यदि ब्रूयान्मणि धनुरित्येव	बौधा २.३.३९
यदि तत्रापि सम्पश्येद्	मनु ७.१७६	यदि भारसहस्रम् तु	वृ.गौ. ४.३४
यदि तु प्रायशोऽधर्मं	मनु १२.२१	यदि भार्या अशक्ते	व्या २२४
यदि तूष्णीं समासीन	भार १६.६०	यदि भुक्तन्तु विप्रेण	पराशर ११.५
यदि ते तु न तिष्ठेयुः	मनु ७.१०८	यदि मध्ये तत्कुलीनाः	कण्व २७५
यदि तेन हतः कोपि तस्मिन्	लोहि ६९७	यदि मोहाज्ज्येष्ठपुत्रो	लोहि २६७
यदि तेषां तज्जलं	कण्व १५४	यदि मोहेन तेनार्वे	कण्व ५७५
यदि त्यक्तं तद्भवते	लोहि ३४९	यदि मोहेन सा गच्छेत्	लोहि १०८
यदित्वतिथिधर्मेण	मनु ३.१११	यदि मोहेन सा पत्नी	लोहि ११२
यदि त्वात्यन्तिकं वासं	मनु २.२४३	यदि राजा न सर्वेषां नियतं	नारद १८.१४
यदि दत्तस्वतनयान्	आंपू ३४२	यदि वद्धे शिखे स्यातां	आश्व १५.४४
यदि दत्तस्वतनये	कण्व ७१३	यदि वाग्यमलोपः	वृ.या. ७.१४८
यदि दद्यात् समानंशान्	या २.११७	यदि वा त्र्यन्तिकं वासं	औ ३.८३
यदि धर्मरति शान्तः	ल हा ६.२२	यदि वा दाप्यमानानां	नारद १८.७९
यदि धर्मार्थाभ्यां प्रवासं	व १.१७.६८	यदि वृत्त्याससूत्र हि	भार २.४६
यदि न क्षिपते तोयं	पराशर ६.२६	यदि व्रजेत् प्रदक्षिणं	व १.१२.४०
यदि न क्षिपते तोयं	वृ.या. १.१०	यदि शब्दः समुत्पन्नः	कण्व १०१
यदि न क्षिपते तोयं	लघुशंख ४४	यदि संशय एव स्यात्	मनु ८.२५३
यदि न क्षिपते तोयं	लिखित ८५	यदि संसाधयेत्तु	मनु ८.२१३
यदि न प्रणयेद् राजा	मनु ७.२०	यदि संध्यां प्रकुर्वीत	कण्व १४९
यदि नात्मानि पुत्रेषु	मनु ४.१७३	यदि सर्वस्वदानेन चित्त	नारा ८.८
यदिनाऽभ्युदयिकेषु युक्तः	व १.१५.१०	यदि स स्वामिको ग्रामस्तदा	कपिल ४८०
यदि नाम न धर्माय	व्यास ४.२०	यदि सा दातृवैकल्पादजः	व्यास २.७
यदि निरुप्ये वैश्वदेवे	व १.११.१०	यदि सा स्यात्समीचीना	लोहि ११९
यदि पंचाशदधिकसं	कपिल ९५४	यदि सा स्यादप्रगल्भा	लोहि १२०
यदि पत्न्यां प्रसूतायां	पराशर ३.३२	यदि स्त्री यद्यवरजः श्रेयः	मनु २.२२३
यदि पश्येदृतपूर्वं क्रूरवारे	अत्रिस ५.४३	यदि स्यात्तु मनुष्याणां	वृ हा २.६५
यदि पित्रा समाज्ञाप्तो	विश्व ८.५२	यदि स्यादधिको विप्रः	औ ३.१२०
यदिपुंकृतकर्माणि	वृ परा ११.२	यदि स्यालौकिके	ल व्यास २.५४

यदि स्युः श्रोत्रियास्सन्तः	कपिल ८६९	यद्गुस्तरं यद्गुरापं	मनु ११.२३९
यदि स्वयं तदा सर्वा	आंपू ३०८	यद्देवा देव हेडेति	ब्र.या. २.१६४
यदि स्वाश्चापराश्चैव	मनु ९.८५	यद्देहकं काकबलाक	वृ.य. ३.६१
यदि हि स्त्री न रोचेत्	मनु ३.६१	यद्देहिनामत्र शरीर	वृ परा ७.२३९
यदुक्तं च यथाकाले	आश्व ९.१९	यद्धद्वयोरनयोर्वेत्थ	मनु ८.८०
यदुक्तं ब्रह्मणां पूर्वं	वृ हा २.३	यद्धनं यज्ञशीलानां	मनु ११.२०
यदुक्तं मनुना धर्म	वृ हा ४.२५९	यद्ध्यानं मनसा विष्णो	वृ परा २.८८
यदुक्तं यदहस्त्वेव	कात्या १६.३	यद्ध्यायति यत्कुरुते	मनु ५.४७
यदुक्तं सर्वशास्त्रेषु	वृ परा ४.१०८	यद्बालः कुरुते कार्य	नारद २.३५
यदुच्चनीतोच्चरितै	ल हा ४.४२	यद्भक्ष्यं स्यात्ततो	मनु ६.७
यदुच्छिष्टमभोज्यं	बौधा २.५.१७	यद्भुक्ते वेदविद् विप्रः	व्यास ४.५५
यदुच्यते द्विजातीनां	या १.५६	यद्यकर्तृकृतं कर्म	आंपू १.४८
यदुपनयति जनन्यां	व १.२८	यद्यकामनया कर्म क्रियते	कपिल ४४३
यदुपस्थकृतं पापं	बौधा २.४.२५	यद्यकार्यशतं साग्रं	व १.२७.१
यदेकमग्निहोत्रं वै स्पृष्टं	वृ.गौ. १५.२	यद्यग्निराग्निनान्येन	कात्या १८.१२
यदेकरात्रेण करोति	बौधा २.१.५९	यद्यत्तदेतखिलं यत्ना	लोहि २१६
यदेतत्तनु कथितं	आंपू ८७९	यद्यत्तु पैतृकं कर्म	आंपू ६४९
यदेतत् परिसंख्या	मनु १.७१	यद्यत् परवशं कर्म	मनु ४.१५९
यदेतद्वर्तते हस्ते तत्	भार १८.६८	यद्यत्र निखिलं द्रव्यं	कण्व ५६६
यदेव तर्पयत्यद्भिः	मनु ३.२८३	यद्यदारभते तत्तद्योक्त	वृ परा ११.१९६
यदैव कुरुते स्नानं	वृ.या. ७.१५७	यद्यदिष्टतमं द्रव्यं	वृ.गौ. ७.१२९
यदैव स्युः प्रवासंस्था	वृ परा ७.७२	यद्यदिष्टतमं लोके	दक्ष ३.३२
यदैवाव्ययसम्पत्ति	वृ परा ६.३२५	यद्यदिष्टतमं लोके	संवर्त ४६
यदैवाहवनीयं वै दक्षिण	आंपू ८२३	यद्यद्ददाति विधिवत्	मनु ३.२७५
यद्गर्हितेनार्जयन्ति	मनु ११.१९४	यद् यद्भुक्तं द्विजैरन्नं	वृ परा ७.२६४
यद्गृहे पातकोत्पत्ति	वृ हा ६.३७५	यद्यद्रोचेत् विप्रेभ्यः	मनु ३.२३१
यद्ग्रामइत्यादि	वृ परा १०.३३८	यद्यन्नमत्ति तेषां तु	मनु ५.१०२
यद्गन्धं भवेन् भृत्स्ना	वृ परा १२.१८६	यद्यन्मीमांस्यं स्यात्	व १.३.४३
यद्गदाति गयाक्षेत्रे	शंख १४.२७	यद्यन्यगोत्रस्तनयः संग्राह्यो	कपिल ६८३
यद्गदाति गयास्थश्च	या १.२६१	यद्यन्यथाकृतं तनु तदा	कण्व ८२
यद्गदाति यदश्नाति	व्यास ४.१७	यद्यन्यस्मै भोजनाय	व्या ३५१
यद्गदाति विशिष्टेभ्यो	व्यास ४.१६	यद्यन्यो गोषु वृषभो	व १.१७.८
यद्दरिद्रजनस्यापि स्वर्ग	वृ.गौ. १७.३	यद्यपि स्यात्तु सत्पुत्रो	मनु ९.१५४
यद्दिवा विहितं शौचं	वाधू १६	यद्यप्यावश्यकस्तास्तु	कण्व ६०५
यद्दीयतेस्मानुद्दिश्य चानेन	कपिल ७२१	यद्यर्थिता तु दारैः स्यात्	मनु ९.२०३

यद्यल्लोके महत्सर्वे	आंपू ३२१	यद्वा तद्वा परद्रव्यं	मनु १२.६८
यद्यश्नाति स्वयं मोहात्	शाण्डि १.६८	यद्वा तद्वापि होतव्यं	वृ परा ४.१५७
यद्यसम्पूर्णसर्वांगो	पराशर ९.२२	यद्वा तस्यै प्रदद्यात्तु वह्नि	कपिल १.४३
यद्यसौ बाह्येल्लोभाद्	वृ परा ५.१२५	यद्वा तातपितानाम	आश्व ६.३
यद्यस्थसंचयं कर्म	औ ३.१२५	यद्वातृणादिकं दद्याद्	वृ परा १०.२१
यद्यस्मि पापकृन्मात	या २.१०४	यद् विप्रशिष्यप्रतिपादितेन्	वृ परा १०.२४१
यद्यस्य विहितं चर्म यत्	मनु २.१७४	यद्वेदकृत्ययोग्यन्तत्	ब्राह्मण्यं कपिल ३.५५
यद्याचामेद्भूमौ स्रावयित्वा	बौधा १.५.१३	यद्वेष्टितं काकबलकचिल्लै	यम ४४
यद्याहितोऽग्नेरतिथि	वृ.गौ. ९.८१	यद्वेष्टितं कालवलाक	आप ९.९
यद्युक्तमंत्रमात्रेण	आंपू ८०७	यद्वेष्टितशिरा भुक्ते	मनु ३.२३८
यद्युच्छिष्टाद्युपहतं	भार १८.८७	य न स्पृशन्ति दुःखाद्या	वृ परा १२.२८०
मद्युद्धं निषिञ्चेतु	बृ.या. ७.७३	यंत्रमंत्रवाहचिन्त्य	विष्णु १.५३
यद्युद्धतं भाण्डगतं	लोहि ६४२	यन्त्रिता गौश्चिकित्सार्थ	पराशर ९.४५
यद्युपरुद्धा स्युरेतेनो	बौधा २.५.१४	यंत्रिते गोचिकित्साया	लघुशंख ६०
यद्युष्णयित्वा स्नानाय	कपिल ६२३	यन्त्रेण गोचिकित्सार्थ	आंउ १०.१३
यद्येककर्तृकं श्राद्धमने	व्या १३९	यन्त्रेणे गोचिकित्सार्थे	संवर्त १३७
यद्येकजातावहवः	नारद १४.४१	यंत्रेणे गोश्चिकित्सार्थे	आप १.३२
यद्येकत्र पचेदामं	आश्व १.१७८	यन्न कारयते ततन्मान्यं	बृ.य. ३.५६
यद्येकपंकत्या विषमं	वृ परा ७.२५२	यन्न वेदध्वनि ध्वान्तं	अत्रिस ३१०
यद्येकपंकत्या विषमं	व्यास ४.६२	यन्न सन्तं न चासन्तं	व १.६.४०
यद्येकपुत्रो दत्तश्चेदात्मानं	लोहि २७४	यन्नाम्नातं स्वशाखायां	कात्या ३.३
यद्येकं भोजयेच्छ्राद्धे	व १.११.२७	यन्नावि किंचिद्वाशानां	मनु ८.४०८
यद्येकरिक्थिनौ स्याता	मनु ९.१६२	यन्नास्ति सर्वलोकस्य	दक्ष७.२३
यद्येकवस्त्रो विप्रः	व्या ३४०	यन्नीललक्ष्मपृथुलं	आंपू २८१
यद्येवं स कथं ब्रह्मन्	या ३.१२९	यन्मखानां च सर्वेषां	कण्व ६३३
यद्येषांभवेविप्रः सूर्या	भार ६.१०६	यन्मधुनेति मंत्रेण	ब्र.या. ८.२०७
यद्यैवने चरति विभ्रमेण	बौधा १.५.१०३	यन्मया दूषितं तोयं	आश्व १.२१
यद्वाष्टं शूद्रभूयिष्ठं	मनु ८.२२	यन्मया दूषितं तोयं	विश्वा १.८४
यद्विस्वाद्रोमसंसक्तं	आंपू ७८१	मन्यया दूषितं तोय	वृ परा २.२१५
यद्वदन्ति तमोमूढा	पराशर ८.१३	यन्मरणं तदवशृथमिति	वृ हा ६.११४
यद्वदन्ति तमोमूढा	बौधा १.१.१२	यन्मूर्त्यवयवाः सूक्ष्म	मनु १.१७
यद्वदन्ति तमो मूढा	व १.३.८	यन्मेघरेत इत्याभ्यां	या ३.२७८
यद्वर्णा यत्सुता विद्वन	वृ परा ११.३५	यन्मे मनसा वाचा	बौधा २.५.६
यद्वस्तु स्यात्परप्राप्यं	कपिल ४५५	यन्मे माता प्रलुल्लुभे	मनु ९.२०
यद्वा गव्यं घृते छागं	व्या ३१०	यन्मेवा चापि सकल्पं	ब्र.या. ११.२९

यन्विदं कारकं कुर्यात्	वृ परा ६.२५४	यमर्थमभियुंजीत न तं	नारद १.४९
यं इदं धारयेद्विप्र	बृह १२.४८	यमश्च धर्मराजश्च	वृ परा २.१९६
यं कट्यां तारकावर्णं	वृ परा ४.८२	यमसूक्तं यमीं गाथां	या ३.२
यं तु कर्मणि यस्मिन्	मनु १.२८	यमसूक्तेन कुर्वीत	शाता ६.२२
यं तु पश्येन्निधिं राजा	मनु ८.३८	यमः स्कन्दो नैर्ऋतश्च	वृ हा ४.१७१
यं दक्षिणस्थितं पिण्डं	आंपू ९८३	यमान् सेवेत सततं	अत्रिस ४७
यः पठेत् स्वरहीनं	वृ परा ६.३७१	यमान्सेवेत सततं न	मनु ४.२०४
यः पठेद् विधिवत्	वृ परा ६.३६९	यमायः सानुगायाथ	वृ परा ७.३१५
यः पठेन्मामकं धर्म	बृ.गौ. २२.३२	यमाय सोमेति यमनैर्ऋतं	वृ हा ८.६७
यः परार्थेपहरति स्वां	नारद २.२०४	यमायाथ च चित्राय	आश्व १.१५६
यः पश्येत् शृणु	वृ परा १२.१९१	यमिद्धो न दहत्यग्निरापो	मनु ८.११५
यः पापात्मा येन सह	प्रायश्चित्त विष्णु ५४	यमेन पूजिता यान्ति	वृ.गौ. ५.८५
यः पिता स च वै	वृ परा ६.२००	यमेव तु शुचिं विद्यान्नियतं	मनु २.११५
यः पिता स तु पुत्रः	वृ परा ६.१९१	यमेव विधा शुचिमप्रबलं	व १.२.१५
यः प्रत्यवसितोविप्रः	यम ४८	यमेव ह्यतिवर्तेरन्ते	नारद १६.१२
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ६.८९	यमैश्च नियमैश्चैव	बृह ९.३५
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ७.३३	यमोपि महिषारूढो	शाता २.१८
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ७.३८	यमोवैस्वतो देवो	मनु ८.९२
यः प्रवृत्ता श्रुतिं सम्यक्	वृ.गौ. ११.४	यया कया च विधया	आंपू ६५
यः प्रहारं द्विजेन्द्राय	वृ.गौ. ४.४८	यया कया संख्याया	आंपू ६९२
यं प्राप्य विन वर्तन्ते	वृ.या. २.१३५	यया रामेश्वरी तारा	ब्र.या. १०.७७
यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां	मनु ९.१७८	ययिच्चेत्पीठकंशत्रो	बार ९.४४
यं मातापितरौ क्लेशं	मनु २.२२७	ययैभ्युपायैरेनांसि	मनु ११.२११
यं यज्ञसंघैस्तपसा	पराशर ३.४४	यवगोधूमजाः सर्वे	शंख १७.३४
यं यं कामयते चित्ते	वृ हा ३.२०१	यव पिष्टेन निर्वाप्य	वृ परा ११.९८
यं यं कामयते चित्ते	वृ हा ३.३६३	यवस तावदूढव्यो	दा १००
यं यं पश्यति चक्षुर्मयीं	वृ परा ४.९८	यवस्र्नाववोटव्यो	लघुशंख ५१
यं वदन्ति तमोभूता	मनु १२.११५	यव सिद्धार्थकाश्चैव	ब्र.या. ८.१९५
यं वाय्वात्मने गन्धान्	विश्वा ३.१८	यवाग्वाः पयसो वापि	आंसू २८५
यं हि व्रतानां वेदानां	बृ.या. ७.३२	य वाद्य संस्कृतान्नेन	वृ परा ७.७४
यं हे त्वाहतिसूक्तेन	वृ हा ७.१३०	यवान् विधि तोपनोपयुंजान	व १.२७.१५
यमगीतं चात्र श्लोकं	व १.१९.३३	यवासंगुडमेधाज्यनार्दकं	व २.६.३०२
यमदीपं त्रयोदश्यां देतावित्र्य	ब्र.या. ९.५५	यवीयाञ्ज्येष्ठभार्यायां	मनु ९.१२०
यम द्वारे पथे क्षेत्रे	ब्र.या. ११.२७	यवैर न्ववकीर्याथ भाजने	या १.२३०
यमर्थं प्रतिभूर्दद्याद्	नारद २.१०४	यवैरमन्त्रकं नित्यं	लोहि १७

यवैश्च तण्डुलैर्वीपि	वृ हा ५.३८३	यश्चैतान् प्राप्नुयात्	मनु २.९५
यवैश्चमधुसंयुक्तैर्दद्या	व २.६.३९०	यश्चैतैर्लक्षणैर्युक्तो	अत्रिस ४२
यवो वेदा पुराणाञ्च	या ३.१८९	यश्चैषां स्वामिनं कश्चिन्	नारद ६.२८
यवोसि धान्यराजो	आश्व २३.२४	यः श्राद्धं कुरुते	वृ हा ५.१९२
यवोसि पुण्यामृत	वृ परा ७.१८०	यः श्राद्धे भोजयेद् विप्रः	वृ हा २.४२
यवोसियवांश्चै नैऋत्पते	ब्र.या. ८.१९९	यष्टव्या बहवः पुत्रा	दा २०
यव्यद्वयं श्रावणादि	कात्या १०.५	यष्ट्याघाते चरेत्कृच्छ्रे	वृ परा ८.१३९
यशः कीर्तिविवृध्यर्थ	वृ हा ४.२१७	यष्ट्या तु पतिता या	बृ.या. ४.४
यः शब्दमय ओकार	या २.१३२	यः संक्रमे भानुदिने च	वृ परा ७.२९४
यशः शुचित्वं कुप्यानि	वृ परा ७.३२४	यः संगतानि कुरुते	मनु ३.१४०
यः शास्त्र दृष्टेन पथा	वृ परा १२.८५	यः समर्घमृणं गृह्य	बौधा १.५.९३
यः शूद्रभजते नित्यं	वृ परा ६.२९०	यः साक्ष्यं श्रावितोऽन्येत	या २.८४
यः शूद्र भोजयेद्	वृ परा ७.६३	यः साधयन्तं छन्देन	मनु ८.१७६
यः शूद्रायां च स्वयं	वृ परा ६.२९१	यः साहसं कारयति	या २.२३४
यशोदां च सुभद्रा च	वृ हा ५.४८८	यः सिद्धमन्त्रं सततं	वृ परा ११.३१३
यश्च कुपात् पिबेत्तोयं	आप २.१२	यः सुवर्णं दरिद्राय ब्राह्मणाय	वृ.गौ. १.४१
यश्च गृह्णाति विधिवत्	वृ परा १०.६३	यः सूतकाशौच विशुद्धि	वृ परा ८.५८
यश्चतिष्ठात्यनाचान्तो	बृ.गौ. १३.२०	यः सोमलतिकां विप्रः	वृ.गौ. १९.४१
यश्च धैर्येण दुष्टात्मा	वृ परा ७.३५९	यस्तडाकं नवं कुर्यात्	वृहस्पति ६२
यश्च मासोपवासं वै	वृ.गौ. ७.१०५	यस्ततो जायते गर्भो	व १.११.३५
यश्च यस्ययदा दुःस्थः	या १.३०७	यस्तत्र प्रकारोऽन्नस्य	कात्या ३.९
यश्चान्नौकरणं दद्यात्	वृ परा ७.२११	यस्तं भिन्दति ज्ञानेन	ब्र.या. ७.४५
यश्चचाण्डाली द्विजो गच्छेत्	अत्रिस २६३	यस्तर्पणं विना स्नाया	विश्वा १.८३
यश्चात्मनि रतो नित्यं	दक्ष ७.८	यस्तल्पजः प्रमीतस्य	मनु ९.१६७
यश्चापि धर्मसमयात्	मनु ९.२७३	यस्तस्यां नार्चयेद्देवां	वृ परा २.२९
यश्चाप्यायुजं मास	बृ.गौ. १७.५४	यस्तां विवाहयेत्कन्यां	बृ.य. ३.१९
मश्चाप्युपास्ते सभ्यं	वृ.गौ. १५.३९	यस्तां विवाहयेत् कन्यां	यम २४
यश्चाभिवादनो विप्र	व्या ३६०	यस्तां समुद्गहेत् कन्यां	पराशर ७.९
यश्चार्थं साधयेत्तेन	नारद ३.५	यस्तिलान् विक्रीणीते	बौधा २.१.७८
यश्चास्योपादिशेद्धर्म	व १.१८.१३	यस्तीर्थयानं जप-यज्ञ	वृ परा १२.३२५
यश्चेदं शृणुयाद्	वृ.गौ. १०.१५	यस्तु कारयते भक्त्या	वृ.गौ.७.५१
यश्चेदं श्राववेच्छ्राद्धे	वृ.गौ. २२.३५	यस्तु कृष्णाजिनं दद्यात्	वृ परा १०.१३६
पश्चैतदालोच्य कृषिं	वृ परा ५.१९३	यस्तु कुद्ध पुमान्	पराशर १२.५०
यश्चैतस्यां पृथिव्यां	बृ.गौ. १५.५५	यस्तु गण्डूषसमये तर्जन्या	वाधू ३६
यश्चैतान् पालयेद्	वृ परा ५.४५	यस्तु छायां श्वपाकस्य	अत्रिस २८७

यस्तु तत्कारयेन् मोहात्	मनु ९.८७	यस्त्वाश्रयं समाश्रित्य	पु ५
यस्तु दोषवती कन्याम्	नारद १३.३३	यस्त्वेकदेशं स	व १.३.२५
यस्तु दोषवतीं कन्यां	मनु ८.२२४	य स्त्वेकपंक्या विषमं	बृ.गौ. १४.३०
यस्तु दोषवतीं कन्यां	मनु ९.७३	यस्त्वेतान्युक्लृप्तानि	मनु ८.३३३
यस्तु नारायणादन्यं	व २.२५	यस्त्वेनं प्रहरेत्कोपान्	बृ.या. १९.३०
यस्तुपाणिगृहीताया	व १.१२.२१	यः स्नात्वा पापसम्भीत	वृ परा ८.१५९
यस्तु पाणितले भुङ्क्ते	व २.६.२०८	यः स्नानमाचरेन्नित्यं	वृ परा २.११५
यस्तु पूर्वनिविष्टस्य	मनु ९.२८१	यस्माच्च दुर्दुतान्	बृ.गौ. १५.१६
यस्तु प्राणिवधं कृत्वा	वृ परा ७.२९९	यस्माच्च नयति ह्यग्रां	बृ.गौ. १५.१५
यस्तु भक्त्या शुचिर्भूत्वा	बृ.गौ. १८.१३	यस्माज्जातास्त्रयो वेदा	वृ हा ७.५४
यस्तु भग्नेषु सैनेषु	पराशर ३.४०	यस्मात् तस्मात्तु विभ्रन्तं	विष्णु १.३७
यस्तु भ्रातृपदं मासमेक	बृ.गौ. १७.४९	यस्मात्तु सर्वकृत्येषु	बृ.गौ. १५.१४
यस्तु भुङ्क्ते पराशौचे	शंख १५.२३	यस्मात् त्रयोप्याश्रमिणे	मनु ३.७८
यस्तु मीतः परावृत्तः	मनु ७.९४	यस्मात्पशुत्वमिच्छन्ति	बृ.गौ. १५.७३
यस्तु रज्जुं घटं	मनु ८.३१९	यस्मात् पुरोहितो	आश्व १०.४०
यस्तु राजाश्रयेणैव	बृ.गौ. १९.३६	यस्मात्सत्राति पुन्नाम्नो	वृ परा ६.१८४
यस्तुर्यमस्या द्विज	वृ परा ४.१२	यस्मादण्वपि भूतानां	मनु ६.४०
यस्तुवेद मधीयानो	आंड ८.२	यस्मादग्रे स भूतानां	बृ.गौ. १५.३
यस्तु वेदोदितं धर्म	वृ हा ८.१७४	यस्मादत्यम्लवचनं	आंपू ५७६
यस्तु संवत्सरं पूर्ण	अत्रिस ३२२	यस्मादन्नात् प्रजाः सर्व्वः	संवर्त ८२
यस्तु सम्यक् द्विजोधीते	बृ.या. ७.६०	यस्माद वैदिकं धर्म	वृ हा ८.१८५
यस्तु सर्वाणि भूतानि	वृ परा १२.२९६	यस्मादस्मिन् प्रवर्तते	बृ.गौ. १५.३०
यस्तु सात्यमधर्मेण	का १६	यस्मादुत्पत्तिरेतेषां	मनु ३.१९३
यस्तूद्धरेत्तज्ञानाद्	वृ परा ७.२००	यस्मादेषां सुरेन्द्राणां	मनु ७.५
यस्तुपायंतया कृत्यं	वृ हा ८.१६२	यस्माद्वा त्रायते दुःख	बृ.गौ. १५.४३
यस्तेजयति तेजांसि	विष्णु म ३७	यस्माद्वीजप्रभावेण	मनु १०.७२
यस्तेन सह सम्भाषे	बृ.गौ. ९.१९	यस्माद्वेदाध्ययनतो	कण्व २३५
यस्तेषां अन्यथा ब्रूयात्	वृ परा ८.८२	यस्माल्लोकहितायाद्य	वृ.गौ. १०.३९
यस्ते स्तनमित्येव प्रक्षाल्य	ब्र.या. ८.३२६	यस्मिंस्ते संस्रवाः पूर्वं	या १.२४८
यस्त्यक्तमार्गाणि कलानि	वृ परा १२.८६	यस्मिन्क्षे च आधानं	ब्र.या. ८.३००
यस्त्वधर्मेण कार्याणि	मनु ८.१७४	यास्मिन् कर्मणि यास्तु	मनु ८.२०८
यस्त्वनाक्षरितः पूर्वं	मनु ८.३५५	यस्मिन् कर्मण्यस्य	मनु ११.२३४
यस्त्वात्मदोषदुष्टत्वाद	नारद २.१७२	यस्मिन् कस्मिन् हि	वृ हा ५.२३०
यस्त्वाधायग्निशास्य	कात्या २६.१७	यस्मिन् कुम्भे प्रियं	शाण्डि ४.५०
यस्त्वावसथे जुहुयात्	बृ.गौ. १५.३८	यस्मिन्हेतु चण्डाल	व २.६.५३८

यस्मिन्तस्य च विश्रांति	वृ परा ३.२२	यस्य त्रिवार्षिकं वित्त	कण्व ४४३
यस्मिन् देशे य आचारो	या १.३४३	यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं	मनु ११.७
यस्मिन् देशे यदा काले	वाधू १७५	यस्य त्वेक गृहेमूर्खो	कात्या १५.८
यस्मिन् देशे वसेद्योगी	दक्ष ७.४७	यस्य दत्ता भवेत् कन्या	कात्या ६.१३
यस्मिन्देशेषु ये विप्रा	ब्र.या. ८.१५०	यस्य दृश्येत सप्ताहाद्	मनु ८.१०८
यस्मिन्देशे स्थितो	कण्व २१	यस्य देहे सदाश्नंति	व्यास ४.५४
यस्मिन्नग्नोपचेदनं	ब्र.या. २.१३६	यस्य न द्विगुणं दानं	पराशर ९.५४
यस्मिन्नब्दे द्वादशैकश्च	कात्या १६.८	यस्य नाश्नाति वासार्थो	व १.८.६
यस्मिन्नहनिप्रेतः स्यात्	ब्र.या. ७.८	यस्य नोपहता पुंस	नारद २.१५०
यस्मिन्नृणं सन्नयति	मनु ९.१०७	यस्य पटे पट्सूते नीलीरक्तो	अत्रिस २४४
यस्मिन्मंत्रे तु ये देवा	वृ परा २.४३	यस्य पादौ च हस्तौ	शंख ८.१५
यस्मिन्मासि भवेद्दीक्षा	वृ हा २.९५	यस्य पुत्राः सदाचाराः	प्रजा ७८
यस्मिन्यस्मिन्कृते कार्ये	मनु ८.२२८	यस्य पूर्वेषां षण्णां न	व १.१७.३८
यस्मिन् यास्मिन् विवादे	मनु ८.११७	यस्य पूर्वेषां षण्णां न	व १.१७.७२
यस्मिन् राशि गते सूर्ये	लिखित ३४	यस्य प्रदानकर्तृत्वं	कपिल ४५९
यस्मिन् स्यात्संशयो	नारद २.१२०	यस्य प्रसादे पद्या	मनु ७.११
यस्मै कस्मै तद् दिवसे	कपिल २४४	यस्य मंत्रं न जानन्ति	मनु ७.१४८
यस्मै दद्यात्पिता त्वेनां	मनु ५.१५१	यस्य मंत्राण्यवीर्याणि	वृ परा ११.७५
यस्मैदित्सा द्विजायं	वृ परा १०.२९३	यस्य मित्रप्रधानानि	मनु ३.१३९
यस्य आस्येन सदा	वृ.गौ. ३.७२	यस्य यत्र च दिग्भागे	वृ परा ११.३६
यस्य उच्चारण मात्रेण	वृ हा ३.१५८	यस्य यस्याधिकं दृष्ट्वा	शाण्डि ४.८५
यस्य कस्यचिदेकस्य	कण्व २९८	यस्य यस्य च वर्णस्य	शंख १७.१३
यस्य कस्यादि संप्रोक्त	कपिल ७७०	यस्य यस्य तु मन्त्रस्य	बृ.या. १.४१
यस्य कायगतं ब्रह्म	मनु ११.९८	यस्य यस्यभवेद्वास्थः	ब्र.या. १०.१५९
यस्य कार्यशतं साग्रं कृतं	अत्रि ३.१	यस्य यस्य यदा	वृहस्पति २७
यस्य क्षयाय पादं तु	विश्वं ४.३	यस्य यस्य यदा भूमि	वृ.गौ. ६.१३५
यस्य क्षेत्रस्य यावन्ति	वृ परा ५.१६१	यस्य यस्य हियो भाव	बृ.गौ. १४.६५
यस्य चाण्डालिसंयोगो	दा ९५	यस्य यादृग्विधो भाव	विष्णु म १९
यस्य चाण्डालिसंयोगे	लघुशंख ४६	यस्य राजज्ञस्तु विषये	मनु ७.१३४
यस्य चैव गृहे मूर्खो	व १.३.१०	यस्य वाङ्मनसी शुद्धे	मनु २.१६०
यस्य चैव गृहे मूर्खो	व्यास ४.३३	यस्य विद्वान् हि वदत	मनु ८.९६
यस्य चैवाहुतिं दद्यात्	बृ.या. १.१८	यस्य विप्रस्य तन्मादं	ब्र.या. ७.४१
यस्य च्छेदक्षतं गात्र	पराशर ३.४१	यस्य वेदश्रुतिर्निष्ठा	बृ.गौ. २१.१२
यस्यतत्सवितुपूर्वं	भार ६.३८	यस्य वै वैष्णवं नाम	वृ हा २.९७
यस्य ते सनयर्तर्चाथ जल	कपिल ३२१	यस्य शूद्रस्तु कुरुते	मनु ८.२१

यस्य संवत्सरावार्क	दा ३२	यस्सन्ध्यां कालतः प्राप्तां	विश्वा १.३०
यस्य संवत्सरादवार्कस	लिखित २३	यांस्तत्र चोरान् गृहणीयात्	नारद १८.६५
यस्य संवत्सरादवार्क	ब्र.या. ७.४	या अन्या देवताः काश्चित्	वृ परा ५.१२
यस्य संवत्सरादवार्क	वृ परा ७.३४४	या आहता एकवर्णे	या १.२८०
यस्य स्तेनः पुरे नास्ति	मनु ८.३८६	या ओषधी सर्वौषधी	ब्र.या. ८.१९३
यस्य स्मृत्या च	आश्व २३.१०८	या करोति शिरःस्नानं	लोहि ६५१
यस्याकाशमयं कौष्ठ	बृह ९.१७	याकारस्तु शिरः प्रोक्तं	वृ परा ४.९७
यस्याग्नावन्यहोमः	कात्या १८.१८	या काश्चिद्देवता श्राद्धे	वृ परा ७.२७७
यस्माद् अद्भुतानि	वृ परा ११.८९	या कौमारं भर्तारं	व १.१७.२०
यस्यान्नं तस्यते पुत्रा	अत्रिस ५.१२	यागं दानं च योगं च	व्या १९८
यस्या म्रियेत कन्याया	मनु ९.६९	या गर्तादौ विपद्येत	वृ परा ८.१४५
यस्यां दिशि बलिं दद्यात्	कात्या २८.६	या गर्भिणी संस्कियते	बौधा २.२.२९
यस्याः शिरसि ब्रह्माऽऽस्ते	वृ परा ५.११	या गर्भिणी संस्कियते	मनु ९.१७३
यस्यास्ति भीति पुरुषस्य	वृ परा ९.४२	यागस्थक्षत्रविद्धाती	या ३.२५०
यस्यास्तु न भवेद् भ्राता	मनु ३.११	यागस्थं क्षत्रियं हत्वा	शंख १७.४
यस्यास्तु न भवेद् भ्राता	लिखित ५३	याचकानां दरिद्राणामपि	कण्व ५८०
यस्यास्ते कुम्भितागजस्रं	वृ परा १२.२१९	याचकान्नं नवश्रद्धमपि	आंगिरस ६५
यस्याः स्यात्काक्षित	लोहि ५९३	या च क्लीबं पतितं	व १.१७.२१
यस्यास्येन सदाऽश्नन्ति	मनु १.९५	याचनेनापि वर्तेत दैन्यं	शाण्डि ३.२०
यस्येदमायुधं नास्ति	बृ.या. ७.१६०	याचयेत् प्रथमां भिक्षा	आश्व १०.३६
यस्यैतल्लक्षणं नास्ति	दक्ष १.१४	या च सप्रधनैव स्त्री	नारद २.१८
स्यैताः कपिला सन्ति	वृ.गौ. १०.१८	याचिता तत्र या भिक्षा	आश्व १०.३९
यस्यैतानि न कुर्वीत	दा २६	याचितो यः तु वै	वृ.गौ. ३.४८
यस्यैतानि न कुर्वीत	लघुशंख १३	याचेद्दण्डप्रमाणेन	शाता १.२४
यस्यैतानि न कुर्वीत	शंख १६	या चैषा कपिला देया	वृ.या. ९.२
यस्यैतानि सुगुप्तानि	ल हा ३.११	याच्चिद्धित्यादिपंच	भार ६.१३९
यस्यैते निखिलादिव्या	लोहि ५७४	याच्यमानस्तु यो दात्रा	नारद ३.४
यस्योचुः साक्षिणः	या २.८१	याजकान्नं नवश्राद्ध	आप ९.२२
यः स्वकर्म परित्यज्य	दक्ष २.३	याजनं योनिसम्बन्धं	औ ८.३
यः स्वधर्मपरो नित्यं	औ ७.२३	याजनं योनिसंबंधं	देवल ३४
यः स्वधर्मे स्थितो राजा	वृ परा १२.८७	याजनाध्ययने राज्ञो	पु १०
यः स्वयं नियतो भूत्वा	औ ३.९५	याजनाध्यापनाद्यौनात्	अत्रिस ३.८
यः स्वयं साधयेदर्थं	मनु ८.५०	याजनाध्यापनाद्यौनात्	व १.२७.१
यः स्वाध्यामधीतगऽब्दं	मनु २.१०७	याजनाध्यापने दाने	वृ हा ६.४३५
यः स्वामिनाऽननुज्ञातं	मनु ८.१५०	याजनाध्यापने नित्यं	मनु १०.११०

याजनाध्यापनेन प्रतिग्रह	कपिल ६५४	या नष्टा पालदोषेण	नारद १२.३१
याजनेमानं द्वितीयं	कण्व ५१४	यानस्य चैव यातुश्च	मनु ८.२९०
याज्ञवस्तुनि मुष्ट्याञ्च	कात्या १८.२४	यानानां ये च वोढारः	औसं ६
यातयामानिच्छन्दांसि	बृ.या. १.२९	या नारी द्विजः चैतानि	वृ परा १०.२२९
याति यानेन दिव्येन	वृ.गौ. ५.१०३	यानि कानि च पापानि	अ ४८
या तु कन्यां प्रकुर्यात्	मनु ८.३७०	यानि कानीह पापानि	ब्र.या. ९.१२
यातुधाना विलुम्पन्ति	औ ५.५७	यानि चैवं प्रकाराणि	मनु ८.२५१
या तु बद्धा चिकित्सार्थं	वृ परा ८.१४९	यानि तेषामशेषाणां ते	अ १४४
याते यानुर्यथामासं	व २.६.४५४	यानि दक्षिणतस्तानि	वौधा १.१.२०
याते रुद्रेति चूडायां	वृ परा ११.११२	यानि दानानिवाष्ण्य	वृ.गौ. ७.४
यात्किञ्चित्कुरुते	व १.२९.१७	यानि देवोक्त कर्माणि	भार २.९
यात्यचोरोपि चोरत्वं	नारद १.३६	यानि पंचदशाद्यानि	कात्या २४.१०
यात्रामात्रप्रसिद्ध्य	मनु ४.३	यानि यस्य पवित्राणि	लघुशंख २३
यात्रायां षष्ठमाख्यातं	औ ३.१३०	यानि यस्य पवित्राणि	व्यास ४.५३
यात्रीमात्रतः स्याद्धि यावच्चेद्	कपिल २४	यानियुक्तान्यत पुत्र	मनु ९.१४७
यात्त्वित्यनुवाकेन हृदये	भार १३.१०	यानियोग्यानिवस्तूनि	भार १३.३२
या दत्ता श्रोत्रियेभ्यो वै	वृ.गौ ९. ४७	यानि राजप्रदेयानि	मनु ७.११८
यादसामधिपो देवो	शाता ५.१३	यानि श्राद्धानि कार्याणि	वृ परा ७.३९२
या दिव्या आप पयसा	ब्र.या. ४.७८	यानुपाश्रित्य तिष्ठन्ति	मनु ९.३१६
या दिव्या इति मंत्रेण	औ ५.३६	यानेन पूर्वं बाला वा	आंपू ४४७
या दिव्या इति मंत्रेण	या १.२३१	यानैः ते यान्तिस्वर्णामैः	वृ.गौ. ५.८१
या दिव्या इति मंत्रेण	वृ परा ७.१८७	यानैः तु वाहनैः दिव्यैः	वृ.गौ. ५.८९
या दिव्या इति मंत्रेण	वृ परा ७.१८८	यान्ति ते धर्मनगरम्	वृ.गौ. ५.१०६
या दुस्त्यजा दुर्मतिभिर्या	व १.३०.११	यान्ति वैवस्वतपुरम्	वृ.गौ. ५.११९
यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री	मनु ९.२२	यान् प्रासान् क्षुधितो	शंखलि ८
यादृत्कादृगवस्थासु	ब्र.या. ११.६८	यान्यधस्तरणान्तानि	कात्या ९.८
यादृशं तूप्यते बीजं	मनु ९.३६	यान्यपैतृकयो कूर्चः	भार १८.१००
यादृशं फलमाप्नोति	मनु ९.१६१	यान्याहृतानि वस्त्राणि	भार १४.६२
यादृशं भजते हि स्त्री	मनु ९.९	यान्युक्तानि मया सम्यक्	बृ.गौ. २१.१७
यादृशं धनिभि कार्या	मनु ८.६१	याः पण्यनार्योतिसकाम	वृ परा १०.२३२
यादृशेन तु भावेन	मनु १२.८१	या पत्या वा परित्यक्ता	मनु ९.१७५
यादृशोस्य भवेदात्मा	मनु ४.२५४	या पत्युः क्रीता सत्यथान्यै	व १.१.३७
यानशय्याप्रदो भार्या	मनु ४.२३२	याः पाल्याशास्त्रतो रंडाः	कपिल ६१८
यानशय्याप्रदो भार्या	वृ.गौ. ११.२७	या पितृगृहेसंस्कृता	व १.१७.२३
यानशय्यासनान्यस्य	मनु ४.२०२	यां बलेन सहसा	व १.१.३४

या ब्राह्मणी सुरापी न	व १.२१.१३	यावतो बान्धवान्	नारद २.१८५
या भर्तुर्व्यभिचारेण	वृ परा ७.३६६	यावतो बान्धवान्	मनु ८.९७
याभिस्ताभिद्भिन्नाभि	कपिल ५९९	यावत्कर्मसमाप्तिस्तु	भार ९.२२
यामतः कर्मयाज्ञाश्च	भार ६.१६५	यावत्कलाश्चन्द्रस्य	कण्व २७
यामद्वयं शयानोहि	दक्ष २.५४	यावत् तिष्ठति सा भूमि वृ परा १०.१८७	
यामद्वयं सार्धयामद्वयं	आंपू २८७	यावत् त्रयस्ते जीवे	मनु २.२३५
यामधीत्य प्रयाणे तु	विष्णुम १४	यावत्त्रिवर्षं पतितोप्या	नारा ३.६
याममध्ये न होतव्यं	विश्वा ८.४१	यावत् पिता च माता	औ १.३५
यामार्थयामघटिका	कण्व ३०	यावत्पैतृकधर्माः स्यु	आंपू ७१२
यामिन्याः पश्चिमे	व्यास ३.२	यावत्प्रकृतिसंप्राप्तिपर्यन्तं	कपिल १२१
यामिन्यां योगकाले	शाण्डि ५.१	यावत्यां वापिता नीली	आप ६.१०
यामीस्ता यातना प्राप्य	मनु १२.२२	यावत् सकृदाददीत	बौधा २.१.९३
या मृता सूतकी नारी	दा १५०	यावत्सकृदाददीत	व १.२४.३
यां दिशं तु गतः सोमस्तां	आंड ९.१६	यावत् सप्तपदी मध्य	आश्व १५.६०
याम्यःपश्चिम सौम्येषु	वृ परा ४.३०	यावत्समाप्यतेयज्ञ	व २.६.४२२
याम्या तिथिर्भवेत्सा	आंपू ६६०	यावत् सम्पूर्णं सर्वांग	पराशर ९.२१
यां यां योनि तु जीवोयं	मनु १२.५३	यावत् सम्यग् न भाव्यन्ते	कात्या ९.३
यां रात्रिमजनिष्ठास्त्वं	नारद २.२०२	यावत्सारो भवेद्दीनस्त	वृ.गौ. ११.९
यां रात्रिमधिविन्ना स्त्री	नारद २.१८२	यावदर्थमुपादय	कात्या १७.१९
या रोगिणी स्यात्तु हिता	मनु ९.८२	यावदर्थसंभाषी स्त्रीभि	बौधा १.२.२२
यावच्च कन्यामृतवः	व १.१७.६३	यावदर्थप्रसूता गौस्तावत्	अत्रिस ३३१
यावच्छस्यं विनश्येत	या २.१६४	यावदस्थि मनुष्यस्य	लिखित ७
यावज्जीवं जपेद्यस्तु	वृ हा ३.२८०	यावदस्थि मनुष्याणां	लघु यम ९१
यावज्जीवं तु यो नित्यं	वृ हा ३.१४८	यावदस्थीनि गंगायां	दा ११
यावज्जीवं भावना	कण्व २४८	यावदस्थीनि गंगाया	लघुशंख ७
यावज्जीवाख्य संकल्प	कण्व ५५३	यावदायाति तत्पर्व	प्रजा २४
यावतः कर्मणः कर्तु	कण्व ३१०	यावदुदकं गृहणीयात्	बौधा १.४.१५
यावतः पिण्डान् खलु	आंपू ७३९	यावदुष्णं भवत्यन्नं	यम ३८
यावतः संस्पृशेदंगैः	मनु ३.१७८	यावदुष्णं भवत्यन्नं	मनु ३.२३७
यावता बहुभोक्तुस्तु	कात्या १५.२	यावदुष्णं भवत्यन्नं	व १.११.२९
यावता होमनिर्वृत्ति	कात्या २६.४	यावदुष्णं भवेदन्नं	ब्र.या. ४.९६
यावतो ग्रसतेग्रासान्	अत्रिस ३५५	यावदुष्णं भवेदन्नं	बृ.गौ. ३.२७
यावतो ग्रसते ग्रासान्	बृ.य. ३.२९	यावदेकः पृथक् द्रव्यः	यम १३
यावतो ग्रसते ग्रासान्	मनु ३.१३३	यावदेकः पृथग्भाव्यः	बृ.य. २.८
यावतो ग्रसते ग्रासान्	यम ४०	यावदेकानुदिष्टस्य गंधो	मनु ४.१११

याद्व गोपालने पुण्यमुक्तं	वृ परा ५.४६	यावानबध्यस्य बधे	मनु १.२४९
यावद्ग्रामस्यमध्ये तु	व २.६.४५६	यावानर्थ उदपाने	बृह ११.३
यावद्देवान् ऋषिंश्चैव	बृ.या. ७.४०	यावनबध्यस्य वधे	नारद १८.९८
यावद्भिर्भर्तृमालिङ्ग्य	व २.५.७०	या वा स्याद् वीरसूरा	कात्या १९.४
यावद्वत्समुंखं योनौ	ब्र.या. ११.२३	या वेदबाह्य तु यत्	बृह १२.२२
यावद् वत्सस्य पादौ	या १.२०७	या वेदवाह्या श्रुतयो	मनु १२.९५
यावद्वा कृष्णमृगो	व १.१.१२	या वेदविहिता हिंसा	मनु ५.४४
यावद्विप्रा न पूज्यन्ते	यम ४३	याश्च षडित्योषधयः	वृ हा ६.८
यावद्विभर्ति लोकान्वै	वृ.गौ. ६.९३	याश्चैतः कपिलाः प्रोक्ता	वृ.गौ. १०.३
यावन्तः पतिता विप्रा	वृ.गौ. १०.७१	या संख्या पक्वपाकस्य	दा ८२
यावन्तः प्रवरास्तस्य	आश्व ९.१७	या सत्रा मुपकाराय भवे	शाण्डि १.७२
यावन्तश्चर्तवस्तस्याः	नारद १३.२६	या सन्ध्या सा जगत	ल व्यास १.२५
यावन्ति खादन्ति फलानि वृ	परा १०.३८१	या संध्या सा तु गायत्री	बृ.या.६.१०
यावन्ति चैव रोमाणि	वृ.गौ. ६.१३९	या संध्योपास्तिविच्छंति	भार ६.१७७
यावन्ति तस्य पत्राणि	वृ.गौ. ७.४१	यासां नाददते शुल्कं	मनु ३.५४
यावन्ति तस्य विप्रस्य	भार १७.३१	यासायत्रिचरणा सान्नि	भार ६.१५३
यावन्ति तेषां रोमाणि	वृ.गौ. ९.६२	मासृम्पतितादिभ्य	व २.६.१२५
यावन्ति धेन्वा रोमाणि	वृ.गौ. १०.७	यास्तासां स्युर्दुहित	मनु ९.१९३
यावन्ति पशुरामाणि	मनु ५.३८	या स्त्रीमृतं परिष्वज्य	वृ हा ८.१९९
यावन्ति पापानि भवन्ति	वृ परा ९.४०	या स्यादनित्यच्चारेण	व १.१२.२२
यावन्ति रोमाणि भवन्ति	वृ.गौ. ९.८०	यास्याम परमां प्रीतिं	वृ.गौ. ७.५९
यावन्ति शस्यमूल्यानि	संवर्त ७५	या हृष्टमनसा नित्यं	दक्ष ४.१३
यावन्तो अंगुलिभि	वृ परा ११.६९	यी हृशानदिग्दले पश्चात्	भाग ११.४४
यावन्तोस्यां पृथिव्यां	बृ.या. ६.९	यी हृशानदिशिपीठस्य	भार ११.३४
यावन्तोस्यां पृथिव्यां	वाधू ११३	युक्त स्वाध्याये	व १.८.११
यावन्तो नियमाः प्रोक्ता	भार ५.१८	युक्तं रूपं ब्रुवन्सम्यो	नारद १.६७
यावन्त्यश्चष्टकास्तत्र	वृ परा १०.३६८	युक्तत्वेनैककण्ठयाच्चेत	लोहि २४४
यावन्त्य विन्दते जायां	व्यास २.१४	युक्तत्वेनैव गृहन्ति	लोहि ५१६
यावन्नापैत्यमेध्याक्ताद्	मनु ५.१२६	युक्तिष्वप्यसमर्थासु	नारद २.२१५
यावन्नृक्षाणि तिष्ठन्ति	बृ.गौ. १९.२२	युक्षु कुर्वन् दिनर्क्षेषु	मनु ३.२७७
यावन्मंत्रा यथोपास्तिरूप	वृ परा २.१०	युक्ष्वाहीत्यनुनवाकश्च	कण्व ५३८
यावन्मनुष्यः पृथिवीं	वृ.गौ. ९.७६	युगकोटि सहस्राणि	वृ हा ६.१५७
यावन् मात्र शरीरं हि	वृ.गौ. १.६८	युगक्रन्तिमनुश्राद्ध प्रेतं	आंपू ६९०
यावपेदोदनाद् तु चायता	व २.५.५८	युगधर्मेण वर्णनां	प्रजा ५२
या वसेन कक्षा कंटक	कपिल १६७	युगपत्तु प्रलीयन्ते	मनु १.५४

युगं युगद्वयञ्चैव	पराशर १२.४७	यूषात्वेतानिमंत्रणयान्	व २.४.७२
युगाग्निर्युगभूतानि	ब्र.या. ९.५	ये कार्थिकेभ्योर्थमेव	मनु ७.१२४
युगादिषु च कर्तव्यं	वृ परा ७.३	येन केनाप्युपायेन पत्न्या	कपिल १६५
युगाद्यानां तथा पश्चान्	लोहि ३४२	येन क्रान्तास्त्रयो लोका	विष्णुम ४१
युगानुरूपतोयस्तु	वृ परा ७.२५	ये क्षान्तदान्ताश्च	वृ.गौ. ६.१.७९
युगाब्दमासर्तुपक्ष	कण्व ३८	येक्षेत्रिणो बीजवन्त	मनु ९.४९
युगे युगे च ये धर्मास्तेषु	पराशर ११.४८	ये खाण्ड मांस मधु	वृ परा ७.३९८
युगे युगे च ये धर्मास्तत्र	पराशर १.३३	येग्नयो दिविचेत्येतत्	वृ परा २.१२८
युगे युगे च ये धर्मा	व्या १२	ये च क्षीरं प्रयच्छन्ति	वृ.गौ. ५.७३
युगे युगे च सामर्थ्यं	पराशर १.३४	ये च दानपरा सम्यग्	या ३.१८५
युगेयुगे च सामर्थ्यं	व्या ११	ये च निन्दन्ति माम्	वृ.गौ. ३.३०
युगे युगेषु यो प्रोक्ता	वृ परा १.४	ये च पापकृतो लोके ये	अत्रिसं ६
युग्मानेव स्वस्ति	कात्या ४.१०	ये च पापकृतोलोके	व्या ७
युग्मान् दैवे यथाशक्ति	या १.२२७	ये च प्रव्रजिता विप्राः	अत्रिसं २१२
युग्मारात्रिषु कृतस्नाना	ब्र.या. ८.२९०	ये च मां प्रपद्यन्ते	वृ.गौ. ३.२९
युग्मासु पुत्रा जायन्ते	मनु ३.४८	ये च मां सर्वं रक्तत्वे	वृ.गौ. १.४२
युज्यते मुनिभि सम्यक्	वृ हा ३.९६	ये च मार्गोपदेष्टार	वृ.गौ. १०.१०५
युतं तन्त्रं जपस्थाने	विश्वा ६.८	ये च मास उपवासम्	वृ.गौ. ५.११०
युद्धलब्धा महीशस्य	वृ हा ४.२२०	ये च विप्रा निरीक्षन्ते	वृ.गौ. ४.४६
युद्धे हत्वा बलात्	वृ परा ६.१०	ये च वेदश्रुतिङ्केचित्	वृ.गौ. १५.९८
युधिष्ठिरोपि धर्मात्मा	वृ.गौ. २२.४५	ये च स्युः संस्थिताः	वृ.गौ. ४.२०
युध्यन्ते भूभृतो ये च	वृ परा १२.५३	ये चात्र विवदेरन्	औ ५.२३
युवं वस्त्राणीति ऋचा	वृ परा ८.३३	ये चेह ब्राह्मणाः कार्या	वृ परा ११.२४३
युवानं पुंडरीकाक्षं	वृ हा ५.२०१	ये चेहेति च वै मंत्र	आश्व २३.५९
युवानं पुण्डरीकाक्षं	वृ हा ५.२८६	ये चैतेषु पठन्त्यज्ञा	वृ परा ६.३६८
युवानीरुक् तथा भिक्षुः	वृ परा १२.१३९	ये चैलधावाश्च	वृ परा ६.२८२
युवा भद्रः सुशीलश्च	वृ.गौ. ७.७	ये चैव पादग्राह्या	व १.१३.१४
युवा वग्रहमनुष्याणां	व २.४.८०	ये तत्र नोपसर्पन्ति सृताः	नारद १८.६३
युवा सुवासेति ऋचा	वृ हा ८.३२	ये तत्र नोपसर्पेयुर्मूल	मनु ९.२६९
युष्मत्साम्यं तत्परं	कण्व ७२५	ये ताडयन्ति कर्मेषु	वृ.गौ. १०.९४
युष्माकं श्रद्धयोग्य	आंपू ५८०	ये तां दत्त्वा तु यो भुङ्क्ते	अत्रि ५.५२
युष्माकं सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ५.२	ये तासां प्रीतिमायान्ति	वृ.गौ. १०.१९
युष्माभिर्न समाह्वते	कण्व ७२६	ये तिलान् तिलयेत एव	वृ.गौ. ४.७८
युष्मदीयान् परान् धर्मान्	वृ.गौ. १.२६	ये तु तासु सदा ध्यात्वा	वृ.गौ. २.१६
यूयमद्यप्रभृति वै समुदे	नारा ७.८	ये तु त्वां धारयिष्यन्ति	विष्णु १.६६

ये तु नित्यं प्रभाषन्ते	वृ.गौ. ५.६७	येन यांस्तु गुणेनैषां	मनु १२.३९
ये तु वै हेतुकं वाक्यं	वृ हा ५.२७	येन येन तु भावेन	मनु ४.२३४
ये तु सम्यक्स्थिता	आंउ ६.१६	येन येन तु वर्णेन	लघुयम ८५
ये तु स्नानार्थिस्तीर्थ	वृ परा २.१०२	येन येन यथाङ्गेन	नारद १८.९२
ये ते अपि सागरान्तयाम्	वृ.गौ. ४.४०	येन येन यथाङ्गेन	मनु ८.३३४
ये ते चाग्रासने स्थातुं	बृ.गौ. १४.१३	ये नरा भर्तृ पिण्डार्थं	औ १.४२
ये ते चान्ये च बहवः	वृ.गौ. १.१०	ये नरास्तेन वै यांति	वृ परा १०.१०१
ये तोषयन्ति निरतं	शाण्डि ४.५४	येन व्यावर्तते वायुः	वृ परा १२.२१३
ये त्वां दृष्ट्वा नमस्यन्ति	वृ.गौ. १०.४०	येनाङ्गेनावरो वर्णो	नारद १६.२३
ये दन्तकाष्ठादीन लब्ध्वा	औ ३.१०	येनावपदिति प्रथमं	व २.३.३१
ये दहन्ति द्विजास्तन्तु	पराशर ५.२४	येनास्मिन्कर्मणा लोके	मनु १२.३६
ये दाम्भिका ये च	वृ परा ६.२७९	येनास्य पितरो याता	मनु ४.१७८
ये देवलनपराः संत्यक्त	कपिल ३७७	ये नित्या भक्तिकाः	बौधा २.३.२०
ये देवलोकं पितृलोकमापुः	वृ परा ७.२६६	ये नियुक्तास्तु कार्येषु	मनु ९.२३१
ये देवास इमं मंत्र	आश्व २३.५७	ये नृशंसा दुरात्मान	विष्णु म १०१
ये द्विजानामपसदा ये	मनु १०.४६	येनेकरुपाश्चाधस्ताद्	या ३.१६९
ये धर्ममेव प्रथमञ्चरन्ति	वृ.गौ. १४.३३	येनेन्द्राय सुमन्त्रेण	ब्र.या. ८.१२
ये धर्मशास्त्रे विहिताश्च	वृ परा ६.३७९	ये नैवविद्या न तपो न	वृ.गौ. १४.३४
ये धीतवेदाः क्रियया	वृ परा ६.२१०	ये पठन्ति द्विजा वेदं	पराशर ८.२८
येन केन चिदङ्गेन	मनु ८.२७९	ये पठन्ति द्विजा वेदं	वाधू १७८
येन केनचिदज्ञाता गर्भ	लोहि १७२	ये पाकयज्ञाश्चत्वारो	बृह १०.१३
येन केनचिदुच्छिष्टो	आप ४.१३	ये पाकयज्ञाश्चत्वारो	मनु २.८६
येन केन प्रकारेण	लोहि ३८७	ये पाकयज्ञाश्चत्वारो	व १.२६.११
येन केनापि वात्युक्तं	आंपू ६२९	ये पाचयन्ति धरणीं	शाण्डि ४.८७
येन केनाप्युपायेन	आंपू ५५३	यो प्रतिग्रहिणः पूर्व साक्षात्	कपिल ४७७
येन केनाप्युपायेन	कपिल ७४५	ये प्रत्यवसिता विप्रा	आप ९.७
येन गच्छन्ति विद्वांसः	बृह १२.४३	ये प्रयच्छन्ति ते यान्ति	वृ.गौ. ५.९०
येन चैवां स्वयं उत्पादितं	व १.१७.४५	ये प्रयच्छन्ति विप्रेभ्यः	वृ.गौ. ५.९७
येन जानन्ति ते यांति	वृ परा १२.३३६	ये प्रयच्छन्ति विप्रेभ्यः	वृ.गौ. ७.७९
येन दानस्य दत्तस्य	वृ.गौ. ७.२९	ये ब्रह्मस्वं हरन्ति इह	वृ.गौ. ५.४९
येन देवादि मन्त्रेण	व २.२.२३	ये भुञ्जते समीपस्था	शाण्डि ४.१५०
येना देवा पवित्रेति	वृ.या. ७.१४	ये भूता विघ्नकर्तारस्ते	विश्वा ६.५
येन भूरिश्चान्छद्यात्	ब्र.या. ८.३५३	येभ्यो वापि पिता	बृ.या. ७.८०
येम यत् क्रियते कर्म	बृ.या. १.२४	ये मे कुले लुप्तपिंडा	वृ परा २.२११
येन यदृषिणां दृष्टं	वृ परा २.४४	ये यच्छन्ति दयादानं	वृ परा १०.२४८

ये यत्र विहिताः श्राद्धे	ब्र.या. ६.१५	ये सोम शास्त्रास्त्र	वृ परा ६.२८०
येयमूढा धर्महेतोर्धर्म	आंपू ४५१	ये स्पृशन्तस्तु खान्यदग्नि	वृ परा ७.१७३
येयंपूर्वं बलि प्रोक्ता	कण्व ३७८	ये स्पेनपतितक्लीवा	मनु ३.१५०
ये युक्तयोगास्तपसि	वृ.गौ. १४.३२	ये स्वाध्यायमधीयीरन्	वृ परा ६.३७२
ये ये जन्मस्वनेकेषु	वृ परा १२.३४५	ये हरन्ति इह वस्त्राणि	वृ.गौ. ५.४६
ये राष्ट्राधिकृता स्तेषां	या १.३३८	यैः कर्मभिः प्रचरितैः	मनु १०.१००
ये वक्त्रतिनो विप्रा	मनु ४.१९७	यैः कृतः सर्वभक्षोग्नि	मनु ९.३१४
ये वर्णाश्रमधर्मस्थास्ते	लहारी १.१	यैः यैः नृपैः कृतं पूर्वं	वृ परा ११.२९९
येवासुदेव नार्चन्ति	व २.१.१३	यैभुक्तं तत्र पक्वान्नं	आप ३.३
ये वृत्ताः प्रथमदिवसे	आंपू ६९६	यै रूपायैरर्थं स्वं	मनु ८.४८
ये व्यपेताः स्वधर्मैभ्य	अत्रिस १७	यैश्चकैश्चिददृष्टमात्रै	पू १०५५
ये शान्तदान्ताः श्रुति	व १.६.२१	यो अर्थिने तृण काष्ठानि	वृ परा १०.२३०
ये शूद्रादधिगम्यार्थ	मनु ११.४२	योऽकामां दूषयेत्कन्यां	मनु ८.३६४
येषान्तटाकानि समाः	वृ.गौ. ११.३६	योकारौ द्वौ धूम्रनीलौ	वृ परा ४.९२
येषान्त पचते माताये	वृ.या. ४.१०७	योक्त्रदामकडोरैश्च	पराशर ९.७
येषामेव पिता दद्यात्ते	आंपू ७२२	योक्त्रं विमुच्य तां	आंपू ८०
येषां ज्येष्ठः कनिष्ठो	मनु ९.२११	योक्त्रेच गृहदाह	वृ हा ६.३३०
येषां च न कृताः पित्रा	नारद १४.३३	योक्त्रेषु पादहीन	पराशर ९.५
येषां तु यादृशं कर्म	मनु १.४२	योगक्षेमार्थवृद्धिञ्च	वृ हा ४.१४२
येषां द्विजानां गायत्री	वृ.या. ८.९८	योगकर्म विधानम्	विष्णु ६३
येषां द्विजानां सावित्री	मनु ११.१९२	योगधर्मैकनिरतो ब्रह्मा	शाण्डि ४.२१६
येषां द्विधा क्रिया लोके	नारद १४.४०	योगं कुर्यात्समाधाय	शाण्डि ४.२००
येषां न माता न पिता	वृ.या. ४.१२०	योगंतदिष्टयने स्वर्गास	ब्र.या. ११.११
येषां नोद्वहसंस्कारा	वृ परा ७.७९	योगशास्त्रं प्रवक्ष्यामि	ल हा ७.२
येषां वाप्यःश्चतुः	वृ.गौ. ५.८०	योगशास्त्रेषु यत्प्रोक्तं	वृ परा १२.३०५
येषां व्रतानामन्तेषु	कात्या २७.१५	योगस्तपो दमो दानं	व १.६.२०
येषु केषु च पापेषु	वृ हा ४.२०१	योगस्थैर्लोचनैर्युक्त	अत्रिस ३५२
येषु देशेषु यच्छक्यं	भार ५.४२	योगाचार्येण संचिन्त्य	वृ.या. २.१५८
येषु येषु हि भावेषु	वृ.गौ. ८.११३	योगात्सम्प्राप्यते ज्ञानं	अत्रि १.१२
येषु श्राद्धेषु भुञ्जीत	वृ.या. ७.५१	योगात् संप्राप्यते	व १.२५.८
ये सपिण्डीकृताः प्रेता	औ ७.१८	योगाधमनविक्रीतं	मनु ८.१६५
ये समाना इति द्वाभ्यां	या १.२५४	योगाभ्यासबलेनैव	ल हा ७.३
ये समाना इति द्वाभ्यां	वृ परा ७.१३८	योगाभ्यास रतो नित्यं	वृ परा १२.१०६
ये सिध्यन्ति च साङ्ख्येन	वृ.गौ. ८.१०३	योगामपालयत् दुह्यादति	वृ परा ८.१४७
ये सोमपाननिरता	औ ४.३	योगां पयस्विनीं	वृ परा ५.४३

योगावासः नमस्तुभ्यं	विष्णु म ४२	यो ददाति द्विजश्रेष्ठं	वृ परा १०.२३५
योगाश्रम परिश्रान्तं	दक्ष ७.४६	यो ददाति वलीवर्द्ध युक्तेन	संवर्त ७९
योगिनामपि दिव्यानो	कण्व १८९	यो ददाति स्वर्णरौप्यैः	संवर्त ७७
योगिनामप्यशक्यं	कण्व २५१	यो दद्यादवलक्लेश	शंखलि ५
योगिनांवर मत्स्वामिन्	नारा ४.१	यो दद्यादिममध्यायं	भार ६.१७४
योगिनो विविधै रूपैः	वृ परा ४.२००	यो दद्याद् दुर्लभानां च	वृ परा १०.२२२
योगी व्रती पुत्रवान् स्याद्	कपिल ६६९	यो दद्याद् भक्तितो	वृ परा १०.२१६
योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं	या १.१	यो दद्याद् विधिवत्	वृ परा १०.१६९
योगीस्थ इदं श्रुत्वा	ब्र.या. ८.१९०	यो दद्याद्वेषवान् भोगी	वृ परा १०.२२०
योगीगृह्यश्रममास्थाय	दक्ष १.९	यो दद्यान् मधुरां वाचं	वृ परा १०.२४६
योऽगृहीत्वा विवाहाग्निं	अत्रस २५३	यो दहेदग्निहोत्रेण	कात्या २०.११
यो गृह्णति कुरुक्षेत्रे	वृ परा ६.२३०	यो दातुं न विजानाति	देवल ५७
योगेन ध्यानमार्गेणं	भार १३.३६	योद्यादुच्छिष्टमाज्यं	वृ परा ८.१८०
यो गोभक्तिकरा नित्यं	वृ परा ५.३४	यो द्रव्य देवता त्याग	या ३.१२१
योग्निदेववीतये कुचित्	व २.४.१०२	योधीतेहन्यमाने	औ ३.५३
योग्नीपविध्येत्	व १.२१.३०	योधीतेहन्यह्येतां	मनु २.८२
योग्नीपविध्येद् गुरु	व १.१.२३	योधीत्य विधिवद्	औ ३.८२
योग्यानध्यापयोच्छिष्यान	ल हा १.२१	यो धर्मः कर्म यच्चैवां	नारद ११.३
योग्यान्मन्त्रानुच्चरेच्च	कण्व ६११	यो न चेत्यभिवादस्य	औ १.२१
यो ग्रामदेश संघाना	मनु ८.२१९	यो न तिष्ठति नो याति	वृ परा १२.२९४
योजनं तु हलस्याथ	वृ परा ५.७७	योन दद्यद् द्विजातिभ्यो	पराशर २.१३
यो जपेत् पावनीं देवीम्	वृ.गौ. ४.१९	योनधीत्य द्विजो	बृह १२.२४
यो जपेद्वज्रसंज्ञात्वा	भार ६.१५१	योनधीत्य द्विजो	मनु २.१६८
योजयेच्छ्रद्धदानेन	ब्र.या. ४.३८	योनधीत्य द्विजो	व १.३.३
योजयेत्तु भवेदेव	कण्व ७६६	योनधीत्य द्विजो	व्या १५
योजयेत्तेन विधिना	लोहि ३४	यो नरः प्रीणमत्यनैस्तस्य	वृ.गौ. १२.३६
येजयेत्समिताद्यैस्तु	लोहि ३५	योनरः स्नातितत्तीर्थं	अत्रिस ५.७४
यो ज्येष्ठो ज्येष्ठवृत्ति	मनु ९.११०	योनर्चिषि जुहोत्यग्नौ	कात्या ९.१२
यो ज्येष्ठो विनिकुर्वति	मनु ९.२१३	योन वेत्यभिवादस्य	मनु २.१२६
यो ज्ञात्वा तु विधिं	वृ परा ६.१२४	योनः सपत्नेति ऋचा	वृ हा ८.६९
योतिथिं पूजयेद्	वृ परा ४.२१०	यो न हिंस्यादहं	वृहस्पति ३५
यो दण्ड्यान् दण्डयेद्	या १.३५९	यो नाश्नाति द्विजो	औ ५.६६
योदत्तादायिनो हस्ता	मनु ८.३४०	योनहिताग्नि शतगुर	मनु ११.१४
यो दत्त्वा सर्वभूतेभ्यः	मनु ६.३९	योनिक्षेपं नार्पयति	मनु ८.१९१
यो ददात्यर्थितोविप्रो	संवर्त ९५	योनिक्षेपं याच्यमानो	मनु ८.१८१

योनिवक्त्रद्वयोपेतं	वृ परा ११.२७४	यो यदैषां गुणो देहे	मनु १२.२५
यो निवेदयते मोहादेवाय	आंपू २४२	यो यस्य धर्म्यो वर्णस्य	मनु ३.२२
योनिषु च गुर्वी सखी	व १.२०.१८	यो यस्य प्रतिभूस्तिष्ठेद्	मनु ८.१५८
योनिसंकरसंकीर्णा	व्यास ४.७०	योय स्यभित्तो धर्मः	ल हा ७.१७
योनौ श्रियः श्री परमस्तेन	वृ हा ३.१०७	यो यस्यहरते भूमिं	वृ परा ८.२६८
योनं वादधुषिकस्याद्	वृ परा ६.२८७	यो यस्यैषां विवाहानां	मनु ३.३६
योन्यतः कुरुते यत्नं	व्यास १.२९	यो यस्यविहितो धर्म	व्या ३०
योन्यत्र कुरुते यत्नं	औ ३.८०	यो यावत् कुरुते	या २.१९९
योन्यथा संतमात्मान्	मनु ४.२५५	यो यावन्निहनुवीतार्थ	मनु ८.५९
योपचस्य कदर्यस्य	वृ परा ६.१८६	यो येन पतितेनैव	लिखित ७४
योप्यन्तिके दवीयांश्च	वृ परा १२.२९५	यो येन पतितेनैषां	मनु ११.१८२
यो बन्धनवधक्लेशान्	मनु ५.४६	यो येन सम्बसेत्तेषां	वृ हा ६.२११
यो ब्रह्मचर्यं व्रतचारिभेदो	वृ परा १२.१७४	यो यो वर्णोपहीयेत यो	नारद १८.६
यो ब्रह्मचारी विधिना	ल हा ३.१५	योरक्षन्बलिमादत्ते	मनु ८.३०७
यो ब्रह्मचारी स्त्रियमुपेयात्	बौधा २.१.३५	यो रथं हयसंयुक्तं	वृ परा १०.१५१
यो ब्रह्मघाती गुरुदारगामी	वृ परा ११.२९५	योरयोत्यनुवाकेन	वृ हा ५.३८२
ये ब्रह्ममेधानध्यायी	कण्व ३९१	यो राज्ञः प्रतिगृह्णाति	मनु ४.८७
योभार्यः सम्बलं चेतः	प्रजा ७५	यो राज्ञः प्रतिगृह्णैव	वाधू १६३
योभियुक्तः परेतः	या २.२९	यो रुप्यं उत्तमं दद्याद्	वृ परा १०.२१४
यो भुङ्क्ते अन्यथा	वृ.गौ. १६.४१	योचितं प्रतिगृह्णाति	मनु ४.२३५
यो भुङ्क्तेनुपनीतेन यो	वृ.गौ. १६.४०	योर्थं श्रावयितव्य स्यात्	नारद २.१४१
यो भुङ्क्ते हि च शूद्रान्	अंगिरस ४८	योलक्षकोटिविदधाति	वृ परा ११.२९४
यो भुञ्जानोशुचिर्वापि	लघुयम २	यो लक्षहोमं यदि	वृ परा ११.३४६
यो भ्रातरं पितृसमं	औ १.४०	यो लोभादधमो जात्या	मनु १०.९६
यो मन्येताजितोस्मीति	कपिल ८२३	योलोभादसवर्णानामाद्य	प्रजा ९१
यो मन्येताजितोस्मीति	या २.३०९	योवमन्येत् ते तूभे	बृह १२.२९
यो मामदत्त्वा पितृदेवताभ्यो	बौधा २.३.२२	योवमन्येत् ते मूले	मनु २.११
यो मूर्खो विशादाचार	६.२२३	यो वर्जयेदनध्यायान्	वृ परा ६.३६७
यो मोहादथवालस्या	वाधू २२२	यो वः शिवतमोरसस्तस्मा	ब्र.या.८.१११
यो यजेत तैर्वृथा पूजा	भार १४.२६	यो वा प्रथममुपगतः	बौधा २.३.१६
यो यज्ञे वर्तमाने तु	वृ परा ६.५	यो वित्तं प्रतिगृह्णीते	वृ.गौ. ११.२९
यो यत्तु वैष्णवं लिंग	वृ हा ५.२८	यो विप्रो धनलोभेन	नारा १.३९
यो यत्र यत्र वा रेतः	वृ. गौ. ४.११	यो विष्णुशेषमात्मानमन्यशेष	व २.१.१०
यो यत्रावाहिता श्राद्धे	ब्र.या. ४.७३	यो वैश्यः स्याद् बहु	मनु ११.१२
यो यथा निक्षिपेद्धस्ते	मनु ८.१८०	यो वै समाचरेद् विप्रः	पराशर ४.७

यो वै स्तेनः सुरापो
योषा गर्भं विधत्ते या
योषितामुक्तं शौचार्थं
योषितो नित्यकर्मोक्तं
योषित्सर्वा जलौकेव
योषेन संवसत्येषां
योसत्प्रतिग्रहग्राही
यो सा उपांशुरित्युक्तं
योसाधुम्योर्थमादाय
योसावतीन्द्रिग्राह्य
योसावादित्ये पुरुषः
योसौ विस्तरशः प्रोक्तः
योस्मान् द्वेष्टीत्युदाहृत्य
योस्यात्मनः कारयिता
योहंमन्यो द्विजाग्रयांस्तु
योहिंसकानि भूतानि
योहि तद् विधिना
यो हितः सर्वसत्त्वेषु
योहि दद्यादनङ्गवाहौ द्वौ
यो हि यां देवतामिच्छे
योहि वासयति दिवां
योहि विष्णु परित्यज्य
योहनाय सर्वं विदधाति
यो ह्यग्निं सद्विजो
यो ह्यविद्वान् समश्नाति
यो ह्यस्य धर्माचाचष्टे

र

रकारं ऐश्वर्यं वीजं
रक्तः कश्यपजो भानुः
रक्तचन्दनलिप्तांगं
रक्तचन्दन हरिद्रा
रक्तं निः सार्यं विप्रस्य
रक्तपद्मरुणा देवी
रक्तपादांस्तथा जग्ध्वा
रक्त पुष्पाणि मृजुदर्भा

व १.२७.१९
देवल ४८
भार ३.१८
व्यास २.३७
दक्ष ४.९
या ३.२१०
वृ परा ७.१०
भार ६.२२
मनु ११.१९
मनु १.७
बृह ९.६०
बृ.या. ७.१६८
वाधू ७९
मनु १२.१२
वृ परा ७.६६
मनु ५.४५
औ ५.८४
वृ परा ४.१५२
वृ.गौ. ७.१०
आंउ १२.१५
औ १.३३
वृ हा ५.१९
वृ परा १२.९५
लिखित ३०
बृह ९.१४९
मनु ४.८१

रक्तपुष्पैस्तथादुर्गा
रक्तवस्त्रप्रवालादि
रक्तवस्त्रस्य विक्रेता
रक्ता भवति गायत्री
रक्तारविन्दसदृश
रक्तेन्दीवरवणीभं
रक्तैश्च करवीरेश्च
रक्तोदकं तत्रवहेत्स
रक्तो वा यदि वा शुक्लः
रक्षणादार्यवृत्तानां
रक्षणधर्मेण भूतानि
रक्षयेद्धारिणात्मानं
रक्षाधिकारीदीशत्वाद्
रक्षां च भस्मना
रक्षार्थं दक्षिणे हस्ते
रक्षिता जीवलोकस्य
रक्षेत कन्यां पिता
रक्षेदेवं स्वदेहादि
रक्षोघ्नानि पवित्राणि
रक्षोनिरसनादन्यदचनं
रक्षोभ्यो देवताभ्यश्च
रक्ष्यमाणोपि यत्राधि
रग्नि भावं जलं त्यक्त्वा
रंगवल्त्यादिभि
रं गुह्ये हं तु जान्वोश्च
रङ्गोपजीवने दत्तम्
रजकव्याधशैलूष
रजकव्याध शैलूष
रजकव्याधशैलूष
रजकश्चर्मकारश्च
रजकश्चर्मकारश्च
रजकश्चर्मकारश्च
रजकाक्तै श्वश्रुनकेरम
रजकादि संस्पृशौ
रजकाद्यन्त्यजैः स्पृष्ट

ब्र.या. १०.४७
शाता ४.२७
बृ.य. ३.५२
बृ.या. ६.१८
वृ हा ३.२१
वृ परा १२.२३२
वृ हा ५.५२०
अ १२३
वृ परा ६.१९८
मनु ९.२५३
मनु ८.३०६
कात्या ११.४
नारद १८.२१
वृ परा ५.१७९
आश्व १५.३१
वृ हा ३.६८
या १.८५
पराशर ७.४९
आंपू ५४०
कण्व २४५
ब्र.या. ८.८७
नारद २.१०८
व २.६.१४
वृ हा ८.८९
वृ हा ३.३९१
वृ.गौ. ३.२२
आप ९.३१
आप १०.१२
या ३.२६०
आंगिरस ३
यम ५४
लघुयम ३३
व २.६.५१५
वृ परा ८.२३६
वृ परा ८.२६०

ब्र.या. २.११३

रजकाद्यवुपानेन	वृ परा ८.२१७	रजस्वला यदा स्पृष्टा	लिखित ८७
रजकी चर्मकारी च	पराशर ६.४१	रजस्वला यदि स्नाता	दा १४८
रजकीं बुरुड़ी व्याधां	वृ हा ६.३०४	रजस्वलां स्पृशेद्यस्तु	बृ.य. ३.५०
रजक्याद्याभिगम्यत्वे	वृ परा ८.३२२	रजस्वलायां प्रेतायां	दा १४९
रजतादि समप्रख्यं	वृ हा ३.३३४	रजस्वलायां भार्यायां	व्या २४५
रजतां शुध्यते नारी	अत्रि ५.३८	रजस्वलायां भार्यायां	व्या ३५६
रजः पश्यति या नारी	बृ.य. ३.५७	रजस्वलायाः संस्पर्श	आप ७.१४
रजसः परतस्सा तु यातुकी	विश्वा ८.६०	रजस्वला सूतिका वा	वृ हा ६.३६२
रजसा तमसा चैव	या ३.१४०	रजस्वले यदा नार्यावन्यो	लघुयम १३
रजसाभिप्लुतां नारीं	मनु ४.४१	रजोगुणपरीतात्मा जायते	नारा ५.१८
रजसा शुध्यते नारी	पराशर ७.४	रजोदर्शनतो याः स्युः	व्यास २.४२
रजसा शुध्यते नारी	आंगिरस ४२	रजोनीहारधूमाभ्र	कात्या ९.४
रजसा शुध्यते नारी	व १.३.५४	रजोवृष्टौ च यानादौ	वृ परा ६.३६६
रजसोप्यश्नुते घोरं	लोहि ४३८	रज्जुग्रंथिमधः कृत्वा	आश्व २.२५
रजस्तमो मोहजातान्	वाधू ११९	रज्ज्वेधं सकृदावेष्ट्य	आश्व २.२४
रजस्वलाञ्च योगच्छेद्	संवर्त १६३	रणार्जितेन कित्तेन	वृ परा १२.५६
रजस्वला तत्पतिश्च कन्यको कपिल	७६३	रंडाकृतं भूमिदानं यत्त	कपिल ६४२
रजस्वला तदा तस्यै	आंपू ८६	रंडानां सततं धर्म	कपिल ५७०
रजस्वला तु या नारी	वृ हा ६.३६७	रण्डापाकं महापापं	विश्वा ८.६४
रजस्वला तु संस्पृष्टा	आप ७.११	रण्डापाकं विषं क्रूरं	विश्वा ८.६५
रजस्वला तु संस्पृष्टा	लघुयम १२	रण्डापाकेन यो मोहदेव	कपिल ५३७
रजस्वला तु संस्पृष्टा	लघुशंख ४९	रंडाभिस्तादृशीभिस्तु कृतं	कपिल ६०४
रजस्वला तु संस्पृष्टा	वृ परा ८.२३०	रण्डां तथाविधां दृष्ट्वा	लोहि ६७६
रजस्वला तु सा प्रोक्ता	अत्रि ५.६८	रंडा यदि स्नुषा तां वै	कपिल ६१२
रजस्वालादि संस्पर्श	वृ परा ८.३१७	रंडाबहुविधाज्ञेयाः	कपिल ५२५
रजस्वला नवैताः स्युः	आंपू ९३२	रतश्चैव स्वयं तुष्टः	दक्ष ७.९
रजस्वलानाथभुक्तौ बुद्धि	आं पू ९४७	रतिर्मैधा स्वधा स्वाहा	वृ.गौ. १०.५३
रजस्वलामुखास्वादः	वृ हा ६.१७४	रत्नगर्भाधरा प्रोक्ता	ब्र.या. ११.३६
रजस्वलां त्यजेत्	आप ७.७	रत्नानां चैव मुख्यानां	नारद १८.८७
रजस्वलां सूतिकांच	वृ हा ६.३४५	रत्नौघमपि वा स्तोयं	शाण्डि ४.५३
रजस्वलां सूतिकां वै	व २.६.४८९	रथकार अम्बष्ठं	बौधा १.९.१
रजस्वला यदा स्पृष्टा	आंगिरस ३९	रथचक्रेषु वेदांश्च	वृ हा ६.२८
रजस्वला यदा स्पृष्टा	अत्रिस २७६	रथदानं वस्त्रदानं	कपिल ४३०
रजस्वला यदा स्पृष्टा	अत्रिस २७७	रथन्तरं वृहज्ज्येष्ठ	वृ परा ७.१८
रजस्वला यदा स्पृष्टा	देवल ४०	रथं हरेत चाध्वर्यु	मनु ८.२०९

रथाश्वगजधान्यानां	बौधा २.३.६१	रसा रसैर्निमातव्या न	मनु १०.९४
रथाश्व हस्तिनं छत्र	मनु ७.९६	रसा रसैर्महतो	व १.२.४२
रथे विम्बे ध्वजे भग्ने	वृ हा ६.४१२	रसा रसैः समाग्राह्या	वृ परा ६.२५५
रथ्याकर्दमतोयानि	वृ परा ८.३३९	रसा स्नेहा स्तथा गन्धा	बृ.गौ. १५.५१
रथ्याकर्दमतोयेन	शंख १६.१८	रहस्यकरणेष्वेवं मास	लघुयम ३२
रथ्याकर्दमतोयानि	यम ५२	रहस्य प्रायश्चित विधान	विष्णु ५५
रथ्याकर्दमतोयानि	या १.१९७	रहस्यमिदमर्त्यथं	वृ.गौ. २०.२६
रथ्याकर्दमतोयानि	व २.६.४९९	रहस्यमेकं वक्ष्यामि	कपिल ९१९
रथ्याघोषेण संतुष्टो	बृह ११.८	रहस्यमेतद्विज्ञानं भक्तानां	शाण्डि १.८
रथ्यां वाक्रम्यवाचामे	शंख १६.२०	रहस्यं सर्वं शास्त्रेषु	वृ परा ६.१२८
रमते तत्परेणैव स्वाधीना	शाण्डि ५.२९	रहितः सर्वं धर्मम्यश्च्युतो	वृ हा २.४३
रम्ये निवेश्य देवेशं	व २.६.२७२	राक्षसाः च पिशाचाः च	वृ.गौ. ३.२८
रम्यं पराव्यं आजीव्यं	या १.३२१	राक्षसा दानवा दैत्या	वृ.गौ. ८.४१
र (म्य) वस्तुषु निस्सनेहा	शाण्डि ३.१४०	राक्षसाश्च पिशाचाश्च	ल हा ४.४६
रवातमात्र प्रकर्तव्यं	वृ परा १०.३७०	राक्षसीमुद्रिकादत्त ततोयं	विश्वा ५.३५
रविचक्रार्धमात्रोऽपि	ब्र.या. ९.१६	राक्षसो युद्धहरणात्	व २.४.१५
रविमण्डलमध्यस्थे	वृ परा ४.५४	राक्षसो युद्धहरणात्	शंख ४.६
रविरश्मि समाकारा	भार ७.३४	रागादज्ञानतो वापि	नारद १.५८
रविशुक्रत्रयोदश्यां	व्या १३३	रागाल्लोभाद् भयाद्वापि	या २.४
रविसंक्रांतिवारेषु	वृ परा २.११२	राजकर्मणि राज्ञा च	व २.६.४६०
रविसोमग्रहे दद्यात्	वृ परा १०.१५५	राजकर्मसु युक्तानां	मनु ९.१२५
र वे महाफलं दानं	वृ परा १०.३५६	राजकस्नातकयो	व १.१३.२६
रवेरप्यंशवो ह्यस्मात्	वृ परा २.७८	राजकार्ये नियुक्तस्य	व्या २६६
रव्यापनेनानुतापेन	मनु ११.२२८	राजग्राहगृहीतो वा	नारद १२.३२
रव्यापयन्नेव तत्पापं	मंवर्त ११२	राजतं वत्सकं कुर्याद्	वृ परा १०.१०९
रश्मिरग्री रजच्छाया	या १.१९३	राजतत्तुल्यतद्भूत्य	कपिल ४५७
रसत्वमपि शुद्धत्वंभीवत्वं	कपिल ९३	राजते चन्दने लिख्य	ब्र.या. १०.६१
रसपूर्णन्तु यद् भाण्डं	पराशर ६.४४	राजते चन्दने लिख्य	ब्र.या. १०.६२
रसभेदकरा ये च ये	वृ.गौ. १.८	राजतैर्भाजनैरेषामथो	मनु ३.२०२
रसयुक्तं हविष्यं स्याद्	विश्वा ८.७७	राजतो धननान्विच्छेत्	मनु ४.३३
रसवत्फलवद्यत्नात्	आंपू २४७	राजतो नवमस्तद्दृशम्	अ ८६
रसस्य नव विज्ञेया	या ३.१०५	राजर्त्तिकस्नातकगुरून्	मनु ३.११९
रसानान्तु परित्याग	वृ हा ६.३९३	राजदैवोपघातेन पण्ये	या २.२५९
रसानामथवीजाना	वृ.गौ. १०.१०६	राजधर्मं वर्णनम्	विष्णु ३
रसानि यानि मेध्यानि	बृह ९.७४	राजधर्मवर्णनम्	विष्णु ४

राजधर्म वर्णनम्	विष्णु ३	राजा च श्रोत्रियश्चैव	मनु ३.१.२०
राजधर्म वर्णनम्	विष्णु ४	राजा चेत्तादृशीश्रुत्वा	लोहि ६७८
राजधर्मविधाने दण्ड वर्णनम्	विष्णु ५	राजा तु धर्मेणानुशासयत्	व १.१.४३
राजधर्मन्निवक्ष्यामि	मनु ७.१	राजा तु धार्मिकान् सम्यान्	नारद १.६८
राजधर्मोयमित्येवं	वृ हा ४.२६२	राजा त्ववहित सर्वान्	नारद १८.५
राजनि प्रहरेद् यस्तु	नारद १६.२८	राजा दहति दंडेन	वृहस्पति ५२
राजनि स्थाप्यते योर्धः	या २.२५४	राजाद्यैर्दशभिर्मासै	आंगिरस ६८
राजन्नयनयोर्मध्यं	बृ.गौ. १९.४	राजानः क्षत्रियाश्चैव	मनु १२.४६
राजन्यग्रहभुक्तौ तु ब्राह्मणस्य	कपिल ३३८	राजानं च विशं शूद्र	वृ हा ६.३५७
राजन्यवेशयोश्चापि	लोहि १८	राजानं वा तथा वैश्यं	व २.६.४५९
राजन्यवैश्यावप्येवं	औ ६.३६	राजानाश्चेन्नाभविष्यन्	नारद १८.१६
राजन्यवैश्यो तु मद्य	वृ हा ६.२७३	राजा न स्तेन मर्हति	औ ८.१८
राजन्यश्चेद् ब्राह्मणी	व १.२१.५	राजानाम चरत्येष	नारद १८.२०
राजान्येन ब्राह्मण्यामुत्पन्न	व १.१८.३	राजानमतभावेन	व १.२.५३
राजपत्नी महाभागा	ब्र. प्र. ८.२९६	राजानेनकृतस्मृतः	मनु १८.१२३
राजपत्न्यो ग्रासाच्छादनं	व १.१९.२१	राजानो राजभृत्याश्च	औ ६.५६
राजपुत्रो न राज्याप्त्या	वृ परा ११.७	राजन्तेवास्त्यज्येभ्यः	या १.१.३०
राजप्रतिग्रहात्सर्व	ब्रह्मचर्य ४.५८	राजानं तेज आदत्ते	आप ९.२७
राजप्रतिग्रहो मध्वा	अ ७४	राजानं तेज आदत्ते	मनु ४.२१८
राजभि कृत (धृत) दंडास्तु	मनु ८.३१८	राजानं तेज आदत्ते	वृ.गौ. ११.२१
राजभिर्धृतदण्डास्तु	नारद १८.१०६	राजानं हरते तेजः	अत्रिस ३०१
राजभिर्धृतदण्डास्तु	व १.१९.३०	राजानं हरते तेजः	आंगिरस ७२
राजमन्त्री सदः कार्याणि	व १.१६.२	राजा पिता च माता राजा	शंखलि २६
राजमहिष्याः पितृव्य	व १.१९.२०	राजा प्रभुर्भूमिदाने तत्सम्	कपिल ६४३
राजमाषान् सूरान्श्च	शंख १४.२१	राजा भवत्यनेनाश्च	बौधा १.१०.३१
राजराजार्चितो विप्रः	वृ.गौ. १७.१०	राजा भवत्यनेनास्तु	मनु ८.१९
राजर्त्विग्दीक्षितानाञ्च	दक्ष ६.५	राजार्थे ब्राह्मणार्थे	व १.२०.३६
राजवार्त्तादि तेषान्तु	दक्ष ९.३७	राजालब्ध्वा निधिं	या २.३५
राजसं तामसं चैव तज्ज्ञेयं	शाण्डि १.६४	राजा वा राजपुत्रो वा	पराशर ९.५३
राजसूयफलं प्राप्य	वृ.गौ. ९.७३	राजा व राजपुत्रो वा	लघुयम ५६
राजहोमी सहस्रं	वृ ३.१.४२	राजा वा राजपुत्रो वा	लघुशंख ५८
राजा-ऋत्विगादि	विष्णु ३२	राजा वा राजमान्यो	दा १०९
राजा कृत्वा पुरे स्थानं	या २.१८८	राजाश्रयेण यो मर्त्यो	वाधू १७३
राजा च जांगलं पशाव्यं	विष्णु ३	राजा सपुरुषः सभ्याः	मनु १.१५
राजा च प्रजाभ्य सुकृत	विष्णु ३	राजा स्तेनेन गन्तव्यो	नारद १८.१०४

राजा स्तेनेन गन्तव्यो	मनु ८.३१४	राज्ञो हि रक्षाधिकृतः	मनु ७.१२३
राजीवान् सिंहं तुण्डाश्च	शंख १७.२५	राणाधनी कौषमी च	ब्र.या. १.२६
राज्यभ्रष्टं च राजानं	वृ परा १०.२९९	रात्रयः कथितास्तस्य	आंपू १९
राज्यस्थः क्षत्रियश्चापि	ल हा २.२	रात्रावर्द्धं भवेच्छौच	व २.३.९७
राज्यस्य षड्गुणान्	वृ परा १२.२९	रात्रावहनि वा दानं	आश्व १५.५९
राज्ञ एव तु दासः स्यात्	नारद ६.३३	रात्रावेव समुत्पन्ने	दा १४४
राज्ञ कोशापर्तृतश्च	मनु ९.२७५	रात्रावेव समुत्पन्ने	पराशर ३.२०
राज्ञः पंचसहस्रं	वृ परा ८.३०२	रात्रिं कुर्यात् त्रिभागन्तु	अत्रि ५.४२
राज्ञः पंचागुलं न्यासं	भार १६.२२	रात्रिं कृत्वा त्रिभागां	दा १४७
राज्ञः प्रख्यात भण्डानि	मनु ८.३९९	रात्रिभिमीसतुलाभि	लघुयम ७७
राज्ञश्च दद्युरुद्धारं	मनु ७.९७	रात्रिभिमीसतुल्याभि	मनु ५.६६
राज्ञा चान्यैस्त्रिभि पूज्यो	दक्ष २.४५	रात्रिभि मास तुल्याभि	शंख १५.४
राज्ञाञ्जानुमते चैव	पराशर ८.३५	रात्रिशेषे द्वाभ्यां प्रभाते	व १.४.२३
राज्ञा तथा कृताश्चेत्तु वृत्तयो	कपिल ४६४	रात्रिसूक्तं च सौरं च	वृ परा ११.२८४
राज्ञाधमर्णि कोदाप्यः	या २.४३	रात्रौ कृताशनान्विप्राच्छ्रद्धे	कपिल ६८
राज्ञा न प्रतिगृहणीयात्	शाण्डि ३.२२	रात्रौ जागरणं कुर्यात्	वृ हा ५.४४१
राज्ञान्यायेन यो दण्डो	या २.३१०	रात्रौ जागरणं कुर्यात्	वृ हा ५.३४२
राज्ञान्यैः श्वपैचर्वापि	अत्रिस ८०	रात्रौ तु वमने जाते	आंपू १७७
राज्ञा परीक्ष्यं न यथा	नारद १३.११८	रात्रौ दानं न दातव्यं	वृ परा १०.२८०
राज्ञा परिगृहीतेषु	नारद २.१३९	रात्रौ निमंत्र्य सम्पूज्य	वृ हा ६.१२०
राज्ञा प्रवर्तितान् धर्मान्	नारद १८.१०	रात्रौ श्राद्धं न कुर्वीत	मनु ३.२८०
राज्ञामत्यधिके कार्ये	व १.१९.३२	रात्रौ होमं प्रकुर्वीत	वृ हा ५.५४२
राज्ञांतुं द्वादशाहः स्यात्	वृ परा ८.३७	रात्र्या चापि संधीयते	बौधा २.४.२७
राज्ञांप्रतिग्रहस्त्याज्यो	बृ.या. ४.५९	रात्र्यामजस्रयोगस्सन्	शाण्डि ४.१९९
राज्ञांप्रवजितां धार्त्रि	लघुयम ३६	रामचन्द्र समादिष्टं	पराशर १२.६३
राज्ञा राजन् महातेजा	वृ.गौ. ७.११३	रामोऽपिकृत्वा सौवर्णी	कात्या २०.१०
राज्ञा राजकुमारघ्नश्चौरैण	शाता ६.९	राष्ट्रं मनोवांछित वृष्टिं	वृ परा ११.२९३
राज्ञा विनीहते दद्यात्	शाता ६.३०	राष्ट्रस्य संग्रहे नित्यं	मनु ७.११३
राज्ञीमाचार्याशिष्यां वा	बृ.य. ३.५	राष्ट्राए द्वासयेत्तञ्चा वेदा	कपिल ९४१
राज्ञे दत्त्वा तु षड्भागं	पराशर २.१४	राष्ट्रेषु रक्षाधिकृतान्	मनु ९.२७२
राज्ञो द्वे च विशाश्चैका	व २.४.८	राष्ट्रेषु राष्ट्राधिकृता	नारद १८.७५
राज्ञो निवेद्य पश्चान्तु	कपिल ८३४	राहुं केतुन्तु विन्यन्य	ब्र.या. १०.६७
राज्ञोनिष्ठप्रवक्तारं	या २.३०५	राहुश्च सैसकः कार्यं	वृ परा ११.५७
राज्ञोबलार्थिनः षष्ठे	ब्र.या. ८.९	राहुः सिंहलदेशोत्थो	वृ परा ११.४२
राज्ञो माहात्मिके स्थाने	मनु ५.९४	रिव्यग्राही ऋणं	वृ हा ४.२४२

रिपुगर्मस्य यो गर्भः	विष्णु म ३९	रेचकं तद्विदस्तज्ज्ञा	वृ परा १२.२१६
रीतिहृत् पिङ्गलाक्ष	शाता ४.४	रंचकेणोर्ध्ववक्त्रेण	वृ परा ६.१०४
रुक्मकुण्डले च	बौधा २.३.३४	रेचकेन तृतीयेन	वृ परा १२.२३८
रुक्मस्तम्भनिभावूरू	विष्णु १.२६	रेचकेनेश्वरं ध्याये	बृ.या. ८.२५
रुक्माङ्गदं तत्सुतञ्च	वृ हा ७.२०८	रेचकेनेश्वरं विद्या	ब्र.या. २.६२
रुक्माङ्गदः शिवो ब्रह्मा	वृ हा ७.८४	रेतः सेकः स्वयोनीषु	मनु ११.५९
रुच्या वान्यतरः कुर्यादितरो	या २.९८	रेतः स्पृष्टं शवस्पृष्टं	आंगिरस ४५
रुद्रजाप्यानि कार्याणि	वृ परा ४.५०	रेतस्पृष्टं शवस्पृष्टं	आप ८.४
रुद्रः प्रजापति शक्रः	वृ.गौ. ६.११७	रेतोघा पुत्र नयति	बौधा २.२.४०
रुद्र मातर्वसुनुते सुता	भार १८.९४	रेतो मज्जति यस्याप्सु	वृ परा ६.४
रुद्रं जपेल्लक्षपुष्पैः	शाता १.१९	रेतो मूत्र पूरीषाणां	औ २.२
रुद्रं समाश्रिता देवा	वृ.गौ. २२.२९	रेतोविष्णूमूत्रसंस्पृष्टं	अत्रिस २३३
रुद्र रुद्रविधानेन	वृ परा ४.१४७	रेवती वारुणी कांति	वृ हा ७.१६५
रुद्ररूपो द्विजो यश्च	वृ परा ११.१५०	रे स्पर्शं तुणिरूपं	वृ परा ५.७२
रुद्रविधिं विधिश्रेष्ठं	वृ परा ११.१९८	रोगनाशो भवेद् रुद्रो	वृ हा ७.४८
रुद्राक्षादित्रिवीजानां	भार ७.४४	रोगयुक्तं दुष्टबुद्धि	आपू ७४३
रुद्राग्नेययोर्मध्ये	ब्र.या. १०.११९	रोगादिरहितो विप्रो	आश्व २४.२०
रुद्रान् पुरुष सूक्तञ्च	अ ३६	रोगार्तस्यौषधं पथ्यं	वृ. परा १०.२४२
रुद्रान् प्रपद्ये वरदान्	शंख ९.५	रोगी हीनातिरक्ताङ्गः	प्रजा ८२
रुद्रायेति विधानज्ञो	वृ परा ११.१२०	रोगी हीनातिरक्ताङ्ग	या १.२२२
रुद्रार्चनाद् ब्राह्मणस्तु	वृ हा २.४७	रोगेण यद्रजः स्त्रीणां	अंगिरस ३६
रुद्राश्चाग्निश्च सर्पश्च	शंख ९.७	रोगेण यद्रजः स्त्रीणां	आप ७.२
रुद्रैस्तथैकादशभिः	शाता २.३२	रोगेण यद्रजः स्त्रीणां	पराशर ७.१८
रुद्रौघौउत्तराशायमर्चये	भार ११.५६	रोचन्त इति सायं	व १.३.६२
रुविष स्तथारैभ्य	ब्र.या. २.९८	रोदनं वर्जयित्वैव	वृ हा ६.८१
रूपतो गन्धतो वापि	वृ हा ८.१२२	रोदनाद्वावणाद्वागाद्	बृह ९.८४
रूपः द्रविण संयुक्तो	वृ परा १०.२५८	रोधने कृच्छ्रपादे द्वे	वृ परा ८.१४०
रूपद्रविणहीनाश्च	बृ.गौ. १४.६३	रोधने बन्धने चैव	बृ.या. ४.९
रूपं देहि यशो देहि	या १.२९१	रोधने बन्धने चैव	यम ६७
रूपं हुताशनं यातु स्पर्शो	विष्णु म ६६	रोधने बन्धने वापि	आंउ १०.३
रूपयौवनसम्पन्नं	विष्णु १.३०	रोधबन्धनयोक्त्रञ्च	पराशर ९.३१
रूपवेदाङ्ग तुरगसख्यं	भार १४.३४	रोधबन्धनयोक्त्राणि	पराशर ९.४
रूपसत्त्वगुणोपेता	मनु ३.४०	रोमकूपैर्यदा गच्छेद्	आप ६.५
रूप सौभाग्यसंयुक्ता	वृ परा १२.२०४	रोमदर्शनसंप्राप्ते सोमो	संवर्त ६५
रेकाभिरेकोष्ठाउक्तः	भार ७.११	रोमसंग्रहणे विप्रः	भार १८.८९

रोमाणि प्रथमे पादे	यम ७२	लक्षभूमौ भवेद्विष्टि	भार ९.३२
रोमाणि प्रथमे पादे	लघुशंख ५६	लक्ष्यश्चैकादशप्रोक्ताश्चतुः	ब्र.या. १०.३४
रोमाद्ये च फाल्गुनेवापि	ब्र.या. ८.१०१	लक्ष संख्याहणं पुष्पं	शाता १.१८
रोम्णां कोट्यश्च	या ३.१०३	लक्षसूर्य प्रभाभास्वत्	वृ परा ११.१३९
रोम्णां तु प्रथमे पादे	दा १०६	लक्षहोममिमं विप्रा	वृ परा ११.२४४
रोमणां पवित्रकरणे	भार १८.८४	लक्षेण भष्महोमेन	भार ९.३३
रोम्णां मध्यमं बध्वा	भार १८.८८	लक्षमणं पश्चिमे भागे	वृ हा ३.२६३
रोम्णि रोम्णि भ्रूणहत्या	अ ४९	लक्षमणो नागराजश्च	वृ हा ७.१६४
रोहिणीं दण्डिनीयस्य	ब्र.या. ८.१६५	लक्ष्मीधनकुचस्पर्श	वृ हा ५.३११
रोहिणी विधवा भर्ता सा	विश्वा ८.५९	लक्ष्मीनारायणध्यान	कण्व ५७४
रोहिण्यां मंदवारे	व २.७.६	लक्ष्मीपतित्वं तस्यैव	वृ हा ३.७०
रोहिण्यां श्रवणे वापि	व २.३.१७१	लक्ष्मीभ्रष्टाय यदतं	वृ परा १०.२९८
रौद्र द्वाविंशकं प्रोक्तं	बृ.या. ४.६९	लक्ष्मीमनपगमिनीमित	वृ हा ३.६९
रौद्रन्तु राक्षसं पित्र्य	कात्या २७.४	लक्ष्मीरूपामिमां कन्यां	आश्व १५.२६
रौद्रपित्र्यायासुरान्	बृ.या. ७.१५१	लक्ष्मीर्बलं यशस्तेज	अत्रिस १४६
रौद्रभूतमिमं सर्वे द्विजं	वृ परा ११.१२८	लक्ष्मी वसुधा वर्णनम्	विष्णु ९९
रौद्रवैष्णवगायत्र्यां शाखा	कपिल ९९५	लक्ष्मी सरस्वती चैव	ब्र.या. १०.४५
रौद्री मकारसंज्ञा	बृ.या. २.२९	लक्ष्म्या सह समासीनं	वृ हा ७.१७२
रौप्यहैमानि पात्राणि	प्रजा ११५	लक्ष्यं शास्त्र भृतां वा	मनु ११.७४
रौरवं नरकं याति	वृ हा ७.१५१	लग्नस्तु निश्चलस्तिष्ठेद्	नारद १९.२८
रौरवाद्दिप्रमुक्तास्तु	बृ.गौ. १५.८०	लघुं गुरु वा यो दद्याद्	ब्र.या. ११.५९

ल

लकारश्चभकारश्च	विश्वा ३.२७	लब्धदव्येण लघुना येन	लोहि ३४४
लक्षञ्चपेच्चं यो नित्यं	वृ हा ३.१४७	लब्ध यज्ञाय य विप्रो	वृ परा ६.३००
लक्षणं द्विधमाख्यातं	भार १५.२९	लब्धासनो ब्रह्मचारी	भार ९.४७
लक्षणे प्राग्गतायास्तु	कात्या ६.९	लब्धेन मधुना वापि	लोहि ३६९
लक्षत्रयजपेधेतत्पुरश्च	भार ९.२१	लब्ध्वाज्ञामपसव्येन	आश्व २३.१२
लक्षत्रयं वा गायत्र्या	अ ५१	लभतेऽतस्तु सा प्रोक्ता	आंपू ४५३
लक्षद्वादशवारं तु गायत्री	नारा १.३५	लभते नात्र सन्देहो	आंपू ८७३
लक्षद्वादश संज्ञञ्च	ब्र.या. १०.३३	लभेतायु शतसमा	वृ हा ३.१९७
लक्षमात्रं जपेदेवीं तस्मात्	नारा १.३८	लभ्यन्ते श्राद्धदानेन	ब्र.या. ४.१३०
लक्षं चौकादशं चैव	ब्र.या. १०.३१	लं पृथिव्यात्मने धूपं	विश्वा ३.२८
लक्षं तु जुहुयाद्वाज्यं	भार ९.३१	ललनाद्धारिर्गच्छन्योगी	वृ परा १२.२९०
लक्षद्वादशकं चैवं कोटीनां	ब्र.या. १०.३०	ललाटबाहुद्वयेष्वाविवेन	शाण्डि २.४४
लक्ष ब्रह्मकटाहं च	ब्र.या. १०.३१	ललाटादि कपालान्तं	ब्र.या. २.३३

ललाटादि शुभाङ्गेषु	व २.७.१७	लिखितं बलवान्ति	नारद २.६६
ललाटादिषु चांगेषु	वृ हा ८.२३३	लिखितं लिखितेनैव	नारद २.१२२
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोः	ब्र.या. १०.१५	लिखितं साक्षिणो भुक्ति	नारद २.६५
ललाटे केशवं ध्यायेन्	व २.३.५१	लिखितं साक्षिणो भुक्ति	व १.१६.७
ललाटे स्थित देवी	वृ परा ५.३६	लिंगं वा सवृषणं	बौधा २.१.१६
ललाटदेशाद् रुधिरं	पराशर ३.४३	लिंगस्यच्छेदने मृत्यै	या २.२२९
ललाटे पृष्ठयो कण्ठे	वृ हा २.७३	लिङ्गानां वचनानां	कण्व २०५
ललाटै यैः कृतं नित्यं	व्या ३८	लिंगेप्यत्र समाख्याता	दक्ष ५.८
लवणं क्षीरं संयुक्तं	ब्र.या. २.१८६	लिप्यते न स पापेन	वृ परा ४.३१
लवणं च कटुद्रव्यं	विश्व ८.२	लुठन्नमहीतले तूष्णी	कण्व ४३१
लवणं चोदकं हित्वा	शाण्डि ४.८९	लुप्तं सूर्यं समालोक्य	विश्व ७.१९
लवणं तिलकार्पासं	वृ हा ४.१५३	लूता विप्लव शीतलोश्च	ब्र.या. ७.५४
लवणं मधु तैलञ्च	पराशर १.६३	लूताहि सरटानां च	मनु १२.५७
लवणं मधु तैलं च	वृ परा ४.२२३	लेखं यच्चान्यनामाकं	नारद २.१२१
लवणं मधु मांसश्च	कात्या २७.६	लेखयित्वा च संपूज्य ध्याना कपिल	३२५
लवणानां गुडानां च	शंख १७.१८	लेखयेद् वर्णकैः स्वैः स्वैः	वृ परा ११.५८
लवणेषुसुरासर्पिद	ब्र.या. १०.१२८	लेखितः स्मारितश्चैव	नारद २.१२७
लवणोदकं ततः क्षीरोदं	शंख १३.७	लेखे देशान्तरन्यस्ते	नारद २.११९
लशुनपलाण्डुकेमुकगृज	व १.१४.२८	लेख्यं तु द्विविधं ज्ञेयं	नारद २.११२
लशुनं गृजनं चैव	मनु ५.५	लेख्यं देयं दद्यादृणे शुद्धे	नारद २.९९
लाक्षाकृष्णागरु सर्पिः	भार १४.३१	लेख्यस्य पृष्ठेभिलिखेद्	या २.९५
लाक्षालवणमांसानि	या ३.४०	लेपगन्धापकर्षणे	व १.३.४७
लाक्षालवणसंमिश्रं कुसुम्भं	अत्रिस ३७७	लेपभागश्चतुर्थाद्या	व्या ७६
लांगलं प्रवीर वद्वीर	व १.२.४०	लेपयदयतीरस्थ	ल व्यास २.१४
लांगुलं सम्प्रवक्ष्यामि	वृ परा ५.६०	लोकत्रयहितार्थाय	विष्णु म २४
लांगूले कृच्छ्रपादन्तु	पराशर ९.१८	लोकनिस्तारणार्थन्तु सा	वृ.गौ. १०.४३
लाजाहुतीदशाप्रोक्ता	ब्र.या. ८.२३०	लोकपालांस्तथावाहा	कण्व ६२७
लाजैः हरिद्राचूर्णेश्च	वृ हा ५.४९७	लोकप्रकाशकश्चैव	भार ११.५८
लाभपूजानिमित्तं हि	दक्ष ७.३८	लोक संव्यवहारार्थं या	मनु ८.१३१
लाभार्थो वणिजां सर्व	नारद ९.११	लोक संग्रहणार्थं यथा	बौधा १.१०.२९
लाभालाभौ च सततं	लोहि ५.८६	लोक संग्रहणार्थं हि	बौधा १.५.१११
लालनीया सदा भाय्या	शंख ४.१५	लोकात्मन् लोकनाथेश	वृ.गौ. १८.३७
लालास्वेदसमाकीर्णः	वाधू ६८	लोका द्वीपार्णवाश्चैव	वृ.गौ. १०.५५
लावण्यं तित्तिरिशकुन्त	प्रजा १३७	लोकानन्त्यं दिव्यं प्राप्ति	या १.७८
लिखितं साक्षिणश्चात्र	नारद १.३	लोकानन्यान् सृजेयुर्ये	मनु ९.३१५

लोकानां तु विवृद्धं	मनु १.३१	लोहितो यस्तु वर्णेन	लघुशंख ११
लोकानुसारस्त्वेकत्र गुरु	शाण्डि ४.२३६	लोहितो यस्तु वर्णेन	लिखित १४
लोके त्रीण्यपवित्राणि	बृ.गौ. २१.१९	लौकिकं वैदिकं तत्र नित्यं	लोहि ६१४
लोकेशाधिष्ठितो राजा	मनु ५.९७	लौकिकं वैदिकं वापि	औ १.२३
लोकेस्मिन्द्वावक्तव्याव	नारद १६.१९	लौकिकं वैदिकं वापि	मनु २.११७
लोकेस्मिन् द्विविधं	नारद ९.२	लौकिकं वैदिकं वापि	वृ.गौ. १४.५६
लोकेस्मिन् मंगलान्यष्टौ	नारद १८.५१	लौकिकाग्नौ प्रकुर्वीतं	आंपू ४०१
लोको यदा सुखी राजा तदा	लोहि ७२०	लौकिकाग्नौ श्राद्धमात्र	लोहि ३०३
लोको वशीकृतो येन येन	दक्ष ७.१	लौकिकाग्नौ सर्वजन	कण्व ७७०
लोभनीपार्जुनैर्नागैः	वृ हा ५.४१२	लौकिके पापनाशाय	वृ परा ४.१६१
लोप्तादिरहिताश्चोरा	नारद १८.६६	लौकिकोक्तिवैदिकोक्ति	लोहि ३६३
लोभ स्वप्नोद्धृति क्रौर्यं	मनु १२.३३	लौहक कुम्भाकारश्च	ब्र.या. ८.३
लोभात् कुर्याद् द्विजन्मा	वृ परा ६.२५९	लौहानां वैदलानां च	शंख १७.१९
लोभात् सहस्रं दण्डस्तु	मनु ८.१२०		
लोभान्नास्ति नियोगः	व १.१७.५७		
लोभान्मातृत्वमन्यासु	आंपू १२२		
लोभान् मोहाद् भयान्	मनु ८.११८		
लोभान् मोहाद् भयान्	वृ परा ८.७७		
लोमम्य स्वाहेत्यथवा	या ३.३०२		
लोमभ्यः स्वाहेत्येवं	या ३.२४६		
लोमानि मृत्युर्जुहोमि	व १.२०.२८		
लोलिह्यमानं संदीप्तं	बृह ९.११४		
लोष्टमदीं तृणच्छेदी	मनु ४.७१		
लोष्टसस्य च यश्व	भार ३.१०		
लोहकर्म तथा रत्नं	पराशर १.६१		
लोहकर्मस्थानां च गवां	वृ परा ४.२२१		
लोहपात्रेषु यत्पक्वं	प्रजा ११३		
लोहशंकुमृजीषं च पंथानं	मनु ४.९०		
लोहहारी च पुरुषः	शाता ४.१२		
लोहानामपि सर्वेषां	नारद १०.१०		
लोहितं मृत्योर्जुहीमि	व १.२०.३०		
लोहितं सर्ववेदान्त	लोहि १		
लोहितान् वृक्षनिर्यासान्	मनु ५.६		
लोहितान् वृक्षनिर्यासान्	वृ परा ७.२२३		
लोहितो यस्तु वर्णेन	दा २१		
		व	
		वशंतालादि पत्रैस्तु	वृ हा ५.२३८
		वंशद्वयविशुद्धत्वं अत्यन्ता	लोहि ५७१
		वंशोद्धरणकर्तृत्वं	लोहि १०१
		वकघाती दीर्घनसो	शाता २.५६
		वकार इति पञ्चैते वर्णाः	विश्वा ३.१७
		वक्ता शतसहस्रेषु	व्यास ४.५९
		वक्त्राधिकन्तु यत्पिण्ड	बृ.गौ. १३.१३
		वक्त्रानिर्माजिनं कृत्वा	वृ परा २.३३
		वक्त्रेण सान्तर्धानेन	वृ हा ५.२६८
		वक्त्रे तालुनि दृक्	वृ परा ४.२९
		वक्त्रे प्रदर्शयेत्देव्याः	भार ११.७६
		वक्त्रेर्धे न तिष्ठन्तं	नारद १.४१
		वक्रं तद्भवति ह्लादौ	बृ.या. २.८
		वक्रं तु भवति ह्यादौ	बृह ९.१०
		वक्षश्चन्द्रोश्चमूर्ध्नीति	भार ५.३२
		वक्ष स्थले माधवञ्च	वृ हा २.७६
		वक्ष्यन्ति केचिद् भगवान्	वृ हा ३.१६५
		वक्ष्यमाणस्य सूत्र हि	शाण्डि १.१२
		वक्ष्यमाणो विधि पुण्यः	वृ परा ६.८८
		वक्ष्यामि वस्समासेन	शाण्डि ३.३
		वक्ष्याम्यथाक्षमालायाः	भार ७.५२

वक्ष्णो वृषणो वृक्कौ	या ३.९७	वदन्ति सर्वे नीतिज्ञा	वृ परा १२.४१
वचनाद्यज्ञे चमसः	बौधा १.५.५१	वदन्त्यपां पवित्रत्वं	वृ परा ८.२६३
वचनानां समत्वेन	आंपू ३९५	वदरीवनमासाद्य सडधीभूय	नारा ७.२९
वज्र वैदूर्यमाणिक्य	वृ हा ७.२८२	वद सर्वमशेषेण	वृ हा ५.५
वटाश्वत्थार्कपत्रेषु	वृ परा ७.१२३	वदामि धेनुं घृतपूरकल्प्यां	वृ परा १०.७२
वटाश्वत्थार्कपर्णानि	वृ हा ५.२४७	वदूर्यमणिचित्राणि	बृ.गौ. १२.४९
वणिक् किरात कायस्थ	व्यास १.११	वदेत्पापी महाकूरस्तेन	आंपू ३६६
वणिक् प्रभृतयो यत्र	नारद ४.१	वदेद्वाचा केवलं वा	कण्व २४९
वत्सतन्ति च नोपारि	बौधा २.३.४२	वदेदिति स्वकं कर्म	मनु ४.१४
वत्स प्रसवणे मेध्य	बौधा १.५.५७	वधकृच्चित्रकृन्मख	नारद २.१६४
वत्सन्ती विततां	व १.१२.५	वधपानापहरणगमनाद्यैश्च	नारा १.४०
वत्सं माता लोढि यथा	वृ हा ८.१७७	वधः सर्वस्वहरणं	नारद १५.७
वत्सरत्रितयं कुर्यात्	का ३	वधूवस्त्रैन्ततांते तु दद्यात्	व २.४.८७
वत्सस्य कुर्यादिति	वृ परा १०.८०	वध्वाजलादुपस्तीर्थे	व २.४.५१
वत्सस्य ह्यभिशस्तस्य	मनु ८.११६	वध्वारक्षांप्रकुर्वीत	कण्व ५७७
वत्सानां कण्ठवन्धेन	लघुयम ५२	वध्वा सह गृहं गच्छेद्	आश्व १५.५१
वत्सः प्रसवणे मेध्य	व १.२८.८	वध्वा सह वरो गच्छेत	आश्व १५.६६
वत्सरादूर्ध्वसम्पूर्ण	वृ हा ६.३९०	वध्वाहतस्य माङ्गल्यं	कण्व ६४०
वत्सनाच्येत् प्रहृता	व १.१७.६५	वनवासिषु सर्वेषु भिक्षा	वृ परा १२.११८
वदने प्रविशेद्येषां	वृ परा ८.३३	वनस्थं च द्विजं हत्वा	शांख १७.७
वदन्त एव परमानन्दं	कपिल ७६८	वनस्थो बालखिल्यो	वृ परा १२.१६३
वदन्ति कवयः केचिद्	वृ परा ६.२४४	वनस्पतीतिगते सोमे	वृ परा ५.९८
वदन्ति कवयः केचिद्	वृ परा ८.२३३	वनस्पतीति सूक्तेन	वृ हा ६.३३
वदन्ति केचिद् वरुणस्य	वृ परा ११.२४०	वनस्पतीनां सर्वेषां	मनु ८.२८५
वदन्ति तद्विदः सर्वे	वृ परा १०.१२८	वनस्पतीनोषधीश्च	बृ.या. ७.६४
वदन्ति दानं मुनयः	वृ परा ९.४३	वनस्पतेति सूक्तेन	वृ हा ८.३१
वदन्ति न तथा ज्ञेयं	शाण्डि ४.२०४	वनस्पत्योषधीश्च	ब्र.या. ८.३१७
वदन्ति न तथा ज्ञेयं	शाण्डि ५.१५	वनाद् गृहाद्वा कृत्वेष्टि	या ३.५६
वदन्ति ब्रह्मवेत्तारो	वृ परा १२.२१०	वने च पतिता या गौः	बृ.य. ४.१२
वदन्ति मंत्रत्वार्थवेदिनो	वृ परा ११.५९	वने दुष्टमृगान् हत्वा	औंस ३८
वदन्ति मुनय प्राच्या	वृ परा ८.९	वनेषु तु वहृत्यैवं	मनु ६.३३
वदन्ति मुनयो गाथां	वृ परा १०.१३५	वन्दिग्राहंस्तथा वाजि	या २.२७६
वदन्ति मुनयो गाथां	वृ परा १०.२९४	वन्दिग्राहेण या भुक्त्वा	पराशर १०.२५
वदन्ति विप्रास्ते	वृ.गौ. १०.८६	वन्ध्या तु वृषली ज्ञेया	यम २५
वदन्ति वदतां श्रेष्ठा	वृ परा ११.१८	वन्ध्यात्वं जातपुत्राणां	लोहि ४२६

वन्ध्या नवप्रसूता च न	भार ७.६७	वरं लक्षणसंयुक्तं	व २.४.३३
वन्ध्यापि प्रभवदेव	लोहि ५५०	वरं वा रूपामुद्धरेज्ज्येष्ठः	बौधा २.२.४
वन्ध्यां स्त्रीजननीं	नारद १३.९६	वरं स्वधर्मो विगुणो न	मनु १०.९७
वन्ध्याष्टमेधिवेत्तव्या	वृ परा ६.६७	वरयेच्चतुरो विप्रान्	आश्व १५.१६
वन्धैर्मुन्यशनैर्मध्ये	वृ परा १२.९७	वरास्त्रि प्रोक्षयेल्लाजां	आश्व १५.३९
वपनं नास्य कर्तव्यं	कात्या २५.१५	वरस्त्रीगणसंसेव्य	वृ परा १०.१८५
वपनं मेखला दण्डो	अत्रिस ७६	वर स्त्री भूषणैर्युक्तं	वृ परा १०.२४
वपनं मेखलादण्डो	मनु ११.१५२	वराङ्गनासहस्राणि	पराशर ३.४२
वपनं मेखला दण्डो	व १.२०.२१	वराणि रत्नानि च हैम	वृ परा १०.२१०
वपनव्रतनियमलोपश्च	बौधा २.१.२३	वराय गुणयुक्ताय	वृ परा ६.६
व पावसावहननं नाभि	या ३.९४	वराहन्तु तिलद्रोणं	औ ९.१०
वभूवुर्हि पुरोडाशा	मनु ५.२३	वराहं यदि वा रोहं	वृ परा ८.१७४
वमनेनातिसौलभ्यतृप्ति	कपिल २१५	वरुणमाश्रित्यैतत्तै वरुण	बौधा १.४.११
वमंतं जृम्भमाणं च	व्या ३६३	वरुणं द्वितीयेति तृतीये	व २.४.५३
वयः कर्म च वित्तञ्च	वृ हा ४.१८८	वरुणवायव्ययोर्मध्ये	ब्र.या. १०.१२९
वयं तद्गोत्रसंभूता अस्माकं	लोहि २९३	वरुणस्य करे पाशः	भार १८.१२४
वयं व विद्याः को वा	आंपू ४९३	वरुणस्योत्तभनमासि	वृ परा ११.२३३
वयं सोमं तमीशानमस्मे	वृ परा ११.१२४	वरुणेन यथा पाशैर्वद्ध	मनु ९.३०८
वयवीर्यैर्विगण्यन्ते	या ३.१०४	वरुणो देवता मूत्रे	देवल ६२
वयसः कर्मणोर्थस्य	मनु ४.१८	वरेण्यं सवितुश्चापि	कण्व १८६
वयसस्तु षोडशादूर्ध्व	व २.५.२०	वरो दास्याति पूर्वेण	ब्र.या. ८.२६७
वयसा चर्यया विद्याज्ञाना	कपिल ७०६	वर्गत्रयात्परं तेषां मूकां	लोहि २५१
वयसा यं कनिष्ठोपि पितृ	कपिल ६८४	वर्गद्वयोद्धारकश्च सर्व	लोहि ३३३
वयसा लघवोपि	वृ परा ८.७१	वर्गैश्च यादिक्षान्तणौः	विश्वा ६.२८
वयः सुपर्णेति ऋचा	वृ हा ८.२२	वर्जनं विषयासक्तेः	वृ परा १२.१९
वयोऽधिको दत्तसुतो	आंपू ४१८	वर्जनीयमकृत्यन्तु सर्वेषां	वृ हा ८.१६५
वयो बुद्ध्यर्थवाग्नेष	या १.१२३	वर्जनीयाद्विजाह्वेते	का ४
वरगोत्रं समुच्चार्य	आश्व १५.२७	वर्जनीयानि पुष्पानि	वृ.गौ. ८.८०
वरणीया विशेषेण	वृ परा ११.२६५	वर्जनीया प्रयत्नेन	कण्व ४७३
वरदानं ततः प्रोक्कं	ब्र.या. ८.२३९	वर्जयित्वा कृतानन्ये	शाण्डि ४.१६
वरदाभययुक्ताभ्या	व २.६.७९	वर्जयित्वा द्विजं पश्चाद्	आंपू ७६२
वरः प्रत्यङ्मुखो भूत्वा	व २.४.४०	वर्जयित्वा मुक्तिफल	औ १.३८
वरं ददाति भूतानां	वृ.गौ. १२.४४	वर्जयित्वा मुदाशौचं	शाण्डि २.१७
वरं प्राशयते सर्वं सर्वे	ब्र.या. ८.२१०	वर्जयित्वैव पाषण्डान्	वृ हा ४.१६२
वरं यच्छन्ति संहृष्टा	वृ परा ११.८२	वर्जयेत सन्निधौ नित्यं	औ ३.१२

वर्जयेदतिरिक्तांगी	वृ परा ६.२८	वर्णानामाश्रमाणाञ्च	वृ परा १.४१
वर्जयेदारनालञ्च	वृ हा ४.१०८	वर्णानामाश्रमाणाञ्च	व्यास ४.१५
वर्जयेदिन्धनार्थं तु	शाण्डि ३.१०८	वर्णानां च गृहस्थानां	वृ परा ५.१४६
वर्जयेद् दृष्टदुष्टं च	शाण्डि ४.३१	वर्णानां तु त्रिधावृत्तिः	प्रजा ४८
वर्जयेद् दृष्टदोषांश्च	वृ परा ५.१०८	वर्णानां प्रातिलोम्येन	नारद ६.३७
वर्जयेद्भावानं चैव	वृ परा ६.२७४	वर्णानां सान्तरालानां	वृ.गौ. १४.४६
वर्जयेन्मधु मांसं च	मनु ६.१४	वर्णापेतमविज्ञातं नरं	मनु १०.५७
वर्जितं पितृ देवैस्तु	व्यास ४.६९	वर्णाश्रमाचारताः शास्त्रैक	विष्णु १.४७
वर्जितः पितृभिर्लुब्ध	वृ.गौ. ६.६०	वर्णाश्रमाणां धर्माणां	ब्र. या. १.३
वर्जितं साक्षिलक्षण	विष्णु ८	वर्णाश्रमेषु सर्वेषां	वृ हा ८.२१७
वर्जितानि न देयानि	वृ परा ७.२१९	वर्णाश्चत्वारो राजेन्द्र	ल हा ७.१८
वर्जयित्वा मसूरान्नं	ब्र.या. ३.५२	वर्णिनान्तु बधोयत्र	या २.८५
वर्जयेन्मधु मांसञ्च	मनु २.१७७	वर्णिना यतिनापत्सु दत्तोहं	लोहि २८१
वर्ज्यः पातकिना स्पृष्टः	भार १८.३७	वर्णिना यतिना पाके कृता	लोहि ४१८
वर्णक्रमविभागज्ञः स्वरमात्रा	कपिल ३५	वर्णिने यतये कन्यादानं	कपिल ९५८
वर्णगन्धरसैः दुष्टैर्वर्जितं	शंख १६.१३	वर्णिनोऽध्ययनं त्वेकं	कण्व ५०१
वर्णज्यैष्ठ्येन बह्वीभि	कात्या ८.६	वर्णी गृही वनस्थो वा	कण्व १२८
वर्णधर्मश्चतुर्णां यः	पु ८	वर्णेन च भवेच्छु	वृ.या. २.१२१
वर्णधर्म स्मृतस्त्वेक	पु ३	वर्णेषु धर्मा विविधा	ल हा २.१५
वर्णधर्मान् प्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.२१२	वर्तते चानुवाकेन चोत्तरेण	कण्व ३९५
वर्णमेकं समाश्रित्य	पु ४	वर्तते नगरे वाऽपि	ब्र.गौ. १९.३७
वर्णत्रस्य श्रुश्रूषां	ल हा २.११	वर्तते यश्च चौरेण	वृ परा ७.३६०
वर्णयन्तः परं भाव	कण्व ४०७	वर्तमादौ विधिपूर्वकर्म	विश्वा २.२३
वर्णवाह्येन संस्पृष्ट	अत्रिस २३६	वर्तन्ते भूतले तस्माद्	आंपू ३४९
वर्णव्रयं समुच्चार्य	व्या ९९	वर्तमानेन वर्तेत धर्म	ब्र.या. ८.१४२
वर्णशूद्रस्य कृष्णाः स्याद्	भार १५.१८	वर्तमानोऽध्वनि श्रान्तो	नारद १८.३७
वर्णसंकरदोषश्च तद्वृत्ति	नारद १८.४	वर्तयंश्च शिलोञ्छाभ्याम्	मनु ४.१०
वर्णसंकराद् उत्पन्नान्	बौधा १.९.१६	वर्द्धते भूतलेऽतीष	कपिल ३१
वर्णस्वराकारभेदात्	नारद १८.७०	वर्द्धमानं श्रिया दीप्त्या	लोहि ३३४
वर्णाक्षरपदार्थानां	वृ.गौ. १५.५९	वर्द्धमानां अमावस्यां	कात्या १६.१०
वर्णाक्षरपदार्थानां	वृ.गौ. १५.६०	वर्षं कोटि महातेजा	वृ.गौ. ६.१४३
वर्णात्मा सन्नवर्णस्तु	वृ परा १२.२७०	वर्षत्येव न गन्तव्य	ब्र.या. ८.१३
वर्णानामानुलोम्येन	दक्ष ४.१६	वर्षं ब्रह्मकृच्छ्रान् कुर्वीत	वृ.गौ. ९.२१
वर्णानाम आश्रमाणाञ्च	ल हा १.८	वर्षं वृद्ध्याभिषेकादि	लिखित ३५
वर्णानामाश्रमाणाञ्च	ल हा ७.१	वर्षाकालेऽपि वर्ष	बौधा १.११.२६

वर्षाजलाश्च खननजला	आंपू ९३६	वसन्तिब्रह्म लोकेषु	ब्र.या. ११.५०
वर्षाणां हि तटाकेषुं	वृ.गौ. ७.१४	वसन्ति हृदये नित्यं	वृ परा ५.३३
वर्षादूर्ध्वं पापापनुतये	नारा २.५	वसन्ते ब्राह्मणस्य	बृ.गौ. १५.४७
वर्षेण एकेन यावन्ति	वृ.गौ. ६.८१	वसन्तो ग्रीष्मः शरद	बौधा १.२.१०
वर्षे वर्षे तु कर्तव्यं	ब्र.या. ३.२९	वसन्त्येकक्षपां ग्रामे	वृ परा १२.१७०
वर्षे वर्षे तु कर्तव्यं	लिखित १८	वसनं त्रिपणकक्रीतं त्रिमासानां	लोहि ४५९
वर्षे वर्षे तु कुर्वीत माता	लघुयम ८१	वसन्नावसथे भिक्षुमैथुनं	दक्ष ७.४३
वर्षे वर्षे प्रकर्तव्यं	२.३.१७४	वसवः पितरोऽत्रस्यू	आंपू ६७४
वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन	मनु ५.५३	वसवश्च तथा रुद्रा	बृह ९.१६३
वर्हि पर्युक्षणं चैव	कात्या ९.९	वसवश्च तथा रुद्रा	वृ परा ७.१६९
वलस्य स्वामिनश्चैव	मनु ७.१६७	वसवश्चापि रुद्राश्च	आंपू ३२
वलाकाटिष्ठिभानाञ्च	पराशर ६.३	वसानस्त्रीन् पणान्	या २.२४९
वलाद दासीकृता ये च	देवल १७	वसाशुक्रमसृङ्मज्जा	अत्रिस ३१
वलानारी प्रभुक्ता	अत्रिस १९६	वसा शुक्रमसृङ्मज्जा	मनु ५.१३५
वल्लिञ्च कर्म राजेन्द्र	वृ.गौ. ८.१४	वसिष्ठविहितां वृद्धिं	मनु ८.१४०
वलेन पराष्ट्राणि	दक्ष ७.१८	वसिष्ठसदृशा यूयं	आश्व २३.१०७
वल्कलवत्कृष्णाजिनानाम्	बौधा १.६.१४	वसिष्ठाद्या वैष्णवाश्च	वृ हा ८.३५०
वलगुणीचटकानाश्च	पराशर ६.६	वसिष्ठासस्ततो देवा	आश्व २३.१११
वल्मीकस्थः श्मशानस्थः	भार १८.१६	वसीत चर्म चीरं वा	मनु ६.६
वल्मीकेथाऽग्नि वृक्षादौ	भार ३.५	वसुधा चिन्तयामास	विष्णु १.२०
ववस्थ-भिक्षु धर्मान्वै	वृ परा १२.१४४	वसुधांप्रतिनारायणस्योक्ति	विष्णु १००
वशंगमाविति ब्रीहीं	कात्या २९.१७	वसुपुष्पोहारौघं	वृ हा ४.२०७
वशस्य स्वागतं तेऽस्तु	वृ परा १.१२	वसु रुद्र अदिति सुता	या १.२६९
वशाचोत्पन्न पुत्रा च	बौधा २.२.७०	वसुरुद्र आदित्या अभी	प्रजा १८५
वशापुत्रासु चैवं स्यादक्षपं	मनु ८.२८	वसूनवदन्ति वै पितृन्	मनु ३.२८४
वशिष्ठदक्ष सम्बर्त्त	ब्र.या. ७.६०	वसून् रुद्रांस्तथादित्यान्	व २.६.१४०
वशिष्ठभरद्वाज गौतम	भार ६.५२	वसून् रुद्रांस्तथादित्यान्	वृ परा २.१८८
वशिष्ठस्य मतेनैव	बृ.या. २.१२९	वसून् रुद्रांस्तथादित्यान्	बृ.या. ७.८१
वशिष्ठार्थवकमनोः	भार १७.२३	वसेच्चतुर्भुज तत्र	वृ परा १०.१६५
वशिष्ठाद्यैश्चमुनिभिः	भार १२.३१	वसेत्तत्र द्विजातिस्तु	वृ परा १.४२
वशिष्ठोक्तो विधि	कात्या १.१८	वसेत् स नरके घोरे	या १.१८०
वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं	मनु २.१००	वसेद् रवि समं तत्र	वृ परा १०.१५६
वसतां कर्म सम्यग्वः	लोहि ६२७	वसेद विकृतं वासः	औ १.८
वसतस्व कस्मात्	वृ परा ११.८६	वसेद् विष्णुपुरे तावद्	वृ परा १०.२००
वसन्तमाधवस्य त्वं	आंपू ५९६	वसेरन्निय ताः सर्वे	५.६

वस्तुतोत्र पुनर्वाचिम्	आंपू १०३९	वह्नि सीतामखंचापि	वृ परा १.५२
वस्तुभोगतया विष्णो	वृ हा ८.१६४	वह्नौ च स्थाण्डिले	वृ हा ३.१२६
वस्त्र अलंकार रत्नानि	व्यास २.२६	वह्वच भोजयेच्छास्त्रे	व्या १८४
वस्त्रगोभूमिदानेन धन	शाण्डिल १.९१	वह्वचं तु परित्यज्य	व्या १८५
वस्त्र गोमिथुने दत्त्वा	नारद १३.४१	वह्वः तु न जानन्ति	वृ.गौ. ४.४१
वस्त्र चतुर्गुणीकृत्य	वाधू ६१	वह्वर्चं भोजयेच्छास्त्रे	व्या १८३
वस्त्र तु मलिनं त्यक्त्वा	अत्रि ५.६९	वह्वर्चं विना श्राद्ध	व्या १८६
वस्त्रञ्चैवोपवीतञ्च	वृ हा ४.८५	वह्वृचस्तर्पणं कुर्याज्जले	आश्व १.१०४
वस्त्रदाता सुवेशः स्याद्	संवर्त ५२	वह्वृचो ब्रह्मचारी	आश्व २४.८
वस्त्रनिष्पीडनं तोयं	बृ.या. ७.४४	वाकं प्रेणी ततो जप्त्वा	ब्र.या. ८.३१९
वस्त्रनिष्पीडनाम्भो	व्यास ३.२०	वाकोवाक्यं पुराणञ्च	या १.४५
वस्त्र पुष्प मणि स्वर्ण	वृ हा ६.२६	वाक्यापारुष्यं तथैवोक्तं	नारद १.१९
वस्त्रभूषणयोदने समनुच्चारणे	कपिल ८५	वाक्संबन्ध एतदेव	व १.२१.८
वस्त्र पत्रमलंकारं	मनु ९.२१९	वागक्षीकर्णनासादि सर्वा	कपिल ८०७
वस्त्रयुग्मं ततो दद्यात्	व्या १५०	वागदंडोथ मनोदंड	मनु १२.१०
वस्त्र संस्पर्शेन तस्य	वृ परा ८.३१३	वागदण्डं प्रथमं कुर्याद्	मनु ८.१२९
वस्त्रहारी भवेत् कुष्ठी	शाता ४.२३	वागदुष्टः बालदमकौ	वृ परा ७.१३
वस्त्रहीनेन यः	ब्र.या. ८.२५०	वागदुष्टात्तरस्कराच्चैव	मनु ८.३४५
वस्त्रादीनि तथा अन्यत्र	आश्व ११.६	वागदूषितामविज्ञातं	व्यास ३.६०
वस्त्राद्युत् त्रासते गौश्च	वृ परा ८.१५६	वागदैवत्यैश्च चरुभिः	मनु ८.१०५
वस्त्रालङ्कारपुष्पादिधूप	व २.४.६९	वाग्भवं शक्तिबीजं च	विश्व ६.४५
वस्त्रालङ्कारभूषाद्यैः	व २.४.१२४	वाग्यतः परिस्तीर्य	ब्र.या. ८.२४९
वस्त्रालङ्कारयुक्तेन	व २.७.१०१	वाग्यतः शेषमशनीयाद्	बृह ९.१४२
वस्त्रैराभरणैर्दिव्यैर	व २.७.८७	वाग्यतः शेषमशनीयाद्	ब्र.या. २.१७८
वहि कलाभ्यां दृक्पालं	भार ६.९४	वाग्यतो न्यस्तपात्रस्त्रीन्	वृ परा ६.१३३
वहिद्यासान्धार्य परिस्तीर्य	व २.६.२८३	वाङ्मआस्येनसोश्चक्षु	ब्र.या. ८.२११
वहि प्रदक्षिणं कुर्यात्	ब्र.या. ३.६८	वाङ्मनो जलशौचानि	वृ परा ६.२१६
वहि प्रदक्षिणं कृत्वा	ब्र.या. ४.१४१	वाङ्मयस्य तु सर्वस्य	बृ.या. २.१२५
वहिर्मुखानि सर्वाणि	दक्ष ७.१९	वाचं वा को विजानाति	या ३.१५०
वहिष्कृतश्च संत्यक्त	आंपू १०६४	वाचं विसृजतेवाद्यः	ब्र.या. ८.४७
वहि सन्ध्यामुपासीत	वृ परा ६.१४५	वाचयेज्जलमादाय	वृ परा १०.३३५
वहि सन्ध्याः शतगुणं	वृ हा ५.२८८	वाचयेत् परिपूर्णं	वृ परा ७.२०२
वह्नां तु प्रोक्षणम्	बौधा १.६.२६	वाचा दत्ता मनोदत्ता	का ६
वह्नि जिह्वा भगवतो	वृ हा ७.१४	वाचाऽमिघुष्टं गणान्नं	व १.१४.४
वह्नि गार्हस्थ्यदं दिव्यं	लोहि १४०	वाचाऽभिशाक्तो गोसेवा	व १.२२.२

वाचा संस्कृतया वर्ति
वाचि वाचस्पतये
विच्छिन्नवह्निसंधानं
विच्छिन्नवह्निसंधाने
विच्छिन्नसंशयो भूत्वा
वाचो यत्र विभिद्यन्ते
वाच्यग्नि मित्रमुत्सर्गे
वाच्यर्था नियताः सर्वे
वाच्यके जुहवति प्राण
वाच्यो यज्ञेश्वरः प्रोक्तो
वाजसनेयिनां प्रोक्ता
वाजे वाजे इति ह्युक्त्वा
वाजे वाजेऽथ मंत्रेण
वा-गो-वृषशालायां
वाणञ्च खड्गखेटं च
वाणीग्निश्च तथा शूद्रा
वाणिज्यकारयेद्वैश्य
वाचः पितृ तथा श्लेष्मा
वातातिभेदाश्चैताश्चतै
वाते पूतिगन्धे नीहारे
वादित्रगीतनृत्यद्यम्
वादित्रैर्नृत्यगीताद्यै
वादिनोनुमतेनैनां
वाधूलं मुनि आसीन
वानप्रस्थश्चतुर्भेदो
वानप्रस्थब्रह्माचारीय
वानप्रस्थयति ब्रह्मचारिण
वानप्रस्थयतीनां तु
वानप्रस्थाश्रम वर्णनम्
वानप्रस्थो जटिल
वानप्रस्थो दीक्षामेदो
वानप्रस्थो ब्रह्मचारी
वानप्रस्थो यतिश्चैव
वानस्पत्यं मूलफलं
वानस्पत्यं मूलफलं

कपिल ४१
बृ.या. ७.१०३
आश्व १.६८
आश्व १६.४
नारा ९.१३
दा १.४०
बृह ११.५४
मनु ४.२५६
मनु ४.२३
बृ.या. २.४४
ब्र.या. १.१८
वृ परा ७.२८०
आश्व २३.९३
वृ परा ५.२२
वृ हा ४.९५
शाण्डि ३.२९
मनु ८.४१०
बृ.या. २.२५
ब्र.या. १.१५
बौधा १.११.२४
व २.५.१२
व २.६.२६९
नारद १९.७
वाधू १
वृ परा १२.१५८
व २.६.४४२
या २.१.४०
व्या ७३
विष्णु ९५
व १.९.१
व १.२१.३५
शंख ५.५
वाधू १४४
मनु ८.३३९
वाधू १६५

वानस्पत्ये विकल्पः
वान्ताशुल्कामुखः प्रेतो
वान्तोविरिक्तः स्नात्वा
वापने लवने क्षेत्रे
वापिकूप सहस्रेण
वापिता यत्र नीली
वापीकूपजलानाञ्च
वापी कूपतडागादि
वापीकूपतडागानाम्
वापी कूप तडागानां
वापी कूपतडागाना
वापीकूपतडागानां
वापीकूपतडागानि
वापी कूपतडागानि
वापी कूपतडागानि
वापी कूपतडागानि
वापी कूपतडागानि
वापी कूपतडागेषु
वापीकूपतडागेषु
वपीकूपतडागेषु
वापी तटाकादावल्यं
वाप्यो वीथ्यः सभा कूपा
वामतश्चासनं दद्यात्
वामदक्षिणकर्णस्थ उपवीतं
वामदेवादयः सर्वे
वामदेवादयो विप्राः
वामदेवेन चात्मानं मन्त्रै
वामनः कुन्दवर्णः
वामनं ब्राह्मणं दृष्ट्वा
वामपाणौ कुशं कृत्वा
वामभागेस्मरेद्विष्णु
वाममावर्तनां केचिद
वामस्कंधे जनं न्यस्य
वामस्थानितरांस्तद्वत
वामहस्ते जलं धृत्वा

बौधा १.५.३३
मनु १२.७१
मनु ५.१.४४
वृ परा ५.१.२१
वृहस्पति ३९
आंगिरस २४
औ ९.१.७
अत्रिस ४४
अत्रिस ३८०
आप २.११
वृ हा ६.४३०
संवर्त १८६
दा ८
लघुयम ७०
लघुशंख ४
लिखित ४
वृहस्पति ६३
पराशर ७.५
पराशर १२.४९
अ १.४१
व २.६.५३०
वृ.गौ. १२.५१
वृ परा ७.८६
विश्वा १.५१
सम्बर्त ३
आंपू ५३७
वृ.गौ. ८.३७
वृ हा २.८६
बृ.गौ. २०.२७
लिखित ४४
भार ५.४४
कात्या १७.२१
भार ९.२३
आश्व २.२३
व्या ३३८

वामहस्ते तिलान् स्थाप्य	दा १४	वारुकः कर्मजः शारि श्रीपर्ण	आंपू ५०९
वामहस्ते दश प्रोक्ता	व २.३.९४	वारुणञ्च आवगाहञ्च	ल व्यास १.१३
वामाङ्कस्थाश्रिया सार्द्धं	वृ हा ७.९५	वारुणं तत्प्रघासं च	कण्व ६१५
वामांके संस्थितां	व २.६.८०	वारुणं योगिकं चैव	ल व्यास १.११
वामां सम्प्रतपेत्	वृ हा ८.२२९	वारुणाभ्यां रात्रिं	बौधा २.४.११
वामेन पुटेनैवत्वाम्	व २.३.१०९	वारेषु शुक्रभान्वोश्च	कण्व ६९२
वायव्यं काम्यपशवः	कण्व ५३५	वार्त्तिकं शशणं	व २.६.१७६
वायव्याभिमुखौ तत्र	वृ परा ११.२२९	वार्त्तिकं तण्डुलीयं	औ ९.३२
वायव्यास्त्रेण नववारं	विश्वा ५.३८	वार्त्ती त्रयीमप्यथ दंडनीति	नारद १८.११९
वायव्येन युता शुक्ले	वृपरा १०.२७०	वार्षिकं पिंडवर्जं	वृ परा ७.१०८
वायुबीजं स्मरेत्तत्र	व २.६.६२	वार्षिकांश्चतुरो मासान्	मनु ९.३०४
वायुभक्षो दिवा तिष्ठन्	या ३.३११	वार्षिकांश्चतुरो	वृ हा ५.३१५
वायुभूताश्च तिष्ठन्ति	औ ५.५	वार्हस्पत्यञ्च मैत्रञ्च	ब्र.या. ९.१८
वायुभूताश्च विप्राणां	ब्र.या. ४.३०	बालातपः प्रेतधूमो वर्ज्य	मनु ४.६९
वायुभूतास्तु गच्छन्ति	वाधू ५९	बालाहतं तथा वर्षं	व २.६.५४२
वायुरर्काष्ट तत नवम	ब्र.या. ८.८०	वाष्पाविलाः प्राप्तदुःखा	कपिल २००
वायुराकाशप्येतु मनश्च	विष्णु म ६८	वासः कौशेयवर्जं यद्	नारद १५.१४
वायुर्बाह्यो यथा देहे	वृ.या. ८.५१	वासदश्चन्द्रसालोक्य	वृ.गौ. ११.२६
वायुस्तस्मात्समाधाय	वृ.गौ. १२.४१	वासनस्थमनाख्याय	या २.६६
वायुः स्याज्जीवतः	वृ हा ७.४७	वासन्तं ग्रीष्मकालीयं	वृ परा ५.१३५
वायोः दशाक्षरं यत्तु	वृ हा ३.३४५	वासन्त शारदैर्मध्यै	मनु ६.११
वायोरपि विकुर्वाणाद्	मनु १.७७	वास पश्वन्नपानानां	नारद १५.४
वाय्वाग्निदिङ्मुखान्तासता	कात्या १७.२	वासश्चतुर्विधं प्रोक्तं	प्रजा १०६
वाय्वाग्निविप्रमादित्यमपः	मनु ४.४८	वासश्च परिधायौष्ठौ	व १.३.३९
वाराणस्यां कुरुक्षेत्रे	शंख १४.२९	वासना तन्तुना वाऽपि	वृ हा ६.८३
वाराणस्यां प्रविष्टस्तु	लिखित ११	वासांसि च यथाशक्त्या	वृ परा ७.१६४
वाराणस्यां सुखासीनं	व्यास १.१	वासांसि धावतो यत्र	वृ परा ८.१८१
वाराहपर्वते चैव गयां	औ ३.१३६	वासांसि मृतचैलानि	मनु १०.५२
वाराहं नारसिंहं च	वृ हा ५.१८६	वासांसि वाससी वासो	वाधू २०७
वाराह नारसिंहं च	वृ हा ६.१९	वासांसिन्दीप्रणाशे यो	वृ परा ५.९९
वाराही च महेन्द्राणी	ब्र.या. १०.१२३	वासिष्ठजोऽपि तं ब्रूयात्	वृ परा ३.२६
वारिणा भस्मना वापि	ब्र.या. २.१५८	वासुदेव इतिदन्तस्य	शाण्डि ५.६२
वारिदस्तृप्तिमाप्नोति	मनु ४.२२९	वासुदेव जगन्नाथ	शाता २.२४
वारिमध्ये मनुष्यस्य	नारद १९.२६	वासुदेवञ्च राजेन्द्र	वृ.गौ. ८.९०
वारिराजं विशांमध्ये	ब्र.या. १०.१३१	वासुदेव तमो अन्यानां	शंख ७.२०

वासुदेवं अनन्तं च सत्यं	वृ हा ७.२४५	विकरं निक्षिपेद्भूमौ	व्या १.४६
वासुदेवं जगन्नाथं	वृ हा ८.२७१	विकरं भूमिदातव्यं	ब्र.या. ४.११९
वासुदेवं नमस्कृत्य	शंखलि १	विकर्म कुर्वते शूद्रा	पराशर २.१६
वासुदेवं महात्मनं	विष्णु १.६०	विकर्मणां च सर्वेषां	व २.६.४४१
वासुदेवात्मकं सर्वं	विष्णुम २३	विकर्मस्थो भवेद् विप्र	वृ हा ५.५४
वासुदेवार्चन वर्णन	विष्णु ४९	विकलां भक्तिरत्रेति	शाण्डि ४.२११
वासुदेवेन दानेषु कथितेषु	वृ.गौ. ७.१	विकला व्याधिताश्चापि	बृ.गौ. १५.८७
वासुदेवो ह्यग्रीवस्तथा	वृ हा ५.११८	विकल्पत्वेन निर्दिष्टौ	लोहि ५०४
वासेभि समलंकृत्य	व २.४.४४	विकल्पेषु च सर्वेषु	वृ परा ७.३५७
वासो दद्याद्धयं हत्वा	मनु ११.१३७	विकासयेच्च मंत्रेण	वृ हा ३.२२१
वासोदशचन्द्रसालोक्य	मनु ४.२३१	विकास्य तस्य मध्य	वृ परा १२.२८९
वासोभिर्भूषणैर्भक्ष्यैर्धन	शाण्डि ४.४५	विकिरं तत्र विन्यस्य	ब्र.या. ४.१२२
वासोभिर्भूषणैः सम्यक्	वृ हा ५.१४२	विकिरं नैव कुर्वीत	आंपू १०७७
वासोभूषणपुष्पाणि गन्धं	शाण्डि ४.१५२	विकीर्य फलकापृष्ठे	शाण्डि ३.९२
वासोवत्तार्प्यवृकलानाम्	बौधा १.६.१३	विकुर्वाणाः स्त्रियो	वृ परा ६.५५
वासो वस्त्रदशां दद्याद्	वृ परा ७.२६९	विकृतव्य वहाराणां	वृ परा ८.६३
वास्तवे सानुगायेति	वृ परा ४.१६८	विकृष्यमाणो क्षेत्रे चेत्	नारद १२.२१
वास्तोष्यतेति वै सूक्तं	वृ हा ८.१०	विक्रयं मद्यमांसानाम्	वृ परा ४.२२४
वाहकानामलाभे तु	वृ हा ६.९४	विक्रयव्यपदेशेन	वृ परा २५८
वाहकेषु नलब्धेषु	व २.६.३२१	विक्रयाद्यो धन किंचिद्	मनु ८.२०१
वाहनं ये प्रयच्छन्ति	वृ.गौ. ७.३५	विक्रीणन्ति य एतानि	वृ परा ६.२८५
वाहयेद् दिवसस्याध	वृ परा ५.५	विक्रीणाति स्वतन्त्र	नारद ६.३५
वाहयेन्न पथि क्षेत्र में	वृ परा ५.१२९	विक्रीणीते तिलान्यस्तु	वृ परा ५.९०
वाहुम्यामुक्तरज्जुतगुणं	व १.१९.१६	विक्रीणीते परस्य स्वं	मनु ८.१९७
वाह्यमध्यात्मिकं वाऽपि	अत्रिस ३९	विक्रीणीते परार्थं योजपं	विश्वा ३.७१
वाह्यस्थित नासपुटेन	बृ.या. ८.१९	विक्रीतमापि विक्रेयं	या २.२५८
वाह्यस्थितं नासापुटेन	ब्र.या. २.५७	विक्रीयते परोक्ष यत्	नारद ८.२
वाह्यैर्विभावयेत्तिलगैः	मनु ८.२५	विक्रीय पण्यं मूल्येन	नारद ९.१
विंशतिवर्षतः पश्चात्	नारा ४.२	विक्रीय पण्यं मूल्येन	नारद ९.४
विंशति सचतुष्का	शंख २.७	विक्रेता स्वामिनेऽर्थं च	नारद ८.५
विंशतीशस्तु तत्सर्वं	मनु ७.११७	विक्रेतुर्दर्शनाच्छुद्धि	या २.१७३
विंशतेर्दिवसादूर्ध्वं	अत्रि ५.६७	विक्रोशन्त्यो यस्य	मनु ७.१४३
विंशतेर्वर्षतः पश्चात्	नारा ३.१९	विख्यातदोषः कुर्वीत	या ३.३००
विंशावृत्या तु सा देवी	ब्र.या. ४.५१	विगतक्रोधसन्तापो	नारद १८.२७
विंशोत्तरं शतपणानं	कपिल ८३१	विगतं तु विदेशस्थं	मनु ५.७५

विगुणोऽपि स्त्रीणां	नारद १८.२२	विष्णुमूत्रभक्षणे चैव प्राजापत्यं	संवर्त १८९
विघसाशी भवन्नित्यं	मनु ३.२८५	विष्णुमूत्रभक्षणे विप्रः	आप ५.१०
विघातयोगेन विप्रोद्धरण	ब्र.या. ११.५	विष्णुमूत्रांगारकेऽशास्थि	भार १५.७१
विघ्नकर्तुः श्राद्धकाल	कण्व २८२	विष्णुमूत्रोत्सर्गशुद्ध्यर्थ	मनु ५.१३४
विघ्नमाचरते यस्तु	आश्व १५.७९	वितत्य च कुशानेता	भार १८.३१
विघ्नस्तु तु हृतं चौरैर्न	मनु ८.२३३	वितानपुष्पमालाद्य	वृ हा ५.३२७
विचरन्ति महीमेतां	वृ.गौ. १०.४४	वितानादि सुशोभासं	व २.४.७६
विचित्रशुभ पर्यङ्के	वृ हा ३.३०५	वितानादि सुशोमाख्यां	व २.७.५६
विचित्राणि च भक्ष्याणि	वृ हा ५.५०१	विताने चन्द्रसूर्यो च	वृ हा ७.२८७
विजिह्व जाठरायाऽग्ने	वृ परा ६.११६	वित्त बन्धुर्वयः कर्म	मनु २.१३६
विज्ञातं हन्ति तत्पापं	वृ परा ४८०	वित्त वार्धुषिकामां तु	वृ परा १२.६२
विज्ञातव्यास्त्रयोऽप्येते	शंख २.८	वित्तापेक्ष भवेदिष्टं	लघुयम ६९
विज्ञाते परिपूर्णं तु	वृ.या. १.३५	वित्ते सति कृतं कर्म	आश्व १०.४४
विज्ञानस्य तु विप्रस्य	औ ९.७९	विदध्याद्धौत्र मन्यश्च	कात्या १५.३
विज्ञाय चार्थमेतेषां	ल व्यास २.७३	विदर्धितोऽपवीतानितद्	भार १५.५३
विज्ञायते हि त्रिभि	व १.११.४२	विदित्वा मुच्यते क्षिप्रं	वृ.या. २.१५६
विज्ञायते हि त्वागिन	व १.७.६	विदित्वैव सदा स्नायात्	वृ.या. ७.९०
विज्ञायते हि व	व १.२०.३७	विदिशां देवपत्नीनां	लोहि ६४९
विज्ञायते हीन्द्रस्त्रि	व १.५.८	विदुर्यस्यैव देवत्वं	नारद १८.५०
विज्ञायते ह्यागस्त्यो	व १.१४.११	विदुषा ब्राह्मणेनेदं	मनु १.१०३
विज्ञायते ह्येकेन	व १.१५.८	विदेशगमनं चैव न	व्या ३३३
विज्ञाय तत्त्वं एतेषां	औ ३.१०४	विदेश मरणेऽस्थीनि	कात्या २३.२
विज्ञेयानि च भक्ष्याणि	वृ हा ४.११५	विदेशस्थे श्रुताहस्तु	वृ परा ७.१४५
विट्कं शिबिरं वेश्म	भार २.६९	विद्धप्रजननः श्वित्रि	वृ परा ७.६
विद् चास्य प्लवते नाप्सु	नारद १३.१०	विद्धौजामप्यकर्मण्यं	शाण्डि ३.१२५
विट्छौचं प्रथमं कूर्यान्	वाधू १३	विद्यन्ते च सुतृप्तानि	वृ परा २.९४
विट्शूद्रयोरेवमेव	मनु ८.२७७	विद्यमानत्रयाणां स्यात्	वृ परा ७.५२
विटस्व अध्ययन	बौधा १.१०.४	विद्यमानधनैः यैः तु	वृ.गौ. ५.५४
विडालकाकाद्युच्छिष्टं	मनु ११.१६०	विद्यमानः पिता यस्य	वृ परा ७.१४२
विडालकाकाद्युच्छिष्टं	अत्रिस २९३	विद्यमानं मन्त्रमुखात्	लोहि १३५
विडालमूषकोच्छिष्टे	संवर्त १९०	विद्यमाने तु पितरि श्राद्ध	वृ परा ७.५३
विड्वराहखरेऽर्च्यं	मनु ११.१५५	विद्यमानेऽपि लिखिते	नारद २.६८
विणान् वा निघ नाशार	कपिल ३९	विद्यमाने स्वहस्ते	व २.६.२११
विण्मा (मू) त्रोत्सर्जना	भार ३.१	विद्यमानो मन्यमानः	कपिल ८२७
विष्णुमूत्रकरणात्पूर्वमाद	वाधू १७	विद्यया याति विप्रत्वं	अत्रि १४१

विद्ययैव समं कामं	मनु २.११३	विद्यास्त्रीवित्त राज्यादि	वृ हा ३.२७७
विद्याकर्मवयोबन्धु	या १.११६	विद्युतश्च तुरीयं तु	वृ परा ४.१९
विद्याकर्मादिभिर्हीना दूषये	कपिल ८४६	विद्युता वृक्षपातेन	वृ परा ७.१५०
विद्या कर्म वयो बन्धु	औ १.४९	विद्युतोऽशनिघाश्च	मनु १.३८
विद्यागुरुष्वेदेव	औ ३.२३	विद्युत् पातादि दाहाभ्यां	वृ परा ८.१५०
विद्यागुरुष्वेदेव	मनु २.२०६	विद्युत्स्तनितवर्षेषु	मनु ४.१०३
विद्या जपश्च चिन्ता	बृह ९.३८	विद्युत्स्त नितवर्षासु	औ ३.६०
विद्यातपः समायुक्तो	व २.४.७	विद्युद् वर्णो हृषीकेश	वृ हा २.८८
विद्यातपः समृद्धेषु	मनु ३.९८	विद्वत्स्तुत्यो राजमान्यो	आंपू ५९९
विद्यातपोभ्यां संयुक्तं	व १.२६.२०	विद्वद्बहुज्ञातिशिष्यबन्धू	कपिल ५९८
विद्यातपोभ्यां हीनेन	या १.२०२	विद्वद्भि सेवित सद्भि	मनु २.१
विद्यात्वैतपोमुखान् पुत्रान्	वृ परा ७.३२३	विद्वद्भोज्यमविद्वांसौ	अत्रिस २३
विद्या त्वै ब्राह्मणं	व १.२.१४	विद्वद्भोज्यान्य	व १.३.१३
विद्यादानफलं चैव	वृ परा १०.१२	विद्वन्न दानं तत्सर्व	वृ परा १०.३२२
विद्यादारपरिभ्रष्टो	ब्र.या. ८.२९२	विद्वन्मतमुपादाय	कात्या २९.१२
विद्यादीन् ब्राह्मण कामान्	कात्या १०.१२	विद्वांतु ब्राह्मणो दृष्ट्वा	मनु ८.३७
विद्याधनं तु यद्यस्य	मनु १.२०६	विद्वान् धूमादिरेको	वृ परा १२.३२८
विद्याधिक्यं च संप्रेक्ष्य	कपिल ८४४	विद्वाननग्निको विप्र	वृ परा ८.२३
विद्यापुस्तकहारी च किल	शाता ४.२२	विधवागमने पापं	बृ.य. ४.४३
विद्या प्रनष्टा पुनरभ्युपैति	व १.१.३९	विधवा चैव या नारी	बृ.य. ४.३९.
विद्या ब्राह्मणमेत्याह	मनु २.११४	विधवानाहिताग्नीनां जनानां	लोहि ५२०
विद्या मोक्षप्रदा च	वृ परा १२.३३८	विधवापुनरुद्वाहं यथेच्छं	नारा ७.९
विद्याभक्त्या प्रयच्छेद्यः	वृ परा १०.२३७	विधवाभिरनाथाभि वस्त्राय	कपिल ९५६
विद्यायाः पञ्चभूतानि	शाण्डि १.६३	विधवाया नाधिकारः	लोहि १८९
विद्यार्थी प्राप्नुयाद् विद्यां	या ३३०	विधवायां नियुक्तस्तु	मनु ९.६०
विद्यार्थी लभते विद्यां	अत्रिस ३९८	विधवायां नियोगार्थे	मनु ९.६२
विद्यावन्तं यशस्वन्तं	ब्र.या. ८.१००	विधवायास्तदृशस्य	लोहि ५७५
विद्या वित्तवयः संबंधः	व १.१३.२४	विधवावर्णिविधुरदूरभार्याय	कपिल ७६२
विद्याऽविद्याविचारं	बृह १२.४७	विधातपोभ्यां संयुक्तं	अत्रि २.१६
विद्याविधौशिरः पश्चाद्	भार १३.२२	विधाता शासिता वक्ता	मनु ११.३५
विद्याविनयसम्पन्ने	व्यास ४.५०	विधानतस्तु प्रभवेत् त्तु	कपिल ८८६
विद्याविनीतः सम्पन्नो	ब्र.या. ८.२९७	विधानमत्तत्थाख्यातं	भार १८.१११
विद्या शिल्पं भृति सेवा	मनु १०.११६	विधानमेतन्नोदेयं रहस्य	भार ६.१८१
विद्याश्रीधनभाग्यैस्तु	लोहि ६३	विधानं कृष्णमंत्रस्य	वृ हा ३.२८६
विद्या सिद्धिमवाप्नोति	वृ हा ३.३८५	विधानं नारसिंहस्य	वृ हा ३.३४१

विधानं ब्रूहि पुरतो कर्मणां	लोहि ६३२	विधिवान्नित्यशो विप्र	वृ परा ६.७८
विधानं सर्वफलदं	वृ हा ३.२०५	विधिहीने तथा पात्रे	दक्ष ३.२७
विधानेन ततो यत्ना	कण्व ५३९	विधुनोति हि यः केशान्	पराशर १२.१४
विधानैरधुनाऽमुष्य	वृ हा ३.२३२	विधुष्यतु हतं चौरैर्न	नारद ७.१८
विधाय प्रत्यहं पाकं	विश्वा ८.२३	विधूमे न्यस्त मुसले	शंख ७.२
विधाय प्रोषिते वृत्तिं	मनु ९.७५	विधूमे सन्नमुसले	मनु ६.५६
विधाय वृत्ति भार्यायाः	मनु ९.७४	विधूलं मुनिमासीनं	वाधू १
विधायाहत्य बहुशः पुनः	शाण्डि ३.९५	विधेः प्राथमिकादस्माद्	वृ हा ६.२४२
विधि ख्यातो न सन्देहो	आंपू ६५०	विनयावनताऽपि स्त्री	कात्या १९.८
विधिं तस्य प्रवक्ष्यामि	ल हा ४.२३	विनश्येत्पात्रदौर्बल्य	वृहस्पति ५९
विधिनाऽथकृतोदर्थः	भार १८.१२५	विनष्टं सुक्र सुवं	कात्या २०.१९
विधिनाधायित्वव	व २.१.३९	विनागृहीतोयः प्रयुक्त	भार १८.१२६
विधिनायश्चात्तश्राद्ध तत्परं	कपिल २८०	विना जुगुप्सां हीघोरां	कपिल ८००
विधिनैव प्रकुणीतं	आपू ७१६	विनादर्भेण यत्कर्म	ल व्यास २.४
विधिनैव प्रतप्तेन	वृ हा ५.३८	विना दर्भैश्च मंत्रैश्च	व्या ३७६
विधिनोदक सिद्धानि	शंख १८.६	विनाऽदभिरप्सु वाऽप्यार्तः	मनु ११.२०३
विधि पंचविधस्तूक्त	नारद १६.७	विना द्विरप्सु वा कुर्यात्	औ ९.८६
विधिप्रयत्नरचिता	आंपू ९१५	विना न कथयेत्स्वप्नं	शाण्डि ५.५३
विधि प्राणाऽग्निहोत्रस्य	वृ परा १.५३	विनानन्यान्जपेन्मात्रा	भार ७.१०८
विधिं प्राणाग्निहोत्रस्य	वृ परा ६.१२३	विना पाकं तमेकं तु कार्या	लोहि ४१७
विधिं विसृज्य यच्छौचं	भार ३.२०	विनापि साक्षिभि लेख्यं	या २.९१
विधियज्ञाज्जपयज्ञो	बृ.या. ७.१३६	विना प्रवेशं यदि ते	आंपू ३५३
विधियज्ञाज्जपयज्ञो	बृह १०.१४	विनाभ्युनुज्ञांतुष्णीकं	लोहि ५०९
विधियज्ञाज्जपयज्ञो	मनु २.८५	विनाभ्युनुज्ञांभर्तुया	लोहि ६५२
विधियज्ञाः पाकयज्ञा	वृ परा ४.५९	विना मासेन यः श्राद्ध	ब्र.या. ४.९२
विधिरेष विवाहस्य	आश्व १५.४२	विना मूर्द्धावसिक्तन्तु	शाण्डि ३.३७
विधिर्होष द्विजातीनां	वृ हा ५.७२	विनायकः कर्म विघ्नसिद्ध्यर्थं	या १.२७१
विधिवत्कीपलादाने	बृ.गौ. १७.८	विनायकस्य जननीं	या १.२९०
विधिवत् प्रणव ध्यान	वृ परा १२.२५६	विनायकादिशान्तीनां	वृ परा १.५९
विधिवत् प्रतिगृह्णाति	मनु ९.७२	विना यज्ञोपवीते तथा	शंख १०.१४
विधिवत् सर्वदानानि	वृ परा १.५७	विना यज्ञोपवीतेन	भार १६.१०
विधिवदर्चयेत् सर्वान्यो	वृ परा ४.१४९	विना यज्ञोपवीतेन	वृ परा ८.२९६
विधिवदर्पयेदन्नं देवं	व २.६.२७३	विना यज्ञोपवीतेन	व्या १९९
विधिवद्बर्ह्नि संस्थाप्य	ब्र.या. ८.१०	विना रौप्य सुवर्णेन	शंख १३.१३
विधिवद्वायु लिंगश्च	वृ परा ११.९४	विना रौप्य सुवर्णाभ्यां	वृ परा २.१८५

विना विध्युक्तमार्गेण	भार ४.४०	विपरीतानियोग्यास्यु	भार ७.२७
विनाश्य स्वकुलं याति	वृ.गौ. ६.१३१	विपर्यये कुक्कुटः	बौधा १.८.१२
विना श्रद्धांप्रमादाद्वा	वृ परा ४.१०३	विपाकः कर्म्मणां प्रेत्य	वि.या ३.१३३
विना श्राद्धं विना यज्ञं	प्रजा १.४४	विप्रक्षत्रियविदशूदा	ब.य. ५.३
विना स्नानेन यो भुंक्ते	वाधू ७५	विप्रक्षत्रियविड्योनि	बृ.या. ४.७४
विनियुक्तं तत्र सममात्र	कपिल ९७७	विप्रः क्षुत्कृत्य निष्ठोव्य	वृ परा ८.२९८
विनियोगं क्रमेणैव	भार १७.२	विप्रजन्म समासद्य	कण्व ४२८
विनियोगं च संस्मृत्वा	भार १७.२९	विप्रत्वप्रकृतिं याति	कण्व २७८
विनियोगः पयःप्पाने	भार ६.१३३	विप्रत्वं दुर्लभं प्राप्तं वै	बृ.गौ. १९.४२
विनियोगं ब्राह्मणं च	बृ.या. १.३२	विप्रत्वं परमाप्नोति वृषलो	कपिल ८८४
विनियोग समुद्दिष्ट	बृ.या. २.५	विप्रत्वं श्राद्धसंध्याभ्यां कलौ	कपिल २९६
विनिर्गतं स्थितं यत्त	भार १५.३०	विप्रदण्डोद्यमे कृच्छ्रः	या ३.२९२
विनिर्वर्त्य यदा शूदा	पराशर ३.५३	विप्रदुष्टां स्त्रियं चैव	या २.२८१
विनीवर्त्तं यामितिवयं येना	ब्र.या. ८.३५१	विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता	मनु ११.१७७
विनिसृते ततः शल्ये	देवल ५१	विप्रः पंचाशतं दंड्य	नारद १६.१५
विनीततराणामुच्छिष्टं	वृ हा ६.३५४	विप्रपादच्युतैर्वापि तोयैः	बृ.गौ. २०.३३
विनैतस्तु ब्रजेन्तित्यं	मनु ४.६८	विप्रपादविनिर्मुक्त	व्या ३९२
विनैव वेदाध्ययनं ब्रह्म	कपिल ९४०	विप्रपादाभिषेके तु कर्त्ता	व्या २४४
विन्दुप्राणाविसर्गैक्यं	विश्वा ३.५	विप्रापादोदकक्लिन्ना	व्यास ४.९
विन्दुमध्यगतो नादो	वृ परा १२.३१५	विप्रपीडाकरं छेद्यमंगम	या २.२१८
विन्दैत विधिवत्	संख ४.१	विप्रप्रदक्षिणा याचां	व्या ११९
विन्यसेत् कुशमूलानां	आश्व २.१६	विप्रप्रमाणं पूर्वोक्तं	वृ परा ११.२८०
विन्यसेत्ताञ्छमीपर्णैः	आश्व ९.१४	विप्रप्रसादात् धरणीधरः	वृ.गौ. ४.५९
विन्यसेत्ताञ्छमीपर्णैः	व २.३.३२	विप्रब्रुवो वा विप्रो वा	वाधू ५३
विन्यसेदक्षनासायं वासुदेवं	विश्वा २.१६	विप्र भोज्यं पिण्डदानं	प्रजा १०
विन्यसेद् वास्तु मंत्रोऽयं	वृ परा ११.११५	विप्रमग्रासने कृत्वा	बृ.गौ. १७.५०
विन्यस्य चक्रन्यासं	वृ हा ३.२२०	विप्रमग्रासने कृत्वा	बृ.गौ. १८.६
विन्यस्य मध्यमे त्वेकं	नारा ५.४४	विप्रयोगं प्रियेशचैव	मनु ६.६२
विन्यस्य मंत्रवर्णानि	वृ हा ३.३०४	विप्रयोगे शरीरस्य	वृ.गौ. ८.१
विन्यस्य मूर्ध्नि	ल व्यास २.२४	विप्ररत्नापहारी चाप्यनपत्यः	शाता ४.२८
विपरीत क्रमेणाश्न	वृ परा ९.३	विप्रवद्विप्रविन्नासु	व्यास १.७
विपरीत पित्र्येषु	बौधा १.७.३	विप्रवादपरीवादं न वदेत्	बृ.गौ. ८.१००
विपरीतां दण्डयेद्द्वै	वृ हा ४.२६१	विप्रवान्तावग्निनाशो पिण्डे	आंपू ९४६
विपरीतं पितृभ्यः	बौधा १.५.८	विप्रशापहताये च अग्नि	ब्र.या. ५.२९
विपरीतेषु पत्रेषु	व्या ३.४७	विप्रः शुध्यत्यपः	मनु ५.९९

विप्रश्च सम्माताचार	वृ परा ८.३०३	विप्रान् निमन्त्रयेत्च्छाब्द	आश्व २४.१५
विप्रश्चैव स्वयं कुर्याद्	आश्व १.१६५	विप्रान् मूर्च्छाभिषिक्तो	या १.९१
विप्रसंध्याकारकोऽपि	कण्व २८०	विप्राभावे धनाभावे	लोहि ३३८
विप्रसंध्यारोधनस्य	कण्व २८१	विप्राभ्यनुज्ञया कुर्यात्	आंपू १४४
विप्रसंध्याविधातस्य	कण्व २८५	विप्रायद द्याच्च	वृहस्पति १०
विप्रसेवैव शूद्रस्य	मनु १०.१२३	विप्रायाऽऽचमनार्थं	व १.२९.१८
विप्रस्तु ब्राह्मणी गत्वा	संवर्त १५४	विप्राहिक्षत्रियात्मानो	या १.१५३
विप्रः स्पृष्टो निशायाञ्च	यम ६३	विप्रुषोष्टौ क्षिपेदूर्ध्वं	वाधू ११८
विप्रः स्पृष्टो निशायां	बृ.य. ३.६९	विप्रेणामन्त्रितोऽविप्रः	वृ परा ८.१८६
विप्रस्य करणं लक्ष्मी	कण्व ५८४	विप्रे प्रीणाति तद्वत्स	अ ९
विप्रस्य जातमात्रस्य	कण्व ५०२	विप्रेभ्यः कलशान्	आश्व १०.६१
विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु	मनु १०.१०	विप्रे मैथुनिनि स्नानं	वृ परा ८.२७९
विप्रस्य दक्षिणे कर्णे	पराशर ७.४०	विप्रे संस्थे व्रतादर्वाक्	वृ परा ८.२१
विप्रस्य दक्षिणे कर्णे	वृ परा ८.२९९	विप्रैश्चतुः षष्ठिसंख्यैः	कपिल ८८९
विप्रस्य दंडं पालाशः	भार १५.१२२	विप्रो गर्भाष्टमे वर्षे	व्यास १.१९
विप्रस्य पादग्रहणं	और ३.३०	विप्रो दशाहमासीत	संवर्त ३८
विप्रस्य पीतमित्युक्तं	भार १५.११६	विप्रोद्वासनतः पश्चाद	कपिल २४७
विप्रस्य वा पृथक् पंक्ति	कपिल ३३९	विप्रो विप्रेण संस्पृष्ट	अंगिरस ८
विप्रः स्वामपरे द्वे तु	वृ परा ६.३७	विप्रोविप्रेण संस्पृष्ट	आप ५.१४
विप्रहस्तच्युतैस्तोयै	बृ.गौ. १८.९	विप्रोष्य पादग्रहणमन्वहं	मनु २.२१७
विप्रहस्ते तथा काष्ठे	ब्र.या. ४.८४	विप्रोष्य स्वजनीं	वृ परा ८.२४१
विप्रहस्तेन मंत्रेण स्पर्शनं	कपिल २११	विफलं मन्त्रतेजस्स्यात्सत्यं	विश्वा १.१०२
विप्रांश्च भोजयेद्	व २.३.१५	विभक्तदायानपि	बौधा १.५.११४
विप्राणामात्मनश्चापि	ब्र.या. ४.१०४	विभक्तं भ्रातरं दीनं दरिद्र	कपिल ६९५
विप्राणां अग्निं होत्रस्य	वृ परा ६.१२९	विभक्तष्वनुज जातो	वृ हा ४.२५१
विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं	व्या ३५९	विभक्ताः पुत्रतश्चातिधन	कपिल ७४२
विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं	मनु २.१५५	विभक्ता भ्रातरः सर्वे	वाधू २१०
विप्राणां भोक्तुकामाना	बृ.गौ. १४.२६	विभक्ताः सह जीवन्तो	मनु ९.२१०
विप्राणां भोजनात्पूर्वं	आंपू १०७२	विभक्तास्ते खलु तदा	लोहि २२८
विप्राणां वेदविदुषां	मनु ९.३३४	विभक्तेषु सुतो जात	या २.१२५
विप्रातिथ्यसंख्ये तु	बृ.गौ. १७.१८	विभक्त्यैव प्रथमया	कण्व ११२
विप्रातिथ्ये कृते राजन्	वृ.गौ. ६.५४	विभजरेन् सुता पित्रोः	या २.११९
विप्रा निन्दन्ति यज्ञान् च	वृ.गौ. ३.३१	विभर्ति सर्वभूतानि	मनु १२.९९
विप्रानुज्ञायतिरपि	आंपू १४५	विभागधर्मसन्देहे	नारद १४.३६
विप्रानेवाचयेद्भक्तया	बृ.गौ. २१.२६	विभागनिहनवे ज्ञाति	या २.१५२

विभागं चेत् पिता कुर्यात्	या २.११६	वित्त्वपत्र तथा पत्री	ब्र.या. १०.१४२
विभागा ज्ञातयस्सर्वे भिन्न	कपिल ४८८	विवत्सान्यवत्सयोश्च	बौधा १.५.१५७
विभागेच्छा पालकौर	लोहि ७८	विवंभक्त्या स्मरस्थ्य	भार ५.४८
विभागे भ्रातरस्तुल्या	आंपू ४१२	विवर्णा दीनवदना	व्यास २.५२
विभागोऽर्थस्य पित्र्यस्य	नारद १४.१	विवस्त्रं स्वामिनम् इमम्	वृ.गौ. ५.४४
विभीतकेथ समिधः	भार ९.४३	विवहेन्मोहतो ज्ञाते	आंपू २०६
विभूतिधारणे मानस्तोकेऽयं	आश्व १.५९	विवहेरन् महानार्थ	आंपू ३५५
विभृयाद् वेच्छतः	नारद १४.५	विवादशून्यदत्ता या धरणी	कपिल ६४५
विभृयादुपवीतन्तु	वृ हा ५.३९	विवादे तादृशे शक्तः	कपिल ८६८
विभ्राद् बृहच्च इत्यादौ	वृ परा ११.१९५	विवादेत्वधिकारित्वं न	कपिल ६५१
विभाडित्यनुवाकेन सूक्तेन	बृ.या ७.५४	विवादे परिनिर्जित्य	औ ९.९४
विमानवरमारूढं पितृलोकं	वृ.गौ. ६.१६०	विवादे शास्त्रतो जित्वा	वृ परा ८.२८२
विमानैः सारसैयुक्तमारूढं	बृ.गौ. १७.२७	विवादे सोत्तरपणे	नारद १.५
वि मांसु तु विनिक्षिप्य	व २.६.५१६	विवादो नात्र कोऽप्यस्ति	आंपू १०००
विमुक्तपापान् आलोक्य	वृ.गौ. २.१०	विवादोऽयं परं त्वत्र तन्मात्र	कपिल ४२१
विमुक्ताः सर्वपापेभ्यः	वृ परा ५.१६८	विवाह चौलोपनयने	दा १३२
विमुक्तो नरकात्	पराशर ९.६१	विवाहदत्तमथवा यज्ञ	आंपू ३२७
विमृश्य धर्मविद्भिश्च	वृ हा ४.२६०	विवाहन्वनमध्ये तु	व २.४.९५
विम्बं शिगु च कालिंगं	वृ हा ८.१३१	विवाह वर्णनम्	विष्णु २४
विम्बानि स्थापयेद्	वृ हा ४.२०६	विवाहव्रतं बंधोर्ध्व	दा ७९
वियोगः सर्वकरणैर्गुणैः	विष्णु म ७०	विवाहव्रतयज्ञेषु	दा १३४
विरजं चतुर्गुणं कृत्वा	बृ.या. ८.३४	विवाहव्रतयज्ञेषु	दा १३१
विरजां संस्मरेदप्सु	व २.६.४६	विवाहश्चेद् भवेद् रात्रौ	आश्व १५.६१
विरतं च महापापात्	शाण्डि १.११०	विवाहाग्निमुपस्थाप्य	व २.४.८४
विराद् सम्प्राद् महानेष	वृ परा १२.३४३	विवाहात्पूर्वं दिवसे	कण्व ५५५
विराद् सुताः सोमसदः	मनु ३.१९५	विवाहात् प्राक् पिता	वृ परा ६.५९
विरुद्धं वर्जयेत् कर्म	या १.१३९	विवाहादि कर्मगणो	कात्या ५.५
विरोधान्विविधान् सम्यक्	लोहि २८४	विवाहादिविधि स्त्रीणां	नारद १३.१
विरोधी यत्र वाक्यानां	कात्या २८.१७	विवाहादौ न कर्तव्यं	ब्र.या. ८.१८२
विलग्नशुक्लकलीब	व १.११.१५	विवाहे खलयज्ञे च	वृ परा ५.१७८
विलसितकनकप्रभं	विश्वा ६.२१	विवाहे च उपनयने	आश्व १९.४
विलिप्त शिरसस्तस्य	वृ परा ११.१२	विवाहे च तथा क्षौरे	ब्र.या. ८.२७६
विलोकनादिना कुर्यात्	कण्व ४७५	विवाहे चैव निर्वृत्ते	लिखित २५
विलोक्य भर्तुर्वदनं	व्यास २.४१	विवाहे चैव संवृत्ते	लघुयम ८६
विलोभयन्सदापृष्ट	शाण्डि ३.१५७	विवाहे चोपनयने	आश्व १५.७१

विवाहे चोपनयने	व्या १८	विशुद्धा विजितक्रोधा	व २.५.८०
विवाहे नियतं नान्दी	आश्व १८.३	विशुद्धैरिन्द्रियैरेव बोद्धुं	शाण्डि ५.२०
विवाहे वितते तन्त्रे	अत्रि ५.४७	विशेषः कोऽपि भूपश्च	आंपू २९२
विवाहे वितते यज्ञे	आप ७.९	विशेषण तु विद्वांसः	कपिल ५११
विवाहोत्सवयज्ञेषु	आप १०.१५	विशेषतः क्रतुषु च निरोधे	कपिल ८३३
विवाहोत्सवयज्ञेषु	आश्व १५.७२	विशेषतीर्थं सर्वेषां	बृ.गौ. २०.७
विवाहोत्सवयज्ञेषु	पराशर ३.३४	विशेषपतनीयानि	वृ हा ६.१८८
विवाहोत्सव यज्ञेषु	वृ परा ८.४६	विशेषपूज्यप्रतिपादनाय	वृ परा १०.३४२
विवाहोत्सवयज्ञेषु	वृ परा ८.३०६	विशेषं परिप्रच्छुः	लोहि २
विवाहोत्सव यज्ञेष्वन्	अत्रिस १८	विशेषस्तु पुनर्ज्ञेयो	शाता ६.२८
विवाहो मन्त्रतस्तस्या	व्यास १.१६	विशेषात्कर्मकालेषु	कण्व ४७४
विविधं परमं भूप	वृ.गौ. ६.३५	विशेषाद् बुधयुक्तेषु	वृ परा १०.३५२
विविध वाग्वश्चनार्थ	वृ परा १.३३	विशेषानयनं कार्या पश्चात्	कपिल ५७८
विविधाश्चैव संपीडा	मनु १२.७६	विशेषेण प्रकर्तव्या	कण्व ६७२
विवृणोति च मन्त्रार्था	बृ.गौ. १४.६०	विशेषेण प्रदत्ताश्चेत्	कपिल ४६५
विवृद्धा यत्र पुरतः	प्रजा १६०	विशेषेण ब्रह्ममेधा	कण्व ३९०
विशनात् सर्वभूतानां	बृह ९.८१	विशेषेण ब्रह्मविद्या	कण्व ४८२
विशालवक्षसं रक्तहस्त	वृ हा ३.२५६	विशेषेण श्रद्धादिने	कपिल ५२
विशिराः पुरुषः कार्यो	नारद १८.१०३	विशेषेण समाख्यातः	कपिल ७३२
विशिष्टकुलसंजातसंस्कारै	शाण्डि १.९४	विशेषेणाधुना प्रोक्ता	आंपू ९३७
विशिष्टभोज्यमायात्	शाण्डि ४.१३३	विश्रामयति यो विप्रं	वृ.दौ. ७.२६
विशिष्टं कुत्रचिद्बीजं	मनु ९.३४	विश्रामासनं संस्थाप्य	ब्र.या. ८.२४८
विशिष्टं ज्ञान सम्पन्नं	व २.६.४५८	विश्वन्याप्यचिदात्मना	विश्व ६.४९
विशिष्टं वस्तु संपाद्य	शाण्डि ४.५१	विश्वरूपं नमस्कृत्य	आंउ १.१
विशिष्टं वैष्णवं नाम	वृ परा २.१०४	विश्वरूपा विशेषेण	भार ६.५९
विशिष्टान् वैष्णवान्	वृ हा ६.७९	विश्वरूपो मणिर्यद्वत्	वृ परा १२.३२२
विशिष्टो वैष्णवोविप्रो	व २.६.१९५	विश्वस्तया धरादान्	कपिल ७५४
विशीर्णानि सरंध्राणि	भार १४.१६	विश्वास्तया समासीत	कपिल ६२१
विशील कामवृत्तो वा	मनु ५४.१५४	विश्वस्तया समासीनो	कपिल ६२०
विशुद्धकोष्ठवृद्धाग्नि	शाण्डि ४.१२५	विश्वस्ता प्राप्य भवति	कपिल ६३६
विशुद्धतीरभूभागे	शाण्डि २.२२	विश्वस्तायास्सनाथायाः	लोहि ४८५
विशुद्धदन्तवदनो	शाण्डि ३.६०	विश्वस्थान प्रशस्तेति	भार १५.२५
विशुद्धवदनो मन्त्री	शाण्डि ४.१६३	विश्वस्य जगतो मित्रं	बृ.या. ४.५
विशुद्धागमसंप्राप्त धरणीं	कपिल ६४४	विश्वाहंसामभिन्नत्वात्	भार १८.४७
विशुद्धान्वयसंजातो	वृ परा ६.३१३	विश्वानभक्तिभाजांतु	भार १०.३

विश्वानीत्यष्टभि पादै	आश्व २.४९	विषुवतं विजानीयात्	वृ परा ६.१०२
विश्वान् देवान् पितृ	आंपू ७९०	विषुवायनसंक्रांति	भार ११.१२०
विश्वामित्र ऋषिश्छन्दो	भार ६.३४	विषुवेत्यापि येनैव	वृ.गौ.९.६७
विश्वामित्रऋषिश्छन्दो	दक्ष २.४०	विष्ठावर्गेषु पापिष्ठो	वृ.गौ. ९.१६
विश्वामित्रऋषिश्छन्दो	भार १७.१०	विष्ठा वादधुषिकस्यान्	वृ.गौ. ११.२३
विश्वामित्राश्च वालौ	भार १८.४५	विष्णवर्षितचतुर्भांग	वृ हा ४.१२५
विश्वामित्रो जमदग्नि	भार ६.३१	विष्णवे गुरवे वापि	वृ परा १२.३४०
विश्वामित्रो जमदग्नि	भार १९.११	विष्णवे वामनायेति	वृ हा ३.३७३
विश्वामित्रो जमदग्नि	वृ परा २.६६	विष्णुक्रमाणं क्रमणं	बृ.गौ. १५.६६
विश्वेदेवा अपूज्या	ब्र.या. ६.१३	विष्णुक्रान्तञ्च दूर्वाञ्च	वृ हा ४.७२
विश्वेदेवास आगत	ब्र.या. ४.७२	विष्णुचक्रांकितो विप्रो	वृ हा ८.२९५
विश्वेदेवाः सकृन्मंत्र	आश्व २३.२०	विष्णुञ्च दक्षिणे कुक्षौ	वृ.गौ. २.३.५२
विश्वेभ्यश्चैव देवेभ्यो	मनु ३.९०	विष्णुध्यान मनाः कुर्यात्तत	वृ परा ७.३०९
विश्वेसां कर्मणां कर्त्ता	बृह ९.९२	विष्णुध्यानरतानां च	वृ परा ८.६
विश्वेषां चैव देवानां	वृ परा ४.२३	विष्णुना तु पुरा गीतमेवं	वाधू १९०
विश्वैश्च देवैः साध्यैश्च	मनु ११.२९	विष्णुन्तु दक्षिणे पूज्ये	ब्र.या. २.१०७
विश्वैसि वैश्वानर	बृह ९.१४४	विष्णुपत्नी नमस्तभ्यं	विश्वा १.४५
विषध्नै (रुदकै) रगदै	मनु ७.२१८	विष्णु पादोदभवं तीर्थं पीत्वा	वाधू ३२
विषदः स्याच्छर्दिरोगी	शाता ३.९	विष्णुप्रकाशकै राज्यं	वृ हा ७.२९
विष परीक्षा वर्णनम्	विष्णु १३	विष्णुब्रह्मेश्वरास्तेषु	वृ परा १२.२३१
विषप्रदास्यद रण्डोऽयं	लोहि ६८२	विष्णु भू वरुणो यत्र	वृ परा १०.२९७
विषमेकाकिनं हंति	वृहस्पति ४७	विष्णुमुद्दिश्य विप्रेभ्यो	वृ परा १०.३४८
विषया सक्त चित्तोहि	दक्ष ७.१२	विष्णुं निरञ्जन शान्तं	बृ.या. २.१०७
विषयेन्द्रियसंयोग	दक्ष ७.१३	विष्णुं वा भास्करं	बृ.या. ७.९९
विषयेन्द्रियसंरोध	या ३.१५८	विष्णुं समर्चयेद्यस्तु	ब्र.या. २.११६
विषयैरिन्द्रियैर्वीपि न ये	विष्णु म ६४	विष्णुं सम्पूजयेद्देवं	व २.३.३९
विषयैस्याभिभवो न	वृ परा ११.१७३	विष्णुरादिरयं देव	वृ परा ४.११६
विषवेगक्रमापेतं	नारद १९.३८	विष्णुरूपोऽतिथि सोयं	वृ परा ४.१९७
विषस्य पलषड्भाग	नारद १९.३६	विष्णुब्रह्मा च रुद्रश्च	बृ.या. ७.९८
विषाग्निदां पतिगुरू	या २.२८२	विष्णुः सुरेशो घृति	वृ परा १०.८२
विषाग्नि दाहनं चैव	वृ हा ६.१८१	विष्णुसूक्तेश्च जुहुयाद्	वृ हा ५.४२९
विषाग्निश्यामशवला	संवर्त १७०	विष्णुस्मरण संशुद्धो	वृ परा २.१४५
विषादप्यमृतं ग्रह्य	मनु २.२३९	विष्णु स्मृत्वा क्षिपेत्	वृ परा ७.३१६
विषादिनिहता ध्वन्ति	शाता ६.७	विष्णो निवेदितं हव्यं	वृ हा ८.२७५
विषाद्युपहतानाञ्च	औ ६.५९	विष्णोनुकम्बेति सूक्तेन	व २.३.१८

विष्णोः प्रसाद तुलसी	वृ हा ८.३१७	विहितो यस्य कस्यापि	लोहि २६२
विष्णो रजतया यस्तु	वृ हा ८.१६३	विहिसोतादि सूक्तेन	वृ हा ६.५९
विष्णोरनन्यशेषत्वं	वृ हा ८.१४८	विहीभोतीरित्येतेन	वृ हा ५.४८५
विष्णोः साटमसीति	व २.२.१८	वीक्ष्यान्धो नवते काणः	मनु ३.१७७
विष्णोरायतनं ह्यापः	बृ.या. ७.३०	वीजयोनि विशुद्धा ये	वृ.गौ. ३.८४
विष्णोराधनाद् वेदं	वृ हा ८.१७६	वीणाऽऽक्षमालिका	वृ परा २.२४
विष्णोरावरणं हित्वा	वृ हा ८.२९९	वीणावादन तत्त्वज्ञः	या ३.११५
विष्णो जिष्णो हृषीकेश	अ ६१	वीतपुष्पफलाशानि	भार १४.१७
विष्णोर्दास्यं परा	वृ हा १.१९	वीभत्सवः शुचिकामा	बोधा १.५.७१
विष्णोर्लोकमवाप्नोति	वृ हा ३.२२९	वीरं धत्तेति तत्प्राश्य	आंपू ८५६
विष्णोश्च वह्नेश्च	वृ परा ६.२३२	वीररण्डा कुण्डरण्डा	लोहि ४९२
विष्णोः सहस्रनामानि	वृ हा ६.३२६	वीरहणं परस्ताद्वक्ष्यामः	व १.२०.१२
विष्वक् सेनाय धात्रे	वृ हा ८.३४१	वीरहत्यां तु वा कुर्यात् तुला	कपिल ९७०
विसर्गबिन्दुदीर्घाणां	कपिल ४२	वीरहत्यां दुर्निवार्यामुच्चरन्तं	कपिल ४३
विसर्जनं सौमनस्यमाशिषः	व्या २५५	वीरासनं च तिष्ठेत	शंख १८.२
विसर्जयेत्ततो विप्रा	ब्र.या. ४.१४५	वीरासनं वीरशय्यां	वृहस्पति ७७
विसर्ज्य ब्राह्मणांस्तांस्तु	मनु ३.२५८	वीरासने सीमासीनं	वृ हा ५.९५
विसूचिकामृते स्वादु	शाता ६.४५	बुधन्तत्र समारोप्य	ब्र.या. १०.५८
विसृजेत् पितृपात्रस्थं	आश्व २३.९२	वृक श्वान श्रृगालैस्तु	अत्रिस ६६
विसृज्य बान्धवजनं	ल व्यास २.८८	वृकजम्बूकक्रक्षाणां	पराशर ६.११
विसृज्य ब्राह्मणांस्तान्	औ ५.७२	वृकं च जंवुकं हत्वा	वृ परा ८.१७१
विसृज्य भगवत्कर्म	शाण्डि १.३३	वृको मृगेभं व्याघ्रोऽश्व	मनु १२.६७
विस्तीर्णपुष्पपर्यंके	वृ हा ४.६०	वृक्षगुल्मलता वीरुच्छेदने	या ३.२७६
विस्मृत्य यदि पात्र	भार १८.८०	वृक्ष पशुं कूपगृहान्	वृ हा ८.१४५
विस्रब्धं ब्राह्मण शूद्रा	मनु ८.४१७	वृक्षपूतानि पात्राणि	भार १५.१४०
विस्रम्भाहेतू द्रावत्र	नारद २.१००	वृक्ष वृक्षहते दद्यात्	शाता ६.४०
विस्रस्येध्मं तथाबर्हि	आश्व २.२९	वृक्षस्नेहोथवा ग्राह्य	व्या ३०८
विहाय दुःखानि विमुच्य	विष्णुम ११२	वृक्षाणां याज्ञियानान्तु	वृ.गौ. १६.१८
विहायग्निं सभार्यश्चेत्	कात्या २०.२	वृक्षान् छित्वा मही हत्वा	पराशर २.१२
विहितं यदकामानां	आंउ १०.१८	वृक्षारूढे तु चाण्डाले	आप ४.११
विहितं सकलं कर्म	वृ हा ८.१५८	वृक्षारोहणवर्ज्यञ्च	ब्र.या. ८.२८
विहितस्तु समासेन	आंपू ४६२	वृक्षोषधितृणानां च	बृह ९.१५४
विहीतस्यं परित्यागा	आंपू ३०१	वृक्षौधस्थापनं मार्गे तीर्थ	कपिल ५४९
विहीतस्याननुष्ठान्	या ३.२१९	वृत्तवृद्ध कथाभिश्च	व्यास ३.६७
विहितेनैव पुत्रत्वं	आंपू १२५	वृत्तिक्षेत्रगृहक्षोणी	लोहि ५९८

वृत्तिन्तु न त्यजेद	शंख ५.१७	वृद्धा तिथिगुरुप्राप्तौ	भार १६.११
वृत्तिमेवाभिकांक्षन्ते	कपिल ५०६	वृद्धावादौ क्षयेचान्ते	व्या ६६
वृत्तिं तत्र प्रकुर्वीत	मनु ८.२३९	वृद्धावादौ क्षयेचान्ते	व्या १९३
वृत्तिरुहं भुवं मोहाद्वत्वा	कपिल ५०७	वृद्धिं च भ्रूणहत्यां च	बौधा १.५.९४
वृत्तिहीनं मनः कृत्वा	दक्ष ७.१५	वृद्धिमद्विसे कार्यं	वृ परा ७.११०
वृत्तीनां लक्षणं चैव	मनु १.११३	वृद्धिं ता परमां प्राप्त	लोहि ५४
वृत्ते कर्माणि भूयश्च	आंपू २५	वृद्धिरेव भवेन्नूनं	कण्व ५८
वृत्तो वै गार्हपत्योऽग्निरेव	वृ.गौ. १५.३४	वृद्धिश्राद्धं तृणश्राद्धं	आंपू ६२८
वृत्त्यर्थं यस्य चाधीतं	ल व्यास २.८२	वृद्धिश्राद्धेषु मन्यन्ते	वृ परा ७.१२०
वृत्त्याख्यस्य तरोरस्य	वृ हा ८.१५९	वृद्धि सा कारिका दाम	नारद २.८९
वृत्त्या शूद्रसभा तावद्	शंख १.८	वृद्धेचादौ गयावाते	ब्र.या. ६.२
वृत्रं शतक्रतुर्हन्ति	वृ परा २.१५४	वृद्धे जनपदे राज्ञो धर्मः	नारद १२.४०
वृत्वाग्निकुण्ड विपुल	वृ.गौ. ७.५५	वृद्धे श्राद्धं त्रयं कुर्यात्तत्र	ब्र.या. ६.३
वृथा उष्णोदकस्नानं	बृ.या. ७.१२०	वृद्धैरसंस्कृतं धार्यं	भार १६.३४
वृथाकसरसंयावं	मनु ५.७	वृद्धैश्चैव तु यत्प्रोक्तं	ब्र.या. २.५०
वृथा च जीवितं येषाम्	वृ.गौ. ३.१२	वृद्धोव्याधियुतोवापि	व २.५.३१
वृथा च दश दानानि	वृ.गौ. ३.११	वृद्धौक्षयेऽह्नि ग्रहणे	प्रजा १७
वृथा चरति जन्मानि	वृ.गौ. ३.२	वृद्धौ तु फलभूयस्त्व	वृ परा ११.५१
वृथा चाश्रोत्रिये दानं	वृ परा २.१०८	वृद्धौ द्वादशदैवत्यान्	प्रजा १८३
वृथाटनमनन्तोषं	व्यास १.२९	वृद्धौ प्राप्ते च यशः	प्रजा १९
वृथा तीर्थे तु दत्त	वृ.गौ. २२.१६	वृद्धौ सत्यां च तन्मासि	व्या १९
वृथा तेनान्नपानेन	व्या २२०	वृन्ताकशाकमूलानि	वृ परा ५.१३६
वृथापाकस्य भुञ्जान	अत्रिस. २५४	वृन्दावनसमीपे तु गोष्ठी	व २.६.१२
वृथा भवन्ति राजेन्द्र	वृ.गौ. ३.२७	वृषक्षुद्रपाशूनांच	या २.२३९
वृथाभवेत्कृतो विप्रैः	भार ६.१०२	वृषणे द्वादशार्थन्तु	बृ.गौ. २०.५
वृथा मिथ्योपयोगेन	अत्रिस. २८९	वृषणौ पुनरुत्कृत्य	वृ परा ८.११२
वृथा श्राद्धं भवेत्तच्च	विश्वा ८.७०	वृषतभानोरुदये कन्या	भार २.३८
वृथासंकरजातानां	मनु ५.८९	वृषदाने शुभोऽनड्वान्	शाता १.१४
वृथैवाऽऽत्मपरित्यागः	वृ हा ६.२००	वृषन्द्रवाहना देवी	वृ परा २.१८
वृद्धत्वे पुत्रगोत्री	ब्र.या. ८.१८५	वृषभं गां सुवर्णी च	आश्व ३.१०
वृद्धं प्रपितामहः सार्द्धं	ब्र.या. ७.१५	वृषभं धेनुसंयुक्तं	आश्व ४.१६
वृद्धं भारि नृपस्नातस्त्री	या १.११७	वृषभैकादशा गाश्च	मनु ११.११७
वृद्धयर्थमपि राष्ट्रस्य	वृ हा ७.२६८	वृषभैश्च तथोत्खाते	अत्रिस ३१९
वृद्धांच नित्यं सेवेत	मनु ७.३८	वृषमथोत्सृजेत्तत्र	व २.६.२५५
वृद्धाः च ब्राह्मणा पूज्या	वृ.गौ. ३.७७	वृष युग्मं वृषं वापि	ब्र.या. ११.३०

वृषलानामपि तथा तत्रत्यानां	कपिल ३८५	वेदज्ञचैवाभ्यसेन्नित्यं	ल हा १.२२
वृषलीपति दुष्कर्म	ब्र.या. ४.२१	वेदतत्त्वार्थत्वज्ञा यन्मां	व्या ४
वृषलीफेनपीतस्य	बृ.या. ३.१५	वेदतत्त्वार्थवेतृणां	वृ परा ८.७
वृषलीफेनपीतस्य	मनु ३.१९	वेदते भूमि हृदयं दिवि	ब्र.या. ८.३२२
वृषलीफेनपीतस्य	यम २८	वेदधर्म पुराणाश्च	औ १.७३
वृषलीं यस्त गृह्णाति	बृ.या. ३.१४	वेदनिन्दारतश्चैव	औ ४.३४
वृषवद्गोद्वयं नर्देत	वृ परा ११.९६	वेदपादो यूपदष्टाः	विष्णु १.३
वृषादियुक्तं सीरं च	वृ परा १०.६	वेदपारायेणनैव मासमेकं	वृ हा ५.५४०
वृषान्तकप्रेक्षणयोः	कात्या २८.८	वेदपूर्णं मुख विप्र	व्या १६१
वृषेण निहते दद्याद्	शातां ६.३१	वेदपूर्णंमुखं विप्रं	व्यास ४.५२
वृषोत्सर्गस्य कर्तारं	प्रजा ८९	वेद प्रदानात् पितेत्	व १.२.५
वृषोत्सर्गस्य कर्तारो	प्रजा ८५	वेद प्रदानादाचार्य पितरं	मनु २.१.७१
वृषो धर्मो हि विज्ञेय	बृ.गौ. २१.१३	वेदप्रोक्तां क्रियास्सर्वा स्थानं	कपिल ३६१
वृषो हि भगवान् धर्म	मनु ८.१६	वेदमध्यापयेच्छिष्यान्	ल व्यास २.७
वृष्टिं दिवीशः तद्धारेति	वृ हा ८.५७	वेदमध्यापयेदेनं	ब्र.या. ८.४९
वृष्ट्यम्बलेपनाश्चैव	ब्र.या. १०.३९	वेदमन्त्र विना नान्य	कण्व ४७७
वृष्ट्यायुः पुत्रकामो वा	ब्र.या. १०.२५	वेदमात्रानुक्तिरतस्तु	आंपू ८०१
वृ सिवनीनस्य अक्ष्णो	ब्र.या. ८.१२०	वेदमादित आरभ्य	कात्या ११.१७
वृहता वृहणाजेय सर्व	विष्णु १.५५	वेदमेव सदाभ्यस्येत	मनु २.१.६६
वृह तेच्छदिरसिकनं	ब्र.या. ८.१२१	वेदमेव समभ्यस्ये	वृह १२.४१
बृहत्तनुं वृहदग्रीवं	वृ हा ३.३३३	वेदमेवाभ्यासे जपेन्नित्यं	मनु ४.१.४७
वृहत्पत्रक्षुद्रपशु	कात्या ५.८	वेदं गृहीत्वा य कश्चित्	अत्रिस ११
वृहस्पति मतं पुण्यं	वृहस्पति ८१	वेदं धर्म पुराणञ्च	औ ३.३४
वृहस्पतिं समाहूय	ब्र.या. १०.६०	वेदं वेदौ तथा वेदा	औ ३.८६
वृहस्पते अति अदर्य	या १.३०१	वेदं समुच्चरन्तं तच्छूद्र	कपिल ४५
वेणुपत्र दलाकारं	ब्र.या. २.३१	वेदयज्ञादिहीनानां	औ १.५५
वेणुवैदलभाण्डानां	मनु ८.३२७	वेदयज्ञैरहीनानां	मनु २.१.८३
वेणुश्चतन्तिडीप्लाक्षा	विश्वा १.६२	वेदलांगलकृष्टेषु	व्यास ४.५७
वेतनस्यानपाकर्म	नारद १.१७	वेदवादौ समारभ्य	वृ.गौ. ८.६८
वेतनस्यैव चादानं	मनु ८.५	वेद विक्रयिणं यूपं	बौधा १.५.१४०
वेत्ति यो वेदतत्त्वार्थं	ब्र.या. ४.८	वेदविक्रयिणश्चैते	औ ४.२२
वेत्रचर्मकृतं चैव ताल	शाण्डि ४.११४	वेद विक्रयिणे चैव	वृ परा १०.३२०
वेत्रासनस्थे पात्रे च	शाण्डि ४.११८	वेद विच्चापि विप्रोऽस्य	मनु ३.१.७९
वेदः कृषिविनाशाय	बौधा १.५.१०१	वेदविद्यावितानानि	वृ परा ६.२६४
वेदज्ञातो द्विजातीनां	व्या ७१	वेदविद्याव्रतस्नातः	पराशर ५.३

वेदविक्रयिणं नित्यं	आंपू ७४७	वेदादौ यौ स्वरः	बृ.या. २.५२
वेदवित्पठितव्यं च	ल हा १.२३	वेदाध्ययनभेदाश्च	कपिल ३५२
वेदविद्भयस्ततो यत्ना	कण्व ४८६	वेदाध्यायनेऽनध्यायादि	विष्णु ३०
वेदविद्याव्रतस्नाता	मनु ४.३१	वेदाध्यायाति तु यो विप्रः	आंपू ७३६
वेद विद्वन् सदाचार	वृ परा ६.२३३	वेदानधीत्य वेदोवा	मनु ३.२
वेदविद्याव्रतस्नातः	आंउ ५.५	वेदानां लेखिनश्चैव	वृ.गौ. १०.११
वेदवेदाङ्गतत्वज्ञो भगवान्	वृ.गौ. ७.५४	वेदानुवचनं यज्ञो	या ३.१९०
वेदवेदांगविदुषा	पराशर ८.२	वेदान्तगोचरं धर्म	वृ हा ५.६
वेदवेदाङ्ग विद्विप्रः	वृ.गौ. ६.१४४	वेदान्तपारगास्ते च तं	वृ हा ५.४
वेदव्रतानि तत्काले	व २.३.१४०	वेदान्तं पठते नित्यं	अत्रिस ३७४
वेदशब्देभ्य एवादौ	मनु १.२२	वेदान्तरमधीत्यैव	व्या ३८४
वेदशास्त्रपराश्चापि	कण्व २७६	वेदान्तवाक्यश्रवणं कुर्वन्ती	लोहि ५७९
वेदशास्त्रपुराणादि	कपिल ४२८	वेदान्तविज्ज्येष्ठसामा	बृ.या. ३.४३
वेद शास्त्रविदो विप्रा	वृ परा ८.६६	वे दान्तानां हि सर्वेषां	बृह १२.४४
वेद शास्त्रार्थ तत्त्वज्ञ	वृ.गौ. ६.७७	वेदान्त अन्यः पठेद्	बृह १२.३६
वेदशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञ	अत्रिसं ३	वेदान्तभिहितं यच्च	बृ.या. १.२३
वेदशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञो	मनु १२.१०२	वेदांविक्ता परित्यज्य	भार १३.३८
वेदशास्त्रार्थविच्छान्तः	वृ परा ७.१७	वेदाः प्राणाभगवतो	वृ हा ८.१७५
वेदशास्त्रेषु निपुणा	व २.७.२१	वेदाभ्यासरतं क्षान्तं	या ३.३१०
वेदशून्येन तत्पित्रा	कण्व २२९	वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं	मनु १२.३१
वेदस्कन्धो हविर्गन्धो	विष्णु १.७	वेदाभ्यासस्तपोज्ञानं	मनु १२.८३
वेदः स्मृति सदाचार	मनु २.१२	वेदाभ्यासेन वाग्दोषाः	कण्व २१५
वेदस्याप्यनधीतस्य	वृ हा ८.३३०	वेदाभ्यासेन सततं	मनु ४.१४८
वेदस्यैवगुणं वापि सद्यः	अत्रि ४.१	वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या	मनु ११.२४६
वेदहन्ता शास्त्रहन्ता	लोहि ३८५	वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या	व १.२७.७
वेदांश्चैव तु वेदाङ्गान्	बृह १२.३४	वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य	मनु १०.८०
वेदाक्षर विहीनाय	वृ.गौ. ३.३९	वेदाभ्यासो यथाशक्त्या	अत्रि ३.६
वेदाक्षराणि यावन्ति	वाधू १५७	वेदारतस्तुयोलोके	कण्व २२२
वेदाक्षरैकशून्यस्य	कण्व २६५	वेदारम्भावसाने च	ब्र.या. ८.६७
वेदाक्षरोच्चारणतः	आंपू १५७	वेदार्थं तत्त्व विदुषे	ल व्यास २.५९
वेदांगानि पुराणं वा	औ ३.५८	वेदार्थवित् प्रवक्ता च	मनु ३.१८६
वेदाचाररतो विप्रो	वृ.गौ. ५.४	वेदार्थः स च विज्ञेया	ब्र.या. १.३१
वेदार्थवपुराणानि	या १.१०१	वेदा वेदवती धात्री	वृ हा ४.९२
वेदादिविद्याभूताशु	भार १३.१२	वेदाश्च सांगाः स्मृतय	वृ हा ७.८५
वेदादौ यो भवेद्वर्ण	बृह ११.९	वेदाश्चैवात्र चत्वार	बृह ९.७३

वेदाश्छन्दांसि सर्वाणि	कात्या १०.८	वेश्मन्यज्ञातचांडालो	वृ परा ८.२०६
वेदाः सहांगैस्सपुराण	वृ परा ६.२०९	वेश्याञ्च ब्राह्मणोगत्वा	संवर्त १६४
वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च	मनु २.९७	वेश्याभिगमने पापं	लघुयम ३८
वेदाहमेतं पुरुषं	शंख ७.२२	वैकल्यं स्पष्टमैवैतत्	कपिल ३४७
वेदिका पादमूले तु	वृ परा ११.२१८	वैकुण्ठतर्पणं कुर्यात्	वृ हा ६.१२२
वेदी च कोटिहोमे स्यात्	वृ परा ११.२७९	वैकुण्ठतर्पणं कुर्याद्	वृ हा ५.१३४
वेदेनैव हरिं तस्माद्	वृ हा ७.६१	वैकुण्ठपार्षदं हुत्वा	वृ हा ५.३५८
वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति	अत्रिस ३८२	वैकुण्ठ पार्षदं हुत्वा	वृ हा ५.४९६
वेदैः शास्त्रैः सविज्ञानैः	या ३.१७०	वैकुण्ठ पार्षदं हुत्वा	वृ हा ६.१२७
वेदैश्च ऋषिभिर्गीतं	अत्रिस ३५३	वैकुण्ठ पार्षदं हुत्वा	वृ हा ७.३०१
वेदोक्तमन्त्रतन्त्राणि	लोहि १४	वैकुण्ठ पार्षदं होमं	वृ हा ५.१३२
वेदोक्तमन्त्रैरखिलैः	लोहि १५	वैकुण्ठं पार्षदञ्चैव	वृ हा ६.४२५
वेदोक्तवायुर्मर्त्यानामाशिष	मनु १.८४	वैकुण्ठं पार्षदं हुत्वा	वृ हा ७.२५१
वेदोक्तविधिना विष्णु	वृ हा ८.१९१	वैखानसा कथं ब्रूयुः	वृ.गौ. ८.८५
वेदोक्तेनैव मार्गेण	कपिल ८९०	वैखानसेन केचित्तु	औसं ४६
वेदोक्तेनैव मार्गेण	बृ.गौ. २१.२७	वैखानसेस्तु ये विप्रा	वृ हा ५.७४
वेदोक्तैर्विविधैर्मन्त्रैः	वृ.गौ. १०.५६	वैश्नानसैकदेशापि	कण्व ४६०
वेदोऽखिलो धर्ममूलं	मनु २.६	वैणञ्च रोमशाञ्चैव	वृ हा ७.२११
वेदोच्चारणसामर्थ्यं	आंपू ८३५	वैणवं दण्डं धारयेत्	बौधा १.३.३
वेदोदितं स्वकं कर्म	औ ३.८७	वैणवं दण्डं धारयेत्	बौधा २.३.३३
वेदोदितं स्वकं कर्म	व १.२७.८	वैणवं दण्डं धारयेद्	व १.१२.३४
वेदोदितानां नित्यानां	मनु ११.२०४	वैणवानां गोमयेन	बौधा १.५.३८
वेदोद्धृतपवित्र मंत्र	विष्णु ५६	वैणवीं धारयेद्यष्टिं	मनु ४.३६
वेदोऽधीतो ददच्छुद्धिं	वृह ११.३०	वैणाश्च वृद्धाश्च	वृ परा ६.२७७
वेदोपकण्ठनिलयं	ब्र.या. १.१	वैतानिकं च जुहुयाद्	मनु ६.९
वेदोपकरणे चैव	मनु २.१०५	वैतानिकस्थलं त्यक्त्वा	कण्व ३००
वेद्यर्थं पृथिवी सृष्टा	वृ.गौ. १५.६३	वैदिकञ्चैव यद्धव्यं	वृ.गौ. ८.९९
वेद्या दक्षिणतः कुण्डं	वृ हा ६.२०	वैदिकनै व विधिना	वृ हा ७.२३८
वेद्याद्यैः ब्रह्मणस्पत्यै	वृ हा ५.५०८	वैदिकं च तथा सर्वं	बृ.य. ५.१५
वेद्याश्च दक्षिणे भागे	वृ हा ७.२४७	वैदिकं तु जपं कुर्यात्	वृ परा ४.१०६
वेधसो वा राजा श्रेयान्	व १.१६.१९	वैदिकं कर्मयोगश्च	वृ परा १२.२८५
वेधाद्द्विह प्रतीकारी	वृ परा ५.६७	वैदिकानामयोः स्याद्	कपिल ११६
वेनो विनष्टोऽविनयान्	मनु ७.४१	वैदिकानि च नित्यानि	औ ९.६७
वेशन्ने दीर्घिकायां	कण्व ५५८	वैदिकान्यपि कर्माणि	कपिल ३२
वेश्मद्वारे निवासेषु	पराशर ९.४१	वैदिके आगमे वापि	ब्र.या. २.११४

वैदिके कर्मयोगे तु	मनु १२.८७	वैशेषिकं धनं ज्ञेयं	नारद २.४८
वैदिके का (लौ) किके कृत्येकपिल ३३४		वैशेषिकं धनं ज्ञेयं	नारद २.५०
वैदिकेन ततस्तानि	कण्व ४७२	वैशेष्यात्प्रकृति श्रैष्ठ्या	मनु १०.३
वैदिके लौकिके वाऽपि	अत्रिस २५५	वैश्यकन्यासमुत्पन्नौ	पराशर ११.२३
वैदिके लौकिके वाऽपि	लिखित ३८	वैश्य कुसीदमुपजीवेत्	बौधा १.५.९०
वैदिकै कर्मभि पुण्यै	मनु २.२६	वैश्यक्षत्रियविप्राणां	औ ६.३७
वैदिकोऽयं विधि	कण्व ७८९	वैश्यजीविकास्थाय	व १.२.२९
वैदेहकादम्बष्ठायां	बौधा १.९.१३	वैश्यदेवस्य सिद्धस्य	मनु ३.८४
वैदेहीं वैष्णवीमिष्ट्वा	वृ हा ६.३९९	वैश्यपा धनगीताश्च	वृ.गौ. १.२५
वैद्योऽवैद्याय नाकायो	नारद १४.११	वैश्यं क्षेयं समागम्य	औ १.२६
वैधव्यं समनुप्राप्ता सत्पुत्र	कपिल ५३३	वैश्यं तु द्वापरयुगं	वृ परा १.३७
वैधव्य समवानोति	सा ५३१	वैश्यं प्रति तथैवैते	मनु १०.७८
वैधसाद्यनुरूपेण	वृ परा ६.१४	वैश्यं वा क्षत्रियं वापि	पराशर ६.१६
वैनतेयं मत्स्ययुगं	व २.७.९१	वैश्यं शूद्र क्रियासक्तं	पराशर ६.१७
वैनतेयांकितं स्तम्भं	वृ हा ६.४३२	वैश्यं हत्वा द्विजश्चैवं	वृ परा ८.११९
वैभवीमथ वक्ष्यामि	वृ हा ७.१३८	वैश्यवृत्ताविक्रये	नारद २.५७
वैयाघ्रमार्क्षं सैहं वा	पराशर ११.४०	वैश्यवृत्तिमनात्तिष्ठन्	मनु १०.१०१
वैरानुबन्धनं चैर्षमल	शाण्डि १.५३	वैश्यवृत्तिरनुष्ठेया	बौधा २.२.८१
वैवस्वतकुलोत्पन्नो	आश्व १.१३०	वैश्यवृत्त्यापि जीवन्तु	मनु १०.८३
वैवाहिकेऽग्नौ कुर्वीत	कात्या १८.५	वैश्यवृत्त्या तु जीवेत	औसं ३९
वैवाहिकेऽग्नौ कुर्वीत	मनु ३.६७	वैश्यवृत्त्यापि जीवन्नो	या ३.३९
वैवाहिको विधि स्त्रीणां	मनु २.६७	वैश्यशूद्रावपि प्राप्तौ	मनु ३.११२
वैवाह्यमग्निभिन्धीत	व १.८.३	वैश्यशूद्रोपचारञ्च	मनु १.११६
वैशस्य चान्ममेवानं	अत्रिस ३६८	वैश्यशूद्रो प्रयत्नेन	मु ८.४१८
वैशस्य चान्ममेवानं	अत्रिस ५.११	वैश्यश्चेत् क्षत्रियां गुप्तां	मनु ८.३८२
वैशाखं यस्तु वै मास	बृ.गौ. १७.३२	वैश्यश्चेद् ब्राह्मणी	व १.२१.३
वैशाखे पूजयेद् रामं	वृ हा ५.३९४	वैश्यः सर्वस्यदण्डः	मनु ८.३७५
वैशाखे मासि वैशाखे	वृ.गौ. ७.४२	वैश्यस्तु कृतसंस्कार	मनु ९.३२६
वैशाखे शुक्लपक्षे तु	वृ परा १०.३५३	वैश्यस्य कीदृशी देव	वृ.गौ. २.१२
वैशाख्यां पूर्णिमायां	वृ परा १०.१२३	वैश्यस्य तु तथा मुक्त्वा	शंख १७.४१
वैशाख्यां पूर्णिमायां	वृ परा १०.१४०	वैश्यस्य धनसंयुक्तं	शंख २.३
वैशाख्यां पौर्णमास्यां	अत्रि ३.१९	वैश्यहत्यान्तु संप्राप्त	संवर्त १२७
वैशाख्यां पौर्णमास्यां	व १.२८.१८	वैश्यहाब्दं चरेदेतद्	या ३.२६७
वैशाख्येण वैष्णवं	वृ हा ८.३४०	वैश्याच्छूद्रायां रथकार	बौधा १.९.६
वैशाख्येण गुरोर्ज्ञात्वा	वृ हा ८.२५९	वैश्यात् क्षत्रियाया	बौधा १.९.८

वैश्यान्तु जायते ब्राह्म्यात्	मनु १०.२३	वैश्वदेवः सदा कार्यो	वृ परा ७.८२
वैश्यादिषु प्रतिलोमं	बौधा २.२.५७	वैश्वदेवस्य सिद्धस्य	व १.११.२
वैश्यानां तु नमोन्तस्य	विश्व २.२६	वैश्वदेवस्याकरणाद्दोषं	विश्व ८.४५
वैश्यान्नेन तु शूद्रत्वं	व्यास ४.६७	वैश्वदेवं प्रवक्ष्यामि	वृ परा ४.१.५५
वैश्यान् मागध वैदेहौ	मनु १०.१७	वैश्वदेवं विहीनाय	वृ.गौ. ३.४१
वैश्यापत्रास्तु दौषयन्त	नारद १३.११०	वैश्वदेवाकृताद्दोषा	विश्व ८.५०
वैश्यां च क्षत्रियो गत्वा	वृ परा ८.२३९	वैश्वदेवाकृतान्	ल हा ४.६२
वैश्यायान्तु तथाऽऽम्बष्ठो	वृ हा ४.१.४५	वैश्वदेवाख्याकाण्डानि	कण्व ५१३
वैश्यायां निधिना	औसं ३१	वैश्वदेवाः च ये कुर्युः	वृ.गौ. २.१७
वैश्यायां शूद्रसंसर्गाज्जातो	औसं २०	वैश्वदेवावसाने तु	वृ हा ५.१०६
वैश्याशूद्रयोस्तु राजन्यान्	या १.९२	वैश्वदेवावसाने ब्राह्मणो	कपिल ९६१
वैश्यासु विप्रक्षत्राम्यां	व्यास १.८	वैश्वदेविक विप्राणां	वृ परा ७.२१३
वैश्येन च यदा स्पृष्ट	आप ५.१३	वैश्वदेवे च होमे च	अत्रिस ३६९
वैश्येन तु यदा स्पृष्ट	अंगिरस १०	वैश्वदेवेन जुहुयाद्	वृ परा ४.१.७५
वैश्येन ब्राह्मणामुत्पन्नो	व १.१८.२	वैश्वदेवे तथा ब्रह्मयज्ञे	आश्व १.१३९
वैश्यैर्वा देव देवेश	बृ.गौ. १.५.४	वैश्वदेवे तु निवृत्ते	मनु ३.१०८
वैश्योऽजीवन् स्वर्धर्मेण	मनु १०.९८	वैश्वदेवे सम्प्राप्ते	व २.६.१९१
वैश्योऽद्भि प्राशिताभिस्तु	व १.३.३४	वैश्वदेवे तु संप्राप्ते	पराशर १.४५
वैश्यो वा यदि शूद्रो	वृ परा ४.२०७	वैश्वदेवेत्वंतिक्रान्ते	कात्या २७.९
वैश्यो विप्र नृपेष्वेषु	वृ परा ६.१.५८	वैश्वदेवेन ये हीना	शंखलि २
वैश्वदेवकृतान् दोषान्	पराशर १.४८	वैश्वदेवेन होमेन	आप ८.१४
वैश्वदेवप्रकरणस्य	विश्व ८.३३	वैश्वदेवैककरणं देवपूजा	कपिल २५८
वैश्वदेवं क्वचित्कर्तुं	आश्व १.११८	वैश्वदेवोग्रतश्चैव	वृ परा ७.८३
वैश्वदेवं ततः कुर्यात्	ब्र.या. ४.१.४६	वैश्वानरः प्रविशत्य	व १.११.१२
वैश्वदेवं ततः कुर्यात्	विश्व ८.२८	वैश्वानराख्या गीताः च	वृ.गौ. १.२२
वैश्वदेवं ततः कुर्यात्	ल हा ४.५५	वैश्वानरीं ब्रातपतीं	बौधा १.१.३७
वैश्वदेवं ततः कुर्यात्	ब्र.या. २.६	वैश्वानरीं ब्रातपती	व १.२२.५
वैश्वदेवं पुनः सायं	आश्व १.१८४	वैश्यवत्त्वं कुलं सर्वं	वृ हा ७.१.५६
वैश्वदेवं पुरा कृत्वा	आश्व १.१४४	वैष्णवत्त्वं प्रयात्वत्र	व २.६.३९८
वैष्णवेन द्विजः कुर्यात्	आश्व १.१२१	वैष्णवः परमैकान्ती	वृ हा ८.३३८
वैश्वदेवं प्रकुर्वीत	विश्व ३.६९	वैष्णवं पतिमादाय	वृ हा ८.२०२
वैश्वदेवं भूतबलि	वृ हा ५.२९२	वैष्णवं परमं धर्मं	वृ हा ६.१.४१
वैश्वदेवं विना पाको	विश्व ८.४९	वैष्णवर्क्षेतु पूर्वाहणे	व २.६.२३७
वैष्णवेन विनार्थेन	ल व्यास २.५७	वैष्णवाच्च गुरो	वृ हा ३.२.४७
वैष्णवेन हुनेदादौ ततः	विश्व ८.७५	वैष्णवानान्तु विप्राणां	वृ हा ८.३०२

वैष्णवानां तु हेतीनां	वृ हा २.२४	व्यक्ताव्यक्ताय	वृ परा १.१
वैष्णवान् भोजयेत्	वृ हा ५.३७८	व्यक्तोऽव्यक्तस्तथाज्ञश्च	बृ.या. २.७३
वैष्णवान् भोजयेद्	वृ हा ५.४८१	व्यङ्गान् काणान्च कुब्जान्	वृ.गौ. ३.६८
वैष्णवान् भोजयेन्	वृ हा ७.६५	व्यतिक्रमाद् सम्पूर्ण	व्यास १.३९
वैष्णवाप्सरसां संधैः	वृ परा १०.१९९	व्यतिक्रमे तु कृच्छ्रः	बौधा २.२.५५
वैष्णवी निष्कृतिर्दिव्या	कण्व ४७६	व्यतीपाते गजच्छाया	कण्व १४५
वैष्णवेषु च मंत्रेषु	व २.३.११९	व्यतीपाते तु संप्राप्ते	वृ हा ५.३८१
वैष्णवेष्टिं प्रकुर्वीत	वृ हा ६.४१६	व्यतीपातो ग जच्छाया	या १.२१८
वैष्णवेष्टिं प्रकुर्वीत	वृ हा ८.३३२	व्यत्यस्तपाणिना कार्य	मनु २.७२
वैष्णवेष्टिम्बिधानेन	व २.६.४१५	व्यत्यासाद्वातञ्जलो यो	कपिल १२५
वैष्णवै पंचसंस्कारैः	वृ हा ६.४३३	व्यत्यासेन कृतं तच्च	लोहि १४५
वैष्णवैरनुवाकैर्वा प्रत्यहं	वृ हा ५.५४३	व्यपोह्यति नर पाप	वृ.गौ. ९.४२
वैष्णवैरनुवाकैश्च	वृ हा २.१०१	व्याभिचारात् तु ते हत्वा	वृ परा ८.१.२२
वैष्णवैरनुवाकैश्च	वृ हा ७.२५०	व्याभिचारात् भर्तु स्त्री	मनु ५.१६४
वैष्णवैरनुवाकैश्च	वृ हा ५.३७९	व्याभिचारात् भर्तु स्त्री	मनु ९.३०
वैष्णवैरनुवाकैश्च	वृ हा ५.५२३	व्याभिचारादृतौ शुद्धि	या १.७२
वैष्णवैः वैदिकै पूर्वे	वृ हा ८.३	व्याभिचारादृतौ शुद्धि	बृ.य. ४.३६
वैष्णवैश्च सुहृद्भिश्च	वृ हा ५.२९८	व्याभिचारेण दुष्टानां	व्यास २.४९
वैष्णवोद्यापनञ्चैव	ब्र.या. ८.१८३	व्याभिचारेण वर्णानाम्	मनु १०.२४
वैष्णवो वर्णवाह्योऽपि	वृ हा ८.३३९	व्याभिचारे तु सर्वत्र	वृ हा ६.३१७
वैष्णवोऽहं प्रदो (दे) हीति	शाण्डि ४.७०	व्याभिचारे स्त्रियो	नारद १३.९३
वैष्णव्या चैव गायत्र्या	वृ हा ५.५२८	व्यये च मुक्तहस्ता च	शाण्डि ३.१.४४
वैष्णव्या चैव गायत्र्या	वृ हा ७.१०३	व्यवहारानुपूर्वे धर्मेण	अत्रिस ३७०
वैष्णव्या चैव गायत्र्या	वृ हा ७.१७५	व्यवहारान् नृपः पश्येद्	या २.१
वैष्णव्या चैव गायत्र्या	वृ हा ५.४१७	व्यवहाराभिशास्तोऽयं	नारद १९.२१
वैष्णव्याचैव गायत्र्या	व २.६.४१०	व्यवहारे मृते दारे	व १.१६.३०
वैष्णक् सैनी मिमां हुत्वा	वृ हा ७.१९१	व्यवहारेषु समतः संप्राप्ताः	कपिल ८१०
वैष्णक् सेनीं ततो वक्ष्ये	वृ हा ७.१८४	व्यवहारेषु सततं	वृ हा ७.५७
वोटुं पंचाशिखञ्चैव	वृ हा ७.२१२	व्यवायी रेतसो गर्ते	दा ६०
वोढारौऽग्निप्रदातारः	पराशर ४.३	व्यवाये तीर्थगमने	व १.२१.११
वोदने परमान्ने वा	व्या-१.९४	व्यवाये तु संवत्सरं	व १.२१.९
वोधोनमास्यत्तच्चाय	कपिल २७२	व्यस्तं पूर्वं प्रयोक्तव्यं	भार १९.३२
व्यक्त एकगुणसस्मा	भार ६.२४	व्यस्ताभिर्व्याहृतीभिश्च	व्यास ३.२९
व्यक्तायतनयोः पूजां	शाण्डि ४.६	व्यसनप्रतिकाराय	दक्ष ३.२८
व्यक्तायनसंस्थानं	शाण्डि ४.७	व्यसनस्य च मृत्योश्च	मनु ७.५३

व्यसनासक्तचित्तस्य	अत्रिस १०३	व्यावहारिक सूर्याणां	व २.६.५१०
व्यसनासक्तचित्तस्य	दक्ष ६.९	व्यासवाक्यावसाने तु	पराशर १.१८
व्यवहारानुरूपेण धर्मेण	आप ८.१५	व्यास वाक्यावसाने	वृ परा १.१९
व्यहारान् दिदृक्षुस्तु	मनु ८.१	व्यास शुक्रश्च प्रह्लादः	वृ हा ७.८३
व्यवहारे गोसमैस्तु	वृ परा ८.८१	व्यास सुस्वागतं ये च	पराशर १.११
व्यहैः व्यूहह्य यथोक्तैर्वा	वृ परा १२.४५	व्यासेनोक्तस्मृतौ स्वकीये	बृ.य. ५.१३
व्याघात मपि चान्यानि	वृ.गौ. ८.८३	व्याहृतित्रितयं श्रेष्ठ	भार १९.३३
व्याघ्रचर्मावरधरां	भार १२.१४	व्याहृतिश्चतत आज्ये	ब्र.या. ८.२८१
व्याघ्रं श्वानं तथा सिंहं	संवर्त १४२	व्याहृतीनामथैततस्मिन्	भार १९.३९
व्याघ्रहिगजभूपाल	शाता ६.२	व्याहृतीनामाथन्यासं	वृ परा ४.१३०
व्याघ्रादिभिर्गृहीतां	वृ हा ६.३२७	व्याहृतीर्व्याहरंश्चैव	बृ.या. ३.३०
व्याघ्रेण हन्यते जन्तु	शाता ६.८	व्याहृतीश्च यथाशक्ति	कण्व ६२४
व्याधाञ्छाकुनिकान्	मनु ८.२६०	व्याहृत्यादिशिरोऽन्त्येन	विश्व १.८०
व्याधितश्चैव मूर्खश्च	अ १३७	व्याहृत्यादौ पदादौ	ब्र.या. २.८३
व्याधितस्य कदर्यस्य	अत्रिस १०२	व्याहृत्ये वैष्णवान्	वृ परा १.१७५
व्याधितस्य दरिद्रस्य	आंड ९.१०	व्याहृत्यैककया युक्तै	विश्व १.८२
व्याधि प्रवाहे मृत्युश्च	अत्रिस ५.७२	व्याहृत्योकासहिता	बृ.या. ४.४३
व्याधिव्यसन्नानि क्षान्ते	पराशर ६.५०	व्यूहाधिपत्यं कुर्वन्तीं	लोहि ६७४
व्याधेम्यो मेध्यामांसानि	प्रजा १४३	व्योमान्तं सततं ध्येयं	वृ परा १२.२७३
व्यापकानां च सर्वेषां	वृ हा ८.२१८	व्रजन्तञ्च तथात्मानं	या १.२७४
व्यापकान्मंत्रत्वं	व २.७.६८	व्रजन्ति वालसूर्याभैः	वृ.गौ. ५.९५
व्यापका मंत्ररत्नञ्च	वृ हा ७.१००	व्रणद्वारे कृमिर्यस्य	व १.१८.१४
व्यापन्नानां बहनान्तु	आप १.२७	व्रणभङ्गे च कर्तव्यं	आंड १०.९
व्यापन्नानां बहूनांच	पराशर ९.४६	व्रणमंगे च कर्तव्यं	पराशर ९.२०
व्यापादयेत्तथात्मानं	औ ७.२	व्रणसंजातकीटैश्च	वृ परा ७.३०४
व्यापादिषु बहुषु	संवर्त १३५	व्रतकाले तादृशे तु व्यतीते	लोहि ५११
व्यापादो विषशस्त्राद्यै	नारद १५.५	व्रतच्छिद्र तपश्छिद्र	पराशर ६.५९
व्याप्त चतुर्थपादेन	भार ६.१४५	व्रतत्रयसमायुक्तं स्नात	ब्र.या. ८.९२
व्याममात्रं समुत्सृज्य	लघुशांख ३०	व्रतप्रवचनं चापि सत्यां	कपिल ३२०
व्यामिश्रयागनिर्मुक्ता	शाण्डि ५.७६	व्रत बन्धे विवाहे च	आश्व १७.३
व्याहमोहयन्वाक्यजालै	लोहि ६२८	व्रतं तु यावकं कुर्यात्	शांख १८.११
व्यालग्राही यथा व्यालं	दक्ष ४.२०	व्रतं द्वादशवर्षाणि चोद्	वृ हा ६.३३२
व्यालग्राही यथा व्यालं	पराशर ४.२८	व्रतं वेदञ्चोभौ समाप्य	ब्र.या. ८.९५
व्यालैर्नकुलमाजरी	पराशर ११.६	व्रतं समाचरेत् कृत्वा	वृ हा ६.२८३
व्यावर्तत ततः पश्चात्	वृ परा १०.३८	व्रतवदेवदैवत्ये	मनु २.१८९

श्लोकानुक्रमणी

व्रतश्राद्धनिमित्तेन याचितो
व्रतस्थमपि दौहित्र
व्रतस्थो व्रतसिद्ध्यर्थ
व्रतस्य धारणन् तीर्थ
व्रतादृते नार्दवासा
व्रतादेशात् सपिण्डानां
व्रतान्ते भोजयेद्विप्रान्
व्रतान्ते भोजयेद्विप्रां
व्रतान्ते मेदनीं दत्त्वा
व्रतान्यथ प्रवक्ष्यामि
व्रतिनं च कुलीनं च
व्रतिनः शास्त्रपूतस्य
व्रतीने कन्यकादानं रसदानं
व्रते तस्मिन्समाप्ते
व्रते तु क्रियमाणे वै
व्रते तु सर्वं वर्णानां
व्रतोपवासदिवसे सूतके
व्रतोपवासनियमान्
व्रतोपेतो दीक्षितः स्यात्
व्राण पूर्वमेवोक्तं
व्रात्यस्तोमेन वा यजेद्वा
व्रात्यानां याजनं कृत्वा
व्रीह्य शालयो मुद्गा
व्रीहयो यव-गोधूमा
व्रीहयो यवः गोधूमा
व्रीहीणामुपघाते प्रक्षाल्यं

श

शंसये तु न भोक्यव्य
शकुनानां च विषुविष्किर
शकुदापोशन पीतं
शकृन्मूत्रं हि यस्यास्तु
शक्त परजने दाता
शक्त प्रतिग्रहीतुं यो
शक्तयः केशवादीनां
शक्तयश्च समाख्याता

कपिल ९५५
मनु ३.२३४
प्रजा ३४
बृ.गौ. २०.१२
बृ.या. ७.४३
औ ६.१८
बृ.गौ. १७.७
बृ.गौ. १७.२६
शाता २.३७
वृ परा ९.१
अत्रिस ३५४
अत्रिस ८४
कपिल ९६०
व २.४.९४
वृपरा ८.११४
देवल ६६
व २.४.११२
वृ हा ५.१४
बौधा १.७.२७
ब्र.या. ४.५
व १.११.५९
मनु ११.१९८
कात्या २६.१३
वृ परा ७.१५७
वृ परा ७.२३६
बौधा १.६.४४
पराशर ८.५
व २.१४.३६
व २.६.२०९
वृ परा ५.१५
भनु ११.९
वृ परा ६.२४०
वृ हा ४.९०
विश्वा ६.३८

शक्तयो विमलाद्याश्च
शक्तस्यानीहमानस्य
शक्तितोऽपचमानेभ्यो
शक्तिं चोभयत तीक्ष्णां
शक्तिं ज्ञात्वा शरीरस्य
शक्तिराधारशक्तिश्च
शक्तिविषये मुहूर्तमापि
शक्ति श्री रुच्यते
शक्ति साध्यानि कार्याणि
शक्तिसूनोरनुज्ञातः
शक्तिसूनौर्यथा सिद्धा
शक्तिहीनो यथाशक्ति
शक्तेनापि हि शूदेण
शक्तेश्चेद्वारुणं
शक्तो गुर्वीर्हमेधावी
शक्तो ह्यमोक्षयन
शक्तौसत्यां विधानेन
शक्त्या कालेन च ततः
शक्त्या च चतुरो वेदान्
शक्त्या च वैष्णवैः
शक्त्या दशावतराणां
शक्त्याऽपुसंयमं
शक्त्या मंत्रद्वयं
शक्त्या वस्त्राणि देयानि
शक्त्यावापि च कर्तव्यं
शक्त्या संपूज्य तानेव
शक्यं तत् पुनरादातुं
शक्ल्लोकावतीर्णश्च
शक्लश्च पितरोरुदावसव
शंकरस्यापि विष्णोर्वा
शंकास्थाने समुत्पन्ने
शंकास्थाने समुत्पन्ने
शंकास्थाने समुत्पन्ने
शंकुश्च खादिर काय्यो
शङ्खं कुर्वन्ति नादैश्च

५६१
व २.७.४०
या २.११८
मनु ४.३२
वृ परा ८.१०९
वृ परा ९.२२
व २.६.९९
बौधा १.२.२९
वृ हा ३.३२४३
कण्व ४४१
वृ परा १.६४
वृ परा ५.१२०
शाण्डि ४.१.४६
मनु १०.१२९
ल व्यास १.१५
औ ३.३६
या २.३०३
कपिल १६९
कपिल ६६
वृ हा ५.२१५
वृ हा २.१४५
वृ हा २.९६
वृ परा २.१६७
व २.६.१६४
वृ परा ७.१३१
वृ परा १०.१३३
वृ हा ८.३११
नारद १८.४६
वृ.गौ. ७.४२
वृ.गौ. १९.६
अत्रिस १३८
अत्रिस ३.९
अत्रिस ५९
व २.१.२७.१०
कात्या १७.३
बृ.गौ. १९.१७

शंख चक्रगदाखड्ग	वृ हा ३.१३५	शतमश्वानृते हंति	बौधा १.१०.३६
शंखचक्र धनुर्वान	वृ हा ३.२८३	शतमश्वानृते हंति	वृहस्पति ४४
शंखचक्रधनुर्वान	वृ हा ३.२६०	शतमष्टोत्तरं तत्र यथा	व २.४.७९
शंखचक्रांक न कुर्याद्	व २.१.३५	शतमानस्तु दशभि	या १.३६५
शंखचक्रेस्फुटं कुर्यात्	व २.१.३७	शतरुद्र धर्मशिरं	अत्रि ३.३१२
शंखचक्रोर्ध्व पुंङ्गादि	वृ हा १.२४	शतरुद्रियं अथर्वशिरः	व १.२८.१४
शंख चक्रोर्ध्व पुण्ड्रादि	वृ हा ५.७७	शतरुद्रीयं अथर्व शिरः	शंक ११.४
शङ्खचक्रोर्ध्व पुण्ड्रादि	व २.७.२३	शतवर्षसहस्राणि	वृ.गौ. ६.४४
शंखचक्रोर्ध्व पुण्ड्रादि	वृ हा ८.२८२	शतवल्ली महावल्ली	आंपू ५२१
शंखचक्रोर्ध्व पुण्ड्राद्यौ	वृ हा ८.२८५	शतवारं सहस्रं वा	वृहहा ४.५०
शंख पद्म गदा चक्र	वृ हा ३.२४	शतवारं सहस्रं वा	वृ हा ५.१६२
शंख पुष्पीलतामूलं	पराशर १०.२१	शताक्षरा समावर्त्य	बृ.या. ४.४६
शंख प्रोक्तमिदं शास्त्र	शंख १८.१६	शतानामपि मूढानां वचनं	कपिल ८४८
शंखमस्तकसंक्काश	भार ७.३१	शतानि पंच तु वरो	नारद १८.८९
शंखादिनिधिभी राजकुलैरपि	वृ हा ३.३२४	शतुकरो तु वैतस्यां	व २.४.११९
शंखाभिः शंखचक्रे कर	वृ हा ३.३८२	शते दश पला वृद्धिरौर्णे	या २.१८२
शंखे नैवभिषिच्याथ	वृ हा ६.४२२	शतेन जन्मजनितं	वृ परा ४.६१
शठं च ब्राह्मणं हत्वा	अत्रिस २९०	शत्रवोऽप्यत्र (पूज्या)	कण्व ५८६
शणसूत्रा तु वैश्यस्य	ब्र.या. ८.१९	शत्रुमित्र तथापुष्पमुष्णं	लोहि ५८४
शण्डामर्क उपवीरः	ब्र.या. ८.३२९	शत्रुमित्रोदासीमध्येमेषु	विष्णु ३
शतकोटिसमा राजन्	वृ.गौ. ७.१०८	शत्रुसेविनि मित्रे च	मनु ७.१८६
शतजन्मसु तं विद्यात्साक्षद्	कपिल ४०	शत्रौ मित्रै समस्वान्त	वृ परा १२.१०८
शतजन्मसु विप्रत्र्यं प्राप्तस्य	कपिल ३४	शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः	मनु १०.४३
शतत्रयं तु श्लोकानाम	बृ.या. ८.५६	शनैः कालेन महता धरा	कपिल ८३६
शतद्वयं तु पिंडानां	वृ परा ९.५	शनैनासापुटैर्वायुमुत्	बृ.या. ८.४५
शत धारेण विन्यस्य	ब्र.या. १०.११०	शनैरुच्चारयन्मंत्र	ल हा ४.४३
शतपत्रैश्च जातीभि	वृ हा ५.५३७	शनैः शनैः क्रिया साध्वी	शाण्डि ४.१४१
शतंजप्तवा तु सा देवी	शंख १२.१५	शनैः शनैश्च कालेन	आंपू ३३५
शतं तु विरजाहोमं	नारा ८.१२	शनैश्चर कला दिव्या	ब्र.या. १०.८१
शतं त्रिलोकं त्रिशतं	विश्वा ३.७६	शनैश्चरन्तु संस्थाप्य	ब्र. या. १०.६५
शतं ब्राह्मणामाकुश्य	मनु ८.२६७	शनैः सम्मार्जनं	ब्र.या. २.२२
शतं ब्राह्मणमाकुश्य	नारद १६.१४	शन इत्यादि सूक्तैश्च	वृ हा ५.४९०
शतं वैश्ये दशशूद्र	बौधा १.१०.२४	शन आपस्तु दुपदा	वृ.या. ६.२८
शतं सहस्रं गोप्यं वा	लोहि ६६१	शनोदेवी क्षिपेद्धारि	व २.६.२९४
शतं स्त्री दूषणे दद्याद्	या २.२९२	शनो देवीति चेत्यत्र	वृ परा ११.३२१

शान्तो देवी रवे सूनं	वृ परा ११.६३	शयनासनयानानां	शंख १६.७
शान्तो देवी समारभ्य	विश्वा ४.१४	शयनासन संसर्ग	व्यास ३.४८
शान्तो देवीस्त्वापो वा	नारा ६.६	शयानः पादुकस्थश्चे	भार ४.१३
शपत्येनं प्रदातरं	आंपू ७३८	शयान प्रोष्ठपादौ वा	व २.३.१६८
शपथं नाचरेत्पादं संस्पृश्य	शाण्डि ५.४२	शयानः प्रौढपादश्च	औ ३.६९
शपथानन्तरं कालान्	आंपू ३८९	शयानः प्रौढपादश्च	मनु ४.११२
शपथा ह्यृषिदेवानां	नारद २.२१८	शयिते शयिता सुप्ते	लोहि ६६०
शपथैरतुलैर्धोरै राज	लोहि ६५	शयीत शुभशय्यायां	वृ हा ५.३००
शप्तो यदि भवेदेष्ट राज्यं	नारा ७.१४	शय्या च पादुके विद्यां	अ १४३
शबराश्च पुलिन्दाश्च	वृ परा ८.३२१	शय्या च भोजनञ्चैव	अ ३९
शब्दब्रह्मात् परं ब्रह्मां	बृ.या. २.४९	शय्या तप्तायसमयी	वृ हा ६.१६३
शब्दः स्पर्शश्च रूपं	या ३.१८०	शय्याभार्या शिशुः वस्त्र	शंख १६.१५
शब्दः स्पर्शश्च रूपं	मनु १२.९८	शय्यां गृहान् कुशान्	मनु ४.२५०
शब्दस्पर्शादिभिश्चैव	बृ.या. २.५६	शय्यासन दानाद्	व १.२९.१२
शब्दादीनां च पञ्चानाम्	बृह ९.१३४	शय्यासनमलंकारं कामं	मनु ९.१७
शब्दानजनयत्नेव	आंपू २४९	शय्यासनेऽध्याचरिते	मनु २.११९
शब्दे छन्दसि कल्पे च	आंड ५.४	शय्यासूक्तान्तमाज्येन	वृ हा ८.२५७
शब्देनानरसं क्षीरं	वृ हा ५.२७१	शरः क्षत्रियया ग्राह्य	मनु ३.४४
शब्देनापोशनं पीत्वा	व्या २३९	शरच्छशाकं प्रभम् अश्वक्तं	वृहा ३.३८१
शब्दो रूपं तथा स्पर्शो	शंख ७.२५	शरच्छ्रीको मङ्गलको	आंपू ५१४
शं न आपस्तु वै मंत्र	वृ परा २.८६	शरणागतधाती च कूट	बृ.या. ८.३९
शमलप्रसवे स्पृष्टौ	भार १८.८१	शरणागत बाल स्त्री	या ३.२९८
शमीपर्णं तिलै मिश्रितोयैः	व २.६.३२६	शरणागत परित्यज्य	मनु ११.१९९
शमीपर्णेः तिलै स्तोयैः	व २.६.३३८	शरणागतं स्वामिनं	वृ हा ६.१७१
शमीपलाशशाखाभ्यां	कात्या २३.११	शरण्यः पुरुषस्तीथमन्नं	बृ.गौ. २०.११
शमी पापोप शान्त्यर्थं	वृ परा ११.४८	शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु	नारद १९.३३
शम्भवायमः पूर्वं	बृ.या. १०.४८	शरद् वसन्तयो केचिन्	कात्या २६.९
शम्भवायेति जुहुयात्	वृ परा ११.१५१	शरावान् पंच निक्षिप्य	व २.३.२४
शम्भुना लोकनाथेन	आंपू ५८९	शरावैः द्रव्य सम्पूर्णे	वृ हा ५.११७
सम्भुः पुण्यशिवश्री	कण्व ५६	शरीरकर्षणात्प्राणा	मनु ७.११२
शम्भुं रविमुमां चन्द्र	वृ परा ११.४३	शरीरचिन्तां निर्वर्त्य	या १.९८
शम्या वेधाद्बहि	वृ परा ५.७३	शरीरजै कर्मदोषैर्याति	मनु १२.९
शयनं च यथाकाले	आश्व १.५	शरीरपरितापेन	व १.२०.५२
शयन विचार वर्णन	विष्णु ६९	शरीरं चैव वाचं च	मनु २.१९२
शयनाद्यनेक विवेक वर्णन	विष्णु ७०	शरीरं चैव विश्वं च	बृ.या. २.११८

शरीरं धर्मसर्वस्वं	शंख १७.६५	शशास पृथिवीं सर्वा	नारा ७.७
शरीरं पीड्यते येन शुभेन	अत्रिस ३७	शशिव्रह्ममहीजात	भार १४.२०
शरीरं बलामायुश्च	बौधा १.१.१६	शशिव्रतं त्रयः क्रद्धाः	भार ११.३
शरीरं यत् च तत्	वृ.गौ. ५.१७	शश्वद्धधृत्यतो दस्त	भार १५.१०२
शरीरं शोषयेन्नित्यं	शाण्डि ४.२२३	शश्वन्नादिस्तदा कार्यो	कपिल ७४
शरीरमाग्निना संयोज्यान्	व १.४.११	शस्तं स्नानं यथोद्दिष्ट	बृ.या. ७.१६६
शरीरमापः सोमश्च	बृ.या. २.९८	शस्त्रघाते त्रिकृच्छ्राणि	यम ७०
शरीर शुद्धि विज्ञेया	शंख ८.१०	शस्त्र द्विजातिभिर्ग्राह्य	मनु ८.३४८
शरीरसंक्षये यस्य मन	या ३.१६१	शस्त्र वस्त्राश्म मृत्पिण्ड	वृ परा ८.१३४
शरीरस्यात्यये प्राप्ते	पराशर ६.५४	शस्त्रवाहनरक्षोर्ध्नं	विश्वा ५.३०
शरीरात् धार्यते जीवो	वृ.गौ. ५.१६	शस्त्र विषं सुरा च	व १.१३.२३
शरीरान्निस्सृते प्राणे	वृ परा १२.२२२	शस्त्रवेकाकिनं हन्ति	वृहस्पति ४९
शर्कराः गुणखंडादि	वृ परा ७.२३८	शस्त्रावपाते गर्भस्य	या २.२८०
शर्कराज्यसमोपेतं	व २.३.१०	शस्त्रासवं मधूच्छिष्टं	या ३.३७
शर्कराज्येन संयुक्तं	व २.३.२१	शस्त्रास्त्रभृत्वं क्षत्रस्य	मनु १०.७९
शर्कराज्येन संयुक्तां	व २.३.१७३	शस्त्रेण त्रीणि कृच्छ्राणि	वृ परा ८.१३८
शर्करादधिमध्वाज्य	व २.६.९७	शस्यादि दाहयेत्सर्वं	वृ परा १२.३८
शर्करासूप लवणं	व २.६.३४४	शस्येण निहतस्यैवं	कपिल १२७
शर्मवद् ब्राह्मणस्य	मनु २.३२	शाककन्दफलोपेतै	शाण्डि ४.४२
शालाटुं पानसं पत्र	आंपू ५५१	शाकपाकादिकं निन्द्यं	आश्व १.१७७
शल्मल्येरंद्धकार्पासा	भार ५.५	शाकपुष्पफलमूलौपधीनां	बौधा १.५.७८
शल्लकीशशकागोधा	पराशर ६.१०	शाकभक्ष्यफलोपेतं	आंपू २४४
शव इति मृताख्या	व १.१८.८	शाकं च फाल्गुनाष्टम्यां	कात्या १७.२३
शवं च वैश्यमज्ञानाद्	पराशर ३.५०	शाकं मांसं मृणालानि	आप ८.१९
शवं वीथ्यां निपतितं	आंपू २७	शाकं वाऽपि तृणं वापि	वृ परा ४.१९१
शवसूतकमुत्पन्नं	दा १२४	शाकमूलफलादिनि	वृ हा ५.२६९
शवसूति समुत्पन्ने	ब्र.या. १३.४	शाकमूलफलाशीस्याद्	वृ हा ५.५२
शवसूति समुत्पन्ने	ब्र.या. १३.५	शाकमूलफलैर्वापिजीवे	व २.६.१२७
शवस्पर्शी (दाहसंस्कारा)वर्णनम् विष्णु १९	अत्रि स ९०	शाकयावकभैक्ष्याणि	बृ.या. ७.१४४
शवस्पृष्ट तृतीयस्तु	व १.२३.२२	शाकवस्त्रक्षालनाय भवेद्वागो	कपिल ६२२
शवानुगमने चैवम्	आश्व १९.२	शाकाभावे विशेषेण	लोहि ३६२
शवेक्षणं स्वधाकारं	कण्व २९६	शाकाहारी च पुरुषो	शाता ४.१८
शवे निपतिते गेहे	या १.१७८	शाके पत्रे फूले मूले	अत्रिस ३७३
शशश्च मत्स्येष्वपि	नारा ७.२७	शाके राजसमे युक्तं	व २.३.१४४
शशास पूर्ववत् पृथ्वी		शाकैर्मूलैः फलैः पत्रैः	आंपू १७५

शाखाधिपे वलोपेते	ब्र.या. ८.१०५	शाळाप्रवेशे वृषगौ	वृ परा ५.५९
शाखाध्यायी महाभागः	कण्व ७९०	शालां विशालां विधिवत्	नारा ५.३३
शाखा भेदमिदं प्रोक्तं	ब्र.या. १.३६	शालिका नालिकेत्यादि	वृ हा ८.१३२
शाखांविदार्य तस्यास्तु	भार ५.२३	शालीक्षुःशणकार्पास	वृ परा ५.९३
शाखामात्राक्षरावाप्ति मात्रेण	कपिल ३३	शालीनख्यापि धृष्टस्त्री	नारद १३.१७
शाखारंडकदोषज्ञ	भार ७.११४	शाल्मलं काकतुण्डं च	अ ७९
शाण्डिल्योऽपि नमस्कृत्य	शाण्डि १.५	शाल्मीफलके श्लक्षणे	मनु ८.३९६
शातदुश्च शतदुश्च	आंपू ९३१	शाल्यन्नं दधिसंयुक्तं	व २.६.२६७
शांतं पचनासनारूढं	वृ परा ४.७६	शाल्यन्नं दधिसंयुक्तं	वृ हा ५.५५२
शान्ता दान्तां सुशीलाश्च	ब्र.या. ३.३	शाल्यादभवं समाख्यातं	भार २.५३
शांतिकर्मविधानेन	आश्व ३.१८	शावशौचस्यमध्ये तु	व २.६.४४८
शांतिकादीनि कर्माणि	भार १८.५४	शावशौचस्य मध्ये तु	व २.६.४४६
शांतिकामः शमीकाष्ठैः	भार १९.४५	शावशौचे समुत्पन्ने	व २.६.४४५
शांतिर्भवति पुष्टिश्च	वृ परा ११.२६२	शावसूतक उत्पन्ने	लिखित ९०
शांतिवरुणदिक्पत्रे	भार ११.४६	शावे शवगृहं गत्वा	अत्रि ५.२८
शान्तीनामथ सर्वासां	वृ परा ११.१	शाश्वतीं श्रियमाप्नोति	वृ हा ३.३२६
शान्तो घोरस्तथा मूढ	बृ.या. २.२४	शासनं कारयेत् सम्यक्	वृ हा ४.२२४
शान्त्यर्थेशान्तिं	ब्र.या. १०.१	शासनाद्वापि मोक्षाद्	औ ८.१९
शाप अनुग्रह सामर्थ्यं	व्यास १.३७	शासनाद् वापि मोक्षाद्	नारद १८.१०७
शापघ्नि वरदे देवि	ब्र.या. २.१७	शासनाद्वापिमोक्षाद्	मनु ३१६
शापयाशापयिताश्चैव	ब्र.या. १.१९	शासने वा विसर्गे वा	बौधा २.१.२०
शापरोदनहुङ्कारं त्वं	लोहि ४५५	शासितो गुरुण शिष्य	वृ हा ८.२५४
शामावरटयादिक कम्बु	वृ परा ७.२४०	शास्त्रदृष्ट्या समालोच्य	लोहि ५२७
शाम्यञ्च दीर्घवैरत्व	वृ.गौ. २२.८	शास्त्रनिष्ठैः शुक्र वाक्यै	प्रजा १४
शाययित्वा च शय्यायां	वृ हा ६.६०	शास्त्र मन्वादिकं चैव	व २.३
शायित्वाऽथ देवेशं	वृ हा ७.२६५	शास्त्र मन्वादिकं चैव	व २.३.१८९
शारद्यमुच्चकैर्भूमौ	वृ परा ५.१३४	शास्त्रमात्रश्रमोऽतीव	कण्व ४२९
शारीरश्चार्थ दण्डश्च	नारद १८.१११	शास्त्रमार्गेण विधिना	लोहि १६१
शार्गं हैमवतं	नारद १९.३४	शास्त्रविप्रहतानां च	दा ८७
शार्दूल कृष्णगोकृतौ	भार ५.१५	शास्त्राणि भिन्नभिन्नानि	कपिल ४१९
शार्वीरं तत स्वधामानं	शंख १३.६	शास्त्रातिगः स्मृतो	बौधा १.५.७७
शालग्रामशिलायान्तु	वृ हा ५.१७७	शास्त्रानुकारी तत्त्वज्ञः	वृ.गौ. २.२३
शालग्रामस्य शिलया	व २.७.३	शास्त्राभ्यासपरस्यापि	शाण्डि ४.१८९
शालानौ पच्यते ह्यन्नं	लिखित ३७	शास्त्राभ्यासपराणां च कर्म	शाण्डि ४.१९१
शाला द्विजेन्द्रा वृष गौ	वृ परा ५.५७	शास्त्रायणमिदं श्रेष्ठं	भार १.१३

शास्त्रार्थज्ञापनैसदभिः	शाण्डि ४.१८०	शिरो विवर्ज्य न स्नाया	शाण्डि २.५७
शास्त्रार्थधर्मतत्त्वज्ञस्त्व	आं पू ५६६	शिरोवेष्टन्तु यो भुङ्क्ते	पराशर १.५०
शास्त्रावतारो दिग्भेदः	भार १.१४	शिरोहतसय ये वक्त्रे	वृ परा १२.५२
शास्त्रावमानिनश्चैव	शाण्डि ३.२४	शिलादु नीलमित्युक्तं	कात्या २५.७
शास्त्रविरोध भूजा	भार ११.१०५	शिलातले पटे पात्रे	व्या ९५
शास्त्रेण श्रवणं कृत्वा	कण्व ७८२	शिलानप्युञ्छतो नित्यं	मनु ३.१००
शिक्षयन्तमुष्टं च य	नारद ६.१७	शिलाप्रतिष्ठापनादि कृत्यं	पू ९९४
शिक्षितोऽपि कृतं कालं	नारद ६.१८	शिलोच्छ्रमप्याददीत	मनु १०.११२
शिखण्डसम्मितान्	वृ परा ९.९८	शिलोच्छ्रवृत्तिर्विप्रः	वृ परा ६.३०१
शिखा कार्या प्रयत्नेन	आंपू ६२	शिल्पकर्माणि चान्यानि	ओं सं ४४
शिखा तस्य तु रुद्रस्य	वृ परा ११.१४७	शिल्पिनः कर्मजीविनश्च	विष्णु ३
शिखादिरहिता शान्ता	वृ परा १२.१७२	शिल्पिनं कारुकं शूद्र स्त्रियं पराशर ६.१५	पराशर ३.२७
शिखामात्र तथा पिंडान्पूर्व	व्या १८२	शिल्पिन कारुका वैधा	वृ परा ८.४७
शिखायाः कवचं देहो	भार ६.९१	शिल्पिन कारुकाश्चैव	मनु ३.६४
शिगुवर्द्धरशम्यश्च	व २.६.२३	शिल्पेन व्यवहारेण	ब्र.या. ११.४४
शिरःकण्ठाक्षिनासासदिम	शाण्डि १.३९	शिवनेत्र समुत्पन्न	वृ हा ५.५११
शिरः कंठे प्रावरणं	भार ८.७	शिवाद्यागम विद्याद्यैः	औ सं ३७
शिरः कपालध्वजवान्	वृ हा ६.२२५	शिवागिरसे दर्शनात्	बौधा १.२.४६
शिरः कपाली ध्वजवान्	या ३.२४२	शिविकां कारयित्वाऽथ	वृ हा ६.९१
शिरः प्रमाणो विप्रस्य	वृ परा ११.२१७	शिशिरर्तो च यो दद्याद्	वृ परा १०.२२१
शिरः प्रावृत्यकं	पराशर १२.१५	शिशोरभ्युक्षणं प्रोक्तं	दा १२९
शिरःश्वसावुरश्चोरू	वृ परा २.१३१	शिशनस्योत्कृन्तनं कृत्वा	औ ९.९९
शिरसा शिरसा युक्तं	विश्वा ५.२९	शिशनात् प्राशित्रमप्स्व	बौधा २.१.३८
शिरसा सह रुद्राणां	वृ परा ११.१६१	शिष्टः पुनरकामात्मा	व १.१.५
शिरसा सहितं देवी	बृ.या. ४.४०	शिष्टं सर्वं पूर्वं मेव मया	आंपू १०.१०
शिरसो मुण्डनं	नारद १५.९	शिष्टाः खलु विगतमत्सरा	बौधा १.१.५
शिरःस्नानं ग्रहणयो	लोहि ६३८	शिष्ट्वा वा भूमिदेवानां	मनु ११.८३
शिरः स्पृशेत् पिता तस्य	आश्व १०.८	शिष्यसतीर्थ्यस ब्रह्मचारिषु	बौधा १.५.१३५
शिरा शतानि सप्तैव	या ३.१००	शिष्यस्य हृदयालंभ	ब्र.या. २.२२
शिरीषदाडिमार्कान्नाकर	भार ५.८	शिष्याणां शिक्षयावाऽपि	शाण्डि ४.१८१
शिरोदण्डास्त्र (सं) युक्तं	विश्वा ५.३२	शिष्याणां सङ्ग्रहादेव	शाण्डि १.१०६
शिरो धर्मो हनू ब्रह्मा	बृ.गौ. २०.३५	शिष्यानध्यापयेच्चापि	ल हा ४.७०
शिरोब्रह्मा शिखारुदेः	भार ९.५	शिष्यान्ते वासिदासिस्त्री	नारद २.१०
शिरोभिः प्रणता भूमौ	वृ.गौ. १०.३१	शिष्यान्तेवासिभृतका	नारद ६.३
शिरोभिस्ते गृहीत्वोर्वी	मनु ८.२५६		

शिष्याय ऋत्विजोदद्यु	ब्र.या. ८.२०९	शुक्लमृषमं दद्या	व १.२३.३
शिष्योभार्या शिशुभ्राता	दक्ष ४.१४	शुक्लया मूत्र गृहणीत्	लघुयम ७९
शीघ्रं पापनिनि मुक्तः	वृ.गौ. ६.५७	शुक्लांबरं गृहस्थस्य	भार १५.११९
शीघ्रं प्रवासयेदेशात्	आंपू ३७६	शुक्लाम्बरधरं विष्णु	वृ हा ५.१०३
शीतत्वं च भवेत् सर्वम्	वृ.गौ. २.३६	शुक्लाम्बरधरो नीच केश	या १.१३१
शीतलं सलिलं रम्यम्	वृ.गौ. ५.८६	शुक्लेचाच्छादयेत् कक्षे न	वृ.गौ. ८.४०
शीतोदकं तु संस्कृत्य	ब्र.या. ८.३४८	शुचये च द्विवेदाय	वृ परा १०.१६३
शीतोदके त्वशक्तश्चेत्	व २.३.१२९	शुचिकामाहिदेवाः शुचयश्च	बौधा १.६.२
शीतांशावुदिते स्नात्वा	वृ हा ५.४८५	शुचि गोतृप्तिकृत्तोयं	या १.१९२
शीतोदके विनिक्षिप्य	व २.२.२१	शुचि देशं विविक्तं	मनु ३.२०६
शीर्षादि द्वादश मासान्	विष्णु ९०	शुचिदेशं समभ्युक्ष्य	ल हा ४.२७
शीलभङ्गेन नारीणां	व २.५.२	शुचिना सत्यसन्धेन	मनु ७.३१
शीलोल्लेनापि वा जीवेन्	वृ हा ४.१६१	शुचिमध्वरं देवा	बौधा १.६.१
शीलोऽल्लेनापि वा जीवेन्	वृ हा ४.१६१	शुचिमध्वरं देवा	बौधा १.१२.९
शुक-भङ्गेन नारीणां	व २.५.२	शुचिरक्रोधनः शान्तः	औ ५.७९
शुक-टिट्ठिभ-दात्यूहा	वृ परा ६.३२२	शुचिरक्रोधनस्त्वन्यान्	औ ६.३
शुकशारिकयोर्घाते नरः	शाता २.५५	शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषुः	मनु ९.३३५
शुक्तानि च कषायांश्च	मनु ११.१५४	शुचिर्वीप्युशुचिर्वापि	विश्वा १.२५
शुक्तानि तथा जातोऽगुडः	बौधा १.५.१६२	शुचिर्विप्रस्य पालाशः	भार १५.१२१
शुक्ता रुक्षा परुषा	बौधा २.३.४७	शुचिवस्त्रधरः सम्यक	व २.३.१३०
शुक्तिशंखौ तु चण्डालै	व २.६.५०९	शुचि सन्नशुचिर्वाऽपि	वृ परा १०.२८२
शुकक्षयकरा वन्ध्या	बृ.या. ३.२४	शुचि स्नानरतोऽव्यग्र	बृ.गौ. १८.४
शुक तत्रैव विन्यस्य	ब्र.या. १०.६३	शुचीन प्राज्ञान् स्वधर्मज्ञान्	वृ परा १२.१०
शुकः शनैश्चरो राहुः	ब्र.या. १०.५०	शुचीनामशुचीनां च	नारद १८.४२
शुकः शुशुक्वेति	वृ परा ११.३२०	शुची वोहव्या मरुतः	बौधा १६.४
शुकःशोणित संयोगात्	वृ परा १२.१७८	शुचेरश्रद्धानस्य	बौधा १.५.७२
शुकशोणित सम्भूते	वृ हा ४.४	शुचौ देशे तु संग्राह्या	अत्रिस ३२०
शुक्रियारण्यकजपो	या ३.३०८	शुचौ देशे वह्न्यामु	व २.५.३७
शुक्लः कृष्णः कृष्णातर	प्रजा ९९	शुचौ देशे शुचिर्भूत्वा	व २.६.१७९
शुक्लपक्षः स्मृतस्तावत्	भार १५.४३	शुद्धजाम्बूनदप्रख्यं	वृ हा ५.४५३
शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां	वृ हा ७.१०६	शुद्धदारुमये पीठे	वृ हा ५.२४२
शुक्लपक्षे तु सम्पूज्य	वृ परा ७.३०७	शुद्धद्रव्ये समुत्पन्ने	ब्र.या. ४.४
शुक्लं तत् पुरुषं	बृह ९.१११	शुद्ध प्रसारितं पण्यं	शंख १६.१४
शुक्लं महतं वासो	व १.११.४९	शुद्धभिर्विधनाभिर्यास्व	भार १५.२२
शुक्लमाल्याम्बरधरं	व २.३.११७	शुद्धभूमतौ जलं प्रोक्ष्य	विश्वा ६.७

शुद्धं नितं च सिद्धं च	शाण्डि ४.२३३	शुद्धेद्विप्रोदशाहेन	मनु ५.८३
शुद्धं न्यापेन संप्राप्तं	शाण्डि ४.७८	शुन्नकं विड्वराहं	भार ५.१७
शुद्धं सत्त्वेन सुस्पष्ट	कपिल ४५४	शुनकोपहते पात्रे हैमे	व २.६.५०६
शुद्धमन्नमविप्रस्य	आप ८.५	शुनः शोपो वै यूपेन	व १.१७.३३
शुद्धमृण्मणिःसंप्रोता	भार १५.३७	शुना घ्रातावलीढस्य	पराशर ५.६
शुद्धयते चाम्यता	ब्र.या. १२.४१	शुनां च पतितानां च	मनु ३.९२
शुद्धयते द्विचतुर्मासै	ब्र.या. १३.१	शुना च ब्राह्मी दृष्टा	पराशर ५.७
शुद्धवत्योथ कूष्मांड्य	वृ परा ७.२४६	शुना चैव तु संस्पृष्टः	अत्रिस ७३
शुद्धः शौर्यैकचित्तो	वृ परा ६.१९५	शुना चैव तु संस्पृष्टः	अत्रिस ८१
शुद्धसत्त्वगुणोपेतं	वृ हा २.५	शुना दष्टस्तु यो विप्रो	बौधा १.५.१४६
शुद्धसत्त्वं दूरगर्व	आंपू ५९०	शुना पुष्पवती स्पृष्टा	दा १५४
शुद्धः सन्नेव कुर्वीतं	आंपू ४४	शुना स्पृष्टिरस्पृश्य	कण्व ६२२
शुद्धस्फटिक संकाशं	वृ परा १२.२३४	शुनो घ्राणावलीढस्य	वृ परा ८.२७४
शुद्धस्वर्णमयैरत्नैः	भार १२.२९	शुनोच्छिष्टं द्विजो	औ ९.४६
शुद्धाभर्तुश्चतुर्थेऽहनि	व २.५.२६	शुनोपहतः सचेलोऽवगाहेत बौधा	१.५.१४३
शुद्धाभर्तुश्चतुर्थेऽहनि	शंख १६.१७	शुन्धन्तां पितरः प्रोक्ष्य	आंपू ८५२
शुद्धावगाहनं कृत्वा	शाण्डि २.२८	शुभकर्मकरा ह्येते चत्वारः	नारद ६.२३
शुद्धास्त्री चैव शुद्रश्च	ब्र.या. ८.५५	शुभकर्मकृतं चान्नं	कण्व ७८५
शुद्धि प्रकथिता सद्	कण्व १३७	शुभदन्तौ सुरूपा च	वृ परा १०.१६०
शुद्धिं कुर्यात्सदा विद्वान्	शाण्डि ३.५८	शुभमेखलया युक्तं	वृ परा ११.७१
शुद्धिं न ये प्रयच्छन्ति	का १२	शुभस्य अयि अशुभस्य	वृ.गौ. २.३४
शुद्धमात्मैशरणं बुद्धि	लोहि १५२	शुभा पुष्पवती स्पृष्टा	संवर्त १८१
शुद्धिमिच्छता मातापित्रो	व १.४.१९	शुभाशुभकृतं सर्वं प्राप्नोतीह	वृ.गौ. ८.२
शुद्धिर्भरमीषां तु	वृ परा १३२	शुभाशुभक्रियार्थं च	आश्व २.७६
शुद्धेषु व्यवहारेषु शुद्धिं	नारद १.७१	शुभाशुभफलं कर्म	मनु १२.३
शुद्धोदकैस्समापूर्य	नारा ६.४	शुभं मूहूर्ते विमले	व २.३.४२
शुद्धो भवेन्नचेत्तूष्णीं	लोहि १५९	शुभे पात्रे च शुद्धानं	व २.३.१२२
शुद्धो यस्तद् व्रतं	औ ९.६४	शुभेः वरे वरेण्यैहि	वृ परा २.२१
शुद्धयते द्विजो दशाहेन	औ ६.३४	शुभेऽहनि शुभलग्ने	व २. ७.७
शुद्धयत्यावर्तितं पश्चाद्	शंख १६.३	शुभैः भुक्ता फलैरन्यैः	वृ परा १०.१५९
शुद्ध्यर्थं चात्मनो	आश्व १.११६	शुभ्रवस्त्रैश्च सम्वेष्ट्य	व २.७.३५
शुद्ध्यर्थमष्टमे चैव	पराशर ४.११	शुभ्रसंभयलांगूला	वृ परा १०.५७
शुद्ध्यासनं समाधाय	शाण्डि ४.२०१	शुभ्राणि हर्म्याणि	वृ परा १२.७१
शुद्धयेत कारुहस्तस्थं	वृ परा ६.३३६	शुभ्रेणैव मृदा पश्चाद्	वृ हा २.५७
शुद्ध्यदशुचिनः स्वान्तस्त	वृ परा २.१४६	शुत्कं गृहीत्वा पण्यस्त्री	नारद ७.२०

शुल्करस्थानं परिहरन्नकाले	मनु ८.४००	शूद्रवेश्मनि विप्रेण क्षीरं	बृ.गौ. १४.२५
शुल्सस्थानं परिहन्नकाले	नारद ४.१३	शूद्रयां वैश्यात् तु	वृ हा ४.१४६
शुक्लस्थानं वणिक् प्राप्तः	नारद ४.१२	शूद्रवधेन स्त्रीवधो	बौधा १.१०.२५
शुल्कस्थानेषु कुशलाः	मनु ८.३९८	शूद्र विदक्षत्रविप्राणां	मनु ८.१०४
शुल्के चापि मानवं	व १.१९.२४	शूद्रः शुद्ध्यति हस्तेन	संवर्त २१
शुल्केन ये प्रयच्छन्ति	बौधा १.११.२१	शूद्रश्च पाक रोगी	बृ.या. ४.४९
शुल्वस्याथ कुशायामा	भार १८.११५	शूद्रश्च रायश्च सदा	ब्र.या. ८.१२५
शुश्रूषकः पंचविधः	नारद ६.२	शूद्रश्चेदागतस्तं कर्माणि	बौधा २.३.१७
शुश्रूषा च तथा नाम कीर्तन	वृ हा ८.७९	शूद्रश्चेद् ब्राह्मणी	व १.२१.१
शुश्रूषाऽनुव्रज्या	बौधा १.२.४१	शूद्रस्तु यस्मिन् वा	बृ.गौ. १४.५१
शुश्रूषा ब्राह्मणादीनां	वृ रा ४.२१६	शूद्रस्तु वृत्तिमाकांक्षन	मनु १०.१२१
शुश्रूषभिरुपाध्याया	बृ.गौ. १०.१००	शूद्रस्य तु सर्वे	मु ९.१५७
शुश्रूषार्थं त्रयणार्थन्तु	बृ.गौ. १५.७८	शूद्रस्य दासिजः पुत्र	वृ परा ७.३९६
शुश्रूषित्वा नमस्कृत्वा	आउ ११.५	शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा	या १.१२०
शुष्ककर्णा निवध्यन्ते	वृ.गौ. ५.५०	शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा	शंख १.५
शुष्कगव्यं पुरीषं च	व २.५.५२	शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा	वृ परा ४.२२२
शुष्कपर्युषितोच्छिष्टं	संवर्त ३१	शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा	पु ११
शुष्कं तृणमयाशिकं	बौधा १.५.७९	शूद्रस्यविप्रसंसर्गाज्जात	औसं ४१
शुष्कं पर्युषितादीनि	औ ९.५५	शूद्रस्यापि विशिष्टस्य	वृ हा ६.११०
शुष्कमन्नम विप्रस्य	अंगिरस ४६	शूद्रहन्ता च षण्मासं	ब्र.या. १२.४९
शुष्कमांसमयं चान्नं	आप ९.१५	शूद्रहस्तेनऽऽनीयात्	संवर्त ३०
शुष्काणि भुक्त्वा मांसानि	मनु ११.१५६	शूद्रांच पादयोः सृष्टा	ल हा १.१३
शुष्कान्नं गोरसं स्नेहं	पराशर ११.१८	शूद्राणां द्विज शुश्रूषा	पराशर १.६२
शुष्कान् शलाटुकान्	आपू १०१५	शूद्राणां नोपवासः	पराशर ११.२६
शूकरेण हते दद्यान्	शाता ६.३४	शूद्राणां नोपवासः	पराशर ६.४८
शूकरे निहते चैव	शाता २.५०	शूद्राणां भाजने भुक्त्वा	संवर्त ३२
शूद्रकन्यासमुत्पन्नो	पराशर ११.२१	शूद्राणांमधिकं कुर्याद्	ल हा २.१३
शूद्रः कालेन शुद्ध्येत	आउ ५.११	शूद्राणाम्यमीषान्तु	व्यास ३.५०
शूद्रक्षत्रिय विप्राणां	औ ६.३८	शूद्राणामार्याधिष्ठितानां	बौधा १.५.८९
शूद्रग्रामे तथन्येको	बृ.गौ. १९.३५	शूद्राणां मासिकं कार्यं	मनु ५.१४०
शूद्र कटाग्निना दहेत	बौधा २.२.५९	शूद्राणां विधवानां च	विश्वा २.२७
शूद्र तु कारयेद्दास्यं	मनु ८.४१३	शूद्राणामपि भोज्यान्ना	वृ परा ६.३१७
शूद्रपाकं द्विजेभ्यश्च	वृ परा ७.६४	शूद्रादयोगवं वैश्या	वृ हा ४.१४८
शूद्रः प्रव्रजितानांच	या २.२३८	शूद्रादयोगवः क्षत्ता	मनु १०.१२
शूद्रप्रेषणकर्तुश्च	बृ.गौ. १४.२०	शूद्रादीनां तु रुद्राद्या	व २.१.१७

शूद्रादेव तु शूद्रायां	औसं ४९	शूद्रायोच्छिष्टमनुच्छिष्टं	व १.११.७
शूद्राद् गृह्य शतं	बौधा १.४.१२	शूद्रावेदी पतत्यत्रेरू	मनु ३.१६
शूद्राद्यदि गां गृह्णीया	अ ६९	शूद्रा शचिकरैर्मुक्तै	औ २.१३
शूद्राद्वश्यायां मागध	बौधा १.९.७	शूद्री तु क्षत्रियो गत्वा	वृ परा ८.२४४
शूद्रानं ब्राह्मणो भुक्त्वा	शंख १७.३६	शूद्री तु ब्राह्मणो गत्वा	संवर्त १५३
शूद्रानं ब्राह्मणेऽश्रन्वै	वृ परा ६.३०६	शूद्री तु ब्राह्मणो गत्वा	वृ परा ८.२४२
शूद्रानं शूद्रसम्पर्क	अंगिरस ४९	शूद्रे चान्द्रायणं	बौधा २.२.५६
शूद्रानं शूद्रसम्पर्क	आप ८.८	शूद्रेणतिलकं कृत्वा	व्या २९
शूद्रानं शूद्रसम्पर्क	पराशर १२.३२	शूद्रेण तु च संस्पृष्टो	वृ परा ८.२५७
शूद्रानं सूतकस्यान्	पराशर ११.४	शूद्रेण ब्राह्मणाप्यामुत्पन्नो	व १.१८.१
शूद्रानं सूतिकानं वा	वृ हा ६.३८५	शूद्रेणं स्पृष्टमुच्छिष्टं	अंगिरस ५४
शूद्रान्नरसपुष्टस्य	पराशर १२.३१	शूद्रेषु दास गोपाल कुल	या १.१६८
शूद्रान्नरसपुष्टस्य	आंउ ८.७	शूद्रेषु पूर्वेषां परिचर्या	बौधा १.१०.५
शूद्रान्नरसपुष्टांगो	व १.६.२५	शूद्रेषुयाजकं शूद्रपुष्टं	आंपू ७४५
शूद्रान्नरसपुष्टाङ्गो	बृ.गौ. १४.१८	शूद्रैव भार्या शूद्रस्य	मनु ३.१३
शूद्रान्नाद्विरता सन्तः	बृ.गौ. १५.९०	शूद्रोच्छिष्टं तु यो भुङ्क्ते	वृ परा ७.६८
शूद्रान्निषाद्यांकुकुटः	बौधा १.९.१५	शूद्रोच्छिष्टं तु यो भुङ्क्ते	वृ परा ७.६९
शूद्रान्नेन तु भुक्तेन	अंगिरस ५३	शूद्रो गुप्तं गुप्तं वा	मनु ८.३७४
शूद्रान्नेन तु भुक्तेन	आप ८.१०	शूद्रोऽप्यभोज्यं भुक्त्वानं	पराशर ११.७
शूद्रान्नेन तु भुक्तेन	व १.६.२७	शूद्रो ब्राह्मणतामेति	मनु १०.६५
शूद्रान्नेनोदरस्थेन	व्यास ४.६५	शूद्रो वर्णश्चतुर्थोऽपि	व्यास १.६
शूद्रान्नेनोदरस्थेन	व १.६.२६	शूद्रो वा प्रतिलोमो	वृहा ५.२३३
शूद्रान्नेनोदरस्थेन	आप ८.११	शूद्रो वेदफलं याति	अत्रिस ५.१४
शूद्रापपात्रश्रवण	बौधा १.११.३५	शून्य भूतस्तु यत्प्राण	वृ परा १२.२६३
शूद्रापारशवं सूते	नारद १३.११४	शून्यागारण्यरण्यानि	नारद १८.६०
शूद्रापुत्र एव षष्ठो	व १.१७.३५	शून्यायतनमेवापि न पश्ये	शाण्डि ५.४६
शूद्राभिजननम्	बौधा २.१.५५	शून्योऽग्नि सत्यसंज्ञस्तु	बृह ९.१२५
शूद्राये चानुलोम्येन	वृ परा ८.१२१	शूरानथ शुचीन प्राज्ञान	वृ परा १२.१२
शूद्राशयनमारोप्य	मनु ३.१७	शूर्प पश्चान्निधायने	आश्व २.३४
शूद्राप्येके मंत्र वर्ज	व १.१.२५	शूर्पवातनखाग्रम्बुस्नानं	अत्रिस ३१६
शूद्रायां पारशवः	व १.१८.७	शूर्पवातो नखाद्विन्दुः	दा १६५
शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः	मनु १०.६४	शूलपाणिश्च भगवान्	वृहस्पति १७
शूद्रायां विधिना विप्राज्जातः	औसं ३६	शूली परोपतापेन	शाता ३.१२
शूद्रायां वैश्यतश्चौर्यात्	औसं ४५	शूले मत्सयानिवाक्षिप्य	नारद २.१९६
शूद्रायां वैश्यसंसर्ग	औसं ४३	शृङ्गकर्णादि संयुक्तं	वृ परा ८.१२९

शृंगभृंगे त्वस्थिभंगे	अंगिरस ३०	शृणुष्व राजन् विषुवे	बृ.गौ. १९.३
शृंगभृंगेऽस्थिभंगे च	पराशर ९.१९	शृणु राजन् समासेन	वृ.गौ. १२.२
शृंगङ्कऽस्थिभङ्गे च	आंउ १०.११	शृणु वर्णक्रमेण एवं	वृ.गौ. २.१५
शृंगभृंगेस्थिभंगे	आप १.२८	शृणुष्व अवहिते राजन्	वृ. गौ. ६.५
शृङ्गमध्ये तथा ब्रह्मा	वृ.गौ. १०.४५	शृणुष्व भो इदं विप्र	आंउ ३.१०
शृङ्गाग्रे कपिलायास्तु	वृ.गौ. ९.३४	शृणुष्व अवहितोराज	वृ.गौ. ८.७४
शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थानि	वृ परा ५.३५	शृण्वन् शून्येषु	वृ परा ८.१५२
शृङ्गि च हते दद्याद्	शाता ६.३५	शृण्वन् श्रोत्रमुखं नादं	शाण्डि ५.५२
शृङ्गिणा शंकरद्रोही	शाता ६.१२	शृतिस्मृत्युक्त कर्माणि	भार १८.४२
शृङ्गिबेरं कुलुत्यं	शाण्डि ३.११५	शेन्ति मुठहास तलं	व २.६.५२५
शृङ्गे च कृष्णागरुदार	वृ परा १०.७६	शेषक्रियायां लोकोऽनुरोध	बौधा १.१३१
शृङ्गे हेममये तस्य	वृ परा १०.१२६	शेषंज पद्मयोनिरुच	वृ हा ३.३६६
शृणु गोकर्णमात्रस्य	वृ.गौ. ६.१११	शेष भूतश्च जीवस्य	वृ हा ७.२२
शृणु देवि धरे धर्मा	विष्णु १.६५	शेषं दंपतीभुंजीयाताम्	व १.११.८
शृणु धर्मविदां श्रेष्ठ	वृ.गौ. ७.५	शेषमन्नं यथाकामं	औ ३.९२
शृणुध्वमृषम सर्वे	व २.६.२	शेषाहिकणरत्नांशु द	विष्णु १.४१
शृणु पञ्च महायज्ञान्	वृ.गौ. ८.८	शेषेणैव भवेच्छुद्धिरहः	औ ६.२०
शृणु पाण्डव तत्त्वेन	वृ.गौ. ८.२०	शैलांश्चैव स्थितान्	वृ.गौ. ८.५६
शृणु पाण्डवः तत्त्वेन	वृ.गौ. ९.६	शैलूषशौण्डिकान्द्रोन्	व्यास ३.४६
शृणु पाण्डव तत्त्वेन	वृ.गौ. १६.२	शैलूषानन्तु पापानं	वृ.गौ. ११.१६
शृणु पाण्डव तत्सर्व	वृ.गौ. ८.८६	शैल बौद्धस्कान्द शाक्त	वृ हा ८.१४२
शृणु पाण्डव तत्सर्व	बृ.गौ. २१.२	शैव पाषाण्ड पतितै	वृ हा ८.१२८
शृणु पाण्डव यत्नेन	वृ.गौ. २.२	शोकाक्रान्तोऽथवा श्रान्तः	अत्रिस ६४
शृणु पाण्डव सत्य मे	बृ.गौ. १८.२	शोचन्ति जामयो यत्र	मनु ३.५७
शृणु पुत्रा प्रवक्ष्येऽहं	पराशक १.१९	शोचं मंगल मायासा	अत्रिस ३३
शृणु मे विस्तरेणेह नारायण	नारा ५.३१	शोणितशुकसंभवः	व १.१५.१
शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि	वृ हा १.७	शोणितं यावतः पांसून्	मनु ४.१६८
शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि	वृ हा ३.२	शोणितं यावतः पांसून्	मनु ११.२०८
शृणु राजन् यथा न्यायम्	वृ.गौ. ३.१०	शोणितेन विना दुःखं	या २.२२१
शृणु राजन् यथातत्त्वम्	वृ.गौ. ४.६	शोधयित्वा तु पात्राणि	व्यास २.२३
शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि	वृ हा ७.३	शोभते दक्षिणां गत्वा	औ ५.१३
शृणु राजन् यथा तत्त्वम्	वृ.गौ. ५.१०	शोभनान् संभृतान्	वृ परा १०.१८
शृणु राजन् महत् पुण्य	बृ.गौ. १५.११	शोभितं पुष्पमालाभि	वृ परा १०.१६२
शृणु राजन् यथातथ्यं	बृ.गौ. १८.४७	शोषयित्वा र्कतापेन	पराशर ७.३१
शृणु राजन् यथापूर्वं	बृ.गौ. १८.१२	शोचक्रमश्चाधतथा	भार ३.२

शौचदेशमदागव्य	भार ३.१३	श्रद्धधानं सदाचारं	वृ हा २.९
शौचदेशममत्रावृदर्थ	बौधा १.६.५२	श्रद्धधानः शुचिर्दान्तो	व १.२९.२२
शौचं च द्विविधं प्रोक्तं	दक्ष ५.३	श्रद्धधानः शुचिर्नित्यम्	वृ.गौ. ६.८५
शौचं च पात्रशुद्धिश्च	वृ परा ७.२९८	श्रद्धधानः शुभां विद्यां	मनु २.२३८
शौचं त द्विविधं प्रोक्तं	वापू १९	श्रद्धधानस्य भोक्तव्यं	व १.१४.१४
शौचं वाचं च मेध्यत्व	वृ परा ६.६२	श्रद्धधानस्य तस्य इह	वृ.गौ. २.४
शौचं विनासदाऽन्यत्र	आश्व १.१३	श्रद्धयाच्छाद्य गृहिणी	शाण्डि ३.८८
शौचं सुवर्ण नारीणां	आप ८.३	श्रद्धया परया हुत्वा	शाण्डि ४.९५
शौचं सीवर्णरूप्यायां	अंगिरस ४४	श्रद्धयेष्टं च पूर्तं च	मनु ४.२२६
शौचमिज्या तपोदानं	अत्रिस ४९	श्रद्धातिरेकसंयुक्त	शाण्डि १.८२
शौचमूलं मन्त्रमूलं	कण्व २५३	श्रद्धात्यागविहीनस्य	ब्र.या. १३.३०
शौचाचार विचारार्थ	व्यास १.२५	श्रद्धापूर्तं प्रदातव्यं	वृ परा ६.३०५
शौचाचारसमायुक्तो	अत्रिस १३४	श्रद्धामेधां च वै प्रज्ञां	आश्व १०.५७
शौचादिकन्तु यत्कर्म	वृ हा ५.३०७	श्रद्धामेधां च सावित्री	व २.३.१४५
शौचादिकं समाचार	व २.३.८५	श्रद्धामेधा च सावित्री	व २.३.१४६
शौचार्थ मानसार्थञ्च	ल ता ६.७	श्रद्धायां प्राणेष्विष्टेति	वृ हा ५.२५७
शौचे च सुखमासीन	औ २.९	श्रद्धायुक्तः शुचिस्नात	वृ.गौ. ३.३४
शौचे यत्नः सदा कार्य	वाधू २०	श्रद्धयुक्ता ते ह्यु पासन्ते	बृह ९.१०१
शौचे यत्नः सदाकार्य	दक्ष ५.२	श्रद्धावन्तो यतात्मान	विष्णु ८९
शौद्र सौतं राथकारं	लोह ३९४	श्रद्धावान् भगवद्धर्म	शाण्डि १.९०
शौनकाद्याश्च मुनय	औ १.१	श्रद्धाशीलोऽस्पृह्य	व १.८.९
शौर्यभार्याधने हित्वा	नारद १४.६	श्रद्ध्या शक्तितो नित्यं	व्यास ३.६९
शौत्तिकैः स्थानपालैर्वा	या २.१७६	श्रपयित्वौदनं कुर्याद्	आश्व १०.५०
श्मशानबलये चापि वेदिका	कपिल ५९०	श्रमायनाकार्याद्वित्प्राणांतं	कपिल २३८
श्मशानमापो देवगृहं	बौधा २.५.३	श्रयःसु गुरुवद्भक्तिं	मनु २.२०७
श्मशानमेतत् प्रत्यक्षं	व १.१८.११	श्रवणं कीर्तनं सेवा	वृ हा ८.३३६
श्मशाने चितिसंयुक्ते	विश्वा ८.५८	श्रवणमोक्षणञ्चैव	बृ.गौ. १५.६७
श्मशाने शूद्रसंपर्के	व्या २२१	श्रवणं श्रावणं चिन्ता	शाण्डि ४.१९०
श्मशानेष्वपि तेजस्वी	मनु ९.३१८	श्रवणव्रतकालश्च विशेष	वाधू १८३
श्मश्रुकेशान् वापयेद्	व १.२४.६	श्रवणकर्म लुप्तञ्चेत	कात्या २८.१२
श्मश्रूपक्षकेशानां	कण्व ३१७	श्रवणे स्याद् उपकर्म	आश्व १२.१
श्यामं शान्तीकरं प्रोक्तं	वाधू १०९	श्रवणैकादशी सर्व	शाण्डि ४.२२६
श्यामरक्तं च देकारं	वृ परा ४.८५	श्राद्धकर्ता च पूर्वेषुः	व्या २७७
श्यामाकान् कोदवान्	प्रजा १२६	श्राद्धकर्ता न भुञ्जीयात्	आश्व २४.२२
श्यालकस्यसती दौहित्र	कपिल ६०९	श्राद्धकालं च ब्रह्मण	दा ३

श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा	आश्व २३.१८	श्राद्धं कृत्वेतरश्राद्धे	लघुशंख २८
श्राद्धकाले तथा दाने	व्या ३४	श्राद्धं च पितरं घोरं	अत्रिस ३८४
श्राद्धकाले तु यो दद्यात्	अत्रिस ३२८	श्राद्धं तत्र प्रकुर्वीत	ब्र.या. ५.१३
श्राद्धकाले यदा जाता	बृ.या. ५.७	श्राद्धं तत्रैव कुर्वीत	आंपू ५३
श्राद्धकाले यदा पत्नीं	व्या ८३	श्राद्धं तस्य प्रकुर्वीत	ब्र.या. ३.७६
श्राद्धकाले विशेषेण	वृ हा ५.६६	श्राद्धं तैश्च न कर्तव्यं	वृ परा ७.३७३
श्राद्धकालेषु पूज्यन्ते ये	ब्र.या. ६.२०	श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा	व १.११.३४
श्राद्धकालेषु सर्वेषु	आश्व २४.२६	श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा	लिखित ५९
श्राद्धकाले स्वयं चेतु	कण्व ८९	श्राद्धं दत्त्वा परं श्राद्ध	औ ५.८०
श्राद्ध तु विकिरं दत्त्वा	वाधू २.४	श्राद्धं दानं चतुर्दश्यां	ब्र.या. ५.२२
श्राद्धत्यागात् प्रत्यवायो	आंपू १०७१	श्राद्धं दानं तपो यज्ञो	बृ.य. ४.२२
श्राद्धन्तु प्रत्यहं कृत्वा	व २.६.३४७	श्राद्धं पत्यापि कार्यं	वृ परा ७.४७
श्राद्धपंकतौ तु भुञ्जानाव	आंपू ९६०	श्राद्धं भुक्त्वा भवेत्	ब्र.या. ४.१५०
श्राद्धपाकक्रिया यास्ताः प्राह	लोहि ४२५	श्राद्धं भुक्त्वा य उच्छिष्टं	मनु ३.२४९
श्राद्धपाकं पुरस्कृत्य	ब्र.या. ४.४०	श्राद्धं व पितृयज्ञः स्यात्	कात्या १३.४
श्राद्धपाकं समासाद्य	ब्र.या. ४.८७	श्राद्धं वृद्धावचन्द्रे	वृ परा ७.१
श्राद्धपाकेन दातव्यो	ब्र.या. ३.७३	श्राद्धं वै क्रियते तद्वा	आंपू ३१८
श्राद्धभुक्तेः परं तेषां	आंपू ८८४	श्राद्धं स्त्रीपुंसयोः कार्यं	प्रजा १८६
श्राद्धभुक्तेः परं तेषां	आंपू १०७३	श्राद्धरम्भेऽवसाने च	व्या १०८
श्राद्धभुग् वृषलीतत्पं	मनु ३.२५०	श्राद्धर्णमेतद् भवतां	वृ परा ७.३६
श्राद्धभोजनकाले तु	औ ५.५१	श्राद्धवर्णनम्	विष्णु ७३
श्राद्धं अग्निमतः कार्य्यं	कात्या २४.७	श्राद्धविमर्शः श्राद्धकाल	विष्णु ७६
श्राद्धं कर्तव्यमेवेति कुर्वन्ति	कपिल २५३	श्राद्धशेषं न शूदेभ्यो	आंपू ८७४
श्राद्धं कुर्यात्तु शूद्रोऽपि	व्या २८	श्राद्धसंपूर्णता ज्ञेया	आंपू ९६५
श्राद्धं कुर्यात्प्रयत्नेन	कण्व ७८८	श्राद्धसूतकभोजनेषु	व १.२३.९
श्राद्धं कुर्वन् द्विजो	वृ परा ७.११४	श्राद्धस्मृतिं प्रकुर्वन्वै	आंपू १०१२
श्राद्धं कुर्वीत यत्नेन	ब्र.या. ५.१०	श्राद्धस्य ब्राह्मण कालः	वृ.गौ. १०.८०
श्राद्धं कृतं येन महालये	प्रजा २०	श्राद्धहास्ते उपविष्टाश्च	ब्र.या. ४.६२
श्राद्धं कृत्वा तु मर्त्यो	अत्रिस ३६७	श्राद्धाख्ये कारयेद्विद्वान्	लोहि ३८४
श्राद्धं कृत्वा तु यो	आंपू १०८५	श्राद्धाः तर्पणीं यामे	आश्व १.११२
श्राद्धं कृत्वा तु विधिवत्	व्या ६७	श्राद्धिकं तु पुत्रेण प्रज्ञातेन	बृ.या. ५.१०
श्राद्धं कृत्वा परदिने	वाधू २०१	श्राद्धादित्यागदोषाय पात्रमेव	लोहि १४३
श्राद्धं कृत्वा परदिने	वाधू २०२	श्राद्धादीन्यपिकार्याणि न	लोहि ३७०
श्राद्धं कृत्वा परश्राद्धे	लिखित ५८	श्राद्धाधिकारी कास्तन्निर्णयश्च	विष्णु ७५
श्राद्धं कृत्वा प्रयत्नेन	शंख १४.१२	श्राद्धाधिकारी पिण्डस्य	आंपू ११०

श्राद्धानां प्रकृतित्वेन	आंपू ६१६	श्राद्धोपयोगिकं द्रव्यं	आश्व २३.१०
श्राद्धानां वकुतिदशीषदेव	कपिल १४४	श्राद्धोहोमस्तथा दानं	वृ हा २.५९
श्राद्धानि कानिचिद्भूयो	आपू ६८१	श्रान्वः कुद्धस्तमोभ्रान्त्या	पराशर १२.५१
श्राद्धान्तरे कृते तस्मिन्	व्या ३०२	श्रान्त सम्वाहनं रोगि	या १.२०९
श्राद्धान्ते वामदेवाय महामंत्र	कपिल २२५	श्रावण केनाग्निमाधाय	व १.९.७
श्राद्धानां पादाभ्यां न स्पृशेत	विष्णु ८१	श्रावणस्याष्टमीकृष्णा	ब्र.या. ६.२४
श्राद्धान्यनेकश संति	प्रजा ३७	श्रावणे वस्त्रदानेन	वृ परा १०.२६५
श्राद्धारम्भे तथा पादे	ब्र.या. ४.१४४	श्रावणे शुक्लपक्षे तु	वृ परा १०.३
श्राद्धे अध्वाभवेदश्व	ब्र.या. ४.४४	श्रावण्याग्रह्याण्यो	व १.११.१०
श्राद्धे तु यस्य द्विज	वृ परा ७.२३२	श्रावण्यां पौर्णमास्यां	बौधा १.५.१६३
श्राद्धे त्रिणि पवित्राणि	ब्र.या. ३.५५	श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां	मनु ४.९५
श्राद्धे दाने तथा होमे	वृ हा २.५८	श्रावण्यां वा प्रदोषे	कात्या २६.२
श्राद्धे दाने व्रते यज्ञे	वृ हा ८.२९४	श्रावयित्वा तथान्येभ्यः	२.१७६
श्राद्धे निमंत्रितो विप्रो	औ ५.९	श्रावयित्वा त्विदं शास्त्रं	दक्ष ७.५४
श्राद्धे निमंत्रितो विप्रो	प्रजा ९३	श्रावयिष्यति यः श्राद्धे	वृ परा १२.३७५
श्राद्धे नोद्वासनीयानि	व १.११.१८	श्रावयेच्छ्रद्धधानांश्च	विष्णुम ८७
श्राद्धे पत्नी च वामांगे	व्या ८८	श्रावयेद्यस्त्विदं भक्तया	वृ.गौ. २२.३४
श्राद्धे पाकमुपक्रम्य	वाधू २०३	श्रावयेयुः प्रसुग्मन्तासूक्तं	आश्व १५.१९
श्राद्धे प्रशस्तः ब्राह्मण	विष्णु ८३	श्रावितस्त्वातुरेणापि	नारद २.८४
श्राद्धे ब्राह्मण परीक्षा	विष्णु ८२	श्रितो निर्वल्कलो	भार १५.१२९
श्राद्धे यज्ञे जपे होमे	व्या ९२	श्रिय सत प्राणापदात्	वृ हा ३.२९७
श्राद्धे यज्ञे विवाहे च	अत्रिस १३९	श्रिये जात इति ऋचा	वृ हा ८.२३४
श्राद्धे यज्ञे विवाहे च	ब्र.या. ६.११	श्रिये जात इत्यृचैव	वृ हा ५.२९५
श्राद्धे यज्ञे विवाहे च	व्या १०९	श्रियेति पादेति ऋचा	वृ हा ८.२१
श्राद्धेविघ्न समुत्पन्ने	व्या ३२२	श्रियै च भद्रकाल्यै	वृ परा ४.१६७
श्राद्धे विवाहे यज्ञे च	कण्व ८६	श्रो कामः शान्तिकामो	या १.२९५
श्राद्धे वृषोत्सर्ग	विष्णु ८६	श्रीकारपूर्वो नृसिंहो	वृ हा ३.३४७
श्राद्धेषु केषुचित्काल	आंपू ५७५	श्री कृष्णं तुलसीपत्रैः	वृ हा ५.४१४
श्राद्धेषु पायसं श्रेष्ठं	ब्र.या. ४.१५८	श्रीकेशव जगन्नाथ	व २.४.२७
श्राद्धे संकल्पिते चैव	ब्र.या. ४.१२१	श्रीखण्डं दर्भसूत्र	प्रजा ९६
श्राद्धे सप्त पवित्राणि	आंपू ९०६	श्रीखण्डमर्चं येच्छ्रेष्ठं	प्रजा ९७
श्राद्धे हवनकाले च दद्यात्	लघुयम ९९	श्रीधर पुण्डरीकाख्य	वृ हा २.८७
श्राद्धेऽह्नि वर्जयेत्काष्ठै	व २.६.२६	श्रीधरं पूजयेत्तत्र	वृ हा ७.२२५
श्राद्धेऽह्नि समुत्पन्ने	दा ७४	श्रीधरं बाहुके वामे	व २.३.५३
श्राद्धैरुन्नं समुत्पन्ने	ब्र.या. १३.१७	श्रीपापाशनिबद्धाः ते	वृ.गौ. ५.५५

श्री पौरुषाभ्यां सूक्ताभ्यां	वृ हा ७.२५६	श्रुतिज्ञं कुलजं शांतं	प्रजा ७६
श्रीफलारिष्टकयुतं	व २.६.४९५	श्रुतिद्वैधं तु यत्र स्यातत्र	मनु २.१४
श्रीफलैरंशुपट्टानां	वृ परा ६.३३५	श्रुतिपारायणं यद्धा	आंपू १५५
श्री भूमिसहितं देवं	वृ हा ३.१२८	श्रुतिप्रोक्तानि दिव्यानि	कपिल २९
श्री भूमि सहितं देवं	व २.७.५	श्रुतिरात्मोद्भवा तात	वृ परा १.१७
श्री भूसूक्ताभ्यामपि च	वृ हा ८.६३	श्रुतिसंबन्धिनः कृत	कण्व ३८५
श्रीमत्तोदगिरेर्मूदधि	शाण्डि १.१	श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो	मनु २.१०
श्रीमद् अष्टाक्षरो मंत्रो	वृ हा ३.१५१	श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो	बृह १२.२८
श्रीमहाविष्णु मन्येरन्	व २.१.९	श्रुतिस्मृतिपुराणानां	व्यास १.४
श्रीमान्प्रजापति प्राह सर्व	लोहि ४४५	श्रुतिस्मृतिपुराणानि	विश्वा २.१०
श्रीमदेकायनं शास्त्र श्रुतं	शाण्डि १.२	श्रुतिस्मृति पुराणार्था	व २ ७.१३
श्री राम इ नामेदं तस्य	वृ हा ३.२४१	श्रुतिरथवांगिरसी कुर्याद्	मनु ११.३३
श्री लक्ष्मी कमला पद्मा	वृ हा ४.८९	श्रुतिस्मृति ममैवाज्ञा	वाधू १८९
श्रीलम् अध्ययनं दानम्	वृ.गौ. ४.२४	श्रुतिस्मृतिविरुद्धं च	नारद १८.८
श्रीवत्स कौस्तुभाम्यां	वृ हा ३.२५९	श्रुतिस्मृति विहीतो	व १.१.३
श्रीवत्स कौस्तुभोरस्कं	वृ हा ५.१०२	श्रुति स्मृतिश्चविप्राणां	अत्रिस ३४९
श्री वत्सकौस्तुभोरस्कं	वृ हा ३.३५६	श्रुतिस्मृतिषु या प्रोक्ता	भार १८.२
श्रीवत्स कौस्तुभोरस्कं	वृ हा ३.२२	श्रुति स्मृति सदाचार	या १.७
श्री वत्साकं जगद्बीज	विष्णु म ८	श्रुतिस्मृतीतिहासाश्च	वृ हा ७.१७८
श्री वाचकादुकारात्तु	वृ हा ७.३७	श्रुतिस्मृत्युदितं कर्म	कण्व ६८
श्री विष्णु प्रकाशकान्यैव	व २.६.१०९	श्रुतिस्मृत्युदितं धर्म	मनु २.९
श्री विप्रेण कराः चौरा	वृ.गौ. १.९	श्रुति स्मृत्युदितं धर्म	वृ हा ६.१५१
श्री शब्दपूर्वको को नित्यं	कण्व १७	श्रुति स्मृत्युदितं धर्म	वृ हा ८.१६७
श्री सूक्तेन तदा दिल्यैः	वृ हा ६.३९८	श्रुतिस्मृत्युदितं सम्यद्	मनु ४.१५५
श्री स्येशाना जगतो	वृ हा ३.६४	श्रुत्यस्मृत्युदितं धर्म	लघुयम १
श्रुचि प्रस्थापने	वृ परा ६.३४१	श्रुत्याचमनमेतद्धि	विश्वा २.४४
श्रुतवृत्ते विदित्वास्य	मनु ७.१३५	श्रुत्युक्तमेतदेव स्याद्	आंपू ६१७
श्रुतशीले विज्ञाय	बौधा १.९१.२	श्रुत्युक्तलिङ्गोद्भव्य	आंपू ४
श्रुतशौर्यतपः कन्या	नारद २.४१	श्रुत्यैव चांकयेद्गात्रे	वृ हा २.३६
श्रुताध्ययनसमपन्ना	वृ परा ८.६९	श्रुत्वा एवं सात्विकंदांनं	वृ.गौ. ४.१
श्रुताध्ययनसम्पन्ना	या २.२	श्रुत्वा तस्य तु देवर्षेर्वक्त्यं	विष्णु म १२
श्रुता मे मानवा धर्मा	पराशर १.१३	श्रुत्वा तु परमं पुण्यं	वृ.गौ. २२.४०
श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यं	या २.७	श्रुत्वा धर्मं पुरार्थं	वृ गौ. ६.१
श्रुतास्तु मानवा धर्मा	वृ परा १.१४	श्रुत्वा पश्चाच्छ्रोत्रिये	आंपू २१६
श्रुता होते भवत्प्रोक्ता	पराशर १.१६	श्रुत्वायोगीश्वरंवाक्यं	ब्र.या. १०.२७

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा	मनु २.९८	श्रोत्रियाय कुलीनाय	संवर्त ४९
श्रुत्वेमानृषयो धर्मान्	या ३.३२८	श्रोत्रियाय दरिद्राय	वृ.गौ. ६.१६२
श्रुत्वैतत् नारदो वाक्य	विष्णुम ९५	श्रोत्रियाय दरिद्राय	वृ.गौ. ३.३८
श्रुत्वैतद् याज्ञवल्क्योऽपि	या ३.३३४	श्रोत्रियाय प्रयच्छन्	वृ.गौ. ६.३२
श्रुत्वैतानृषयो धर्मान्	मनु ५.१	श्रोत्रियाय महीं दत्त्वा यो	वृ.गौ. ६.१०२
श्रुत्वैतानृषयो धर्मान्	अत्रिस ३९६	श्रोत्रियायाऽऽगताय भागं	व १.११.४
श्रुत्वैवं मुनयो धर्म	ल हा ७.१४	श्रोत्रियायेव देयानि	व १.३.९
श्रूयतामाहिताग्नेस्तु	बृ.गौ. २०.२	श्रोत्रियास्तापसावृद्धा	या २.७१
श्रूयमाणं हि नारीणां	व्या ३५३	श्रोत्रियास्तापसा वृद्धा	नारद २.१३७
श्रेणिनैगमपाषण्डि	या २.१९५	श्रोत्रिये तूपसपन्ने	मनु ५.८१
श्रेणिषु श्रेणिपुरुषाः	नारद २.१३२	श्रोत्रियेभ्यः परं नास्ति	वृ.गौ. ७.१३३
श्रेण्यादिषु च सर्वेषु	नारद २.१३३	श्रोत्रियो रूपवान् शीलवान्	व १.१६.२३
श्रेयश्च लभते सोऽपि	वृ.या. १.३६	श्रोत्रे चक्षुभ्रवोर्मध्ये	वृ.या. ५.१०
श्रेयसः श्रेयसोऽलाभे	मनु ९.१८४	श्रोत्रे नासाक्षिणी बद्ध्वा	विश्व १.७७
श्रेयसा सुखदुःखाभ्यां	या ३.१७१	श्रौतं महर्षिभिः प्रोक्तं	वृ हा ८.२
श्रेयसी कथिता सद्धि	लोहि ४७४	श्रौतमेव विशिष्टं	वृ हा ८.७७
श्रेयः सुगुरुवद्वृत्ति	औ ३.२४	श्रौतः स्मार्त क्रिया कुर्यान्	भार १६.५१
श्रेयसो न भवेदेव तस्मान्	कपिल ८७३	श्रौतस्मार्तक्रिया हेतो	या १.३१४
श्रेष्ठामध्याः कनिष्ठा	भार ५.२४	श्रौतस्मार्तानि कर्माणि	भार १८.३४
श्रेणीतटस्था पितरो	वृ.गौ. १०.५०	श्रौतहोमे दशवृत्ति	विश्व ३.६६
श्रोतव्यः स तु वा कृष्ण	वृ.गौ. १.४	श्रौतग्निहोत्रसंस्कार	पराशर ५.१४
श्रोत्रियाय वाऽग्रं	बौधा २.३.१८	श्रौताग्नौ लोकिकेचापि	ल व्यास २.५३
श्रोत्रियायैव देयानि	मनु ३.१२८	श्रौतेन विधिना चक्रं	वृ हा ८.१९३
श्रोतुकामाः परं गुण्यम्	वृ.गौ. १.१२	श्रौतेनैव च मार्गेण	वृ हा ७.२९६
श्रोत्रञ्च यशश्चैष	ब्र.या. ८.४०	श्रौतेनैव हरिं देवं	वृ हा ८.७५
श्रोतद्वयं च हृदयं	भार ४.३७	श्रौतैश्च स्मार्तमंत्रैश्च	वृ परा ७.३७८
श्रोतद्वयं च हृदये संस्पृशे	विश्व २.४६	श्लक्ष्णनासं रक्तगंडं	वृ हा ३.२२४
श्रोत्रं त्वक् चक्षुषी	मनु २.९०	श्लोषयन्ती स्वासामर्थ्य	शाण्डि ३.१४७
श्रोत्रियं व्याधितात्तौ	मनु ८.३९५	श्लेष्मरक्तसुरामांससर्पि	भार १४.४२
श्रोत्रियं सुभगां गाञ्च	कात्या १९.९	श्लेष्मातकं कोविदारं	व २.६.१७७
श्रोत्रियः श्रोत्रियं साधुं	मनु ८.३९३	श्लेष्मातककरंजाक्ष	भार १५.१३६
श्रोत्रियस्यास्य तज्जग्धि	लोहि ३३९	श्लेष्मातकस्य छायायां	औ ३.७३
श्रोत्रियस्य कदर्यस्य	मनु ४.२२४	श्लेष्माश्रु बान्धवै	कात्या २२.९
श्रोत्रियाद्या वचनतः	नारद २.१३५	श्लेष्माश्रु बान्धवैर्मुक्तं	या ३.११
श्रोत्रियाध्यापको भूत्वा	शाण्डि ३.४०	श्लेष्मौजसस्तावदेव	या ३.१०७

श्लोकत्रयमपि ह्यस्माद्	या ३.३३१	श्वाचाण्डालपतितो	व १.२३.२८
श्वकाकसूकरोष्ट्राद्यै	वृ हा ८.१२९	श्वानचाण्डालवाराह	ब्र.या. ४.४८
श्वकुक्कुटग्राम्यसूकर	व १.२३.२५	श्वानं शूद्र तथोच्छिष्टं	आश्व १.१६३
श्वक्रीडी श्येनजीवी	मनु ३.१६४	श्वानं हत्वा द्विजः	औ ९.७
श्वक्रोष्टुगर्दभोलूकसाम	व २.३.१६२	श्वानौद्वौ श्यामशवलौ	ब्र.या. २.१५०
श्वक्रोष्टु गर्दभाउलूक	या १.१४८	श्वविच्छलाका शलली	कात्या २५.८
श्वचण्डालपतित	व १.११.६	श्वविच्छल्लकशशक	व १.१४.३०
श्वचण्डालादिभि स्पृष्टोना	वृ.गौ. १२.१५	श्वविधं शल्यकं गोधां	मनु ५.१८
श्वच्छित्तौ च यथा क्षीरं	वृ.गौ. २१.१५	श्वसेन हि समायोगाद	वृ परा १२.२२९
श्वः जंबुकः वृकाद्यैश्च	वृ परा ८.२७३	श्वसैः बुभुक्षातृष्णार्ता	वृ.गौ. ५.५६
श्वताश्च मृगा वन्या	व १.३.४४	श्वित्रकुष्ठी तथा चैव	यम २९
श्वदण्डध्वजशूलापस्मार	लोहि ७०५	श्वित्रिणोहैतुकेभ्यश्च	शाण्डि ३.२३
श्वपचं पवित्र स्पृष्ट्वा	वृ हा ६.३४८	श्वित्री कुष्ठी तथा शूलौ	बृ.या. ३.३४
श्वपाकं वापि चाण्डाल	पराशर ६.२०	श्वेत खुरविषाणाम्यां	वृहस्पति २३
श्वपाकीमथ चाण्डालीं	पराशर १०.९	श्वेतवर्णां समुद्दिष्टा	बृ.या. ४.२७
श्वपाकेभ्यः श्ववृत्तिभ्यः	शाण्डि ३.३१	श्वेतस्त्रामश्व सारांगः	भार ६.३३
श्वपाकेश्वापि भुञ्जानो	बृह ९.१७९	श्वेतस्रगक्षमाला च	वृ परा २.१९
श्वमि व्याघ्रैः वृकैः कङ्कैः	वृ.गौ. ५.४१	श्वोभविष्यति मे श्राद्धं	औ ५.२
श्वभिर्हृतस्य यन्मांसं	मनु ५.१३१		
श्वभ्यश्च श्वपचानां	ब्र.या. २.१४९		
श्वमांसं भक्षणं तेषां	औसं १२		
श्वमांसमिच्छन्नातोऽर्जुं	मनु १०.१०६		
श्वमार्जारनकुल	व १.२३.२४		
श्वयोनेश्च परिभ्रष्टो	वृ.गौ. ६.१३२		
श्ववतां शौण्डिकानां	मनु ४.२१६		
श्वविष्टायां क्रिमिभूत्वा	वृहस्पति २९		
श्ववृकाम्यां शृगालाद्यौ	पराशर ५.१		
श्व शूकर शृगालादि	वृ परा ५.१७०		
श्वशृगालखरैर्दृष्टो	मनु ११.२००		
श्वशृगालप्लवङ्गाद्यौ	लघुयम २५		
श्वशूकरखरोष्ट्राणां	मनु १२.५५		
श्वश्चां विवदमानायां	शाण्डि ३.१५०		
श्वश्वशुरयोः पित्रो	लोहि २४०		
श्वसूकरहतं यत्स्या	शाण्डि ४.१६१		
श्वस्पृष्टं सूतिकादृष्ट	वृ हा ६.२५९		
		ष	
		षष्टइलेष्मा पंच पित्तं	या ३.१०६
		षट्कर्मभि कृषि प्रोक्ता	वृ परा ५.१९५
		षट्कर्माणि कृषि ये तु	वृ परा ५.१९४
		षट्कर्माणि च कुर्वीरन्निति	वृ परा १.४८
		षट् कर्माणि निजान्याहु	ल हा १.१७
		षट्कर्माणि नृणां तेषां	वृ परा ६.४८
		षट्कर्माणि ब्राह्मणस्य	व १.२.१९
		षट्कर्माभिरतो नित्यं	पराशर १.३८
		षट्कर्माभिरतो नित्यं	वृ परा २.३
		षट् कर्मैको भवेत्येषां	मनु ४.९
		षट्कारयुक्तं स्वाहान्तं	वृ हा ३.२८१
		षट्कोपैश्च समायुक्तं	व २.२.८
		षट्त्रिशदाब्दिकं चर्यं	मनु ३.१
		षट् पञ्च जहुयात्प्रायश्चित्ता	वृ.गौ. १६.९
		षट् पदैरङ्गुलिन्यास	वृ हा ३.१६
		षट् शतानि शतञ्चैव	पराशर ५.१५

षट्सहस्रं जपित्वा	व २.२.१३	षड्रात्रं वा त्रिरात्रं वा	लघुयम ३
षट्स्वेतेषु हरे सम्यग्	वृ परा ४.११८	षड्रात्रेणाथवा सप्त	औ ६.४३
षडक्षरविधानेन	वृ हा ७.९३	षड्वलामूर्धि विन्यस्य	ब्र.या. ८.२७८
षडक्षरेण जुहुयादाज्यं	वृ हा २.१६	षड्विंशत्यग्लैर्हस्तः	भार २.६०
षडक्षरेण मंत्रेण	व २.२.१२	षड्विधस्तस्य तु बुधैर्दाना	नारद ९.३
षडक्षरेण मंत्रेण	व २.२.२५	षड्विधा ह्याततायिन	व १.३.१७
षडक्षरेण मंत्रेण	वृ हा ५.४८७	षड्विधे क्रमशस्त्रीणि	विश्वा ४.१७
षडक्षरेण मंत्रेण	वृहा ५.४७७	षण्डस्य कुलटायाश्च	शंख १७.३७
षडक्षरेण मंत्रेण	वृ हा ५.४३४	षण्णां तु कर्मणामस्य	मनु १०.७६
षडक्षरेण साहस्रं तिलैर्वा	वृ हा ५.४३९	षण्णामेषां तु पूर्वेषां	मनु १२.८६
षडंग भवन्ति ऋत्विग्	व १.११.१	षण्णां षण्णां क्रमेणैव	अत्रिस ३२
षडंगन्यासमित्युक्तं	भार ६.९५	षण्मात्रिकं गोमूत्र	देवल ६५
षडंगन्यासमित्युक्तं	भार ६.९२	षण्मासमध्यप्राप्तेषु	कण्व ६८२
षडंगमपियोऽधीते	ब्र.या. १.३९	षण्मासाच्चाब्दिकं यच्च	अ ११
षडंगविच्चतुर्वेदी	वृ.गौ. ७.१०९	षण्मासानथयो भुङ्क्ते	आंउ ८.८
षडंगवित् त्रिसुपर्णो	शंख १४.५	षण्मासानिति मौदगल्य	बौधा २.२.६७
षडंगं षट्पदं वर्णं	बृह ११.१४	षण्मासान् केविदिच्छन्ति	वृ परा ८.२५०
षडंग सहितोवेद सर्व	ब्र.या. १.४०	षण्मासान्छागमांसेन	मनु ३.२६९
षडंगुलघटचापे मकरे	भार २.४१	षण्मासे तु गते कार्या	वृ परा ८.५४
षडंगेषु च विन्यस्य	वृ हा ३.३८८	षष्टिं वर्षं सहस्राणि	वृ हा ५.२२४
षडशीतिसहस्राणि	वृ.गौ. ५.११	षष्टिवर्णात्मकं मन्त्र	विश्वा ३.५६
षडशीत्यां व्यतीतायां	आंपू ६.४७	षष्टिवर्षं सहस्रं स	वृ हा ५.३६३
षडाधारेषु षट्कुक्षि	विश्वा १.४१	षष्टिवर्षं सहस्राणि	वृहस्पति २४
षडानुपूर्वा विप्रस्य	मनु ३.२३	षडशीति सहस्राणां	वृहस्पति ३२
षडाहुतिकमन्येन जुहुयाद्	कात्या १९.१५	षष्टिवर्षं सहस्राणि	वृ हा ५.४५०
षडेते पुरुषोजहाद्	ब्र.या. १२.१७	षष्टिवर्षात्परं तासामनाथानां	कपिल ९५७
षड्गवं तु त्रिपादोक्तं	अत्रिस २२२	षष्ठकाले तु योऽश्नाति	वृ.गौ. ७.९८
षड्दैवत्यस्तु दर्शः	आंपू ६६२	षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं	मनु ९.१६४
षड्दैवत्यानि कानि	आंपू ६६१	षष्ठान्नकालता मांस	मनु ११.२०१
षड्भागभृतो राजा	बौधा १.१०.१	षष्ठान्नकालमांसं	औ ९.७१
षड्भागभृतो राजा	बौधा १.१२.४	षष्ठिघ्न सोऽपि कालज्ञैः	वृ परा १२.३६३
षड्भागो द्वादशशश्चैव	अत्रिस १६९	षष्ठिप्रस्थ तिलानां च	ब्र.या. ११.३७
षड्भिराधैरुर्हनेदन्नं इति	विश्वा ८.४४	षष्ठे अन्नं ग्रासनं	शंख २.५
षड्भ्योऽन्नमन्वहं	व्यास ३.३४	षष्ठे अष्टमे वा	शंख २.२
षड्रात्रं नवरात्रं च	वृ परा ८.२५	षष्ठे च सप्तमे चैव	दक्ष २.५

षष्ठेन शुद्धयेतैकाहं
षष्ठेऽन्नप्राशनं कुर्यान्
षष्ठे मास्यान्नमशनीया
षष्ठ्यन्तेनासनं दद्यात्
षष्ठ्यंगुलीनां द्वे
षष्ठ्यचष्टमीहरिदिनं
षष्ठ्या प्रयुक्तं त्रिशतं
षष्ठ्या स्नानन्तु
षष्णवत्यात्मके देहे
षण्मुखाधोमुखं चैव
षाण्मासिकेऽथ संसर्गे
षाण्णंतेमयादत्तमाहा
षोडश निशास्तसामाद्य
षोडशर्तुनिशा स्त्रीणां
षोडशश्राद्धतुलितं
षोडशाक्षरकं ब्रह्म
षोडशान्तं पृथक्कृत्वा
षोडशाब्दात्परं श्राद्धे
षोडशाब्दानि विप्रस्य
षोडशैव तु तस्याध
षोडशैव तु पिण्डांस्ताने
षोडशैवेति केचित्तु
षोडश्योद्वासनं कुर्याच्छेषं
षोडश्योद्वासनं
षोडा ता कथिता
ष्टोमं इत्येवं क्षेम
ष्ठीवनासृक् शकृन्

स

संयताक्षश्वरेच्छान्त
संयतोपस्करा दक्षा
संयत् वाक् चतुर्थषष्ठ
संयमं नियमं वाजपि
संयाने दशावाहवाहिनी
संयोगं पतितैर्गत्वा
संयोजयति यो मोहात्

लिखित ९१
आश्व ८.१
व्यास १.१८
आंपू ७९१
या ३.८६
वाधू १.८२
वृ परा १०.३३९
वृ हा ५.२०६
विश्वा ६.५९
विश्वा ६.६२
औ ८.३१
भार ५.२५
व २.४.१११
या १.७९
आंपू ४८८
बृ.या. ४.८
आंपू ९९५
प्रजा ८०
वृ परा ६.१७६
वृ परा ५.६२
व २.६.३६०
औपू ६५८
व २.६.१६१
वृ परा ४.१३९
आंपू ६५९
बौधा २.३.८५
या १.१३७

वृ परा ८.९८
या १.८३
व १.७.७
वृ परा ८.६७
व १.१९.१२
मनु १२.६०
शाण्डि १.६५

संयोज्य चैवं प्रक्षाल्य
संयोज्य वायुना सोमं
संरक्षणार्थं जन्तूनां
संरक्षिता च भूत्वानां
संरक्ष्यमाणो राज्ञा यं
संरम्भशाट्यानि दलेति
संलंघ्यन् मित्रवाक्ययानि
संलब्ध कथितं श्रीमन्
संलापस्पर्शनादेव
संलापस्पर्शनि श्वास
संवत्सरक्रतुर्मासो
संवत्सरतनुहोषा
संवत्सरं चरेत् कृच्छ्रं
संवत्सरं प्रतीक्षेत
संवत्सरं प्रयत्नेन
संवत्सरं प्रेतपत्नी
संवत्सरं वा षण्मासान्
संवत्सरं शूद्रस्य
संवत्सरविमोकाख्यं संतते
संवत्सरस्यैकमपि चरेत्
संवत्सराभिशास्तस्य
संवत्सरावमं वा प्रतिकाण्डम्
संवत्सरेण पतति
संवत्सरेण पतति
संवत्सरेण पतति
संवत्सरेण पतति
संवत्सरेण पतति
संवत्सरेणार्थखिलं खिलं
संवत्सरे तु गव्येन
संवत्सरो मासश्चतुर्विंशत्यहे
संवत्सरोषितः शूद्रः
संवशोध्यतंडुलाश्चादभि
संवासं च प्रवक्ष्यामि
संवाह्यमानद्विष्युगं
संविभागावशिष्टेन

भार ३.१५
या ३.१२२
मनु ६.६८
बृह ९.९१
मनु ७.१३६
वृ.गौ. ८.१२७
लोहि २११
लोहि ३७२
वृ हा ६.३०७
देवल ३३
कण्व २६
बृ.या. ४.१८
वृ परा ८.११३
मनु ९.७७
आंपू १९७
बौधा २.२.६६
बृ.या. ४.८२
बौधा २.१.११
कपिल १३०
मनु ५.२१
मनु ८.३७३
बौधा १.२.३
देवल ३५
बौधा २.१.८८
मनु ११.१८१
व १.१.२२
वाधू १.८०
नारद १२.२३
मनु ३.२७१
व १.२२.८
देवल २१
व २.५.४४
देवल ७८
विष्णु १.४३
शाण्डि ४.१२९

संविशेत्यूर्ध्वघोषेण	या १.३३१	संस्पर्शे भेद-भिल्लानां	वृ परा ८.३१६
सशंका वालभावे तु	दक्ष ४.११	संस्मृशद्वै शिरस्तद्वद्	औ २.२२
संशयस्थासतु ये केचिन्	नारद १९.१	संस्मृष्टं तद्भवेत्सूत्र	भार १५.४२
संशये न तु भोक्तव्यं	आंउ २.३	संस्मृष्टं नैव शुद्ध्यते	शंख १६.२
संशयोऽतीव सुमहान् वर्तते	कपिल ५	संस्मृत्य दुपदां देवी	वृ परा २.१३७
संशुद्धः कर्षको येन	वृ परा ५.१५७	संस्थितस्यानपत्याय	मनु ९.१९०
संशोधयेत् प्रतिदिनं	वृ हा ८.८८	संस्थिते च संचारो	बौधा १.७.१७
संशोध्य तण्डुलान्	वृ हा ८.१०८	संहताभि त्र्यंगुलिभि	कात्या १.६
संशोध्य त्रिविधं मार्गं	मनु ७.१८५	संहताङ्गुलिना तोयं गृहीत्वा	वाधू २३
संश्राव्य सर्वदा सर्वैः सर्वं	कपिल ८५०	संहतान्योध्येदल्पान्	मनु ७.१९१
संस्कृतपदविन्यासः	कात्या २८.५	संहत्य तिसृभि पूर्वमास्य	दक्ष २.१५
संस्कृतमूलो य शम्या	कात्या ७.३	संहति अहं जगत सर्वम्	वृ.गौ. १.६३
संसर्गं कुरुते मूढ	लोहि ३६	संह्रीयते तयैवेति	कण्व २०४
संसर्गं यदि गच्छेच्चेद्	अत्रिस २७३	सः अनुपूर्वेण यातीमान्	वृ.गौ. ४.४९
संसर्गं वर्जयेद्यतात्	वृ परा ८.८	सः अन्तरात्म देहवताम्	वृ.गौ. ५.१८
संसर्गस्तु तथा तेषां	वृ हा ६.२१०	स आत्मा चैव यज्ञश्च	या ३.१२०
संसर्गहोमो यावत्तु	लोहि ११६	स एको निश्चलीभूत	वृ परा १२.३०९
संसर्गी पञ्चमो ज्ञेयस्त	बृ.या. ४.२३	स एव कर्मचण्डाल	आंपू ६२६
संसारगमनं चैव त्रिविधं	मनु १.११७	स एव कृतकृतयो हि	कण्व १०
संसृष्टा भ्रातरो यत्र	आश्व २४.७	स एव नियमस्त्याज्यो	पराशर ६.५६
संसृष्टिनस्तु संसृष्टी	या २.१४१	स एव नियमो ग्राह्यो	पराशर ६.५७
संसृष्टिनां तु यो भाग	नारद १४.२३	स एव पितृकृत्येषु	आंपू ४३०
संसेव्य चाश्रमान् विप्रो	संवर्त १०६	स एवमेवाहरहर	बौधा २.४.३०
संस्कार प्रथम प्रोक्तो	व २.७.१६	स एव सर्वं कथितः निग्रहा	कपिल ४६२
संस्कारहीने च मृते	शाखा ६.३३	स एव हेयोद्दिष्टस्य	लिखित ३६
संस्कारा अतिपद्मेरन्	कात्या २५.१७	स एवानृतवादी स्यात्	वृ परा ८.८३
संस्कारान्ते च विप्राणां	देवल १३	स एष द्विपिताद्विगोत्रश्च	बौधा २.२.२१
संस्कारा पंचकर्तव्या	वृ हा ५.६१	स कन्यायाः प्रदानेन	संवर्त ६२
संस्कारा पुरुषस्थैते	कात्या २६.१४	सकपूरं च ताम्बूलं	व २.६.१८२
संस्कार्यः पुरषो वाऽपि	आश्व १६.१	सकपूरञ्च ताम्बूलं	वृ हा ७.२७८
संस्कर्यात्साग्निना	आश्व १.५३	स कल्पं सरहस्यं	ब्र.या. ७.४२
संस्कृत स्यादब्राह्मण	कण्व २३१	स कानीनः पुनरपि स्व	लोहि १९४
संस्कृत्याथ पितृव्यस्य	कण्व ७८३	स काम स्वर्गमाप्नोति	अत्रिस ३३९
संस्थाप्य कलशाभ्यां	भार १५.८२	सकामां कामयमानः	व १.१.३३
संस्थाप्य जलसंस्कारं	भार ११.७१	सकामां दूषयंस्तुल्यो	मनु ८.३६८

सकामानां प्रियंगृष्टि	वृ परा १०.८६	सकृद्वा गर्भाधानाद्	नारद १३.८९
सकामायां तु कन्यायां	नारद १३.७२	सक्तुलाजान्नहोमे	तु आश्व २.५४
सकामास्वनुलोमासु	या २.२९१	सखि भार्या कुमारीषु	या ३.२३१
सकामेन सकामाया	बौधा १.११.७	सखिभाय्यी कुमारीञ्च	संवर्त १६२
सकारे सूतकं विद्याद्वकारे	व्या ९८	स गच्छति तम् अध्वानम्	वृ.गौ. ५.९९
स काल कुतपोनाम	ब्र.या. ४.६	स गच्छेद्दक्षिणामूर्ति	वृ.गौ. १८.४९
सकाशान्तु तथा पश्चात्	लोहि ४९६	स गच्छेद्भिमुसदनं सेव्य	वृ.गौ. ७.७२
सकाशाद् वासुदेवस्य	वृ परा १०.११०	स गर्दभं पशुमालभेत	बौधा २.१.३६
स किन्नः धार्यते प्राणो	वृ परा १२.२२१	स गर्भो दीयतेऽन्यस्मै	देवल ५२
सकीटकं स सुगंधं	भार १४.४१	सगुणे निर्गुणश्चासौ	विष्णु म ५२
स कुर्वाक्षतवलयम	भार ७.८२	स गुरुयः क्रियाकृत्वा	शंख ३.१
सकृच्च ब्राह्मणः प्राश्य	वृ परा ८.२६४	स गुरुयः क्रियां कृत्वा	ब्र.या. ८.६५
सकृज्जप्त्वास्य पीनीयं	अत्रि २.५	सगृह्णितद्विजश्रेष्ठोः	भार ७.४८
सकृज्जप्त्वाऽस्यवामीयं	मनु ११.२५१	सगोत्रज्ञातिदायादसामन्त	लोहि ४८३
सकृज्जप्त्वाऽस्यवामीयं	व १.२६.७	सगोत्रदत्ततनयकलत्र	कपिल ६३७
सकृज्जलं तु प्रणवेनां	विश्वा २.४८	सगोत्रनामशार्माहं भौ	भार ६.२१
सकृत् कष्णोति यो	वृ हा ३.२८८	सगोत्रश्चेदयत्त्रतनयः	कपिल ६९२
सकृत् पापापनोदार्थ	औ ८.३०	सगोत्रस्त्रीप्रसंगेन	शाता ५.३३
सकृत् प्रदीयते कन्या	या १.६५	सगोत्राद्भ्रंश्यते नारी	लघुयम ७८
सकृत्प्रसिञ्चन्त्युदकं	या ३.५	सगोत्रांचेदमत्योप	बौधा २.१.४६
सकृत्याहूय कन्यां तु	नारद १३.४०	सगोत्रेणेतरेणापि तावुभौ	लोहि १७१
सकृत् सकृत् त्वपोदत्वा	वृ परा ७.२६३	सगोत्रेभ्यो विशेषेण दद्यात्	कपिल ५०८
सकृदप्यष्टकादीनि	कात्या २६.१५	सगोत्रेष्वथवा कार्यो	आंपू ३०५
सकृदंशो निपतति	मनु ९.४७	सगोत्रसंमतः सूनुर्य	आंपू ४२७
सकृदंशो निपतति	नारद १३.२८	सगौरसर्षपै क्षौमं	या १.१८७
सकृदावर्तयेद्यसतु सर्व	बृ.या. ४.४५	सघृतं यावकं प्राश्य	अत्रिस २६८
सकृदुच्चरणान्गुणां	वृ हा ३.४८	सघृता सयवाश्चापि	वृ परा ११.६८
सकृदुभयं शूद्रस्य	बौधा १.५.२२	स घोषो ब्राह्मणैः कर्तुं	आपू ८१९
सकृदेवेति तज्जामितयां	आंपू ७८६	संकरापात्रकृत्यासु	मनु ११.१२६
सकृद्गच्छेत् स्त्रियं	व २.४.११३	संकरे जातयस्त्वेताः	मनु १०.४०
सकृद्द्विगुणगोमूत्र	अत्रिस २९६	सङ्कर्षणोथ प्रद्युम्नो	बृ.या. २.१०२
सकृदभुक्ता तु या नारी	अत्रिस २०१	संकलीकरणे चात्र	आंपू १६८
सकृदभुक्ता तु या नारी	पराशर १०.२६	संकल्पञ्च विधाने	कपिल ३०४
सकृद् (कृषि) भूवाचक	वृ हा ३.२९४	संकल्पमूलः कामो वै	मनु २.३
सकृद्भोजन संयुक्त	वृ हा ७.३१२	संकल्पं तद्द्वयंचापि	कण्व १५८

संकल्पं तु यदा कुर्यान्	दा ७८	संगृह्या स्थापये	आंपू १०१४
संकल्पं व्यवसायं	बृ.या. २.१३६	संगृह्याऽऽहुतिमेकां च	आश्व २३.४९
संकल्पासनदानेषु	ब्र.या. ४.६८	संग्रहेण प्रवक्ष्येऽद्य	नारा ५.१०
संकल्पितस्य यज्ञस्य	कपिल ९७९	संग्रामे अष्टमार्गे	दा १६३
संकल्पे ह्यत्यजन्सर्वा	कण्व ६६	संग्रामे तानि लीयन्ते	वृहस्पति ५६
संकल्पेऽध्यवसायश्च	दक्ष ७.३२	संग्रामे न निवर्तत	बौधा १.१०.९
संकल्पोऽध्यवसायश्च	बृ.या. ८.५४	संग्रामे प्रहतानां च	पराशर ९.४४
सङ्कल्पो निखिलं	कण्व २४४	संग्रामे वा हतोलक्षः	ब्र.या. १२.४०
संकल्प्य जलधेनुं	वृ परा १०.९४	संग्रामे व हतो लक्ष्यभूत	या ३.२४७
संकषणो गदां शखं	वृ हा ७.१२१	संग्रामेष्वनिवर्तीत्वं	मनु ७.८८
संकीर्णतां यदा पश्येद्	वृ परा ४.४९	सङ्ग्राह्येष्वद्य एकः	लोहि २६५
संकीर्णयोनयो ये तु	मनु १०.२५	स च गोकर्णमात्रेण	वृ.गौ. ६.१०७
संक्रमध्वजयष्टीनां	मनु ९.२८५	स चंडाल इति ज्ञेयः	भार १६.३८
संक्रान्तावुपरागे च	लिखित १९	स च तां प्रतिपद्येत	नारद १३.८१
संक्रान्तिमात्राः कथिता	आंपू ६५६	स चतुष्पाच्चतुः	नारद १.८
संक्रातिरर्कवारश्च	वृ परा ६.२९८	स चार्वाक् तर्पणात्	कात्या १३.५
संक्रातिरहि पक्षस्तत्र	वृ परा ७.१०१	स चेत्तु पति संरुद्ध	मनु ८.२९५
संक्रातिवर्जित कालः	वृ परा ७.१०२	स चेद्वयाधीयीत कामं	बौधा २.१.३१
संक्रान्तिष्वाखिलास्वेवं	आंपू ६४४	स चेद्वयाधीयीत	व १.२३.६
संक्रान्तौ च व्यतीपाते	प्रजा २५	सचैलं वाग्यतः स्नात्वा	आंड २.७
संक्रान्त्यां पक्षयोरन्ते	वाधू १६०	सचैलन्तूपथयो स्नानं	व २.६.४८४
संक्षोभायासृजद् ब्रह्मा	वृ परा २.६२	सचैलं वाग्यतः स्नात्वा	पराशर ८.९
संख्यारेकाभिरथवा भूमौ	भार ९.११	सचैलस्नातमाहूय	या २.९९
सङ्गच्छते कदाचित्तु	लोहि २४१	स चैव हि महापापी	वृ हा ३.८०
संगच्छेत कर्म कर्तुं	लोहि ५६७	स चोक्तो देवदेवेन	ल हा १.११
संगच्छते ज्ञात्यभावेतत्	कपिल ७५३	सच्छत्रस्त्वातपे कुर्यात्	कण्व ६४९
संगच्छते विशेषेण न तु	कपिल ८९३	सच्छूद तं विजानीय	औसं ५०
सङ्गमान्ते ब्रह्मयज्ञं कुर्यात्	विश्वा ८.३५	स जप्यः सर्वदा सद्भि	वृ परा ३.१८
संगमे न हि भोक्तव्यं	ब्र.या. ९.२३	सजले चाञ्चलौ तस्य	आश्व १०.१५
संगवे तु न तु प्रातः	आंपू २८४	सजातिजानन्तरजा	मनु १०.४१
सङ्गृहीतस्स तु शिशु	लोहि ५६४	सजातीयेष्वयं प्रोक्तं	या २.१३६
संगृणवीयाच्च तनयं मध्यस्थं	कपिल ७५२	स जीव इति विख्यातः	वृ परा १२.२३०
संगृह्य कृतसंन्यासो	ल हा ६.९	स जीवति एवैको	दक्ष २.३२
सङ्गृह्यचोभयत्रापि भ्रष्टं	लोहि २०९	स जीवत् पितृको नान्दी	आश्व १५.६८
संगृह्य पाणी पाणीभ्यां	आश्व १०.३१	स जीवन्नेव शूद्रः स्यान्मृतः	दक्ष २.१९

श्लोकानुक्रमणी

सजीवपक्वमांसं च	शंख १७.३५	स तानुवाच धर्मात्मा	मनु १२.२
सजीवं न च चण्डालो	वृ हा ५.५५	सतांअमनुग्रहो नित्यमसता	नारद १८.१७
स (त्वं) जीवशरदश्चैव	ब्र.या. ८.३१४	सतां गुरुणां महतां	कपिल ३८४
सजोषा इन्द्रपर्यन्ता	कण्व ५२०	सतां चित्तसमाधानकार्याय	लोहि ३०५
सज्जातिं रूप-वित्तं	वृ परा ६.२१	सतां यजुस्सामऋचः	कण्व ४६५
सज्ञाता ज्ञातवा पापी	ब्र.या. १२.५२	सतिकन्दद्वयंचैव	व २.६.१७१
स ज्ञेय परमो धर्मो	अत्रिस १४३	सति कर्त्रन्तरेभूयो न	लोहि ४२७
स ज्ञेयस्तं विदित्वेह	वृह ९.१९५	सति चेतनये तल्पे	आंपू ४४९
संचयं कुरुते यस्तु	वृ परा १०.२९२	सति तत्तत्सुते तस्मात्	आंपू ४४०
संचित्य व्याहृती सप्त	वृ परा १२.२६०	सति प्रभाते द्वादश्यां	व २.६.४०४
संजयन्ति च ये विप्रान्	वृ.गौ. ४.५५	सतिलमुदकं पित्र्यं	ब्र.या. ४.१२७
संजातइति सन्तोषपूर्वकं	लोहि २१८	सतिलैर्विद्यते श्राद्धं	आंपू ११०९
संजातमात्रः परमः सर्व	लोहि २१९	सति वंशे वृत्तिदाने क्रयो	कपिल ५०५
संजातस्तनयस्सोऽयमौरसो	कपिल ६९७	सतीनां योषितां देहो	शाण्डि ३.६१
संजातेष्वखिलेष्वेवं	कण्व ६२५	सतीवप्रियभर्तारं जननीव	शाण्डि ४.३५
संजाते सद्य एवास्य	कपिल ८६७	सती श्वसुरयोश्राद्धे कृततप्ता	कपिल १९५
संजीवनं महावीचिं	मनु ४.८९	स तु धर्मं प्रसंगेन	वृ हा ८.१८०
संज्ञया ज्ञायते देशो	बृ.गौ. १४.५०	स तु पापविशुद्ध्यर्थं	ज्ञाता ५.२७
संज्ञानां सर्वसत्त्वानां	विष्णु म ३२	स तु श्राद्धयदा कुर्यात्	प्रजा ४१
सततं किं जपन् जप्यं	विष्णु म २	स तु सोमधृतैर्देवां	या १.४३
सततं तैलदाने न	वृ परा २.२१८	स तेन पुण्यदानेन	वृ.गौ. ७.८
सततं बालवत्साभिर्गोभि	वृ परा ५.३०	स तेन पुण्यदानेन	वृ.गौ. ७.१५
सततं ब्रह्मविष्णुभ्यां	भार १२.३३	स तेन पुण्यस्नानेन	वृ.गौ. ९.३६
सततं ब्राह्मणो भक्त्या	भार १३.३३	स ते वक्ष्यत्यशेषेण	विष्णु १.३२
सततं ब्राह्मणो भक्त्या	भार १३.३३	स तै पृष्टस्तथा	मनु १.४
सततं भिन्नजातीनां	कपिल ३४०	सतै (चै) लस्य पितुःस्नानं	कपिल ७५
सततं सूचनादेतद्यज्ञ	भार १५.१०१	सतोऽपि नित्यं दुर्मार्गं	लोहि ६८०
स तत्पापविशुद्ध्यर्थं	ज्ञाता २.४६	स तोयां पथिके विप्रे	ब्र.या. ११.५४
स तत्र कामं क्रीडित्वा	वृ.गौ. ७.३६	सत्कर्मसततं कुर्याद्	शाण्डि ४.१७८
स तमादाय सत्तैव	या २.१०८	सत्कुशान्विधिनाहृत्य	भार ७.४६
स तरिष्यत्यचिरादापद्भ्यो	ब्र.या. ११.६५	सत्कृत्य भिक्षवे भिक्षा	या १.१०८
स तस्मै दुष्कृतं दत्त्वा	व २.१९३	सत्क्रियाचरणव्याजदुष्ट	लोहि ७०९
सताद् विप्र प्रसूतायां	औसं ४	सत्क्रियां देशकालौ	मनु ३.१२६
स ताननुपरिक्रामेत्	मनु ७.१२२	सत्क्रियां देश कालौ च	व १.११.२५
स तानुवाच धर्मात्मा	मनु ५.३	सत्तंडुलतिलालक्षं	भार ९.३५

सत्त्वप्रवर्तनात्सोऽयं	नारा ५.१५	सत्यसन्धः शुचिनित्य	वृ.गौ. २.२४
सत्त्वं ब्रह्मणि कालेन	शाण्डि ५.३०	सत्यसन्धो जितक्रोधः	वृ.गौ. ६.८४
सत्त्वं रजस्तमश्चैव	या ३.१८२	सत्यांशक्तौब्रीहि यवमाष	कपिल ६२८
सत्त्वं रजस्तमश्चैव	मनु १२.२४	सत्या न भाषा भवति	मनु ८.१६४
सत्त्वारारजससम्मिश्रो जायते	नारा ५.२०	सत्यानृतं तु वाणिज्यं	मनु ४.६
सत्त्वोत्कटा सुराश्चापि	दक्ष ७.२७	सत्यानृतं तु वाणिज्यं	व्या ३७३
सत्पट्टसूत्रलांगूला	वृ परा १०.११५	सत्यानृताभ्यां जीवंत	व्या ३७२
सत्पत्न्या विधवाया वा	लोहि ५६६	सत्यामन्यां सवर्णायां	या १.८८
सत्पात्रे समनुज्ञातं	आंउ ८.१३	सत्यामर्थस्य सम्पत्तौ	वृ परा ६.३०४
सत्प्रकाशे तु न तमो	शाण्डि ४.२१३	सत्याय विष्णवे चेति	बृ.गौ. १६.८
सत्यधर्मार्थवृत्तेषु	मनु ४.१७५	सत्यासत्यन्यथा	या २.२०७
सत्यन्यातनये तावन्	आंपू ४३९	सत्येन द्योतते वह्नि	आंउ ३.१
सत्यप्येकनिवासे तु	वृ परा ८.१४	सत्येन पूयते वाणी	वृ परा ८.३३८
सत्यमर्थं च संपश्येद्	मनु ८.४५	सत्येन पूयते साक्षी	मनु ८.८३
सत्यम स्तेय मक्रोघो	या ३.६६	सत्येन माभिरक्षत्वं	या २.११०
सत्यमात्मा मनुष्यस्य	नारद २.२०१	सत्येन शापयेद् विप्रं	नारद २.१७८
सत्यमुक्त्वा तु विप्रेषु	मनु ११.१९७	सत्येन शापयेद् विप्रं	मनु ८.११३
सत्यमेव परं दानं	नारद २.१९२	सत्येनैव विशुध्यन्ति	आंउ ३.४
सत्यमेव हि क्तव्यं	ब्र.या. ८.२८	सत्येनोत्तमसूक्तेन	वृ हा ५.४६७
सत्यं ज्ञानमनन्तं च	लोहि ५८१	सत्यैः परहितैस्त्यार्थै	शाण्डि १.२२
सत्यं त्वर्तेन मंत्रेण	आश्व १.१५५	सत्यैरसे तत्समोऽयं	आंपू ४२०
सत्यं त्वर्तेन विधिना	आंपू ८२४	सत्रयाजी शतायुश्च	वृ.गौ. ६.१७२
सत्यं देवाः समासेन	नारद २.१९३	सत्रात्प्रोचोऽनुवाकां	कण्व ५२२
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्	मनु ४.१३८	सत्रिणो व्रतिनस्तावत्	औ ६.५७
सत्यं ब्रूहृनृतं त्यक्त्वा	नारद २.१९४	सत्रेण यजते वाथ जपे	अ ७२
सत्यं मृगवधजीवः निर्धनिको	कपिल ४८	सत्त्वचन्दनकाष्ठं	ल व्यास १.१७
सत्यं यद्धि द्विजं दृष्ट्वा	बृ.गौ. १४.११	स त्वप्सु तं घटं प्रास्य	मनु ११.१८८
सत्यं युक्तं सदा ब्रूयात्	वृ परा ६.२५०	सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं	मनु १२.२६
सत्यं साक्ष्ये बुवन्	मनु ८.८१	सत्त्वं रजस्तमश्चैव	बृ.या. २.१९
सत्यवाक् शुद्धचेता	प्रजा ३८	सत्त्वाश्चैव प्रयत्नेन	बृ.या. २.९३
सत्यवाचा च यस्सप्तो	व २.४.६८	सत्त्वैत्यमौन अधिकं न	ब्र.या. ८.३०२
सत्यवादी ह्रीमाननहंकार	बौधा १.२.२०	सत्त्वे त्वनुदिवादित्ये	वृ परा २.८३
सत्यवान् क्रोधरहित	वृ.गौ. ७.८९	सत् सद्यमेधिद्विजना	वृ परा १०.३६१
सत्यशौचयुतान्	वृ हा ४.२२६	सत्सु साधुषु तिष्ठत्सु	लोहि ५१९
सत्यष्टचीनदेवांग	भार ११.१२	सत्स्वीरसेषु मुख्य	आंपू ४६८

स दग्धकिल्बिषो	बृह ९.१.२१	सद्ब्राह्मणाय दातव्यं	भार १२.६०
सदर्थग्राहकं सूक्ष्मज्ञान	शाण्डि १.५८	सद्भक्तानामन्यानां पूजार्थं	शाण्डि १.३६
स दशं आहतं धौतम्	ब्र.या. २.२५	सद्भक्तिपूतया नित्यं	शाण्डि ३.५३
सदसस्पति मद्भुतमृचा	व २.३.७४	सद्भक्त्या स्विन्नदेह	शाण्डि २.६
सदस्यदूषकं तुष्णीं ग्राम	कपिल ८२४	सद्भिराचरितं यत्स्याद्	मनु ८.४६
सदाकर्तव्यं कर्माणि	भार १२.५३	सद्भिरुक्तं विधानेन	कण्व ४१२
सदाघनरसांतस्थस्सदा	भार १८.१७	सद्भि सोऽयं विगर्हः स्यात्	कपिल ८१५
सदाचारपरो विप्र	आश्व २४.३१	सद्भिस्सभासु विवदन्	लोहि २८२
सदाचारस्य विप्रस्य	पराशर १२.५४	सद्यउत्थापयित्यैव तत्र	लोहि ६०९
सदा चैवं प्रकुर्वीत	ब्र.या. ४.३९	सद्य एव प्रकर्तव्यं	आंपू १०७४
सदा चोद्यमिना भाव्यं	वृ परा १२.६६	सद्य एव ब्राह्मणेभ्यो	आंपू ५५०
सदातुष्टस्सदाशान्तः	कण्व ७.९२	सद्य एव विमुक्तः स्यात्	आंपू १६०
सदा त्रिषवणं स्नानात्	आंड १२.२	सद्य पक्षालको वा स्यान्	मनु ६.१८
सदानेनैव कुर्वीत	आंपू १८८	सद्यः पतति मांसेन	अत्रिस २१
सदा प्रहृष्टया भाव्यं	मनु ५.१.५०	सद्यः पतति मांसेन	मनु १०.९२
सदा प्रियहिते युक्तः	वृ परा १२.२१	सद्यः पतति मांसेन	व १.२.३१
सदा ब्राह्मणजातीनां	कण्व ४५३	सद्यः पापहरं राहुः	वृ परा २.९१
सदाऽरण्यत्समिध	बौधा १.२.१९	सद्यः प्राप्ता भवन्त्येव	कपिल ७६९
स दारिद्रमवाप्नोति	विश्वा १.३४	सद्यः शापप्रदानायोद्युक्ता	आंपू ७१५
सदारोऽन्यान पुनर्दारान्	कात्या १९.१३	सद्य शुद्धि पशूनां च	व २.६.५०१
सदासेवी च खल्लाटः	ब्र.या. ४.१६	सद्यः शूद्रत्वमायान्ति	बृ.गौ. १५.७५
सदास्तान्ब्राह्मणांस्तत्र	व २.४.८९	सद्यः शौचं तथै काहोद्वित्रि	दक्ष ६.२
स दिवं याति पूतात्मा	बृ.गौ. १६.४८	सद्यः शौचं भवेत्तस्य	औ ६.२४
सदुष्टां व्यवसनासक्तां	व्यास २.५१	सद्यः शौचं विधातव्यं	वृ परा ८.१५
सदृशं तु प्रकुर्याद्यं	मनु ९.१.६९	सद्यः शौचं विधातव्यं	वृ परा ८.३५
सदृशं यं सकामं	बौधा २.२.२५	सद्य शौचं सपिण्डानां	औ ६.१५
सदृशस्त्रीषु जातानां	मनु ९.१.२५	सद्यश्चण्डालता सा स्याद्	लोहि १४६
स देशो वैष्णव प्रोक्तः	व २.६.४२५	सद्यस्कमेतन्त्रितयं	भार १४.५४
सदैक रूप रूपत्वात्	वृ हा ३.२०७	सद्यस्काले भवेयद्	आश्व २.३
सदैव प्राण संरोधः	वृ परा १२.१३१	सद्यस्ततस्सर्ववंश	लोहि ५२४
सदैविकानि ख्यातानि	आंपू ६८३	सद्यस्तु प्रौढबालायामन्यथा	पु २८
सदैवैतत्समं दानं लक्ष्मी	कपिल ९३४	सद्यस्त्वथयित्वै शास्त्री	कपिल ७५६
सदोपवीतिना भाव्यं	कात्या १.४	सद्यो देशान्तरे पित्रो	आंपू ५१
सदोपवीती चैव स्यात्	औ १.७	सद्यो नष्टा भवेयुर्हि	आपू ८३३
सद्धर्मानुसन्धानमिति	शाण्डि ४.२०३	सद्योनि शंसये पापे न	पराशर ८.४

सद्यो निसंशय पापो	आंउ २.२	सन्तुष्टाय विनीताय	वृहस्पति ५७
सद्योमूल पण्य मति	आंपू ५२६	सन्तुष्टे ब्राह्मणस्तीर्थ	वृ.गौ. २०.१०
सद्यो विलयमायान्ति	आंपू ९०२	सन्तुष्टो भार्यया भर्ता	मनु ३.६०
सद्यो हैन्यमवाप्नोति	आंपू ४३६	सन्तोऽपि न प्रमाणं	नारद २.८२
सद्वक्ता शासयेच्छिष्टां	वृ हा २.१३८	सन्तोषं परमास्थाय	मनु ४.१२
सद्वक्त्येन विनिश्चित्य	लोहि ५७८	सन्तोषं परमास्थाय	व २.५.६१
सद्वृत्ता वर्त मन्तीह	अ १३	संत्कार्यस्य च वै यस्य	आश्व १७.४
सद्वृत्तिर्वसुधा रूपा	लोहि ४९५	संत्तितद्वदनाकाराः ऋजु	भार ७.२५
सद्वृत्त्यबलवानंविश्वर्य	भार ९.३९	संत्यज्य ग्राम्यमाहारं	मनु ६.३
सधर्मं चरितः प्राजापत्य	व २.४.१४	संत्याज्य एव सततं	कण्व १३८
स धर्मस्तु कृतो ज्ञेय	आंउ १.६	संदिग्धलेख्य शुद्धि	या २.९४
स न कंचिद्याचेतान्यत्र	व १.१२.२	सन्दिग्धान्नाश्रमे नाव	शाण्डि ४.१८६
सनकादि मनुष्याश्च	वृ परा ५.१७७	संदिग्धार्थं स्वतंत्रो	या २.१६
सनकादिमनुष्येभ्यो	ब्र.या. २.१४८	संदिग्धेऽर्थेभिशस्तानां	नारद १९.३
सनकाद्यैः स्तूयमानं	वृ हा ३.३७२	संदिग्धेषु तु कार्येषु	नारद २.१२४
स नरः क्षुत्पिपासार्तो	ब्र.या. ९.७	संदेहे चोत्पन्ने दूरे	व १.१५.७
स नरः सर्वदो भूप	वृहस्पति १४	संधातं लोहितोदञ्च	या ३.२२३
सनादमुच्चरेद्विप्रो	वृ परा ६.१०६	संधिं च विग्रहं चैव	मनु ७.१६०
संनियम्योन्दिग्रामं	संवर्त ११३	सन्धिञ्च विग्रहं	या १.३४७
स निवेश्यै करात्रनु	वृ हा ६.४२१	संधिं तु द्विविधं विद्याद्	मनु ७.१६२
स नेतुं न्यायतोऽशक्यो	या १.३५५	संधिते तु परे सूक्ष्मे	बृ.या. ६.२१
स नैष्ठिको ब्रह्मचारी	व्यास १.४०	संधिनीक्षीरमवत्साक्षीरं	व १.१४.२९
सन्तप्तहृदयं भक्त्या	शाण्डि १.१११	सन्धिन्यनिर्द्देशाऽवत्सगो	या १.१७०
संततिस्तु पशुस्त्रीणां	या २.४०	संधिं भित्वातु ये चौर्यं	मनु ९.२७६
सन्तति स्त्रीपशुष्वेव	या २.५८	संधिन्यमेध्यं भक्षित्वा	शंख १७.३०
सन्तर्प्य मूलमंत्रेण	वृ हा ५.३७३	संधिविग्रहयानासन	विष्णु ३
संतानवर्धनं पुत्रमुद्यतं	व १.११.३८	सन्धिवेलाद्वि आहुत्यौ	ब्र.या. ८.३२८
सन्तानस्य विशुद्ध्यर्थ	वृ परा ६.२६	संधिं सर्वसुराणां च	बृ.या. ६.२०
संतानेषु त्रयोदश्यां	वृ परा ७.२९२	संधौ संध्यामुपासीत	बृ.या. ६.२५
सन्ति ताश्च प्रवक्ष्यामि	लोहि ४९१	सन्ध्यज्ञानमिति प्राज्ञा	शाण्डि ५.१७
संतिष्ठते तु तैः सार्धं	बृ.या. १.३७	सन्ध्यायोरुभयो कार्यं	शाण्डि ५.६
संतिष्ठेद्वा सदा सौम्यो	बृ.गौ. १५.९५	सन्ध्यपयोरुभयोर्नित्यं	शाण्डि २.६६
सन्तिह्यवयवास्तेन भ्राता	कपिल ७३६	सन्ध्ययोरुभयोर्विप्रो	बृ.या. ४.४९
संतुष्टस्तारयेदुर्गं	ब्र.या. ११.६९	सन्ध्योर्भोजनार्थं च	व्या ३४३
संतुष्टस्वान्तको नित्यं	वृ परा १२.१०१	सन्ध्यश्च संपत्तावहो	बौधा २.४.१७

सन्ध्योयोस्तु जपेन्नित्यं	बृ.गौ. १८.५	सन्ध्यालोपाच्च चकितः	कात्या ११.१६
संध्योः स्नानतो	कण्व २७०	सन्ध्यावन्दनवेलायां	विश्वा ५.१
सन्ध्यां उपास्य शृणु	या १.३३०	सन्ध्यावन्दनवेलायां	विश्वा ५.५
सन्ध्याकाले तु समप्राप्ते	वृ हा ५.१०१	संध्यविनाशयेज्जप्यं	व्या २१८
सन्ध्याकाले होमकाले	विश्वा ३.८	सन्ध्या सायन्तनी	वृ परा २.२२
सन्ध्यागर्जितनिर्घात	या १.१४५	संध्यस्तमिते संध्या	व १.१३.५
संध्यगर्जितनिर्घातः	व २.३.१५५	संध्यस्नानत्रयं	ब्र.या. १३.२३
सन्ध्याचार विहीनां	वृ परा ८.३६	सन्ध्यास्नानमुभाम्याञ्च	दक्ष २.३८
संध्यत्रयंच्चाभिनयक्रियया	कपिल ३२८	सन्ध्या स्नानं जपश्चैव	वृ परा २.७
सन्ध्यात्रये च निद्रायां	विश्वा २.५३	सन्ध्यास्नानं जपोहोमः	दक्ष ३.८
सन्ध्यात्रये पूर्वमूखो	विश्वा १.२६	सन्ध्यास्नानं जपो	पराशर १.३९
सन्ध्यादि प्रमुखाः सर्वा	भार १.७	सन्ध्या स्नानं जपो	ब्र.या. १२.३३
संध्यदीनां यथा प्रोक्तं	भार ६.१२५	सन्ध्यास्नानं परित्यज्य	विश्वा १.२७
संध्यद्यानंतरं विप्रः	भार ७.७	संध्यस्नानरतो नित्यं	औ ३.९०
सन्ध्याद्वयेऽप्युपस्थान	कात्या ११.११	संध्यस्नाने जपेहोमे	ब्र.या. २.३८
संध्य न वन्दिता	बृ.या. ४.७५	संध्यस्वाह कर्णस्था	भार ३.७
संध्यपरं तु होमः	कण्व २८७	संध्यहीनाः व्रतभ्रष्टाः	बृ.या. ४.५६
संध्यपुरस्ताद्गायत्रि	भार ६.११५	सन्ध्याहीनोऽशुचि	ल व्यास १.२७
सन्ध्या प्रणामाश्च जपः	भार १.१५	संध्यहीनोऽशुर्नित्य	व्य २१५
सन्ध्या प्राचैव ध्येया	विश्वा ३.२२	संध्योपास्ति विना विप्रः	भार ६.१६१
संध्यप्रारम्भकालेषु	विश्वा २.७	सन्नपश्चावदानानां	कात्या २९.१४
सन्ध्याप्रारम्भसमये	विश्वा ३.३३	सन्निकृष्टमतिक्रम्य	औ ३.११९
संध्यभावे सर्वलोक	कण्व २००	सन्निकृष्टमधीयानं	कात्या १५.७
सन्ध्यामथ प्रवक्ष्यामि	वृ परा २.९	सन्निकृष्टमधीयानं	व्यास ४.३६
सन्ध्यामन्वास्य	वृ हा ७.३२	सन्निधावेष वै कल्प	मनु ५.७४
सन्ध्यामुपास्य विधिवत्	व २.६.५५	सन्निरुध्येन्द्रियग्रामं	या ३.६१
सन्ध्यां चोपास्य	मनु ९.२२३	सन्निरुध्येन्द्रियग्रामं	या ३.२००
सन्ध्यांप्राक्प्रातरेवं	ब्र.या. ८.५७	सन्निहत्य तडागानि	वृ परा १०.३६९
सन्ध्यां प्राक् प्रातरेवं	या १.२५	संन्यसेत्सर्वकर्मणि	व १.१०.५
संध्यं प्रातः सनक्षत्र	सम्बर्त ६	संन्यस्ते पतिते ताते	आंपू १०८
सन्ध्यां स्नानं जपं होमं	अत्रिस ३७२	संन्यस्य सर्वकर्मणि	मनु ६.९५
सन्ध्यायाञ्च प्रभाते	दक्ष २.१८	संन्यस्य सर्वकर्मणि	वृ परा ७.१४४
संध्य येन न विज्ञाता	ब्र.या. २.८५	संन्यासं च समुदञ्च	वृ हा २.१२८
सन्ध्या येन न विज्ञाता	वृ परा २.८४	संन्यासं च समुदञ्च	वृ हा ८.२१९
संध्य येन न विज्ञाता	वृ.या. ६.२	संन्यासाश्रम वर्णनम्	विष्णु ९६

संन्यासीनां नियम	विष्णु ९७	सपिण्डानां प्रकथिता	कपिल ७३५
संन्यासीबहुभक्षश्च	वाधू २११	सपिण्डाभावे सकुल्य	बौधा १.५
संन्यासेन मृता ये वै	वृ परा ८.३४	सपिण्डी करणकार्यं	शंख ४१२
संन्यासो युद्ध संस्थश्च	वृ परा ८.३१	सपिण्डीकरणं तस्य	ब्र.या. ७.१३
स पञ्चविंशत्यध्याये	भार १.२०	सपिण्डी करणं तस्य	ब्र.या. ७.१८
सपणश्चेद् विवादः	या २.१८	सपिण्डीकरणं प्रोक्तं	औ ७.१५
सपतिं वनितां साध्वीं	लोहि ६६७	सपिण्डीकरण श्राद्ध	औ ७.१७
सपत्नीका हि पितरस्त्रयस्ते	कपिल ८७	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	दा २७
सपत्नीको ब्रह्ममेधा	कण्व ३८९	सपिण्डी करणादूर्ध्वं	ब्र.या. ३.२४
सपत्नी जननी नित्यतर्पणे	आंपू ३९७	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	ब्र.या. ७.२२
सपत्नीतनयं दृष्ट्वा	लोहि ३२०	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	लघुशंख १५
सपत्नीतनयात्तस्या	लोहि ३२४	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	लघुशंख १६
सपत्न्या वाऽसपत्न्या	आंपू ९७९	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	लिखित १७
सप (वि) त्रकरञ्चैव प्रसन्नो	शाण्डि ४.३	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	वृ परा ७.३३६
सपत्रपुष्पादि कृता	कण्व ४.३	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	वृ परा ७.३३७
सपद्यसंपुटं चित्र	वृह ९.१७३	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	वृ परा ७.३४०
सपन्नामित्याभ्युदयिकेषु	व १.३.६४	सपिण्डीकरणादूर्ध्वं	वृ परा ७.३४१
स परस्य प्रियोनित्यं	वाधू १०५	सपिण्डीकरणाद्	कात्या २४.१३
सपर्याणौ कशायुक्तौ	वृ परा १०.१५४	सपिण्डी करणाभावे	कपिल १००
सपवित्रकरे तस्मिन्	भार ४.२२	सपिण्डी करणे काले	वृ परा ७.१३५
सपवित्रांचतुर्हस्तां	भार १२.१६	सपिण्डीकरणे चार्हे न	शंख ४.१३
सपवित्रेण हस्तेन	वाधू २६	सपिण्डीकरणे तस्मिन्	कपिल २५२
सपवित्रेण हस्तेन	व्या २३५	सपिण्डीकरणे सम्यक्	कण्व ७०८
सपवित्रे निषिच्याऽऽज्यं	आश्व २.३६	सपिण्डे क्षत्रिये शुद्धि	शंख १५.१९
सपवित्रौ सदभौवा	व्या ३०१	सपिण्डे ब्राह्मणे वर्णा	शंख १५.२०
सपाद्यार्घ्यगन्धधूपदीप	आंपू ६८५	सपिण्डेष्वादशाहम्	बौधा १.५.१०७
स पापात्मा महाघोरे	भार १८.१३१	सपिण्डेष्वादशाहम्	बौधा १.१२.११
सपिण्डता च पुरुषे	रषे ६.५२	स पुण्यकृत्तमो लोके	वृ परा ६.१.८८
सपिण्डता तु कर्तव्यां	वृ परा ७.३४२	स पुत्र पशुदाराणां	व २.१.३६
सपिण्डता तु पुरुषे	मनु ५.६०	स पुत्र सकलं कर्म	औ १.३६
सपिण्डता तु पुरुषे	शंख १५.२	सपुत्रा तस्करा शुद्धा	व २.५.७
सपिण्डता त्वा सप्त	बोध १.५.१०८	स पुत्रो देवरसुतो भवितव्यो	लोहि ५५८
सपिण्डदानं सौभाग्यं	प्रजा ३५	स पुनर्दिविध प्रोक्तः	नारद ३.३
सपिण्डानां न्तु सर्वेषां	अत्रिस ८६	स पुष्पमण्डपे रम्ये	व २.२.६
सपिण्डानां त्रिरात्रं	औ ६.२५	स पूजितो वास्पृष्टो	वृ.गौ. ३.८७

सपूज्ये वा अपूज्ये	ब्र.या. ८.१८४	सप्तर्षिलोकपर्यन्तं वालुका	कपिल ९२९
स पृष्ठः केशवः च एव	वृ.गौ. २.१४	सप्त वित्तागमाधर्म्या	मनु १०.११५
स पृष्ठः स्मृतिमान्	व्यास १.२	सप्त व्याहृतयः प्रोक्ताः	बृ.या. ३.५
स पृष्ठो मुनिभिर्व्यासो	वृ परा १.५	सप्तव्याहृतयश्चैव नवपादं	विश्वा २.४१
सप्तऋषींश्च विन्यस्य	ब्र.या. १०.११२	सप्तव्याहृति पूर्वा तां	भार ६.१६
सप्तकस्यास्य वर्गस्य	मनु ७.५२	सप्तव्याहृतिभिर्होमो	संवर्त २०८
सप्तकांचनसंकाशा	वृ हा ३.२६	सप्तव्याहृतिभिश्चापि	विश्वा ३.४
सप्तकूटानिधान्यानि	ब्र.या. ८.२३१	सप्तव्याहृतिभिश्चैव	विश्वा २.४३
सप्तकृत्याभिमंत्र्याथ	भार ९.२९	सप्तसंशुद्धिसंयुक्ता	शाण्डि १.८८
सप्तचाऽऽज्याहुतीर्हुत्वा	आश्व १३.३	सप्तांगस्येह राज्यस्य	मनु ९.२९६
सप्त च्छन्दांसि यान्यासां	बृ.या. ३.१३	सप्तानां प्रकृतीनां तु	मनु ९.२९५
सप्तजन्मकृतं पापं	अत्रि ५.७५	सप्तान्ता देवदेवस्य	बृ.या. ३.१२
सप्त जन्मनि नग्नत्वं	ब्र.या. ३.७४	सप्तापि व्याहृतीर्यस्या	वृ परा ४.३२
सप्त तावन् मूर्द्धन्यानि	कात्या २९.२	सप्तार्चिषं ततो ध्याये	ब्र.या. २.१६६
सप्तत्यूर्ध्वतु चेतस्या	आंपू ६१	सप्तावरण संयुक्तां	वृ हा ७.३३
सप्तद्वीपसमं प्रान्तं	वृ.गौ. ६.९५	सप्ताश्वसि ऋतिर्वायुः	भार २१८
सप्तधान्यन्तु सफलं	शाता ६.२०	सप्ताहेन तु कृच्छ्रोऽयं	अत्रिस ११९
सप्त पञ्च धवा प्रोक्ता	कपिल ७२	सप्तैताव्याहृतीरेता	भार १९.२८
सप्तपर्णपृश्निपर्णी	ल हा ४.७	सप्तैते कथिता दोषाः	भार ७.२९
सप्तमं वामकुक्षौतु	व २.६.१५४	सप्तैते पाकयज्ञाः	कण्व ५००
सप्तमादशमाद्वापि	या ३.३	सप्तैते स्वर्गलोका वै	वृ परा २.६७
सप्तमी कृष्णपिङ्गाक्षी	वृ.गौ. ९.४९	स प्रणाश्य फलं तेषां	वृ परा ६.१३०
सप्तमीदशमी त्रयोदश	शाण्डि २.५१	स प्रनष्टप्रसूर्नित्यं	आंपू ७२०
सप्तमी पितृतोत्रेया	ब्र.या. ८.१४७	सप्रयत्नेनोच्चरेच्च	कण्व ६१४
सप्तमीविद्धा च	ब्र.या. ९.३९	सप्रवासा समुच्चेदा	भार ५.१२
सप्तमी शर्कराधेनुर्दधि	अ ३२	स प्राप्नुयाद् गृहस्थोऽपि	वृ परा २.२२४
सप्तमे शुभगा कन्या	ब्र.या. ८.२९३	सफलं जायते सर्वमिति	बृ.या. ५.१७
सप्तमो विकृतबीज	बौधा १.८.१५	सफला बदरीशाखा	कात्या २८.१०
सप्तम्यन्तेन च तिथौ	कण्व २५	स ब्रह्मचारिण्येकाहमतीते	मनु ५.७१
सप्तरात्रं व्रतं कुर्याद्	शंख १७.३१	स ब्रह्मदो हि राजेन्द्र	वृ.गौ. ६.१३६
सप्तर्यस्तथा सेन्द्राः	नारद २.२१९	स ब्रह्मा परमभ्येति	बृ.या. ४.४८
सप्तर्ययोऽथवेतासां	भार १९.१०	समर्तृकाणां नारीणां	वृ हा ६.३७२
सप्तर्ययो ध्रुवश्चैते	वृ हा ३.१८१	समर्तृका सती वाऽपि	वृ हा ८.२१०
सप्तर्षि अरुन्धती	कण्व ३४९	स भवेत सर्वविद्यानां	बृह १०.२१
सप्तर्षि नागवीक्ष्यन्त	या ३.१८७	सभागारांश्चरेद्भैक्ष्यं	शंख ७.३

सभान्तः साक्षिणः प्राप्तानर्थि	मनु ८.७९	स मंत्रिण प्रकुर्वीत	या १.३१२
सभाप्रपापूयशाला	नारद १८.५९	समभागः सदा प्रोक्त	आंपू ३७७
सभा प्रापापूयशालां	मनु ९.२६४	समभागो ग्रहीतव्य	बृ.या. ५.२२
सभाभ्यनुज्ञा च परावश्यकी	कण्व ६१	समभूमिस्तले दण्ड	भार २.२२
सभामेव प्रविश्याग्रयां	मनु ८.११	समभ्यर्च्य ततः पिण्डान्	ब्र.या. ४.१२९
सभां वा न प्रवेष्टव्या	मनु ८.१३	सममब्राह्मणे दानं	दक्ष ३.२६
सभायां निर्भयं चोरः प्रसिद्ध	कपिल ७६६	सममब्राह्मणे दानं	मनु ७.८५
सभायां पक्षपाती च	शाता ३.२२	सममब्राह्मणे दानं	व्यास ४.४०
सभायां व्यवहारेषु	लोहि २७८	सममितरे विभजेरन्	बौधा २.२.७
सभायां स्पर्शने चैव	देवल ५८	सममेव लभन्तेऽशमौर	आंपू ४१३
सभा वा न प्रवेष्टव्या	नारद १.७३	समं सर्वाश्रमस्थस्य	भार १६.५६
सभा विप्रगृहाश्चापि	बृ.गौ. १३.२३	समय क्रिया वर्णनम्	विष्णु ९
सभाः समवायाश्च	व १.१२.३६	समयस्यानपाकर्म विवादः	नारद १.१८
सभासु वै प्रलपतो सद्यो	लोहि २९५	समये वाप्यधिश्रित्य	कपिल २२८
सभिक कारयेद् द्यूतं	नारद १७२	समरीचानि कार्याणि	शाण्डि ३.११७
स भूमिस्तेयपायेन	वृ परा ५.१२७	समर्धं धनमुत्सृज्य	बृ.या. ३.२३
समकालमिषु मुक्तमानयेत	या २.१११	समर्धं धान्यमुदधृत्य	व १.२.४६
समक्षदर्शनात् साक्षी	नारद २.१२५	समर्चनं प्रकुरुते दैहित्रोऽयं	लोहि ३१९
समक्षदर्शनात्साक्ष्यं	मनु ८.७४	समर्थो यस्य यस्तु	वृ परा ६.३२९
समगोपुच्छलोमानि	आंपू ५७	समर्पणं यत्र कुत्र त्यक्त्वा	लोहि ४७५
समघ योऽन्नमादाय	प्रजा ८८	समवर्णाद्विजादीनां	नारद १६.१६
समजानुद्घो ब्रह्मा	व्यास ३.१४	समवर्णासु ये (वा) जाताः	मनु ९.१५६
समञ्जान्वितित चाऽऽरम्य	आश्व १५.५८	समवर्णे द्विजातीनां	मनु ८.२६९
समंत्वेतया प्राश्य	आश्व १५.५३	समवसाय धर्माश्चारे	बौधा २.१.६७
समत्वमागतस्यापि	दा ७५	समवायेन वणिजां	या २.२६२
समत्वं परमं ब्रह्म	वृ परा १२.२११	समवाये निर्धनानां सर्व	कपिल ४९६
समत्वेन दयां कुर्यान्	बृ.गौ. २२.१८	समशः सर्वेषामविशेषात्	बौधा २.२.३
समदृष्ट्या प्रपश्यन्ती	लोहि ५८५	समष्ट्या बहवो भूयः एकं	कपिल ८४०
समद्विगुणसाहस्रं	दक्ष ३.२५	समष्वेवं परस्त्री	या २.२१७
समनुष्ठयेमेवेति सर्वशास्त्र	कपिल १०४	समः सर्वेषु भूतेषु	व १.१६.५
समनुष्ठाय तत्पश्चात्	कण्व ४१०	समस्त कर्मणामादि	भार ४.१
समनुष्ठेय एवेति	कण्व ४४६	समस्त दक्षिणायुक्तान्	वृ परा १२.१२४
समन्तस्य फलं प्राह	वृ.गौ. ९.४४	समस्त भुवनाभार	वृ परा ११.१३८
समंताद्धरितः स्निग्धः	भार १८.१४	समस्तयज्ञभोक्तारं	वृ हा ८.१७३
समन्ताद्धूसरोगाधः	भार १८.१३	समस्तयाऽथव्याहृत्या	भार ११.९३

समस्तयोगभोक्तारं	वृ हा ८.१७०	समाप्तिं वाचयित्वाथ	व २.३.१५२
समस्तशीतांशु गुण	वृ परा १२.९३	समाप्ते चोत्सवे विष्णो	वृ हा ६.४१
समस्तसंहितायान्तु	व २.३.१७५	समाप्ते तु ततस्तस्मिन्	वृ परा ११.२५८
समस्तसप्ततंतुभ्यः जप	भार ६.१६४	समाप्ते तु व्रते तस्मिन्	वृ.गौ. ७.१०२
समस्तसंपत्समवाप्ति	आंड १२.१६	समाप्ते ब्रह्मचर्ये च	ब्र.या. ८.१४४
समस्ताभरणोपेतां स्वर्ग	भार १२.११	समाप्ते यदि जानीयान्	कात्या ३.५
समस्येद्विभुदंडानि	भार १४.५५	समाप्तेऽर्थे ऋणी नाम	या २.८८
स महीमाखिलां भुंजन्	मनु ९.६७	समाप्तेषु तु मासेषु	वृ.गौ. ७.५६
समाक्षरयुतं नाम भवेत्	आश्व ६.४	समाप्य च व्रतं यस्तु	वृ परा ६.१६६
समागतं समाप्याऽऽदौ	आंपू ३१	समाप्य पुष्पयोगेन	वृ हा ७.१०२
समागतश्च समये विवादे	कपिल ८६३	समाप्य विधिवद्भूयः	लोहि ४४१
समागतो यतोमूलः स्थावरो	लोहि ५१७	समाप्य वेदं गुरवे	व २.३.१८८
समागतात्पुनः प्रोक्तः	आंपू ८५१	समामासतदर्धाहो	या २.८७
समागत्यातिचपलात्	आंपू ५८७	समाम्नायैकदेशं तु गुह्यो	बृह ११.१२
समागमस्तु यत्रैषां	कात्या १०.१०	समायान्ति मनोवेग	आंपू ८६७
समाचरति यो भग्न	वृ परा १०.३६५	समार्धन्तु समुद्रधृत्य	यम ३७
समाचरेत्ततः स्वस्य	आंपू २२३	समालभेद् द्विजानश्चस्त	वृ परा ७.१३०
स मात्रा स च विन्दुश्च	वृ परा १२.२६६	समालिङ्गेत स्त्रियं	संवर्त १२२
समादिव ततो मुदः	ब्र.या. २.८०	समालिप्य जगन्नाथं	शाण्डि ४.१७६
समादीनामुपायानां	मनु ९.१०९	समालोक्यैवं शास्त्राणि	आंपू ११०८
समाननकार्या त (अ) ज्ञात	कण्व ७०१	समावत्तस्य वै मौञ्जी	आश्व १४.९
समानपंक्तौ यदि ते भोजिताः	कपिल ३४३	समावृत्तश्च गुरवेप्रदाय	नारद ६.१४
समानमपि वादं य श्रुतं	कपिल ४७९	समाश्लिष्टं श्रिया दिव्या	वृ हा ३.१९२
समानमु (भु) क्तिर्मर्यादात्	कपिल ३४१	समासन्नेऽपि तज्ज्ञाने	शाण्डि ५.६७
समानमृत्युना यस्तु	वृ परा ७.३८२	समासाद्योगशास्त्रञ्च	लहारीत १.६
समानं खल्वशौचं	शंख १५.१०	स मा सिञ्चत्वायुषा	बौधा २.१.४३
समानं सम्पुटी	ब्र.या. २.१७७	समासीनं महात्मानं	वृ हा ५.३६६
समानरूपा देवानां	बृ.गौ. १५.८५	समासीनस्तु कुर्वीत	वृ हा ३.३०२
समानविद्येऽनुमृते	औ ३.७४	समाहरति यद् द्रव्यं	वृ हा ६.२८४
समाननोदकसंज्ञाश्च ततो	आंपू ६७७	समाहितमना भूत्वा	आश्व १.२७
समा पंक्ति कदाचिन्न कर्म	कपिल ३४२	समाहितमना भूत्वा	बृ.या. २.३६
समायेत् कर्मफलं	वृ हा ६.२३०	समाहृतीकां सप्रणवां	अत्रि १.१६
समापय्य ततः पश्चात्	वृ परा १०.२८७	समाहृत्य तु तद्भैक्षं	औ १.५८
समाप्तमिति नो वाच्यं	आप ३.११	समाहृत्य तु तद्भैक्षं	मनु २.५१
समाप्तावुत्तमादिर्यन्मत्र	वृ परा १२.३९८	समितं यद्गृहस्थेन	दक्ष ७.४५

समित्पुष्पोदकादानेष्व	नारद १८.३५	समुत्सृष्ट इतिप्रोक्ते बाधकं	कपिल ३७५
समित्प्रतपनेऽयं ते	आश्व १.६२	समुद्गपपरिवर्तञ्च	या २.२५०
समिदाज्यैर्या आहुतीर्ये	वृ हा ७.६०	समुद्धरत पाताद्य	कण्व ७२८
समिदात्मसमारूढो	वाधू १५४	समुद्धरति प्रेतत्वं	ब्र.या. ३.१५
समिदादिषु होमेषु	कात्या ८.२१	समुद्धृत्य विधानेन	कण्व ३१९
समिद्धार्युदकुम्भ	बोधा १.२.३०	समुद्धृत्य समुद्धृत्य	कण्व ६३८
समिद्भि पिप्पलैश्चापि	वृ हा ५.४१६	समुद्दिश्य प्रयत्नेन	कण्व २६२
समिद्भि विल्वपत्रैर्वी	वृ हा ७.३१५	समुद्दिश्यस्वकार्यं य तूष्णी	कपिल ८२६
समिधोऽग्नावादधीत	व्यास १.३४	समुद्युक्काय पातुं तज्जलं	आपू ५६२
समिधोऽष्टादशोध्मस्य	कात्या ८.२०	समुद्र ज्येष्ठ मंत्रेण	वृ हा ८.१३
समिष्टयजुंषि तत्पश्चात्	कण्व ५१८	समुद्रयान कुशलादेश	मनु ८.१५७
समीकरणेमेतेषां वस्त्रकंचुक	कपिल ६२९	समुद्रसंयानम्	बौधा २.१.५१
समीक्ष्यपुत्रं पौत्रं वा	वृ परा १२.१२२	समुद्रादूर्मीति सूक्तेन	वृ हा ८.५४
समीक्ष्य वरयेत्सम्य	आपू ७७२	समुन्नयेस्ते सीमां	नारद १२.४
समीक्ष्य स घृतः सम्यक्	मनु ७.१९	समुपस्यर्शयित्वाथ पित्रा	आपू ८२५
समीचीनमहासंध्या	कण्व २६४	स मूढो नरकं याति यावदा	वाधू १२६
समीचीनं तदेव स्यात्	लोहि ३९९	स मूलं शुकतुल्यानि	वृ परा १०.१७४
समीचीनं तिलैः कुर्यात्	आपू ११००	समूलसत्यनाशे तु	नारद १२.२६
समीचीनव्रीहिमाषमुद्गप्रमुख	कपिल ६४	समूहकार्यं आयातान्	या २.१९२
समीचीनानि वस्तूनि	आपू १०१७	समूहकार्यप्रहितो	या २.१९३
समीचीनां तु कृत्वेमां	कण्व २१४	समुद्धानां द्विजातीनां	वृ.गौ. ३.५१
समीपज्ञातीदुष्टिश्चेद् भूदान्	कपिल ४८६	समेखलो जटी दण्डी	पु १४
समीपस्थानतिक्रम्य	व्या २३१	स मे बहुमते (तो) भ्रांति	बृह ११.१३
समीरणं च निश्वास	भार १३.२०	समे रहसि भूभागो	भार ३.८
स मुक्त सर्वपापेभ्यो	वृ.गौ. ६.१४२	समेऽध्वनि द्वयोर्यत्र	नारद १५.२४
स मुक्त्वा विष्णुलोक	वृ परा १०.२१३	समेष्वर्धं पादं वा	वृ हा ६.२७९
समुच्चयं तु धर्माणो	वृ.गौ. १४.१	समैर्हि विषमं यस्तु	मनु ९.२८७
समुच्चरन्तः परमं	कण्व १९५	समोऽतिरिक्तो हीनो वा	नारद ४.३
समुच्चार्याऽथ च श्रोत्र दक्षिणं	कपिल ५३	समोत्तमाधमै राजा	मनु ७.८७
समुच्चार्यास्तत्र देवाः	कपिल ३६६	समोहं सर्वभूतेषु	विष्णु म ६०
समुत्थांयाऽभिवाद्यैनं	कपिल ३	सत्पत्कामी जपेन्नित्यं	वृ हा ३.३२३
समुत्पत्तिं च मांसस्य	मनु ५.४९	सम्पत्तावर्थं पात्राणां	वृ परा ७.४०
समुत्पन्ने यदास्नाने	अत्रिस ३१३	संपन्नं च रक्षयेद्	व १.१६.६
समुत्सृजंते ये शुकं	ब्र.या. १२.५५	सम्पन्नमिति तृप्ताः	कात्या ३.१०
समुत्सृजेद्राजमार्गे	मनु ९.२८२	सम्पन्नमिति पृच्छार्थो	ब्र.या. ६.७

सम्पन्नमिति यद्वाक्यं	शाता १.२९	संप्रार्थ्य यत्नात्संबोध्य	लोहि ६०
सम्पन्नेऽसुरसंथाने	विष्णु म १८	सम्प्राश्य तिलपिण्याकं	वृ परा १.२०
सम्परीक्ष्यो विशेषेण	ब्र.या. ८.१५३	संप्रीतिजन के स्थित्वा	शाण्डि १.८०
संपर्काज्जायते दोषो	दा १२२	संप्रीत्वा भुज्यमानानि	मनु ८.१४६
सम्पर्काज्जायते दोषो	पराशर ३.३३	संप्रोक्षयेत्तत्प्रतिमां	भार ११.७२
सम्पर्काद् दुष्यते विप्रो	पराशर ३.२६	सम्प्रोक्ष्यपरिषिच्याप	व २.६.२०४
संपादयन्ति यत्नेन	आंपू ५३५	सम्प्रोक्ष्याद्भि शुचौ	वृ हा ८.१०७
सम्पादयन्ति यद्विप्रा	आप ३.१२	सम्प्रोक्ष्य मंत्ररत्नेन	वृ हा ८.११२
संपादयन्ति यद्विप्रा	देवल ७१	सम्प्रोदय मंत्ररेत्नेन	वृ हा ८.१३८
संपादवृथातीव	कण्व ४३०	सम्बत्सरन्तु गव्येन	औ ३.१४२
संपादितस्य भवति नासद्	लोहि ३८९	संबंध कोऽपि सुस्पष्ट	कपिल ७३८
संपादिता भविष्यन्ति	आंपू ३१९	संबंध नाचरेदिभक्ति	शाण्डि १.११८
सम्पाद् चापि गार्हस्थ्यं	कपिल ८०१	संबंधं नामगोत्र च	आश्व १.१०२
सम्पीड्य नरकं याति	वृहस्पति ४२	सम्बन्धाच्चैव संसर्गात्	वृ हा ६.३७६
सम्पूज्य जगतामीशं	व २.६.३६५	सम्बन्धो भवतां को वा	लोहि २९१
संपूज्य मधुपर्केण	शाण्डि ४.४१	संबुध्य किल वक्तव्याः सर्वे	कपिल ३५६
संपूज्य माने विप्रेन्द्रे	वृ हा ८.३१३	संभवांश्च वियोनीषु	मनु १२.७७
संपूज्य यदवाप्नोति	वृ हा ५.४५१	संभवेत् त्रिषु लोकेषु	भार १२.५८
सम्पूर्णं विधिना तस्मिन्	वृ हा ५.१२४	संभान्त्यथ मृताहस्य	आंपू ७५
सम्पूज्य वैष्णवै	वृ हा ५.४९३	सम्भारान् शोधयेत्	पराशर १०.३८
संपूज्याऽऽवरणं सर्वं	वृ हा २४६	संभावितो वा विप्रो वै	वृ.गौ. ३.८२
सम्पूर्णं व्रतचर्यं च	ब्र.या. ८.१०७	संभूते च नवे धान्ये	आश्व २४.२५
संपृष्टतः कुशलस्तेन	वृ हा १.२	सम्भूय कुर्वतामर्थं	या २.२५२
सम्प्रणीतः श्मशानेषु	पराशर ८.२९	सम्भूय वाणिजां पण्यं	या २.२५३
संप्रवक्ष्याम्यहं भूय	पराशर २.२	संभूय स्वानि कर्माणि	मनु ८.२११
संप्राप्तमपि तच्छ्राद्ध	आंपू ३९	सम्भोगे दृश्यते	मनु ८.२००
संप्राप्तमवशादैवात्संप्राप्तं	लोहि ४०३	सम्भोजनी साभिहिता	मनु ३.१४१
संप्राप्तान्यैकदा वापि शिष्ट	कपिल २८२	सम्भ्राम्यते विधिवशात्	वृ परा १२.३२६
संप्राप्ताय त्वतिथये	मनु ३.९९	सम्मानयेत् समस्तांश्च	वृ परा १२.४६
संप्राप्तास्मदुरितक्षय	कण्व ५३	सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यं	मनु २.१६२
सम्प्राप्ते च चतुर्थेऽहनि	व २.३.७७	सम्मिश्रा या चतुर्दश्या	कात्या १६.९
सम्प्राप्ते पार्वणश्राद्धे	वृ परा ७.८४	समीग्र कुशसमूज्य सुवादं	ब्र.या. ८.२६३
सम्प्राप्य निरयं गच्छेत्	वृ हा ४.२१३	सम्मार्जनोपांजनेन	मनु ५.१२४
सम्प्राप्य परमं धाम	वृ हा ७.३२३	सम्मार्जयति यश्चापि	वृ परा १०.३६६
संप्रार्थिता सर्वशिष्यै	कपिल ५५८	सम्मानर्जयेत् ततः शिष्यं	वृ हा २.११०

संमार्जितान् कुशान्	आश्व २.४५	स यदाऽगति स्यात	बौधा २.१.३२
सम्यक् कारयितुं	आंपू ४६१	स यदि प्रतिपद्येत	मनु ८.१.८३
सम्यक् त्रिपूर्वपर्यन्त	कण्व ७२२	स याति कामगं लोकं	बृ.गौ. १९.१४
सम्यक् पितृत्वं माप्नोति	आंपू ४६७	य याति मम लोकं वै	बृ.गौ. ७.१००
सम्यक् पूर्णं फलप्राप्त्यै	आश्व २.६७	स याति मामकं लोकं	बृ.गौ. ७.६४
सम्यक् प्रजा पालयित्वा	बृ.गौ. २.२२	स याति रथमुख्येन	बृ.गौ. ७.७६
सम्यक् प्रवाहारयेद्वा	कण्व ५४०	स याति वारुणं लोकं	बृ.गौ. ७.६९
सम्यक्श्लक्ष्णतरे	व २.६.२२८	स योगी परमेकान्तं	बृ.हा ५.५८
सम्यग्वाचम्य ता देवं	विश्वा ५.२३	स रण्डानां स्वकीयानां	कपिला ६१६
सम्यग्वाचारवक्तारं	औ १.३९	सरःसु देवखातेषु	शंख ८.११
सम्यगालोच्य संकल्प्ये	कण्व ५०	सरस्वती च हुंकारे	बृ.परा ५.३८
सम्यगालोचनीयोऽतो	आंपू ८४६	सरस्वती चेत्या	भार ७.७५
सम्यगुक्तप्रकारेणन्या	भार ६.६६	सरस्वती दृषद्वत्योर्देव	मनु २.१७
सम्यगुक्तं मया तेऽद्य	बृ.हा ८.७४	स राजसो मनुष्येषु	बृ.हा ६.१.५९
सम्यगुच्चारणाच्चैव	कण्व २२३	स राजा पुरुषोदण्ड	मनु ७.१७
सम्यक् षोडशसंख्याकं	कण्व ५३३	सरित्समुद्रतोयैक्ये	प्रजा ५३
सम्यगजप्त्वा ब्रह्म	कण्व २३८	सरित् सरसि वापीषु	व्यास ३.६
सम्यग्ज्ञानमिदं प्राज्ञा	शाण्डि ४.२०६	सरित् सरसीश्चैव	बृ.या. ७.६३
सम्यग्दर्शनसम्पन्न	मनु ६.७४	सरित्सु देवखातेषु	शंख ८.७
सम्यग्धर्मार्थकामेषु	व्यास २.१८	सरिदद्भिस्तटाकेषु	भार १६.४९
सम्यग्भवति नास्त्यत्र	लोहि ३४५	सरिद्वरं नदी स्नानं	लहा ४.२६
सम्यङ् निविष्ट देशस्तु	मनु ९.२५२	सरोग विकलक्लीबही	ब्र.या. ४.१२
सम्यङ्ग लवणशाकानि	कण्व ५८९	सरोजबीजगागोय	भार ७.९
सम्बत्ससरकृतं पापं	विश्वा ४.२२	सरोभूतनांस्निग्धं	भार १५.१०८
सम्बत्सरकृतं पापं	बृ.गौ. ९.४३	सरोमं प्रथमे पादे	आप १.३३
सम्बत्सरञ्चरेत् कृच्छ्रं	औ ९.६८	सरोषम् अवधूतं च	बृ.गौ. ३.४२
सम्बत्सरात्परं यत्नात्कृत	लोहि ७००	सर्कव्यता जाति भ्रंशकरण	विष्णु ३८
सम्बत्सरे च षण्मासे	ब्र.या. ८.३२	सर्गप्रलयकाले तु न	बृह ११.७
सम्बत्सरेण पतति	औ ८.२	सर्गादे कारणात्वाच्च	बृ.हा ३.१.७२
सम्बत्सरे ततः पूर्णे	बृ.गौ. १८.८	सर्गादौ ब्राह्मणा श्रेष्ठा	व २.१.५
सम्बन्धिने च यत् दानम्	बृ.गौ. ३.४०	सर्गादौ लोककर्ताऽसौ	बृ.हा ५.२
सम्बर्त मेकमासीनमात्म	सम्बर्त १	सर्गादौ स यथाकाशं	या ३.७०
सम्बर्तेत यथा भार्या	अत्रिस १८३	सर्पदंशे नागवलिर्देय	शाता ६.२९
सम्बर्धयन्ति चाव्याग्राः	बृ.गौ. ५.८८	सर्पराजो मुनिस्तत्र	बृ.परा ११.३३८
स यज्ञ दान तप सामखिलं	व्यास ३.११	सर्पवात नखाग्रान्त	लघुशंख ६९

सर्पविप्रहतानां च	लिखित ६६	सर्वत्र त्रिपदा ज्ञेया	वृ परा ४.१००
सर्पहत्वा माषमात्रं	औ १.१०३	सर्वत्र दानग्रहणे	औ १.१०९
सर्व एव विकर्मस्था	मनु १.२१४	सर्वत्र दृष्ट्वा देवेशं	शाण्डि २.७६
सर्व एवाभिषिक्तस्य	व १.१५.१७	सर्वत्र धर्मोमध्यस्थ कदाचित्	कपिल ७४८
सर्वकण्टक पापिष्ठं	मनु १.२९२	सर्वत्र प्रावशन्तो ये	वृ परा ८.९१
सर्व कर्मणां चैवाऽऽरम्भेषु	बौधा २.४.५	सर्वत्र मार्जनं कर्म	बृ.या. ७.१.७९
सर्वकर्म निवृत्तिर्वा	शाण्डि ५.२१	सर्वत्रारम्भदिवसे उपवासो	व २.६.४२३
सर्वकर्मसु चाप्येवं शुभा	कपिल ८४	सर्वत्राऽज्यं प्रशस्तं	वृ हा ५.५६५
सर्व कर्मेदमायत्तं	मनु ७.२०५	सर्वत्रापि च वतन्ते	कण्व २०१
सर्वकामप्रदत्वाच्च	वृ हा ३.२९८	सर्वत्राप्रतिहतगुरुवाक्यो	बौधा १.२.२१
सर्वकामप्रदं नृणामायुर	वृ हा ३.१७८	सर्वत्रावैष्णवान् विप्रान्	वृ हा ६.१.४९
सर्वकामफला वृक्षा नद्यः	अत्रिस ३.१८	सर्वत्रैवं विजनीयात्	आंपू ८०५
सर्वकामसमृद्धात्मा	वृ परा १०.४१	सर्वत्रैवं समाख्याता	आंपू ६९३
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं	भार १.१९	सर्वत्रैवं हृदाध्यायन्	भार ७.८७
सर्वकामा स्त्रियो वाऽपि	बृ.गौ. २१.३२	सर्वत्रैवाविशेषेण कुर्वीत	लोहि ७
सर्वकालं हिते सर्वे	वृ.गौ. १.११	सर्वत्रोरमुच्चार्य	व्या २.६८
सर्वकालं हि सर्वेषाम्	वृ.गौ. ६.२०	सर्वथा दत्ततनयः वयोज्येष्ठ	कपिल ६८५
सर्वकृत्यं संध्यैव	कण्व १९९	सर्वथाऽनुष्ठितं सिद्ध	भार १३.२
सर्वक्रतुस्वरूपश्च सर्व	कपिल ८७६	सर्वथाऽन्नं यदा न	वृ परा ७.३०१
सर्वक्रतूनां सम्पत्तिं धर्म	कपिल ५६४	सर्वथैव योग्यास्तास्तेषु	कपिल ५४२
सर्वखल्यादिका श्वादि तथा	कपिल १४२	सर्वधाचमनं तद्धि नामकं	कण्व ११४
सर्वगन्धोदकैस्तीर्थै	वृ परा १०.२५४	सर्वदा दूर विध्वस्त	वृ हा ७.३३५
सर्वज्ञातिमहाबन्धुजनमृत्या	कपिल ५५९	सर्वदानमयं ब्रह्म	या १.२१२
सर्वतः प्रतिगृहणीयाद्	मनु १०.१०२	सर्वदानानि सर्वैश्च	कपिल ४२७
सर्वतश्चाधिपत्ये	ब्र.या. ३.३६	सर्वदानेष्वभय दान महत्त्व	विष्णु ९२
सर्वतीर्थतटात्पुण्याद	अत्रि ५.६४	सर्वदा भगवद्ध्यानं	शाण्डि १.५७
सर्वतीर्थानि पुण्यानि	शंख ८.१३	सर्वदा सर्वसंवृद्धो	आंपू ६००
सर्वतीर्थान्युपस्पृश्य	अत्रिस ४	सर्वदुःखसमुत्थानाद्	बृ.या. २.१२०
सर्वतीर्थान्युपस्पृश्य	व्या ५	सर्वदुःखःहरः श्रीमान्	वृ हा ३.४४
सर्वतीर्थानिषेकं तु	वृ परा २.७२	सर्वदेवपदस्पृष्टतद्	कण्व ६५६
सर्व तु समवेक्ष्येदं	मनु २.८	सर्वदैवं समाख्यातो	आंपू ४३८
सर्वतेजोमयी दोषा	वृ.गौ. १.२७	सर्वद्वाराणि संयम्य	बृ.या. २.३९
सर्वतो धर्मषड्भागो	मनु ८.३०४	सर्वधर्मज्ञः धर्माङ्ग धर्मयोने	विष्णु १.५४
सर्वतोर्धुरं पुरोहितं	बौधा १.१०.७	सर्वधर्मार्थत्त्वज्ञ	दक्ष १.१
सर्वत्र जीवनं रक्षेज्जीवन्	शंख १७.६४	सर्वधर्मोत्तराः पुण्या	वृ.गौ. १.५

सर्वधान्य समायुक्तं	ब्र.या. ११.५८	सर्वभूम्यनृते हंति	वृहस्पति ४५
सर्वन्तु राजवृत्तस्य	औसं ३०	सर्वमंगलवाद्यैश्च	कण्व ५६१
सर्वपण्यैर्व्यवहरणम्	बौधा २.१.५४	सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं	बृ.या. २.१.५५
सर्वपापक्षयकरी वरदा	शंख १२.२०	सर्वमंत्र पवित्रस्तु	वृ परा ८.१२
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःख	शाण्डि ४.६०	सर्वमन्त्राधिराजेन	बृ.या. २.१.५२
सर्वपापप्रशमनी प्रायश्चित्त	नारा १.३	सर्वमन्नमुपादाय	व्या २०९
सर्वपापप्रसक्तोऽपि	अत्रि ४.१०	सर्वमेतज्जगद्धातुर्वासुदेव	शाण्डि १.४६
सर्वपापविनिर्मुक्तः	अत्रि स ३६५	सर्व अनं उपादाय	या १.२.४१
सर्वपापविनिर्मुक्त	वृ परा २.९३	सर्व कारयितव्यं स्पात्	आंपू ४७१
सर्वपापविनिर्मुक्त	विश्वा ४.२८	सर्व कृत्वाधभूज्जीत	भार ९.१३
सर्वपापविनिर्मुक्तः	वृ परा ११.२९०	सर्व कृत्वा विधानेन	वृ हा ६.१३९
सर्वपापविनिर्मुक्तो	वृ हा ३.१५६	सर्व गंगासमं तोयं	पराशर १२.२७
सर्वपाप विनिर्मुक्तो	वृ हा ५.३७२	सर्व गङ्गासमं तोयं	वाधू ५४
सर्वपापविशुद्धात्मा	संवर्त ७१	सर्व गवादिकं दानं	वृ परा ६.२२७
सर्वपापविशुद्धात्मा	व २.१.२१	सर्व च तान्तवं रक्तं	मनु १०.८७
सर्वपापसमायुक्तो	वृ परा १०.५१	सर्व च तिलसम्बद्धं	मनु ४.७५
सर्वपापहरं दिव्यं सर्व	व्या ६	सर्व च तिलसंबंध	शाण्डि ५.८
सर्वपापहरं नित्यं सर्व	अत्रिस ५	सर्व ज्ञात्वा विधास्यानि	आंपू ५८३
सर्वपापापनोदाय	वृ परा ४.१९३	सर्व तत्प्रीतये कुर्यात्	कण्व ४५६
सर्वपापापनोदार्थ	वृ परा २.१३५	सर्व परवशं दुःखं	मनु ४.१६०
सर्वपापानिर्मुक्तो	वृ हा ८.३४५	सर्व प्रागुक्तमेवास्य	वृ परा १२.२४६
सर्वपापै विनिर्मुक्त	वृ परा १०.६१	सर्व व कारयिष्यामीत्युक्ति	लोहि ६३३
सर्वपीडाविनिर्मुक्त	कण्व ६२९	सर्व वापि चरेद् ग्रामं	औ १.५७
सर्वप्रकाराल्लोकेषु त्रिषु	भार १२.४३	सर्व वापि हरेद् राजा	नारद १८.१००
सर्वप्राणेन कुर्याद्वै	लोहि ३५०	सर्व ता रिक्थजातं	मनु ९.१५२
सर्वबन्धवागमाश्चापि	कण्व ३४६	सर्व व्याहृतिभिर्दद्यात्	आंपू ८०२
सर्वभात्मानि संपश्येत्	मनु १२.११८	सर्व शरीरक्लेशाय येषु	शाण्डि ५.३३
सर्वभावविनिर्मुक्तः क्षेत्रज्ञ	दक्ष ९.२०	सर्व सम्पूर्णतामेति	वृ हा ६.५०
सर्वभूतम् अयं च एव	वृ.गौ. ६.२१	सर्व सम्यक्परित्याज्यं	आंपू ८५०
सर्वभूतहितः शान्त त्रिदंडी	या ३.५८	सर्व स्वं ब्राह्मणस्येदं	मनु १.१००
सर्वभूतहिते श्रीमन्	बृ.गौ. १७.२	सर्वयज्ञतपोदानतीर्थवेदेषु	भार ११.११९
सर्वभूतहितौ मैत्र	शंख ७.८	सर्वयज्ञमयं ध्यायेद	वृ हा ५.९१
सर्वभूतात्मभूतात्मा	वृ परा १२.२९७	सर्वयज्ञमहातीर्थ	आंपू ४९९
सर्वभूताधिपो राजन्	बृ.गौ. १५.१७	सर्वरत्नानि राजा तु	मनु ११.४
सर्वभूतेषु चात्मानं	मनु १२.९१	सर्वलक्षणसम्पन्नं	व २.६.७४

सर्वधर्मान् परित्यज्य	बृह ११.१	सर्वसिद्धिमवाप्नोति	वृ हा ३.३१९
सर्वलक्षणसम्पन्नं	वृ हा ५.९०	सर्वं स्त्रियां विमंत्र	वृ परा ६.१५१
सर्वलक्षणसम्पन्नं	वृ हा ५.११४	सर्वस्य धातरमचिन्त्य	बृह ९.६१
सर्वलक्षणसंपन्न	भार १२.२८	सर्वस्य प्रभवो विप्रा	या १.१९९
सर्वलक्षणहीनोऽपि	मनु ४.१५८	सर्वस्यास्य तु सर्गस्य	मनु १.८७
सर्वलक्षणहीनोऽपि	व १.६.८	सर्वस्व बीजमापो हि	वृ परा ५.११५
सर्वलोकैकवन्द्यत्वं	कण्व १७३	सर्वस्वमपि यो दद्यात्	अत्रिस ३२४
सर्ववर्णेषु तुल्यासु	मनु १०.५	सर्वस्वं तस्य गृणवीया	आंपू ३६७
सर्ववर्णेषु भिक्षूणां	नारा ७.४	सर्वस्वं वा तस्य दत्त्वा	कण्व ७३८
सर्वं वापि चरेद् ग्रामं	मनु २.१८५	सर्वस्व वा वेदविदे	औ ८.११
सर्ववाहननाशार्थं	विश्वा ५.२१	सर्वस्वं वेदविदुषे	मनु ११.७७
सर्वविघ्नपशान्त्यर्थं	वृ परा ४.१७७	सर्वस्वं स्त्री तु कन्यां	नारद १८.८८
सर्ववेदनिधिशास्त्रनिपुणो	कपिल ६८६	सर्वस्वहरणं कृत्वा तयो	कण्व ७४४
सर्ववेदपवित्राणि	अत्रिस ३.१०	सर्वस्वहरणं कृत्वा	वृ हा ४.१९३
सर्ववेद पवित्राणि	व १.२८.१०	सर्वस्वोपस्कुर्युक्ता	वृ परा ८.३३३
सर्ववेद पवित्राणि	शंख १०.२१	सर्वा आहुतयः कार्या	लोहि २२
सर्वं वेदप्रणीतानि	बृह १२.३७	सर्वा आह्लादमवाप्नोति	वृ परा १०.९९
सर्ववेदमयं तत्र मंडपं	वृ हा ७.३२८	सर्वाकरेष्वधीकारो	मनु ११.६४
सर्ववेदमयाचिन्त्य	वृ हा ३.३८०	सर्वाक्षरमयं दिव्यरत्नपीठं	वृ हा ५.९४
सर्ववेदव्रतं कृत्वा	वृ हा ५.६२	सर्वाङ्गं निश्चलं धार्यं	वृ परा १२.२४०
सर्ववेदान्तत्वार्थं	वृ हा ५.७	सर्वाङ्ग विकलो यस्तु	वृ परा ११.२६६
सर्ववैदिककृत्यानां	कण्व ३	सर्वाङ्ग समुस्पृश्य	व २.७.९५
सर्वव्यञ्जनसंयुक्तं	ल हा ६.१५	सर्वाङ्गणि यथा कूर्मो	बृ.या. ८.५३
सर्वव्यापी य एकस्तु	वृ परा १२.३२०	सर्वाङ्गोपाङ्गसहिता	कण्व १८
सर्वशास्त्रार्थगमनं	अत्रिस ३६३	सर्वाङ्गि प्रणवैर्नैव	भार ५.३६
सर्वशास्त्रोक्तमार्गेण यथा	लोहि ३०७	सर्वाङ्गुलीभिरीशस्य	भार ४.३२
सर्वश्चाण्डालतां याति पितृ	कपिल १७४	सर्वाचार्यं सर्वबन्धः	कण्व ३९९
सर्वश्राद्धानि काम्यानि	लोहि २९९	सर्वाणि कुर्याच्छ्रद्धानि	आंपू ७३३
सर्वश्राद्धेषु पितरः	आंपू ११०३	सर्वाणि चास्य देवपितृ	बौधा १.३.१२
सर्वश्राद्धेषु सर्वत्र रण्डापाको	लोहि ४२१	सर्वाणि पृथगेव स्यु	आंपू ७३१
सर्वसंहारसर्वज्ञ	वृ.गौ. ६.२	सर्वाणि फलशाकानि	वृ परा १०.२२६
सर्वसत्त्वकृतं कर्म	वृ.गौ. ६.२३	सर्वाणि भूतानि ममान्तराणि	बृह १२.४९
सर्वसत्त्वहिते युक्त	वृ परा ५.१८५	सर्वाणि रक्तपुष्पाणि	वृ परा ७.१२५
सर्वसाम्यनैव भजे न योग्यो	कपिल ३३०	सर्वाणि स्वानि वक्त्राणि	वृ परा ७.१७४
सर्वसाम्यं भवेन्नैव तेषां	कपिल ३००	सर्वाण्यनुष्ठितैऽस्मिन्	आंपू ६२२

सर्वाण्यन्यानि दानानि	कपिल ५०१	सर्वासामेकपतीनामेका	मनु १.१८३
सर्वाण्यपि च वित्तानि	वृ परा १२.६०	सर्वासामेव जातीनां	संवर्त १४३
सर्वाण्यसंभावितानि	विश्वा ३.५३	सर्वासामेव योगेन	शंख १०.९
सर्वाण्यापि कृतान्ये	आंपू ६२४	सर्वासां देवपत्नीनां	लोहि ६४८
सर्वाण्येतानि शिष्टानां	आंपू ८४२	सर्वास्मादन्नमुद्धृत्य	कात्या ३.१३
सर्वातिथ्यन्तुः यः कुर्यात्	वृ.गौ. ६.८३	सर्वे कण्टकिनः पुण्या	लहा ४.९
सर्वातिथ्यन्तु यः कुर्यात्	वृ.गौ. ६.७९	सर्वेऽक्षयान्ता निचया	कात्या २२.८
सर्वात्मा कथ्यते	बृह ९.८९	सर्वेण तु प्रयत्नेन	मनु ७.७१
सर्वाद्यन्तेषु सत्रेषु	आंपू १७०	सर्वेतस्यादृता धर्मा	मनु २.२३४
सर्वान् कामान् वाप्नोति	वृ हा ७.२७२	सर्वे तु नरके यान्ति	व २.४.३७
सर्वान् रसानपोहेत	मनु १०.८६	सर्वे तु वशभायन्ति	भार १२.४१
सर्वानिलान्स्तथा खानि	वृ परा १२.२५१	सर्वे ते पुत्रिका प्रोक्ता	ब्र.या. ४.२३
सर्वान् कामानवाप्नोति	वृ परा ११.२८९	सर्वे ते प्रत्यवसिता	यम ३
सर्वान् कामानवाप्नोति	वृ हा ५.४६१	सर्वेधर्मा धर्मपत्न्या	लोहि १०२
सर्वान् कामानवाप्नोति	वृ हा ५.५१८	सर्वे धर्मास्स एवस्था	कपिल ८७७
सर्वान् कामानवाप्नोति	वृ हा ७.२३४	सर्वेन्द्रियसमाहारो	पु २१
सर्वान्केशान्समुच्छ्रित्य	बृ.या. ४.१७	सर्वेन्द्रियैरपि सदा योगो	शाण्डि ४.२०७
सर्वान् केशान् समुद्धृत्य	यम ७४	सर्वेन्द्रियैरपि सदा योगो	शाण्डि ५.१८
सर्वान्केशान्समुद्धृत्य	लघुयम ५४	सर्वेऽपि क्रमशस्त्वेते	मनु ६.८८
सर्वान् पणान् तान्स्वीकृत्य	कपिल ८५७	सर्वेऽपि भगवान्मंत्रा	वृ हा ५.१९०
सर्वान्परित्यजेदर्थान्	मनु ४.१७	सर्वेप्रस्रवणाः पुण्या	शंख ८.१४
सर्वान् पितृगणान्	ब्र.या. २.२०७	सर्वे ब्रह्म वदिष्यान्ति	वाधू १८१
सर्वान् भुंजीत नरकान्	वृ परा ६.२९२	सर्वे ब्रह्मसमारोप्य	ब्र.या. १०.९२
सर्वाभरणसंयुक्तां होम	भार १२.६	सर्वेभ्यश्चैव देवेभ्यो	वृ हा ८.७०
सर्वाभिरंगुष्ठयोगेन श्रौत्रे	शाण्डि २.३२	सर्वेभ्यःस्मार्त्तकर्मभ्यः	कपिल २७८
सर्वाभ्यो देवताभ्यश्चे	भार ६.१२२	सर्वे मिलित्वा कुर्वन्ति	कपिल ४७३
सर्वायास विनिर्मुक्तैः	व्या २६९	सर्वे मेषादिशब्दास्ते	कण्व ४७
सर्वीरभपरित्यागो	पु १९	सर्वे विप्रहतानां च	लघुशंख ३५
सर्वार्थं पादश्य हरश्च	वृ परा १२.८३	सर्वे वेदा यत्पद	बृ.या. २.३७
सर्वार्थो वेदगर्भस्थः	वृ हा ३.४६	सर्वे शिलोच्चयाः सर्वो	व १.२२.७
सर्वावयवसम्पूर्ण	वृ परा ६.३४	सर्वेश्च वैष्णवै	वृ हा ८.२४८
सर्वावयवसंपूर्णा ध्याता	बृ.या. ४.३२	सर्वेश्च वैष्णवै	वृ हा ५.१३९
सर्वावस्थासु नारीणां	व्यास २.५४	सर्वे श्रद्धावसाने च	ब्र.या. ३.६९
सर्वावस्थोऽपि यो	ब्र.या. ६.४	सर्वेषान्नु प्रदानानां	वृ.गौ. ११.२८
सर्वसिद्धिप्रदा नृणां	वृ हा ३.९७	सर्वेषामपि चैतेषां	मनु १२.८४

सर्वेषामपि चैतेषाम्	बृह ११.३८	सर्वेषां जप्यसूक्तानां	वृ परा ३.४
सर्वेषामपि चैतेषां	मनु ६.८९	सर्वेषां जीवनं प्रोक्तं	वृ परा ४.२१७
सर्वेषामपि चैतेषां	मनु १२.८५	सर्वेषां तु विदित्वैषां	मनु ७.२०२
सर्वेषामपि तुभ्यं	मनु ९.२०२	सर्वेषां तु विशिष्टेन	मनु ७.५८
सर्वेषामपि पुष्पाणां	वृ.गौ. ८.७६	सर्वेषां तु स नामानि	मनु १.२१
सर्वेषामपि लोकानां	कण्व १९८	सर्वेषां देवतादीनामन्नं	वृ परा ५.११२
सर्वेषामप्याभावे तु	मनु ९.१८८	सर्वेषां धनजातानाम्	मनु ९.११४
सर्वेषामर्द्धिनो मुख्या	मनु ८.२१०	सर्वेषां निश्चितं यत्	आंड ३.९
सर्वेषामल्पमूल्यानां	नारद १८.८४	सर्वेषां पाप मृत्यूनां	वृ परा ७.३२१
सर्वेषामविशेषेण एकोद्दिष्ट	कपिल १२८	सर्वेषां ब्राह्मणो विद्याद्	मनु १०.२
सर्वेषामादिपूर्तिस्तु	शाण्डि ४.१०	सर्वेषां शावमाशौचं	मनु ५.६२
सर्वेषामाश्रमाणाञ्च	वृ परा १.६	सर्वेषां शृण्वतां मध्ये	कपिल ५९
सर्वेषामेव जन्तूनां	विश्वा ३.२१	सर्वेषां सत्यं क्रोधो	व १.४.४
सर्वेषामेव जन्तूनां	विश्वा ३.३२	सर्वेषां स्रावमाशौचं	पराशर ३.३१
सर्वेषामेव दानानां	अत्रिस ३.१७	सर्वेषु चैव लोकेषु	बृ.या. ३.११
सर्वेषामेव दानानां	संवर्त ७६	सर्वेषु श्रुतिरुत्कृष्टा	कण्व २८४
सर्वेषामेव दानानां	अत्रिस ३३८	सर्वेष्टिफल. भाग्यापाद	वृ परा ६.९०
सर्वेषामेव दानानां	अत्रिस ३६६	सर्वेष्वथ विवादेषु	या २.२३
सर्वेषामेव दानानां	मनु ४.२३३	सर्वेष्वपि च कृत्येषु	कपिल ९९६
सर्वेषामेव दानानां	वृ.गौ. ११.१०	सर्वेष्वपि च तीर्थेषु	आंपू १९८
सर्वेषामेव दानानां	वृहस्पति ३४	सर्वेष्वपि च वेदैकपारोषु	कपिल १३
सर्वेषामेव दानानाम्	संवर्त ८१	सर्वेष्वेव विवादेषु	बृ.या. ५.२४
सर्वेषामेव धर्माणां	शाण्डि ५.७५	सर्वेष्वेव सोमभक्षेष्वा	बौधा १.६.३२
सर्वेषामेव पापानां	पराशर ११.५३	सर्वेष्वेषु निमित्तेषु	वृ हा ५.५६८
सर्वेषामेव भूतानाम्	बृह ९.५२	सर्वेषुपुत्रतुलिता जिताः	कपिल ६६८
सर्वेषामेवं मंत्राणां	वृ हा ३.३	सर्वैरस्थना संचयन	औ ७.११
सर्वेषामेव यागानां	औ ३.१०९	सर्वैरेव च वध्वा	व १.१३.२७
सर्वेषामेव योगानाम्	ल व्यास २.७७	सर्वैश्च भगवन् मंत्रै	वृ हा ५.४९५
सर्वेषामेव वर्णानां	विश्वा ४.९	सर्वैश्च वैष्णवैः	वृ हा २.१४४
सर्वेषामेवं वेदानाम्	ब्र.या. १.४५	सर्वैश्च वैष्णवैः	वृ हा ५.३२४
सर्वेषामेव वर्णानाम्	नारद २.५१	सर्वैश्च वैष्णवैः	वृ हा ५.५३१
सर्वेषामेव शौचनामर्थ	मनु ५.१०६	सर्वैश्च वैष्णवै	वृ हा ६.७६
सर्वेषां आश्रमाणां	आश्व १५.१	सर्वैश्च वैष्णवै	वृ हा ६.२१
सर्वेषां कर्मणामाद्या	आंपू १११०	सर्वैश्च वैष्णवै	वृ हा ७.२१८
सर्वेषां चैव देवानां	बृ.या. ३.२२	सर्वैश्वर्यप्रदं नृणां	वृ हा ३.२३३

सर्वैश्वर्यप्रदं पथ्य	वृ हा ३.४	सवत्सां वस्त्रसंयुक्ता	वृ परा १०.३५
सर्वैश्वर्यफलं त्यक्त्वा	वृ हा ८.१५५	सवनत्रयं तु यः कुर्यात्	बृ.या. ७.१२५
सर्वोत्तमा धर्मपत्नी	लोहि २९	सवनस्थां स्त्रिय हत्वा	पराशर १२.६७
सर्वो दण्डजितो लोको	मनु ७.२२	सवनात् पावनाच्चैव	बृह ९.५६
सर्वोपकरणानां च सर्वेषां	शाण्डि १.३२	सवमन्त्रप्रयोगेषु ओमित्यादौ	बृ.या. २.१५१
सर्वोपयोगेन पुनः	व १.११.९	सवर्णामनुरूपं च कुल रूप	नारद १३.२३
सर्वोपायैस्तथा कुर्यान्नीतिज्ञ	मनु ७.१७७	सवर्णाश्च सवर्णायाम	बृ.या. ४.४६
सर्वोपस्करसंयुक्तं	वृ परा १०.२३	सवर्णाङ्ग्रे द्विजातीनां	मनु ३.१२
सर्वोषधि समायुक्ता	शाता २.४	सवर्णा पुत्रान्ततरा	बौधा २.२.१२
सर्वोषधि समायुक्तै	वृ परा ११.२५७	सवर्ण्यां संस्कृतायां	बौधा २.२.१४
सर्वोषधैः	ब्र.या. १०.९	सवर्णा वृत्तिधर्म वर्णन	विष्णु २
सर्वोषधैः सर्वगंधैः	या १.२७८	सवर्णाश्रम वृत्तिधर्मवर्णन	विष्णु २
सर्वाकामेति मंत्रेणार्थ	ब्र.या. ८.२००	सवर्णेभ्यः सवर्णासु	या १.९०
सर्वात्मकः सर्वसुहृत्	वृहा १.१२	सवर्णेषु तु नारीणां	आप ७.२१
सर्वान् कामानवाप्नोति	या १.१८१	सवर्णो ब्राह्मणीपुत्र	नारद १३.११२
सर्वान् केशान् समुद्धृत्य	आप १.३४	सवषामुपवासानां यज्ञे	बृ.गौ. १८.११
सर्वावयवसंपूर्णा	ल हा ४.२	सवासाजल माप्लुत्य	अ ६०
सर्वाश्रयां निजे देहे	या ३.१४३	सवासा जलमाप्लुत्य	नारद १९.१४
सर्वे धर्मा कृते जाता	पराशर १.१७	सविताने गन्ध पुष्प	वृ हा ५.२९३
सर्वेनार्हन्ति श्राद्धे	ब्र.या. ४.२२	सविता च जयन्तश्च	ब्र.या. १०.११४
सर्षपाणि च निक्षिप्य	वृ हा ७.२८४	सविताचाश्विनीपूषा	भार १७.२६
सर्षपावरुणा चैव स्वाहान्ते	ब्र.या. ८.३३१	सविता देवता ह्यत्या	बृ.या. ४.४
सर्षपा षट् यवोमध्य	मनु ८.१३४	सवितारं द्विजद्रष्ट	भार ३.१२
सर्षपे तिलशाखा चेतिल	वृ परा ११.९२	सविता श्रियः प्रसविता	बृह ९.८७
सर्वेषामपि वह्नीनां संसर्ग	लोहि ३१	सवितुर्मण्डलगतां	ल व्यास १.२६
स लक्षणानि तान्याहु	भार १५.१३	सवितु शक्रदिकृत्रे	भार ७.८५
सलज्जां शुभनासां	वृ परा ६.३५	सवितृद्योतनाच्चैव सावित्री	वाधू ११६
सलिलेन तु यः स्नायात्	बृ.गौ. २०.३१	सवितृ प्रकाशकरणां	भार ६.१४९
स लुब्धो नरकं याति	वृ.गौ. ६.४३	स विद्यादस्य कृत्येषु	मनु ७.६७
सलेखसाक्षिवर्णनम्	विष्णु ७	स विपत्ति समान्नोति	विश्वा ६.५८
सत्यपापेन निन्दित्वा	वृ.गौ. ३.६३	स विप्रः स शुचि स्नातो	आश्व १.२२
सवंधा गोशतं यत्र सुखं	वृ.गौ. ६.११३	स विमानेन शुभ्रेण	वृ.गौ. ७.९२
सव क्रतुफलं लब्ध्वा	बृ.गौ. १८.१४	स विष्णु प्रीणनाद्यति	वृ परा १०.३९
सव च वेदा ऋषिभिः	बृ.गौ. १४.२७	सवीर्याः सफलाः पूज्या	ब्र.या. १०.१४०
स वत्सरोमतुल्यानि	या १.२०६	सवृषं गोसहस्रं	वृहस्पति ९

सवेद साग्निरेकाहाद्	वृ परा ८.१८	सव्येतराभ्यां पाणिभ्यां	व १.४.१२
स वै दुर्ब्राह्मणो ज्ञेयः	औ ४.२०	सव्ये तु शंखं विशृयादिति	वृहा २.४०
स वै दुर्ब्राह्मणो	कण्व ४२४	सव्येन जुहुयात्तत्र	ब्र.या. ४.८२
स वै दुर्ब्राह्मणो नाम	विश्वा ५.६	सव्येन तर्पयेद्देवान्	आश्व १.९३
स वै द्वादशवर्षाणि	ब्र.या. २.३७	सव्येन देवतार्थं तु	वृ परा ७.२७
स वैष्णवो भवेद्विप्र	व २.३३	सव्येनपाङ्मुखोदेवान्	व्या ३८०
सवैस्तु वैष्णवैः सूक्ते	वृ हा ७.१४९	सव्येन पाणिना कार्यं	औ १.२२
सव्यबाहुं समुद्धृत्य	औ १.११	सव्येन पाणिनेत्यव	कात्या १७.१७
सव्यं कृत्वा गृहीतेन	आश्व २३.३४	सव्येनोदकसंस्पर्शः	ब्र.या. ८.२६२
सव्यं च पादयो न्यस्य	वृ परा ११.११८	सव्ये पाणौ कुशान् कृत्वा	कात्या ११.२
सव्यं जानु ततोऽन्वाच्य	वृ.या. ७.७१	सव्येपृच्छत्यनुज्ञातो	व्या १२२
सव्यं तु देवमस्थान	व्या १०७	सव्येषु सव्यं स्पृष्टव्यो	बृ.गौ. १४.५७
सव्यस्य पाणेरंगुष्ठ	आश्व १.८४	सव्योत्तराम्यां पाणिभ्या	व्या ३१९
सव्यहस्तिस्थते दर्भे	वृ परा ८.१९८	सव्यतश्च शुना दष्टस्त्रिरात्र	अत्रिस ६८
सव्यहस्तानुल्गनेन	आश्व १.१०३	सव्यतस्तु शुना दष्टस्त्रिरात्र	पराशर ५.४
सव्यांसे च स्थिते सूत्रे	आश्व १.९१	सव्यती मंत्रपूतश्च	पराशर ३.२८
सव्याहृतिकां गायत्री	या १.२३८	स व्रात्यःसन् परित्याज्यो	वृ परा ६.१५२
सव्याहृतिकां सप्रणवा	व २.३.१०८	सशर्करं पायसान्नं	वृ हा ५.४६९
सव्याहृतिकां सप्रणवां	व २.६.१४७	सशर्करं पायसान्नं	वृ हा ५.४३६
सव्याहृतिकां सप्रणवा	वृ.गौ. ८.३४	सशान्तिं कुरुते तस्मात्परं	कण्व ३५८
सव्याहृतिकां सप्रणवां	वृ.गौ. ८.३८	सशिखं वपनं कायमा	कात्या २५.१४
सव्याहृतिकां सप्रणवां	शंख १२.१४	सशिखं वपनं कुर्यात्	पराशर १०.६
स व्याहृतिका सप्रणवा	व १.२६.५	सशिखं वपनं कृत्वा	नारा ९.४
सव्याहृतिप्रणवका	मनु ११.२४९	सशिखं वपनं कृत्वा	पराशर ८.३८
सव्याहृतिप्रणवकाः	बृ.या. ८.२८	सशिखं वपनं कृत्वा	पराशर १०.२०
सव्याहृतिं सप्रणवां	बृ.या. ७.२९	सशिखं वपनं कृत्वा	वृ परा ८.१२७
सव्याहृतिं सप्रणवां	बृ.या. ८.२	सशिखः कर्तुं पक्षान्तं ततः	बृ.गौ. १६.४
सव्याहृतिं सप्रणवां	ब्र.या. २.५२	ससत्रे दानधर्मे च पक्व	आंड ९.५
सव्याहृतिं सप्रणवां	ब्र.या. २.५५	स सन्तर्प्य पितृन्	वृ परा ६.८१
सव्याहृतिं सप्रणवां	व १.२५.१३	स संदिग्धमति कर्म	या ३.१५२
सव्याहृती सप्रणवां	शंख ७.१३	स सन्धार्यः प्रयत्नेन	मनु ३.७९
सव्याहृती सप्रणवाः	अत्रि २.७	स संन्यासी च योगी च	वृ हा ५.५७
सव्याहृतीं सप्रणवां	ब्र.या. २.६३	ससमुदगुहा तेन	वृ परा १०.१३७
सव्याहृती सप्रणवां	अत्रिसं २९५	स सम्यक् पालितो	या २.२०३
सव्ये च प्रणौ व्रजंस्तिष्ठं	व १.३२	स सर्वकामतृप्तात्मा	वृ.गौ. ६.९०

स सर्वपापान्निर्मुक्ताः	भार ६.१७१	सहस्रच्छिद्रसंकीर्ण	बृह ९.९५
स सर्वपापमुक्तः स्यात्	विश्वा २.३९	सहस्रजप्ता कुंभांभ सेवन	भार ९.२८
स सर्ववेदयज्ञौघ	कण्व ३९८	सहस्रदलपङ्कजे सफला	विश्वा १.१
ससहायस्सावकाशः	शाण्डि ५.४५	सहस्रदलमध्यस्था विश्वा	१.४२
स साक्षान्मुनिभिः	वृ परा ६.३२७	सहस्रदः सहस्राद्यो ब्रह्म	लोहि ५५३
स सात्त्विक शमयुत	वृ हा ६.१५८	सहस्रनामपठनं कुर्याद्	व २.७.६९
स सुरां वै पिवेद् व्यक्तां	वृ हा ५.२७०	सहस्रनामभि कृत्वा	वृ हा ५.३१७
ससुवर्णगुहा तेन	व १.२८.२१	सहस्रनामभि विष्णो	वृ हा ५.१५५
ससूत्रवस्त्रान् सच्छिद्रान्	नारा ६.२	सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.१७३
स सूर्ये ज्योतिरित्युक्तं	बृह ९.१०७	सहस्रनामभिः स्तुत्वा	व २.३.३
स स्नातः सर्वतीर्थेषु	बृ.या. ७.१७	सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.३७०
स स्नातः सर्वतीर्थेषु	वृ हा ५.१८२	सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.४९१
सस्यभागः प्रदातव्यो	वृ परा ५.१५०	सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.५२५
सस्यान्ते नवसस्येष्टया	मनु ४.२६	सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ७.१४८
सस्योपरि न्यसेत	शाता ५.१७	सहस्रन्तु जपेन् मंत्र	वृ हा ३.२८४
स स्वर्गलोके ऋधित्वा	वृ.गौ. २.३१	सहस्रपरमां देवी	अत्रि २.१२
स स्वीकार्यो हि निखिलैः	कपिल ५३४	सहस्रपरमां देवीं	कण्व २६७
स स्वीकृतः श्राद्धतिथि	आंपू १०४६	सहस्रपरमां देवीं	ल व्यास १.३१
सह कमण्डलुनोत्पन्न	बौधा १.४.२१	सहस्र परमां देवी	ल हा ४.४८
सहगोत्रजा ब्राह्मणानां	व्या ७०	सहस्र परमां देवीं	व १.२६.१६
सहपिण्डक्रियायां तु	मनु ३.२४८	सहस्रपरमां देवीं	श्वा ७.३
सह प्रतिष्ठायाभिपदे	भार १५.८४	सहस्रपरमां नित्यां	भार ७.१
सह वापऽपि व्रजेद्युक्तः	मनु ७.२०६	सहस्रपोषं लभते	भार ९.२५
सह वै देहनाच्चेत्या	भार १५.६	सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा	वृ हा १.१४
तह सर्वाः समुत्पन्नाः	मनु ७.२१४	सहस्रं अभिषेकं च	वृ हा ६.४०८
सहसा क्रियते कर्म	नारद १५.१	सहस्रं जुहुयात् नित्यं	वृ हा ३.१४५
सहस्रकरपन्नेत्रः सूर्य	बृह ९.१९३	सहस्रं जुहुयाद् वह्नौ	वृ हा ७.२८०
सहस्रकरपन्मूर्ति	बृह ९.८५	सहस्रं दक्षिणा ऋषभे	व १.२४.८
सहस्रकर वद् भ्राजन्	वृ परा ११.१३२	सहस्रं परमां देवीम्	वृ.गौ. ४.३२
सहस्रकलशस्नानं	नारा ६.१	सहस्रं ब्राह्मणो दण्डं	मनु ८.३८३
सहस्रकलशस्नानं	नारा ८.११	सहस्रं ब्राह्मणो दंड्यो	मनु ८.३७८
सहस्रकलशानां तु स्थापनं	नारा ५.३०	सहस्रं मूलमंत्रेण	वृ हा ५.४२३
सहस्र किरणं शीशं	वृ हा ७.१५९	सहस्रं मूलमंत्रेण	वृ हा ५.५५४
सहस्रकृत्वः सावित्री	वृ.गौ. ८.४५	सहस्रं विभवे कुर्याद्	कण्व ७२०
सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य	मनु २.७९	सहस्रं शतवारं वा	वृ हा ५.३१३

सहस्रं शतवारं वा	वृ हा ५.५२२	साक्षात् समनोयुक्तमुदकं	कात्या २९.१८
सहस्रं हि सहस्राणां	ब्र.या. ४.२६	साक्षात् ब्रह्म समध्येति	वृ परा १०.२३९
सहस्रं हि सहस्राणां	मनु ३.१३१	साक्षादन्नस्य भुक्तिर्न	आंपू ४९
सहस्रयुगपर्यन्ता	वृ.गौ. १.६४	साक्षादभिमुखं देवं	शाण्डि ४.२४
सहस्रशिरसे तुभ्यं सहस्राक्ष	वृ.गौ. १८.३८	साक्षाद् द्रव्यविशुद्धं यत्	शाण्डि १.६९
प्रहस्रशीर्षसूक्तेन	वृ हा ५.३८५	साक्षाद् विष्णुः धर्मराजः	प्रजा १९७
सहस्रशीर्षा इत्यादि	वृ परा ११.१९०	साक्षान्नारायण सोऽयं	कपिल ३७
सहस्रशीर्षाजापी तु	या ३.३०४	साक्षिणं त्वे वमुद्दिष्टं	बौधा १.१०.३२
सहस्रशीर्षेति ऋचा	वृ हा ८.३९	साक्षिणश्च स्वहस्तेन	या २.८९
सहस्रसंख्यया होम	भार १९.४८	साक्षिण श्रावयेद	या २.७५
सहस्रांशुरथे तिष्ठन्	वृ परा २.८२	साक्षिण (ज्ञातार) संति	मनु ८.५७
सहस्राक्ष शतं धारं	या १.२८१	साक्षिणां पुरतो नूनं	आंपू ३८८
सहस्रात्मा मयायो	या ३.१२६	साक्षित्वं प्रातिभाव्यं च	नारद १४.३९
सहस्रारं हु फडित्येवं	वृ हा ३.३८६	साक्षिप्रश्नविधानञ्च	मनु १.११५
सहस्रार्क शतोद्यामं	वृ हा ७.१९६	साक्षिविप्रतिपत्तौ तु	नारद २.२०६
सहस्रार्थि तुलादीनि	या २.१०२	साक्षिभूषयतः सत्सु	या २.१७
सहस्रे द्वेशतेन्यूनं	ब्र.या. १.२१	साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद्	मनु ८.७५
सहाभिगमनेनैव प्रातःकाल	शाण्डि २.२	साक्षी साक्ष्यसमुद्देशे	नारद २.१८३
सहासनमभिप्रेप्सुः	नारद १६.२४	साक्षेपं निष्ठुरं ज्ञेयं	नारद १६.३
सहासनमभिप्सुरुत्	मनु ८.२८१	साक्ष्यभावे तु चत्वारो	मनु ८.२५८
सहि देवः परं ब्रह्म	भार १६.२१	साक्ष्यभावे प्रणिधिभि	मनु ८.१८२
स हि संतानाय पूर्वेषाम्	व १.१५.४	साक्ष्येऽनृतं वदन्प्राज्ञैः	मनु ८.८२
सहेमपद्नीलाम	वृ परा ११.१३७	साक्ष्युद्दिष्टो यदि प्रेयाद्	नारद २.१४५
सहोढग्रहणात् स्तेयं	नारद १५.१७	सागरान् सरितः शैलान्	वृ.गौ. ६.१८
सहोढजस्तथाप्यन्यः	लोहि १९३	साग्निकैरग्निपूर्वं तु	व्या १२३
सहोढान् विभृशेच्चोरान्	नारद १८.६८	साग्निकैरपि कार्यं	वृ परा ७.४४
सहोदर समुत्पन्नां	व्या ६९	साग्नि सत्पंच यज्ञान्यो	वृ परा ८.१९०
सहोदराणां पुत्राणां	वाधू २०५	साऽग्रकल्पशतं यावत्	अ ५०
सहोभौ चरतां धर्ममिति	मनु ३.३०	साग्रसम्बत्सरं तत्र	वृ हा ५.४३१
स ह्याश्रमैर्विजियास्यः	या ३.१९१	साग्रेषु कुक्षौ हृदये	वृ हा ३.३४४
सांयम्प्रातश्चजुहुयाद	व २.४.१०६	सांकर्यशून्यशुद्धैकगोत्रणा	कपिल ९२
सा कथं ब्राह्मणेभ्यो	वृ.गौ. ९.३	सांख्यं योगं पञ्चरात्र	बृह १२.४
सा कन्या वृषली ज्ञेया	प्रजा ८६	सांख्ययोगाश्च ये चान्ये	विष्णु म ५३
साकिन्यादिग्रहैर्यस्ता	शाता ६.३	सांख्यस्य कर्ता कपिल	बृह १२.५
साकिन्यादिमृते चैवं	शाता ६.४१	सांख्यायनस्य गोत्रैषा	भार १३.२४

साङ्गानपि तथा वेदानि	वृ.गौ. ८.५४	साधारणास्तु सर्वासु	वृ हा ६.३००
साङ्गाश्च चतुरो वेदान्	वृ.गौ. १२.२४	साधुनामुपकाराय व्यापृतं	शाण्डि १.१०४
सांगोपांगोन् तु यो वेदान्	वृ.गौ. ६.६६	साधुवृत्ति द्विजौकस्तु	वृ परा १२.१६८
सा चतुर्भिस्त्रीभिर्वापि	वृ परा १०.१०६	साध्वैः सप्तभिराख्यातं	भार २.५२
सा च प्रोक्तं रत्नं च	व २.३.११८	साध्वाचारा न तावत्	अंगिरस ३७
सा चापि धर्मपत्नीत्वं	लोहि ८२	साध्वाचारा न सा तावद्	आप ७३
सा चेत्युनः प्रदध्येतु	मनु ११.१७८	साध्वीनामिह नारीणां	वृ हा ८.२०१
सा चेदक्षयोनि स्याद्	मनु ९.१७६	साध्वीनामेष नारीणाम्	व २.५.६७
साचेद्भौमयुता स्नाया	भार ५.२७	साध्वीनां तु नरो दत्त्वा	वृ परा ८.१२३
सा जन्मजन्मनि तथा	कपिल १९३	साध्वी प्रवजिता राज्ञी	वृ हा ६.१८२
सा जयन्तीति विख्याता	व २.६.२४९	साध्वीषु च सतीष्वे	लोहि १८१
साज्यं धूपं घृतं	दा ५४	सानुकूलैः ग्रहैर्यानि	वृ परा ११.८४
साज्यैश्च व्रीहिभि	वृ हा ३.१९९	सानुष्ठाना द्विजाः प्रोक्ता	वृ परा ११.२६४
साज्यैस्तिलैः पायसेन	वृ हा ५.३१६	सान्तरालकसंयुक्तं	ओं स २
सातत्यं कर्म विप्राणा	वृ.या. ६.७	सान्तरालं द्विज कुर्यात्	व २.६.५०
सा तिथि सकलाज्ञेया	ब्र.या. ९.८	सान्तरालं भवेत् पुंङ्गं	वृ हा ४.३६
सात्वर्ध्यपूर्वकर्ता स्याद्	कण्व १७०	सान्तानिकं यक्ष्यमाणमध्वगं	मनु ११.१
सात्वतं विधिमास्थाय	कण्व ४५२	सान्तर्धानमुखेनापि	वृ हा ८.११३
सात्त्विकं कीदृशं दानम्	वृ.गौ. ३.५	सान्निध्यं मृतकाले	आंपू ४७९
सात्त्विकं राजसं च एव	वृ.गौ. ३.३६	सापत्नी जननी पत्न्योरन्वहं	कपिल ७३०
सात्त्विकस्य विशुद्ध्यैव	शाण्डि १.७०	सा पत्नी या विनीता	अ ६५
सात्त्विकानान्तु वक्ष्यामि	नारा ५.१२	सापदेशं हरन् कालं	नारद १.५१
सात्त्विकानां तु दानानां	वृ.गौ. ३.४५	सापिण्डे कालकामौ तौ	प्रजा १८०
सात्त्विकानि पुराणानि	वृ परा ४.१४१	सापिण्ड्यमनुयाने तु	आंपू ९७६
सादकुर्मादिकाव्येवं	कपिल १४८	साऽपितज्ज्ञैः शुभा कार्या	वृ परा ५.६५
सा ददर्शामृतनिधिं	विष्णु १.३४	सा प्रशस्ता वरारोहा	वृ.गौ. ४.९
सा दंपती समा नित्यं सर्व	कपिल ५९६	सा भर्तृलोकानाप्नोति	व २.५.६
सादयित्वा तु गृहणीयात्तु	वृ.गौ. २०.४१	सा भार्या या वहेदग्निं	शंख ४.१४
सादयेदुभयं वाप्सु	कात्या २३.६	सामगानैर्नृत्तगीतै	व २.६.२५५
सा दुर्गतिं न्यत्येव	वृ हा ८.२६९	सामगायजुषापूर्वं	ब्र.या. ३.९
सा देवी दुपदा नाम	वृ परा ४.१०१	सामगा हस्तनक्षत्र	ब्र.या. ९.४६
साद्रा क्षताश्चदूर्वाश्च	व २.४.३१	सामध्वनावृग्यजुषी	मनु ४.१२३
साधनं चैव हिंसाया विषो	शाण्डि ३.३९	सामन्तकुलिकादीनां	या २.२३६
साधनं प्रवदाम्यद्य तदाद्य	कपिल ५६२	सामन्तविरोधे लेख्य	व १.१६.१०
साधयेदिति सर्वेषां संमति	लोहि ३७३	सामन्तानामभावे तु	मनु ८.२५९

सामन्ता वा सनग्रामा	या २.१५५	सायं प्रातश्च जुहुयाद्	शंख ५.१४
सामन्ताश्चेन्मृषा ब्रूयुः	मनु ८.२६३	सायं प्रातः तु ये सन्ध्याम्	वृ.गौ. ४.१८
सामभिशचापराहणे वै	बृह ९.१०४	सायं प्रातः द्विज संध्यां	औ १.१६
सामर्थ्येन तु या नारी	कपिल १९२	सायं प्रातः द्विजातीनाम	ल हा ४.६९
सामवेदेन चोद्गाता	वृ.गौ. २२.२६	सायं प्रातद्विजातीनाम	संवर्त १२
सामवेदे स विज्ञेयो	वृ परा ३.२१	सायं प्रातर्दिवा सन्ध्यां	वृ.गौ. १०.१०७
सामस्वेरण मन्त्र च	आश्व ४.१३	सायं प्रातर्यदशनीयं	बौधा २.३.१४
सामाद्युपायसाध्यत्वाच्चतु	नारद १.१२	सायंप्रातर्होमकाले धर्म	लोहि ४०
सामानाधिकरण्यत्वात्	वृ हा ३.६५	सायं प्रातः वैश्वदेव	कात्या १३.१०
सामान्यनारी बुद्ध्या वै	कपिल ७२८	सायं प्रातश्च जुहुयात्	वृ परा १२.९८
सामान्य द्रव्य प्रसभ हरणात्	या २.२३३	सायं प्रातश्च जुहुयात्	ल हा ४.४
सामान्यधीते प्रीणाति	औ ३.४४	सायं प्रातश्चोद् मैक्षं	ल हा ३.६
सामान्यपि पठन्	कात्या १४.१०	सायं प्रातः सदा संध्यां	बौधा २.४.२०
सामान्यमस्वतंत्र त्वमेषां	नारद ६.४	सायं प्रातः सदासंध्यां	भार ६.१८०
सामान्यमिदमित्येवं	भार १८.६१	सायं प्रातस्तस्य	कण्व ५५१
सामान्यं याचितं न्यास	दक्ष ३.१७	सायं प्रातस्तु भिक्षेत	संवर्त ११
सामान्याचमानार्थ्याणं	भार ११.३१	सायं प्रातस्तु यः संध्यां	अत्रिस ६३
सामान्यामृतमित्येवं	भार ११.२९	सायं प्रातस्ततो नित्यं	कण्व ३६३
सामान्यार्थं समुत्थाने	या २.१२३	सायं प्रातस्त्वहोरात्र	आप ९.४१
सामाह मृक्थिमित्याद्यैः	वृ परा ६.६५	सायं प्रातः हुताशाः च	वृ.गौ. २.१८
सामुदययश्च समुदेषु	विष्णु १.१४	सायं भानोरस्तमयाद्	विश्वा ७.१८
सामुद्रशुल्को वरं	बौधा १.१०.१५	सायं मंत्रवदाचम्य	ल हा ४.१७
सा मृतापि गतैकत्वं	ब्र.या. ७.१०	सायं संध्यां तथोपास्य	भार ६.१५८
सा मृतापि हि पत्यै	दा ३६	सायं संध्यामुपस्थाय	बौधा २.२६
सामेषु दुःखितानां च	वृ परा ६.३६१	सायाह्न सूर्यमालोक्य	विश्वा ७.४
साम्ना दानेन भेदेन	मनु ७.१९८	सायाह्ने समनुप्राप्ते	नारा ९.८
सांबत्सरिकमाप्तैश्च	मनु ७.८०	सायाह्ने समनुप्राप्ते	वृ हा ५.३४७
साम्यं कण्टकतस्तस्य	आंपू ५८१	सायुज्यनाम (मि) कां मुक्ति	कण्व ४६७
साम्यं लक्ष्मीवर प्रोक्तं	वृ हा ३.७८	सारंगशम्बरवाहक	प्रजा १३८
सायमागतमतिथिं	व १.८.४	सारण्डा तत्र भूदानं ग्रहदानं	लोहि ५३१
सायमादि प्रातरन्तेमकं	कात्या १८.१	सारस्तु व्यवहाराणां	नारद १.६
सायंकाले तु विप्राणां	ल हा ६.१२	सारस्वतानि दौर्गाणि	वृ परा ३.३
सायंकाले समस्तं	आश्व १.६६	सारासारं च भाण्डानां	मनु ९.३३१
सायं तु त्रिमूर्तः	प्रजा १५७	सारूप्यमीश्वरस्याऽऽशु	वृ हा ७.३१९
सायंत्वन्नस्य सिद्धस्य	मनु ३.१.२१	सार्वकालिकधर्मोऽयं	कण्व ८५

सार्द्धं स यज्ञं सदध्यानं	वृ हा ३.११६	सा सर्वसाधारणतो	कण्व ४०५
सार्थज्ञानं सुसन्धासं	व २.७.१८	सासस्य कृष्णपक्षादौ	व १.२३.४०
सार्थं समुद्रं संन्यासं	वृ हा ३.५३	सा सुवर्णधरा धेनुः	अत्रिस ३.२२
सार्वभौतिकमन्नाद्यं	दक्ष २.३१	सा सूये चैव हृदये	बृह ९.१००
सार्ववर्णिकमन्नाद्यं	मनु ३.२४४	सा स्त्रीगर्भिणीप्रोक्ता	ब्र.या. ८.१३४
सावधानो भवेद्भक्त्या	शाण्डि ४.२१	साहसस्तेयपारुष्य	या २.१२
सा विशातेति विख्याता	कपिल ५.२९	साहसे वर्तमानं यु यो	मनु ८.३४६
सावित्रन्तु जपेत्वत्र	व २.६.४७३	साहसेषु च सर्वेषु	नारद २.१६८
सावित्रं नाचिकेतश्च	कण्व ५.२८	साहसेषु च सर्वेषु	मनु ८.७२
सावित्रश्च जयन्तश्च	वृ परा २.१९१	साहसेषु य एवोक्तास्त्रिषु	नारद १५.२०
सावित्रान् शांतिहोमांश्च	मनु ४.१५०	सा हि परगामिनी	व १.१३.२१
सावित्रीजाप्यानिरतः	शंख १२.३०	सिंह कर्कटयोर्मध्ये	आंपू ९१७
सावित्रीञ्च जपेन्नित्यं	संवर्त १३३	सिंह युक्तेन यानेन	वृ.गौ. ७.१०७
सावित्रीञ्च यथाशक्ति	वृ.गौ. ८.५१	सिंह व्याघ्र महानाग	वृ हा ६.१६४
सावित्रीपतिता व्राता	ब्र.या. ८.९७	सिंहव्याघ्रवराहोष्ट्रमृग	व २.३.१६५
सावित्री परितः पूज्या	वृ हा ७.९७	सिंहव्याघ्रादयोऽऽरण्यां	वृ पर ११.१२७
सावित्रीमात्रसारैस्तु	आंड ४.५	सिंहस्कन्धानुरूपांसं	वृ हा ३.२५५
सावित्रीं च जपेत्	व १.२०.५	सिंहस्कन्धानुरूपांसं	वृ हा ३.३५५
सावित्रीं च जपेन्नित्यं	मनु ११.२२६	सिकतावस्त्रवर्मास्थि	व २.६.२५
सावित्री मंत्ररत्नञ्च	वृ हा ३.२७५	सिकतोपरि दातव्या	वृ परा ११.२४९
सावित्रीमात्रसारोऽपि	मनु २.११८	सिकतावलोकये दन्तं	वृ.हौ. ८.७२
सावित्रीं यो न जानाति	बृ.या. ४.७६	सिच्यमानेन तोयेन	वृ परा २.१८०
सावित्रीं वा जपेद् विद्वान्	ल व्यास २.१९	सिंचेद् दूर्वारिसं तस्य	आश्व ४.६
सावित्रीं वित्पुत्रौ	व २.३.६०	सितरक्त सुवर्णाभि	भार ७.२६
सावित्रीं वै जपेत्	ल व्यास २.२८	सितवस्त्रधरः शान्तो	वृ परा १०.९६
सावित्रीं व्याहर्ती	आंड १२.३	सितवस्त्र युगच्छन्नं	वृ परा १०.८९
सावित्रीं शतरुद्रीयं	औ ३.८५	सितार्द्रवाससा युक्ता	प्रजा ६१
सावित्र्यष्टसहस्रं तु	व १.२७.१८	सिताऽसिता कदनीलाः	बृह ९.१६८
सावित्र्यादीन् दशाऽऽज्येन	आश्व १२.८	सिद्धयते ब्राह्मणस्यैव	लोहि १६६
सावित्र्या वाऽपि शुद्धयेते	वृ हा ६.२१४	सिद्धिर्भवति वा नेति	शाण्डि १.९२
सावित्र्यश्चापि गायत्र्या	पराशर ८.११	सिद्धान्तानां च सर्वेषां	बृ.या. १.६
सावित्र्याश्चैव माहात्म्यं	बृह ९.४०	सिद्धान्तानां तु सर्वेषां	बृ.या. २.१३
सा वै पुत्रैस्तदुद्भूतै	आंपू २०५	सिद्धापि नात्र विशय	लोहि ४६६
साशीति पणसाहस्री	या १.३६६	सिद्धाब्रह्मर्षयश्चैव	वृ.गौ. १०.२८
सा संध्या वृषली	ब्र.या. २.४५	सिद्धा मंत्रा द्विजेन्द्रस्य	वृ परा ११.१६२

सिद्धार्थकानां कल्केन	शंख १६.१०	सीसकेंचासित्रे लिख्य	ब्र.या. १०.६४
सिद्धासनसमं नास्ति	विश्वा ३.३०	सीसं आभरणं तस्य	औसं ९
सिद्धे योगे त्यजन्	बृह ९.१९७	सीसहारी च पुरुषो	शाता ४.७
सिद्धैर्ब्रह्मर्षिभिर्यैव	वृ.गौ. ७.१२३	सुकूर्चैश्च शुचैर्देशे	नारा ५.३९
सिध्यत्येव न सन्देह	कण्व २४०	सुकृतं यत्वया किञ्चित्	या २.७७
सिन्दूरारुणमं भांति	वृ परा ६.१४७	सुकृतांशान्वा एष	बौधा २.१७९
सिन्धुतीरेऽथ बल्मीके	वाधू १०८	सुकेशी सुशिखो वा स्याद्	वृ हा ५.५१
सिन्धु तीरे सुखासीनं	देवलं १	सुक्षेत्रे वापयेद् बीजं	व्यास ४.४९
सिन्धुद्वीप ऋषिश्छन्दो	वृ परा २.५१	सुखदोषनिमित्तेन स्पृष्टा	कपिल ५३०
सिन्धुद्वीपो भवेदार्ष	वृ. या. ७.१७८	सुखदोषेण परणं तदभर्ता	लोहि ४३७
सिन्धु सौवीरि सौराष्ट्रं	देवल १६	सुखं दुखं भवं भावं	लोहि ५८३
सिन्धु स्नानं गयाश्राद्धं	वाधू २१६	सुखं न कृषितोऽन्यत्र	वृ परा ५.१८६
सीतक्षामांबरधरां प्रसन्ने	भार १२.१०	सुखं वाञ्छन्ति सर्वे	दक्ष ३.२३
सीताद्रव्यापहरणे	मनु ९.२९३	सुखं वा यदि वा दुःखं	दक्ष ३.२१
सी ताभि स्नापये	व २.३.३५	सुखं ह्यवमतः शेते	मनु २.१६३
सीतामरुन्धतीं लक्ष्मीं	कण्व ७७	सुखाम्युदधिकं चैव	मनु १२.८८
सीतां पूज्य वृषौ	वृ परा ५.८७	सुखासनं च यो दद्यात्	वृ परा १०.१५०
सीते सौम्ये कुमारि त्वं	वृ परा ५.११९	सुखासनानि यानानि	वृ परा १०.९
सीददधि कुप्यमिच्छदधि	मनु १०.११३	सुखासीनं मुनिवरं	बृ.या. १.३
सीदन्ति चाग्निहोत्राणि	पराशर १.३२	सुखासीना निबोध त्वं	विष्णु १.६७
सीदमानं कुटुम्बाय	वृ.गौ. ६.११९	सुखेन देहमुत्सृज्य	वृ हा ७.३१८
सीमान्तश्चाष्टये मासि	व्यास १.१७	सुखोष्णं कारयित्वै पाक	कपिल २६२
सीमान्तश्चैव केशान्तं	ब्र.या. ८.२१७	सुखोष्णितजलै स्नानं	वृ हा ४.८२
सीमान्तोन्नयने नै व पुत्रादि	कपिल ७७	सुगन्धद्रव्यसंयुक्त	व २.६.८६
सीमान्तरं प्रविष्टा	लोहि ४३	सुगन्धद्रव्यसद्वस्त्र	लोहि ६६५
सीमां प्रति समुत्पन्ने	मनु ८.२४५	सुगन्धपुष्पधूपार्घ्यैः	व २.३.१४९
सीमायामविषद्यायां	मनु ८.२६५	सुगन्ध पुष्पै विविधै	वृ परा ६.१२३
सीमाविवादधर्मश्च	मनु ८.६	सुगन्धवस्त्रालंकारगीतदीनां	कपिल ५७२
सीमावृक्षांश्च कुर्वीत	मनु ८.२४६	सुगन्धाक्षत पुष्पाणि	भार ११.८
सीमासन्धिप्रदेशेषु	न लोहि १०७	सुगन्धा सुन्दरी विद्यां	वृ हा ४.९१
सीमैषा परमा विद्वान्	वृ परा १२.२८४	सुगन्धिन्तु मुखोन्यस्य	ब्र.या.२.१२८
सीम्नोऽपवादे क्षेत्रेषु	वृ हा ४.२५४	सुगुप्तकृत्यविज्ञानं	वृ परा १२.१५
सीम्नो विवादे क्षेत्रस्य	या २.१५३	सुजनैः सेव्यते यस्तु	वृ हा ७.५५
सीरस्यैकस्य वा	वृ परा १०.१८०	सुतप्रदानोत्तरक्षणमात्रेणैव	कपिल ७७४
सीरा युञ्जन्ति इत्यादौ	वृ परा ५.८६	सुतभ्रातृपितृव्याणां	आंपू १०३५

सुतं बन्धुषु वान्येषु	आंपू ३३७	सुप्त्वा क्षिप्त्वा च निष्ठीव्य शाण्डि २.६०
सुतविन्यरतपत्नी कस्तया	या ३.४५	सुप्त्वा क्षुत्वा च भुक्त्वा मनु ५.१४५
सुत संस्कारकर्माणि	आश्व १७.१	सुप्त्वा भुक्त्वा रुदित्वां आंपू २५९
सुताष्व (स्व)स्य पितृष्वस्य कपिल १८५		सुप्त्वा भुक्त्वा व १.३.३८
सुतृप्तः सुप्रभः सौम्य	वृ.गौ. ७.६८	सुप्रक्षालितपादपाणिराचान्त बौधा २.३.२५
सुतोरणवितानाद्यां	वृ हा ७.२५४	सुप्रतीकं धराधारं कण्व ६५८
सुतो वैदेहकश्चैव	मनु १०.२६	सुप्रीता सम्प्रयच्छन्ति वृ.गौ. ७.५२
सुत्रामादि दिशां पालान्	वृ परा ११.१२५	सुप्रेक्षमणिय्यारत्नेषु भार ७.२४
सुत्रामाञ्जलवायूनां	वृ परा १२.११२	सुबद्धजन्तुजान्वस्थि नारद १३.९
सुत्राम्णे तस्य पुंभ्यश्च	वृ परा ४.१६५	सुबुद्धां येऽवलिप्तांगां वृ परा ८.१४४
सुदत्त तत्पुनस्तेषां	व्यास ३.२२	सुबर्णरोप्यस्फटिकं भाग ११.६७
सुदध्यन् फलयुतं	वृ हा ६.२४	सुबीजं चैव सुक्षेत्रे मनु १०.६९
सुदर्शनं पांचजन्यं	वृ हा ८.१३७	सुब्रह्मण्यमनाधृष्यं विष्णु १.५९
सुदर्शनोर्ध्वपुंङ्गाणां	व २.२९	सुब्राह्मणश्रोत्रिय बौधा २.३.२४
सुदर्शनोर्ध्व पुण्ड्रादि	वृ हा ५.३५	सुभगो रूपवान् शूरः वृ.गौ. ७.७४
सुदीर्घयंत्रजान् सूप	वृ हा ५.४२२	सुभ्रू युगं सुविम्बोष्ठं वृ हा ३.३०८
सुदीर्घेणापि कालेन	नारद २.१४६	सुमंगला सुनन्दा वृ हा ४.९६
सुधाब्धिममृतं बीजं	वृ हा ४.१२१	सुमङ्गलीनां कथितं आंपू ७१०
सुधा नवगृहस्थस्य	दक्ष ३.१	सुमङ्गलीनां तत्स्नानं लोहि ६४१
सुधानवगृहस्थस्य	ब्र.या. १२.२६	सुमंगलीरियंवधूरिमाः ब्र.या. ८.२३५
सुधावस्तूनि वक्ष्यामि	दक्ष ३.४	सुमध्योरुनितम्बाश्च वृ परा १०.१९५
सुधावस्तूनि वक्ष्यामि	ब्र.या. १२.२९	सुमन्तुजैमिनीकृताः वृ.गौ. १.१९
सुधावीजं सुदीर्घन्तु	वृ हा ३.३७४	सुमित्र इत्युदाहृत्य वाधू ७८
सुनन्दा च सुशीला च	वृ हा ३.३१५	सुमित्रा न आप ओषधयः बौधा २.५.८
सुनासा कर्णं गंडाश्च	वृ परा १०.१९४	सुमुखं संपुटं चैव विततं विश्वा ६.६१
सुपक्वं रसयुक्तं राजानं	विश्वा ८.७९	सुमुखं संपुटं विस्तीर्णं भार ६.६०
सुपणीश्च पिशाचांश्च	वृ परा २.१७४	सुरभिर्ज्ञाननवैराग्ये योनि विश्वा ६.७०
सुपात्रं सर्वदा नाना शुभ	कपिल ८८१	सुरभिर्वैष्णवी माता मम शाता ५.२६
सुपिरायाः कर्षणम्	बौधा १.६.१८	सुरभीणि च पुष्पाणि व २.६.१२१
सुपुष्प मण्डपे रम्ये	व २.४.१२३	सुरभीणि च पुष्पाणि वृ हा ६.१८
सुपूर्वामपि पूर्वा	बौधा २.४.१५	सुरभीनागकर्णादौ वृ परा ७.१२४
सुप्तां मत्तांप्रमत्तां	बौधा १.११९	सुरया लिप्तदेहोऽपि वाधू ३९
सुप्तां मत्तांप्रमत्तां	मनु ३.३४	सुराकामघूतकृतं वृ हा ४.२४०
सुप्ता वापि प्रमत्ता	वृ परा ६.११	सुराकामघूतकृतं या २.४८
सुप्तोऽपि योगयुक्तः	दक्ष ७.१०	सुपषट्प्रपातोयं संवर्त १८४

सुराणामर्चनं कुर्याद्	बृ.या. ७.१९	सुवर्णपुत्रिकं कृत्वा	शाता ५.५
सुराणामितरेषां तु	वृ हा ५.७९	सुवर्णपुत्रिकं कृत्वा	शाता ५.१२
सुराधाने तु यो भाण्डे	बौधा ३.१.२६	सुवर्णपुत्रिकां कृत्वा	शाता ५.१९
सुरानपि विधानेन मन्त्रै	लोहि ३७४	सुवर्णमणिमुक्ता	शंख १२.५
सुरान्तं मार्जयेद्भूमौ	विश्वा ४.१६	सुवर्णमणिरत्नानि	बृ.गौ. ६.९७
सुरान्यमद्यपानेन	यम ११	सुवर्णं गां गुणवर्ती	शाण्डि ४.४७
सुरापश्च विशुध्येत	शंख १२.१७	सुवर्णं रजतञ्चैव पात्रिकं	बृ.गौ. १५.७६
सुरापः श्यावदन्तः स्यात्	शाता ३.१	सुवर्णं रजतं वस्त्रं	अत्रि ६.५
सुरापस्तु सुरां तप्तां	औ ८.१२	सुवर्णं रजतं वस्त्रं	वृहस्पति ५
सुरापस्तुसुरां तप्तां	संवर्त ११६	सुवर्णरजताद्यैवर्वा	वृ हा ५.११३
सुरापः स्वर्णहारी तु	वृ हा ६.३४०	सुवर्णरजताभ्यां वा	बौधा १.५.१४७
सुरापानेन तत्तुल्यं मनु	अत्रि ५.७	सुवर्णशतनिष्कन्तु	शाता १.१६
सुरापी व्याधिता धूर्ता	या १.७३	सुवर्णं शृङ्गी रूप्यखुरा	वृ.गौ. ९.६८
सुरामूत्र-पुरीषाणां	वृ परा ८.२११	सुवर्णस्तेयकृद्भिर्गो	मनु ११.१००
सुरापस्य प्रवक्ष्यामि	वृ परा ८.१०५	सुवर्णस्य क्षयो नास्ति	नारद १०.११
सुरापीत्वा द्विजो मोहाद्	मनु ११.९१	सुवर्णागुलिकं हत्वा	भार १८.१२८
सुरां पीत्वोष्ण्या कायं	बौधा २.१.२१	सुवर्णाम्बरधान्यानि	आश्व १०.४३
सुराम्बधृतगोमूत्र	या ३.२५२	सुवाससायवनिकां	वृ हा २.९६
सुरां वै मलमन्नानां	मनु ११.९४	सुवासितेन तैलेन	व २.६.१०५
सुरां स्पृष्ट्वा द्विज	औ ९.८१	सुवासिनी कुमारीश्च	मनु ३.११४
सुरायाः प्रतिषेधस्तु	वृ हा ६.२६९	सुवासिनी कुमारीश्च	ल हा ४.६४
सुरायाः संप्रानेन गोमांस	बृ.या. २.३	सुवासिन्यो दोलयित्वा	वृ हा ५.५०९
सुरालये जले वापि	शाता ३.१४	सुवेष-भूषणैस्तत्र	वृ परा ७.१६५
सुरा वै मलमन्नादे	वृ हा ६.२७१	सुशयने शयीताथ	वृ परा ६.१४१
सुर्मि वा ज्वलन्ती	बौधा २.१.१५	सुशीतलं पानकं च	व २.४.२५
सुलक्षणं युवानं च	वृ परा १०.१५७	सुशीलन्तु परं धर्मं	वृ हा ८.१९५
सुलभोयं तमेवातः	कण्व ४३६	सुशीला च सुवर्णां च	वृ परा १०.३०४
सुवर्णचौरः कौनख्यं	मनु ११.४९	सुषुम्ना चेश्वरी नाडी	वृ परा ६.९९
सुवर्णतार्क्ष्यसूक्ताभ्यां	वृ हा ६.४२४	सुसंवृद्धा नास्य तत्र	कपिल ७३४
सुवर्णदानं गोदानं	देवल ७३	सुसन्तरेयां हेलार्थं	लोहि ११३
सुवर्णदानं गोदानं	संवर्त २०१	सुसमाधिदो यूयं	औ १.३
सुवर्णदानं गोदानं	वृहस्पति ४	सुसहायमतिप्रीढं शूरं	वृ परा १२.५८
सुवर्णधेनुमार्वाय	वृ परा १०.११६	सुसुखः सुप्रसन्न आत्मा	वृ.गौ. ६.७०
सुवर्णनाभं कृत्वा	व १.२८.२०	सुसूक्ष्मशुक्लवसनां	विष्णु १.२९
सुवर्णनाभं यो दद्यात्	अत्रि ३.२१	सुस्नातं स्वनुलिप्तं	शाण्डि ४.३७

सुस्नातस्तु प्रकुर्वीत	ल हा १.२६	सूतके त समुत्पन्ने	लघुयम ७५
सुस्निग्धकण्ठास्ताल	शाण्डि ४.१६९	सूतकेन न लिप्येत	बृ.या. ४.२१
सुस्निग्धनीलकुटिल	वृ हा ५.२०३	सूतके मृतके चैव	अत्रि ५.३५
सुस्निग्धनीलकेशान्तं	व २.३.११६	सूतके मृतके चैव	दक्ष ६.११
सुस्निग्ध शाद्वलश्यामं	वृ हा ३.२५४	सूतके मृतके चैव	बृ.या. ४.१८
सुहृदोमंत्रवन्तश्च	व २.४.४१	सूतके मृतके चैव	व २.६.४६६
सुहृद्यम्पायसान्नं च	व २.६.२६५	सूतके मृतके वापि	वाधू १३२
सूक्तं रौद्र च सौम्यं च	वृ परा ११.२८५	सूतके मृतके वाऽपि	वृ हा ८.१०६
सूक्तस्तोत्रजपेत्युक्त्वा	व्या २५४	सूतके मृतके होममने	व २.४.१०४
सूक्तानि वैष्णवान्येव	वृ हा ५.५६४	सूतके मृतशौचे वा	वृ परा ८.४२
सूक्तेन विष्णुविधिना	वृ पुरा ४.१४२	सूतके वर्तमानेऽपि	वृ.गौ. ३.५५
सुक्षेत्रे वापयेद्वीजं	पराशर १.५६	सूतकेषु यदा विप्रो	अंगिरस ५९
सूक्ष्मतां चान्वेक्षेत	मनु ६.६५	सूतके समनुप्राप्ते	व्या ४१
सूक्ष्मधर्मार्थतत्त्वज्ञः	कण्व ४००	सूतके सूतकं स्पृष्ट्वा	अत्रि ५.३२
सूक्ष्मं तत् गुह्यं	बृह ११.३१	सूतके सूतकं स्पृष्ट्वा	अत्रि ५.२२
सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसंगेभ्यः	मनु ९.५	सूतश्च मागधश्चोभौ	नारद १३.११५
सूक्ष्मो हि बलवान् धर्मो	नारद १.३५	सूतस्वीकरणे याऽऽरांत्सिथता	आंपू ३९०
सूचनात्स्वधरस्यैव	भार १५.९९	सूताद्याः प्रतिलोमास्तु	नारद १३.१११
सूचीसुतीक्ष्णतृणिभिः	वृ.गौ. ५.४३	सूतानामश्वसारथ्य	मनु १०.४७
सूतकद्वयसंप्राप्तौ नित्य	विश्वा ८.२९	सूतिकाद्यैस्तु भुक्तानि	व २.६.५०५
सूतकं तु प्रवक्ष्यामि	दक्ष ६.१	सूतिप्रजननस्थानयुग्मं	आंपू ३८६
सूतकादिनिमित्तेन	प्रजा १७२	सूतिप्रजननस्थानापन्नं	आंपू ३८५
सूतकादिषु सर्वेषु	आंपू १६९	सूते तेन स्पर्शः गोत्रिणस्तु	बृ.या. १२.१०
सूतकाद् द्विगुणं शावं	अत्रि ५.३६	सूतैश्च वैष्णवैर्मन्त्रैः	वृ हा ४.१३०
सूतकांतरितं श्राद्धं	दा ६३	सूत्याशौचे मृताशौचे	आंपू ४५
सूतकान्ते पुनः प्राप्त	आंपू ५०	सूत्रकार्पासकिण्वानां	मनु ८.३२६
सूतकान्ते शून्यतिथि	आंपू २७४	सूत्रमं वाविधं शस्तं	भार २.३६
सूतकान्ममधर्माय	अत्रि स ९३	सूत्र प्रसाद्ययामायां	भार २.७६
सूतकान्नं द्विजो भुक्त्वा	वृ परा ८.२२१	सूत्र यत्तद्भवेन्मध्यं	भार २.२७
सूतकान्नं नवश्राद्ध	व्या २२९	सूत्रस्यैव भवेन्मन्त्रः	आंपू ५६
सूतकान्नं नवश्राद्ध	संवर्त २४	सूत्राणां (शिं) क्षया	कण्व ४७०
सूतकाशौचयोरुक्तः	वृ परा ८.५९	सूत्राणि च ततः प्राज्ञैः	भार २.२८
सूतके कर्मणां त्यागः	कात्या २४.१	सूत्रेण ग्रथितं सूच्या	विश्वा १.८९
सूतके च प्रवासे वा	कात्या २४.४	सूत्रोदितान् मयीत्यादान्	आश्व १०.२५
सूतके तु यदा विप्रो	आंड ८.१९	सूनिक्स्य नृपांयान्तु	औसं १५

सूनिहस्ताच्च गोमांस	वृ परा ८.१८९	सृष्ट्युत्पत्ति वर्णनम्	विष्णु १
सून्यादीनां चतुर्णां च	वृ परा २४६	सेकद्वारं पिधानां च	वृ परा ५.१६९
सूपर्णोऽसीतिष्णु क्रमं	ब्र. या. ८.३००	सेचनं प्रोक्षणे नस्तो	कण्व ७७५
सूपशाकान्वित कृत्वा	कण्व ७६४	सेतुकंदारमर्यादा	नारद १२.१
सूपान्नं कृसरान्नं	वृ हा ५.३९२	सेतुबन्ध पथे भिक्षां	पराशर १२.५९
सूपेन परमान्नेन	कण्व ३३६	सेतुस्तु द्विविधो ज्ञेयं	नारद १२.१५
सूर्यक्षेत्रेदशैतेषां मंत्राणां	भार ७.५१	सेनापति बलाध्यक्षौ	मनु ७.१८९
सूर्यमण्डल पर्यन्तं	कपिल ९२८	सेनापते सूत्रवर्ती	वृ हा ४.९९
सूर्यमण्डल यवराशि	कपिल ९२८	सेनेशवैनतेयादि	वृ हा ६.४२०
सूर्यमध्यस्थि सोमस्तस्य	विष्णु ५१	सेवकाश्चपि विप्राणां	बृ.या. ४.६१
सूर्यमुदयास्तमये न	बौधा २.३.३७	सेवेक पूर्वं संध्यायाः	भार ६.१०
सूर्यश्चमेति मंत्रेण	वृ परा २.३७	सेवेतेमांस्तु नियमान्	मनु २.१७५
सूर्यः सोमो महीपुत्र	या १.२९६	सेवेनैः कुसुमैर्दिव्यै	व २.३.१६
सूर्यस्यान्तर्गत सूक्ष्मं	वृ.या. २.१६	सेव्यमानस्य यत्पापं	बृ.गौ. १४.६४
सूर्यस्याभिमुखो जप्तवा	वृ हा ४.४८	सेव्यमानोऽप्सरसंधै	वृ परा १०.२८
सूर्यस्यास्थमयात्पूर्वं	भार ६.९	सैकोद्दिष्टं दैवहीनं	प्रजा १८९
सूर्यस्योदयनं प्राप्यं	अत्रिस ४.७	सैनापत्यं च राज्यं	मनु १२.१००
सूर्यस्योदयनं प्राप्य	बृ.या. ८.४९	सैषा भूणहत्या एवैषा	व १.५.९
सूर्याचन्द्रमसोः प्रीत्यै	भार ४.३०	सोऽग्निं भवति वायुश्च	मनु ७.७
सूर्यादीनां तु कर्तृत्व	कण्व ३२	सोऽङ्कारं ब्राह्मणो ब्रूयान्न	वृ परा १०.२८९
सूर्याभ्युदितः सूर्याभि	व १.१.१७	सोऽङ्कारया वै गायत्र्या	वृ परा ७.२४५
सूर्यायेदं नममेति	कण्व ३६५	सोऽङ्कारां चैव गायत्री	वृ परा २.३९
सूर्ये कन्यागते कूर्याच्छाद्धं	अत्रिस ३५८	सोचेत मनसा नित्यं	बौधा १.५.१०४
सूर्येण ह्यभिनिमुक्तः	मनु २.२२१	सोत्तरीयं च कौपीनं	व २.६.४८
सूर्येन्दूपलवे यद्वै	बृ.गौ. १९.१९	सोत्तरीयं त्रयं वाऽपि	वृ हा ५.४३
सूर्यो न इति सूक्तेन	आस्व १.५६	सोतरोऽनुत्तरश्चैव	नारद १.४
सूर्योषर्वुधतारेश नक्षत्र	भार ६.१०७	सोदकं च कमण्डलुम्	बौधा १.३.४
सूर्यकोटिप्रतीकाशं	वृ हा ३.३७०	सोदकान् द्विगुणं भुग्नान्	वृ परा ७.१९०
सूर्यराश्मिनिपातेन	आप २.७	सोदकाभ्यां पवित्राभ्यां	आश्व २.२८
सूर्यश्चमेति मंत्रेण	व २.३.११३	सोदकुम्भं प्रदद्यात्	वृ हा ६.१४७
सूर्यास्ते तर्पयित्वा	व २.३.७२	सोदकुम्भस्य नान्द्याश्च	आंपू २६६
सूर्येऽस्तशैलम प्राप्ते	कात्या ९.१	सोदर्या विभजेरस्तं	मनु ९.२१२
सृजते आत्मनात्मान	विष्णु म २०	सोऽध्वनः पारमाप्नोति	शंख ७.३१
सृजेद्वाचा नरेमालां	शाण्डि ४.२४२	सोऽनुभूयासुखोदकान्	मनु १२.१८
सृष्टमात्रो जगत्सर्व	बृ.गौ. १५.१८	सोऽपनीय समस्तानि	वृ परा ४.१०२

सोपानत्कं कृतधनं	व्या ३६२	सोऽयमेव प्रधानोऽग्नि	लोहि १३८
सोपानत्कश्च यो भुङ्क्ते	ल व्यास २.८३	सोऽयं तस्मादाहित	कण्व ३११
सोपास्या सद् द्विजै	वृ परा २.१२	सोऽयं नित्यत्वधार्यत्व	लोहि ४
सोऽपिक्षत्रिय एव	औसं २९	सोऽयं वै समभागी	लोहि १८७
सोऽपि पाप विशुद्ध्यर्थं	शाता २.२७	सोऽयं हि पितृभि प्रीत	आंपू ११०१
सोऽप्येकश्चेदवाप्नोति	आंपू १२७	सोऽवाविशरास्तु पापात्मा	वृ.गौ. ६.१२९
सोऽभिध्याय शरीरात्	मनु १.८	सोऽश्वमेधसमं पुण्यं	वृ परा ५.२७
सोमक्षये द्विजो याति	वृ परा ५.१००	सोऽैरूदक गोमूत्रै	या १.१८६
सोमन्तत्रैवविन्यस्य	ब्र.या. १०.५४	सोऽसहायेन मूढेन	मनु ७.३०
सोमपांश्चैव दर्भेस्तु	वृ.गौ. ८.६०	सोऽस्पृष्टेना विशेत्रत्र	वृ परा ६.९१
सोमपानसमाभिक्षा	वृ परा ६.१६०	सोऽस्मत्प्रीतिकरः श्रीमान्	वृ.गौ. ७.६०
सोमपा नाम विप्राणां	मनु ३.१९७	सोऽस्य कार्याणि संपश्येत्	मनु ८.१०
सोमपास्तु कवे पुत्रा	मनु ३.१९८	सोऽहं दासो भगवतो	वृ हा ५.१६
सोम पूषेति ऋचा सूर्या	वृ हा ८.७१	सोऽहं भावेन संपूज्य	विश्वा ६.२४
सोम भास्करयोर्भीभि	वृ परा ६.३४२	सौगान्धिकस्य हरणाद्	शाता ४.२०
सोममण्डलसङ्काशैर्यनि-	वृ.गौ. ५.७९	सौत्तरीयं गृहस्थस्य	भार १५.१०७
सोमविक्रयकारी च	ब्र.या. ४.२०	सौत्रामणिस्तत्परं स्यात्	कण्व ४९७
सोमविक्रयिणे विष्ठा	मनु ३.१८०	सौत्रामण्यच्छिद्रन	कण्व ५३७
सोम शौचं ददत्तासां	बौधा २.२.६४	सौत्रामण्यावभृतके	वृ परा २.५३
सोमः शौचं ददौ तासां	या १.७१	सौदर्शिनीं प्रवक्ष्यामि	वृ हा ७.१९३
सोमसंस्थास्सप्तसंस्थाः	लोहि १०३	सौदर्शनेन मंत्रेण	वृ हा ६.६१
सोमसदोऽग्निष्वात्ताश्च	वृ परा ७.१६७	सौदर्शनेन मंत्रेण	वृ हा ७.२०३
सोमसूनु सुराचार्यो	वृ परा ११.५६	सौदर्शिनी च सेनेशी	वृ हा ७.५
सोमाग्न्यार्कानिलेन्द्राणां	मनु ५.९६	सौदर्शिनीं तु संस्थाप्य	नारा ३.१०
सोमानमित्योदनेन	वृ हा ६.१०४	सौपर्णमथवैराजं	वृ परा ११.२८६
सोमापूषणेत्युंचा	वृ हा ८.४४	सौभाग्यं अम्बिके देहि	वृ परा ११.२७
सोमाय वै पितृमते	औ ५.४३	सौभाग्यं कर्मसिद्धिञ्च	कात्या १४.७
सोमार्काग्निगतन्तेजो	विष्णु म ५०	सौभाग्यायुर्यशो नाश	शाण्डि ५.५१
सोऽमृतं नित्यमश्नाति	वृ परा २.२२५	सौमनस्यमस्त्विति	कात्या ४.६
सोमेन सह राजेति	वृ परा ७.१८५	सौमारौद्रं तु वह्नेनाः	मनु ११.२५५
सोमेष्टिं पशुयज्ञं	वृ परा ६.३०३	सौम्यं च वैष्णवं रुद्र	आश्व २३.९
सोमो ग्रहगणश्चव सागराः	वृ.गौ. १९.७	सौम्ययाम्यायनद्वन्द्वे	आंपू ६४३
सोमोवस्यातिश्चाग्नि	व २.६.१८६	सौम्ययाम्यायने नूनं	आंपू ६४१
सोमोऽस्य राजा भवतीति	व १.१.४६	सौम्यवेषप्रशान्तं च पाप	शाण्डि १.१०५
सोऽयमर्थः कल्पसूत्रैः	कपिल ३८	सौम्ये मुहूर्ते तत्प्राश्यं	वृ.गौ. १०.२३

सौरभेयीं तथा मुद्रां	व २.६.९०	स्तम्भेषु वेदान् मंत्राश्च	वृ हा ५.५०५
सौरभेयी द्विवक्त्रां	वृ परा १०.७	स्तुतिभि पुष्कलाभिश्च	वृ हा ६.५८
सौरभेयोर्जनलाग्न्योश्च	वृ परा ६.२६९	स्तुतिभि पुष्कलाभिश्च	वृ हा ७.३३०
सौरान् मंत्रान् यथोत्साहं	ल व्यास २.३४	स्तुतिभि ब्रह्मपूर्वाभिर्य	वृ.गौ. २१.१४
सौराष्ट्रे देति सूक्तेन	वृ हा ५.४६४	स्तुत्वा नत्वा ततः	आश्व १.४९
सौरेण चानुवाकेन	वृ हा ५.२१३	स्तुवतो दुहिता त्वं वै	बौधा २.२.९०
सौलभ्याधारणामूलं	कण्व ३४३	स्तुवन्ति वेदास्तस्यात्र	वृ हा ८.२६६
सौवर्ण पृथिवीदान	वृ परा ११.१५४	स्तुवन्ति सततं ये च	वृ.गौ. २२.२७
सौवर्णमाज्यं लाजांश्च	वृ हा ५.१४७	स्तुयमानं हरिं ध्यात्वा	वृ हा ७.७८
सौवर्ण क्षीरपूर्णं तु	वृ परा १०.१३१	स्तुतादुपासनात् सोऽयमौपा	वृ.गौ. १५.१९
सौवर्ण रजितं ताम्रं	भार ११.९	स्तेनः कुनखी भवन्ति	व १.२०.४९
सौवर्ण राजतं ताम्रं	बृ.या ७.११४	स्तनगायनयोश्चान्नं	मनु ४.२१०
सौवर्ण राजतं ताम्रं	ब्र.या. ४.५५	स्तेनः प्रकीर्य केशान् सैध्रकंबौधा	२.१.१७
सौवर्णराजताञ्जनां	या १.१८२	स्तेनाः साहसिकाश्चण्डाः	नारद २.१३८
सौवर्णराजताम्यां	शंख १३.१४	स्तेनेष्वलभ्यमानेषु	नारद १५.२६
सौवर्णरीप्य वासोऽश्म	२.६.४९१	स्तेनोऽनुप्रवेशान्न	व १.१९.२६
सौवर्ण रौप्यमहिणी	ब्र.या. ११.१८	स्तेयं कृत्वा सुवर्णस्य	वृ परा ८.१०८
सौवर्णानि च पात्राणि	व २.६.५०४	स्तेयं कृत्वा सुवर्णस्य	संवर्त १२०
सौवर्णाच्च प्रसूनात्	वृ.गौ. ८.७८	स्तोकशः सीरिभि	वृ परा ५.१८२
सौवर्णायसताम्रेषु	अत्रिश १५६	स्तोत्रपाठैश्च सन्तोष्य	शाण्डि ४.१६७
सौवर्णायसताम्रेषु	अत्रिस १५९	स्तोमवाहीनि भाण्डानि	नारद ७.२३
सौवर्णिकस्य वैश्यस्य	वृ.गौ. ११.१७	स्त्रवत्यनोऽङ्कतं पूर्वं	बृ.या. २.१४९
सौवर्णेन पात्रेण	शंख १३.९	स्त्रिदेवता मंत्रजपे	भार ७.४९
सौवर्णे राजते वाऽपि	आश्व ५.२	स्त्रियः पवित्रं अतुलं	बौधा २.२.६३
सौवीरः तिव्रतैर्लवणादि	वृ परा ७.२३१	स्त्रियः पवित्रं अतुलं	व १.२८.४
सौहार्दाद् वीक्षणाद्	वृ हा ६.१६९	स्त्रियम्बिना आकामे	ब्र.या. ८.८२
स्कन्दश्चदुग्धेविन्यस्य	ब्र.या. १०.८५	स्त्रियं रिरंसुर्दविणं	वृ परा ६.२१७
स्कन्धयाः स्पर्शनादश्य	शंख १०.१३	स्त्रियं श्वश्वा पतिर्मात्रा	वृ परा ७.३४८
स्कन्धेन दूराच्च	वृ परा ५.५१	स्त्रियं स्पृशेददेशे यः	नारद १३.६५
स्कन्धेनादाय मुशलं	मनु ८.३१५	स्त्रियं स्पृशेददेशे	मनु ८.३५८
स्कन्धेनाऽऽदाय मुशलं	बौधा २.१.१९	स्त्रियश्च यत्र पूज्यंते	वृ परा ६.४४
स्तनयितु वर्षविद्युत	बौधा १.११.२५	स्त्रियस्तु न बलात्कार्या	नारद १९.२५
स्तनयस्तुधियोन्यास	भार ६.८४	स्त्रियस्तुष्टा श्रियः	वृ परा ६.४५
स्तनोर बाहु हस्ताग्र	वृ परा ११.२०	स्त्रियस्सनाथाः कथिताः	कपिल ६५३
स्तंभपूजां चतुर्दिक्षु	कण्व ६६७	स्त्रियाधनन्तु ये मोहात्	अंगिरस ७१

स्त्रियाऽप्यसम्भवे कार्यं	मनु ८.७०	स्त्रीणां शीलाभियोगे	नारद २.२१७
स्त्रियामर्तुर्वच कार्यं	व २.५.१७	स्त्रीणां संक्षिप्तधर्मवर्णनम्	विष्णु २५
स्त्रियां तु यद्भवेद्विन्न	मनु ९.१९८	स्त्रीणां सर्वक्रियारम्भे	ब्र.या. ८.२८९
स्त्रियां तु रोचमानायां	मनु ३.६२	स्त्रीणां साक्ष्यं स्त्रियः	मनु ८.६८
स्त्रिया म्लेच्छस्य	अत्रिस १८२	स्त्रीणां सुखोद्यमकूरं	मनु २.३३
स्त्रियाश्च पुरुषस्यापि	वृ परा ६.४७	स्त्रीणां सौभाग्यतो	कात्या १९.६
स्त्रियाहृताश्चैकवर्णा न	ब्र.या. १०.११	स्त्रीद्वय वृत्तिकामो	या २.२८४
स्त्रियोऽपि स्युस्तथाभूता	वृ परा ७.१६६	स्त्रीधनं तदपत्यानां	नारद १४.९
स्त्रियाऽप्येतेन कल्पेन	मनु १२.६९	स्त्रीधनभ्रष्टसर्वस्वां	नारद १३.९४
स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या	मनु २.२४०	स्त्री धनं च नरेन्द्राणां	नारद २.७५
स्त्रियो वृद्धाश्च बालाश्च	पराशर ७.३७	स्त्रीधनानि च ये मोहाद्	आप ९.२६
स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि	नारद २.२२	स्त्रीधनानि तु ये मोहाद्	मनु ३.५२
स्त्रीकृतेषु न विश्वासः	शाण्डि ३.१५३	स्त्रीधर्मयोगं तापस्यं	मनु १.११४
स्त्रीधीरमाजिकं पीत्वा	संवर्त १८८	स्त्रीनिषिद्धा शतं दद्यात्	या २.२८८
स्त्रीगृहे गोगृहे वाथ	वृ.गौ. ७.१२५	स्त्रीपात्र पतिपात्रे तु	वृ परा ७.३८३
स्त्रीघातः शुद्ध्यते ऽप्येवं	अत्रि स १७०	स्त्रीपिण्डं भर्तृपिण्डेन	आंपू ९९६
स्त्री जनन्यस्त्रियः सर्वा	वृ परा १.३४	स्त्रीपुंसयोस्तु संयोगे	या ३.७२
स्त्रीजाते सर्वकार्यैककर्तृत्वा	कपिल ४११	स्त्रीपुंसयोस्तु सम्बन्धाद्	नारद १३.२
स्त्रीजिताश्चानपत्याश्च	वृ परा ८.४१	स्त्रीपुं धर्मो विभागश्च	मनु ८.७
स्त्रीजीविते यत् दत्तम्	वृ.गौ. ३.२१	स्त्री पुनपुंसक चेति	वृ परा ३.१६
स्त्रीणामपि पृथक् श्राद्ध	वृ परा ७.१३३	स्त्रीबालवृद्धातुराणामन्येषां	शाण्डि १.२४
स्त्रीणामप्यर्चनीयः	वृ हा ८.८०	स्त्रीबालोन्मत्त वृद्धानां	मनु ९.२३०
स्त्रीणामष्टगुणः कामो	वृ परा ६.५३	स्त्रीभिः भर्तृवच कार्यं	या १.७७
स्त्रीणामसंस्कृतानां	मनु ५.७२	स्त्रीभि हास्यं कामजल्पं	वृ हा ६.२०७
स्त्रीणामाजन्मशर्मार्थं	वृ परा ६.१७	स्त्रीमद्य मांस लवण	वृ हा ४.१७६
स्त्रीणामुद्वाह एको वै	वृ परा ६.१७८	स्त्रीमुखं च सदा शुद्धं	वृ परा ६.३३७
स्त्रीणायेमकशफोष्ठीणां	वृ परा ६.३१९	स्त्रीयदा बालभावेन	औ ९.१०१
स्त्रीणां कुरुते श्राद्ध	व्या ११२	स्त्रीवृद्धबालकितव	या २.७२
स्त्रीणां च बाल वृद्धानां	वृ परा ८.७५	स्त्रीशूद्रपतितांश्चैव	बृ.या. ७.१४७
स्त्रीणां च बाल-वृद्धानां	वृ परा ८.९२	स्त्रीशूद्र पतिनानां	शंख १८.१३
स्त्रीणां चूडान् आदानात्	पराशर ३.२४	स्त्री शूद्र विद् क्षत्र बधो	या ३.२३६
स्त्रीणां चैव तु शूद्राणां	देवल ६१	स्त्रीशूद्रस्य तु शुद्ध्यर्थं	पराशर १२.४
स्त्रीणां तु/साक्षिणः स्त्रिय	व १ १६.२४	स्त्रीष्वनन्तरजातासु	मनु १०.६
स्त्रीणां रजस्वलानां	यम ५६	स्त्रीषु रात्रौ बहिग्रामा	नारद ९.१
स्त्रीणां रजस्वलानां	बृ.या. ३.६४	स्त्रीसंपर्कादिकं सर्वं	बृ.बा. ५.२

स्थ्याम्यमात्यौ पुरं राष्ट्रं	मनु १.२९४	स्थालीपाकस्य चाऽऽरम्भ	आश्व २.१
स्थ्यालोकालम्भविगम	या ३.१५७	स्थाली पाकादथपुनस्त	कण्व ५४९
स्थगरं सुरभिर्ज्ञेयं	कात्या १७.५	स्थालैः सह चतुः षष्टि	या ३.८५
स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य	वृ हा ५.१६४	स्थाल्यादीनि च पात्राणि	आश्व २.६८
स्थण्डिलेऽभ्यर्चनं	वृ हा ५.११२	स्थावरंजङ्गमं श्रेष्ठं	बृ.गौ. २०.१६
स्थलगो नर्दवासास्तु	वृ परा २.२०६	स्थावरं न्यायमार्गेण	लोहि ५४४
स्थलजौदकशाकानि	मनु ६.१३	स्थावरा कृमिकोटश्च	मनु १२.४२
स्थलस्थेन तु कर्तव्यं	व्या ३७५	स्थावरे क्रय दानादिकृत्ये	कपिल ६४०
स्थानपालाल्लोकपालान	विष्णु १.१६	स्थाविर्ये मोक्षामातिष्ठेत्	वृ.गौ. १२.५
स्थानं तपस्विनां यच्च	भार १५.५८	स्थितः अस्मि सर्वतः	वृ.गौ. १.५८
स्थानं द्विजन्मा विधिवत्	वृ परा १२.२५२	स्थितयोः परगोत्रत्वे	लोहि २९४
स्थानं वीरासनं सक्त	आंड १२.४	स्थितः हि एकगुणाख्ये	वृ.गौ. १.५५
स्थानलाभनिमित्तं हि	नारद २.८६	स्थितायां येयमूढा	आंपू ४५२
स्थानादन्यत्र वा गच्छन्	नारद १९.२७	स्थितो यत्र यथोक्तश्च	वृ परा ३२०
स्थानान्तरगते बिम्बे	वृ हा ६.४००	स्थितौ तस्याश्च	वृ परा ५.३७
स्थानासनफलमवाप्नोति	बौधा २.४.२३	स्थित्वापठन् स्मरन्	भार १५.६७
स्थानासनाद्यं विचरेद	औ ८.२८	स्थित्वा यथावदाचम्य	भार ५.२८
स्थानासनाभ्यां विहरेद	मनु ११.२२५	स्थित्वा समाहितमनाः	भार १५.६०
स्थानासेध कालकृतः	नारद १.४२	स्थिरभेष्वर्कसंक्रान्तिर्ज्ञेया	आंपू ६४०
स्थापयित्वा चरुवहनौ	व २.६.२८२	स्थिरांगं नीरुजं तृप्त	वृ परा ५.४
स्थापयित्वा तु भदभक्त्या	वृ.गौ. ७.४३	स्थिरांगं निरुजं दृप्तं	पराशर २.५
स्थापयेत् कुम्भमेकातु	शाता ५.९	स्थूणाप्ररोहणं यत्साद	वृ परा ११.१०२
स्थापयेत्क्षेत्रयध्येषु	शाण्डि ३.७८	स्थूल फलस्य तूलस्य	भार १५.७४
स्थापयेत्पादहस्तादि शाण्डि	३.८४	स्थूलसूत्रवतामेषा	नारद १०.१४
स्थानीय मान्ततस्तस्मि	वृ.गौ. ८.८८	स्थूलो वैश्वानरो नित्यं	बृ.या. २.९२
स्थापितं प्रथमं पात्र	आश्व २३.३८	स्थैर्यं चतुर्थे त्वंगानां	या ३.८०
स्थाप्या भौमकला युक्तं	ब्र.या. १०.७५	स्नपयित्वा चरु तत्र	व २.३.७३
स्थाली च प्रोक्षणां दर्वी	आश्व २.१८	स्नपयित्वाचरेत्तत्र	व २.४.११६
स्थालीपाकं चाऽऽग्रयणं	आश्व ३.१२	स्नातकव्रतलोपे च दिन	वाधू १२८
स्थालीपाकं ततः शस्तं	ब्र.या. ८.३४१	स्नातकानां तु नित्यं	व १.१२.१२
स्थाली पाकं ततो हुत्वा	ब्र.या. ८.३२	स्नातकाय सुशीलाय	आश्व १५.३
स्थालीपाकं तथा धानं	लोहि १३३	स्नातः कृतजप्यस्तदनु	शंख १३.९
स्थालीपाकं पशुस्थाने	कात्या १७.२५	स्नातं शिष्यं समानीय	वृ हा २.११
स्थालीपाकं पितृश्राद्ध	लोहि १२३	स्नातं शिष्यं समाहूय	वृ हा २.५१
स्थालीपाकं गृह्णाश्च	बृ.गौ. १५.२३	स्नातं शिष्यं समाहूय	बृ हा २.१०८

स्नात शुचिर्धौतवास	संवर्त २०७	स्नात्वाऽऽमलक्या नद्यां	वृ हा ५.३४१
स्नातः संतर्पणं कृत्वा	शंख १३.१७	स्नात्वा यथोक्तं	औ ४.१
स्नातः स्नाताय विप्राय	वृ परा १०.२५२	स्नात्वा रजस्वला चैव	अंगिरस ३५
स्नातस्नानं वा कुर्वीत	कण्व १६१	स्नात्वा विधायार्चनं	वृ परा ११.३२
स्नातस्य भोत्युत्ते	ब्र.या. ८.१२४	स्नात्वा विष्णु समभ्यर्च्य	व २.३.१७२
स्नातस्य सार्षपं तैलं	या १.२८४	स्नात्वा वै संस्पृशेत्लिङ्गं	ब्र.या. १२.५४
स्नाता रजस्वला या	पराशर ७.१७	स्नात्वा शुक्लांबरधरः	भार ११.५
स्नातुं प्रयान्तं विबुधा	कण्व १५३	स्नात्वा शुक्लाम्बरधर	वृ हा ३.४१
स्नातृसंचिन्तितं सर्वे	वृ परा २.१०१	स्नात्वा शुचिद्विजोवात्र	भार १८.९३
स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत	ब्र.या. २.१९९	स्नात्वा शुद्ध प्रसन्नात्मा	वृ हा ८.२२०
स्नात्वाऽक्षततिलै	ल हा ४.३२	स्नात्वा शुद्धः शुचौ देशे	भार १३.४
स्नात्वाग्निहोत्रजेनैव	भार ५.४३	स्नात्वाश्वमेधावभृथे	औ ८.२१
स्नात्वाचम्य ततः	औ ९.९३	स्नात्वा संकल्प्य विधिना	कण्व १४७
स्नात्वा च विधिवत्तत्र	संवर्त २११	स्नात्वा सन्तर्प्य	ल व्यास १.२१
स्नात्वा तिलोदकं	व २.६.३४८	स्नात्वा सन्तर्प्य	वृ हा ५.३४४
स्नात्वातीरं समागत्य	व्या ६८	स्नात्वा सन्तर्प्य	वृ हा ६.४४
स्नात्वा तु सूर्यमर्चिष्य	ब्र.या. ८.८३	स्नात्वा संध्यासपर्यादि	भार १८.२२
स्नात्वा तेनैव विधिना	आंपू ४८७	स्नात्वा संपूज्य देवेशं	वृ हा २.९३
स्नात्वा त्रिषवणं नित्यं	आप ९.३९	स्नात्वा सम्प्राश्य	औ ६.४४
स्नात्वा नद्यांतडागे	वृ हा ५.५५०	स्नात्वा संप्रोक्ष्य पतितां	शाण्डि २.६१
स्नात्वा नद्यां विधानेन	वृ हा ७.३०६	स्नात्वा स्नात्वा पुनः	अत्रि ५.६२
स्नात्वा नद्युकैश्चैव	अत्रिस १८४	स्नात्वा स्नात्वा स्पृशेदेनं	अत्रि ५.७०
स्नात्वा नित्यक्रियां	आश्व १२.५	स्नात्वा स्वस्त्ययनं	व २.३.१९१
स्नात्वा नुपहतः प्यादौ	भार ६.१४	स्नात्वैव वाससी	बृ. या. ७.३८
स्नात्वाऽपरेह्नि कुर्वीत	व २.३.२०	स्नात्वैवं सर्वभूतानि	बृ.या. ७.११५
स्नात्वा परेऽह्नि विधिना	वृ हा ७.१४१	स्नापनं तस्य कर्तव्यं	या १.२७७
स्नात्वा पीत्वा क्षुते	पराशर १२.१७	स्नामद्दैवतैर्मन्त्रै	बृह १०.२
स्नात्वा पीत्वा क्षुते	या १.१९६	स्नान आर्द्र धरणीञ्चैव	वृ हा ६.३५२
स्नात्वा पीत्वा च भुक्त्वा	वृ परा ६.३४४	स्नानकर्मव्यशस्तस्तुधीतं	व २.६.५३
स्नात्वा पीत्वा जलं	वृ हा ६.३७९	स्नानकाले तु संप्राप्ते	वृ हा ५.८६
स्नात्वा पीत्वा तथा भुक्त्वा	संवर्त २०	स्नानतः सर्वकर्माणि	आंपू १६५
स्नात्वापीत्वा शतं	भार ९.१५	स्नान द्वये नित्यमेव	कण्व ५२
स्नात्वा पूववदभ्यर्च्य	वृ हा ७.२६४	स्नानद्रव्याणि च तथा	भार ११.२४
स्नात्वा मध्याह्नसमये	वृ हा ५.४२७	स्नानपानक्षुतस्पाप	भार ४.३८
स्नात्वा मंत्रवदाचम्य	ल हा ४.१२	स्नानमन्येषु कुर्वीत	वृ परा ८.२०५

स्नानमब्दैवतैः कुर्यात्
 स्नानमब्दैवतैर्मन्त्रैः
 स्नानमात्रं त कथितं
 स्नानमूलमिदं ब्राह्मं
 स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः
 स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः
 स्नानं मौनोपावासेज्या
 स्नानकालं च तद्ध्यानं
 स्नानं कृत्वा प्रारंभेच्च
 स्नानं कृत्वाद्भवस्त्र
 स्नानं गोदानिकं
 स्नानं तौ वरुण शक्ति
 स्नानं त्रिषवणं कुर्वान्
 स्नानं त्रिषवणं चास्य
 स्नानं दानं जपं होमं
 स्नानं दानं जपं होमं
 स्नानं दानं जपो ध्यानं
 स्नानं दानं तपोहोमं
 स्नानं नद्यादिबन्धेषु
 स्नानं नैमित्तिकं ज्ञेयं
 स्नानं प्रधानं भक्तानां
 स्नानं ब्राह्मणसंस्पर्शं
 स्नानमन्तर्जले चैव
 स्नानमब्दैवतैर्मन्त्रैः
 स्नानमब्दैवतैर्मन्त्रैः
 स्नानमूलाः क्रियाः
 स्नानं मन्त्रैः तथा संध्यां
 स्नानं रजस्वलायास्तु
 स्नानं वारुणिकं चैव
 स्नानं सन्ध्या मुक्तकाले
 स्नानं सन्ध्यां जपं होमं
 स्नानं संध्या जपो
 स्नानं स्पृष्टेन येन
 स्नानवस्त्रं निष्पीड्य
 स्नानवस्त्रेण च कुर्यात्

व्यास ३.८
 या १.२२
 आपू ६७९
 आपू १६६
 वाधू ६९
 वाधू ९७
 या ३.३१३
 भार ९.४
 आपू १६४
 वाधू ९५
 कण्व ४३३
 व्या १००
 वृ हा ६.२२९
 संवर्त १३२
 अंगिरस १४
 अत्रिस ३२३
 बृ.या. ७.१२८
 आप ६.३
 वृ परा १०४
 वाधू ५१
 शाण्डि २.१
 अत्रिस २८४
 बृ.या. ७.१६९
 बृ.या. ६.२९
 बृ.या. ७.१
 बृ.या. ७.११६
 ब्र.या. ८.५६
 आप ७.१
 आश्व १.१०८
 विश्वा ३.७५
 वाधू २२४
 आश्व १.३
 वृ परा ८.३११
 ल हा ४.५१
 वाधू ७१

स्नानवस्त्रेणहस्तेन यो
 स्नानवस्त्रोपवीतेषु
 स्नानशत्रुष्टितोयेन
 स्नानसंध्याग्निहोत्रादि
 स्नान सन्ध्याविहीना
 स्नानहीनो मलाशी
 स्नानहोमजपातिथ्यं
 स्नानचमनपानार्थं
 स्नानार्थेण दयीदनु
 स्नानादनन्तरं तावद्
 स्नानादिकञ्च संप्राप्य
 स्नानादि कृत कृत्य
 स्नानाद्याचार कृत्य
 स्नानानि पंच पुण्यानि
 स्नानान्तं पूर्ववत् कृत्वा
 स्नानान्तरं देवपूजा वर्णन
 स्नानार्थं प्रस्थितं विप्रं
 स्नानार्थं मृत्तिकां शुद्धा
 स्नानार्थं मृदमानीय
 स्नानार्थं विप्रमायान्तं
 स्नानार्थं यदि भुञ्जीत
 स्नाने दाने च ये
 स्नाने दाने जपे होमे
 स्नाने दाने भवेत्
 स्नाने दीपे तथा दाने
 स्नानेनैव भवेच्छुद्धि
 स्नानेनैव विशुद्धि
 स्नानोदकाय पाकाय
 स्नानोपवासनियम
 स्नापनं तस्यकर्तव्यं
 स्नापयित्वा तदा कन्या
 स्नापयित्वा विधानेन
 स्नापयेत् पञ्चगव्येन
 स्नापयेत्पञ्चगव्येन
 स्नापयेदम्पतीः पश्चात्

वाधू ९२
 वृ हा ५.२०९
 व २.६.१०८
 कण्व ३२२
 ब्र.या. १३.२७
 बृ.या. ४.५२
 बृ.या. ७.१२७
 शाण्डि ४.१५३
 व २.६.१०३
 दक्ष २.१३
 लहा ४.२८
 वृ हा ३.२४९
 विष्णु ६४
 पराशर १२.९
 कात्या २३.१०
 विष्णु ६५
 विश्वा १.८७
 व २.६.१३२
 ल हा ४.२४
 पराशर १२.१२
 औ ९.५४
 वृ परा ११.२८७
 वाधू २१२
 ब्र.या. २.१९२
 व २.६.११८
 औ ६.४८
 व २.६.४८३
 कण्व ६०२
 कपिल ५४८
 ब्र.या. १०.८
 आप ७.१०
 आपू ७८
 दा १५२
 व २.७.१०८
 शाता २.३५

स्नापयेद्विधिवत्पश्चात्	व २.७.४८	स्पृश्यमस्पृशन्त्येवा	शाण्डि १.१४
स्नापयेन् मंत्र रत्नेन	वृ हा ५.१४०	स्पृश्यास्तु सर्वमेवैते	औ ६.६
स्नानपयेद्विषुवे भक्त्या	वृ.गौ. १०.२५	स्पृष्टमन्त्यादिजातीनां	व २.६.५१७
स्नाप्य पंचामृतैः	वृ हा ५.१४१	स्पृष्टमनन्तु भुञ्जानो	बृ.गौ. १६.४५
स्नायाज्जलेन देवानां	शाण्डि २.२१	स्पृष्टमात्र त्यजेत्तीर्थ	व २.६.५२९
स्नायान्दीषु शुद्धाषु	ल व्यास १.३	स्पृष्टं रजस्वलाऽन्योन्यं	अत्रिस २७८
स्नानानि मृत्योर्जुहोमि	व २.२०.३२	स्पृष्टं रजस्वलाऽन्योन्यं	अत्रिस २७९
स्निग्धं पथ्यं तथा शुद्धं	व २.५.५७	स्पृष्टं रजस्वलाऽन्योन्यं	अत्रिस २८०
स्निग्धं रम्यं गृहीत्वा	व २.७.४	स्पृष्टं रजस्वलाऽन्योन्यं	अत्रिस २८१
स्निग्धवर्णं महाबाहु	वृ हा ५.१७	स्पृष्टा रजस्वला कौश्चित्	यम ६२
सुषादुहितुपुत्राद्यान्य	शाण्डि ३.७२	स्पृष्टा रजस्वला चैव	यम ६१
सुषानामपि पुत्राणां पितृ	कपिल २०६	स्पृष्टाश्च गाव शमयन्ति	वृ परा ५.१०
सुषायाकैकमधुरा पितर	कपिल १८७	स्पृष्टास्पृष्टा नष्टसुता	कपिल ५२६
सुषावापि सगोत्रा	वृ परा ७.२८२	स्पृष्टेन तेन संस्नायाद्	वृ परा ८.२०२
सुषा वा सोदरोवापि	कपिल ६०५	स्पृष्टे लोचनयुग्मे	शंख १०.१२
स्नेहापाशगणैवध्वा	वृ.गौ. १.६२	स्पृष्ट्वा चोह्य च दग्ध्वा	पराशर ५.११
स्नेहाद्वा यदि वा	दा ११४	स्पृष्ट्वा दत्त्वा च मदितां	मनु ११.१४९
स्नेहाद्वा यदि वा	पराशर ६.५३	स्पृष्ट्वा द्वादशसंख्या	भार ७.१०५
स्नेहाद्वाद यदि वा	लघुशंख ६२	स्पृष्ट्वा नद्युदके स्नात्वा	अत्रिस १८९
स्नेहाद्वा यदि वा	लिखित ७७	स्पृष्ट्वा पादौ नमस्कुयाद्	आश्व १४.७
स्नेहांश्च घृततैलादीन्	वृ परा ८.२०७	स्पृष्ट्वापो वीक्षमाणो	कात्या १४.५
स्नेहेनापि समं पत्न्या	वृ परा १२.४७	स्पृष्ट्वा भुवं पदाग्रेण	शाण्डि ४.११५
स्नप्तेऽवगाहयेत्यर्थे	बृ.या. १०.३	स्पृष्ट्वा रजस्वला	देवल ४१
स्पर्शनं चैव सर्वत्र	व २.५.२५	स्पृष्ट्वा रजस्वला	देवल ४२
स्पर्शमात्रः प्रकर्तव्य	आंपू ४७२	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	पराशर ७.१३
स्पर्शमात्रेषु खननं	व २.६.५१४	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	पराशर ७.१४
स्पर्शमात्रेषु चण्डालैः	व २.६.५१३	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	पराशर ७.१५
स्पर्शनादर्भिदूषिता	बृ.या. ७.१५३	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	पराशर ७.१६
स्पृष्टमेव प्रभवति	आंपू २२९	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	वृ.या. ३.६५
स्पृष्टं प्रत्यक्षमेतत्तु न सर्वे	कपिल ३४६	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	बृ.या. ३.६६
स्पृष्टमथयंतसणचेद्या	व २.४.५८	स्पृष्ट्वा रजस्वलाऽन्योन्यं	बृ.या. ३.६७
स्पृशन्ति बिन्दवः	बौधा १.५.१०५	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	बृ.या. ३.६८
स्पृशन्ति बिन्दवः	मनु ५.१४२	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	यम ५८
स्पृशन्ननामिकाग्रेण	कात्या २८.१९	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	यम ५९
स्पृशेदुच्छिष्टमुच्छिष्ट	आश्व १.१६२	स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं	यम ६०

स्पृष्ट्वा रजस्वलं यान्तु
स्पृष्ट्वाकृत्वा स्सावित्र्या
स्पृष्ट्वा सचैलं स्नात्वा
स्पृष्ट्वा स्नानत्वा हेम
स्पृष्ट्वैतानशुचि
स्फटिकेन्द्राक्षपद्याक्षै
स्फटिकेन्द्राक्षरुद्रक्षै
स्मयशूर्पाजिनधान्यानां
स्मयादीनां यज्ञपात्राणां
स्मयं कृत्वा जगद्भर्ता
स्मरणीयो न वाच्योऽयं
स्मरन्नारायणं तिष्ठत्
स्मार्तकर्माणि कुर्वीत
स्मार्त वैवाहिके वह्नौ
स्मार्तानां द्विगुणं कुर्यात्
स्मार्तो द्वितीय
स्मिग्धासांदासुविदला
स्मृतयश्च पुराणानि
स्मृतिमत्साक्षिसाम्यं
स्मृतिमान्मेधावी
स्मृतिसारं प्रवक्ष्यामि
स्मृतौ प्रधानतः प्रतिपत्ति
स्मृत्याचारव्यपेतेन
स्मृत्युक्तमत्रै विधिवत्
स्मृत्युक्तं वाथ सूत्रोक्तं
स्मृत्युक्तविधिनाऽऽचम्य
स्मृत्यो विरोधेन्यायस्तु
स्मृत्वा जपेत् त्रिसंध्यासु
स्मृत्वात्रैविक्रमं रूपं
स्मृत्वा ब्रह्मैक्यसंधानं
स्यकारं विन्यसेत्
स्यन्दनादिषु यानेषु
स्यन्दनाश्वैः समे
स्याच्छेदं गोव्यसनं
स्याच्छेदनियोगिनो

यम ५७
भार ११.८५
वृ हा ६.३५६
अत्रिस १९०
मनु ४.१४३
ल व्यास २.३०
बृ.या. ७.१३७
या १.१८४
वृ परा ६.३३३
कपिल ६
लोहि १९५
भार ५.४०
लोहि २६
व्यास २.१७
विश्वा १.५५
बौधा १.१.३
भार ५.१३
प्रजा ४
नारद २.२०७
व १.२९.१०
दा ४
बौधा १.१०.३८
या २.५
वृ परा ११.३३
कण्व ७०
आश्व १.१०५
या २.२१
वृ हा ३.३१८
वृ हा ३.३७७
कण्व ७९
वृ परा ४.८७
वृ हा ६.४२
मनु ७.१९२
नारद ७.१३
व १.१७.५६

स्यातां विप्रादिवर्णेषु
स्यातां संव्यवहार्यौ
स्यात्साहसं त्वन्वयवत्
स्यादेतत् त्रिगुणं
स्याद् यस्य दुहिता
स्यादोम्बीजं नमः
स्युः पाल्या यत्रततस्ते
स्योनापृथिवीति
स्योनापृथिवीति भौमं
स्योनापृथिवीति मंत्रस्य
स्रक्चन्दनादि ताम्बूलं
स्रवद्यद् ब्राह्मणं तोयं
स्रवन्तीष्वनिरुद्धासु
स्वन्त्यादिष्वथाचम्य
स्वेशलाक्षिता शीघ्रं
स्रष्टा धाता विधाता
स्रष्टा नियन्ता शरणं
स्रष्टो भोक्तासि कूटस्थो
स्रावं गर्भस्य विद्वांसो
स्रावे मातुस्त्रिप्रात्र स्यात्
सुक्सुवाज्याहुतेः शेषं
सुक्सुवौ हस्तमात्रौ
सुवस्य बिलमारम्य
सुवाग्रे घ्राणवत् खातं
सुवेण चाऽऽज्यमादाय
स्रोतसां भेदको यश्च
स्रोतसां सन्मुखोमज्जे
स्वक्रष्युक्तस्थले जाऽपि
स्वकर्म ख्यापयंश्चैव
स्वकर्मणामनुष्ठानात्
स्वकर्मणि च संप्राप्ते
स्वकर्मणि द्विजस्थिष्ठन्
स्वकर्मनिरतश्चैव
स्वकर्मपरकर्माहो भवे
स्वकर्मस्थान् नृपो लोकान्

भार १६.१७
नारद १५.१०
मनु ८.३३२
औ ९.८३
नारद १४.२६
वृ हा ३.२१८
वृ परा ५.१०६
व २.६.१३५
वृ परा ११.६१
वृ परा ११.३२४
वृ हा ५.२७८
अत्रिस ३९२
बौधा २.३.६
बृ.या. ७.१११
व्या स २.३८
वृ हा १.१०
वृ हा ३.१०६
विष्णु म ६१
वृ परा ८.३९
दा १२७
आश्व २.६२
आश्व २.२१
आश्व २.४२
कात्या ८.१३
आश्व २३.५०
मनु ३.१६३
ब्र.या. २.१८
भार १६.२३
वृ हा ६.२८०
बृह ११.४५
ल हा १.२९
नारद १८.४८
वृ.गौ. ६.१७५
नार ९.१२
वृ परा १२.८

स्वकर्मणा च वृषभै	आप ८.१६	स्वजात्याति क्रमे पुंसामुक्तं	नारद १३.७०
स्वकार्याय पुरा प्रोक्तं	आंपू ३७१	स्वजीवनप्रकारं यो बाल्ये	आंपू १०५२
स्वकाले सायमाहुत्या	कात्या २७.७	स्वज्ञानं हृदि सर्वेषां	पु २३
स्वकीयशाखिनो मुख्य	प्रजा ७२	स्वत आत्मनि देवेश	शाण्डि ४.८०
स्वकीयदेवताध्यानं पूजा	कपिल ६७०	स्वतन्त्रांवातिहासा	व लोहि ६७१
स्व कुलं नरकं याति	ब्र.या. ८.१६४	स्वतन्त्रा सर्व एवैते	नारद २.३४
स्वगुरु पूजयत्येवमुप	विश्वा १.३७	स्वतन्त्रोऽपि हि यत्कार्यं	नारद २.३६
स्वगृह्योक्तविधानेन	वृ हा ६.१०३	स्वदक्षिणश्रुतिन्यस्य ब्रह्म	शाण्डि २.९
स्वगृह्योक्तविधानेन	वृ हा ६.११६	स्वदत्तांपरदन्तां वा	अ ९२
स्वगोत्रनाम शर्माहं	भार ६.१११	स्वदत्तांपरदत्तां वा	वृ.गौ. ६.१२६
स्वगोत्रनामशर्मैति	ब्र.या. ४.७६	स्वदारे यस्य संतोष	व्यास ४.४
स्वगोत्रं भोजयेद्यस्तु	वृ परा ७.११३	स्वदासमिच्छेद् यं	नारद ६.४०
स्वगोत्रम्मुख्यतो ज्ञेयं	कपिल ५०३	स्वदितमिति पित्र्येषु	व १.३.६३
स्वगोत्रागतपुत्रस्य	कण्व ७३१	स्वदेशघातिनो ये स्युस्तथा	नारद १८.६७
स्वगोत्राद्ग्रश्यते नारी	लिखित २६	स्वदेश पण्याच्च	विष्णु ३
स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी	कपिल ४१०	स्वदेशपण्ये तु शतं	या २.२५५
स्वगोत्रा सुभगानारी	प्रजा ५७	स्वदेहमरणिं कृत्वा	बृ.या. २.५५
स्वगोत्रिणां सपिण्डानां	कपिल ४८४	स्वदेहमरणिं कृत्वा	शंख ७.१७
स्वगोत्रिणो स्वान्यभ्रात्रे	कपिल ४१५	स्वद्रव्यं यत्र विस्रम्भान्	नारद ३.१
स्वगोत्री स्वसुताश्चैव	ब्र.या. १२.५६	स्वधरात्यन्तिके देशे	वृ परा १२.४३
स्वगोत्रे प्रवरेभिन्ने	व्या १६२	स्वधर्मेण अर्जितायानम्	वृ.गौ. ६.३३
स्वगोत्रैककृतं भूमिदानं	लोहि ५१८	स्वधर्मेण यथा नृणां	ल हा ७.१९
स्वगोत्रो वान्यगोत्रो	दा १४१	स्वधर्मो राज्ञ पालनं	व १.१९.१
स्वग्रामज्ञातिसामन्तादाया	कपिल ५००	स्वधर्मो विजयस्तस्य	मनु १०.११९
स्वर्ग्यञ्च दशभिर्युक्तं	वृपरा २.११७	स्वधाकारेण निनयेत्	कात्या १३.१३
स्वच्छन्दतः प्रदेयानि	आंपू १०८८	स्वधानिनयनादेव मन्त्र	लोहि ४२८
स्वच्छन्दं विधवागामि	या २.२३७	स्वधा पितृभ्य इत्यनं	आश्व १.१२९
स्वच्छं सुशीतलं	भार १४.४३	स्वधा वर्जन्यभानेवमेक	व्यास ३.१८
स्वजनस्यार्थं यदि	वा १.१६.३२	स्वधावाचन लोपोऽस्ति	ब्र.या. ५.८
स्वजनैः ज्ञातिभिस्सदभिः	लोहि ६०३	स्वधाशब्दं पितृस्थाने	आंपू ७८८
स्वजनैर्दूषितःसदभि	कपिल ८६२	स्वधाऽस्त्वित्येव तं	मनु ३.२५२
स्वजातकुतमो दण्ड	या २.२८९	स्वधोच्यतामिति ब्रूयाद्स्तु	वृ परा ७.२७६
स्वजातिजायागमने	शाता ५.३६	स्वनाभिसदृशं ज्ञेयं	भार १५.९१
स्वजातिमुद्गहेत् कन्यां	वृ परा ६.३३	स्वनामग्रहणेशिष्य	ब्र.या. ८.२३
स्वजातीपुरुषा जाता	भार १६.३७	स्वपत्न्यानीतसद्दीत	कपिल २४१

स्वपात्रगतभिस्सैकग्रह	लोहि ५१३	स्वयमेव तु दद्यान्	मनु ८.१८६
स्वपात्रस्थोर्णकबल	लोहि ४९७	स्वयमेव तु दातव्यं	व २.४.९२
स्वपादं पाणिनां विप्रो	आश्व १.१२	स्वयमेव विधानेन	व्या ३६५
स्वपितुः पितृकृत्येषु	कात्या १६.१२	स्वयमेव श्राद्धहेतो	आंपू १०५८
स्वपितुर्वर्गसाम्येन जननी	लोहि ३१८	स्वयं उत्पादित	व १.१७.१३
स्वपितृभ्यः पिता दद्यात्	कात्या १८.२१	स्वयं उपागतश्चतुर्थ	व १.१७.३२
स्वपुत्रं न्यस्य तातैक	कण्व ७०९	स्वयञ्च पाराणां कुर्यात्	वृ हा ५.५०३
स्वपुत्रं प्रददेत्ताभ्यां	लोहि ६१	स्वयंकृतश्च कार्यार्थ	मनु ७.१६४
स्वपुत्रस्वपितुर्गोत्रे	कण्व ७१८	स्वयंकृष्टे तथा क्षेत्रे	पराशर २.७
स्वपेद्भूमावप्रमत्ता	व्यास २.४०	स्वयं क्रीतश्च कथित	लोहि १९२
स्वप्ने सिक्त्वा ब्रह्मचारी	मनु २.१८१	स्वयं च वाहितैः क्षेत्रै	वृ परा ६.१
स्वप्याद् भूमौ शुची	या ३.५१	स्वयं च वैदिकाश्चेति वदन्त	कपिल ३०
स्वभर्तृत्वैकसंबंधमात्रेण	कपिल ५८४	स्वयं नीत्वा य यद्यान्नं	वृ परा १०.३.३
स्वभाव एष नारीणां	मनु २.२१३	स्वयं नीत्वा तु यत् दानं	वृ.गौ. ३.३५
स्वभावयुक्तमव्याप्तम्	लघुयम ९७	स्वयं नीत्वा विशेषण	वृ.गौ. ३.८५
स्वभावाद यत्र विचरेत्	संम्वर्त ४	स्वयं पत्न्या भक्षयित्वा	आंपू ५५७
स्वभावाद विकृतिं	या २१५	स्वयं भुक्त्वा हवि शेष	वृ हा ५.३७१
स्वभावाभिरनुष्णाभि	वृ परा ११४	स्वयंभूरित्युपस्थाय	बृ.या. ७.१०२
स्वभावविमातभूराद्या	वृ परा २.२०	स्वयंभूर्यम् उवाच	वृ परा ११.२४२
स्वभावेन हि विप्राणां	वृ परा ५.१५४	स्वयं मृतं वृथा मांसं	शंख १७.२९
स्वभावेनैव यद्ब्रूयुः	मनु ८.७८	स्वयं यद्यसमर्थश्च	आंपू ८१७
स्वभ्रातृजादिपुत्रेषु पुत्रमेकं	कपिल ६७२	स्वयं वा अपि कर्तव्यातु	ब्र.या. ८.३२१
स्वमण्डलादसौ सूर्य	या ३.१२३	स्वयं वा पच्यते	व्या २२२
स्वमनोऽभिमत्तं तीर्थ	वृ परा २.१२१	स्वयं वा पूजयेद्भक्त्य	वृ.गौ. ७.४४
स्वमप्यर्थं तथा नष्टं	नारद ८.८	स्वयं वा शिश्नवृष्णा	मनु ११.१०५
स्वमातमहवर्गस्य	कपिल ३६८	स्वयं वा शिश्नवृषणे	औ ८.२४
स्वमांसं परमांसेन	मनु ५.५२	स्वयं विप्रतिपन्ना वा	व १.२८.२
स्वमेव ब्राह्मणो भुंक्ते	मनु १.१०१	स्वयम्बिवुद्धश्च पटेद्यत्र	विष्णु भ ८२
स्वं कुटुम्बाविरोधेन	या २.१७८	स्वयं विशीर्णं विदलं	नारद २.६१
स्वंताततात गोत्रस्य	कण्व ७१०	स्वयं व्रतं चरेत्	देवल ३२
स्वम्भुवे नमस्कृत्य	शंख १.१	स्वयं होमासमर्थस्य	कात्या २१.१
स्वं लभेत्तान्यविक्रीतं	या २.१७१	स्वरातो वर्णतः सम्यक्	वृ परा २.१५५
स्वं स्वं चरित्र शिक्षन्ते	बृ.गौ. १४.४८	स्वरन्ध्रगोप्तान् वीक्षित्वा	या १.३११
स्वयमुक्तेरनिर्दिष्ट	नारद २.१३६	स्वरवर्णसमीचीन	कण्व २११
स्वयमुक्तेरनुदिष्टः	नारद २.१४०	स्वरवर्णादिलोपोत्थ	आश्व २.६६

स्वरान्तं व्यञ्जनांतं	वृ परा २.१५३	स्वर्लोक कटिदेशे	वृ परा ४.१३१
स्वराष्ट्रकृतधर्मस्य	वृ हा ४.१८१	स्वलंकृत समाचान्त	वृ हा ११२
स्वाराष्ट्रे न्यायवृत्तः	मनु ७.३२	स्वलंकृते मंडलेऽस्मिन्	वृ हा ५.२४४
स्वरिति सामवेदः	वृ हा ३.८७	स्वलंकृतेषु विधिषु	वृ हा ६.३६
स्वरूपदर्शनादप्सु	व्या ३७	स्वललाटे पुनः ध्यायेत	वृ परा ११.१४४
स्वरूपमात्मनोज्ञात्वा	व २.६.६६	स्वल्पगंधप्रभूतार्थं	शंखलि ११
स्वरूपं जीवपरया	वृ हा १.५	स्वल्पत्वात्पतना	वृ हा ६.२१३
स्वरूपादि त्रिवर्गस्य	वृ हा ३.९१	स्वल्पमन्नमुपादाय	ब्र.या. ४.१०६
स्वरेण वर्णेन च	वृ परा ४.१९२	स्वल्पैरप्यन्नपानादाद्यै	शाण्डि ४.१००
स्वर्गद्वार विधानं वै	वृ.गौ. १२.३५	स्ववर्णवैष्णवानेव	वृ हा ६.९२
स्वर्गं मौक्षश्च कीर्तिश्च	ब्र.या. ११.६७	स्ववंशेऽस्याधिकारं च	लोहि ५२६
स्वर्गं ह्यपत्यमोजश्च	या १.२.६५	स्ववंशे तस्य तिष्ठन्ति	ब्र.या. ७.४४
स्वर्गस्थानां च सर्वेषां	वृ हा ६.१३८	स्वविधानां तथा शान्ति	वृ परा ११.२८८
स्वर्गस्ताः पितरस्तस्य	वाधू ५०	स्ववीर्यादाजवीयीच्च	मनु ११.३२
स्वर्गस्थाः पितरस्तस्य	व २.६.२७८	स्ववृत्त्योपार्जितं	व्यास ३.५१
स्वर्गः स्वप्नश्च	या ३.१७५	स्ववृषं या परित्याज्या	यम २७
स्वर्गाण्यपि यशस्यानि	वृ.गौ. ८.९४	स्वशक्त्यातः प्रदातव्यं	वृ परा ११.२६०
स्वर्गार्थमुभयार्थं	वा मनु १०.१२२	स्वशक्त्या तर्पयित्वै	वृ हा ५.२३५
स्वर्गास्वर्गमहातेजा	वृ.गौ. ७.११६	स्वशरीरं भवेदार्थं	भार ५.३८
स्वर्गेऽपिदुर्लभं होतद्	दक्ष ४.६	स्वशरीरं हि गृध्राणाम्	वृ.गौ. ५.११४
स्वर्गे स्वर्गं गतानान्तु	वृ.गौ. १५.८४	स्वशाखा विधिना	ब्र.या. २.१३९
स्वर्गैकसां पितृणां	वृ परा ६.८२	स्वशाखाश्रयमुत्सृज्य	कात्या ३.२
स्वर्गमन्तेयी च गोध्नी	च अत्रि ४.५	स्वशाखोक्तः प्रसुस्विन्नो	कात्या १५.१३
स्वर्णरौप्यं च	ब्र.या. ११.४१	स्वशाखोक्तं परित्यज्य	व्या १७४
स्वर्णलाङ्गसंज्ञं तदपरं	कपिल ९२९	स्वशिल्पमिच्छन्नाहर्तुं	नारद ६.१५
स्वर्णं शृङ्गी रौप्यखुरा	वृ.गौ. १०.६२	स्वसम्बेद्यं हितद् ब्रह्म	दक्ष ७.२४
स्वर्णस्तेऽपि तद्वत्स्या	नारा १.१८	स्वसा माता तथा श्वश्रूमात	लोहि ४२२
स्वर्णस्तेयी सकृद्विप्रो	औ ८.१५	स्वसारं मातरं चापि	वृ परा ६.१६२
स्वर्णाद्याख्यातविधिना	भार १५.१४६	स्वसुता अग्रजा तावन्	अत्रिस ३०२
स्वर्णेन रत्नैरुचिरं	भार १५.१०९	स्वसुतागमने चैव	शाता ५.१५
स्वर्णोक्तवर्णायुवती	भार १८.९२	स्वसृधाती तु बधिरो	शाता २.२६
स्वर्धुन्यम्भः समानि स्यु	कात्या १०.१४	स्वसैन्ये गरदानादि	वृ परा १२.३५
स्वर्धुभुव इति प्रोक्तो	वृ हा ७.५१	स्वस्तरे सर्व्वमासाद्य	कात्या १७.६
स्वर्यातस्य ह्यपुत्रस्य	कण्व ७४७	स्वस्ति नोमिनीतां	आश्व ७.२
स्वर्लोकं कटिदेशे	वृ परा ४.३३	स्वस्ति भवत्विति	ब्र.या. ४.१४०

स्वस्ति गङ्गादिभिभक्त्या	भार ११.४७	स्वादानाद्वर्णसंसर्गात्	मनु ८.१७२
स्वस्तिवाचनपूर्वेण	वृ हा ६.६४	स्वागुश जपेन्मत्र	ब्र.या. ४.१४३
स्वस्ति वाचन पूर्वेण	वृ हा ७.२८	स्वादुषं स इति ऋचा	वृ हा ८.६६
स्वस्ति वाच्य द्विजैर्नात	प्रजा ४५	स्वादुषं सद इत्युक्त्वा	आश्व २३.१००
स्वस्थकाले त्विदं सर्व	दक्ष ६.१८	स्वाधीनां कारयेन्नारी	शाण्डि ३.१५२
स्वस्थमृत्यु पिता यस्य	ब्र.या. ५.२३	स्वाध्यायकाले गमनं	शाण्डि ४.१८३
स्वस्थस्य मूढा कुर्वन्ति	पराशर ६.५५	स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च	वृ हा ७.२०
स्वस्मिन् यस्माग्द	वृ परा ६.१७९	स्वाध्यायतत्परश्शश्वत्	शाण्डि ४.२२७
स्वस्य दक्षिणतः कन्या	व २.४.४६	स्वाध्यायमभ्यसेत्	वृ परा ६.१४०
स्वस्य वामेऽञ्जलौ	आश्व २.७१	स्वाध्यायं च यथाशक्ति	बृ.या. ७.५८
स्वस्य शाखोक्तदंडा	भार १५.१२४	स्वाध्यायं भोजनं होमं	ब्र.या. १०.१५५
स्वस्य शाखोदितं प्राण	विश्वा ६.३२	स्वाध्यायं श्रावयोत्पित्र्ये	मनु ३.२३२
स्वस्यांगुष्ठेन्यसे	भार ६.७१	स्वाध्यायं श्रावयेदेषां	औ ५.६७
स्वस्वगृहोदितैर्मत्रैः	भार १६.१५	स्वाध्यायं श्रावये देशां	ब्र.या. ४.१०२
स्वस्वनाम चतुर्थ्यत्त	भार ६.११६	स्वाध्याय योगसम्पत्त्या	शाण्डि ५.७१
स्वस्वनाम चतुर्थ्यत्त	भार ११.६३	स्वाध्यायाद्यजनाच्चैव	बृ.या. १.३१
स्वस्वमंत्रेण सकलान्	भार ११.६४	स्वाध्यायध्ययनच्चापि	कण्व ४५१
स्वस्वमिनोरुकारेण	वृ हा ३.८३	स्वाध्यायाध्ययनं	व १.२.२०
स्वस्वीकृतश्राद्धतिथि	आंपू १०५९	स्वाध्यायाध्यायिनां	व १.२६.१५
स्वस्वोक्त वर्णसूत्रेण	भार १५.१३५	स्वाध्यायिनं कुलेजातं	व १.३.२१
स्वागतेन च यो विप्रं	वृ.गौ. ७.३०	स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैः	मनु २.२८
स्वागतेनलोराजन्नासनेन	वृ.गौ. ७.३१	स्वाध्यायेन चर्चयेतर्षीन्	मनु ३.८१
स्वागतेनाग्नयः प्रीता	व्यास ४.११	स्वाध्याये नित्ययुक्तः	मनु ३.७५
स्वागतेनाग्नयस्तुष्टा	ल हा ४.५७	स्वाध्याये नित्ययुक्तः	मनु ६.८
स्वागते स्वस्तिवचने	व्या १०९	स्वाध्याये भोजने विप्रः	भार १८.७४
स्वाचान्तः प्रयतोदेव	शाण्डि ३.७३	स्वाध्यायैस्तर्पणैश्चैव	बृ.गौ. १४.५४
स्वाचार्यं पूज्य तद्भक्त्या	भार ११.१६	स्वाध्यायोत्थं योनिमतं	व १.६.२८
स्वाजातौ विहितास्सादभि	लोहि १६३	स्वानंशान् यदि दद्युस्ते	नारद १४.४२
स्वातन्त्र्याद् विप्राणश्यन्ति	नारद १४.३०	स्वानि कर्माणि कुर्वाणा	अत्रिस १२
स्वातन्त्र्येण विनश्यन्ति	वृ परा ६.६०	स्वानि कर्माणि कुर्वाणा	मनु ८.४२
स्वातं वापी तथा कूप	बृ.य. ४.१	स्वाभिप्रायकृतं कर्म	आंडं १.१०
स्वातौ मृगेऽयरौहिण्यां	ब्र.या. ८.२१८	स्वाम्यः स्वाभ्यस्तु	मनु ९.११८
स्वात्मानमेव चात्मानं	वृ परा १२.२८२	स्वामित्वेन सुहृत्वेन	शाण्डि ४.३६
स्वात्मेश्वराय हरये	वृ हा ८.२६४	स्वामित्वं च तदाधिक्यं	लोहि ७०
स्वात् स्वागतंइति	ब्र.या. ४.६०	स्वामिना स्वामिनं कार्यकाले	लोहि ७१३

स्वामिने याऽग्निवेद्यैव
 स्वामिन्यवस्थिते गेहे
 स्वामि प्रधानं नय-दुर्गं
 स्वां प्रसूतिं चरित्रं
 स्वाम्यमात्यो जनोदुर्गं
 स्वाम्यं परस्वरूपं
 स्वाम्युक्तवर्त्मना सर्वे
 स्वायम्भुवस्यास्य मनो
 स्वायम्भुवाद्या सप्तैते
 स्वायोग्यतां लोपयित्वा
 स्वारामोद्भूत कुसुमै
 स्वारोचिषश्चोत्तमश्च
 स्वार्थैकसाधकं लुब्ध
 स्वासनार्थं ततोदर्भा
 स्वासनासीनं संस्थाप्यं
 स्वासीमि दद्याद्
 स्वाहाकारं विना यस्तु
 स्वाहाकारवषट्कार
 स्वाहाकार शिर प्रोक्तं
 स्वाहाकारो व षट्कारो
 स्वाहा कुर्यान्न चात्रान्ने
 स्वाहामपि च संप्रार्थ्यं
 स्वाहां स्वाधां वैश्वदेवे
 स्वाहा स्यादभतयज्ञेऽपि
 स्वाहोदानाय सोऽङ्कारं
 स्वीकरोति यदा वेदं
 स्वीकुर्यादाशिषश्चापि
 स्वीकुर्याद् भ्रातृपुत्रादीन्
 स्वीकुर्वतां तत्परं च
 स्वीकृत्य दण्डयित्वा
 स्वीकृत्य शिरसा गृह्य
 स्वीकृत्यार्षद्वयं तेन
 स्वीयमेव भवेन्नूनं
 स्वीयसन्तातिविच्छत्तौ
 स्वीयस्य दानं कुर्यास्तु

या २.१६०
 शाण्डि ४.२०९
 वृ परा १२.७९
 मनु ९.७
 या १.३५३
 वृ हा १.१७
 कपिल ४७४
 मनु १.६१
 मनु १.६३
 लोहि ६२५
 भार १४.२२
 मनु १.६२
 शाण्डि १.११६
 भार ११.१३
 वृ परा ११.११
 या २.२७५
 विश्वा ८.५३
 कात्या १३.१२
 वृ हा ७.१५
 वृ परा ६.८३
 कात्या १७.१४
 आपू ८८९
 विश्वा ८.५१
 आश्व १.१३३
 वृ परा ६.११८
 दक्ष १.७
 कण्व ६७४
 कण्व ७३७
 कण्व ६६३
 लोहि २३६
 आपू ८८७
 आपू ३४६
 लोहि २३०
 लोहि ५५५
 कपिल ४४७

स्वीयानामेव वस्तूनां
 स्वेक्षेत्रजौ पुत्री पितृ
 स्वेऽग्नावेव भवेद्धोमो
 स्वेदजं दंशमशकं
 स्वेन भर्त्रा सह श्राद्धं
 स्वेभ्यः स्वेम्यस्तु
 स्वेषु स्वेषु च कालेषु
 स्वे स्वे धर्मे निविष्टानां
 स्वै वैर्णैर्वा पटे लेख्या
 स्वैरिण्यब्राह्मणी वेश्या
 ह

हंसभासबर्हिणचक्रवाक
 हंसमन्त्र समुच्चार्य गायत्रीं
 हंसं काकं बलाकञ्च
 हंसं तुर्यं परं ब्रह्म इति
 हंसं मदगुं बकं काकं
 हंसं श्येनं कपिं गृध्रं
 हंसयुक्तौ विमानैः तु
 हंसयुक्तैः विमानैः ते
 हंस शुचि मध्याह्ने
 हंस शुचिषदिति
 हंस शुचिषदिति
 हंस शुचि षदित्यादि
 हंस शुचिषु इत्येतत्
 हंस श्येनकपि क्रव्याज
 हंससारस क्रीचाश्च
 हंस सारसः चक्रवाकः
 हंससारसयुक्तेन याति
 हंसासिहासनं वह्नि
 हंसस्थां कांस्यकां रक्तां
 हतं दैवं च पित्र्यं
 हतं दैवं च पित्र्यं
 हतं दैवं च पित्र्यं
 हतः शूरो विपद्येत
 हतानां नृपगोविप्रैः

लोहि ४७९
 मनु ९.१६६
 कात्या १९.१४
 मनु १.४५
 लघुयम ८०
 मनु १२.७०
 शाण्डि ३.९
 मनु ७.३५
 या १.२९८
 नारद १३.७८
 बौधा १.१०.२८
 विश्वा ७.६
 संवर्त १४४
 बृ.या. २.११५
 शंख १७.२३
 वृ परा ८.१६३
 वृ.गौ. ५.७५
 वृ.गौ. ५.१०५
 ब्र.या. २.७६
 बृ.या. ७.२८
 बौधा २.१.३३
 वृ परा २.६१
 ल व्यास २.२७
 या ३.२७२
 पराशर ६.२
 वृ परा ८.१६४
 वृ.गौ. ५.११६
 विश्वा ६.६०
 भार १२.४
 दा ४२
 दा ४३
 दा ४५
 वृ परा ८.३०
 या ३.२१

श्लोकानुक्रमणी

हताभ्यां दशशाखाम्या	वृ हा ८.४१	हरिता यज्ञिया दर्भाः	वृ परा ७.३३२
हतेषु रुधिरं दृश्यं	पराशर ९.५०	हरिता वै सर्पिजलाः शुष्का	कात्या २.३
हत्यान्यासं पुरा कृत्वा	वृ परा ४.१२४	हरिदश्वो हयग्रीव	आंपू ५१३
हत्वाकण्ठतालुगामिस्तु	या १.२१	हरिद्रया कुंकुमेन	व २.६.१०७
हत्वा गर्भमविज्ञातमेतदेव	११.८८	हरिद्राजलकुम्भेन	कण्व ६५४
हत्वा च शूद्रहत्याया	अत्रिस २२५	हरिद्रामिश्रसलिलदेवता	कण्व ६७१
हत्वा छित्वा च भित्वा	मनु ३.३३	हरिद्रामिश्रिते नैव	कण्व ६४५
हत्वा त्र्यहं पिवेत् क्षीरं	अक्षि २२६	हरिद्रां विकिरन्तो वै	वृ हा ७.२७५
हत्वा द्विजं तथा सर्प	शंख १७.११	हरिद्रां विकिरन्मार्गे	व २.६.३२४
हत्वा नकुलमार्जार	पराशर ६.९	हरिद्रालाजपुष्पाणि	वृ हा ६.९३
हत्वाऽपि स इमाल्लोकान्	व १.२७.३	हरिद्राशाककुकाष्टा	भार २.१६
हत्वा लोकानपीमांस्त्रीं	वृ.या. ७.१७५	हरिद्रासहितेनैव स्नात्वा	व २.५.३२
हत्वा लोकानपीमांस्त्रीन्	मनु ११.२६२	हरिद्रासारं सम्भूतां	व २.३.५५
हत्वा हंसं बलाकञ्च	औ ९.११	हरिं ध्यायन्नगदः स्यादेनसः	वृ हा ५.२१२
हत्वा हंसं बलाकां च	मनु ११.१३६	हरिं सम्पूजेत्तत्र भक्त्या	व २.४.९०
हन्तते कथयिष्यामि	ब्र.या. १०.२९	हरिर्वै सूर्यं संकाश	वृ हा ७.११४
हन्तं ते कथयिष्यामि	विष्णु म १३	हरिश्चन्द्रादिभिर्घोरैः	कपिल ९२३
हन्ति जातानजातांश्च	नारद २.१८७	हरिश्चन्द्रौ ह वै राजा	व १.१७.३१
हन्ति जातानजातांश्च	मनु ८.९९	हरिस्तु शंखं चक्रं च	वृ हा ७.१२६
हन्तुकामोऽपमृत्युं च	शंख १२.२१	हरेत्तत्र नियुक्तायां जात	मनु ९.१४५
हन्त्यष्टमी ह्युपाध्यायं	बौधा १.११.४३	हरेद्राजा धर्मपरः हरन्सद्यः	कपिल ८५९
हन्त्याज्ञानं ततो हंस	बृह ९.१०२	हरेः पादाकृतिं रम्य	वाधू १०४
हन्यात् पवित्र हस्तरथं	भार १८.७७	हरे प्रसादतीर्थाद्यं यत्नेन	वृ हा ८.१४७
हयग्रीवं जगद्योनि	वृ हा ७.१४३	हरेनन्यशरणो	वृ हा ४.१६९
हयमेधाय न शुद्धि	वृ हा ६.२२१	हरेर्दास्यैकपरमां	वृ हा ७.३३७
हयैः गजैः स्यन्दनैश्च	वृ हा ६.३४	हरेर्नैवेद्यशेषेण	व २.६.१८४
हयो चैवशुभैः वस्त्रै	वृ परा १०.१५३	हरेर्भोगतया कुर्यान्न	वृ हा ७.२१
हरते दुष्कृतं तस्य	औ ३.३५	हर्दिकं च ऋचा कला	ब्र.या. १०.५७
हरते हरयेद्यस्तु	वृहस्पति ३७	हर्यर्पित हरिद्रादि	व २.६.३२२
हरतो हारयतस्तम	अ ९१	हर्यर्पितहविष्यान्नं	वृ हा ५.३६१
हरन्ति रसमन्नस्य	अत्रि ५.३	हर्यश्व वह्नि-यम-	वृ परा १२.८८
हरन्ति स्पर्शनात् पापं	वृ परा ५.१३	हर्यर्पितैश्च हृद्यानैः	व २.६.३७१
हरन्त्यरक्षितं यस्माद्	वृ परा ५.१७३	हर्षयेद् ब्राह्मणांस्तुष्टो	मनु ३.२३३
हरिणे निहते खंजः	शाता २.५१	हलमष्टगवं धर्मं षड्गवं	आप १.२३
हरिता यज्ञिया दर्भाः	कात्या २.२	हलमष्टगवं धर्म्यं	पराशर २.३

हलाग्रकोटी रथचक्रमध्ये
हलाभियोगादिषु तु
हसे वा शकटे चैव
हलेवा शकटे चैव
हवनं च प्रयत्नेन
हवनं भोजनं दानं
हविरन्तं सर्वकर्म
हविर्गुणा न वक्तव्याः
हविर्गुणा न वक्तव्याः
हविर्गुणा न वक्तव्या
हविर्ब्राह्मण कामाय
हविर्यच्चिरात्राय
हविश्च जुहुयादग्न
हविषापाशुकेनैव नित्य
हविष्मतीरिमा आप
हविष्मत्या स्नापयित्वा
हविष्मांस्तु यमभ्यस्य
हविष्यञ्च सकृदभुक्त्वा
हविष्यन्तीयमभ्यस्य
हविष्य भोजनो वाऽसौ
हविष्यमन्नमुदगानं
हविष्यं भूमिपुत्रस्य
हविष्यं वाग्यतोस
हविष्यभुग्वाऽनुसरेत्
हविष्यस्य द्विजोऽभावे
हविष्यान्नं स्वयं
हविष्यान्नेन वै मांसं
हविष्यान् प्रातराशांस्त्री
हविष्येषु यवामुख्यान
हवीष्यान्तीमभ्यस्य
हव्यकव्य विदो ये चते
हव्यं देवा न गृह्णन्ति
हव्यार्थं गोघृतं ग्राह्य
हसन्ग्रासं च यो भुङ्क्ते
हस्तचित्रविष्टानुराधा

ब्र.या. ११.४९
कात्या ५.७
दा १०१
लघुशंख ५२
बृ.या. ४.३८
बौधा २.३.६७
कण्व ७७७
बृ.या. ३.२८
यम ३९
व १.११.३०
ब्र.या. ९.२८
मनु ३.२६६
आश्व १.१३२
कण्व ३५९
वृ परा २.१३६
अत्रि ५.४८
अत्रि २.६
वृ हा ६.१३७
व १.२६.८
वृ परा ११.१६०
वृ हा ७.१४६
वृ परा ११.७६
व २.६.३६२
मनु ११.७८
वृ परा ४.१५६
वृ हा ५.४००
या १.२५८
व १.२७.१६
कात्या ९.१०
मनु ११.२५२
वृ.गौ. १०.१०९
दा ५८
व्या ३०६
बृ.या. ३.३३
भार १५.४६

हस्तत्रयेषुरेवत्यां मृगे
हस्तदत्त न गृहणीयात
हस्तदत्तानि चान्नानि
हस्तदत्तास्तु ये स्नेहा
हस्तदत्तास्तु ये स्नेहा
हस्तरात्रे च धौते
हस्तप्रक्षालनदूर्ध्वं
हस्तप्रक्षालनादूर्ध्वं
हस्तं प्रक्ष्यात्य यस्त्वाप
हस्तस्यव्यवधानेन
हस्तादूर्ध्वं रवि यावत
हस्तावलीढनं कुर्यात्
हस्ति कृष्णाजिना
हस्तिगोश्वोष्ट्रदमकों
हस्तिच्छायासु यदत्त
हास्तिनं तुरंगं हत्वा
हस्तिनश्चतुरंगाश्च
हस्ते चोत्पद्यमाने वा
हस्तेनान्नादिभि कुर्यात्
हस्तेनेद्धृत्य यत्तोय
हस्ते वदते चैव
हस्तैश्चतुर्भिर्हडंस्यात्
हस्तौ कृत्वा सुसंयुक्तौ
हस्तौ तत्र प्रयोक्तव्यौ
हस्तौ पादावुपस्थञ्च
हस्तौ पायुरुपस्थश्च
हस्तौ सुसंयतौ कार्यौ
हस्तश्वरथयानानि
हाटकक्षितिगोरत्नगज
हाटकं कलधौतं
हानि तस्य तु कुर्वीत
हारकुण्डलकेयूर
हारिद्रजलतच्चूर्ण
हारीतं सर्वधर्मज्ञ
हारीतस्तानुवाचाथ तैरेवं

ब्र.या. ८.१०३
वृ हा ५.२७५
व्या ३४८
लघुशंख २६
व १.१४.२६
व्या २०१
व्या १४७
व्या १०५
अत्रिस १४९
व्या ८०
कात्या ९.२
दा ४९
वृ परा ६.२२८
मनु ३.१६२
शंख १४.३१
वृ परा ८.१६१
मनु १२.४३
व २.३.१४१
ब्र.या. २.१४१
वृ हा ८.१२४
दा ५०
भार २.४८
लघुयम ९३
भार २.६३
शंख ७.२६
या ३.९२
संवर्त १०
व्यास ४.५६
कपिल ९४४
भार ११.१०
संवर्त ३७
वृ हा ३.२३
कण्व ३५५
ल हारीत १.४
ल हा १.७

हारीतोऽप्युदाहरति	व १.२.११	हिरण्यगर्भसूक्तेन	वृ हा ५.१२८
हास्यकारं नटं नाट्य	आंपू ७५८	हिरण्यगर्भसूक्तेन	वृ हा ५.२९४
हास्येऽपि बहवो यत्र	अत्रिस ३११	हिरण्यगर्भसूक्तेन	वृ हा ६.४८
हिंसा पवादवदांश्च	शंख ३.११	हिरण्यगर्भस्यार्षं तु	वृ परा ११.३३७
हिंसायां निष्कृतिरियं	शाता २.५७	हिरण्यगर्भैः कपिलैरपान्	बृ.या. २.६७
हिंसारतं च कपटं	अत्रि स ३४४	हिरण्यगर्भौ विष्णुश्च	बृह ९.६२
हिंसा स्तेया मृषावादो	बृ.गौ. २२.९	हिरण्यदन्तेत्यनेन	वृ हा ८.२३
हिंसाहिंसे मृदुकूरे	मनु १.२९	हिरण्यदानं गोदान	अत्रिस ६.४
हिंस्रयस्तुविधानस्त्री	वृ हा ६.३३६	हिरण्यधान्य वस्त्राणां	नारद २.९२
हिंस्रयन्त्रप्रयोक्तारं	वृ हा ४.२१२	हिरण्यभूमि संप्राप्त्या	मनु ७.२०८
हिंसा भवन्ति क्रव्यादा	मनु १२.५९	हिरण्यभूमि लाभेभ्यो	या १.३५२
हिकारं नासिकाग्रे तु	वृ परा ४.९०	हिरण्यमायुरन्नं च	मनु ४.१८९
हितप्रियोक्तिभि वक्ता	व्यास ४.६१	हिरण्यं चापि देवानां	आंपू ८९४
हिता नाम हि ता नाड्य	बृह ९.१९४	हिरण्यं तुलसी तत्र	व २.७.३०
हिताय सर्वलोकानां पृष्ट	नारा ५.३	हिरण्यं दक्षिणायुक्तं	वृ परा १०.२०७
हित्वा शिखोर्ध्वपुण्ड्रे	वृ हा ५.६०	हिरण्यं भूमिभ्रवं	मनु ४.१८८
हित्वा स्वस्य द्विजो	आश्व २४.१९	हिरण्यं व्यापृतानीतं	या १.३२८
हीनजातिं परिक्षीण	या २.४४	हिरण्यरत्नकौशेय	नारद १५.१५
हीनजातौ प्रजायन्ते	या ३.२१३	हिरण्यवर्णं पुरुषं	बृह ९.४५
हीनवर्णा तु या नारी	शंख १५.९	हिरण्यवर्णा इतिचतुर्णां	भार १७.१६
हीनांगश्चातिरिक्तांगो	औ ४.३१	हिरण्यवर्णो वेकेर्णेः	ब्र.या. ८.२२४
हिनांगोवधिरौ मूकोवकः	ब्र.या. ८.३०१	हिरण्यशकलान्यस्य	कात्या २१.५
हिमवच्छतसंकाशं	विष्णु १.३५	हिरण्यं शृंगं वरुणं	बौधा २.५.५
हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं	मनु २.२१	हिरण्यदिचतस्रश्च	कण्व २४३
हिरण्यमयं च रत्नानि	व २.७.६०	हिरण्यार्थेऽजुते हंति	बौधा १.१०.३५
हिरण्यमय स भूतेभ्यो	वृ हा ७.५०	हिरण्यश्च रथंस्तदवन्दे	अ १०३
हिरण्यमयस्य गर्भोऽभूत्	बृह ९.६४	हिरण्यश्वारथं गृह्य	नारा १.३०
हिरण्यकामधेनुं तु प्रति	नारा १.२८	हिरण्यश्वस्य च तथा	नारा १.२९
हिरण्यकामधेन्वादि	अ १२६	हीनक्रियं निष्पुरुषं	मनु ३.७
हिरण्यकेभी भाद्रोज्य	ब्र.या. १.२४	हीनगायत्रिका व्रात्या	वृ परा ६.१६९
हिरण्यकेश विश्वाक्ष	विष्णु १.५२	हीनजातिस्त्रियं मोहाद	मनु ३.१५
हिरण्यकेशेति ऋचा	वृ हा ८.३६	हीनन्तु प्रतिलोमा	वृ हा ४.१७७
हिरण्यगर्भग्रहणे त्वष्ट	नारा १.२६	हीनं तु नैव कर्तव्यं	वृ परा १०.१०७
हिरण्यगर्भदानस्य	कपिल ८९६	हीनं न विनिगुंजीत	वृ परा ४.३८
हिरण्यगर्भसंज्ञस्य	कपिल ४३९	हीनवर्णे च य कुर्याद्	अत्रिस ३१२

हीनाङ्ग (स्यात्) स्वयं	भार १८.१८	हुत्वांश्च पौरुषंसूक्तं	वृ हा ५.४५९
हीनांगं व्याधिसंयुक्तं	वृ परा ५.३	हुत्वा मार्जयित्वाद्यैर	व २.४.८५
हीनांगानतिरिक्तांगान्	मनु ४.१.४१	हुत्वाऽथमूलमंत्रेण	वृ हा २.५२
हीनातिरिक्तं कर्तव्यं	वृ परा ५.७५	हुत्वाऽथ वैष्णवै मंत्रै	वृ हा ६.१२६
हीयते सातियाज्ञानि	शाण्डि ५.३५	हुत्वा दत्त्वा च भुक्त्वा	विश्वा ८.८१
हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा	पराशर ११.४९	हुत्वानुमंत्रणं कुर्यात्	औ ३.१०८
हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा	मनु ११.२०५	हुत्वानुमंत्रणं कुर्यात्	ल व्यास २.७६
हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा	शंख १७.६०	हुत्वा पुष्पाञ्जलि	वृ हा ५.३३६
हुत भुक् पवनो जीव	वृ परा १२.२६१	हुत्वा पुष्पाणि दत्त्वा च	वृ हा ७.३०३
हुतं दत्तं तथाजप्तं	ब्र.या. २.२९	हुत्वा प्रयताञ्जलि	बौधा २.१.४२
हुतशेषमशेषाणां पात्रे	वृ परा ७.२१४	हुत्वाभिषेचनं कुर्यान्	शाता १.२०
हुतशेषं न दातव्यं	व्या २९९	हुत्वा मन्त्रेण जुहुयाद्दश	व २.६.३३५
हुतशेषं प्रदद्यात्	या १.२३६	हुत्वा मन्त्रेण साहस्रं	वृ हा ७.२३२
हुतशेषं स्वयं भुक्त्वा	वृ हा ५.४६०	हुत्वा लाजांस्तथा होमं	आशव १५.४१
हुतशेषं हवि प्राश्य	वृ हा ५.१७५	हुत्वा वैष्णवेनैव	वृ हा ७.२०२
हुतशेषं हविश्चाऽऽज्यं	आश्व २.७७	हुत्वा व्याहृतिभि	२.३.१८०
हुताग्निहोत्र कृतवैश्वदेव	बौधा २.३.२३	हुत्वा सुगन्धि पुष्पाणि	वृ हा ५.४८०
हुताग्निहोत्रमसीनं	अत्रिसं १	हुत्वा स्त्रिया मुखंतत्र	ब्र.या. ८.२८२
हुताग्निहोत्रमासीन	अत्रि १.२	हुक्तेत्ताहुतिस्सर्वास्तद्गोत्रा	कपिल ३९६
हुताग्निहोत्र विधिवत्	व्या २	हूयते च पुनर्द्वाभ्यां	विष्णु म ३५
हुतायां सायमा हुत्यां	कात्या २१.२	हृतं प्रणष्टं यो द्रव्यं	या २.१.७५
हुताशतप्तं लोहस्य	नारद १९.१५	हृताधिकारां मलिनां	या १.७०
हुताशनवदास्यानि सुस्थि	भार १२.२०	हृत्कण्ठतालुकाभिरश्च	व्या ४९
हुताशनेन संस्पृष्टं	पराशर ६.७१	हृत्तापः कीर्तिमरण	वृ परा २.११८
हुतेन शाम्यते पापं	बौधा २.३.६९	हृत्वा धनानि दीनानां	आंपू २६१
हुत्वाऽऽज्यं जुहुयात्	वृ हा ८.२४७	हृदयं गमाभिरदभिः	व १.३.३३
हुत्वाऽग्नीन् सूर्यं देवत्यान्	या १.९९	हृदयंगमभिरदभिः	व २.३.१०२
हुत्वाग्नौ विधिवतमंत्रै	ल व्यास २.८८	हृदयं धर्मशास्त्राणि	भार १३.१७
हुत्वाग्नौ विधिवद्धो	मनु ११.१२०	हृदयं सर्वलोकानां	बृ.या. ३.१९
हुत्वा चरु धृतयुतं	वृ हा ७.१५४	हृदयस्थस्य योगे न	शंख ७.१५
हुत्वा जप्त्वा तथा स्तुत्वा	शाण्डि ५.५	हृदयस्थे जगन्नाथे	शाण्डि ४.१९८
हुत्वाऽऽज्यं विधिवत्	वृ परा ११.३०७	हृदयादि चतुर्वर्णं क्रमेणैव	विश्वा ६.५७
हुत्वा ततः समभ्यर्च्य	व २.३.१९२	हृदयादिषडंगेषु	वृ हा ३.१८८
हुत्वा तु मंत्ररत्नेन	वृ हा ७.३११	हृदयादि षडङ्गेषु	व २.६.७०
हुत्वाऽथ कृष्णवर्त्मानं	वृ परा ४.१८६	हृदये दक्षिणाग्निश्च	वृ परा ६.११०

हृदये सर्वतीर्थानि	बृ.गौ. २०.१७	हेमपुरुष संयुक्तां शय्या	वृ परा ११.२३१
हृदये सर्वभूतानां जीवं	बृह ९.२२	हेमभूमि तिलान् गाश्च	वृ परा ६.२२५
हृदि कर्तुः च तद्वाक्यं	वृ.गौ. २.९	हेममात्रमुपादय रूप्यं	या ३.१४७
हृदि ध्यानं सदा यस्मात्	वृ.या. २.१२३	हेमराजत शंखानां	वृ परा ६.३३२
हृदिनाभौ तथा वाह्वौ	आश्व १०.२६	हेमरूप्यमयेपात्रे	प्रजा १११
हृदि निसृतनाडीनां	वृ परा १२.२८६	हेमशृंगफैरीष्यैः	या १.२०४
हृदिस्था देवता सर्वा	शंख ७.१६	हेमस्तेयी सुरापश्च	शंख १७.३
हृदिस्थाय च भूतानां	विष्णुम ८१	हेमहस्तिरथस्यैव ग्रहणे	नारा १.३१
हृद्गतं तु चतुः प्राश्य न	शाण्डि २.३०	हेमाद्रिशिखरे रम्ये	भार १.१
हृद्गताभिरफेनाभिः	संवर्त १९	हेम्नातु सहयदत्तं	शंख १३.१५
हृद्गाभि पूयते विप्र	औ २.१५	हेयभूतश्च स्मात्	लोहि २१३
हृद्गाभि पूयते विप्र	मनु २.६२	हेषाशब्दकुर्वाणा	वृ परा २.७९
हृद्गाभि पूयते विप्र	संख १०.४	हेषाशब्दमकुर्वाणाः	वृ परा २.७९
हृद्दर्कश्चन्द्रमा सूर्यः	शंख ७.१८	हैमं रौप्यं च ताम्रं च	शाण्डि ४.११०
हृद्यवाक्यं कृतज्ञ च	शाण्डि १.१०२	हैमराजत कांस्थेषु	व्यास ३.६१
हृद्यवेषा सदाभर्तुरा	शाण्डि ३.१३९	हैमे सिंहासने देवीं	भार १३.२५
हृद्यवेषैर्विशुद्धानैर्भगवद्	शाण्डि १.१२०	हैमैकादशकोटि शत	भार ७.१३
हृद्याकाशगता सूक्ष्म	बृ.या. ६.२३	हैरण्यगर्भं तद्दान (नं) गोमूत्र कपिल	१०९
हृद्याकशागतो यो हि	बृह ९.१६७	हैरण्यमण्डं संदीप्त	बृह ९.६५
हृद्याकाशनिविष्टस्तु	बृह ९.१५	हो इत्येष विवादो वै	बृ.गौ. १५.४२
हृद्याकाशे तु यो जीवः	बृह ९.२५	होतव्यं विधिवद्वाजन्	बृ.गौ. १५.८८
हृद्यैः पुष्पैश्च जातीभि	वृ हा ५.३३२	होतव्ये हुते चैव	कात्या ९.१४
हृद्यव्योम्नि तपते ह्येष	बृह ९.२४	होमकालः प्रपद्येत	आश्व १.६३
हृज्जिह्वा क्रोडमस्थीनि	कात्या २९.४	होमकाले मार्ग मध्ये	कण्व ५५२
हन्मूर्ध्नाश्च शिखायाञ्च	वृ हा ३.११९	होमद्वयात्यये दर्श	कात्या २७.१०
हवीकेशं त्रयीनाथं	वृ हा ८.२७३	होमं धेनुं प्रसूताञ्च	वृ हा ६.३३३
हृष्टि पुष्टिस्तथा	कात्या १.१२	होमपात्रमनादेशे	कात्या ८.११
हेतुशास्त्राणि योऽधीते	बृह १२.३०	होमं कृत्वाऽथपूर्वेद्यु	आश्व २३.२
हेमकाल्पित शृंगा च	वृ परा १०.३६	होमं पुष्पाञ्जलि वाजपि	वृ हा ७.६८
हेमधेनुप्रदानेन	वृ परा १०.११८	होमं विना ह्युपस्थानं	कण्व ३६४
हेमनाभं च तं कुर्यात्	वृ परा १०.१३०	होमशेषं समाप्याथ	आंपू ९०
हेमन्तवनराजन्य	आंपू ५९७	होम शेषं समाप्याथ	व २.३.६९
हेमन्तशिरर्त्वीश्च	वृ परा ६.२९३	होमशेषं समाप्याथ	व २.३.१९३
हेमन्ते शिशिरे चैका	वृ परा ६.२९४	होमशेषं समाप्याथ	व २.६.३५८
हेमन्ते शिशिरे चैव	व २.३.१५९	होमशेषं समाप्याथ	वृ हा २.२१

होमशेषं समाप्याथ	वृ हा ६.४९	होमे प्रदाने भोज्ये च	मनु ३.२४०
होमशेषं समाप्याथ	वृ हा ८.२३५	होमोक्तधान्यजानं	भार ११.१०६
होमश्चरेत्पुरतः काले	आश्व १.६७	होमो दैवेवल्लिभूत	ब्र.या. २.९
होमः सद्यः प्रकर्त्तव्यः व्याहृती कपिल ३८७		होमो दैवोवल्लिभूत	शंख ५.४
होमस्तत्र तु कर्त्तव्यः	संवर्त ४४	होष्यामीत्येव संकल्प्य	कण्व २९२
होमानि नैव संतप्त	व २.१.३८	हानुलोमा विवाह्यास्तु	व २.४.९
होमान्ते दक्षिणं दद्यात्	वृ परा ११.३१२	हूलादनी पावनी कामा	आंपू ९२२
होमान्ते ब्रह्मणे दद्यात्	आश्व २.७८	ह्रस्वदीर्घप्लुतैर्युक्ता प्रणवं	विश्वा २.३२
होमाभावे यथेच्छं स्यात्	लोहि ६४६	ह्रासयेच्च कलाहानौ	शंख १८.१२
होमार्थे चाग्निहोत्रस्य	वृ.गौ. ९.६४	ह्रासवृद्धी तु सततं	वृ.या. ६.११
होमे च शान्तिके	ब्र.या. १०.१३९	ह्रासो न विद्येत यस्य	देवल २३
होमे जप्ये विशेषेण	ल व्यास १.८	ह्रीवेरं चन्दनं मुस्ता	वृ हा ४.१०१
होमेनैव तदा ज्ञेया	आंपू ९.६६		



